॥ श्री: ॥

जैन गजट

यह पत्र सप्ताहिक है अर्थात् एक महीने में चार बार प्रकाशित होता है॥

बाबू सूरजभान वकील के प्रबंध से देव बन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होता है ॥

पत्र हर अंगेरजी महीने की १-८-१६ और २४ ता० को भाईयों की सेवा में हाजिर हुवा करेगा॥

मूल्य पेशगी एक वर्ष का डाकव्यय सहित तीन रुपया है ॥

वर्ष | दिसम्बर सन् १८९५ ता० पहली | अङ्क १

विज्ञापन ।

ऐ भाइयो ! जैन कौम की डूबती को बचाने का आपने क्या सोचा है अपने धर्म की रक्षा के ... ताकत समझी है इसमें ... कल्याण का ... लोग धर्मात्मा ... जिनेन्द्रादिक ... सच्चे जैनी हैं ... जो धर्म को ... स्वर्ग ... उनको धर्म ... का धर्म ... जैनधर्म ... जो ... इस बात ... का ... हर समय हम ... हैं वह उठते बैठते सोते ... स जैन ...

जागते यही विचार करते रहते हैं कि जैन धर्म परम काल्याण कारी मतकी आज कल अत्यन्त न्यून दशा हो गई है क्या उपाय किया जावे जिससे यह ... र अपनी पहली रोशनी और स्वभाव ... मार्ग ... ये हुए प्रकाश होवे मिथ्यात्व अन्धकार लोगों के हृदय से दूर होवे और कुछ नहीं तो जो लोग इस समय जैनी कहलाते हैं वे तो अपने धर्म में लगें जैनमत को जैन तत्त्वार्थ को विचारें इसकी सचाई को पहिचानें और अधर्म और कुमार्ग त्यागें कुरीतियों छोडें और सच्चे जैनी कहलाने के लायक बनें परन्तु ऐ भाइयो ! ऐसे परम उपकारी और ... जन पुरुष जैन कौम के ...

ख्वाह जिनके हृदय में जैन धर्म की चांट है वह ऐसी बातों का विचार २ कर रहजाते हैं। जैनमतकी ऐसी न्यून दशा देखकर जैनियों की ऐसी दुरदशा जानकर चुपक २ रोलत हैं कोई ऐसा कारण मौजूद नहीं है जिस्से वह अपने विचारों को दूसरों पर प्रगट करें और जैनी भाइयोंको जो अविद्या रूपी ख्वाब में सोये पडे हैं जगा सकें इस वास्ते जिनको जैन धर्म की उन्नति का विचार होता है वह भी लाचार हो जाते हैं इस वास्ते जब तक ऐसा कोई उपाय न पैदा किया जावे जिस्से पर उपकारी लोग अपने विचार दूसरों पर ज़ाहिर कर सकें और अपनी पुकार दूसरों को सुना सकें तब तक जैन धर्म की रक्षा नहीं हो सक्ती है इस लिये इस बात के पूरा करने के वास्ते यही विचार किया गया है कि एक सप्ताहिक पत्र हिन्दी भाषा में देवनागरी अक्षरों में जारी किया जावे जिसमें विद्वान पर उपकारियों के ऐसे लेख छपा करें जिस्से जैन धर्म की वृद्धि हो वह पत्र क्या होगा एक बहुत अच्छा और लायक उपदेशक होगा जो हफ्तेवार अर्थात् सातवें दिन अपने ग्राहकों के पास मौजूद होजाया करेगा वह पत्र धर्म का सिपाही होगा जो महीने में चार दफै हरजगह इस बात का खौफ दिलाने के वास्ते जा खडा हुआ करेगा

कि अधर्म में नहीं लगन[illegible] धर्म की तरफ़ लगने [illegible] जैनधर्म की रक्षा इसकी [illegible] न्यून दशा के दूर करने [illegible] नये हरहफ्ते सब को जन[illegible] करेगा और इस बात की खबरगी[illegible] देगा कि हरशहर और कस्बे में [illegible] दशा जैनियों की बीत रही है [illegible] धर्म के कार्यों में क्या क्या उपा[illegible] तेहैं और हर जगह की [illegible] को हर हफ्ते सब को [illegible] जैनियों के वास्ते ऐसे पत्र [illegible] रहेगा भारी आवश्यकता है इस पर बडी [illegible] चलित होने की अत्यन्त जरूरत [illegible] पत्र के जारी होने विना जैनि[illegible] कदाचित तरक्की नहीं होसक्ती है [illegible] द्यपि मासिक पत्र जैनप्रभाकर [illegible] जैनहितोपदेशक इस वक्त जारी हैं [illegible] वे मासिक पत्र हैं और जो शिक्षा उन [illegible] प्राप्त होती है वह एक महीने के अंदर बिल्कुल विस्मरण होजाती [illegible] उपाय [illegible] कार्य किंचित नहीं बनता है [illegible] पत्र में यह [illegible] नहीं होगी [illegible] जैनभाइयों [illegible] प्रार्थना की [illegible] कि इसके ग्राहक बने मूल्य [illegible] का केवल ३) तीन रुपये [illegible] जैन [illegible]हा सभा मथुरा का भी यही विचार [illegible]आ है कि सप्ताहिकपत्र अवश्य जा[illegible] होना चाहिये और कम से कम एक नगर की पञ्चायत को एकपत्र

द्रव्य खरीद करना चाहिये महासभा
की कुल कारस्वाई इस पत्रमें छपाकरेगी
यह पत्र नमूने के तौर पर हरजगह भेजा
गया है जिन भाइयों को खरीददारी
मंजूर हो वह कृपा करके चिट्ठी लिख
दें कीमत इसकी तुरंत देनेकी जरूरत
नहीं दोचार पत्र पहुंचने पर दीजाय
कीहै कीमत मुन्शी सूर्यभान वकील
देवबंद के पास भेजी जावे

———o———

जैनियोंकीवर्तमान दशा

अहो जैनभ्रातृगण! इस वार्ताको सब
भ्रातृगण स्वीकार करतेहैं कि जैनधर्म
ही एक सत्य मत है मुक्ति इसही के
द्वारा प्राप्त हो सक्ता है कल्याण
कारक यही है यह धर्म क्या है सर्वज्ञ
का वाक्य है वस्तु के निज स्वभाव का
इसमें वर्णन है मुक्ति का मार्ग और
कल्याण का रस्ता यहीहै इसही से यह
जीवनकादिक के दुःखों से बचसक्ता
है और स्वर्ग को प्राप्त हो सक्ता है
और इस जैनधर्म के सेवन बिना यह
संसार भ्रमणही का कारण है सिवाय
इस के और कोई उपाय कल्याण
कारक नहीं है परन्तु शोक की वार्ता
है कि आज कल इस जैनधर्म की जो
अनादि मत है अत्यंत न्यूनदशा हो
रही है एक वह समयथाकि पृथ्वीभर
पर यह धर्म प्रचलित था राजा महा
राजा दीन प्रधान सब इस मत के स-
हायक थे सर्वत्र इसही जैनमत का डंका
बजता था चक्रवर्त्यादिक राजा जिन
के समान अबार काल में कोई राजा
महाराजा नहीं है सर्व इस ही सर्वोत्कृष्ट
मत के धारी हुए हैं महाराजा रामचंद्र
राजा दशरथ के पुत्र जो समस्त हिंदु-
ओं के परम पूज्य है इसही मत के श्रद्धा
नी थे और इसही के निमित्त से उन-
को मुक्ति प्राप्त हुई परन्तु इसकालमें यह
वार्ता कथा कहानी मात्र रहगई है
अबार जैनमत जिस प्रकार न्यून दशा
में है अन्य कोई हुवा नहीं चतुर्दशलक्ष
जैनियों का परिमाण दूसरे मत वालों
की अपेक्षा किसी गणना के योग्य
नहीं परन्तु पूर्वोक्त चतुर्दशलक्ष जैनियों
में बहुत से एस है जो यह नहीं जानते हैं
कि जैनमत किस को कहते हैं
जो यह भी नहीं जानते कि तीर्थंकर
कितने है और उनके क्या क्या नाम
हैं और न यह ज्ञात है कि तत्त्व कितने
हैं और उनका क्या स्वरूप है जो
केवल इस निमित्त से जैनी कहाते है
कि जैनियों के कुलमें जन्म धारणकिया
है बहुत से ऐसे है कि बहुधा भाद्रमास
में ही मंदिरजी में जाते हैं और जो
मंदिरजी में प्रतिदिन दर्शन करनेके

लिये जाते भी हैं वह यह भी नहींजानते कि दर्शन किस प्रकार किया करते हैं और किस कारण दर्शन किये जाते हैं और दर्शनों से क्या लाभ है बहुत से ऐसे नगर ग्राम हैं जहां पर कई २ दिन पर्यंत प्रक्षाल नहीं होती और पूजा करने के लिये पुजारी नौकर रक्खे हुए हैं और बहुत से नगरमें शास्त्रजी नहीं बँचते हैं क्योंकि शास्त्र बांचने वाले नहीं हैं और बहुतसे स्थानों पर बांचने वाले ऐसे अनाडी हैं कि उनको स्वयं शास्त्र का बोध नहीं है दूसरों को तो क्या समझावेंगे जिस स्थान पर शास्त्र पढे भी जाते हैं तो सौ में एक शास्त्र जी सुनने के लिये आते हैं जैनियों में दो चार पंडित हुए तो क्या गणना में हैं और वह भी इस निमित्त से पण्डित कहाते हैं कि जैनियों में पण्डित हैं नहीं मिथ्यात्व सेवन करना कुदेवादिक का पूजना तो जैनों में ऐसा प्रचलित है कि अपने आचरण की अपेक्षा जैनी लोग जैनी कहाने के उचित नहीं इन समस्त बातों ओंके सिवाय जैनियों में विशेष रीत ऐसी हैं कि जो समस्त बुद्धि के विपरीत हैं और दुःख दाई हैं जिनके निमित्त से लोग हमारा हास्य करते हैं और हमको मूर्ख बतलाते हैं वृथाव्यय फजूल खर्च हम लोगों में ऐसी बढी हुई है कि सर्व आयु की कमाई बिरादरी की रीत पूर्ण करने में ही लग जाती है जैन धर्म में चार प्रकार के दान का उपदेश दिया है परन्तु आजकल एक प्रकार का भी दान नहीं है सर्व दान में विद्या आदिक के प्रचार में अनाथ अंगहीन दीन की प्रति पालना में एक पैसा भी खर्च नहीं होता परन्तु कुपात्र दान मिथ्या प्रचार में विशेष धन व्यय हो जाता है इसी प्रकार की और बहुतसी कुरीति जैनियों में प्रचलित है जैनों की अत्यन्त दुर्दशा होगई है जैन प्रभाकर पत्र कई साल से अजमेर से जारी है उसमें प्रथम बार से पञ्च प्रश्न छपते हैं जिसमें प्रथम प्रश्न यह है कि जैनियों कि न्यून दशा होती जाती है वा नहीं सो इस प्रश्न के उत्तर में बड़े बड़े विद्वानों और धर्मात्मा ओंके लेख उस पत्र में छपते रहते हैं और सर्व यह ही कहते हैं कि अवश्य इसकी न्यूनदशा हो गई है ॥

जैनियों की न्यून दशा का कारण केवल यह ही ज्ञात होता है कि विद्या बिलकुल जाती रही है और विद्या प्राप्ति के कारण पाठशाला आदि नहीं रही हैं और फजूल खर्च आदि कुरीतियां बढगई पाठशालाओंके न होने और कुरीतियों के जारी होने का यह कारण मालूम होता है कि जैनियों में सभा नहीं होती है सब भाई इकट्ठा होकर विचार नहीं करते हैं और इस ही कारण से कोई उपाय नहीं हो

सकता है परन्तु यह खराबी एकही नगर में नहीं है नगर २ फैली हुई है इस वास्ते सर्व नगर के भाइयों का सुधार जरूरी है यह काम महासभा सेही हो सकता है जिसमें सब जगह के पर उपकारी भाई शामिल हों ॥

बडे हर्षकी वार्त्ताहै

कि महा सभा जिसकी बहुत बडी आवश्यकता थी चार अथवा पांच वर्ष से मेलअ श्रीजंबू स्वामी महाराज मुकाम मथुरा में नियत होगई है जिसके सभापति समस्त भारत वर्ष के विख्यात् और जैन कुलके परम शिरोमणि श्रीमान् सेठलक्ष्मण दासजी सी, आई, ई, हैं—परन्तु अभीतक इस सभा के कार्य बमसब न होने के किसी पत्र सभा सम्बन्धी के भाईयों पर प्रगट न होसके, लेकिन सं० १९५२ के मेलअ में सभा ने भाईयों की संमतिसे सभा के कामों कोपूरे तौर से चलाने का प्रबंध कर लिया है मगर यह सभा चार पांच वर्ष का बालक ही है इसमें सबसे प्रथम इस बात की आवश्यकता है कि हरनगर और ग्रामके मुखिया और परोपकारी धर्मात्मा विद्वान भाई इसमें शामिल हों और इसकी सहायता करें इस सभा ने जैन उद्धार का बहुत बडा बीडा उठायाहै और यदि जैनी भाईयों की सहायता रही तो निश्चय है कि अपने काम को पूरण कर दिखावेगी। इस सभा ने चार कामो का करना प्रारम्भ किया है ॥

---

(१) हर एक नगर और ग्राम में जैन सभा नियत कराना ॥
(२) हर एक नगर और ग्राम में जैनपाठशाला जारी कराना
(३) हर एक नगर और ग्राम से फजूल खर्च और कुरीति दूर कराकर शुद्ध आचरण में प्रवृतिकराना ॥
(४) एक ऐसी सूचक पुस्तक तैय्यार कराना जिससे यह मालुम होकि किस २ नगर में जैनी भाई बास करते हैं और प्रत्येक नगर में कितने भाई किस फिरकेया गोट के रहते हैं कितने जैन मन्दिर हैं। धर्म और व्यहार आदिक का क्या हाल है और ऐसी बातें जिससे जैनियों का हाल मालुम हो। [illegible]

से जो महासभा ने करना प्रारम्भ किये हैं मालुम हो सकता है कि जैन कौमकी रक्षा के वास्ते कैसे तौर से महासभा तैयार हुई है ॥

॥ जैन सभा ॥

यह बात सब लोग जानते हैं कि जिस काम को चार आदमी मिलकर करतें हैं वह कार्य आसानी से हो जाता है और यदि चार आदमी अलग अलग करैं तो कार्य नहीं होता और होता है तो बडी मुश्किल से होता है इस वास्ते एक २ नगर के भाई सभा नियत करलें और धर्म उन्नति और जाति उन्नति मिलकर करें तो अवश्य उन्नति हो सकती है हमारी जैन कौम में पहिले सभा अर्थात् पञ्चायत का बहुत रिवाज था इसही कारण हर एक काम सुलभता से होता था । पञ्चायत से जो बात मंजूर हो जाती थी वह सबको स्वीकार करनी पडती थी और कोई इसके विरुद्ध न कर सकता था इसही वास्ते कोई ऐसा काम न कर सकता था जो जैन कुल वा जैन धर्म के विरुद्ध हो । परन्तु अब यह प्रथा कम हो गई है । इस वास्ते जैनी भाईयों को चाहिये कि सबसे पहिले जिस तरह हो सके अपने २ नगर में सभा नियत करलें । सातवें दिन सब एकत्र हुवा करें और धर्म उन्नति और जाति उन्नति के उपायों को सोचा करें और उसका प्रबंध किया करैं जो जो दुःख दाई और बुरे प्रचार हो रहे हैं उनको दूर करैं और व्याख्यान और उपदेश आदिक से एक दूसरे को धर्म मैं लगने की प्रेरणा करते रहैं जैन महासभा मथुरा में पण्डित चुन्नी लाल मुरादाबाद निवासीको जोकि धर्म उपकार मैं तन मन धन से लगे हुए हैं और जिनकी कोशिश से बहुत कुछ उपकार हुआ है प्रत्येक नगर की सभाओंके इंतिजाम और निगरानी के वास्ते अ-

पना समपादक नियत किया है इस वास्ते सभाके नियम आदिक पण्डित जीसे मालुम करने चाहिये और सभाकी हर एक कारखाई की बावत उनसे पत्र व्यवहार करना चाहिये। उनसे हर एक प्रकार की सहायता मिलेगी। और सभा की कारखाई पत्र में छपने के लिये मेरे पास देव बंद भेज देनी चाहिये॥

॥ जैन पाठशाला ॥

यह उत्कृष्ट जैन धर्म बगैर तत्व ज्ञान के नहीं पालन किया जा सक्ता है। तत्व ज्ञान बिना शास्त्र ज्ञान के नहीं हो सक्ता है। इस वास्ते हर एक जैनी को शास्त्र ज्ञाता होना चाहिये। जैन शास्त्र संस्कृत और हिन्दी भाषा में हैं इस वास्ते शास्त्र स्वाध्याय के लिये संस्कृत का जानना जरूरी हुवा अर्थात हर एक जैनी को पण्डित बनना लाजमी है परन्तु आज कल हर एक जैनी तो क्या पण्डित बनेगा १०० में एक भी कुलजैनियों में शास्त्र ज्ञाता नहीं है वरन बहुत से तो ऐसे अज्ञान हैं कि नवकार मंत्र भी शुद्ध उच्चारण नहीं करसके हैं इस वास्ते जैन धर्म के कायम रखने के वास्ते सब से जरूरी बात यह है कि धर्म विद्या का प्रचार किया जावे अर्थात हर एक नगर और ग्राम में जैन पाठशाला नियत की जावें और जैनी भाई अपने बालकों को उस पाठशाला में धर्म विद्या सिखावें॥ सो जैनी भाईयों के लिये यह कोइ मुशकिल बात नहीं है॥ प्रत्येक नगर के भाई अपने २ नगर में इस कदर चिट्ठा कर सक्ते हैं जिससे माहवारी खर्च पाठशाला का चलता रहै। महासभा ने प्रत्येक नगर की पाठशालाओं के प्रबंध और इन्तजाम और निगरानी के वास्ते पण्डित प्यारेलाल अलीगढ निवासी को समपादक मुकर्र किया है पण्डित प्यारेलालजी विद्या उन्नति करने में बडे मशहूर हैं और बड़ा उपकार करते रहते है सो प्रत्येक नगर के भाई पाठशाला जारी करने की बाबत हर एक प्रकार की मदद पण्डित जीसे लेवे और जहां जहां कि अब पाठशाला जारी हैं वहां के भाईयों को चाहिये कि पाठशाला का पूरा २ हाल पण्डित जीको लिखें और उनसे हर एक बात की सलाह लेवें॥

फजूल खर्च।

व्याह शादी और मौत आदिक के खर्च हमारे बिरादरी में बहुतही ज्यादा

बढ गये हैं सारी उम्रकी कमाई भी ऐसे खर्चों के वास्ते काफी नहीं होती इस ही कारण हर समय खर्च की चिन्ता रहती है । किसी को बेटे के विवाह की फिक्र है किसी को बेटी का मुकलावा करना है । किसी का बुड्ढा बाप मरगया है इस कारण से बिरादरी की जौनार करनी है । इस चितामें सब भाई लगे हुए हैं और ऐसी चिता होने की वजह से और खर्च कमाई से ज्यादा होने की वजह से चित्त व्याकुल रहता है और कोइ काम धर्म का नहीं किया जासक्ता है बरन द्रव्य उपार्जन के वास्ते बेईमानी दगाबाजी छल फरेब करना पडताहै । मेरी समझ में जब तक कि हमारी बिरादरी में फजूल खर्ची का प्रचार रहेगा तबतक कोई धर्मात्मा नहीं हो सक्ताहै । इस वास्ते सब से पहले परोपकारी भाइयों को यह चाहिये कि फजूल खर्ची को बिल्कुल दूर करने की कोशिश करें । हर एक नगर के भाई पञ्चायत करके इसका प्रबंध करसक्ते हैं । महासभा की तरफ से लाला मूलचन्दजी वकील मथुरा निवासी फजूल खर्ची दूर करने के वास्ते सम्पादक बनाये गये हैं । इस वास्ते फजूलखर्ची दूर करनेके उपाय की बाबत चिट्ठीव्यवहार लाला मूलचन्दजी से करनाचाहिये ॥

सूचक पुस्तक

जैनियों की वात्सल्यता जैनियों की परस्पर प्रीति जगत विख्यात है और जैनियों की परोपकारता मशहूर है परंतु एभाइयो ! जबतक हम को यह मालूम नहीं कि हमारे जैनीभाई किस किस नगरमें रहते हैं उस नगरमें कितने मंदिर हैं उस जगह के भाइयों के धर्म सेवन का क्या हाल है और धर्मसंबंधी दशा कैसी है हरएक नगर में पण्डित कोन कोन है शास्त्रजी का व्याख्यान कोन करता है पूजाप्रक्षालनादि किस तरह होता है । मिथ्या का प्रचार तो नहीं है आचरण उस नगर के लोगों का कैसी है उस नगर की रीति रस्म कैसी है । विवाह शादी आदिक में खर्च किस तरह होता है कोई सभा और पाठशाला है या नहीं उस नगर में परोपकारी धर्मात्मा पुरुष कौन कौन है इसही प्रकार हर एक नगर की ऐसी ऐसी बातें व्योरेवार जब तक हम को मालूम नहीं अर्थात् कुल जैनियों का हाल मालूम नहीं तब तक हमारी वात्सल्यता और धर्मप्रभावना कुछ भी नहीं है सिवाय इसके जब तक कि यह सब हाल व्योरेवार मालूम नहीं तब तक धर्म उन्नति भी नहीं कीजा सक्ती है इस प्रकार से महासभा ने हकीम उग्रसेन सरसावा जिला सहारनपुर

निवासी का इस बात के वास्ते नियत किया है कि वह हर एक नगर की बाबत सारा हाल ब्योरेवार मालूम करके कुल्ल भारत के जैनियों की बाबत एक सूचक पुस्तक बनावें । सो भाई साहब यह पुस्तक बहुत बडी उपकारी होगी इस कारण से इस पुस्तक के बनने में सब जैनीभाईयों को सहायता देनी चाहिये वह सहायता इस प्रकार दीजा सक्ती है कि अपने अपने नगर का हाल ब्योरेवार लिखकर हकीम उग्रसेन के पास भेजदेवें और अपने देश के नगरों के नाम लिखभेजें जिसमें जैनीभाई रहते हों और यह भी लिखें कि प्रत्येक नगर में कौन कौन भाई ऐसे उपकारी हैं जिन से चिट्ठा भेजकर उनके नगर का हाल पूछलिया जावे ॥

जैन विवाह

आज कल जैन शास्त्रों के पढने का प्रचार कम होजाने और मिथ्या का प्रचार अधिक होने की वजह से यह रीति प्रचलित होरही है कि विवाह के समय कुलदेवादिक की पूजा होता है संसारी पुरुष के वास्ते विवाह से ज्याद और कोई कार्य नहीं है ऐसे महान् कार्य में जैनोंमें कुलदेव आदिक का पूजना और मिथ्यात्व की रीति से विवाह का कार्य करना बहुत ही अयोग्य बात है परंतु यह प्रचार किसी एक नगर में नहीं है बरन सब जगह यह ही रिवाज मालूम होती है श्रीजिनसेन् आचार्य जैनियों में बडे मशहूर आचार्य हुए हैं उनकी बनाई हुई जैनविवाह पद्धति मौजूदहै उसमें उन्होंने विवाह की सब रीति निज मतानुसार वर्णन करदीहै और पूजनादिक की विधि लिखी है बडे शोक की बात है कि जैनियों में विद्या की हीनता इतनी होगई है कि बहुत से नगर वासियों को इस शास्त्र का नाम भी नहीं मालूम है ।

नकुड जिला सहारन पूर जिस जगह का मै रहने वाला हूं वहां पर पण्डित लालजीमल व लाला ज्ञानचन्दजी साहबने जैनियों में विवाह के समय कुलदेवादिक की पूजा होती हुई देखकर बहुत खेद किया और उन्होंने इस बात की तलाश की कि जैन मत की रीति मालूम होजावे सो उनको यह शास्त्र मिलगया परंतु पुरानी रिवाज दूर करके नवीन रिवाज चलाना बहुत मुश्किल होता है चाहे नवीन रिवाज कैसाही शुभ और गुणदायक हो इस वास्ते श्रीजिनसेन आचार्य विवाह पद्धति की विधि को उन्होंने कठिन देखकर इसका प्रचार पहले पहल मुश्किल जाना इस वास्ते उन्होंने

एक विवाह पद्धति संक्षेप मात्र बनाई जोबहुत ही सुगम है। इस पद्धति का प्रचार नकुड सरसावा रामपुर चिलकाना आदि नगरों में इस जोर से हुवा कि विवाह जिन मतानुसार ही होता है इससे विपरीत कदाचित नहीं हो सका है और इसके सिवाय और पचासों नगरों में भी इसका प्रचार हो गया है परन्तु कोइ विवाह जिन मतानुसार और कोई विवाह मिथ्यात्व की रीतिसे हो जाता है॥ पण्डित रूपचदास साहब चिलकाना जिलासहारनपुर निवासी जो बडे गुण वान है तीन साल हुए उन्हों ने अपनी बेटीके विवाह में सबरीति श्रीजिनसेन आचार्यकीविवाह पद्धति के अनुसार कराई और उसकी विधि सब भाईयोंको दिखाई। इसके पश्चात लाला हींगनलाल साहब रईस नकुडने भी अपनी बेटीके विवाह में इसही विधि से कार्य कराया और यह कार्य सब पण्डित रूपचदासजी ने कराया उसके पश्चात लाला निधिलाल साहब देवबंद निवासी ने भी अपनी बेटी का विवाह इसही रीति से कराया पण्डित रूपचदास व लाला हींगलाल की बेटी के विवाह का वृत्तांत जैनप्रभाकर पत्र अजमेर में प्रकाशित कराया गया था जिसपर बम्बई से भाईयों को भी जैन विवाह पद्धता के होने का हाल मालुम हुवा सो वहां परभी दो तीन विवाह इस ही पद्धति के अनुसार हो गये है। जैनीभाईयों कोचाहिये कि मिथ्यात्व को त्याग विवाह जैसे महान और शुभ कार्य में सच्चे देव को ही पूजा करें और अपने धर्म अनुसार ही प्रवरतें श्री जिनसैन आचार्य कृत विवाह पद्धती और छोटी पद्धती दोनो हमारे पास मौजूद हैं जो भाई चाहें हमारे पास से प्रति मंगा लव।

स्त्रीशिक्षा

जैनियों में विद्या की कमी क्यों होगई? इसका कारण हमारी समझमें यही आताहै कि मनुष्य बाल पन से जैसी शिक्षा पाता है वह सारे जन्म वैसा हि होजाताहै। बाल पन में बहुधा करके माता और अन्य स्त्रीयों के पास रहना होता है। सो यदि माता विद्वानगुणवान बुद्धिवान चातुर और धर्मात्मा होतो बालक भी वैसीही बातें सीखैगा और यदि माता मूर्ख और मिथ्यातीहोतो फिर बालकधर्मात्मा और शुद्ध आचरण कैसे हो सक्ता है। सो हमारे जैनियों में र्ह

थों के पढने का प्रचार बंद होग या है इस ही कारण से स्त्रीयें मूर्ख हैं धर्म से विमुख और मिथ्याती होती हैं फिर उन के बालक भी ऐसे ही होने चाहिये। अब भी जो स्त्रीयें गुण वान हैं उन के बालक भी गुण वान ही देखे जाते हैं। हमारे यहां कसबह नकूड जिला सहारन पुर में भाई दयाचंद निहाल चंद की माता शास्त्र पढी हुई हैं वह नित्य शास्त्र बांचती है और अन्य स्त्रीयां शास्त्र सुनने के वास्ते उन के पास आती हैं। इस कारण से भाई दयाचंद निहालचंद और उन की बहिन आदिक सब धर्मात्मा और गुण वान हैं और शास्त्र पढे हुए हैं। क्यों न हों ! जब माता गुण वान हैं तो औलाद गुण वान जरूरही होगी। इसही प्रकार हमने सुनाहै कि पण्डित प्यारे लालजी साहब अलीगढ निवासी की बहिन शास्त्र पढी हुई हैं। देहली की स्त्रीयों में वह शास्त्रजी का व्याख्यान करती हैं और धर्म सिखाती हैं इसही प्रकार और भी स्त्रीयें पढी हुई हैं और धर्म का उपकार करती हैं अगर स्त्रीयों को पढाने का प्रचार होता और सब स्त्रीयें पढी हुई होतीं तो इस जैन धर्म और जैन कौम की ऐसी न्यून दशा कदाचित् न होती सब धर्मात्मा होते और मिथ्यात्व का नाम भी जैनियों में न पाया जाता फजूल खर्ची और अन्य रीतियें भी न होतीं इसवास्ते जैनी भाईयों को चाहिये कि यदि वह जैन मत उन्नति चाहतेहैं और इस कौम से खराबी दूर करने की इच्छा रखते हैं तो स्त्री शिक्षा का उपाय अवश्य करें॥

॥ उपकार ॥

इसमें कुछ संदेह नहीं है कि विद्या प्रचार और फजूल खर्ची आदिक दूर करने और शुभ आचरण धारण करने की बडी भारी जरूरत है परन्तु इसका प्रचार किस तरह हो। यथार्थ तो यह बात है कि बडे आदमी जिस काम को किया करते है उसही कामका सब करने लगजाते हैं। बडप्पन चाहे धन दौलत में हो चाहे विद्या में हो चाहे अधिकार में हायवा किसी और प्रकार हो गरज यह है कि जिसको अन्य पुरुष बडा मानते हों वह जैसा काम करता है वैसाही प्रचार हो जाता है और

यह कहावत भी है कि यथा राजा तथा प्रजा इस वास्ते हमारे जातिके महान पुरुषों से विनय सहित हाथ जोड प्रार्थना है कि वह अपनी जाति की भलाई उपकार और उन्नति के वास्ते किंचित मात्र भी इस तरफ दृष्टि देवें तो उनके थोडे से परिश्रम से बहुत कुछ कार्य हो जावेगा उनको पुण्य बंध होगा और उनके छोटे भाईयों का उपकार होगा यदि हर नगर और ग्राम के मुखिया पञ्च चोधरी धनवान और और गुणवान पुरुष इस बातको चाहैं कि उनके ग्राम में जैन पाठशाला नियत हो जावें और जैनीयों के बालक उनमें विद्या सीखें तो क्या पाठशाला के जारी होने में कोई विलम्ब हो सकता है कदाचित नहीं । और यदि ऐसे अग्रवानी पुरुष अपने नगर और बिरादरी से फजूल खर्ची और कुरीति आदिक दूर करना चाहै तो क्या फिर भी फजूल खर्ची रह सक्ती है हरगिज नहीं; फिर तो कुरीति और फजूल खर्ची का नाम भी नहीं रहैगा । और सारी बिरादरी घोर दुख से बचकर धर्म में प्रवर्त ने लगगी । परन्तु हम एक बात यह भी लिखते हैं कि यदि किसी नगर के मुखिया लोग अपने बडप्पन के गरूर में आकर अपने से छोटे भाईयो की तकलीफ का कुछ ख्याल न करें और उनके उपकार पर दृष्टि न देवें और विद्या प्रचार और फजूल खर्ची और कुरीति आदि के दूर करने को बुरी बात समझें तो हमारे अन्य भाईयों को उन पर ही भरोसा करके चुप नहीं बैठना चाहिये । निःसंदेह बडे आदमियों के करने से वह काम आसानी से होतो जाता है और छोटे आदमियो को जियादा परिश्रम करना पड़ता है परन्तु कोशिश से सब काम आसान हो जाता है इस वास्ते कोशिश जरूर करनी चाहिये अगर दूसरा पुरुष हमारा उपकार न करे तो क्या हम भी अपना उपकार न करें। यह बात अक्ल से बाहर है । इस वास्ते जितना किसी से हो सके शुभ कार्य में यत्न करना चाहिये अव्वल तो यत्न वृथा जाया ही नहीं करता कार्य अवश्य होता है और यदि कार्य न भी हो तो चूंकि शुभ कार्य के वास्ते यत्न किया गया पुन्य तो अवश्य ही होगा ॥

फ़जूल खर्ची
दूर होने लगी ॥

हकीम उग्रसैन और पंडित थ... सिंह के साथ मैं सितम्बर महीने नजीबा बाद गया था वहां पर ... भाई एकत्र हुए व्याख्यान कहे गये नजीबा बाद के भाईयों ने अपने य... सभा कायम करली और उसही व

फज़ूल खर्चो को दूर करने के वास्ते बन्दो बस्त किया । और बहुत से फ़जूल खर्च दूर करने का प्रबंध किया परन्तु उनन्होंने यह कहा कि हमारा व्यवहार जिले बिजनौर के अन्य नगरों में होता है इस कारण यदि जिले बिजनोर के अन्य ग्रामों के भाई भी इसही प्रकार प्रवर्तना पसंद करें तो कार्य में किसी प्रकार की मुशकिल नहीं होवेगी सो नजीबा बाद के भाइयों ने हमको एक फेरिस्त उन फजूल खर्चों की लिखकर दी जिनको वह छोडना चाहते थे हम धाम पर नहटौर शेरकोट सेवहारा अर्थात् जिलेअ बिजनोर के अन्य नगरों में गए और वहां की बिरादरी को नजीबा बाद के भाईयों की फेरिस्त दिखाई तो उन्होंने उसको बहुत पसद किया और कहा कि नजीबाद के भाई जिस दिनसे इसको प्रचार देंगे उसही दिन से हम भी इसही रूप सप्रवर्तने लगेगे सो निश्चय है कि जिले बिजनौर से इस प्रकार फजूल खर्ची दूर हो गई यदि अन्य देश देशांतर के भाई भी इसही प्रकार पंचायत करके फ़जूल खर्चो को दूर कर देवें तो क्या मुशकिल बात है ॥

॥ धर्म रुचि ॥

जैनियों की धर्म सभा बना जगत बिख्यात है और इसमें कुछ संदेह भी नहीं है कि यद्यपि आज कल जैनियों में विद्या की बहुत कमी हो गई है और अपने धर्म से बहुत ही अनजान हो गये है परन्तु तो भी धर्म के मामले में जैसा तन मन धन अब भी जैनी लोग लगाते हैं ऐसा कोई अन्य मती नहीं लगाता—देख लो जैनमत का एक एक आदमी एक २ पूजा प्रतिष्ठा में लाख २ रुपये से जियादा खर्च कर देता है यद्यपि जैनी आज कल इस भारत वर्ष में अन्य जातियों की अपेक्षा बहुतही थोड़े हैं परन्तु तो भी जैनियों के मंदिर बडी २ लागत के हैं जैनियों का इत्तफाक और मेल मिलाप ऐसाबढा हुवा है कि मेला करने वाला केवल एक चिट्ठी भेज देता और लाखों जैनी परिवार सहित एकत्र हो जाते है । धर्म के मुआमले में जैनी लोग बहुत उदार हैं । जब जैनियों की धर्म कार्य में ऐसी हालत है तो यह प्रश्न पैदा होता कि जैनियों में विद्या की हीनता क्यों हो रही है जिसके कारण परो उपकारियों को बडा भारी फिक्र हो रहा है । इस का जवाब यही है कि जैनी भाईयों की दृष्टि अभी तक इस पर नहीं पडी है कि धर्म के चिरस्थाई रहने के वास्ते और धर्मात्मा बन्ने के लिये विद्या की बहुत बडी आवश्यकता है । हमको पूर्णआशा हैकि जब जैनी भाईयोंको यहमालुम हो जावगा कि धर्म का उपकार विद्या बुद्धि हीसे होताहै और विद्याबिदून सब कार्यऔरसब प्रभावना वृथा हैं तो यदि

१	,,	व्याकरण....शाकटायन प्रक्रिया वा कातन्त्ररूपमाला पंचसंधिः
,,	,,	गणित......ग्यारह राशी तक
२	,,	धर्मशास्त्र....द्रव्यसंग्रह और पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय,
,,	,,	व्याकरण....शाक० प्र० अथवा का० रू० मा० षड्लिंग
,,	,,	काव्य.......भक्तामर स्तोत्र कंठ अर्थसहित,
,,	,,	गणित.......भिन्न और दशमलव,
३	,,	धर्मशास्त्र....तत्वार्थसूत्र कंठ अर्थसहित
,,	,,	व्याकरण....शाक० प्र० अथवा का० रू० मा० पूर्वार्द्ध,
,,	,,	न्याय.......न्याय दीपिका प्रथम प्रकाश.
,,	,,	काव्य.......चंद्रप्रभ चरित सर्ग १—२—३—४
,,	,,	गणित... वर्ग व० मूल घन घनमूल
४	,,	धर्मशास्त्र....सर्वार्थसिद्धि पांच अध्याय
,,	,,	व्याकरण....शा० प्र० अथवा का० रू० तिङन्त समाप्त
,,	,,	न्याय.......न्यायदीपिका तर्क प्रमाण...
,,	,,	काव्य.......चंद्रप्रभ चरित सर्ग ९ पर्यं...
,,	,,	गणित.......अंकगणित पूर्ण
५	,,	धर्मशास्त्र.... सर्वार्थसिद्धि पूर्ण
,,	,,	व्याकरण....शा० प्र० अथवा का० रू० मा० समाप्त
,,	,,	न्याय.......न्यायदीपिका समाप्त
,,	,,	काव्य.......धर्मशर्माभ्युदय ७ सर्ग पर्यन्त
,,	,,	गणित.......रेखागणित प्रथम भाग और बीजगणित
धं.प.२वर्ष		धर्मशास्त्र....राजवार्तिकजी पूर्ण
,, २ वर्ष		व्याकरण....जैनेंद्रमहा वृत्ति पूर्ण
,,	,,	न्याय.......प्रमेयरत्न माला नयचक्र संस्कृत
,,	,,	काव्य.... द्विसन्धानकाव्यऔरअलंकारचिंतामणिपूर्ण
शा २वर्ष		प्रथमानुयोग महापुराण पूर्ण
,,	,,	करणानुयोग....त्रैलोक्यसार. गोमटसार,लब्धिसारक्षपणासारपूर्ण
,,	,,	चरणानुयोग....मूलाचार पूर्ण
,,	,,	द्रव्यानुयोग....समयसार प्रवचनसार पंचास्तिकायश्लोकवार्तिकपूर्ण
,,	,,	न्याय.........प्रमेयकमलमार्तण्ड और अष्टसहस्रीपूर्ण
,,	,,	व्याकरण शाकटायनअमोघवृत्तिप्रभाचंद्राचार्यविरचित न्यायसहित
,,	,,	काव्य.... यशस्तिलकचम्पू

बंबई मित्र प्रेस में यह पत्र छपा मथुरा

उपदेशक का शब्द
बहुत से भा... ...

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखावें ॥

जैन गजट

यह पत्र सप्ताहिक है अर्थात् एक महीने में चार बार प्रकाशित होता है ॥

बाबू सूरजभान वकील के प्रबंध से देव बन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होता है ॥

यह पत्र हर अंगरेजी महीने की १-८-१६ और २४ ता० को भाईयों की सेवा में हाजिर हुआ करेगा ॥

प्रथमवर्ष	दिसम्बर सन् १८९५ ता० ८	अङ्क २

॥ प्रार्थना ॥

हमने जैनगजट का प्रथम अङ्क नमूने के तौर पर भाइयों की सेवा मैं भेजाथा कि इसको देखकर इस गजट की खरीददारी वा इंकार से हमको सूचित करदेवें गे ॥ शायद पहले अङ्क को किसी भाईने न देखाहो इसकारण हम दूसरा अङ्क भी भेजते हैं इसको देखकरकृपा करकेयदि यह गजट सातवें दिन मगाना होतो हमको लिखभेजें और यह नमूनेके परचे सब जैनी भाईयो को दिखावें कीमत इस पत्रकी केवल ३) रु० साल है अर्थात् तीन रुपये लेकर एक वर्ष तक सातवें दिन यह पत्र भेजा जाया करैगा ॥

यह पत्र सब जैन भाईयों को लेना चाहिये और प्रत्येक जैन मंदिर मैं तो एक पत्र अवश्यही आना चाहिये ॥

हमको कुल भारत के उन न·

„ „ व्याकरण

„ „ गणित मालूम नहीं हैं

२ „ „ भाई रहते हैं और जहां जैन मन्दिर हैं और जहां यह पत्र नमूने का भेजना चाहिये और उन भाईयों के नाम भी मालूम नहीं है जिनके पास अलग यह पत्र नमूने का भेजना चाहिये इस वास्ते भाईयों से यह प्रार्थना है कि अपने अपने देश के नगरों और उन महाशयों के नाम की एक फेरिस्त बनाकर जल्दी भेजें जहां यह पत्र नमूने का भेजा जाना चाहिये भाईयों से यह भी प्रार्थना है कि वह अपने २ नगर का हाल जैन समाज संबधी अवश्य लिखते रहैं ॥

कीमत इस पत्र की चाहे मेरे पास भेजी जावे चाहे श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास साहब सी, आई, ई, के पास मथुरा भेज दी जावे । परन्तु कीमत के भेजने से पहले इस पत्रकी खरीदारी की मंजूरी हमारे पास लिख भेजना चाहिये ॥

श्रीहस्तनागपुर ॥

श्रीहस्तनागपुर क्षेत्र मेरठ नगरसे २० मील और खातोली से १५ मील है इस वक्त वहां बिलकुल उजाड है आबादी नहीं हैं इस क्षेत्र में शांत नाथ स्वामी कुंथनाथ स्वामी अरह नाथ स्वामी तीन तीर्थं करों का जन्म हुवा है उनकी नसया बनी हुई हैं यहां पर दिगम्बरों का एक बहुत बडा मन्दिर है और एक मन्दिर स्वेताम्बरों का भी है इस जगह यात्राके वास्ते बारह मास भाई आते रहते हैं और कार्तिक शुक्ला में यहां पर हरसाल मेला भी होता है यह मेला दशमी वा एकादशी से शुरू होता है और पूर्ण मासी तक रहता है पूर्णमासी को रथ यात्रा होती है । इस जगह मेले में बाहर से मन्दिरजी भी आते हैं और दूर २ से भाई आते हैं बहुत बडा आनंद रहता है अबकी बारदो मन्दिरजी आये थे एक सरसावा जिले सहारन

पुर से दूसरा जानसठ से जो जिले मुजफ्फर नगर में है। हकीम उग्र सैन सरसावा निवासी की कोशिश से सरसावाके मन्दिर जीमें चौदश के दिन सभा हुई। करीब तीनसौ भाईयों के जमा हुये। पण्डित जीयालाल साहब प्रतिष्ठित उपदेशक फर्रुखन नगर निवासी का व्याख्यान हुवा यद्यापि सभा के प्रारम्भ में यह नियम करादिया गया था कि पण्डित जियालालजीके पश्चात पंडित पन्नालालजी का व्याख्यान होगा इस कारण पंडित जियालाल साहिबने अपना व्याख्यान बहुत संकोच के साथ कहा। परन्तु इनके व्याख्यान समाप्त होने पर पण्डित पन्नालालजीने व्याख्यान कहनेसे इनकार किया इसवास्ते लाचार सभा विसर्जित की गई तमाम सभा पण्डित जियालाल साहिब के उपदेश से बहुत आनंदित हुई और तृप्त न हुई॥

पण्डितजियालाल

साहिब॥

पंडित जियालालजी के नाम के साथ प्रतिष्ठित उपदेशक का शब्द लिखा हुवा देखकर बहुत से भाईयों को इसका आशय समझ में न आया होगा सो वर्णन किया जाता है। छै सात मास से जैनी उपकारी भाईयों ने जैन कौम को अविद्या रूपी अंधकार में फंसी हुई देखकर यह विचार किया है कि यदि विद्वान पण्डित देश विदेश भ्रमण करके जैनी भाईयों को जगाकर धर्म में लगावें तो बहुत बडा उपकार हो और जैन कौम की अवनति दूर होकर फिर उन्नति हो जावे यह विचार करके उन्होंने इस काम के खर्च के वास्ते भंडार एक त्रित किया जिससे उपदेशकों को तनख्वाह और सफर खर्च दिया जावे ऐसा भण्डार कुछ इकठा हो गया है और होता जाता है इस भण्डार के मुंतजिम मुंशीचम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट इटावा हैं और अब यह भंडार महासभा मथुरा के मातहत हो गया है पण्डित जियालाल साहब फरुख नगर जिला गुडगांवा के रईस हैं और ज्योतिष में विख्यात हैं उनका बनाया हुवा पञ्चाङ्ग हर वर्ष सर्व माननीय होता है पण्डित साहब को हमेशा से जैनोन्नति का बडा भारी ख्याल है और हर तरह की कोशिश तन मन धन से करते रहते हैं बहुत दिन हुये इन्होंने एक जैन अखबार भी जारी किया था पण्डित साहब ने इस प्रकार

उपदेशक की काररवाई का प्रबन्ध जानकर और इससे धर्म का बहुत बड़ा उपकार समझ कर तुरन्त यह इच्छा करी कि बिना तनख्वाह के केवल सफर खर्च लेकर देश बिदेश भ्रमण करेंगे और अपने सदुपदेशो की बल्ली से जैन कौमकी डूबती किश्ती को अविद्या रूपी भंवर से निकालेंगे सो आप देश विदेश दौरा करते हैं और अपने उपदेशों से भाईयों को आनंदित करते हैं इस कारण से आप प्रतिष्ठित उपदेशक हैं धन्य है ऐसे परोप कारी पुरुषों को जो अपने धर्म और कौम के उपकार के वास्ते इतना परिश्रम करते हैं ऐसा उपकारी पुन्यवान पुरुष बिरलाही होता है आपने उपदेशक भण्डार में १२७ रु० चन्दा भी दिये हैं अर्थात् तन मन धन से कौम का उपकार करतेहैं ॥

जैनकौमकी

अवनतीका कारण

श्रीयुत पण्डित भोलेलालजी सेठ साहब सवाई जैपुर का एक लेख चार पांच वर्ष हुये जैन प्रभाकर में छपा था इस लेख को उपकारी समझ कर हम संक्षेप से इस पत्र में लिखते हैं प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर है कि पहले की वार्ता सुनने से बल्कि दस बीस बरस के जमाने [गुजरेहुये] की वार्ता देखने से हम जैनी लोगों की सब वार्ता ओं में न्यूनता हीनजर आती है। मनुष्यों की संख्या और धर्म की प्रवृत्ति वा विद्या का पढ़ना और लोका चार का जानना और धनका कमाना और उमर का पाना और उत्तम आचरण का करना और अनुवृतादि का पालना और प्रतिज्ञा का निर्वाह करना और शुद्ध खान पान का होना और उज्जलता दीखना और न्याय में चलना और शील संतोषादि का रखना यह सब हीन दशा में हैं बल्कि दिन २ प्रति हीनता होती जाती है ॥

श्रीजिना गम में काल के अंत तक धर्म रहना और मुनि श्रावक का होना लिखा हैं सो काल के अंत का बहुत जमाना बाकी है आज कल की दशा तो अंत का दशा से बहुतही अच्छी होनी चाहिये परन्तु अब की दशा तो अंत काल की दशा से भी बहुतही खराबहै तो अवनती और न्युन दशा होने में क्या शक है अब हम को उद्यम और पुरुषार्थ पर आरूढ होना चाहिये और न्यून दशा के कारण तलाश कर उन को दूर करना चाहिये ॥

प्रथम धनाढ्य पुरुष हैं सो अपने पुत्र पुत्री का बिवाह बाल्या वस्था में

करदेतेहै औरकुमारा वस्थाविद्या पढने कासमयहै नकि विषयभोग सेवनकासो वह बालक विद्या हीन हो कर विषय सेवन में लग जाता है जिस से विद्या रहित हुये धन रहित हुये निरबल हो कर अल्प आयु पाकर छोटी अवस्था में मरण कर जाते हैं न तो उनकी संतान चलती है औरन वह कुछज्ञाना भ्यासादि पुरुषार्थ करसक्ते हैं ॥ और इसही तरह मध्य दशा के पुरुष जो न तो धनाढ्य कहाते और न निधर्न कहाते हैं अज्ञान और मोह के बल से अपनी अवस्था को तो देखते नहीं और अभिमान के वश होकर धनाढ्य पुरुषों को देख २ उसी रीति चलते हैं सो वह भी निर्धन औ दरिद्री होकर पश्चत्ताप और शोक के समुद्र में डूब जाते हैं और अपनी संतानको बिगाड़ देते हैं। और कनिष्ठ दशा वाले दरिद्री जिनको पेट भरनाही कठिन है उनके विवाहादि नहीं होते और न विद्या पढ सकते हैं कष्ट से आयु पूर्ण करते हैं उनके संतान और ज्ञानाभ्यास कहां से होवै और इसीतरहजो बालकन्या है उसका सम्बन्ध यातो धनाढ्यके बालक के साथ होता है सो बहुधा बाल विधवाहो जातीहैं याउनके सन्तान नहीं होती या बहुधा वृद्ध के साथ सम्बन्ध हो जाता है तो वह भी वृद्धताके योग से थोडे काल में मर जाता है इस सूरत में वह भी बाल विधवा हो जाती है। पस मुख्य कारण जातिकी न्यूनता का यहही मालूम होता है कि बाल विवाह और वृद्ध विवाह। दूसरे इस समय में धनाढ्य पुरुष तो बहुत बिरले हैं और कम रोजगारी निर्धन बहुत हैं सो धनाढ्य तो अपनी उच्चता के अभिमान से मर्य्याद उल्लंघन कर *शादी विवाह में धन लगादेते हैं और* पीछे उनके देखा देखी थोडी पूंजी वाले भी अपनी मकदूर के सिवाय धन खरच कर देते हैं और करज दार हो जीव का जिमीन जायदाद जेवर बेच कर दरिद्री हो जाते हैं पीछे उनको अपना निर्वाह करना भी मुशकिल पड़ जाता है और आप विद्या और इल्म कुछ पढे नहीं जो अपनी अवस्था का विचार करते और आमद से खरच कम करते और चतुर्थांश संचय करते अपने अभिमान पुष्ट करने को वृथा अपने वित्तसे अधिकनधन खरचते हैं या हीमुख्य कारण धनकी न्यूनता काहै ॥

तीसरे धनाढ्य पुरुषतो धनका मद करके अपने बालक को विद्या नहीं पढाते और निर्धनोंके लडके पेट भरनेकी फिक्र में डांवां डोल फिरते हैं अपनी उत्तम अवस्था को नहीं सोचते पैं टके रोजीना के रोजगार के वास्ते अ

पने अमूल्य समय को व्यतीत कर देते हैं। तब कैसे न्याय व्याकर्ण सिद्धान्त का ज्ञान होय और क्योंकर चार अनुयोग के रहस्य को जानैं और मनुष्य भावकी दुर्लभ ताको पहचाने और इस लोक परलोक के कार्यको सिद्ध करैं जब विद्या हीन रहे तो धर्म हीन अवश्य होंगे और धर्म हीन भये तो धन रहित भी जरूर होंगे और धन नहीं हुवा तो क्योंकर दोनों लोक में उनको सुख मिल सकेंगे। कोई ऐसी शंका करै कि धन तो कर्मानुसार बिना परिश्रम होता है उद्यम किये से क्या होता है अगर पुन्य कर्मका योगहो तो विद्या धन सब स्वय मेव मिलैंगे उस पुरुष ने पुन्यकर्म को समझा नहीं पुन्य क्या वस्तु है और कैसे प्राप्त होता है जो इस पर दलील लिखी जावे तो प्रकर्णा तर होकर विस्तार होता है सो विद्या धन वा धर्म की हीनता का यही कारण है कि प्रथम अवस्था में अपने सन्तानको स्वम तावलंबनी विद्या का न पढाना ॥

हमारे नगर निवासी बहुधा जैनी लोग ऐसै देखने में आते हैं कि वे वेश्या के नृत्य में देने और ज्योनार जिमाने मैं बडे पुरुषार्थी और धनाढ्य और दातार बन जाते हैं और विद्या पढाने और पाठशाला मैं देने को कम ताकत और दरिद्री हो जाते हैं फिर क्योंकर विद्या धन धर्म और जातिकी उन्नति होवे ॥

मेरे ख्याल में इन सबकी वृद्धि और सुगति का कारण एक स्वमता वलंबिनी विद्या का अध्यन करना है यदि यह कहा जावे कि पर मत की विद्या को कारण क्यों नहीं कहते तो इसमें दलील बहुत है धर्म और आचर्ण और सम्यक श्रद्धान वा सम्यक ज्ञान और सुगति का साधन परमत विद्या से हरगिज नहीं होता ॥

ऐडीटर का मत

पण्डित भोलेलालजी के उपरोक्त लेख से मालूम होता है कि इस कौमकी न्यून दशा का कारण छोटी उमर की शादी फजूल खर्ची और विद्या का न पढना है सो यह सब कारण ऐसे हैं कि यदि हमारी कौम चाहे तो एक दम मैं इन कारणों को दूर कर सक्ती है छोटी उमर की शादी से कोई फायदा किसी किस्म का नजर नहीं आता है यह विवाह नहीं होते किन्तु गुडा गुडी का खेल होता है जिसको बालक खेला करते हैं और नुकसान छोटी उमर की शादी से इतना होता है कि जिसका बयान नहीं हो सका आज कल जो बच्चे पैदा होते है वह बहुत

और धर्म का प्रचार हो जावे । विप रीत कारण के हट जाने से भी कारज की सिद्धी होती है ॥

फजूल खर्ची

आजकल फजूल खर्ची के दुखिये बहुत मालूम होते हैं सब छोटे बडे यह चाहते है कि किसी प्रकार से फजूल खर्ची दूर हो जावे परन्तु यह नही दूर होती इस फजूल खर्ची ने बहुत से दौलतमंदोंको गरीब कर दिया बहुत से अमीरोंको फकीर बनादिया और सोच फिकर क्लेश में तो सब कोही डाल रखाहै जब फजूल खर्ची ऐसी दुष्ट है और इस की दुष्टनाई सब जानते है और सब इसको दूर करना चाहते हैं फिर यह क्यों दूर नहीं होती है और क्या ऐसा उपाय है जो इसके वास्ते करना चाहिये। हमारी समझ में प्रथम यह ज्ञान होना चहिये कि इस फजूल खर्ची का प्रचार किस प्रकार हुवा क्योंकि जब इसके पैदा होने का कारण मालूम हो जावेगा तो फिर उसके उखाडने का भी उपाय शीघ्र मिल जावेगा ॥

जब हम अपने बुड्ढे बजुर्गों से जिनकी उमर इस समय सत्तर बर्ष से अधिक है पूछते हैं कि पचास बर्ष म पहले विवाह आदिक कार्यों मे क्या क्या रीत रस्म होती थी और किस प्रकार खर्च होता था तो हमको जमीन आसमान का फर्क मालुम होता है । हमको उनसे यह मालुम होता है कि उस समय मैं अनाज घृत मिठाई तेल आदिक सब वस्तु बहुत सस्ती थी अर्थात् जितनी वस्तु अब पांच रुपये मैं आतीहै उस समय एक रूपये मैं मिलती थी इस प्रकार हर एक वस्तु सस्ती मिलने पर भी हर एक कारज आज कल के जमाने से कम किया जाता था अर्थात् जो पुरुष आज कल विवाह मैं दसमन घृत खर्च करते हैं वह पहले चार मन करता था उस समय सुवर्ण भी सस्ता था परन्तु यदि आज कल पचास तोला सुवर्ण कि जेवर बनाया जाता है तो उस समय पांच तोले का ही बनता था इसके सिवाय बहुधा करके घृत के जगह तेल और खांड चीनी मिसरी की जगह गुड शक्कर आदिकसे कमालिया जाता था

कमजोर दुर्बल पैदा होते हैं और ह-
मेशा बीमार रहते हैं फिर क्यातो वह
विद्या पढ सक्ते हैं और क्या धरम से-
वन कर सक्ते हैं और क्या कार्य व्यव
हार कर सक्ते हैं पण्डित साहब ने अ-
पने लेख में यह भी दिखाया है कि
आज कल धर्म की तरफ रुचि नहीं है
किन्तु वेश्या के नृत्य आदिक में बहु-
तेरा रुपया खरच कर देते हैं मेरे ख-
याल में तो

वेश्या का नाच

ही एक कारण है जिससे धर्म नष्ट
होता आचरण बिगडता है शील भंग
होता है दुराचार करने को जी चाहता
है शरम और लज्जा जाती रहती है
और दुष्टता पैदा हो जाती है कैसे बडे
शोक की बात है कि हमारी जैन कौम
में विवाह जैसे शुभ कार्य में कि सां
सारीक पुरुष के वास्ते इससे बडा
और कोई खुशी का कार्य नहीं वैश्या
को नचाते हैं बहुत से रुपये खरच क-
रते हैं और सभा लगाकर सब छोटे
बडों को एकट्ठा करके उस वैश्या को
सभा के बीच खडा करके व्यभिचार
का उपदेश उससे कराते हैं हाय !
हाय !! यह रीत देखकर हमारा हृदय
फटा जाता है और आखों से आं-
सूओं की धारा बहती है कि यह जैन
कौम जो अपने को सब जातियों से
उत्तम समझती है जो अपने को सबसे
ज्यादा धर्मात्मा बताती है ऐसा निंद्य
कार्य करै कि अपनी सभा में जहां
छोटे बडे सब बैठे हों जहां बाप बेटा
दादा पोता चचा भतीजा सब मौजूद
हों एक वेश्या अर्थात् व्यभचारिणी कु-
लटा बदमाश स्त्री का प्रवेश हो और
केवल प्रवेशही नहीं हो किन्तु उसका
नृत्य हो-और नृत्यही नहीं किन्तु उ-
सका गाना भी हो वह गाना क्या है
व्यभिचार का उपदेश है यदि कोई
एक पुरुष ऐसे निंद्य कार्य को करैतो
खैर परन्तु अबतो यह कार्य बिरादरी
की रस्म में शामिल है कोई विवाह
बिन वैश्या के होता देखा नहीं जाता
ऐसे कार्य करते हुए औरदुराचार के ऐसे
कारण अपने आप मिलाते हुए यदि
हम यह आशा करैं कि हमारी कौम
का आचरण शुद्ध रहैतो बिल्कुल अ-
सम्भव है !!

हम बडे हर्ष से इस बात को प्र-
गट करते हैंकि नकुड जिला सहारनपुर
के भाईयों ने इस निंद्य महापाप के
कार्य को बिल्कुल छोड दिया है और
यह नियम कर लिया है कि विवाह
में वेश्याका नाचन करावेंगे इसहीप्रकार
यदि और सब जगह के भाई भी यह
उत्तम प्रबन्ध कर लेवें तो बहुतही
अच्छा हो अपने आप हमारी कौम के
लोगों के आचरण दुरुस्त हो जावें

पड़ा आज कल बहुत ही कीम
ती बर्ता जाता है परन्तु प-
हिले देसी मोटा और सस्ता ही
कपड़ा बरता जाता था । इस
प्रकार अपने बूढे बजुरगों से पू-
छने से यह ज्ञात होता है कि
इस समय पहले से वस्तु भी अ-
धिक और बहु मूल्य खरच हो-
ती है और कीमत भी पहले
से उनकी बढगई है अर्थात्
दोनों प्रकार से विवाह आदिक
का खर्च जियादा हो गया है
अर्थात् पचास वर्ष पहले खर्च
बहुतही कम होता था ॥

अब यह सवाल पैदा होता
है कि पचास वर्ष से यह फजूल
खर्ची किस प्रकार पैदा होगई
है । इस का कारण हमारी स-
मझ में यह आता है कि पहले
जमाने में पुरुष धर्मात्मा साधा-
रण प्रकृति के (मंदकषायके)
होते थे जियादा मान और जि-
यादा शेखी और ज्यादह इर्षा
नहीं होती थी इस कारण अ-
पने वित्त अनुसार सारा काम
करते थे । आज कल के पुरुषों
की कषायतीव्र होगई है मान
और शेखी के वशी भूत हैं इस
वास्ते हमेशा हर एक को इस
बात की फिकर रहती है कि मैं
दूसरे से बढ जाऊं इस कारण
यदि एक पुरुष किसी कारज में
दश रुपये खरच करता है तो
दूसरा यह सोचता है कि यदि
तू भी दस रुपये ही खरच क-
रेगा तो तेरा कुछ नाम नहीं
होगा और यदि एक रुपया अ-
धिक खर्च कर देवेगा तो तुझको
कुछ मुशकिल मालूम नहीं होवे
गी परन्तु दस रुपये वाले से बढ
कर हो जावेगा ऐसा विचार क-
रके वह ग्यारह रुपये खर्च करता
है और तीसरा पुरुष इसही वि-
चार से बारह रुपये खरच क-
रता है और चौथा पुरुष तेरह
रुपये इत्यादि ॥ इस तरह ब-
ढते२ यह फजूल खर्ची बहुत ही
बढ गई है और बढती जाती
हैं ॥

सो जिस प्रकार से कि
यह फजूल खर्ची बढ गई है उ-
सही प्रकार से यह घट सक्ती है।
इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि जो
पुरुष अपने वित्तसे अधिक खरच
करेगा तो वह जरूर मुफलिस
हो जावेगा और ऐसा
पुरुष धार्मिक कदाचित नहीं
रह सक्ता है क्योंकि वह द्रव्य
उपारजन की चिन्ता में सदैव
रहैगा ऐसे पुरुष को न्याय अन्याय

का विचार भी नहीं रहसक्ता है अर्थात जो पुरुष अपने वित्तसे अधिक खरच करता है उस में बहुत प्रकार की बुराइयां पैदा होजाती है और वह निर्धन पुरुष होजाता हैं पस जो पुरुष अपने वित्त से जियादा खरच करै और करज लेकर खरच करै उसकी बहुत निन्दा होनी चाहिये और जो पुरुष कम खरच करै उसकी तारीफ होना चाहिये इस प्रकार जैसे फिजूल खर्ची बढती गई है उसी प्रकार घटती जावेगी और सब अपनी मान बडाई के वास्ते कमाती २ ही खरच करने लगेंगे और यदि बिरादरी के भाई मिलकर इस बात का प्रबन्ध कर लेवेंतो कहना ही क्या है ॥

पूजा ।

भगवान की पूजा करने में चक्रवर्ती राजा और प्रजा इन्द्र धरनेंद्र अपने अहो भाग्य समझते हैं क्योंकि यह भगवान की पूजा दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाली और पुन्य भंडार को करने वाली और सुख के देने वाली है यह बात बडे प्रारब्ध वानोको ही नसीब होती है कि अष्ट द्रव्य से भगवान की पूजा करैं ग्रहस्थी के वास्ते धर्म का काम इससे जियादा और क्या हो सक्ता है परन्तु हम शोक भरी वार्ता लिखते हैं कि बहुत नगरों में जैनी भाईयों ने पूजन करने के वास्ते मन्दिरों में नोकर रख दिये हैं जो नित्य पूजन कर देते हैं और महीने पीछे अपनी तनख्वाह मांगते हैं ऐसी वार्ता के लिखने से हमको बडी लज्जा प्राप्त होती है और सोचते हैं कि जब हम लोग ऐसे महान् कार्य को नौकरों के सुपुर्द कर देवें तो अपने करने के वास्ते कौन सा कारज रक्खेंगे । यह प्रवृती जैनियों में से बिल कुल दूर होना चाहिये हमने मजबूर होकर इस कारण से कि बिना लिखे और बिना

मचाये यह निंद्य प्रवृति दूर नहीं होगी इस पत्र में लिखा है यदि कोई जैन मन्दिर ऐसे स्थान में हो जहां जैनी भाई न रहते हों और उस जगह पूजन प्रक्षालन केवास्ते किसी भाई को नियत कर दिया जावे तो कुछ बुराई नहीं परन्तु अफसोस और शिकायत तो ऐसी जगहों की है जहां मंदिर जीके पासही जैनी भाई रहते हों और फिरभी पूजन के वास्ते नौकर रक्खे जावें ॥

नहटौर की कन्या

॥ पाठशाला ॥

नहटौर जिला बिजनोर में एक पाठशाला है जिसमें लडके और लडकियां पढती हैं पण्डित गनेशीलाल जैनी पढाते हैं पढाने में बहुत कोशिश करते हैं लडकियां जो इस पाठशाला में पढती हैं बहुत होशयार हैं उनको पढते हुवे देखकर यह मालूम होता कि मिथ्यात्व अब हमारी कौम से बिलकुल दूर हो जावेगा क्योंकि मिथ्यात्व का कारण स्त्रीयों की अज्ञानता और अज्ञान का कारण अविद्या जब इस प्रकार लडकियों के पढाने का प्रचार होने लगा तो फिर अविद्या रूपी अंधकार बिलकुल मिट जावेगा आशा है कि नहटौर के भाईयों की तरह सब जगह के भाई कन्या पाठशाला नियत करके लडके लडकियों को पढाने का प्रबंध करेंगे ॥

नहटौर में लाला कुंजबिहारीलाल साहब बडे धर्मात्मा हैं और यह पाठशाला भी उनही की उदारता और कोशिश से चलती है ॥

अंगरेजी विद्यार्थियों

की प्रार्थना ॥

ऐ हमारी कौम के बजुरगो और विद्वानों हम आपकी प्यारी सन्तान हाथ जोड आपसे बिनती करते हैं कि हम अंगरेजी मदरसों में पढने वालों पर और उन पर जो अंगरेजी पढ चुके हैं आप लोग यह तोहमत लगाते हैं कि यह धर्म से विमुख हो गये हैं आचरण इनका भ्रष्ट होगया है हमें इस बात से इनकार नहीं है कि बेशक यह तोहमत बिलकुल सच है बल्कि इससे भी जियादा दोष हम में हो जाते

परन्तु इसमें हमारा कसूर नहीं है किन्तु ऐ हमारे बजुरगो यह कसूर आपकाही है इससे हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि हमको क्यों अंगरेजी पढाई और यदि अंगरेजी न पढाई जाती तो क्यों हम ऐसे हो जाते नहीं यह हमारा मतलब नहीं है। अंगरेजी पढाने मैं कुछ बुराई नही है बल्कि बहुतही अच्छा किया जो हमको अंगरेजी पढाई क्योंकि किसी कौमकी उन्नति नहीं हो सक्ती है किसी कौमकी इज्जत नहीं हो सक्ती है बल्कि उस कौम का कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सक्ता है जब तक कि राज्य मैं उस कौम के लोगों को राज कार्यों में अधिकार न हो और अधिकार बिदून इसके नहीं हो सक्ता है कि राज्य विद्या सीखी जावे सो आज कल राज्य विद्या अंगरेजी है जब तक अंगरेजी न सीखी जावे तब तक राज्य मैं अधिकार नहीं मिल सक्ता है इस कारण अंगरेजी का सीखना तो बहुत जरूरी है परन्तु हमारी यह प्रार्थना है कि यदि अंगरेजी प्रारम्भ कराने से पहले हमको अपनी धर्म विद्या सिखादी जाती और हमको अपने धर्म का ज्ञान करा दिया जाता तो अंगरेजी पढने से हम पर और हमारे आचरण और श्रद्धान पर कुछ भी असर न पडता जब हमको अपने घर की तो खबर कराई नहीं गई और पर घर में छो क दिया तो हम अपने घर में कैसे आ सक्ते हैं हमको तो अवश्य पर घर का ही ज्ञान होगा और उसही की प्रीति होगी ॥

इस वास्ते ऐ हमारे बजुरगो हम आप से प्रार्थना करते हैं कि हमको जो तुम्हारी सन्तान हैं सब कारज व्यवहार से पहले अपना धर्म सिखा दिया करो अपनी निज विद्या पढा दिया करो देखो मुसलमान लोग सब से पहले अपने बालकों को कुरान जो उनकी धर्म पुस्तक है पढा देते हैं उसके पीछे और और इल्म पढाते हैं इस कारण मुसलमान लोग किसी प्रकार भी अपने धर्म से विमुख नहीं होते हैं क्योंकि बालपन मैं जो बात सिखा दी जाती है वह हृदय में जम जाती है और कदाचित उखड नहीं सक्ती परन्तु यह बात कि बालपन मैं हम धर्म विद्या सीखें तभी हो सक्ती है जब कि कोई धर्म पाठशाला हो सो क्या अपने प्यारे बाल बच्चों के हित के वास्ते आपलोग इतनी बात नहीं कर सक्ते हैं कि प्रत्येक नगर मैं एक छोटी सी पाठशाला बना देवें यह कोई मुशकिल बात नहीं है। पाठशाला नियत करने के पश्चात यदि आप इस बात का नियम करलेवें कि हर एक पुरुष को अवश्य इतनी पुस्तक अपने बालक को

...नी चाहिये तो फिर हम किसी
...रिजाम के भागी न हों बल्कि स
...धर्मवंत रह कर और शुभ आच-
...ण में प्रवर्त कर पुन्य के भण्डार भरैं
...सुख भोगें ॥

एक अंगरेजी पढने वाला
बालक ॥

...अनमोल वस्तु

...अब के साल हम मथुरा के
...में गये थे शास्त्रजी का सभा
...पण्डित प्यारे लालजी साहब
...लीगढ निवासी का व्याख्या
...हुवा करता था एक दिन प-
ण्डितजी ने शास्त्रजी की सभा
में सब भाईयों से पूछा कि तुम
सब लोग बहुत धन खरच क-
...रके बहुत कष्ट उठा कर इस
मेले में आये हो परन्तु यदि तुम
यहां से कुछ लाभ उठा कर न
...जावो और खाली हाथ वापि
... घर को जावो तो तुम्हारा प-
...श्रम बिल्कुल निष्फल होगा
...स कारण अवश्य फल प्राप्ति
...ी कोशिश करनी चाहिये सो
...उपदेश देकर उस समय प-
...प्यारेलाल जीने सब भाई
... एक अनमोल वस्तु दी
कहा कि इस अनमोल
वस्तु को बहुत संभालकर रखना।
यह वस्तु तुम्हारे सब प्रकार सुख
देने वाली है और इस मेले में
आने का यहही फल है कि ऐसी
वस्तू प्राप्त हो उस समय उस
अनमोल वस्तु को बहुत से भाई
योंने ग्रहण किया और पण्डित
जी को धन्य बाद कहा परन्तु उस
समय सब भाई मौजूद नहीं थे
इस कारण भाई गणपतरायजी
नसीराबाद निवासी ने उपकार
का काम समझकर तुरन्त एक
विज्ञापन छपवा कर मेले में सब
भाईयों में बांट दिया कि अन-
मोल वस्तु बंटती है जिस भाई
को लेनी हो लेलेवें

वह अनमोल वस्तु हमको
भी प्राप्त हुई इस कारण उन भा-
ईयों के उपकारार्थ जो उस मेले
में मौजूद नहीं थें उस वस्तु को
सब भाईयों को बांट देना चाह-
ते हैं वह अनमोल वस्तु यह है,
ऐ भाइयों ! इस जीवके कल्याण
कारी वस्तु मुक्ति मारग बताने
वाली और पापकर्मों से हटाकर
और पुन्य मैं लगाकर सुख सं-
पात्त प्राप्त करा ने वाली इसकाल
में केवल एक जैन शास्त्रोंकी स्वा
ध्याय है यहही अनमोल वस्तु है
कि जिसको प्राप्त होगई वह पूरा

निधि वान हो गया है और जिसके पास यह नहीं है उसके पास चाहे जो कुछ है वह निर्धन ही है । जैन धर्म में स्वाध्याय को तप कहा है तपसे सम्वर और निर्जरा दोनो होते हैं पस स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्ति तो होती ही है किन्तु सम्वर और निर्जरा की भी प्राप्ति होती है इस कारण स्वाध्याय से जियादा और क्या वस्तु बहु मूल्य हो सक्ती है पस यह अनमोल ही है । आज कल प्रमादादिक चोर और लुटेरे बहुत फिरते हैं पस जब तक इस अमूल्य वस्तु की पूरी तौर से निगरानी और संभाल न कीजावे और मजबूत ताले में बन्द करके इसको न रक्खा जावे यह वस्तु रह नहीं सक्ती है ॥ स्वाध्याय की निगरानी किस प्रकार हो सक्ती है इसका रस्ता भी पहले से बताया हुवा है अर्थात् यह नियम कर लेना कि हर रोज स्वाध्याय किया करैंगे बस ऐसा नियम करलेने के पश्चात् यह वस्तु फिर कहीं नहीं जा सक्ती है क्योंकि जैनियों का नियम विख्यात है कि वह कभी नहीं टूट सकता है इस वास्ते सब जैनी भाईयों से प्रार्थना है कि शास्त्र स्वाध्याय का अवश्य नि[illegible] यम करैं हमारे जैनी भाई[illegible] बहुत से ऐसे हैं कि जो [illegible] अक्षर नहीं जानते हैं इस [illegible] स्वाध्याय नहीं कर सक्ते [illegible] नसे हमारी यह प्रार्थना [illegible] नागरी अक्षरों का सीख[illegible] मुशकिल बात नहीं है [illegible] से जियादा आसान [illegible] इल्म नहीं है बहुत थोड़े [illegible] लिखना पढना आ सक्त[illegible] कारण वह भाई यह ही [illegible] कर सक्ते हैं कि हर रोज [illegible] के अक्षर अवश्य सीखा [illegible] और जब अक्षर सीख [illegible] तो स्वाध्याय किया करैंगे ॥

जैनसभा

नियत होने लगी ॥

हमने पहले पत्र में लिखा था [illegible] जब तक सभा प्रत्येक नगर और ग्रा[illegible] में सभा नियत नहीं होगी तब तक जै[illegible] उन्नति नहीं हो सक्ती है और अवि[illegible] रुपी अन्धकार दूर नहीं हो सक्ता [illegible] रन्तु हम बडे हर्ष के साथ समाचार [illegible] खते हैं कि बहुत जगह सभाऐं नियत हो जाती हैं परन्तु हमको सब जगह [illegible] हाल मालूम नहीं है इस वास्ते सब [illegible] यों से प्रार्थना करते हैं कि जिस [illegible]

जगह सभा नियत हो वहां का पूरा २ हाल हमको लिखैं कि हम सब हाल पत्र में छाप देवें जिससे और जगह के भाइयों को भी अपने अपने नगर मैं सभा नियत करने का शौक पैदा हो। मीराबादकी छावनी मैं जैन सभा कायम है जिसमें सातवें दिन व्याख्यान और उपदेश होते हैं ॥

जैन पाठशालाभी नियत होने लगी

पण्डित प्यारेलाल जीने अलीगढ से लिखा है कि वहां जैन पाठशाला नियत होगई इस ही प्रकार और जगह भी पाठशाला नियत होती जाती हैं अब बहुत जल्द यह कौम उन्नति पर चढने वाली है ॥

करहल जिला मैन पुरी

यहां पर लाला फुलजारी लाल साहब रईस बडे परोप कारी हैं उनकी कोशिश से पाठशाला पहले से कायम है अब वहां पर सभा नियत होगई है पण्डित भादोंलाल साहब यहां पर बडे विद्वान पण्डित हैं पण्डित मवासीलाल और पण्डित भादोंलाल और लाला फुलजारीलाल जीकी कोशिश से पूरी उम्मैद पडती है कि यह सभा बहुत उन्नति करेगी । सभा पति लाला फुलजारी लाल रईस उप सभा पति लाला गिरधारी लाल मंत्री लाला मवासी लाल उप मंत्री पं० भादों लाल और कोशाध्यक्ष लाला मवासी लाल नियत हुए सभा हर चतुर्दशी को हुवा करैगी ॥ सभा के खर्च का भी प्रबंध हो गया है ॥

जैनपाठशाला हिसारका चौथा वार्षिक उत्सव

यह पाठ शाला हिसार मैं चार बरस से कायम है और हर साल इस का उत्सव किया जाता है पहले तीन सालों की रिपोर्ट जैन सभा कर पत्र में छपतीरही है अब की दफै लाला नेतराम साहब मंत्री जैन पाठ शाला ने चौथे उत्सव की रिपोर्ट हमारे पास भेजीहै जिसकाहालसंक्षेप से हमलिखते हैं यह पाठ शाला पहले केवल इस वास्ते नियत की गईथी कि जैनियों के लडके भाषा और संस्कृत पढ कर अपने धर्म को जानै और अज्ञान दशा और मिथ्या प्रचार जैन कौम से दूर हो पर पीछे से यह देख कर कि जैनी भाई अपने लडकों को केवल भाषा वा संस्कृत पढाने के वास्ते नहीं भेजते हैं जब तक कि लौकिक विद्या साथ मैं न पढाइजावै इस कारण धर्म विद्या के साथ सर्कारी मदरसों के अनुसार उरदू हिसाब और जुगराफिये की तालीम भी बढाई गई सो तीन साल से पांच जमायतें अपर प्राय मरी तक कायम हैं विद्यार्थी पाठशाला मैं ३४ के करीब हैं और औसत हाजरी ३० रहती है विद्यार्थीयों से कोई फीस नहीं ली

जाती हैं बल्कि पढ़ने की किताब इनाम में दे दी जाती हैं जमायत पहली में है १८ दूसरी में २ तीसरी में ६ चौथी में ४ और पांचवी में ४ विद्यार्थी हैं इन में से २३ जैनी ३ वैष्णव ५ ब्राह्मण और ३ और कौमके हैं जैनियों को रत्न काण्ड श्रावकाचार पंच स्तोत्र नित्य नियम पूजा कातन्त्र व्याकरण आदिकी पुस्तकेंभी पढाईजाती हैं । पंडित शादीराम वैश्यअग्रवाल संस्कृत और भाषा पढाते हैं तनख्वाह १२=) हैं और पण्डित करोडीमल उर्दू हिसाब और जुगराफिया पढाते हैं १०) तनख्वाह है और ४ वा ५ रुपये महीने का और खर्च है। इमतिहान पाठशाला का हरमाल साहब इंसपेक्टर किसमत देहली लेते हैं और छः महीने पीछे डिस्ट्रिक्ट इंसपेक्टर साहब पाठशाला को देखते हैं इंसपेक्टर साहिब कीसिफारिश सेपिछलेसाल ७०॥) म्यूनीसिपल कमेटी हिसार से वास्ते खर्च पाठशाला के मिले थे और अबके साल ८७॥) देना स्वीकार किया है यहां पर सत्तर घर जैनियों के हैं और सब अमीर हैं परंतु पाठशाला में चन्दा केवल दस बार है ही भाई देते हैं और कुछ विवाह आर लडका पैदा होने पर भी रस्म बांध रक्खी है पाठशाला के इंतजाम के वास्ते एक सभा नियत है पहले यह सभा साप्ताहिक हुवाकरती थी परन्तु अब सभा नहीं होती है पाठशाला के इंतजाम के वास्ते जब जरूरत होती है मशवरा हो जाता है॥

पाठशाला का उत्सव २६ और २७ सितम्बर सन १८९९ को सब जैनी भाई और शहर के और हकिम भी तशरीफ लाये थे॥ २६ तारीख को सुबह से बारह बजे तक जल जात्रा का उत्सव हुवा २बजे से भजन हुवा फिर लाला नेतराम साहब ने विद्या की बड़ाई पर व्याख्या नकहा और संस्कृत श्लोकों से भले प्रकार सिद्ध किया॥ इस [illegible] हांसी से भी बहुत से भाई उत्सव [illegible] आये थे और पण्डित रामदयाल[illegible] अध्यापक जैन पाठ शाला हांसी [illegible] [illegible]धारे थे॥ पण्डित रामदयालजी ने[illegible] के पश्चात एक मनोहर व्याख्यान [illegible] जिसमें जैनमत के सिद्धान्तों को [illegible] दरसाया इस के पश्चात लाला नेतराम ने पाठ शाला की रिपोर्ट सुनाई फिर लाला बिसनलाल साहब जैनी आनरेरी मैजिस्ट्रेट ने अपने हाथ से इनाम विद्यार्थियों को तकसीम किया और ६ बजे शामको भजन होकर सभा समाप्त हुई॥ दूसरे दिन २७ तारीखको फिर २ बजेसे सभाहुई पण्डित रामदयालके व्याख्यानके सुननेके शौकमें इसादिन अन्यमती भाई बहुत तशरीफलाये और पण्डितजीके उपदेशसे बहुतखुशहुये फिर भजनहोकर शामको सभा समाप्तहुई॥

इसपाठशालामें लाला अजुध्याप्रसाद सभापति और लाला दीवानसिंघ उपसभापति और लाला शादीराम और लाला शेरसिंघ मंत्री सभाकी बहुतकोशिशरहती है धन्यहै ऐसेपुरुषोंको जोउपकारका काम करते हैं॥

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

यह पत्र सप्ताहिक है अर्थात् एक महीने
में चार बार प्रकाशित होता है ॥
बाबू सूरजभान वकील के प्रबंध से देव बन्द
जिला सहारनपुर में प्रकाशित होता है ॥
यह पत्र हर अंगरेजी महीने की १-८-१६ और २४ ता०
को भाईयों की सेवा में हाजिर हुवा करेगा ॥

मूल्य एक वर्ष का डाक व्यय सहित केवल तीन रुपया है ॥

प्रथमवर्ष	दिसम्बर सन् १८९५ ता० १६	अङ्क ३

प्रार्थना

पहले दो अंक हम नमूने के तौर पर भाइयों की सेवा मैं जैन मन्दिरों के भेज चुके हैं जैन मन्दिरोंमैं सब भाई दिन जाते हैं इस कारण सब भाईयों ने जैन गजटके प्रथमदो अंक अवश्य देखे होंगे और मालूम किया होगा कि यह पत्र अवश्य उपकारी है इस पत्र को अवश्य मंगाना चाहिये और पढ़ना चाहिये परन्तु प्रमादके वश से बहुत से भाईयों ने अब तक हमको कुछ नहीं लिखाकि यह पत्र बराबर प्रति सप्ताह उनके नाम भेजा जावे वा नहीं यह पत्र सब जैनी भाईयों को अवश्य लेना चाहिये और एक पत्र हर एक जैन मन्दिर मैं तो अवश्य ही आना चाहिये परन्तु ऐ भाइयो! हम नमूने का परचा कब तक भेजते रहेंगे नमूने का तो एक ही प्रथम पत्र होना चाहिये था परन्तु हम यह तीसरा पत्रभी भेजते हैं कृपा करके एक पैसेके पोस्ट कार्ड द्वारा हम को सूचित करैं कि यह पत्र किस २ भाई के नाम भेजा जावे और मन्दिरजी मैं भेजा जावे वा नहीं ॥

द्रष्टव्य

एक समय जैन प्रभाकर पत्र मैं एक लेख समरभी के नाम से छपाया उस को

हम कारज कारी समझ कर संक्षेप मात्र इस स्थान में प्रकाशित करते हैं इस लेख पर सब भाईयों को पूरा पूरा विचार करना चाहिये हे विद्वज्जनो! हमारे एक शरीर औ हाथपैर आंखनाकमुंहजीभसिरआदिउसीशरी रके अनेक अंगहैं यदि हम अपने शरीर को पुष्टबलवान और सुंदर रखना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि शरीर के सर्व अंगों को समान जान उन सबकी बराबर एकसी संभाल रखें और किसी अंग को भी कम जोर और बुरा नहीं होने देवें ॥ लेकिन यदि हम एक अंग को तो ज्यादह संभाल कर रक्खें और दूसरोंकी कुछ परवाह नहीं करें तो दूसरा निर्बल होजायगा तब उस के कारण शरीर के और २ अंगभी शिथल होने लग जायेंगे और इस का परिणाम यह होगा कि कुछ कालतक वह शरीर विद्रूप असुहावना और कमजोर होकर नष्ट होजायगा और दूसरे अंगो की शोभा उस समय कुछ कार्य कारी नहीं होगी ॥ जैसा किसी सुंदर युवा पुरुष की आँखें दुखती होवे और वह मूर्ख आंखों का इलाज न करे किंतु अपने गोरे मुंह और हाथों को खूब उबटना लगाकर सब समय उस के मैल उतारने धोने और स्नान करने में लगादे और उस के प्रमाद के कारण उसका नेत्र रोग बढ़े आंखे फूटे और वह अंधा होजाय तो कहो साहिब उस का हाथ मुंह का मल २ के धोना कौन काम आवे और आंखविना हाथ और मुंहका सुंदरता काहे से देखेगा वह अभागा पीछे अपने अज्ञान और प्रमाद पर अवश्य पछतावेगा, लोगों में निन्दा और हंसी पावेगा परंतु फूटी आंख साबित हो नहीं सक्ती इस लिये जब तक कि आंखे नहीं फूटें उस नेत्र रोगी को चाहिये कि उबटना लगाकर मल के न्हानेसे और हाथ मुंह धोने से कुछ समय बचाकर आंखो के इलाज कराने में अवश्य लगावैं जिस से उसका नेत्ररोग दूरहो और वह अतिसुंदर और पुष्ट बना रहै जिस से देखने वालों को प्रिय और मनोहर भासे ॥ में जहां तक देखता और विचार करताहूं तो मुझे यही मालूम होता है कि धर्म के विषय में और लौकिक विषय में हमारे जैनी भ्रातृगण की वही अवस्था होरही है जो ऊपर लिखे दृष्टान्त में नेत्र रोगी की वर्णन की गई है ॥ वे सब धर्म के एक अंगकी शोभा करने की दिन रात चेष्टा कर रहे हैं और उसी एक अंग की शोभा बढ़ाने में उन का सर्व धन और समय व्यय होता है ॥ परन्तु दूसरे अंग जो इस समय शिथल और रोग ग्रस्त और जरजर होरहेहैं जिनके कारण यहधर्म दिन प्रतिदिन क्षीण और दुर्बल होता जाता है उन अंगो का इलाज कर उन्हें पुष्ट और बलवान करने का कुछ उपाय नहीं करते ॥

भाईयो! हमारे बड़े आचार्योंने कहाहै कि अंगहीन सम्यक्त [धर्म] है सोसंसार के दुखसे छुटनहींसक्ता जैसे अक्षरहीन मंत्र

विषको दूरनहींकरसक्ता ॥ तब आप जो धर्मके एक अंग प्रभावनाकी दिनरात कोशिश करते रहतेहैं और उसीमें अपना समस्त धन और समय लगाते हैं, और दूसरे अंग ज्ञानकी वृद्धि शुद्धप्रासुक औषधदान करना दीन अनाथ वृद्ध और बालकों और विधवाओं की प्रतिपालना करना आप शास्त्र पढ़ना औरोंको पढ़ाना, पढ़ेहुवे तथा पढ़ने वालोंकी जीवका अन्नवस्त्र आदिसे सहायता करना, शुद्ध आचरण अपना रखना दूसरोंको शुद्धन्याय मार्गोंमें प्रवर्तना शीलसंयम पालना आदिजो धर्म के और अंगहैं उनकी तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देते उनमें अपना शरीर और आत्मा नहीं लगाते और न अपना द्रव्यलगाते तब आप क्योंकर सुख और यशके पात्र होसकेहैं ॥ कभी नहीं वाजिबतो यहहै कि धर्मके सर्व अंगोकी एकसी बराबर सभाल करना चाहिये और उनमें सबमें बराबर धन लगाना चाहिये विशेषकर जोबिगड़ रहेहैं और सिथल होगये हैं उनमें ज्यादह धन, समय और ध्यान लगाना चाहिये जिससे कि हमारा धर्म सर्वांग सुंदर और पुष्ट बनारहै और सर्व कार्य यथावत ठीक २ होते रहैं धर्म चलानेसे चलताहै और उसके चलानेवाले धर्मके धोरी धनवान और विद्वान होते हैं इस लिये उनदोनोंको प्रयत्न करना चाहिये ॥ विद्वान पंडित जनोंको उचित है कि इस विषयमें नगर २ और ग्राम २ कीसभामें धर्म के सर्व अंगों की वृद्धि और रक्षा करनेका उपदेशदें और वहांके धनाढ्य लोग उस उपदेशके अनुकूल अपना धन उसकी रक्षा और पुष्टता करनेमें लगावें ॥ मेरालिखना सब भाईयोंके वास्ते है सो जिन भाईयोंके भाव धर्म कार्योंमें धनखर्च करनेके हों वे इस लेखपर विचारकरें और जिस प्रकार उनका धन दीर्घ कालतक जैन धर्मकी प्रभावना और जैनियों को लाभ पहुंचावे उस प्रकार अपना धन लगावें ॥

तथा इस समय की आवश्यकताको देखें कि कोनसा अंग धर्मका बिगड़ रहाहै और फिर उसीमें धनलगावें देखादेखी भेड़ीचलावत नकरें अपने २ वास्ते धन खर्चनेका न्यारा २ लाभ दायक उपयोगी मार्ग तलाशकर उसमें धन खर्चकरें ॥ मेरे इस लिखनेमें कोई अविनयका वचन होतो सह धर्मी भाई क्षमाकरें मेरा आशय धर्मके सर्व अंगोंकी प्रभावना बराबर हो एसी प्रेरणा करनेका है ॥

आपकाशुभ चिंतक

समरसी.

सम्पादक का मत

आजकल विद्याकी बड़ी न्यूनता होगई है यहांतक कि पण्डित तलाश करनेसे भी नहीं मिलते हैं यदि ऐसीही दशारही और

विद्या वृद्धिका कोई उपाय न हुवातो जल्द यहधर्म लोप होजावेगा इस कारण हमारी समझ मैंतो जैनी भाईयों कोवहुधा करके आपना धन विद्योन्नतिमैं लगाना चाहिये ॥

हांसी जिला हिसार

तारीख २१ नवंबर सन ९५ मुताबिक तिथी मंगसिर सुदी ५ सम्वत् [illegible] को श्रीजैन मंदिरजी हांसीमें जैन सभा हुई और पंडित शादीलाल अध्यापक जैन पाठशाला हिसारने विद्या उन्नति के विषयमें उपदेश दिया। और जैन पाठशाला हांसी के विद्यार्थियोंका इमतिहान अर्थात परीक्षा लीगई विद्यार्थीयों की हाजरी इसवक्त २५ थी॥ इस पाठशाला को नियत हुये एकसाल की मुद्दत हुई और शिक्षा पहिली दूसरी और तीसरी जमायत तककी हुईहै ॥ और इस मौके पर एक बरात जैनी भाइयों की हिसारसे इस जगह आईहुईथी ॥ चंदसाहब सभामें मौजूदथे ॥ परीक्षाके पश्चात पारितोषक बांटागया ॥ जैनसभा हांसी की ओरसे १॥।, की पुस्तक हरेक विद्यार्थी को एक एक बांटी गई और लाला दीवानसिंह तथा लाला अजुध्या प्रसाद सभापति जैन पाठशाला हिसारने रूमाल और मिठाई हरेक विद्यार्थि को बांटी ॥

हमारी जाति का अवश्य उद्धार होगा ॥

इस बात को वर्णन करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है कि हमारी जातिमें सब से बड़ा हानि कारक कारण फजूल खर्ची अर्थात व्यर्थ व्यय है। इस फजूल खर्ची से वहुत वड़ी २ खरावी और बुराइयां इस कौममें फैल गई हैं अधर्मी पापी दुराचारी भी हमारी कौम को इस ही फजूल खर्चीने कीया है सारे जनम घोर कष्ट और सोच फिक्र में आयु व्यतीत करना इस हीके कारण से है यदि फजूल खर्ची हमारी कौमसे दूर होजावे तो सर्व प्रकार की भलाई फिर पैदा होजावेंगी ॥

यही बात विचार कर कस्बे नकुड जिला सहारनपूर के जैनी भाईयोंने चार बर्षसे इस फजूल खर्ची को दुर करके एक उत्तम प्रबंध करलिया है और उस ही प्रबंध के अनुसार पचासों कार्य विवाह और मृतक के होचुके हैं ॥ इस कस्बे नकूडमें इस प्रबंध से पहिले जैनीयोंमें बहुत २ रुपया बिवाह शादी में

लगा करनाथा किसी २ विवाह मेंतो बहुत ही खर्च हुआहै ॥ परंतु अब बडे हर्षकी बात है कि धनाढ्य पुरुष जो बहुत बहुत धन फजूल खर्च करतेथे अब वही अपने भाइयों के हितार्थ इस प्रबंध पर चलते हैं और बड़ी कोशिश करते हैं ॥ नकूड़ के इस प्रबंध को दूसर नगरोंके भाइ भी पसंद करते हैं बड़ी भारीबात इस प्रबंध में यह है कि इस में यह कायदा मुकर्रर किया गया है कि नकूड़ के भाईयों के साथ दूसरे नगर वालोंको भी इस ही प्रबंध के अनुसार प्रवर्तना पड़ेगा इस प्रबंध के पश्चात आजतक जितने कार्य हुए हैं उनमें दोनों पक्षवाले इस ही प्रकार प्रवर्ते हैं सबसे बड़ा दुष्ट कर्म हमारी बरादरी में यह होता है कि विवाह जैसे शुभ और महान कार्य में अपनी सभा में वेश्याको नचाते हैं और विवाह कार्य में इस निन्द्याकार्य को परम आवश्यक समझते हैं ॥ परंतु धन्य है नकूड नगर वासियों को कि उन्होंने इसको बिल्कुल बंद कर दिया है ॥ और केवल यह ही बंद नहीं किया है कि अपनी बरात में वेश्याको न नचा वेंगे बलिक यह भी नियम किया है कि दूसरे नगर वासी भी जो बरात नकूड़ में लावें वह भी वेश्या आदिक दुष्ट स्त्री पुरुषों को अपने संग लाकर हमको लज्जित नकरें ॥ सो अबतक जितनी बरातबाहरसे नकूड़ में आई हैं उनमें भी वेश्या का गमन नहीं हुवा है इससे पूर्ण निश्चय होता है कि नकूड़ के प्रबंध को दूसरे नगर वासीयोंने भी पसंद कर लिया है ॥ और जल्द ही सब जगह इसका प्रचार होजावेगा इस प्रबंध के प्रचारकीबाबत हम एक बड़े

हर्ष के समाचार

लिखते हैं और हम खुशी के मारे अंग में फूले नहीं समाते ॥ यह कायदा है कि महान पुरुष जिसकाम को पसंद करते हैं और करने लगते हैं उसकामका प्रचार बहुत जल्द सब में होजाया करता है इसही प्रकार जब अपने भाईयों के रक्षार्थ हमारे मुखिया धनाढ्य पुरुष फजूल खर्ची के दूरकरने की कोशिश करें और अपने आपभी इस तरह प्रवर्त्त कर दिखलावें तो फिर फजूल खर्ची के दूरहोने में और इस कौम में सुख सम्पत्ति की वृद्धी होने में क्यासंदेह होसक्ता है ॥ ए भाईयो लाला उग्रसैन साहिब रईस व आनररी मैजिस्ट्रेट सहारनपूर का नाम कौन जैनी भाइ नहीं जानता है क्योंकि धनाढ्य और मुखयां होनके अतिरिक्त वे जैनजाति के उपकारक और रक्षक और वृद्धि कर्ता हैं अपना तन मन धन इस में लगाते हैं आपके बड़े भाई लाला रूपचंद जी साहिब रईस भी बड़े धर्मात्मा हैं

और ऐसे कार्यों के करने में जिससे अ-
पनी जातिका उपकार हो सदैव उद्यत
रहते हैं धन्य है ऐसे पुरुषोंको ॥ आप
ने इससाल महीने मंगासिर में हमारे जैन
योंके वास्ते इतना बड़ा उपकारका काम
कियाहै कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता
है अर्थात आपकी लड़की की शादीथी
बरात नकूड़ से आईथी लाला पन्ना
लाल साहिब के पुत्रका विवाहथा ॥
लाला पन्नालाल साहिब भी बड़े धमा
त्मा और पर उपकारी धनाढ्य पुरुष
हैं लाला रूपचंदजी साहिब ने इसबात
को बड़े हर्षसे स्वीकार करलिया कि
इस विवाह में सर्व कार्य नकूड़ के प्रबंध
के अनुसार किया जावेगा और अपने
आपभी उसही तरह प्रवर्तेंगे ॥ सो अप-
ने यहां भी सबरीति उसही प्रबं धके
अनुसार की
यहांतक कि अमृती और लड्डू दोही
मिठाई बनाये और वह भी एक पत्रा
वल में सवा पावसे अधिक नहीं ॥ क्या
अब भी इसमें कुछ संदेह रहगया है
की यह दुष्ट फजूल खर्ची शीघ्र हमारी
कौम से निकल जावेगी ॥ जैनी भाइ
यों को लाला रूपचंदजी साहिब का
बड़ा भारी उपकार मानना चाहिये
और सोचना चाहिये कि जब ऐसे बड़े
धनाढ्य और महान पुरुषने इस प्रबंध
को स्वीकारकर लियातो अन्य पुरुष
क्योंनकरें औरयह विचारकर अपने २
नगरमें भी इसही प्रकार प्रबंध कर
लेना चाहिये ॥ अब हम नकूड़ के प्र-
बंधका संक्षेप सब भाईयों के जान्ने के
वास्ते लिखते हैं ॥

संक्षेप प्रबंध नकूड जिला सहारनपुर

१ जन्म—जीमन बिरादरी जनेऊ तथा देहली ब्रह्मनान बिल्कुल बंद कोगई गरीब फकीरोंको जो मांगनें आवें यदि चा हैं पैसा वा दो पैसा देदेवें ॥ दसठून के दिन कच्चीरसोई अप-ने रिश्ते दारोंकी करें और कुल ३, रुपयेका और खर्च है ॥

[२] कार्णछिदाई—भाजी बिरादरी की बंद कच्ची रसोई रिश्ते दारोंकी करें और कुल ३, रुपयेका और खर्च है ॥

[३] सगाई—कचौरी की भाजी बंद, लड्डूकी भाजी करसक्ता है ३, रुपये का और खर्च ॥ लड़का लड़की से १ सालवड़ा होना चाहिये, सगाई के पश्चात खिलो ने और टोपी आदि देनी बंद ॥

[४] फिरत—सगाई के पश्चात विवाह तक और कोई रस्म नहीं होगी अर्थात फिरत, चाव, संधारा, गरमी सरदी, दीवाली, बड़ी सगा ई यहसब बंद ॥

[५] चिठ्ठी विवाह—खर्च कुल १,

रुपये से अधिक नहीं ॥

[६] लगन—कुल खर्च ८, रुपये से अधिक नहीं ॥

[७] टेवा—सुहाल बूरा, भाजी कचौरी टेंटी आदि सब बंद खर्च ८, रुपये से अधिक नहीं ॥

(८) विवाह में बिरादरी का जीमन-नगर जुनार, नगर गंदौड़ा और अस्नानका गंदौड़ा और दक्षिणा देना बंद केवल बिरादरी का जीमन लड्डू कचौरी या केवल कचौरी का किया जावेगा ॥

(९) हल्द—भाजी कचौरी और बान के गुलगुले बंद केवल कच्ची रसोई होगी ॥ इसही प्रकार मंढा होगा

(१०) भात—नकद ९१, रुपये से अधिक नहीं जेवरका कुछ प्रबंध नहीं परंतु लड़के के भात में केवल एक जोड़ा दूलहाका होगा और तेल वा बरतन अदिक कुछ नहीं ॥ टीके में रुपयेकी जगह नरियल ही लिये दिये जावेंगे ॥

[११] बाजाआदि—इंगरेजी बाजा, पालकी बंद देसी बाजा होगा उसमें भी तुर्री और ऊंट नहीं होगा और पालकी की जगह पीनस होगी ॥

[१२] नाच तमाशा—रंडी अर्थात वेश्या नकाल अर्थात भांड आदि सब बिलकुल बंद ॥

[१३] बागबाड़ी—बागबाड़ी, आतिशबाजी बंद ॥

(१४) जनेत गणना—२९ गाडी अर्थात बाहनसे अधिक नहीं और कुल मनुष्य अर्थात बाराती २०० से अधिक नहीं होंगे ॥

[१५] बाग—बाग अर्थात जब प्रथम बेटीवाला बारातको नौतने आता है नकद एकसौ रुपयेसे अधिक नहीं देगा और घोड़ी और जेबरका देना बिलकुल बंद ॥

(१६) बारद्वारी—पैसे और रुपये अदिक का बखेरना बंद ॥

(१७) जीमनबरात—मिठाई केवल अमृती और लड्डू होंगे और कुल मिठाई सवाया वसे अधिक तोलकी नहीं होगी ॥

[१८] फेरे अर्थात शादी—बाढा देना बंद और खर्च भी बहुत कम कर दिया है ॥

१९] पट्टा—बेटेवाला १९, रुपये से अधिक नदेगा ॥ बिरादरी में जेबरका दिखाना और कूंडी पारछा और टोकना देना बंद और कटोरा दुशाला बंद टीकेका देना बंद।

[२०] डोलेके ऊपर बखेर करना बिलकुल बंद ॥

[२१] मंदिरजी—५०, रुपये से अधिक नहीं और पाठशाला आदि के वास्ते १०, से अधिक नहीं ॥

[२२] जूहारी अर्थात मिलाई वा मिलो

नी–प्रथम बार कुल १२, रुपये खर्च होंगे और इसके पश्चात २, रुपये से अधिक नहीं ॥ रास्ता चलते हुए जूहारी नहीं होंगी, मेले वा पूजा में जूहारी नहीं होगी केवल मिठाई दीजावेगी जो १, रुपये से अधिक नहो जोडा पहनाना और खिलौने और टोपी आदि देना बंद ॥

(२३] रुखसत दुल्हन–जब लडकी अपने ससुरके घरसे अपने बाप के घर आवेतो जोडा और भाजी कुछ नहीं लावेगी ॥

[२४] मुकल्लावा–(गौना) थान पकवान और बरतन आदिका देना बंद

[२५ [साथ–साथ खिचडी आदिका देना बंद ॥

[२६] मृतक–बिरादरी की माजी मट्ठ ज्यानार बंद मुर्देकाबाजार मेंनिकालना बंद बाजा वजाना और बखेर करना और ठप्पे और तमाशा आदि का डालना बिलकुल बंद ॥

मैंनेइसको बहुत विस्तार होजानेके भयसे इसस्थान पर बहुत संक्षेपके साथ लिखा है ॥ इस प्रबंध की एक किताब बनाकर नकुडके भायोंने उर्दू में छपावादी है जिन भाइयोंको कुल पुस्तक देखनी हो मेरे पाससे मंगालेवे ॥ और अपने २ नगरोंमें इसही प्रकार प्रबंध करके और अपने को व्यर्थ व्ययसे बचाकर अपने और अपनी संतानके उपकारार्थ लगावें और आनंद और निराकूलता से आयु व्यतीतकरें

करहलजिलामैनपुरी

मार्गशीर कृष्णा १४ को सभा रातके ८ बजेसे प्रारंभ हुई और १० बजेतक विसर्जन हुई कि जिसमें प्रथम भाई भादौलाल पंडित करहल निवासीने अपनी सुन्दर युक्तिसे सभाको शरद ऋतुवत् परोप कारिणी और अति निर्मल अनेक दृष्टांत और युक्तियों से मिलकरव्याकर्णसेशुद्ध श्लोकोंमें पढकर बडी ध्वनिसे सभाको सुशोभित किया कि जिस अपूर्व युक्तिको श्रवणमात्रकर सर्व सभा आनंद में पूरित होगई और उक्त पंडितजी साहबको धन्य धन्य कहनेलगगई फिर भाई साहबने सर्वजीव देशका उदेश किया तत् पश्चात् भाई भवानी लाल मंत्री सभाने बड़े हर्ष संयुक्त सभाके आद्योपांत नियम माने सभा शुरू होनेसे विसर्जन पर्यन्त जिस कायदे से आना और सभा स्थान में बैठना और योग्य अवसर पाँइ बोलना आदि की रीति सर्व भाइयोंके प्रति भले प्रकार प्रकाशित की कि जिसके श्रवण से सर्व सभा सदों के हृद

यमें अपूर्व असर पैदाहुआ और सर्व भाई सभाकी नियमावली से ज्ञात अर्थात जानकार होगये तत् पश्चात् उक्त भाई साहबने जैन प्रभाकरका संक्षेप वृत्तान्त याने धनवान होनेका गूढ मंत्र पढकर अर्थ सहित प्रकाशित किया कि जिसकेसुननेसे सर्व सभा प्रफुल्लित होगई और अगाडी को उम्मेद अखबार और सभा संबंधी वार्ताओं की सुनने की सब के हृदय में बनी रही तत् पश्चात् कुछ फजूल खर्ची आदि के गुण दोष दिखाकर सभा को मंगल पूर्वक विसर्जन किया सभा में सभा सदोंकी संख्या अनुमान २०० केथी ॥

संक्षेपचिठ्ठी

भाईसाहब — जैजिनेंद्रके पश्चात् प्रगट हो कि दास बहुत मुद्दतसे बुखार और दर्दसिर से दुखित होरहा है और अभीतक पूर्ण आरोग्यता प्राप्त नहीं हुई इस कारण रिपोर्ट आपकी सेवा मेंनहीं भेजसका। अब आज्ञाके अनुसार कुछ संक्षेप रिपोर्ट और जलसेका हाल आपकी सेवामें रवाना कियागयाहै आशा है कि आप कृपाकरके इसको प्रकाश करेंगे ॥

इंद्रलाल चौकचाकसू (जैपुर) सिटी लिखित ३० नवम्बर सन् ९९

सालाना जलसा जैनपाठशाला मंदिरजी ठोलियान जैपुर

मिति कार्तिक शुक्ला ९ दिन आदित्यवार सम्वत् १९९२ को शामके वक्त जैनपाठशाला मंदिरजी ठोलियान का सालाना जलसा हुआ- जिसमें सेठसाहब चांदनमलजी मुन्तजिम महकमे सायरात, लालाचमनलालजी सुप्रिटंडेंट महकमे इमारत, वृद्धिचंदजी नायब फौजदार, लालाजवाहरलालजी राव बहादुर, ठाकुरगोविंदसिंहजी बहादुर, लाला भोलीलालजी हैडक्लर्क दीवानी, लालालक्ष्मीचंदजी नायब नाजिम निजामत सवाईजैपुर लालानंदलालजी टीचर महाराजाकालिज, लालाचांदूलालजी हैडक्लर्क इमारत, मुन्शी बसंतीलालजी बी,ए, लालामूलचंदजी बी,ए आदि और अन्यबिरादरी वाले मौजूदथे— लगभग ३६ विद्यार्थियोंको अच्छी उन्नति करने नेक चालचलन होने तथा खुशखत होने के पारितोषक बांटेगये - कई लडकोंने अपनी योग्यता नाटक द्वारा प्रगट की। इस नाटकमें धर्म और वाणीकी चातुरताई दिखलाई गईथी जिसमें वाणीका मुख्य होना साबित कियागया । ईसके पश्चात् लाला छोगालालजी बी.ए, ने सालाना रिपोर्ट इस विषय की सुनाई - सम्वत १९५१ विगत होचुका पाठशालामंदिरजी ठोलियाननेछठेसालमें कदमरक्खा। इस पाठशालामें ९६ वि

द्यार्थी पढतेहैं धर्म ग्रन्थों के उपरांत व्या करण और गणित आदिभी पढाई जातीहै विद्यार्थियोंकी मासिकछ:माही तथा वार्षिक परीक्षा हुआ करतीहै पासहोनेपर पारितो षक दियाजाताहै । परीक्षकोंका नियत क रना मंत्रीसाहब जमनालालजी टीचर महा राजा कालिज के इख्तियारमें है । अबकी बार तीन लडकोंने जैनदिगंबर यूनीवार्सिटी मुंबईमें परीक्षा देकर सार्टिफिकट अर्थात् स नद प्राप्तकीहै यद्यपि पढाई यूनीवर्सीटी के अनुसार नहीं हुईथी । आगेको इसके अनुसार पढानेका प्रबंध कियागयाहै ॥ पाठशाला का कुल प्रबंध कमेटी के इख्ति यारमें है । पाठशालाके प्रबंधके वास्ते क ईभांतिके नक्शे हाजरी आदिके तयारकिये गये हैं और समालके लिये भी कमेटी से इंसपैकटरों का प्रबंध हुआ है ॥ पाठशाला संबंधी एक सभाहै जो प्रतिमास एकबार होतीहै । इसके पश्चात् हरेकको अपने २ खयालात प्रगटकरनेका अवकाश दियाजाता है इसके पश्चात् मंत्री साहब जमनालालजीकी आज्ञासे जलसा ११ बजे के लगभग विस र्जन हुआ ॥

इंदरलाल - सिर्टाजैपूर
चौकचाकसू

सम्पादककी सम्मति

सबभाइयों को उचितहै कि इसी भांति अपने २ नगरकी सभा और पाठशालाका व्यवस्थापत्र हमारेपास प्रकाश होनेके नि मित्त कृपाकरके भेजदियाकरैं ॥

रिपोर्ट काररवाई लाला बनवारी लाल आनरेरी उपदेशक

इससाल महा सभा ने यह वि चार कियाथा कि उपदेशक मुकर्रिर क रके देश विदेश वास्ते उपदेशके भेजेजा- वैं और उपदेशक फंडजो पहलेसे नियत हुवाथा पाकर यह निश्चय किया कि इसही उपदेशक भंडार से उपदेशक की काररवाई होती रहै और इसकी वृद्धि मैं कोशिश की जावे महा सभा मैं सब भा इयों के सामने यहबात विदित करदी गई और यहबात दिखलाई गई कि जो विद्वान भाई तनखा लेकर उपदेशकका काम करना चाहे उसको तनखाह दी- जावेगी और जोभाई बिना तनखाह के उपदेशकका काम करना चाहैं उनको स- फर खरच दिया जावेगा इसबातके कह नेपर उसही समय महा सभा मैं भाई कन्हैयालाल कोसी निवासीने यह जाहि र कियाकि एक वर्ष तक अपने देश में बिना तनखाह के मैं उपदेशक काकाम करूंगा और ऐसाही भाई बनवारीलाल निधोली जिलाएटा निवासी ने कहा कि मैं जिलाएटा और आसपास के नगरों मैं उपदेशकका काम करूंगा सो भाई बनवारी लाल ने महीने कार्तिक की काररवाई कीरिपोर्ट भेजी है वहप्रका श की जाती है ॥

रिपोर्ट दौरा

मिती कार्तिक वदी १४ को मैंने छोटी निधौळी जिलाएटा मैं दौरा किया सभा नियत कराई मेरे व्याख्यान का बहुत असर हुवा यहांपर १४ को अर्थात पंद्रह दिन मैं सभा हुवा करैगी सभापति भाई नौंवत लालजी मंत्री लाला नौनिधि रायजी और कोशाध्यक्ष भाई पन्नालालजी नियत हुये और सब भाई सभासद हुवे ॥ यहां पर पूजन काभी इंतजाम नही थासो पूजन की बारी बंधगई है रातको शास्त्र जीभी हुवा करैंगे ॥

मिती १५ को मैं भजवा के नगले मैं गया यहां भाई वल्देव प्रसाद चंपाराम जी वडे धर्म स्नेही हैं एक छोटासा जैन मंदिरभी बनवाया है यहां भी सभा नियत कराई ॥ सभापती लाल वलदेव प्रसादजी मंत्री चंपारामजी नियत हुवे॥ मैंने और लाला नौनिधिरायने द्रव्यदान करने के विषयमें भी व्याख्यान कहा। इसके पश्चात् मैं फफोतु गया यहां भाइयों में परस्पर ऐक्यता नहींथी सो मेरे व्याख्यान से विरोध दूरकर सब भाइ एक होगये हैं दूसरे दौरेमें सभा भी नियत होजावेगी यहां के भाईयोने पाठशाला जारीकरने को भी कहाहै

मिति कार्तिक सुदी १४ को सभा एटे में हूई यहां के भाईयोने यह नियम कियाकि समाई में लडके वालाकडे चांदी के और तोडा सोनेका विदायगी में दे देतेथे अब १) सेअधिक नदिया जावे और ९) मे अधिक कीमत के कडे कोई विदायगी में नदेवे जो जियादा देवेगा उसको दंड दिया जावेगा और जुहारी अर्थात् मिलौनी मे लडकी वाला दौसौ रुपये तक देदेताथा अब २१ से अधिक देना लेना वंद कियागया ॥ यहांपर सभा भी नियत होगई पंद्रह दिन पीछे छोटी और महीना पीछे वडी सभा हुवा करैगी यहां सभामें जैनसप्ताहिक गजट की खरीददारी मंजूर हुई

कार्तिक सुदी १९ को पिलुआमें सभा कराई जो फजूल खरची दूरकरने का प्रबंध एटे में हुवाथा यहांभी होगया गजट यहांभी भेजा जावे ॥

मंगसिर वदी १ को बरई जिला एटा थाना मारेरामें सभाकराई यहां के भाईयोंने भी फजूल खरची दूरकरने का प्रबंध एटे के तौरपर करलिया ॥ अखबारकी खरीदारी सभा मैं मंजूरहुई सभापति सेठजी वाराम मंत्री रेवतीलाल कोषाध्यक्ष भगवानदासजी नियत हुये यहां मासिक सभा हुवा करैगी ॥

मिती अगहन वदी २ सं १९५२ को असरन ऊजिला एटा मे मैंने सभा कराई ॥ आस पास के ग्राम मरथरा जिरस मै एध.ीका नगला वीरपुर के

भाई एकत्र हुऐ—लाला दिलसुख राय जो बडे सज्जन और परउपकारी हैं सभा पति नियत हुऐ और सभा मे यह बात निश्चय हुई के जूवा खेलना जो बहुत बडा कुव्यसन है जैनी लोगोंको हरगीज खेलना उचित्त नहीं—पससव लोगों ने जुवा नखेलने का नियम किया— और जो भाई खेलेगा उस्के उपर सभा की तर्फसे २१, दंड किये जावेगे—और ईसी प्रकार हुका पीना भी बंदहूआ जो भाई पीवेगा बिरादरी उसका खान पान बंद करेगी और दंड भी देवेगी और अगहन वदी ९ को एटा की जैन पाठशाला का इमतहान बाबू नन्दूमल डिपुटी इन्सपेकटर मदारिस पेनशन याफतः ने लिया यह पाठशाला बडी उन्नति पर है २ संस्कृतका अध्यापक अलहदह है— (और जहां २ सभा हुई है सब जगहों पर पंडितों की आव श्यक्ता है—जो पंडित नोकरी करना चाहें मुझे लिखें— फिर बाबू साहबने लडकों को किताब आदि अपने कर कमलों से इनाम मे बांटी बाबू साहब बडे धरमात्मा और कौमके शुभचितक पर उपकारी हैं— बडा आनंद रहा— मिती मंगसिर सुदी १ मोजे खटुआ में जाकर सभा कराई यहांपर भादों में एकयता नही थी और पूजन प्रक्षालनका प्रबंध ठीक नही था सभाके एक महीनेसे भाइयों मे एक्यता होगई—

पूजन प्रक्षालनका प्रबंध ठीक २ हुआ पुरष स्त्री आदि सबने नित्य दरशन कान की आंखडी करी और व्यर्थ व्य यके रोकनेका भी प्रबंध करनेको कहते हैं—दूसरे दोरे मे सभा कायम होजावेगी—यहां कोई जैनी पंडित नहीं है इस वास्ते धर्म कार्यमे हानि होरही है फिर मिती मंगसिर सुदी ५का रथयात्रापर मोजअ फफोतूमें सभा हुई यहां का सभा में ५०० से अधिक भाई और अन्य मती भी शामिल थे इस सभामें पण्डित जोहरीमलजी एटा निवासीने कुदेव के पूजने की हानिमें और सच्चेदेव की पह चानमें अति मनोहर व्याख्यान दिया जिसके सुनने से सब लोग गद गद हो गये और मैने सात कुव्यसन के सेवनेकी हानि में व्याख्यान दिया उस का ऐसा असर हुआ कि उसी वक्त बहुतसे भाईयोंने वेश्या सेवन जूवाखेलना हुक्का पीना इत्यादिक की आंखरी करी -- और ६ और ७ को भी सभा हुई - जो भाई बाहरसे मेलेमें आयथे बडे आनंद में मग्न हुए और मुझको बहुत जगह के भाईयोंने अपने यहां बुलानेका नोता दिया है - सो में सब जगह जाऊंगा - इसफफोतूकी सभा के सभापति भाई ठाकुरदासजी और मंत्री पूर्णचन्द्रजी नियत हुऐहैं जो प्रबंध एटा की बिरादरी ने व्यर्थव्यय के रोकनेके करेथे यहां के भाईयों ने भी स्वीकार

किये और फिर मार्ग शिर सुदी ८ को नोराईमें आकर सभा कराई - और ए.। की बिरादरीके माफिक यहांके भाईयो ने भी व्यर्थ व्यय रोकने के नियम स्वी कार किये यहां जैनगजट भेजाजावे - और अब में सकीट तथा सिकंदरा आ दि को जाऊंगा - जैनगजट मेरे पास भी भेजाजावे ॥

महामंत्री की राय

हकीम बनवारीलाल आनेरी उपदेशक के काम की हम बड़ी खुशीसे दाददेते हैं और जिन भाइयो ने उनका उपदेश सुन कर सभा स्थापित करी और व्यर्थव्य का। बंधान किया उनको भी धन्यवाद है बीत रागदेव सभाओंको चिरंजीव रक्खे ॥

श्रीजैन मंदिर प्रतिष्ठा धूंधरी

धूंधरी नगरकेकडी शहर जिला अ जमेरमें च्यार कोसहै रेलका स्टेशन न सीराबाद है वहांसे एक विज्ञापन मंदर सुनहरी अक्षरोंमें छपाहुआ हमारे पास आयाहै और इस पत्रमें छापनेके वास्ते लिखाहै सो उसका संक्षेप लिखतेहैं मिती माघ कृष्ण चतुर्थी ४ को श्री १०८ श्री महाराज रथमें विराजमानहो कर गान नृत्य सभा सहित श्री मंडप में बिराजमान किये जायगे उसही दिन पूजन स्थापन का मुहूर्त होगा विधान त्रैलोक्यसार का होगा तथा भजन नृ त्य शास्त्राध्ययन सभा महासभा प्रश्नो त्तर श्रावक हितकारक सभा वा जैन विद्यालय औषधालय भंडारकी उन्नति सदाचार का विषय आदि अनेक धर्म के अंग प्रकाश किये जायगे ॥ माघ शुक्ल २ में श्री जिनालय पर कलश ध्वजा चढायेजायगे ॥ माघ शुक्ल ३ को पूजन विसर्जन जलयात्रा पूर्णाभिषेक म [illegible]सभा होगी इसही दिन महाराज वेदी [illegible] विराजमान किये जायग ॥

[illegible]नो पा लागणी गाल गीतादि सं [illegible]रिक कार्य नहीं किये जायगे ॥

एडीटर

हमने पहलीवार यह एक प्रतिष्ठाका [illegible]ापन पढाहै जिसमें लिखाहै कि जै[illegible] [illegible]द्यालय औषधालय भंडार की उ[illegible] [illegible] सभा महासभा आदि के विषय [illegible]काश किये जावेंगे ॥

[illegible] हमको निश्चय होताजाताहै कि ह मारे धर्मकी अवश्य उन्नति होगी क्यों कि हमारे भाइयों को अपने सुधार का खयाल होने लगाहै यदि इसही प्रकार इन मेलोंमें सभा होकर धर्मप्रचार और विद्याप्रचार के उपाय विचारे जायाक रे तो फिर यह न्यून दशा दूर होनेमें क्या संदेह होसक्ताहै ॥ बहुत जगह यह रीति देखी गई है कि मेलेमें जोस्त्री पुरुष आतेहैं वह अपने रिश्ते दारों(ना तेदारों) से मिलने पर देने लेनेका व्य वहार करतेहैं और इस प्रकार बहुत द्रव्य खर्च होताहै जिसके कारण मेलों

में कम जाना होताहै परन्तु धूधरीके भाईयोंने अपने विज्ञापनमें ही यह लिख दिया है कि कोई यहां संसारिक काम नहीं कर सकेगा ? धन्यहै धूंधरीके भाईयोंको ॥

मेलारथयात्रा शहर मेरठ

शहर मेरठसे हमारेपास विज्ञापन आयाहै जिसकासंक्षेप लिखाजाताहै ॥ पोह सुदी १३ तारीख २९ दिसंबरसन् १८९९ को प्रथम रथयात्रा होगी और माघ बदी २ को आखरी इस विज्ञापन में यहभी लिखाहै कि सभा और जैन नाटक भी होगा

प्रार्थना

यह विज्ञापन बहुत देरसे हमारे पास आये है एक महीने पहले आने चाहिये यदि इसही प्रकार सब जगह से जहां उत्सव रथयात्रा वा पूजन प्रतिष्ठा का हो हमारे पास विज्ञापन आजाया करैं तो हम बडे हर्षके साथ इस पत्रमें छाप दिया करैं और इस पत्रके द्वारा सब भाईयों को खबर होजाया करै

एक सच्चा परोपकारी

आज कल ऐसे पुरुष बहुत कमहैं जोकि अपने भाइयोंके फायदेके वास्ते अपना धन खरच करतेहैं ॥ आज कल परोपकारी भाई बडी मुश्किल से मिलतेहैं धन्यहै वे पुरुषजो अपना तन मन वा धन अपने धर्म और जातिकी उन्नति में लगाना चाहतेहैं ऐसे पुरुषों का नामतो स्वतः सूर्यकी भांति जगतमें विख्यात तो होताही है इस कारण ऐसे पुरुषोंका नाम हम क्या प्रकाश करस के हैं परन्तु हमारे जीका उत्साह हमको बार बार यही कहताहै कि ऐसे परोपकारी यों के पवित्र नाम अवश्य सब भाईयों पर प्रगट करदेने चाहिये और सब भाईयों से प्रार्थना करनी चाहिये कि अपने अपने नगर के परोपकारी भाईयों के नाम हमको लिखैं जिससे हमारा उत्साह बढता रहै और उनका नाम हमहर्षसे हित प्रकाश करते रहैं ॥

लाला शंभूदास साहब इसलाम नगर तहसीलनकूड जिला सहारनपुर निवासी जो जिला सहारनपुर मैं कानूनगो गिरदावरथे और इस साल उनकी पैनशन होगई है और अब रुडकी जिला सहारनपुर मै रहने लगे हैं बडे धरमात्मा और परोपकारी पुरुष हैं वह हमेशासे जैनधर्म और जैन कौम की उन्नती की तन मन धन से कोशिश करते हैं अब उनकी एक चिट्ठी हमारे पास आई है उस में उन्होंने लिखा है कि बहुत दिनोंसे जैन महा विद्यालय अर्थात जैनकालिज के वास्ते कोशिश होरही हैं परन्तु कुछ फल प्राप्ती नही हुई है इसकाकारणयह है किसबभाई जो विद्या का प्रचार चाहते हैं यह समझते हैं कि धनवान पुरुष पहलै महा विद्यालयके वास्ते रुपया देवेतो काम चले परन्तु लाला शंभूदास साहब लिखते हैं कि धनवान पुरुष

तो अपने धनके मद मैं मगरूर हैं उनको अपनी कौम के उपकारकी क्याफिकर पडी हैं इस कारण पहले परोप कारी परुषों कों ही हिम्मत करनी चाहिये सो लाला शम्भूदास साहब लिखते हैं कि मैं अपनी तमाम पूंजी का दसवां हिस्सा इसकाम मैं देनेको तय्यारहूं धन्य है इनके साहसको यदि और महाशय थोडे भी ऐसे उद्यमी मिलजावें तो सहज ही यह कौम तरक्की करजावे ॥ देखते हैं और कितने भाई उप कार के मै दान मैं निकल ते हैं ॥

दूसरा सच्चा परोप कारी

लाल पन्नालाल साहब नकुड जिला सहारन पुर निवासी ओवरसिअर पटान कोट भी बडे धरमात्मा हैं इनका बहुतकाल पूजा स्वाध्यायादिक में ही व्यतीत होता है आपने नकुड में आकर जैन विद्यालय अर्थात जैनकालिज के वास्ते एक हजार रुपया दिया और इस ही प्रकार और भाईयों को भी देनेके वास्ते प्रेरणा करीसो ढाई हजार रुपये के करीब नकुडमैं रुपया जमा होगया है और भी होजावेगा ॥ हम लाला पन्नालाल के उप कारकी क्या तारीफ करैं यदि इसही प्रकार हमारे भाई कारज शुरू करैं तो क्यूं यह काम अटका पडारहै हमको उम्मैद पडती है कि जैन कालिज अर्थात जैन विद्यालय बहुत जल्द जारी होजावेगा ॥

भेडी चाल

मनुष्य बहुत प्रकारके हैं कोई अकलमंद है कोई बेवकूफ है कोई अपनी भलाई बुराई को बिचार सक्ता है और किसीमें यह समझ नहीं है परन्तु कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसको अभिलाषा अपने हितकी नहो अर्थात् अपने फायदे की सब ख्वाहिश रखते हैं इस कारण जो मनुष्य अकलमंद होते हैं वह तो अपना सब काम खुद नफानुकसान विचार कर करतेहैं परन्तु जोलोग मूर्खहैं उन को बडी मुशकिल होतीहै क्योंकि उनको इतनी बुद्धि है नहीं जो हिताहित का विचार करसकैं लाचार ऐसे मनुष्य अपने सब कारज दूसरेकी देखादेखी करतेहैं अर्थात् जिस प्रकार दूसरेको कोई काम करते हुए देखतेहैं उसही प्रकार आप भी करने लगतेहैं एक जानवरहै जिसको भेड कहते हैं उसमें स्वाभाविक यह बातहै कि एक भेड जिस तरफ को जाती हो उस तरफको सब चलने लगतीहैं चाहे उस तरफको जानेमें नुकसान होवा नफा इस कारण विना विचारे किसी कामको दूसरेके देखादेखी करने को भेडी चालकहते हैं इस भारत वर्ष मैं विद्या की हीनता होनेसे और अविद्या रुपी अंधकार के फैलनसे भेडी चाल का रिवाज बहुत होगया है और बहुधा करके हमारे जैनी भाईयों मैं तो सबकाम भेडी चालपर ही होने लगे हैं और हिता हित-का बिचार बिलकुल जातारहा है ॥ इस भेडी चालसे बडाभारी नुकसान पैदा होता है इसही कारण हम लोगों की अत्यंत न्यूनदशा होगई है ॥ बिना बिचारे दूसरे के देखा देखी कोई कारज करने मैं यह

नुकसान होता है कि अव्वल तो यह ही मालूम नहीं होता कि जिसकेकामको देख कर हम काम करना चाहते हैं उसने भी इस काम को बिचारकर किया है या उस ने भी दूसरे की देखा देखी किया है और सबसे बडी बात यह है कि हर एक काम का अलग अलग मौका होता है एक सम[illegible] में वही काम गुण दायक होता है और दूसरे समय मैं हानि कारक इस वास्ते समय को विचारे बिदून किसी दूसरे को कोई काम करते हुवे देखकर उसही प्रकार करने में बहुत नुकसान है ॥ जैसा कि मसल मशहूर है कि एक मनुष्य गरमी की मौसम मैं अपनी सुसराल मैं गयाथा इस कारण वह बहुत बारीक कपडे पहनता था प्रति दिन दोदफै ठंडे पानी मे स्नान करता था और पानीका छिडकाव कराताथा एक दूसरे मनुष्य को भी सुसराल मैं जानापडा उसने पहले मनुष्य को देख कर यह अपनेमन में ठानालिया कि जिस प्रकार सुसराल में जाकर यह बरतता है इसही प्रकार मैं भी करूंगा सो उसने भी सुसराल में जाकर वही काम किये परन्तु इसी सम जाडे की थी इस कारण बारीक कपडे पहनने आदिक से यह बहुत बीमार होगया और अंतको मरगया ॥ इसही प्रकार देखा देखी बहुत से काम हम लोग करते हैं और महाघोर दुख में फसते हैं इस वास्ते हमारी यह प्रार्थना है कि मूरख बनकर भेडा चालको हम क्यूं स्वीकार करैं क्यूं सबकाम अपना हित अहित बचार कर न करैं जिससे नतो कोई नुकसान हो और न मूरख कहावैं ॥

हमारी उन्नतिको रोकने के कारण

हे प्यारे भाईयो कभी आपको यह खयाल भी पैदा हुआहै कि हमारी उन्नति क्यों नहीं होती हम क्यों धनवान बलवान और धर्मात्मा नहीं होते हम क्यों सुख चैनसे दिन व्यतीत नहीं करते हम क्यों दिन रात मारे २ फिरते हैं हमें क्यों चैन नहीं पडती हमे क्यों दुखोंमे फुरसत नहीं होती हमें सरकार दरबार में क्यों इज्जत नहीं मिलती हम क्यो राज अधिकारी नहीं होसकते हम आये दिन बीमार क्यो रहतेहैं हम इल्म की तरक्की अर्थात विद्योन्नति क्यों नहीं करसकते हमारी आयु कम क्यों होती जाती है हम निर्बल और बुद्धि हीन क्यों हुए चले जातेहैं शायद यह खयाल आपको पैदातो हुवा हो पर आपने इसको जरा कठिन समझकर चित्त मे बिसार दिया हो पर यह खयालबडा आवश्यक और उचित है इन कारणों पर अवश्य ध्यान करना और सोचना चाहिये ताकि हमको इन बुराईयों से छुटकारा हो और सुख चैनके साथ जीवन व्यतीत हो ॥ [शेष आगे]

बंबई मित्र प्रेसमै छपा

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एक वर्ष का डाक व्यय सहित केवल तीन रुपया है ॥

यह पत्र सप्ताहिक है अर्थात् एक महीने में चार बार प्रकाशित होता है ॥

बाबू सूरजभान वकील के प्रबंध से देव बन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होता है ॥

यह पत्र हर अंगरेजी महीने की १-८-१६ और २४ ता० को भाईयों की सेवा में हाजिर हुवा करेगा ॥

प्रथमवर्ष	जनवरी सन् १८९६ ता० १	अङ्क ४

प्रार्थना ॥

नमूने के तीन नम्बर पहुंचने परभी बहुतसे भाईयों ने हमको यह सुचित नहीं किया है कि उनके पास यह पत्र बराबर भेजाजावे या नहीं ॥ हम बहुधा करके यह तीन अंक नमूनेके सब जगहके श्रीजैन मंदिरों मे भजते रहे हैं जिससे वहांके सब भाईयों को इसका हाल मालूम हो जावे परन्तु जिस जगहसे हमारे पास कुछ भी खबर नहीं आई है तो क्या हम यह समझलेवें कि वहांके भाई मंदिरजी में आते ही नहीं हैं जिससे उनको इस पत्रका हाल मालूम हो हम यह पत्र चौथी वारभी भेजते हैं जिस जगह से कुछ जबाब अबभी नहीं आवेगा वहां पांचवां पत्र भेजा नहीं जावेगा ॥

रिपोर्ट बनवारी लाल उपदेशक

मिती अगहन सुदी १४ को एटे खास में सभाहुई— बहुतसे भाई एकत्र हुऐ व्याख्यान आदि होने के पीछे यहबात नियत हुई कि ऐटा पदमा वती पुरवार भाईयों का मुख्य स्थान समझा जाता है जो नियम यहां से होगा वोह

आस पास के सबभाई ग्रहण करेंगे और यहांके भाईयों की देखा देखी गरीब भाई ग्रामों तथा कसबे के रहनेवाले— हमारे पीछे विवाह आदि की रस्मों में व्यर्थ व्यय करके दिनपर दिन न्यूनदशा को प्राप्त करते जाते हैं इसवास्ते और भी इन्तजाम व्यर्थव्यय के रोकनें का करना मुनासिब है जिन भाईयोंको मथुरा की महा सभा मे बाबू सूर्य भानुका व्यख्यान सुनने का मोका मिला उनके कलेजोंमे अपनी जातकी हालत देखकर चोट लगी हुई है—यहांपर लाला श्रीपाल गुपाल दास की वरातो में हजार ८ स से भी अधिक वराती आये और तायफे (रंडीभडवे) भी वहुत से आये और आतिश बाजी बगैरह मैं सैकड़ों रूपये खर्च होगये—कुछ ठीकाना खर्च का नहीं रहा और न कोई हद रही— इसी प्रकार और २ भाईयों के यहां भी जो जरा आसूदा समझे जाते हैं हाल है इसवास्ते अभी सभा मे यह इन्तजाम हुआ है कि ३१ वहली और ३ छकड़ों से अधिक सवारी और मव नेगी आदि लेकर ३०० आदमियों से अधिक कोई वारात नजावे और न मंगाई जावे—और आतिश वाजी अव्वलतो बिलकुल कोई भाई नलेजावे और जो लेजावे तो २१, से अधिक की नहो और लड़की के मुकलावे मे ५१ जोडों से अधिक नदेवेंगे औरन लेवेंगे —जब यह नियम चल जावे गातो आगे को और भी कमी की जावेगी— फिर पूसवदी ५ को मोजेरार जिलाअ ऐटा मे वहां क भाईयों के बुलाने पर जाकर सभाकराई यहां के भाईयों मे परस्पर दैव जोग से ऐक्यता नही है सव मार्ग खराब होरहा है परन्तु मेरे जाने सेवह तसी तकरार तो दूर होगई— दूसरी बेरके जानेंसे सभा नियत होगी और ऐक्यता होजावेगी— और भाईयों के शुमारीके नकशे १० ग्राम के तो भर लिये गये हैं— और भर रहा हूं—

हम ऐटा के भाईयों को धन्यवाद देते हैं कि जैसे वे मुखया पद्मावती पुरवार भाईयों मे हैं वैसाही उन्होने अपने भाईयों का व्यर्थव्यय रोकने के वास्ते अग्रता करी है— परन्तु हमारी प्रार्थना यहभी है कि आतिशवाजी को बिलकुल ही रोकना उचित है यहतो जैन धर्म के बिलकुल ही अनकुल नही है और हम अपने करहल तथा मैनपुरी के भाईयों से भी प्रार्थना करते हैं कि वह भी लमचू और बुंदेले भायों के प्रति निध हैं वह भी व्यर्थव्यय को रोककर महा सभा को हर्षित करेंगे ५

द. चम्पतराय महा मंत्री ॥

———o———

नियमावली

उन उपदेशकों के लिये जो जैन महा सभा के आधीन देशाटन करेंगे

[१] हर उपदेशक को उचित है कि निम्न लिखित नियमानुसार देशाटन कर जैनी लोगोंमें ऐसा उपदेश देताहै जो जैन महासभा के मन्तव्यकी पुष्टी और कार्यकी सिद्धिके लिये उचित और आवश्यकीय हो ॥

[२] कोई उप देशक महाशय यदि किसी स्थान पर बिना बुलाया जाय तो उस को उचित है कि अपने पहुंचनेके ठीक समाचार समय और दिन सहित वहां की पंचायतमें कुछ समय पहलेसे भेज दें और जहांतक होसके नियत समय पर पहुंच कर बिरादरी के किसी प्रतिष्ठित भाईके मकान पर ठहरे ॥

[३] स्थानिक भाईयोंकी सम्मति से समय और स्थान सभाका नियत कराकर छपे हुये विज्ञापन (जिनमें व्याख्यान का विषय समय स्थान दिन सब लिखा जाना चाहिये) द्वारा मंदिरके माली वा दूसरे किसी अन्य प्रकारसे बिरादरी में खबर करा देनी चाहिये छपे हुये विज्ञापन हर उपदेशक को महामंत्री के पास से मिलतेरहा करैंगे और यदि किसी समय किसी नवीन प्रकारके विज्ञापन की आवश्यकता होतो उपदेशक अपने तथा स्थानिक बिरादरी के व्ययसे छपालेवें तो कुछ हर्ज नहींहै।

[४] उपदेशोंमें निम्न लिखित विषयों की मुख्यता पर ध्यान रहै ऐक्यताके लाभ सभा द्वारा ऐक्यता का होना, सभा करनेके लाभ, धर्मोन्नति के उपाय, जैनी लोगोंमें धर्म और विद्याकी आवश्यकता, व्यापार के लाभ, और उस में विद्याकी आवश्यकता, तथा वाणिज्य करनेके ढंग, आपसके विरोध से जो जो हानि होती हैं उनका वर्णन, विवाह शादियोंमें तथा मृतक संस्कार कार्यादिकमें व्यर्थ व्यय करनेसे जैनियोंको निर्धन नबनना चाहिये, उनकी हानियां यथार्थ रूपसे दिखलाई जावें और व्यर्थ व्यय रोकनेका प्रबंध तथा जैनी लोगों को मंदिरमें जाकर शास्त्र पढने सुनने की शीक्षा चार प्रकार के दान में विद्या दान की महत्वता का वर्णन जैन गजट का जैनी लोगों को अवश्य ग्राहक होना चाहिये उसके पढने से संसार भरके मन्दिर चैत्यालय जन संख्या रीती भांति चलन व्यवहार का ज्ञान रथयात्रा पूजन मेले उत्सवादि जहां जहां होते हैं उनका हाल खुलता है, बाल विवाह और कुदेवादिक के पूजने में सम्यक्त्व भ्रष्ट होता है इत्यादि ॥

[५] सबसे प्रथम उपदेशक को चाहिये कि जहां जाय सभा नियत करावें (जि-

सके लिये जुदी नियमावली दीजावेगी) क्योंकि सभा द्वारा कार्य्य की सिद्धि उत्तम प्रकार से होसक्ती है, भावार्थ सभा पाठशाला नियत करा सक्ती है, व्यर्थव्यय (फजूल खर्ची) रोक सकती है तथा उस के सदैव नष्ट करनेके लिये नियम बनासक्ती है. उस सभाका मंत्री महा सभा और दूसरे भ्रातृ गण से पत्र व्यवहार चलासक्ता है और महासभा के मंत्री गण अपने अपने कार्यों में पत्र व्यवहार चला कर उक्त मंत्री से नाना प्रकार की सहायता लेसके हैं, इस के व्यतिरिक्त उपदेशक को चाहिये कि जो २ कार्य्य महा सभाने आरम्भ किये हैं (देखो धारा६) उन की सफलता में सयत्नर है ॥

[६] प्रचलित वर्ष के लिये महासभा ने हर एक कार्य्य के प्रबंध कर्ता जुदे जुदे मंत्री और एक महा मंत्री सब ९ नियत किये हैं, इस लिये उपदेशकों को उचितहै कि जहांपर वे सभा नियतकरावें उसके समाचार पंडित चुन्नी लालजी मुरादाबाद निवासी को और पाठशाला स्थापित कराने के समाचार पंडित प्यारेलालजी अलीगढ़ निवासी को और व्यर्थव्यय हटानें तथा व्रत नियम दिलाने की सूचना मुन्शी मूलचन्दजी वकील मथुरा को पते वार लिख भेजा करें जिसे वे मंत्री महाशय अपने २ रजिष्टर में लिखते रहैं, और महासभा नें एक नागरी सप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित किया है जिसका मूल्य केवल ३, रुपया वार्षिक डाक व्यय सहित रक्खा है, उपदेशकों को उचित है कि इस पत्र के ग्राहकों की वृद्धि करावें और ग्राहकों से मूल्य लेकर बाबू सूर्य्यभान साहिब वकील स्थान देवबन्द जिला सहारनपुर के पास ग्राहकों के नाम पते सहित भेजते रहैं, और जो कोई प्राणी सप्ताहिक पत्रका ग्राहक तो बने परन्तु प्रथम मूल्य देने में कुछ विलम्ब बतावेतो यदि उपदेशक को भरोसा पड़े कि इसका मूल्य आजायगातो उसका नाम भी पते सहित बाबू सूर्य्यभानजी के पासही भेजते रहैं, और उपदेशक जिस स्थान पर जावें वहां के जैनियों की संख्या का नकशा भरकर हकीम उग्रसैनजी सरसावा, जिला सहारनपुर निवासी के पास भेजाकरें, (नकशेका नमूना इस नियमा वली के अन्त में लगाया गया है,)और विशेष सब प्रकारका पत्र व्यवहार उपदेशक लोगों को मुन्शी चम्पतराय साहिब (डिपटी सेक्रेटरी नहर) महा मंत्री स्थान इटावा से करना और आवश्यकता नुसार हर एक कार्य्य में उनकी सम्मती पर चलना चाहिये ॥

[७] विदित होकि जैनमहासभा उसके प्राण दाताओं ने किसी खास अपने

लाभ के लिये स्थापित नहीं करी, बल्कि जैनी लोगोंमें धर्म, धन, विद्या, शुभाचरणादि की न्यूनता देख उनके हृदयमें अत्यंत शोक उत्पन्न हुआ और स्वजातोन्नति के लिये उपस्थित हो अपना मनुष्यजन्म सफल किया चाहते हैं और मनुष्य देहपानेका सार भी यहीहै कि स्वजातोन्नति का अभिलाषी हो, उसके उपाय सोचाकरैं, इसलिये जैनमहासभा यही चाहतीहै कि संपूर्ण जैनी लोगोंमें धर्म धन विद्या व्यापार शिल्प शुभाचरणादि की वृद्धि हो, आपसमें ऐक्यता, मित्रता, वात्सल्य, आगकाप्रचार हो, प्रमाद, विषाद द्वेषादि खोटेआचरण छुट जाय इत्यादिक कार्यों की सफलता के लिये एक जैन महासभा स्थापित की गई, जिस के प्रधान सभा शिरो मणि श्रीमान श्रेष्टि लक्ष्मण दासजी सी. आई. ई. रईस मथुरा नियत हुये हैं, यद्यपि बिना द्रव्यके कोई कार्य नहीं चलता और एक वर्षके खर्चके लिये यह जैनमहासभा अनुमान तीन सहस्र रुपये की आवश्यकता समझती है जिसमें एक सहस्र उपदेशकों को परन्तु बड़े हर्ष कीबात हैकि परोपकारी वा धर्म कार्योंमें धन लगाने में जैनी लोग सबसे बढेहुए और अग्रेसर प्रसिद्धहैं उनकी नाम मात्र सहायता से मथुराजी महासभा श्रीजम्बूस्वामीके मेलेमें ही ८२९) रुपया एकत्र होगया. अवशेष ११७१) रुपयेकी और आवश्यकताहै सो आशा है कि भ्रातृगणों की कृपा दृष्टिसे इतने द्रव्यका एकत्र होना कोई कठिन बात नहीं है उपदेशकोंको उचितहै कि जो भाई इस भंडारमें सहायतार्थ द्रव्य प्रदान करैं उनसे लेकर रसीद देदिया करैं और वह द्रव्य श्रीमान् सेठलक्ष्मण दासजी सी, आई, ई. रईस मथुराजी के पास भेज दियाकरैं अथवाजो कोई भाई खुद उनके पास भेजना चाहैंतो भिजवा दिया करें. श्रीमान सेठ साहब अपने हस्ताक्षरकी रसीद द्रव्यदेनेवाले के पास भेज देवेंगे। यह परोपकारी काम उक्तमहोदयने स्वतः स्वीकार कर लियाहै. और जो भाई विवाह शादी रोगमुक्तस्नान. व्यापार. वा मालमें नफा विद्यारंभ पदकी उच्चता, वेतनकी वृद्धि परीक्षा में उत्तीर्ण. रोजगार प्राप्ति. यात्रा सफल. पुत्रोत्पत्ति. इत्यादिक आनन्द प्राप्त होने परउक्त सभाके भंडार की सहायता करें अथवा सहायता करने का नियम करैं तो आवश्य करलेना चाहिये. परन्तु उपदेशकों को चाहिये कि द्रव्य एकत्र करनें में ऐसा हठन करैं जिससे कार्य में हानि हो और दर्शक गण उपदेशक को लालची समझैं क्योंकि जैनी भाईयोंमें अभीतक मुसलमान वा आर्यों के समान धर्म्मोन्नतिका उत्साह उत्पन्न नहीं हुआ है, आजकल के जीव देना और मरना

बराबर समझते हैं, यह हमको दृढ आशा है कि जब हमारे जैनी भाईयों में उत्साह उत्पन्न होजायगातो सबसे अधिक कार्य यही कर दिखला वैंगे, और अन्यान्य धर्मी जन इनकी चाल ग्रहण करैंगे ॥

(८) जो कि अन्यान्य जिन वैश्णव लोगों से हमारा बेटी रोटी तथा मरने जीनेका बहुतही बडा सम्बन्ध है, और बहुधा रीति भांति मर्यादा भी उनकी हमारी एक हैं. बल्कि अग्रवाल जैनी वैष्णवतो अनेक स्थानोंपर मिले जुले ही पाये जाते हैं, और इस विचारांश को मुख्यमान जो उपदेशक लोग वैश्य कौन्फ्रैंस की आज्ञा से देंशाटन करतेहैं, वे अपनी सभाओं में जैनीलोगों को भी शामिल करतेरहतेहैं और जहां विशेष जैनीही होतेहैं तो वहां जैनायोंके ही मकान पर ठहरकर उपदेश करतेहैं, इसलिये हमारे उपदशकों को भी उचितहै कि जहां योग्य समझाकरैं स्थानक पंचायत की सम्मति से जो उपदेश व्यर्थ व्यय घटाने और कुरीतियोंके निवारणार्थ हुआकरै उसमें दूसरे वैष्णव लोगोंको भी अवश्य बुला लिया करैं, क्योंकि इस विषयमें जैनमहासभा और वैश्य कौन्फ्रैंस दोनो का एकही सिद्धांतहै, केवल जैनधर्म वा विद्यासंबंधी व्याख्यान मंदिरजीमें अथवा ऐसे स्थान पर जहां बिरादरी स्वीकारकरै हुआ करैं, और ऐसे व्याख्यान के सुनने के लिये उन दर्शकों के व्यतिरिक्त जो जैनियोंकी सम्मति से आये हों और सब जैनीही होने चाहियें । और ऐसे व्याख्यान सदैव जैनशास्त्रानुसार होंगे, उपदेशकको निज कपोल कल्पना वा मर्यादा रहित कार्य नहीं करना चाहिये, काल दोष कर अनेक स्थानोंकी बिरादरीमें दोदो तीनतीन टुकडे होकर घडे बंध जातेहैं, ऐसे स्थान पर उपदेशकोंको चाहिये कि ऐक्यता के गुण बतला कर सबका विरोध मिटवा दिया करैं ॥

[९] यह नियमरूप मान गयाहै कि परोपकारियों को सदैव विपक्षीका मुकाबला करना पडताहै और विशेष करके धर्मोपदेश दाताओंको तो अनेक प्रकार की कठिनता सहन करनी होतीहै, क्योंकि उनका उपदेश सदैव ऐसे कुव्यसनों के छुडानेका होताहै जिसको संसारिक जन अपनी भूल प्रमाद तथा इंद्रियों की लोलुपतासे उत्तम समझा करतेरहतेहैं, और इसी कारणसे हितोपदेशी पुरुष मूर्खोंकी दृष्टिमें निंदा पात्र और कंटक वत होताहै, अनेक स्थानों पर मूढ जन उनका अपमान करतेहैं, ठहरनेको स्थान तक नहीं देते, उनके पास जाईये तो मुख मोड लेतेहैं, बात तक नहीं करते, इसलिये संभव होता है कि यह कठिनता हर उपदेशकको

उठाना पड़े, परन्तु इस परीक्षाके समय उनको डरना और घबराना नहीं चाहिये, किंतु दृढता युक्त निज कार्यमें सावधानी रख निज पुरुषार्थ से काम चलावें और विशेष कर "ज्योतिषरत्न पण्डित जीयालालजी चौधरी ऑनरेरी उपदेशक" की दृढता और उनके कार्यों पर ध्यानदें कि बहुधा स्थानों पर [हम खेदके साथ प्रकाशित करतेहैं] जैनी लोगोंने उनको ठहरनेके लिये स्थान तक नहीं दिया, और स्वार्थी, पादरी, दयानंदी, भिखारी, गुलदूत आदिक नामोंसे पुकारा, परन्तु दृढता ऐसी उत्तम वस्तु है कि उक्त महाशय ने उन्हीं स्थानों पर निज कार्य सिद्ध किया, और उसमें ऐसी योग्यता दिखलाई कि जिसको सच्चे जातिहितैषी दिखलाया करतेहैं, हम उनकी इसजाति हितैषितासे तुष्टमानहो क्योंकि धन्यवाद करतेहैं और समझतेहैं कि हमारी जातिमें उक्त पण्डितजीको होना हमारा अहो भाग्यहै, क्या प्रसिद्ध पञ्चांग बना कर जो गौरव जैनियोंका दूसरे लोगोंमें उन्होंने बढाया यह कुछ छोटी बात है, इसी प्रकार यदि दूसरे उपदेशक महाशय भी अपना कार्य करेंगे तो अधिक लाभ होगा, क्योंकि सत्य की सदा जय होतीहै, " सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धिः " उपदेशक लोगोंको अपने व्याख्यानोंमें कोई ऐसा शब्द भूल कर भी नहीं कहना चाहिये जो किसी जाति, आम्नाय वा पृथक मनुष्यको बुरा लगे ॥

[१०] महासभाने उपदेशक लोग इसलिये नियत कियेहैं कि वे देश विदेश घूमकर जैनी लोगोंमें धर्म धन विद्या व्यापारादिक की उन्नति करावें और जैनीलोगोंमें वाणिज्य ही की विशेषता है इस लिये उपदेशक लोगों को चाहिये कि जहां जहां उपदेशार्थ जावें, वहां पर जो जो वस्तु तिजारती अथवा शिल्प (कारीगरी) की कपडा किराना अन्न धातुके बर्तन खिलौना, लकडीका ऊनका सामान इत्यादिजो बहुतायत[अधिकता] के साथ चलताहो उसका सविस्तरहाल अपनी रिपोर्ट में लिखाकरें, और यह भी लिखा करें कि उस स्थानपर किस महाशयकी दुकान व्यापार वा साहुकारे में प्रसिद्धहै, और यदि कोई भाई उस स्थानसे किसीप्रकार का व्यापार चलाया चाहैतो किस दुकानसे उसका कार्य सिद्धहोसकाहै यहभी रिपोर्ट में स्पष्ट लिखदिया करें

[११] बहुधा हमारे जैनीभाइयों को अपने पुत्र वा पुत्रीके संबन्धके लिये अनेक प्रकार की कठिनाईयां सहन करनी पडतीहै यदि वर मिलताहै तो घरनहीं मिलताहै वर वा कन्यामें न्यूनता होती है और बहुधा संबंध नाई आदि कमीन लोगों के हाथों ऐसे अनुचित रीति

से होजातेहैं कि वर कन्याका जीवन भर निर्वाह होना महा कठिन होताहै इस लिये महासभा उपदेशक लोगोंको आज्ञा देतीहै कि जहां जहां वे उपदेशार्थ जाया करैं वहांकी बिरादरीमें से जिस किसी भाईको वर व कन्या की आवश्यकता हुआकरै पूछकर जाति कुल गोत्र आदि सब पता अपने पास रिपोर्टसे जुदे किसी कागज वा पुस्तक म लिख लिया करैं और उनका संबंध करा देनेमें सर्व प्रकारकी सहायताकिया किया करैं, क्यों कि रेलकेहोजानेसे अब हरकोई जैनी दूरके संबधमे मुख नहीं मोडता और निकट स्थानोंके अतिरिक्त दूरदेशका हाल बिना किसी जातिहितैषी की सहायताके उनको ज्ञात (मालूम) होना सर्वथा संभव नहींहै ॥

[१२] जैनधर्ममें हिंसा झूंठ चोरी परस्त्रीपरिग्रह इनका त्याग यही धर्मका मूल कारण कहाहै सो व्यापारमें झूंठबोलकर दूसरेका दिल दुखाना वा गलाकाटना हिंसा और दगाबाजी चालाकी सो चोरी है प्रथमतो यह दोनों पाप होतेहैं, तीसरे झूंठेका झूंठ प्रगट होजाने पर उसकी प्रतीत नहीं रहती जिससे लाभके बदले उसको अधिक हानि सहन करनी पडतीहै और यही कारणहै कि जैनीलोगों के संपूर्ण व्यवहारों में सचाईका अंश विशेष होताहै बल्कि दूसरी जाति के मनुष्य जैनीलोगों की सचाई पर बहुत भरोसा रख उनकी प्रतिष्ठा (इज्जत) करतेहैं और बहुधा ऐसे लोग जैनियों में अबभी मिलतेहैं जिनके संपूर्ण कार्यों में सत्यही की अधिकताहै, इसलिये उपदेशक लोगोंको उचितहै कि जहां तक होसके जैनीलोगोंमें सच्चे व्यापार का प्रचार करावें यद्यपि व्यापार में सत्य बोलनेमे कुछ समय तक कठिनता सहनी पडतीहै, क्यों कि अब संसारी व्यापारमें झूंठ अधिक फैल गया है परन्तु जहां देखाजाताहै, यह निश्चय हैकि सच्चे व्यापारके बराबर झूंठ में लाभ नहीं जिस दुकानकी सचावट विख्यात होजातीहै उसको झूंठोंकी अपेक्षा अधिक लाभ होताहै ॥

(१३) बहुधा स्थानों पर जैनमंदिर वा पंचायतका रुपया किसी एक मनुष्य वा कई महाशयोंमे धरोहडके तौर पर जमा होताहै परन्तु आपसकी फूट व अन्य किसी प्रकारसे वह द्रव्य धर्म कार्यमें न लगता होतो उपदेशकोंको उचितहै कि उसकी यादद्दाश्त एक जुदे कागज वा पुस्तकमें अवश्य लिख लिया करैं परन्तु रिपोर्टमें यह हाल नलिखाजाय ॥

[१४] जहां जहां रथयात्रा और वार्षिक मेले होने वालेहों उनमें कोई उपदेशक यह समझे कि इस मेलेमें मेरे सिवाय किसी जैन उपदेशक शैली [डिपुटीसनपार्टी] के जानेकी आवश्यकता है तो इसकी सूचना जहांतक होसके महामंत्री जैन महासभाको देनीचाहिये ताकि महामंत्री

जहां तक हो सके जैन उपदेशक शैली वा अन्यान्य उपदेशकों को एकत्रित करके उचित समय पर भेज सकें ॥

(१५) हर उपदेशक को चाहिये कि हर अंगरेजी महीने की ८।१५।२३;३० तारीख को अपने देशाटन और उपदेशादि के समाचार सम्पादक जैन (गजट महासभा का नागरी साप्ताहिक समाचारपत्र) के पास भेजता रहे. और यदि किसी विशेष कारण से किसी सप्ताह की रिपोर्ट समयपर भेजने में न आवे तो अगले सप्ताह में दोनों सप्ताह का हाल लिखकर वह बिलम्ब का कारण भी लिखना होगा कि क्यों पिछली रिपोर्ट समय पर नहीं भेजी थी ॥

(१६) हर उपदेशक को अपनी डाक का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि जिसमें उससे महा मंत्री और अन्य पुरुषों को उससे पत्र व्यवहार करने में बाधा न हो, भावार्थ अपने देशाटन के समाचारों के साथ महा मंत्री को यह लिख दिया करें कि अमुक दिन अमुक स्थान पर उपदेश होगा, अथवा अमुक दिन अमुक स्थान से अमुक स्थान को जाऊंगा, और स्थानका नाम पते सहित स्पष्ट अक्षरों में लिखा जाया करे जिससे कोई चिट्ठी पत्री मारी न जाय ॥

(१७) हर अंग्रजी महीने के अंतमें उपदेशकों को वेतन शीट भरकर भेजने होंगे जिनके नमूने संख्या १।२।५। में इस नियमावली के अंत में लगाये गये हैं और वे महा मंत्री के पास भेजे जाया करें गे ॥

(१८) यदि किसी स्थान के जैनी भ्रातृगण किसी उपदेशक को रेलका किराया या किसी स्थानतक का टिकट रेल का दिला करें, वा अपनी सवारी देवें तथा भोजनादि की सुश्रुषा करें तो उसका स्वीकार कर लेना उचित है, और जो भाई इस प्रकार आदर सत्कार करें उनका हाल भी यद्दाश्त के तौर पर लिख लिया करें, और उसको आवश्यकता के समय जो कोई भाई देखा चाहै, तो दिखला भी दिया करें परन्तु और किसी प्रकार का धन वा वस्त्रादिक उपदेशक लोगों को किसी भाईसे बिलकुल नहीं लेना चाहिये।

(१९) एक एक जिल्द उर्दू रसीदबही की हरएक उपदेशकको महामंत्रीके दफ्तर से मिलेगी उसमें रसीद के दो भाग है सो जो भाई उपदेशक फंडमें सहायता देवेगा अथवा अखबार उर्दू जैनहितोपदेशक वा साप्ताहिक समाचार नागरी का मूल्य देवेगा तथा महाविद्यालय भंडारकी सहायतामें देवेगा वह द्रव्य उक्त रसीद बहीमें जमा करके रसीदका एक भाग रुपया देनेवालेको दियाजाकर दूसरा भाग बहीमें लगाहुआ उपदेशकों का अपने पास रखनाहोगा - उपदेशक भंडारमें सभासद होनेकी फीस १२)

रुपया वार्षिक और उर्दू अखबार जैन हितोपदेशक का मूल्य एक रुपया और नागरी सप्ताहिकपत्रका मूल्य तीन रु पया वार्षिकहै इससे कम किसीमे नहीं लियाजाय हां जोमहाशय पुत्रोत्पत्ति विवाह शादी परीक्षा उत्तीर्णादि किसी खुशीके अवसर पर कुछ उपदेशक फंडकी सहायता करै तो ४ आना तक भी लिया जासक्ता है और उपदेशक फंडका द्रव्य महामंत्री अथवा सभापति साहबकेपास मनिआर्डर तथा हुंडीद्वारा जिस प्रकार सुगम जाने भेजतारहाकरै उक्त रसीद बहीमें एक खाना औरहै जिसमें महाविद्यालय भंडारका चन्दा जमा होसक्ताहै सो यदि कोई भाई किसी उपदेशक को कुछ द्रव्य जैनमहा विद्यालय भंडारकी सहायतार्थ दियाकरै तो उसकी रसीद भी इसी बहीमें जमा करके दीजावे और वह द्रव्य भाईछोगालालजी अजमेर संपादक जैनप्रभाकर पत्र अजमेरके पास भेजदेनाहोगा और जब रसीद बही पूरी भरजावे महामंत्रीके दफ्तरमें भेजकर दूसरी नई मंगालेनी चाहिये, यह उर्दूमें रसीद बही उपदेशक फंडके व्ययसे प्रथमही छप चुकीथी और इस वर्ष उपदेशक फंड महासभामें मिला दियागया, इस लिये उचित समझा जताहै कि जबतक यह बहीपूरी नहींहो दूसरी न छपाईजावे जब यह भर चुकेगी दूसरी नागरी अक्षरोंमें छपालीजावेगी, इनको व्यर्थ समझ त्यागना और महासभा भंडारको हानि पहुंचाना ठीक नहींहै ॥

(२०) व्यर्थ व्ययका रोकना इसको समझना चाहिये कि बाग बाडी आतशबाजी बखेर आदि का रिवाज विवाह शादीयोंमें बन्द होवे तथा भोजनके लिये पत्तलमें इतनी मिठाई नबनाई जावे जो एक भाईके भोजन से बचकर झूठमेंफैंकी जाय, बरातमें १०० तथा १५० मनुष्य से अधिक लेजाना उचित नहीं इसकी बन्दी कीजाय एक संबंधी दूसरे का शुभचिंतक और सहायक बने मान बडाई अथवा भाग्यवानी के घमंडमेंआकर दूसरेका भी बिगाड न कियाजाय इत्यादि और स्त्रियोंका सीठने कहिये अनुचित निर्लज्ज गीतगाना तथा बाजारोंमें होकर गीत गातीहुई कुम्हार का चाक सेढ मसानी आदिक पूजने अथवा बिरादरीमें भाजी बाटनेको जाना यहखोटेव्यवहार बिल्कुल बंदकियेजावें।

[२१] हर उपदेशक को पांच किताब (जिनके नमूने इस नियमावली के अंत में लिखे गयेहैं) बनाकर अपने साथ रखनी होंगी और जहांके भाई उपदेशक को उसके कार्यमें जिस प्रकार की सहायता देवें उनके नाम धन्य वाद सहित अपनी सप्ताहिक रिपोर्टमें लिखतारहै और उपदेशक जहां जहां जाय वहांके जैनी लोगोंसे यहभी निवेदन

किया करे कि मेरे कार्यकी निष्पक्ष स मालोचना जो भाई लिखना चाहे अवश्य लिखे और स्थान देवबन्द जिला सहारनपुरमें बाबू सूर्यभान साहब वकील संपादक नागरी सप्ताहिक जैन गजट केपास भेजदिया करे अथवा उपदेशकके कामकी रिपोर्ट भेजे वह उक्त पत्रमें छपजाया करेगी ॥ देखो नमूना

(२) यद्यपि यह नियमावली महासभा ने बहुत सोच विचारके साथ बनाई है जिसमें काम चलानेके लिये सब प्रकार के नियम हैं परन्तु औरभी अनेक बातें ऐसी होंगी जो इस नियमावलीमें नही है यदि किसी उपदेशकको काम करने के समय कोई नवीन बात पैदाहोवे तो उस विषयमें महामंत्रीकी सम्मतिसे काम करना होगा और महामंत्री का लिखना ऐसा समझना चाहिये मानो वह लिखनी इस नियमावलीका एकभाग है ॥ ॥

सभापति साहबकी आज्ञानुसार
द: चम्पतराय महामंत्री भारतवर्षीय
जैनसंरक्षिणी महासभा (मथुरा)

(नकशे इस नियमावलीके दूसरे पत्रमे छापेजावेगे

हमारी उन्नति रोकनेके कारण

३ अंक के १६ सफेसे, आगे

मेरे ध्यानदेने व सोचनेका फल

जब मेने कारणों पर ध्यान किया और बहुत देर तक सोचता रहा तब मुझको बडे ध्यान और सोचके पश्चात् इन सब कार्यों के कारण फजूल खर्ची अर्थात् व्यर्थ व्यय और धनका अनुचित वर्ताव बाल विवाह वृद्धविवाह, विद्याप्राप्ती में अरुची और शुभ कार्योंमें वेश्या आदि का नाच कराना और प्रतिष्ठा और आपसमें वैर विरोध रखनाहै ॥

मेरी सच्ची प्रार्थना ॥

हे प्यारे भाईयो आओ मिल कर सोचें और निश्चय करें कि यही कारण इन कार्यों के हैं या कोई और ॥

निश्चय करनेके रस्ते ॥

हम निश्चय किस तरह करसक्ते हैं हमकिस तरहजानसक्तेहैं हमकोयहकिस तरह ज्ञान हो सक्ताहै कि इन कार्योंके कारण कौन कौन है ॥ यह मालुम करने के लिये हमको किसी बडी बातको निश्चय की आवश्यक्ता नहीं हैक्योंकि हाथ कङ्गनको आरसी क्याहै ॥ जरासे ध्यान और सोचने से हम किसी को ज्ञात होसक्ता है कि यही कारण इन सर्व कार्योंके हैं इनही की बदौलत हमारी यह दुर्दशा होरही है इनही ने हमको यह दिन दिखाये हैं इनहीने हमको हरेक की नजरोंसे गिराया है नहीं मालूम और क्या क्या करेंगे और कैसे कैसे दुख देंगे ॥

इनसे बचने की रीति ॥

यह है कि हम जो कामकरें खूब सोच समझ कर करें और भेडी चाल

को त्यागें और हरेक के ऊंच नीच प-
हिले सोच लिया करें ताकि पीछे पश्चा
ताप नकरना पडे और लोग हंसाईन
हो दुनिया हमको बुद्धि हीन और वि
वेक रहित नसमझे ॥

हमारी उन्नति कैसे होसक्ती है

ऐसा कौन है जो शब्द उन्नति के
अभि भाय से अभिज्ञ (वाकिफ) नहो
की कौन है ऐसा जिसको उन्नति करने
अभिलाषा नहीहो पर उन्नति करनेका
ढंग किसी को नहीं आता है और न
कोई जानता है कि उन्नति कैसे हुवा
करती है क्या क्या उपाय उन्नति के
वास्ते करने पडते हैं किस किस उपाय
से उन्नति होती है अब चूंकि उन्नति
करने के कारणों का जानना आवश्यक
और उचित है इस कारण मैं पूछ थो
डासा सब की चेतना के निमित इस
विषयपर लिखना चाहिता हूं ॥

उन्नति करनेके कारण

विद्या ध्यनमें परिश्रम करना, धन
का उचित वर्ताव करना समय की कद
र करना, बाल विवाह और वृद्ध विवा
हका रोकना और परस्पर प्रीति बढा-
ना समकक्षों [हम जिन्सों] से
प्यार करना फूटको दूर करना,वेश्या
से घिणा करना नगर और ग्राम २ में-
सभा और पाठशालाओं की वृद्धि
करना अपनी धर्म पुस्तकों का स्वाध्याय
करना राज भाषाका सीखना आव-
श्य कीय शिल्प विद्याका सीखना वा-
णिज्य अर्थात तिजारत को तरकी देना
हर कामका ऊंच नीच सोचना जिसमें
हानि हो उसको त्यागना, दूरदर्शी हो
ना निज परिणाम को संभालना राज्य
की आज्ञा ओंको अंगीकार करना का
नून पर दृढ रहना समय क हाकिम से
डरना उसकी आज्ञा में रहना हरक
कामको पहिले सोच समझ कर करना
बडों की प्रतिष्ठा करना, छोटों से प्यार
के साथ वर्तना, अपने बरायों से मी-
ठी वाणी बोलना सबका प्याराहोजाना
किसी को धोखा नदेना अभिमान न
करना सबसे मिलाकर रहना, नई बा-
तों में बदून सोचे समझे नफरत न कर-
ना, ईजाद अर्थात नवीन चीजों के ब-
नाने में कोशिश करना और नई २
चीजें बनाना आवश्यकता से अधिक
सामिग्री मोल न लेना कामके वक्त मु-
कर्रिर करना और उनकी पाबन्दी
करना,अर्थात जोवक्त जिसकाम के लिये
मुकर्रिर किया हो उसमें वहिकाम करना

संक्षेप वाक्य ॥

हे प्यारे भाईयो! यद्यपि उन्नति क-
रने के बहुत कारण हैं पर मैं ने बहुत
संक्षेप से लिखे हैं अब यदि आप मेरे
लिखे पर ध्यान करोगे सोचोगे और
अमल भी करोगे जा कि बहुत आवश्य
क बात है तो तुम्हारी उन्नति निसंदे-

ह होगी ॥ ईश्वर तुम्हें ऐसा करने की तौफीक अर्थात सामर्थ देवे शुभम् शुभम् शुभम् ॥

परोपकारता

इस जगत की रीति कुछ ऐसीहै कि एक का काम दूसरे विदून नहीं चलाता है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का दूसरे की सहायता अवश्य लेनी पड़तीहै इस कारण बहुत से काम जो दूसरे का उपकार समझ कर किये जातेहैं वह वास्तवमें अपनाही उपकार होताहै जैसाकि यदि रातको किसी के मकानमें चोर आजावै और चोर के पकड़ने मैं हम उसपुरुषको सहायता देवैं तो असलमें हमनेवह सहायता उसपुरुषको नहीं दीहै बल्कि अपने आपको दीहै क्यूंकि यदि हम इस प्रकार दूसरोंको चोरके पकडनेमें सहायता नदेवें तो जब हमारे मकानमें चोर आजावे तो कोईभी उसचोरके पकडने को नउठे और हमारे जागते हुए भी जबरदस्ती हमारी आंखोंके सामने कुलमाल चोर उठालेजावे इसही प्रकार यदि किसीके मकानमें आग लगजावे तो हम आगके बुझानेमें पूरी पूरी सहाता देते हैं वह भी अपनेही वास्ते ॥ इनबातोंके विचारसे हमको साफ मालूम होताहै कि जिस कदर हम दूसरोंकी सहायता करैंगे जिस कदर हम दूसरोंका उपकार करैंगे उतनाही हमको सुख होगा और सहायता होगी और जिस कदर हम दूसरोंकी सहायता करना छोड़ेंगे उतनाही हमको दुख होगा और कष्ट होगा ॥ यह बात देखने में आतीहै कि जिस कौम अर्थात् जातिमें परस्पर प्रीति और परस्पर सहायता और उपकार करनेकी प्रवृत्तिहै वह जाति बहुत उन्नति करतीहै और उस जातिके मनुष्यों पर कष्ट और विपत्ति बहुत कम आतीहै और वह सुख चैन से अपना समयव्यतीत करतीहै और जिस घरमें जिस कुलमेंजिस बिरादरीमें जिस जातिमें जिस नगरमें परस्पर प्रीति और एक्यता और परस्पर सहायता और उपकार करनेकी प्रवृत्ति नहींहै उसमें अवश्य विपत्ति आतीहै और उन सबकी न्यून दशा होजातीहै और उनको महान घोरदुख और कष्ट सहना पडताहै जैनियोंकी वात्सल्यता और परस्पर प्रीति जगत विख्यात है और वात्सल्यताको ऐसा मुख्य और आवश्यक समझाहै कि सम्यता के आठ अंगोंमें से एक अंग वात्सल्यताभीहै परन्तु हमको बडे अफसोसके साथ जाहर करना पडताहै और बडा खेद होताहै कि वात्सल्यता और परस्पर प्रीति की जगह हममैं ईर्षा विरोध वैर लडाई झगडे एक दूसरेका बुरा चाहना आदि खोटी बातें फैल गईहै और मेरे खयालमें इस जातिकी न्यून दशा का यही कारणहै और जब तक कि यह दुष्ट कर्म दूर नहीं होगा तबतक कदाचित हमारी उन्नति नहीं होसक्ती है यह दुष्टता हममें यहां तक फैलगई है कि इसके कारण धर्मकार्योंमें बहुत विघ्न पडने

लगाहै बहुधा ऐसा देखनेमें आयाहै कि एक मनुष्य कोई धर्मोपकार करताहै तो दूसरा केवल इस विचारसे कि अमुक पुरुषने इस कारजको प्रारंभ कियाहै विघ्न डालता है हम अपने जैनीभाईयोंसे हाथ जोड प्रार्थना करतेहैं कि एभाईयो वैर विरोधमें अपनाही। नुकसान है और ऐक्यतामें अपनाही लाभ है इस कारण क्यों हम अपने आपही अ अपने नुकसान का काम करैं और अपने फायदेका काम नकरैं ॥ प्रीति बढाना और विरोध दूर करना बहुत बुद्धिमानीका काम है इस कारण हमको यह विचार नकरना चाहिये कि जब दूसरा पुरुष विरोध दूर करेगा तब हम करेंगे; नहीं, शुभकार्यमें सब को सबसे आगे कदम रखना चाहिये ॥ ऐक्यता और परस्पर प्रीति बढाने और परोपकार करनेका सबसे आसान रस्ता सभाओंका नियत करनाहै प्रति सप्ताह वा महीनेमें दोबारभी जब सब भाई एक जगह एकत्र हुआकरैं और सबकी भलाई और उन्नति की तदवीर सोचाकरैं तो स्वयमवे आपुसमें प्रीति होजावे और दुष्ट कर्म छूट जावे

अगरवाल उपकारिणीसभा आरा

लाला मंडल दास साहब रईस और आनरेरीमजिस्ट्रेट आराने एकहर्षका समाचार हमारे पास भेजाहै सो प्रकाश करतेहैं ॥ यहां मुकाम आरामें जो अगरवालउपकारिणीसभा है उसमें यह राय ठहरीहै कि जो भाई वास्ते तीर्थयात्रा श्रीशिखरजी जावे या और किसी कारणसे इस स्थान पर आवे तो शहर आरामें उनके आरामके वास्ते एक प्यादा रेलके स्टेशनपर गाडीके हरवक्त पर भेजाजावे वह रेल पर आये भाईयोंको आरामसे लाया करे और सुखानन्द तथा मुसम्मातमकिककुंवरी के मंडल पर उनको ठैरावे और फरश दरी चारपाई आदिक आवश्यक वस्तु उनके वास्ते तय्यार की जावेगरज कि हरतरहसे उनके आरामका बंदोवस्त कियाजावे ॥ आराके भाई यह भी प्रार्थना करतेहैं कि जो भाई इस तरफ को कोई कार्यवश आवैंतो आरामें अवश्य पधारैं और मंडलके दर्शनकरैं ॥ हम आराके भाईयोंको अत्यंत धन्यवाद करतेहैं जिन्होंने वात्सल्य अंगके प्रकाश करने में उद्यम कियाहै ॥ आशाहै कि अन्य नगर के भाई भी परोपकारमें ध्यान देवेंगे ॥

चिट्ठीका संक्षेप

श्रीमान् कृपासागर बाबू सूरजभानजी जैजिनेंद्र ॥

तारीख ५ फरवरी सन् १८९९ मिति फागुण वदी ७ को मेरे पुत्रका विवाहहै बरात मुकाम किराणजिला मुजफ्फरनगरमेंला-ला नानकचन्दके यहां जावेगी लाला नानकचन्द देहलीमें जैन सभाके मंत्रीहैं उनकी यह इच्छा है कि इस विवाहमें सब कुरीतियों को जो प्रचलित होरहीहै दूर करके और शुभरीति प्रवृत्ति

कर एक नमूना बनाकर दिखाया जावे ॥ वेश्या आदिकका नाच कदाचित नकराया जावे बल्कि इसकी जगह यदि हमारी कौम के परोपकारी सज्जन महाशय कृपाकर पधारैं और धर्मोपदेश देकर इस नगर को सुशोभित करैं तो बहुत अच्छा हो ॥ मेरी तो पहलेसे ही ऐसीराय है कि यह असद् व्यवहार जो हमारी कौम में फैल रहाहै दूरहोना चाहिये इस कारण आपसे प्रार्थना करताहूं कि आप किराणपधारकर मेरी प्रतिष्ठाको बढावें आपके तशरीफलानेसे कुरीतियोंके दूर करनेमें बडी सहायता मिलैगी और विवाहभी जैनपद्धतिके अनुसार होजावेगा ॥ मैं औरभी धन्यवाद दूंगा यदि औरभी उपकारी और जातिके हितेच्छुक भाई पधारैंगे ॥

आपका दास
हरपरशाद कानूनगो
हापुड जिला मेरठ

संपादककी सम्मति

हम लालाहरपरशाद और लाला नानक चन्द साहब को अत्यंत धन्यवाददेतेहैं जिन्होंनेअपनीजातिके हितके कारण कुरीति दूर करने में अपने आप अगवानी और नमूना बनना चाहाहै यदि इसी प्रकार हमारे लायक बुद्धिमान् भाई कुरीति दूर करनेकी चेष्टा करैं तो एक दममें सब खराबी दूरहोजावे ॥ अब हमको पूर्ण आशा होती जातीहै कि जल्द यह सब बुराईयें दूर हो जावेंगी ॥ लालाहरपरशाद और लाला नानकचन्द जैसे परोपकारियों का नाम जगत विख्यात होगा और इनके उपकार के कारण इनका नेक नाम हमेशाके लिये कायम रहैगा ॥

नगर भाट गांव ॥

मुनशी अमनसिंघ साहबने भाटगांव का कुछ वृत्तांत हमको लिखकर भेजा है जो सब भाईयों के सूचनार्थ प्रकाश करते हैं और सब जगह के भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि वहभी इसही प्रकार अपने नगरों के वृत्तांत से सूचित करैं तो कुल जैन जातिका हाल मालूम होजावे ॥

भाट गांव नगर कस्बै सोनीपत से पश्चिम की ओर जिला रोहतक की सडक के किनारे आठमील के अंतर पर है ॥ इस समय १९ वा बीसघर जैनीयोंके इस नगर मैं हैं जो विशेष कर वाणिज्य व्यवहार करते हैं ॥ पहले यहां एक मंदिर कच्ची चुनाईका था जो अनु

मान १५० सालहुये टूटगया और श्रीभगवान मंदिर गोहाने में स्थापन कर दियेगए ॥ सम्वत १८ ९६ वा ९७ में श्रीसन्त सैन मुनि महाराज गोहाने से विहार करते हुवे भाट गांव में पधारे और धर्मोप देश दिया ॥ लाला हुक्मचन्द रईस कस्बाहांसी यहां पर जिलादा रनहरथे उन्हों ने भाट गांवके भाईयों को श्रीमंदिरजी की चिनाई करने की प्रेरणा करी सो मुनि महाराज के धर्मोप देश और लाला साहब की प्रेरणा से भाट गांव के भाईयों ने मंदिर जी की चिनाई आरम्भ करदी और सम्बत १८ ९९ में शिखर बन्द पक्का मंदिर तय्यार होगया और उस ही सम्बत में फागुन मास में मंदिर प्रतिष्ठा का मेला होकर श्रीजी मंदिर में स्थापन करे गये ॥ कुछ दिनतक पूजा प्रक्षालनादि नित्य होता रहा परन्तु फिर हानि होने लगी इस पर भाट गांव के भाईयों ने सम्बत १९४६ फालगुण मास में मेला रथयात्रा किया उस समय से बराबर पूजा प्रक्षालनका बहुत अच्छा प्रबन्ध है पंडित उमरावसिंघ साहब जो वहांके रईस और बहुत सज्जन पुरुष हैं प्रति दिन मंदिर में शास्त्र पढते हैं ॥ उक्त पंडित साहब की कोशिश से सम्बत १९५२ भादों मास से एक जैन पाठशाला भी नियत होगई है जिस में अभी तो ६ बालक जैनियों के पूजा और मङ्गल पाठ इत्यादि पढते हैं और दो लडके जाटों के और एक लडका ब्राह्मणका भी पढता है ॥ उम्मैद है कि यह पाठशाला आगेको बहुत तरक्की करैगी ॥

नगर ककरोली ॥

नगर ककरोली डाक खाना तिस्सा जिला मुजफ्फर नगर में है वहां से लाला हरद्वारी लाल मास्टर ने एक चिठी भेजी है सो प्रकाश करते हैं ॥ तारीख ७ नोवम्बर को यहां के भाईयों ने बाबाजी लालमनजीके उपदेश से मृतक के पीछे मट्टे और जोनारका करना और जो नार और जियाफत में आलूऔर घहीकाकरना त्याग दिया है यह बडे हर्षकी बातहै बहुतसे भाईयों नें रातको अनाज नखाने और इसही प्रकार अन्यव्रतों की प्रतिज्ञा करी है ॥ शास्त्रजी यहां प्रति दिन पढे जाते हैं और मिथ्यात्व के दूरहो ने में भी कोशिश हो रही है आशा है कि यह अंधकार शीघ्र दूर होजावेगा क्यूंकि इस समय यहां के भाईयों की धर्म में रुची होरही है परन्तु यह शोक है कि कोई भाई अपने बालकों को धर्म विद्या नहीं पढाता है यद्यपि रोज इस बात का उपदेश भी होता है उपदेशक यहां अवश्य पधारें ॥

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

यह पत्र सप्ताहिक है अर्थात् एक महीने
में चार बार प्रकाशित होता है

बाबू सूरजभान वकील के प्रबंध से देव बन्द
जिला सहारनपुर से जारी होता है ॥

यह पत्र हर अंगरेजी महीने की १-८-१६ और २४ ता०
को भाईयों की सेवा में हाजिर हुवा करेगा ॥

प्रथमवर्ष	जनवरी सन् १८९६ ता० ८	अङ्क ५

प्रार्थना

हमने चार सप्ताह तक चार अंक बहुत से भाईयों की सेवा में नमूनेके तौर पर भेजे और बहुधा करके पत्र हमने श्री जैन मंदिरों में भेजे जिससे उस नगरके सब भाईयों पर यह पत्र प्रगट होजावे परन्तु शोक की बार्ता है कि बहुत से स्थानों से हमारे पास कुछ उत्तर नहीं आया इस से यह सिद्ध होता है कि यातो उस नगरके भाई मंदिरजी में आते नहीं हैं और या आलस्य वश उत्तर नहीं देसके हैं परन्तु हम भी लाचार हैं नमूनेका एक पत्र बहुतहै और हम चार भेज चुके पूछना एकबार होताहै और हम बारबार पूछ चुके इस कारण हम इस के सिवाय और कुछ नहीं करसके हैं कि आगेको उस स्थान पर जहां से कुछ उत्तर नहीं आया है पत्र भेजना बन्द करदेवें ॥ हम प्रर्थना करते हैं कि उसस्थान के भाई हमारे इस अपराध को क्षमाकरेंगे ॥ इस प्रकार हम अन्य नगरों में पत्र भेज कर वहांके भाईयों

से प्रार्थना करते हैं कि वह शीघ्र हमको इस बातका उत्तर देवें कि आगे को सदैव पत्र सातवें दिन उनके पास भेजा जावें वा नहीं यहपत्र सबभाईयों के उपकारार्थ महासभा की अज्ञानुसार जारी हुवा है ॥

इस पत्र की कीमत श्रीमान सेठ लक्षमण दास साहब सी आई. ई. के पास मथुरा मैं वा सूरजभान बकील के पास देवबन्द मैं जमा होती है ॥

चिट्ठीयों के संक्षेप

नानोता जिला सहारनपुर से एक भाई अपने नगरका हाल इस प्रकार लिखते हैं जैन पाठशाला स्थापन करने के वास्ते प्रथम लाला मुन्नालाल साहब ने अपनी एक पुरानी हवेली धर्मार्थ पाठशाला के मकान बनानेके वास्ते देदी और पंचायत ने उसकी चुनाई श्रीमंदिजी के भंडार से करनी प्रारंभ करदी और इस प्रकार अनुमान पांचसो रुपये के खरच होगये परन्तु उस मैं अधिक रुपये की जरूरत हुई इस कारण लाला मुन्नालाल साहब ने पंचायत से चिट्ठा होजाने की कोशिश करी सो ३६७, का चिट्ठा होगया है आशा है कि मकान पाठशाला का अब पूरण होजावेगा और यदि कुछ अधिक रुपये की आवश्यक्ता होगी तो इसही प्रकार चिट्ठा होजावेगा ॥ चिट्ठा इस प्रकार होगया है १५०, लाला होशयार सिंघ ५०, लाला मुन्नालाल ३०, लाला मित्तरसैन १०, लाला सुन्दरलाल प्रभूदयाल १०, लाला शिकरचंद हीं-गनलाल १०, लाला कुंदनलाल मंग-राय १०, लाला शम्भूदास दौलतराय १०, लाला उग्रसैन इंदरसैन १०, लाला कुन्दनलाल विमलप्रसाद १०, लाला भागीरथदास अजतप्रसाद १०, लाला बखतावरसिंघ गेंदामल १०, लाला सजन कुंवारसंमरीमल १०, लाला शुगनचन्द चमनलाल ५, लाला गनपतराय पञ्चदास ५, लाला हीरालाल उग्रसैन ५, लाला मिट्ठनलाल गेंदनलाल ३, लाला छीतरमल उमरावसिंघ ३, लाला हंसारीलाल न्यादरमल ३, लाला मिट्ठनलाल होशनाकी लाल ३, लाला जोती प्रसाद जादोराय ३, लाला रतनलाल बस्तीराम २, मुन्नालाल हीरालाल २, सुमत प्रसाद जियालाल १, जगमंदर दास १, अनूपचंद १, चम्पतराय ॥, मंगलसैन ॥

हम नानौते के भाइयों को और बहुधा कर लाला मुन्नालाल को अनेका नेक धन्य वाद देते हैं जिन्होंने विद्या बृद्धि के लिये इतनी कोशिश करी है अन्य नगर निवासियों को भी इसही प्रकार विद्योन्नति मैं रुपया खरच

करना पर आवश्यक समझना चाहिये ॥ नानौ ते के भाईयों ने विद्योन्नति के वास्ते एक नमूना बनकर दिखाया है ॥

तीतरों जिला सहारनपुर

बड़े हर्षकी बातहै कि तीतरोंके जैनी और वैष्णव भाईयोंने मिलकर व्यर्थ व्यय और खोटी रीतोंके दूरकरने का प्रबंध कियाहै और उस प्रबंधको लिख कर एक किताब छपवादीहै जिसकी एक प्रति हमारे पासभी आईहै ॥ धन्यहै तीतरोंके भाईयोंको जिन्होंने इस प्रकार अपने और अपने भाईयों के उपकारार्थ ऐसा प्रबन्ध कियाहै ॥ उन्होंने बहुतभी बातोंको दूरकरदियाहै और बहुतसे कामोंको कम करादियाहै जैसे कि बागबहारी आतिशबाजीको बिलकुल दूर करादियाहै बारात में अव्वल दरजे कुल २५ बाहन और दोयम दर्जे में कुल १९ बाहन रक्खे हैं सगाइ आदि के समय नाच कराना बिलकुल बन्द करादिया है परन्तु विवाह के समय एक नाच कंचनी कारक्खा है और भांड बिलकुल बन्द करादिये हैं ॥ इसही प्रकार और बहुत सी कुरीतियों को दूर करदिया है ॥ यद्यपि आग की एक जरासी चिंगारी तमाम दुनया भरको फूंक देने के वास्ते काफी है इसही प्रकार रंडीका नाच चाहे एक रंडीका हो चाहे दसका एक जाति के बालक और युवा पुरुषों को बिगाडने और व्यभिचारी बनाने के वास्ते काफी है परन्तु जोरीति बहुत दिनोंसे प्रचालित है वह एक बारही दूर नही हो सकी है इसही कारण तीतरों के भाईयों को भी एक नाच अपने प्रबन्ध में रखना पडा है कुछ दिनों पीछे यहभी दूर हो जावेगा ॥ अन्य नगर के भाईयों को भी आवश्य फजूल खर्ची और कुरीति को दूरकर प्रबन्ध करलेना चाहिये ॥

लाला पन्नालाल मुतसद्दीलाल साहब अरबसराय जिला देहली से लिखतेहैं कि उनके आसपास के नगरोंमें मिथ्यात्वका प्रचार बहुतहै धर्मरुचि और धर्मप्रकार कुछभी नहींहै और इस बातका बहुत शोक प्रगट करतेहैं ॥ ऐभाईयों जबतक कि हमारी जाति धर्म विद्याकी उन्नति नहींकरैगी जबतक यह निश्चय नहींकरलियाजावेगा कि पुण्य उपार्जन के वास्ते विद्याप्रचारसे अधिकऔर कोई काम इस समय नहींहै जब तक हम लोग विद्याके फैलाने को सब धर्म के कामोंसे मुख्य नहीं समझेंगे तबतक यह शोक और शोकके समाचार बढतेही जावेंगे उक्त भाई साहब यह शोक की वार्ता वर्णन करने के पश्चात् एक बहुत हर्षकी बातभी

सुनाते हैं कि अरब सराय में सम्मनलाल साहबने एक गोलक जैनकालिज अर्थात् महाविद्यालयके वास्ते रक्खीहै ॥ वह साहब यहभी लिखतेहैं कि तुम्हारे जैनहितोपदेशक पत्रसे बहुत फायदा पहुंचाहै इस साल बहुतसे भाईयोंने कनागतका करनाछोड़ दियाहै ॥

अमबहट जिला साहारनपुरकी चिट्ठी का संक्षेप ॥ भाई सूरज भानजी साहब इस जगह आपके उपदेश के अनुसार पंचों ने जैन सभा नियत करली है सभा दो बार हो भी चुकी है सकल पंच आपको धन्यवाद देते हैं आशा है कि आप जैसे धर्मात्मा सदैव सभा की सहायाता करतेरहैंगे और उचित शिक्षादेतेरहैंगे सभामें अजितप्रसादने उत्तम क्षमापर और हीरानलालने कृपा पर और केवलरामने मिथ्यात्वके त्याग पर और कल्लूमलने संसार दशा पर और सूरजभानने सभाके नियमों पर मुथरादासेन दर्शनकरने पर बहुत उत्तम और मनोहर व्याख्यान कहे ॥

जरूर पढ़ियेगा

हमारे हृदयका अपार हर्ष हृदय रूपीसीमा से बाहर निकलनेके लिये उमंग कर हिलोलें लेरहा है और यह हर्ष इस बातका है कि हमारी कौममें जैन धर्म की उन्नति के लिये तरह २ के प्रबन्ध होने लगे कहीं पाठशाला जारी होती है कहीं सभा स्थापित होती हैं कहीं विद्वान लोग दौरा करके घोर निद्रा में डूबे हुवे पुरुषों को धर्मोन्नती वा आत्मोउन्नती के लिये सचेत करते हैं व्याख्यान देते हैं और सब से अधिक हर्ष की बात यह है कि इस जाति की उन्नति के हेतु सप्ताहिक जैन गजट जारी हुवा जिससे कुल भारत वर्षी के जैनी भाईयों का हाल हर समय ज्ञात होतारहैगा आशा है कि यह कौम शीघ्र ही उन्नतिपर पहुचैगी और उन्नति क्यों नहोवे जब श्रीमान सेठलक्षमणदास साहब जैसे महान पुरुष तन मन धन से कोशिश कररहे हैं आशा हैं कि सेठ साहब अपने इस इरादे को पूराकरैंगे ॥ सब जैनी भाईयों को अपने सरल हृदय से सेठ सहाब को कोटिशः धन्य वाद देना चाहिये ॥ ऐप्यारे जैनी भाईयो आप को मालूम है कि पहले, यह कौम किस कदर उन्नति पर थी और अब किस कदर हीन अवस्था को पहुचती जातीहै

॥ इस समय हमारी कौम में ऐसे २ अनहोने काम हो रहे हैं जिससे यह बिरादरी दिन दिन न्यून अवस्था को प्राप्त होती जाती है मेरी समझ में इन सब हीना चारियों का मुख्य कारण स्त्रीयोंका विद्या हीन होना है क्यूंकि स्त्रीयों के मूर्ख होनेके कारण सब विपरीतियां फैल रही हैं ॥ बाल्या वस्था में बच्चों का भले प्रकार शिक्षा नपाना बाल विवाह का होना फजूल खर्चीका बढना अपने धर्मको छोडकर अन्य देवको मानना बस यह कुरीतियां स्त्रियों की मूर्खता सेही पैदा हुई हैं स्त्री पुरुषका जोडा आराम केवास्ते है परन्तु बहुधा देखते हैं कि स्त्रीकी मूर्ख ताके कारण पुरुष को बहुत कष्ट उठाने पडते हैं एक महाशयका जिकर है कि वह बाल विवाह और फजूल खर्ची को बहुतही बुरा कहतेथे औरसदा इसही बातका उपदेश किया करतेथे परन्तु उनको अपनी स्त्रीकी मूर्खता के कारण अपने लडके का विवाह बाल्या वस्थाही मे करना पडा ॥ लोगोंने पूछा कि हेमहात्मा आप तो बाल विवाह को बहुतही बुरा कहा करते थे परन्तु आप ने आपने आप यह काम क्यूं कि यातो उनहों ने यह उत्तर दिया कि अफ सोस मेरी स्त्री मूर्ख है ॥ मैं बहुत जोरसे कहता हूं कि जब तक इस कौम में स्त्री शिक्षाका प्रचार नहीं होगा तब तक मिथ्यात्व और कुरीतियोंका दूरहोना असम्भव है एक कहावत है कि चोरको क्यूं मारें चोरकी मांकोही न मारें कि आगेको चोर पैदा हीनहो मेरे प्यारे भाईयो जैन जाति की नवकाको बचानेका उत्तम उपाय यहहै कि सब भाई अपनी अपनी कन्या ओंको आप पढावें या मकान पर किसी पाठकको बुलावें या कोईकन्या पाठशाला नियत करें अर्थात कोई न कोई ऐसा उपाय अवश्य करें जिससे थोडा बहुत विद्या का प्रचार होजावे आशा है कि जैनीभाई मेरी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे

जैनी भाईयोंका दास

पांचूलाल काला हेडमास्टर महाराजस्कूल सांभर राजपूताना ॥

प्रियवर

जैनिनेंद्र– कृपा करके नीचे लिखे हुये मजमून को आप अपने जैनगजटमें प्रकाश कीजियेगा

श्रीजैन धर्म पाठशाला व जैन पुरुषार्थ सभा इटावा

अर्सा करीब २,३ सालका गुजरा होगा कि यहां के सकल जैनी पंचोंने अन्य २ स्थान के धर्मी जैनी भाईयों के सदृश अपनी धर्म विद्या, धन, धर्म, और आत्मुन्नति के अर्थ उमंगमें आय एकाग्र चित होय तन, मन, धन, से सुमति और सम्मती से एक धर्म पाठशाला और सभा स्थापित कीथी और आपस की प्रीति से दृढ बंधन करके यह प्रतिज्ञा कीथी कि उन भाईयों को जो विद्याके रससे वंचित हैं और जिन्होंने विद्या के गुण परमार्थिक अविनाशी सुख और प्रत्यक्ष संसारी लाभों को नहीं उठाया है, सुमति और सम्पति को कभी काम में नहीं लाये हैं और इस काल अविद्या आलस मद प्रमुख निंद्रा में सोये हुये हैं जाग्रित कर विद्या रूप आंखें देगें जिससे वे मूर्खता रूप अंधियारे के दुखसे बचें, ज्ञान रूपी सूर्यके प्रकाश से उनके अज्ञान जनित तिमिरकानाश हो और सम्यक ज्ञानका प्रकाश मिथ्या ज्ञानका विनाश हो सुमति जागे दुर्मति भागे और सद्धर्मा मृत की वृष्टि से सर्व भाईयों के आनद मंगलाचार नित नये होते रहे इन दोनो बातों की कार्रवाई करीब डेढसाल तक बहुत खूबी और सुन्दर युक्ति और प्रशंसनीय प्रबंधके साथ चलती रही, अब हृदय विदारक शोक और पश्चाताप की बातहै कि किसी पूर्व पाप कर्म के उदय से आपस की ईर्षा भाव और तना तनी से फिर कुमति जागी सुमति भाग ने लगी और अज्ञान जनित खेदमें पडकर हम लोग प्रमादी और निरुत्साही होकर सभा व पाठशाला की तरफ से बिलकुल मुंह मोड गये बहुत साहबोंने चंदा आदि सहायता से हाथ खींचा परन्तु होन हार प्रबल है जब जैसा कुछ हुआ चाहता है तब वैसेही संयोग व ढौके मिल जाते हैं गुजस्ता कार्तिक में हमारे परम परोप कारी महोत्साही महाशय श्रीयुत बाबू सूर्यभान साहब वकील संपादक जैन गजट देव बंद जिला सहारनपूर निवासी मय पंडित धानसिंघ और हकीम उग्रसेन के निज ग्राह कार्य विसार कर शहर २ व ग्राम २ भ्रमण करते और सदोप देश देते हुये इसनग्र में भी पधारे और उपदेश देनेका इरादा जाहिर किया और महोत्साही महाशयों में सर्वाग्र गण्य श्रीमान् बाबू चम्पत राय साहब डिपुटी मेजिस्ट्रेट नहर इटावा की सम्मति अनुकूल यहां के सकल जैनी भाईयों ने श्रीयुत बाबू सरूपचंद लखमीचंदजी की कोठी में रात्रिको सभा

एकत्र होनेका प्रबन्ध किया सभा रात्रि के ९ बजे से प्रारंभ हुई और १२ बजे तक मंगल पूर्वक विसर्जन हुई सभासदों की संख्या अनुमान २०० केथी जिन में जैनी भाईयों के सिवाय बहुत से पर मती महाशय भी उक्त वकील साहबके गुणानुवाद सुनकर सभा में सुशोभित थे लाला फुलजारीलाल साहब रईस करहल जिला मैंनपुरी के निवासी मय पंडित मादोंलालजी व पंडित मवासी लालजी के सभा की इत्तलाय (नोटिस) पहुंचते ही १८ मीलके फासले से नियत समय तक सभा में शरीक होगये धन्य है ऐसे धर्मात्मा सज्जन पुरुषों को जो बाबू साहब से मिलते और उनके सदु पदेश श्रवण करने को इतनी दूरसे तकलीफ गवारा करके तशफरीफलाये हकीम उग्रसेन व पंडित थानसिंह के व्याख्यान के बाद बाबू साहब(वकील) ने अपनी ललित वाणी से मधुर शब्दो में धारा प्रवाह पुर तासीर हितकारी व्याख्यान दिया जिस में प्रति नगर और प्रति ग्राम मे पाठशाला व सभायों का नियत होना वर्णन किया जिसके सुननेसे सभा चकित होगई सबके हृदय हर्षायमान हुये और दिलों पर ऐसा अपूर्व असर पैदाहुआ कि उसी समय से पाठशाला व सभा नियत करने का सब भाईयों को उत्साह उत्पन्न हुआ धन्य है ऐसेही परोप कारी सज्जन पुरुष जैन कौम की डूबती किश्तिके बचानेका उपाय सोच सक्के हैं और धर्म की रक्षा के हेतु तदवीरें करसके हैं अब यहां पर पाठशाला व सभा दोनों नियत होगई श्रीयुत बाबू चम्पतराय साहब व बाबू लखमीचंद आदि साहबों की सहायता से काम खूब चलता है बाबू चम्पतराय साहब की परोप कारता और धर्म कार्य में तन, मन, धन, से सहयता देश देशांतर में विख्यात है ऐसेही सज्जन पुरुषों की सहायतासे जैन धर्म की प्रभावना जैनीयों की उन्नति और शोभा और लोगों में प्रभुता हो सक्ती है बाबू सरूपचंद लखमीचंद यहां के जैनी भाईयों में विशेष धनाढ्य हैं और ऐसे धर्मात्मा परोप कारी हैं कि हर एक धर्म कार्य में अपनी गोष्ठी के सब भाईयों के इकट्ठ चंदके बराबर ,- ल्कि उससे ज्यादह चंदा आप अकेले देने में तैयार रहते हैं हाल में आपने यहां के मंदिरजी में एकछत्र कीमती ५०, रुपयेका दिया हैं सच है धन की शोभा धर्मही है ॥

सभा के पदस्थोंके नाम

बाबू सरूपचंद लखमीचंद—सभापति
बा० चंपतराय .... उपसभापति
लालाभवानी प्रसाद वैद्य—उपसभापति
मुन्शी प्यारेलाल मास्टर—— मंत्री
ला.उमरावसिंह-उपमंत्रीलालापन्नालाल व जगन्नाथ—कोशाध्यक्ष लाला हजारीलाल वैद्य, लाला छोटेलाल, लाला सुखलाल. ला० लाडमन. ला० छत्रपाल

ला० प्यारेलाल, ला० बंशीधर ला० कुं-
जीलाल, ला० दुलारराय, ला० जगन्नाथ
ला० मानिकचंद, सभासद हैं ॥

आशा है कि उपरोक्त साहब पाठ-
शाला व सभा संबंधी हर कार्यको अप-
नी सहायता और कोशिष से बखूबी
अंजाम देने में अपना मुख्य धर्म समझते
रहेंगे काहेसे कि जिस मनुष्य ने अपनी
जाति और धर्म और अपने कुलके हित
के लिये कुछ काम नहीं किया उसका
जन्म विफल है और ऐसा कहाभी है॥
दो. जिस जननी के पुत्रने निजकुल हित
नाहि कीन॥वृथा गर्भ नवमास बस.जननी
को दुख दीन ॥

जैनीयोंका शुभचिंतक
प्यारेलाल मंत्री
जैन पुरुषार्थ सभा इटावा

विज्ञापन ॥

पहला

पंडित सिवचन्द देहली निवासी
की बनाई पुस्तक जैन मत भ्रमांध कार
मारतंड नामक जिस में स्वामी दयानन्द
कृत सत्यार्थ प्रकाश का खंडन है मेरे
पास मौजूद है इसके देखने से मालूम
हो जावेगा कि दयानन्द ने जैन मत
सम्बधी बहुत लेख लिखकर जैन मत
को दूषण लगाया है इस पुस्तक को
अवश्य सत पुरुषों को और मुख्य क-
रके जैनियों को देखनी चाहिये मूल्य
केवल =, डाकव्यय सहित है प्यारेलाल
मुमेरचन्द सहारनपुर बाजार कुवाडी ॥

दूसरा

बडे हर्षकी बात है कि आज कल
सब जगह जैन पाठशाला हर जगह स्था
पित होने लगी हैं परन्तु एक बडी भारी
कठनाई यह पडती है कि अध्यापक
नहीं मिलते हैं और जैनी पाठकतो
मिलतेही नहीं है क्यूंकि यह मालूम नहीं
होता है कि कहांसे अध्यापक बुलाये
जावें जैन महासभा की तरफसे पंडित
प्यारेलाल साहब अलीगढ निवासी पा-
ठशाला ओंके इंतजाम के वास्ते मुका-
र्रर किये गये हैं इस कारण यदि प्रत्ये-
क नगरके भाई अपने अपने नगरकी
बाबत पंडित प्यारेलालजी को सूचित
कर देवें कि कोई भाई पाठशाला में
अध्यापक होने के लायक है वा नहीं
तो बहुत आसानी होजावे क्यूंकि जिस
किसी पाठशाला में अध्यापक की ज-
रूरत हुवा करे तो पंडित प्यारेलाल से
प्रर्थना की जायाकरे और उक्त पंडित
जी साहब अध्यापक का इंतजाम सहज
में कर दिया करें ॥ इसी प्रकार उन
भाईयों को भी जो अध्यापक होना चा
हैं अपनी अर्जी और अपनी लियाकत
काहाल पंडितजी साहब के पास लिख
भेजना चाहिये ॥

रिपोर्ट मर्दुमशुमारी ॥

सन् १८८१ में सरकार अंगरेजी की तरफ से कुल हिन्दुस्तान की मर्दुमशुमारी की गई थी, उसको एक संक्षेप भाव रिपोर्ट सर्कार की तरफ से तय्यार की गई है वह रिपोर्ट कुल भारतवर्ष की सर्व जातियों की है इस कारण उसमें प्रत्येक जाति का वर्णन बहुत ही संक्षेप से है जैन कौम तो बहुत ही थोड़ी कौम है इस कारण इस कौम का हाल उसमें से बहुतही कम मिलता है परन्तु तौभी उसके देखने से बहुतसी बातें ऐसी मालूम होती हैं जो सब भाईयों के जानने योग्य हैं इस कारण हम इस पत्र में उसका कुछ हाल लिखते हैं ॥

जैनि जाति

मर्दुमशुमारी में प्रत्येक जाति की और प्रत्येक धर्म की शाखा की गणना की गईथी अर्थात् जैनीयों से यह भी पूछा गया था कि वह दिगम्बरी है वा श्वेताम्बरी और अगरवाल है, वा खंडेलवाल वा पदमावती परवार आदि है परन्तु रिपोर्ट में इस प्रकार शाखाओं का कुछ वर्णन नहीं है उसमें जैन जाति का एक रूपही हाल लिखा है अर्थात् दिगम्बरी श्वेताम्बरी का इकट्ठाही वर्णन है॥

प्रत्येक जाति का हाल दो बातों की बाबत इसमें लिखा है (१) ब्याहे बिन ब्याहे (२) पढ़े हुये और अन पढ़े इस वास्ते हम भी दोनों बातों को पृथक् अलग अलग लिखेंगे ॥

कुल भारत में जैनी मात्र कुल १४१६६३८ हैं जिसमें ७३४२०५ पुरुष हैं और ६८२४३३ स्त्री हम को अपनी जाति की ऐसी कम गिनती देखकर बहुत अफसोस होता है और यह भी निश्चय होता है कि जैन धर्म नाम मात्र ही रहगया है और यह दया क्यों नहीं एक समय में ऐसी कोशिश जैनी लोग किया करते थे कि अन्य मत वाले जैन मत को ग्रहण करें परन्तु अब अन्य मत वालों को तो अपने मत में क्या लावेंगे अपने धर्म का जानना जैनी भाइयोंने अपने ही आप छोड़ दिया है और अन्य मतो को अपने मत में लाने का प्रचार ईसाईयों ने लेलिया है वह अपने मत का सब जगह उपदेश देते हैं और अपना मत दूसरों को समझाते हैं जिस कारण से दोलाख हिन्दुस्तानी भाई अब ऐसे हैं जो ईसाई होगये हैं और दिन दिन उनकी गिणती बढ़ती जाती है ॥

जैनियों में प्रभावना अंग इसही वास्ते रक्खा हुवा है कि जिसके कारण अन्यमत वाले जैनमत में रुचि करें परन्तु अब तो रुपया खर्च करके नामवरी हासिल करने का नाम प्रभावना हो गया है इसही वास्ते जैन जाति की

यह दशा होगई है ॥ परन्तु परोपकारियों को कुछ घबराना नहीं चाहिये क्यूंकि एक छोटे बीज से लाखों और करोड़ों बीज पैदा होजाते हैं जैनी तो इस वक्त चौदह लाख मौजूद हैं अगर हम लोग चाहें और प्रभावना के शास्त्रोक्त रस्ते पर चलें तो क्या उन्नति नहीं कर सक्ते अवश्य करसक्ते हैं और सब कुछ करसक्ते हैं फिर क्यूं हिम्मत हार रक्खी है ॥

जैन जातिकी दशा विवाह अपेक्षा ॥

अब हम अपनी जाति की दशा विवाह शादी की अपेक्षा देखते हैं तो यह मालूम होता है कि शादी नहीं होती बरण दो घरों की बरबादी होती है मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट से जो दशा अपनी जाति की मालूम हुई है वह ऐसी है कि जिसके जानने से बदन के रोंगटे खड़े होते हैं और यह सन्देह होता है कि कोई हमारे लिखे पर निश्चय न करेगा ॥ ध्यान देकर देखिये कि हमारी जाति में ४६७ बालक और १०८१ बालिका ऐसी ब्याही हुई मौजूद हैं जिनकी आयु पांच वर्ष से कम की है और (बयान करते हुवे आंखों से आंसू टपकते हैं) ३० बालक ऐसे हैं जो पांच वर्ष से कम के हैं और जिनकी स्त्री मर गई है और वह रंडवे होगये हैं और हाय हाय पांच वर्ष से कम उमर की ३७ बालिका विधवा होगई हैं यह बात किसी एक देश की नहीं है प्रत्येक देश और स्थानका यह जोड़ हमने लिख दिया है देश वार वर्णन विस्तार भय से नहीं लिखा जैन जाति में १३३० बालक और ३२०० बालिका ऐसी हैं जो पांच वर्ष से ज्यादा और दस वर्ष से कम के हैं और उनका विवाह हो चुका है ॥

हाय हाय गृहस्थी के वास्ते अपने बालक के विवाह करने से अधिक और क्या खुशी का कारण होसक्ता है इससे महान कारज और कौनसा है इस विवाह के द्वारा स्त्री पुरुषका ऐसा सुदृढ़ बन्धन होता है कि दोनों एक होजाते हैं और यह बन्धन सारे जनम नहीं टूटता है परन्तु शोक की बात है कि ऐसा महान कारज ऐसे निरादर से किया जाता कि गुडा गुडी के विवाह में भी बुरा जो बालक खेल में किया करते हैं ॥

इस समय मनुष्य १८ वर्ष से उपरान्त विवाह के योग्य होता है परन्तु इस समय से पहले बहुत सी लड़कियें विधवा हो जाती हैं अर्थात् इस से पहले उनका विवाह भी हो गया और पति भी मर गया और जनम पर्यन्त के वास्ते उन को यह हुकम भी मिल गया कि तुम न जानोगी कि विवाह क्या होता है और पति क्या और

न रुकोंगे जाना ॥ अफसोस छोटी उमर की शादी जिस से हमारी आयु घट गई हमारा बल घट गया हिम्मत जाती रही और हम किसी काम के न रहे ऐसे दुष्ट काम को क्यूं हमारी जाति पसन्द करती है और जान बूझ कर कूप में गिरती है यह भयानक रीति एक बारही इस जाति से दूर होनी चाहिये नहीं तो यह कौम जो बहुत ही कम रह गई है यह भी बरबाद हो जावेगी और धर्म्म कर्म्म सब नष्ट हो जावेगा बल हीन की बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि हीन से कभी धर्म्म नहीं पल सकता है शुक्ल लेश्या बलहीन आलसी पुरुष के नहीं होती है ॥ यद्यपि हमारी जाति में पुरुष अधिक हैं और स्त्री कम परन्तु बाल्यावस्था में ब्याही हुई स्त्रियों की गिणती पुरुषों से बहुत ही ज्यादा है जिससे यह ज्ञात होता है कि बालकों की अपेक्षा बाल्यावस्था में कन्या के ब्याह कर देने का हमारी जाति के पुरुषों को अधिक चाव है धिक्कार है ऐसे चाव पर अफसोस आता है ऐसे निर्दई कठोर चित्त मा बापों पर जो अपने जरा से चाव के वास्ते अपनी सन्तान पर ऐसा जुल्म करते हैं ॥ हाय हाय चौदह लाख जैनियों में जिनमें छः लाख स्त्री हैं नब्बे हजार चार सौ स्त्री विधवा मौजूद हैं अर्थात् छः स्त्रियों में एक विधवा है दिल कांपता है ऐसी बात को लिखते हुये यह सब बहुधा करके बाल विवाह के ही फल हैं ॥

इस जाति को अत्यन्त अद्भुत दशा है कभी आकाश में है और कभी पाताल में मध्यावस्था कोई नहीं जिनके विवाह होते हैं तो पैदा होतेही का विवाह होजाता है और नहीं होता तो युवावस्था में भी विवाह नहीं होता और किसी २ का कभी विवाह होता ही नहीं ॥ जैन जाति में २६२१४ पुरुष और १८४८ स्त्री ऐसी हैं जिनकी उमर पन्द्रह वर्ष से अधिक और बीस वर्ष से कम है और उनका विवाह नहीं हुआ है, इस ही प्रकार १७०९९ पुरुष और ३५२ स्त्री बीस वर्ष से अधिक और पचीस वर्ष से कम की हैं और उनका विवाह नहीं हुआ है और बिना ब्याहे १०३८६ पुरुष और २८३ स्त्री पचीस वर्ष से अधिक और तीस वर्ष से कम की हैं और ६३५१ पुरुष और २३० स्त्री बिना ब्याहे तीस वर्ष से अधिक और ३४ वर्ष से कम उमर के हैं इसही प्रकार अधिक उमर वालों का हाल है कहां तक वर्णन किया जावे कुल जैनी २२५०९७ पुरुष और १२६७४७ स्त्री हैं जिनका विवाह नहीं हुआ है जिनमें से ४५९६० पुरुष और १४०९ स्त्री ऐसी हैं जिनकी उमर बीस वर्ष से अधिक

है और जिनका विवाह नहीं हुआ अर्थात् जिनके विवाह होने की आशा नहीं है ॥ यह लोग ऐसा निश्चय होता है कि अवश्य निर्धन होंगे क्योंकि बहुधा करके यही देखा गया है कि धनवान कोई बिना व्याहा नहीं रहता है और निर्धन बहुत ऐसे हैं जिनका जन्म भर विवाह नहीं होता ॥ परन्तु बहुत अफसोस आता है और आश्चर्य होता कि निर्धन क्यों बिन व्याहे रह जाते हैं क्योंकि धनवान का धनवान के यहां और निर्धन का निर्धन के साथ विवाह हो सकता है परन्तु यह दुष्ट फजूल खर्ची (व्यर्थ धन का खर्च) जो बला की तरह इस कौम को पिलची हुई है यह कब ऐसा करने दे सकती है फजूलखर्ची का अटल यह हुकम है और जैन जाति को अवश्य उसका पालन करना चाहिये कि किसी का विवाह नहीं हो सकता जब तक कि विवाह में खर्च करने के वास्ते रुपया मौजूद न होवे ॥ देखो और विचारो हमारी जाति में ऐसे बहुत निर्धन हैं जिनको पेट भरने को रोटी भी नहीं मिलती है परन्तु यह बात किसी ही निर्धन ने की होगी कि दो चार रुपये के ही खर्च से अपनी कन्या का विवाह कर दिया हो नहीं कदापि नहीं अवश्य बरात [जनेत] गाजे बाजे और नाच राग रंग के साथ आती है कन्या का पिता बरात को बहुत अच्छा मिठाई सहित भोजन कराता है खूब दहेज देता है तब विवाह होता है इस के बिना नहीं हो सकता परन्तु वह निर्धन इतना द्रव्य कहां से खर्च करता है वह खर्च उसको वर की ओर से मिलता है इस ही कारण जब तक ऐसा वर नहीं मिलता कि कन्या के पिता को विवाह का खर्च दे सके वह कन्या बेचारी चाहे कितनी ही उमर की होजावे परन्तु उसका विवाह नहीं होता और वह कुंवारी कन्याही रहती है परन्तु कभी न कभी कोई बड़ा बूढ़ा और धनवान वर ऐसा मिल जाता है जिस के कारण खर्च का पूरा पड जावे इस वास्ते कन्या तो किसी न किसी समय विवाही ही जाती हैं परन्तु निर्धन बालक के वास्ते बड़ी मुशकिल है उसको खर्च कौन दे इस कारण उस बेचारे का विवाह तो क्या सगाई भी नहीं होती है इसही कारण बीस वर्ष से अधिक उमर वाले स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक हैं और बहुधा करके निर्धन ही हैं क्योंकि धनवान तो चाहे दो दो तीन तीन विवाह करालें ॥

हाय हाय इस फजूल खर्ची ने हमारी कौम का कैसा सत्यानाश किया है कि बहुत से मनुष्य सारे जनम बिना व्याहे

रहते हैं ॥ क्या वह जाती रहती हैं क-दाचित नहीं इन्हीं कारणों करके अनेकानेक कुकर्म हमारी जाति में होने लगी हैं जिनका वर्णन नहीं होसकता ॥

जैन जाति की दशा विद्या अपेक्षा ॥

मर्दुमशुमारी से विद्या अपेक्षा तो हमारी कौम की बहुत ही बुरी दशा मालूम पड़ती है ॥ मर्दुमशुमारी में तीन बातें पूछी गई थी (१) पढ़ता है [२] पढ़ा हुआ है [३] अन पढ़ ॥ जो कोई केवल अक्षर वा अंक सीखता है वह भी पढ़ने वाले में लिखा गया था और इस ही तरह जो दो अक्षर भी जानता है चाहे अंगरेजी के चाहे फार्सी के चाहे नागरी के चाहे मुन्डा बाजारी अक्षरों के वा कोई और अक्षर वहभी पढ़ाहुवा लिखा गया था अन पढ़ केवल वह रह गये जो एक अक्षर भी किसी प्रकार का नहीं जानते हैं तौभी २२४१८५ पुरुष स्त्रियों से अलग ऐसे हैं जो न कुछ पढ़ते हैं और जो एक अक्षर भी नहीं जानते ॥ और २१२२६१ ऐसे हैं जो पढ़े हुवे कहलाते हैं ॥ अफसोस इस जाति का पैशा अनाज व्योपार का है बाढ़ी लुहार कुम्हार दर्जी आदिक कारीगर बिन पढ़े ही अपना काम करलेते हैं परन्तु हमारी जाति का पुरुष जिसको और विद्या तो क्या मुंडे सर्राफी अक्षर भी न आते हों वह क्या करेगा व्योपार तो ऐसे पुरुष से होही नहीं सक्ता है जो दो अक्षर भी लिखने नहीं जानता सर्कारी वा और किसी की नौकरी सिवाय खिदमतगारी के और कोई मिल नहीं सक्ती शिल्प विद्या कोई आती नहीं लाचार कोई निंद्य कार्य करना पड़ेगा जिससे इस जाति को लज्जा प्राप्त हो ॥ व्योपार करने वाली जाति में ऐसे पुरुष अधिक हों जो एक अक्षर भी न जानते हों इससे अधिक और क्या शोक की बात होसक्ती है ॥ यह जाति गणित में अर्थात हिसाब में मशहूर थी परन्तु अब ऐसे पुरुष अधिक हैं जो गणित और हिसाब तो क्या जानेंगे जिनको एक अक्षर वा एक अङ्क भी नहीं आता ॥

हमको अधिक शोक इस बात का है कि इस समय प्रबन्ध ऐसा है जिससे अनपढ़ ज्यादा होते रहें और पढ़े हुवे कम होते रहें क्यूंकि पन्द्रह वर्ष से कम उमर के बालक १०४३८४ ऐसे हैं जो न कुछ पढ़ना जानते हैं और केवल ३९८८२ बालक पढ़ते हैं अर्थात न पढ़ने वाले बालक पढ़ने वालोंसे तीन गुने अधिक हैं इस से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अब पहले से भी

जियादा विद्या की न्यूनता है ॥ हमारी जाति में स्त्रियों को पढ़ने का रिवाज नहीं है इस कारण, विद्या विषय में मैंने केवल पुरुषों काही वरणन किया है स्त्रियों को छोड़दिया है ॥

प्रश्नोत्तर ॥

आज कल हर तरफ से यहही शोर सुनाई देता है कि यह जैन धर्म किसी काल में पूरण उन्नति पर था और आज कल इसकी अत्यन्त न्यून दशा होगई है परन्तु अब तक यह निश्चय नहीं हुवा कि न्यून दशा किस किस बात में होगई है और यह न्यून दशा किस किस कारणों से हुई है और किस प्रकार फिर उन्नति होसकी है जैन प्रभाकर पत्र अजमेर में यह प्रश्न बहुत बार छपे और अपनी अपनी मति अनुसार बहुत से भाईयों ने इन प्रश्नों के उत्तर भी दिये जो बराबर जैन प्रभाकर में छपते रहे परन्तु उनसे ठीक ठीक बात हासिल नहुई इस कारण हमारा इरादा है कि हम भी इस साप्ताहिक पत्र में हर बार दो तीन प्रश्न लिखते रहा करें और जो उत्तर प्राप्त हो उसको अगले अङ्क में छापत रहा करें सो अब की बार निम्न प्रश्न लिखते हैं आशा है कि परोपकारी भाई अवश्य उत्तर देवेंगे जिससे इस जाति की उन्नति होनी सहज होजावे ॥

प्रश्न ॥

[१] धर्म के स्थिर चिरस्थाई रहने और धर्मोन्नति होने के वास्ते किस बात की अधिक आवश्यकता है अर्थात् किन कारणों से धर्मोन्नति हो सकी है

[२] ऐसे कौन से कारण हैं जिनके न होने से धर्म का प्रचार कम हो जाता है और अन्त को धर्म लोप हो जाता है ॥

[३] धर्मोन्नति के वास्ते ऐसे कौन से काम हैं जो सदाकाल सर्व क्षेत्र में अवश्य होने चाहिये और ऐसे कौन से काम हैं जो देशकाल की अपेक्षा बदलते रहते हैं ॥

[४] संसारी मनुष्यों के लिये धर्मोन्नति के वास्ते अपने संसार व्यवहार के सुधार की भी आवश्यकता है या नहीं ॥

[५] संसार व्यवहार कार्यों में हमारी जाति की कैसी दशा हो रही है ॥

इन प्रश्नों के उत्तर आने के पश्चात दूसरे पत्र में और प्रश्न किये जावेंगे ॥

मेरठ का उत्सव ॥

मेरठ शहर में उत्सव बड़ी धूमधाम से होगया देहली सोनीपत हांसी आदि के दूर २ नगरों से भाई पधारे थे और फीरोजाबाद जिला आगरा से नाटक भी आया था नाटक रात को होता था

और नाटक देखने के वास्ते अन्य मती भी बहुत आये थे जगह थोड़ी और तमाशा देखने वाले बहुत हो जाते थे इस कारण उपद्रव हो जाता था और मेरठ के भाइयों की तरफ से इन्तजाम भी अच्छा नहीं था और मिजाजों में कुछ सख्ती थी परन्तु फिर भी आनन्द रहा और मेला बहुत अच्छी तरह से होगया ॥ देहली कुमार्ग खंडनी सभा की तरफ से सभा भी होती थी और सभा में बहुत आनन्द रहता था परन्तु मेरठ के भाइयों की ओर से सभा को कुछ सहायता नहीं मिलती थी ॥ सभा का समय ग्यारह बजे दिन से विज्ञापन में दिया जाता था और उसही समय से सभा आरम्भ की जाती थी परन्तु अनुमान एक बजे से भले प्रकार सभा लगती थी ॥ पण्डित लोकमनदास जी एक बड़े विद्वान आदमी हैं और देहलीसभा के उपसभापति हैं और पण्डित मक्खनलाल सुनीपत निवासी और पण्डित जियालाल प्रतिष्ठित उपदेशक और सूरजभान वकील देवबन्द और लाला नियामत सिंह झांसी निवासी और लाला श्रीराम गोहाना निवासी और लाला जग्गीमन्दरदास मंत्री देहली सभा के बड़े ललित और उपकारी व्याख्यान होते थे जिनके सुनने से सब भाइयों के हृदय में धर्म की ओर लगने का और उन्नति में तन मन धन लगाने का जोश पैदा होता था आखरी सभा में पण्डित जया लाल जी ने अपने व्याख्यान में भाइयों को कुछ धर्मोन्नति के वास्ते द्रव्य देने की भी प्रेरणा भी की और एक गोलक उसही समय सभा के बीच में रख दी ॥ गोलक के रखतेही पांच मिनट के बीच में ३८॥) गोलक में आगये गोलक लाला सुलतान सिंह साहब ने जो देहली के बहुत बड़े धनाढ्य साहूकार हैं खोली थी और वह इस रुपये को श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास साहब सभापति जैन महा सभा के पास मथुरा भेजवा देवेंगे ॥ आशा है कि अन्य अस्थानों में भी इस प्रकार गोलक रखने का प्रचार करके धर्मोन्नति के वास्ते द्रव्य इकट्ठा किया जाया करेगा क्योंकि बिना द्रव्य के कोई कार्य नहीं हो सकता है ॥

शोक ॥

हमको यह बात जान कर अत्यन्त शोक प्राप्त हुआ है कि मेरठ में यद्यपि जैनी भाई बहुत थोड़े रहते हैं परन्तु तौ भी उनमें दो थोक होगये हैं यह उत्पात एक थोक की तरफ से था और आपुस में बैर विरोध इतना बढ़ गया है कि दूसरे थोक के भाई दर्शन करने के वास्ते भी मेले में नहीं आये ॥ यह बात मालूम करके हमने चाहा भी कि विरोध मिटाने की कोशिश की परन्तु इस समय असम्भव ज्ञात

हुआ। इस कारण चुपही होना पड़ा परन्तु किसी दूसरे समय में इस विरोध के मिटाने की अवश्य कोशिश करनी चाहिये ॥ पण्डित जयालाल माधव प्रतिष्ठित उपदेशक पर हमको पूरा निश्चय है कि वह इस कार्य को भले प्रकार सम्पूर्ण कर सकते हैं ॥

जैन व्याकरण ॥

श्री युत जैन गजट सम्पादक मान्यवर सूर्यभानजी महाशय जय जिनेन्द्र आप से निवेदन है कि निम्न लिखित लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान दे कृतार्थ कीजिये हम इस बात को बड़े हर्ष के साथ प्रकाशित करते हैं कि बहुत दिगम्बर जैन सभाने जैन आचार्य प्रणीत व्याकरण, कोष, न्याय शास्त्रों के पठन पाठन में उद्यम किया है यद्यपि आधुनिक सारस्वत लघु कौमुदी रघुवंश मुक्तावली आदि ग्रन्थों के प्रचार होने से जैन आर्ष ग्रन्थ क्लिष्ट प्रतिभासते हैं तथापि विचार करने से सुगम और बिना पढ़े शास्त्रों के समझने लायक बुद्धि व्युत्पत्ति कारक हैं और प्रसिद्धों की अपेक्षा इन [जैन शास्त्र] में विषय भी अधिक है इस वचन के श्रवण होने पर हमारे पाठकों को यह इच्छा अवश्य प्रकट होगी कि इन जैन शास्त्रों में अधिक विषय क्या है तहां प्रथमही व्याकरण का विषय इस प्रकार अधिक है इस समय हमारे आल गण व्याकरण में सारस्वत या लघु कौमुदी पढ़ते हैं जिसमें सारस्वत तो [वैष्णव] ब्राह्मणों केही अमान्य है अपूर्ण होने से और न लघुकौमुदी में कारक [जिसके ज्ञान वाक्य नहीं जुड़ सकता] धातु (जिस से समस्त शब्द उत्पत्ति होते हैं यही संस्कृत शास्त्रों का जीवन कारण है) नाम मात्र है और प्रत्यय भी बहुत है पर प्रक्रिया तो दर्शन मात्र है - और इस कातन्त्र रूपमाला में यह समस्त प्रकरण [लघुकौमुदी अपेक्षा] द्विगुणित नहीं बल्कि त्रिगुणित है - और भी इस के अतिरिक्त यह असाधारण गुण है प्रकृति प्रत्यय धातु अकर्मक सकर्मक काल उपलक्षण इत्यादिकों के लक्षण बहुत अच्छे लिखे हैं और लघुकौमुदी में नहीं है और इसके प्रतिकरण में नमस्कारात्मक श्लोक रूप वाक्य होने से जिनेन्द्र के स्वरूप का तथा तिनके गुणों का ज्ञान होता है २ और इसमें उदाहरण अधिकतर वह दीने गये हैं जो जैन शास्त्रों से सम्बन्ध रखते हैं ॥ इत्यादि ॥ इससे ऐसा कौन बुद्धिमान जैन होगा जो अपना अमूल्य काल साध्य वस्तु को त्याग कर अन्यों के मुख देखेगा ॥ इस व्याकरण का तन्त्र रूपमाला सूत्र सहित को पढ़ना योग्य है जिनको अवकाश थोड़ा होय यदि अधिक अवकाश होय तो पञ्च वस्तुक जैनेन्द्र व्याकरण अथवा शाकटायन व्याकरण पाठनीय है - क्रमशः

आप का शुभकांक्षी पं० गोरीलाल
जैन पद्मावती पुरवार खुरई
जिला सागर ॥

"यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस में छपा"

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक वर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

हर अंगरेजी महीने की १—८— १६— २४ ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष | ता० २४ जनवरी सन् १८९६ | अङ्क ७

प्रार्थनापत्र

हे महाशयो आज काल ध्यान दे कर देखा जाता है तो चारों ओर उन्नतिका ही शब्द सुनने में आता है अर्थात यह गीततो प्रत्येक मनुष्य गाता है कि उन्नति करो पर करके कोई नही दिखाता है ॥ और दिखावे कहां से क्यूं कि यह एक मनुष्य के करनेका तो काम नही है किन्तु यहतो बडे समूहका काम है नीतिका एक श्लोक है

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका
तृणैर्गुणत्व मापन्नै बंध्यन्ते मत्त दंतिनः

अर्थात एक तृणसे किंचित कार्य भी सिद्ध नही होसक्ता परन्तु उन्हीं तृणोंका आपस में मेल होजाने से मस्त हस्ती भी बंध जाता है ॥ यह बात हमारी जातिके जनोंमें कहां यदि हमलोगों में ऐक्यता होती तो ईर्षा और बिरोध क्यूं फैलता हाय हाय हमको बडा शोक है कि यह द्वेष रूपी भुजंग संसार उद-धि में इस जैन जाति रूपी दीन

मेंडक कोही ग्रास करै और कौन अन्य जीव इस से निर्भय रहैं हा इस से अधिक हत भाग्य और कौन होगा ॥ इस समय यह द्वेष रुपी वृक्ष मूर्खता ईर्षा अनै कृतघ्नतादि अनेक शाखाओं से परि पूरित होगया है और वह शाखा सर्व जैन जाति के ऊपर फैल गई हैं और वह वृक्ष फूट केफलोंसे फलित होगया है और वह फल इस जाति जनों को अती व मधुर व स्वादिनलगने लगेंहैं उन्हों नेअपना सर्वस्व दे कर भी खरीद कर खाना स्वीकार किया है अर्थात इस विषर फल कोअमृतोपमजान कर प्रीति से भक्षण करने लगे ॥ परन्तु आश्चर्यकी बात है कि इस जाति को क्यूं यह फूट और द्वेष प्रिय है इसका कारण सिवाय अविद्या के और कुछ नहीं है ॥ हाय हाय अविद्या अंधकार ने सौभाग्य रुपी सूर्य को अस्त कर रक्खा है तिस पर भी यह बात अधिक है कि हर्ष प्रदीप को भी द्वेषाऽनिल प्रकाशित नहीं होने देता है किन्तु दुःखाग्नि को अधिक प्रचंड करता है कि जिस के तापसे हम व्याकुल होकर विद्याम्बु वृष्टि की अभिलाषा परोप कारी जनकर रहे हैं परन्तु हमारे दौर्भाग्य से उसका दुर्भिक्ष है ॥ भाईयो यह आपको एक आश्चर्य कारी बात ज्ञात होगी कि कोई मनुष्य हित को छोड कर अहित मै प्रवृत्तहो परन्तु ऐ भाईयों अविद्या वह मादक द्रव्य है कि जिस मैं हित रुपी संज्ञाका कुछ बोध नहीं रहता है जो जो अनर्थ हमारी जाति मैं अविद्या के कारण हो रहे हैं वह सब बुद्धि मानो के दृष्टि गोचर हैं ॥ प्राय: द्रोहाऽनि लभी यहां पर इसी अविद्या के कारण अति शय प्रचण्ड हो रही है क्यूं कि द्वेष और विरोध करना विद्वानों का काम नहीं है ॥ बुद्धि मान और विद्वान वह ही होसक्ता है जो सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझे क्यूंकि विना सर्व की उन्नति के एक की उन्नति हो नहीं सक्ती है ॥ यदि कोई जाति किसी बात मैं बद नाम होतो क्या उस जाति का एक पुरुष कुल जाति की उस बद नामी के दूर करे बिदून नेक नाम होसक्ता है कदापि नहीं मूर्ख वह होते हैं जो औरों की हानि मैं अपना लाभ समझैं नीति का एक श्लोक है ॥

एके सत्पुरुषः परार्थ घटका

स्वार्थं परित्यज्यये । सामान्य स्तु परार्थं मुद्यमभृतः स्वार्थां विरो धेनये

तेऽमी मानुष राक्षसः परहितं स्वार्थाय निघ्नंतिये । येनिघ्नंति निरर्थकं परहितं तेके नजानीमहे ॥

अर्थात जो सर्वदा स्वार्थ को त्यागकर परार्थ में लीन त्पार रहते हैं वे सत्पुरुष हैं और जो पहले अपना काम सिद्ध कर पश्चात दूसरेका काम करते हैं वे मध्यम हैं और जो स्वार्थ के लिये पराये हितका नाश करते हैं वे मनुष्यों में राक्षस अर्थात अधम हैं और जो निरर्थक अर्थात जिस में अपना भी कुछलाभ नहो परन्तु दूसरेकी हानि करते हैं वे संज्ञाहीन हैं अर्थात वह मनुष्य ही नहीं हैं ॥ आज कल प्रायः हमारी जाति में ऐसे मनुष्यों की संख्या अधिक है जो अपने हित के वास्ते अन्य को नुकसान पहुचाते हैं और हम अत्यंत शोक से प्रघट करते हैं कि कोई कोई महाशय हमारी जाति में ऐसे भी हैं जो बिना प्रयोजन दूसरे के हितका नाश करते हैं ॥ हे भाईयोंहे परोप कारियोंहे सज्जनों जब तक हमारी जाति में द्वेष भाव छूट कर ऐक्यताका प्रचार न होगा तब तक उन्नति के दर्शन कहां क्यूं कि यह द्वेष ऐसा प्रबल शत्रु है कि उन्नति के पैर नहीं जमने दे सका है इस द्वेष का दूर करना ही उन्नति का जमाना है ॥ और हम पूर्व कह चुके हैं कि रस द्वेष का करण केवल अविद्या है और अविद्याव कारकाना श विद्याप्रचार से हो सकता है इस कारण मैं हाथ जोड़ सब जाति हितेच्छू और धर्मात्मा संत पुरुषों से प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार होसके विद्या का प्रचार करैं परन्तु यह उपकार भी बिना ऐक्यता नहीं होगा इस कारण हे परोपकारी भाईयो तुम पहिले अपने में से द्वेष भाव दूर कर के फिर अन्य के उपकारका उपाय करो॥

सज्जन परुषों का दासानु दास
एक जैनी

धर्म पालन कासमय

हमने बहुधा पुरुषों को यह कहते हुवे सुना है कि बाल्यावस्था में खेलना कूदना चाहिये और युवावस्था में विषय भोग करना चाहिये और वृद्धावस्था में धर्म पालन करना चाहिये अब एम यदि कोई जवान पुरुष कुछ धर्म रूप प्रवर्तने लगता है और विषय वासना को कम करता है तो उस के मित्र उस

समय उसको उपदेश देते हैं कि भाई धर्म करने के वास्ते अभी बहुतेरी उमर पड़ी है बुढ़ापे में जो चाहे सो कर लेना अब जवानी में तुमने क्या झगड़ा लगाया है ऐश और आराम के वास्ते तो जवानी ही होती है इसके अति रिक्त हर एक मनुष्य के मन में भी यह बात आती है कि अवश्य धर्म पालन के वास्ते वृद्ध अवस्था ही है॥ विचार करने से हम को ऐसी अनुमति के प्रचार के तीन कारण ज्ञात पड़ते हैं एक तो यह बात है कि अनादि काल से जीव राग द्वेष मोह और विषय के बंधन में फंसा हुआ है इस कारण विषय कषाय और संसार की चाह को छोड़ना और धर्म मार्ग पर चलना इसको बहुत ही कठिन मलूम होता है इस कारण जहां तक इससे हो सक्ता है धर्म की तरफ से बचना है और धर्म की तरफ लगने को आगामी काल के वास्ते टलाना जाता है यदि मनुष्य को कोई कारण मिलता तो यह धर्म के काम को वृद्धावस्था से भी परे टाल देता परन्तु लाचार है वृद्धावस्था से आगे इस की आयु ही पूर्ण होती है करै तो क्या करै इस कारण लाचार धर्म करने को वृद्धावस्था के वास्ते नियत किया है दूसरा कारण यह मालूम होता है कि किसी किसी मत वालों ने यह अपने धर्म का सिद्धांत ही स्थापित किया है कि वृद्धावस्था में धर्म में लगना चाहिये तीसरा कारण यह मालूम होता है कि बहुदा मनुष्य यह निश्चय किये हुवे हैं कि अन्त में अर्थात् मरते समय जैसे भाव रहेंगे उसही के अनुसार आगामी जन्म के वास्ते सामिग्री मिलेगी इस कारण बहुदा मनुष्य यह समझे हुवे हैं कि युवावस्था में धर्म कर के कष्ट सहना व्यर्थ है मृत्यु के समय वा वृद्धावस्था में धर्म पालन कर लिया जावेगा॥ खैर यह विचार किसी ही कारण से पैदा हुवा हो परन्तु अब विचारनीय यह बात है कि क्या यदि युवावस्था में धर्म पालन न किया जावे तो वृद्धावस्था में होसक्ता है इस विषय में मेरी अनुमति तो यह है कि वृद्धावस्था का कारण है महा पाप का अशुभ बन्ध बहुदा कर के वृद्धावस्था में ही होता है कृष्ण लेश्या बहुदा वृद्ध पुरुष के ही होती है परन्तु जो मनुष्य युवावस्था में भी धर्म पालन करता है उसके प्रनाम निर्मल हो जाते हैं उसका अनुराग धर्म में अधिक होता है उस को संसारिक वस्तुओं की चाह नहीं होती है उस की विषय कषाय मन्द होती है इस कारण वृद्धावस्था उस पर अपना अधिक जोर नहीं कर सक्ती है अर्थात् ऐसा पुरुष के जो युवावस्था में पूरा पूरा धर्मानुरागी हो वह तो वृद्धावस्था में किंचित मात्र से भला रहता है नहीं तो वृद्धावस्था में

आलु वगैरा जमी कन्दका साग [२] बीदल अर्थात वेसण की नु कतीका दही में रायता या दही बडे वगैरा [३] जलेबीका बना ना जिसका खमीर उठाया जा-ता है इन चीजोंका सर्व भाईयों को सर्वथा त्याग करना चाहिये परन्तु ऐ सान कर सकें तो उप रोक्त कामों में तो जरुर हीन बन जाना अर्थात् त्याग करना चाहिये [४] यहां अकसर लो-ग मुरदे को अध जला गंगा में बहाय देतें हैं यह विपरीत रीती भी अपने जैनी भाईयों में जरुर न होनी चाहिये जिस पर इस उप-देश को सर्व भाई जो उसवक्त स-भा में थे पसंद कीया हस्ताक्षर भी बहुत से भाईयों ने कर दीये प-रन्तु थोडे से भाईयों ने अभी ह-स्ताक्षर नहीं किये हैं आशा है कि वो भी कर देंगें जब सब हाल इस उपदेशका लिखने में आवे-गा तत्पश्चात महा सुदी ५ रवी वार को पाठशालाका वार्षिकत्सव बडी धुम धाम से हुवा लडके उ-नमान २० पाठशाला में पढते हैं अध्यापक २ हैं संस्कृत पढाने को पंडत भगवान दीनजी शर्मा हैं यह बडे सुयोग्य हैं इन के उप-स्थित होने से लडकों में विद्या की बडी उन्नति हुई हैं भाषा पढा ने को जैनी भाई रामदियालजी हैं लडकों की परिक्षा भी लीगई भाई गुलजारीमलजी सर्राफ ने पंडत भगवान दीनजी को १ दुसाला जोडा और सब लडको को एक २ दुपट्टा और पुस्त क अमर कोश चन्द्रिका वगैरा की और सादीलालजी मंत्री सभा ने टोपी सब लडकों को पार तो शिक दिया रातको नृत्य भजन होकर उत्सव विसर्जन हुआ प्रार्थ-ना है कि श्रीजी महाराज सभा तथा पाठशाला को तरक्की दें और यह भी प्रार्थना है कि जहां पाठ-शाला तथा सभान होती हो वहां सर्व भाई सभा तथा पाठशालाका जरूर उत्तम प्रबन्ध करैं ॥

भाईयोंका शुभचिंतक
चिमनलाल बड जात्या
मु० कानपुर

फिजूलखर्ची

गृहस्थी के वास्ते दो कार्य अति आवश्यक होते हैं एक गृह-स्थाका प्रबन्ध अर्थात अपने और अपने कुटुम्बियों के पालन पोष-ण करना और दूसरे धर्म पालन करना जहां तक देखा जाता है य-

ही ज्ञात होता है कि गृहस्थी ज-
वही धर्म पालन करसका है जब
कि उसके गृहस्थका प्रबन्ध अच्छा
हो और चित्त में अति व्याकुल
ता नहो आज कल सर्व जगह यही
देखने में आता है कि हम लोग
धर्म से विमुख और निन्दनीय
पाप कार्यों में प्रवर्त ने लगे हैं
कारण इसका यही मालूम होता
है कि हमारे गृहस्थका प्रबन्ध अ-
च्छा नहीं है हम को विवाह आ-
दिक कार्यों में इतना खर्च करना
पड़ता है कि सारे जन्म की कमा
ई भी उस के वास्ते काफी नहीं
होती है फिर हम कैसे धर्म में प्र-
वर्त सक्ते हैं और क्यों कर पाप
कार्य छोड सक्ते हैं हमारी समाज
में तो धर्मोन्नति तभी होसक्ती है
जब कि फिजूल खर्ची हमारी
जाति से दूर हो हाय इस फि-
जूल खर्ची के कारण न हम खा
सक्ते हैं न पीसक्ते हैं न अपनी
प्यारी सन्तानका भले प्रकार
पालन पोषण करसक्ते हैं कंगालों
और दरिद्रियों के समान जीवन
व्यतीत करते हैं और न्याय अ-
न्याय योग्य अयोग्य मार्ग से जो
कुछ कमाते हैं सो विवाह आदि
क के समय लुटा देने के वास्ते
कौडी २ जमा करते रहते हैं ऐसी
दशा में हम क्या धर्म करसके हैं
यदि हम धर्म के स्वरूप को जा
न भी जावैं तौ भी ऐसी दशा में
हम क्या धर्म कर सके हैं और
कैसे पाप मार्ग द्वारा द्रव्य उपा-
र्जन करना छोड सक्ते हैं इस कार
ण ऐजैन धर्म की उन्नति चाहने
वालो जब तक फिजूल खर्ची दूर
न होगी तब तक सब उपाय तु-
म्हारे वृथा हैं ॥

चिट्ठी

भाई साहब बाबू सूर्य भान
जी जैजिनेंद्र कृपा करके निम्न
लिखित वार्ता को अपने पत्र जै-
न गजट में प्रकाशित कीजिये ॥

तारीख ७ फरवरी को पं-
डित चुन्नीलालजी व मुन्शी बा-
बू लालजी बी० ए० मुरादाबाद
निवासी ने जैपुरमें पधार कर ती-
न रोज तक ऐक्यता परोपकार
व्यर्थव्यय और जात्योन्नति के
विषय में उपदेश दिये जिनका
असर उपस्थित महाशयों पर इस
कदर हुआ कि दूसरे रोज उप-
देश के पश्चात कई महाशयों ने

अपनी जात्योन्नति के कारण प्रचलित कुरीतियों में से कोई कोई कुरीति दूर करना चाहा जिसका फल यह हुआ कि तीसरे उपदेश समय के पहले बाग विलासनी सभा के सम्पाकद और बहुतसे महाशयों ने यानी अनुमान ४० महाशयों ने इन दो कुरीतियों को— (१) विनायक के रोज सामग्री वेश्या इत्यादिका मंगाना (२) विवाह आदि में अतिशबाजी छुडाना बंद कर देने के लिये तुरन्त ही हस्ताक्षर द्वारा अपनी सम्माति प्रकाश की और नियम कर लिया कि भविष्य में विनायक के रोज सामग्री वेश्या इत्यादि और विवाह में आतिश बाजी मंगाने वाले को पस्ताक्षर करने के पश्चात जिन धर्म से विमुख समझेंगे फिर जब तीसरा उपदेश हुआ तो उस के पश्चात उन्हीं ४० महाशयों में से एक महाशय मास्टर नन्दलालजी ने हिम्मत करके सभा सदों के सामने अपनी सम्माति इन दोनों उपदेशकों की यादगार व जात्योन्नति के निमित्त प्रकाश की कि हम चालीसों भाईयों ने ऊपर लिखित कुरीतियों के दूर करने लिये अपने हस्ताक्षर कर दिये अब आप महाशयों में से जो कोई महाशय इन दो कुरीतियों को बुरा समज कर छोडना चाहै वह अपनी सम्माति हस्ताक्षर द्वारा प्रकाश करैं इस पर तुरन्त ही लग भग ७० महाशयों के हस्ताक्षर होगये अब इन कुरीतियों के दूर करनेका प्रचार होगया है इस कारण आशा है कि कुल बिरादरी सम्मति करके और कुरीतियों को भी दूर करैंगी और महाशय विरधीचन्दजी सोनी नाईब फोजदार व पंडित भोलीलालजी सेठी व गौरीलालजी वा कलीवाल आदि मनुष्यों ने अत्यन्त मदददी इस कारण यह सभा इन महाशयों को कोटिशः

धन्यवाद देती है और आशा र-
खती है कि आगे को भी तन
मन धन से जात्योन्नति में उद्य-
म करैंगे ॥

हस्ताक्षर जमुनालालगोदीका
मंत्री वाग विलासनी सभा
ठोलियानका मन्दिर जैपुर

ऋण

यह बात सब कोई जानते हैं कि ऋण लेना एक बहुत बड़ी आपत्तिका मोल लेना है क्योंकि जैसा कि पहाड पर से एक भारी पत्थरका नीचे गिराना बहुत आसान है परन्तु नीचे से ऊपर लेजाना मुश्किल है इसही प्रकार ऋण लेना तो बहुत आसान है परन्तु उसका उतारना बहुत कठिन है क्योंकि ऋण लेने वाला जितनी बड़ी कोशिश से अपने खाने पीने में से कम करके और अन्य प्रकारका कष्ट उठाकर ऋण उतारने के वास्ते संचय करता है उससे अधिक ब्याज बढजाता है अर्थात ऋण लेने वालेका सारा जन्म ऋण उतारने में बडे कष्ट से बीतता है परन्तु ऋण नहीं उतरता है ऋण लेने वाले की प्रशंसा विनय बिलकुल जाती रहती है और उसका कोई भरोसा भी नहीं करता है यह भी बहुधा देखने में आया है कि ऋणी पुरुष बेईमान होजाता है और असत्य बोलना धोका फरेब आदिक करना स्वीकार करता है क्योंकि वह बहुत लाचार होता है उसको राति दिन ऋण के भार से अति व्याकुलता होती है उसका चित्त स्थिर नहीं रहता है जब ऋणी पुरुष किसी प्रकार से ऋण नहीं उतार सक्ता है वा ऋण के उतारने में उसको अधिक कष्ट विदित होता है तो धोका देना लेकर मुकर जाना आदिक फरेब के काम आरम्भ करता है ॥ हमारे देश में ऋण लेनेका अधिक प्रचार है इस कारण बिचार ने की यह बात है कि जब ऋण लेना ऐसा दुखदाई है तो फिर क्यों लिया जाता है इसकाकारण यह है हमारे देश में व्यर्थव्यय करनेका अधिक प्रचार है यदि बेटाबेटी के विवाह में धन को व्यर्थव्यय न किया जावे तो अपनी बिरादरी में रहना भारी पड जावे आगे को कोई उसके साथ किसी प्रकारका सम्बध न करैं और उसके बेटा बेटीका बिवाह न हो इस कारण

यदि कोई बुद्धिमान पुरुष यह जानता भी है कि विवाह आदिक में व्यर्थ रुपया बर्बाद किया जाता है परन्तु तो भी वह अन्य अपने विरादरी वालों की तरह अपने धन को खोता है हम देखते हैं कि कुछ दिनों से पढ़े लिखे मनुष्य जिन को हिता हितका कुछ विचार होगया है सभाओं में बड़े बड़े व्याख्यान फजूल खर्ची के विरुद्ध देते हैं अखबारों में लेख छप वाते हैं किताबें बनाते हैं परन्तु जब अपने बेटा बेटी के विवाहका समय आता है तो अन्य मूर्ख पुरुषों की भांति वह भी अपने द्रव्यको लुटाते हैं इसका कारण यही है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी विरादरी की रीति रसम के अनुसार चलना चाहता है और रीति प्रचलित है व्यर्थव्यय करने की इस कारण बहुत मनुष्यों को लाचार होकर ऋण लेना पड़ता है और जन्म भर के वास्ते दास बनना पड़ता है ॥ बेशक जिस जिस नग्र में भाईयों ने एक संमति करके व्यर्थव्यय के दूर करने का प्रबन्ध कर लिया है वहां पर ऋण लेनेका भी प्रचार कम होगया है

ऐ भाईयों ऋण से बहुत डरना चाहिये तुम अपनी आंख से देखते हो कि ऋण वान पुरुषों के बाप दादा की जायदाद नीलाम होती है ऋणीका आचरण भ्रष्ट होजाता है ऋण वानका कोई विश्वास नहीं करता है ॥

क्या ऋण वान पुरुष कोई धर्मका काम करसक्ता है कदाचित नहीं क्योंकि उसका चित्त सदा व्याकुल रहता है उस को सदैव चिन्ता धन प्राप्त की रहती है वह उचित अनुचितका कुछ विचार नहीं करता है वह धर्म अधर्म को बिलकुल भूल जाता है ऋणी पुरुषका इष्ट धर्म धन उपारजन करना होता है ॥ परन्तु जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं जब तक कि फजूल खर्ची हमारी जाति से दूर नहीं होगी तब तक ऋण लेने की बान भी नहीं जावेगी ॥ इसका कारण फजूल खर्ची को अवश्य बहुत जल्द दूर करना चाहिये ॥

मान्यवर जैनगजट सम्पादकजी

जय जिनेन्द्र

वाह २ वर्तमान काल में आपकी बुद्धि कैसे पक्ष पर लक्ष दे चक्षु कर रही है कि आप ऐसे जगज्जयी महाराज से वैर भाव कर उसके अभाव करने को कटिबद्ध हुए हैं और उसके काराग्रह वासियों को काराग्रह से मुक्त

होनेका उपदेश कर सावधान कर रहे हैं क्या आपने अभीतक उसके नाम और महात्म रूप चरित्रों को श्रवण नहीं किये या उसने आपको अभीतक अपने प्रबल प्रवाह के सोते में गोते नहीं खिलाये मुझे ऐसा भासित होता है कि अभी आप उसके प्रबल प्रताप की ताप से अज्ञात ही है नहीं तो आप ऐसे प्रताप शाली महाराज से बैर क्यों उत्पन्न करते और अपनी कृष्णानन मयूर लेखनी को क्यों क्षयोपसम रूप नभ ज्ञानोप योग मेघ पटल से आच्छादितकर नृत्य करने को अवसर देते कि जिस से मनुष्यों के चित्त नृत्य की ओर आकर्षित हो उन महाराज के अकाज करने को उद्यत होते ॥

हम लोगों ने तो उसके चरित्र श्री जैन शास्त्रों द्वारा बहुत श्रवण किये हैं और प्रत्यक्ष में भी उसके चरित्र दृष्टि गोचर कर रहे हैं कि वह अपने जालों से सर्व काल सबको निहाल कर रहा है इर्षा से हम लोग उन से बैर नहीं करते किन्तु उसकी सेवा मेवा की वांछा कोही स्वीकार कर रहे हैं हमको आप का मैत्री भाव कपट रूप पयोमुख विष के घडे के सदृश दृष्टि पडता है क्योंकि प्रत्येक अंक में आप ऐसी युक्ति के लेख की रेख करते हैं कि जिस के देखने व सुनने से हम लोगों पर आप की प्रीति जानी जाती है परन्तु यह प्रीति महाराज से बैर के मार्ग को दिखला कर बैर कराती है क्या राजा से प्रजा को बैर करना योग्य है कदापि नहीं क्या हम सब एकत्र होकर उससे जीत सक्ते हैं जो जीत सक्ते होते तो क्या अनादि से उस की प्रजा बने रहते नहीं स्वतः राज्यकर लेते ॥

वाह २ हम भी तो कभी २ श्री जन मंदिरजी को जाते हैं और भाईजी लोगों के मुंह शास्त्रजी भी कभी श्रवण कर आते हैं पर हम तो अपने मन में यही विचार करते रहते हैं कि भाईजी साहिब कहते हैं सो कहने दीजिये और शास्त्रों में भी लिखा है सो लिखा ही रहने दीजिये हम को तो ऐसे त्रैलोक विजयी राजा से बैर करना योग्य नहीं - जो सेवा करते आये हैं वही योग्य है और जो हम यह विचार नहीं करते तो क्या हम को नहीं समझ पडता कि सौ वर्ष से अधिक तो कोई जीता नहीं हम ८० अस्सी ९० वर्ष की आयु होने पर भी क्यों काम क्रोध माया मान लोभ मोह इत्यादि पापों के आधिन रहते और विद्यामान में भी पुत्र पौत्रादिक के निरादर के वचन सुनते २ भी उन्ही से प्रीति करते और तृष्णा को वृद्धि अवस्था रूप रखते केवल आप सदृश धीमान भाईजी लोगोंका उपदेश मान कर तप न धारन करते हम क्या ऐसे मूर्ख हैं

नहीं २ मूर्ख नहीं हम तो केवल कृतज्ञ और विवेकी हैं क्योंकि स्वामी की केवल आज्ञानुसार ही चल रहे हैं आप लोग तो हमारे विचार में कृतघ्नी से ज्ञात होते हैं जो अपने अनादि के राजा के अदर्शन होने को कटिबद्ध हुए हैं और हमारा विवेक पन सिद्ध ही है क्योंकि कहा है लायक हीसे कीजिये वैर व्याह अरु प्रीति ॥

और भी– वैर लरो वा मित्रता होत सबल से हार । मित्र भये गौरव घटै शत्रु भये दे मार ॥ परन्तु हमारे ज्ञानानुसार आप इस नीति को विचारते ही नहीं केवल धर्मोन्नति २ ही कहते जाते हैं ॥ अब मैं उस राजाका नाम प्रगट करता हूं उसका नाम मोह महाराज है यदि आप उसके चरित्र श्रवण किया चाहें तो आप की आज्ञानुसार प्रकाशित करूंगा ॥

कृपाथुक्त मत्युत्तर कांक्षी
भगवानदास गढ़ाकोटा जिला सागर
मध्य प्रदेश

धनकीचाह यानी धनसंचय करना

मनुष्य धन संचय करने की चाह में ऐसा आशक्त होता है कि यद्यपि धन के ढेर इस के चारों ओर लगे हुये हों परन्तु तौभी अधिक धन वान होने के हेतु ऐसे २ कठिन उपाव करता है और संकट उठाता है जैसे कोई अपने दरिद्र दूर करनेका यत्न करता हो मनुष्य चाहे कितना धन वान हो परन्तु एक एक रुपये के वास्ते वडे २ बखेड करता है चाहे इतना धन मनुष्य के पासहो कि वह उसको भोग भी नहीं होसक्का परन्तु फिर भी इस धन पर ऐसा मोहित होता है कि थोडे से धन के वास्ते निन्दा और अन्याय के कार्य करना स्वीकार करता है वरन हमने यह देखा है कि अल्प धन वालों को धन संचय की इतनी चाह नहीं है जितनी अधिक धन वानों को है धन वान पुरुषों को रात्रि दिन यह धुनि लगी रहती है कि किसी प्रकार धन की वृद्धि हो सिवाय धन के उनके हृदय में और किसी बातका विचार नहीं आता है इस पंचमकाल में एक बात बहुत ही निन्दित प्रचलित होगई है कि जिस पुरुष के पास धन होता है चाहे कैसे ही अन्याय और पाप मार्गों से उपार्जित किया हो परन्तु उस की प्रतिष्ठा होने लगती है यह बात देखने में आती है कि जो लोग अन्याय रीति से धन पैदा करते हैं वोह अधिक गुण वान बुद्धिवान और चतुर समझे

जाते हैं और धर्मात्मा पुरुष जो अन्याय मार्ग से दूर रहते हैं और न्याय पूर्वक उपार्जित लक्ष्मी में संतुष्ट रहते हैं वोह बुद्धिहीन समझे जाते हैं कारण इसका यही है कि संसारी मनुष्य धन के ऊपर मोहित और आशक्त हैं आप भी धन उपार्जन में योग्य अयोग्य उचित अनुचित न्याय अन्यायका विचार नहीं करता धन को अपना प्रियतम जान उस की चाह में भटकता है और जिस तिस प्रकार धन पावने के उपाय में लगा रहता है और औरों को भी धनका प्रेमी देख खुश होता है और इसी कारण अन्य मनुष्यों को चाहे वोह कैसे ही पाप कार्यों से धन उपार्जन करते हों भला जानता है और प्रशन्सा करता है परन्तु हम को यह आश्चर्य है कि क्यों मनुष्य धन पर ऐसा आशक्त है कि उस के संचय करने में अपनी प्रतिष्ठा को लाज को और सुख चैन को बिलकुल त्यागन करदेता है और मानसीक और शारीरिक अनेक प्रकार के दुःख और कष्ट उठाता है विचार करने से यही मालूम होता है कि ये सब महात्म अज्ञानका है अज्ञान से विपरीत बुद्धि होजाती है ॥

धर्म और धर्म पुस्तकों के प्रकाशका हेतु यही है कि धर्म मार्ग है अज्ञान दूर होने और हिताहितका विचार होनेका इस कारण जो मनुष्य अज्ञान अन्धकार से निकलना चाहते हैं वोह धर्म की सरण गृहण करते हैं और फिर वोह धनादिक की चाह में आशक्त और मूर्छित पुरुषों की भांति नहीं भटकते धन मनुष्य के सुख और उपगार के हेतु है न कि मनुष्य धन के हेतु है ॥

रिपोर्ट दौरा मंत्रिमंडल या उपदेश कानपुर

मैं इटावह से सरकारी कार्य के वास्ते कानपुर गयाथा जैन धर्म शाला में कि जो जरनैल गंज के श्री मंदिरजी सम्बन्धी जाकर ठहरा यहधर्म शाला है अति मनोहर नवीन तयार हुई है जैनी भाईयों को इसमें टिकने से बड़ा ही आराम मिलता है— कहार भी नोकर है— दिशा मैदानका भी बहुत आराम है— लाला गुलजारी लाल अग्रवाल भाईयोंको आराम देने में बड़ाही परिश्रम करते रहते हैं और जगह के भाई यहां आकर टिकते हैं उनसे मिलकर बड़ाही आनंद प्राप्त होता है कानपुर

जैसे बड़े शहर में ऐसे मकानका ५०) मासिक से कम किराया नहीं आसकता है धन्य है कानपुर के भाइयों को जिन्हो ने वात्सल्य अंगका पूरा २ प्रचार कराया है मंदिर शिखरबंद बीच बजार में बड़ा ही शोभायमान है— हरवक्त मंदिरजी में मेलासा दर्शन करने और स्वाध्याय करने वालों का लगा रहता है दोनों वक्त शास्त्रजी होते हैं— और सभा शास्त्रकी अच्छी होती है— ५० भाइयों के लग भग शास्त्रकी स्वाध्याय करते हैं— हर चोदस को सभा होती है भाई शादीलाल सभा के मैं भी बड़े ही योग्य पुरुष है पाठशाला भी बहुत अच्छी है— मेरे वहां रहने पर बहुत से पतिष्ठत भाईयों ने— मुझे मेरे ठिकाने पर आकर मुझको अपने दर्शनों से कृतार्थ किया— और मुझको सभा में व्याख्यान करनेका हुकम दिया— यदि मैं व्याख्यान कहने के लायक एसे विद्वानों में कदापि नहींथा परन्तु हुकमका टालना भी मेरी समर्थ से बाहरथा— मैने स्वीकार किया— चुनांचे ता० १४ फरवरी की रात में एक नैमित्तिक सभा होना करार पाकर लाला गुलजारीलालजी ने अपने नाम से नोटिस छपवाये और सब जगह जैनी भाईयों में बांटेगये ७ बजे से सभाका वक्तथा— बड़े हर्ष की बात है कि नियत समय पर सब भाई जो २०० के लग भग होंगे एक होगये सभाकास्थान उसी धर्म शालाका चोकथा जो अच्छे प्रकार फर्स तथा रोशनी आदि से सजाया गयाथा— प्रथम पंडित भगवान दीनजी शर्मा अध्यापक जो अपने थोडे से विद्यार्थियों सहित मेरे कहने से पधारे थे— उन्होने अपने विद्यार्थियों की परीक्षा मुझको दिखलाई— यह परीक्षा एक नये ढंग से हुई कि जिस को मैने बहुत ही पसंद किया— अर्थात् इस प्रकार कि अवल दो विद्यार्थी— दुरगा प्रसाद रामलालजी लोहिये के पुत्र जिसकी अवस्था केवल १३ वर्ष की होगी और दूसरा गुलाबचन्द विद्यार्थी भाई मोतीलालजी खंडेलवाल के पुत्र— अवस्था केवल ११ वर्ष की खडे हुए— यह दोनों सारस्वत और चन्द्रका के पढे हुए थे—एक विद्यार्थी प्रश्नकरताथा— और दूसरा उत्तर देताथा— जब एकका प्रश्न होचुकताथा तो दूसरा प्रश्न करता और प्रथम उत्तर देताथा गुलाबचन्द विद्यार्थीका उच्चारण

ऐसे मनोहर रीतिसे होताथा कि दिलों को बडाही हर्ष होताथा— फिर रतनलाल खंडेलवाल विद्यार्थी और विशेस्वर ब्राम्हणका प्रश्नोउत्तर इसी प्रकार हुआ— फिर छंगनलाल छोटा भाई गुलावचन्द विद्यार्थीका जिस की अवस्था केवल ९ ही वर्ष की है और बाबूराम— लोहियेका उसी प्रकार प्रश्नोत्तर होतारहा— यह सब सारस्वत और चन्द्रकाही में हुआ भाषाका नाम तक नहींथा और भी विद्यार्थियोंका इसी प्रकार इमतहान हुआ— उसके पीछे सभा की कार्रवाई— शादीलालजी मंत्री ने शुरूकरी लाला गुलजारीलाल जी ने— मंगलाचर्णपढा— फिर मेरा व्याख्यान जैन धर्म की प्राचीनता पर हुआ कि जिस में प्रत्यक्ष प्रमाण दिये गये— और हमारी प्रथम दशा क्या थी—और अब क्या होगई उसके कारण बतलाये गये— और अब किस प्रकार उन्नति हो सक्ती है— फिर शादीलालजी मंत्रीका व्याख्यान कुगुरु कुदेव के सेवन की हानियों में और हकीमजी जलेसर निवासी का—मान कुविव्यसनो की हानि में अति उत्तम हुआ और १ व्याख्यान देवगुरु शास्त्र के विषए में संस्कृत श्लोकों में अर्थ सहित दुरगा प्रसाद उक्त विद्यार्थी ने बडेही जोरशोर से और विना घबहराट के कहा जिस के सुनने से सब भाई बडेही खुश हुऐ चूके मेरे व्याख्यान में विद्याकी आवश्यक्ता दिखलाई गईथी और यह भी मेरा तात्पर्यथा कि एक महा विद्यालयके विनास्थापित हुऐ यह गर्ज पुरी नहीं होसक्ती है सो भाई गुलजारीलाल कन्हैलाल शादीलाल आदि ने सभा होने के प्रथमही से तजवीज कर रखी थी के घर पीछे एक २ रुपया हम सब भाई कानपुर के देवेंगे सभामें रुपया एक सौ के लग भग उसी दिन एकत्र होगया— मैंने कानपुर के भाईयोंका धन्यवाद करा— और सत्य तोयूं है कि कानपुर के भाईयों ने महा विद्यालय की नीम रखदई है अब ऊपर की इमारत बनाना सकल जैनी भाईयोंका काम है लाला गुलजारीलाल साहबने सभा में यह भी कहा के अभी तक जैनी भाईयों को अपने धन की रक्षाका भयथा और इसी सबब से रुपया एकत्र नहीं होताथा परन्तु जैन जाति के महाराजा श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी ने जब इस रुपयेका रखना अपने यहां स्वीकार कर लिया और वोह तन मन धन

मे इस जात की रक्षा के लिये उद्यत भी होगये तो अब किसी प्रकारका भय नहीं रहा और ज़रूर हर जगह के जैनी भाई घर पीछे एक २ रुपया जमा करके अपने २ नगरों तथा ग्रामों से सेठ साहब के पास भेजते रहेंगे जैन जाति के वास्ते यह कोई मुशकिल बात नहीं है और सेठ साहब को धन्यवाद उन की कोशिशों की बाबद दिया गया और सभा विसर्जन हुई यहां पर लाला गुलजारी लाल अग्रवाल और प्यारेलाल लोहिया नगहसे सभा सभा के कार्यों में मदद देने को तयार है ॥

चम्पतराय

चिट्ठी

जनाब बाबू सूर्यभानजी जय जिनेंद्र कृपा कर इस लेख को जैन गजट में स्थान दान दीजिये

एक सम्मति किसी धर्म स्नेही ने जैन गजट में प्रकाशित की थी उसका उत्तर अभी तक नहीं छपा सो छपना चाहिये॥ वोह सम्मति यह थी कि जैन कालिजका रुपया जो इकट्ठा होगया है जब तक जैन कालिज की तयारी के माफिक न होवे उतने काल उस रुपये के सूद से एक जैन पाठशाला खोली जावे यह संमति अति लाभ पहुंचा ने वाली है अगर यह सम्मति अच्छी है तो कालिज के प्रबन्ध करता कोशिश करें और नापसन्द राय समझे तो आप जाहिर करें ॥

और कालिज के चन्देका हिसाब जैन गजट में छपना चाहिये इस वक्त कितना रुपया वसूल हो चुका है और कितनी कसर है उस कसर के मेटनेका उपाय हर एक जगह के भाई करेंगे ॥ और उपदेशक फंड में बहुत कम रुपया जमा हुआ है अगर गोलक हर एक पूजा में रक्खी जावे तो बहुत जल्द रुपया जमा हो जैसे कि मेरठ शहर में रक्खी गई थी अगर जैपुर के मेले में भी इसी तरह गोलक रक्खी जावें और कोई पंडित महाशय प्रार्थना करें तो हजारों रुपया जमा हो जावेगा ॥

जैनी भाइयोंका शुभचिंतक
सुमेरचन्द सहारनपुर
नखासकान मिस्त्री

प्रार्थना

जैन गजट के देखने से मा-

लूम होता है कि कहीं कहीं जैनी भाई जैन मत से बेसुध होकर आर्य समाज की तरफ खिचे जाते हैं अफसोस अफसोस उन लायक जैनी भाईयों की खिदमत में मैं निहायत अदब से प्रार्थना करता हूं और उनको आगाह करता हूं कि वे जैनी भाई इस बात से बिलकुल परहेज करें और उसवक्त तक अपनी तबियत किसी अन्य मत की तरफ न बहकावें जब तक भाषा व संस्कृत न पढलें और जैन ग्रंथ न देखलें नहीं तो तोते के माफिक पछताना पडेगा और जगमें हंसीहोगी॥ उजल फूलदेख सेभलका भरम गया सुआ; फाग तोरके चोच जो मारी पछतायासुआ बिना विचारे जोकरै सो पीछे पछताय। काम बिगाडे आपनो जग में होत हंसाय॥

आपकादास बिसेस्वरदयाल
मुकाम सीतापुर
ता० २४ फरवरी

हांसी

—०—

श्रीयुत महाशय बाबू सूर्यभानजी जयजिनेंद्र अगर मुनासिब समझें तो नीचे लिखे मजमूनको छपाने के वास्ते जैन गजट में स्थान दान दीजियेगा: देखिये ईसाई मत वालों की लगन अपने धर्म की ओर; आज एक ईसाई अफसर शहर बाजार में आते आते ईसाई मतकी दृढता पर एक घंटे तक खडे हो कर व्याख्यान दिया गो यह मत हमारी आमनाय से विरुद्ध है मगर उन की रुचि धर्म की तरफ देख कर हम को अपने धर्म के मनुष्यों पर अफसोस आता है कि वोह लोग कोशिश नहीं करते हैं अगर इसी तरह हमारे जैनी भाई भी धर्म की ओर तन मन धन से उपदेश देवें तो जल्दी उन्नति हो प्रिय वर मेरा लेख इस वास्ते है कि हमारी तरफ जैन उपदेशक महाशय की अति आवश्यकता है अन्य मत वाले हमारी तरफ ग्राम २ में उपदेश देरहे हैं

जैनी भाईयोंका दास
रघुनाथ दास जैनी

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंग्रेज़ी महीने की १-८-१६-२४ ता०

को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से

देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

मूल्य पेशगी वर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीनरुपया है

प्रथमवर्ष | ता० १ फर्वरी सन १८९६ | अङ्क ८

प्रार्थना

यह पत्र महासभाकी आज्ञानुसार जैनधर्मोन्नति के वास्ते जारी कियाहै परन्तु यह पत्र अपनाकाम जैनी भाईयों की सहायता से ही पूर्ण करसक्ताहै हमको अत्यन्त शोक है कि हमारे भाईयों ने जितनी चाहिये थी उतनी सहायता नहीं दीहै अधिक शोक इस बात का है कि बहुधा स्थानों पर यह पत्र जैन मंदिरोंमें भी स्वीकार नहीं किया गयाहै और इससे हमको संदेह होताहै कि उस स्थान के जैन मंदिरमें भाई एकत्र न होते होंगे जो इस पत्र को पढैं और लाभ उठावैं ॥ परन्तु बडी कठनाई इस बातकी है कि जिस स्थान पर यह पत्र नहीं जावेगा वहांका उपकार महासभा मथुरा क्याकरसकेगी ॥ इस कारण हम परोपकारी भाईयों से प्रार्थना

करते हैं कि वह इस बात का उपाय करैं कि जिससे प्रतिस्थान पर और प्रत्येक मंदिर में यह पत्र जावे और पढ़ा जावे ॥

होली

होली के दिन निकट आगये इस कारण इस विषयपर कुछ लिखना आवश्यक है ॥ पांच बरस हुवे एक लेख होली के विषय में बहुत उत्तम जैन प्रभाकर में छपाथा सो हम उसही लेख को प्रकाश करते हैं अधिक लिखनेकी आवश्यका नहीं है ॥

होली क्या पदार्थ है और होली से जैनियोंका क्या संबंध है और होली के ख्याल में जैनियोंको शामिल होना चाहिये कि नहीं इन बातोंका कुछ विचार करना अवश्य है ॥ हमने शास्त्र द्वारा तथा अपने बड़ोंसे ऐसा निश्चय किया है कि होली एक लोक मूढ़ता है जिस को पापी और निर्लज्ज पुरुषोंने अपने विषय कषाय पुष्ट करने के लिये स्थापित किया है कि जिस होलीका त्योहारका मिस करके वेलाग बेखटके बेरोक टोक निडर होकर मद्य यान शराब और भांग पीवें और वेश्य दासी कुलटा स्त्रीयोंसे संसर्ग करैं और मुंहसे जो चाहैं सो वेहूदा गालीयां बकते फिरें ॥ लोगतो स्वभाव करही भोले और विषयाशक्त होते हैं और फिर ऊपरसे मिलगया होलीका बहानातो अन करने काम करने लगगये यहांतक कि आम दिन देखनेमें आता है कि अच्छे २ इज्जतदार अपना काला मुहकरके सूके पापोशका सेहरा बांध बकलोंकी माला पहन कर खरा ऽरोहण कर शहरकी गलियों में नशेमें चूरहुये फिरते हैं और मा बहन काकीमाई मामी भोजाई आदिकी भी शरम नहीं करते उनके सामने हाथ पसार २ मुंहफाड २ चिल्ला २ कर अन कहनी गालियां बकते और हंसते हैं उन निर्लज्जोंको जराभी शरम नहीं आती है। यह होली अज्ञानकी बेटी पापकी पत्नी व्यभिचार और दुराचारकी माता शील संजमकी बैरन नर्क पहुंचाने की घडी पोली है॥ भंग पीने की आदत होली से होती है माता पिता आदि गुरुजनका अनादर करना और उनको गालियां देना होलीसे ही सीखा जाता है ॥ निश्चय कर होली सर्व पाप और दुरा चारों की जड है ॥

होली से जैनियोंका कुछ संबंध नहीं है क्यूंकि उनके धर्म शास्त्र में होली ऐसे नीच त्योहारोंका निषेध किया है ॥ जैनियोंका धर्म शास्त्र और कुल आचर्ण आज्ञा देते हैं कि नशा भंग ततमाखू आदिका त्याग करो कुवचन गाली भांड्य वचन आदि मत बोलो

शील संजम पालो गुरुजन की विनय करो और होली के विषय भांग पीना माजूम खाना गाली बकना ठट्ठे बाजी करना व्यभिचार सेना इंद्रीयोंको बस में नरखना गुरुजन से वेशरम होना उन का कहना नहीं मानना आदि दुराचार स्वयमेव करने पड़ते हैं॥ होलीका आचर्ण श्रावक कुलकी रीति से बिलकुल उलटा है इस लिये जैनियोंका होली से किसी प्रकारका संबंध भी नहीं है॥ होली के ख्याल में जैनियों को शामिल भी नहीं होना चाहिये क्यूंकि यदि वे होली के ख्याल में जावेंगेतो उनको सिर में खाकडालनी होगी मुंह काला करना पड़ेगा भांग पीनी होगी गालियां बकनी पड़ेंगी वेशरम और वेहया होना होगा पर स्त्रीयों से मन वचन द्वारा कुसील सेवना पड़ेगा ॥ जो होली के खयाल में जावेगा वह अपना धर्म गंवावेगा और पाप कमावेगा इस के सिवाय जो श्रावक होली के खयाल में शामिल होते हैं वे बड़े पाप के भागी होते हैं क्यूंकि फागुन सुदी अष्टमी से पूर्णमासीतक अठाईजी के महान पर्वके दिन हैं इन दिनों में जिनेंद्रका पूजन करना व्रत और सील संजम धारणकर पाप आश्रवको रोकना चाहिये ॥ पर्व के दिनोंका किया हुवा पुन्य और पाप असंख्यात गुणा होकर सुख और दुख का दाता होता है इसलिये अठाईजी के पर्व के दिनों में जैनियों को उचित है कि पुन्य रुप क्रिया करें और पाप रूपक्रिया होलीका ख्याल अपने मन बचन काय से सर्वथा प्रकार त्यागकरें परन्तु होली लोक मूढ़ता है इसरा क्षसी के फंदे में से निकलना बहुत कठिन काम है ॥ अच्छे २ पंडित और ज्ञानी भी इसके जाल में सहजही फंसजाते हैं तब साधारण लोगों कीतो क्या कथा इस होली राक्षसी से रक्षा करनेका एक महा मंत्र हमें मिला है सो अपने भाईयों को बताते हैं और आशा करते हैं कि वे इस महा मंत्रका शरण ग्रहण अवश्य करेंगे ॥ वह महा मंत्र यह है फागुण सुदी पूर्णमासी के सायंकाल को जिन मंदिर में पूजा करके रात्रि जागरण करें और भजन और नृत्य करके रात्रि पूर्णकरें चैत्र वदी १ को प्रभात स्नान करके जिनेंद्रका पूजन करें और शास्त्र जीकी स्वाध्याय करें पीछे जब होली के खयाल की धूम बन्द होजाय तब होली राक्षसी से बच जायगे ॥ जिन मंद्र में होलीका प्रवेश नहीं है ॥

बुड्ढे का मरना

यह आप जानते हैं कि घर के सर्व प्रकार के प्रबन्ध का काम बृद्ध पुरुषों के ही ऊपर होता है क्यूंकि एक तो जवान पुरुष संसार व्यवहार को पूरा तौर से

जानने नहीं होतेहैं और दूसरे बेपरवाह होतेहैं इस कारण जब कोई वृद्ध पुरुष मरजाता है तो उस घर के सब पुरुषों को बहुत कठनाई होती है और सब कामोंका भार उनहीं के सिर पर आन पड़ताहै और बहुत से ऐसे काम पड़जातेहैं जिनको वह बिलकुल नहीं जानते होतेहैं जैसा कि बिरादरी का व्यवहार रीत रस्म रिवाज ॥ इस कारण वृद्ध पुरुष के मरनेसे उस घर के मनुष्योंको बहुत प्रकार की हानिभी उठानी पड़तीहै ॥ परन्तु हमको बड़ा आश्चर्य है कि बहुधा स्थानों पर हमारी जातिमें यह रिवाज है कि वृद्ध पुरुष के मरने पर बहुत खुशी कीजातीहै और बहुत धन खर्च किया जाताहै अर्थात् जिस घर में कोई वृद्ध पुरुष मर जाताहै तो उसके घर वालों पर दो प्रकार की विपत आतीहै अर्थात् एकतो वृद्ध पुरुष के मरने से कार्य व्यवहार में हानिका होना और कठनाई पड़ना दूसरे बिरादरी के रिवाज के कारण धन खर्च करना इस वास्ते जिस किसी के यहां कोई वृद्ध पुरुष मरजाताहै उसको बहुत दुख होता है ॥ हम नहीं समझते यह कैसी अद्भुत रीतिहै कि किसीके मरने के ऊपर बहुत द्रव्य खर्च कर बिरादरी को मिठाई खुलाई जावे और खुशीमनाई जावे ॥ यह बात अपनी आंखों से देखतेहैं कि इस पश्चयकाल में वृद्धपुरुष की सेवा उसकी संतान नहीं करती है किन्तु अधिक २ दुख देतीहै ॥ उसके पुत्र पौत्रादिक अच्छा खाना खातेहैं अच्छा वस्त्र पहनते हैं और अन्य सर्व प्रकार की सामिग्री जिसकी आवश्यक्ता होतीहै अपने वास्ते संग्रह करते हैं और अपने वृद्ध पिता और दादाको एक एक टुकड़े को तरसातेहैं वह वृद्धाजिस तिस प्रकार अपनी आयु पूरी करताहै परन्तु मोह अधिक होनेके कारण वह वृद्ध ही उनकी सेवा करताहै और उनके सर्व कार्यों का प्रबन्ध करताहै ॥ अज कलके समय में वृद्ध पुरुष केसुख के वास्ते एक पैसा भी खर्च करना बहुत बुरा मालूम होताहै परन्तु उस वृद्ध के मरने पर बहुत खुशी की जाती है और बहुत द्रव्य खर्च किया जाताहै ॥ इससे यह स्पष्टजाना जाताहै कि घर के सब लोगों को वृद्ध पुरुष बहुत ही बुरा मालूम होताहै और उसका जिन्दा रहना

अशुभ भाव और खोटे परिणाम हो ही जाते हैं हम यह बात अपनी आंखों मे प्रति दिन देखते हैं कि वृद्ध पुरुष को अपने पुत्र पोत्रादिक सम्बंधियों से बहुत ही मोह होताहै उन के वास्ते सर्व प्रकार के कष्ट उठाने के वास्ते वह उद्यम होताहै यहांतक कि अपने पुत्र पोत्रों के सुख के वास्ते अपनी जान तक देना पसन्द करता है और उन को किंचित मात्र भी दुःखी देखकर बहुत दुखी होताहै और बहुत चिंता करता है जवान पुरुष को इतना ममत्व नहीं होता है वह बेपरवाह सा होताहै ॥ वृद्धावस्था मे लोभ और इर्षा तो अत्यंत ही बढजाती है इस के सिवाय वृद्ध पुरुषका चित्त भ्रम रूप होता है बुद्धि ठिकाने नहीं होती आंख से दीखना बन्द होजाता है जिस से कि शास्त्र स्वाध्याय कर सक्ता, कानों से सुनना बन्द होजाता है जो शास्त्र सुन लेता पौरुष थक जाते हैं उसको उठना बैठना भी दुर्लभ होता है और कृपातो वह क्या करसक्ता है उसका शरीर ही उस के वस मैं नहीं होता है मनकोतो वह क्या वस मैं करसक्ता है इस कारण वृद्ध पुरुष कदाचित धर्म पालन नहीं करसक्ता है इन तमाम बातों के सिवाय किस को इस बातका निश्चय है कि अवश्य हम वृद्धावस्था तक जीते रहैंगे इस कारण भले काम मैं कभी विलम्ब नहीं करना चाहिये और शुभ कार्यको कभी आगामी काल पर नहीं छोडना चाहिये आयुका कुछ भरोसा नहीं है अन्त समय मैं हमारे प्रणाम तबही दुरुस्त रहसक्के हैं जबकि हमारे प्रणाम पहले से साफ हों इस कारण हमको यह बात चित्त से निकाल देनी चाहिये कि वृद्धावस्था मैं धर्म पालन किया जावेगा बरण यह निश्चय कर लेना चाहिये कि युवावस्था मैं ही धर्म पालन होसक्ता है ॥ इस वास्ते हमारे जवान भाईयों को निश्चिंत नहीं बैठना चाहिये और अभी से धर्म मैं लगना चाहिये ॥

इस मेरे लेख से वृद्ध पुरुष यह न समझ जावैं कि वृद्धावस्था मैं धर्म हो ही नहीं सक्ता है नहीं यह मेरा आशय नहीं है मैंने केवल यह कहा है युवावस्था मैं धर्म सेवन सुगम है और वृद्धावस्था मै कठिन है और उद्यम सब से बलवान है यदि वृद्ध पुरुष पूरा पूरा यत्न करैं तो जवानों से भी अधिक अपने प्रणामों को साफकर सक्ता है और अधिक धर्म सेवन करसक्ता है ॥

वैश्यकानफरैंस

अर्थात

वैश्य महासभा

वैश्य कान फरैंस अर्थात वै-

श्य माहसभाका वर्णन हम छठे अंक मैं कर चुकेहैं ॥ इस साल मथुरा में इस महासभा में जोजो रिजो ल्यूशन अर्थात उद्देश्य मंजूर हुचे हैं वह हम सर्व भाईयों की सूचना के अर्थ प्रकाश करते हैं इस से मालूम होसक्ता है कि हमारे हित के वास्ते यह सभा कैसे कैसे उपाय कर रही है और ऐक्यता करने के वास्ते कैसी उद्यमवान है इस सभा में जो जो नियम मंजूर होगये हैं उनका सब भाईयों को पालन करना चाहिये जिस से इस जाति की न्यूनदशा दूरहो और आनन्द से सब भाईयों की आयु व्यतीत हो जैसा कि जैन महा सभा की सहायता करना जैनियोंका परम धर्म है इसही प्रकार वैश्य सभा की भी सहायता करनी चाहिये क्यूंकि यह सभा सब वैश्यों के उपकार के वास्ते नियत हुई है जैनीहों वा वैश्नव ॥

वैश्य कान्फरेन्स में पास हुए
रिजो ल्यूश नो की फहरिस्त

[१] यह कान फरेंस प्रेरणा करती है कि सर्व भ्रातृ गण अपने स्थानिक विरोध और झगडों को अपने आप पञ्चायत या आपस के फैसले या और उचित उपायों से दूर होने की कोशिश करें और अपने आप को जहां तक होसके अदालतो में आने और तबाह होने से बचावें ॥ इस उद्देश्य के पूरण होनेके वास्ते यह कान फरेंस सब भाईयों को इस बातका ध्यान दिलाती है कि वह पञ्चायत और ऐक्यता कराने वाली सभायें नियत करें और स्थानिक सभाओंका यह फर्ज समझती है कि ऐसे कार्यों में अत्यंत कोशिश करें ॥

[२] यह कान फरेंस सब भाईयोंको धार्मिक विद्या के प्रचार की ओर ध्यान दिलाती है और आशा करती है कि देव नागरी और संस्कृत विद्या के प्रचार में सब भाई कोशिश करेंगे यह कान फरेंस यह भी प्रेरणा करती है कि जो भाई अपनी उदारता से अपना द्रव्य मंदिर आदिक पुन्य और धर्मके स्थान बन वाने में खरच करते हैं वह उस रुपये का एक भाग संस्कृत विद्या के प्रचार और धर्मउन्नति में भी लगाया करें और कान फरेंस निश्चय करती है कि जो भाई अपने बाल कों को उच्च श्रेणी की अंगरेजी विद्या पढ़ावेंगे वह उनके वास्ते दूसरी भाषा संस्कृत ही रक्खेंगे ॥

[३] यह कान फरेंस शास्त्री शिक्षा के प्रचार के वास्ते फिर भाईयों को ध्यान दिलाती है

(४) यह कान फरेंस सब भाईयों को फिर यह ध्यान दिलाती है कि बाल वि-

वाहका प्रचार बन्द किया जावे और आसा करती है कि जिस जिस स्थान पर या जिस जिस फिर कों या जिस जिस घराने में बाल विवाहका प्रचार है अर्थात विवाह के समय लड़की की आयु बारह बरस से कम और लड के की आयु पंद्रह बर्ष से कम है वह सब भाई इस के दूर करने में कोशिश करेंगे और गत वर्ष के प्रकार इस बार भी हस्ताक्षर करके अपना उद्यम प्रगट करेंगे ॥

[५] यह कान फरैंस फिर प्रेरना करती है कि सब भाई और सर्व सभायें इस बातकी कोशिश करें कि बालकों के शरीर की ताकत आरोग्यता के द्वारा अधिक है ॥

[६] यह कान फरैंस शोक प्रगट करती है इस बातका कि अभीतक शादीओं गमी में व्यर्थव्यय करनेका प्रचार और इसही प्रकारकी और कुरीतियें दूर करनेका उपाय जितना होनाचाहिये था नहीं हुवा है और नइन बातो के प्रबन्ध महा मंत्री के पास प्रकाश करने के वास्ते भेजे गये अत एव यह कान फरैंस फिर भाईयों को ध्यान दिलाती है कि अगले वर्ष सर्व भाई और स्थानिक सभायें इस विषय में अत्यंत कोशिश करें ॥

[७] यह कान फरैंस सब भाईयों को इस बातका ध्यान दिलाती है कि विवाह और अन्य आनन्द के समय जो वेश्याका नाच कराया जाता है इसकी ठौर आनन्द और दिल बहलाने का कोई अन्य उत्तम उपाय नियत किया जावे और प्रत्येक स्थानकी दशाको विचार कर वहां के भाई और स्थानिक सभा इस विषय में जिस कार्य का प्रचार करें उस से महामंत्री को सूचित करें कि वहमंत्रीउसकोप्रकाशित करदेवें॥

[८] [अ] यह कान फरैंस सर्व भाईयोंको गत वर्ष के रेजो ल्यूशन नम्बर दस पर ध्यान दिलाती है अर्थात धर्म शास्त्रकी उन आज्ञाओं पर जिनसे कि लडकी के बदले रुपया लेना बरजा गया है और आसा करती है कि सर्व स्थानिक सभायें इस के दूर करने की अत्यंत कोशिश करेंगी और यदि कोई निर्धन पुरुष आप लडकीका विवाह न कर सक्ता होतो कान फरैंस उसकी सहायता करेगी ॥

[ब] यह कान फरैंस प्रेरना करती है कि ऐसे पुरुषोंका जिनकी स्त्री मरजावे और उनकी उमर चालीस वर्ष से अधिक हो विवाह जब होना चाहिये जब कि उनके कोई सन्तान नहीं और पचास बर्ष की उमरसे अधिक का विवाह कदाचित नहोना चाहिये ॥

[९] यह कान फरैंस उन सभाओं के साथ जो हिन्दुस्तान और अन्य देशों में मदिरा पान और नशीली बस्तुओं के

रोकने के वास्ते स्थापित हुई हैं अपनी सम्मति प्रगट करती है ॥

(१०) यह कानफरेंस इस बात की भी प्रेरणा करती है कि जो भाई धनाढ्य हैं वह अपने गरीब भाईयों की प्रति पालना और सहायता करना अपना मुख्य धर्म समझें और आगामी वर्ष में महा मंत्री को सूचित करें कि वह इस रेजोल्यूशन पर किस प्रकार प्रवर्ते ॥

(११) यह कान फरेंस इस बात का शोक प्रघट करती है कि अभी तक बहुत से स्थानों और फिरकों (नयों) में धर्म शास्त्र और काल विरुद्ध यह बात कायम है कि समन्दर पर सफर नहीं किया जावे और वह पुरुष जो विद्याध्ययन वा किसी और उत्तम कार्य के वास्ते समन्दर पार अन्य देशों को जाते हैं बिरादरी से खारिज किये जाते हैं ॥ और यदि बिरादरी में शामिल भी रहते हैं तो खुशी के साथ नहीं होते यद्यपि इस बात से कौमको बहुत हान पहुचती है अत एव यह कानफरेंस सब भाईयों का ध्यान दिलाती है कि जो पुरुष वास्ते विद्या प्राप्त या किसी और उत्तम कार्य के वा परोपकारों के वास्ते या वानिज्य या जाती ज्ञाति के कारण अन्य देस देशान्तर को जावें और वापिस आने पर अपनी कौम से अलहदगी स्वीकार न करें उनको अपने से अलहदा नहीं करना चाहिये बरण बहुत खुशी के साथ शामिल करना चाहियें ॥

[१२] यह कानफरेंस सर्व भाईयों से प्रेरणा करती है कि वह उन झगडों में शामिल नहों जो अन्य मतानुयाई वैश्यों में एक दूसरे के उत्सव या अन्य समय पर होजाते हैं और न ऐसे झगडे करने वालों से सम्मति प्रगट करेंगे ॥

(१३) यह कानफरेंस प्रेरणा करती है कि कानफरेंस के खर्च के वास्ते निम्न लिखत उपाय नियत किये जावें ॥ (१) एक ऐसा भंडार नियत किया जावे जिस के (ब्याज) सूदसे प्रति दिन का खर्च चलता रहै (२) स्थानिक सभायें अपनी आमदनी का दसवां भाग कानफरेंस को दिया करें ॥ आशा है कि सब भाई भंडार के नियत करने और स्थानिक सभायें दसवां हिस्सा देने में कोशिश करेंगी ॥

(१४) वैश्य बोर्डिंग हौस जो आगरे में है उस को कानफरेंस अपने सम्बंधित कर के उसका प्रबन्ध कार्याधिकारणी सभा के सुपुर्द करती है और इसकी अमदनी और खर्च का हिसाब कानफरेंस की कारवाई का एक हिस्सा समझा जावेगा ॥

(१५) यह कानफरेंस शोक प्रघट करती है कि सब भाई जाति हितेच्छु पत्रों की सहायता जितनी होनी चाहिये नहीं करते वह पत्र यह हैं अग्र वा-

ल उपकारक और जैन प्रभाकर अज मेर वैश्य हितकारी मेरठ वैश्य सुदशा प्रवर्तक और महेशरी पत्र हापुड़ जिला मेरठ और जैन हितोपदेशक देवबन्द जिला सहारन पुर ॥ कानफरैंस आशा करती है कि सब भाई केवल अपने२ फिरकों (वर्गों) के ही पत्र की सहाय ता नहीं करेंगे बरण सर्व पत्रों की स हायता करेंगे ॥

[१६] यह कानफरैंस स्थानिक सभाओं और सर्व भाईयों और उपदेशको को ध्यान दिलाती है कि वैश्य वरण के सब फिरकों [वर्गों] की वंशावली सही सही तैय्यार होनी चाहिये और यहभी प्रेरणा करती है कि प्रत्येक स्थान पर उपदेशक लोग उन बालकों की एकफहरिस्त तय्यारकरें जो विवाह योग्य हों और यह फहरिस्त यथा अवसर कौभी अख बारों में छपती रहें और उपदेशक लो ग जहां पर जावें वहा पर वैश्यों के सर्व फिरकों और उन के निकास का खोज लगा ते रहें ॥

(१७) सभा पति आदक का धन्य वाद दिया जावे ॥

मंदिरप्रतिष्ठा

नगर बाग पत जिला मेरठ की मंदिरप्र- ह की चिट्ठी यहां पर श्री मंदिर जी में आई है उससे मालूम हुवा कि प्रथम रथ जात्रा चैत्र कृष्ण तीज तारीख २ मार्च सन १८९१ की है और अंतिम जात्रा चैत कृष्ण सप्तमी की है ॥ उस चिट्ठी में यह भी लिखा है कि चौथ और पञ्चमी के दिन सभा होगी जिस में बडे२ महाशय और पण्डित जैन धर्म का उपदेश देंगे और जो भाई प्रश्न करके उत्तर चाहेगा उन की पूरी२ तसल्ली की जावेगी क्यूंकि यहां पर बड२ महाशय पण्डित पधारैंगे ॥ नगर बागपत रेल के स्टेशनों से इस प्रकार दूरी पर है मुराद नगर से २४ मील मेरठ से तीस मील सुनी पत जिला देहली से १६ मील देहलीसे ३२ मील शाहदरे से २० मील गाजिया बाद से २४ मील

पण्डित चुन्नी लाल साहब मुरादा बाद निवासी की चिट्ठी से मालूम हुवा कि मुन्नकृ जिला एटा में जोकि एटा शह- र से तीन कोस है फागुण वदी दसमी से चौदस तक उत्सव है ॥

सम्पादक

मंदिर प्रतिष्ठा और उत्सव मेला आदि का व्योरा अब तक हम को इधर उध- र से बडी ढूंड भाल कर के मिलता है अभी तक यह प्रचार नहीं हुवा है कि प्रतिष्ठा वा पूजा उत्सव करा ने वाले प्रथम हम को सूच्चित कर दिया करैं ताकि हम इस पत्र में प्रकाश कर दि- या करैं यदि प्रतिष्ठा कराने वाले यह चाहैं कि उनकी छपी हुई चिट्ठी ही सर्वस्थनों में जावे तो ऐसा भी हम कर

सक्ते हैं यह जैन गजट अनुमान बहुत से मंदिरो में जाता है प्रतिष्ठा कराने वालों को इतने स्थानों के नाम भी नहीं मालूम होंगे जितनी जगह यह पत्र जाता है इस कारण हम इस पत्र के साथ उन की चिट्ठी को सब जगह भेज सक्ते हैं और इस प्रकार मुफ्त में चिट्ठी सब जगह जा सक्ती है यदि पांचसौ जगह आध आने का टिकट लगा कर चिट्ठी भेजी जावे तो १५॥=, खर्च होते हैं परन्तु क्यूं यह रुपया डाक के टिकट में खर्च किया जावे इस कारण हमारी सब भाईयों से प्रार्थना है कि वह मेले की चिट्ठी हमारे पास भेज दिया करैं हम उनको मुफ्त बिना डाक महसूल लेने के सब जगह भेज दिया करैंगे और यदि आपही चिट्ठी भेजने और व्यर्थ रुपया खर्च करने की इच्छा हो तो कृपा कर के एक चिट्ठी हमारे पास सबसे प्रथम भेज दिया करै कि हम उसका आशय इस गजट में छाप कर अपने पाठकों को सूचित कर दिया करैं॥

हर्ष और विषाद के समाचार

स्वपरोपकारी वीतरागी मुनि वा उत्तम उदासीन श्रावक नगर नगर ग्राम ग्राम में विहार कर के उपदेश दिया करतेथे उस ही जमानेमें यह आर्य क्षेत्र जैनियोंसे परिपूर्ण था कालदोष से ज्यों२ उन महात्माओं के उपदेश का अभाव होता आया त्यों२ जैनियों की सर्व प्रकार से न्यून दशा होती आई है अब महासभा ने न्यून दशा का मुख्य कारण सदुपदेश का अभाव था उसका सद्भाव होने के वास्ते उपदेशक फंड तजवीज कर के उपदेशकों के द्वारा मोह और अज्ञान निद्रा में अचेत सोते हुये सहधर्मीयों को सचेत कराये और अहर्निशि जाग्रित करा रहे हैं ऐसे शुभ समाचारों के श्रवण करने में उत्पन्न हुआ हर्ष मेरे हृदय में नहीं समाया पुनः२ यही कहना पडता है कि महा सभा के रक्षकों को परमेश्वर कल्पान्तलों चिरंजीव रक्खे—परंन्तु अनंतर ही शोक और पश्चात्ताप यों करना पडा कि ऐसे उत्तमोत्तम कार्य के निर्वाहके वास्ते सिर्फ ८२४, रुपये ही अबतक क्यों जमा हुये प्रतिष्ठा रथ यात्रा आदि प्रभावना के कर्त्ता अभी जैनी भाई बहुत से चिरंजीव हैं कि जिन्होने अपने कर कमलो से लाखों हजारों रुपये सफलित किये हैं वे महाशय इस मुख्य और अत्युत्तम कार्य में थैली का मुह क्यों नहीं खोलते इस कार्य को किस तरह तुच्छ समझ कर इस२

वा बारह २ रुपये दे कर कृत कृत्य हो चुके उन परोपकारी सत्पुरुषों सें क्षमा मांग कर पुनः पुनः प्रार्थना की जाती है कि हे महात्माओं पुन्यवान् धन वानो यदि आप महाशयों के हृदय कमल में सच मुच धर्म नें प्रवेश किया है तो अन्य नामवरी के कामों में इस समय खर्च को बंद कर के तन मन धन सें सदुपदेश द्वारा जैनी भाईयों को कृपा कर के दुःख और कष्ट से बचा कर आनंदित करें ॥
हस्ता क्षर गौरी लाल वाकलीवाल साकिन सवाई जयपुर ॥

समय की कदर

ऐ भाईयों आप जानते हैं कि मनुष्य के वास्ते समय बहुत थोडा है और कार्य उसको करने को बहुत हैं जो समय व्यतीत होजाता है वह चाहे किसी उत्तम कार्य के सम्पूर्ण करने में व्यतीत हो चाहे वृथा आलस्य या प्रमाद में या किसी बुरे काम में व्यतीत हो परन्तु वह फिर नहीं आसक्ता है जो समय गया सो गया और यह मनुष्य की शक्ति में नहीं है कि यदि कोई काल व्यर्थ व्यतीत होगया तो उसकी जगह आगमी काल को बढा लेवे अर्थात अपनी आयु को बढा लेवे यह बात असम्भव है इस कारण हमको अपनी आयु का एक पल भी व्यर्थ नही खोना चाहिये एक कहावत है कि " गयावक्त फिर हाथ आता नहीं " बहुत सी एसी योनि हैं जिन में यह जीव कुछ उद्यम भले प्रकार नहीं कर सक्ता है और कुल आयु काल वृथाही व्यतीत करना पडता है जैसे बनस्पाते काय के जीवों को; परन्तु मनुष्य सब कुछ उद्यम करसक्ता है वरण उद्यम इस मनुष्य योनि में ही होसक्ता है मनु- का एक एक पल अन मोल है इस कारण मनुष्य को समय की अधिक संभाल रखनी चाहिये ॥ यह वात केवल परमार्थ के ही वास्ते नहीं है वरण संसारीक कार्यों की सिद्धि में इस की आवश्यक्ता है और समय का व्यर्थ गँवाद्ने से संसारीक कार्यों में भी बहुत बडी हानि होती है ॥ मनुष्य को संसारीक सर्व कार्योंका उद्यम अपने आप करना पडता है जैसे खाना पीना कपडा मकान आदिक का; बनस्पती काय के जीव अपने खाने काभी उद्यम नहीं करसक्ते पशु आदिक जीवों के अहारके वास्ते घास स्वयमेव उगाहुवा मिलता है वस्त्र पशुओं को आवश्यकही नहींक्योंकि उनके बदनपर बाल होते हैं परन्तु मनुष्य को बहुत कुछ करना होता है इस कारण इसका एकपल भी व्यर्थ जाने से इसकी बहुत हानी है हम यह बात देखते हैं कि हमारे बहुत

से भाई अपना बहुतसा काल आलस्य में पडे रहने में या ताश गंजफा चौसर शतरंज आदि खेल खेलने में या वृथा बात चीत करने में जिस में बहुधा कर के बात चीत करनेका विषय लोगों की किस्से कहानी बयान करने और उनके दोष वरनन करनेका होता है व्यतीत करदेते हैं ऐसे मनुष्यों से यदि किसी उत्तम कार्य के करने के वास्तैं कहा जाता है तो तुरन्त यह जवाब मिलता है कि क्या करैं हम तो इस काम को बहुत चाह से करना चाहते हैं और बहुत दिनोंसे हमारी इच्छा है परन्तु हम लाचार हैं हम को कोई समय ही नही मिलाता है बेशक यदि आलस्य और प्रमाद में पडा रहना तथा गंजफा आदिक खेल खेलना वा हंसी ठट्टा और दूसरों के किस्से कहानी गाना आवश्यकीय और मुख्य कार्य हैं तब तो निस्संदेह अन्य कार्यों के वास्ते समय कैसे मिल सक्ताहै और यदि यह कार्य वृथा हैं तो उत्तम कार्यों के वास्ते बहुत समय मिल सक्ता है ॥ यद्यपि इस प्रकार समय व्यर्थ खोदेने से संसारीक कार्यों में भी बहुत हानी होती है परन्तु इस जीव का संसार से अधिक मोह होने के कारण संसारीक कार्य तो जिस तिस प्रकार अपने ऊपर कष्ट सहकर वा और रूप पूर्ण कर ही लेताहै परन्तु इस प्रकार काल व्यर्थ व्यतीत होने से परमार्थिक कार्य बिलकुल बन्द होजाते हैं और नहीं होते हैं क्यो कि उन से पूर्ण रुची नहीं हुई हैं और बहुधा हमने परमार्थिक कामों के ही वास्ते यह कहते हुवे सुना है कि हम को समय नही मिलता इस कारण नही करसके हैं ॥ और मेरी समझ में धार्मिक कामो से हटने के वास्ते एक यहही बहाना रहगया है कि समय नही मिलता है ॥ परन्तु यदि सोचिये तो यह बहाना बिलकुल झूंटा है क्योंकि यदि कोई मनुष्य दूकान करता हो और उसको यह कहाजावे कि तुमको एक ग्राम भी बकसीस किया जाता है परन्तु तुम दूकान करते होतो ग्रामका बन्दोबस्त कैसे कर सकोगेतो वह उत्तर देगा कि नहीं दूकान के कामसे तो अलग मुझको बहुत समय खाली मिलता है मैं जमीदारेके काम को खूब जानताहूं मैं बहुत अच्छा इन्तजाम कर लूंगा मुझको यह ग्राम अवश्य दियाजावे इसही प्रकार संसारीक लाभके काम जितने कहे जावेंगे सबके वास्ते वह करने को तैयार होगा और अवश्य वह उन सब कामों को भले प्रकार कर भी लेगा और यह नहीं कहेगा कि समय नहीं है परन्तु नहीं मालूम धार्मिक काम का नाम लेते ही समय कहां भाग जाता है मेरी सब भाइयों से सविनय प्रार्थना है कि काल को किसी प्रकार भी व्यर्थ नही

खोना चाहिये मनुष्य जन्म की एकर पल अनमोल है इस कारण संसारीक आवश्यक कार्य कार्यों से जितना काल बचे वह धर्म में व्यतीत करना चाहिये मेरी समझ में यदि हर एक पुरुष अपने अपने प्रबन्धानुकूल अपन प्रत्येक का कार्य का समय नियत कर लेवें और इस ही नियमानुसार प्रवर्तें तो कभी समय वृथा व्यतीत न हो और किसी कार्य में हानि न आवे अंगरेज लोग आज कल इस ही प्रकार नियमानुसार प्रवर्तते हैं और इसही कारण हम लोगों से कई गुना अधिक काम कर लेते है ॥

एकउपाय

कृपा पात्र बाबू सूर्यभानुजी साहब जैजिनेंद्र; मैं आपको अत्यंत धन्य वाद देता हूं कि आपने अपनी कोशिश से जैन हितोपदेशक पत्रके द्वारा उपदेशक भंडार नियत किया और उस का कार्य प्रारंभ किया और बहुत तुच्छ मूल्य पर जैनगजट साप्ताहिक पत्र हिन्दी में जारी किया और आगे को जैन महा विद्यालय के नियत होने से जैन धर्मोन्नति की अनेका अनेक प्रकार कोशिश करते हैं पर मेश्वर आपको चिरंजीव रक्खे जैन धर्मोन्नति के उपायके वास्ते कुछ मैं भी लिख ताहूं कृपा करके पत्र में प्रकाश करदेवें इस समय हम लोगों को धर्मोन्नति में यह कठिनाई होरही है कि पाठक और उपदेशक नहीं मिलते हैं और बिना पाठक और उपदेशकों के उन्नति होनी और धर्म का प्रचार होना सम्भव नहीं है मेरी समझ में इस विषय में यह उपाय सुगम मालूम होता है कि अब तक जो रुपया जैन महा विद्यालय का जमा है उस के सूद [ब्याज] से एक पाठशाला नियत की जावे और उस में ऐसे विद्यार्थी पढाये जावें जो आगे को पाठक और उपदेशकका काम देवें इस समय जहां तक मुझको मालूम है जैन कालिजका रुपया अजमेरमेंलाला छोगालाल के पास और सहारनपुर में लाला उग्रसैन के पास और नकुडजिला सहारनपुर में पंचान के पास जमा है इस वास्ते इन भाईयों को इस ओर ध्यान देना चाहिये इस समय इन तीनों जगह महा विद्यालय का इतना रुपया जमा है कि जिसके सूद [ब्याज] से बडी आसानी से एक पाठशाला जारि होसक्ती है और पाठक और उ-

पदेशक तैय्यार होसक्ते हैं ॥

शोक शोक शोक

सुनपत जिला देहली से लाला संगमलाल मुनीब लाला बनारसीदास लिखते हैं कि लाला मुरारीलाल जो लाला बनारसीदास के बडे पुत्रथे उन को मुसम्मात दाखो उनकी नानी ने गोद ले लियाथा जो कुताने तहसील बागपत जिला मेरठ मैं रहती थी लाला मुरारीलाल बडे सज्जन और बुद्धी मान थे और जैन धर्मोन्नाति मैं सदैव उद्यम वान रहते थे उनका आसोज सुदी ९ को देहली मैं देहान्त होगया देहली में इलाज के वास्ते गये थे ॥ देहली जाने से पहले उन्होंने एक पाठशालाभी कोताने के मंदिरजी मैं बिठाई थी वह पाठशाला अब तक जारी है और १२ लडके पढते हैं लाला साहब ने अपने मरने के समय ५००, मंदिरजी कोताने मैं और १००, मंदिरजी सोनिपत मैं दिये ॥ उनके पर लोक हुए पीछे उनकी माताका भी देहान्त होगया उनकी माताने भी मरने के समय ५००, कोताने के मंदिरजी मैं और १००, सोनीपत और १००, बडौत १००, स्यामली १००, मरूरपुर ५०, बागपत ५०, सीनोली ५०, छपरोली के मंदिरजी मैं दिये ॥

लाला संगमलाल लिखते हैं कि हमको शोक प्राप्त हुवा गजट नम्बर चार मैं यह बात पढ कर कि पद्मावती पुरवार भाईयों मैं अब तक विवाह में आतिशबाजी जलानेका प्रचार थाजिस्में बहुत बडी हिन्सा होती है वह लिखते हैं कि सोनीपत मैं जैन प्रचारणी सभा के उपदेश से तैउनवों मैं भी आतिशबाजी बन्द होगई है और जैनियों बागबाडी भी बन्द होगई है और अन्य बहुत कुरीतियां बन्द होगई हैं ॥

॥ विद्या पठन का उपयोग ॥

पाठ शाला मैं जाने और विद्या के सीखने से मनुष्य के बडे २ और शुभ मनोरथ सिद्ध और सुफल होते हैं। बहुधा बुद्धिहीन और दुष्ट माता पिता अपने बालकों को पाठशाला मैं भेजनेकी एवज उन्हैं उनकी इच्छा के अनुसार खेलने कूदने की अनुमति देतेहैं और तब वे दुष्ट और बुरे लड-

कों की संगती में पडके जूवा खेलना और चोरी करना सीखते हैं। पर वे लडके जो विद्या सीखने के लिये प्रति दिन पाठ शाला जाया करते हैं ऐसे दुष्ट संगियों और संगति से बचे रह के विद्यालय में स्वच्छताके साथ रहने और परिश्रमी होने को सिखाये जातेहैं। पढने ही के द्वारा हमें बहुतेरी ऐसी वस्तुओं और बातोंका ज्ञान जिनको हम भली भांति नहीं समझ सक्ते होसक्ता है। वे लोग जो पुस्तकोंका व्यवसाय नहीं कर सक्ते उन वस्तुओं के विषय जो उनके चारों ओर हैं बहुत थोडा ज्ञान रखते हैं बेचारे उस देशके विषय जिस में कि वे रहते हैं कुछभी नहीं वता सक्ते और न कुछ उसके विषय इतिहास पूर्वक निरूपण करसक्ते हैं। पर पुस्तकोंके द्वारा हम जगतके सारे देशों का ज्ञान प्राप्त करसक्ते हैं और बहुतसी और वस्तुओं के विषय तथा सूर्य चंद्रमा और तारागणों के विषयमैं भी जान सक्तेहैं बहुधा मूर्ख और बुद्धिहीन लोगोंको अपनी जीवकाके लिये मजूरों की नाई कठिन सेवा और परिश्रम करने पडताहै परन्तु वे जो कि विद्वान और ज्ञानी हैं विना ऐसी कठिन सेवा और परिश्रम के कभी २ बडे२ मासिक पाते और बहुत सा रुपया कमाते हैं। विद्या के प्राप्त करने और पढना सीखनेसे हमें एक सबसे उत्तम और श्रेष्ट लाभ यह होता है कि हम लोग धर्म और अपनी मुक्ति मार्ग के विषय अधिक करके जान सक्ते हैं और इसी रीतिसे हम उस सच्चे ज्ञानको जो सोने और बहु मूल्य रत्नों और मोतियोंसे अति उत्तम है प्राप्त कर सक्तेहैं। लडकों के नाई लडकियोंको भी शिक्षा देनी चाहिये। यह बात जान रक्खो कि पुरुषों के आत्मा के समान स्त्रियोंका भी आत्माहै इस कारण माताओं को चाहिये कि वे

आप सीखें जिससे वे अपने बालकों को विद्यासिखाने का ज्ञान प्राप्त कर सकें ॥

अगुवानी पुरुष

—o—

इस में कुछ संदेह नही है कि की जाति की उन्नति और रक्षाका काम और कुरीति मेट कर शुभरूप प्रवर्त्तानेका काम बहुत ही कठिन है इसही कारण बहुधा परोप कारी सज्जन महाशय जिन के चित्त में उन्नति करनेका विचार आता है वह इस काम को कठिन समझ कर चुप होजाते हैं और कुछ उपाय नहीं करते हैं परन्तु हम उन सज्जन महाशयों की सेवा में सविनय प्रार्थना करते हैं कि हे भाईयों यद्यपि किसी काम के करने वाले बहुत होते हैं परन्तु अगु वानी एकही होताहै अर्थात किसी कार्य को प्रारंभ करने वाला एकही हुवा करता है फिर उसमें सहायता करने वाले बहुत होजाया करतेहैं संसार के जिते कार्य हैं वह इसही प्रकार होते हैं यदि लाखों मनुष्य भी किसी स्थान के ऊपर बैठे हुवे हों और उनमें से प्रत्येक मनुष्य यह विचार करैं कि मैं पहले क्यूं बोलूं जब कोई दूसरा मनुष्य मुझसे बोलेगा तो बोलूंगा तो यदि इस प्रकार वह एक वर्ष पर्यन्त भी बैठे रहैंगे तौ भी नहीं बोलसकैंगे जब तक कि एक पुरुष आगवानी बनकर नहीं बोलेगा ॥ इस कारण से हम जाति की रक्षा करने वालो हम धर्म से अनुराग रखने वालो पहले अगवानी बनो और जितना अपने से बनै प्रयत्न करो अवश्य कोई न कोई तुम्हारा साथी भी न होवे तौभी तुम्हारी कोशिश बर्बाद नही जावेगी कुछ न कुछ लाभ तुम्हारी कोशिशमें होवे गाही और यदि कार्य किञ्चिन्मात्र भी सिद्धि न होवे तौभी तुम शुभ कार्य के वास्ते प्रयत्न करतेहो तुमको तो पुन्य का लाभ अवश्य होगा इस कारण क्यूं पहले सेही घबराहट इस बातकी की जावे कि कार्य की सिद्धी नहीं होगी उपकारी पुरुषों को उपकारका काम अवश्य करते रहना चाहिये वह डर कर अपना स्वभाव क्यूं छोड़ैं ॥

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्री ॥

जैन गजट

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को लेना चाहिये ॥

मूल्य पेशगी वर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीनरुपया है

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेज़ी महीने की १—८—१६—२४ ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष ता० ८ फरवरी सन १८९६ अङ्क १

सत्यबोलना

पशु आपसमें वार्तालाप नहीं करसक्ते हैं यद्यपि उनके वचन शक्ती हैं क्योंकि उनके शब्दो चारण नहीं है उनको इतनी बुद्धि नहीं है जो वह परस्पर सम्भाषण के वास्ते शब्द नियत करसकें परन्तु मनुष्य में पशु पक्षी से अधिक यह बात है कि वह सम्भाषण आपस में करता है और अपने मनके सर्व प्रकार के विचार दूसरे पर प्रगट करसक्ता है इसही कारण पशु पक्षी आदि किसी प्रकार की तरक्की नहीं करसक्ते हैं परन्तु मनुष्य नित्य नये खेल बनाते हैं और एकके मनकी बात दूसरे पर प्रघट होने के कारण संसार का सर्व प्रकारका व्यवहार करते हैं और परमार्थ के वास्ते नाना प्रकार के उपदेश और शिक्षा पाते हैं ॥ यदि मनुष्य में परस्पर सम्भाषण न होता तो मेरी समझ में यह भी पशु ही होता और पशुवतही विचारता न

मकान बना सक्ता न वस्त्र बना सक्ता न खेतीबो सक्ता न बाजार लगकर अनेकानेक वस्तु बिका करतीं और इत्यादिक कोई कार्य न होसक्ता क्योंकि इनमें से कोई कार्य एक मनुष्य विना दूसरे की सहायता के नहीं करसक्ता है और सहायता विना परस्पर सम्भाषण के कैसे मिल सक्ती है ॥ बुद्धिमान पुरुषों का यह वाक्य है कि विना विद्या के मनुष्य पशु के समान है और यह विद्या कैसे प्राप्त होसक्ती है यदि गुरु और शिष्य परस्पर वार्तालाप न करसकें; इसही प्रकार बिन बोलने और सुने के धर्मोपदेशकी प्राप्ति तो असम्भव ही है ॥

इस बात में यह बात विशेष विचारणीय है कि इत्यादिक कार्य परस्पर सम्भाषण से क्यों सिद्ध होते हैं, विचार करने से यह ज्ञात होता है कि वचन के द्वारा एक मनुष्य अपनी इच्छा अपना अभिप्राय अपना विचार और राय अर्थात जो कुछ मनमें होता है वह दूसरे पर प्रघट कर देता है परन्तु सोचने की यह बात है कि यदि इस वचन के द्वारा जिससे हमारे सर्व संसारिक कार्य सिद्ध होते हैं 'वचन बोलने वाले मनुष्यका अभिप्राय न मालूम हो किन्तु उसके विपरीत मालूम होतो भी इत्यादिक कार्य सिद्ध होंगे वा नहीं फिर कोई कार्य कैसे सिद्ध हो सक्ता है वरण विपरीत ही हो जावेंगे और नष्ट होजावेंगे ॥

आजकल नहीं मालूम क्यूं कुछ ऐसा रिवाज हो रहा है कि बहुधा मनुष्य असत्य बोलते हैं अर्थात बात कुछ होती है और वचन से उसके विपरीत उच्चारण करते हैं और विपरीत ही निश्चय कराया चाहते हैं ॥ परन्तु यह बात ऊपर सिद्ध होचुकी है कि जैसा कि परस्पर सम्भाषण के कारण संसारीक कार्य चलरहे हैं ऐसाही असत्य सम्भाषणके कारण सर्व कार्य नष्ट होजाते हैं ॥ इस वास्ते जो कोई झूट बोलता है वह संसार के कार्यों के नष्ट करने वाला और बहुत हानि पहुंचाने वाला है ॥ नहीं केवल यह ही बात नहीं है वरण वह पुरुष पशु से भी अधिक मूर्ख है क्यूंकि पशु तो परस्पर सम्भाषण की शक्ति न होने के कारण लाचार हैं और असत्य बोलने वाला मनुष्य इस शक्ति के प्राप्त

होने परभी उससे उलटा काम लेता है इससे तो अच्छा यहही थाकि उसके वचन शक्ति न होती इतिहासों और पुराणों से यह बात स्पष्ट ज्ञान होती है कि जिस देशमें जिस मुल्कमें जिस कुटंबमें जिस नगरमें असत्य बोलनेका अधिक प्रचार होजाता है वह देश वह नगर वह कुटंब वह घर बिलकुल बरबाद होजाना है नष्ट होजाता है क्यों कि असत्य बोलनेके कारण पहिले तो विपरीत ज्ञान होने लगता है जिससे बहुत हानि होती है और जब यह मालूम होजाता है कि अमुक पुरुष असत्य बोलता है तो उसकी बातका विश्वास जाता रहता है इस कारण उसका बोलना न बोलना बराबर होता है अर्थात वह पशु समान होता है वरण पशु से भी अधिक होता है ॥ इसही प्रकार जब किसी नगरमे असत्य बोलनेका प्रचार होजावे तो एक दूसरेका भरोसा और विश्वास उठ जाने के कारण अवश्य व्यवहार में बहुत हानि पहुंचेगी ॥ हम लोग ईर्षा भाव से देखते हैं कि अंगरेज लोगोंका व्यवहार आज कल बहुत बढ़ता जाता है हजारों प्रकार के कारखाने उनके जारी है नाना प्रकारकी वस्तु तैयार होती हैं और करोडोंका व्योपार होता है और हम हिंदुस्तानी छोटे छोटे कार्य भी नहीं करसक्ते हैं ॥ परन्तु हे भाईयो हमको ईर्षा नहीं करनी चाहिये क्योंकि इसमें हमीराही कसूर है अंगरेज लोग कम्पनी बनाकर बहुत से इकट्ठे होकर एक कार्य को करते हैं और इस प्रकार थोडा थोडा धन लगाने से भी बहुत धन होजाता है परन्तु हम हिन्दुस्तानियों को एक दूसरेके ऊपर विश्वासही नहीं है दूसरे के वचनों पर निश्चय ही नहीं है क्योंकि असत्य बोलनेका रिवाज होरहा है इस कारण इकट्ठे होकर और मिलकर कोई कार्य नहीं करसक्ते हैं ॥ और यदि हम अकेले कोई काम करना चाहै तो उस में भी बहुत मुशकिल मालूम होती है क्यूंकि नौकर और गुमाशतों के बिन व्योपार का काम चल नहीं सक्ता है और असत्य के प्रचार के कारण हम विस्वास और भरोसा किसी पर कर नहीं सक्ते हैं ॥

हाय हाय कैसे आश्चर्य की बात है कि पशु पक्षी से अधिक

मनुष्य को एक यह शक्ती मिली थी कि सबसे सन्भाषण करसके और नाना प्रकार के कार्य व्यवहार करसकें परन्तु इसने वह भी खोदी जिससे सब कार्यों में हानि होगई ॥ मेरी समझ में यदि इस देश में सत्यका प्रचार होजावे तो यह देश सर्व पृथ्वी के देशों से भी सर्वोपर होजावे ॥ जाहां असत्यका प्रचार हे वहां कैसे किसी प्रकारका कार्य हो ॥ असत्य के बराबर कोई और वस्तु संसार में हानि कारक नहीं है ॥

यह असत्य केवल संसारकार्यों में ही हानि नहीं पहुंचाता है वरन धर्म को भी नष्ट करता है ॥ मनुष्य असत्य उसही समय बोलेगा जब कि इसको अधिक मोह होगा क्यूंकि यदि अधिक मोह न होतो इसको असत्य बोलनेकी क्या आवश्यकता है असत्य वादीका मन कभी साफ नहीं होसक्ता है असत्य वादी बेशर्म निर्लज्ज होता है असत्य वादी अनेकानेक प्रकार के पाप करता है और निडर होता है क्यूंकि उसके मन में यह बात होती है कि मैं असत्य बोल कर अपने सब खोट छिपा लूंगा हमारी समझ में तो जो मनुष्य असत्य बोलता है वह सर्व प्रकार के पाप करता है और यद्यपि वह धर्म के बाह्य अंगोंमें भी प्रवर्तताहै परउनसेकुछपुन्य प्राप्ति उसको नहीं होती है क्योंकि उसका हृदय तो कपट से भरा हुवा है वहतो सारे जगत को असत्य बोल कर ठगना चाहता है वह कैसे कोई धर्म कार्य करसक्ता है यह बात बिलकुल ठीक है कि यदि कोई पुरुष धर्मानुरागी होना चाहै और पाप से बचना चाहे तो सबसे पहिले उसको असत्यका त्याग करना चाहिये और केवल एक असत्य के त्याग में सर्व पाप उसके छूट जावेंगे क्यूंकि जो कुछ वह करेगा उसको छिपा नहीं सकेगा इस कारण अनुचित और निंद्य कार्य कोई न कर सकेगा ॥ सत्य वादीका हृदय शांत होता है उसके परिणामभी शुभ ही होते हैं और मन शुद्ध होता जाता है सत्य वादीका मोह कम होता जाता है और सब संसार उस के साथ मीत करने लगता है और उसका संसार व्यवहार भी बहुत उन्नति पर हो जाता है ॥

यद्यपि आज कल असत्यका प्रचार अधिक होने के कारण पहिले पहिले सत्य वादी को किंचित

मात्र सांसारीक कार्यों में हानि दिखाई देती है परन्तु यदि वह दृढ रहै तो थोडे ही दिनों में जब उसका विश्वास सबको हो जाता है तो उसको अधिक लाभ होने लगता है और फिर उसके किसी व्यवहार में हानि नहीं आसक्ती है वरण ज्यादा ज्यादा ही होता रहता है इसका रण उसका चित्त व्याकुल नहीं होता है ॥ इस कारण हे भाईयों यह सत्य रत्न जिस के कारण हम मनुष्य गिने जाते हैं और पशु आंसे भिन्न समझे जाते हैं यह सत्य रत्न जिस बिन हमारा सर्व संसारका कार्य नष्ट होता है और असत्य हानि आरही है यह सत्य रत्न जिस के कारण हम अनेकानेक पापों से बच कर पुन्य उपार्जन करसक्ते हैं इस रत्नको व्यर्थ नहीं खोना चाहिये यदि हम सत्य न बोले तो हम से पशु अच्छे हैं ॥

प्रालब्ध

इस देशमें प्रालब्ध के मान्ने के कारण से बहुत सी मूर्खता और दुष्टता के कर्म प्रचलित हैं जिन के विषय लोग सर्वथा यह कहते हैं कि जो कुछ कि हमारे ललाट में लिखा है सो अवश्य होगा हमें इसके रोकने और इसके विपरीत करने की कुछ भी शक्ति नहीं है ॥ अब उपमारूपी मानलो कि एक आलसी मनुष्य किसी झूंपडी में रहता और मोटे झोंटे पर अपना जीवन विताता है ॥ ऐसी दशामे जब वह रोगी होता तो आपको दोष लगाने की संनी वह कहता है कि यह मेरी कर्म्म रेखाका भाग है फिर एक मा जो अपने बच्चों से अचेत रहती और उनको उनके बुरे संगियों के साथ खेलने और संगत करने की अनु मति देती है ॥ और जब वह चोर और जुआरी निकल जाते तो अपने को यह कह कर शांति देती और अपने कलेजे को ठंडा करती है कि मैं क्या करूं उनके भाग में यही बदाथा हां कर्म्म की बात तो मेटे नहीं मिटती ॥ ऐसे मनुष्य जो प्रालब्ध को मानतेहैं वह अपनी ही बुरी चालका बुरा फल भोगते हैं ॥ इस कारण यह कहना और इस बात का माननाकि हमको पाप आवश्य करके करना चाहिये क्योंकि भगवान ने हमारे कपाल में योंही लखदिया है सर्वथा झूंठ और मिथ्या है ॥ यह सत्य कर-

के जानो कि भगवान ने ऐसी कोई विधि हमारे ललाटमें नहीं लिखदी है ॥ और इसके विरुद्ध अपने बुरे कर्मों को भगवान पर थोपना कैसी बुरी और दुष्टता की बात है ॥ और ऐसा दोषा च्छादन करने और अपने को निर्दोष ठहरा ने से हमारा दोष और दंड और भी अधिक ब-ढता जाता है ॥ क्योंकि ज-ब हम पाप करते हैं तो उसके करने में केवल हमारा ही दोष है ॥ भगवान तो केवल यही चाहताहैकि हम वहीजो ठीक और भला है करें पर हम भलाई की अपेक्षा बुराई करने को अधिक प्यार करते हैं ॥ और अब हम इसी बातके दृढ करनेके लियेएक छोटासा बयान लिखते हैं ॥कह-ते हैं कि कुछ यात्रियोंने अपनी यात्रा से थकके सांझ को एक जंगल में डेरा किया ॥ उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने ऊंट को खोल के उसको पर मेश्वर की इच्छा पर छोड दूंगा ॥ उस के संगियों में से एकने उस उ-त्तर देके कहा कि हे मित्र! अप-ना ऊंट बांध दो और तब उस-को ईश्वरकी इच्छा पर छोड दो। यह बात तो बहुत अच्छी और सर्वथा मानने और ग्रहण करने योग्यथी ॥ इस इतिहास के द्वा-रा हम यह सीखते हैं कि हम को अपने कर्तव्य कर्म से अचे-त होना और आंसर बनके यह कहना कि भगवान आप सबकु छ बना लेगा न चाहिये ॥ पर इसके विपरीत हमें अपने यथो चित कर्मों को यत्न और परि-श्रम के साथ करना और परमे-श्वर की कृपा और अनु ग्रह के खोजी रहना चाहिये ॥

मेला

वीर पुर ग्राम जिला एटा में मेला दिलसुखराय पद्मावती पुरवारका मिती १० से १४ फागुण वदी तकका है ॥

हमारे देशकी विवाहिकरीति ।

इस देशमें कितनी ऐसी विवाहिक रीति प्रचलित हैं जो अत्यन्त ही बुरी और अनुचित हैं। और उनमें से हम कई एक का यहां वर्णन करते हैं। यहतो प्रसिद्ध है कि इस देशके बहुधा लोग अपने ल-डकों का विवाह उनके बालेहीपनमें करदेते हैं और कभी कभी ऐसा भी होता है कि लडकोंकी वरक्षा उनके दूध-छुडाने से आगेही होजाती है। और

इस वरक्षा के पश्चात और विवाह के पाहिले यदि लड़का मरजाये तो हिन्दू लोग उसबापुरी लड़की के संग विधवा का सा व्यवहार करते हैं।

अब यह भी प्रगट है कि लड़के अपने आल्पवय के कारण इस बात में विवेक नहीं करसक्ते हैं कि उन्हे किसके और कैसे के संग विवाह करना चाहिये इसी लिये उनके माता पिता उनके विवाह का ठीक ठाक करते हैं। और इस ठीक ठाक के पश्चात बहुधा ऐसा भी होता है किलड़का और लड़की आपुस में एक दुसरे से जबतक कि उनका गौना न होजाये सर्वथा आज्ञान रहते हैं इसी लिये ऐसों के मध्य विवाहके पश्चात सदा लड़ाई टंटा बानारहता है। पर इसके विरुद्ध उनदेशों के लोगो के मध्य जहां के निवासी ज्ञानवान होते हैं विवाहकी यही रीति हैं कि वह अपने लड़कों का विवाह जबतक कि वह सियाने नहो जावें और आपुस की चिन्ह पहिचान केद्वारा लड़का और लड़की एक दुसरे को जान नलेवें और जबतक कि उन्हें इसबातका दृढ़ विश्वास नहो जाये कि यह विवाह सुफल होगा वा नहीं नहीं करते॥

ऐसी लड़कियों का विवाह जिनकी अवस्था केवल आठ नो वर्ष की हो करदेना कई एक बातो में आनन्द का नही परदुख का कारण होताहै।क्यों कि ऐसेवय में विवाह करना उनके शरीर को दुर्बल करदेता है और उनके लड़के भी सदा रोगी बने रहते हैं और फिर क्योंकर एक महतारी जो आपही बालकहोअपने बाल बच्चों को भली रीति से पाल पोस सकी है। इसलिये हमारी सम्मति यह है कि लड़कियों का विवाह जबतक कि उनका वयदसयाबारह वर्ष कानहो नकराना चाहिये। औरयदि उनका विवाह दोएक वर्ष इससे भी रह कर कियाजाये तो और भी भाला है॥ इसके उपरांत एक और भी बुराई है जो इस देश के विवाहों में देखी जाती हैं अर्थात॥ धनका अधिक उठान। क्यों कि इसमें बर्षों की कमाई क्षण मात्र में उड़जाती है। और इस बुरीरीती के पालन करने के निमत्त कंगालें लोगों को भीक्षण लेकर विवाह करने पड़ता है जिसका भरना पीछेसे उनको बहुत अखरता है। और इसी अधीक उठान के कारण से अगले समयों में कितने राजपूत अपनी कन्या ओं को घात करडलते। विवाह के समय महमानों कि महमानीतो अच्छी बात है पर निरर्थ उठान करना सर्वथा अनुचित है॥ हमारे देश में विवाह के समय बुरे गीतों का गान भी प्रचलित है। पर जाना चाहिये कि जैसा गाली का देना और जुन और समयों में अनुचित समझा जाता है वैसाही विवाह के समय

में भी समझना चाहिये क्योंकि किस लिये हम अपने विवा होत्सव समय को भगवान की आज्ञाके भङ्ग करने के लिये जो हमारे अनन्द का मूल है मुख्य करके ठहरा वें ॥

रत्नमाला

१ रत्न— जिसनें विद्या पढी और आ रचण नहीं किया वह उस मनुष्य की तुल्य है जिसन हलतो जोता और बीज नही बोया

२ रत्न— जो कोई खोटों की संगति में बैठता है भलाई नही देखता

३ रत्न- जो कोई शिक्षा को नहीं सुनना है निन्दा सुन्ने का अभिलाषी है

४ रत्न — गुण हीन निकृष्ट पुरुष जब अपने गुणोंसे किसी पर प्रबल नहीं होता तब अपनी दुष्टता के कारण अवगण ग्राही होताहैं अर्थत गुण हीन मनुष्य गुण वान को नही देखसक्ता है ॥

५ रत्न— जो बुद्धिमान मूर्ख में लड़ता है उसको चाहिये कि प्रतिष्ठा की आशा नहीरखने

६ रत्न— थोडा थोडा मिल कर बहुत होजाता है एक२ बून्द पानी से एक नदी बन जातीहै ॥

७ रत्न— संसार के बदले धर्म को मत बेच

८ रत्न — मिथ्या भाषण उस चोटके सदृश है जिसका चिन्ह शेष रहता है ॥ यद्यपि घाव भर जाता है तोभी चिन्ह शेष रहता है ॥

दोहा

होस्वभावसचकहनका जिसमनुष्यकेमाहि।तोवासेकछु दोषभी होतेदखेनांहि ॥
मिथ्याभाषनकोविशय भयाप्रगटनग्जोय।सबोवाणीभीकेहि निश्चयकरनकोय

९ रत्न— वह भिक्षुक जिसका परलोक अच्छा है उस राजा से जिस का परलोक बिगड गया श्रेष्ठहै

॥ दोहा ॥

जिस दुख पीछे होय सुख अंतउत्तम हैसोय। उससुख सेपश्चात जिस म· महाघोर दुख होय ॥

१० रत्न — धन, जीवन के सुखके लिये है नकि जीवन द्रव्यके संचय हेत ॥

११ रत्न —जीस ने मनुष्य जन्म पाकरपरउपकार नकिया उसका जीना नजीनाबराबरहै

१२ रत्न— वह मनुष्य नहीं है जो बिना हिता हित बिचारे दूसरे के देखा देखी काम करता है पशु उस मनुष्य से अच्छा है ॥ शेष अग्रे

बरक्षा

जानना चाहिये कि विवाह का बन्ध जिसमें कि हम सम्पर्क हो·

सक्ते हैं इस संसार में सबसे भारी संयुक्ति संयोग है ॥ यही वह सबसे समीपी सन्धि है जिसको कि हमें अपने जीवन भर निबा हना पडता है और इसी संबन्धके द्वारा या तो हमको जीवन भरका सुख प्राप्त होसक्ता है या नहीं तो इसके विपरीत हमारे जीवन के सारे दिन हमारे लिये एक भारी बोझ के समान हो जाते हैं ॥ हिन्दू लोग विवाह के दृढ करने में विषेश करके जाति और धनकी ओर अधिक झुकते हैं ॥ और इसी कारण से कभी कभी सुन्दर और तरुण लडकियोंका विवाह बूढे धनवान लोगों के संग कर दिया जाता है और बहुधा ऐसा भी होता है कि जाती के कारण से एक दुष्ट और युवा मनुष्य एक भोली कन्याका पति ठहराया जाता है ऐसे विवाह क्या ही और कैसे अनुचित हैं ॥

विवाह के ठहराने में वर और कन्या दोनों के सुख और आनन्द से रहनेका बडा चेत रखना चाहिये ॥ इस लिये ऐसे लोगोंका जो आपुस में बहुत ही बेजोड हों जोड बांधना न चाहिये और ऐसी स्त्रीको जो बुद्धिमान और पढी लिखी हो किसी मूर्ख के साथ विवाह करना उचित नहीं है ॥ पर किसी ऐसे को जो उसी के समान हो ढूंढना चाहिये ॥ और केवल यही नहीं पर विवाह में दोनों ओर की इच्छा और प्रसन्नता को देख लेना अवश्य है ॥ और लडकोंका विवाह उनके बालावस्था में न किया चाहिये ॥ पर लडके और लडकी को अपने सियाने और युवा वस्था में जब कि उनको भले और बुरे के जान्नेका ज्ञान और मुख्य करके इस बात की पहिचान हो कि हमारा यह जोड सुफल होगा कि नहीं करना चाहिये और इस काम को स्वतंत्र और अकेले और अपनी इच्छा पर नहीं पर अपने माता पिता की इच्छा और उनकी सम्मति और बुद्धि पर करना और छोडना उचित है ॥

शोक—शोक—शोक

बडे शोक और खेद की बात है कि लाला मुबाशीलालजी करहल नगर निवासी इस दुनिया से प्रस्थान कर गये यह महाशय बडे विद्वान और जैन धर्मोन्नतिके इच्छुकथे और जैन

सभा करहल जिला मैंन पूरीका मंत्रीत्वभी इन्हींसे सुशोभितथा॥

चिट्ठीका सारांश

श्रीयुत मान्यवर सूर्य भानुजी महाशय! जय जिनेंद्र;आपसे निवेदन है कि निम्न लिखित लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान दे कृतार्थ कीजिये कि एक जैन भाई मरते वक्त रु० ४००, श्री सिषरजी धामपर जैन मंदिर बनाने के वास्ते मुझे देगयाथा वह रुपया मैंने एक धनाढ्य जैनी में जमा करा दियाथा वह रुपया अब सूद लगकर अनुमान रु० ६००, होगया है इस वास्ते सब भाईयों से निवेदन है कि जो भाई धर्मका काम समझ कर उस रुपयेका श्री मंदिरजी सिषर जी के पहाड के नीचे जहां और मंदिरजी बने हैं बन वा दें तो इस पत्र के द्वारा मुझे सूचित करें ताकि में अपना इतमीनान कर के वह रुपये उसके पास भेज दूं॥

आपका शुभ चिंतक

सम्मनलाल पुत्र श्यामलाल

जैनी हांसी जिला हिसार

१३०—१—०६

रिपोर्ट दोरा पं० धर्मसहाय उपदेशक

आगे ३ बजे- ता० ११ जनवरीको इटावह से चल कर बाबू दुलीचंदजी श्रावक ग्रह त्यागी सहित ५ बजे स्यामको शिकोहाबाद पहुंचा—शहर रेलसे १ मील है सवारियां इक्के पालकी गाड़ी बहुत से रेलके स्टेशन पर हरवक्त मिलते हैं— हम रेल से उतर कर शहर में गये—और भाई लक्ष्मीचंद पद्मावती पुरवार के मकान पर ठहरे— रात्रिको मंदिर के मालीके हाथ सर्व भाईयों को सभा होने की खबर दीगई—सो बड़े हर्ष की बात है कि सब भाई सभा में उपस्थित होगये—मैंने ऐक्यता के विषय में व्याख्यान दिया और उसी के अंतरगत ज्ञान प्राप्ति जात्युन्नति व्यर्थव्यय के नुकसान दिखला कर इन सर्व कार्यों की सिद्धी सभा के द्वारा पुष्ट करी—फिर सब भाईयों ने उसी वक्त सभा स्थापित करी— और प्रति चोदस को पाक्षिक सभाका होना नियत हुआ—भाई पालीराम सभापति और भाई कल्याणमल उप सभापति-भाई लक्ष्मीचंदजी मंत्री मोहनलालजी उपमंत्री और मोजीलालजी कोशाध्यक्ष नियत हुए और सब भाईयों ने सभा सद होना स्वी-

कार किया—और सबने हस्ताक्षर कर दिये—और उप सभापति कल्याणमलजी ने सभा संबंधी पत्र व्यवहार करनेका इकरार किया—और पाठशाला स्थापित करने के वास्ते १२, महीने तक के पंडित की मन्जूरी हुई—पंडित मिलने पर पाठशाला जारी होजावेगी—और भाईयों की संख्या शुमारी के नकशे उप सभापति साहब ने लिये और इकरार किया कि हम इस तहसील संबंधी सब ग्रामों के नकशे भर देवेंगें—हकीम उग्रसेन और सब महा सभा के मंत्रियों को उचित है कि उपसभा पति सहाब से पत्र व्यवहार करें—यहां के भाईयों ने सभाके खर्च केवास्ते यह नियम किया है कि मंदिरजी में एक गोलक रक्खेंगे और प्रति जीव पीछे पाक्षिक एक एक पैसा उसमें डालेगें—और जो सभासे बचेगा महासभा को दान करेंगे यहां पर दो बेदी मंदिरजी में हैं उनमे ८ भाई नित्य पूजन करते हैं शास्त्रजी दोनो वक्त होते हैं—यह कसबा बहुत प्राचीन है सप्ताह मे दो वेर बाजार लगता है देसी कपडे और छींट देसी की बडी मंडी है बीस गिरहके गजसे माल विकता है घीके बडे २ गोदाम है कलकत्ता मुम्बै आदि बडे २ शहरों को सैंकडोमन घीजाता है यहां तक घोडा गाडी तथा ऊंट गाडी जाती आती है सवारियों का हजूम रहता है— धर्म सहाय उपदेसक ॥

धनवान

[दोहा] दानी और उदार के धन नाहीं कर मांहि ॥ जेनरव द्रव्या धीश हैं दान देतते नांहि ॥ हे सज्जन पुरुषो यह बिचार नेकी बात है कि धन पावना सफल तब ही होसक्ता है जब कि उस धन से कुछ लाभ उठाया जावे धन पाये की शोभा तवही है जब कि उस से कुछ जगत के दुखी जनों का उपकार किया जावे और अपने वास्ते आगेका कुछ सामान इकट्ठा किया जावे अर्थात पुन्य उपार्जन किया जावे ॥ धनवान पुरुषका धन होने के कारण यदि वह चाहेतो व्याकुल चित्त नहीं होसक्ता है क्यूंकि उसको आजीवका की सोच नहीं इस कारण अपना मन स्थिर करसक्ता है परन्तु दरिद्रीका मन स्थिर नहीं होसक्ता है उसको प्रभात सेही यह सोच है कि आज खाने के

वास्ते अन्न प्राप्तिका क्या कार्य करना चाहिये ॥ (दोहा) प्यासो को सुपने विषै अपने नेत्र मंझार दृष्टि पडै सारा जगत ताल प्रपूरित वार ॥ परन्तु आज कल इस के विरुद्ध देखा जाता हैं क्यूंकि जो धन वान हैं वह अपने धन धान्य में लीन विभव और सम्पत मैं आसक्त हो किसी से बात नहीं करते वे मूर्खता से किसी की ओर दृष्टि नहीं करते किन्तु ग्लानिसे किसी की ओर सिर उठा कर नहीं देखते हैं और अपने तईं सबसे अच्छा और सब से अधिक बुद्धिमान जानते हैं ॥ निस्संदेह उनके पास धन है परन्तु वह किसी कार्य के नहीं हैं वे धनवान यदि अपने धनको परोप कार मैं नहीं लगाते हैं तो वह चैत्र के बादल वत हैं जो बरसते नहीं है वे सूर्य मण्डल हैं परन्तु किसी के ऊपर नहीं चमकते हैं वे सामर्थ के घोडे पर आरूढ हैं पर उसे चलाते नहीं वरण इस से भी अधिक यह बात है कि धनवान पुरुष अपने धन के ममत्व मैं निरन्तर रहता है और भोग बिलास मैं उन्मत्त होजाता है और दुष्ट कर्मों मैं लीन रहता है क्यूंकि एक तो धनके कारण वह दुष्टा चार की सब सामिग्री इकट्ठी करसक्ता है और दूसरे उसको यह खयाल होता है कि मैं धनवान हूं उससे सब भय करते हैं और दबाव मानते हैं और आधीन हैं इसलिये मुझे कौन कहसक्ता है कि अमुक कार्य क्यूं करता है, इस कारण निर्भय हो कर धनवान पुरुष संसार मे लिप्त होजाते हैं और अपने धर्म को बिलकुल भूलजाते हैं और अन्धे होजाते हैं इस मैं कुछ संदेह नहीं है कि सब एक से नहीं होते हैं कोई २ धनवान ऐसे हैं कि जो अपना तन मन और धन परोप कार और दान मैं लगाते हैं धर्मोन्नति के वास्ते उपाय करते हैं और बेशक यह धर्म ऐसे ही पुरुषों के सहारे अब तक ठहर रहा है परन्तु धनवानों मैं ऐसे बहुत कम हैं जो परोप कार मैं ध्यान देते हैं और ऐसे अधिक हैं जो विषय भोग मैं लीन हैं ॥ यद्यपि यह जगत विख्यात हैं कि भारत वर्ष मैं जैन जाति अधिक धनवान है परन्तु कई वर्ष बीत गये अब तक एक महा विद्यालय जिस की धर्मोन्नति के वास्ते बडी भारी आवश्यकता है नहीं बनसका है यदि धनवान पुरुष किंचित मात्र

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी
भाईयों को दिखाइये॥

जैन गजट

वार्षिक मूल्य डाकव्यय
सहित केवल डेढ़रुपया है

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १–८– १६– २४ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष | ता० १६ फरवरी सन् १८९६ | अङ्क १०

अवश्य दृष्टव्य

हमने बार बार अपने जैनी भाईयों से यह प्रर्थनाकी हैकि वह इसबात को विचारैं कि जैन धर्मोन्नति के विषय मैं जैनगजट कितनी सहायता करता है और विना सप्ताहिक पत्रके किस प्रकार उन्नति होसक्ती है॥ यह विचार कर जैनगजट के स्वीकार करने वा नकरने की बाबत एक पैसेके पोस्टकार्ड द्वारा सूचित करदेवैं परन्तु हम चार २ अंक इसपत्रके भेजनेके पश्चात एक चिट्ठीभी भेजचुके हैं परन्तु बहुत जगहोंसे कुछ जवाब नहीं आयाहै॥ इस कारण हम अत्यंत सोचमैं हैं कि वह कौनसा उपाय है जिसके द्वारा हम अपने भाईयोंकी सम्माति लेसकैं॥

श्रीजिनेंद्रायनमः

जरूरपाढियेगा

सर्व जैनी भाईयों को अच्छी तरहसे विदितहै कि यह जात दिन २ प्रति कैसी न्यून अवस्था को प्राप्तहोती जाती है ॥ क्या हमारे भाईयों को नहीं मालूम है कि प्राचीन कालमें जैनियोंमें कैसे बडे बडे सेठ साहूकार हुयेथे जोकि लक्षों रुपैयोंका व्यापार करतेथे सर्वस्थानों में मान्यता को प्राप्त होते थे बहुतसी जगह इस भारत वर्ष में अपनाही राज्यथा और बहुत से अन्यमतावलम्बी जैन धर्मकी श्रेष्ठता को अंगीकार करतेथे अब हे भाईयो तुम अपना चित्तलगा जैन शास्त्रोंका अवलोकन करिये और विद्वानों से पूछिये तब आपको ज्ञात होजायगा कि पहिले क्या समयथा और अवक्या समय है हम चारों तरफ से श्रवण करते हैं कि यह जिन धर्म रूपी जहाज अज्ञानता के भँवर में डूबा जाता है और देखने वाले महाशय जिन्होंने ज्ञानद्वारा इस बातको यथेष्ट यात (अच्छी तरहसे) द्रष्टव्य करलिया है (देखलियाहै) वो पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि तुम अपना असली मार्ग भूलगयेहो यदि तुम इसी मार्ग में चले जाओगेतो तुम कभी अपने स्थानको नहीं पहुंचोगे चलते ही रहोगे परन्तु बडे खेदकी बात है कि जो सज्जन पुरुष श्रेष्ठ मार्ग के दिखाने वाले हैं तिनको कहते हैं कि यहतौ वायरोग के मारे बकते अथवा बक्की हैं हमतौ जो अनादि से चला आया मार्ग उसी मार्ग मैं चलैंगे इसको हम क्योंकर छोडदेवें यदि उनसे कुछ भलाई की बात विशेष कर कही जायतो कुवचन बोलते हैं बहुत से बुद्धिवानों को ज्ञातभी होगया है कि वास्तव में जिस मार्ग हो कर हम चलरहे हैं वह ठीक नहीं और नहम अपनी मंजिल पर पहुंच सकेंगे और असली मार्ग पर चलनेको तैयार हैं परन्तु खेदकी बात है कि अविद्या रूपी सारथी उनको नहीं छोडता उस उलटे ही मार्ग को बाग फेर देता है परन्तुसीधे मार्गकीओर जानेवाले अग्रणीयों के चित्तमें यो ज्ञानरूपी दीपक प्रकाश करैगा तो कुमार्ग को छोड सुमार्ग मैं प्रवेश करैंगे अज्ञानता कर मनुष्य कुमार्ग की ओर चलते हैं देखो थोडी देर तक ठहर ने वाली भैंसाखुर्पाके

लिये थोडिहीसी उम्रमें बडी धूम धाम से विवाह करते हैं और अपनी संपूर्ण अवस्था की कमाई अथवा ऋण करके लगादेते हैं अपना और पुत्र पौत्रा दिकोंक जन्म भरके आनन्द को नष्ट कर देते हैं क्या व्यर्थ छोटीसी उम्रमें विवाहका करना हजारों रुपैया इसमें लगायदेना और निर्धन होजाना और करज दार वन बैठना द्रव्यके न होनेसे अपने पुत्रों को शिक्षा से हीन रखना अथवा उनको धर्म से अज्ञात रखना यह सब कुमार्ग ही अवश्य है धिक्कार उन माता पिताओं को कि जिन्होंने अपने पुत्रों को अच्छी शिक्षानहींदी और विद्या ध्ययन कभी न कराया है नीति में लिखा है [श्लोक] माताशत्रुःपिता वैरी येन बालो नपाठितः॥सभामध्येन शोभंते हंसमध्ये बको यथा॥ इस लिये चाहिये कि अपने पुत्रों को अवश्यही विद्याध्ययनकराना चाहिये श्लोकका अर्थ माताशत्रु है पितावैरी है जोकि अपने बालकको नहीं पढाते वो कभी सभाके मध्य शोभाको नहीं पावेंगे जैसा हंसकी सभा में काग, बडे पापिष्ट और दुष्ट पुरुष हैं जोकि अपने पुत्रोंका छोटी उम्र में विवाह करके और कहदेना कि हमने तुमको परणाय दिया [विवाहदिया] जाओ कमाओ खाओ और अपना पालन करो यदि ऐसा न कहेंगे क्याकरै जब खुद निर्धन होगये इधर उधर से ऋण वाले सताते हैं नईवहूके आनेसे खर्च वढगया है खेदकी बातहै कि विचारे छोटेसे पतीपर कुटम्बका खर्च आनपडा पढना लिखना तो चूल्हेमेंगया जैसे बनै तैसे कहींन कहीं से लाकर नाजादिक घरमें डारते हैं उम्रभर ऐसेही कष्ट सहते हैं अपने पेटके नौकर होकर पेट भरने की सोचमें फिरते रहते हैं इसी तरह से हजारों कुटम्बी कुरीती के मारे बिगडगये हैं और विगडते जाते हैं यदि ऐसी ही व्यवस्था रही तो एक दिन वह आवेगा कि जैन धर्म नष्टता को प्राप्त होजायगा हे सज्जन पुरुषो घोर निद्रा से जागो नई रोशनीका सवस्थानोंमें चिमत्कार करो आपक्यों अंधेरे में पडे सो रहे हो जाग्रित होकर सभापाठशालादि मूर्खताके अभाव करने के कारणों को प्रकाशित करो और अपने पुत्रादिको विद्या अभ्यास कराओ और उनको विद्वान बनाओ जिससे कि कुमार्गका

नाशहोग और सुमार्गका प्रकाश होग बाल विवाह आदि कुरीति योंका नाश होग नहींतो यह कु-रीती आप साहिबों को बडे कष्ट में डालेगी इससे सुगीत के चला ने के वास्तै अपनी स्त्रीयों कोभी शिक्षा आदि देते रहौ और कु-देवादिकका पूजन आदि को छो-डो, हे भाईयों बस सब लिखनेका सारंश यह है कि कुमार्ग को ह-टाकर सुमार्ग को प्रकाशित करौ अज्ञानताका अभाव करौ ॥

जैनी भाईयोंका दास
पान्चूलाल कालाहेडमास्टर
महाराजस्कूल सांभर
राज पूताना

हमारे प्रश्नोंका उत्तर

लाला सालिगराम उपमंत्री दि-गम्बरजैनपाठशाला प्रयागल्लिखित

[क] विद्याका पठन पाठन करना बहुत जरूर है

[ख] अपनेमत के शास्त्रोंको जरूर देखना

[ग] शास्त्रके विरुद्ध कोई कार रवाई न करना चाहिये अर्था त् वह बात न करना चाहिये जिसमें जैन शब्दको लज्जा आ वे यानी कुगुरु कुदव कुशास्त्र का विस्वास न करना चाहिये

[घ] धन हीन मनुष्यों की अर्था त् जिनकी धर्म में रुचि है उन की सहायता करनी चाहिये. क्योंकि बगैर इसके धर्म में हानि होती है

(स०२ का जवाब)

[क] संस्कृत अर्थात प्राचीन वि-द्या (मात्री) के न पढनेसे

[ख] प्राचीन मन्दिरजी जो वे मरम्मत होरहे हैं उनका जी-र्णोद्धार न करनेसे

[ग] आपस में मेल न होनेसे— कम बुद्धि वानों को उप देश न देने से

[घ] ग्रंथों को बांधकर सन्दूको में बन्द करके रख देनेसे चाहे दी मक तक लगजाय पढनेको न दे ने से

[ङ] जगह जगह पाठशाला व सभा न होनेसे

(स० ३ काजवाव)

[क] रथजात्रा मन्दिर प्रतिष्ठा द-श लाक्षनी विधान अष्टानिका आदि महा पर्वोका उत्सवहोना

[ख] देशकाल की अपेक्षा खान खान पान यानी आवो हवा हमेशा वदलती रहती है

मसलन खान—अभी हम लो ग इस समय गर्म मुल्कमें हैं और बात २ में शुद्धताके कारण खान

करते हैं परन्तु इसीकी अपेक्षा जब हम सर्द मुल्क में जाते हैं तो जिनबातों से हम परहेज करते थे उन्हीं बस्तों से सब काम करने लगते हैं ॥

इसी तरह पानी और हवाका हाल है कि जो हवा हमको यहां पर मुआफिक थी वह अन्य मुल्कमें नहीं आती

इसी तरह खान पानका हाल है कि जो चीज हमको शुद्ध मिलती है वह अन्य मुल्कमें अशुद्ध मिलती है इससे तात्पर्य यह निकला कि आबोहवा ही एक ऐसा पदार्थ है जो देश कालकी अपेक्षा बदलती रहती है और खान पान आव यह उसके अंग हैं

स० ४ काउत्तर

[क] बहुत ही जरूरत है बगैर इसके धर्म कार्य सध नहीं सक्ता

[ख] कथा व्यवहार भी प्रचलित करना ही पड़ैगा लोक विरुद्धका त्याग करना पड़ैगा

स० ५ काउत्तर

[क] संसार व्यवहार कार्यों में हमारी जैसी दशा होरही है उसको छोटे से लेकर बडे तक सब जानते हैं कि यह जैनजाति सब जातों में कैसी उच्च जाति गिनी जाती थी सो आज कल विद्या के न होने से कैसी दबी पड़ी है ॥

परमार्थ

(अंक १ प्रष्ठ १६ से आगे)

हम आयुपूर्ण होकर मरने के पश्चात का कुछ फिक्रनहीं करते हैं ॥ हम बिलकु बेफिक्र हैं मृत्यु के पश्चात के काल के वास्ते मानो हमको यह निश्चय है कि मृत्यु के पश्चात जीव ही नहीं रहता है ॥ हे भाईयो जैसा कि इस संसार में वह पुरुष मूर्ख समझा जाता है जो केवल वर्तमान मान के सुखका विचार करता है और यह कहता है कि कलके दिनकी बात कल देखीजावेगी आज दिन तो आज काउपाय करना चाहिये ऐसाही क्या वह पुरुष मूर्ख नहीं है जो अगले जन्म के सुख के वास्ते कुछ यत्न नहीं करता है और जैसा कि वर्तमान काल के सुखका विचार करने वाला इस संसार में बहुत दुख उठाता है इसही प्रकार क्यावह मनुष्य अगले जन्म में दुख नहीं उठावेगा जो केवल इसही जन्मके वास्ते फिक्र करता है ॥

हे भाईयो चेतो जागो और परमार्थ के वास्ते कुछ फिक्र करो । अगले जनम के सुखका उपाय धर्म में प्रवर्तना है ॥ यह सुख सम्पदा जो कुछ इसजनम में प्राप्तहो रही है यहभी धर्म काही महात्मि है किसी कालमें कोई धर्म कार्य किया था-

या है जिसका यहफल है और जोकुछ कष्ट और विपाति इसजन्ममें उठानी पड़ी है वह अधर्म और पापकार्यों के कारण है ॥ इसवास्ते हे भाईयो आगामी काल के वास्ते यत्न करना चाहिये ॥ इसका मुख्य उपाय और यत्न एक धर्मही है ॥ इस कारण यदि हम धर्मसे अनुराग न करेंतो हमसेज्यादा मूर्ख औरकौन होगा ॥ यद्यपि इससमय सर्व जाति के मनुष्य धर्म की कुछ परवाह नहीं करते हैं और संसार कार्यों में ही लिप्त होरहे हैं परन्तु अन्य मतानुयाईतो मिथ्या मतानुरागी हैं वह यदि धर्म में न प्रवर्तें तो क्या आश्चर्य है परन्तु आश्चर्य तो हम जैनियों पर आता है कि जैन मत के धारी होकर उत्तम कुल में प्राप्त होकर भी संसार मे ही लिप्त हो रहे हैं और जिस धर्म से संसारी सुख की सामिग्री हमको प्राप्त हुई है उस धर्म को बिलकुल विसार देवें ॥ हे भाईयो यह बहुत अच्छा समय हम को प्राप्त होरहा है और समय व्यतीत होता जाता है जो घड़ी व्यतीत होगई वह फिर हाथ आती नहीं है इस कारण जल्दी करनी चाहिये प्रमाद को छोड़ना चाहिये और कुछ धर्म कार्य भी करना चाहिये हाय हाय हम एक दिन की चौसठ घड़ी में आधी घड़ी भी धर्म कार्य में न लगावें ॥ धर्म ही कल्याण कारी है धर्म ही सुखकी प्राप्तिका कारण है जो कुछ होगा इसहीसे होगा ॥

चिठीयोंका सारांश

[१] पेमचंदजी जती रतनगढ से लिखते हैं कि वहां स्त्रीयें अन्य धर्म अन्य देवको मानती हैं पूजती हैं और जैन धर्मसे विपरीत कार्य करने में तत्पर हैं ॥ शोक महा शोक ॥

[२] लाला धरमचन्दजी बहरायच से लिखते हैं कि जैनगजट बहुत परोप कार करता है [दोहा] बडे पुरुष से होत है पर उपकारी बात। उपकारी नहिं भूलये बड़ी मान और तात ॥ यह गजट वात्सल्य अंग भी बढाता है कुंडलिया ॥ बाढै वात्सल्य अंग जब प्रीत परस्पर होय। वैर भाव मिट जायगा हिल मिल बैठें सोय ॥ हिल मिल बैठें सोय सुमति दिन दिन उपजावै, होय कुरीतैं नास सभाकी चाह बढावै, धर्म चन्द करजोर कहत यह सुष सोकाढे, धर्म कार्य परहेत सदा यह साहस बाढे ॥

[३] लाला उमरावसिंघजी सहाब नजीबाबादसे लिखते हैं कि वहांपर महीने में दो बार सभा होती है परन्तु सब भा-

नहीं आते हैं व्यर्थव्यय [फजूल खर्ची] दूर होनेका प्रबन्ध हो रहा है ॥

धीरज

प्राणी मात्र के लिये इस असार संसार में धीरज भी कैसा उपकारी पदार्थ है जो प्रत्येक विपत्ति में सहायक रहता है॥ जन्म से मरण तक सैंकड़ों संकट आकर घेरते हैं उस समय धीरज के आसरे ही जीवन होता है ॥ जो धीरज नहीं धरते हैं वह अपनी विपत्ती अधिक बढाते हैं और अधिक दुःख उठाते हैं जैसे किसी कविने कहा है ॥

[दोहा] सुख दुःख एकसमान है हर्ष शोक नहीं होय। ज्ञानी काटे ज्ञानसे मूरख काटे रोय ॥

सुख दुःख अपने कर्मानुसार प्रत्येक देह धारी को सदाही होता है कुछ चिन्ता करने और अधीर होने से दुःख कम नहीं होता है वरन साव धान रह कर उपाय करनेसे विपत्तिका छूटना भी सम्भव है ॥ जो हानि होचुकी या जो बात बीत गई उसपर रोना और पछतावा करना निष्फल है ॥ जैसे किसी ने कहा है,

" ताहि बिसारदे आगे की लेय। जो बनआवे सहज में ताही में चित देय ॥

धैर्य कुछ रोगकी औषध नहीं परन्तु उसके क्लेश को सहज कर सक्ता है ॥

[दोहा] परी बिपत से छूटिये करके जोर उपाव। कैसे निकसे जतन बिन पडी भवंर में नाव ॥

बहुधा मनुष्य छोटी २ सी तकलीफ या विपत्ति में धीरज को छोड देते हैं परन्तु क्या धीरज के छोडने से वह विपत्ति टलजाती है कदाचित नहीं वरण धीरज के जाने के पश्चात उपाय करनेका द्वार भी बन्द होजाता है अर्थात धीरज छोडना बहुत हानि कारक है इसके अति रिक्त धीरज छोडकर रुदनादिक करने से पाप कर्मोंका बंधन भी होता है कि जो धीरज के समय नहीं होता है इस कारण नर नारी सर्व प्राणियों को विपत्ति में धैर्यवान रहनेका स्वभाव करना चाहिये इससे इस लोक और पर लोक दोनोंका लाभ है ॥

स्त्रीशिक्षा

हम अपनी जाति की स्त्रीयों को अति दुर्दशा में देख कर और इससे धर्म और अपनी जाति में अधिक हानि जान कर एक शि-

क्षा स्त्रीयों के प्रति लिखते हैं यह जैन गजट नागरी अक्षरों में होता है इस कारण जो स्त्रीयें इस को पढसक्ती हैं वह कृपा करके इस पत्र को अन्य स्त्रीयों को अवश्य सुनावैं ॥

हे स्त्रीयो ! तुम यह बात जानतीहो और जगत प्रसिद्ध भी है कि पुरुष स्त्रीयों को मूर्ख बतलाते हैं और यह बात कहते हैं कि स्त्रीको अपने दिलका भेद नहीं देना चाहिये और गुप्तबातां नहीं करनी चाहिये और स्त्रीकी सलाह पर काम नहीं करना चाहिये क्यूंकि स्त्रीकी मत उलटी होती है इसके सिवाय हे स्त्रीयो ! यह बातभी तुमस्वीकार करोगी कि स्त्रीयों को अपने धर्मका कुछ ज्ञान नहीं है और मिथ्यात्व सेवन और कुदेवादिकका पूजन लोक मूढता कुरीतियों पर प्रवर्तना आदिक बहुधा करके स्त्रीयों मैं है पुरुषों में बहुत कम है और यह भी देखने में आता है कि पुरुष बहुत प्रकार के प्रबन्ध मिथ्यात्व और कुरीति दूर करने के वास्ते करते हैं और स्त्रीयें उस प्रबन्ध को चलने नहीं देती हैं और तोड डालती हैं ॥ अर्थात हमारी जाति की स्त्रीयें मूर्खता की खान हैं ॥

परन्तु ऐ स्त्रीयो 'विचारणीय यह बात है कि स्त्रीयों की प्रकृति मैं मूर्खता है या उचित शिक्षा न मिलने के कारण वह मूर्ख रहती है ॥ जब हम पुराने समय के इतिहास और पुराण देखते हैं तो हमको यह बात मालूम होती है कि पूर्व काल मैं हमारी जाति मैं बडी २ विद्वान चतुर और धर्मज्ञ स्त्रीयें होचुकी हैं जिन से अच्छे २ पुरुष शिक्षा लेतेथे ॥ इस के सिवाय हम आज कल अंगरेजों मैं बहुधा स्त्रीयों को बडी२ विद्वान देखते हैं जो बडे २ महान ग्रन्थ रचती हैं और पुरुषों को शिक्षा देती हैं ॥ इस से यह बात स्पष्ट होता है कि स्त्रीयों की प्रकृति मैं मूर्खता नहीं है बरण शिक्षा प्राप्त न होने के कारण हमारी जाति की स्त्रीयें आज कल मूर्ख होगई हैं ॥ परन्तु हे स्त्रीयो क्या तुम को इस बातका शोक नहीं है कि तुम मूर्ख हो और मूर्ख कहलाती हो और यदि तुम को इस बातका शोक है तो क्यूं तुम इसका उपाय नहीं करती हो क्या तुम को यह भरोसा है कि पुरुष तुम्हारी दशा को सुधारनेका यत्न करेंगे वे अपनी ही दशा नहीं सुधारते हैं फिर

वह तुम्हारी दशा को क्या सुधा-
रैंगे ॥ परंतु पुरुषों मैं और तुम मैं
इतना अंतर है कि तुम घर के
अंदरही रहती हो और इस का-
रण जगत मैं बहुत प्रकार के कार्य
व्यवहार होते हुवे नहीं देख स-
क्ती हो और मनुष्य घर के बाह-
र रहता है कार्य व्यवहार करता
है इस कारण बहुत सी बातें दे-
खता है और केवल इस कारण
देखने ही से बहुत चतुर होजा-
ता है और तुम बिना विद्या पढ-
ने के कुछ नहीं जान सक्ती हो ॥
इस वास्ते तुमको पुरुषों से अधि-
क आवश्यक्ताविद्या पढने की है ॥
ऐ स्त्रीयो यदि तुम अपनी भला-
ई चाहती हो यदि अपने धर्मको
जानना चाहती हो यदि परलो-
क सुधारने की इच्छा है यदि
मिथ्यात्व छोडने की इच्छा है
यदि मूर्खता को छोडना चाहती
हो तो विद्या प्राप्तिका उपाय क-
रो ॥ परन्तु तुम्हारे सब कार्य पु-
रुषों के आधीन हैं इस कारण स्व-
यं कुछ नहीं करसक्ती हो जैसा
कि तुम अपना आभूषण वस्त्रादि-
क बनवाने के वास्ते पुरुष को
प्रेरणा करती हो इसही प्रकार वि-
द्या सिखाने की भी प्रेरणा करो
और जैसा कि प्रति दिन प्रेरणा
करने से पुरुषको लाचार तुम्हारी
इच्छा पूर्ण करने के हेतु वस्त्र आ-
भूषणादि तुम्हारे वास्ते बनवा
देने पडते हैं इस प्रकार यदि तुम
उसही प्रकार प्रेरणा रकरती होतो
क्या तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने के
हेतु वह तुमको विद्या प्राप्तिका उ-
पाय नहीं करैंगे अवश्य करैंगे ॥
फिर तम क्यूं चुप बैठी हो यह
करो पुरुष अपने आप तुम्हारे
वास्ते कुछ न करैंगे ॥

वेश्याका नृत्य

हे भाईयो यह बात तुमजा-
ते होकिव्यभिचारसेअधिकऔर
कोई पाप नहीं है और इस से
केवल पाप ही नहीं होता बरण
इस लोक मैं भी अति निंदाहोती
है ॥ यद्यपि खोटा कर्म सब जाति
के मनुष्यों के वास्ते खोटा ही
होता है परन्तु श्रेष्ठ उत्तम जाति
के मनुष्य से खोटा कर्म होना
बहुत ही अधिक खोटा होता है
जैसा कि चोरी करना सब के
वास्ते बुरा है परन्तु यदि राजा
चोरी करने लगेतो बहुतही बुरा
है ॥ इस कारण उत्तम जाति मैं
व्यभिचारबहुत ही निकृष्ट है ॥
कोई कार्य जितना बुरा होता है
उस कार्यका कारण भी उतनाही

बुरा होता है॥वेश्याका नृत्य देखना उसका गाना सुनना उसके सुन्दर रूप को देखना उससे वार्तालाप करना यह सब बात कारण हैं व्यभिचारकी इस कारण यह भी उतनी ही बुरी हैं जितना व्यभिचारका करना॥ ऐ भाईयो जब तक किसी काम में इस बात का भय रहता है कि यदि अन्य मनुष्य मुझको यह कार्य करते देखेंगे तो क्या कहेंगे तब तक उस कार्य के छोड देने की सम्भावना होती है॥ परन्तु जो काम स्पष्ट सब के सामने किया जावे उस में किसका डर है इस वास्ते वह काम कभी नहीं छूटसक्ता है और इससे भी अधिक यदि किसी जाति में बुरे कामकी शिक्षा देनेका ही उपाय किया जावे फिरतो कहनाही क्या है ऐ भाईयो हमको बहुत शोक प्राप्त होता है जब हम देखते हैं कि हमारी जाति में जो उत्तम और श्रेष्ठ जाति गिनी जाती है यह रीति प्रचलित हो रही है कि तुम पुत्र के विवाह में अपनी जाति के वृद्ध युवा वालक पुरुषों की सभा लगाकर वेश्याका नृत्य कराया जाता है औरव्यभिचारादिक की शिक्षा दिलाई जाती है प्रथम तो उत्तम जातिके मनुष्यों की सभा में कुलटा स्त्रीका प्रवेश करना ही लज्जाका कारण है और फिर नृत्य करना हाय हाय हमारी कैसी मति मारीगई है हम किस अज्ञान अंधेरी में फंसे हैं कि अपने आप अपने नुकसान के उपाय करते हैं ऐ भाईयों वेश्याका नचाना एक दम दूर करो जिससे व्याभिचारइस जाति से दूर हो नहीं तो इस उत्तम जाति से शूद्र अच्छे हैं॥

॥ अच्छे प्रदान ॥

कई एकअच्छेदान जिनका देना उचित है

१— अपने शत्रुको क्षमादो

२— अपने मित्रको प्रेमदो

३— अपने विरोधी को सहनशीलदो

४— अपने वाल बच्चों को अच्छा निदर्शनदो

५— अपने माता पि [illegible] को आदार सन्मान दो

६— दुखी दीनों को सहायतादो

७— जो धर्म से विमुख हो उनको धर्मसिक्षा दो

८—— भटके हुओं को सीधे मा-र्ग पर लगादो

९—— क्रोधी को उत्तम और मृदु बचनों के द्वारा शान्तिदो ॥

॥ हिंन्दुस्तानकी निर्धनता ॥

हिन्दुस्तानियों के बीचमें कोई २ धनी और भाग्यवान तो दिखाई देतेहैं परन्तु स्पष्टरूपसे देखपडताहै कि और देशोंकी अपेक्षा धनी लोग यहां कम मिलतेहैं परन्तु इस देशके निवासी बहुत करके बड़ी दरिद्रतामें जीवन बिताते हैं अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होताहै कि इस निर्धनताका कारण क्याहै । पस यदि कोई अच्छी रीतिसे इस का कारण निर्णय करता और लोगों को प्रगट करता तो कदाचित उनका बहुत लाभ होता क्योंकि किसी विपतसे बचनेका पहिले उपाय यहहै कि हम विपत्तिको समझलें इस बात के विषयमें बहुत लोग भूल करते हैं इस देश के बहुत निवासी जो अपने देश के वृत्तांतको कम जानते हैं वे यह समझतेहैं कि प्राचीन दिनों में इस देशकी सफलता और इसके निवासियों का आनन्द और कल्याण बहुतही अधिक था परन्तु सोचनेकी बातहै कि इस बातसे हम लोगोंको क्या लाभ प्राप्त होसकाहै यह तो ऐसी कहावतहै जैसी वृद्धपनमें यौवनकी याद और स्मरण, भला इस याद और स्मरणसे कहीं यौवनकी शोभा दृष्टि गोचर हो सकी है ! कदाचित नहीं पर सब लोगों और देशोंमें बहुतोंकी यह समझ कि अगले दिन भलेथे कुछभी फलदायक नहींहै और इसका विशेष कारण यही है कि लोग अब के दुःखोंको तो जानते हैं परन्तु प्राचीन दिनोंके दुखोंका स्मरण बना नहीं रहताहै ॥

भूल यहहै कि बहुत लोग सरकारपर अधिक भरोसा रखतेहैं वे यह नहीं सोचते कि हमारी घटती और बढ़ती हमारी चतुराई वा बुद्धि वा परिश्रम से होगी बल्कि यह बिचार करतेहैं कि सरकार सब कुछ करेगी यह हमारी बड़ीभारी चूक है क्योंकि जबतक हम अपने हानि लाभ को खुद न विचारेंगे और उन पर अच्छी भांति ध्यान नदेंगे तबतक हम को अपनी विपत्तिसे छुटकारा न होगा और हमको क्लेश नित्य बनारहेगा ॥ परन्तु यदि सरकार हमारे जीवन और हमारी संपत्तिकीरक्षा करतीहैतो औरक्या करना चाहिये अपनी घटती और बढती तो केवल हमारेही हाथहै । हां निःसंदेह यहतो चाहिये कि प्रधान और अधिकारी लोग अच्छे और चतुर हों परन्तु यह इससेभी अवश्यहै कि सब लोग अपने अपने कार्य को मन लगाके और बुद्धि के साथ करें ॥ फिर धनी वा कंगाल होनेके कईऐसे कारणहैं जिनसे सर्व देशों में बडा अभाव होताहै निदान यह

इरकहीं सत्य होताहै कि परिश्रमी का हाथ धन और संपति बटोरताहै और यहभी कि आलस्य मनष्यको चिथड़े पहिनाने का कारण होताहै ॥

सकल देशमें यह रीतिहै कि मद्यपीने हारे और चटोरे मनुष्य निर्धनताको देख तेहैं और व्यर्थ व्ययकरनेहारोकेतो सदा निर्धनता समीपही रहतीहै पस जो कोई इसदेशके लोगोंकीउन्नति और सफलता और कल्याण और नाना भांतिकी स सारिक बढनीचाहताहै उसको चाहिये कि उनमें सुरीतियें बढानेका प्रयत्न करें ॥ परन्तु कई बुरी रीतें ऐसीहैं जिनसे हमारे देशको विशेष हानि पहुंच तीहै और यदि ऐसे लोकाचार को त्यागनदेंतो देशकीउत्तम दशा न होसकेगी । जो हम लोगों में अधिक बुद्धि मानहैं सो इन हानि की बातोंकोजानते भी हैं और कोई २ तो इनका निषेध भी करताहै परन्तु किसी कारणसे लोग उनकी शिक्षाओं को नहीं मानते बरण इन बुरे मार्गों में आगे बढते जातेहैं ॥ शेष आगे

॥ चिट्ठी का सारांश ॥

सिद्धश्री देवनन्द महाशुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान सकल गुणनिधान पत्री श्री५ बाबू सूरजभान साहब योग्य लिखी बिजैगढ से मथुरा प्रसाद व नाथूरामकी जैजिनेंद्रवंचना अत्रकुशलंतत्रास्तु अपरंच निवेदन यहहै कि हमने आपका व्याख्यान धर्म्मोन्नति का मथुराजी में सुना उसको सुनकर मन धर्म्मोन्नति में लगा यहां ९० घर गंगेलवार भाईयों के हैं और वह सर्व भाई धर्मसे परान्मुख और पराङ्मुखही क्या आर्या समाज की ओर खिचे जातेहैं इन सबके मुखिया लाला इन्द्र प्रसाद रईस आलाहैं उनके वशमें सर्व भाई हैं जिस चालसे लाला साहब चलतेहैं उसी चालसे सर्व भाई चलतेहैं हमने अपनी चतुराई अथवा जबर्दस्ती से इतना कामतो करलियाहै कि उनके मकान पर जाकर शास्त्र कहना और उनको सुनाना परन्तु वे मूढ प्रश्न करते हैं जिनका उत्तर हमसे बनसक्ताहै देतेहैं और बाकीका नहीं आता पस एक लाला साहब के धर्म्मानुसार चलानेसे सर्व गंगेलवार भाई धर्म्म ग्रहण करेंगे और जिन धर्म्म पर चलेंगे हमारा आशय सर्व लिखने का यहहै कि कृपा करके किसी बुद्धिवान उपदेशक को सूचित कर यहां सुशोभित कीजिये कि जिससे लाला साहब का भ्रम दूर होजावे और धर्म्म पर चलें एक मंदिरजी अथवने पडेहैं जब भाई साहब इनकी रुचि धर्म्म पर होजावेगी तो मन्दिर जी भी बन जावेंगे धर्म चलैगा और भाई साहब हमारा तो एक घर पद्मावती पुरवारोंका है और मंदिर

जी भी दूसरे मौजूदहैं पर इनके दुःख दूखीहैं अपना गजट हमेशा भेजाकरो मूल्य भी भेजा जायगा हमारी पूंजी अभी तक तो है लेकिन अब जातीहै दूसरे छीने लेतेहैं अगर आप सहायता करें तो बचें खर्च उपदेशक का सब देंगे धर्म रक्षा करो— धर्म रक्षा करो—हमारा पूंजी बचाओ और नहीतो जातीहै ॥

आपका दास

मथुरा प्रसाद

बडेहर्षके समाचार

अबके साल वैश्य कानफ्रैंस अर्थात् वैश्य महासभा का जल्सा श्रीमान सेट लक्ष्मण दासजी सी आइ, ई सभापति जैनमहासभा मथुरा के अधिकारमें हुआथा जिसमें यह रिजूलेशन पास हुवा था कि वैश्य जातिके प्रत्येक जथके प्रत्येक मनुष्य को उचितहै कि परस्पर एकता पैदा करें और मिलाप बढावें किसी सांसारिक वा धार्मिक कामोंमें विरुद्धता न उत्पन्न होनेदें पस वैष्णव जातिके एक महाशय बाबू सिरीराम साहब रायबहादुर सबइन्सपेक्टर जिला बुलंदशहरने जो वैश्य कानफ्रैंस के मेम्बरहैं अपने जनम भूमि मु० नानौतामें अपने संबंधित कई एक कार्योंमें जो उनके जैनियोंके साथथे और जो ऐसे उलझ रहेथे कि बिदून सहायता राज दरबारियों वा राज अधिकारियोंके फैसिल अर्थात् साफ होना अत्यंत दुरथे ऐसी सुरीत और सज्जनतासे साफ किये कि जिससे हमको दृढआशा और परम विश्वास होताहै कि ऐसेही सज्जन और महाशय और वैश्य कानफ्रैंस के सच्चे हितु और शुभचिंतक सभासद निःसंदेह इस रिजूलेशन को पूर्ण रूपसे पूरा करेंगे और वैश्य जातिमें यथा योग्य इसका प्रचार करेंगे और स्वयम इसपर प्रवर्त कर अन्य भाइयों के वास्ते नमूना बनेंगे ॥

जातिका शुभचिन्तक

सगनराय मु० नानौता

[पाक्षिकरिपोर्ट श्रीजैनपरुषार्थ सभाइटावा]

श्रीयुतसंपादकजैनगजटमहाशय—जैजिनेंद्र कृपा करके नीचे लिखे लेखको निज अमूल्य पत्रमें स्थान देकर कृतार्थ कीजिये मिती माघ कृष्णा १४ चतुर्दशी दिन सोमवार संवत १९५२ मुताबिक १३ जनवरी १८९६ ई० की रात्रिके ७ बजेसे पंचायती श्रीजिनमंद्रजी पंसारी टोलामें सभा प्रारंभ हुई— हमारे परम परोपकारी महात्माहो महाशय श्रीयुत बाबू सरूपचंदजी साहब सभापतिकी तबीयत किसी कदर नाराजथी इससबब सभाको सुशोभित न करसके हम जिनेंद्रदेवसे त्रिकाल मन वचन कायसे शुद्धता कर प्रार्थना करतेहैं कि हमारे उक्त बाबू साहब सदाकाल निरोग्य रहैं उनका ऐश्वर्य और विभव दिन प्रतिदिन

अधिक होवे और व सदैव धर्म वान और वलवान वने रहैं हमारे उपसभापति लालाभवानी प्रसाद साहब वृद्ध कि जिनकी उम्र करीब ६० से जियादा होगी बावजूद इसके कि आजकल उन की तबीअत दुरुस्त नहीं रहतीहै तकलीफ गवारा करके हर सभा में तशरीफ लातेहैं धन्यहै उनकी रुचि और साहस को बाबू चंपतराय साहब उप सभापति बसबब दौरेमें जानेके सभामे नहीं पधारे— और सभासदे भाईयों में से बहुत कम महाशय इस सभामें एकत्र हुए—इस लेखसे मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि सभामें आनेमे उनकी रुचि और उत्साह कम होगयाहो किंतु उनको कोई न कोई अवश्य कार्य लग गया होगा काहेसे किसभाका काइम रहना इन्हीं साहबों की तशरीफ यावरी पर मनहसिर है सभा इनहीं की सुहायता और कोशिश से दिन व दिन उन्नति पर है— येही सहाव सभाके चिरस्थाई स्थंभ हैं ऐसा कौन उत्साही धर्मानुरागी पुरुष होगा जो धर्म उन्नति के कार्यमें शरीक न होकर बिना सबब प्रमादवश तान दुपट्टा घरपर सोये, कोई नहीं कदापि नहीं॥

दोहा—श्रावक कुल हितकारणी थापी सभा विशाल । निज ग्रह कार्य विसार कर सुजन करहु प्रतिपाल ॥

प्रथम मैंने वो चिट्ठियां जो महासभा मथुरा जी के मंत्रियों और संपादक जैनगजटके पाससे आई हुईथी मय उन के जवाबातके सभासदों के सन्मुख पढ कर सुनाई इसके पश्चात पिछली सभा की छपी हुई रिपोर्ट और कई एक मजमून बाबत बाल्य और वृद्ध विवाह फिजूल खर्ची आदि मुंदर्जे जैनगजट व जैनप्रभाकर पढकरसुनाए जिनके श्रवण से सभा अति आनंदित हुई और तृप्त न हुई करीब ११ बजे जैकारा बोल कर आनन्द मंगल पूर्वक सभा विसर जन हुई ॥

जैनियों का शुभ चिंतक
प्यारेलाल मास्टर मंत्री
जैनसभा इटावा
२२—१—९६ई०

प्रियवर

जै।जिनेंद्र— कृपा करके निचे लिखे हुए मजमून को आप अपने जैनगट मे जगह दीजियेगा

॥ रिपोर्ट मासिक सभा इटावा ॥

मिती पौष शुक्ला ४ दिन सोमवार संवत १९५२ मुताबिक ३० दिसंबर सन् १८९५ ई० को रात्रिके ७बजे पंचायती श्री जैन मंदिरजी में सभा प्रारंभहुई प्रथम शास्त्रजी की सभामें हस्ब मामूल रोज मर्रा १घंटे तक शास्त्र जी बचना रहा इसके पश्चा १८ बजे तक बाबूलछमी चंद सभापति

मुंशी चंपतराय उप सभापति -लाला भवानी प्रसाद वैद्य उप सभापति-मुंशी प्यारेलाल मंत्री ला० उमरावसिं उपमंत्री -ला० जगन्नाथ कोषाध्यक्ष -ला० हजारीलाल वैद्य आदि बहुतसभासद सभा में एकत्र हो गये प्रथम मुंशी प्यारे लाल मास्टर मंत्री ने सभा की आज्ञा नुसार अपने बनाये हुए सभा संबंधी नियमों को सब सभासदों के रोवरू आद्योपांति पढकर सुनाये जिनको सुनकर सभाने सर्व संम्मति से स्वीकार कीये और प्रतिज्ञाकी कि आइंदा इनही नियमानुसार सभाकी कुल कारवाइ अमल में आवेगी विला किसी मुख्य कारण के किसी नियम में न्यूना धिक वारहो बदल नकी जावेगी यदिकारणपाय कीजावेगी तो बमंजूरी सभा होगी ॥

पाठशालाका प्रबन्ध सभा से मंजूर शुदा नियम नुसार होना शुरू होगयाहै कई एक रजिस्टर किताव मिस्ल- रजिस्टर हाजिरी- रजि० भरती- रजि० पारि तोषिक- रजि० परीक्षा- रजि० पढाई मासिक वगैरह- रजि० शुभाचरण- रजि० नकल चिट्ठीयात- रजि० व्यवस्था सभा पाठशाला वगैरह २ और बहुत से नकशे जात मिस्ल सर्कारी मदर्सों के तैयार किये गये हैं- सभा में जैनगजट के कई एक लेख वाबत फजूल खर्ची पढकर सुनाये गये परन्तु यहां पर इस दुष्ट डायनकी चुटीया पकड कर अपनी जाति में से वाहर निकालनेका उद्योग किसी साहब ने अभीतक नहीं किया है फिर मुंशीचंपतराय साहबने जैन महाविद्यालय भंडार की सहायता के वास्ते एक पैसा फी जीवके हिसाब से एक गोलक में डालने की दरख्वास्त सभामे पेश की जिसको सभाने मंजूर किया और कहा कि गोलक रखी जावे कारैवाई शुरू होगी ॥

लाला छेदीलाल लोहिया और बाबू लखमीचंद सभापति ने खरीद दारी जैनगजट मंजूर फर्मा के अपने नाम व पता मुंशी चंपतराय साहब को लिखादीया जैनगजट के ग्राहक बनाने के वास्ते मुंशी साहब हर सभामें सब लोगों को उपदेश दिया करते हैं इन्हों की कोशिश से यहां पर चार पांच जैनगजट मंगाये जाते हैं इसके वाद ११ बजे जैकारा बोलकर सभा आनन्द पूर्वक विसर्जन हुई ॥

जैनियोंका शुभचिंतक

प्यारेलाल मंत्री
जैनपुरुषार्थ सभा इटावा

जैनगजट संपादक महाशय

जयजिनेंद्र—इसपत्रको स्वकीय पत्रमें स्थान दीजिये—

जैन व्याकरण संबन्धी विषय पाठक महाशयों के दृष्टि गोचर हुवा होगा यद्यपि जैन शास्त्र ही पठितव्य है तथापि इदानीं अपूर्ण ज्ञान होनेसे लघु कौमुदी आदि पढने में दूषण नहीं प्रतीति होताहै इससे भी [व्याकरण प ढनेका फल] शब्दोंकी शुद्ध अशुद्धता ज्ञान होती है " अनेकान्तात्मकं जैन सिद्धान्तम् " इति वचनात् ॥

जैनकाव्य शास्त्रम्

इसी प्रकार जैन आचार्य प्रणीत काव्य भी मनोरंजक है काव्यका लक्षण इस प्रकार कहा है " चतुर चेत श्चमत्कार कारि कवेः कर्मकाव्यम् " कुशल पुरुषों के चित्तको चमत्कार करने वाला जो कविका कर्म सोकाव्य है अथवा " शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालंकारौ काव्यम्" जिस में दोष रहित गुण सहित प्रायः कारि अलंकार सहित शब्द अर्थ होय सोकाव्य है सो तीन प्रकार है गद्य पद्य मिश्र जो छन्द बन्ध होता है सो गद्यकाव्य महाकाव्यादिक जैसे चन्द्रप्रभचरित्र इत्यादि, पाठकों के अवलोकनार्थ इस [महाकाव्य] के विषय भी लिखते हैं जिनके देखने से अपने शास्त्रों में दृढ प्रतीति होगी संस्कृत भाषा प्राकृत भाषा अपभ्रंश भाषा ग्राम्य भाषा कारि बने हुये होय और क्रमसे सर्गान्तर इत्यादिकबन्ध मात्राबन्ध अक्षरबन्ध बन्ध होय सर्गका अन्तिम छन्द ! प्रथम छन्द से भिन्न होय और मुख्य प्रतिमुख्य गर्भ विमर्श निर्वहण रूप ५ सन्धिकारि युक्त होय संक्षेप रहित ग्रन्थ होय अत्यन्त उच्चहोय जिसमें अति विस्ताणता रहित परस्पर संबन्धरूप सर्ग होय प्रथम आरम्भ में आशीर्वाद नमस्क्रिया वस्तु निर्देश [स्वरूप] मंगलकार युक्तहोय और वक्तव्य वस्तु की प्रतिज्ञा तिसके प्रयोजन का उपन्यास कविप्रशंसा सज्जन दुर्जनके स्वरूप का विचार इत्यादि वाक्यों कारि सहित होय जिसमें एकसर्ग दुष्कर चित्र काव्य यमक काव्य कारि चिन्हत होय जिसमें सर्गका अन्त्य स्वअभीष्ट वस्तु कारि अंकित होय और चार (धर्मार्थकाममोक्ष) वर्गके फलककारियुक्त होय ॥शेषमग्रे॥

(यह पत्र बंबई मित्र प्रेस मथुरा मे छपा)

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १—८—१६ २४ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष	ता० २४ फरवरी सन् १८९६	अङ्क ११

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइयें ॥

मूल्य पेशगी डाकव्यय सहित केवल डेढ़रुपया है

प्रार्थना

यदि जैन गजट के ग्राहक जो अवश्य परोपकारी ज्ञात होते हैं एक एक ग्राहक और बढा देवैंतो दुगने ग्राहक होजावैं और फिर यह जैन गजट भूखा न रहे आशा है कि हमारी प्रार्थना को अवश्य हमारे जैनी भाई अंगीकार करके कोशिश करैंगे ॥

बाल्यावस्था

यह बात सब जानते हैं कि बाल्यावस्था में बालक को जिस प्रकार की शिक्षा मिलनी है जिस प्रकार वह मनुष्यों को प्रवर्तता देखताहै वहही काम आगेको वह बालक करने लगजाता है बाल्यावस्था नरम लकडी के समान है कि जिस प्रकार उस लकडीको मोड देवैं वह सूख कर वैसीही हो जाती है और फिर दूसरे प्रकार नहीं मुड सक्ती है इसही

प्रकार बाल्यावस्था में मनुष्यका जो स्वभाव हो जाता है वह फिर किसी प्रकार नहीं हटसका है इस कारण बुद्धि मानोंका यह बचन है कि बाल्यावस्था में उत्तम शिक्षा प्राप्त होनेका अवश्य उपाय करना चाहिये और बालक को खोटे काम होते हुवे देखने वा सुनने से दूर रखना चाहिये ॥ बुद्धि मानों नेतो यहांतक विचार किया है कि बालक जब तक माताके गर्भ में रहता है तो उसके गर्भके नौ महीने के अंतर में जो जो दशा उसकी माताकी रहती है जैसी जैसी वह गर्भणी अपने मनकी चेष्टा करती है जिस प्रकार वह प्रवर्तती है उसका असर गर्भ के अन्दर बालक परभी पड़ता है इस कारण गर्भणी स्त्रीको भा स्वछ रहने चित्त प्रसन्न रखने और खोटे विचारों से बचने की आवश्यक्ता है ॥ ऐ भाईयों यह सारी बातै हम जानते हैं और इनपर विश्वास भी करते हैं अपने मुखसे इस बातका बखान भी करते हैं कि बाल्यावस्था में बालक जो देखता है सोही सीखता है परन्तु नहीं मालूम क्यूं हम करते है इसके विपरीत ॥ अर्थात् बालकों को हम अपने

आप खोटीशिक्षा देते हैं और अनुचित बाते सिखाते हैं ॥ यह बाततो साधारण है कि बालकों के सामने हम अनुचित कार्य करते हैं परन्तु इससे भी अधिक हम अपने आप उलटी बातें सिखाते हैं ॥ अनुचित बातें सिखाना यह बालकों के साथ हमारा लाडप्यार होता है ॥ कोई बालक को यह सिखाता है कि पिता को गालीदे कोई यह सिखाता है कि माता को थप्पड़मार और चाचा की दाढी नोंचले इसही प्रकार और अन्य बातें सिखाइ जाती हैं ॥ यदि बालक को ताड़ना देनेकी आवश्यक्ता होती है याउस को किसी बात के करने से रोका जाता है तो यह कहाजाता है कि सिपाही आकर तुझको पकड़ लेजावेगा बिलाव वा हाव कू आकर तेरे कान काट लेगा या इसही प्रकार और किसी बातका डरावा दिया जाता है जिस के कारण अन्त में यह बालक डरपोक होजाता है और छोटी छोटी बातों से भय करने लगता है यदि बालक किसी वस्तु के वास्ते अधिक हट करता है तो उस को असत्य बोल कर बहकाया जाता है और इस प्रकार वह

कुछ दिन तक तो उन के बहकाये और फुसलाये मैं आता रहता है परन्तु थोडेही दिन पीछे वह यह बात मालूम करने लगता है कि यह लोग बिलकुल असत्य बोलते हैं तो वह असत्य बोलने को अच्छा और कार्य कारी कर्म समझ लेता है और असत्य बोलने लगता है इसही प्रकार अन्य सर्व प्रकार के खोटे और निन्द कार्य सीख जाता है ॥ विद्या हीन होने के कारण उसके माता पिता मूढ बुद्धि और मूर्खतो होतेही हैं इस कारण वह बहुत से काम मूर्खताई के भी उनको करते हुवे देखता है इस कारण वह बालक भी मूढ रहता है ॥ वह अपने मा बापको मिथ्यात्व सेवन करते और बिनाहिताहित बिचारे भेडा चालपर चलते हुवे देखता है इस कारण वह भी मिथ्यात्व होजाता है और अन्त को यह उसका मिथ्यात्व दूर होना कठिन होजाता है ॥

ऐ भाईयों इस कारण बाल्यावस्था मैं खोटी शिक्षा प्राप्त होने के कारण हमारी जाति के मनुष्यों की ऐसी अत्यंत न्यूनदशा होरही है जिससे जैन धर्मका नाम कलंकित होता हैं परन्तु क्या करैं जब मा बापही विद्या हीन और मूर्ख हों तो वह उचित शिक्षा कैसे देवैं अर्थात यदि स्त्री पुरुष दोनों विद्या वानहों तब उत्तम शिक्षा प्राप्त होसक्ती है ॥ इस लिये यह खराबी दूर करने के वास्ते स्त्रीओ को और पुरुषों को विद्या प्राप्त करनी चाहिये बल्की बालक को शिक्षा देने के वास्ते पिता से अधिक माताके विद्वान् होने की आवश्यक्ता है क्यूंकि बालक बहुत करके माता के ही पास रहता है॥ परन्तु ऐ भाईयो बडे शोक की बात है कि अपने प्यारे पुत्रों को हम लोग इससे भी अधिक॥

खोटी शिक्षा

देतेहै और उसका जैनधर्म त्याग कर अधर्मी और मिथ्यामती बननेकी कोशिश करतेहैं अर्थात् विद्या पढ़ने के वास्ते बहुधा जैनियों के बालक पादरियों की पाठशालामें पढतेहैं और केवल बालकही नहीं पढतेहैं बरण बडे२ नगरोंमें छोटी२ बालिकाभी ईसाईयों की पाठशालामें पढतीहैं जहां ईसाइ मत की शिक्षा दीजातीहै और ईसामसीह की उपासना कराई जातीहै अर्थात नमाज पढाई जातीहै हायर कैसे शोककी बात है कि बाल्यावस्था मैं अपने धर्मकी शिक्षा के ठौर अन्य मत की शिक्षा मिले फिर हम उन बालकोंसे इस बा

की आशा करैं कि युवावस्था में जैन धर्म को ग्रहण करलेवैंगे यह कदाचित नहीं होसक्ताहै ॥ हमने बहुतसे अपने भाईयों का यह कहना सुनाहै कि अमुक जैनी का बालक ऐसा खोटा है कि वह दो अक्षर अंगरेजीके पढ़कर विपरीत कार्य करने लगाहै और जैन धर्मकी बातोंको झूटी बताने लगाहै परन्तु ऐ भाईयो इसमें उसका दोष नहींहै यह तुम्हारा दोषहै क्यूंकि तुमनेही तो उस को ईसाईयों के मदरसे आदिकमें भेज कर यह सिखायाहै कि जैन धर्म झूटाहै और जैन पुस्तकों में सारी बातें मूर्खताईकी लिखीहैं फिर अब क्यूं पछतातेहो और हमारी समझमें तो इसमें तुम्हारा भी कसूर नहींहै क्यूंकि यदि किसी मनुष्य के घर खाने पीने की कोई सामग्री नहो और उसको अधिक भूख लगीहो और उसके पड़ोस में किसी मुसल्मान का घरहो और उसके घर खाना मौजूद हो और वह मुसलमान पुकार२कर कहताहो कि मेरेपास खाना मौजूद है जो कोई भूखा हो वह मेरे पाससे लेकर खालेवे तो भाई साहब तुम जानते हो कि भूखसे मनुष्य बेबस होजाताहै इस कारण लाचार जब अपने घर खाना नहीं मिलैगा तो मुसलमान के घरसे खाना लेकर खालेवेगा इसही प्रकार जब जैनियों के पास कोई ऐसा विद्यालय नहींहै जिसमें विद्या पढ़सकैं तो लाचार ईसाइयों के मदरसों में जाकर विद्या पढ़नी पड़तीहै और उनकी धर्मपुस्तक कंठ याद करनी और उनके देवता ईसाहमसी की भक्ति करनी स्वीकार करनी पड़तीहै ॥

परन्तु जब अन्त इस बातका सोचाजाताहै तो यही मालूम होताहै कि इसमें तुमही अपराधी हो क्यूंकि यदि चाहो तो अनेक विद्यालय बनासक्तेहो ॥ हाय हाय ईसाई पादरी ऐसे परोपकारी हों कि अन्य मतावलंबियों और अन्य जातिके मनुष्योंके विद्या सीखनेके वास्ते नगर२ और ग्राम२ मदरसे और पाठशाला नियत करदेवैं और जैनी भाई अपने ही बालकों के वास्ते कोई विद्यालय न बनासकें अन्यका तो क्या उपकार करेंगे ॥ ऐ भाइयो तुमको क्या हो गया उठो हिम्मत करो और कुछ लज्जा ग्रहण करो ॥ नहींतो जैन धर्म जाताहै ॥

संतोष

यदि किसी मनुष्यको छःखण्डका राज्य भी मिलजावे बरण इससे भी अधिक यदि वह द्वीपद्वीपान्तर का स्वामीभी होजावे तोभीयदि उसको संतोष नहींहै तो वह इतनाही दुखी है जितना भूखा कंगाल खाने बिन दुखी है क्यूंकि जैसे भूखेको खानेकी इच्छाहै ऐसेही मालिकको यह इच्छाहै कि अन्य कोई ऐसा

द्धिप लिखे जिसपर मैं राज्य करूं और इसके विरुद्ध निर्धन गरीब पुरुष यदि संतोष धारण करलेवै तो वह धनवान से अधिक सुखी है इससे यह बात स्पष्ट विदित होतीहै कि सुख धन धान्य और अन्य प्रकारके किसी वैभवमें नहींहै बल्कि सतोष में और दस किसी वस्तुके नहोनेमें नहींहै किन्तु इच्छामें इस कारण बुद्धिमान पुरुष सतोष ग्रहण करके सुख भोगतेहैं सब दशामें ॥ और मूर्ख दुखी रहतेहैं संतोष न रखनेके कारण अनेक प्रकारकी विभव होते हुवे भी ॥

संतोष से अधिक कोई सम्पति नहीं है जिसके पास संतोषहै उसके पास सब कुछ है ॥ संतोष केवल इसही भवमें सुखदाई नहींहै बल्कि अन्य भवभवान्तर के वास्ते पुन्यके भंडार भरने वालाहै इसके अतिरिक्त जो पुरुष संतोषी होता है वह पाप कर्म में नहीं प्रवर्तता है और दुष्ट कर्म नहीं करताहै और जिस के संतोष नहीं है वह न्याय अन्याय योग्य अयोग्य उचित अनुचित सर्व प्रकारके कर्म अपनी इच्छा पूर्ण करनेके वास्ते करनेको तत्पर होजाताहै ॥ असंतुष्टता पापका मूलहै और दुखोंका बीज इस कारण संतोष ग्रहण करना उचित है. चित्तको व्याकुल रखना योग्य नहीं है ॥

जैनकाव्य शास्त्रम्

अंक १० पृष्ठ १६ से आगे

चतुर उदात्त (गंभीर दाता) नायक होय जिसमें प्रसिद्ध नायक का चरित्र होय और पर्वत नगर सागर ऋतु चन्द्र सूर्य के उदय अस्त का समय उद्यान (बगीचा) जलक्रीड़ा मधुपान सुरत मन्त्र दूत सेनाके आवास प्रयाण युद्ध नायकके अभ्युदय (सुखसंपदा) विवाह विप्रलम्भ आश्रम नदी इत्यादिके वर्णन करि सहित होय सो महा काव्यहै सो ये पूर्ण विषय चन्द्रप्रभचरित्र धर्म शर्माभ्युदय नेमि निर्वाण काव्य राजमती परित्याग काव्य आदि में अच्छे वर्णन किये हैं-- कहिये एसा कोन पुरुष होगा जो इस दोष रहित गुण सहित अलंकार भूषित मनोहर सरस जैन मत कवि कुल उत्पन्न प्रौढ स्त्री रूप काव्य को अपने उरस्थलमें नहीं स्थापेगा ॥

क्रमशः

आपका शुभेच्छुक
पं० गौरीलाल जैन पद्मावती
पुरवाल — खुरई
जि० सागर
मि० मा० शु० २ सं ५४

धन पानेका फल

इस में कुछ सन्देह नहीं है कि पूर्वोपार्जित पुण्य कर्म से धनकी प्राप्ति होती है परन्तु धन पानेका फायदा जबी है जबकि उससे फायदा उठाया जावै व्यर्थ खोदेने वा जमा कर छोडने के वास्ते धन और मिट्टी बराबर है यद्यपि धन से विषय भोग आदिक की सामग्री प्राप्ति होसक्ती है परन्तु धन को इसी हेतु लगाना भी हमारी समझ में व्यर्थ खोदेना ही है धन से परोप कार दान धर्मोन्नति आदिक बहुत से ऐसे शुभ कार्य होसक्ते हैं जिनके करनेसे इस जन्म में भी सुख मिले और आगामी जन्मान्तर में भी आनन्द और वैभव की प्राप्ति हो सच्चो यश कीर्ति जगत में ऐसी प्रसिद्ध हो कि सदा कालके लिये स्थित रहै आज कल हमारे जैनी भाईयोंका ऐसा विचार नहीं रहा है वह अपने धन को महल मकानादिक बनाने में वा ईर्षा- द्वेष और वैर विरोध के कारण अदालतके झगडों में खोदेने वा अपनी सन्तान के विवाह में कुल्टा स्त्री पुरुषों के नचाने में अपने धनको लगाने को सुफल समझ ते हैं कारण यह है कि अविद्या रूपी अन्धकार हमारी जाति में अधिक फैल गया है जिससे हमारी विपरीति बुद्धि हो गई है परन्तु अब तक कुछ न कुछ जैन धर्म कायम है प्रिय पाठको यदि सर्व प्राणी अविद्या अन्धकार में फस कर विपरीति कार्य करने लगते तो यह उत्कृष्ट जैन धर्म अब तक नाम मात्र भी कायम न रहता इस से यह ज्ञात होता है कि जैन जाति में अब तक ऐसे महात्मा सज्जन धर्मानुरागी पुरुष मौजूद हैं जिन पर अविद्या अन्धकार का कुछ बस नहीं चला है और ऐसे ही पुरुषों के उपकार से अब तक जैन धर्म कायम है ॥ ऐसे भाईयो ऐसे उपकारी पुरुष कौन हैं उन में से एक महाशयका नाम हम लिखते हैं वह श्रीयुत सेठ गुरुमुखरायजी सुखानन्दजी को षाध्यक्ष दिगम्बर जैन सभा बम्बई हम इन महाशय को अपने सत्य हृदय से कोटिशः धन्यवाद देते हैं क्यूंकि आपने परमोपकारका काम किया वह यह है कि जैपुर पाठशाला में एक विद्यार्थी को उच्च श्रेणीकी विद्या पढनेका अति उत्साह था परन्तु धन हीन होने के कारण आप अपनीइच्छा

पूर्ण न कर सक्ता था उसकी यह इच्छा अति श्रेष्ठ थी इस कारण हमने बम्बई आदिक कई स्थानों में उसके इस उत्तम कार्य में सहायता करने की चिठ्ठियां भेजी सो बम्बई सभा ने उसके वास्ते चिठ्ठा करना चाहा जिस पर श्रीयुत सेठजी साहब ने बड़े उत्साह से कहा कि चिठ्ठा करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है हम अकेले ही दस रुपये मासिक दिया करें गे ॥ ए भाईयो आज कल जैन धर्म की स्थिति के वास्ते पंडितों की और विद्या प्रकाश की अधिक आवश्यक्ता है क्यूंकि दिन दिन विद्वानों और पंडितों का अभाव होता चला जाता है परन्तु धन वान पुरुष सब कुछ कर सक्ते हैं यदि वे चाहैं तो थोड़े ही दिनों में पंडित ही पंडित नजर आने लगें क्यूंकि जैसा श्रीमान सेठ गुरुमुखरायजी व सुखानन्दजी की कृपासे एक विद्यार्थी कुछेक दिनमें पूर्ण विद्वान होजायगा इसी प्रकार यदि एक २ धनाढ्य पुरुष एक २ विद्यार्थी को ही इस प्रकार सहायता दे कर विद्वान बनवाचा है तो कोई कठिन बात नहीं है और प्रति धनाढ्य एक १ ही विद्वान होजाने से सहस्रों विद्वान हो जावैं क्यूंकि परमात्मा की कृपा से हमारी जाति में ऐसे धनवान पुरुष बहुत हैं जो इतनी सहायता दे सक्ते हैं यदि वो चाहैं तो हम आशा करते हैं कि हमारी जाति के अन्य धनवान पुरुष भी अवश्य इस ओर ध्यान देंगे और जैन धर्म की डूबती नवका को बचाने में अवश्य उपाय करैं गे हम फिर श्रीमान सेठ गुरुमुखरायजी व सुखानन्दजी को धन्यवाद देकर इस लेख को समाप्त करते हैं॥

नहटौर

श्री पत्री महाशय धर्मोत्मा ही बाबू सूर्यभानजी योग्य निहटौर जिला बिजनौर जैन पाठशाला से पं० गनेशी लालका सविनय जैजिनेंद्र– मिती फागुन बदी ५ सम्वत् १९ ५२ का लाला बहाल सिंह की लड़की विद्वान जैन मत के रहस्य जान कार का विवाह जैन पद्धति से कोशिश कर मैंने पढ़कर कराया तथा यहां के ब्राह्मण से पढ़ाया जो यहां पर होना कठिनथा सो निर्विघ्नता के साथ लाला महावीर प्रसाद बिजनौर वालों की सहायता से पूरा होगया जैन म-

स्त्रानुसार विवाह जिन महाशय एव परमत वाले स्त्री पुरुषों ने सुना रोमांचित हो हर्ष के अश्रुपात से भरगये उस वक्त के आनन्द की वार्ता कहांतक लिखूं ॥

पं० गनेशीलाल जैनपाठशाला
निहटौर जिला बिजनौर

प्रियवर

जैनेंद्र —कृपा करके नीचे लिखे हुए मजमून को आप अपने जैन गजटमें प्रकाश कीजिएगा

बिरादरी और ग्रहस्थाचार्य की फिजूल खर्ची

इसमें किसी तरहका संदेह नहींहै कि इस समय में बहुधा लोक निर्धन और दुखी होते जातेहैं, बहुतसे कुटंब ऐसे देखनेमें आतेहैं कि जिनको एक बार भी भोजन नही मिलता और कपडे गहने कीतो कथाही क्या जाडेमें ठंडों मरते हैं. इस अवस्था में पहुचने के व्यापारकी कमी, दुर्भिक्ष और फिजूलखर्ची आदि अनेक कारण हैं लेकिन उन सबमें बिरादरी संबंधी विवाह आदि कार्यों की रीति रस्म पूरी करने को सामर्थ्यसे बाहर खर्च करना मुख्य कारण मालूम होताहै विवाह आदि ग्रहस्था चार्य के कामोंमें झूठी नामवरी और थोथी प्रतिष्ठा पाने को या सेखी दिखाने को और किसी दूसरे भाई या पडोसी के किये हुए कार्य को तुच्छ और अपने को अधिक दिखाय उनका मान खंडन करने को बहुत से अभिमानी पुरुष अपनी जमीन जायदाद और जेवर वगैरह बेच करभी खर्च करदेतेहैं और निर्धन होकर अपने स्त्री पुत्रादि कुटंब को दारिद्रकी अवस्थामें पहुचातेहैं और आपभी खेद खिन्न होतेहैं कर्ज रूपी पत्थर बांधकर दुखसमुद्रमें आप डूबतेहैं और अपनी संतान को डुबातेहैं खूब समझलो धन हीन करजदार होने से चितको स्थिरता नहीं रहती परिणाम हमेशह क्लेश रूप रहतेहैं और सच्चेधर्म में नहीं पलता उदार धर्म से शिथल होताजाताहै और अन्याय और अधर्म मार्ग में प्रवेश करना जाताहै जिसका फल यहांपर कारागार (जेलखाना) और परलोक में नर्क तिर्यंच के दुख पाने पडतेहैं अर्थात जो मनुष्य अपनी आमदनी से ज्यादा खर्च करताहै उस को इस टोटे के पूरा करनेको अवश्य झूठा, फरेबी, बेईमान, अविश्वासी लोभी आदि बनना पडताहै वह छल करताहै धोखा देताहै माल मारताहै आठ पहर ६४ घडी इसी उधेड बुनमेंरहताहै कि किसी तरह से लक्ष्मी हाथ आवै और इस टोटेके पूरा करनेके लिये अच्छे बुरे सब उपाय करताहै ऐसी अवस्थामें धर्म ध्यान करने या ज्ञानाभ्यास करने या धर्म के वास्ते कुछ द्रव्य

खर्च करने या पाठशाला औषधालय नियत करने में मदद करनेका उपदेश इसके वास्ते बिल्कुल निष्फल होताहै उसका ध्यानतो रुपये में लगरहाहै इस सदोपदेश को वह किस कानसे सुनें. ऐसी अवस्था में उसके वास्ते द्रव्यही इष्ट देवहै और द्रव्य कमाना उसका इष्ट धर्म है किसही तरकीब से द्रव्य हाथ लगे यही उसका ध्यान है इसी वास्ते शास्त्रका आचार्यों का पंडितोंका उपदेश उसको कुछ कार्य कारी नहीं होता

जो लोग कुछ विद्या पढगये हैं और ज्ञानवान है वहभी इस झगडे और आफतसे नहीं बचसक्ते क्योंकि यह बिरादरी की रीति है अगर वह बिरादरी में रहना चाहे तो इन खर्चों के मारेसे नहीं निकलसक्ता उसको बिरादरी की रीति रस्मके मुताफिक खर्च अवश्य करनेही पड़ेंगे ख्वाह वह उनको करना चाहे व न करना चाहे अवतक यह फजूल खर्ची दूर नहीं होती कोई उपदेश या उपाय उन्नतिका कार्य कारी नहीं होसक्ताहै इस वास्ते मैं इस कौमके मुखिया लोगों, पंचों, सरदारों, चौधरियों, धनवानों, विद्वानों और परोपकारियों से सविनय प्रार्थना करताहूं कि ए ! इस कौमके मल्लाहों यह किश्ती जिसके तुम चलाने वाले हो भवरमें पडी हुई गहरे पानी में गोते खारही है अब इसके डूबने में कुछ कसर बाकी नहीं रही है अगर अबभी तुमने इसकी नहा खबर ली तो फिर पताभी नहा लगेगा मगर साथही इसके यहभी यादरखो कि इस बेडेके डूबने में तुमभी न बचोगे तुम को भी साथही डूबना होगा इस वास्ते अगर तमको अपने भाईयों की कुछ परवाह नहींहै तो अपना और अपनी संतानका तो बचाव करो और इन कुरीतोंको हटाओ इसका कुल बोझ इस वक्त तुम्हारी गर्दन पर है- भला यह तो बतलाइये कि जिसका खर्च आमदनी से ज्यादा होतो वह धर्मात्मा रहसक्ता वा नहीं और यदि नहीं रहसक्ता है तो उसको अधर्मी और बेईमान बिरादरी न बनाया वा अपने आप बना ! मैं अपनी राय नोकस से तो यही कहसक्ताहूं कि जातिके अग्रेश्वर पंच और चौधरी जिनका धर्म यहथा कि अपनी जाति के भाईयोंसे फजूल खर्ची न करा कर उनको धनवान और ईमानदार बनाये रखते वेही पंच और चौधरी आगे होकर ज्यादार खर्च करवाते हैं और अपनी तमाम बिरादरी को निर्धन बनातेहैं यह प्रत्यक्ष देखने में आता है कि आज कल हमारे जैनी भाई गरीबों की रक्षा और शिक्षा पाठशाला और औषधालय तथा अनाथालयमें जिसमे ज्ञानकी वृद्धि हो शुद्ध आचारण हो और धर्म की रक्षा हो उस जगह

बहुतही सूक्ष्म खर्च करतेहैं आतिशबाजी रंडियों के नाचमें और मिठाई की ज्यो नारमें या हांडी झाड फन्नुस आदिसे सजी हुई महफिलोंमें या कागज़ के हाथी घोडा फुलवारी वगैरहमें या डोले आदि पर वखेर में सामर्थ से बाहर हजारों रुपये उडादेतेहैं पूजा दान या परोप कारी कार्य में कभी नहीं देते ॥

भाईयो विरादरी की रीति रस्मों का बंदोबस्त करना एक आदमी के हाथ नहीं है इस लिये सब गोष्ठी के सब पंच और मुखियाओं को आपस की ईर्षा भाव छोड कर सब विरादरी के लाभार्थ सर्व सम्मति से रीति रिवाज का बंदोवस्त करना उचितहै जो पुराने रिवाज लाभदायक हैं उनको रक्खें और जो हानिकारकहैं उनकी जगह नये लाभदायक रिवाज बना देवें लेकिन उन सब रिवाजों पर निगाह कम खर्च पर रखनी चाहिये ॥

जैनियों का दास
प्यारेलाल मास्टर
मंत्री जैनपुषार्थ सभा
इटावा
११-१-९१

शिक्षा

हम किसी बात के सुनेसे ऐसे दुखित और कोपित नहीं होते हैं जैसे कि शिक्षा के सुनने से क्यूंकि जब कोई हमको किसी प्रकार की शिक्षा करना है तो हमारे मन में यह विचार होता है कि शिक्षा करने वाला हमको अज्ञान और मूर्ख समझता है और हमारी बुद्धिका अविनय करता है इस ही कारण हम फौरन इस बात की तलाश में होते हैं कि जैसा यह शिक्षक हमको दोष लगाता है ऐसाही शिक्षक में भी अवश्य कोई न कोई दोष होगा उसको जानना चाहिये और प्रगट करना चाहिये इसही कारण हमारा यह स्वभाव होगया है कि जब कोई हमको किसी प्रकार की शिक्षा करता है तो तुरंत हम भी शिक्षक के दोष वर्णन करने लग जाते हैं ॥ हमारे इस दुष्ट विचार के कारण शिक्षा करने की प्रवृति इस भारत वर्ष में बहुत कम होगई है ॥ ऐ भाईयो यदि तुम सज्जन बनना चाहते हो यदि तुमको इस बात की इच्छा है कि तुम्हारी जगत में प्रशंसा हो तुम्हारे आचरण शुभ हों तुम नेक बनो तो तुमको चाहिये कि जो तुमको शिक्षा देवे उसको तुम अपना परम मित्र समझो ॥ और चाहे शिक्षा देने वाले में कुछ ही बुराई क्यूं नहो उसपर कुछ ध्यान

न करो बरण शिक्षा को विचारो कि ठीक है वा नहीं है यदि शिक्षा तुम्हारे हित कारी होतो अवश्य उसको ग्रहण करो और यदि शिक्षा तुम्हारे हित कारी न होतो चाहे कैसे ही बडे आदमी नेकही हो कदा चित न मानो ॥ देखो शास्त्र क्या चीज है कागजोंका एक गट्ठा है और कागज क्या है एक जड पदार्थ है ॥ मनुष्य चैतन्य है और शास्त्र जड परन्तु मनुष्य शास्त्रों का अधिक विनय करता है उसका कारण यह ही है कि शास्त्र में मनुष्य के हित कारी शिक्षा लिखी हुई हैं अर्थात शास्त्र उत्तम शिक्षाओंके कारण विनय करने के योग्य हैं वास्तव में वह जड पदार्थ हैं तो क्या हुवा ॥ ऐसाही हम को यह उचित है कि शिक्षा करने वाले की विनय करें ॥ जो मनुष्य हमारे दोष हम पर प्रगट करता है उससे अधिक मित्र हमारा कौन होगा क्यूंकि मनुष्य को अपने दोष आप नहीं मालूम हुवा करते हैं दूसरे के प्रगट करने से हम अपने दोष जान जावेंगे और अवश्य उनके दूर करनेका उपाय करेंगे इस कारण शिक्षा करने वाले से कभी कोपित नहीं होना चाहिये ॥

बदला लेना

मनुष्य में यह बात देखी जाती है कि यदि कोई उसको किसी प्रकार की पीडा देता है वा अप्रशंसा करता है तो वह मनुष्य तुरंत पीडा देने वाले को भी पीडा पहुंचाने की इच्छा करता है यह कैसी धृष्टताई की बात है क्यूंकि यदि किसी मनुष्य ने मुझको किसी प्रकार की पीडा दी है तो चाहे मैं कितना ही उसको दुःख दूं तो भी मेरी पीडा में किसी प्रकार कभी भी नहीं हो सक्ती है बरण पीडामें अधिकता होती है क्यूंकि पहले तो मुझको अपनी ही पीडाका क्लेश था परन्तु जब मैने दूसरे को पीडा देने की चेष्टा की तो अवश्य चित्त में एक प्रकार की व्याकुलता उत्पन्न होगई और जब तक पीडा न पहुंचे मेरी व्याकुलता बराबर बनी रहैगी परन्तु यह बात मेरे आधीन नहीं है कि मैं अवश्य जिस को चाहूं पीडा देसकूं इस कारण बहुधा मैं अपनी इच्छा को पूरण कर भी न सकूंगा और इस कारण मेरी व्याकुलता जन्म

पर्यन्त रहैगी और मैं जिसको पी ड़ा देना चाहता हूं उसको और उसके अन्य मित्रों को अपना अधिक दुश्मन बनालूंगा और आगामी जन्म में दुख पाने के वास्ते पाप कर्म अपने साथ ले जाऊंगा ॥ इस से यह बात विदि त होती है कि जो पुरुष बदला लेने की चेष्टा करता है वह अपने वास्ते दुःखों की एक सदा काल के वास्ते संतान उत्पन्न करता है मनुष्य को सदा शान्तवान और क्षमावान रहना चाहिये और हर एक क्लेश की बाबत यह सम झना चाहिये कि यह मेरे पूर्वो पार्जित पाप कर्म का फल है जि स मनुष्य के द्वारा मुझको क्लेश मिला है वह एक बहाना है ॥ यदि कोई मनुष्य लाठी से किसी को मारे तो जिस के चोट लगी है उसके तो लाठी ही लगी है पर- न्तु इस में लाठीका कुछ कसूर नहीं है बरण लाठी मारने वाले का है इस कारण जो कोई लाठी को दंड देवे वह मूर्ख है ऐसाही दुःख भी पाप कर्म से ही मिल ता है वह मनुष्य जिस के द्वारा दुःख मिलता है वह लाठी के तु ल्य है यदि पाप कर्म न होते तो मनुष्य की क्या मजालथी जो किसी प्रकारका दुःख देसक्ता ॥

चिट्ठी

श्रीयुतधर्मानुरागी परोपकारी भाई सूरजभानजी वकील सम्पादक जैनगज ट जैजिनेन्द्रः समाचार आगर मुल्क मालवा मुलाहजे फरमाइये आपके जैनगजट नंबर १ लीः ७ ने इस जगह बतौर उपदेशक काम किया यानी जै न सभा व पाठशाला जो यहां पहिले कायम होकर बंद होगईथी उसमें सिर्फ जैनसभा का पुनर्जन्म संवत मिती मा घ शुक्ला १४ चतुर्दशी बुधवार सायं- काल को ७ बजे पुष्पनक्षत्र में ब मुकाम पंचायती मंदर शहर आगर होगया और शहर और छावणी के कुल भ्रा तृ गण इकट्ठे हुये और अगवानी सभा लाला हरिकिशन बजाज छावणी आ- गर बने उन्होंने अव्वल मंगला चरण के पश्चात आपके जैनगजट नंबर ७ के अंतिम लेख (अगवानी पुरुष) को खडे होकर सभामें सुनाया और सभा हर अष्टमी और चतुर्दशी कोहोनेकी राय प्रकाश की उसी वक्त लाला बंसीधर जी ने सभा संबंधी कुल खर्च एक सा- ल के वास्ते अपने जिम्मे लेलिया कि सी भाईने नित्य दर्शन की प्रतिज्ञा कर डाली भाई साहब आपके जैनगजट ने

यहांके जैनियोंको आलस्य रूपी गाड़ी से उतार उमंग रूपी तुरंग पर सवार कराकर उन्नति नगर के जाने का बिचार करा दिया अगरचे यह सभा पुरानी है तथापि पुनर्जन्म की अपेक्षा अभी कलकी जन्मी है फाल्गुण कृष्णा अष्टमी को दुतिय अधिवेषण होगा इस सबबसे यह बालक सभा अभी आप के जैनगजट को पढ़२ कर बोलना सीखैगी पश्चात बड़ी होने पर पाठशाला भी कायम होनेकी उम्मेद है जियादह क्या अरज करूं आपको धन्यवाद और श्रीमान श्रेष्ठ लक्ष्मण दास जी साहब सी०आई०ई०सभापति जैनमहासभाको धन्यवाद कि जिनकी कृपा दृष्टिसे जैनगजट के जरिये जैन धर्मोन्नति व जातोन्नति श्रवणमें आते२ द्रव्य में आगई आगें शुभ मिती माघ सुदी १५ संवत १९५२ का: ॥

हस्ताक्षर

आप जैसे जैन धर्मानुरागी परोपकारी सज्जनों का दास सूरज लाल

गुमास्ता खजानचीजिलाआगर

मालवा

वैद्य की आवश्यकता

हमको अपने औषधालय में एक ऐसे वैद्यकी आवश्यकता है कि जो चरक सुश्रुत वाग्भट्टादि वैद्यक ग्रंथोंका पाठी तथा क्रिया कुशल और अनुभवी हो मासिक वेतन योग्य दिया जायगा जिनको यह कार्य्य करना स्वीकार हो नीचे लिखे ठिकाने से पत्र व्यवहार करैं

गोपालदास वरैया उपमंत्री

दिगंबर जैन सभा

दसरा भोई वाडा

मुंबई

लाला बनवारी लाल उपदेशक की रिपोर्ट

श्रीभाई सूरजभान को बनवारी लाल हकीम की जैजिनेंद्र पहुंचै आगें जैनगजट अंक ८ का आया यह गजट यहां सबको सुनाया गया और यहां झम्मनलाल, चौधरी साहबनें उसी वक्त सब पंसारियों को बुलाया और करीब १४. रुपये का चिट्ठा कराया मिती फागुण सुदी ८ से चैत वदी १ ईकम तक पाठ तेरैदीपिका विधान सहित होगा होली खेलनेकी कैई जनोंने आखडी कीहै कि न खेलेंगे मैं धन्य वाद देताहूं झम्म

लाल चौधरी को जिनौंने खेल होलीका मेट करके धर्म मार्ग में लोगों को लगाया

अयोध्या नगरी सोनेकी

बाबू दुलीचंद की चिट्ठी जो लाला धर्मसहाय के नाम आई है उससे हमको यह मालूम हुआहै कि सेठ मूलचंद साहब अजमेर वालों ने कई लाख रुपये लगा कर सोनेकी अयोध्या नगरी बनवाई है यह नगरी तीस वर्षसे बन रही थी अब तय्यार होगईहै इस नगरी का मेला जैपुरमें चैत्र वदी ३ से चैत्र बदी १२ तक होगा॥ नहीं मालम सेठ साहबने इस मेलेका पूरा व्योरा जैनगजट में प्रकाश करनेके वास्ते हमारे पास क्यूं नहीं भेजाहै जिससे सब भाईयों को इसका हाल मालूम होजाता॥

चिलकाना जिला सहारन पुर

लाला अजितप्रसाद चिलकान से लिखतेहैं कि यहांपर पण्डित धर्म दास साहब उपदेशक पधारे इनके शुभ उपदेशसे सभा नियत होगई है पंद्रह दिन पीछे इतवार का हमेशा हुवाकरैगी लाला मंगल सैन रतन लाल सभा पति और अजितप्रसाद गिरधर लाल मंत्री मुकर्रिर हुवे हैं अगामी सभा में फिजूल खर्ची के दूर करने का प्रबन्ध किया जावगो उपदेशक साहब के यहां पर तशरीफ लाने से अत्यंत लाभ हुवा है॥ उपदेशक फंडके वास्ते यहां पर चिट्ठा इस भांति होगया है और आगामी सभामें औरभी होजावेगा॥

१२, लाला मंगलाल गिरधरलाल
८, लाला रतनलाल गिरधरलाल
६, लाला मंगलसैन अजितप्रसाद

ज्योतिषरत्नपंडित जीयालालकीरिपोर्ट

मिती माघ कृष्णा० २ सम्बत १९५२ की सायंकाल तक मैं शहर मेरठ मेले में था, अगले दिन देहली आया अनेक लोगों ने मिलकर उपदेशक फन्ड की सहायता के लिये निवेदन किया, लाला मांगीलालजी के मकान पर एक धर्म धुरंधर भाईने कहा मेरा नाम प्रकाशित न करना जब जैन मन्दिर रियासत जीन्द और

पावापुरजी के लिये चन्दा लिखा-जायगा तो मैं तीन सौ ३००, रुपये अपने पास से दूंगा और जो कुछ सहायतका काम होगा वह भी करूंगा, धन्य है ऐसे धर्म रसिक साहसी प्राणियों को—मैं माघ कृष्णा० ९ को छावनी गुरुमाव गया रात्री के समय जैन मन्दिर के बाडे में लाला तृषारामजी बाबू रतनलालजी मुन्शी प्रियालालजी मुन्शी कन्हैयालालजी भ्रातृगण से मिला बहुत काल तक वार्तालाप हुआ, लाला तृषारामजी ने फरमाया बाबू सूरजभानजी को लिख देना जैन गजट बराबर भेजते रहैं बन्द नहीं करैं मूल्य भेज देवेंगे, मुन्शी कन्हैयालाल साहिब कानूनगो तहसील ने स्वीकार किया इस तहसील में आने वाले जैनी लोगों की जन संख्या लिखलिख हकीम उग्रसैन साहिब के पास सरसावा भेजते रहैंगे फिर बाद शाह पुर में जैनी पंडित की आवश्यक्ता है मैंने कहा वेतन क्या दोगे तब उसने कहा मैं बिरादरी वालों से पूछ कर उत्तर पठाऊंगा परन्तु आज कल कोई उत्तर नहीं आया बाद शाहपुर के जैनी धर्म कार्य में सब से पीछे रहे जाते हैं यह नहीं विचारते यह समय प्रमादका नहीं है, इस अवसर पर मुन्शी जमीयतरायजी से मिलनातो हुवा पर कुछ वार्तालाप नहीं होसक्ता अगले रोजमें गयी हरसरू होता हुआ फर्रुख नगर आया और महासभा के दिये हुवे कार्योंका पोषण किया, फर्रुख नगर के जैनी लोगों में व्यर्थ व्यय मिटानेका कार्य भाई लोगों ने अपने हाथ में लिया है रात्री को शास्त्रजी बचे पश्चात कुछ समय तक यही चर्चा रहती है, इस लिये आशा है कि शीघ्र यह कार्य सफलीभूत होगा फर्रुख नगर के निकट में फरीदपुर निवाडी लुहारी आदिक स्थानों में जहां जहां जैनी रहते हैं उनकी मनुष्य गणनाका नकशा भर हकीम उग्रसैन साहिब के पास सरसावे भेज दिया गया है, और मेरे बुलाने को छावनी अम्बाला फीरोजपुर बल्लबगढ रोहतक किराना बीर पुर सिवनी छपारा बागपत आदि अनेक स्थानों से पत्र आये हैं मैं जहां महामंत्री महाशय की आज्ञा होगी वहांका प्रयाण करूंगा ॥ शुभम्

हस्ताक्षर जीयालालके ॥

रथयात्राप्रयाग

ता० २४ जनवरी से चौबीस पाठ विधान हुआ और ता० २५ को पूर्ण हुआ ता० २६ को रवि वार के दिन १२ बजे दिन के श्रीजी को नालकी में विराज मान कर कुंज गलियों में होते हुये बहादुरगंज की सडक पर जय २ कार करते पहुंचे वहां पर श्रीजी को नालकी से रथमें वि- राज मान किया सो बडी जय जय हुई अब श्रीजी के रथका हा ल सुनिये ॥

अव्वल श्रीजीका रथ उसके सामने मंडप शामियाना में भाई शिवलाल अलवर निवासी अप ने पुत्र सहित बीनबाजा बजा ते थे और श्रीजी की स्तुति करते हुये अनेक जातिके मनुष्यों के दिल को लुभाते थे जो कोई उनका गाना सुनताथा वाह २ करके खडा रहताथा बाद को हार मोनिया बाजा मृदंग के साथ लाला मुन्नालालजी जैनियों के तथा अन्य मतियों के दिलों में श्रीजीकी स्तुति करके अमृत ब- रषाते थे झांज बाजे झनकार करते थे फिर विद्यार्थी अपने दं- डों के साज में श्रीजीका उत्सव करतेथे उसके बाद नालकी सिं- घासन आदि की वेदी चलती थी अंगरेजी बाजों की ध्वनि में भी जय जय शब्द निकलताथा उस- के बाद इन्द्रों की चौकियों में इ- न्द्रगान करते थे बाजेवाले भी अपनी आवाज में जय जय को मिलाते थे इधर अहिंसा परमो धर्मका तख्ता भी धर्मका रूप बत लाताथा बादको ऊंटहाथी आदि सवारी चलती थी झंडे इधर उधर से फहराते थे जिधर से देखो उ- धर से ही जैनियों के रथकी आवा ज आतीथी यहांतक चौक में हो ते हुये संध्याको ५ बजे मंदिर जी में श्रीजी को विराजमान क र अपने ग्रहको पधारे ॥

इतिशुभम् आपका धर्मस्नेही

सालिगराम

प्रश्न

लाला बच्चू लाल जी इ- लाहा बाद निवासी अपना एक प्रश्न जैनगजट मैं छपवाना चाहते हैं सोप्रकाश कियाजा जाता है ॥

कलंकियों और अर्ध कलं कियों का कथन किसशास्त्र में बिशेषता करेहै ॥ उत्तर पुराण में जो कुछहै उसको मैंने देखाहै ॥

(यह पत्र बंबई मित्र प्रेस मथुरा में छपा)

१

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १–८–१६ २४ता •
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष	ता० ८ मार्च सन् १८९६	अङ्क १२

शोक

वडाही अनर्थ हुआ मिती माघ कृष्णा ९ के दिन श्रीमान पंडित मुन्नालालजी मंत्री जैन सभा करहल परलोक पधारे सो समस्त ही जैनी भाई तथा अन्य भाई इनके मरणका पश्चात्ताप कर क्षिणेक मूकी भूमिहै उक्त महाशय की गुणज्ञता ज्ञान विद्या की निपुणताका हाल हम इतना ही लिख सके है कि यहा की धर्मोन्नतिका कारण वेही थे जो भादों के दशलाक्षिनी दिवसों में जल यात्रा कलशाभिषेक यथा ज्ञान विद्या कर पूजन पाठ कथा श्रवण करा उने कर तथा कार्तिक वदी १४ निर्वाण गमनोत्सव तथा चैत्र के मेलेका उत्सव तथा जैन सभा के मुख्य कर उपकार कथे और शास्त्र अभ्यास और आचरण आपके बहुत ही प्रशंसा योग्य थे जैन महासभा मथुरा के उपदेश सें पहिले आप को सभा स्थिति कराने में बडाही प्रेमथा करहल ग्राममें आप बडे परोप

कारी थे और धर्म स्नेह से सं०
१९ ४६ से सभा काइम कराके
अनेक अच्छे २ उपदेश देते रहे
थे आप श्रीगिरनारिजी की जात्रा
को गये थे उस वक्त आपने अज-
मेर में सभा करके व्याख्यान दि-
याथा सब लोग सभावर्त्ती अ-
त्यंत हर्षित हुए थे और श्रीगि.
रनारजी में श्रीजी की जलेव हुई
थी उस समय आपका गाना
सर्व जाति परजाति सुनकर अ-
त्यंत मोहित हुए आपके गुण
कहांतक वर्णन किये जावें बहुत
से मनुष्य आपके गुणों से जान
कारहैं करहल एक ग्रामहै आप
ही के नाम से प्रसिद्ध होगया
कर्म प्रबल है ऐसे मनुष्य परोप
कारी धर्मात्माका अल्प आयु
होकर मर्ण अत्यंत हानि कारी
जाति उन्नतिका है करहल की
सभा की तो जड आपही थे ॥

भेजा करहल से लाला फुल-
जा रीलाल सभा पति करहल ने

पंडित भोलेलालजी जैपुर

साम्प्रतं भारतं वर्षं रुग्णा चा-
स्त्यति पीडितम् । यद्यप्यस्य प्र-
तीकारे प्रयतन्ते भिषग्वराः ।१।
परन्तु लब्ध मस्माभिरेक मद्भु-
त मौषधम् । आत्म शुद्धे हेतु

मंगभूतं यत्सर्वं स्यास्य वर्त्तते । २ ।
य कृद्धि वृत्त्यर्थ मेतस्य सेवनं चेद्
यथा विधि । क्रिये तावश्य मे
वस्याल्लाभो धिक तरस्तदा । ३ ।

औषधिपत्रम्

बीजे सत्यमयं पत्रं सन्तोषः
कुसमं तथा । विद्यामयं शुभाचारः
क्यातोयः शर्वताक्रयथा । ४ ।
शास्त्र स्वाध्याय एवायं विशुद्धो
ऽर्कतयामतः । औषधीनां पत्रमे
तद् विधिरग्रे निगद्यते । ५ ।

विधिश्च

इमानि मृण्मये पात्रे औषधा
न्युद्य मात्मके । निधाय साधयेत्
सम्यक क्वथित्वोत्मा हवन्हिना
। ६ । सुसिद्ध मौषधं चैतत् पूत्वा
निर्णय वाससि ईर्षा द्वेषादिकबु-
सं निरसार्याशु पिबेत्सुधीः । ७ ।

अथसंयमः

समयस्य धनस्यापि व्यर्थव्यय
विधेस्तथा । कुनीतेः संयमः कार्यो
गतानु गति कर्मतः । ८ ।

भाषा लेख

भरत खण्ड दहकाल यह पी
डित रुग्ण विशेष । यदपि याके

ननन कों पचत सुवैद्य अशिषे।
पर इमको यह औषधी मिलीहै
अद्भुत एक। याकों सेवै विधि स
हित मिटिहैं रोग अनेक। २।

औषाधिपत्र

सत्य बीज सन्तोषही पत्र सविद्या
फूल। शर्वत सुकृत सुअक है
शास्त्रमनन अनुकूल॥उत्साहात्म
क अग्निकी इनके देकर आंच।
उद्यम मृन्मय पात्रमें करै औषधी
जांच॥ छाणें निर्णय वस्त्रमें सिद्ध
औषधी जानि। ईर्षा द्वेषादिकन-
को त्यागे आकस मानि। ५।
पिवै औषधी रसमयी यह रस
परम विचित्र। संयम राखै सर्वदा
आतिम होय पवित्र॥ ६॥

संयम

देखो देखि कुचाल में व्यर्थव्य
यहि कुपथ्य। समय और निज
द्रव्य को संयम यामें पथ्य। ७।

चिट्ठी

---o---

श्री यशी लाला सूरजभान
साहबको लाला फुलजारीलालकि
जैजिनेद्र प्रवर्तो। आगें रथयात्राका
मेला करहल मिती चैत्र वदी ९
रविवार को श्रीमद्देवाधिदेव
रथमें विराजमान होकर जलेव हो
कर जोग मन्दिर में विराजमान हो
यँगेंजी तहां तुर्य४ पर्यंत सार द्वय
द्वीप विधान होयगाजी औररात्रि
कों आठ बजे से ज्ञान सूर्योदय
नाटक नित्यप्रति चारि बजे रात्रि
तक हुआ करेगा इसको आप छा
प देना जैनगजट में और एक पत्र
मरसी पंडित सुवासीलालजी
मंत्री जैन सभा करहल भेजा है
सो छाप देना मिती माह सुदी
११ सम्वत् १९ ५२॥

संसार अवस्था

---o---

यह संसार दुःख कष्टोंसे सर्वत्र परिपू-
र्ण है इस संसार में ऐसे चोर फिरतेहैं
कि जो मुखसे कुछ नहीं बोलते और
रात्रि दिवस चोरी में लगे रहतेहैं यह
चोर रात्रि और दिन है जो शीघ्रतासे
घूम कर नित्य प्रति हमारे आयुकों घ-
टातेहैं इस असार संसार को स्थिरता
नहीं है मृत्यु इसको घेरेहुएहै इस कार
ण संसार अवस्था में सुख मान कर क
दाचित निश्चित होनानहीं चाहिये पल

पल जो व्यतीत होताजाताहै उतनी ही आयु घटती जाती है इस कारण एक पलभी व्यर्थ नहीं खोना चाहिये वरन जो काम कल करना वह आज ही कर लेना चाहिये क्योंकि मृत्यु का भय ह२ समय हमारे सिरपर है कौनजानता है कि आजकी रात्रिको कौन२ यमदूत का ग्रास बनेगा और वह प्रातःकाल के प्रकाशको नहीं देख सकेगा यदि मनुष्य बाल्यावस्था से ही श्रेष्ठ कार्य्य करने में प्रवृत्ति करें तो वह अवश्य कुछ कार्य करसकेगा नहीं तो बहुत से मनुष्यों के हृदय में पश्चात्ताप यही रहजाता है कि हम अमुक कार्य न करसके, दुष्ट कार्य्य करनेके वास्ते चौरासी लाख योनिहैं परन्तु शुभ कार्य्य के वास्ते केवल १ मनुष्यही योनि है इस कारण यदि कोई दुष्ट कार्य की इच्छा रखता हुआ मरजावे और अपनी इच्छा पूर्ण न करसके तो उसको अधिक पश्चात्ताप नहीं होगा क्योंकि जन्मान्तर में दुष्टताई करसकाहै परन्तु श्रेष्ठ कार्य की इच्छा रखताहुआ मनुष्य यदि अपनी इच्छा पूर्ण किये बिना पहिले मरजावे तो उसके पश्चात्ताप की कोई सीमा नहीं है क्योंकि उसको मनुष्य जन्म फिर कब मिले इस कारण सज्जन पुरुषों को अपने शुभ कार्य करने में बहुत शीघ्रता करनी चाहिये जिससे इस लोक और परलोक दोनों में यश और मुक्की प्राप्ति होगी ॥

१ चुटकला

एक प्रकारके वृक्ष पुष्पराग होते हैं अर्थात् फूलतो उनके अत्यंत सुगंधित होतेहैं परन्तु फलित नहीं होते, दूसरे प्रकारके वृक्ष, साल होते हैं जैसे आम्रादि वह जैसे फूलतेहैं वैसेही फलतेहैं तीसरे प्रकार के वृक्ष वह होतेहैं कि जो फलते हैं परन्तु फूलते नहीं जैसे कटहल— यही अवस्था मनुष्यों की है, एक प्रकारके मनुष्य वह हैं जो कहते सब कुछहैं परन्तु करते कुछ नहीं दूसरे वह मनुष्यहैं जोकुछ कहते हैं वही करते हैं तीसरे प्रकारके वह मनुष्य हैं जो करके दिखा देतेहैं परन्तु पहिले कुछ नहीं कहते ॥

२ चुटकला

वास्तव में अंधा, बहिरा, गूंगा, कौन है अंधा, वह है कि जिसकी हृदयरूपी चक्षु परमार्थ को नहीं देखती है

बहिरा वहहै जिसके कानमें धर्मोपदेश के शब्द नहीं पडतेहैं

गूंगा, वह है जो दूसरे की भलाई वार्ता नहीं करता ॥

३ चुटकला

मनुष्य पुण्यफल की इच्छा करते परन्तु पुण्योपार्जन नहीं करते ऐसेही इसी प्रकार सब मनुष्य पाप फलसे बहुत

डरतेहैं परन्तु पापकरने से नहीं डरतेहैं॥

धन और दान

[१]जोकुछ द्रव्यव्यय होगया वह कभी हमारे पासथा

[२] जो कुछ दानकर दिया है सो हमारे पास है

[३] और जो द्रव्य छोड मरे सो खोदिया

मूर्खका यह धर्म है कि द्रव्य उपार्जन करो और उसके आभूषण बन वाओ— कंजूसका यह धर्म है कि धन उपार्जन करो और रखलो— उदार दाताका यहधर्म है कि द्रव्य उपार्जन करो और दान दो— जुए बाजका यह धर्म है कि द्रव्यो पार्जन करो और खोदो— बुद्धि मानका यह धर्म है कि द्रव्यो पार्जन करो और शुभ फलदायक कार्य में लगाओ जब द्रव्यको उचित रीति से खर्च किया जावे तबही उससे उपकार के काम होसक्ते हैं— यदि मनुष्य के पास धन होगातो वह उससे अपना और दूसरों का बहुत भला करसक्ता है परन्तु यह कार्य तभी होसक्ता है जब कि यह समझाजावे कि धन उसे नहीं कहते जो जोडकर रखदिया जावे या व्यर्थ बरबाद कर दिया जावे अनाथो की पालना करना मनुष्य का मुख्य धर्म है और बहुधा करके धर्मात्मा और धनाढ्य पुरुषों का यह आवश्यक कार्य है,बहुत से मनुष्य इस बात की इच्छा करतें कि जगत में नाम उनका विख्यातहो और बहुत प्रतिष्ठित समझे जावें अपनी थेलियोंका मुहु खोल देते हैं और आंख बंदकर बहुत द्रव्य लुटा देते हैं परन्तु इस प्रकार धन लुटा देनेसे निस्संदेह नामतो प्रकाशहो जाता है परन्तु मूर्खता में और कोई कार्य सिद्ध नहीं होता सिवाय निर्धनी होजाने के— उचित रीति से द्रव्य के व्यय करने में यश कीर्ति भी बहुत फैलता है और अपना और पराया उपकार भी होता है॥ औषधालयनियत कर प्राशुक औषधी रोग ग्रसित पुरुषों को देना विद्यालय नियत कर विद्याका प्रचार करना पुस्तकें बांटना पारितोषिक देना दुखित भुखित के वास्ते अन्नदान देना अनाथालय बनाना आदिक बहुत से कार्य हैं जिन में द्रव्यव्यय करने से जगत में नाम भी विख्यात होता है और पुन्य कर्म भी बंधता है धर्म बढता है और जगत का उपकार भी होता है इस प्र-

कार द्रव्य व्यय करने वालेका चित्त सदा शांत और आनंदित रहता है– इस प्रकार केवल धनाढ्य पुरुष ही नहीं करसक्ते हैं वरण इन कामों में सबको प्रवर्त्तना चाहिये अधिक धन वान अधिक धन लगासक्ता है और स्वल्पधनी कम धन लगासक्ता है परन्तु यदि धन हीन हो तो कुछ नहीं करसक्ता– जो पुरुष अपने धनको व्यर्थ कार्यों में लगा देते हैं वह निःसंदेह निरधनी हैं और कुछ नहीं करसक्ते हैं ॥

जिला रोहतक

हमारे पास एक पुस्तक उक्त जिला की शादी [विवाह] गमी [मृत्यु] आदिके व्ययकी कमी की आई है जिसके देखने से यह मालूम होता है कि कुल जिले के महाजनों ने एकत्र होकर व्यर्थव्यय दूर करने के हेतु यह पुस्तक तैयार की है जिससे उक्त जिले के हरेक कसबे और शहर में इसका प्रचार होकर व्यर्थव्यय कुल जिले से दूर होजावे– इस में तीन दरजे रक्खेहैं– पहिला दरजा वह समझा जावेगा जिस की आमदनी सालाना ८०००, रु० से जियादा हो दूसरा दरजा वह ख्याल किया जावेगा जिस की आमदनी सालाना ४०००, रु० से अधिक हो और इससे कम आमदनी वाला तीसरा दरजा समझा जावेगा इस प्रबन्ध पत्र अर्थात दस्तुरूल अमल में पहिले दरजे के वास्ते विवाहका कुल खर्च २०००, रु० और दूसरे दरजेका १०००, रु० और तीसरे दरजेका ५००, रु० रक्खा है और उसकी तफसील अर्थात ब्योरा भीलिखा है भातका खर्च पहिले दरजे के वास्ते २००, रु० दूसरे दरजे के वास्ते १००, रु० तीसरे दरजे के वास्ते ५०, रु० रक्खे हैं ॥ इस ही भांति अन्य खर्चों की बाबत लिखा है जिससे मालूम होता है कि खर्च में अधिक कमी की गई है ॥ अन्य अन्य जिलों के भाईयों को भी जिले रोहतक के भाईयों की भांति प्रबन्ध पत्र विवाह मृत्यु आदि रसमों के खर्चों के तैयार करलेने चाहिये क्योंकि व्यर्थ व्यय से यह जाति न्यून दशा को प्राप्त हुई जाति है ॥

क़सबा सोनीपति जिला देहली

जैन प्रचारनी सभा सोनीपत से एक पुस्तक हमारे पास आई है जिस में वह प्रबन्ध लिखे हैं जो

व्यर्थव्यय के दूर करने के वास्ते किये गये हैं ॥ कसबे सोनीपति में जैन प्रचारणी सभा की कोशिश से विवाह और वृद्ध मृत्यु के समय पर बखेर करना वा बाढा देना और आतिश बाजी और बाग बहारी लेजाना सर्वथा बन्द किया गया है इसही भांति अन्य व्यय में भी अधिक कमी की है हमको यह मालूम हुवा है कि जैन प्रचारनी सभा सोनीपति बहुत दिनोंसे नियत है और कुछ दिन हुए इस सभाने वह उन्नति की है कि किसी सभाने न की होगी परन्तु अब किसी कदर सुस्ती है ॥ हम सोनीपति के भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि यह समय सुस्तीका नहीं है वरण दिन दिन उन्नती होनी चाहिये और अन्य२ भाईयों को नमूना बन कर दिखलाना चाहिये ॥

जातीयधर्मकीउन्नती

संपूर्ण मनुष्योंको यह जानना चाहिये कि इस संसार में देह धारियों को दुखही दुख दीखपड़ता है परन्तु कितनेक अज्ञानी पुरुष अपनी अज्ञानता से खान पानक आदिकोंको सुखरूप मानतेहैं जो यदि विचार कर देखा जावतो वह सुख नहीं है बल्कि क्षुधात्रिषा शीतादिक रोग दूर करने के लिये औषधीहैं जैसे कि मनुष्योंको वात, पित्त, कफ, इन तीनों के कुपित होनेसे ज्वर, खांसी, अजीर्ण दस्त आदि रोग होतेहैं और उनके होने से शरीर सहित जीव जीव दुखित होताहै तब अनेक प्रकार की औषधी आनंदभैरव कटहरीसार संजीवन आदि वटी और तालीसादि चटनी को भक्षण करके रोग निवृत करतेहैं इसी तरह क्षुधा त्रिषा शीत उष्णादि कर शरीर सहित जीव दुख पाताहै सो दुख दूर करने के वास्ते अन्न दुग्ध घृत मिष्ठानादि कर अथवा शीतल जलादिकर वा वस्त्रादिककर पवन आदि करके जैसा दुख होताहै वैसाही उपाय करके उन दुखोंके लिये कुछ थोड़ी देरको मिटाताहै परन्तु फिरभीकुछ समय पीछे अपने२ समय पर वो दुख फिर आनकर खड़े होजातेहैं ज्वर खांसी आदिकतो कभी२ इस मनुष्यको सतातेहैं परन्तु क्षुधात्रिषा हर वक्तही सताते रहतेहैं इससे यह जानना चाहिये कि यह जीव जबतक संसार अवस्थामें रहेगा तबतक इस जीवको ये सताते रहेंगे अर्थात दुखितही रक्खेंगे इस संसार अवस्थामें रहकर जीव कदाचित अपने असली सुखको नहीं पा सका संसार की अवस्थाही दुख रूपी है पूर्व ऋषियोंने इस संसार को काराग्रह अर्थात कैदखाना बताया है सो सत्यही है ज्ञानी

जीवों को दीखताहै जैसे कैदखानेमें रहने वाला मनुष्य खानपानादिकभी करताहै और अपने स्थान कोभी साफ राखताहै वार्तालापभी करताहै काम काजादि सब किया करताहै परन्तु यह उसके चित्तमें रहताहैकि कब यहां से छूटूं इसी तरह ज्ञानी पुरुषभी तमाम संसार के कामों को करताहै परन्तु उन में नहीं रचता उनको दुखही समझताह यह जानताहै कि इस संसारमें सब जीव दुखीहैं कोई थोड़ा या कोई बहुत अर्थात दुख नहोता तो यह अनेक प्रकार के परिश्रमों के भारको क्योंसहता इसी कारण तमाम जीव मात्रों को सुखकी कांक्षाहै दौलत रामने छहढाले के आदिमें लिखा है ॥ चौपाई ॥ जेत्रिभुवन में जीव अनंत, सुखचाहै दुखतें भयवंत तातै दुखहारी सुखकार, कहै सीख गुरु करुणा धार ॥ १ ॥ अर्थात संसार में सर्व जीव मात्रों के सदैवकाल सुखकी अभिलाषा पाई जातीहै और सुखका मूल कारण धर्महै धर्म शब्दका यही अर्थहै कि दुख से बचावे सुखमें धरै सो यह अपना स्वभाव है अर्थात अपने स्वभावमें स्थीती से सुख और छूटनेसे दुख होताहै और स्वभाव जीवका निर्मल ज्ञानहै इसमें संपूर्ण जीव मानने वालों की सम्मतिहै इस कथनसे यह बात सिद्ध हुई कि ज्ञान की वृद्धीसे वृद्धी और हीनतासे जीव की हीनता है और हीनता हि का नाम दुखहै जो कि दुखकी निवृत्ती और सुखकी प्राप्ती चाहते हैं उन मनुष्योंको चाहिये कि अवश्य मेव ज्ञान की वृद्धी अर्थात बढवारी करै॥सोबिनाज्ञान मनुष्य प्रजाकी शोभा नहींहै मनुष्य की शोभा ज्ञानही कर होतीहै जैसे कि चंद्रमा की शोभा उत्कृष्टता चांदनी करके और हाथी की सोभा दांतों करके कुलकी शोभा शुद्ध आचरणसे इसी तरह मनुष्य की शोभा ज्ञान अर्थात वस्तुके असली स्वरूप और हेय उपादेय के जाननेही से होतीहै यदि मनुष्य को वस्तुके स्वरूपका और हेय उपादेयका ज्ञान नहोय तोमनुष्यमें और पशुमें कछुभेद नहै जैसेकि खान पानादि क्रिया अथवा शरीरादि संबंधी कष्ट निवारण क्रिया मनुष्य करताहै वैसीही पशू करताहै क्योंकि पशू खाता पीताभी है और जोकोई दुखका देने वाला मारने वाला पकड़ने वाला आवै तब भाग जाताहै इन सब बातोंमें मनुष्यमें और पशुमें समानताहै परन्तु भेदहै तो ज्ञान मात्रकाही है पशुओंके सींग और पूंछ मनुष्यों के डाढी और मूंछहै इस वास्ते मनुष्योंकोचाहियें कि पशुओंके कर्मको छोडकर अपने असली कामके विषै प्रवर्तें अर्थात् ज्ञानकी वृद्धी करै, बिना ज्ञान के मनुष्य तिर्यंच सेभी हीन है किसीनें कहाहै दोहा– जोनर या जिव

पर रहत बुध विद्या करहीन, तिनकों सुनत सभामें गिनत पशुमें हीन ॥

मनुष्य परजाय को पायकके तिर्यंचोंकी समान वृथाही न गमाना चाहिये इस मनुष्य परजायहीका पावना कठिन है क्योंकि देखने में आवता है कि सब परजायों में मनुष्य परजायकीही प्रधानता है ॥ नरेषु चक्री त्रिदशेषु वज्री मृगेषु सिंहः प्रशम व्रतेषु ॥ मतो महीभृत सुवर्ण शैला भवेषु मानुष्य भव प्रधानं॥१॥ नरेश जो राजा हैं तिनमें चक्रवर्ती प्रधानहै वनके रहने वाले मृगों में सिंह प्रधान है व्रतों में वैराग्य प्रधान तैसे ही मही भृत जो पर्वत तिन में सुमेर पर्वत प्रधान है तैसे सब भवों में मनुष्य भव की प्रधानता है ऐसे प्रधान भव को पाय करके प्रधान ही कार्योंमें न प्रवर्तना चाहिये ऐसी प्रधान पर्याय को पाय करके वृथा न खोवनी चाहिये इस मनुष्य पर्याय की प्रधानता ज्ञान करके होती है और वह ज्ञानकी वृद्धी सत्यवक्ता के कहे हुये शास्त्रों के आधीन है और शास्त्र ज्ञान शास्त्र ध्यान लाना शास्त्रों के पढ़ने से होता है और वह शास्त्री विद्याके आधीन है और शास्त्री विद्या पाठशालाके आधीन है इस शास्त्री विद्या करके मनुष्यों को शास्त्र ज्ञान होता है और शास्त्र ज्ञान से आत्मीक ज्ञान यानी निज भावका ज्ञान होता है और निज भावके ज्ञान से चिरस्थाई सुखकी प्राप्ति होती है इस वास्ते जिन जीवों को सुखकी अभिलाषा है तिन को ज्ञान वृद्धी का कारण जो अपनी प्राचीन विद्या नागरी संस्कृत आदि हैं अवश्य पढ़ना और पढ़ाना चाहिये अर्थात पाठशाला आदि विद्या के स्थानों को उपस्थित करें और अपने पुत्रादि कों को पढ़ावें और आप यथा शक्ति पढ़ें क्योंकि विद्या पूर्व संस्कार से होती है अर्थात उनको विद्या इस पर्याय में न आई तो उस संस्कार के योगतैं अथवा और को विद्या ध्ययनका संबन्ध मिलाया है इससे अगली पर्याय में प्राप्ति होजायगी इस वास्ते जो मनुष्य धर्मात्मा बनना चाहैं और धर्म की परिपाटी चलाना चाहैं और अपने जाती और कुलकी उच्चता चाहैं तो तन मन धन से विद्याका प्रकाश करैं अर्थात पाठशाला आदि स्थापित करैं विद्या दान की बराबर और कोई दान नहीं है जिसने विद्या दान कराया उसने चारों दान का मार्ग चलाया क्योंकि विद्या ही करके दया धर्म के स्वरूप को जानेगा कि दया तो धर्मका मूल है और दया परिणामों की कोमलता से होती हैं तभी भूखे को आहार बीमार को औषध भयवान को अभय दानादि देवेगा इस विद्या दान में समान धर्म संबन्धी पूजा

प्रभावना व्रत आपही ध्यान जप तप दान सबका मूल कारण विद्या दान ही है और विद्या दान पुस्तका लिख वाकर देना पाठशाला बिठावना पाठशाला में यथा शक्ति धन आदिक देना यह सब विद्या दान ही है हे भाईयों कुछ थोडासा विचार करके देखो कि जैन धर्म कैसा उत्तम है इस की उत्तमता और प्राचीनता स्वमत के शास्त्रों में और पर मत के शास्त्रोंमें भी मालूम होती है परन्तु अब बडीही न्यून अवस्थाको प्राप्ति होती जातीहै इस का क्या कारण है जो सत्य दृष्टि और निर्लोभता कर विचारिये तो अविद्या है अर्थात विद्याका न होना जो भाई विद्याध्ययन के कारणों को मिलावेंगे अर्थात पाठशाला आदि बिठावेंगे वो मनुष्य अपनी जाती धर्म की उन्नती करेंगे ॥

हकीम कल्यानदास अलीगढ

सज्जनपुरुप

सज्जनपुरुषोंकोसज्जनता अर्थात् परोप कारता अत्यंत प्रिय है और दुष्टता अर्थात् पर अपकार से घृणा करते हैं अपने धार्मिक पुरुषों की प्रतिष्ठा को अपना मूल धर्म मानते हैं और शुद्ध विद्या को प्राप्त करते है और अपने प्रति वासी से प्रीति रखते है और उनकी मान्यता करते है अपने पचेंद्रिय जनित विषयों को दमन करते हैं और निज कर्मो दय पर संतोषित रहते हैं और विपत्ति काल में धैर्य धारण करते हैं और प्रभुता मे उद्धत अर्थात अभिमान नहीं करते और संग्राम में सूरता की चक्षु से निहार ते हैं और सत्यु पुरुषों की सभा में मनोरंजक वारता की प्रवीणता से उच्चारण करते हैं और सदा उन्हीं के हृदय में कीर्ति की अभि रुचि रहती है और पुण्यदान अर्थात दीनों की सहायता तथा परोप कार को श्रेष्ठता से करते हैं और उनके भाव अत्यंत शुद्ध कुविचारोंबिन होते हैं और अन्य दुखित जीवों के दुख मे दुखित होते हैं और अपनी सुकृती को प्रगट नहीं करते है और अन्य परोप कारीयों केगुणों को प्रकाशित कर हैं और धन पाइकर अपने को न्यूनमानते हैं और उनका हस्त सुदान कर भूषित है और उनका शीश मुकुट विनयहै और उनका करणाभरण जिन वाणी का श्रवण है और उनकेभुजबंध सूर वीरता है और उनका मुख हित मित वचनोंका सुमुद्रहै निदानवह सिरसे पांव तक निज निरघनता

में भी रत्नगुण भूषणों से भूषित
रहते हैं और सत्य सूरवीरोंका चि
त्त सभाओंमें अरविंद (कमल)
से अधिक कोमल होताहै परन्तु
रण भूमिमें पाषाण वा लोहेसे अधि
क कठोर और सज्जन परोप कारी
पुरुषों की संगति की व्यवस्था ऐसे
जल के समान है जो तप्त लोह
[लोहे] पर पड़ने से अपने को
नाश करता है अर्थात सज्जनों को
कुसंगसे एसीहीउपमाहै और सुसंगका
फल प्रगट है कि जल जब कमल
पत्र पर पड़ता है तब वज्रमणी अ-
र्थात हीरे की कणी के सदृश च-
मकताहै और सीप की संगति पाक
र मुक्ता फल [मोती] हो जाती
है निदान वह अपनी संगतियों की
योग्यता और श्रेष्ठता के अनुसार
प्रगट करते हैं जड़ बुद्धि और मू-
र्खों के चित्त और हृदय को निर्म
ल निर्मल करते हैं जो महाशय
प्रभुता के संग उच्चपद रखते हैं अ
पने हित और पुरुषार्थ के कार्यों
को अन्य पुरुषों के संग संबंधित
करके उनकी प्रशंसा करते हैं और
अन्य अन्य पुरुषों की कठोर वार्ता
दुष्ट वार्ता को सुनकर सहजाते
है और उसकी सभा में अपने मुख
से कोई अशुद्ध वचन नहीं उचार
ण करते और दुष्टनाम और निंदि
त वाक्य सुनकर भी अपनी शुद्ध
ता को कलंक नहीं लगाते हैं और
अन्य अन्य पुरुषों केसाथ हित करने
को स्वहित मानते हैं अर्थात स्वार्थी
नहीं होते जो ऐसे सज्जन परोप
कारी पुरुष है संसार में उनकी प्र-
तिष्ठा मान बड़ाई होती है सत्य है
जो मेघ बादल अधिक बरसते हैं वो
बहुत नीचे आतेहैं जो वृक्ष अधिक
फलते हैं वो नीचे झुकते हैं इसी प्र-
कार सज्जन पुरुष अधिक धन और
विभव अधिक पड़ने पर अधिक
विनय वान होते है और नम्रत हो
ते है जैसे पिसे हुए से दल और छि
पे हुए फूलों की सुगंधि फैलती है
तैसे ही सज्जन पुरुषों की कीर्ति उ-
नके नम्रीभूत होते हुए भी अधिक
प्रकाशित होती है ॥

चिट्ठीकासारांश

जातिके हितेच्छुक बाबू सूर्यभा-
न साहब जजिनेंद्र: जिसबातकी
हमारी जातिमें अधिक न्यूनता
थी और जिसकी अधिक आव-
श्यकता दृष्टि आतीथी अर्थात्
विवाह शादी में धर्म कार्य इत्या-
दि और जाति उन्नतिका ध्यान

रखना और चंदा इत्यादिसे सहा यता करना अब उसका किंचित आरम्भ हुआ है ॥

सोनीपत जिला देहली में लाला दीवान सिंह साहब के सुपुत्र लाला संगम लाल साहब के विवाह का उत्सव था जिसमें उक्त लाला साहबने जो बडे धर्मात्मा और धर्म स्नेही जीवहैं ३१ जनवरीसन् १८९६ ईस्वी को घुडचडी के समय अपने पुषार्थ से सम्बंधी कार्यों में निम्न लिखिता नुसार रकमें प्रदान की और जैसाकि शादी की तारीख से मुझकोभी सूचित कियाथा और जैन उपदेशक फन्डकी सहायता के हेतु कुछ चंदा लेना आवश्यक था इसवास्ते केवल इसी कार्य के निमित्त देहलीसे रवानः होकर मैंभी घुडचडी के उत्सव में शामिल हुआ और प्रेरणा की कि ऐसे हर्ष के समय अवश्य उपदेशकफन्डकी सहायता होना अत्यंत उचित है अतएव लाला साहब ने अत्यन्त उदारतासे १२, रु०इस फन्डके निमित्त प्रदान किये उसी वक्त उनका धन्य वाद जातीहितेच्छुक महाशयों की ओरसे सर्व सभासदों के सामने दियागया हम अत्यन्त हर्षके साथ प्रगट करतेहैं कि उक्त कस्बे में शादी के समय इस सर्व फलदायक फन्डकी सहायना करने वाले यही प्रथम महाशय हैं और केवल सहायक ही नहीं वरन अन्य महाशयों के लिये धर्मकी प्रेरणा दिलाकर ऐसे उत्तम कार्यों में पुर्षार्थ का मार्ग साफ करने वालेहैं हम आशा करते हैं कि अन्य प्रतिष्टित महाशय भी ऐसे ऐसे हर्ष के अवसरों पर इसी भांति इसफन्डकी सहायता करते रहेंगे क्योंकि ऐसे धर्मात्मा पुरुषों के उदार चित होने से ही इस धर्मा मादी जाति की उन्नति हो सक्ती है ॥

मंदिरजी वजानियान असबावके निमित्त २००, रु० मंदरजी वजा

नियान शास्त्र निमित्त ५, रुपये
मंदरजी पंचायती ५०, रु०
मंदरजी पाबूवाडा चैत्याला पं०
महर चंद दास ६, रु०
जैन पाठशाला सोनीपत ५.रु०
गौशाला सोनी पत ५,रु०
ठाकुरद्वारा सोनीपत ६,रु०
मंदरजी भटगांव ११, रु०
जैनउपदेशक फंडकी सहायता
निमित्त १२ रु०
कुल जोड ३०० रु०काहुआ॥
मुन्सी अमानसिंह अपालि नवीस
सोनीपति निवासी जिला दहली

श्रीवाकविलासनी सभाजेपुर

कृपा निधान बाबू सूरजभानजी साहब जैजिनेंद्र कृपाकरके निम्न लिखित लेखको जैनगजटमें जग-ह दीजिये श्रीसबाई जैपुर ढोलियों के मदिरजी में प्रत्येक मास की शुक्ला पूर्णमासीको सायंकाल से नौ बजे तक यह सभा होतीहै पूर्णमासी के चद्रमा भांति पूर्णरूप मिथ्यात्व के अंधकार को दूर कर सच्चा मार्ग दिखा रही है क्यूं नहो इस सभाके नियम प्रबन्ध उत्तमोत्तम प्रकारके नियत किये गये हैं सभासद महाशय बडे बुद्धिमान और अनेक विद्याओं कर संयुक्त है और तन मन धन से विद्योन्नति धर्मोन्नति के लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं पाठशाला और सभाकी उन्नति में अपना पूरा समय व्यतीत करते हैं॥

गत समाज मिती पोष सुदी १५ को लाला इन्द्रलालजी सेठी ने समय प्रदर्शन के विशय में व्याख्यान कहा जिसका संक्षेप यह है॥

समय अमोल पदार्थ है इस को व्यर्थ खोना योग्य नहीं है जिन्होंने इस की कदर की वेही अपार असार संसार में अनेक सुख पाकर परम पराय मोक्ष के पात्र हुये हैं॥ विकथा आदि खोटे व्यसनों और अनु चित कार्यों में समय व्यतीत करने से इस लोक में नाना प्रकार के दुःख पाकर नर्क के घोर दुःखों को सहना पडता है॥ समय नदी के बहाव की भांति व्यतीत हुवा चला जाता है फिर वापिस आने की आशा न कीजिये देखिये देखते २ ही सन् १८९९ व्यतीत होकर सन् १८९६ आगया यह भी इस ही प्रकार व्यतीत हो जावेगा परन्तु जो कार्य किया

आवे उसका फल और प्रमादका शोक बाकी रहेगा समय बड़ा बलवान है केवल भगवान ही न रोक सके तो और की तो साम र्थ ही क्या है ॥

काल रूपी अजगर बड़ा निर्दई है बालक जवान बूढे को नहीं देखता सब को निगले चला जाता है मुंहखोले हुवे तक रहा है समय की बाट देखता है इस कारण इस समय की कदर करो और ऐसे काम में व्यतीत करो जिस से बार बार इस दुष्ट काल की दाढ में न आनापडे ॥ गफलत और प्रमाद के बस हो कर आज के काम को कलपर न डालो नहीं मालूम कल क्या हो बरण आज ही उस काम को पूरा करो ॥

[दोहा] काल करेसो आजकर आजकरे सो अब । अवसर बीताजात है फेर करेगा कब ॥

रात दिन के २४ घंटो में से आठवां भाग अर्थात केवल तीन घंटे सामायक पूजन स्वाध्याय धर्म कार्यों में व्यतीत करना बडी बात नहीं है अर्थात संसारीक कार्यों के वास्ते २१ घंटे बहुत हैं ॥ सर्व प्रकार के कार्य समय की सहायता से होते हैं हर एक कार्य हर एक वस्तु- हर एक बात के वास्ते एक नियत समय है और सर्व कार्य अपने २ समय पर भले मालूम होते हैं और यह प्रसिद्ध भी है कि बाल्यावस्था में विद्याध्ययन करना यौवन अवस्था में धन संचय करना वृद्धावस्था में धर्म सेवन में समय व्यतीत करना योग्य है परन्तु धर्म सेवन और विद्याध्ययन के वास्ते कोई नियत समय नहीं है भावार्थ सदा काल करना योग्य है ॥

(श्लोक) आत्मनः कार्यशीघ्रेण कर्तव्यं याव स्वच्छ मिदंकलेवर गृहं यावज्जरातूरतः यावचेंद्रियशक्ति प्रतिहता यावतक्षयोनायुषः आत्मश्रेय सिनाव दूकाविदुषां कर्ये प्रयत्नं महत् संदीप्ते भवने प्रकूप खननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥

(अर्थ) जब तक शरीर निरोग है पांचों इंद्रियां ठीकतौरपर काम देरही है और बुढापा दूर है आयु पूर्ण नहीं हुई तब तक पंडित जनों को अपना कल्यान करलेना योग्य है जब बुढापा आगया और सर्व इन्द्रियां शिथिल होगई और शरीर के आंगोपांग की शक्ति जाती रही उस समय क्या होसक्ता है जब घर जलने लगे उस समय कूंआ खोदना व्यर्थ है ॥

मनुष्य जन्म उत्तम कुल निरोग शरीर सच्चा धर्म अच्छे पुरुषों की संगति इन सबका मिलना बड़े पुण्यका प्रभाव है और दुर्लभ है जो पुरुष इन सब सामग्रियों को पाकर अपना कल्यान नहीं करते हैं प्रमाद के वस होकर वृथा ही खोदेते हैं वोह मूर्ख है बड़े कष्ट से हासिल की हुई चिन्तामणी रत्न को वापिस समुद्र में डालते हैं ॥

समय तीन प्रकार के हैं— भूत भविष्यत वर्तमान व्यतीत काल तो याद करना ही वृथा है क्योंकि उससे सिवाय शोक के और कुछ प्राप्त नहीं है हां इतना लाभ अवश्य है कि गत समय के किये हुये कामों के भले बुरे फलों को देखकर बुराई को छोड़ै भलाई को स्वीकार करै लेकिन इस में डांट डपट की जरूरत है क्योंकि हर मनुष्य अपनी बुराई को देखने में अन्धा है सबको अपना करतव प्यारा है चाहे बुराई हो या भलाई हो ॥

वर्तमान समय की कदर और भविष्यतका प्रबन्ध करना उचित है— ऐ जैन धर्म के उन्नति चाहने वाले भाईयों क्षण मात्र ध्यान देकर देखो कि जैनी भाईयों की वर्तमान दशा कैसा समा दिखा रही है विद्योन्नति— धर्मोन्नति द्रव्योन्नति के अति रिक्ति अविद्या व्यर्थव्यय बाल विवाह वृद्ध विवाह इत्यादिक कुरीतियों के फन्दों में फंसकर विध्यत्व और हीन दशा में फंस रहे हैं— सत्य और उत्तम मार्ग को त्यागकर कुमार्गों में भटक रहे हैं न वर्तमान की कदर न भविष्यका सोच ॥

इस समय सर्व भाईयों को श्रीमान् सेठे सहाय लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० सभापति— और मुं० चम्पतरायजी व बाबू सूर्यभानजी व पं० प्यारेलालजी इत्यादि परोप कारी महाशयोंका शुक्र दिल से धन्यवाद देना चाहिये कि जिन्होंने बिरादरी की वर्तमान दशापर दृष्टिकर डूबते हुये जहाजको सम्भालने की चिन्ता की तन मन धन से कटिबद्ध होकर सत्य हितका बीड़ा उठाया है जैन धर्म की उन्नति और रक्षा के लिये हर एक नग्र वा हर एक ग्राम में जैन पाठशाला नियत की और सभाओं के प्रचलित करने के लिये प्रबन्धकर सोती हुई जाति को सचेत करने की नीयत से हफ्तेवार जैनगजट और उपदेशक फंड प्रकाशित किया इससे फिर आशा है कि थोड़ेही कालमें हमारी यह वर्तमान दुर्दशा दुर होनेवाली है कई भाईयों ने पूजन स्वाध्याय इत्यादिक करने की प्रतिज्ञा स्वीकार की है अन्तको पं० हीरतमलजी ने मंगलाचरन पढ़कर सभा विसर्जन कराई ॥

आदत (बान)

मनुष्य जिस प्रकार की आदत डाले वैसीही पडजाती है विष खाने से आदमी मरजाताहै परन्तु यदि पहिले अति सूक्ष्म खाकर थोडा २ बढाया जावे तो विष खानाही उसकी बान पडजातीहै और इतना खाने लगताहै कि जिसके एक बार खाने से बहुधा मनुष्य मर जावें मनुष्यकी जैसी बान पडजाती है चाहे भली हो या बुरी उसको अति प्रिय मालूम होतीहै और उसका छोडना अति कठिन होताहै इस कारण यह बात चाहितहै कि बालक के पैदा होतेही इस बातका बडा ध्यान रक्खा जावे कि किसी प्रकार खोटी बात न पडजावे यह बात देखने में आती है कि बहुधा मनुष्यों को झूठ बोलने गाली देने पराई निन्दा करने की आदत होती है और किसी समय धर्मोपदेश पाकर शास्त्र श्रवण कर यदि ये बातें बुरी भी मालूम होने लगती हैं परन्तु उनका छोडना कठिन होताहै इत्यादिक बातों की बान बाल्यावस्था में उचित शिक्षा न मिलने और खोटी संगति होने के ही कारण पडती है जो पुरुष यह चाहते हैं कि उनके बालक आगामी काल में सज्जन धर्मात्मा प्रतिष्ठित पुरुष बनें उनको चाहिये कि अपने बालकों को अनुचित कार्यके करने से रोकें विनय और नम्रता पूर्वक मिष्ट वचन बोलना योग्य कार्य करना सिखावें जिससे आगेको ऐसीही बानपडै॥

चिट्ठी

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी महाशय

जै जिनेंद्र; हर्ष के साथ प्रकाश करने में आताहै कि आवागढ (यानी आया) जिला एटा में श्रीमद्देवाधिदेवका उत्सव [मेला] होगा आगामी चैत्र शु० १ भौम वार को प्रथम रथ यात्रा होगी उस दिन श्रीमहाराज धूम धाम सहित मंदिरजी से रथ में विराज कर पुलिस स्टेशनके पास सभा मंडप में आकर विराजमान होंगे मंडप बहुत उत्तम बनाया जावेगा वहां चार दिनतक सार्धद्वय द्वीप विधान और नृत्यगानादि होगा चैत्र शु० ८ को अंतिम रथयात्रा होगी इसी मौके पर पाठशाला के विद्यार्थियोंकी परीक्षा तथा धर्म विषय की चर्चा और व्याख्यान भी होंगे इस मेले में बहुत से पंडित जन और धर्मात्मा भाई आकर शामिल होंगे; क्योंकि यह मेला बहुत दिनों से बंदथा और अब इसके जारी करन का हुकुम श्रीमान एंच डब्लू लाइल सहाब मोजस्ट्रेट [जिला एटा] नेदेदिया है जिसका उनको धन्यवाद दियाजाता है तथा महाराजा सहाब बलवंतसिंहजी (आवागढवालों) नेभी इसके जारीकराने में कोशिश की है और इस मेले को देखने की इच्छा भी प्रकाश करी है इस लिये बडी धूम धाम से इस मेले की तयारी अनेक भाइयोंने की है धर्म प्रचारक भाईयों को तथा धर्म की प्रभावना बढाने वालोंसे प्रार्थना है कि इस मेले में कुटंब सहित पधारकर आवागढ के भाईयोंका उत्साह बढावें क्योंकि यह धर्म प्रभावनाका मुख्य अंग है॥

सर्व जैनी भाईयोंका हितैषी
रतनलाल— मथुरा

(यह पत्र बंबई मित्र प्रेस मथुरा में छपा)

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य वार्षिक पेशगी डाकमहसूल सहित केवल डेढ़रुपया है

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १–८–१६–२४ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष | ता० १६ मार्च सन् १८९६ | अङ्क १४

प्रार्थना

हम पहले अपने परोपकारी ग्राहकों से यह प्रार्थना कर चुके हैं कि वह अगर एक एक ग्राहक बढादेवैं तो जैनगजटका काम ठीक तरहसे चलजावे और यह चिरस्थाई होजावे ॥ हमको आशा है कि अवश्य हमारे धर्मानुरागी भाईयों ने इस पर ध्यान दिया होगा और कोशिश कर रहे होंगे ॥ अब हम फिर दोबारा प्रार्थना करते हैं कि अवश्य इस पत्रके ग्राहक बढाने की कोशिश होनी चाहिये जिससे यह अपना काम पूरा करसके ॥ और हम मास्टर प्यारेलालजी मंत्री जैनसभा ईटावहको धन्यवाद देते हैं– कि उन्होंने इस पत्रके एककी जगह दो ग्राहक बढाये ॥

दुर्जन

दुर्जनको भले कामों से घृणा होती है बहुत अच्छे कामोंका नामबुरारखते हैं और परोपकारी और सज्जन पुरुषों की निन्दा क-

रते हैं सहन शीलको प्रमादी विनय वानको दास— धर्मात्मा को दुष्ट—भक्त को छलीआ— विश्वल हृदय को कपटी— सूरवीरको पशु धन वानको अभिमानी— ललित वक्तको वकवादी कहते हैं और वह अपने पडोसी के विभव पर ईर्षा अर्थात डाह किया करते हैं— और उनके पुत्रादि कों पर कुदृष्टि रखते हैं वह सदैव झगडे और टंटेके अभिलाषी रहते हैं— लोभ और ईर्षा के वशीभूत रहते हैं— संसारके सर्व प्रकार के पाप कार्यों के कर्त्ता होते हैं— दुष्ट पुरुष मे कभी भलाईका कार्य नहीं होता— वह अपने से भलाई करने वालोंके साथ में भी बुराई करते हैं सज्जन पुरुषों को दुष्टात्मा ओंसे सदैव डरते रहना चाहिये ॥

शोक महा शोक

यह बात सब जैनी भाईयोंपर विदित है कि श्रीजैन मन्दिर धर्म के आयतन हैं पूजा पाठ सामयिक स्वाध्याय शास्त्र उपदेश शास्त्र श्रवण धर्म चर्चा वीतराग मुद्राके दर्शन आदिक धर्म कार्य इस स्थानपर होते हैं इसी कारण यद्यपि जैन मन्दिरों के बन बाने में हिन्सा होती है परन्तु वह हिंसा नहीं गिनी जाती क्योंकि जैन मन्दिर से धर्मका प्रचार और प्रकाश बहुत भारी होताहै परन्तु आज कल हम यह बात देखते हैं कि बहुत बडा मन्दिर बनाना आकाश तक उसकी चोटी पहुंचाना ही बस समझा जाता है आगे को धर्म प्रचारका कोई प्रबन्ध नहीं किया जाता रोटी खाने से अवश्य पेट भरता है शरीर पुष्ठ होता है परन्तु धर्डी कोशिश और परिश्रम से रसोई बनाना और न खाना कोई कार्य कारी नहीं होसक्ता हमको यह मालूम हुआ है कि बहुधा श्री जैन मन्दिरों में नित्य पूजन नहीं होता बहुधा जैन मन्दिरों में पूजा करने के वास्ते नौकर रक्खे हुये हैं वोही पूजन प्रक्षाल नकर लेते हैं शास्त्रजी तो नित्य किसीही किसी मन्दिरजी में बाँचे जाते होंगे और हमको तो ऐसा संदेह है कि सौ मंदिरों में से केवल पांच मंदिरों में शास्त्रजी होते होंगे क्योंकि हमने प्रत्यके नग्र में श्रीजैन मंदिरजी के नाम जैन गजट नमूने के तौर पर भेजा और प्रार्थनाकी कि यदि आगेको गजट मंगाना स्वीकार होतो पत्र द्वारा हमको सू-

चित करैं परन्तु कुछ भी उत्तर नहीं मिला हमने दूसरा अंक भेजा और फिर प्रार्थना की फिर भी उत्तर नहीं मिला फिर तीसरा अंक भेजा फिर चौथा अंक भेजा परन्तु कुछ जावाब न मिला अन्तको एक चिट्ठी भेजी परन्तु फिर भी कुछ उत्तर नहीं मिला बहुत ही कम जगहों से उत्तर आया है जब हम जैन मंदिरों की नामावली देखते हैं और यह मालूम होता है कि इतना यत्न करने पर भी हमको एक बातका उत्तर नहीं मिलातो महा शोक उत्पन्न होता है क्योंकि इससे हम को स्पष्ट मालूम होता है कि जो पत्र श्रीजैन मंदिर के नाम जाता है वोह किसी एक भाई के पास जो मंदिर के कार्याध्यक्ष समझे जाते है पहुंच जाता है परन्तु मंदिरजी मे शास्त्रजी की सभा इत्यादिक न होने के कारण अन्य भाईयों को उसका कुछ हाल मालूम नहीं होता है इसी कारण किसी प्रकारका उत्तर नहीं मिलता हमने यह बात चाही थी कि जिन २ नगरों से इत्यादिक यत्न के पश्चात भी कुछ उत्तर नहीं मिला उन नगरों के नाम गजट में छाप दिये जावै जिससे परोप कारी धर्मात्मा पुरुषों को यह सूचित होजावै कि अमुक नगरमें धर्म की न्यूनता है कोई उपाय धर्मोन्नतिका करना चाहिये परन्तु जब हमने अपने रजिस्टर को देखा तो यह विदित हुआ अनुमान सर्व ही जैन मंदिरों से उत्तर नहीं आया है तब प्रनाम बहुत ही क्लेशान हुये क्योंकि कोई उपाय धर्मोन्नतिका ऐसी दशामें दृष्टि नहीं पड़ा सोचने की बात है कि जब पांच पांच पत्रोंका उत्तर न मिलै तो कैसे कोई कार्य किया जावै ॥ इस में कुछ संदेह नहीं है कि उपदेशकों को उचित है कि ऐसे नगरों में जाकर वहां के भाईयों को जगा कर धर्म की ओर लगावैं परन्तु ऐसे नगर बहुत हैं इस कारण यह कार्य तबही होसक्ता है जब कि उपदेशक भी बहुत हों परन्तु यह उस से भी अधिक शोक की बात है कि उपदेशक भी जैन जाति में नहीं मिलते हैं ॥ इस कारण परोपकारी भाईयों को यह उचित है कि वहअपने निकटके नगरों में भ्रमण कर जाया करैं और वहांके भाईयों को धर्मोपदेश देकर सचेत किया करैं क्यूंकि हमारी जाति मैं प्रमाद बहुत फैलगया है इसको

अवश्य दूर करना चाहिये ॥ महा सभा की ओर से यह जैन गजट इसही कारण जारी किया गया था कि महीने में चार बार प्रत्येक नगर के श्रीजैन मंदिर में जाकर भाईयों को व्याख्यान यह गजट सुनाया करैगा परन्तु क्या किया जावे मंदिरजी में भाई जब आवैं ही नहीं तो व्याख्यान सुनै कोन अब हम इस जैन गजट के ग्राहकों से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वह अवश्य इस बातकी कोशिश करैं कि उनके और आस पास के नगरों में प्रत्येक मंदिरजी में शास्त्र पडे जाया करैं और सर्व भाई नित्य धर्मका व्याख्यान श्रवण किया करैं और बाहरके किसी स्थान से जो चिट्ठी पत्री आयाकरै उसका उत्तर अवश्य दिया करैं ॥ और जैन गजट के स्वीकार वा न स्वीकार करनेका उत्तर अवश्य हमको देदेवैं ॥

क्रोध

क्रोध पापका मूल और संसार में भी अनेक अपायियोंका पैदा करनेवाला है जबक्रोध आताहै तो बुद्धिबिलकुल नष्ट होजातीहै क्रोधकेसमय उचित अनुचित धर्म अधर्म योग्य अयोग्यका कुछ विचार नहीं रहता और जिस पर क्रोध आता है उसको मार डालने दुःख देने हानि पहुंचाने पर उद्यम होना यह क्रोधका फल है क्रोध मनुष्यको मदसे भी अधिक उन्मत्त कर देता है यह बात देखने में आती है कि हिंसक पुरुषों वा बालक स्त्री वृद्ध रोगी निर्बल मनुष्यों को क्रोध अधिक उतपन्न होता है शूर बीर सज्जन और धर्मात्मा पुरुषों को क्रोध अधिक नहीं सताता जो मनुष्य संसार अवस्था को अपनी माने हुये हैं वोही किसी प्रकार अपनी हीनता देख कर क्रोध करते हैं जो मनुष्य संसार को भिन्न और अपने से यम मानते हैं उनको किसी बात पर भी क्रोध नहीं आसक्ता दंड देना—धमकाना ताडना करना क्रोध से भिन्न है क्रोध में गर्भित नहीं हैं ॥

भय

भय आश्चर्य कारी पदार्थ है जब मनुष्य को भय होता है तो नहीं मालूम कि वोह कौनसी कमानी दबा देता है जिससे सारे बदन पर रोंगटे खडे होजाते हैं वोह कौनसा फंदा गले में डाल देता है कि जिससे हमारा मुंह बंद होजाता है और बोल नहीं सक्के और बोलते भी हैं तो लड़ खड़ाते हुये वोह कौनसी कल चला देता है कि मन हिलने छाती उछलने लगती है वोह कौनसा पंप लगा देता है कि

आंखों से पानी पहने लगता है वोह कौनसी जोंकें लगा देता है कि सारा खून सूख कर हल्दी मे पीला मुख हो जाता है वोह कौनसी आग शरीर में लगा देता है कि खून सूख जाता है वोह कौनसी बर्फ शरीर पर छिड़क देता है कि बिलकुल ठंडा होजाता है वोह कौनसी कील पांव में जड़ देता है कि मनुष्य चल नहीं सक्ता वोह क्या बात पैदा करता है जिससे बुद्धि भागजाती है भय एक बहुतही बलवान शक्ति मालूम होती है जो मनुष्य का उपरोक्त अद्भुत रूप बना देती है संसारी पुरुषों को सदैव इष्ट वियोग व अनिष्ट संजोगकों भय लगा रहता है इसी कारण वोह बिना क्लेश के उत्पन्न हुये भी क्लेशित रहते हैं और बिना दुख के कारण के दुखित रहते हैं मोह और अज्ञान सब बातोंका कारण है जितना किसी मनुष्य को मोह और अज्ञानता अधिक है उतनाही वोह भयवान रहता है निर्मोही और संतोषी पुरुष को भय नहीं होता वोह सदा आनंद में रहता है स्त्रियों और प्रमादी निर्बल पुरुषों वृद्ध मनुष्यों को भय अधिक होता है भयसे अशुभ कर्मोंका बन्ध होता है खोटे प्रणाम होते हैं धर्मात्मा पुरुष सदैव उचित उपाय अपने कार्यों में करते हैं परन्तु वे सन्तोष रखते हैं और कभी भय नहीं मानते इसी कारण दुखी नहीं होते हैं धैर्य और सन्तोष रखना और इतना मोह के वस में न होना जिससे भय प्राप्तहो धर्मात्मा के वास्ते आवश्यक है ॥

धर्म

संसार के सर्व मनुष्य अपनी जिव्हा से धर्मकी प्रशंसा करते है परमेश्वर पर श्रद्धान रखना दिखाते हैं परन्तु काम वोह करते है जिससे ज्ञात होता है कि वह धर्म वह परमेश्वर किसी पर विश्वास नहीं करते और पूर्ण नास्तिक है छोटा बड़ा वृद्ध युवा बालक काम करने वाला निकमा प्रमादी बेकार अर्थात सर्व मनुष्य धर्म से और परमेश्वर के नाम से एसे बचते हैं कि जब उनके साम्हने एसीबात के वर्णन कियाजाता है तो दुख प्राप्त होता है और वह ऐसी बातों के सुनने से घृणा करते हैं यदि किसी बालक धर्म से विषय की बाबत कहा जावे तो अन्य पुरुष उस कहने वाले को मूर्ख बताते हैं और कहते हैं कि बालक से और धर्मसे क्या संबंध है बाल्यावस्था खेल कूद की अवस्था है न कि धर्म पालन की यदि किसी युवा पुरुष से धर्म ग्रहण करनेकी प्रेरणा की जावे तो यह उत्तर मिलाता है किओ अज्ञानी कहीं युवा अवस्था में भी धर्म पालनहुआ है यह अवस्था तो भोग विलास के वास्ते अब बनाई गई

है यदि युवा अवस्था में भी किसी मनुष्य ने भोग विलासनकिया तो उसका यौवन निर्फल है यदि किसी वृद्ध पुरुष से धर्म सेवन की बाबत कहां जावे तो वह बडी आधीनताई से कहता है कि मेरी सर्व इंद्रियां सिथिल होगई ज्ञान मंद होगया चित्त स्थिर नही बल बुद्धि घट गई शरीर काम नहीं करता अबमें क्या धर्म सेवन करसक्ता है अभिप्राय यह है कि मनुष्य प्रत्येक अवस्था में धर्म के नाम से डरता है और सदैव इस बात की इच्छा करताहै कि धर्म में लगने की प्रेरणाका शब्द मेरे कानमें न पडे इससे स्पष्ट विदित होता है कि मनुष्यों को धर्मका विश्वास नहीं है और वह धर्म को हित कारी और लाभ दायक नहीं समझते हैं यह बडे खेद की वार्त्ता है कारण इसका यह ज्ञात होता है कि मनुष्योंका धर्म को पर मोप कारी और मुख्य कारण धर्म न करना भेडा चालि बात है अर्थात वह यह बात इस कारण वर्णन करते हैं कि अन्य पुरुषों को ऐसा कहते हुए सुनते हैं और यह जानते नहीं कि धर्म क्या वस्तु है यदि हम लोग धर्मके स्वरूप को जानते होते तो अवश्य इस को हित कारी समझते और ग्रहण करने की इच्छा करते और जिस किसी अवस्था में कोई हमको धर्म पालन की शिक्षा करता तो उसका धन्य वाद गाते और प्रशंसा करते नकि ऐसे पुरुषों से डरते और दूर भागते जैसा कि अब करते हैं धर्म के स्वरूपको जाननेका उपाय एक धर्म पुस्तकों की स्वाध्याय करना है जब हम लोग यह उपाय करने लगेंगे तब ही धर्म से भी रुचि करैगें इति ॥

सज्जन और दुर्ज्जनकी पहिचान

सज्जन पुरुष अपने वैरी के साथ वह सलूक करता है जैसे चन्दन कुठाली के साथ करता है कुठाली उसे काटती है वह उस की धार को सुगंधित करता है इस लिये चन्दनको यह बडप्पन हासिल हुआ है कि महान पुरुषों के मस्तक पर बास करता है और कुठाली की यह दुर्दशा हुई कि उसका मुंह आगि में तपाकर हथोडों से कूटा जाता है भले पुरुष सीधा साधा स्वभाव रखते है संतोषी होते हैं संसारी पदार्थ से मूर्छित नहीं होते सदैव हर्षित रहते है दान के भंडार होते हैं दूसरेका दुख दुखी होते हैं और दूसरे को सुख जान कर सुखी होते हैं तन मन धन से वह हराया भला करते है वह मित्र शत्रु दोनो से प्रीति पूर्वक संबन्ध रखते हैं वह किसी से शत्रु ताई नहीं

करते हैं इनमें अभिमान और घमन्ड नहीं होता वह संसार के इच्छुक नहीं होते इर्षा आदिकके बस मे नहीं होते वह अनाथों पर करुणा करते हैं वह अपनी विनय की कुछ परवाह नहीं करते परन्तु और पुरुषों की वोह आप विनय करते हैं आधीन ताई और नम्रताई दूसरोंकासे व्यवहारकरते हैं किसी से एसी वात नहीं कहते जो उसको कडुवी मालूम हो वह अपने वचन और क्रिया में सचे होते हैं कोई उनकी निन्दा करे या प्रशंसा कोई उनकी प्रतिष्ठा करें या अपमान उनके निकट सब समान है उनको तो ईश्वर भक्ति और लोकों कार करने कीलो लगी हुई होती है एसे मनुष्यों को ईश्वर भक्त भी कहते हैं ॥

अव दुर्जन मनुष्यों के स्वभाव का वर्णन किया जाता है दुर्जन की संगति कभी भूल करके भी नहीं करनी चाहिये उन से सदा कष्टही प्राप्त होता है उनके हृदय में ईर्षा रूपी अग्नि ऐसी प्रज्वलित रहती है कि जहां उन्हों ने दूसरे को सुखी देखा तो वह जल मरे जव किसी की बुराई सुनते हैं तो एसे हर्षित होते हैं कि मानों उनको अक्षय निधि मिली वह विषयासक्त अति क्रोधी ईर्षा वान अति अभिमानी निर्दई होते हैं उनके हृदय में सर्व प्रकार के पापोंका वास होता है जो उनके साथ भला करे उनका वह बुरा करते हैं उनके सर्व कार्य असत्य होते हैं वह मयूर पक्षी का समान वोलने में मीठे और हृदय में एसे कठोर होते हैं कि वडे मोटे सर्प को निगल जाय वह अति लोभी होते और विषय भोग खाने पीने में पशुओं मे कम नहीं होते वह किसी की बुराई करने में मृत्यु से भी भय नहीं खाते उन कों किसी की प्रशंसा और उन्नति सुन कर अति खेद होता है उन को केवल अपने प्रयोजन मे प्रयोजन होता है वह अन्य को दुःख देने में अपने सुख को भी त्याग ना श्रेष्ठ समझते हैं वह अन्य की तो क्या वात है अपने माता पिता और गुरु को भी धोखा देते हैं वह भले मनुष्यों का कभी कहा नहीं मानते शिक्षा मे कोसों दूर भागते हैं धर्मकि वातोंसे घृणा करते हैं जेसे आप हैं एसा ही औरों को वनाना चाहते हैं ॥

लालाधर्मसहायउपदेककीरिपोर्ट

श्री मिती माघ शुक्ला १० शनिश्चरवार ता० २१ जनवरी को संध्या के ६ बजे पर देव बन में आन कर बाबू सूरजभान वकील के मकान पर उतरा बाबू सहाब ने अत्यंत सत्कार किया फेर प्रभात माघ शुक्ला ११ ता० २६ को स्नानादि क्रिया करि श्री जिनालय के दर्शनों को गया चार मंदिरों के दर्शन करि जन्म सफल किया— इस नगरका व्याख्यान द्वितीय रिपोर्ट में लिखूंगाफिर यहां से भाई जवाहर लाल के लडकेका विवाह माघ शुक्ला ११ एकादशी काथा बरात खतोली कोगई उक्त भाई ने मुझे बरात में ले चलने को प्रकाशित किया और बाबू साहब तथा अन्य भ्रातृगण भी आने को तत्पर थे मुझे भी लेगये मध्यान के २॥ बजेकी रेल गाडी में बैठ कर चार बजे पर खतोली उतरे— वहां पर भाई कुंदनलाल जीयालाल अग्रवाले के मकान पर डेरा किया—उक्त महाशय बडे धर्मात्मा और धनाढ्य हैं फिर रात्रिके ७ सात बजे पर उक्त बाबू साहब आदि बहुत भ्रातृ गण जिनालयमें उपस्थित हुए श्री मंदिर में भाई संगमलालजी निजमनोहर ध्वनिमे शास्त्रजी पढ रहेथे और पंडित मंगलसेनजी अपने ललित वाक्यों से मिथ्यात्व के निश्चय में व्याख्यान कर रहेथे तो वहां पर मैने मिथ्यात्व को हेतु दिखाइ कर मिथ्यात्व तजने के विषय में कुछ उपदेश दिया तो सर्व भाईयों ने स्वाध्याय करने की तथा शास्त्र श्रवण की यथो चित प्रतिज्ञालीनी उस समय में रोमांकुरित हृदय भया और अपने अंतःकरण से कोटिशः धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि हमारे भ्रातृगण श्री शास्त्रजी के पढने तथश्रवणकरनसे अन्याय मिथ्यात्व अज्ञानका त्याग करि अन्यान्य भाईयों को उपमा योग्य होंगे उस समय श्रीशास्त्रजी की सभा में अनुमान ९० भाईयों के उपस्थित थे फिर श्रीशास्त्रजी समाप्त होनेपर उक्तस्थानपर आशा भाईयोने जवाहरलालसे कि जिनके पुत्रका विवाह हैं जिनसों नाचार्य कृत विवाह पद्धति के अनु स्वार पाणि ग्रहण कराने को प्रकाशित किया तो उक्तमहाशयने बड़े हर्षके साथ स्वीकार किया— मैं धन्यवाद करता हूं और आशा करता हूं कि

इसी तरह यदि हमारे सर्व भ्रातृ गण इस प्रबन्ध को स्वीकार करें तो शीघ्रही धर्मोन्नतिकाझंडा फहरा ने लगेगा— फिर रात्रि के १० बजे जैसा भाय के अनुसार विवाहका प्रारंभ हुआ बड़े उत्सव के साथ पाणि ग्रहण के अनंतर देव शास्त्र गुरुका पूजन संस्कृतका प्रारंभ हुआ सो चि॰राजारामके कि जि नका विवाह था अपनी ललित ध्वनिमे पाठोच्चार किया तो उस समय सर्व श्रवण करने वालों के हृदमें यह भ्रांति होती थी कि कोई गंधर्व विद्याका पाठी देव पूजन पढ़रहा है उससमय अनुमान ५० स्त्री पुरुष जोवहां उपस्थित थे श्रवण कर साश्रु गद गद हो गए और स्वयमेव सर्व महाशयों के मुख से प्रशंसित वचन उच्चारण हुआ मानों उस दृशवर्ष के लड़के को गुणोंनें आकर्षण किया और फिर सर्व भाईयों नें संस्कृत वि- धाके विषय में प्रशंसा के वचन प्रकाशित किये सच है कि हमारी प्राचीन संस्कृत विद्या के प्रचार न होने से जो कुछ कार्य बिगड़ रहे हैं सो किसी भाई से अज्ञात नहीं और संस्कृत विद्या के जो जो लाभ हैं सोभी ज्ञात हैं संसार में सर्व प्राणी मात्र सुख को तो चाहते हैं परन्तु सुखप्राप्त होनेका हेतु जो विद्या है तिसे नहीं ग्रहण करते; और दुख से डरते हैं पर- न्तु दुखका हेतु जो अविद्या अ- ज्ञान है उसे नहीं त्यागते सो बड़े खेद और पश्चात्ताप की वार्ता है कि विष वृक्षको वपन [बोय] कर अ- मृत फल भक्षण किया चाहते हो सो नहीं मिलसकता अबएक विशेष वार्ता इस स्थान पर ज्ञात हुई है सो सर्व महाशयों को सूचनार्थ प्रकाशित करता हूं ॥

एक विशेष वार्ता

जब मैंनें इस बरात के भ्रातृ गणों की गणना की तो मुझे बहु त बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ क्योंकि अच्छे अच्छे मुखिया महाशय इस बरात में उपस्थित थे वह देखने से तो बड़े बड़े विद्वान— धर्मानु- रागी विद्यानुरागी ज्ञात होते थे परन्तु बड़े खेद और पश्चात्ताप की वार्ता है कि जब काम पड़ा अर्थात् फेरोंका समय आया तो सिवाय दश पंद्रह भाई के जो इस उत्सव के कार्य ध्यक्ष थे कि जिन का उपस्थित होना अत्यंत आवश्य क था और कोई भी स्वजातीय पूर्व लिखित महाशय इस स- मय दृष्टि भी न आए इससे

ज्ञात होता है कि कदाचित वह महाशय केवल इस ही हेतु यहां पधारे थे कि वेश्याका नृत्य देखें और उस मनोरंजनी के मुख चंद्रको निहार कर अपने चक्षु रूपी चकोर को प्रफुलित करें खेद खेद– खेद– भो प्रियवर भ्रातृगण हम लोगोंका बरात में जाकर क्या यही आवश्यक कार्य है क्या बरात की शोभाका मूल मनोरथ ऐसे ही महाशयों से होता है– क्या हमारे भ्रातृगणों को ऐसाही करना उचितथा कदाचित नहीं कदाचित नहीं कदाचित नहीं– वास्तव में तो मेरी अल्प बुद्धि के अनुमान उक्त प्रियवर महाशयों को यह उचितथा कि वेश्याकी तरफ ध्यान छिनमात्रभी नकरते वरन अपने भ्रातृ अर्थात् वरके पिता के सहायक होते और धर्मोन्नति जात्युन्नति के कार्यों के कारण होते अर्थात् धर्मोपदेश कराते और निज सभाको धर्म सभा कर दिखाते ताकि अन्य भ्रातृगणों को अपनी सभाओं और बरातों में धर्म उपदेश और धर्म कार्य करने की प्रेरणा होती ॥

शुभम् शुभम् शुभम्

फेर इस विवाहोत्सव के समाप्त होने पर प्रभात मिती माघशुक्ला १२ को प्रातः काल स्नानादि क्रिया करके श्रीजिनालयोंके दर्शनों को गयातो वहां दर्शन करिकरि जन्म सफल किया यहां पर पांच श्रीजिन मंदिर हैं और अग्रवाल भाईयों के घर उनमान चारसो से ज्यादा हैं तीन मंदिरों में शास्त्र जी रात्रि को होते हैं दिवस में किसी मंदिर में नहीं होते और पूजन प्रातःकाल सब मंदिरों में होता है परन्तु बड़े खेद की बात है कि यहां जैनी भाईयों के इतने घर हैं पर धर्मोन्नति जात्युन्नति की तरफ बिलकुल ध्यान नहीं है यहां सर्व भाईयों से सभाकी बाबत कहा गया परन्तु सर्व भाईयों ने कहा कि अभीतो बरात की ध्वनि है तो समय कम होने से आग्रह न किया गया फेर यहां की जैन पाठशाला में जाकर बाबू साहब आदि कितनेक महाशयों के साथ उपस्थित होकर जैन विद्यार्थियों की परीक्षाली तो २१ विद्यार्थी उपस्थित थे तिस में दफे ९ वीमें पांच लड़के सारस्वत पंच संधितक संस्कृत प्रवेशिनी हितोपदेशक और सूत्र टीका मकरंद पढ़ते हैं हिसाब त्रैराशिकतक इक्कीस श्लोक की और दफअ अष्टमी में

९ विद्यार्थी हैं सो सारस्वत पाठ पंच संधितक संस्कृत प्रवेशिनी पत्र ९ तक पूजन देव सिद्धिका सरल हिसाब गुणा भाग इबारत सीधी लिखते हैं और दफअ ७ मींमें लडके ५ बाल बोध दूसरी पुस्तक पंच मंगल पहाडे ४० तक जोड बांकी नाम लिखते हैं दफअ ७ दूसरी में लडके ६ तिस में अक्षर दीपिका २४ महाराज के नाम पहाडे १० तक दो अक्षर के नाम इस तरह से विद्यार्थी उपस्थित थे उनकी परीक्षा लीनी तो विद्यार्थी बहुत कम पास हुए फेर बाबू सूरजभान सहाब ने अपने हस्त कमल से टोपी रुमाल मिठाई पारितोषक प्रदान किया विद्यार्थी परिश्रम बहुत कम करते हैं उपाध्याय जी बाराय हाथरसवाल जैनी हैं उक्त पंडितजी अच्छे विद्वान हैं और कुछ विद्यार्थी मिडल की तालीम लेतेहैं सो आज इंसपेकटर साहब आएथे उनके इंमतिहान देने को गए थे इस वजह उपस्थित नहीं थे फेर वहां से ११॥ बजे की गाडी में देवचंद आए शेषवृत्तांत आगे॥

मान्यवर- जेजिनेंद्र; निम्नलिखित लेखकोअपनेगजटमेंछापदीजिये

विदित होकि फाल्गुण सुदी ८ से १० तदानुसार २२ से २४ फरवरी तक धामपुर जिले विजनौर में रथ यात्राका उत्सवहोगा अतः समस्त धर्मोत्साही पुरुषों से प्रार्थना है कि उक्त समय में आनकर उत्सव की शोभा करें॥

इस समय में जिले विजनोर के सर्व जैनी भाई एकत्रित होते हैं यह समय जाति व्यवस्था के वास्ते अति उत्तम है अतः आपसे प्रार्थना की जाती है कि आप अपने शुभ गमन से कृतार्थ कीजिये यहां पर एक सभा भी होतीहै इस में उपदेशकका होना भी अत्यंत जरूरी है जिस के व्याख्यानामृत से इस जिलेकी फजूल खर्ची भी दूर होजाय इस दुष्ट फजूल खर्ची के उठा देने का यही उत्तम समय है क्योंकि इस समय पर सर्व जैनी भाई एकत्रित होते हैं विशेष कर इस जिलेके तो होते ही हैं आशा करता हूं कि इस मेरी प्रार्थना कोआप स्वीकार करकेअवश्य अ-

पने दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे ॥
धूमसिंह जैनी शेरकोट
जिला बिजनौर

विज्ञापन

वैश्य महा सभाको अर्थात् वैश्य कान्फरेन्सको उपदेश कों की अति आवशकता है उनका काम यह होगा कि वो देशाटन करके प्रत्येक ग्राम में कान्फरेन्स के प्रयोजनों प्रगट को करना स्वीकार करैं वोह कृपा करके उन नियमोंसे हम को सूचित करैं जिन पर वो इस कार्य को स्वीकार करसक्ते हैं उत्तर इसका ता० १ अप्रैल सन् १८९६ से पहले हमारे पास आना चाहिये ॥

बैजनाथ सवजज
शाहजहां पूर
जनैरल सैक्रैटरी वैश्य
कानफैन्स

आपके पांच प्रश्नोका उत्तर
इस मूजब

[१] प्रश्न— धर्म के स्थिर चिरस्थाई रहने और धर्मोन्नति होने के वास्ते किस बातकी अधिक आवशक्ता है— इसका इस मूजब क उत्तर है ॥

[१] उत्तर बाल्यावस्था में संतान के वास्ते विद्याभ्यास कराना तत्पश्चात न्याय पूर्वक द्रव्योपार्जन की कृयाका सिखाना— क्योंकि बालक विद्याभ्यास अच्छी तरै सै करैगातो धर्मको चिरस्थाई भी करैगा— क्योंकि विद्या— और न्यायोपार्जन इन दोनोंकी समानता न्याय वालोंने कही है ॥ काव्य ॥ कविनाच विभु र्विभुनाच कविः कविना विभुनाच विभाति सभा ॥ मणिना वलयम् वलयेन माणि मणिना वलयेन विभातिकरः॥ शशिनाच निशा निशयाच शशी शशीना निशयाच विभातिनभः ॥
पयसा जलजं जलजेन पयःपयसा जलजेन विभाति सरः ॥ ॥ १ ॥ इस न्याय पूर्वक दोनों बातोंसे अलंकित संतान को करना चाहिये। जिसमें विद्याभ्यास कर अलंकित करना ये सर्वोपर श्रेष्ठ है इस प्रकार चिरस्थाई धर्म की पाठशाला व सभा होना चाहिये ॥ इसीका पुष्टि

कारक [दोहा] भाईपन्ना लाल जी बाकलीवाल लिखते हैं ॥ (दोहा) विद्या धन मैत्री बिना दुखित जैन सर्वत्र ॥ तिन हित निनही चहत यह ॥ जैन हितैषी पत्र ॥ १ ॥ इस कारण विद्याभ्यास को पाठशाला वा न्यायोपार्जन विनोत्पन्न कुरीतीमेटन सभा इनके होने की बडी आवश्यका है ॥

[२] प्रश्न दूसरा ॥ ऐसे कौन से कारण हैं जिन के न होने से धर्मका प्रचार कम होजाता है और अंतको लोप होजाता है॥ उत्तर इसका ॥

[२] उत्तर इसका भी येई है धर्मका प्रचार कम होना अंत में लोप होना ये कारण अविद्या और अन्याय द्रव्यो पार्जनका है क्योंकि इसके साथी क्रोध मान माया लोभ ईर्षा वैर विरोध कुव्यसन कुसंग ऐसे अविद्या अन्याय के सहकारी हैं फेर धर्म के लोप होने की क्या कठिनता है ॥ और इसका प्रचार अन्याय द्रव्योपार्जनका है ॥ सो अन्याई द्रव्य विनाश और लोपका कारण है न्याय बालेका वाक्य ॥

[श्लोक] अन्यायो पार्जित द्रव्यं दश वर्षाणि पंचच ॥ प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलंच विनश्यति ॥ १ ॥ ऐसे कारणों से धर्म लोप होजाता है ॥

[३] प्रश्न तीसरा– धर्मोन्नति के वास्ते ऐसे कौन से काम है– जो सर्व क्षेत्र में सदा काल होने चाहिये– और ऐसे कौन से काम हैं जो देश कालकी अपेक्षा बदलते जाते है ॥

[३] उत्तर– धर्मोन्नति के वास्ते सर्व क्षेत्र में सदाकाल पाठशाला व सभा नियत होना चाहिये ॥ क्योंकि इनके न होने से ईर्षा वैर विरोध अन्याय अनु चित कृयाका प्रचार आदि इस जैनकौम में हजारों हानिये हो रही हैं जिनकी वार्ता कहने में वचन के द्वारा नहीं आती और कृया आचर्ण भी देशकाल की अपेक्षा चाल चलन बदलते रहते हैं– परन्तु सभा पाठशाला होने से जो कार्य प्रमाण किया जावैगा उस्के फेर बदलने की आवश्यका नहीं ताते अधकारी पंच मुकर्रर होना चाहिये ॥

[४] प्रश्नचोथा संसारी मनुष्यों के लिये धर्मोन्नति के वास्ते अपने संसार व्यवहार को सु-

धारने की आवश्यकाहै यानहीं

४] उत्तर— संसार में मनुष्य जन्म अमोल्य चिन्ता मणी रत्न जिसमें भी उच्चकुल जैनजाती जिस्को इंद्रादिक देव तरसते हैं ऐसा होकर धर्मोंन्नति के वास्ते संसार व्यवहार जरूर सुधारना चाहिये जितने कार्य करै वे संपूर्ण न्याय पूर्वक करणा चाहिये—व मान वडाई के अर्थ व्यर्थव्यय यानी फजूल खर्ची मिटाना चाहिये— और वृत कृया आचर्ण नित्य नियम पूजन स्वाध्यायादि षटकर्म ग्रहस्थ को पालना चाहिये— इन्हीसे संसारका व्यवहार शुद्ध होता है— परन्तु ये कार्य भी सभा तथा पाठशाला के आश्रित है ॥

५] प्रश्नपांचवां ॥ संसार व्यवहार के कार्यों में हमारी जाति की कैसी दशा होरही है ॥

५] उत्तर पांचवा— एहै के संसार व्यवहार कार्यों में हमारी जैन जाति की ऐसी न्यूनदशा हे रही है के ऐसी कही नहीं होवने में आती वो ये है ॥

[१] अव्वलतो ईर्षा वैर विरोध आपुस में कषाय— ए कार्य इसकोम में बहुत हैं ॥

[२] दूसरै इस जैनकोम सरीखी वात्सल्यता वा उपगूहणादि गुण अन्य जाति में नहीं थे— सो अब चारों ओर दृष्टि पसारी जाति है तो इन वातोंका पताबी नहीं लगता— सिवाय में पहली कलम सिद्धहोती है ॥

[३] तीसरै सभा और पाठशाला नियत नहीं है— वा कोई वुद्धिवांन गुणाम्नाई द्रष्टगोचर नहीं जिनकी आज्ञा को सर्व पालन करै— वा सभा होवैतो सभाके अधिकारीन की आज्ञामाननी होय ऐसा पक्षपात रहित पंचायतका वीमीरा— नहीं— वा अविद्या के कारण शास्त्रभ्यास की परपाटी नहीं ॥

[४] चौथै अभक्ष भक्षन—वा हीन क्रियाका आचर्ण इस जाति में होगया वजै इसकी येहैके इस जाति में स्वछंदता बहुत है रोक टोक के करता कोई नहीं किसी कवीने कहा है ॥ सवैयाछंद ॥ जोगी के थानपै जंगम की धुज भेरोंके थानपै भोपा को झांडा ॥ मुसलमान की दर्गा देखो पीरके थान फकीर व संडा ॥ दादू दुआर में दादूमाल करामतुआर रहै मुछ मुंडा ॥ जैन के मंद्र में पोल वड़ी जंद

पंचही मालक पंचही पंडा ॥ १ ॥ यानी इस कोम को किसी प्रकार न्याया न्यायमें प्रवर्तनेका भय नहीं ॥

इत्यादि बहुत से कार्य हैं तातें न्यूनदशा होरही है इस कारण जैन जातिकी उन्नती और विपरीताचर्ण की हानी करणेकू– पाठशाला– वा सभा– होने से न्याय पूर्वक प्रतबन्ध होने में संपूर्ण प्रकार के लाभ इस जैनजात में होसक्ते हैं और उपाय इस सिवाय उन्नति वा धर्म की वृद्धी का नहीं है जी-

और में श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी– सी० आई० ई० को कोटिशः धन्यवाद देताहूं कि जिन महाशयने ऐसा बड़ा भारी कार्य जैनोन्नतिकासबभार आपने ग्रहण करके कार्य कार्य के प्रथक प्रथक सुधार और समाल को आप अधिकारी बन कर नंत्री नियत किए– अब जैनोन्नति क्योंन होगी॥

[१] जैन पाठशालायें नियत कर- उनके चलानेका भार पंडित प्यारेलालजी अलीगढ निवासी के शुपुर्द किया ॥

[२] जैन सभा स्थापन कराना और जैन जात की उन्नति धर्मोन्नति कराना इनका प्रबन्ध करना– एकार्य– पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासी के जुम्मै ॥

[३] और समस्त जैनी भाईनकी असल हालत और जैनीनकी वा जिन मंदिरों की संख्या आदिका कार्य श्रीमान् हकीम उग्रसैनजी सिरसा वाके जिम्मेहै ॥

[४] जैनियो में से कुरीती मिटाना सुरीती पर चलाना एभार श्रीमान् मूलचंदजी वकील मथुरा निवासी के सुपुर्द हुआ ॥

[५] और सोते हुऐ समस्त जैनीयों को जाग्रत करने जैन उन्नति बताना आदि उपदेश फंड सप्ताहिक जारी करनेकू श्रीमान् परमोत्साई बाबू सूर्यभानजी देवबंद कियागया ॥

[६] उपरोक्त पांचो प्रबन्ध कर्तायों की देख भाल सम्हालके अर्थ श्रीमान् बाबू चंपतरायजी डिपटी मजस्टरेट नसहर इटावा को दिया यानी साहा मंत्री पद दिया ॥

बस इसबात को देख कर यही निश्चय होता है के अब जैनोन्नति क्योंन होगी में सेठ साहब की तारीफ पूर्वक छंद आपकी सेवामें भेजता हूं ॥ कवित्त ॥ श्रीख्याता श्रीमान अभयकर गुणगौरव मन्मथ गुतभारी ॥ सर्व विजई गहन्याय प-

क्षअर धर्म पुत्र समवृत्ती प्रचारी॥ अरगण्य मत्त गजेंद्रण कों हरछल समुद्रको तार्णि शुभारी ॥ संमय विभ्रम वैर अंधको आप भए तर्णी सुख कारी ॥ १ ॥ सौभाग्य दि अनेक गुणौ निधि धर्म वृद्धि हित मंत्री करारी ॥ निज मंत्रि न एक एक पदस्थदे माहा सभा को काम प्रचारी ॥ मेलाजंबू स्वामी-समै वहूं धर्मोत्सव को कार सुभारी ॥ सब मध सभा पतिका पद लह बूडत जैन कोम सिर वारी ॥ १ ॥ श्री श्री श्री मनधार मान्यवर क्रोधादिक शत्रुजय कारी॥ सी० आई० ई० की किताब धन दीनी महांगर्नीजी भारी ॥ श्री युत लक्ष्मणदासजी साहब धन्य धन्य जन मय कनोरी ॥ छोगालाल भेलसा थिनलहू- चिर वृद्धा इ श्वरीताधारी ॥ २ ॥ इत्यादि अनेक गुणों निधी सेठ साहब को धन्य है ॥

मिती फाल्गुण कृष्ण ११ एकादशी सम्वत् १९५२ संपूर्ण सहधर्मी जन न मन धर्म स्नेह बहुधा प्रकार बधाय देना ॥

आपका कृपा कांक्षी हुम्च बुकी- छोगालाल- गोधा भेलसा निवा [illegible] हस्ताक्षर- स्वुद आपका दास [illegible] छोगालाल गोधा० ॥

आश्चर्य

संसार की सर्व वस्तु अथिरहै परन्तु आप नहीं ॥

यद्यपि मनुष्य नित्य प्रति बहुत से मनुष्यों को अपने आंख के सामने मरते देखता है अपने मां बापों से वृद्ध पुरुषों से सुनता है कि प्राचीन समय के सर्व मनुष्य मरगए हैं यद्यपि सब मनुष्य इस बात पर निश्चय रखते हैं सबको मरना है और ऐसा वह अपने मुखसे उच्चार भी करते हैं परन्तु तोभी उसको अपने मरनेका कभी विचार नहीं होता इससे यह ज्ञान होता है कि उसको यह विश्वास है कि सब मरजायेंगे परन्तु मैं नहीं मरूंगा- यह मनुष्य की एक आश्चर्य कारी भूल है अथकि सी मनुष्य के पड़ोस में चोरी होजाती है तो वह भय करके अपने धनकी रक्षाका उपाय करता है पहिरेदार बिठाता है दरवाजे बंद करता है परन्तु अति अज्ञान बात है कि अपने ही घर में यह बात देखता है कि मृत्यु मनुष्यों को चुरा लेजाती है परन्तु अपनी मृत्यु का ध्यान नहीं अय अज्ञानी तूं किस नींद में पड़ा सोता है सचेत होजाय दृष्टि खोल और विचार कि आयुका कुछ भरोसा नहीं है एसे कामन कर कि जब कूंचका नकारा बजेगा तो मुझे पश्चाताप होगा ॥

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १—८—१६—२४ता०

को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से

देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखावें ॥

मूल्यपत्र वार्षिक डाकव्यय सहित केवल [illegible] है

प्रथमवर्ष	ता० १४ मार्च सन् १८९५	अङ्क १५

सहारनपुर

यहां पर अनुमान ६०० वा ७०० घर श्रावक भाईयों के हैं और ग्याहर मंदिर हैं एक टूटी फूटी जैन पाठशाला भी है॥ यह पाठशाला लाला उग्रसैन साहब और लाला भगवानदास साहब की कोशिश से दश बर्ष हुवे नियत हुईथी और प्रारंभ में यह पाठशाला दिन दिन उन्नति करतीथी बहुत से बालक संस्कृत हिंदी भाषा अंगरेजी आदिक पढ़ते थे और एक मास में दो बार पाठशाला के स्थानही में सभा भी हुवा करती थी और पंडित लालजीमल साहबका व्याख्यान होताथा परन्तु अब सभातो बिलकुल बन्द होगई है और पाठशाला भी नाम मात्रही है और ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ दि-

नों में यह नाम भी उडजावेगा लाला उग्रसैन साहबने जिनकी कोशिश से यह पाठशाला नित-त हुईथी बहुत दिनों से इस पा-ठशाला की ओरसे अपना ध्यान हटा लिया है परन्तु लाला भग-वानदास साहब बराबर इसकी पालना और रक्षा करते रहे हैं॥ पर शोक महाशोक है कि लाला भगवादास साहबका देहान्त हो गया है इस कारण अब यह पा-ठशाला अनाथ विना पति के रहगई है ॥ जिस शहर में ६०० या ७०० घर जैनियों केहों और बडे २ धनाढ्य और परोप कारी धर्मात्मा भाई रहते हों वहां पर एक पाठशालाका उजड जाना बडे आश्चर्य की बात है ॥ इस कारण सहारनपुर के धर्मात्मा और परोप कारी भाईयों से प्रार्थ ना की जाती है कि वे अवश्य जैन सभा नियत होनेका उपाय करें क्यूंकि विना सभाके पाठशा लाका कुछ प्रबन्ध नहीं होसक्ता है

जैनी भाईयोंका दास
सुमेरचन्द सहारनपुर

एकादिनकीपुकार

यद्यपि इस कालमें जैन जा-ति म मिथ्यात्व और अविद्या ने अपने राज्यका झंडा गाडा है और कुरीति अन्याय अशुभ आ-चरण वैर विरोधका प्रचार कर जैनियों के सद् गुणों को जिनसे उनकी महत्वता और श्रेष्ठता थी दूर किया है परन्तु कुछ दिनों मे हमारी जाति ने दुष्ट अविद्याका राज्य दूर करनेका उपाय पाठ-शाला आदिक नियत करना प्रा-रम्भ कर दिया है आज काल स-ब ओर से उन्नतिका शोर होरहा है कहीं सभा नियत होती है कहीं पाठशाला जारी की जाती है क-हीं फिजूल खर्ची दूर होती है क-हीं औषधालय बनाया जाता है कहीं बिम्ब प्रतिष्ठा कहीं मंदिर प्रतिष्ठा कहीं रथोत्सवका मेला होता है इत्यादिक धर्मोन्नति की वार्ता एकसे एक नवीन सुनने में आने लगी हैं लाखों और करोडों रुपया जैनियोंका प्रति वर्ष खर्च होजाता है जैन धर्मकी उत्कृष्टता इस कारण है कि जैनी जीवकी

दया करने वाले हैं और जैनि-
यों की परस्पर प्रीति जगत वि
ख्यात है परन्तु हम बड़ा आश्चर्य
प्रगट करते हैं क्योंकि हम को
जैनियों की दया और वात्सल्य-
ता अद्भुत दृष्टि पड़ती है ॥

ऐ प्यारे जैनी भाइयो आप
जानते हैं कि बहुधा ऐसे बालक
प्रत्येक जाति में इस भारत वर्ष
में हैं जिनके माता पिता और
बन्धु जन नहीं रहे और न उनके
पास किसी प्रकार का द्रव्य है और
न इस संसार में कोई उनका प्र-
ति पालक है बेचारे अनाथ रहग-
ये हैं और उनको जीवन व्यतीत
करना दुर्लभ होगया है क्या इन
से अति रिक्त किसी अन्य पर
दया वान को दया करनी चाहि
ये हाय कोई वज्र हृदय भी इन
की दशा को देखकर बिना आंसू
बहाये नहीं रहसका इनसे अधिक
करुणाका स्थान और क्या होगा
हाय इनको कहां शरण मिलै गीद-
या हीन और करुणा हीन पापी
अधर्मी ईसाई मत वालों ने इस
भारत वर्ष में सहस्रों अनाथालय
बनाये हैं और लाखों और करो-
ड़ों रुपये खर्च कर वह इन अना-
थालयों में अनाथ बालकों को श-
रण देते हैं उनका पालन पोषन
करते हैं और उनको विद्या पढ़ा-
ते हैं अनाथ बालकों को सिवाय
उनके और कौन शरण है सो हि-
न्दू मुसलमान आदि सर्व जाति
और धर्म के अनाथ बालक उन्ही
की शरण गृहण करते हैं कुछ दि-
नों से दयानन्द मतानुयायी आ-
र्योंने भी शहर फीरोजपुर और
बरेली में अनाथालय नियत कि
या है परन्तु यह भी जैनियों के
समान दया धर्म प्रति पालक और
करुणा निध नहीं हैं वरन यहभी
कठोर हृदय और निर्दयी ही है
सच्चे दया वान करुणा निधान अ-
हिन्सा धर्म प्रति पालक जीव र-
क्षक कोमल हृदय हमारे जैनी
भाई हैं कि जिन की ओरसे एक
भी अनाथ की प्रति पालना नहीं
होती है और सर्व जाति के अ-
नाथों की रक्षा करना दूरही रही
अपने ही जाति वालों से जैनी
भाईयों की ऐसी वातसल्यता है
कि अपने जाति के अनाथ बाल-
कों की रक्षा हेतु भी कोई अना-
थालय नहीं है ऐसी करुणा और
वात्सल्यता अपनी जाति की दे-
खकर कैसा आश्चर्य उत्पन्न होता
है क्या अनाथालय नियत करना
अति आवश्यका नहीं है क्या ह-
मारी जाति में इतना द्रव्य नहीं है

कि एक अनाथालय जारी कर सकै सब कुछ है जितना धन जैनी लोग धर्मार्थ खर्च करते हैं इतना और कोई जाति नहीं करती है फिर क्यों इस तरफ हमारे भाईयोंका ध्यान नहीं हुआ ऐ भाईयों आप को मेरे वचन कटु और कठोर मालूम होंगे और आप ऐसा विचारेंगे कि यह पुरुष कैसा जैनी है जो जैनी भाईयों पर आक्षेप करता है और उनको अति लज्जित करनिकृष्ट बनाता है परन्तु मैं हाथ जोड सविनय प्रार्थना करता हूं कि अपनी जाति की न्यून दशा और हानि देख कर हृदय अति पीडित और क्लेशित हुआ इस कारण जो मुंहपर आया सोबका नहीं तो मेरी अन्तर की हाय तो यही है कि यह उत्कृष्ट जाति उचित और मुख्य कार्यों को विस्मरण न करैगी और अवश्य एक अनाथालय किसी योग्य स्थानपर नियत किया जावैगा ॥

चिट्ठी

श्रीयुत भाई साहब लाला सूर्यभानजी जय जिनेन्द्र मिती फाल्गुण वदी ९ को भाई साहिब पंडित चुन्नीलालजी व बाबू लालजी साहब मुरादाबाद निवासी यहां पधारे बहुत बडा आनन्द हुआ फाल्गुण वदी १० को प्रभात ही उनको पाठशाला दिखलाई गई हर एक कक्षाके लडकों को पढते हुऐ देखकर अपनी बहुत खुशी प्रगट की और यह भी कहा कि यह पाठशाला जैन कालिज होसक्ती है क्योंकि यहां सर्व प्रकार की सहायता देशकाल के योग्य मिलसक्ती है और राज की भी कृपा दृष्टि है और पढने पढाने वालों की भी बाहुल्यता है इस में मेरी यह सम्मती है कि इसके विषय में अच्छी तरह सोच करके अगर सर्व महाशय धर्मोंन्नति व विद्योन्नति कारक प्रेरणा करैं और सहायता देवैं तो बेशक यह कार्य सिद्ध होसक्ता है उक्त महाशयों ने सभा करने के हेतु कहा उनके अभि प्रायानुकूल रात्रिको सात बजे से ग्याहर बजे तक श्री मंदिरजी पाटोदी में सभा सुशोभित हुई अनुमान ५०० सभा सद उपस्थित थे भाई साहिब ने एकमता होना व्यर्थव्यय न होना विद्योन्नति कुलोन्नति का होना मनुष्य जन्मकी दुर्लभता दिखलाकर अत्यन्त उत्तम व्याख्यान दिया अनेक दृष्टान्त से

पुष्ट किया सर्व सभा सदों के चित्त को ऐसा आनान्दित किया और अल्हाद उपजाया कि उसका प्रगट करना वचन के अगोचर है नमूना उसका यह है कि उक्त महाशयोंका इरादा प्रभात की गाडीमें रवाना होनेका था लेकिन सर्व भाईयों ने दूसरे रोज भी सभा होनेका अग्रह किया चुनाच दूसरी सभा श्री मंदिरजी चाकसू में था उसही तरह तीसरे रोज आग्रह किया जानेपर श्री मंदिरजी बडे में सभा हुई वहां भी इसी प्रकार उत्तमोत्तम व्याख्यान हुये बाल विवाह व वृद्ध विवाह और अशुद्ध आचारणोंका निषेध इस तरह पर हुआ कि इन कुरीतियों के उठानेका उत्साह और उद्यम करने पर नियत आई आशा है कि इसी तरह उपदेश और सभायें होती रहेंगी तो थोडे काल में प्रबन्ध होजायगा भाई साहयों ने जाने के लिये जल्दी की वर्ना तो यहां के निवासीयों की यह अभिलाषा थी कि दो चार रोज तक और भी इन महाशयों के मुख से व्याख्यान श्रवण किया जावे- और यहां पर जो नयो व्यानगरी श्रीयुत सेठ साहब मूलचन्दजी अजमेर वालों ने तयार कराई है जिस के दिखाने के वास्ते चैत्र वदी २ से चैत्र वदी १२ तक दिन करार पाये हैं और इन्ही दिनों में सेठसाहब की तर्फसे मंडल विधान तरह २ के होवें गे ॥ और रथ यात्रा भी होगी यह उत्सव ऐसा होगा कि जिस में दूर२ के भाई अवश्य पधारेंगे इस वास्ते आपसे प्रार्थना है कि यह सम्पूर्ण वृतान्त जैन गजट में छपा दीजिये कि सर्व भाईयों को प्रगट होजावे और यहां पधारनेका उत्साह करैं और आप भी व लाला चम्पतरायजी व चुन्नीलालजी व पंडित प्यारेलालजी व मूलचन्दजी आदि सर्व भाई मंत्री उप मंत्री और सभापति श्रीमान् सेठजी साहिब लक्ष्मणदासजी- सी० आई० ई० जो कि जैन धर्म संरक्षणी महा सभा के अधि कारी हैं कृपा करके पधारें ताकि यहां भी उस सभाका एक जल्सा हो कि जो जैनोन्नति की तदवीरें आप महाशयों ने सोच रक्खी हैं वोह सहज में सिद्धि हो ॥

भोलीलाल सेठी
सवाई जयपुर

क्यासदांदिन एकसेही रहते हैं

परम हर्षकी बात है कि ता० १६

फरवरी सन् १८९१ को लाला कन्हैयालाल उपदेशक नग्र फीरोजपुर झिरके में पधारे और सभा करने की प्रेरणा की सो श्री मंदिरजी में शास्त्रजी पढ़े जाने के पश्चात आठ बजे से सभा प्रारम्भ हुई अनुमान तीनसौ पुरुष और पचास स्त्रियां एकत्र हुई उपदेशक साहब ने जैन पाठशाला और जैन सभा के नियत करने और फिजूल खर्ची के दूर करनेका व्याख्यान कहा– व्याख्यान ऐसा उत्तमथा कि जिसकी प्रशन्सा कही नहीं जासकी उस समय यद्यपि सब साहबोंका विचार हुआ कि सभा अभी नियत की जावै परन्तु रात्रि ज्यादह होगई थी इस कारण अगले दिन फिर दश बजे सभा होना और वैष्णव भाईयोंका भी शरीक होना करार पाया परन्तु अगले रोज दिन में सब भाई एकत्र न हो सके इस कारण रात्रि को सभा हुई वैष्णव भाई भी पधारे उपदेशक साहब ने बड़ा मनोहर व्याख्यान कहा जिससे उसी समय सभा और पाठशाला नियत होगई और फिजूल खर्ची दूर करनेका प्रबन्ध हुआ सभा में दश जैनी और इकीस वैष्णव भाई सभा सद् नियत हुये स्त्रियोंका बाजार में गाना उसी दम दूर किया गया ॥

गंगासहाय
सैक्रैटरी वैश्यसभा
फीरोजपुर झिरका
पटवारी मौजा अगोन

संपादककी संमति

लाला गुलजारीलाल साहब सर्राफ कानपुर को हमकोटिशः धन्यवाद देते हैं आप सदैव धर्म प्रचार में तन मन धन से यत्न करते रहते हैं जैन धर्म से आप को सच्ची प्रीति है जैन महा विद्यालय के वास्ते भंडार करनेका जो उपाय आपने निकाला है वह अति सुगम है अब तक भंडार का काम बन्द रहा परन्तु इस रीतिसे आशा पड़ती है कि काम चल जावैगा और सर्व नग्रके भाई इस रीति को स्वीकार कर लेवैंगे हम कानपुर के सब भाईयों को अनेकानेक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने धर्म अर्थ इतना रुपया दिया अन्य नग्र के भाईयां को भी यह प्रबन्ध अंगीकार करना चाहिये अभी तक मजमून निगारीका कार्य होतारहा अमली कार्य कुछ नहीं हुआथा– परन्तु यह ऐसा

आसानका यहा है कि- यदि सब भाई- अमली काम जारी कर देवैतो बहुत जल्द धन ऐकत्र होजा वेगा- और हम आसा करते है कि दूसरे जैन अखबारों के संपादक भी इस पर ध्यान देवैंगे ॥

चिट्ठी

जनाब बाबू सूर्यभानजी साहब जैजिनेंद्र- हमको अपने जैनी भाईयों की यह दिशा देख कर अधिक शोक होता है कि हमारे जैनी भाई बिलकुल अपने धर्म से विमुख हो रहे हैं जो कि उनका इस संसार में मुख्य मनोर्थ है परन्तु अब जब कि हम अपने धर्म का न पूरा करैं और अपनी आयु को वैसही ही व्यर्थ में व्यतीत करैं और अपने धर्म से सर्वथा विमुख रहैं तो मेरी तुच्छ बुद्धि के अनु सार ऐसे पुरुषोंका जीवन छोटे २ पशु कुत्ता बिल्ली आदि से भी निकृष्टि है क्योंकि वह भी अपना पेट किसी न किसी भांति दिन भर में भरही लेते हैं और हम भी चाहै उन से अच्छी भांति वा बुरी इस दशा में हम और वे दोनों समान हैं परन्तु मनुष्य को जो बड़ाई है तो उसका कारण केवल यही है कि यह धर्म अधर्म में विचार करैं परन्तु जब कि यह धर्म अधर्मका विचार न कर सकै या न करैं तो इसका जीवन वृथा और इसका मनुष्य भव धिक्कार है हाय अफसोस यह मनुष्य योनियों वृथा गंवाई जावै बड़े खेद की वार्ता है कि ऐसी उत्तम मनुष्य योनि को जो बडी कठिनाई से प्राप्त हुई है और इसका बार २ पाना असम्भव है निर्थक जावै उचित तो यह था कि हम इस मनुष्य योनि की कदर करते और धर्म अधर्म को विचार ते परन्तु धर्म अधर्म का विचार विना विद्या के होना दुष्कर है इस कारण प्रथम विद्या ध्यान करना उचित है परन्तु विद्या ध्यनका मूल स्थान बिदून पाठशाला आदि के और कोई दृष्टि नहीं आता इस कारण प्रथम पाठशाला ऐ नियत होना अत्यन्त आवश्यक है पर केवल पाठशाला ही विद्या उन्नति के लिये काफी नहीं हैं इस कारण ऐसे उपाय भी सोचने चाहिये जिन से पूरी २ विद्या उन्नति हो मेरी तुच्छ बुद्धि के अनुसार सिवाय महा विद्यालयके ऐसा और कोई उपाय नहीं है इस कारणऐ महात्माओ धर्म स्नेही विद्या

उन्नति के अनुरागी पुरुषों ऐसे म हाविद्यालय के रचने तथा नियत करने के वास्ते परिश्रम करो और अपने धन को सुफल करो क्यों कि ऐसे धर्म कार्यों में लगा हुआ धन वृथा, निस्फल नहीं जाता— आशा— आशा— आशा— हमको अपने प्यारे भाईयों से ऐसे धर्म कार्य में सहायता की बहुत बड़ी आशा है क्योंकि हमारे जाति भाईयों को जाति वृद्धि और वि द्या उन्नतिका बड़ा ध्यान है ॥

जैनी भाईयोंका दास
मंगलसेन विद्यार्थी दूमरी
क्लास मिशनस्कूल मेरठ

चिट्ठी

प्रियवर मेरी रुचि विद्योन्नति पर अधिक है क्योंकि जहां तक मैंने विचारा है धर्म के चलनेका का रण एक विद्याही मालूम होताहै इस समय जो कुछ धर्म की न्यू नता होरही है वह अविद्या रू- पी वैरी काही प्रतापहै हमारी जाति में मिथ्यात्व रूपी अन्ध- कार छागया है यह अन्धकार विद्या रूपी दीपक केही प्रकाश से दूर होसक्ता है मनुष्य के सु- खका हेतु विद्याही है परन्तु बडे से शोक की वार्ता है कि हमा- री जाति में विद्याका अभाव हो गया है तबही सत्य धर्मका प्र- चार भी उठगया है और उठ ता जाता है प्रियवर इस धर्मकी न्यूनदशा देख कर हमारे हृदय में क्लेश हो रहा है और अत्यंत शोक में निमग्न हैं ऐ भाईयों हि म्मत करो तुम्हारी हिम्मत कहां चली गई तुम किस नीद सोये पडे हो क्यों अचेत हो रहे हो धर्म के पहचाननेका मार्ग विद्या ही है क्यों तुम इसका प्रचार नहीं करते मेरी विनय पूर्वक बा रम्बार यही प्रार्थना है कि जि- स प्रकार होसके विद्याका प्रकाश करो जिससे धर्म प्रभावना बढै॥

रघुनाथदास हांसी
जिला हिसार

चिट्ठी

श्रीयुत बाबूजी श्री ५ सूर्य भानजी योग्य सविनय जय जि-

नेत्रानन्तर निवेदन यह है कि महाशयवर इस जैन गजट से जितना कुछ उपकार जैन कुलका होगा और हो रहा है वह अकथनीय है किंतु अनेक देशों के व्यवहारों को दिखाने के लिये यह पत्र साक्षात् दर्पण के समान है अज्ञान रूप अन्धकार को निकालने के लिये तो सूर्य रूप है और ज्ञानानन्द रूप रत्नाकरके कृपांगत करने को यही शशांक मंडल है सनातन धर्म के गौरव दिखाने के लिये यही अगुवा है और जैन धर्म वा जैन कुल के प्रताप वर्णन करने को यही पत्र नक्कारे की चोव है संसार समुद्र की सैर कराने को सज्जनों के लिये यह गजट नौका है और सम्पादक इस के खेवटिया हैं निःसंदेह आज तक इस के समान दूसरा पत्र जैनियों में नहीं निकला है अक्षर और लेख बहुत उत्तम है आशा है सर्व जैनी भाई अवश्य इस पत्र को खरीदेंगे॥

पं० चौथमल
जैपुर

प्रेरितपत्र

मान्यवर;

निम्न लिखित लेखको आगामी जैन गजट में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये

विदित होकि यहां पर करीब डेढ़ वर्ष से जैन पाठशाला है जिस में श्रावण बदी २ सं० १९५९ से मैं विद्यार्थियों को विद्या अध्ययन कराता हूं इस पाठशाला में साम्प्रत २१ विद्यार्थी हैं यह पाठशाला चन्दे से चलती है परन्तु सिवाय जैन दल के और किसी का चन्दा नहीं है यद्यपि यह पाठशाला पंचायती है परन्तु लाला भजजूमल इस पाठशाला के बड़े उद्योगी पुरुष हैं जिन को रात दिन पाठशाला की उन्नतिका ध्यान रहता है— इसी कारण पंचों ने इनको इस पाठशाला के मंत्रीका कार्य देकर कोषाध्यक्ष भी नियत किये हैं यह साहब धर्म के भी बड़े प्रेमी हैं गृहस्थी होने के कारण यद्यपि इनको इधर उधर जाने का बहुत काम रहता है तथापि जब अपने स्थान पर रहते हैं तो दो-

ओं समय पाठशाला के विद्यार्थियोंको अपनेदर्शन देकरकृतार्थ करते हैं प्रशंसनीय बात इतनी है कि मनुष्य को जिस किसी कार्य में अत्यन्त प्रीति हो जाती है वह स्वल्प काल मेंही नष्ट भ्रष्ट हो जाती है परन्तु मैं जबसे यहां आया हूं तबसे ही इनकी प्रीति पाठशाला की ओर अधिक तर देखताहूं आपको जैन समाचार पत्रों के देखने में भी अत्यन्त प्रीति है यदि ऐसेही और पुरुष भी पाठशाला की उन्नति में उद्योग करें तो क्या आश्चर्य है जो पाठशाला अपने फलको प्रकाशित करें इस पाठशाला के विद्यार्थियों ने श्रीमती बालोप देशिनी सभा साप्ताहिक [जोकि प्रति रविवार को होती है] गत दिसम्बर मास में स्थापित की थी उक्त लाला साहब यद्यपि इस के कोई अधिकारी व सभा सद नहीं है परन्तु आपने सभा के वास्ते एक मेज बन वाने को कहा है— अन्त में यह प्रार्थना है कि परमेश्वर इन की बुद्धि को दिन दिन ऐसे ही प्रशंसनीय शुभ कार्यों में प्रीतिदे

यमुनादास शर्म्मा
अध्यापक संस्कृत जैन पाठशाला
शेरकोट जि॰ बिजनौर

जैनमहाविद्यालय

अनुमान दश वर्ष से जैन महाविद्यालय के नियत करने की धूम मच रही है कुछ दिन हुये अजमेर में जैन महाविद्यालय भंडार भी कायम होगया है जैन प्रभाकर पत्र अजमेर बराबर इस भंडार की सहायतार्थ लिखता है जैन हितैषी पत्रने भी बहुत ज़ोर लगाया उस् पत्र जैन हितोपदेशक ने जैनमहाविद्यालय के वास्ते बहुत शोर मचाया अन्य भाईयों के लेख जो इस विषय में छपे उनसे भी यह ज्ञात् हुआ कि महा विद्यालयका अनुराग बहुधा भाईयों के चित्त में है प्रतिष्ठा उत्सव आदिक मेलोंमें भी इस के वास्ते बड़े २ लम्बे व्याख्यान होते हैं परन्तु आश्चर्य की बात है कि इतना होने पर भी महा विद्यालयका कुछ प्रबन्ध न हुआ महा विद्यालय के वास्ते अनुमान दश लाख रुपये की आवश्यक्ता है और महा विद्यालय भंडार में कई वर्ष में अब तक केवल तीन या चार हजार रुपयेही जमा हुये हैं इसका क्या कारण है यदि कोई उत्तम उपाय न कि-

जाता तो ऐसी दशा में महा विद्यालयका होना असम्भव दृष्टि पड़ता है जहां तक हमने विचार किया है महा विद्यालय के नियत होने की जैन जाति में अत्यन्त आवश्यक्ता है इस जाति में प्रत्येक मनुष्य को पंडित होने की जरूरत है क्योंकि जैन धर्म में धर्मका जानना सबसे मुख्य है परन्तु शोक और परम शोक की वार्ता है कि प्रत्येक मनुष्यका पंडित होना तो अलगही रहा हजार मनुष्यों में भी एक पंडित नहीं है और यदि सच्ची दृष्टि से देखा जावे तो पंडितोंका अभाव ही है हाय अपनी जाति के ऐसे समाचार लिखते हुये हमको लज्जा आती है और हृदय में क्लेश उत्पन्न होता है यह जाति अधिक धन वान, धर्मानुरागी और परस्पर प्रीति रखने वाली जगत् विख्यात है परन्तु देखने में यह आता है कि अन्य जाति यें अपनी उन्नति के उपाय ऐसे २ कर रही हैं जिन से आश्चर्य पैदा होता है सर्व जाति के मनुष्यों ने अपने अलग २ महा विद्यालय बना लिये हैं जिन में लौकिक और उन के मतकी विद्या उनके बालक पढ़ते हैं और हमारी जाति के बालक भी उन्हीं महा विद्यालयों की शरण लेते हैं हम यह बात ईर्षा से नहीं लिखते कि अन्य जाति के मनुष्यों ने क्यों महा विद्यालय बना लिये केवल इस बात का शोक प्रगट करते हैं कि हमारी जाति भी क्यों उपाय नहीं करती हमारी जाति में भी ऐसे धनाढ्य पुरुष हैं जो अकेलेही महा विद्यालय खड़ा करसक्ते हैं परन्तु उन महाशयों की तबियत अभी इस तर्फको कम रुजू हुई है और अन्य जाति के धनाढ्यों ने इसकी आवश्यक्ता भले प्रकार जानली है— और इसी कारण पत्रों में हम प्रति दिन यह बात पढ़ते हैं कि आज बम्बई के अमुक मुसलमान ने छः लक्ष रुपया मुसल्मानोंका मदर्सा बनाने के वास्ते दिया और कल अमुक कायस्त ने इतने लाख रुपया इलाहाबाद में कायस्त पाठशाला के वास्ते दिया मगर जैनी धनाढ्यों के अपेक्षा ऐसे समाचार सुनने अभी मुश्किल हैं और यह हमारी भी भूल है कि ऐसे कार्य के वास्ते जिस में हमारा लाभ है किसी एक दातांसे आशा करें महा विद्यालय से चाहे वो किसी स्थानपर नियत हो भारत वर्ष के कुल जैनियों को लाभ है

इस कारण सब की सहायता से ही यह नियत होना चाहिये य-दि सब भाई थोडी २ सी भी स-हायता करें तो सहज में जैनका क्रिज बन जावे लाहौर में आर्य समाजियों ने एक २ पैसा मांग कर और एक २ चुकटी आटा इकट्ठा करके आर्य महा विद्याल-य बना लिया है हमारी समझ में ऐसे उत्तम और लाभ दायक धर्म के काम में एक २ मास की आ-मदनी देदैना कुछ मुश्किल नहीं है क्योंकि इस रुपये से सदा का-ल के वास्ते धर्म की उन्नति और प्रचार होता रहैगा और इस प्र-कार रुपया देने वाले को इस लोक और पर लोक में सुख की प्राप्ति होगी हमारे जैनी भाई एक मास की क्या वरन वर्षों की क-माई व्यर्थ लुटा देते हैं परन्तु महा विद्यालय एक नवीन कार्य है इस कारण एक बार सब भाई इस प्रकार सहायता नहीं करसके हैं जब तक कि इसका प्रचार न हो जावे अत एव हमारी जाति के धर्मात्मा विद्वान और परोप का-री पुरुषों को चाहिये कि वोह सबसे आगे पग धरैं और नमूना बन कर दिखावैं हमारी समझ में इस कारण जो २ भाई अपने एक मासकी कमाई इस उत्तम काम में लगानेका अनुराग रख-ते हों उनको चाहिये कि वोह के वल अपना नाम प्रगट करदें और उनका नाम जैन पत्रिकाओं में छपता रहे और मुन्शी चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर इटावा जो महा सभा मथुरा के महा मंत्री हैं और बडे परोप कारी हैं इस विषयकाएक रजिस्टर अपने पा-स रक्खें और उक्त महाशयों के नाम जो एक मासकी कमाई देना चाहैं उस रजिस्टर में लिखते रहैं आवश्यक संख्या होने पर इन सब भाईयों की सम्मति इस विषय में लेवें कि महा विद्यालय कि-स स्थान पर होना चाहिये और रुपया कहां जमा करना चाहिये और इसी प्रकार सर्व की सम्मति से यह भी निश्चय करें कि यह रुपया के भाग करके दिया जावे क्योंकि बहुधा मनुष्यों को एक मास की कमाई एक बार देना मुश्किल होगा ॥

सर्व जैनी भाईयोंका दास
भारतवर्षका एक जैनी

संपादककीराय

घर पीछे एक २ रुपया एक त्र करनेका जो उपाय कानपुरके भा-

इयों ने निकाला है सबसे उत्तम मालूम होता है— अव्वलतो सब जगह के भाई उसको प्रचलित करें और जिन महाशयों के दिल में जियादह जोश है और विद्या दान का लाभ उठाणा चाहते हैं वो ह अपना २ नाम प्रगट करना शुरू कर देवें—सो बहुत रुपया एकत्र होजावेगा और यह भी मालूम हो जावेगा कि कितने भाई— इस कार्य के करनेका जोश तन मन और धनसे रखते हैं ॥

चिट्ठी

सिद्धि श्री देवबंद सुभस्थाने सर्वोपमा योग्य बाबू सूर्यभान वकील जोग्य लिखी भाट गांवके सकल पंच जैनियों की जैजिनेंद्र वंचना— आगे हाल यह है कि आपके जैन गजट के आने से हम लोगों को वहुत कुछ लाभ प्राप्त हुआ है आप से सज्जन पुरुषों को श्रीजी चिरंजीवरक्खे और आप सदैव जैन गजट हमारे यहां कृपा करके सदैव भेजते रहना यहां पर एक जैन पाठशाला नियत है परन्तु विद्यार्थी कम हैं सर्व विद्यार्थी ६—७ के लग भग हैं सो पूजन पाठ पढते हैं पूजा प्रक्षाल प्रति दिन होते हैं परन्तु दर्शन करनेका प्रचार कम है यहां के भाई आपका वडा धन्यवाद देते हैं शास्त्रजी वंचते समय जैसे अन्य जाति भाई वैश्य तथा ब्राह्मण आते हैं वैसेही जैनी भाई भी आते हैं मन्दिरजीका काम अच्छा चलता है यहां उपदेशक महाशय के आने की अत्यन्त आवश्यक्ता हैं क्योंकि फिजूल खर्ची आदिक कुरीतियां अपनी प्रबलता दिखा रही हैं ॥

चिट्ठी

भाई साहब बाबू सूर्यभान जी जैजिनेंद्र जैन; गजट आपका आया पढकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ जिस प्रकार जैन धर्म की उन्नति में आप परिश्रम कर रहेहैं ऐसा ही चाहिये आप धन्य है जो कि आपका नाम ज्योति करके परि पूर्ण है [बाबू सूर्यभान]

तक उसका प्रकाश दूर २ तक क्यों न हो हमको जैन गजटका लेना स्वीकार है आप अवश्य भेजा कीजिये ॥

आपका शुभचिंतक
भैरोंप्रसाद दर्याबाद

चिट्ठी

सिद्धि श्री देववंद सुवस्था ने स्थित श्रीमान् वकील साहब सूर्यभानजी जोग्य लिखी ललना से संघी पं० बिहारीलाल सिखरचन्द सवाई संघी जवाहरलाल संघी धारीरामै संघी रंगेलाल बिहारीलाल इत्यादि सकल पंचान की सविनय जुहार वंचना आगें यहांका हाल इस भांति मालूम करना अनुमान सो सवासौ पुरुष स्त्री यहां वास करते हैं पूजन व शास्त्रजी दोनों समय होतेहैं स्त्री पुरुष पचास के अनुमान आते हैं स्वाध्याय भी २० आदमियोंके लग भग करते हैं— श्री पं० बिहारी लालजी के उपदेश से सर्व सभ्य जन हर्षायमान होकर धर्म में प्रवर्तेन हैं और पंडितजी साहब के गृह में श्रीमंदिरजी में आन कर स्वाध्याय करती हैं बहुत बुद्धि मान हैं वोह स्त्रियों को भली भांति उपदेश देती हैं ॥

और यहां पाठशाला भी ६ मास से सवाई संघी जवाहरलाल आदि उक्त पुरुषों की बडी रुचि तथा प्रेरणा तथा उत्साह तथा बहुत भाई हर प्रकार की सहायता पाठशाला पर रखते हैं और इन्ही के मकान में पाठशाला है यह बडे धर्मात्मा सज्जन हैं और पुराचीन घराना है धनाढ्य पुरुष है धर्म कार्य दाना दिक पूजन प्रभावना दिक में इनका द्रव्य बहुत व्यय होता है पाठशाला में पं० सिखरचन्द पढाते हैं जिन्होंने डेढ वर्ष में १५० बालक ललितपुर की पाठशाला में पाठ पूजन स्वाध्याय गणित आदि में निपुण कर दिये और यहां की पाठशाला में सब विद्यार्थी २० के लग भग पढते हैं सात बालक ब्रह्मणों व वैष्णवों के हैं और तेरह बालक अपनी जाति के जिन में पांच बालक निकट के ग्रामों के हैं दो बालक तो सिद्धान्त कौमदी पढते हैं और पाठ पूजन सूत्र सहस्र नाम तीन लोक की चर्चा गुण स्थान मार्गनादिक सब पढगये और शेष बालक पूजा भाषा अक्षर बोध या मनोज्ञ लेखन क्रिया सीख ते हैं इस भांति यहांका वृन्तात आप मालूम करना और हमारें लोगों पर अनुग्रह कृपा दृष्टि रखना ॥

धर्म स्नेही— धर्मरक्षक श्रीमान बाबू सुर्यभानुजी साहब संपादक जैनगजट को गुलजारीलाल सर्राफका जैजिनेन्द्र पहुंचे ॥ आगे नीचे लिखेहुए लेखको अपने जैनगजट मे जगह देकर हमारी सभाको अनुग्रहित कीजियेगा—

मुन्शी चाम्पतरायजी साहब महा मंत्री— जैनमहासभाके किसी सरकारी कार्यके निमत्त हमारे शहरमे पधार कर धर्म शाला जैनमंदिर मे ठिकेथे— उक्त महाशय से हमारी सभाने प्रार्थना करी के आज १४ तारीखको आप सभामें अपना व्याख्यान करें बडे हर्षकी बातहै कि उक्तमहाशयने हमारी प्रार्थना को स्वीकार किया— और हमारी सभाकी तर्फसे नोटिस छपवा कर सब भाईयोंमें भेजेगये— ७ बजेशाम का वक्तसभाका नियत हुआथा— धर्मशाला का चोक जो २७×२४ फीटहै फर्स रोशनी आदि से खूब सजायागयाथा ऊपर सामयाना लगाया गयाथा— सबभाई उक्त समयपर बडे हर्षकेसाथ पधारे— दोसौसे अधिक भाई एकत्रहुयेथे— उक्त मुन्शीजीकानाम सुनकर जैनगजट कामपुरके संपादक लालाहरनाम सिंह साहब भी आयेथे— प्रथम पाठशाला के विद्यार्थी यों की परीक्षा एसे प्रकार हुई कि के जिसको देखकर मुन्शी सहबने बडा हर्ष प्रकाशकिया— उसके पीछे [illegible] गुलजारी लाल ने मंगला चर्ण पढकर सभाकी कारवाई का ब्योरा सब सभासदों से प्रगटकिया— फिर मुन्शी साहबने अपना व्याख्यान इसप्रका शुरू किया के प्रथम × अपने ईष्ट देवको नमस्कार कर के की विकटोरिया महाराणी राज राजेश्वरी के राजमें जैसी कुछ स्वतंत्रता सबलोगों को है बहुत विस्तार सहित कहा और महाराणी का धन्यवाद दियागया— उसके बाद महा सभा के सभापति साहब श्रीमान सेठलक्ष्मण दासजी साहब की प्रशंसा यथा उचित करके कहा के उन्ही महाशयका प्रताप है कि जिनकेसबबसे— मेरी यहां इस कदर ईजत हुई है— और सब सामासदों ने भी सेठ साहब का धन्यवाद कहा और फिर अतिमनोहर और गंभीर ऐक व्याख्यान करीबन १॥घन्टे तक दिया जिसमें प्रथम जैनधर्म की प्रचीनता प्रत्यक्ष प्रमाणों से दिखलाई— और फिर जैनधर्म की उन्नति के जामाने की तस्वीर खैंचकर तवारीखी सबूतों से दिखलाई और फिर न्यून दशा होने का कारण बतलाया उसके पीछे वोह २ बातें दिखलाई गई कि जिसके द्वारा हम फिर उन्नति कर सकते हैं— और महासाभा के उसूल और उसके प्रयोजन बतलाये— उक्तमुन्शी साहबके व्याख्यान पूरा होने के पश्चात लाला शादीलाल मंत्री जैन सभा कानपुर ने धर्म और विद्या विषय मे प्रशंसनीय व्याख्यान कहा

रूपप्रसाद इकांपसी— जडेनर नि- वासीने जो धर्म शाला में उपस्थितथे विद्या के विषय में और कुविशनों की निन्दाये संसकृत श्लोकों से बहुत ही अच्छा व्याख्यान कहा—उसकेपीछे दुर्गा प्रसाद विद्यार्थी पाठशाला ने जो लाला— राम लालजी लोहिये के पुत्र हैं और अवस्था केवल १२ वर्ष की है देवगुरु और शास्त्र का स्वरूप संसकृत के श्लोक बहुतही मधुर और जोर जोरकी आवाज से पढकर अच्छी तरह समझाया— हमारे सहरके भाईयोंने धर्म विद्या के वास्ते मुन्शी साहबकी यादगार में घरपीछे १) देना स्वीकार किया— और यहकरार पायाके सब रुपया एकत्र करके मथुरामें सभापति साहब महासभा के पास भेजा जावे— और सब भाई अपने२ नग्रों से ईसी प्रकार रुपया देवेंगे तो एकलक्ष रुपया महा विद्यालय के वास्ते एकत्र होना कोई भी बात नहीं है— यह रुपया महा विद्यालयकी मद्में जमाहोना चाहिये— ब्याज अगर कुछ आवे तो उसको विद्या वृद्धिमें लगा देनेका महासभाको अख्तियार है परंतु असलरकम नखर्च की जावे— अब हमारे कानपुर के भाईयों की यह प्रर्थना है कि बहुत दिनों से विद्यालय के जारी करने की फिकर होरही है परंतु धन एकत्र नहीं होता है यह तरीका बहुतही आसान है और हम आशा करते हैं कि सबभाई अपने२ ग्राम तथा शहरों से घरपीछे एक२ रुपया एकत्र करके— बहुत जल्दी सेठ साहब के पास भेज देवेंगे— हमारा रुपया १५० के लग भग होगा

फिर मुन्शी गुलजारी लाल ने मुन्शी साहब का धन्य वाद कहकर सभा विसरजन करी

चिट्ठी

श्रीयुत देवनंद सुभस्था ने जोग्य श्रीपत्री भाई सूर्यभान साहब वकील जोग्य लिखी कासां के सकल पंचान जैनी भाईयों की जैजिनेंद्र बंचना यहां बिरादरी के अनुमान १०० घर हैं और मंदिरजी नग ४ बहुत पुराने समय के हैं आपका जैन गजट हम को स्वीकार है मूल्यम नी आर्डर करके भेजेंगे यहां पाठशाला भी है परन्तु पठन पाठनका प्रबन्ध अच्छा नहीं है वृथाव्यय आदि कुरीतियोंका प्रबन्ध आपके जैन गजट के प्रसाद से शीघ्रही किया जावेगा ॥

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

जैन गज़ट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेज़ी महीने की १–८– १६–२४ता०

को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से

देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष ता० १ अप्रैल सन् १८९६ अङ्क १६

प्रार्थना

जैन गजट को जारी हुवे तीन महीने से अधिक व्यतीत होगये हैं हमारे परोप कारी भाईयों ने इस की सहायता करने और इस के ग्राह कों के बढाने में बहुत कोशिश करी जिनका हम अनेका नेक धन्यवाद देतेहैं परन्तु ऐ भाईयो इस गजट के लिये अभी बहुत ग्राहकों की आवश्यकता है ग्राहक अधिक होने पर ही यह गजट अपना काम अच्छी तरह करसक्ता है ॥ बहुत से ग्राहकों ने इसका मूल्य भी हमारे पास भेजा है परन्तु इस सप्ताहिक पत्र में बहुत खर्च की जरूरत है इस कारण यह प्रार्थना की जाती है कि जितने भाईयों के पास यह पत्र जाता है एक एक ग्राहक और बढा

देवैं और जिसने मूल्य अभी तक नहीं दिया है वह मूल्य कृपा करके भेज देवैं ॥

दुसरीप्रार्थना

हमारे पास कोई कोई चिट्ठी मजमून जैन गजट में छापने के अर्थ विना अपना नाम प्रगट करे भेज देते हैं इस कारण हम वह मजमून नहीं छापते हैं क्यों कि जब हम को नाम भी मालूम नहीं है तो कैसे छाप दिया जावे इस कारण हम परोपकारी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि जो चिट्ठी भेजे उस पर अपना नाम और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें ॥ यदि वह चाहें कि उनका मजमून छपै और पत्र में उनका नाम न प्रगट होतो ऐसे हम करसक्ते हैं अर्थात् उनका नाम गजट मे नहीं छापा जावेगा परन्तु हमको तो अवश्य मालूम होना चाहिये कि यह मजमून किस भाईका है ॥

सम्पादक

चिट्ठी

श्रीयुत सम्पादक महाशय— कृपा करके नीचे लिखी सभा की रिपोर्ट को निज अमूल्य पत्र में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये

रिपोर्ट श्रीजैन पुरुषार्थ सभा

इटावह

आज मिती फाल्गुण सुदी ४ सोम्वार सम्वत १९१२ मुताबिक १७ फर्वरी सन् १८९९ ई० की ७ बजे रात्रि को पंचायती श्री जैन मंदिरजी पंसारीटोला में एक खास सभा प्रारंभ हुई जिस में राज्य ग्वालियर से आई हुई दो बरातों के धर्मानुरागी जैनी और बाबू सरूपचन्द लखमीचन्द सभापति व श्रीमान् बाबू चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट उपसभापति व श्रीयुत लाला गुलजारीमल सराफ कानपुर निवासी व श्रीला० बाबूरामजैनी अग्रवाल वकील अदालतजज मैनपुरी और २ शहर के सर्वमुखिया और सकल साधारण जैनी भाई सभा में पधारे उपरोक्त बरातों में से १ बरात सभापति साहब के यहां आई थी जिस की खुशी में बाबू साहब ने तेरह द्वीप विधान पूजन

आदि करा कर श्रीमंदिरजी को झांडी, फानूस, आदि पर्दे. चंदोवे, फर्स, फर्रूस, वगैर से खूब सजायाथा फिर सभा के होने से मंदिरजी की शोभा अपार थी, प्रथम चि० चन्द्रसेन विद्यार्थी पाठशाला ने मंगला चरण पढकर विद्या के विषय में अति उत्तम व्याख्यान पढा जिस को सुनकर सभा हर्षाय मान हुई और होनहार विद्यार्थियोंका उत्साह बढते देख कर हर्ष के मारे सभा फूली न समाई— तत्पश्चात लाला उमराय सिंह उप मंत्री सभाने कई एक सुन्दर हितकारी उपदेश रूप लेख जैन गजट व जैन प्रभाकर आदि अमूल्य जैन पत्रों में से पढकर सुनाये— सभा में अनुमान ३०० तीनसौ के सभासदों की संख्याथी परन्तु शोर गुलका पता भी नथा ऐसा कुछ समा बंधगया कि सभा में खामोशी छागई इस के उपरांत मंत्री सभाने पाठशाला की कार्रवाईयों की व्यवस्था पढकर सुनाई और विद्या प्रशंसा द्वारा विद्या के पर्मार्थिक अविनाशी सुख और प्रत्यक्ष संसारी लाभों पर एक जबानी व्याख्यान दिया जिस की ताईद श्रीयुत बाबू चम्पतरायजी साहब ने की, इस के बाद मंत्री व और २ कार्यकर्ताओं नें जैन गजट के विज्ञापन, भ्रातृगणना के नकशे, वगैरह २ बराती भाईयों को बांटे— तदनंतर श्रीयुत लाला गुलजारी मलजी साहब सराफ कानपुर वाले ने महा सभा मथुराजी की तरफ से एक अति प्रशंसनीय प्रबन्ध अर्थात् जैन महा विद्यालय भंडार मथुराजी के वास्ते घर पीछे एक २ रुपया उघाने के विषय में अति प्रशंसनीय स्पीच दी जिसका असर सब भाईयों के हृदय में एसा तासीर कर गया कि तत्काल हर गोट के भाईयों ने की घर एक १ रुपया उघा कर इकठ्ठा कर देने की दृढ प्रतिज्ञा की।

तारीख १४ माह हाल को श्री बाबू चम्पतरायजी साहबने जो किसी सर्कारी कार्य के वश कानपुर पधारे थे इन महोत्साही महाशय के जाने से उक्त लाला साहब ने विज्ञापन छपाकर शहर में बांटकर रात्री के समय एक सभा कराई जिस में ऐसा पुर तासीर उपदेश रूप वार्ता कि तत्काल विद्यालय भंडार वास्ते करीब (१०) रुपये के होगये इस कार्रवाई से ज्ञात है कि कानपर वाले जैनी

बड़े धर्मात्मा उदार चित्त, परम परोप कारी, सज्जन पुरुष हैं यदि इसी प्रकार अन्य २ स्थान के धर्मानुरागी महाशय भी ऐसा ही उद्योग करें तो आशा है कि जैन महा विद्यालय भंडार के वास्ते एक लक्ष रुपयाका इकट्ठा होजाना कुछ कठिन बात नहीं है— करीब ११ बजे रात्री के आनंद मंगल पूर्वक जैकारा बोल कर सभा विसर्जन की ॥

नीचे लिखे हुए महाशयों ने अपने पुत्र पुत्री आदि के विवाह पूजा प्रतिष्ठादिके उत्सवों की खुशी में पाठशाला व मंदिरजी को जो २ रकम प्रदान की वह लिखते हैं ॥

[१] लाला जोगराज खरौआने समवशरन विधान कराकर पांचों गोट की ज्योनार की ५) रुपया, पाठशाला को दिये सामग्री आदि के सिवाय ५१) रु० श्री मंदिरजी को भेंटकर॥

[२] लाला चुन्नीलाल गोल सिघारे [बाबू मक्खनचन्द लखमीचन्दके समधी] मौजा सायना थाना भिंडराज्य ग्वालियर ने ४) रु० पाठशाला को और ५१) मंदिरजी को अपने लड़के के विवाह की खुशी में दिये ॥

[३] लाला मनराखन लाल गोल सिघारे [मूलचन्द ख्याली राम के समधी मौजा व थाना ऊमरी जिला भिंडराज्य ग्वालियर ने ५) रु० पाठशाला और ५१) रु० मंदिरजी को अपने पुत्र के विवाह की खुशी में दिये ॥

[४] लाला जमालूमल अग्रवाल वैश्य [लाला रामसहाय अग्रवाल वैश्य के समधी] फीरोजाबाद वाले ने अपने पुत्र के विवाह की खुशी में ५) रु० पाठशाला को दान किये विशेष आगे लिखेंगे॥

जैनीयोंका शुभचिंतक

प्यारेलाल मास्टर मंत्री

जैनपुरुषार्थ सभाइटावह

२६—२—९६

श्रीयुत सम्पादकजी जैन गजट देवबंद समीपेषु श्री जैनेन्द्र बहुत २ करके बांचियेगा प्रार्थना आपसे यह है कि इस लेखका मजमून ठीक करके पत्र में जाहर दीजियेगा ॥

यहां कानपुर में माहवदी १४ की सभा में भाई मादीलालजी मंत्री सभा ने कारखानेका प्रबन्ध होना चाहाथा अर्थात् [१] हर किसमकी लागत [ज्योनार] में

अत्यन्त दुखदाई समझा जाता है इसही कारण उसके खाने पीने की कुछ परवाह नहीं करते हैं किन्तु उसकी मृत्यू को मनाते रहते हैं और उसके मरजाने पर बहुत खुश होते हैं क्यूंकि एक बहुत बड़ी आपत्ति उनके सीसले टल गई और जिस बात की इच्छा करते थे वह पूर्ण होगई अर्थात् उनका वृद्ध पुरुष मर गया और यह बात साधारणहै कि इच्छा पूर्ण होनेसे और आपत्तिके दूर होनेसे बहुत खुशी प्राप्त हुवा करती है इस कारण जैसा कि बेटा बेटी के विवाह में आनंदित हो कर बहुत द्रव्य खर्च किया जाता है और खुशी मनाई जाती है ऐसाही वृद्ध पुरुषके मरनेके ऊपर खुशी मनाई जाती है और मिठाई तकसीम की जाती है क्यूंकि एक बहुत बड़ी बलाटली है खुशी क्यूं न मनाई जावे ॥

ऐ भाइयो यह लेख मेरा तुमको बिलकुल असत्य मालूम होता होगा परन्तु यदि मेरा लेख असत्यहै तो कृपा करके आपही इस बात का उत्तर देवें कि जिस माता पिताको जिन्दगीमें रोटी के एक टुकडे को तरसाते हैं जिसको अत्यन्त दुख देतेहैं उसके मरने के ऊपर क्यूं खुशी मनाते हैं और मिठाई बांटतेहैं द्रव्य खर्च करतेहैं यदि वह कारण जो मैंने लिखाहै असत्यहै तो इस बात का उत्तर सिवाय इसके और कुछ नहीं होसकाहै कि यह दोनों काम हमारी मूर्खताके हैं और दोनों काम विपरीत हैं ॥

सो ऐ भाइयो ऐ महाशयो इस मूर्खताको तुमने क्यूं प्रचार दे रक्खाहै जितना द्रव्य आप लोग किसी के मरनेके पीछे खर्च करतेहैं यदि वह द्रव्य आप उस की जिन्दगी में उसके आराम और सेवामें लगाया करें तो उसका कितना उपकार हो इस कारण यह खोटी रीति कि मरने पीछें धन खर्च किया जावे और बिरादरी को मिठाई बांटी जावे और ज्योंनार कीजावे यह रीति तुरंत बन्द होनी चाहिये यह बहुतही हानि कारक है ॥

मिथ्यात्व

—०—

सम्यक अर्थात सच्चे श्रद्धान विपरीत श्रद्धान को मिथ्यात्व कहते यद्यपि संसारी जीव बहुधा वस्तुओं गुण और स्वभाव को विपरीत न कर उस रूप मवर्तता है जैसे कोई वै

किसी औषधि के गुणको अन्यथा मान कर किसी बीमारको देवे वा बीमार की बीमारीका निदान अन्यथा करै परन्तु इन वस्तुओं को अन्यथा जानने से केवल उसके संसारीक कार्यों में ही हानि होती है परन्तु तत्वार्थ श्रद्धान विपरीत होने से कल्याण और मुक्ती का मार्ग बन्द होता है और इस संसार में संसरण करके अनेकानेक कष्ट सहने पड़ते हैं अर्थात यदि जीवके लक्षण को अन्यथा मानलिया जावे जैसे कोई मतवाले इस जीव की उत्पत्ती अग्नी जल वायु पृथ्वी आदि पुद्गल पदार्थों के संयोग से मानते हैं और कोई इसको एक ईश्वरका एक भागवर्णन करते हैं और इस जीवकी सर्वज्ञता और कर्म रहित होने को असम्भव कहते हैं तो ऐसा श्रद्धान करने से मुक्ती मार्ग पर कैसे चलाजासक्ता है इसही तरह कर्मों के दूर होने के कारणों को विपरीत मानने से कैसे कर्मों के दूर करने का उपाय होसक्ता है ॥ धर्म उसीको कहते हैं जिस के कारण संसारीक दुःखों से छूट कर परमानन्द पदकी प्राप्ति हो अर्थात बिना तत्वार्थ श्रद्धान के कोई कार्य धर्मका नहीं होसक्ता है इस लिये जो सम्यक्ती नहीं है उसको श्रावक भी नहीं कहा है ॥ जैनमत बार बार पुकार कर कहता है कि सबसे पहले अपने श्रद्धान को ठीक करो और उसके पीछे आचरण ग्रहण करो यदि श्रद्धान ठीक है और आचरण भ्रष्ट है तो किसी न किसी समय में अवश्य आचरण भी ठीक होजावेगा परन्तु श्रद्धान भ्रष्टका आचरण कैसाही हो वह भ्रष्टही है और उसके सत्य पंथ में लगने की आशा नहीं है ॥ आज कल तत्वार्थ श्रद्धान अर्थात सम्यक्त ग्रहण करनेका मुख्य उपाय शास्त्र स्वाध्याय वा शास्त्र श्रवण है परन्तु जैनियों में से विद्या का प्रचारही जाता रहा फिर शास्त्र स्वाध्याय कैसे होसके इसही कारण श्रद्धान ठीक करने की प्रवृत्ति हम जैनियों में से बिलकुल उठगई है दोचार कार्य देखा देखी करने को धर्म पालन हम लोग समझ हुए हैं हम लोग नित्य मंदिरजी में आकर दर्शन करने को और अष्टमी चतुर्दशी को बनस्पती न खाने को और भादों मास में दो चार दिन उपवास करने को ही परम धर्म समझे हुवे हैं परन्तु यह नहीं जानते कि मंदिरजी में आकर भगवान की मूर्ती के दर्शन क्यूं किये जाते हैं इससे क्या लाभ है और बनस्पति में क्या दोष है और उपवास करने अर्थात भूके मरने में क्या लाभ है इसही कारण हम लोग अद्भुत चारित्र दिखाते हैं अर्थात नित्य मंदिरजी में आकर दर्शन भी करते हैं और पूजन भी करते हैं और इसही के साथ अपने बालकों के बीमार

होजाने के समय सीतला मसानी भवानी आदिक को पूजते हैं मुसलमान पीरों से गंडाताबीज लेते हैं मसजिद में चराग जलाते हैं हमारे जैनी भाई यदि किसी दिन शास्त्रजी की सभा में चले जाते हैं तो यह कथन सुनकर बहुत गर्दन हिलाते हैं कि सत्य मत एक जैन धर्म ही है और अन्य सब मत कपोल कल्पित हैं और बहुत खुशहो होकर कहते हैं कि वैष्णा वादिक मत मिथ्यात्व पूरित हैं और बिलकुल झूठे हैं परन्तु यदि कोई पूछे कि जैन मत जिसको तुम सत्य मत बताते हो उस के सिद्धान्त क्या हैं और अन्य मत जिसको तुम मिथ्यात्व पूरित कहते हो उसका क्या सिद्धान्त है और उस में तुमने क्या असत्यता देखी है ऐसे प्रश्न होने पर बिलकुल चुप होजावेंगे और लाचार हो जावेंगे ॥

ऐ जैनी भाईयों जरा विचार कर देखो कि तुम्हारी यह अद्भुत दशा कैसी हंसी के योग्य है और अन्यमती हमारी यह दशा देखकर हमको कैसा मूर्ख समझते होंगे ॥

ऐ जैनी भाईयों जैनी वैष्णव मुसलमान आदि की शकल सूरत में कुछ भेद नहीं होता है जैनी के सिरपर कोई सिंग नहीं होता है सब एकही जातिके मनुष्य हैं परन्तु अपने अपने श्रद्धानानुसार जैनी वैष्णव मुसलमान आदि अलग अलग कहलाते हैं सो जब तक हम जैन धर्म को नहीं जानेंगे और उस पर श्रद्धान नहीं करेंगे हम केवल नाम मात्र के जैनी हैं इस कारण ऐ जैनी भाईयों यदि तुम चाहते हो कि जैन धर्म कायम रहै यदि तुम जैन धर्म को सत्यधर्म जानते हो यदि तुम धर्मानुरागी हो यदि तुमको अपने हित की इच्छा है तो सबसे पहले अपने धर्म के जानने की कोशिश करो, नहीं तो बिना धर्म के जाने तुम्हारे दर्शन पूजा करने व्रत उपवास रखने आदि के कार्य लोक दिखावे के हैं और संसार को ठगने के हैं जिससे तुम्हारे परमार्थका कुछ लाभनहीं हैं किन्तु हानि है ॥

जैन धर्म को जाननेका उपाय शास्त्र स्वाध्याय और शास्त्र श्रवण है इस कारण नित्य यह उपाय करना चाहिये और इसको सबसे मुख्य समझना चाहिये धर्म के सर्व अंगों में यह अंग सब से प्रथम और मुख्य है ॥

जैन महासभा

यद्यपि जैन महासभा हमारे उपकारार्थ नियत होगई है और पूर्ण आशा है कि महासभा के द्वारा हमारी उन्नति अवश्य होगी परन्तु ऐ भाइयो जरा यह अवश्य विचारो कि महासभा किसको कहते हैं जिससे कि हम अपने उद्धार की आशा करते हैं महाशयो जो सर्व नगर ग्राम के भाईय

की एक सभाहो वह महासभा होतीहै और प्रत्येक नगर ग्रामों की सभायें उसकी शाखा सभायें होतीहैं इस कारण यह जैन महा सभा मथुरा भी तबही महासभा होसक्तीहै जबकि सर्व नगर ग्राम के भाई इस के सभा सद हों इस समय कुल भारत में चौदह लाख जैनीहैं इस कारण यह बात भी असम्भव मालूम होतीहै कि कुल चौदह लाख भाई एकत्र होकर सभा करें वा उन सब की अनुमति से सभाहो परन्तु हां यह होसक्ता है कि प्रत्येक नगर और ग्राम के भाई अपने२ नगरमें से योग्य पुरुषों को अपनी ओरसे महासभाका कार्य करने के वास्ते प्रति निधि नियत कर देवैं इस प्रकार कुल जैन जाति के मुखिया भाई महासभा के सभासद होजावैंगे और प्रत्येक नगर के प्रतिष्ठित भाई अर्थात् प्रतिनिधि सभा के कार्यों में अपनी अनुमति अपने२ नगर के भाईयों से पूछ कर दिया करेंगे इस प्रकार प्रत्येक कार्यके वास्ते कुल चौदह लाख जैनियों की अनुमति प्राप्त होसकी है ॥ जैन महा सभा इसही आशा पर स्थापित हुई है कि प्रत्येक नगर ग्राम के जैनी भाई अपने २ नगर की बिरादरी में से मुखिया पुरुषों को महा सभाका सभासद नियत करेंगे और इस तरह सर्व भाईयों की सम्मति से यह जैन धर्मोन्नति और जात्योन्नति के काम सहज में सिद्ध होजावेंगे ॥

परन्तु हमको यह कार्य बहुत कठिन मालूम होता है और इस वास्ते कार्य की सिद्धी की आशा नहीं होती है क्योंकि हमारे जैनी भाईयों में अब यह रीति छूट गई है कि प्रत्येक नगर के भाई किसी दिन एकत्र होकर किसी बातका विचार कर सकें ॥ थोड़े दिन हुवे कि प्रति दिन जैन मंदिरों में सब भाई शास्त्रजी सुनने के वास्ते एकत्र होते थे परन्तु अब वह रिवाज भी छूटता जाता है और किसी २ नगर में तो शास्त्रजी पढे ही नहीं जाते हैं इस कारण महासभा के वास्ते प्रति निधि अर्थात् अपने नगर के भाईयों की ओरसे अनुमति देने वाले मुखिया पुरुषों को कौन नियत करेगा ॥ महासभाने जैन गजट सप्ताहिक पत्र इसही कारण जारी किया है कि उसके द्वारा महासभा की सब काररवाई सब भाईयों को विदित होती रहे और महासभा को सब जगह का हाल मालूम होता रहे इसही वास्ते जैनगजट का प्रथम अंक नमूने के तौर पर सर्व जैन मंदिरों में भेजागया कि उस स्थान के भाई प्रत्येक मंदिरजी में इस पत्र को मगाना स्वीकृतकरें परन्तु कुछ उत्तर न आनेपर दूसरा तीसरा चौथा पत्र भेजा गया परन्तु बहुधा जगह से कुछ जवाब न आया और लाचार उस स्थान पर पत्र भेजना बन्द किया गया॥

हम को बड़ा आश्चर्य है कि चार अंक बरा

भी इस ओर ध्यान देते तो म-हजहीं जैन महा विद्यालय बन गया होता परन्तु ऐ भाईयों क्या आपको मालूम नहीं है लाहौर में अर्य्या समजियोंने एक आर्य्य महा विद्यालय बहुत दिनों से बनालिया है जिस में हजारों बालक उनके धर्म की शिक्षा पाते हैं और उन विद्यार्थियों में जैनी भी हैं क्या आर्य्या समाजी जैनियों से अधिक धनवान हैं कदाचित्त नहीं अर्य्या समाजी बहुधा करके सरकारी नौकर हैं व्यापारी तो कोई २ ही होगा और यह बात सब जानते हैं कि सरकारी नौकरों के पास धन नहीं होता है फिर उन्होंने थोड़े ही काल में महा विद्यालय कैसे बनालिया ॥ आर्य्या समाजियों के मन में धर्मोंन्नतिका जोश है इस कारण उन्होंने सबने थोड़ा २ जोड़ कर यह महा विद्यालय बनालिया यदि इतना रुपया दस धनवान लगाते तो उन्होंने हजार ने मिलकर उतनाही कार्य कर लिया ॥

इस कारण परोप कारी भाईयों यदि तुम अधिक धनवान नहीं होतो कुछ भय नहीं है क्यूंकि तुम भी सब कुछ करसक्ते हो और सब नहीं तो कुछ धनवान पुरुष तुम्हारे साथी भी तो हैं फिर क्यूं विलम्ब कर रक्खा है अपनी अपनी सामर्थ और शक्ती अनुसार कर देखो फिर तुम्हारा कार्य धनवानों की शक्ती से भी अधिक हो जावेगा ॥ थोडी २ वस्तु मिलकर बहुत होजाती है॥

मिथ्यात्व

इस बात के सिद्ध करने की और हेतु देन की तो आवश्यक्ता नहीं है कि जैनीयों में मिथ्यात्वका प्रचार कुदेवादिकका पूजना बहुत होरहा है क्यूंकि इस बात में किसी को इनकार नहीं है और न्यूनाधिक सब ऐसेही प्रवर्तते है मिथ्यात प्रचार कुदे वादिक का पूजना धर्म से विरुद्ध पापका मूल है और अनेक भाव में दुखका देने वाला है ॥ क्यूंकि सब जैनी अपने मुख से मिथ्यात और कुदेवादिक के पूजने को बुरा कहते है परन्तु अब विचार नीय यह बात है कि कुदे वादिकका सेवन क्यूं है क्या कुदे वादिक में श्रद्धा न होरहा है या लोक मूढता के कारण देखा देखी एक रीति पूरी करने के समान किया जाता है क्यूंकि श्रद्धा न श्रष्टका सुधरना

स्थामान है ॥

हम यह बात देखते हैं कि बहुधा करके संतानादिक की प्रीति वा रक्षा के हेतु वा किसी दुख के दूर करने के हेतु कुदेवादिका पूजन होता है इस कारण जब कभी कोई बुद्धिमान परोपकारी पुरुष किसी को कुदेवादिक पूजने से वर्जता है तो यह उत्तर मिलता है कि ग्रहस्थी से (कुटंभी से) यह बात नहीं होसक्ती है कि कुदेव आदिकका सेवन न कियाजावे क्यूंकि यह नहीं हो सक्ता है कि अपनी और अपने संतानकी रक्षा न करी जावे जिस मनुष्य के कोई कुटंभ न हो वह अवश्य ऐसेकामका त्यागकरसक्ता है ॥ इस उत्तर से स्पष्ट विदित होता है कि कुदेवादिक सेवन करने वालोंका केवल आचारही भ्रष्ट नहीं है वरण श्रद्धान भी भ्रष्ट है क्यूंकि उनको यह निश्चय है कि कुदेवादिक संकट के दूर करने वाले और सुख सम्पति के देने वाले हैं ॥ हाय हाय हमारी जाति के मनुष्यों के बहुधा करके श्रद्धा न भ्रष्ट हो और फिर भी हम धर्म की न्यून दशा होगई हुई स्वीकार न करें ॥ और ऐ भाईयो जरा यह विचारो कि हमारा श्रद्धान भ्रष्ट क्यूंनहो क्यूंकि धर्म विद्या हम पढते नहीं शास्त्र स्वाध्याय करना जानते नहीं और शास्त्र श्रवण करते नहीं केवल यह बात निश्चय किये बैठे हैं कि जो जैन जाति में पैदा हुवा है वह जैनी है और अवश्य स्वर्ग उसही के वास्ते बना है और अन्य मतानुयाई नर्क में जावेंगे ॥ अर्थात जैन कुल में पैदा होना ही स्वर्ग प्राप्ति के वास्ते काफी है ऐ भाईयो क्यूं सोये पड़े हो जागो उठो धर्म विद्याका प्रचार करो नहीं तो यह धर्म चला ॥

प्रार्थना

परोपकारी पुरुषों से हमारी यह प्रार्थना है कि अभीतक बहुत थोडे भाईयों ने इस पत्र का ग्राहक होना स्वीकार किया है और ऐसी दशा में यह पत्र अपना कार्य पूरे प्रकार नहीं करसक्ता है इस कारण आपलोगों को अवश्य इसकी सहायता करनी चाहिये क्यूंकि इस पत्र से यदि इसको उदरभर भोजन मिलता रहातो बहुत बडे २ कार्य

सिद्ध होवेंगे और इस पत्र की सहायताका सहज उपाय है कि प्रति ग्राहक एक एक ग्रहक और बढा देवैं इस रीति से सहज मैं दुगने ग्राहक होजावेंगे और एक भाई को एक और ग्राहक पैदा कर देना कोई मुशकिल बात नहीं है जोभाई इस प्रकार ग्राहक बढा वेंगे हम उनका नाम धन्यवाद सहित सर्व भाईयों के सूचनार्थ इस पत्र मैं प्रकाशित करते रहें गे ॥

(अति आलस्य)

सम्पूर्ण मनुष्यों का विदित है किहमारे खैरख्वाह जनाब बाबू सूरज भान साहब वकील जैन धर्मकी उन्नति होने के अर्थ कैसी कैसी कोशिश कररहेहैं देखिये अखबार जैनहितोपदेक अरसेसे माहवारी जारी कररक्खा है और जैन महासभा मथुरा कीरायसे जोजैन गजट सप्ताहिक अरसे दो माहसे जारीहुवाहै वोभी बाबूजीकी कोशिस से चलरहाहै मगर अफसोस हमारे जैनी भाई जरा भी खयाल नहीं करते कि हमारे वास्ते बाबू साहब कैसीर कोशिस कररहे हैं कोई फायदा खास बाबूजी का इस जैनगजट के जारीहोनेसे नहीं बल्कि कौमकी बेहतरी करने का जरीया है इस गजट के ४ अंक मेरे पास आये जिनमें यही प्रार्थना है कि सब जैनी खरीदो अगर न लेनाहो जवाबमे इत्तला दो मगर न इन्कारहै न हां है क्योंकि जवाब देने में भी आलस्य है असे आलसियां के जगाने के वास्ते गजट कीजगे पोसृकार्ड छपाकर भेजेहैं हेसज्जनपुरुषों आप और हजारोंका खर्च फजूल करते हो जिन्मे फायदा कुछ नहीं बल्कि पापके भागी होतेहो यहतो जैनगजट कुल जैनियोंकी खबरें और उपदेश घरबैठे देतारहैगा अलबता ३, रु० साल कीमत आपको देनीहोगी इस अखबारकी आमदनी जो खर्चसे ज्यादः होगी वोभी किसी शुभ कर्म मे लगाई जावगी यह हमारी सर्वदेशके जैनियों से प्रार्थना है के जैनगजट को खरीदो और अपने २ देशकी खबरें इसमें छपातेरहो ——

आपका शुभ चिन्तक
(सुमरचन्द सहारनपुर)
खास मुकाम भिवानी

॥ चिट्ठीका सारांश ॥

कानपुरसे भाई चिमन लालजी लिखते हैं कि भिवानीसे तीस कोस पर यह चार ग्राम अर्थात बेरी, छापड़ा, लिखवा, बनगोटडी हैं यह चारोंग्राम कोस कोस भर के अन्तर से चारोंतरफा हैं

यहां पर हमारे खंडेलवाल श्रावक भाई या के अनुमान २५० घर हैं परन्तु विद्या हीन होने के कारण धर्म की सर्वथा न्यून दशा है अर्थात केवल कहने ही मात्र वह श्रावक हैं। और दो ग्रामों में अर्थात बेरी. और छावेड़ में चैत्यालोंमें श्रीजीकी प्रतिमा भी विराजमान है परन्तु पूरी पूरी अविनय होरही है क्यों कि वहां पर कोई विद्वान नहीं है और न कोई किञ्चित मात्र पढा है पूजा प्रक्षाल ना में बडी बाधा है॥ इसकारण निवेदन है कि कोई उपदेशक माहशय उस ओर को पधारें तो अत्यन्त धर्म उपकार होगा किस कारण कि वहां पर चैत्याले होने केकारण से वहां के श्रावक पढने की भी इच्छा प्रगट कर रहे हैं और उपदेशक साहिब का जाना अवश्य है और परे नोरसेकोशिश करके उन लोगों को धर्म्म की ओर लगावें और वहांपर जैनपठशाला भी नियत करावें क्योंकि ऐसे स्थानपर पहुंच कर धर्म्मका उपदेश देना महा उत्तम कार्य है॥ और यहां कानपूर में पहिले सभा नहीं होती थी अब पूसवदी १४ से हरचतुर्दशी को सभा होती है और धर्म का उपदेश भी होता है। जैन गजट भी सभा में उसी वक्त सबभाईयों को सुनाया जाता है सभा का ध्यान फजूल खर्ची का प्रबन्ध करने पर भी पहुंचा है और जैन पाठशाला तो पहिले से स्थापित है लड़के भी बहुत से पढते हैं जिसमें चार पांच लड़के बहुत होशियार होगये हैं और रात्री के समय उन लड़कों को भाई हजारी लालजी करहल निवासी भजन गान और नृत्यादि सिखलाते हैं।

भाईयों का शुभचिंतक
चिमनलाल मु० कानपूर

परमार्थ

हम प्रत्येक मनुष्यको देखते हैं कि वह वर्तमान कालके सुखकाही उपाय नहीं करताहै किन्तु आगामी काल के सुखका भी बहुत यत्न करता है यहां तकाकि आगामी कालके सुखके वास्ते वर्तमानकाल मे अनेकानेक कष्ट उठाता है॥ जो पुरुष एक सौ रुपया महीना कमाताहै वह ५० खाने पीने में खर्च करता है और ५०, रुपया वरण इसमें भी अधिकतर अपने बेटा बेटी के विवाह और अन्य कार्यों के वास्ते जमा रखताहै और यदि कोई मनुष्य केवल वर्तमान काल के सुखका यत्न करता है वह मूर्ख समझा जाता है और दुख पाता है॥ इसही प्रकार हम मनुष्यमें अलग अन्यजीवों में भी यह बात देखते हैं कि आगे के वास्ते यत्न किया जाता है और बहुत सामिग्री संग्रह कीजाती है॥ परन्तु हमको बड़ा आश्चर्य इसबातका है कि हमलोग केवल इसही जन्मके सुख के वास्ते यह सब यत्न करते हैं शेषमग्रे॥

यह पत्र बंबई मित्र प्रेस मथुरा मे छपा

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेज़ी महीने की १–८– १६–२४ता०
को बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर मे प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष ता० ८ अप्रैल सन् १८९६ अङ्क १७

लक्ष्मी

लक्ष्मी पुन्य कर्म के प्रताप से प्राप्त होती है परन्तु यह लक्ष्मी अति चंचल है किसी के स्थिर न हीं रहती है इस कारण इस लक्ष्मी को जब तक हाथ में हो प्रभुकी भक्ति निमित्त तथा परोप कार निमित्त दानकर खर्चना और भोगना उचित है कृपणता से कुछ फलकी प्राप्ति नहीं है केवल मनकी मलीनताका कारण है जो पुरुष लक्ष्मी को संचय करै है दानादिकमें नहीं खर्चे हैं न भोगवै है सो अपनी आत्मा को ठगै है उस पुरुषका मनुष्यपना वृथा है जो पुरुष अपनी लक्ष्मी को पृथ्वी के तले गाडता है वोह पुरुष लक्ष्मी को पाषाण समान करता है लक्ष्मी पाकर न दान करना न धर्म अर्थ लगाना न भोगना ऐसा जानना चाहिये कि वो लक्ष्मी उस की नहीं है वो केवल रखवाला है दूसरा कोई भोगे

संसारी पुरुष लक्ष्मी के उपार्जन के हेतु अनेकानेक प्रकार के कष्ट सहता है और अपने प्राणों को पीडित करता है परन्तु कैसे शोक की बात है कि ऐसे दुःख से प्राप्त हुई वस्तु से कुछ लाभ न उठाया जावै; जो लक्ष्मी पूजाप्रतिष्ठा, दान, परोपकार, आदि धर्म कार्य में खर्ची हो वही सफल है लक्ष्मी पुन्यकर प्राप्ति होती है सो इस लक्ष्मी से आगामी के वास्ते पुन्य उपार्जन करना ही श्रेष्ठ है यदि इस लक्ष्मी से कुछ लाभ उठाया जावै या पाप उपार्जन किया जावै तो क्या मूर्खता नहीं है ॥

चिट्ठी

हमारे पास आगरे से चिट्ठी आई है जिस में हम को एक धनाढ्य महाशय को उपदेश देने की प्रेरना की गई है परन्तु यह हमारी शक्ती में नहीं है इस कारण हम यह ही करसक्ते हैं कि चिट्ठी को इस पत्र में छाप देवैं इस कारण कोई और भाई जो उक्त धनाढ्य महशय को उपदेश देसक्ता हो शायद कुछ समझाने की कोशिश करैं ॥

सिद्धश्री बाबू सूर्यभानजी साहब जैजिनेंद्र, आगे हमने सुना है कि सहारनपुर से किसी धनाढ्य महाशय की बरात मेरठ में आई थी जिस मांह उपरोक्त सेठ साहबका विचारथा कि २१०००१ रुपये भूड लुटावैं लेकिन वहांके लेक्टर और कमिशनरने बन्दकर दिया क्योंकि भूड लूटने के वास्ते बहुत से दिसावरों से महतर आए थे इस वास्ते शायद उनको दंगा होनेका भय हुवा होगा इस भूड के बन्द होने से उक्त सेठ साहब को बहुत रंज हुवा इस से मालूम होता है कि इन रुपयों से तो इनका ममत्व हटगया अब अगर इनको उपदेश रूबरू या गजट द्वारा दिया जायतो संभावना है कि यह रुपया वे जैन कालिज के वास्ते अर्पण करदें सो अगर होसकेतो कोशिश जरूर करेंगा।

धामपुर

श्रीयुत जैन गजट सम्पादक महाशय जय जिनेंद्र— कृपा पत्र आपका आया अति आनन्द की प्राप्त हुई धामपुर के उत्सव पर मिती फाल्गुण सुदी १० को जिले बिजनौर के सर्व धनाढ्य महाशय इकट्ठे थे जिस में व्यर्थव्यय का इतजाम होने की प्रेरणाकी गई सो आप धर्मात्मा ही पुरुषों की कृपा से फहरिस्त तो तयार होग

ई मगर हस्ताक्षर अभी नहीं हुये हैं इस वास्ते अभी व्यर्थव्ययका कोई इंतजाम नहीं हुआ है लाला उमराव सिंह आदि नजीबाबाद वाले व लाला बद्रीदास बिजनौर वाले आदि महाशयों को लिखिये सर्व भाईयों के हस्ताक्षर हो कर प्रवर्ति होनी चाहिये ॥

मंगतिलाल धनकुमार
सिवहारा ता० २४ फरवरी

चिट्ठी

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब जय जिनेंद्र फाल्गुण शुक्ला त्रितिया रवि वार को अलीगढ मे पंडित नौबत राय पल्ली वाले के पुत्र श्यामलाल की बरात क्रमशः कोडियागंजमें लाला म्हीलाल के यहां गई थी उस बरात में मैं भी गयाथा वहां पर तीन बजे पहुंचे थे उसी वक्त नौतनी होकर बरात जीवने को गई फिर जीम कर सर्व बराती अपने डेरे पर आये जिस में से कुछ भाई एकत्रित होकर मंदिरजी में गये वहां पर पंडित मुन्नीलालजी बहुत अच्छी तरह सुन्दर ध्वनी से शास्त्रजी बांचरहे थे दूसरे दिन उक्त पंडितजी की आज्ञानुसार मैंने शास्त्रजी बांचे बांचेतें समय मैंने शास्त्रजी सुनने की मुख्यता के विषय में व्याख्यान दिया उसपर भाईयों के दिलों में शास्त्रजी सुननेका प्रेम उपजा तीसरे दिन पंडित लोकमनदासजी ने बहुत ही मिष्ट वाणी मे शास्त्रजी बांचे पंडित नौबतरायजी ने मिथ्यात्व के निषेधका व्याख्यान कहा जिस में सभा करनेका विचार हुआ तो पंडित मुन्नीलालजी से सभा के विषय में वार्तालाप की गई तो उन्होंने कहा बहुत उम्दा बात है चौथे दिन बुलाया सभाका सब भाईयों के पास भेजागया लेकिन यहां पर दो धडे हैं जिस में से एक धडे के भाई सभा में नहीं आये मालूम हुआ कि भाईयों में विरोध है तब मैं खुद उनके पासगया उनसे कहा गया कि सब भाईयों को सभामें चलना होगा इस पर उन्हो ने बहुत बातें बनाई वोह दूसरी चिट्ठी में लिखी जावेंगी लेकिन उस धडे के मुखिया लाला भिक्कूमल जो कि बडे परोप कारी और धर्मात्मा हैं वोह सभा में पधारे फिर मैंने संसारी सुख दुःखों के ऊपर व्याख्यान दिया जितने भाई उस वक्त सभा में उपस्थित थे सबने शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञा ली और मास में दो दफै यानी हर चतुर्दशी को सभाका प्रबन्ध कियागया सभा के मुखिया और सभा संबन्धी कार्य करनेकोआठ मनुष्य नियत हुये उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं ॥

लाला बसंतराय, लाला भवानीदास पंडित, चौधरी हरचन्द्रराय, लाला सुन्दरलाल, लाला भिक्कूमल

लाला कुंजमनदास, लाला देवीदास और पं० मुन्नीलाल– इन सज्जन पुरुषों ने बडे आनन्द के साथ सभा संबन्धी कार्य करने को स्वीकार किया धन्य है इन भाईयों को ऐसा महान धर्मका कार्य करना अंगीकार किया है

जैनी भाईयोंका दास
हकीम कल्याणदास पल्ली वाले
अलीगढ

रिपोर्टद्वारा पंडित कन्हैयालाल ऑनरैरी उपदेशक

मैं–पलवल से चलकर अछनेरा– भरतपुर बांदीकुई– फतवा राजगढ होता हुआ– १२ तारीख फरवरीको अलवर पहुंचा– यहां पर खंडेलवाल अग्रवाल– सहलवाल– ओसवाल जैनी भाईयों के घर हैं– और बडे हर्ष की बात है कि किसी प्रकारका भी मन भेद नहीं है धर्म कार्यों में ऐक्यता है– बडे ही सज्जन हैं यहां आठ मंदिरजी दिगम्बर आमनाय वालोंके और एक श्वेताम्बर आमनाय वालोंका है– और आठ मंदिरों में से दो मंदिर– एक अग्रवालोंका– और एक खंडेलवालोंका बहुत ही लागत के और बडे २ हैं– एक मंदिर– मलती बाजार में सहतवालोंका है– इन तीनो मंदिरों में दोनो वक्त शास्त्र जी की सभा होती है– और खंडेलवाल भाईयों के पंचायती मंदिर में पाठशाला भी है– संस्कृत और भाषा के जुदे २ अध्यापक है संख्या विद्यार्थीयों की चालीस के लग भग है इसी पाठशाला के दो विद्यार्थी– एक घमंडीलालजी और एक– ऋषबदासजी संस्कृत में परीक्षा देकर अजमेर विद्यालय भंडार में उत्तीर्ण पत्र पा चुके हैं संस्कृत अध्यापक के रोग ग्रस्त होजाने से शोक की बात है कि– अबके वर्ष विद्यार्थी तयार नहींहै आशाहै कि वहांके भाई जल्द प्रशंशनीय प्रबन्ध करेंगे मैंने भाईयों– से जो— प्रार्थना— करी तो उसी वक्त भाईयों ने हर्ष युक्त सब जगह बुलावा देदिया– उक्त समय ७ बजे पर सब बिरादरी के भाई एकत्र होगये मैंने ८ बजे से १० बजे तक सभा के कवायद और महासभा के नियमों पर व्याख्यान देकर सभा नियत करने की प्रार्थना करी– सब भाईयों ने बडे हर्ष के सथा सभाका होना स्वीकार किया–और सभा स्थापित होगई

कुंवर छुट्टनलाल साहब जादह मुन्शी रशिकलाल साबिक

फौजदार रियासत अलवर जो उपदेशक फंड के सभासद भी हैं सभापति नियत हुऐ– सहा कन्हैयालालजी सरपंच उप सभापतिभये— भाईयों ने पाठशालाका प्रबन्ध भी उत्तम रीत से करनेका एकरार किया– और व्यर्थव्यय आदि के रोकनेका भी उपाय करेंगे– आशा है कि महासभा के संपादक सभा को चैतन्य रक्खेंगे ॥

इस उपदेशक की रिपोर्ट की सही भाईयों ने रिपोर्ट पर करी है– और उपदेशक की रिपोर्ट में बहुत से भाईयों स्वाध्याय करने वालों के नाम लिखे हैं जिनको और सब भाईयों को धन्यवाद दिया जाता है कि उन्हो ने उपदेशक के पधारने से सभा स्थापित करके वातसल्य अंगका प्रचार किया ॥ चम्पतराय मंत्री ॥

फिर १३ फरवरी को अग्रवाल भाईयों के बडे मंदिर में बडी भारी सभा हुई– उसमें अन्य मतावलंबी भाई भी पधारे थे मैंने ८ बजेसे साढे१०बजेतक व्यर्थव्यय के नुकसान दिखलाने और कुरितियों की हानि में व्याख्यान दिया और भाई घमंडी लाल ने धर्म विषय में व्याख्यान कहा फिर एक दरबारी भाई ने धन्यवाद कह कर सभा विसर्जन करी अलवर में सब प्रबन्ध थोडे ही दिनों में होजाने की पूरी २ आशा है– फिर १४ तारीख को में रामगढ में आया और मुखिया भाईयों से सभा एकत्र करने की प्रार्थना करी– भाईयों ने मंदिर के नोकर से सब जगह बुलावा दिलवाया और सात बजे पर श्रीमंदिरजी में सब भाई एकत्र होगये मैने सभाका शास्त्रपढा– फिर ८ बजे से १० बजे तक मैने धर्म उन्नति जात उन्नति और विद्या विद्रय में व्याख्यान कहा सभा और पाठशाला स्थापित करनेका इकरार हुआ परन्तु थोडे से मुखिया भाई बरात में गये हुये थे इस कारण तुरन्त प्रवन्ध नहीं होसका परन्तु आशा है कि उनके आने पर यहां के भाई प्रबन्ध करेंगे ॥

भाईयों के घर ७० के लगभग और मंदिरजी १ हैं शास्त्रजी की सभा दोनो वक्त होती है १२ भाई स्वाध्याय करने वाले हैं ॥

द० कन्हैयालाल

इस रिपोर्ट की भी सही भाईयों ने करके अपने दसखत कर दिये हैं हम को पूरी २ आशा है कि रामगढ के भाई सभा स्थापि

त करके पं० चुन्नीलालजी मुरादाबाद मंत्री महासभा को सूचित करैंगे ॥

चम्पतराय

रिपोर्ट मेला वीरपुर जिला ऐटा

वीरपुर एक छोटाग्राम है यहां पर भाई दिलसुखरायजी पद्मावती पुरवार शिरो मणि हैं और उसग्राम के जमीदार भी हैं आपने वहां एक छोटासा जैन मंदिर बनवाया है उस की प्रतिष्ठा फाल्गुण कृष्णा १० से १४ तक थी हमारी महासभा की तर्फ से इस मेले में प्रतिष्ठत उपदेशक पं० चौधरी जीयालालजी और हकीम बनवारीलाल उपदेशक और पं० प्यारेलालजी मंत्री और भाई रत्नलालजी गुमाश्ते सेठसाहब और खुद सेठ साहब महासभा के सभापति पधारेथे– भाई दिलसुखराय पद्मावती पुरवार भाईयों के भी मुखिया हैं– आपने महासभा को १५१) सब भाईयोंका एकत्र करके दियाथा जिस का हाल पहले प्रगट अखबार में होचुका है– सेठ श्रीपाल वा लाला गुपालदास वा लाला हीरा लालजी ऐटा निवासी ने सभाका प्रबन्ध किया– ११ की रात को प्रथम हकीम बनवारीलाल ने– हुक्का पीने तथा कन्दमूल खाने की हानियों में व्याख्यान कहा उस के पीछे– लाला बनारसीदास जलेसर निवासी ने उर्दू की कविता में– जात उन्नति पर फिर पं० जीयाललजी ने– कुदेवों अर्थात सेढ ममानी टोना टोटका आदि के पूजने पर बहुत ही उत्तम व्याख्यान कहा और ऐसा असर हुआ कि बहुत से भाईयों ने नियम किये– फिर १३ को दिन में ११ बजे सभा हुई और इस सभा में ऐसी भीड हुई– कि समोसर्ण तक भरगया– प्रथम पं० मोहनलालजी ने ७ कुविसन सेवन की हानियें ऐसी योग्य रीत से दिखलाई कि लोगों के दिलों पर बडा ही अच्छा असर हुआ फिर फतेलालजी ऐटा निवासी ने विद्या विशय में– कहा– फिर पं० जीयालालजी प्रतिष्ठत उपदेशक ने कुरीतियों के बारे में उपदेश कहा और बालविवाह की हानियां ऐसे योग्य रीत से दिखलाई कि सुनने वाले उक्त पंडित जी को धन्यवाद हर तर्फ से देते थे– फिर बनवारीलाल ने सभा विसर्जन कराई– फिर चौदस की रातको सभा हुई– उस में प्रथम हकीम बनवारीलाल ने जैन प्रचार

णी सभा ऐटा की तर्फसे व्याख्या न कहा और मेले में चार बातों के बन्द करने की प्रार्थना करी— प्रथम मेले में मिजमानी न दीजावे दूसरे समधनों की मिलाई न होवे और कुछ न दिया लियाजावे तीसरे परस्पर औरतें मिल कर रुदिन न करें— चोथे लडके लडकियों की गोद न भरी जावे केवल ।) की मिठाई दीजावें॥ येबातें सब स्वीकार होगई, फिर पं० प्यारेलालजी ने शास्त्र स्वाध्याय विशय में कहा— २०० भाईयों के लग भग— ने नियम लिया और फिर शास्त्रों छपे हुऐ के विशय में कहा के कोई भाई छापेका शास्त्र न लेवे उस पर ८० ग्राम के लग भग भाईयों ने हस्ताक्षर कर दिये फिर पंडित जीयालालका व्याख्यान रंडी भडवों के नाच के निषेध में हुआ और ऐसा मनोहर व्याख्यान हुआ कि बहुतों के दिलपर पूरा २ असर होगया उक्त पंडितजी साहब के ऐसे मनोहर व्याख्यान होते थे कि सुनने वाले तृप्त नहीं होते थे और यही जी करताथा कि पंडितजी और भी कुछ कहें ॥

और आवागढ के भाईयों ने कि जहां पूजामी होने को थी उक्त पंडितजी से प्रार्थना करी के हमारे मेले में अवश्य पधारे ॥

चम्पतराय

धन्यवाद

हकीम उग्रसैन साहब की चिट्ठी से हम को मालूम हुवा है कि लाला कुन्दनलाल उलफतराय ने दस रुपया महासभा की सहायतार्थ श्रीमान् सभापति साहब के पास भेजा है ॥ इस कारण उक्त महाशयका अति धन्यवाद दिया जाता है इस में कुछ संदेह नहीं है कि महासभा से अवश्य जैन जातिका बहुत बडा उपकार होगा परन्तु महासभा को उस उपकार करने के वास्ते बहुत बडे खर्च की जरूरत है सो यदि लाला कुन्दनलालजी के समान अन्य भाई भी महासभा की ओर ध्यान देवेंगे तो अवश्य उपकार क्या वरण जैन जातिका उद्धार हो जावेगा ॥

हकीम उग्रसैन साहबके लेखसे हमको यहभी मालूम हुवा है कि लाला केवलराम नन्हेडा जिला सहारनपुर निवासी ने एक रुपया जैन उपदेशक भंडार को सहायनार्थ विवाह में फेरों के समय दिया है ॥ यह बरात सरसा

आईथी विवाह में हजारों रुपये व्यर्थ दो दिन की वाह वाह के वास्ते खर्च किये जाते हैं यदि कुछ रुपया उस समय धर्म अर्थ खर्च करनेका भी प्रचार होजावे तो उस से बड़ा लाभ हो ॥ हकीम उग्रसैन साहब इस बात के प्रचार देने में बहुत कोशिश कर रहे हैं और हम आशा करतेहैं कि अन्य उपकारी भाई भी इस बातकी कोशिश करेंगे ॥

समालोचना

एक मासिक पत्र जीयालाल प्रकाश के नाम से फरुख नगर जिला गुडगावां से प्रकाश होता है पहले यह पत्र पत्थर के छापे में छपताथा परन्तु अब सुन्दर टाइप में छपने लगा है इसका विषय वैद्यकका होता है इस के लेख अति उत्तम और कार्य कारी होते हैं ॥ ऐसे पत्रका पढ़ना भी अति आवश्यक है ॥ यदि इस पत्र की सहायता भले प्रकार होती रहै तो बहुत लाभ दायक हो सक्ता है ॥ पंडित जियालाल जो निस रत्न जैन प्रतिष्ठित उपदेशक इस के सम्पादक मालूम होते हैं जिनका उपकार और गुन विख्यात है कुछ लिखने की आवश्यक्ता नहीं है ॥ मूल्य इस पत्र का केवल १।) वार्षिक है बिना दाम भेजे नमूना भी नहीं भेजा जाता है ॥

चिट्ठी

—०—

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी वकील जोग्य लिखी टिकइत नगर से धनपतराय आदि सकल जैनी अग्रवालों की जय जिनेंद्र बचना— आगें यहां पर पूजा है मिती बैसाख वदी ७ रोज सनीश्चर वार को श्री महेंद्रवाधि देवकी सवारी निकलैगी और सार्ध द्वीप विधान होगा सो आप जैन जगट के द्वारा सर्व जैनी भाईयों को सूचित कर दीजिये ॥

(दोहा) धर्म करत संसार सुख धर्म करत निर्वान । धर्म पन्थसाधे बिना नर तिर्जंच समान ॥

(श्लोक) विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्यामित्रं गृहेषुच रोगतस्यौषधं मित्रं धर्मं मित्रं मृतस्यच ॥

वरात

सिद्धि श्रीदेवचंद शुभस्थाने अनेक उपमा लायक बिराजमान भाई साहबजी श्रीबाबू सूर्जभानजी जोग्य लिखतं भरतपुर से गंगाधर चिरंजीलाल के घने मान जुहार धर्म स्नेह बंचनाजी यहांके समाचार श्रीधर्म के प्रसाद से भले हैं आपके सदैव आनंद चाहिये अपरंच पत्र साप्तहिक आपका जारी कीया हूवा आता है उसके देखने से परम आनंद होता है वारं वार आपको धन्यवाद दीया जाता है कि आपने हम लोगों को जो मिथ्यात्व में डूबे हूवे निज धर्म से विमुख होकर अचेत सो रहे है जगाने में कितना श्रम उठाया है और इस महान धर्म की उन्नति में और अनेक प्रकार की कुरीतियों के मेटने में जो कोशिश कर रहे हैं यह आप सारिखे सज्जन पुरुष परोपकारियोंकाही काम है हमलोग इससाहस पुरुषार्थकी कहां तक तारीफ करें हम से तो यह भी नहीं होसका कि आप इतना श्रम करके जिसकाम में तन मन धन से कटिबध हों उस को हम सुनतोले— अब गुजारिश यह है कि फाल्गुन बदी ५ के साहेपर यहां से १ बरात मुकाम रैनी तहसील राजगढ जिलाराज अलवर में गईथी उस में हम भी गयेथे वहां जो देखा तो बिरादरी यानी खंडेवाल जैनियों के घर करीब २० के हैं और श्री मंदिरजी भी बडा मनोग्रह उसका मरमत सफेदी वगेरह भाईयोंने कराईहै परन्तु धर्ममें और पूजन प्रक्षाल में भी बडी सिथलता देखी भाई बालाबख्सजी रसीदपुरवाले अब कुछ दिन से यहां रैनी मेही रहते हैं यह बडे धर्मात्मा और ज्ञान वान हैं परन्तु अकेला आदमी क्या कर सके आखिर १ सभा कराई सब भाईयों कू बुलवाया परन्तु बहुत से भाई चार वार बुलाने से भी नहीं आये जो भाई सभा में पधारे करीब दस बारह रैनी के होंगे और करीब १० भाई और जगह के जो विहामें आये थे सभा में थे उस का भाई बालाबख्सजी ने बाहमने पूजन वा स्वाध्याय के प्रकर्ण में कहा और उन के फल अच्छी तरह सब भाईयों कूं दिखाये और उनके न होने से जो हानि होती है सब दिखलाई आखिर चार भाईयों ने पूजन प्रक्षाल और पांच सात भाईयों ने स्वाध्याय कर

ना और शास्त्र सुनना अंगीकार कीया शास्त्र सभा के दोनों वक्त बाचनेका इकरार भाई बालाबक्सजी ने किया और जैन गजट का हाल जो कहा और उस के फायदे दिखाये तब गजट की खरीद दारी मंजूर हुई॥[नोट] चिट्ठी में और भाईयोंका नाम भी लिखा है जिन्हों ने गजट की खरी दारी मंजूर करी है वह नहीं छापी है ॥

जैन महा विद्या लय

जैन महाविद्यालय के नियत होने में अब कुछ सन्देह नहीं है क्योंकि हमारे परोप कारी जैनी भाईयों ने विद्या लय भंडार के पूर्ण करनेका पक्का इरादा कर लिया है अखबार जैन हितोप देशक उर्दू पत्र में मुन्शी चम्पतराय पं डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर इटावा महा मंत्री जैन महासभा की ओरसे एक विज्ञापन छपाथा कि यदि परोप कारी भाई जो तन मन धन से जैन महा विद्यालय के नियत होने की इच्छा रखते है वें एक मास की आमदनी देना स्वीकार करें और इस प्रकार जब एकसौ भाई इस काम में शामिल होजावें तो उन सबकी एक कमेटी बनाकर विद्यालय भंडार का काम बहुत अच्छी तरह चलसकै हम बड़े हर्ष के साथ इस बातको प्रकाश करते हैं कि निम्न लिखित सज्जन महाशयों ने एक २ मास की आमदनी देना स्वीकार किया है और हम आशा करते हैं कि बहुत जल्द यह फहरिस्त पूरी होजावैगी अर्थात् एकसौ भाई एक २ मासकी आमदनी देना स्वीकार कर लेवेंगे ॥

लाला शादीलाल पुत्र लाला भगवानदास साकिन बहादुरगढ जिला रोहतक नाइब मुहाफिज दफ्तर हिसार

लाला विहारीलाल मास्टर गवर्न्मेंट स्कूल बुलन्दशहर ॥

लाला मुन्नालाल साकिन नानौता जिला सहारनपुर अकौन्टेन्ट नाहन जिला अम्बाला आपने चार मासकी आमदनी जैन विद्यालय फंडार में देनी स्वीकार की है धन्य है आपकी उदारता और परोप कारता को आपका धन सदा बहुधा करके धर्म कार्यो में ही लगता रहता है ॥

लाला शम्भूनाथ कानूंगो पेन्शन याफ्ता साकिन रुड़की जिला सहारनपुर आपने भी एक मास की आमदनी देना स्वीकार किया है इस के व्यतिरिक्त आप जैन महा विद्यालयमें अपनी कुलपूजीका दसवां भाग देना चाहते हैं एसे ही पुरुष धन को सुफल करते हैं आपबड़े धर्मानुरागी सज्जन महाशय हैं और सदैव धर्म कार्यो में लगे रहते हैं ॥

मूल्य प्राप्ति स्वीकार

१) रु० लालमन श्रावक- मौजा अजबपुर जिला इटावा

१) लाला सुल्तानसिंह वल्दनिहासिंह दहली

१, लाला बारूमल मौहार्रिर खजाना पीली भीत

१, सेठ नाथरंगजी पोसआकलौज शोलापुर

१, लाला तनसुखजी अजमेर ठिकाना हीरालाल जिला जैपुर ठीक पता मालूम नहीं

१, श्रावक पंचान भाटगांव जिला दहली

१, लाला उमराव सिंह नजीबाबाद जिला बिजनौर

१, लाला अमरचन्द दिगम्बरी जैनी बडनगर जिला रतलाम

१, लाला फोंदीलालजी कामदार ठिकाना गुन्धरे जिला जैपुर

१, लाला गनपतराय मंत्री धर्म उपदेशनी जैन सभा धूलिया गंज आगरा

१, श्रावक पंचान निहटौर जिला बिजनौर

१, लाला रघुनाथदास मौजा सरन्यू जिला मेरठ

१, श्रावक पंचान कोताना जिला ऐटा

१, रूपचन्द ओवरसियर नहर बरेली रुहेलखंड

१, लाला छोगालाल जावध जिला नीमच

१, बाबू बिहारीलाल स्कूल मास्टर बुलन्द शहर

१, लाला मोहनलाल सोहनलाल बजाज शिहोर छावनी गुमटी बजार

१, लाला मूलचन्द तीसा जिला मुजफ्फर नगर

१, श्रावक पंचान सराय अघत जिला ऐटा

१, लाला हरप्रसाद कानूनगो होपड जिला मेरठ

१, लाला अनूप सिंह खजानची तोपखाना नं० ९४ इलाहबाद

१, लाला खैरातीलाल धन कुमार मेहारा जिला बिजनौर

१, लाला प्रभूलाल श्रावक खैर जिला अलीगढ

२) रु० लाला हीरालाल फीरोजपुर छावनी

१, लाला शिवसहाय मल बजाज फीरोजपुर छावनी

१, बाबू फल्लूमल सबओवर सियर फीरोजपुर छावनी

१, लाला घासीराम श्रीपाल अनूपशहर जिला बुलन्दशहर

१, लाला भज्जूमल मंत्री जैन पाठशाला शेरकोट जि० बिजनौर

१, लाला चेतराम फरहा जिला मे
नपुरी स्टेशन शिकोहाबाद

१, लाला ग्यानचन्द सुमेरचन्द पु
रानी अनारकली लहौर

१, लाला मित्तर सेन नानोता जि
ला सहारनपुर

१, श्रीजैन मंदिर छिन्दवाड़ा छो
टा मारफत ला० तारचन्द

१, लाला गिरनारीलाल टीहरी
जिला गढवाल

१, लाला शिवलाल पटवारी मौ
जा भिदानी

१, लाला उदमीराम इरायज न-
वीस झज्जर जिला रोहतक

१, लाला चुन्नीलाल गोपीनाथ फी
रोजपुर झिरका जि० गुड़गांवा

१, श्रावक पंचान जैनमंदिर फीरो
जपुर झिरका जिला गुड़गांवा

१, लाला शोभाराम गोपाल स-
हाय केम्प मेरठ

१, लाला फूलचन्द असिस्टेंट इं-
जिनियर झंग पंजाब

१, बाबू भागीरथ प्रसाद डाक्ट
र डिन्डोरी जिला मंडला

१, श्रावक पंचान मुंगावली रि-
यासत गवालियर

१, लाला मुन्शीलाल ठेकेदार रा
मनगर जि० बाराबंकी

१, ६० संघई जवाहरलाल घासी-
राम सतना

१, रामप्रसाद मल गुमाश्ता शा
ह अजुध्या प्रसाद नजीबाबा
द जिला बिजनौर

१, जैनसभा शिमला मारफत ला
ला खूबचन्द

१, लाला रामस्वरूप फुछीमल
कस्बा झाजर जि० बुलन्दशहर

१, श्रीजैन मंदिर श्रावक पंचान
चिल्काना जि० सहारनपुर

१, लाला मनोहरलाल रिडइ मो-
ती चौक जोधपुर

१, लाला भूरामल स्कूल मास्टर
बीकानेर

१, श्रीजैन मंदिर फतहाबाद जि-
ला हिसार

१, जैनसभा आगर मुल्क मालवा

१, श्रीजैन मंदिर मारफत लाला
रंगीलाल बान्दी कुई

१, लाला गुमानमल सांह लाम्ब-
नी कोठरी अजमेर

१, जैनसभा देवरी पनागर जिला
जब्बलपुर मारफत दरबारीलाल

१, सेठ हरीचन्द दिलोचन्द मौ
जा मंगरोल जि० शोलापुर

१, श्रीजैन मंदिर हांसी जिला
हिसार

१, लाला गैंदीलाल श्रावक मौ-
जा पीट पोस्ट सागवारा जि०
उदैपुर

२, श्रीजैन मंदिर मारफत लाला फतहचन्द्र दयालचन्द बुरहान पुर जिला खंडुआ

३, लाला मितरसेन वल्द लाला छज्जूमल कस्बा नकुड़ जिला सहारनपुर

२, सेठ दौलतराम मुन्तजिम जकात राज॰झालावाड़

२, लाला नंनूमल भगवान दास जंडैलगंज कानपुर

२, सेठ रावजीवनचन्द गांधी शोलापुर

२, सेठ जीवराज गौतमचन्द दोशी शोलापुर

२, सेठ हीराचन्द देवचन्द पोस्ट अकल कोट शोलापुर

२, लाला विमलप्रसाद नानोता जिला सहारनपुर

२, लाला अमीरचन्द प्रभूचन्द खजानची गया बंगाल

३, श्रावक पंचान मारफत छोटे लाल उदैभान कोसी जिला मथुरा

२, लाला छाजूमल श्रावक अफजलगढ़ बिजनौर

२, जैनसभा जैन मंदिर नया मारफत अमनसिंह देहली

२, सेठ गुलाबचन्द अमोलकचन्द गुलबर्गा जिला हैदराबाद

२, सेठ गोविंदजी बिहचरचन्द पोस्ट इंडी जिला विजेपुर

२, ब्रजलाल संघी चेचली रियासत भूपाल जिला होशंगाबाद

२, लाला वन्शीधर अफसर जकात बिकानी रियासत झालावाड़

२, लाला घीसूलाल सेठी पीसागन अजमेर

२, जैन मंदिर नागौरी अमनाय कुचावन मारवाड़ मारफत मुन्शी गोविन्दराय

२, लाला लखमीचन्द कामदार सवाई जैपुर

२, लाला जमुनालाल वकील सवाई जैपुर

२, शिवदीन के रास्ते में संगईजीका जैन मंदिर जैपुर

२, लाला जवाहरलाल कामदार राजमहल देवरी की छावनी

२, लाला मथुराप्रसाद हैडमास्टर मिडिल स्कूल खिमलासा जिला सागर

२, लाला देवीदास चौक लखनौ

२, श्रीजैन मंदिर माडीखेडा तहसील फीरोजपुर झिरका जिला गुडगांवा मारफत लाला उमराव सिंह पटवारी

२, लालमन साहबुधी लालासाहू

मोहल्ला भैरोंगंज सिवनी छपरा

१, बाबू सूरामलजी प्रोफेसर महाराजा कालिज जैपुर

१. श्रीजैन मंदिर श्रावक पंचान बूडिया जिला अम्बाला

१, लाला लक्ष्मीचन्द पोस्टल डिपार्टमेन्ट अजमेर

१. लाला जमुनालाल ल्कर्क पोस्टल डिपार्टमेन्ट अजमेर

१, लाला लालमन जैनी मौजा अजबपुर जिला इटावा

१, लाला सुल्तान सिंह साहू दहली

सहजउपाय

११ मार्च सन् १८९६ को पिछली रथयात्रा के पश्चात् जैपुर में रात्रि के समय ठोलियों के मंदिर जी में खास तौरपर बाम विलासनी सभाकाज ल्सा हुआ उस जल्से में बाबू रतनचन्द्र वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद ने अपने व्याख्यान में दान करनेका और अपने द्रव्यको धर्म अर्थ लगानेका एक सहज उपाय बताया जिसको हम सर्व भाईयों की सूचनार्थ इस पत्र में प्रकाश करते हैं उक्त साहबने भले प्रकार यह बात सिद्धि की कि बहुधा ऐसा होता है कि हमारे चित्त में दान हेतु वा धर्म अर्थ कुछ खर्च करने की इच्छा होती है परन्तु ऐसा कोई कारण सन्मुख नहीं होता है जिस के द्वारा खर्च कर सकें और अपना उत्साह पूरा करें और कभी ऐसा होता है कि एक कौडी भी खर्च करनेका उत्साह नहीं होता और कारण ऐसे सन्मुख होते हैं जिससे अवश्य खर्च करना पडे यद्यपि ऐसे समय में लोकलाज के हेतु थोडा बहुत खर्च किया भी जाता है परन्तु उस से चित्त बहुत मलीन होता है जिस से पुन्य की जगह पाप की प्राप्ति होती है इस कठिनाई को दूर करनेका और पुन्य संचय करनेका सहज उपाय यह है कि अपने मकान में एक धर्म गोलक रक्खी जावै जिस वक्त धर्म में कुछ खर्च करनेका उत्साह हो उसी समय उस में कुछ डाल दिया जावै और आवश्यक्ता के समय पर खर्च किया जावै हमारी समझ में यह उपाय बहुत ही उपकारी है हम आशा करते हैं कि हमारे जैनी भाई बाबू रतनचन्द साहब को धन्यवाद देकर अवश्य स्वीकारकरैंगे और हमको भी सूचित करेंगे जिससे हमअन्य भाईयों पर प्रगटकर अधिक प्रेरणाकरसकं ॥

रिपोर्टदोरा पं चुन्नीलालजीमंत्री महासभा

मै मुरादाबाद से चलकर अली-गढ आया पं प्यारेलालजी से मिला फिर मुथरा मे सभापति साहब की सेवा मे हाजिर होकर समाचार कहे— आदमी जो सभापति साहब की पेशी मैं महासभा की तर्फ से नियत हुआहै बहुत होशियार है मुथरा से अजमेर गया-वहां १ दिन रहकर जोधपुर पहुंचा ४ फरवरी तक वहां रहा वहांओसवाल भाईयोंके २०० घरहैं औरकिसी जैन जात के घर नहीं हैं केवल तीन चार घर दिगाम्बर आमनाय वालों के है वे बडे सरलस्वभावी और सज्जन हैं वहांकोई उपदेश सभाद्वारा न होसका परंतु वहांसे ज्ञात हुआके नावेमें भाईयोंके घर हैं यहां सामरनमक पैदा होता है मे गया परंतु वहां के भाईयोंने कहा कि प्रथम आप मारोठ हो आवें मारोठ वहां से तीन कोसथा में उंट की सवारी से वहां गया मारोठ में दो दिन रहा यहां ४ मंदिरहैं १२९ घर खंडेलवाल भाईयों के हैं ये लोग सभा पाठशाला आदि के कार्यों से बिलकुल अज्ञात है आस पास भी जैनयों के ग्रामों में घर हैं परंतुयेढाचाल पर तुले हूऐ है मेला प्रतिष्ठा आदि मे धन भी व्यय करते है।विद्या से पराङ्मुख है और शोक है कि मूढ हैं मैंने बहुत श्रम किया दो दिन में क्या हो सकता है यहां पर दो महीने कोई उपदेश करे तब कुछ होसक्ताहै फिर अजमेर आया भाई लोगालाल जीने-विद्यालय भंडार दिखाया-उसका प्रबंध अति श्रेष्ठ हैं मैंने कैफियत लिखदई फिर जैपुर में भाई मोतीलालजी से ठीसे मिला-और मुझको जैनपाठशाला मे टिकाया-पाठशाला के आप प्रबंध कर्ता है आप ने मुझको पाठशाला दिखाई २०० के लग भग विद्यार्थी पढते हैं और पढाई आदिका क्रमऔर प्रबंध इन महाशयका प्रशंसनीय है जैनियों की ऐसी पाठशाला कहीं भी नहीं है उसी दिन पाटोदियों के बडे मंदिर मे एक नैमित्तिक सभा हुई ७ बजे से ११ बजे तक व्याख्यान हूए— महा सभा को धन्यवाद कहा गया— दूसरे दिन चाक्षुओंके मंदिरजी में सभा हुई और खूब ही व्याख्यान हूए उससभा में बहुत बडे अमीर राज्यमान लाला जवाहरलालजी खंडेलवाल जैनी पधारे थे उन्होंने व्याख्यान सुनकर मुझे आज्ञा करी किकल दिन बडे मंदिरजीमें और सभा होनी चाहिये यद्यपि मेरा इरादा रहनेका न था परंतु आज्ञा भंगभीनकर सकाथा इस वास्ते ठहर गया और उक्त समय पर सभा हुई इस सभा का हाल जैपुर के भायों की चिट्ठी से आप को विदित होगा परंतु जैपुर एसा बडा श-

हर है– यहां बीस तीस सभा होती तब तो शहर में मालूम पड़ता यहां ४००० घर जैनियों के हैं और १०० चैत्याले और ७० मंदिर शिखर बंद हैं फिर देहली होकर मुरादाबाद आगया

चुन्नीलाल

हम अपनी सभाके मंत्री पं० चुन्नी लालजी को कहांतक धन्यवाद कहैं आपकी अवस्था साठ वर्ष मे भी अधिक है परन्तु जाति उन्नति और धर्म उन्नति में सदैव तत्पर रहते हैं हमारे पास जो जैपुर से चिट्ठियां उक्त पंडितजी के कार्यों की बावत आई हैं उन में उनके व्याख्यानों की बड़ी प्रशंसा लिखी है आपके जानेसे व्यर्थव्यय आदि का प्रबन्ध हुआ है ऐसे बड़े शहर में जो जैनजात की राजधानी है इन्हीं महाशयका काम सभा में व्याख्यान कहनेका था ॥

चम्पतराय उपदेशक फंड

—o—

भेलसा

मिती फाल्गुण शुक्ला १४ को रात्रिके आठ बजे शास्त्रजी बचने के पीछे जैन गजट बांचागया सर्व भाईयों से अष्टाहका पर्वका महात्म और होली की निन्दा करके प्रार्थना की गई कि कोई धर्मोत्सव होना चाहिये उसी वक्त अत्यन्त सरल चित्त के धारी श्रीमान् लाला फतेलालजी रामचन्द जी आदि सकल महाशयों ने श्री तीस चौबीसीजीका विधान पूजन के अर्थ चन्दा होने की आज्ञादी सो चन्दा जमा होगया और पूर्ण मासी से विधान पाठ पूजन जी शुरू हुई सो बहुत प्रभावना पूर्वक चार तथा पांच रोज तक आनन्द रहा इस माफिक यहां उद्योत होकर आज दिन कलशा विशेष बड़े हर्ष पूर्वक हुआ है और श्रीमान् लाला मोती लालजी पाटनी ने प्रतिज्ञाली कि हम होली नहीं खेलेंगे और मैंने भी होली खेलना तथा होली सम्बन्धी कोई कार्य करनेका त्याग किया और सहधर्मियों ने यथो चित कुमार्ग प्रवर्तन मेटा है॥

छोगालाल गोधा

—o—

जैन पाठशाला देहली

यहां पर एक जैनी अध्यापककी आवश्यक्ता है जो अंग्रेजी में मिडिल पास हो और नागरी भी जानता हो तनखाह १०रु० मासिक दी जावेगी ॥

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १—८—१६—२४ता०—
को बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिलासहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष	ता० १६ अप्रैल सन् १८९६	अङ्क १८

प्रार्थना

हम अत्यंत धन्यवाद देते हैं उन भाईयों को जो जैन गजट के ग्राहक बढ़ाने में बहुत कोशिश करते हैं ॥ इस पत्र को सज्जन धर्मात्मा भाईयों की सहायता की बहुत जरूरत है ॥ हमारा जी चाहता है कि हम सहित प्रकाश करते रहैं परन्तु विस्तार भय से नहीं छापा अब आगे को उन महाशयों के नाम प्रकाश करनेका इरादा है जैन गजट को खर्च की भी बड़ी भारी जरूरत है इस कारण कृपा करके इसका वार्षिक मूल्य तीन रुपये शीघ्र भेजदेवैं॥

जैपुरकामेला

सेठ मूलचन्दजी साहब राय बहादुर अजमेर निवासी ने भगवान के पांचो कल्याणकों की रचना बनवाई है जिस में से समोसरणजी की रचना तो पहिले से अजमेर में स्थापित है और बाकी

चार कल्याणकों की रचना अयोध्या नगर हस्तनागपुर नगर आदि जैपुर में तयार कराये गये हैं इस रचना के दिखलानेका मेला ता० १ मार्च से ११ मार्च तक हुआ जैपुर के राम निवास बाग के ऐलबर्ट हाल में यह सब नग्र अयोध्या प्रयाग हस्तनागपुर सुमेर और कैलाश पर्वत की रचना लगाई गई थी और दीवान सेठ नथमलजी के कटले में महाराज विराज मान किये गयेथे और उसी जगह मेला ठहराथा सेठ मूलचन्दजी की तरफ से मेले की चिठ्ठी नहीं भेजी गई थी केवल जैन प्रभाकर पत्र में इस विषय का एक विज्ञापन छप गयाथा और यह विज्ञापन भी बहुत ही देर करके छपाथा जिस से बहुधा स्थानों में खबर भी नहीं हो सकी इस मेले के समाचार पाकर जितनी जल्द होसका हमने भी जैन गजट में इस विज्ञापन को प्रकाश कर दियाथा इन तमाम बातों के होने पर भी मेला बहुत भारी हुआ आखिरी यात्रा में अनुमान साठ तथा सत्तर हजार जैनी होंगे जैपुर शहर के सांगानेर दरवाजे के बाहर यह मेलाथा जिस जगह मेलाथा वहां पर इतनी जगह नहीं थी जो कुल मेला ठहर सकै इस कारण दो तिहाई मेले के करीब शहर में ठहराथा मेले में ११ रोज तक बहुत ही आनन्दरहा और यदि कुल मेला बाहरही ठहरता तो इस से भी कैई गुना आनन्द होता मंडप में दिन को नृत्य भजन इत्यादिक होते थे और रात्री को ७ बजे से ९ या १० बजे तक धर्मोपदेश होताथा यद्यपि सभा मंडप बहुत ही बडाथा परन्तु इतनी ज्यादा भीड भाड थी यदि चार मंडप भी ऐसे २ होते तो भी कम थे इसी कारण बहुत से भाई संध्या के समय दर्शन करके ही वापिस चले जाते थे भीड बहुत होने के कारण शास्त्रजी बिलकुल नहीं बचते थे वरण मंडप के बीच में एक मेज बिछादी जाती थी जहां खडे होकर पंडित जन धर्मका उपदेश देते थे इस मेले में दूर देश के विद्वान पंडित एकत्र हुए थे उपदेश देने के वास्ते प्रति दिन एक पंडित महाशय नियत हो जाते थे यद्यपि धर्म उपदेश बहुत कुछ हुये परन्तु लक्ष्मीचन्द लशकर ग्वालियर वाले पंडित के व्याख्यान की तारीफ सर्व भाई करतेथे उनका व्याख्यान सात बजे

मे साढे दस बजे तक हुआ तिस पर भी सुन ने वाले तृप्त न हुये यदि पंडितजी साहब कुछ दिनों के वास्ते उपदेशक पदवी धारण कर जगतका उपकार करैं तो उन को पुन्यका लाभ हो और जगत में मिथ्यात्व अन्ध कार दूर होकर सत्य धर्मका प्रचार होवे आशा है कि पंडित साहब हमारी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे और अपने उपदेश द्वारा ज्ञान दान देकर पुन्य भंडार भरैंगे विद्या और ज्ञान प्राप्तका यही फल है अजमेर से मेले में जैन विद्यालय भंडारका दफ्तर भी अयाया यह दफ्तर सर्व भाईयों के दिखाने के हेतु मंडप में ही लगाया गयाथा इस भंडार की वृद्धि के वास्ते भी बहुत को शिक्षा की गई और रात्रि दिवस इस की बाबत व्याख्यान होते रहे पं० जियालाल प्रतिष्ठित उपदेशक ने इस विषय में अत्यन्त ही प्रयत्न किया अनुमान एक हजार रुपये के करीब जमा भी होगया जैसा कि जैन महा विद्यालय अर्थात् जैन कालिज के वास्ते कानपुर आदि नग्रों में एक रुपया फी घर के हिसाब से इकट्ठा कियागया है इस को जैपुर के भाईयों ने भी बहुत पसन्द किया और एक रुपया घर के हिसाब से रुपया इकट्ठा करना प्रारम्भ कर दिया है जैपुर में ढाई हजार घर जैनी भाईयों के है इस कारण सहज में ढाई हजार रुपया इकट्ठा होजावेगा बहुत कुछ इकट्ठा हो भी गया है कुछ थोडा बाकी रह गया है हम सर्व देश देशान्तर के जैनी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि एक रुपया फी घर के हिसाब से देना कुछ भी मुश्किल बात नहीं है इस कारण सब भाई अपने २ नग्र और ग्राम से एक रुपया फी घर के हिसाब से जमा करके शीघ्र श्रीमान् सेठ लक्ष्मण दासजी साहब सितारे हिन्द सभापति जैन महा सभा के पास मथुरा भेज देवैं श्रीमान् सेठ साहब ने इस प्रकार आये हुए रुपये को अपने पास जमा करना धर्म कार्य समझ कर स्वीकार कर लिया है जैसा कि एक २ बिन्दुपानीसे एक तालाब भर जाता है इसी प्रकार एक २ रुपये से भी बहुत द्रव्य इकट्ठा होजावैगा और जैन महा विद्यालयका कार्य प्रारम्भ हो जायगा जैपुर के भाईयों में वात्सल्यता और धर्म प्रीति बहुत मालूम होती है क्योंन हो जैपुर बा

शहर में जैनपुरी है और जैनियों की राजधानी है हम महा राजा साहब जैपुर की कहां तक तारीफ करें वोह अनुपम प्रजा प्रति पालक हैं इस मेले में राज्य की तरफ से बहुत कुछ सहायता रही है जिसका हम वर्णन नहीं करसके बड़ी भाग्यवान है वो प्रजा जो ऐसे महाराज के राज्य में रहती है परमेश्वर ऐसे महाराजका प्रताप चौगुना करें और सदा के वास्ते चिरंजीव रक्खे महाराज साहब की तरफ से ५०, रुपये माहवारी की सहायता जैन पाठशाला जैपुर को भी जारी है एक महल भी अभी जैन पाठशाला को राज्य की तरफ से दियागया है मेरे ख्याल में जहां तक मुझको मालूम है जैन पाठशाला जैपुर के बराबर अन्य कोई पाठशाला नहीं है इस पाठशाला में श्रेणी बद्ध उपाध्याय के दर्जे तक पढाई होती है अध्यापक सब महनत करते हुये मालूम होते हैं पं० भोलेलालजी सरिश्तेदार दीवानी और अन्य भाई इस पाठशाला के रक्षक हैं पं० भोलेलालजी बडे परोप कारी शील सुभावी सज्जन धर्मात्मा पुरुष हैं जैपुर के सब भाई धर्म कार्यों को बहुधा करके उन्ही की सम्मती पर छोडते हैं जैपुर में महाराज की तरफ से एक अंग्रेजी कालिज है जिसमें बी० ए० तक की पढाई होती है हम यह बात देखते हैं कि सर्व देश देशान्तर के जैनियों के लडके अंग्रेजी पढने के हेतु कोई किसी नग्रमें जाता है कोई किसी नग्रमें और इस प्रकार बहुत तकलीफ उठाते हैं हमारी समझ में आज कल रेल जारी होजाने के कारण ऐसाही सौ कोस भागजाना है और ऐसाही चारसौ कोस इस वास्ते अगर जैनियों के लडके जो अंग्रेजी पढने के वास्ते बाहर जाते हैं अगर जैपुर चले जाया करें तो उनको बहुत आराम मिले और बहुत लाभ हो क्योंकि एक तो जैपुर के जैनी भाईयों की तरफ से उनको रहनेका स्थान बहुत अच्छा मिलसक्ता है और जैपुर के भाई उन की सब प्रकार से रक्षा करने को तयार हैं दूसरे उनको यह लाभ होसक्ता है कि बड़ी आसानी से अंग्रेजी विद्याके साथ धर्म विद्या भी प्राप्त करसक्ते हैं इस मेलेका हाल यदि विस्तार पूर्वक लिखाजावे तो कैई अंकों में भी पूरा न हो इस कारण बहुत ही संक्षेप से हमने लिखा है

हमारी समझ में ऐसा कोई ही ग्राम बाकी रहा होगा जहां के दो चार भाई भी इस मेले में न पधारे हों इस कारण हमको विस्तार लिखने की आवश्यक्ता भी नहीं है परन्तु अन्त में इतना हम जरूर लिखते हैं कि निस्संदेह सेठ मूलचन्दजी ने अपना बहुत द्रव्य खर्च कर अजुध्या आदि नगरी बनाकर धर्म प्रभावना को बढ़ाया और मेला करके ११ दिन तक साठ सत्तरहजार जैनियों को धर्म में लगाया परन्तु आज कल जैनियों में धर्म विद्या की अति आवश्यक्ता है इस कारण यदि यह कुल रुपया जो इस मेले में जो जैनी भाईयोंका खर्च हुआ अगर विद्या के प्रचार में खर्च होता तो इससे कई गुना ज्यादा धर्मका लाभ होता हमको यह भी मालूम हुआ है कि यहका र्य पचीस तीस वर्ष से बराबर बन रहाथा इस कारण इसका पूर्ण करना आवश्यक हुआ सेठ मूलचन्दजी के इस कार्य से जैन धर्म की अत्यन्त प्रभावना हुई है हम आशा करते हैं कि वह विद्या प्रचार के द्वारा इस प्रभावना को और भी ज्यादा २ बढ़ावेंगे ॥

अद्भुत फिजूल खर्ची

खैर ख्वाह कौम बाबू सूरजभान साहब जैनिजेंद्र; मैं आप के उपकार और को कोशिश को दिल से धन्यवाद देता हूं शहर देहली में एक अद्भुत रस्म है जिस के द्वारा फिजूल खर्ची और हिन्सा कीजाती है चूंकि अब उस रीति के करनेका समय आने वाला है इसकारण उस की बाबत में कुछ लिखना चाहता हूं कृपा करके जैन गजट में छापदेवें ॥

देहली के जैनीभाइयों में यह रिवाज है कि ग्रीष्म ऋतुमें लड़की की सुसराल में खरबूजे भेजे जाते हैं यद्यपि नाम केवल खरबूजे भेजनेका है परन्तु खरबूजे भेजने में एक सहस्र रुपये से अधिक एक आदमीका खर्च होजाता है आपको इस बातका बड़ा आश्चर्य हुआ होगा परन्तु यह बात सत्य है इस में कुछ झूठ नहीं है क्यों कि खरबूजे बहुत भेजे जाते हैं इस कारण चार पांच दिन पहले से खरीद कर इकट्ठा करने लगते हैं जब यह खरबूजे बेटी की सुसराल में पहुंच जाते हैं तो वह इन खरबूजों को तमाम बिरादरी में बांटते हैं और बांटने में आठ दिन लगजाते हैं इस कारण खर

बूजे रस चलित होजाते हैं और त्रसजीव उन खरबूजों में पडजाते हैं उनके खाने से पाप के सिवाय बीमारी होजानेका भी अंदेशा होता है हाय हाय इतना पाप करते हुए भी जैनी नाम धराते हैं अहिन्सा पालने वाले कहलाते हैं श्रीमंदिरजी में सदैव हरीत्यागका उपदेश होता है परन्तु कुछ भी ध्यान नहीं है दहली में जियाफत भी अजीब होती है वोह जियाफत क्या एक आफत होती है इसका वर्णन ब्यौरे वार आगामी चिट्ठी में लिखूंगा मेरी समझ में असत्य हिन्सा, मान, माया, लोभ, क्रोध, के त्याग करने का अधिक उपदेश होना चाहिये हमारे जैनी भाई हरी आदिक छोडनेका अधिक विचार करते हैं परन्तु इन बातों के छोडने पर जो पाप के मूल है कुछ ध्यान नहीं देते और असत्य बोलनेका तो ऐसा प्रचार होगया है कि इस में कुछ दोष ही नहीं समझा जाता है ऐसा ही हिन्सा चोरी मैथुन आदिक भी ऐसे फैलगये हैं कि जिनका लिखना कठिन है कहां तक लिखा जावे और सब जानते ही हैं सो हमारी यह प्रार्थना है कि इनके दूर होनेका कुछ उपाय होना चाहिये तभी धर्म की उन्नति होगी ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
संगमलाल गुमाश्ता
लाला बनारसी दास साहु
सोनीपत जि० दहली

चिट्ठी

श्रीयुत धर्मानुरागी परोपकारी बाबू सूर्यभानजी जयजिनेन्द्र मौहल्ला पुरा डाकखाना हसायन जिला अलीगढ में जैन मंदिर जिस में चौथे काल की महा मनोज्ञ प्रतिमाजी विराजमान हैं जो तीन गांवों के मध्य में हैं उनग्रामों के जैनी भाई दर्शनादि धर्म सेवन करते हैं परन्तु उक्त मंदिरजी १ साल वर्ष से फूटा पडा हुआ है कारण यह है कि धनाढ्य पुरुष कोई नहीं है तो भी अपनी शक्ति अनुसार थोडा साधन एकत्र कर नीवाद मंदिरजी की डाली है और एक कमरा की दीवार भी बनगई है अब यहां पर रुपया नहीं है सो भव्यजीवों की सहायता करने से उक्त ३ ग्रामों के भाईयोंका धर्म सधतार हैगा ॥

यह मंदिरजी बहुत दिन से टूटाफूटा पडाथा अन्यमती इस में अनेक विघ्न करते थे तब बरसाते

के जैनी भाईयों ने कहा कि इस चौथे काल की प्रतिमाजी को हम अपने यहां लेजावैं तो एक भाई पीतमलालजी ने कहा कि हमारे दर्शनोंका अभाव हुआ हाय २ मैं क्या करूं मेरे पास तो सब १००, की जमा है उससे कुछ नहीं होसका ऐ भाईयों कुछ मदद करो सीमादी लगाओ फिर कोई कोई धर्मात्मा बनवा देवेगा सो अब सर्व भव्यजीवों से प्रार्थना है कि उस मंदिरजी की सहायता करैं तो बड़ा महान पुन्य होवेगा ॥

पं० गनेशीलाल जैनपाठशाला
निहटौर जिला बिजनौर

चिट्ठी

श्रीयुत बाबू सूर्यभान सकल गुण निधान जोग्य लिखी पीमासन से घासूलाल सेठीका धर्म स्नेह पूर्वक जुहार बंचनाजी—चिट्ठी आप की पहुंची जैन गजट अंक दो आये बांच कर [जैसे कमोदनी को चन्द्र] चातक को स्वातबिन्दु, मयूर को वर्षा भ्रमरन को कमल ऐसे अनेक दृष्टान्तसी खुशी हुई— जैन गजट प्रति सप्ताहिक भेजते रहिये वार्षिक मूल्य मनिआडर द्वारा भेजा है सो लेनाजी पत्रोत्तर देवैं यहां के लायक जो कुछ काम होवैं सो लिखनाजी ॥

[दोहा] कमलहि निशि दिन पंकमें रहत सदा निकलंक ॥ त्यों आपहि रहियों सदा + ज्ञायक होय निशंक ॥ नानाविधि के रूपकै अवलोकन जो होय ॥

सबकोथिर नहीं जानके + प्रीतिकरो नहीं कोय ॥ वीत रागता खडगले + रहियो सदा निशंक ॥ कानों भय व्यापै नहीं × कर्म नहीं लिपटंत ॥

हांसी जिला हिसार

यहां पर चाक पूजना सीतला पूजाना आदि मिथ्यात्व जारी है और उनका चढावा मुसल मान कुम्हार लेते थे सो अब दस पांच रोज से मुसलमान कुम्हारोंने उसका चढावा लेना बन्द कर दिया और चाक भी अपने घर पर पूजना बन्द कर दिया सो इस काररवाई से हम को मालूम देनेलगा कि अब हमारे भाई भी इस मिथ्यात्व को सज दूरन कम कर देंगे मगर शोक की बात है इन मिथ्यात्व पूजनका चढावा हिन्दू कुम्हारों ने लेना मंजूर किया इस से मिथ्यात्वका घटना असम्भव है बगैर उपदेशक के ॥

रघुनाथ दास जैनी

मेला जैपुर

श्रीयुत जैनगजट सम्पादक जयजिनेंद्र कृपा कर इस छोटे से लेख को निज अमूल्य पत्र में स्थान प्रदान कर चिर बाधित कीजिये ॥

श्रीजैपुर महाराज की प्रजा की वात्सल्यता ! कौन ऐसा सज्जन होगा जो देशी राजा महाराजों की धर्मिष्ठता और प्रजा वात्सल्यता देखकर प्रसन्न नहो— सच के सब देशी महाराजा लोग जिस दिन अपने धर्म पर दृढ़ आरूढ़ होजायगे उस दिन यह भारत वर्ष अपनी पूर्ण उन्नति को पहुंच जायगा इस में संदेह नहीं ॥

कलि रूपी महा रात्रि सब देश देशान्तरों में व्याप्त हो रही है उस के प्यारे अधर्म रूपी अन्धकार ने धर्म भास्कर को ग्रास कर रक्खा है दिनान्ध उल्लूक जगह २ उडते फिरते हैं और अपनी क्रूर वाणी से सज्जनों के कान फोड़ते हैं तथापि इस घोर अन्धकार कलि में भी कुछ धर्म ज्योति की किरण दिखाई देती है तो आर्य राजाओं के राज्यही में दीखती है और इस महाराजा धिराज श्री १०८ श्रीमाधौसिंघजी सी० एस० आई० जैपुर की प्रजा वात्सल्यता देखकर फूले अंग नहीं समाते उक्त दयावान कृपा निधान महाराज की सहायता रथयात्रा महोत्सव में जिस को राय बहादुर मूलचन्दजी सेठ अजमेर निवासी ने जैपुर में कराया बहुत दीनी यहांतक कि आप ही दो बार खुद पधार कर उत्सव को सुशोभित किया आशा है कि सब ही देशी विदेशी महाराजा साहबका प्रबन्ध देख अति सन्तुष्ट हो देश देशान्तरों म सभी जगह इनका गुण गान करते होंगे महाराजा साहबका यश सब देश भर में छागया है इस उत्सवका आनन्द वचन अगोचर है बस इतना ही कह कर समाप्त करताहूं उनकि सब भाईयों के मुखसे जय २ कार के शब्द उच्चारण हो रहे थे जो अवतक उक्त नग्रमें मौजूद थे हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमारे महाराजा की आयु दीर्घ हो और उन की मति सदा धर्म पर बनी रहे ॥

मोती लाल मंत्री सभा जैपुर

रिपोर्टदौरा हकीम बनवारीलाल ऑनरैरी उपदेशक

आगे मिती चैत्र शुक्ला १२ को मैं कसबह पाढम जिलअ मैनपुरी में दौरा करता हुआ गया यहां पर दो श्री मंदिरजी और एक चैताला है भाईयों के घर तीस तथा व तीन के लग भग है मैंने सभा का बुलावा बिरादरी में दिलवाया सो नियत समय पर सब भाई वथा स्त्री सभा में सुशोभित हो गई मेरा

व्यर्थ व्ययपर व्याख्यान हुआ—और मुरदों की जौनार जो यहां होती थी उसकी हानियां दिखलाई गई—सभा में यह नियम तत्काल हो गया कि बीस वर्ष तक के मुर्दे की जोनार नकी जावे ऊपर का अख्तयार है—सो उसी वक्त सब भाइयों के हस्ताक्षर हो गये—दूसरे दिन फिर सभा हुई और उसमें विद्या के विशय में व्याख्यान हुआ—और पाठशाला नियत करने की आवश्यक्ता दिखलाई गई—तो लाला किश्न दास जी की पतनी ने—अपना एक मकान १००, रुपये की कीमत—का—खरग जीत सुनार वाला पाठशालाके वास्ते दान कर दिया—और लाला श्यामलाल ने एक मकान का हिस्सा कीमती २००, रुपय का पाठ शाला का दिया—और जब तक मकान बिक न जावै तब तक १, महीना पाठशाला में देवेंगे और यदि पाठशाला—किसी कारण से—टूट जावै तो उस मकान का रुपया—छोटे मन्दिर में लगाया जावै—और ८ भाइयों ने भी—अपनी शक्ति समान चन्दा दिया है—सो पाठशाला शीघ्र ही जारी हो जावेगी—और हर महीने सभा होगी जैन गजट की खरीदारी मंजूरी हुई—यहां पाठम बहुत प्राचीन बाती है इसका खेड़ा—जमीन से सौ हाथ से भी अधि ऊंचा है—और कई कोस के फेरमें है—यहां पर एक पंडित मस्त पुरा गांव के रहने वाले ने एक खेत को खुदाया था और वह कहते थे कि यहां जनमे जय ने सर्पों का हवन यज्ञ में कौरव पांडवों के वक्त में कराया था—खेत खोदने से कुछ दीवार सी मकानात की निकली थी उसी को उन्हों ने कुंड बताया था—ठीक नाम इस बस्ती का उक्त महाशय पांडुकु धन बताते हैं

सरन्यू जिला एटा

मिती भाद्रपद शुक्ला एकाद- सम्वत् १९५२ को सभा हुई जि स में सरन्यू— मर्थरा— जिनिमि नगले ख्याली राइ बझैरा अमापु इन सातों ग्रामों के महाशयों क पत्र द्वारा बुलाय कर काम स न्यू मंदिर पुराने में प्रथमही भाका प्रारम्भ किया जिस में कुरीतिओंका प्रचार बन्द कि गया है वोह ये हैं शादी और मी में अन्य ग्रामों में औतो जाना बन्द (२) लडकी के वाह में पंचायतका जिमाना ब किया [३] और बरात में फं रंडी और सारे तमासे ब [४] बरातका बढाना फूलों लेजाना बन्द आतिशबाजी सिर्फ पुरुआ थोडे और अन्य

कार की आतिशबाजी नहीं ले जाना [९] चमार महतर चिकटा खातक धोबी इत्यादि नीच जाति का घी लेना बन्द किया गया॥

यह नियम सातों ग्रामों के पंचोंने स्वीकार किया और अपने दस्तखत सभा की किताब में कर दिये यदि इन नियमों से जो कोई प्रतिकूल बनेंगे उन को सभा मुनासिब समझ दंड देवैगी और भी अनेक २ फजूल खर्चा आदि के बारे में बयान है उसका यथार्थ हाल सभाकी किताब में है॥

१ यह सभा हरसाल में अष्टान्हिकाओं में ३ बार और एक दफै भाद्रपद शुक्ला ११ को हुआ करैगी वोह सबे ७ ग्रामों के महाशय इकट्ठे हुआ करैंगे और जो भाई स्वाधीन वस न आवैंगे वोह सभा से नदारुक पावैंगे मिती कार्तिक शुक्ला १५ को सभा में यह नियम हुआ कि सातों ग्रामों के सकल जैनी पंच जूआ हुलिया छोड़ दें बाद में फाल्गुण तक मजलसी वार सभा में जो भाई सभी एक हुक्का के पीने वालेथे उन सभों को आज्ञादी गई कि मिती अष्टान्हिका तक तुम्हारा व्यौहार बन्द आयन्दा सभा जो मुनासिब समझैगी सो करैगी हमारे देहात के भाई सीधे साधे हैं॥

मिती फाल्गुण बदी १० को यहां मेला मंदिर प्रतिष्ठाका हुआ था उस में श्रीमान् पूज्य बाबाजी दुलीचन्दजी पधारे थे उन्होंने शुद्ध आम्नाय से मंदिर प्रतिष्ठा कराई यहां मौजा सरन्यू में दो मंदिर हैं और एक चैत्याला वीरपुर में है मेला सरन्यू और वीरपुर के बीच में जुड़ाथा जिस में श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० पधारे थे व श्रीयुत पं० प्यारेलालजी व उपदेशक पं० जियालालजी ज्योतिष रत्न व लाला किरोड़ीमल मुहर्रिर जैन महासभा आदि महाशय पधारेथे और ५ रोज तक गीत नृत्य पूजन शास्त्र उपदेश आदि पुन्य कर्म कर मिती फाल्गुण बदी १४ को बड़ी धूम धाम से करी व ६ साल हजार भाईयों ने श्रीजी को महान उत्सव के साथ चैत्यालयमें बिराजमान किये बाद में सर्व जैनी भाई अपने २ स्थान पधारे लाला दिलसुखराय ने स्व शक्ति अनुसार सर्व भाईयों की सेवा बजाई थी॥

पन्नालाल श्रावक
मौजा सरन्यू जिलाएटा

रोहतक

यहां पर मिती भादों सुदी १५ सं० १९४९ में लाला तुलसीराम श्रावक ने सभा जारी कराई और कुछ रोज तक बड़ी रौनक के साथ जारी रही परन्तु आपस के वैर विरोध से सभा बन्द होगई फिर मिती असाढ सुदी १५ सं० १९५० में सभा लाला गोपाल सहाय के मकान पर नियत की गई और बहुत से नियम सभा के बदल दिये गये लेकिन धनाढ्य पुरुष सभा में कम शामिल हुए इस वास्ते सिर्फ ६ महीने तक साथ जारी रही फिर बन्द होगई लेकिन सभाका दफ्तर जारी रहा इस साल मिती भादों सुदी १४ सं० १९५२ में पाठशाला श्रीमंदिर मौहल्ले सराय की तरफ से जारी की गई है जिस में दो अध्यापक हैं एक तो ८, रु० वाला धार्मिक और दूसरा १५, रु० महावारी का है यानी कुल खर्च पाठशाला सम्बन्धी २०, रु० महीनेका है और इतनाही खर्चेका भी बन्दोबस्त है और चन्दा ६ माहका वसूल होगया है ॥

इस कस्बे में १५०, घर श्रावकों के हैं और जिन २ महाशयों ने पाठशालाका चन्दा दिया है उन के नाम नीचे लिखे जाते हैं— लाला गोपाल सहाय साहूकार ६०, रु० वास्ते ६ माह के— लाला हरद्वारी मल ६०, रु० लाला तुलसीराम १५, रु० लाला मुरारीलाल १५, रु० लाला बाराराम १५, रु० लाला गोविन्दराम १५, रु० लाला जैदयाल सिंह १२, रु० लाला बनारसीदास १२, रु० लाला द्वारकादास १२, रु० लाला जौहरीमल १२, लाला कश्मीरीलाल १२, रु० लाला कस्तूरीमल ६, रु० लाला मोहरसिंह ६, रु० इस भांति रुपया वसूल होगया है यह पाठशाला अनुमान ६ महीने से जारी है जिस में ७० विद्यार्थियों के लग भग पढते हैं

मुन्शी मोहरसिंह हैडमास्टर
स्कूल केवलगंज जि० रोहतक

—•—

आगर मुलक मालवा

यहां के जैनी भाई इन दिनों धर्मोन्नति और जात्योन्नति में खूब कोशिश कर रहे हैं यहां पर जैन पाठशालाका प्रबन्ध मिती चैत्र कृष्णा ८ की सभा में किया गया है और उस के खर्च के वास्ते १२०, रुपये सालका चन्दा इस भांति जमा होगया है ॥

४०, रु० सेठ मनसुखराय अमीचन्द
१२॥, रु० उक्त लिखित सेठ साहब के मुनीब थानमलजी
१२॥, रु० लाला मिश्रीलालजी सहाब
१५॥, लाला मथुरालालजी साहब
१२॥, रु० लाला ताराचन्दजी साहब
१०, लाला बन्शीधरजी साहब

इस भांति इन सब भाईयों ने चन्दा देना स्वीकार किया है ॥

अवश्य दृष्टनीय

जैन प्रचारनी सभा सुनीपत की ओर से चिट्ठी मौजे करठल तहसील बागपत जिला मेरठ थाना छपरौली में पिच्छासी घर श्रावकों के थानक पंथी थे काल लब्धी और इन जैनियोंकी होनहार अच्छी बाबा रमन लाला वहां पधारे इन के उपदेश से कुल ग्राम अर्थात पिच्चासी घर दिगंबर शुद्धाम्नाय पर श्रद्धान लाये और श्री मंदिरजी बनाना आरंभ कर दिया ॥ उत्सव वेदी प्रतिष्ठा का मिती वैशाख सुदी तीज का नियत हुआ और आस पास के नगरों में चिट्ठी भेजदी ॥ जब यह समाचार ढूंढियों को मालूम हुए तो काधला छपरोली और अन्य २ ग्रामों से बहुत से ढूंढिये वहां आये और एक अरजका पार्वती जिस के साथ और बहुत सी अरजका ढूंढनी थीं आई और एक ढूंढिया पंजाब से भी आया और बहुत उपद्रव मचाया कि मंदिर मत बनवाओ इस में बहुत पाप है भली भांति समझ लो और इस विषय में बादानुवाद करलो और किसी दिगंबर पंडित को बुलालो वह पहले आकर हम से वाद करले फिर मंदिर बनाना ॥ वहां के जैनियों ने जवाब दिया हम को वाद करने की कुछ आवश्यकता नहीं है अब तो हमने यह काम प्रारंभ कर दिया और अंधेरे से उजयाले में आ गये ॥ सच्चा रतन हमारे हाथ लग गया ॥ परन्तु यह उत्तर सुन कर भी उनहों ने न माना और चारों ओर से ढूंढियों को एकत्र कर लिया ॥ वैशाख बदी दोज को कार्य वश लाला उमराव सिंह मंत्री सभा सुनीपत भी वहां पधारे ॥ पारबतीजी ने जो ढूंढियों में अधिक पंडित थीं उन के आने की खबर सुनी ॥ यह खबर सुन कर वहां से भागी बहुत कुछ कहा गया कि मंदिर बनाने में निर्णय करलो परन्तु वह भाग कर छपरौली चली गई ॥ जो ग्रहस्थ ढूंढिये वहां मौजूद थे उन से बादा बाद हुआ और इस गांव के जैनियों के हृदय में सच्चे देव गुरू शास्त्र का श्रद्धान दृढ़ किया ॥ श्री मंदिर जी के बनाने के लाभ और प्रतिमा पूजन का कल्याण कारी होना समझाया गया ॥ उनहों ने मान लिया कि हम अंधेरे गढ़े कूपमें पड़े हुए थे और अपना और अपनी संतान का लोक परलोक बिगाड़ रहे थे अब सच्चे देव गुरू का शरण में आने से चिंतामण रत्न हाथ आया ॥

ए सच्चे धर्म के सत्कार करने वालो यदि तुम यह चाहते हो कि सच्चा धर्म इस कलकाल में बना रहे तो विचार करो और मालूम करो कि हम सब को हजार काम छोड़ कर नियत समय पर प्रतिष्ठा में अवश्य शामिल होना चाहिये ॥ विशेष कर महा सभा के अधिकारियों और पंडितों को तो अवश्य ही आना चाहिये क्या तुम यह बात नहीं देखते हो कि मंदिरजी बनना. बंद करने के वास्ते ढूंढिये कहां २ से आकर जमा हुए और कैसी २

कोशिश की ॥ हम भाइयों केवल कागजी
घोड़ों से कुछ कार्य सिद्ध नहीं होगा कुछ
करके दिखलाओ ॥ शोक का बात है कि
हम अज्ञान निद्रा में सोते हैं अपनी अ-
वनती की हम को कुछ खबर नहीं व्यर्थ
उपाय करते हैं हवा को मुट्ठी में बंद कर
ना चाहते हैं और अवनती के असली का
रणों के दूर करने का कुछ उपाय नहीं
करते ॥ ढूंढियों ने देश विदेश दौरा करके
तमाम देहात और गांव के भोले भाले जै-
नियों को अपने जाल में फंसा लिया है ॥
तमाम इलाका बागर और खादर यमुना ज
मुना के बीचका जो शुद्ध आम्नाय वालों
काथा खाली होगया ढूंढिया मत ग्रहण क
र लिया है हाय जगत मे यह शुद्ध पंथन
सा क्यूंकर जैनीयोंका भला होगा यदि य
ही हाल रहा तो जो कुछ नतीजा हो-
गा जाहिर है ॥ कहां हैं महा सभा के उ
पदेशक और किस जगह उपदेशक रहे हैं
और क्या कार्य करते हैं क्यूं नहीं यहां
आते ॥ जो काम करनेका है क्यूं उस
काम की ओरध्यान नहीं देते ॥ ऐ भाईयों
जल्द आवो और प्रतिष्ठाके समय तो अव-
श्य ही आवो इस इलाके में ढूंढक पन्थका
बहुत जोर है ॥ जो गई सो गई अब रा
ख रही को ॥ जो साहब मेले में आना
चाहें वह तिथी वैसाख सुदी एकम को स्टे
शन सोनीपत कालका देहली रेलवे पर
आजावें उन के वास्ते सवारी आदिका अ
च्छा बन्दोबस्त हो जावेगा ॥

नियमावली तथा प्रबन्ध सुध- र्म सभासरनऊ जिलाएटा

इस संसारमें सर्व जीव सुख
की इच्छा रखते हैं और दुखसे ड
रकर उसके दूर करने की कोशि
श करते हैं परन्तु सुख होनेका
असली कारण मालूम न होने से
वृथा खेद को प्राप्त होते हैं सो अ
सली कारण सर्वज्ञका कहा हुआ
जैन सासन वर्णन किया है हम
जैनधर्मी जन कुलके उपजे हुए स
र्व साधारण की तरह भटकते हुये
अविद्या की कृपासे दुख पारहे हैं
ऐसा समझ कर अपने प्राचीन आ
चार्यों के रचे हुये शास्त्र जिन में
कि सुख होनेका मार्ग हर अव-
स्था योग्य भली भांति दिखाया
है उनके देखने सुनने की रीति अ
पने यहां जारी करने को सरन-
ऊ आदि कई ग्रामों के पंच महा
शयों ने विचार किया परन्तु यह
कार्य विद्याभ्यास बिना न होना
समझ कर और जो कोई कुरीति
महा विघ्नकारक लोक रूढि सम
चल रहीथी उनके दूर किये बि-
ना विद्याभ्यास होना मुश्किल स
मझ कर उपरोक्त कुरीतियों को
पहिले दूर करना मुख्य समझ क
र यह (जैन सुधर्म सभा के नाम
से) सभा स्थापित की है उसके लि

यम तथा मुख्य प्रबन्ध कर्ता नीचे लिखे जाते हैं ॥ नियम ॥

(१) यह सभा प्रति वर्ष ४ बार हुआ करैगी ॥

प्रथम भादों सुदी १? मुकाम सरनऊ जैन मंदिर[२]कार्तिक सुदी १५ मुकाम मथुरा जैन मंदिर

[३] फाल्गुण सुदी ११मु० वीरपुर लाला दिलसुखराय साहब के मकानपर

४ असाढ सुदी १५ मु० वीरपुर उक्त लाला लालजीके मकानपर

(२) यह सभा धर्मोन्नति वा जात्योन्नति के वास्ते वा आपस के बैर विरोध मिटाने के वास्ते वा ऐसे कुमार्ग जिन से बहुत हानि होती है उनके दूर करने को यथोचित दंड देने के वास्ते है इस का किया कार्य नीचे लिखे ग्रामों के पंचों को तथा सर्व बिरादरी को मंजूर करने पड़ेंगे ॥

मौजा— सरनऊ, वीरपुर, मथुरा, जिरसिमी, बजहरा, ऊंचागांव, नगला ख्याली ॥

सभापति— लाला दिलसुखराय वीरपुर के जमींदार ॥

उप सभापति— लाला लखमीचन्द मथुरा ॥

मंत्री— लाला रघुनाथदास जैनी लाला जमुनादास सरनऊ निवासी— बृजवासीलाल मथुरा वाले— ला० मथुरादास ख्याली के नगला वाले ला०जिनेसरदास वीरपुरवाये ॥

[साभ सदों के नाम अगले अंकमें]

प्रबन्ध

जो बादशाहपुर जिला गुड़गांवा के जैन वैष्णव भाईयों ने पंडित जियालाल ज्योतिशारत्न के उपदेश से किया ॥

[१] जहांतक होसके सम्बन्ध नाई के द्वारा न किया जावे बरण आप भी देख भाल लिया जावे

[२] लड़का लड़की से बड़ा होना चाहिये

[३] जब तक कोई बड़ा भारी बिगाड़ बरकन्या में पैदा नहो सम्बन्ध न छोड़ा जावे

[४] बीड़ेमें चार रुपयेसे अधिक न दिया लिया जावे

[५] सगाई के समय जेवर आभूषण भेजना वा मंगाना और कपड़े आदिका लेना देना बन्द

[६] जात में एकसौ रुपये से अधिक लेना देना बन्द

[७] बाजार में गाना और सेठने देना छीपोंका बन्द

[८] बरात में ५० सवारी और २०० मनुष्य से अधिक नहो

[९] बरात की पेशवाई के वास्ते

कोई गाड़ी न जावे
[१०] बार ह्वारीकी बखेर बन्द
[१२] बाग बहारी आतिशबाजी
बिलकुल बन्द
[१३] नाच केवल एक रंडीका
[१४] गोरखा अर्थात् बागमें एक
सौ एक रुपये से अधिक न
दिया जावे-इत्यादिक और
भी प्रबन्ध हुवा ॥

चिट्ठी

भाई साहब बाबू सूर्यभानजी जयजिनेंद्र; अत्यन्त शोक की वार्ता है कि हमारे परम मित्र लाला कन्हैलालजी साहब खंडेलवाल जौहरी जो श्रीमंदिरजी मौहल्ला वेदवाड़े में शास्त्रजी पढ़ा करतेथे और जिन धर्म के बड़े भारी मददगारथे और हमारी जैन सभा दहली के मेम्बर और आप के जैन हितउपदेशक अखबार के एक खरीदारथे जो तारीख २४ फरवरी सन् १८९३ ई० को इस संसार से परलोक को सिधारे और अपने मित्रों के दिलोंपर जुदाईका दाग रखगये लाश के साथ जितने साथी थे सब फूट २ कर रोते जाते थे उक्त साहब शकल वसूरत डील, डौल, इखलाक, लियाकत, सब में प्रशन्सा योग्य थे हर एक छोटा बड़ा जिस को इनसे नेक भी मौहब्बत थी उनको याद में बैठा सिर धुनता है आप खंडेवाल भाईयों में एक प्रतिष्ठित पुरुष थे बहुत से गरीबोंका इनसे पालन होताथा निस्संदेह यह पुन्यात्मा पुरुष थे अपने मरनेके समय नीचे लिखा हुआ रुपया धर्म हेतु दान किया ॥

१ मकान श्रीमंदिरजी जैसिंहपुरा दहली के वास्ते और मकान भी उसी मौहल्ले में है ॥

१ प्रतिमाजी बिल्लौर की जो आन खास मे तयार की हैं उसके छत्तर और सिंगासन के वास्ते २०००, रु० तहरीर किये और २०००, रु० श्रीजैन पाठशाला के वास्ते जो कि वेदवाड़े में है विद्या दान में दिये जो ब्यास हुंडी वालों की तरफ से नियत हुई है और इक्यावन २ रुपये पांच मंदिरों में जो दहली में हैं दिये और ५०, रु० जिस में से पचास रुपये दो दिगम्बर जैन पाठशालाओं में देने को लिखगये हैं शोक है क्या ऐसे धर्मात्मा और परोपकारी पुरुषोंका जहान से उठजाना सर्व जैनी भाईयों को दुखका कारण नहीं है ॥

मुसद्दीलाल जैनी दहली
धर्मोपदेशनी जैनसभा जिन मं-

दिरघूलियागंज आगरा

श्रीयुत बाबू सूर्यभान साहब जयजिनेंद्र;

कृपा करके इस लेख को जैन गजट में जगह दीजिये यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि वर्तमान समय में यहां के धर्मात्मा जैनी पद्मावती भाईयों ने अपनी जैन जाति की हीनावस्था अव लोकन करके अपनी जाति में विद्या धन धर्म की उन्नति करने के लिये तन मन धन से कटिबद्ध हुए हैं और अत्यन्त उत्साह पूर्वक सर्व सहधर्मियों ने इस धर्मोप देशनी जैन सभा को मिती फाल्गुण शुक्ला ११को नियत किया और उसी समय इन महोत्साही महाशयों ने चिरंजीलाल सभा पति और कल्पतराय मंत्री भी स्थापित कर दिये और नीचे लिखे हुए महाशय इस सभा के उपदेशकतथा प्रबन्ध कर्ता भी होगये पूरनमल कुंजीलाल लेखराज परशादीलाल भीमराज पन्नालाल इन सहधर्मियों ने सम्पूर्ण भार सभाका अपने ऊपर लिया है और तन मन धन से सभा के चलाने की प्रतिज्ञा करी है और पाठशाला को शीघ्र प्रबन्ध हो रहा है यहां पर प्रति दिन शास्त्रजी की सभा में ३० भाई इकट्ठे होते हैं और मिथ्यात्व के दूर करनेका प्रबन्ध हो रहा है आशाहै कि यह अंधकार शीघ्र दूर हो जावेगा परन्तु अभी हमारे भाईयों ने स्त्री शिक्षा पर कुछ ध्यान नहीं दिया है और जब तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया जायगा तब तक यह मिथ्यात्व रूपी पिशाच हृदय से नहीं निकलेगा सो यह ही प्रार्थना हो रही है और सर्व जैन सज्जन आगरा निवासी इस सभा की सहायता करने में तत्परहैं सो अब यह सभा अपना सार्थक नाम अवश्य ही प्रगट करेगी आगे चैत्र सुदी १९ को यह सभा हुई जिस में भाई लक्ष्मीचन्दजी लशकर वालों ने षट आवश्यक श्रावग के वर्णन किये देव पूजा निर्ग्रंथ गुरुओं की उपासना स्वाध्यायका करना संयमका पालना यथा शक्ति तपका करना और दानका देना इन सबका भाई साहब ने बहुत उत्तम रीति के साथ वर्णन किया इस सभा में ३००पुरुष और १५० स्त्री थीं सो सब को उक्त महाशयने जिन वचन रूपी अमृत से तृप्त किया इस समयका आनन्द वचन के अगोचर है

आपका कृपा कांक्षी
चिरंजीलाल सभापति

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरजी महीने की १—८—१६—२४ ता०
को बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिलासहारनपुर से प्रकाशित होताहै

इस पत्र को सब जैनी
भाइयों को दिखाइये ॥

मूल्यके बास्ते डाकव्यय
सहित केवल तीनरुपया है

प्रथमवर्ष — ता० २४ अप्रैल सन् १८९६ — अङ्क ११

फिजूलखर्ची

हे प्रियवर भ्रातृगणों कुछ हम लोगों की भी विनय सुनिये हम भी अवनति रूपी दुख सागर में गोता खारहे हैं और अविद्या रूपी राक्षसी कर ग्रसित स्वजाति की सुधि भूलरहे हैं और निर्धन पने का भार बटोर रहे हैं सो भाईयों हमारे उबारने के लिये भी किंचित ध्यान देकर अपने कर्तव्य को सफल कीजिये आज कल जात्युन्नति तथा संशोधनका बाजार ऐसा गर्म हुआ है कि जिधर देखिये उधर जातीय उन्नति के सामान दृष्टि आते हैं जिधर सुनिये उधर जातीय उन्नति की ध्वनि सुनाई देती है जिधर पढ़िये उधर जातीय उन्नति के समाचार मिलते हैं कि अमुक स्थान पर सभा नियत हुई अमुक स्थानपर पाठशाला स्थापित हुई अमुक स्थानपर व्यर्थव्यय बन्द हुआ अमुक स्थानपर धनका दुरुप-

करना अर्थात् आतिशाबजी बन्द हुई अमुक स्थानपर धन हारिणी पुत्र भ्रातृ लज्जा हारिणी आपत्ति धारणी मूर्खानन्द कारिणी प्रिय नृत्यकालिनी अर्थात वेश्याका नृत्य बन्द हुआ अमुक स्थानपर औषधालय खोला है इत्यादि जगह ब जगह प्रत्येक जाति और प्रत्येक वंश में स्वजाति हितैषियों के अत्युच्च ऐक्यताका प्रबन्ध और उन्नति के उपाय हो रहे हैं हमारे भी श्रवण गोचर यह वार्ता हुई थी कि हमारे भ्रातृगण महाशय जात्योन्नति के उपाय में कटिबद्ध हैं और मिती पोष शुक्ला १४ की सभा में सर्व भाईयों ने व्यर्थव्यय बन्द होनेका प्रबन्ध भी स्वीकार किया है इससे आशा है कि अब हमारा कष्ट मिटा हमारे दिन फिरे अब अविद्या राक्षसी से मुक्ति होनेका उत्तम मंत्र मिला अब हमारी अवनतिका गर्त भया अब हमारी जात्योन्नति के शिखर पर चढने की निश्रेणी अर्थात नसैनी मिली परन्तु हे भाईयो ! केवल ऐसे विचार ही विचार से कार्य सिद्ध नहीं होसक्ता है जब तक कुछ कियान जाय थोथा प्रयत्न निष्फल है इस से भो स्वजात्यु द्धारक दुर्दशा निवारक प्रिय पाठक गण यदि आप लोग कुछ जातीय स्नेह रखते हो और अन्य जातियोंका परिचय देते हो और अपने को स्वजाति हितैषी समझते हो और हमारी अवनतिपर ध्यान रखते हो, स्वजातीय अभिमान रखते हो और मनुष्य देह धारण कर जीवन सफल करना चाहते हो तो केवल समाचार पत्रों में सुविस्तीर्ण लहित अथवा नन्द पद लेखों से तथा सभाओं में लच्छेदार धर्राटे के व्याख्यान देने वा सुनने से स्वजाति हितैषीता की अवधि न रखकर कुछ कर दिखाइये इस स्थानपर एक दृष्टान्त की आवश्यक्ता है वह यह है कि जिस में अंग प्रत्यंग आपस में विवाद कर चुप होबैठे हाथने कहा पांवकरै पांवने कहा आंखकरै, आंखने कहा मुंह मुंहने कहा पेट इत्यादि एक दूसरे के सहारे पर होबैठे वही दशा आज कल हमें अपने जातीय भाईयों की दृष्टि आती है सबमें सब चाहते हैं परन्तु आगामिक होने में सकुचते हैं भला महाशयजी शोचनीय समय है कि जो तुम सर्व जातीय उपकार करने में कटिबद्ध हो और मुखिया बनाकर प-

नेका तुर्रासिर पर बान्ध रक्खा है तो इस स्वजातीय अवनति रू पी नदी में बहते हुये भाईयों को हस्तावलम्बन देना क्या उ चित नहीं है सर्वथा योग्य है भा- ईयों साहस करने से सब कुछ होसक्ता है हे प्रिय भ्रातृगण संपू- र्ण जाति हितैषी यह अवनति- का मूल व्यर्थव्यय इसतो समू ल नाश करनेका उपाय करो क्यों कि इस फिजूल खर्ची से बड़े २ धनाढ्य निर्धन होगये और होते जाते हैं आप की दृष्टि गोचर स र्व आरहे हैं सो इसी तरह धीरे २ आप भी उन मे विशेष निर्धन हो जावेंगे महाशयजी इस लेख से यह मनोरथ कदापि न समझ ना चाहिये कि बड़ों की निर्मान की हुई परिपाटी नितांत मेट दी जावें पर अब वह समय नहीं र- हा इस कारण समयानुकूल प्रब न्ध होना अत्यावश्यक है यदि सम्पूर्ण सामाजिकरीतें कोई मेटना- चाहै तो उनका मिटना सम्भव नहीं होता और प्रारम्भ ही में ब हुत सी कठिनता बाधक होगी जि ससे कुछ उत्तम फल नहीं निकल सका यदि क्रम से चलियेगा तो उत्तम फलकी आशा की जासक्ती है और सुख पूर्वक निर्वाह भी होसक्ताहै यह वह दुख है जिस से हृदय रुदन करता है परन्तु बा ह्य प्रगट नहीं करसक्ते हैं और चित्त में चाहते हैं सो कारण यह है कि द्रव्य वाले तो द्रव्य के अ- भिमान से रीति नहीं तोड़ते और समय पाकर बढाते ही जा- है और निर्धनी विचारे लोकाप वादके भयसे जिस प्रकार होस- क्ता है घर दूकान बेच कर वैसी ही लोक रीति पीटते हैं अब क- हिये यह असह्य दुःख कब दूर सक्ता है क्योंकि निर्धन और द्र- व्य वाले तो यों छूटे तो अब तृ- तीय दुख छुटाने वाला कौन है इ स प्रश्न के उत्तर में चित्त इस बातका साक्षी होता है कि जिस प्रकार उस समय के अनुसार श्रे ष्ठ विद्वान देशकाल विचारज्ञ पू- र्वजनों ने जो रीति रची हैं उसी प्रकार वर्त्तमान समय के विद्वान बुद्धि वान कि जिनकाही यह मु ख्य कार्य है अग्रणीय बनेंगे इसमें कुछ संदेह नहीं है कि यदि उप श्रेष्ठ महाशय जन साहस करेंगे तो समयानुसार निर्वाह की परि पाटी चलजावैगी और बिना श्रे ष्ठ विद्वान बुद्धिवान धनाढ्य सुवि या महाशयों के अग्रणी बनें बि ना कदापि कोई अन्य निर्वाह के

रीति प्रचलित नहीं करसका क्यों कि धनाढ्या मुखिया जन जिस प्रकार कार्य करते हैं इन भाइयों को स्वतः करने में किंचित भी विलम्ब नहीं होता इस हेतु से समस्त स्वजाति हितैषी इस रीति के सुधारने पर ध्यानदें और इस व्यर्थव्यय के त्यागने को सम्पूर्ण जाति हितैषीयोंका चित्त है तो भाईयो इस प्रबन्ध को जरूरही करना आवश्यक है अब मैं इस लेख को खतम करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे भाई इस विज्ञप्तिपर अवश्य ध्यान देंगे और जात्योन्नतिका उपाय भी शीघ्र ही करेंगे ॥

एक जैनी।

रिपोर्ट पं० धर्मसहाय उपदेशक करहलनिवासीकी मेलारथयात्रा

अवागढ

मिती चैत्र शुक्ला २ को करहल से गमन किया ३ को अवागढ पहुंचा सो रथयात्रा बड़े उत्सव के साथ हुई कि जिस के बन्दोबस्त के वास्ते कलक्टरसाहब व ६ साहब कप्तान साहब कोतवाल वगैरह मौजूद थे श्रीवड़ेमंदिरजी से श्रीजी रथमें विराजमान होके वहां बड़ी धूम धाम से जय जय ध्वनि पूर्वक श्रीबाग मंदिरजी में विराजमान हुये यहां पर श्रीमज्जिन मंदिर सौ आये थे- फीरोजाबाद फरहा- एटा- पाढ़म- जरानी आदिके थे उक्त मंदिरों में रात्रि दिवस पूजन शास्त्रादि महान उत्सव होते थे इसी तरह मिती चैत्र शुक्ला ५ को दिन के २ बजे पर सभा हुई जिस में अनुमान४००० हजार स्त्री पुरुष उपस्थित थे उस समय मैंने गोलक भी रख दी थी फिर निम्न लिखित महाशयों ने अपनी ललित श्रवणानन्द ध्वनि से व्याख्यान दिया प्रथम भाई गिरधरलाल ने ऐक्यता आदि धर्मोन्नति के विषय में लेख सुनाया- फिर भाई मथुरा प्रसाद आवागढ निवासी ने कुरीति निषेध विषय में कहा- फिर भाई पन्नालाल सरनऊ वाले ने सुधर्म सभा सरनऊ के नियम तथा पूर्व कृत प्रबन्ध सुनाये फिर पं० गुलजारीलाल अवागढ निवासी ने सम्यक्का स्वरूप वर्णन किया फिर बनवारीलाल हकीम एटा निवासीने विद्योन्नति के विषय में व्याख्यान दिया और कुदेव आदिक पूजनेका— निषेध किया फिर भाई रघुनाथदास ने विद्या के विषय में कहा फिर मैं धर्म सहाय

करहल निवासी ने धन्यवाद पूर्वक विद्योन्नति के विषय में व्याख्यान दिया तत्पश्चात् पं० चुन्नी लालजी मुरादाबाद निवासी ने अपनी मनोरंजनी ध्वनिसे सुविर्णीर्ण जैन महाविद्यालय के विषय में व्याख्यान कहा तो उस समय सर्व सभा आल्हाद पूर्वक अपने २ कर कमलों से पूर्व स्थापित गोलक में स्वशक्त्यानुसार द्रव्य प्रदान किया और विद्यादानका लाभ प्राप्त किया फिर ३ बजे पर भाई बनवारी लालजी ने सभा विसर्जन कराई और रात्री को सर्व मंदिरों में शास्त्रजी तथा नृत्य गान बड़े आनन्द के साथ होते थे मिती चैत्र शुक्ला ३ को दिन के ३ बजे से ५ बजेतक श्री बड़े मंदिरजी के अगाड़ी एक मंडप बनाया गयाथा उसे चमर छत्रादिक उप करणों से सज्जित करके सर्व मंदिरों के श्री जिन बिम्बोका अभिषेक हुआ उस समयका आनन्द लेखनी से अगोचर है मिती चैत्र शुक्ला १० को दिन के ८ बजे से उक्त मंडपमें श्री जैन पाठशाला सम्बन्धी विद्यार्थियों की परीक्षा हुई तहां सर्व स्वदेशी तथा विदेशी विद्यार्थियों को परीक्षा नुकूल भाई चुन्नीलाल सेठ अमोलकचन्दजी के पुत्रने अपने कर कमलों से पारितोषक प्रदान किया ॥

[एक विशेष आनन्द)

बीरनी ग्राम की द्रोपदी व सुखदेवी पुत्रियों ने कि जिन की ८-९ वर्ष की थी मंगल पंच छहढाला में परीक्षादी और खेरिया ग्राम की पुत्री मोतीमाला, रामदेवीने तत्वार्थ सूत्र छहढाला और पंच मंगल में परीक्षादी और अवागढ की मोतीमाला व सुधाबाई भगवतीबाई ने सूत्रजी और छहढाले में परीक्षादी और भाई रघुनाथदासजी सरनऊ वाले की पुत्री ने कि जिस की उम्र आठ वर्ष की थी सूत्रजी दश अध्याय अर्थ सहित द्रव्य संग्रह अर्थ सहित छहढाला पूजन सर्व संस्कृत में परीक्षादी उस समय उस पाआठ वर्ष की लड़की की परीक्षा देखकर सर्व भाईयों को अत्यन्त आनन्द हुआ इसी तरह हमारे सर्व भाई अपनी २ पुत्रीयों को विद्या भूषण कर भूषित करें तो हम आशा करते हैं कि हमारा जैन धर्म फिर उन्नति की सिखिर पर पहुंच सक्ता है इसी तरह १२ बजे तक परीक्षा हुई और १ बजे से जलेब हुई सो पूर्ववत महान्

आनन्द भया फिर रात्री को सर्व भाईयों के साक्षी भाई गुलजारी लालजी रईस अवागढ निवासी ने गोलक खोली तो ६२, रु० नि कलें उस समय भाई रतनलाल· जी गुमाश्ते श्रीमान् सेठ लक्ष्म· णदासजी सहाव सितारे हिन्द म थुरा निवासी उपस्थित थे बोह गोलकका रुपया उनके सुपुर्द कि या गया इसी तरह हमारे भाई इस गोलक को सर्व मेलों में तथा भादों के महीने में रक्खें तो क· म क्रम से जैन विद्यालय भंडार की नीव पड़जासक्ती है जैसा कि इस दोहे में कहा है ॥

[दोहा] भरेहु होत जल बिन्दु घट । क्रम २ सुनहु सुजान ॥ वि· द्या और धन धर्म को । उपमा य· ही विद्वान ॥

+ स्त्रीसभाकरहल

वहां पर भाई धर्म सहाय के उपदे· श से स्त्रीसभा नियत हुई सो प्रथम स· भा मिती चैत्र सुदी २ को हुई जिसमें अनुमान ४० स्त्रियें थी उस समय पं० धर्म सहायजी की भाजीने धर्मका व्या ख्यान कहा ये बड़ी विद्वान और ध· र्मात्मा हैं और पुरिय के मंदिरजी में स्त्रीन की सभा में नित्य प्रति शास्त्रजी पढ़ती हैं तथा इसी अध्याय सूत्रजीका पाठ करती हैं बहुत सी स्त्री श्रवण कर पुण्यबन्ध करती हैं और यह दश लाक्ष न रत्न त्रय व्रत तीनों भावना करती हैं तथा अष्टान्हका भी विशाखा करती हैं और अष्टमी चतुर्दशी आदि लघु व्र· त करती हैं और करहल में इन्ही के महात्म से मिथ्यात्व नाश होगया और होता जाता है और सहोद्राबाई जो कि लाला भवानीलाल की ममनी हैं वे अनाथ हैं बड़ी धर्मात्मा और विद्वान हैं इन्हों ने अपना सर्व धन धर्म कार्य में लगाया संघईन के मंदिर ऊपर सि· खिर बनवाई और कलशा अपने हाथ से चढ़ाया तथा मेला रथयात्राका करा और १२, रु० साल पाठशाला में दे· ती हैं और १२, रु० औषधालय में इन की प्रशंसा कहांतक कीजावे इनका धन सुकृत में बहुत लगता है ॥

और द्रोपदीबाई जो कि लाला मही· लाल सोनी की पुत्री हैं इन्होंने सभा के होने के गुण दिखाये तो उस समय स र्व स्त्रियों ने अष्टमी को सभा होना स्वी कार किया फिर दूसरी सभा मिती चै त्र शुक्ला अष्टमी को हुई जिस में अनु मान ८० तथा ९० स्त्रियां थी सभा सं घईनके मंदिरजी में हुई तहां पंडित ध· र्म सहाय की मातामीने जो कि सभामा· न्य हैं मिथ्यात्व और कुशील निषेध के विषय में व्याख्यान दिया तो उस समय ३५ स्त्रियों ने कि जिन के स्था·

म सभा मिथ्यात्व और कुशीलका त्या
ग किया फिर मंगल पूर्वक द्रोपदीबाई
ने सभा विसर्जन कराई यह सर्व हाल
सभाका मुझसे कहा और यह भी कहा
कि बाबू सूर्यभान को लिख दिया जा
वै कि एक स्त्री शिक्षा जैन गजट में छ
पाकरै सो यह सर्व वृत्तान्त जैन गजट
में छपवा दीजिये ॥

जमुनादास मंत्री जैनसभा
करहल जिला मैनपुरी संपादक

करहल की स्त्रीयों की सभाका हा
ल पढ़कर हम अत्यंत हर्ष को प्राप्त हो
ते हैं और अंग में फूले नहीं समाते हैं
क्यूंकि जब तक स्त्री शिक्षा नहीं होगी
तब तक उन्नति कदापि नहीं होसक्ती
है और यदि स्त्रीयें विद्यावान और ज्ञा
नवान होने लगें और धर्म को जानने
लगें तो सहजही में धर्मोन्नति होजावै
सो करहल की स्त्रीयों ने प्रथम इस का
म में पग रक्खा है इस कारण सर्व जैन
जाति को इनका धन्यवाद मानना चा
हिये और सर्व नगर ग्राम की स्त्रीयों
को इन से शिक्षा लेनी चाहिये ॥

ज्योतिष रत्न पंडित जीया
लाल जी की रिपोर्ट

करहल नगर आया, यहां मंत्री महाश
य ने कुछ काम लिखाई का सभा सम्बन्धी
दिया था उसको करता रहा, परन्तु उस
के साथ २ अपने कर्तव्य को सिद्धि में भी
लगा रहा, करहल नगर के निकट में जिन
जिन ग्रामों में जैनी रहते हैं वहां की भा
तृ गणना कर कर हर्काम उसमेंके साहिब
सम्पादक के पास पठाई, कस्बा बादशाह
पुर से मेरा बुलावा आया मैं २६ तारीख
जनवरी को काम लिखाई का पूरा कर चु
का था इस लिये २८ जनवरी को बादशा
ह पुर को रवनाहुआ मार्गमें मढी के स्टे-
शन पर मुन्शी गोविन्द राम मास्टर को
एक भ्रातृ गणना का नकशा देकर प्रार्थी
हुआ कि इस में मढ़ी, धूल कोट, सीह,
माद राम, इन चारों स्थानों की जैनी भ्रा
तृ गण रूना लिख रखना मैं बादशाह पुर
से लौट ते समय लेलूंगा, फिर सिगर गांव
पहुंचा तहसील में मुंशी कन्हैया लाल सा
हिब कानूनगो से मिला और पूछा आपने
किसी स्थान की मनुष्य गणना लिखी,
उत्तर दिया अभी तक नहीं लिखी मैंने
कहा मैं बादशाह पुर जाता हूं मेरे लौट
कर आने तक छावनी मुस्ताव, शाहगंज,
दौलताबाद, इन तीन स्थानों की भ्रातृ
गणना आप कर रखना सो उक्त महाशय
ने स्वीकार किया मैं बादशाह पुर को र-
वाना हुआ जब नगर में पहुंचा भ्रातृ गण
ने मेरे आने की बहुत बड़ी खुशी मनाई
रात्रि के समय मैंने मंदिर जी में शास्त्र प
ढा और फिर जनमें भी कुछ उपदेश दि
या कि एक सभा और पाठशाला स्थापन
करनी चाहिये जब विद्या के गुण वर्णन
किये गये पर सर्व पसन्द हुये और एक

जैन सभा स्थापित करी जिस के सभापति लाला ज्वालीमल चौधरी उप सभापति लाला मथुरा दास मंत्री राम शरण दास सभासद महकम सिंह जी हरदेव सहाय, कोषाध्यक्ष उमराव सिंह गेंदुमल गोविंद राम, कल्लन मल मथुरा दास, यह सभा हर महीने शुक्ल पक्ष की चौदश के हुआ करेगी अगले दिन शास्त्र भी पढ़ा जाने पीछे मैंने बादशाह पुर की धातृ गणना का नक्शा सर हर्कोम उग्रसेन साहिब सम्पादक के पास पठाया यहां अग्रवाल जैनी लोगों के १६ और जैसवाल लोगों का १ घर कुल १७ हैं जिस में १५२ पुरुष ११० स्त्री कुल २६२ जन हैं मंदिर एक है पूजा नित्य हमेशा होती है, धर्म पर विश्वास अच्छा है, जब नकशा धातृ गणना का भर पाया मैंने कहा आप कुछ महासभा के भंडार के लिये चन्दा दो और कम से कम एक पैसा जीव के हिसाब से वार्षिक गोलक रखने का प्रबन्ध करो तब भाई लोगों ने अपनी २६२ संख्या में से जो ८ जीव गैरहाजिर थे उन को हटा कर २५४ पैसे तो उसी समय एकत्रित कर लिये जिस के ३॥।=,॥ होते हैं और कहने लगे हम देना तो इस से भी कुछ अधिक चाहते थे परन्तु गोलक में पैसा ही डालना उचित समझते हैं सो प्रथम बार का प्रबन्ध तो यह कर दिया, आगे भादव में गोलक अवश्य ही रक्खा करेंगे, फिर मैंने कहा यदि आप विवाह शादियों के खर्च की एक नियमावली बना लेवें तो आप को बहुत बड़ा लाभ हो सदैव को व्यर्थ व्यय छूट जाय, इस पर कुछ भाई कहने लगे हम को तो आप की आज्ञा प्रमाण है, परन्तु हमारे नगर के वैष्णव भाई आप का हम से अधिक मान रखते हैं सो यदि आप दोनों बिरादरियों का एक नियमावली बना देवें तो अत्यन्त लाभ हो, मुझ को बिरादरी का यह कहना अधिक प्यारा लगा और अगले दिन १० जनवरी को मैं लाला ज्वाला प्रसाद रईस जैलदार बादशाह पुर के पास गया और अपना आशय सुनाया, बड़े प्रसन्न होकर कहने लगे यह विचार आप का अधिक श्रेष्ठ है मैं तन मन धन तीनों द्वारा इस कार्य में आप की सहायता करूंगा और आज शाम को सभा ब्राह्मण के मंदिर में सभा करनी चाहिये इस को मैंने भी स्वीकार किया और रात्रि के ७ बजे से सभा का प्रबन्ध हुआ जैनी वैष्णव दोनों बिरादरी के लोग एकत्रित हुए तब मैंने निवेदन किया खर्च का प्रबन्ध हो जाना ही ठीक है जिस को सब भाइयों ने स्वीकार किया और एक नियमावली बनाई गई, उस पर अगले दिन दोनों थोक के मुखिया भाइयों के हस्ताक्षर हो कर असल तो मेरे पास छोड़दी गई और नकल उस की लाला ज्वाला प्रसाद रईस के पास है जब कभी इस में कुछ न्यूनाधिक करना

होगा तो मुझको उस में अवश्य ही शामिल किया जायगा, रात्रि को जैन मंदिर में मैंने जैनी लोगों से कहा कि और सब कार्य तो मेरी यथा शक्ति होगये लेकिन पाठशाला का चिह्न और होनाचाहिये इसको भाइयोंने बड़े आनन्दके साथ स्वीकार करके उसी समय १०,रु०मासिकका चिट्ठा किया जो वहां के भाइयों के लिये बहुत मुनासिब और योग्य है, अब वहां एक ऐसे पंडित पढ़ाने वाले की आवश्यक्ता है जो भाषा में शास्त्र पढ़ता रहे पूजन करता कराता पढ़ता पढ़ाता रहै, जैनी हो, अवस्था ४० वर्ष से अधिक हो, इस विषय में मैंने श्रीमान् श्रेष्ठि साहिब सभापति व महा मंत्री तथा पंडित प्यारेलालजी को निवेदन कर दिया है, पाठशाला के लिये पंडित का प्रबन्ध शीघ्र होना चाहिये, तारीख १ फरवरी को मैं फिर छावनी गुरगाव में आया मुंशी सुखदेव सिंह जी के मकान पर रात्रि को रहा, मुंशी जमीयत राय साहिब शरिश्तेदार कृपाराम व बू रतनलाल बाबू नत्थन लाल मुंशीमाधो राम आदि से अधिक समय तक वार्तालाप हुआ और मुंशी कन्हैया लाल साहिब कानूंगो तहसील ने बादशाह पुर की नियमावली मेरे पास से लेकर सब को पढ़ कर सुनाई अगले दिन मैंने मुंशी कृपा राम जीके और मेरे आदमीने मुंशी कन्हैया लालजीके भोजन किया और रेल का मार्ग लिया मुंशी कन्हैया लाल साहिब ने निज कथनानुसार, गुरगांव छावनी, दौलताबाद, इन तीन स्थान की मनुष्य गणना करके मुझे दी जिस के लिये मैं उक्त मुंशी साहिबका सहर्ष धन्यवाद देता हूं अब गढीके स्टेशन पर आया मास्टर गोविन्दरामने भी नकशा, गढी. सीह. धूलकोट, साढ़ राणे का भरा हुआ भेजा जो धन्य वाद सहित स्वीकार किया गया और फिर मैं फर्रुख नगर चला आया बादशाहपुर की नियमावली की नकल छपने के लिये अगले पत्र में भेजूंगा, लाला ज्वाली मल चौधरी लाला महकमचंद. हरदेव सहाय मथुरादासजी गूदूमल यह भाई मेरे काम में सदैव सहायता करते रहते हैं इनकी तारीफ लिखने को मेरी कलम में ताकत नहीं यहे हैं उत्साही और सज्जन पुरुष हैं परमात्मा इन को सदैव आनंदित रक्खे ॥ हरभिवार ज्वालाराल ॥

सुधर्म सभा सरनऊ

(अंक १८ पृष्ट १५ से आगे)

उपमंत्री— लाला छोटेलाल सरनऊ— पन्नालाल सरनऊ— लाला चम्पालाल वीरपुरका नगला ॥

कोषाध्यक्ष— लाला रघुनाथ दास— छोटेलाल ॥

सभासद— लाला दम्बरलाल मेवाराम चम्पाराम मथैरा वाले गंगाराम छदामीलाल बजहरा वाले— चम्पाराम जिनेश्वर दास

पोद्दार जिसिमी वाले— गोपालदास मेवाराम ख्यालीके नगलावाले— द्वारिकादास गिरवरदास बेतराम लखराज पन्नालाल जोती प्रसाद मईकूमल मैनपति लखनऊ वाले— दौलतराम मुकंदीलाल ऊंचगांव वाले ॥

हर एक सभासद वगैरह अपने ग्रामोंका बन्दोबस्त ठीक रक्खेंगे और सभा सम्बन्धी कारवाई सभा में प्रगट करेंगे इस सभा प्रबन्ध में हरएक मुख्य महाशय के दस्तखतैं मौजूद हैं ॥

जैनसभापनागर

येहांपर जैनसभा करीब साढे माह से नियत हुई है और सभा के नियत होनेका कारण आपका बड़ा भारी उपदेशक जैन गजट है प्रथम सभा आनन्द पूर्वक हुई लेकिन दूसरी सभा में कुछ भाईयों के चित्त खेदित हुये इस कारण चार हफ्ते सभा बन्दरही लेकिन इस हफ्ता में पाची तारीख १२ मार्च सन् १८९६ ई० को नोटिमदिया गया सो सभासद साहबों ने फिर भी आनन्द चित्त से आगमन किया लेकिन बसबब चित्तकी नाराजगी के कारण कोई कोई साहब नहीं पधारे यहां पर भी एक कार्य की सिद्धि सफलता पूर्वक हुई यहां मंदिर पंचायतीकी पूजनजी करने के लिये पूजारी नियत है उस को तनख्वाह पहले संघईजी के मंदिर भंडारसे दी जातीथी सो अब ७१, ८० चन्देके सर्व भाईयों ने १ साल की तनख्वाह के वास्ते जमा करलिये हैं अब मंदिर भंडार से नहीं दी जावेगी अब आप से प्रार्थना कीजाती है कि यहां पर जिन २ भाईयों के दिलों में क्षोभ पैदा हो गया है एक दफै यहां पधार कर उन के दिलों का क्षोभ दूर कर दीजिये और सभा को सुशोभित कीजिये ॥

दरबारीलाल सभानवीस
पनागर

सम्पादक

हाय विरोध तो जैनियों ही के हिस्से में आया है हमारे पास बहुधा स्थानोंसे इसही विषय की चिट्ठीयां आती है ऐ भाईयों सोचो विचारो इस काल में बहुत थोड़े जैनी इस भारत वर्ष में रह गये हैं यदि तुम भी आपस में विरोध कर बढ़ने लग गये है तो फिर यह जैन धर्म किस तरह रह सकेगा कहां तो वात्सल्य अंगकी

मुकदमा और कहां यह विशेषता हम इस नग्र के भाईयों को धन्यवाद देते है कि जिन्हों ने पूजन के वास्ते चन्दा जमा किया परन्तु हम इस समाचार के प्रकाश करने से अति लज्जित होते है कि पूजन करने के लिये पूजारी नौकर रहे यह बात केवल इसी नग्र मे नहीं है वरण अन्य बहुत नग्र व ग्रामों में यही प्रमाद फैलरहा इस को जल्द दूर करना चाहिये और जैनी भाईयों खुद अपने आप भगवान की पूजा करनी चाहिये ऐसा काम आपस करने और नौकरों से कराने में बहुत अविनय होती है ॥

चिट्ठी

प्रियवर महाशय सम्पादकजी जैन गजट निम्न लिखित चिट्ठी मेरे नाम पर जैन सभा मंदिर पाटोदी सवाई जयपुर से आई है सो मैं बड़े हर्ष के साथ उस के प्रकाश करने की आप से प्रार्थना करता हूं ॥

महा मंत्री महासभा को पंण्डित जैपुरका जगजिनेन्द्र पहुंचे— अपरंच जो महासभाका प्रयोजन जैन महाविद्यालय स्थापित करनेका है अति उत्कृष्ट है और हमारे वास्ते परमें हर्ष के समाचार हैं— परन्तु जब तक ऐसा प्रबन्ध होवे— तब तक जैनी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि वोह अपने बालकों को धर्म विद्या तथा लौकिक यानी राज विद्या सीखने के वास्ते यहां भेजें— हमारी पाठशाला में उच्च श्रेणी की विद्या पढ़ाई जाती है और राज की भी पूरी २ सहायता है ॥

प्रबन्ध भी अच्छा है— आब हवा भी यहां की अति उत्तम है और राज्य की तरफ से जो कालिज है उस में अंगरेजी में बी० ए० तक और फारसी में मुन्शी फाजिल तक का डिगरी दी जाती है सैकड़ों विदेशी यहां आकर विद्याध्ययन करते हैं हमारी पाठशाला में फीस नहीं ली जाती और विदेशी भाईयों केरहने के वास्ते मकानका भी प्रबन्ध किया जाता है और यदि महा सभा की कृपा होगी और विद्यालय भंडार से उचित सहायता मिलेगी तो हम जैनी बालकों के वास्ते खान पानका भी प्रबन्ध करने को तयार हैं मेरी राय में जैपुर के बराबर जैनियों में कोई ॥

अभी तक पाठशाला है और न इतनी बिरादरी है यदि यह कहा जावे कि जैपुर नग्र जैन का

त्ति की राज धानी है तो क
दापि अनुचित न होगा हम सब
लोगों को उचित है कि सब से
पहले धन एकत्र करके उसके सू
द से इस पाठशाला की पूरी २
सहायता करैं और घर पीछे ए
क २ रुपया एकत्र करनेका जो
काय जारी हो रहा है उस को खू
ब कोशिश से चलावैं और अ-
भी तक जो रकम जमा है उस
सब को एक जगह मथुराजी में
जमाकरैं और जैनी भाइयों से प्रा
र्थना है कि अपने बालकों को वि
द्या ध्ययनकरने को जैपुर भेजें ॥
मुन्शी चम्पतराय डिप्टीमजिस्ट्रेट
बहर इटावा

रेपोर्ट धर्म सहाय उपदेशक की मेला रथ यात्रा खातौली

मिती चैत्र सुदी १३ को खातौली पहुं
च कर लाला कुन्दन लाल मिया लाल सा
हिब रईस के मकान पर ठहरा फिर श्री
मंदिर जी में जाय कर पं, मंगल सैन तथा
लाला मोहन लाल आदि मुखिया और से
मिल कर सभा का होना प्रकाशित किया
जो सर्व भाइयों ने बड़े हर्ष के साथ स्वी
कार किया उक्त महाशय बड़े सज्जन और
परोपकारी हैं यहां पर मेला रथोत्सव
हुआ करता है इस उत्सव में यहां के भा
ई तन मन धन से कटि बद्ध रहते हैं
परन्तु उस दिन रथ यात्रा होने के कार-
ण सभा का होना अगले दिन नियत हुआ
दिन के समय पूजन गान नृत्य होता
था और रात्रि को श्री शास्त्र जी का प्रा-
रंभ होता था भाई मंगल राय खातौली नि
वासी अपनी भिन्न हित कारणी ध्वनि से
लालित वाक्यों में पढ़ते थे जिस का विशेष
ता पूर्वक व्याख्यान पं, मंगल सैन साहब
खातौली निवासी तथा पं, लाल जी मल
सहारनपुर निवासी विस्तार से कहते थे सो
सर्व श्रोता गणों के चित्त प्रसन्न करते थे
उक्त पंडित जी साहब बड़े विद्वान और
देश कालज्ञ हैं इन के गुणन का वर्णन
कौन कर सकता है चौधरी बनारसी दास
साहब बड़े सज्जन और परोपकारी धर्मात्मा
हैं—विद्योन्नति—जात्योन्नति —धर्मोन्नति
करने में विशेष कटिबद्ध हैं

मिती चैत्र सुदी १४ को उक्त महा
शय और लाला मोहन लाल साहब रईस
जो कि स्वकुल मुकट मणि हैं विशेष उद्यम
किया सभा स्थापित की और लाला कुंदन
लाल तथा लाला बनारसी दास आदि सर्व
भाई बड़े हर्ष के साथ धर्मोन्नति और जा-
त्योन्नति करने में उद्यमी हो सुशोभित हुए
उस समय पंडित लाल जी मल सहारन
पुर निवासी ने अपने ललित वाक्यों में प्र
थम मंगला चरण में जिन प्रतिमा का स्व-
रूप विशेषता पूर्वक कहि कर फिर कुरीति
प्रचार के विषय में व्याख्यान दिया जिसे
श्रवण कर सर्व सज्जन महाशय गद् गद्

होकर स्वमुख कमल से प्रशंसित वचन कहते थे फिर मैं धर्म सहाय करहल निवासी ने स्वल्प अक्षरों में संसार में मनुष्य जन्म की दुर्लभता दिखा कर विद्योन्नति के विषय में व्याख्यान दिया और जैन विद्यालय भंडार के विषय प्रत्येक घर से १,रु, देने के लिये कहा तो उस समय लाला मादन लाल ने जो कि बड़े रईस और परोपकारी सज्जन हैं विशेषकर उद्यमी हो कर बड़े हर्ष के साथ प्रकाशित किया उस समय सर्व भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ फी घर १, रु, देना स्वीकार किया तिस में प्रथम ही चौधरी बनारसी दास ने जोकि मेला रथोत्सव के प्रबन्ध कर्ता थे १, रुपया उसी समय दिया और इसकार्य के करने में अग्रणी हुए मैं आशा करता हूं यदि इसी तरह सर्व महाशय धर्म कार्य में अग्रणी बनें तो थोड़े ही दिनों में हमारी जैन धर्म उन्नति की सिखिर पर पहुंच सक्ता है ॥

खातौली निवासी सर्व महाशय बड़े प्रवीण और विद्योन्नति में कटिबद्ध है—मैं अंतरंग से कोटिशः धन्यवाद देता हूं कि उक्त महाशयों ने इस देश में यानी जिला सहारन पुर व जिला मुजफ्फर नगर व मेरठ संबन्धी कस्बों में अग्रणी बन कर धर्म का झंडा खड़ा किया यदि इसी तरह सर्व जैनी भाई अपने २ नगरों व ग्रामों में प्रबंध करेंगे और धर्मोन्नति तथा आत्योन्नाति के विषय में कोशिश करेंगे तो जिन धर्म की उन्नति होना कुछ कठिन नहीं है फिर मिती चैत्र सुदी १९ को यात्रा बड़े उत्सव के साथ हुई—अगले दिन मैं अन्य स्थान पर जाने की आवश्यक्ता के कारण चला आया—आशा है कि एक रुपया प्रत्येक घर के हिसाब से चौधरी बनारसी दास जी और मादन लाल जी व लाला कुंदन लाल जी व लाला धूम सिंह जी व लाला बनारसी दास आदि बहुत जल्द १, रु, प्रत्येक घर से इकठा करके वास्ते जैन महा विद्यालय के श्रीमान् सेठ लक्षमण दास जी० सी, आइ, इ, के पास मथुरा भेज देंगे

जैनी भाइयों दास
पं. धर्म सहाय जैन धर्म उपदेशक
करहल निवासी जि, मैनपुरी

शिक्षा

शिक्षा स्वीकार करनेका समय बाल्यावस्था है बालक को जो कुछ सिखाया जावै वोह सीख सक्ता है [चोपाई] जोबालक को शिशुपन मांही— शिष्टा चार सिखवै नांहीं ॥ होयबड़ा जब वो सठर है ॥ सुकृत कर्म निकट नहीं धरै ॥ आली लकड़ी जो होय भाय ॥ जिस विधि तू मोड़ै मुड़ जाय ॥ जबवो सूखजाय फिर सोय ॥ विना आग नहीं सीधी होय ॥

हम देखते हैं कि हमारी जाति के बालकोंका समय वृथा खेल कूद में व्यतीत होता है वा माता पिता के कुपढ होने के कारण वा खोटी संगति मिलने से ऐसी शिक्षा मिलती है जो आगामी काल में उस के न्यूनता के कारण और दुखदाई होजाती है अव्वल तो हमारी जाति के बालकों के सिखाने पढाने की चेष्टा ही उन के माता पिता को नहीं होती और यदि कुछ ख्याल होता भी है तो अंग्रेजी फारसी के सीखने में बालक को लगाया जाता है इस से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि अंग्रजी फारसीका सिखाना अनुचित है क्योंकि यह राज विद्या है और गृहस्थी के वास्ते राज विद्याका सीखना अति आवश्यक है हमारा प्रयोजन केवल यह है कि राजाका धर्म कर्म रीति रस्म सब हमारे से भिन्न है इस कारण यदि बालक केवल राज विद्या ही सीखे तो अपने धर्म कर्म और रीति रस्म काज्ञान उस को नहीं होगा वर्ण उसका श्रद्धान अपने धर्म और कुलके विपरीति राजा के ही अनुसार होजावैगा अर्थात् केवल अंग्रेजी फारसी पढ कर धर्मसे विमुख होजानेकी सम्भावना है इस से यह बात स्पष्ट सिद्धि होती है कि गृहस्थी के वास्ते राज विद्या और धर्म विद्या दोनों को सीखने की आवश्यक्ता है . केवल धर्म विद्या सीखने से संसारिक व्योहारी कार्य नहीं चलते और केवल राज विद्या सीखने से धर्म से विमुख होनेका भय है इस कारण बालक को दोनों प्रकार की विद्या सिखाने की आवश्यक्ता है और यह कार्य जभी हो सक्ता है जब कि प्रत्येक नग्र और ग्राम में जैन पाठशालाएं नियत हो जावें इस वास्ते जिन लोगों को अपने पुत्र और अन्य बालक प्यारे हैं उन को चाहिये कि जिस तरह होसके अपने २ नग्र में जैन पाठशाला जारी करानेकी कोशिश करें जिस के द्वारा उन के बालक धारमीक और संसारिक विद्या प्राप्त करके इस लोक और पर लोक में सुख भोगें हम यह बात बडी खुशी से प्रगट करते हैं कि भाईयों को जैन पाठशालाओं के नियत करनेका उत्साह हुआ है और बहुधा जगह नियत हो भी गई है इस कारण जिस २ नग्र में पाठशाला नियत नहीं हुई है उस स्थान के भाई शीघ्रता

कर और पाठशाला नियत कर अपने उन भाईयों के बराबर होजाना चाहिये जिन्हों ने पाठशाला पहले से नियत करली है ॥

राजअलवर

यहां पर सभा नियत होगई है और पाठशालाका भी इंतजाम हुआ है जो कार्य जैन सभा सम्बन्धी है उन की उन्नति में अपने माशक्क कोशिश कररहा हूं आशा है कि आप भी एक दफे यहां पधारकर इस स्थान को सुशोभित करेंगे ॥

चिरंजीलाल श्रावक
अलवर निवासी

—— o ——

अजमेर

यहां पर मिती चैत्र सुदी १४ को दश लाक्षणी और वैशाख बदी २ को रत्नत्रय के कलश विशेष बडे उछाव के साथ सेठ मूलचन्दजी साहब के मंदिर में किया गया ॥

पन्नालाल कार्याध्यक्ष
जैन औषधालय अजमेर

चिट्ठी

स्वतिश्री सर्व उपमा योग्य सकल गुण निधान बाबू सूर्यभानजी साहब जय जिनेंद्र आपके जैनगजट तथा जैनहित उपदेशक पत्रों को पढ कर अत्यन्त हर्ष प्राप्त होता है मैं आप जैसे सज्जन पुरुषों को नित्य धन्यवाद देता रहताहूं और बम्बई के सभा सदोंको भी कोटिशः धन्यवाद देता हूं जो अपने तन मन धन को जाति की उन्नति अर्थ व्यय कर रहे हैं धन्य है ऐसे सज्जन पुरुषों को ऐसे सज्जन पुरुष हमेशा चिरंजीव रहैं इस समय मुझको कुछ कहने की आवश्यक्ता है यदि सर्व पढने हारे ध्यान दें और चित्त लगा कर सुने तो मेरा परिश्रम सुफल हो और मेरा उत्साह बढे हे प्यारे भाइयो बडे शोक और चिंता की बात है कि हम लोग कुरीतियों के पालन पोषणमें तो बडे हर्ष के साथ अपनी कमाईको निरर्थक व्यय कर डालते हैं परंतु सुरीतियों पर किंचित मात्र ध्यान नहीं देते बहुधा देखने में आता है कि वेश्या बनृत्य और अन्य २ कुरीतियों में जो सर्वथा हानि कारक है और जिन से कुछ भी लाभ नहीं है आपना धन व्यय करते बिल्कुल संकोच नहीं करते परंतु धर्म कार्यों में आनाकानी करते हैं क्या आप लोग समझते हैं कि धर्म अर्थ व्यय करना है कदापि नहीं यह निश्चय हम लोगों की भूल और मूर्खता है क्या वेश्या के नृत्य धर्म कार्यों से बढ कर फल दायक

और दुख दाई है कभी नहीं वेश्याका नृत्य कहीं धर्म कार्यों की बराबरी कर सक्ता है क्या यह नृत्य हमको सुख का दाता है नहीं नहीं यह तो बड़ा दुख दाई है हम को सर्वथा अपनी यथा शक्ति इस से बचने की कोशिश करनी चाहिये किसी कविने वेश्या के नृत्य को क्या अच्छी तरह दरशाया है कवित्त ॥ वेश्या की जातिका विश्वास करै बेईमान मलीन करन एतौ बुरी को तयार हैं ॥ धन लेवे मान लेवै पगड़ी उतार लेवै एक फेरी नाहि देवे सदाही बेजार है ॥ दौलत का खजा ये दीवाना कर लूट लेवे देउ देउ कहैं इन का येही तो व्यवहार है ॥ एक पास आवै दमरे को लूट लावै तिस पर भी हजारो ही वेश्या के यार हैं ॥ सवैया ॥ धन लूट कें धर्म खराब करैं सब बातन मे यह बुरी चंदरी ॥ दोउ लोक को नाश करै जग में जिन के हिरदे यह बसे बन्दरी ॥ दुकसि २ ताल बजावै और गावत राग महा गंदरी ॥ जिनके घट में सुन कलोल करैं तिन के घट में पंचों कंदरी ॥ कवित्त ॥ शुभकाम कों छोड़ कुकाम रचें धन गावत व्यर्थ सदां जन को ॥ इक रांड बुलाय नचावत हैं नाहिं आवत लाज [illegible] तिन कों ॥ अदंग भनै धिक है धिक [illegible] सुरताल पूछै किन को किन को ॥ तब [illegible]र रांड बतावत है धिक है धिक है [illegible]न को इनको ॥ एवं उन्नति के इच्छु को [illegible]रा इस कवि ने क्या बका है नहीं नहीं इस में जियादा बुराइये वेश्या के नृत्य से दृष्टि गोचर हो रही हैं यदि किसी को विश्वास नहीं तो कर देखो अवश्य नुकसान उठाइयेगा और हानि पाइयेगा में अधिक और क्या कहूं केवल इतनी ही प्रार्थना करता हूं कि हमारे सजाति भाई क्यों क्षण मात्र के सुख के वास्ते अपना तन मन धन नाश को प्राप्ति कर के कुकर्मों का फल बटोर रहे हैं और एसी चैतन्य योनि संसार में पाकर रत्न रूपी यशों को छोड़ कांचवत अपयशो को ग्रहण करते हैं एवं अमूल्य समय को वृथा बर्बाद करते हैं यह शरीर और यह समय क्षण क्षण क्षीण होता जाता है बार २ आना दुर्लभ है हम को उचित है कि इस उत्तम अवसर को न चूके और अपनी शक्ति अनुसार सुकृत प्राप्ति की कोशिश करें ताकि यह सर्वोत्तम योनि वृथा न जावे हम को एसे सज्जन पुरुषों यानी बाबू सूर्य भान जी संपादक जैन गजट व श्रीमान् सेठ लक्षमण दासजी मथुरानिवासीतथासभापतिडिप्टी चंपत राय जी जनरल सेक्रेटरी जैन महा सभा मथुरा को (जो ऐसे घोर समय में जाति और धर्म की उन्नति के हेतु कोशिश कर रहे हैं) धन्यवाद देना उचित है श्री भगवान हमारे जैनी भाइयों को कुरीतियों से बचने की शक्ति देवे ॥ शुभम् शुभम

जैनी भाइयों का शुभ चिंतक
गिरधारी लाल टीहरी
जिला गढ़वाल

॥ श्रीः ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेजी महीने की १–८–१६–२४ ता०

को बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध से

देवबन्द जिलासहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष | ता० १ मई सन् १८९९ | अङ्क १०

नोटिस ॥

लाला चांदूलाल लाला [illegible] मास्टर मिडिल स्कूल साभर से लिखते हैं कि रामगढ़ में एक जैनी अध्यापक की आवश्यकता है जो फारसी और अंग्रेजी पढ़ा सके वेतन १०) माहवारी मिलेगा और मकान वगैरः पंचान उस मय दे ठहरने के वास्ते मिलेगा यदि कोई भाई पसन्द करें तो अपनी दरख्वास्त इस पते से भेज देवें ॥

मार्फत पंचान रामगढ़ इलाका सांभर मारफत लाला नाना मरोद मुल्क मारवाड़ ॥

वार्षिक उत्सव लखनऊ ॥

यहां पर अनुमान ८० घर जैनी भाइयों के हैं और ९ मन्दिर जी पंचायती और एक चैत्यालय है यहां मिती चैत सुदी १२ रोज शुक्रवार को वार्षिकोत्सव रथ यात्री का था उस दिन श्रीजी रथ में विराजमान होकर बड़े आनन्द के साथ गाजे बाजे गीत नृत्य आदि सकल शोभा सहित चौक बाजार में जाते हुए गोमती पार होकर बागीचे मध्य के श्री मंडपजी में विराजमान हुए और वहां २ दिन तक सभी दरब विराजमान किया गया और चतुर्दशी को

जिले के कमिश्नर साहब भी उपस्थित हुए मंडप की शोभा आदि देखकर अति प्रसन्न हुए और इसी रोज सभा स्थापित करने का विचार किया गया बाबू भगवानदासजी ने एक मासिक सभा और पाठशाला नियत करने के विषय में व्याख्यान देकर संपूर्ण सभा को अति आनन्द उपजाया जिस पीछे मुझ दामोदरदास ने अपनी तुच्छ बुद्धी अनुसार विद्या उन्नति धर्म उन्नति के विषय में कुछ कह कर जो समाचार जैन गजट में महा विद्यालय के विषय में था सब भाइयों को सुनाया जिसको सुनकर श्रीमान् बाबू धर्मचन्द साहबने फरमाया कि चिट्ठा इसी समय लिखना चाहिये और चिट्ठा लिखा गया परन्तु उस समय वहां पर सब भाई मौजूद न थे इस वास्ते चिट्ठा पूर्ण नहीं हुआ कुछ रुपया तो जमा होगया है कुछ बाकी है जब रुपया सब इकट्ठा हो जायगा तब श्रीमान् सेठजी साहब लक्ष्मणदासजी सितारे हिन्द मथुरा के पास भेज दिया जायगा और मिती चैत्र सुदी १५ रविवार को लाला गुलजारी लालजी और हकीमजी साहब का आगमन कानपुर से हुआ और सभा हुई पहले बाबू धर्मचन्दजी ने मंगलाचरण पढ़कर फरमाया कि आज जो मासिक सभा नियत की गई थी सो आज पूर्णमासी है आज प्रथम सभा का प्रारम्भ किया जाता है जिस पीछे लाला गुलजारी लालजीने कुरीत निवारने के विषय में महा मनोहर व्याख्यान दिया और हकीमजी साहबने देव, गुरु धर्म का स्वरूप जैसा उत्तमता से वर्णन किया जिसको सुनकर संपूर्ण सभा परम आनन्द को प्राप्त हुई और मिती वैसाख बदी १ रोज सोमवार को श्री देवाधिदेव पूर्ववत् उत्सव सहित चौकके मन्दिर जी में पधारे ॥

दामोदर दास
याहैया गंज
लखनौ

जैन महाविद्यालय ॥

श्रीयुत बाबू सूर्यभान जी महाशय योग्य निवेदन सरसावा जिले पटा से रघुनाथदास के जय जिनेन्द्र बचना निम्न लिखित लेख को अपने पत्र में स्थान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

जितने रुपये का चिट्ठा वास्ते जैन कालिज के जिन २ भाइयों ने किया है वह रुपया श्रीमत् सेठ लक्ष्मणदास जी सी. आई. ई. जैन महासभाके सभापति के पास मथुरा जमा होना चाहिये और इसके पश्चात् दो साहब रुपया उगाने के वास्ते नियत कि[illegible] जावें क्योंकि वह रुपया तो जैन कालिज का उस ही रोज से हो चुका जिस रोज से चिट्ठे पर लिखा गया है ॥

जैनहितैषी

इस नामका एकपत्र पहले मुरादाबाद से निकलताथा लाला पन्नालाल सुजानगढ निवासी इस के सम्पादक हैं उक्त महाशय के बम्बई चले जाने पर यह पत्र बम्बई से जारी होने लगा है इस पत्र के सरनामें पर यह दोहा लिखा हुआ होता है– विद्याधन मैत्री विना दुखित जैन सर्वत्र ॥ तिन हित तिनही चहत यह जैन हितैषी पत्र॥यह दोहा केवल लिखने मात्रही नहीं हैं वर्ण वास्तव में ही यह पत्र जैनधर्म और जैन जाति के उद्धार के वास्ते कटिबद्ध है लाला पन्नालाल इस के सम्पादक बडे गुणवान और परोपकारी सज्जन महाशय हैं और सदैव तन मन धन से जैन धर्मोन्नति में उद्यमी रहते हैं इस महीने में जैन हितैषी पत्रका अंक २३ पढ कर हम को बडा आश्चर्य प्राप्त हुआ क्योंकि उस में सम्पादक महाशय इस बात की शिकायत लिखते हैं कि ग्राहक गण पत्रका मूल्य नहीं भेजते हैं हम को आश्चर्य इस बातका है कि यदि ऐसे उपयोगी पत्र के दाम भी नहीं दिये जायंगे तो हमारे जैनी भाई और क्या धर्मका कार्य करेंगे जैन जाति में ऐसे अखबारों की बहुत बडी आवश्यक्ता है इस कारण जाति हितेच्छु जैनी भाईयों को ऐसे पत्र की अवश्य सहायता करनी चाहिये इस पत्रका मूल्य केवल ।।, रु० वार्षिक है कि जिस का देना किसी को भी मुश्किल नहीं मालूम होसक्ता हम को तो अपने परोपकारी भाईयों से यहां तक आशा है कि वोह कीमत के अलावह और भी अधिक सहायता करेंगे और पूरी २ कोशिश जैन हितैषी पत्र के ग्राहकों के बढाने की करेंगे क्योंकि इस पत्र से धर्मोन्नति की बहुत कुछ सम्भावना है थोडे दिनों के पीछे हम जांचेंगे और सम्पादक जैन हितैषी से पूछ कर मालूम करेंगे कि हमारी प्रार्थना हमारे सज्जन भाईयों ने कहां तक स्वीकार की है और कितने ग्राहक जैन हितैषी पत्र के बढाये हैं ॥

पर्महर्ष

कृपापत्र बाबू सूर्यभानजी सब जैजिनेंद्र; मैं आप को अत्यंत धन्यवाद देता हूं कि आपने अपनी कोशिश से जैन हितोप देशक पत्र के द्वारा उपदेशक भंडा

र नियत किया और उसका कार्य प्रारम्भ किया और बहुत तुच्छ मूल्य पर जैन गजट सप्ताहिक पत्र हिन्दी में जारी किया और आगे को जैन महा विद्यालय के नियत होने और जैन धर्मोन्नति की अनेकानेक प्रकार कोशिश करते हैं परमेश्वर आप को चिरंजीव रक्खे जैन धर्मोन्नति के उपाय के वास्ते मैं भी लिखता हूं कि जिस के सुने से लोगों की तथा बालकों की भी धर्म में प्रवृत्ति होगी मिती फाल्गुण सुदी ४ सम्बत् १९ ५२ रात्रि के समय सभा में शास्त्रजी के विसर्जन हो जानेपर भाईजी प्यारेलालजी हाथरस निवासी ने जैन गजट पढकर सुनाया और सुन करके सभा सद् सर्व आनंद को प्राप्त भए उसही समय भाई प्यारेलालजी हाथरस निवासी ने सभा में खडे होकर सर्व जैनी भाईयों से यह हाथ जोड कर प्रार्थना की कि होली खेलना सर्व भाईयों को त्याग करना चाहिये और मंदिरजी में आकर भगवान की पूजा तथा शास्त्रजीका श्रवण करना चाहिये सो भाईजी मोतीलालजी सरूप चन्दजी व ठाकुर दासजी व भाई किसोरचन्दजी बुधनलाल व संगई हीरालाल व कस्तूरचन्द व हजारीलाल व मानमल व पन्नालाल व मन्नूलाल व बडकोर तुलराम छोटेराम लाला किशोरीलाल इत्यादि भाईयों ने अंगीकार करली कि आपने बहुत उत्तम उपदेश दिया और बडकार तुलारामजी ने माली को हुकम दिया कि सर्व जैनी भाईयों केघर कहदेकि होरीन खेलै मंदिरमें आकर पूजा प्रभावना करैं और एक महा हर्ष की बात है सो मैं विदित करता हूं कि उसी समय सभा में लडकों ने भी मरजाद ली कि होली खेलने हम नहीं आवेंगे और पाठशाला में आकरै पिछाडी के पाठ याद करैंगे ॥ तिन लडकों के नाम ॥ बिरजबासीलाल बुलाखीचन्द हुकमचन्द मन्नूलाल तुलाराम भेंदीलाल धन्नालाल पन्नालाल सुखलालगुट्टूलाल इनने लडकों ने पाठशाला में आके अपने पाठक के सामने अपना पाठ याद किया इस वास्ते यह आप से हमारी प्रार्थना है आप कृपा दृष्टि करकै अपने जैन गजट में छापदें इस के सुनने में तथा पढने से और भाईयों को तथा बालकों को भी हर्ष होगा बकलम खुद बिरजबासीलाल ॥

लिया है और पाठशाला खोलने का प्रबन्ध कर रहे हैं सो आशा है कि शीघ्र ही होजायगा यहां पर प्रति दिन शास्त्रजी की सभा में १० भाई इकट्ठे होते हैं और मिथ्यात्व के दूर होनेका प्रबन्ध हो रहा है आशा है कि यह अन्धकार शीघ्र दूर होजावेगा यहां अभी हमारे भाईयों ने स्त्री शिक्षाका कुछ विचार नहीं किया है और जब तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया जायगा तब तक मिथ्यात्वका मिटना कठिन हैं आगे इस सभा की नियमावली छपने पर आप की सेवा में भेजी जायगी ॥

आपका कृपा कांक्षी
चिरंजीलाल सभापति
धर्मोपदेशनी जैनसभा
दिगंबर जिनमंदिर धूलियागंज
आगरा
मि० चैतवदी १३ सं० १९ ५२

कस्बानानौता जिला सहारनपुर में श्रीमन जिन श्रेणाचार्य कृत विवाह पद्धति प्रचलित होगई

यहां पर पहले से छोटी विवाह पद्धति (जो कस्बा नकूड जिला सहारनपुर से प्रचलित हुईथी) के अनुसार विवाह होताथा लेकिन अब की साल मिती फाल्गुण सुदी ४ सं० १९ ५२ को लाला सिखरचन्द साहब की लडकी के विवाह में जो कि लाला सुन्दरलाल साहबका मन्शा पहले ही से श्रीमत जिन से नाचार्य कृत विवाह पद्धति के अनुसार विवाह करनेका होगयाथा इस लिये देवबन्द से बडी विवाह पद्धति मंगाई गई और लाला सुमतप्रसाद जी साहब देवबन्द निवासी जो कि बाबू सूर्यभान साहब के परम मित्र और लाला सिखरचन्द साहब के रिस्तेदार हैं विवाह में शामिल हुयेथे और हर तरह से इस कार्य में उपकारी रहे सब विवाह बडी शोभा के साथ वेदी मंडप रचकर किया गया और लाला मिसरमन पिसर मुतवन्ने लाला प्यारेलाल साहरनपुर निवासी, लाला विगलप्रसाद व जादौप्रसाद व मिट्ठनलाल व चिरंजीव व नथूदयाल पिसर लाला व सुन्दरलाल व कुमतरनि निवासी नानौता ने बडे आनन्द के साथ पूजन पढी और बरात जो कि साहरनपुर से आईथी यानी लाला संगराम पिसर लाला सालगराम पूजा करने के नियमों से अच्छी तरह जान कारथे इस लिये पूजन में बडा आनन्द रहा— इस समय जितने भाई मौजूद थे उनके जी में जिन मत की महिमाका बडा भारी असर पडा और अपने जैनी भाई तो क्या अन्य मती भी जो उस समय मौजूदथे इस रीति की अनेक तारीफ करते थे

रिपोर्ट सदर सहारनपुर

श्रीयुत धर्मानुरागी परोपकारी भाई सूर्यभान वकील जैन गजट सम्पादकजी को रामलाल व श्रीपाल आदि सर्व भाईयों का जयजिनेंद्र बंचनाजी ॥

आगें हाल यह है कि मिती फाल्गुण सुदी १४ सं० १९ ५२ में बिलरा के श्रीजैन मंदिर में सभा हुई जिस में पं० जीवारामजी ने उपदेश दिया जिन के उपदेश से लाला सोहनलाल व मटरूमल ने हुक्का और कंदमूलका त्याग किया, लाला मुन्नीलाल ने होली पूजनेका त्याग किया फिर उक्त पंडितजी ने फिजूल खर्ची आदिका व्याख्यान दिया जिस में सर्व भाईयों ने जो उस वक्त सभा में उपस्थित थे अपनी शक्ती अनुसार त्याग किया उक्त पंडितजी सहाब को धन्यवाद दिया जाता है कि जिनके उपदेशका असर सर्व भाईयों के दिलों में पैदा हुआ और धर्म की तरफ लौ लगाई ॥

आप के गजट के आने से यहां पर सभा स्थापित हुई और हर चतुर्दशी को सभा हुआ करैगी आप को कोटान कोट धन्यवाद दिया जाता है कि आप के भेजे हुये जैन गजट के असर से यहां धर्मका महान उद्योत हुआ॥

धर्मोपदेशनी जैनसभा धूलिया गंज आगरा

श्रीयुत बाबू सूर्यभान सहाब जय जिनेंद्र ॥

कृपा करकें इस थोड़े से लेख को पत्र में जगह दीजियेगा अत्यंत हर्ष की बात है कि यहां के सर्व धर्म स्नेही पल्लीवार भाईयों ने इस धर्मोपदेशनी जैन सभा को मिती फाल्गुण सुदी १५ को नियत कर दिया और अपनी जैन जाति की हीन अवस्था को अवलोकन करकें इस सभा के चलाने के लिये तन मन धन में कटिबद्ध हुए हैं और जिनका धर्म स्नेह और उत्साह देख कर यह निश्चय होता है कि अब उन्नति अवश्य ही होयगी यहां पर सर्व साधर्मी भाईयों की संमत्यानकूल सभापति और मंत्री भी नियत हुए और नीचे लिखे हुए धर्म स्नेही भाई अत्यंत उत्साह पूर्वक उपदेशक भी बन गये पूरनमल, सेवाराम, परसादीलाल मुन्नीलाल भीमराज. हीरालाल चिरंजीलाल इन साधर्मीयों ने संपूर्ण भार सभा अपने ऊपर ले

कस्बा नानौते के जैनी भाई उस समय जितने उपस्थित थे सबोंने पक्का इरादा कर लिया कि आगे को इसी विवाह पद्धति के अनुसार विवाह हुआ करैं– और मंडप तो इसी विवाह में बन गयाथा लेकिन बेदी और कुन्ड नहीं बनाथा सो उन के बन वानेका भी बन्दो बस्त किया गया है जिस में लाला मित्तरसैन पिसर मुतवफी लाला सुन्दरलालजी ने १०, रु० देने का प्रण किया है अगर इसी तरह और साहब भी हिम्मत करेंगे तो सब सामान तयार होजावैगा और हर एक भाईके यहां शादी के वक्त पर पहुंच जाया करैगा जिस से दिक्कत न होगी– इस के पीछे मिती चैत्र वदी १ सं १९५२ को लाला रतनलाल साहब की भतीजी का विवाह था– बरात मौंजा टकरौल से आई थी उस में भी इसी तरह पर विवाह किया गया और लाला बलवन्त सिंह टकरौल निवासी और मैं ने बड़े आनन्द के साथ पूजन पढी– सहारनपुर और टकरौल के भाईयों के दिलों पर इसी प्राचीन रीति से विवाह करनेका कमाल शौक पैदा हुआ उमेद है वोह लोग भी अपने २ यहां और आस पास के ग्रामों में इस प्राचीन रीतिका रिवाज फैलावैंगे और अपने यहां बेदी वगैरः सामान भी तयार करैंगे ताकि हर एक भाई को जियादा कोशिश की जरूरत नहो और सुगमता से कार्य होजाया करैं ॥

जैनधर्म की उन्नति चाहनेवाला
मंगतराय पटवारी नानौता
जिला सहारनपुर

हर्ष के समाचार

हमारे मित्र पंडित जियालालजी साहब ज्योतिषरत्न कस्बा फर्रुखनगर जिला गुड़गांवा निवासी ने सिवाय कदीम मंदिरजी के एक और नई जमीन फर्रुखनगर में खरीद कर नया चैत्याला बनवाया है जिस में वैशाख सुदी ११ को श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति विराजमान होगी बाहर को चिट्ठी नहीं भेजी गई हैं दो दिन पहलै शांति विधान होगा चौदश को सभा होगी फिर भगवान की मूर्ति पालकी में विराजमान हो कर प्राचीन मंदिरजी से नवीन मंदिरजी में आवैगी भजन आदिक होंगे ॥ यदि कोई भाई बाहर से पधारैं उन को चाहिये कि दो दिन पहले पंडितजी को सूचित कर देवैं ताकि किसी प्रकार की तकलीफ न होने पावै ॥

चिट्ठी

श्रीयुत करुणा सागर बाबू सूर्यभानजी साहब जयजिनेंद्र कृपा करकें निम्न लिखित लेख को जैन गजट में जगह दिजिये ॥

वोही जीव संसार में क्षुद्र गिने जाते हैं जिन के पास विद्या रूपी धन नहीं है अविद्या रूपी दरिद्र तासे नाना प्रकारके कष्ट सहते हैं परन्तु सुख होने के कारण उस कष्ट को भूल जाते हैं अर्थात् अविद्या के प्रभाव से जो दुःख के कारण विषय भोगादिक हैं तिनहीं में सुख मानते हैं और उस आनन्द के अभिमान में अपने बराबर किसी को नहीं समझते हैं जैसे कि कुत्ता अशुच कठोर हड्डी के टुकडे को चावता है और अपने मुंहके तालू को फाड लेता है उस में से जो रुधिर निकलता है उसी अपने रुधिर को चाट २ कर अपनी अज्ञानतामे आनन्द मानता है इसी प्रकार अविद्या रूपी दरिद्रता कर जो क्षुद्र जीव विषय भोगन में मग्न हुये से किसी को नहीं समझते विषय भोगन में रात्रि दिवस तन धन नष्ट करके संसार में कर्म बन्धकर जीव अनेक दुःख भोगता संतानके निगोद में जाय पडे हैं यह सारा अविद्या हीका प्रभाव है कि जीवों की कैसी मूढ दृष्टि हो रही है विद्या रूपी सच्चे रत्न को भूलकर अविद्या रूपी कांच को रत्न मान लिया है और सच्चा रत्न हृदयका ज्ञान है और ज्ञान आत्माका स्वभाव है इस ज्ञानही से अतोल आत्मीक लक्ष्मी प्राप्त होती है छिपा हुआ विद्या रूपी धन प्रगट करने से संसार में यश और कीर्ति को प्रगट करता है विद्या के समान संसार में कोई वस्तु नहीं है विद्या ही करके केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है और संसार सम्बन्ध में भी आनन्द के देने वाली विद्या ही है और मनुष्य विद्या ही करके बडाई को प्राप्त होता है और विदेश में भाई बिरादर के समान विद्या ही रक्षक रहती है और विद्या रूपी धन दूसरे को देने से बढता है अर्थात् घटता नहीं है यस खुलासा यह है कि विद्या अपूर्व पदारथ है इस के समान संसार में कोई पदार्थ नहीं है स्वदेश और परदेश में सर्वत्र जगह मान्यता के कराने वाली है नीतका वचन है ॥

विद्याहीसे होतहै सर्वजगहसन्मान॥
नृपतिपूज्य निजदेशमें सबजगोंविद्यावान ॥

अर्थात विद्यावन मनुष्य सब जगह आदर को पाता है बिना विद्या के मनुष्य केवल तन रूप को धारन करके पृथ्वी पर पशु की तरह विचरता है शरीर की शोभा चन्दन आदि मर्दन करने

से नहीं होती है और धनाढ्य पुरुषों की शोभा फिजूल खर्ची अर्थात् वृथा ही रुपये को व्यय करने से नहीं होती है शोभा तो जाति धर्म की उन्नति में अर्थात् पाठशाला आदि में द्रव्य खर्च करने से होती है जो पुरुष विद्या दान के कारणों में द्रव्य खर्च करता है वही पुरुष संसार में बड़ाई के योग्य होता है धन्य है ऐसे पुरुषों को जिनका तन मन धन धर्म कार्यों में लगता है वोह पुरुष संसारी मनुष्यों में ऐसे दीप्यमान होते हैं जैसे तारागणों में चन्द्रमा धन्य है महा सभा को धन्य हैं बाबू सूर्यभान को जिन्हों ने अपने ज्ञान रूपी सूर्य को प्रकाश कर रक्खा है यथा नाम तथा गुण: यानी जैसा आप का नाम है वैसे ही आप गुणवान है॥
जैनी भाईयोंका दास अर्थात् विद्यावान ज्ञानचन्द वैद्य [निवास्थान क[illegible] ज अब ६ वर्ष से अलीगढ में ठहराहूं

चिट्ठी

श्रीयुत मान्यवर राजे श्री सज्जन परोपकारी धर्मोत्साही सकल गुण निधान बाबू साहब सूर्यभानजी महाशय जयजिनेंद्र; आपके जैन गजट के आने से जैनी भाईयों को बहुत लाभ होता है जैन प्रभावना वात्सल्यता जैन विद्या और धर्म के अंगों को पुष्ट करने में महा प्रबल है इस से जाति के वैर विरोध लड़ाई झगड़े मान कषाय कुरीति आदि दूर होती हैं और हर एक जगह पाठशाला जैन सभा आदि नियत होती जाती हैं और यहां पर भी सभा नियत करनेका सर्व भाईयोंका विचार है शास्त्रजी बचने के बाद आपका जैन गजट सर्व भाईयों को सुनाया जाता है आप के उत्तम लेखोंका असर सर्व भाईयों के दिलो पर बहुत करता है अब की साल होली के ख्याल में कोई भाई नहीं गये यह असर गजट के ही सब बसे लोगों के दिलों में पैदा हुआ रात्रि को शास्त्रजीव व्याख्यान हुआ और सुबह को सर्व भाईयोंने मिल कर श्री जिनेंद्र का पूजन बहुत हर्ष के साथ कराया और होलीके अधर्म से बचे श्री शास्त्रजी के द्वारा ज्ञात होता है कि अगले समय में धर्म के धोरी मुनिराज वा सज्जन श्रावक धर्मात्मा विहार करके धर्मका उपदेश यथावत् देते थे

सो अब उन महान पुरुषों के न होने से जैन जाति में अज्ञान रूपी अन्धकार फैल गया है सो दूर करने को आप के जैन गजट रूपी सूर्य के प्रकाश होने से अज्ञान अन्धकार दूर हो जावैगा ऐसे ही उपायों से जैन जाति की डूबती नवका पार लग जावैगी धन्य है उन पुरुषों को जो जैन धर्मका उपकार कर रहे हैं ॥

जैनी भाईयोंका दास
सोहनलाल पद्मावती पुरवार
सिहोर की छावनी

रंडीभडवोंकानाच

नहीं मालूम कब से जैन जाति में जो सब से उत्कृष्ट है वेश्या नृत्यका प्रचार हो गया है जिस के कारण अनेकानेक बुराई इस जाति में फैल गई हैं वेश्याका नृत्य कराना अति निंदनीक कार्य है ॥ परम हर्ष की बात है कि हमारे परोप कारी भाईयों को इस कार्य के दोष मालूम होगये हैं और वह सर्व प्रकार की कोशिश इस निषिद्ध प्रचार के दूर करने के वास्ते करते हैं परन्तु अति शोक की बात है कि हमारे जैनी भाई वेश्या को मंगला मुखी कहते हैं और विवाह आदि शुभ कार्यो में वेश्या को बुलाना और सर्व युवा वृद्ध पुरुषों को एकत्र करके उस का नृत्य और उपदेश कराना अत्यंत आवश्यक और शुभ कार्य समझते हैं ॥ हे भाईयों यदि आप विचार कर देखैं तो आप को मालूम हो जावेगा कि वेश्या सिवाय अमंगल के और कुछ नहीं चाहती है एक समाचार पत्र में किसी बुद्धि मान ने लिखा है कि वेश्या निम्न लिखित अमंगल सदा मनाती है ॥

[१] संसार में जितने पुरुष हैं सब व्यभचारी होजाय
[२] जितने पुत्र जन्में उनका विवाह न होने पावे
[३] सब पुरुषों की विवाहिता स्त्री मरजाय
[४] सब पुरुषों के बूढ़े माता पिता मरजावें क्योंकि वृद्धजन अपने पुत्रों को हमारे पास आने से रोकते हैं इन के मरने से तरुण पुरुष स्वतंत्र होजायंगे
[५] पंडित साधु सन्यासी उपदेशक जो कि कुमार्ग में बचनेका उपदेश करते रहते हैं वे भी सब मरजावें
[६] समाचार पत्रों के सम्पादक भी मरजावें क्योंकि यह लोग अख बारों में वेश्या की

बुराई लिखा करते हैं

[७] सब शास्त्र धर्म पुस्तकों में आग लग जाय जिस से व्यभिचार आदि के निषेध की कथा कोई न सुने

[८] संसार में जितनी कन्या जन्म लेवैं वे सब हमारेही हाथलगें अर्थात् हमही को मिलजायें उन्हें वेश्या बनालेवैं

[९] सब तरुण पुरुष गांठ के पूरे और मति के हीने निरे मूर्खानन्द होजायं ॥

हाय हाय जो कोई ऐसा अशुभ मनाने वाली को और जगतका सत्यानाश करने वाली को मंगला मुखीक है उस से अधिक मूर्ख और कौन होगा ॥ अब इस ही मजमून को हम गीता छंद के द्वारा रोरोकर सुनाते हैं॥

गीताछन्द

ऐसे भये निर्लज्ज फंस करके कुरीती जाल में, सब खोई अपनं धर्म कुल की लाज भेडाचाल में, रंडी नचावैं अरु कुदावैं भांड भडवैं चावसों, फिर पित पुत्र अरु गुरु चेला करैं दृष्टि कुभावसों, व्यभिचार फैला जगत में वेश्या निरत प्रचार सों, तिस नृत्यका परचार हा हा हम करैं अति प्यारसों, यह जैन कुल सर्वोत कृष्ठ परम प्रतिष्ठित सबनसों, भयो भ्रष्ठ वेश्या नृत्य आदि कुरीतियों के चलनसों, कोउ कार्य मंगल कार जग में नाहीं पुत्र विवाह सम, हा हा अमंगल रचैंतामैं नाहीं जियदरकात हम, वेश्या समान अमंगलीक पदार्थ जग में कौन है इतने, अमंगल दुष्टमी नितप्रत मनाती जे रहे, व्याभचारी होंसगरे पुरुष तज धर्म कुल की लाज को, सब धर्म शास्त्र विनाश हों और नष्ट धर्म समाज हो, पंडित जगत में नार है जो वरज ते व्यभचार सों, अरु वडे बूढे पुरुष भी जाते रहें संसार सों, सब मरे व्याहत इस्तरीया छोड़ें निज भरतार को, अरु जो हैं कन्या क्वारी हम को सब मिलैं व्यभचार को, मंगला मुखी जो कहत हैं ऐसी अमंगल नार को, धिरकार है धिरकार ऐसी बुद्धि और विचार को, ऐसे अमंगल कार्य को अति पाप रूप निहार के, छाडो तुरत ऐभाईयो मन में सुबुद्धि विचारके, मंगल है मांगत दान यह दीजे मुझे ऐ भाईयों, मन वचन तन से छोडो वेश्या नृत्य बिषय ऐ भाईयों, ॥

आगामीमहासभा

धर्मोप कारक भाई सूर्यभान सम्पादक जैन गजट को जैजिनेंद्र के पश्चात् यह दास प्रार्थना करता है कि निम्न लिखित मेरे तुच्छ लेख को अपने अमूल्य पत्र

में स्थान दान देकर कृतार्थ करें॥

यद्यपि धर्म और व्यवहार संबन्धी हमारी और हमारी जाति की दशा अत्यन्त न्यून और शोचनीयहोर ही है कि जिस अवस्थाका ध्यान करने से शोक सागर में डूबते हैं और आश्रुपात की धारा बहने लगती हैं परन्तु जब से हमारे कानमें श्री जिन धर्म संरक्षणी जैन महा सभाका शब्द पड़ा है तब से कुछ ढारसं बन्धने लगा है और पिछले कार्तिक मास से महा सभाका नवीन प्रबन्ध देखकर तो बहुत ही आशा अपनी न्यून दशा के दूर होनें और उन्नति करने की होगई है सबसे मुख्यबात हमारी आशा पूर्ण होने की एक यही है कि श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी सितारे हिन्द इस महासभा के सभापति हैं महा सभा के नवीन प्रबन्ध से हम को स्पष्ट ज्ञात होता है कि इस वर्ष महासभा अवश्य बड़े धूम धाम से होगी और जैन धर्म की सची रक्षा करने वाली सभा बनेगी। परन्तु मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार महा सभाका कार्य तब सम्पूर्ण हो सक्ता है जब कि प्रत्येक नग्र ग्राम के जैनी भाई महा सभा में आवैं और ऐक्यता करके इस बात को विचारें कि हमारी जाति में कौन २ से हानिकारक कारण प्रचलित हो रहे हैं और उन्नति कौन २ से कार्यों से हो सक्ती है और उन कार्यों की सिद्धि कैसे हो मुझे इस बातका भय है कि आप सब भाई मुझको मूर्ख समझेंगे क्योंकि चौदह लाख जैनियोंका एक स्थान पर एक समय में एकत्र होना असम्भवसा दृष्ट पड़ता है परन्तु भाईयों इस लिखने से मेरी यह आशा कदापि नहीं है महासभा के प्रबन्ध कर्ता बड़े बुद्धिवान हैं इस कारण उन्हो ने इस विषय में अवश्य विचार लिया होगा कि महासभामें चौदह लाख जैनियों की किस प्रकार सम्मति लीजावै परन्तु में भी अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार प्रगट करता हूं मेरी समझ के अनुसार प्रत्येक नग्र ग्राम के जैनियों को चाहिये कि अपने अपने नग्र में से प्रतिष्ठित मुखिया बुद्धिवान पुरुषों को अपनी ओर से महा सभा में सम्मति देने के वास्ते छांटलेवैं और यह बात सभा के प्रबन्ध कर्ताओं को पहले से सूचित करदें कि हमारे नग्र वासियों की ओरसे अमुक २ महाशय महासभा में सम्मति देवें

गे इस प्रकार छांटे हुए मुखिया भाईयों को तो महासभा में अवश्य जाना ही चाहिये और जहां तक बन पडे अन्य भाईयों को भी अब के साल की महासभा में शामिल हो कर अपने धर्म की रक्षा के उपाय सोचने चाहिये प्रत्येक नग्र और ग्राम के भाईयों का अपनी ओरसे मुखिया भाईयों को छांटना और उनका महासभा में जाकर संमति देना कुछ कठिन बात नहीं है परन्तु इस प्रकार कुल जैनी भाईयों की संमति हो जाती है क्योंकि वो मुखिया पुरुष अपने २ नग्र वासियों की ओरसे वकील की तरह पर काम करैंगे अब तक यह मालूम नहीं है कि महासभा में किस२ विषय में सम्मति लीजावेगी इस कारण यदि महासभा के प्रबन्धकर्ता यह बात भी पहले से नियत करके प्रकाश करदें तो बहुत अच्छा हो क्योंकि प्रत्येक नग्र वासी पहले से उन बातों पर विचार कर रक्खें और अपनी तरफ से छांटे हुए मुखिया पुरुषों को अर्थात् अपने वकीलों को अपनी सम्मति बता सकैं तथापि मैंने अपनी बुद्धिके अनुसार यह विचार लिया है कि आगामी महासभा में किन२आवश्यक बातों पर विचार करना चाहिये परन्तु मैं डरता हूं कि हमारे जैनी भाई मुझ दीन की पुकार को क्या सुनेंगे यदि मेरा विचार प्रत्येक नग्र ग्राम से मुखिया भाईयों के छटनेका हमारे भाईयों के पसन्द आगया और मुखिया भाईयोंका छटना स्वीकार होगया तो आगामी जैनगजट के द्वारा में अपनी बुद्धि अनुसार वह बातें भी विदित करूंगा जिन पर अब की महासभा में विचार होना चाहिये ॥

व्यर्थव्यय

हम पंडितजी भोलीलालजी सेठी को कोटिशः धन्यवाद देते हैं उनका उपकार जयपुर की पाठशाला पर बहुत है और वागविलासनी सभा जयपुर को भी अनेकानेक धन्यवाद देकर प्रार्थना करते हैं और भिक्षुक की भांति भीक मांगते हैं कि आतिसबाजी विवाह आदि में मंगाना व लेजाना बन्द करैं कुछ सारी विरादरीका इस मामलेमें इंतजार देखना नहीं चाहिये क्योंकि धर्म के कार्य में विरादरी की बाट देखने की कुछ आवश्यका नहीं है जैसे विरादरी में कोई कन्द मूल खाता है कोई नहीं खाता कोई भाई कुछ काम करता है कोई कुछ नहीं क

रता इस में किसीका साथ ढूंडना नहीं चाहिये इस लिये जो महाशय सभा के मेम्बर हैं उन को नियम करना अति आवश्यक है जो कुछ करना चाहैं पहले आप करके दिखावैं तब दूसरों को ललचावें —आपके१६गजट अंक १६ को देखकर परम हर्ष प्राप्त हुआ भाई गुलजारीलालजी कानपुर निवासी को हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि ऐसे सज्जन पुरुषही धर्म की उन्नति करैंगे आजकल कस्बे कोताना जिला मेरठ की पाठशाला बडी उन्नति कर रही है आशा है सदैव इसी तरह उन्नति करती रहैगी ॥

संगमलाल मुनीव लाला बनारसीदास
सोनीपत जिला दहली

चिट्ठी

बाबू सूर्यभानजी साहब को जोगपलिखी समना के सकल जैनी पंचनकी जयजिनेंद्र बंचना ॥

महाशय धन्य है आपके साहसको जो जैनगजट रूपी सूर्य के प्रतापसे इस भारत सम्बन्धी जैन मुल्कके मिथ्यात्व रूपी तिमिरका नाशकरतहो इस जैनगजट के प्रतापसे जो हमारे यहां अवस्था हुई है सो आप अपने जैनगजट में छाप कर कृतार्थ कीजियेगा ॥

अबकी साल होलीके दिनों में हमारे यहां ४ रोजतक श्रीमान् देवाधिदेव के समोसरन की रचना व श्रीमंदिरजी की रचना छत्र चमरादिक वन्दन वार चन्द्रोपकादि रूपरंग श्री चतुर्विंशत तीर्थंकरनका पाठरूपीगान तलरूपी कुमकुम शांतिकन्हवन विधिरूपी पिचकारी मृदंग आदि वादित्रन की ध्वनि दुखित सुखित जीवन को भोजन दानरूपी गुलाल श्रावक श्राविकादि सखा सहेलीन सहित श्रीजिनेंद्र चन्द्रजी के उत्तम जस गागाके शास्त्रादि श्रवण कर दिन रात्री व्यतीत किये तिसके पश्चात् चैत्रकृष्ण १४ को श्रीसम्यकज्ञाना मृतवर्द्धक जैनसभाका अधिवेशनकिया उस समय सर्व स्त्री पुरूष मौजूदथे श्रीपंडितजी सदैव बिहारीलालजी व सिखरचन्दजी के उपदेशसे सर्व भाईयोंने ५ प्रकार की प्रतिज्ञा धारण की(१)सभामहीनेमें एकबारहुआ करैगी[२]पुरुष स्त्री और लडकों आदिने दर्शन प्रति दिन करने की[३]और१६भाईयों ने नितप्रति पूजन करनेकी[४] बाईस भाईयोंने स्वाध्यायकरनेकी५ २१भाईयोंने शास्त्रजी सुननेकी इसभांति सर्व भाईयोंने प्रतिज्ञाकी है और यदि इनभाईयोंमें जिस२ने जो जो नियम किये हैं जिसरोज भूल हो जावैगी तो उसके प्रातःकाल एकरस पानी घृतपालवण आदि छोडदे नाहोगा ॥

भारतवर्ष के जैनी भाइयों से प्रार्थना ॥

अत्यन्त शोक के साथ सुनते हैं कि जैन जाति औरजातियों की अपेक्षा दिन बदिन न्यून अवस्था को पहुंचती जाती है यद्यपि इधर उधर से बहुत से नामवर महाशय जोर लगा रहे हैं और दिलो जान से इसकी उन्नति के वास्ते कटिबद्ध हो रहेहैं पाठशालाऐं स्थापित करते हैं उपदेशक महाशयों का प्रचार करते हैं जैन अखबारों को प्रकाशित करते हैं परन्तु जो देखा जाता है तो उन्नति ने अभी तक अपना मुख भी नहीं दिखाया है जैन महाविद्यालय मथुरा का कितनी मुद्दत से परिश्रम हो रहा है परन्तु अभी तक रुपये में पैसे का भी बन्दोवस्त नहीं हुआ है कुल काम रुपये से होतेहैं और रुपये इकट्ठ होने का इन्तजाम अभी तक ठीक २ नहीं होता यद्यपि जो कार्रवाई आज कल इसके इकट्ठा करने की हो रही है वह ठीक है परन्तु इस कार्रवाई से इच्छा पूर्वक रुपये का जमा होना मुश्किल है कारण यह है कि जो थैलियों के स्वामी हैं उन्हीं को जैन जाती उन्नति का अविद्या रूपी अन्धकार ने मजा नहीं दिखाया और जो विद्यारूपी चमत्कार से प्रकाशित हैं और उन्नति करने का विचार उन्हीं के मस्तक में दीपक के समान प्रकाशित है वे थैलियों के स्वामी नहीं भला फिर जैन जाति की उन्नति कैसेहो सकतीहै मुझको इस दशा में मुश्किल नहीं बल्कि असम्भव मालूम होता है नहीं २ यह बात मैंने भूल से कहा रुपये का इकट्ठा होना कुछ मुशकिल नहीं है हमारी जाति में बहुत से भाई क्रोड़पती व लखपती हैं यदि वे चाहें तो एक दिन में महाविद्यालय औषधालय अथवा जो कुछ उन्नति कारक विषय होय कर सकते हैं परन्तु शादी गमी के मौकों पर रंडी भडुआ के नाच आतिशबाजी के खेल जो बिलकुल फिजूल और निन्दनीय हैं उन में रुपये को मुफ्त लुटा देते हैं और जात्योन्नति वधर्मोन्नति में रुपयेका लगाना फिजूल खर्च समझते हैं हमारे धनाढ्य भाइयों से बहुत कुछ कहा और अखबारों से जोश दिलाया और सामने जा कर भीख भी मांगी अनेक तरह से रुचि दिलाई परन्तु अफसोस उन्हों ने जराभी अपनी थैलियों का मुख नहीं खोला क्या अब हमको इन्हीं से आशा रहित होना चाहिये नहीं २ दुनियाँ आशा पर स्थिर है अवश्य उम्मेद रखनी चाहिये कभी न कभी उन्नति का जोश खुद इनके दिलों में प्रवेश होकर अपना काम बना लेवेगा ऐ मेरे प्यारे धनाढ्य जैनी भाइयों जरा सोचो कि यही आप की औलाद कुपद रही और आचार

भ्रष्ट रही धर्म को न जाना केवल उदर भरने के लिये हो इधर उधर मारे २ फिरे फिर भी उदर भर अन्न न मिलने अशुभ कार्य करके कुल में कलंक का टीका लगाया तो आपका रुपया पड़ा २ किस काम आवेगा रुपया शुभ कार्य्य में खर्च करने के लिये है न कि जमा रखने के लिये-पड़ा हुआ रुपया और पत्थर दोनों ही समान हैं खैर जाने दीजिये आपको रुपया देनेके लिये ज्यादा नहीं दवाते आप को अखतियार है अपने रुपये को चाहैं शुभ कार्यों में लगावो चाहैं न लगावो इसमें कोई क्या कह सकता है परन्तु आप से दूसरी तरह आशा करते हैं कि एक ख्याल जो मेरे दिल में आया है यदि उस पर पक्षपात् छोड़ कर विचार करेंगे तो आपके जाती खजाने से रुपया लेने की हमको कुछ आवश्यकता न होगी केवल आप के विचार और थोड़े ही परिश्रम से बहुत रुपया जमा हो जायगा इस ख्याल को आप समस्त भारत खण्ड के जैनी भाइयों के समक्ष प्रकाश करता हूं इस पर विचार करके शीघ्र इसके फायदों को देखिये और किसी तरह रुपये का बन्दोबस्त नहीं हो सकता तो हमारा घर का पड़ा ही रुपया निकाल कर जैन धर्मोन्नति में लगाना चाहिये वह पड़ा हुआ रुपया वो जो भारतखण्ड के कुल जैन मन्दिरों में व तीर्थ स्थानों के भण्डारों में रक्खा है, जिसका कोई हिसाब किताब भी ठीक नहीं है वह पड़ा हुआ रुपया किस काम आवेगा भारतखण्ड के जैनी भाइयों इस रुपये को इकट्ठा करो यह रुपया इस कदर होगा जिसके सूद से जैन महाविद्यालय और औषधालय नियत हो सकते हैं रुपया ज्यों का त्यों बना रहैगा बल्कि वृद्धि होगी यदि सम्पूर्ण भारत खण्ड के जैनी भाई इस पर विचार करेंगे तो उन्नति शीघ्र हो जायगी मंत्रवान महासभा व सम्पादक जैन गजट व सुखिया जैन ब्रादरी व हर एक भारतखंड के जैन हितैषी पंच महाशयों से विनय पूर्वक प्रार्थना की जाती है कि इस के फायदों को सोच कर अवश्य अपनी सम्मति को प्रकाश कर इस कार्य का प्रारम्भ कर उन्नति का फल चख कर आनन्दित होंगे ॥

जैनी भाइयों का दास
पन्नालाल काला साकिन जैपुर
हैड मास्टर मिडिल स्कूल सांभर

मेला रथयात्रा करहल ॥

अभी तक हमारे पास करहल के मेले की रिपोर्ट नहीं आईहै इस कारण जहां तक हमको मालूम हुवा है प्रकाश करते हैं। इस साल की भाई बाहर के

आये थे वह दो सौ से अधिक नहीं थे परन्तु करहल में २५० घर जैनियों के हैं इस कारण रौनक और शोभा बहुतेर सी यहां के भाई बाहर से आये भाइयों की खातरदारी बहुत करते हैं॥ इस साल मेले में बाहर से कमती भाइयों के आने का कारण यह है मैनपुरी के भाइयों ने श्री कम्पलाजी का मेला जहां श्री विमलनाथ भगवान का जन्म हुआ है इनहीं दिनों में किया मैनपुरी के भाइयों को यह मेला इसही समय पर नहीं करना चाहिये करहल का मेला नियत समय पर होता है कभी मिती टलती नहीं जाती है और कम्पलाजी के मेले की तारीख नियत की जाती है इस कारण मैनपुरी के भाइयों को उचित है कि करहल के मेले से आगे या पीछे इस मेले को किया करें क्यूंकि जब एक जिले में एकही समय में दो मेले हों तो कैसे रौनक हो सक्ती है॥ करहल का नाटक देखने योग्य है वह बराबर इस मेले में खेला गया था॥ यद्यपि पंडित भवानी लाल के देहान्त का सब को शोक था परन्तु लाला हजारी लाल कानपुर नि-वासी के शुभागमन से जो इस नाटक के कविता हैं नाटक में बहुत रौनक रही॥ सभा भी हुई प्रथम दिवस धर्म सहाय उपदेशक ने फजूल खर्ची (अ-पव्यय) पर बहुत ही सुन्दर व्याख्यान कहा और मुंशी चम्पतराय डिप्टी मैजि-स्ट्रेटने उसको पुष्ट किया दूसरे दिवस फिर सभा हुई मास्टर प्यारेलाल मन्त्री जैन सभा इटावा का व्याख्यान जैन धर्म की वर्तमान और भविष्यत दशा पर अति मनोहर डेढ़ घंटे तक हुवा इसके पश्चात् लाला उमराव सिंह उपमन्त्री जैन सभा इटावा ने धर्म के विषय में व्याख्यान कहा इसके पश्चात् लाला भीकमसैन विद्यार्थी इटावाने जो कि डिप्टी चम्पत राय का भतीजा है और केवल १६ वर्ष के करीब उमर है एक ललित व्याख्यान स्त्री शिक्षा पर कहा जिसको सुनकर पंडित मादौलाल ने सभा में खड़े होकर उसका धन्यवाद कहा फिर डिप्टी चम्पत रायने सब भाइयों से प्रार्थना करी कि किसी प्रकार फजूल खर्ची को अवश्य छोड़ना चाहिये और परम हर्षकी बात है कि उसही समय करहल के भाइयों ने विवाह में वेश्या का नृत्य (रंडी न चाना) बिलकुल बन्द करदिया और बाग बहारी १०) से अधिक की न ले-जाना कबूल किया धन्य है करहल के भाइयों को इस मेले में विद्यालय भंडार के वास्ते गोलक भी रक्खी गई थी और यह कहा गया था कि सब बालक इस कम से कम एक पैसा इस गोलक में डाल देवें इस गोलक में स्त्रियोंने भी पैसे डाले॥ आखीर दिन गोलक सभा

में खोली गई अनुमान १५॥) उसके अन्दर आये जो लाला मुकन्दीलाल के सपुर्द हुवे कि श्रीमान् सेठ लखमनदास के पास मथुरा भेज देवें ॥

आपस की फूट ॥

गत रविवार को महाशय रामचन्द्र जी डिप्टी कलक्टर राज्य झालावाड़ यहां पधारे और सर्व पंचों को एकत्र करना चाहा परन्तु करीब २० मुखिया भाई इकट्ठे हुए उक्त डिप्टी साहब ने कहा कि पहले भी इस शहर झालरा पाटण में तुम्हारी बिरादरी में द लड़ें थी और जिनका झगड़ा अदालत तक पहुंचा जिसमें १००००) रुपया श्री मन्दिरजी श्री शीतलनाथजी के भण्डार से खर्च हुआ था तब भी भाइयों का झगड़ा न मिटा और फिर भी दो धड़े रहीं यह बात ठीक नहीं अब जिस तरह हो सके ८ दिन के भीतर सफाई कर विरोध मेटलो उसका जवाब यह दिया गया कि जिधर अधिक घर होवें तो कम घर वालों को उचित है कि उनकी हाजिरी साधकर एक धड़ करने के बाबत निवेदन करें इस बात को दूसरी धड़ वालों ने ना मंजूर किया डिप्टी साहब अपने मकान को चले गये अभी तक ऐक्यता का कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ है ॥

सुन्दरलाल बनौड़ा

झालरापाटन

एक सुलभ उपाय ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमा योग्य विराजमान सकल गुण निधान श्री पत्री भाई साहब सूर्यभानजी जोग्य रघुनाथदास की जय जिनेन्द्र बंचना अत्र कुशल तत्रास्तु आगे जैन गजट आपका २४ मार्च सन् हाल को आया बांचकर अति आनन्द प्राप्त भया इसमें जो तरकीब घर पीछे १) रुपये देने के वास्ते जैन कालिज के लिखी है अति उत्तम और सुगम है परन्तु मेरी राय में यह आता है कि जैन गजट तो आप का सम्पूर्ण नगरों में न जाता होगा और यह खबर सब जैनीभाइयों को विदित होनी अति आवश्यक है इस वास्ते आप इतने ही मजमून के एक घर पीछे एक रुपया देना इश्तिहार छपवा लीजिये और प्रत्येक उपदेशक महाशय को थोड़े २ वास्ते बांटने को देदीजिये कि जहां वे लोग जावैं वहां पर यह इश्तिहार बांट दिया करें और कुछ मेरे पास भेज दीजिये जहां गजट न पहुंचता होगा वहां पर मैं पहुंचा दूंगा और मैं अपनी एक साल की आमदनी में से एक मास की आमदनी देना स्वीकार करता हूं और जिस वक्त ऐसे १०० आदमी आप की फहरिस्त में लिखाने कि एक मास की आमदनी देना स्वीकार किया है हो जावें तब मुझको सूचित किया जावे मैं रुपया एक मास की आमदनी का रवाना करदूंगा ॥

[बरनी जिला एटा]

मथुरा ॥

श्रीयुत बाबू सूर्यभान जी साहब जय जिनेन्द्र—

यहां पर सभा जो कुछ दिन के वास्ते बन्द होगई थी फिर उसका पुनर्जन्मो त्सव मिती वैशाख बदी १ सोमवार का हुआ उसमें शहर के सम्पूर्ण महाशय एकत्र हुए और बहुत खुशी के साथ सभा करना स्वीकार किया पश्चात् इस के प्रबन्ध कर्ता भी मुकर्रर हुए जिन के नाम यह हैं श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास जी सितारे हिन्द सभापति, लाला रतन लाल जी उप सभापति, लाला मूलचन्द जी वकील मन्त्री, बाबू घासीराम जी उप मन्त्री, लाला मोतीलाल जी कोषाध्यक्ष, लाल जी मैनेजर यह सर्व महाशय सभा के प्रबन्ध कर्ता नियत होगये इसके पश्चात् सम्पूर्ण महाशयों ने सम्मति करके फुलवाड़ी का निकालना बन्द किया और अन्य नग्र से जो बरात मथुरा में आवेगी उसमें भी फुलवाड़ी नहीं होगी और न मथुरा वाले अन्य नग्र में ले जा सकते यह प्रबन्ध बहुत खुशी के साथ सर्व भाइयों ने स्वीकार किया और सभा प्रति मास की सुदी १४ को हुआ करेगी ॥

जैनी भाइयों का शुभचिन्तक

चम्पालाल

श्रीयुत बाबू सूर्यभानु सम्पादक जी जयजिनेन्द्र ॥

कृपा कर निम्न लिखित लेख को अपने पत्र में स्थान प्रदान करके मुझ दास को कृतार्थ कीजिये ॥

विदित हो कि मिती फाल्गुण सुदी ८—९—१० के दिन धामपुर ज़िला बिजनौर में जो रथ यात्रा हुई थी उस में निहटौर शेरकोट की पाठशालाओं के विद्यार्थियों की परीक्षा भी नौमी के दिन होने वाली थी परन्तु न मालूम किसी कारण से उस दिन निहटौर की पाठशाला तो न आई परन्तु जैन पाठशाला शेरकोट के अध्यापक पण्डित यमुनादत्त जी अपने विद्यार्थियों को ले कर उपस्थित हुए पंडित चुन्नीलाल जी मन्त्री महासभा मथुरा तथा बाबू बद्री दास जी वकील बिजनौर ने उक्त पाठशाला की परीक्षा बहुत जन समुदाय के बीच में ली इस परीक्षा में लाला परसादी लाल जी की मध्यमा कन्या श्रीमती फूलदेई (जिसकी उम्र आठ वर्ष की है) सर्वोत्तमा रही उक्त कन्या ने निम्न लिखित पुस्तकों में परीक्षा दी ॥

लघुकौमुदी पञ्चसन्धि सार्थक में कण्ठस्थ	
अमरकोष	कर्मार्थयो वर्गांतक
संस्कृत सोपान	६—७ पाठ तक

पंडित लाल जी मल सहारनपुर निवासी ने उक्त कन्या से कठिन संस्कृत शब्द लिखवाये इसने अच्छी प्रकार लिखे इस कारण पंडित चुन्नीलाल जी ने इस को सर्व विषयों में उत्तमा अच्छ क्षमा इत्यादि लिखा तदनन्तर और विद्या

र्थियों की परीक्षा भी हुई पंडित चुन्नी लाल जी तथा बाबू बद्रीदास जी वकील ने प्रसन्न होकर ४) उक्त पाठशाला के विद्यार्थियों को पारितोषिक में दिये और पारितोषिक तथा कुछ पाठशाला की तरफ से भी दिया गया आपको धन्य है आज हम भी जैन गजट के द्वारा ही अपने अभिप्राय को प्रगट कर सकते हैं और उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं मैं सम्पादक जी को अनेकानेक धन्यवाद करता हूं जो अपने अमूल्य समय को व्यय कर इस महान् कार्य्य को कर रहे हैं शोक है कि ऐसे समाचार पत्र के बहुत ही कम ग्राहक हैं ॥

मन्त्री जैन पाठशाला
शेरकोट

(चिट्ठी) भरतपुर ॥

श्री युत बाबू सूर्यभानजी साहिब जयजिनेन्द्र

आप के जैन गजट ने बड़ा उपकार किया है यहां मिती फाल्गुण सुदी १४ से मिती चैत्र बदी २ तक मंडल विधान चौबीस महाराज का पूजन बड़े आनन्द से हुआ होली के विषय में जो मजमून आपने जैनगजट में लिखा था वह भाइयों को सुनाया गया उसके श्रवण करने से भाइयों के दिलों पर ऐसा असर हुआ कि होलीकी कुरीतियों को त्यागकर मंडल विधान की तजवीज ठहराई सो अति आनन्द प्राप्ति हुआ परन्तु जितने भाई उससमय पर उपस्थित थे वही इस मंडल विधान में शामिल हुए जितने भाई इस मंडल विधान में शामिल हुए वह होली के हुरे दिनों से बचकर इस आनन्द में मग्न होगये उस समय का आनन्द वर्णन नहीं होसक्ता आशा है कि आगामी काल के उत्सव में ज्यादह उन्नति हो जावे ॥

ललितपुर ॥

भाई साहब श्रीमान् बाबू सूर्यभान जी जयजिनेन्द्र जैन गजट आपका आता है उस के उत्तम लेखों को बांच कर चित्त को अत्यन्त आनन्द होता है अब यहां का हाल यह है कि यहां पर तीन सौ घर जैनी भाइयों के हैं और श्री मन्दिर जी ९ हैं पूजन व शास्त्र जी दोनों वक्त होते हैं और श्री पण्डित जी साहब मुन्नीलाल जी ललितपुर निवासी सभा में शास्त्र जी पढ़ते हैं और थोड़े से भाई स्वाध्याय भी करते हैं धर्म की अच्छी रुचि है और सर्व ही पूजन दर्शन करने को मन्दिर जी में जाते हैं और यहां पर अष्टान्हिकाजी का उत्सव साल १ में तीनों साका पर होता है और यहां पर रथयात्रा कार्तिक के महीने में हरसाल होती है मिती कोई मुकर्रर नहीं है और ललितपुर के पास कोस १ दोयम और चांद है वहां पर बाईस मन्दिर बहुत प्राचीन समय के बने हुए हैं—

सकल पंच जैनी ललितपुर

बहुधा मनुष्य यह कहा करते हैं कि जो कार्य हमारे माता पिता करते आये हैं वह क्योंन किया जावे क्या हमारे माता पिता मूर्ख थे ॥ हम उन भाइयों से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वह जरा इस बात पर विचार करें कि इस समय जो मनुष्य हैं वह सब अच्छाही कार्य करते हैं या कोई कार्य धर्म विरुद्ध भी करते हैं इसका उत्तर यह ही होगा कि अवश्य बहुत मनुष्य दुराचारी हैं और निन्दनीक कार्य करते हैं तो क्या उनके मरने के पश्चात उनके पुत्र पौत्रों को भी उसही के अनुसार निन्दनीक और दुराचार के काम करने चाहिये इसका भी उत्तर यह ही होगा कि कदाचित ऐसा नहीं करना चाहिये फिर जब यह बात है तो हम को क्यों भेड़ा चाल की तरह बड़ों की चाल पर चलना चाहिये॥ यह लोक मूढ़ता है और लोक मूढ़ता अधर्म और पापका मूल है इस कारण जैनी भाइयों को अवश्य लोक मूढ़ता को छोड़ना चाहिये जैनी भाइयो में और अन्य मतानु भाइयों में भेद यह ही है कि जैनी सर्व प्रकार के कार्य विचार कर करता है और अन्य मती लोक मूढ़ता से करते हैं॥ ऐ भाइयों चेतो किस भ्राम जाल में पड़े हुवे हो मनुष्य में और पशु में यह ही भेद है कि मनुष्य के सारे काम विचार पूर्वक होते हैं हाय हाय हम तो बड़ा आश्चर्य है कि होलीका भड़वा होना कैसे इज्जत दार पसन्द करते हैं ॥ जैनियों के वास्ते इन दिनों में धर्म ध्यानका एक बहुत बड़ा पर्व है यह बात सब जानते हैं कि पर्व के दिनों में विरुद्ध कार्य करने से पाप अधिक होता है ॥ यद्यपि इस विषय में बहुत कुछ लिखने को जी चाहता है और जब अपनी आंखों के सामने जैनी भाइयों को काला मुंहकरे हुवे देखते हैं तो अत्यंत शोक उत्पन्न होता है परन्तु होली व्यतीत होगई और भय इस बातका है कि हमारे भाई हम से नाराज न होजावें इसकारण इस लेख को हम ही जगह खतम करते हैं ॥

[करौली]

आप के गजट के प्रभाव से इस कदर असर तो यहां पर हो गया है कि कोई बिरादरी वाला होली में शामिल नहीं हुआ बल्कि दोनों मंदिरों में जो यहां पर हैं मंडली विधान करायागया और पूजन होली के रोज बड़े आनन्द से हुई— शिवालाल जैनी

रिपोर्ट-पंडित धर्म सहाय
ओनरेरी-उपदेशक ॥

मिती बैसाख बदी ६ बदी को देवबन्द से १२॥ की रेलगाड़ी में बैठकर २॥ बजे सरसावा आय कर- उपसेन- सेक्रेटरी [मन्त्री] महा सभा मथुरा- के मकान पर स्थित हुआ-उक्त महाशय जो सहारनपुर गए थे द्वितीय दिवस २॥ बजे पधारे मैंने सभा होने को प्रकाशित किया तो उक्त साहबने बुलावा मारफत मालो के भेजा- सर्व भाई ४ बजे पर श्री मन्दिरजी में सुशोभित हुए उस समय ७५ जो पुरुष उपस्थित थे- सभा का प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रथम उक्त मंत्री साहबने प्रोग्राम सुनाया पश्चात् श्री भ- जैन धर्म संरक्षणी महा सभा मथुरा की सम्मति प्रकट की-पश्चात् जवाहर लाल विद्यार्थी-जैन पाठशाला जैपुर ने जिसकी अवस्था १२ वर्ष की थी- अपने ललित वाक्यों में अभक्ष्य भक्षण- तथा हुक्का का निषेध करि विद्या के विषय में व्याख्यान दिया तत्पश्चात् मैंने- मनुष्य भव की दुर्लभता दिखाकर ज्ञान प्राप्त का मूल कारण ऐक्यता की आवश्यकता रूप व्याख्यान दिया- तत्पश्चात् उक्त उपसेन मन्त्री महा सभा ने अपनी सुन्दर ध्वनि से उक्त व्याख्यान का पौष्टिक व्याख्यान दिया उस समय सर्व सभ्य, सभी गर्जित हुए और सभा होना स्वीकार किया- परन्तु लाला शिवलाल-लाला नन्दलाल- लाला भगवान दास- रईस धनाढ्य और मुख्य महाशय नथे इस कारण द्वितीय दिवस सभा नियत होना सर्व महाशयों ने अङ्गीकार किया- पुनः बैसाख कृष्ण ८ को सर्व भाई उक्त स्थान पर सुशोभित हुए उस समय सर्व ८० जो पुरुष उपस्थित थे प्रथम मंत्री प्रोग्रामजी पढ़े पश्चात् पूर्वोक्त प्रकार सभा प्रारम्भ होने पर उक्त विद्यार्थी-जवाहरलाल जैपुरस्थ ने धार्मिक विषय में व्याख्यान कहा फिर मैंने मोक्ष मार्ग का स्वरूप प्रकट कर अर्थ व्यय [फिजूल खर्ची] निषेध के विषय में व्याख्यान दिया- पश्चात् उक्त मन्त्री साहब ने मम व्याख्यान का सहायक मनोहर शब्दों में व्याख्यान दिया उस समय सर्व महाशयोंने हर्षित होकर उत्साह पूर्वक प्रति रविवार को सभा करना स्वीकार किया जिसमें लाला शिवलालजी सभापति-लाला नन्दलाल उप सभापति- लाला नथमल मन्त्री लाला भगवानदास कोषाध्यक्ष नियत हुए और शेष महाशयोंने सभासद होना अङ्गीकार किया पुनः उसी समय सर्व भाइयों ने व्यर्थ व्यय का प्रबन्ध किया फर्द भी तैयार होगई परन्तु समय ज्यादा होजाने के कारण कोई २ महाशय चले गये थे तिस से जो भाई उपस्थित थे उन्हों के हस्ताक्षर होगए शेष भाइयों के हस्ताक्षर द्वितीय सभा में होंगे

की समाप्ति हुई सो दस्तूर मसल को कह उक्त मन्त्री साहबने अपनी रिपोर्ट के सब भेजने का प्रण किया यहां पर १२५ घर अग्रवाल श्रावकों के हैं मन्दिर एक है जिसमें पूजन प्रभात काल यहां के भाई करते हैं और पंडित नोकर है सो पूजन पढ़ाते हैं और शास्त्र जी १ बजे पर होता है जिसमें २५ भाई अति पूर्वक शास्त्रजी श्रवण करते हैं यहां के भाई बड़े सज्जन और धर्मज्ञ हैं मैं धन्य रह से कोटिशः धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि स्वगृहीत प्रतिज्ञा का निर्वाह करेंगे—मिती वैसाख बदी ९ को सवारी न मिलने से हरसानाही ठहरना पड़ा—मिती वैसाख बदी १० दशमी को उक्त मन्त्री साहब को साथ लेकर तुकड़ पहुंचकर लाला दयाचन्द निहालचन्द के मकान पर ठहरा विशेष सत्कार किया—उक्त महाशय बड़े रईस सज्जन परोपकारी हैं तथा धर्मोन्नति जात्योन्नति करने में कटिबद्ध हैं उक्त लाला साहब ने सभा होने को प्रकाशित किया तो बड़े हर्ष के साथ १ बजे पर शास्त्र सभा के सर्व सिरादरी में बुलाया जाने से २ बजे पर श्री पञ्चायती मन्दिर जी में सुशोभित हुए प्रथम श्री शास्त्रजी पढ़े पुनः सभा का प्रारम्भ हुआ उस समय ४० महाशय उपस्थित थे जिस में हमने मंगल पूर्वक परोपकारता के विषय में व्याख्यान दिया और सभा होने की आवश्यकता दिखाई—पश्चात् वकील उपदेशक मन्त्री महा सभाने ललित वाक्यों में व्यर्थ व्यय के विषय में व्याख्यान दिया सर्व भाइयोंने हृदय सुकोमल होने से सभा होना स्वीकार किया परन्तु यहां पर दो थोक हैं इससे द्वितीय दिवस सभा होने की समाप्ति हुई दो थोक होने का कारण यह है प्रथम थोक वालों ने धर्म कार्य का प्रबन्ध किया और उसकी नियमावली छपगई है उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं इनके घर ६० हैं—और द्वितीय थोक वालों ने कोई प्रबन्ध नहीं किया पुरातन रीति पर चल रहे हैं इनके २० घर हैं—दूसरे दिवस २ बजे पर सभा हुई अनुमान ६० सभासद उपस्थित थे उस समय मैंने ऐक्यता के विषय में व्याख्यान दिया पश्चात् उक्त मन्त्री साहब ने भी उक्त विषय में व्याख्यान दिया उस समय पर सब भाइयोंने बड़े हर्ष के साथ सभा करना स्वीकार किया जिसमें सभापति लाला दयाचन्द—उप सभापति लाला नागरमल—मन्त्री लाला संभल लाल उपमन्त्री लाला मित्रसेन—कोषाध्यक्ष लाला ज्ञानचन्द नियत हुए शेष महाशयों ने सभासद होना स्वीकार किया—और उसी समय दोनों थोक वालों में एकता होना चाहा तो जिसमें एक थोक वालों ने अपनी तरफ से लाला दयाचन्द को स्थापित

किया और द्वितीय थोक वालोंने लाला जयकुमार को स्थापित कर कहा कि ये दोनों साहब करें सो मंजूर है परन्तु एक थोक वालों में कुछ मिल न होने से द्वितीय सभा में करने की संमति हुई आशा है कि दोनों में ऐक्यता होजावेगी यहां पर ८० घर अग्रवाल भाइयों के हैं और मन्दिर १ पञ्चायती है जिसमें पूजन प्रभात हो जाता है और २ बजे पर शास्त्री भाई मित्रसेनजी पढते हैं जिसमें २० भाई आइकर श्रवण करते हैं और मन्दिर १ लाला दयाचन्द मि-श्रीलालचन्द के मकान पर है इसमें पूजन पुजारी करता है तथा लाला साहब भी करते हैं इनकी माताजी बड़ी धर्मात्मा ज्ञानवान है शास्त्रजी का स्वाध्याय आदि धर्म कार्य निरन्तर करती है इनकी प्र-शंसा अकथनीय है- मैं गुलड़ निवासी भाइयों को कोटिशः धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि दोनों थोक वाले भाई एकत्र होकर धर्म कार्य में कटिबद्ध होंगे और सजन प्रबन्ध का निर्वाह कर अन्यान्य भाइयों के दृष्टांत योग्य होंगे—मिती वैसाख कृष्ण १२ को लाला मिश्रीलालचन्द सभापति- लाला सम्पतलाल मन्त्री लाला गनेशीलालजी मेरे साथ होकर दिन के १२ बजे पर बड़ौत आकर लाला किशोरीलाल रईस के मकान पर उतरा उक्त महाशय से सभा का निवेदन किया उसी समय सर्व बिरादरी को बुलाया जाने पर श्री मन्दिरजी पञ्चायती में १ बजे पर सभा हुई प्रथम शास्त्रजी हुए पश्चात् सभा का प्रारम्भ हुआ उस समय पर अनुमान ४० भाई उपस्थित थे मैंने मंगल पूर्वक विद्या के विषय में व्याख्यान दिया उस समय सर्व महाशय यह कहतेभए कि यहां पर सभा तो हर रविवार को होती है परन्तु पाठशाला नहीं है सो अवश्य स्थापित करेंगे और उस समय सर्व भाइयों ने यह प्रण किया कि द्वितीय रविवार को पाठशाला का प्रबन्ध अवश्य करेंगे आज ही होजाता परन्तु दो,तीन अग्रह गमी होजाने के कारण कोई भाई नहीं आए सो द्वितीय रविवार को सभा में पाठ शाला नियत होजावेगी- पुनः भाई कल्याण मल मन्त्री जैन सभा बड़ौत ने ललित वाक्यों में धन्यवाद देकर सभा विसर्जन की यहां पर अग्रवाल श्रावकों के १५० घर हैं मन्दिर पञ्चायती एक है जिसमें यहां के भाई पूजन नहीं करते एक पुजारी पण्डित नौकर है वही पूजा करते हैं और शास्त्रजी दुपहर को पढ़ते हैं किन्तु चर्चा का प्रबन्ध बहुत कम है- पुनः रात्रि को आठ बजे पर मेरे पास कई भाई आए और दूसरे दिन रहने का आग्रह किया तो मुझको रहना पड़ा मिती वैसाख कृष्ण १३ को १ बजे पर श्री शास्त्रजी पढ़े और अनुभव

भव की दुर्लभता दिखाकर आर्तरौद्र ध्यान का स्वरूप तथा फल बता कर धर्म ध्यान का कारण शास्त्र को स्थापित किये और प्रमाद का दोष दिखाया उस समय ३० भाइयों ने १ एक वर्ष के वास्ते शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा लीनी और अष्ट मूल गुण अर्थात् पंच उदंबर तीन मकार का त्याग किया फिर शास्त्र सभा समाप्त हुई अब मैं अम्बहटा निवासी भाइयों को धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि स्वप्रकाशित वाक्यों का तथा प्रतिज्ञा का निर्वाह करेंगे और पाठशाला स्थापित करेंगे ॥

शिव आर्गे

परमहर्ष के समाचार ॥

सब भाइयों को विदित किया जाता है कि पंडित भगवान दास जी गढ़ाकोटा जिला सागर निवासी जो कि एक शिरोमणि जैनी पण्डित हैं उन्होंने महासभा की तरफ से देशाटन कर के उपदेश देना स्वीकार कर लिया है और ता०, २० अप्रैल से प्रस्थान किया है मध्य प्रदेश में मुख्य २ स्थानों में दौरा करते हुए देहली तक पधारेंगे—आशा है कि जहां २ उक्त महाशय का आगमन होवे जैनी भाई उनके वास्ते सभा आदि के जोड़ने और अगवाणी करने से वात्सल्य अंग का प्रचार करेंगे क्योंकि उन्होंने देश की भलाई के अर्थ इस कार्य को स्वीकार किया है ॥

चम्पतराम मंत्री

एक धर्म उत्साही का लेख ॥

भाई सूरजभान जी साहब जैनेन्द्र निम्न लिखित लेख को जैन गजट में कृपा करके छाप देवें ॥

इस वर्ष से जैन कौम में वावेला हो रहा है कि जैन मत की उन्नति करो ॥ अब तो यह कहने वाले बन गये करने वाला कौन रहा ॥ जिन लोगों को यह ख़याल है कि धनाढ्य लोग अर्थात् सेठ साहूकार जैनी भाई इस कार्य को पूरा करेंगे यह ख़याल उन लोगों का बिलकुल गलत है क्योंकि धनाढ्य पुरुषों का ध्यान केवल दो बातों पर है या तो धन बहुत होने के कारण इन्द्री जनित भोगों में या जो धनाढ्य धर्मात्मा कहलाते हैं वह अपना नाम रोशन होने की बातों पर दिल लगा कर उदारता से धन खर्च करते हैं और जगत में धर्मात्मा मशहूर होते हैं जैन महाविद्यालय (जैन कालिज) में या जैन कौम की उन्नति में धन खर्च करने से उनकी क्या नामवरी होती है यह काम तो बहुत पुरुषों से मिल कर चलता है और नामवरी होती है अकेला काम करने से ॥ इस में कुछ सन्देह नहीं कि धर्मोन्नति करने से परलोक की सिद्धि होती है परन्तु

मेरी समझ में धनाढ्य पुरुषों के यह ख्यालात जरूर होंगे कि लोक कीर्ति के सामने परलोक क्या वस्तु है ॥ और हम अधिक क्या कहैं ॥ ऐ भाइयो जैन धर्म्म की रक्षा करने वालो किञ्चित ध्यान दो और विचारो कि इस समय अन्य मत वाले कैसी उन्नति कर रहे हैं और हम जैन मतवालों ने क्या समझा है जो जुबानी सहायता को तय्यार है और द्रव्य इकट्ठा करने के कार्य्य में मुख मोड़ते हैं ॥ ऐ मध्य अवस्था के भाइयो परोपकार्य्य संकटिबद्ध होकर और हिम्मत करके कुछ रुपया इकट्ठा करो और जैन कालिज जारी करो निश्चय होता है कि यदि आप भाई यह काम प्रारम्भ कर देवें तो भारतवर्ष के धनाढ्य भी अवश्य लज्जित होंगे ॥ जुबानी बातें बनाने से कुछ काम नहीं होता है अगर और कुछ नहीं हो सकता है तो क्या एक रुपया घर पीछे भी इकट्ठा नहीं हो सकता है भाइयो इस प्रकार घर पीछे एक रुपया इकट्ठा करके सेठ लक्ष्मणदास साहब सितारे हिन्द के पास जमा करो क्योंकि उक्त सेठ साहब जैन महाशय सभा के सभापति और जैन जाति के शिरोमणि हैं ॥ जो भाई मुझ से पूछे कि तुम क्या करोगे तो भाई साहब अपनी शक्ति अनुसार मैं भी देने को तय्यार हूं मैंने पहले यह प्रकाश किया था कि यदि एक सौ भाई इसही प्रकार तय्यार हों तो अपनी पूंजी का दसवां हिस्सा जैन कालिज में दे सकता हूं और महामंत्री साहब की तजवीज के अनुसार एक महीने की आमदनी भी दूंगा और घर पीछे एक रुपया अपना और जहां तक होगा अपने गांव से भी करादूंगा परन्तु यह काम एक दो आदमी से नहीं हो सकता हिन्दुस्तान की अगर कुल बिरादरी कमर हिम्मत बांधे तो सम्भव है आगे जैसी सम्मति भाइयों की हो सोही ठीक है ॥

आप का दास
शम्भूनाथ कानूनगो पेंशनर
रुड़की जिला सहारनपुर

खेकड़ा जिला मेरठ ॥

लाला दीवान सिंह पन्नालाल साहिब लिखते हैं कि यहां पर पाठशाला नियत होने की तजवीज होरही है जिस वक्त नियत होजावेगी उस वक्त पूरा हाल लिखा जावैगा—धन्य है ऐसे सज्जन भाइयों को ॥

खेखड़ा जिला मेरठ ॥

लाला पन्नालाल साहब लिखते हैं कि आप के दोनों अखबारों का यहां पर बहुत असर हुवा है। यहां के लोगों में फिजूल खर्ची के दूर करने और पाठशाला और सभा के नियत करने का बहुत चर्चा होरहा है ॥

जैन पाठशाला इलाहाबाद ॥

लाला सालिगराम इलाहाबाद निवासी ने नीचे लिखे हुए मजमून हमारे पास भेजे हैं उनको हम प्रकाशित करते हैं ॥

आगे मिती वैसाख बदी ४ बुधवार को बाबू कन्हैया लाल लोहिया कानपुर निवासी कलकत्ते को जाते थे सो यहां पर उतरे मन्दिर जी में मिलाप हुआ उनको पाठशाला दिखलायी उन्हों ने नीचे लिखा हुआ मजमून लिखा है ॥

आज मैंने पाठशाला के विद्यार्थियों की परीक्षा ली तो विद्यार्थियों को बहुत उत्तम पाया और पढ़ाई का क्रम अति उत्तम है और नियम बहुत अच्छा बंधा हुआ है यदि इसी प्रकार ठीक २ नियम रहा तो मैं आशा करता हूं कि इस कार्य में धर्म की वृद्धि अच्छी हो जावैगी यह काम हमेशा रहना चाहिये यानी पाठशाला सदैव उपस्थित रहनी चाहिये ॥

द० कन्हैयालाल लोहिया
कानपुर

और इसी रोज भाई चम्पत राय जी वल्द लाला सूरजमल खजानची तालिबइल्म बी. ए. क्लास यहां पर परीक्षा देने के लिये आए जो नीचे लिखे अनुसार लिखते हैं तारीख १ अप्रैल को मैं मन्दिर जी में यात्रा दर्शन करने के लिये आया यहां पर पाठशाला को देख कर तबीयत निहायत खुशी हुई छोटे २ लड़कों को शास्त्र जी के श्लोक पढ़ते हुए देख कर निहायत आनन्द हुआ पंडित कृपा लाल जी साहब अध्यापक बड़े लायक मालूम होते हैं और लड़कों के पढ़ाने में बहुत कोशिश करते हैं ॥

द० चम्पतराय तालिब इल्म
बी. ए. क्लास मेरठ कालिज

आज मिती बैसाख बदी ४ अनुसार तारीख १ अप्रैल सन् १८८६ ई० को इस पाठशाला में आया पाठशाला का क्रम व विद्यार्थियों की संख्या को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ इस पाठशाला में चार श्रेणी जिनमें ३० विद्यार्थियों का नम्बर है हाजिरी विद्यार्थियों की उस समय १८ के अनुमान थी, पढ़ाई के क्रम को देख कर जिस कदर खुशी हासिल हुई वह लिखने में नहीं आती कारण यह है कि तमाम श्रेणी में पढ़ाई के ग्रन्थ जैन मत के हैं और कुछ विद्यार्थी बम्बई दिगम्बर जैन परीक्षालय की परीक्षा के वास्ते पढ़ाई पढ़ रहे हैं मैं इस पाठशाला के सम्पादक महाशयों को कोटिशः धन्यवाद देता हूं जो अपने अनादि जैन मत की उन्नति में कटिबद्ध हो रहे हैं पंडित इस पाठशाला में तीन हैं उनमें मुख्य पंडित कृपालाल जी हैं जो विद्यार्थियों के पढ़ाने में बड़ा परि-

श्रम करते हैं और मेरी ही नहीं बल्कि बाग विलासिनी सभा जयपुर की जो का मैं मेम्बर हूं तमाम सम्पादकान पाठशाला से यही प्रार्थना है कि इसी तरह तन मन धन से धर्मोन्नति में कटि बद्ध रहेंगे दूसरी प्रार्थना यह है कि सवाई जयपुर श्री बाग विलासिनी सभा ने जिन धर्म के ग्रन्थ लिखे हुये नहीं मिलने से विद्या के अभाव को देख कर एक जैन लिखित पुस्तकालय नाम से कारखाना खोला है जहां से करीब २०० ग्रन्थों के लिखे हुए तो देशान्तरों में जा चुके हैं और दिन प्रति दिन भेजे जाते हैं सो आप लोग भी यदि चाहैं तो मंगा सकते हैं या जिस किसी जैनीभाई को आवश्यकता होवे वह मंगा लेवें

छोगालाल खिनाल्या वकील
बागविलासिनी सभा
ठोलियान का मन्दिर
जैपुरराजधानी

फजूल खर्ची ॥

गीता छन्द ॥

फैला है भारत वर्ष में अति दुःख दायक व्यर्थ व्यय। सब दुःखदायक कारजों कहै यह नायक व्यर्थ व्यय॥ क्योंकर मिलै सुख चैन तिनको कैसे मन अस्थिर रहै। दिन रात चिन्ता अग्नि जिनके चित्त ईंधन को दहै॥ खावै नहीं सोवै नहीं इत्यादि बहु संचय करै। पर व्यर्थ व्यय के कारणे जग में सदा दुखड़े भरै॥ जिनके बसा यह चित्त में क्या २ न पद तिनको दिये। पापी दुराचारी लबाड़ी नाम तिनके धर दिये॥ बहुतों के खोये कोश इसके चोज हैं अति सहृदे। परवार बंधु सुपुत्र दारा आदितैं कीने जुदे॥ इस व्यर्थ व्यय का नाश हो अब तुम करो हे भाइयो। इस लोक और पर लोक में सुख अनुसरो हे भाइयों॥ कब आवै शुभ दिन ऐसा जब इस व्यर्थ व्यय का नाश हो। और कार्य कारी व्यय का भारतवर्ष में परकाश हो॥ रचना तु यांके दूर मंगल याते जो कोऊ हित करै तिसही को तन मन कर्म धन आदिक सरब पेरत हूं॥

मुनि मदन सप्तक धन। गयो भयो नव मास। सम्वत उर आनन्द अमित। सफले सकल सुकाज॥

श्रीमन कुल कमल दिवाकर मान्यवर महाशय वकील साब सूर्यभान जी सविनय जयजिनेन्द्र देव—उभय और कुशल पश्चात् निवेदन है कि यह दीन व्याकाशित लेख जैन धर्मानुयायी सप्ताहिक गजट को स्थान दानी लख देवा कोहान करता है जो आगामी अंक में स्वच्छता से छप होगा॥

यह खिमलासा ग्राम जो पूर्व में जैन विद्या, ज्योतिष, वैद्यक न्यायादि आभरण कर अभिराम था किन्तु कई वर्षों से

उत्तमोत्तमप्रभावनांग के समाचार

सवाई जयपुर में सेठ मूलचन्दजी अजमेर वालों ने अजोध्या आदि पंच कल्याणकों की रचना स्थापन करके ऐसा जैन धर्म का प्रभाव प्रगट किया कि जिस की महिमा का कथन वचन के अगोचर है जैनी क्या बल्कि अन्य धर्म अवलम्बी सज्जन पुरुषों ने भी यहां तक प्रशंसा की कि ऐसा मेला पहले कभी देखने में न आया और आयंदा न फिर होना है मेरी प्रार्थना सर्व जैनी भाइयों से अब यह है कि जगह २ मेले होने की अति आवश्यकता अब नहीं है क्योंकि सेठ मूलचन्द जी साहिब ने मेले की सीमा अर्थात् हद परिपूर्ण करदी अति आवश्यकता शहर शहर ग्राम ग्राम में जैन पाठशाला और सभा स्थापन होने की है कि जिस से जैन धर्म चिर काल स्थिर रहै और जैनी लोक सर्व प्रकार से सुखी रहैं मुझ अल्प मति की दृष्टि में सिवाय इन कार्यों के और कोई कार्य प्रभावनांग के होने की आवश्यकता नजर नहीं आती इन कार्यों के होने से सर्व कार्यों की सिद्धि है सवाई जयपुर में पाठशाला तो ऐसी उन्नति परहै कि जिस का संपूर्ण वृत्तान्त विस्तार से फिर प्रगट किया जावैगा सभा के कार्यों की मन्दगति थी परन्तु इन दिनों में ऐसी शीघ्र गति होरही है कि एक सभा नहीं बल्कि हर बृहस्पतिवार को महीने में चार सभा चारों पंचायती मन्दिरजी में होने का सर्व जैनी भाइयों ने भले प्रकार विचार करलिया है आशा दृष्टि होगई है कि अब जैन कौम की उन्नति होने वाली है मिती चैत सुदी ८ सम्वत् १९५२.

ह० गौरीलाल कासली वाल

पुत्र का नाम रखना ॥

संसारी पुरुष अपने सब काम सुन्दर चाहता है और विशेष करके नाम और नामवरी के वास्ते ही अपना जीतव्य अर्पण करता है। परन्तु नाम हर एक पुरुष का उस समय रक्खाजाता है जब वह बेहोश बालक होता इस कारण नाम के रखने में पिता माता आदि का ही अभिप्राय होता है। नाम पहचान के वास्ते होता है इस कारण वह नाम ऐसा ही होना चाहिये जिस से वह पहचानाजावे अर्थात् जिससे उस की जाति और पंथ आदि सब विदित होजावें यदि कोई मुसल्मान अपना नाम सुन्दरलाल रखले तो। वह अन्यथा और अयोग्य मालूम होगा हम यह बात देखते हैं कि हमारे कोई २ जैनी भाई मिथ्या अधकार में फस कर और अज्ञान भ्रष्ट कर के और धर्म से विमुख हो कर इस बात का भय कर के कि हमारे

बालक नहीं जीते हैं और यह निश्चय कर के कि बुरा नाम रखने से बालक जीता रहैगा बहुत २ बुरा नाम रखते हैं जैसे कि छज्जू घुर्घ घोड़ा मल फकीरा आदि परन्तु वह यह नहीं विचारते हैं कि नाम को और जीने से क्या सम्बन्ध है यदि वह बालक जिस का ऐसा बुरा नाम रक्खा गया है बड़ा होकर कोई प्रतिष्ठित पुरुष हो जाता है तो उस को अपने ऐसे नाम से बड़ी लज्जा प्राप्त होती है और बहुधा करके अपना नाम बदलना पड़ता है ॥

हमारी जाति में मूर्खता और मिथ्यात् का अधिक प्रचार होरहा है यह सब कुछ उस ही का महात्म है ॥

मिती फागुण सुदी १४ बृहस्पतिवार सं० १९५२ मुताबिक ता० २७ फरवरी सन् १८९६ ई० रात्रि को ७ बजे से श्री पंचायती जैन मन्दर जी धर्मपुरी टोला में सभा हुई, लाला भवानी प्रसाद उप सभापति ला० जगन्नाथ व लाला पन्नालाल कोषाध्यक्ष मुंशी प्यारे लाल मंत्री, लाला उमराव सिंह उप मंत्री ला० बनारसी लाल, ला० छज्जूमल, ला० चुन्नीलाल, ला० लालमन आदि और २ शहर के मुखिया और सर्व साधारण भाई सभा में एकत्र थे प्रथम मुन्शी प्यारे लाल मंत्री ने सुनाया कि पिछली सभा को सुनाया तत्पश्चात् उप मंत्री व ला० टोडरमल ने जैन प्रभाकर व जैन गजट में से अति उत्तम उपदेश रूप लेख सभा में सुनाये जिन को सुन कर सभा अत्यन्त प्रफुल्लित हुई इस के बाद मुख्य मंत्री सभा ने पिछली सभाओं की २ छपी हुई रिपोर्ट और फिजूल खर्चों के विषय में एक मजमून सुनाया जिस के सुनने से नये २ सभासदों को पिछली सभा की कुल कार्रवाई ज्ञात हुई इस के उपरांत बालविवाह के विषय में एक पुरतासीर जबानी व्याख्यान दिया इस में चार बातों का वर्णन किया ॥

१—शास्त्र के बमूजिब शादी की क्या उम्र होनी और अतीत काल में किस उम्र में शादी होती थी ॥

२—हिकमत की अपेक्षा क्या उम्र में होनी चाहिये ॥

३—अन्य २ देशों में शादी की उम्र की बाबत क्या रीति रिवाज है ॥

४—बाल्य विवाह से क्या २ हानि हमारी जाति को हुई ॥

हम बड़े हर्ष के साथ प्रकाश करते हैं कि हमारे परम प्रियमित्र बाबू नवलकिशोर साहब विद्यार्थी आगरा कालिज ने जैनी भाइयों की प्रथम उत्कृष्ट अवस्था और अब हाल की न्यून दशा को दिखाय कर एक अति उत्तम पुरतासीर व्याख्यान दिया जिस को सुन कर सभा हर्ष के मारे अंग में फूली न

सभाई —— बाबू स्वरूप चन्द लखमीचन्द को सभापति की तरफ से कन्याशिक्षा भेंट श्री मन्दर जी में पूजन, पाठ भजन हुआ आप ने अपनी पुत्री की शादी की खुशी में ११) रु० पाठशाला को प्रदान किये दो चांदी की रकाबी कीमती १०) श्री मन्दिर पसारी टोला की दी दो चांदी के गिलास दो रकाबी कीमती ३०) रु० बड़े पुरा के मन्दर जी को जो बाबू साहब की खास जमींदारी में है दी और ५) रु० बरासों जी के मन्दिर को दिये आप बड़े धर्मात्मा परोपकारी सज्जन पुरुष है; यहां के सब महोत्साही महाशयों में सर्वाग्रगण्य और हर एक धर्म कार्य में अगआनी रहते हैं ॥

लाला राम प्रसाद ने अपने पुत्र के जन्मोत्सव की खुशी में १) रु० पाठशाला को दिया-लाला कुडसेन के समधी (लाला पहुप सिंह चौधरी) बघेली गिरमसा थाना अटेर जिला भिण्ड राज्य ग्वालियर वाले ने अपने पुत्र के विवाह की खुशी में २१) मन्दर की और २) पाठशाला को दिये लाला मूलचन्द ग्यालोराम ने अपनी पुत्री के विवाह की खुशी में १) पाठशाला को दिया लाला पूरनमल के समधी (लाला मातीलाल) मौजा लावन जिला भिंड राज्य ग्वालियर वाले ने अपने लड़के के गौने की खुशी में ५) मन्दरजी कोदिये॥

करीब ११ बजे रात्रि को लाला भवानी प्रसाद वैद्य कायम मुकाम सभापति ने सभासदों को धन्यवाद दे जैकारा बोल कर आनन्द मंगल पूर्वक सभा विसर्जन की ॥

जैनियों का शुभचिन्तक
प्यारे लाल मास्टर
मंत्री जैन सभा इटावा

परम हर्ष के समाचार ॥

जैन सभा सवाई जयपुर ने फाल्गुण के महीने में होली के पेश्तर ऐसा विचार किया था कि होली व झारखी के दुर्दिनों में जैनी भाइयों का जाना मुनासिब नहीं इस विचार के अनुसार ऐसी प्रवृत्ति भी हुई कि उस रोज मन्दर जी पंचायती पाटोदी में चतुर्विंशति तीर्थंकरों का मण्डल पर पूजन हुआ और श्री संगई जी के मन्दर जी में भजन हुये यहां पर बहुत से भाइयों ने पधार कर पुन्य का लाभ लिया और सिवाय इस के यहां के श्री महाराजा साहब ने भी ऐसा प्रबन्ध किया कि नीच जाति की औरतें होली के दिनों में भंड वचन बाजार और गली २ में कायमा बकती थी उन का बकना भी बन्द कर दिया और एक खराब मकान चौड़े के रास्ते में वर्षों से रक्खी जाया करती थी कि जिस के देखने से

मरोफ लोगों को शर्मिन्दगी होती थी उस को भी उठा दी गई ॥

गोरीलाल कासलीवाल
कार्याध्यक्ष जैन सभा
जयपुर

(लोभ)

यह सब जानते हैं कि लोभ अति दुखदाई है संसार में जितने दुख हैं वह लोभ केही कारण उठाने पड़ते हैं लोभ में आकर मनुष्य भले बुरे के विचार को छोड़ देता है ॥

दोहा ॥

बुद्धिमान के नेत्र को लोभ करत है अन्ध । पशी को और मनुष्य को लालच करे सुबन्ध ॥

लोभी पुरुष को कभी सुखकी प्राप्ति नहीं होसकी है क्योंकि उसको कभी तृप्ति नहीं होती वरन चाह की अग्नि अधिक २ प्रचन्ड होती जाती है ॥

दोहा ॥

सप्तद्वीपको राजको होहि महीधर कोय अन्य द्वीप के लेनको इच्छा धारे सोय ॥

लोभी पुरुषों को बहुत चाह होती है वह लोभ के अन्धकार में ऐसे अन्धे होजाते हैं कि किसी प्रकार के भय से भी भयभीत नहीं होते यहां कि लोभ के वश में अपने प्राणों का त्याग देना भी पसन्द करते हैं ॥

दोहा ॥

पड़े जे दग्ध सुदामिन जो सुधा कुंड पर आय । तो हस्ती उन्मत्त है तू मजान भय खाय ॥

लोभी पुरुष को जिस बातकी चाह होती है सदैव उसका ध्यान उसको लगा रहता है और उसकी चाह में अति व्याकुल रहता है ॥

दोहा ॥

प्यासे को सर्प विषे अपने नेत्र मझार । दृष्टि पड़े सारा जगत ताल प्रकंपित वार ॥

हे भव्यजी यह लोभ अत्यन्त दुखदाई है लोभ की अग्नि किसी वस्तु से शान्ति नहीं होती है इस कारण लोभ को अवश्य त्यागना चाहिये ॥

सोरठा ॥

लोभी के हरिराम जग माया से नाभरे । ओस बूंद सों जैम + कूप न हो पूरण कदा ॥

दान ॥

संसारी पुरुष के वास्ते दानही पुण्य सञ्चय कराने वाला और सुख और यश के भंडार भरने वाला सज्जन पुरुष दया

बम होकर दान को सब मुख्य कार्य समझते हैं निःसन्देह धनाढ्य पुरुष अधिक धन दान में लगा सके हैं परन्तु धनहीन पुरुषों का किञ्चित मात्र भी दान देना उनसे अधिक होता है ॥

दोहा ॥

जो परमेश्वर का पुरुष आधी रोटी लेय ॥ दूजा आधा भाग जो भिक्षुक जन को देय ॥

धन पाने का यही फल है कि उससे जगत का उपकार किया जावे ॥

दोहा ॥

धर्म कुशल के कारने दुखिया को दुख टार। दीन जनों की पालना दुख को टेत निवार ॥

जो भिक्षुक तुम पास आ माँगे होकर दीन। इनसों अन्यायी पुरुष बल से लेवे छीन ॥

आज कल यह देखने में आता है कि धनवान पुरुषों को धन का अधिक लोभ होता है इस कारण वे एक पैसा भी दया हेतु खर्च नहीं करते ॥

दानी और उदार के धन नाहीं कर माहिं जैसर हम्माधीश हैं दान देत ते नाहिं ॥

निसन्देह धनाढ्य पुरुष लाखों और करोड़ों रुपया दान के नाम से खर्च करते हैं परन्तु यदि विचार कर देखा जावे तो वह सब कार्य जगत की झूठी मान बड़ाई के हेत होता है दान वही है जो दया करके दिया जावे-हे भद्र पुरुषो यह धन सम्पदा तुम को पिछले जन्म के पुण्य के प्रताप से मिली है यदि इससे आगामी के वास्ते कुछ लाभ न उठाया जावे तो बड़े शोक की बात है ॥

चौपाई ॥

जिसने धन सम्पत्ति के माहीं। दया हेतु कुछ दीना नाहीं ॥ धन सम्पत्ति की चाह मझार। मरा अन्त कर शोच अपार ॥ जो तू धन सम्पति को पाय + लाभ उठाने चाहे भाय ॥ दे जग को करुणा कर हिया। पुण्य प्राप्ति जो चाहे किया ॥

खुशामद ॥

खुशामद झूठी प्रशंसा करने को कहते हैं। बहुधा मनुष्यों को खुशामद सुनने की बहुत इच्छा होती है और झूठी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश होते हैं परन्तु यदि विचार कर देखा जावे तो यह बहुत बुरी आदत है और वास्तव में खुशामद करने वाला हमारा दुश्मन है। खुशामद करने वाला सब मक्कारों का सर्दार होता है वह खुशामद सुनने वाले को मूर्ख बनाता है और उसके दुष्ट कर्मों को पुष्ट करता है और अशुभ कार्य करने को प्रेरणा करता है वह सब बुरे कामों को भले करके दिखाता है। मनुष्य बुरा काम करने से तबही बच सकता है और जबही बुरा काम

छोड़ सक्ता है जबकि उसको उस काम को बुराई मालूम हो और खुशामद करने वाला बुराई को छिपाता है इस कारण खुशामद करने वाला वास्तव में बुराई करनी सिखाता है। यह बात देखी जाती है कि जो लोग खुशामद पसन्द होते हैं अर्थात् खुशामद सुनकर खुश होते हैं उनमें बुरे कामों की अधिकता होजाती है ॥

हमारा सच्चा मित्र वहही है जो हमारी बुराई हमको प्रगट करता रहै जिससे बुरे कामों से हमको घिन प्राप्त हो और लज्जा आवे ॥

दोहा ॥

जग प्रियतम के सङ्ग से हैं लोकों सन्ताप। जो मम दुष्ट स्वभाव को सुष्ट दिखावत आप ॥ निरखत मेरे दोष को विहसत गुण जोय। दिखलावै मम शूल को फूल चँबेली सोय ॥ कहां बसे बेधड़क रिपु निर्भय मम है जाय। जो मेरे सब दोष को सोपर करत प्रकाश ॥

धन का निरादर ॥

संसारिक सर्व कार्य धन हीसे सिद्ध होते हैं इस कारण संसारिक पुरुषों को धन अति प्रिय होना चाहिये और अति प्रिय है भी इससे यह बात स्पष्ट ज्ञात होती है कि जो धन का निरादर करते हैं उनको धन की चाह नहीं है और धन उनके पास रहना चाहिये। जिस किसी की हीन दशा होने को होती है तो वह आपही उलटे काम करने लगता है आज कल इस भारतवर्ष का भाग्य हीन है और विशेष कर हमारी जैन जाति के दिन बहुत खोटे आरहे हैं इस कारण कुल भारतवर्ष में और बहुधा करके इस जैन जाति में उलटे काम होते हैं किसी जाति की न्यून दशा का कारण विशेष कर निर्धनता होती है सो धन हीन यह जाति होती ही जाती है और जब कि धन का आदर नहीं तो निर्धनता क्यों नहीं। हमको बड़ा शोक और आश्चर्य प्राप्त होता है जब हम यह बात देखते हैं कि बहुधा मनुष्य धन उपार्जन में अति श्रम करते हैं और न्याय अन्याय योग्य अयोग्य का कुछ विचार नहीं करते हैं और बड़ा कष्ट उठाकर धन को सञ्चय करते हैं और फिर उस धन को बड़े निरादर से घर से बाहर निकाल कर फेंक देते हैं और ऐसे मूर्खता के काम करके नेकनामी और प्रतिष्ठा के भागी होते हैं। परन्तु क्या ऐसे पुरुषों की नेकनामी होसक्ती है कदापित् नहीं यदि ऐसे पुरुषों की नेकनामी होती भी तो नेकनामी को निकृष्ट वस्तु समझना चाहिये। हम यह बात सुनते हैं कि आज अमुक भाई ने दस हजार रुपया अपने पुत्र की शादी

में लुटाया और कल दूसरे भाईने पचास हजार लगाया और फिर तीसरे ने एक लाख रुपया लगाया। विचारना चाहिये कि इतना धन किस प्रकार खर्च कर दिया उसका ब्योरा अवश्य मालूम होना चाहिये। तहकीकात करने से मालूम हुवा कि कुछ रुपयेको तो बाग बगीचे बनवाई और लुटवाई सो यह अपयश तो पहिलेही मनाया क्या यह धन का निरादर नहीं है। बहुत सा रुपया बारहदरी पर और होली पर बखेरा इस से अधिक और क्या निरादर होसका है कुछ रुपया आतिशबाजी में फूंक दिया कुछ रुपया तूर और बाड़े के नाम से बांट दिया और बड़ा सारा धन व्यभिचारी और कुलटा स्त्रियों को खिलाया और उनका नृत्य कराकर पाप का उपार्जन कराया इसही प्रकार अन्य २ रीति से धन को घर से बाहर निकाल फेंका और धन का बहुत निरादर किया और वांछा करी नेकनामी की परन्तु धन का निरादर कर कर नेकनामी हो सकी है। परन्तु किसी ने कहा है कि बदनाम भी होंगे तो क्या नाम होगा। ऐसी नेकनामी बेशक होसकी है। इस प्रकार द्रव्य लुटाने वालों और नेकनामी की वांछकों की यह इच्छा रहती है कि ऐसा काम किया जावे जो पहले किसी ने न किया हो क्या यह दुष्टता नहीं है हम देखते हैं कि ऐसे पुरुष एक से एक नवीन कार्य करते हैं यदि एक पुरुष ने तूर और बाड़े में चार आने प्रति मनुष्य दिया तो दूसरा आठ आने देता है और तीसरा एक एक रुपया देता है। यदि पत्तल पर मिठाई एक पुरुष पाव सेर बनाता है तो दूसरा आध सेर और तीसरा सेर भर बनाता है यद्यपि खाने में केवल आध पाव मिठाई आती है और सब खराब जाती है। हमारे देश में यह रिवाज है कि बरात वालों को रुखसत के समय बेटी वाला एक एक कटोरा देता है सो यह कटोरा कांसी का तीन चार आनेकी लागत का होता है हमने सुना है कि किसी भाई ने चांदी के कटोरे बनाये हैं फिर कोई दूसरा सोने के कटोरे बनाकर दान करेगा इनको एक बात का अत्यन्तशोच है कि हमारे भाइयों का धन इस प्रकार व्यर्थ निकृष्ट कामों में क्यों खर्च होता है और क्यों नेकनामी की जगह बदनामी होती है। हमारी समझ में इसका यह कारण जान पड़ता है कि धन जिस प्रकार उपार्जन किया जाता है वैसेही कामों में खर्च होजाता है आज कल के समय बहुधा करके अन्याय और पाप कर्मों से द्रव्य उपार्जन किया जाता है इस कारण वह द्रव्य वेश्या नृत्यादिक पाप कर्मों में ही खर्च होजाता है और जिसको जगह अपजस पैदा करता है। ऐसा

रुपया अच्छे कामों में नहीं लग सक्ता है सुफल है और धन्य है उन सत् पुरुषों का धन जो अपने रुपये को धर्म और परोपकार्य में लगाते हैं वे लोग अवश्य जस कीर्ति पाते हैं ; परोपकार और धर्म अर्थ थोड़ासा भी धन खर्च करने से इतनी नेकनामी हासिल होती है जो उससे दस गुना फजूल खर्ची में लगाने से नहीं होसक्ती । धन का आदर करना और उसको अच्छे कामों में लगाना संसारी मनुष्य का मुख्य कार्य होना चाहिये ॥

श्रीयुत सम्पादक जैन गजट महाशय जैजिनेन्द्र आपके जैन गजट अंक ८ में होली से बचने का मूल मंत्र पढ़कर यहां के जैनियों ने मिती फागुण शुक्ला, चतुर्दशी को सभा में होली से बचने का सुविचार कर डाला और उस ही सभा में सम्पूर्ण जैन महाशयों के उपरांत बाबू हरीदास जी सिकन्दर हाकमी और लाला हुकमचन्द जी आदि अन्यान्य अग्रवाल वैश्य महाशयों ने भी जैन सभा को सुशोभित किया और सुशोभित करना ही क्या बल्कि बा० साहब ने तो सभा में खड़े होकर अपने वचनामृत रूप धारा से सम्पूर्ण सभा सदों को गद गद कर दिया अर्थात् ऐक्यता और व्यर्थ व्यय और कुरीति मेटन आदि कई विषयों पर व्याख्यान दिया और यह भी कहा कि इस जगह संपूर्ण वैश्य भाई एकत्र होकर एक वैश्य सभा स्थापन करें और ऐक्यता और मैत्री को बढ़ाकर कुरीति को त्याग सुरीति में प्रवर्तें और व्यर्थ व्यय को छोड़ सुव्यय करें भावार्थ आतशबाजी और फुलवाड़ी की एवज विद्याशाला औषधशाला व अनाथालय में द्रव्य खर्च करें इत्यादि प्रबन्ध तो सम्पूर्ण वैश्य जाति के मुखिया भाइयों की सम्मति पर निर्भर है सो भी समयानुसार होने की आशा है अब यहांके जैनियों की होली त्याग व्यवस्था सुनिये कि चैत्र बदी १ (हारंडी) को प्रातःकाल से हाकमी के चैत्यालय में श्री चौबीस महाराज के मंडल वि-धान की पूजा प्रारम्भ होकर सन्ध्या के चार बजे विसर्जन हुई और बड़ी खुशी की बात है कि हाकमी के कुल स्त्री पुरुष और शहर के भाई जवाहर लाल जी व मुनीम धानमलजी आदि के उप-रान्त वैश्य मतावलम्बी लाला मथुरा लालजी हुकमचन्द सज्जनों ने भी इस धर्म कार्य में अपने शुभ आगमनसे हमारा अत्यन्त उत्साह बढ़ाया और लाला मिश्री लालजी आदि विद्वानों ने अनेक राग रागनियों से पूजा पढ़ाई कि सुनने वालों का हृदय प्रफुल्लित होकर बीच बीच में धन्य घड़ी धन्य घड़ी की ध्वनि जगी इस तरह यहां के जैनी होली के धूम धड़के और धूल उड़ाने से बच गये और आपके जैन गजट को सच्चे हृदय से धन्यवाद देने लगे आगे शुभ मिती चैत्र बदी २ सम्बत १९५२.

दस्तखत

जैनियों का दास सूरजभान

केशियर जिला आगर मालवा

:वेद्यालय

।व को स्वीकार है
ति के वास्ते एक म-
अर्थात कालिज की
ावश्यक्ता है यद्यपि इस
कई वर्षों से उपाय हो
परन्तु अब तक कोई उपाय
नहीं बैठाथा क्योंकि वो उ-
धनाढ्य पुरुषों के आश्रय थे
धनाढ्य पुरुष सदा वोही
म करना पसन्द करते हैं जिस
। उन की मान बड़ाई होवे पर-
ु जैन महा विद्यालय के नियत
होने की अब हम को पूरी २ आ
शा होगई है और उस की सहा-
यता के अर्थ एक बहुत सहज उ-
पाय प्रचलित होगया है यह उपा
य मुन्शी चम्पतराय साहब डिप्टी
मजिस्ट्रेट नहर इटावा महा मंत्री
जैन महासभा ने विचारा है और
लाला गुलजारीलाल साहब की
कोशिश से कि जो बड़े परोप
कारी और धर्मात्मा सज्जन महा-
शय हैं प्रथम इसका प्रचार कान
पुर से हुआ है और इस के पश्चा-
त इटावा लखनो- जैपुर आदि न
रों में भी इसका प्रचार होगया
है और अन्य २ नग्रों में बराबर
हो रहा है यह उपाय ऐसा सहज
है कि हमारी समझ में इससे सहज
और कोई उपाय नहीं होसक्ता
है अर्थात् एक २ घर पीछे महा
विद्यालय भंडार की सहायतार्थ के
वल एक रुपयाका लेना जैसे कि-
सी नग्र में पचास घर होतों उस
नग्र से केवल पचास रुपये वसूल
करना, हमारी समझ में किसी भा
ईको भी घरपीछे एक रुपया देदो
मुश्किल मालूम नहीं होगा और
इसी कारण इसका प्रचार भी ब-
हुत जल्द होता जाता है और ब
हुधा नग्रों से इस प्रकार इकट्ठा हो
कर श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी
साहब के पास मथुरा जमाहोता
जाता है हम को आशा पड़ती
है कि बहुत जल्द सब नग्रों से इस
प्रकार रुपया आजावेगा यद्यपि ए-
क रुपया फी घर बहुत सूक्षम मा
लूम होता है परन्तु जैसे एक २
बिन्द जलसे सरोवर भरजाता है
इसी प्रकार एक २ रुपया घर से
भी बहुत कुछ होजाने की सम्भा-
ना है परन्तु हम अपने परोपका-
री भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि
बिना प्रेरणा के कोई काम नहीं
होता है चाहे कैसा ही छोटा और
सहज काम हो इस कारण जो २
भाई इस समाचार को पढ़ें उन

को चाहिये कि अपने २ नग्र में कोशिश करके बहुत शीघ्र ही एक २ रुपया घर के हिसावसे इकट्ठा करें और श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी सभापति जैन हमा सभा मथुरा के पास भेज देवें परोप कार की बराबर संसारी पुरुष के वास्ते पुन्य उपार्जनका अन्य कोई उत्तम उपाय नहीं है॥

—०—

मित्रता

आज कल इस भारत में कोई सच्चा मित्र दिखाई नहीं देता है यद्यपि बहुत पुरुष मित्र बननेका धोका देते हैं परन्तु मित्र नहीं है जो विपत्ति में काम आवै ॥

(दोहा) ताकों मित्र न जानतू जो तन विभव मझार ॥ कहैं मित्र भाई तुझै बौर वचन उचार ॥ पकडै हाथ जो मित्रका । आपत्ति काल मझार ॥ होय सहायक दुख हरै बुद्धी मित्र है सार ॥

बहुधा मनुष्य दूसरे की चिकनी चुपड़ी बातों में आकर उस को अपना मित्र समझ लेते हैं और उस पर भरोसा कर बैठते हैं परन्तु जब काम पड़ता है तो सिवाय पश्चात्ताप के अ[illegible] आता यद्यपि [illegible] शा ऐसी है कि [illegible] ऐसा न किया जावै [illegible] प्रकार संसारका कार्य [illegible] ता है यह बड़ी कठिनाई फिर भी बहुत देखभाल के परीक्षा करके मित्र बनाना च[illegible]

—०—

हर्षकेसमाचार

लाला मोहनलाल दौलतराम [illegible] चिट्ठी से मालूम हुआ कि रेवाड़ी एक प्रतिमाजी दीवार के नीचे से निकली थी जिन को निकले हुये अनमान एक साल के व्यतीत हुआ होगा सो अब सरकार अंगरेजी ने रेवाड़े के श्रावक भाईयों को वापिस देदी है [illegible]क प्रतिमाजी चैत्र वदी ४ सं० [illegible] मंगलवार के दिन दो पहर बजे रेल गाड़ी में सन्दूक में द[illegible] के रेवाड़ी के श्री बड़े मंदिरजी [illegible]ई गई जिला महाव कप्तान साहब कुमेटी साहब तीन अंग्रेजी अफसर साथ थे तहसीलदार वगैरः और भी छोटे २ अफसर साथ में थे— बाजार में हो कर लेगये और मंदिरजी में बहुत उत्सव के साथ पधराई गई ॥

(margin fragments: ग्राम सुरीति, कोड सुव्यय, फुलवाड़ी, राजा व, आदि, इया, मी, था)

॥ श्री. ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को देखना चाहिये ॥

मूल्य एक कोपी का डाकव्यय सहित केवल तीनपैसा है

हरअंगरेजी महीने की १—८— १६—२४ता०

को बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध से

देवबन्द जिलासहारनपुर मे प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष ता० १६ मई सन् १८९६ अङ्क २२

श्रीयुत बाबू सूरजभानजी जयजिनेंद्र

हम सब भाई आप को धन्य वाद देते हैं कि आपने बडा परो पकार किया कि यह अमूल्य पत्र जगह जगह को प्रकाश कर दिया इसके प्रकाश होने से धर्म का उद्योत महान होगया आपने सोते हुवे को जगाया हमारे य. हां भी सर्व भाईयों ने मिलकर सभा स्थापति की प्रथम सभा मि. माघ शुक्ला १४ सम्वत् १९५२ को हुई थी अब दोयम सभा मि. फाल्गुण शुक्ला १४ बृहस्पति

वार सम्वत् १९५२ को रात्रि के ... में शुरू हुई और ११ बजे तक बहुत आनन्द के साथ विसर्जन हुई सभापति लाला उलफति राय व उप सभापति लाला श्री ... राय व मंत्री लाला गुलजारी लाल व उपमंत्री चांदलाल व कोषाध्यक्ष लाला बद्री प्रसाद और सब भाई सभासद मुकर्रर हुए और दो चार आदमी अन्य मत वाले भी इस सभा में तशरीफलाये प्रथम लाला उलफतराय सभापति ने सभा के नियम में

व्याख्यान कहा फिर लाला श्रीपा
ल उप सभापति ने दस लक्षणी
धर्म के विषय में और लाला गु-
लजारीलाल ने धर्म के विषय में
और मैंने अपनी तुछ बुद्धि के अ
नुसार विद्या के विषय में व्या-
ख्यान कहा सब भाईयोंका चित्त
प्रफुल्लित होगया कई एक भाई-
यों ने शास्त्र स्वाध्याय करने की
प्रतिज्ञा की और कई एक भाई-
यों ने कुदेव के पूजने की और
कई एक ने होली के पूजने की प्र-
तिज्ञा की अब सभा हरमहीने
की सुदी १४ को हुआ करेगी बा
बूजी साहब यहां पर हम लमेचू
भाईयों के २० घर हैं लेकिन ए
कता अभी तक नहीं है इन बीस
घरों में तीन फरीक हैं और एक
मंदिर पंचायती व एक चैत्यालय
यहां पर है उस में चैत्यालयमें तो
पूजा प्रक्षालयका बन्दोबस्त बहुत
अच्छे तौर पर है यह है कि चै-
त्यालय सम्बन्धी प्रति घर से एक
एक भाई पूजा के वक्त जरूर आ-
ते हैं अगर न आवें तो उन से
एक आना प्रति दिन दंडका
लिया जाता है इस बन्दोबस्त को
किये हुये सात महीने हुए और
यहां पर दोनों वक्त शास्त्रजी हो
ते हैं और मंदिरजी में पूजा प्रक्षा
लयका कोई बन्दोबस्त नहीं है ब
डी अविनय होती है जब उन भा
ईयों के जीमें आती है तब पूजा
करते हैं यहां तक कि कभी कभी
पूजा पडी रहती है अकसर करके
पांचे व आठे व चौदश को भी
पडी रहती है हम चैत्यालय सम्ब
न्धी भाईयों ने प्रथम सभा में पू-
जाका बन्दोबस्त कर दियाथा व-
ह दो चार दिन चल कर बन्द हो
गया अब दोयम सभा में फिर
उन भाईयो से प्रार्थना की तो
सब भाईयों ने इनकार कर दिया
और एक मंदिरजी कई वर्ष से अ-
धबने पडे हैं इस सबब आप से
प्रार्थना करते हैं कि आप इस
मजमून को अपने अमूल्य पत्र
में प्रकाश कर दीजिये ताकि को
ई उपदेशक साहब धर्मका काम
समझ कर इस तरफ को पधारे
तो धर्मका उद्योत होना कुछ क
ठिन नहीं है अवश्य २ करके ध-
र्मका मार्ग चल उठेगा ॥

शुभ मिती फाल्गुण सुदी
१५ सम्वत् १९५२ वि०

आपका शुभ चिन्तक चोखे
लाल उप मंत्री सभा गांव मौजा
हिरोदी परगनह सकीट ॥
जिलाएटा

सच्चा दान ॥

हमारे जैनी भाई लाखों रुपया दान के नाम से खर्च करते हैं परन्तु शास्त्रोक्त दान में एक पैसा खर्च करना भी उन को कठिन होता है, जैन शास्त्र में सब से मुख्य विद्या दान को वर्णन किया है और इस की बहुत कुछ महिमा की है यद्यपि आज कल इस दान की अत्यन्त ही आवश्यकता है परन्तु हमारी जाति के धनाढ्य पुरुष इस विषय में धन लगाने को व्यर्थ समझते हैं हमारी जाति के सब भाइयों को प्रेरणा करने और नमूना बन कर दिखाने के वास्ते एक साधारण स्त्री ने एक हजार रुपया बाबू सूर्यभान, वकील देवबन्द सम्पादक जैन गजट को पास अब विद्या प्रचार के वास्ते दिया है और आज्ञा दी है, कि मूल द्रव्य कभी नाश न हो और इस का सूद उक्त बाबू साहब की सम्मति अनुसार विद्या प्रचार में सदा लगता है उक्त स्त्री को कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है और निःसंदेह सर्व जैन जाति को इस उदार चित्त स्त्री का अहसान मंद होना चाहिये और उस की परोपकारता को देख कर कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और हमारे स्वजातीय पुरुषों को कुछ लज्जित भी होना चाहिये कि हम से इतना काम भी नहीं हो सकता जितना स्त्रियें करती हैं इस महिमा योग धर्मात्मा परोपकारक दाता स्त्री का नाम कूड़ी है और इस सौभाग्यवती स्त्री के पति का नाम तोताराम है जो पहिले सुल्तानपुर रहते थे और अब किसी कारण से देवबंद जि० सहारनपुर में वास करते हैं बाबू सूर्यभान साहब ने उक्त एक हजार रुपया श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास जी सी. आई. ई. सभापति जैन महासभा मथुरा के पास जमा कर दिया है ॥

जो कोई जैन बालक जैन शास्त्र पढ़ना चाहै और जिस से खाने पीने का बंदोबस्त न कर सका हो अर्थात् निर्धन हो और पाठशाला में उत्तीर्ण होने के पश्चात् वेतन लेकर किसी पाठशाला का पाठक होना अङ्गीकार करै उस को ५) मासिक दिया जावेगा सो जिस किसी भाई को इस शर्त पर सहायता लेनी स्वीकार हो वो उक्त श्रीमान् सेठ जी साहब वा बाबू साहब के पास पत्र भेजे निश्चय होने पर जिस नगर की पाठशाला में पढ़ने का उस को सुभीता हो वहीं पर ५) मासिक भेज दिये जाया करेंगे जो विद्यार्थी को पाठशाला के प्रबन्धकर्त्ता के द्वारा मिल जाया करेंगे ॥

मूल्य प्राप्ति स्वीकार ॥

श्रावक पंचान श्रीजैन मन्दिर नानौता जिला सहारन पुर १)

श्रावक पंचान टीकमगढ़ जि० झांसी १)

लाला शिवबक्स चैन सुख मारफत लाला बिहारी लाल साहिबगंज जिला गया मुल्क बङ्गाल १)

लाला रूपचन्द केशरी मल साहब साहिब गंज जि० गया मुलक बङ्गाल १)

लाला प्रभू लाल वेटेनरी स्कूल लाहौर १)

श्रावक पंचायती जैन मन्दिर जहांज-पुर जिला मुरादाबाद १)

लाला सुमेरचन्द प्यारेलाल दूकान आढ़त सहारनपुर १)

बाबू जैदयालमल पारसल क्लर्क कान-पुर १).

लाला बलदेव सहाय गट्टूमल साहब श्रावक बल्लभगढ़ जिला दहली १)

श्री पंचान श्रावक भरतपुर १)

चमन सिंह साहब वकील नवीस दहली १)

जैन सभा हिसार १)

लाला माधोलाल मुरारि जुडीमल हिसार १).

लाला मुन्नदी लाल बल्दू वंशीधर हिसार १).

श्री जैन मन्दिर सिरसी जि० हिसार १)

लाला प्यारे लाल गनेशी लाल कान-पुर १).

तोताराम वंशीधर सरमागंज जिला मैनपुरी १).

लाला खुशीराम बिलासपुर जिलाबुल-न्दशहर १).

ला० मित्तरसैन साहब खातौली जि० मुजफ्फर नगर १).

ला० लखपत राय प्रभूदयाल बारह-बस्ती १).

ला० सुवालाल कटौली जि० मुरादा-बाद १).

ला० उग्रसैन कलर्क गोदाम बड़की जि० सहारनपुर १)

ला० लक्ष्मी नारायन स्कूल म.पूर उर्दू १)

ला० चेतराम रामलाल साहब सकीट जि० एटा १).

ला० रामचन्द्र परवार फीरोजाबाद १)

ला० मुन्नालाल द्वारकादास नं० २६ कलकत्ता १)

श्रावक पंचान ककरौली मारफत ला० बुद्धमल साहब ककरौली जि० मुज-फ्फर नगर १)

ला० बनवारी ला० मनोहर ला० देवी-सहाय सोहनला० शंकर रावलपिन्डी १)

ला० हीराला० पोस्टमास्टर तोपखाना नं० ८ रावलपिन्डी १)

ला० छोतरमल हरायस नवीस हापुड जि० मेरठ १)

श्रावक पंचान अम्बाला छावनी १)

ला० हरदयाल मन्न कालका जि० शिमला १)

सेठ गुरमुख राय सुखानन्द मारवाड़ी बाज़ार बम्बई १)

श्री जैन मंदिर मारफत ला० कुंज बिहारी ला० कुंदनकी जि० मुरादाबाद १)

बाबू गुर सिंह मलेटरी पेंशन कलर्क रायबरेली १)

ला० ओंकार जी चुन्नी ला० जी मीन कछ १)

श्रावक पंचायतो श्रीजैन मंदिर चिर्गगढ़ जि० अलीगढ़ १)

ला० मनगधनराय मजफ्फरगढ़ जि० दहली १)

ला० मुकन्द ला० मिटिया महल खालीपार सहारनपुर १)

श्री जैन मंदिर सिकोहाबाद जि० मैनपुरी १)

ला० बद्री प्रसाद महावीर प्रसाद मलीहाबाद १)

ला० छोतरमल सदर बाजार मेरठ १)

बाबू मंगलसेन तालिबइल्म चर्च मिशन स्कूल मेरठ १)

ला० टोनामल हुकुमतराय मुजफ्फर नगर १)

बाबू प्यारेला० वकील अदालत दहली १)

श्री जैन मंदिर मारफत हकीम शीतल प्रसाद दहली १)

ला० गोपाल सहाय श्रावक रोहतक १)

श्री जैन मन्दिर सिरसावा जिला सहारनपुर १)

श्री जैन मन्दिर मारफत ला० गुलजारीमल १)

धरमदास टिकैट नगर जिला बारहबंकी १)

ला० जै उमराव सिंह कमीच एडकैन मारचराट हांसी जि० हिसार १)

ला० कन्हैया ला० आफिस कानूनगो गुड़गावा १)

ला० नेमीचन्द रेवेन्यु एजेण्ट सफीपुर जि० उन्नाव १)

ला० हीरालाल फोटोग्राफर जानसठ जि० मुजफ्फर नगर १)

श्री जैन मंदिर मौहल्ला डिपेटी भूमीगढ़ १)

ला० चुन्नीलाल पटवारी साकिन मौजा जलालपुर जि० गुड़गावा १)

ला० बाबूराम श्रावक फतहपुर जि० बाराबंकी १)

ला० सांवलदास खजाञ्ची सोनीपत जि० दहली १)

ला० हीराला० रतनला० कामां जि० जैपुर १)

ला० चुन्नीलाल रामचंद कन्हैयाला० शेरगढ़ जि० मथुरा १)

श्री जैन मंदिर मारफत ताराचंद सेठ नाई की मन्डी आगरा १)

श्री जैन मंदिर अम्बहटा तहसील नकुड़ जि० सहारनपुर १)

श्री जैन मंदिर मारफत मंगईला० अजमेरा व मूलचंद काला सरवारजि० नसीराबाद १)

ला० मोहन ला० पिसर गुरदयाल मल श्रावक हिसार १)

श्री जैन मंदिर मारफत लक्ष्मीचंद सराफ बाह जि० आगरा १)

श्री जैन मन्दिर पञ्चायती कानपुर १)

ला० गुलजारी मल मन्त्री जैन सभा कानपुर १)

ला० मिट्ठूलाल सब ओवरसियर नहर गङ्गयाना जिला बुलन्दशहर १)

ला० रूपचन्द रईस सहारनपुर १)

श्री जैन मन्दिर तीतरौन जिला सहारनपुर १)

श्री जैन मन्दिर मारफत ला० मोहनलाल रहली जिला सागर १)

ला० गैन्डूमल सहाजन नगीना जिला गुड़गावां १)

श्री जैन मन्दिर परतापगढ़ जिला नीमच १)

लाला बाबूलाल लाट साहब का दफ्तर इलाहाबाद १)

श्री जैन मन्दिर फिरनी की सराय अलीगढ़ १)

ला० नानगराम मोहन ला० सौभा शोभापुर जिला फीरोजाबाद १)

ला० मुन्नला० संघई बमराना जिला झांसी १)

श्री जैन मंदिर जगाधरी जिला अम्बाला १)

भूरजी सूरजमल मोदी मनिहार गली जिला इंदौर १)

बकराम पेमाजी गोडे मन्त्री जैन सभा वरधा १)

श्री जैन मंदिर पञ्चायती मारफत ला० बिहारीला० घीली जिला मैनपुरी १)

बाबू पन्नाला० झनसमल दुर्गापुर जिला रङ्गपुर १

ला० सुखपाल दास क्षिमकी जिला सीतापुर १

श्री जैन मंदिर बादशाहपुर जि० गुड़गावां १

श्री जैन मंदिर मारफत ला० रामचंद्र किशोरीला० भान्डा जिला भुपाल १,

श्री जैन मंदिर पञ्चायती १,

ला० सालगराम लिमिटेड बैङ्क फर्रुखाबाद १,

सेठ मोहनला० साहब खुरई जिला सागर १,

ला० रामला० गुमाश्ता कमसरियट कोटा बिलोचिस्तान १,

श्री जैन मंदिर कैराना जिला मुजफ्फर नगर ३,

ला० जमुनादास पटवारी भडेर जिला गुड़गांवा ३,

ला० गनेशीला० डाफस मैन कोटा जि० नसीराबाद ३,

ला० सुंदरला० झालरापाटन जिला नसीराबाद ३,

श्री जैन मंदिर सिकंदरा जिला आगरा ३,

बाबू पांचुला० काला हेडमास्टर मिडिल स्कूल सांभर ३,

ला० नाथूराम बिजेगढ़ जिला अलीगढ़ ३,

पञ्चायती श्री जैन मंदिर अलवर ३,

पञ्चायती श्री जैन मंदिर नर्रामल पारसदास बिसवां जिला सीतापुर ३,

श्री जैन मंदिर शाहगढ़ जिला सागर ३,

श्री जैन मंदिर बड़नगर जिला इंदौर ३,

श्री जैन मंदिर बिरधीचंद गौरीशंकर बारान जि० नसीराबाद ३,

ला० हनुमान प्रसाद तिलोकपुर जिला बाराबङ्की ३,

श्री जैन मंदिर संघई मार्फत भूरेला० जानकी प्रसाद गोर सांभर जि० सागर ३,

श्री जैन मंदिर सुसनेर जिला इंदौर ३,

चौधरी हरनामसिंह सुल्तानपुर चिलकाना जि० सहारनपुर ३,

श्री कदलिया ला० लोरसांभर जि० सागर ३,

सेठ नानकचंद गौतम शोलापुर ३,

श्री जैन मन्दिर मंदसौर जि० नीमच ३,

बाबू कंवल किशन कानूगो फतहाबाद जिला हिसार ३,

ला० प्रियादास साहब श्रावक राजाकी मण्डी आगरा ३,

श्री जैन मंदिर छतरपुर जिला नौगंग ३

ला० सुंदर ला० जौहरी कलकत्ता ३,

ला० कंवरी मल पाटनी हींगन घाट जिला वरधा ३,

ला० प्रभुदयाल देवीदास बिसहरा जि० बाराबंकी ३,

ला० ब्रजराम ठेकेदार अहमदा बाद गुजरात ३,

श्रीजैन मंदिर भरतपुर जिला जैपुर ३,

श्रावक पञ्चान मौजा बड़ा तहसील कामा जि० मथुरा ३,

श्री जैन मंदिर रामपुरा कोटा जिला नसीराबाद ३,

श्रीजैन मंदिर पञ्चायती जसवन्त नगर जिला इटावा ३,

बाबू भजोरी ला० जी हेडमास्टर सवाई माधोपुर जि० टोंक ३,

श्री जैन मंदिर मारफत दिलसुख हजारीमल गोड़िया जिला भंडारा ३,

ला० जीवनला० वल्द धूमसिंह रामपुर जिला सहारनपुर ३,

ला० मङ्गतराय कानूंगो देहरादून १,
श्रावक पञ्चायती श्री जैन मंदिर देवरी
जि० सागर १,

विद्या की आवश्यकता ॥

विद्या की कमी जैनी भाइयों में बहुत होगई है यदि अब भी हमारे जैनी भाई कोशिश करें तो जैन धर्म की उन्नति होवे नहीं तो विद्याके प्रचार बिना बड़ी हानि दीख पड़ती है जैसा कि किसी कवि का वाक्य है ॥

विद्या नाम नरस्य कीर्ति रतुला प्रच्छन्न मन्तर्धनम्। विद्या भोगकरी पुनर्य शकरी विद्या गुरूणां गुरु: ॥ विद्या बन्धु जनो विदेश गमने विद्या परन्दैवतम्। विद्या राज सुपूजिता शुभ धन विद्या विहीनःपशुः ॥अर्थ। विद्या मनुष्य की अतुल कीर्ति का हेतु और छिपा हुआ धन है विद्या सुख को देती है और दूसरे मनुष्यों को बश में लाती है विद्या सब में उत्तम गिनी जातीहै परदेश में निर्वाह कराती है और राजाओं में मान कराती है और जो लोग विद्याकर रहित हैं वे पशुओं के तुल्य हैं अब मेरी प्रार्थना सर्व जैनी भाइयों से यही है कि विद्या का प्रचार फैलावें ॥

हम जैन महा सभा मथुरा के सभापति सेठ लक्ष्मणदासजी सी. आई. ई. महा मन्त्री मुंशी चम्पतरायजी व बाबू सूर्यभानजी व पं० प्यारेलालजी और हकीम उग्रसेनजी आदि महाशय को धन्यवाद देते हैं जो हम जैनी भाइयों को संसार के दुःखों से छुटाने के लिये कोशिश कर रहे हैं ॥

पं० मोहनलाल जैन पाठक
सदर मेरठ

अद्भुत चरित्र

ऐ जैनी भाइयो आज कल अत्यन्त आश्चर्यकारी खेल दिखाई देते हैं यद्यपि सर्व भारत निवासियों की एकसी दशा है परन्तु जैनियों के समाचार अत्यन्त अद्भुत हैं और शोक सागरमें निमग्न हो अश्रुपात की धारा आंखों से बहने लगती है यद्यपि इसमें किसी को सन्देह नहीं कि जैन मत ही एक कल्याणकारी मार्ग है परन्तु जैनी लोग उस मत की केवल प्रशंसा और बड़ाई कर ही प्रसन्न हो लेते हैं और कुछ भी नहीं इस को जानने श्रद्धा न करने और आचरण करने की कुछ आवश्यकता नहीं समझते जैन जाति को सब से ज्यादा मान बड़ाईने खराब कर रक्खा है मेरे विचार में तो यह आता है कि जैन धर्म और जैन जाति की न्यून दशा होने और उन्नति न करने का मूल कारण एक मानही है मान के कारण संसारिक कार्यों में तो झगड़े पड़ते ही हैं वर्ष

धर्म सम्बन्धी कार्यों में भी मान का प्रवेश होकर अनेकानेक विघ्न पड़ते हैं हम यह बात स्पष्ट देखते हैं कि यदि कोई भाई धर्मोन्नति और परोपकार का किसी प्रकार साधन करता भी है तो अन्य भाइयों के चित्तमें तुरन्त यह विचार आता है कि यदि इसके कार्य की सिद्धि हुई तो इसका बहुत नाम और बड़ाई होगी इस कारण इसके परोपकार के काम को नहीं चलने देना चाहिये और जिस प्रकार बने विघ्न डालना चाहिये ऐसा विचार केवल उन पुरुषों का ही नहीं होता है जो कुछ परोपकार का काम नहीं करसक्ते हैं वर्ण मुखिया पंच स्यानो और प्रतिष्ठित पुरुषों को ऐसा विचार अधिक रहता है और ऐसे ही पुरुषों के विघ्न डालने में विघ्न पड़ता भी है परन्तु यदि सोच कर देखा जावै और ध्यान दिया जावै तो वो ऐसा करने से अपनाही अपमान कराते हैं और अपनीही प्रतिष्ठा बड़ाई का नाश करते हैं बात कभी छिपी नहीं रहती और प्रतिष्ठित पुरुषों की बुराई बहुत शीघ्र जगत् विख्यात होजाती है ॥

दोहा ॥

जो निन्दक औ दोष को धारे अपने माहि। ज्ञान वाके मित्र जन एक दोष भी नाहिं ॥ और गुणतिसे एकभी अच्छो जन जो होय। ताकों देश विदेश में पहुंचावैं जग ाय। हमको बड़ा आश्चर्य है कि मान बड़ाई के वास्ते क्यों इतना परिश्रम किया जाता है कि धर्म कार्यों में भी विघ्न डालने को उद्यमी होना पड़ता है- एक दिन न एक दिन सब को मरनाहै और मरे पीछे सब बराबर हैं ॥

दोहा ॥

जो तू इक नरकों लखे- सकल कामना सिद्ध। यह भ्रम से दूजा पुरुष दुखित और मन विद्ध ॥ कर विलम्ब कुछ काललों-तो आजावे धूल। भेजा उनके सीस का जो जग में रहे भूल ॥

उठा मेह भूपति चहु दास पन का बीर। लिखो हुई प्राबल्य दल-आकर प हुंचो तीर ॥ जो मिट्टी मस्तक की खादे कोई आप। था यह भिक्षुक वाक्यनो यह न छिपाना जाय ॥

आवश्यक चिट्ठी ॥

भाई साहब सम्पादक जी जैन गजट जैजिनेन्द्र-आप ने जैन महासभा की आवश्यकता को दिखा कर और जो मथुरा जी में नियत होजाने के सुखसमाचार सुनकर और इसवर्ष की महा सभा का समय निकट बता कर सर्व जैनी भाइयों से यह प्रश्न किया है कि इस वर्ष की महासभा में किस २ विषय पर विचार किया जावे क्या २ प्रबन्ध आवश्यक है और किस प्रकार सब जैनियों को स-

न्नति हो जावे मुझ को एक बात का प्रबन्ध होना अति आवश्यक दृष्टि पड़ता है और सिवाय महा सभा के उस का प्रबन्ध होना कठिन ज्ञात होता है यद्यपि मैं इस लायक नहीं कि महासभा सम्बन्धी कार्यों में अपनी सम्मति देसकूं परन्तु धर्म की न्यूनता देख मुझ से चुप नहीं रहा जाता इस कारण से क्षमा होकर सविनय अपने विचार को प्रगट करने पर ही उद्यत होता हूं और आशा करता हूं कि यदि मेरा विचार सत्य होगा तो परोपकारी और प्रतिष्ठित पुरुष अवश्य उसका उपाय करेंगे और यदि असत्य होगा तो मुझे कृपा करके सूचित करेंगे ॥

(१) यह बात बहुधा देखी जाती है कि श्री जैन मंदिरों में जो सरस्वती भन्डार होता है उसमें श्री शास्त्रजी बहुधा अशुद्ध लिखे हुए होते हैं जिस कारण सभा में बांचते समय बहुत अविनय होती है और स्वाध्याय करने वालों को बड़ी कठिनाई पड़ती है और कभी २ विपरीत अर्थका भी श्रद्धान हो जाता है ॥

[२] यह बात भी बहुधा देखी जाती है कि जब किसी भाई को श्री शास्त्रजी लिखवाने की आवश्यकता होती है तो जैपुर आदि बड़े २ नगरों में वा प्रतिष्ठित पंडितों के पास वह इस विषयकी चिट्ठी भेजता है कि अमुक शास्त्रजी लिखवाने की आवश्यकता है परन्तु शास्त्रजी लिखने का बन्दोबस्त कहीं से नहीं होता और यदि कहीं से जवाब आता भी है तो यह जवाब आता है कि शास्त्रजी लिखवाकर भेज सके हैं परन्तु वह शुद्ध नहीं होसके इस प्रकार बहुत दिन व्यतीत होजाते हैं और उस भाई को जो शास्त्रजी लिखवाने की इच्छा रखता था वह द्रव्य जो उसने इसनिमित्त अर्पण किया था किसी और कार्यमें लगा देना पड़ता है ॥

हम यह बात भी देखते हैं कि श्री मंदिरजी में सरस्वती भंडार के कर्ता अर्थात् जिनके पास भंडार की ताली होती है वह स्वाध्याय करने वालों को समय पर शास्त्रजी निकालकर नहीं देते इसकारण स्वाध्याय करने वालों का उत्साह घट जाता है ॥

(४) पाठशालाओं के विद्यार्थी जैन ग्रन्थों को नहीं पढ़ सके हैं कारण यह कि विद्यार्थी निर्धन होते हैं और ग्रन्थ बहुमूल्य से प्राप्त होते हैं और प्रत्येक विद्यार्थी को अपने अलग २ ग्रन्थ रखने की आवश्यकता होती है इसी प्रकार और भी बहुतसी बातें हैं जिनको मैं इस स्थान पर विस्तार भय से प्रगट नहीं करताहूं परन्तु क्या इन बातों का प्रबन्ध करना अति आवश्यक नहीं है

ओर भी आचार्य्यों इस पञ्चम काल में
देव गुरु शास्त्र में केवल एक शास्त्र ही की
शरण रहगई है यदि हम इस को भी
अविनय करें तो क्या जैन धर्म स्थिर
रहसक्ता है कदापि नहीं इस कारण परोप
कारियों को सब से प्रथम इस का उपाय
करना चाहिये तथा महा सभा के वास्ते
इसका उपाय करना अवश्य है यदि
यही कार्य महा सभा से नहीं होसक्ता
तो कुछ भी नहीं हो सकेगा महा
सभामें बड़े २ विद्वान और धनाढ्य
पुरुष शामिल हैं वह इसका उपाय सह-
जही करसक्ते हैं अर्थात् महा सभा की
ओर से एक कार्यालय नियत होसक्ता
है जिसमें होशियार लेखक और विद्वान
पंडित रक्खे जावें इस कार्यालय से ग्रन्थ
लिखे जाकर और उत्तम रीति से शोध-
कर भेजे जाया करें और मूल्य लेलिया
जाया करे परन्तु सब जगह के श्री जैन
मन्दिरों से ग्रन्थ मंगाकर मुफ़ शोधकर
वापिस भेजे जावें और पाठशालाओं के
विद्यार्थियों को भी उनके पढ़ने योग्य
ग्रन्थ बिना मूल्य दिये जाया करें यदि
ऐसा उपाय नहीं होगा तो बहुत गड़
बड़ मचेगी और रोकी न रुकेगी ॥

भाइयों का शुभचिन्तक

एक जैनी

[सहज उपाय]

जैन गजट अंक १८ के साथ एक विज्ञा-
पन इस नाम का (जैनियों में विद्या
धन धर्म उन्नति क्योंकर होय) मोटे
कागज पर छपवाकर बांटा गया था
जिसमें जैन पाठक तयार करनेके वास्ते
एक पाठशाला के लिये भण्डार जमा
करने के लिये एक सहज उपाय प्रका-
शित किया गया है हमारी समझ में
इससे सहज उपाय और कोई नहीं हो
सक्ता उसमें लिखा है कि यदि चौदह
लाख जैनियों में से चार लाख जैनी एक
पैसा एक वर्ष में भी देवें तो चार लाख
पैसों के ६२५० रुपये होते हैं एक वर्ष
के लिये एक पाठशाला को यह द्रव्य
बहुत काफी है और इसके इकट्ठा करने
का यह उपाय दिखलाया गया है कि
प्रत्येक नगर ग्राम के श्री जैन मन्दिरों में
एक गोलक रक्खी जावे इस हेतु कि जब
किसी भाई के चित्त में उदारता हो वह
पैसा दो पैसा उस गोलक में डाल देवे
यद्यपि साल भर में एक भाई को कई २
बार उस गोलक में डालने का अवसर
मिलेगा परन्तु कम से कम एक पैसा
प्रति वर्ष तो एक भाई का होही जावेगा
क्योंकि भाद्र पद मास दश लक्षणी व्रतो-
त्सव में और विशेषकर चौदस के
दिवस प्रत्येक सब भाई मन्दिर जी में
जाते हैं इस कारण श्री चौदस के दिवस

एक पैसा अवश्य उस गोलकमें डालदेना चाहिये और भाद्र मास की पूर्णमाशी को वह गोलक पञ्चायत में खुलनी चाहिये और नयों का रुपया एक जगह जमा होजाना चाहिये इस प्रकार सहज ही में विद्या का प्रचार होता है हम को आशा पड़ती है कि इस उपाय को सब ने अङ्गीकार किया होगा और अपने २ नगर में श्री जैन मन्दिर में गोलक रक्खे जाने की कोशिश करते होंगे क्योंकि भाद्रव मास निकट आगया है इस कारण बहुत शीघ्र इसकी कोशिश होनी चाहिये और कृपा करके जहां २ पर गोलक रक्खी जावें वहां के भाई हम को भी सूचित कर दें हम इस विषय का एक रजिस्टर बना रहे हैं जिस २ जगह गोलक का रखना जाना हमको ज्ञात होता रहेगा उसको हम जैन गजट में भी प्रकाश करते रहेंगे ॥

अब जैन कालिज बनगया ॥

हमारे भाइयोंको मालूम होगा कि अनुमान ८ वा ९ वर्ष व्यतीत हुए जबकि हमारे परम परोपकारी मुंशी मुकन्दराम व पण्डित चुन्नीलालजी ने जैन कालिज नियत होने के वास्ते बीड़ा उठाया था और इस हेतु देशाटन करना प्रारम्भ किया था उस समय रामपुर के नहटौर में [illegible] जिले बिजनौर के जैनी भाइयों ने पांच हजार रुपये का चिट्ठा उक्त मुंशी साहब और पण्डितजी साहब की प्रेरणा से लिखा इस प्रकार अन्य परोपकारी भाइयोंने भी इस विषय में अपना धन अर्पण किया और कुछ २ अन्य साधारण भाइयों से भी इकट्ठा किया परन्तु जैन धर्म दिवाकर मुंशी मुकन्दरामजी के स्वर्ग वास होजाने के कारण न जिले बिजनौर का चिट्ठा वसूल हुआ और न अन्य परोपकारी भाइयों के पास से इकट्ठा हुआ अब हमको बड़े हर्ष के समाचार प्राप्त हुए हैं कि उक्त परम परोपकारी पं० चुन्नीलालजी की कोशिश से नयों द्वारा जिला बिजनौर का चिट्ठा २५०) रु० वसूल होगया है और बहुत जल्द जिले बिजनौर के अन्य नयों का रुपया वसूल होने वाला है पंडित चुन्नीलालजी २८ अप्रैलको नहटौर पधारे थे सो सर्व भाइयोंको एकत्र करके पक्षपात के निषेध में एक उत्तम उपदेश दिया और प्रत्येक मास की पूर्णमाशी को सभा होना नियत कराया उसी समय उपरोक्त २५०) रुपये इस भांति वसूल हुए ॥

१५०) रुपय ला० खेराती लालजी धन कुमरजी
५०) लाला शुभ मन्दिरदासजी
२५) ला० रामनन्दजी
११) ला० धनसिंह जी

५) ला० हरदेव सहाय दरबारी मलजी
५) ला० शंकरलाल मुन्नालालजी
२) ला० मक्खनलालजी
२) ला० शंकरलाल प्रभुदयालजी

मालूम हुआ है कि लाला खैराती लालजी जो बड़े धर्मात्मा और ज्ञानवान पुरुष हैं चिट्ठा लिखने के वक्त भी बहुत हिम्मत और कोशिश की थी और अब चिट्ठा वसूल होने के समय भी सब से पहले आपही ने रुपया दिया इस वास्ते हम सकल भाइयों को अनेकानेक धन्यवाद करते हैं कि वो जैन कालिज का चिट्ठा वसूल होने में अगवानी हुए हैं और चिट्ठा देने में अन्य भाइयों के लिये प्रेरक बने हैं अब जैन कालिज के बनने में कोई सन्देह नहीं रहा क्योंकि द्रव्य एकत्र होना प्रारम्भ होगया है और जाति शिरोमणि श्री मान् सेठ लक्ष्मण दास साहब सी. आई. ई. सभापति जैन महा सभा मथुरा ने यह रुपया अपने पास जमा करना स्वीकार करलिया है इस कारण सर्व भाइयों से प्रार्थना है कि जिस २ भाई के पास जो कुछ जैन महा विद्यालय भंडार अर्थात् जैन कालिज का रुपया जमा हो वो किसी समय उसमें देना स्वीकार किया हो वह बहुत जलद भेज देवे ॥

रिपोर्ट लाला बनवारीलाल उपदेशक ॥

आगे मिती वैसाख बदी ५ सम्वत् १९५७ को खेरी जिला मैनपुरीमें सभा कराई गई सब भाइयों को बुलावा भेजा गया पहले तो भाइयों ने आने से इन्कार किया फिर मैंने बड़ी कोशिश से सर्व भाइयों को इकट्ठा किया उस वक्त अनुमान दोपहर के ११ बजगये थे परन्तु पूजन प्रक्षाल भी उस समय तक नहीं हुआ था हाय २ बड़े शोक की बात है कि यहां के भाई ऐसे कठोर हृदय हैं कि पूजन और प्रक्षाल करने को भी कोई नहीं आता और बड़े २ धनाढ्य हैं जिनकी दुकानें कलकत्ता बम्बई आदि बड़े २ नगरों में हैं और सब तरह बात वाले भीहैं परन्तु न मालूम धर्मकी तरफ रुचि क्यों नहीं है- यहां का मन्दिर अति सुन्दर है और प्रतिमाजी अति मनोज्ञ विराजमान हैं लेकिन मैं धन्यवाद देता हूं कि मेरे कहने को सर्व भाइयोंने स्वीकार किया और पूजन करने वास्ते अपनी २ बारी बांधली है और प्रतिज्ञा करली है कि यदि कोई भाई अपनी बारी एक दफै चूक जावे तो ४ आने दंड और फिर दुबारा चूके तो ८ आने दंड देवेगा ॥

अब धन्य है ऐसे भाइयों को कि जिन्होंने इस धर्म कार्य को अङ्गीकार किया है ॥

फिर सभा प्रारम्भ की गई पहले व्याख्यान मैंने विद्या के विषय में दिया फिर लाला चम्पारामजी मौजा जिर्समी जिला एटा निवासी ने धर्म दर्शन करने का अनेक तरह से सिद्ध किया फिर सभा के विषय मैंने व्याख्यान देकर सभा नियत कराई जिसमें सभापति लाला भोलानाथ गिरधारी लाल, मन्त्री लाला मक्खनलाल चेतराम, कोषाध्यक्ष लाला काशीराम पन्नालाल, और अन्य भाई मेम्बर हुए सभा हर मास में १ बार हुआ करेगी ॥

और मिती बैसाख सुदी ६ को रामपुर जिला मैनपुरी में सभा नियत कराई जिसकी रिपोर्ट पहले अखबार में छप चुकी है यहां मन्दिर बहुत अच्छा है यहां के जैनी भाई बड़े धर्मात्मा हैं ॥

पाढ़म जि० मैनपुरी की सभा में फजूल खर्ची दूर करने का प्रबन्ध किया गया था सो सर्व भाइयों ने स्वीकार करलिया और सभा प्रति मास में एक दफे होती है ॥

[धर्म कार्य]

निम्न लिखित लेख को छापा करके अपने जैन गजट में स्थान दान दीजिये ॥

यह कसबा अर्थात् सवाई माधोपुर रियासत जैपुर के अन्य ग्रामों से बहुत बड़ा व अधिक आबाद है यहां जैनियों के घर अनुमान (२००) के हैं अनुमान २० घर तेरा पन्थियों के हैं बाकी २० पन्थियों के हैं सात मन्दिरजी, चार चैत्यालय खास ग्राम में हैं- १ मन्दिर मु० आलनपुर में जो यहां से पौन मील के फ सले पर है श्री के नाम से विख्यात है यह उत्तम धाम है थोड़े वर्ष पहले यहां दूर २ के यात्री आया करते थे परन्तु अब काल के दोष से यात्री कम आते हैं एक टूटी फूटीसी पाठशाला भी है जैनियों के लड़के बाकायदा पढ़ने नहीं जाते एक आदमी अध्यापक पंडित शोभालालजी व्यास को श्री युत सेठजी साहब पंडित छोटेलालजी भौंसाने ५) रु० माहवार देकर मुकर्रिर कर रक्खा है वही उक्त सेठजी साहब के पुत्रों को घर पर आकर चन्द्रिका सारस्वत रघुवंश इत्यादि पढ़ा जाते हैं और और भाइयों के पुत्र केवल भक्तामरजी सूत्रजी पूजन इत्यादि तो पढ़ते हैं आगे पढ़ाई जारी नहीं रखते कि विद्वान होकर शास्त्रजी बांचा करैं- न पढ़ने का कारण केवल मुफलिसी है कि उनको छोटीसी उम्र में कमाने खाने का फिकर दामनगीर होजाता है- अब ऐसी सूरत में पढ़ाई की तरक्की होना असम्भव है-उक्त सेठजी

साहब धर्म कार्य में बहुत रुचि रखते हैं अर्थात् आजकल आप १ मन्दिर को तेरा पन्थियों के नाम से विख्यात है बना रहे हैं; इसी मन्दिर में आप प्रातःकाल व सायंकाल दोनों वक्त शास्त्रजी बांचकर धर्म श्रवण कराते हैं- अष्टानिका तथा भादु मास में आपही के हेतु से मंडल विधान पूजन भजन नृत्य इत्यादि होते हैं और बड़ाही आनन्द रहता है चातुर मास में चार मास पर्यन्त आप मये दीगर भाइयों के बड़े उत्साह के साथ श्री सांवलाजी महाराज के मंदिर में जाकर भजन सांयकाल के सात बजे से १० बजे तक गान करते हैं और साजिन्दों को तनखाह अपने घर सेही देते हैं- आप की धर्मकार्य में रुचि बहुत है कहां तक लिखी जावे बल्कि मुझे यह कहना लाजिम आयाकि यहां धर्मरूपी जहाज तो केवल आपही के सहारे से चल रहा है = और और भाई साहब अर्थात् नाथूलालजी साहब चौधरी व पांचूलालजी वैद्य इत्यादि महाशयों की रुचि इस तरफ है तो सही परन्तु उनको फुरसत स्वकार्य से कम मिलती है इसी हेतु से शास्त्रजी केवल १ ही मन्दिरजी में बचता है- यद्यपि उक्त सेठजी साहब के हजारहा रुपये का व्यापार [होती है तथापि धर्म के काम को मुख्य जानकर मुख्य २ महाशयों की जवानी तथा शास्त्रजी के समय शिक्षा देकर व्रत इत्यादिक अङ्गीकार कराते हैं और जहां तक मुमकिन होता है धर्म वृद्धि मेंही तत्पर तन मन धन से होरहे हैं-परन्तु यहां के भाइयों की रुचि बहुत कम नजर आती हैं इसका सबूत यही है कि शास्त्रजीके समय दसबारह जैनियोंसे अधिक उपस्थित नहीं होते अलवत्ता भाद्रव मास में तो प्रायः सब की रुचि होजाती है और बड़े हर्ष पूर्वक करते रहे हैं ॥

सर्व जैनी भाइयों का दास

भरौंरीलाल पापड़ीवाल

हेडमास्टर सवाई माधोपुर

जिला टौंक

(ज़रूर ही पढ़ियेगा)

अरे ज़माने अपना खूब हाथ रंगा है जो चाहता है सो करता है कुल बुराइयों पर हावी है नेक आदमियों को कार्यों को फटकने भी नहीं देता सर्व जगह तेरा ही डंका बज रहा है- सर्व मनुष्य काल का दोष बता रहे हैं परन्तु जहां तक मैं ख्याल करता हूं और देखता हूं तो यही ज्ञात होता है कि काल तो इस कदर बलवान नहीं है परन्तु जो इस का मददगार है वोह बड़ा भारी बलवान है जिस ने कुल नेक कार्यों और कुल उन्नति को दबा लिया है कोई कार्य अच्छा नहीं करने

देता है हमारे धर्म कर्म बुद्धि बल आचरण सब को नष्ट कर दिया है और करता जाता है यदि अब यह नष्ट नहीं हुआ तो हमको सर्व प्रकार नष्ट करदेगा आज कल भारत में इस का खूब ही झंडा गड़ रहा है और मुख्य करके हमारे जैनियों में तो खास इसने अपना राज्य ही कर रक्खा है और हमारे जैनी भाई भी इस का आदर भली भांति कर रहे हैं जिस के सबब से नियोमती जात्योन्नति की तरफ तो ध्यान ही नहीं है बल्कि उस के सत्कार करने में इस कदर मग्न हो रहे हैं कि धर्म कार्यों से तो कुछ काम ही नहीं रहा हायरे ! पञ्चम काल के जैनी भाइयों पर कैसा इस अविद्या रूपी अन्धकार जमाने मददगार के इन को अकल पर परदा डाला है कि जिस के सबब से हमारे धर्म कार्यों में बहुत हानि आगई है जैनी भाइयो किंचित ध्यान दो और सोचो कि जो तुम्हारे नेक कामों को ढांक ले और अच्छे काम करते हुओं को डाट बतलावे, उन्नति के प्रचार को हर तरह से रोक देवे आप के धर्म को नष्ट करे क्या निस्सन्देह यह आप का दुश्मन नहीं है ? मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि यह ऐसा दुश्मन है कि जिस के नाम लेने से ही रोमांच खड़े होजाते हैं भला उस के दुष्टता के कार्यों को तो कहना ही क्या है इसी दुष्ट ने हमारी जाति में व्यर्थ व्ययकी जड़ जमा कर हम लोगों को निर्धन बना दिया और हमारी कौम की स्त्रियों को अपने सनातन जैन धर्म से विमुख कर के पाखण्ड मतों की ओर झुका दिया जिस के सबब से कुदेव आदिक की पूजा करना उन के चित्तों में ऐसा जम गया है कि किसी प्रकार हटाए नहीं हटता और भाइयोंमें फूट कराके घर २ में मूर्खता फैलाई जिस दुष्ट ने ऐसे २ हमारी जाति पर अत्याचार कर रक्खे हैं तिस को हमारे जैनी भाई आदर सहित ग्रहण करते हैं अब हे भाइयो सर्व बुद्धिमानों से प्रार्थना है कि इस अविद्या रूपी अन्धकार जमाने के मदद गार को दूर कर के विद्यारूपी प्रकाश को ग्रहण करो जब तक यह अन्धकार तुम्हारे हृदय से दूर न होगा तब तक धर्मोन्नति व जात्योन्नति का होना बहुत दुश्वार है ॥

जैनी भाइयों का शुभचिन्तक
बाबूलाल जैन हेडमास्टर
मिडिल स्कूल साभर

श्रीयुत बाबू सूर्यभान जी वकील श्रीयुत लिछमी चौधरी से लाला गणेश-राम आदि सकल जैनी भाइयों को जैजिनेन्द्र बचना जो आगे यहां भी

वर वैशाख सुदी १४ सायंकाल को भाई साहब सरूपचन्द जी ने जैन पाठशालाके विद्यार्थियों का इम्तिहान लिया सो ७ बजे से ८ बजे तक और ८ बजे से ८ बजे तक शास्त्र जी हुए और शास्त्र यहां पर दोनों वक्त भाई प्यारे लाल अध्यापक बांचते हैं और ८ बजे से सभा प्रारम्भ की और सभा यह आज ही स्थापित की है सो उसी दिन आप का जैन गजट आया सो प्यारेलाल अध्यापक जी ने बांच कर सुनाया सो सब भाई सुन कर अति आनन्द को प्राप्त हुए फिर गनेश राम जी ने उसी समय खड़े होकर सम्यक्त की महिमा और मिथ्यात् विषय में व्याख्यान दीया सो सुन कर सर्व स्त्री पुरुष अति आनन्दित हुए और उस समय सभा में करीब स्त्री पुरुष ४० होंगे सो सभा ने एक गोलक रक्खी अध्यापक प्यारेलाल जी के कहने से सभा विसर्जन पश्चात गोलक में ।ﮮ) आने पैसे आये और इसी माफिक हर एक चतुर्दशी को गोलक रक्खी जायेगी और रोज मर्रह यह गोलक मन्दिर जी में रक्खी रहैगी जो पैसा जमा होगा सो जैन विद्यालय अजमेर को भेजा जावेगा और हर एक जीव एक पैसे से कम न डालेंगे सो आप इस लेख को छपा कर अपने जैन गजट में स्थान दीजियेगा जिस से कि सर्व भाई इस मूजिब अपने २ मंदिरों में रक्खें और सभा के समय सभा में स्थापित करें तो बहुत द्रव्य इकट्ठा हो जावेगा और यहां पर जैनियों के घर २०० जिसमें कुल भाई ५०० के अनुमान हैं

—— ० ——

चर्चा ॥

श्री युत महाशय बाबू सूर्यभान जी वकील जयजिनेन्द्र कृपा करके इस लेख को अपने अमोल्य जैन गजट में स्थान दान दीजिये उभयचापिशम् ॥

सदुपदेश ॥

विद्या दान के समान कोई दान हुआ है न होगा इसलिये संस्कृत पाठशाला स्थापन के हेतु अवश्य यत्न करो जब तक संस्कृत विद्या की उन्नती न होगी तब तक स्वइष्ट धर्म की उन्नती भी होना असम्भव है, विद्याहीन, पशु के समान माना गया है, इस हेतु मनुष्य देह को पाकर संस्कृत विद्या से विमुख मत रहो किन्तु संस्कृत विद्या सम्बन्धी पठन पाठन के हेतु अवश्य लक्ष दो, प्रथम तो विद्या के पढ़ाने में महा क्लेश ही होता है, परन्तु फिर विद्वान होजाने पर उसके समान किसीका मान नहीं होता, धर्म

करो धर्म करने से धन नहीं घटेगा किन्तु धन का दीपक धर्म ही है, जब तक तुम धन उपार्जन कर सकोगे, तब तक तुम्हारे बान्धव भी तुम से प्रसन्न रहेंगे, और जिस दिन तुम धन उपार्जन करने में असमर्थ होजाओगे तब कोई बान्धव भी पास नहीं आवेंगे, इस कारण समर्थ दशा में जो कुछ धर्म स-म्बन्धी सत्कर्तव्य करना होतो करलो, धन भी निष्प्रयोजन ह्रथा मत जाने दो, किन्तु कुछ न कुछ अच्छे काम को करते २ ही समय को व्यतीत करो मंपूर्ण भाई साहिब — यहां एक जैन पाठशाला है लड़के लगभग १५ - २० पढ़ने आते हैं प्रबन्ध कर्ता की पाठशाला में अतीत निगरानी है संस्कृत और जै-न धर्म सम्बंधी विषय पढ़ाये जाते हैं पढ़ाई का काम सुंबइ पुन: हर सिटी के परीक्षालयके माफिकही है पढ़ाई अच्छे प्रकार की होती है परन्तु सब जैनियों से सविनय यह है कि पाठशाला का काम आधा हो के पड़ा है इस पाठशाला बनाने के वास्ते, शिवनी, नागपुर आदिक भाइयों ने सहाय दिया था परन्तु अब आधा काम रहा है इस वास्ते कोई महाशय आधा रहा हुआ काम पूर्णसं कर देंगे तो उन को महत्पुण्य का लाभ होगा॥

जैनी भाइयों का दास

गङ्गाराम सीताराम श्रावक
जैन पाठशाला वर्धा
मध्य प्रदेश

जैन औषधालय अजमेर

इस नाम का एक औषधालय अजमेर में नियत हुआ है और इसका नियम पत्र भी हमारे पास आया है जिसके देखने से यह मालूम होता है कि यह औषधालय यदि इसको सहायता हो-ती रही तो बहुत लाभ दायक होगा विशेष बातों लाला पन्नालाल मगनचंद कार्याध्यक्ष अजमेर से मालूम हो स-क्ती है॥

उपकारी पुरुष

मित्र श्री सरब उपमा योग्य विराजमान श्री पत्री भाई सूरज भानु वकील योग्य रघुनाथ दास का जैजिनेन्द्र बंचना पत्र कुशलतत्र मु श्री समाचार १ संवत आगे जैन गजट मैंने अपने पास मं शास्त्र की सभामें पढ़ने को मो॰ मथुरा भेजा वहां के भाइयों ने पढ़ कर बड़ा आनन्द माना और गजटके ग्राहक बन फिर जेठ बदी २ मैं भी वहां गया तो लोगों ने रंचाइनी चिट्ठी गजट मगाने की मुझ को भी और यह कहा कि आप हम को भी ग्राहक बनाइये गजट हमारे यहां इसपते से भेजना॥

पता मु॰ मरथरा डाक खाना प॰
जि॰ एटा पास लखमीचन्द
हजारीलाल जैन

विजैगढ

श्रीयुत धर्मानुरागी परोपकारी भाई सूर्यभानुजी वकील सम्पादक जैन गजट जोग्य लिखी विजैगढ से नाथूराम मथुराप्रसाद की जयजिनेंद्र वंचने यहां श्रीधर्म के प्रभाव से क्षेम कुशल है आप की क्षेम कुशल सदां धर्म के प्रभाव कर भली चाहते हैं आगे समाचार १ वंचनाजी ॥

आगें आपका जैन गजट हम लोगों को बडी सहायता देता है हम आप को कोटिशः धन्यवाद देते हैं और आपने धर्मका बडा उपकार किया हम लोगों की बडी न्यूनदशा हो रही थी सो इसने हओं को बचा लिया अब यहां पर शास्त्रजी की सभा में होलीका खेलना त्याग दिया है उन के नाम लिखते हैं लाला मुकन्दलाल व नाथूराम व मथुराप्रसाद व सुखनन्दन पदमावती पुर वालोंने और शास्त्रजी के सुनने से गंगेलवाल भाई दर्शन करने को आते हैं और लाला इन्द्रप्रसादजी साहब ही हम सर्व भाईयों में मुखिया, सज्जन, शिरोमणि हैं अगर लाला साहब धर्म में प्रवर्तने लगे तो सर्व गंगेलवाल भाई भी प्रवर्तें अब यहां पर सर्व लिखनेका यह आशय है कि कोई उपदेशक साहब नहीं पधारे– लाला इन्द्रप्रसाद फारसी पढे हुये हैं संस्कृत पढना चाहते हैं उन की उम्र २८ साल की है अब हम सर्व भाईयों से हाथ जोड कर प्रार्थना करते हैं कि धर्म तरफ रुचि करो ॥

नाथूराम मथुराप्रसाद

चिट्ठी

महाशय बाबू सूर्यभानजी यजाजिनेंद्र:

जैन गजट साप्ताहिक पत्र आया बांच कर परम आनन्द भया यह कार्य आपने बहुत उत्तम किया जो कि यह दुर्लभ उपदेश अति सुगम कर दिया इस कार्य से अस्मादि पुरुषों को बहुत ही लाभ पहुंचेगा इस विषय में हम आपको कोटिशः धन्यवाद देते हैं अब कृपा करके पत्र बराबर नम्बर वार भेजते रहिये मूल्य भेजते हैं हम को भी ग्राहक गणों में गिनती कर कृतार्थ कीजिये ॥

पन्नालाल गोधा
अजमेर

मिथ्यात्व

मर्दुम शुमारी के नकशे जो बहुधा नगरों से आते हैं उन से और अन्य प्रकार भी यह बात मालूम होती है कि जैनियों में धर्म की रुचि बहुत कम होगई है क्योंकि यह मालूम हुआ है कि बहुधा जैन मंदिरोंमें पूजन प्रक्षालय के वास्ते नौकर रहते हैं और बहुधा मंदिरों में पंचायत की ओर से पूजा करने वालों की बारी मुकर्रर है इत्यादिक और भी बहुत सी बातें धर्म से रुचि न होने की देखी जाती हैं परन्तु इस के स्थान पर हम यह बात भी देखते हैं कि हमारे जैनी भाई बड़े रुचि और अनुराग के साथ सीतला माता के भवन को पुजने के अर्थ जाते हैं काली देवी को चढ़ावा चढ़ाते है गूंगा पीर को सिर नवाते हैं शाकम्बरा देवी की यात्रा को जाते हैं मीरांजी का मकान चिन वाते है सैयद साहब की कबरपर चिराग जलाते हैं और इसी प्रकार अन्य सैकड़ो देवी देवता ओं को मनाते हैं और जैनी नाम धराते हैं हाय २ हमारी लज्जा कहां गई हम कैसे बेशरम होगये कि ऐसे २ काम करते हुये भी अपने आप को जैनी कहें जहां तक हमने विचार किया है कारण इसका यह मालूम होता है कि हमने केवल जैन जाति में जन्म लेने से ही जैनी होना और मुक्तिका प्राप्त होना समझ रक्खा है चाहै काम कैसे ही करें कुदेव आदिकका पूजना इस हेतु होता है कि सुख की प्राप्ति हो और दुख दूर हो परन्तु ऐ जैनी भाईयों जरातो बिचारों कि सुख की प्राप्तिका क्या कारण है और दुखके दूर होनेका क्या हेतु, ऐ भाईयों पुन्य कर्म से सुख होना है और पाप कर्म से दुख सब जैनियों को अवश्य इस बात पर पूरा श्रद्धान है परन्तु जब आप यह जानते हैं तो क्या आपने यह समझ रक्खा है कि कुदेव आदिक के पूजने से पुन्य होता है और सच्चे देव के पूजने से पाप क्योंकि आप सच्चे देव के पूजने में अरुचि रखते हैं और कुदेव आदिक के पूजन में अनुराग आप इस बातका यही उत्तर देंगे कि यह बिल्कुल विरुद्ध बात है तो फिर आप क्यों कुदेव आदिक को पूजते हैं कारण यही है कि धर्म के स्वरूप को हम लोग भले प्रकार जानने की कोशिश नहीं करते न शास्त्रजी सुनते हैं और न आप स्वाध्याय करते है इसी कारण कुदेव आदिक को पूजकर पाप कर्म उपार्जन करते हैं और दुःख बढाते है और जैन धर्म को बदनाम करते हैं ॥

[यह पत्र बम्बई मिल प्रेस मथुरा में छपा]

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल १) मात्रहै

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेजी महीनेकी १-८-१६-२४ता०

को

बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिलासहारनपुर से प्रकाशित होताहै

प्रथमवर्ष ता०....२४....मई....सन्....१८९६....अङ्क २२

[यह पत्र बम्बइ मित्र प्रेस मथुरा में छपा]

महासभा

मिती कार्तिक वदी ७ सं० १९६२

महा सभाका रुपया इसभांत आया

१०, रु० सकलपंच मुरादाबाद हस्ते पं० चुन्नीलालजी
१०, प्यारेलालजी नसीराबाद
११, सेठ मंदिलदासजी आगरा वाला
२०, डिप्टी चम्पतरायजी मजिस्ट्रेट इटावा
१०, लाला रतनलालजी साहिब मुनीम श्रीमान सेठ साहिब मथुरा
१०, पंडित प्यारेलालजी साहिब अलीगढ
१०, बाबू सूरजभानजी साहिब देवबन्द जिला सहारनपुर
१०, लाला हीरालालजी मारदम नजी साहिबान साकिन ग- र कोट
१०, लाला मूलचन्दजी वकील साकिन मथुराजी
१०, लाला जमुनालालजी हैड कि र्क एजन्सी भरतपुर
१०, लाला चिरंजीलालजी साहिब आनरेरी मजिस्ट्रेट अलीगढ
१०, लाला चैनसुखजी बिहारीलालजी साकिन कोसी
१०, लाला छुन्नालालजी साहिब करौली जिला जैपुर
१०, लाला गुलजारीलालजी साहिब साकिन मैनपुरी
१०, लाला भजनलालजी मगनीरामजी साहब जसवन्तनगर
१०, लाला गोकुलचंदजी साहिब साकिन टेहूं
१०, लाला तोतारामजी पल्लीवार साकिन वैरगाम हिंडोन जैपुर
१०, लाला मकड्डूमलजी साहिब साकिन अलीगढ
१११, श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहिब सभापति महासभा मथुरा
१०, लाला खेरातीलालजी साहिब स्योहारा जिला बिजनौर
१०, लाला नागरमलजी साहिब साकिन हाथरस
१०, लाला हुलासरायजी चुन्नीलालजी आगरा
१०, लाला मुन्नालालजी छोटेलालजी साकिन कोसी कलां जिला मथुरा
१०, सेठ परमेष्ठीदासजी मेवारामजी साहिब साकिन खुरजा
१०, सकल पंच जैनी साहिबान टांक
१०, सकल पंच जैनी साहिबान जुरहरा
१०, लाला पन्नालालजी कन्हैयालालजी मथुरा

इसके आगेका मजमून १९ के पेज में देखो।

चिट्ठीकासंक्षेप

श्रीयुत मान्यवर बाबू सूर्यभानजी सा० श्रपजिनेन्द्र जैनगजट शास्त्रजी की सभा में रात्रि को बाहर ऐतवार को लघु जैन समाज में पढ़ा जाता है धन्य है आप की प्रबल बुद्धि को जो उपदेशक से विशेष काम परोक्ष ही कर रहे हैं— कलंकी अर्द्ध कलंकीका कथन सविस्तार श्री त्रैलोक्य सारजी भाषा वचनकामें मैंने बांचा है तथा सुदृष्ट तरंगनी में भी है और चरचा सार संग्रह में होने वाले की जन्म पत्री सहित है— श्रीयुत चौधरी कन्हैयालालजी व मोदी हालचन्दजी यहां के मुखिया हैं मंदिर मनुष्यादि की संख्या भर कर हकीम उग्रमनजी के पास भेजने की कोशिश में हैं भर कर भेजेंगे ॥

होली की निन्द्य रीति के निरोध करने को उक्त दोनों महाशयो ने बड़े मंदिरजी में विधान अष्ट महीपका चैत्र बदी १ को होना ठहराया तथा दूसरे मंदिर जी में जहां मान्यवर श्रीयुत हेडमास्टर नानकचन्दजी साहब मे इस के पूर्वापरकाल में विधान होना ठहराया गया है यह उपकार जैन अखबार से ही होने लगा है ॥

यहां श्रीजैन मंदिर बुधूल्या में शास्त्र दान भंडार है इसका हाल पीछे लिखूंगा आप को इस की वृद्धिका हेतु होना आवश्यक है

गजाधर तापियां

सागर

मनुष्यका जीवन व्यतीत करना

इस जगत में यह बात देखी जाती है कि चाहे निर्धन हो चाहे धन वान हो परन्तु रुपये की चाह सब को लगी हुई है द्रव्य उपार्जन के कारण मनुष्य अनेकानेक संकट उठाता है और रात्रि दिवस मरता पचता है परदेश में घूमता है कभी सेवक बनता है कभी व्योपार करता है इस मनुष्य को न खाने की चिन्ता है न आराम की केवल एक द्रव्य की चिन्ता है जिस की चाह में तेली के बैलकी तरह निरन्तर घूमता है और भटकता है हम बहुधा मनुष्यों को यह कहते हुये सुनते हैं कि पेट बहुत बुरी बला है इस कारण सब संकट उदर भरण के हेतु उठाये जाते हैं परन्तु जब सोचकर देखा जाता तो इस के विरुद्ध दृष्टि पड़ता है क्योंकि पे-

ट भरने के वास्ते आधसेर आटेकी जरूरत है जो लोग अधिक धन वान हैं उन के भी निज भोजन में उन की कमाईका बहुत ही छोटा भाग खर्च होता होगा जिन के पास पेट भरने के वास्ते घर पर बैठे हुये निश्चिन्त काफी कमाई है वह भी अधिक धन के वास्ते घर छोड नानाप्रकार की विपत्त उठाना पसन्द करते हैं फिर क्यों पेटका नाम बदनाम किया जाता है द्रव्य उपार्जन की अधिक चाहका कारण कुछ और ही ज्ञात होता है निस्सन्देह द्रव्य से संसारी कार्य सिद्धि होते हैं परन्तु जानना यह चाहिये कि वह कौनसा कार्य है जिस की सिद्धि के अर्थ हम को द्रव्य की इतनी चाह होजाती है हमारी समझ में तो वह कारण केवल एक मान बडाई है इसी के हेतु संसार के सब कार्य किये जाते हैं हमारी जाति के मनुष्य न खाते हैं न पीते हैं न अपने किसी सुख के हेतु एक पैसा खर्च करते हैं और एक एक पैसा जोडते रहते हैं और विवाह आदिक के समय सब द्रव्य इस प्रकार संचय किया हुआ बरबाद कर देते है इसका हेतु मान बडाई नहीं तो और क्या है

परन्तु आज तक अनन्तानन्त पुरुष बडे २ विभव और पराक्रम वाले होचुके और अपनी जान मान बडाई के हेतु खपाचले आज तक क्या किसी के हेतु मान बडाई आई, कदापि नहीं क्योंकि संसार में एक से एक बढकर है जब चक्रवर्ती राजाओंका मान भंग हुआ तो साधारण मनुष्योंकी तो क्या वार्ता है हाय हाय संसारिक विभव द्रव्यादिक मनुष्य के सुख हेतु हैं परन्तु यह मनुष्य अपना जीवन ऐसे व्यतीत करता है मानों इसका जीवन ही द्रव्य उपार्जन हेतु है कैसे आश्चर्य की बात है कि पशु पक्षी आदिक केवल भूख प्यास के कारण ही क्लेशित होते हैं और जब उनका उदर भर जाता है तो उनका सब क्लेश दूर हो जाता है उस समय वह निश्चिन्त सुख चैन भोगते हैं परन्तु मनुष्य को उदर भरने के पश्चात् भी चैन नहीं है यह सदा क्लेशित ही रहता है इसका कारण केवल मनुष्य की मूर्खता है यह अपने मान बडाई के बस हो कर किसी दशा में भी सन्तुष्ट नहीं रहता और इसी चाह में सदैव भटकता रहता है और बिना सन्तोष के क-

भी सुख की प्राप्ति हो नहीं सक्ती प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी दशा में हो अपने को क्लेशित और अभागी जानता है और अपने से अधिक पदवी वाले वा अधिक धनवान को सुखी समझता है परन्तु वो धनवान भी इसी प्रकार अपने को महा दुखी और अन्य को सुखी जानता है क्योंकि पहले के समान उस को भी सन्तोष नहीं है इस प्रकार सर्व मनुष्योंका जीवन अति क्लेश और चिन्ता में व्यतीत होता है इस कारण जिस किसीको सुख की वान्छा हो उस को चाहिये कि मान बड़ाई की चाह को छोड़े और सन्तोष धारण करें तब सुख की प्राप्ति होगी ॥

हर्षकसमाचार

यहांपर सभापति श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सितारेहिन्द के पुत्र की शादी बड़े धूम धाम के साथ हुई बरात की निकासी के समय जिधर देखो तिधर लाल फेटा वाले ही दृष्टि गोचर होते थे और कप्तान साहब पैदल खुशी में टहल रहे थे भरत पुरका एजेन्ट छतपर बैठा हुआ फूला अंगमें न समाताथा इस में महाराज भरतपुर की पल्टन भी आई थी और चार पांच जगह की प्रसिद्ध २ मंगला मुखी भी आई थी उन के गीत नृत्य सुन कर वा देखकर लोग वाह २ करते थे श्रीमान् डिप्टी चम्पतरायजी व पं० चुन्नीलालजी व पं० प्यारेलालजी आदि महाशय पधारे थे इस आनन्द में सेठजी साहब ने मथुराजी के मंदिर में ८५०, रु० और आगरे के मंदिरजी में ४०१, रु० और सभा के लिये ७१,रु० भेट किये और इस शादी में फुलवाड़ी वगैरः का लेशमात्र नाम नथा [illegible] है कि सेठजी साहब ने स्वदेश वा [illegible] भाईयों के हितार्थ फुलवाड़ी निकालना बन्द करादिया॥

चम्पालाल श्रावक मथुरा

नजीबाबाद

[illegible] साहब श्रीयुत बाबू सुमेरचन्दजी जोन्य [illegible] लिखी सलेखचन्द किरोड़ीमल की जयजिनेन्द्र; [illegible] आगे सभा यहां पर हर [illegible] को होती है ॥

मिती फाल्गुण सुदी चौदस की सभा में लाला सलेखचन्द सम्पादक ने निम्मत दान देने का व्याख्यान कहा सो बड़ा आनन्द हुआ इसी तरह सदैव आप की

कृपा से प्रत्येक सभा में धर्म का ऐका उपदेश होता रहैगा॥

गाजियाबाद

गाजियाबाद जिला दहली में सिर्फ एक घर श्रावकका है और सिवाय इस के लाला खूबचन्द साहब रजिस्ट्रार कानूगो भी नौकरी के सम्बन्ध से यहां निवास करते हैं लाला खूबचन्द साहब बड़े लाइक और सज्जन हैं उक्त नग्र में वैश्योंका ज्यादा जोर है यहांके श्रावक भाई भी संसारिक कारोबार व रसूमातमानिन्द वैश्य लोगों के करते हैं इस वास्ते वह सिर्फ नाम के ही जैनी हैं– यहां पर कोई जैन मंदिर नहीं है॥

यहां तारीख १८ अप्रैल सन१८९६ को कस्बा सोनीपत जिला दहली से शादी में पंडित महरचन्दजी साहब के पुत्र की वरात आई थी– जिस में पंडित जियालालजी साहब ज्योतिष रत्न आनरेरी उपदेशक जैन महासभा और बाबू सूर्यभान वकील देवबन्द भी शामिल हुए थे मुवाफिक रिवाज बिरादरी गाजियाबाद के रन्डी भडुवों के नाचका झगड़ा नहीं था और न अंग्रेजी बाजेका शोरथा इस लिये दहार के रोज सभा करनेका समय हाथ लगा जिसमें किसी कदर कस्बा गाजियाबाद के वैश्य व ब्राह्मण भी शामिल हुए, सभा में बहुत बड़ा आनन्द रहा पंडित महरचन्ददास पं० जियालाल व बाबू सूर्यभान वकील व लाला श्री रामजी साहब व पं० उमरावसिंह साहब के व्याख्यान फिजूल खर्ची व रंडी व भडवों आदि के निषेध में हुए जिसका असर सोनीपत के भाईयों पर बहुत ज्यादा पड़ा और उन्हों ने विवाह आदि में नाच न होने के आनन्द को बहुत अच्छी तरह से देख लिया और पसन्द कर लिया बल्कि पं० उमरावसिंह साहब ने बहुत जोर से सोनीपत के भाइयों की तरफ सन्मुख होकर यह जतलाया कि सब भाईयों को जो यहां पर मौजूद हैं सोनीपत में जाकर अवश्य इस बात की कोशिश करैं कि रंडी के नाच की बला हमारे सिर से भी दूर हो और हमेशा विवाह शादियों में ऐसा ही आनन्द मिला करै कस्बा गाजियाबाद के चन्द वैश्य भाईयों के कहने पर रात्रि को फिर सभा हुई और पंडित मुसद्दीलाल व पं० जियालाल व पं० महरचन्ददास व बाबू सूर्यभान ने धर्म सम्बन्धी व्याख्यान बड़ा मधुरता से दिया जिस से सब भाईयों के दिल पर बड़ा असर पड़ा— परमेश्वर ऐसा दिन करै जो कि हमेशा हर एक विवाह शादी में ऐसा ही आनन्द हुआ करै और पंडित महरचन्ददास साहब ने ५, रुपये उपदेशक फन्ड को दिये॥

चिट्ठी

श्रीसर्वोपमा योग्य विराजमान श्री युत श्री बाबू सूर्यभानजी वकील जय-जिनेंद्र अत्र कुशलं तत्रास्तु अपरंच आपका परोपकारी जैन गजट पढ कर निहायत खुशी उत्पन्न हुई कि हृदय में नहीं समाती और जैसा आपका दे दिध्यवान नाम है तैसाही गुण भी प्रकाशवान होरहाहै मगर जिधर देखताहू उधर कुरीतियां ही नजर आती है यानी कोई बढको कोई पीपरको कोई मियांको कोई महादेव को कोई नउता मसता को कोई चन्दन पीर वगैरः की पूजा मानता करते कोई देवी (मा नत) काढकरके उनादिलाते इत्यादि पाखंड रोप रक्खा यानी वे लोग तो जानते ही नहीं कि हमारे यहां यानी हमारे घर में क्या क्या वस्तु मौजूद है यानी चिंतामणि रत्न को छोड कर कांच खंड ही को मन चिन्तित अर्थ मान रहे येसब बाते अविद्या के कारण हो रहीं और विद्या हीन नतो शोभा को प्राप्त होता न धन प्राप्त करसक्ता और विद्या ही सब में प्रधान श्रेष्ठ है ॥

(श्लोक) कोकिलानां स्वरोरूपं स्त्रीरूपं पतिवृतम विद्यारूपं कुरूपाणां क्षमारूपं तपस्विनम १ विद्यामित्रं प्रवासेषू भार्य्या मित्रं गृहेषच रोगतस्य औषधं मित्रं धर्म मित्रं मृतस्यचा॥२॥

अर्थ ॥ कोकिला की शोभा आवाज और स्त्रीकी शोभा पतिवृता और मनुष्य की शोभा विद्या और तपस्वी की शोभा क्षमावान १ विद्या कैसी है परदेश में मित्र के बराबर और गृह कहिये घर में स्त्री मित्र और रोगी को औषध मित्र और मरण समय पर धर्म के सिवाय और दूसरा मित्र नहीं धर्म ही मित्र है ॥ २ ॥ और धर्म भव भव में सुख दाई है ॥

मगर अब इस वक्त जैनी लोग मोह रूपी बीमारी में डूबे हुए हैं तिन को अपने नाम रूपी दवा धीरे धीरे कानद्वारा पिलाते जाइयेगा जिससे मार्ग में आवें और जब मार्ग में आजावेंगे तब रोग सहज में दूर होजायागा यानी आप जैन गजट तो भेजते ही हैं मगर जो शक्स जैन गजट नहीं लेते उन श्रावकों के पास एक पंचायती विज्ञापन मुख्य बातोंका महीने बाद वा दूसरे महीने मुमकिन समझा जाय तो भेजिये ताकि मौका पाकर वे भी जैन गजट मंगावें जिससे वे लोग भी मोहरूपी नींद से जागें जैसे कोई शक्स सोरहा उसे बारम्बार पुकारियेगा तो जागे ही गा इस में संदेह नहीं और जो बिलकुल मूढ वा अभव्य है उसे उपदेश भी नहीं लगता (दोहा) मूरख गुन समुझै नहीं तौन गुनी में चूक । कहा भयो दिन की विभौ देखी जोन उलूक ॥

॥ अर्थ ॥ मूरख जो गुनवान के गुण को ना समुझै तो गुनवानका कुछ दोष नहीं जैसे सूर्य सब को उद्योतकरता मगर उल्लू पक्षी को नहीं सूझता इस में सूर्यका कुछ दोष नहीं ॥

तैसे ही आप सब लोगों के उपदेश से अगर मूर्खों की बुद्धि न फिरे तो आपका कुछ दोष नहीं ॥

आपका शुभचिंतक रतनलाल हकीम नवाब गंज

लाला जुगलकिशोर विद्यार्थी सरसावा जिला सहारनपुरका लेख अवश्य पढ़िये

श्रीमान् बाबू सूर्यभान साहब जैजिनेंद्र; अत्र कुशल है आप की कुशल श्रीमहाराज की कृपा से सर्वदा भली चाहिये ॥ आपका पत्र आया जिस के दर्शन मात्र से ही अति प्रसन्नता हुई ॥ भाई साहिब आपका पत्र क्या है मानो अज्ञान रूपी तिमिर के हरने के लिये सूर्यही है जिस के प्रकाश से अविद्या अनेक्यता मद, मोहादिक तिमर जिन के कारण यह जीव आपा भूल रहा है हृदय रूपी भूमि पर से भागते हैं और विद्या, एकयता, मार्दव निर्मोहादिक अपना प्रकाश करते हैं और धन्य है आप जैसे पुरुषों को कि जिन्हो ने निज कार्य को त्याग कर परोपकार के अर्थ दो पत्रों [मासिक और साप्ताहिक] का भार निज सिर पर लिया है और जिन्हों ने स्वजातिको जोकि घोरनिद्रा में निमग्न है और जिसे अपने तन की भी कुछ खबर नहीं है सावधान करने के लिये कटि बांधी है ॥ सत्य तो यह है कि जो आपने सत्पुरुषका लक्षण जैन गजट के सातवें पत्र में लिखा है सो आपमें पायाजाता है आप ही जैसे पुरुषोंका जीवना सुफल है आप लोग ही कुछ पुन्य की गठरी दुनिया से बांधि लेजावेंगे आप की इस परोप कारताका धन्यवाद मुख से वर्णन नहीं किया जास्का और लेखनी में इतनी शक्ति नहीं है कि लिखै ॥ भाई साहिब जितने आप के गुण गान किये जावें सो सब थोड़े हैं क्योंकि आप ने अल्प ही काल में इतना उद्यम किया है कि जिस के कारण सप्ताहिक पत्र जारी होगया है और उपदेशक फंड नियत हो गया है और अब बहुत से सज्जन भाई जिन्हो ने परोपकारता को अपना मुख्य धर्म समझा है उपदेशक बन कर देश विदेश भ्रमण करके और उपदेशोंका शोर

मचाकर अपने जैनी भाईयों को सचेत करने लगे हैं इहांपर अत्यंत खेद की बात है कि और जातियां तो हमारा शोर सुन कर जागती हैं और सावधान होकर अपना काम करती है॥ मगर यह जैन जाति इस कदर घोर निद्रा में अचेत पड़ी है कि उपदेशकों का शोर मिचाने से भी और साप्ताहिक हलकारे के कूकने से भी जरा भी सचेत नहीं होती है इस के अविद्या अनैक्यता मद मोहादिक रूप डंस मंसादिक बहुत लग रहे हैं मगर यह उन के दूर करनेका जरा भी उपाय नहीं करती हैं और उनके काटने रूप पीड़ा को सह रही हैं इस जैन जाति को इस से अच्छा और क्या मौका अपनी उन्नतिका मिल सक्ता है जब कि श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास सी० आई० ई० इस के सहायक और रक्षक हैं जिन की कृपा से अब श्री जिन धर्म संरक्षणी महा सभा अपना प्रकाश कर रही है और आशा है कि अब दिन २ आपना तेज फैलावैगी और क्यों न फैलावें जब कि मुन्शी चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर इटावा आदि ५ बड़े २ पुरुष इस के काम में तन मन धन से उद्यम कर रहे हैं क्योंकि वह इस दोहे पर दृढ विश्वास किये हुये हैं कि तन दे धन को राखिये धन दे रखिये लाज तन दे धन दे लाज दे एक धर्म के काज परन्तु खेद की बात है कि इतनी धूम मचने पर भी हमारे भाई जरा नयन खोल कर यह नहीं देखते हैं कि यह अंधेरासा क्या छारहा है और यह लाल काले पीले बादल से क्या घिर घिर कर आ रहे हैं और इन में क्या शब्द हो रहा है और इन के दूर करने का उपाय क्या करना चाहिये जिस से कि चांदना होवे और निज कार्य सधै॥ भाई साहिबों अगर सच पूछते हो तो हमारी जाति विषे अविद्या रूपी तो अंधकार छा रहा है जिस के कारण हमें कुछ सूझ नहीं पड़ता है अगर हम कोई छोटा मोटा काम इस अविद्या रूपी अंधेरे में करते भी हैं तो कुछ ही दूर जाकर ठोकर खाकर औंधे मुंह गिरते हैं किसी काम को पूरा २ नहीं करसक्ते हैं और जो हमारी जाति के विषे देवी दिहाडी भूत प्रेत होली सती, सीतला, मसानी का पूजना, मानना और सांपको देवतामान पूजना॥ झूठ बोलना

कुशील सेवा, माया चार करना पराया माल हरना और हिंसा करना इत्यादि जो पाप रूप क्रिया फैल रही हैं और फैलती जा रही हैं सोही लाल काले पीले डरावने बादल हैं जो कि अपने गर्ज रूपी शब्द से यह पुकारते हैं कि इस जैन जाति को जल्दी २ लूट लो और अपने वैर विरोधादि रूप पथरों से बरबाद करदो अब समय है नहीं तो फिर चौथा काल आजावेगा ॥ मुझ को अपने भाईयों की ऐसी दशा देख कर अत्यंत खेद उत्पन्न होता है कि जिन की यह खराब अवस्था हो गई है और अब भी कुछ विचार नहीं करते हैं अफसोस अफसोस ऐसे भाईयों पर कि जिन्हों ने ऐसी मद मोह रूपी मदिरा का पान किया है कि जो निज हित की बात को भी नहीं सुनते और अपने हितैषियों को गालियाँ देते हैं और उन को बुरा समझते हैं मगर धन्य है उन पुरुषों को जो कि चन्दन की समान अपने सज्जन सुभाव को नहीं छोड़ते हैं ॥ ऐ मेरे प्यारे भाईयों अब भी कुछ नहीं बिगड़ा सुबह का भूला शामको घर आजावे तो उस को भूला नहीं कहते हैं, जागो, उठो, सचेत हो. और ज्ञान रूपी नयन को खोल कर विचार करो और सोचो कि यह जो अंधकार छारहा है सो किस प्रकार दूर हो सक्ता है ॥ भाई साहिबो सब तरह विचार करने और दृष्टि फैलानेसे मेरी सम्मति में तो यही आता है कि यह सब अंधकार केवल अविद्याका है और विद्या रूपी सूरज के प्रकाश होते सब भाग जायगा फिर न मालूम भाईयों ने और कौनसा उपाय इस के दूर करनेका सोच रक्खा है जिस में कि इतना समय बीत गया है और यह दूर नहीं हुआ है और इस के कारण जो २ नुकसान हुये हैं वह सब को विदित हैं ॥ भाई साहिबो इस में आपका कोई दोष नहीं है क्यों कि आप तो विद्याका प्रचार करना चाहते हो मगर नहीं होता है इसका कारण यह है कि अविद्या के दूर करनेका उपाय तो करते हैं मगर आप उस के मित्र को दूर करनेका उपाय नहीं करते हो जिस के कारण वह सहायता पा रही है ॥ इसका मित्र कौनसा है सो आलस्य है जब तक इस आलस्य को अपने दिलों से नहीं उखाड़ डालेगी तब तक विद्याका प्रचार हो

ना असंभव है क्योंकि यह आलस्य वह वस्तु है कि कैसेही अपने हित का काम क्योंनहो जरा अपना हाथ फेर कर तमाम बरबाद कर देताहै और केवल बरबाद हीनहीं करता है बल्कि मूढ पुरुषो के दिलों में उसके दोष प्रगट कर देता है कि जिस में वास्तव में दोष नहीं हैं जिस कारण वे पुरुष फिर उस काम की तरफ मुंह फेर कर भी नहीं देखते हैं और हजारों कष्ट भोगते हैं परन्तु शोक की वार्ता है कि बहुत से मूढ पुरुष ऐसा कहते कि संस्कृत विद्या पढ़ कर क्या हमे कहीं पंडित होना है और संस्कृत तो कुछ काम भी नहीं आती है और अंग्रेजी तो आज कल बहुत काम आती है इस वास्ते संस्कृत पढ़ना बुरा है ॥ और इसी से ज्ञात होता है कि वे पुरुष संस्कृत पढ़ने के फलों को नहीं जानते हैं और यह बात सत्य है कि जब तक मनुष्य किसी वस्तुका स्वरूप या उस के शुभ अशुभ फल को नहीं जानता है चाहे आलस्यका अभाव भी क्योंन हो भाई साहबों मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे किसी अनुचित शब्द से क्रोधित न होवें और जरा विचार कर देखें कि क्या इनसे भी ज्यादा और कोई मूढ हो सके हैं जो कि उपरोक्त कहते है कि संस्कृत पढ कर क्या कहीं हमें पंडित होना है क्योंकि आप जानते हैं कि पंडित नाम ज्ञान वानका है और इसका विपर्य मूर्ख है और यह वह कहते ही हैं कि संस्कृत पढ कर पंडित होता है सो वह संस्कृत न पढने से अपने आप मूर्ख चाहते हैं ॥ ऐ हमारे प्यारे ज्ञान वान भाईयों आप इन लोगों की किसी बात पर ध्यान न दो क्योंकि वह तो मूर्खता को स्वयं चाहते हैं और इस बातका भय नहीं करते हैं कि "बिन ज्ञान अनंतकाल भ्रमो भववन में" और आप ज्ञानवान पुरुषोंका हर समय यही विचार होना चाहिये कि मूर्ख की बराबर और कोई दुखी नहीं है क्योंकि वह वस्तु के स्वरूप को नहीं जानता है और जब किसी बात को विचारता है और ठीक नहीं विचार सक्ता है तब व्याकुलता होती है और व्याकुलता ही लक्षण दुःखका है इस लिये वह दुखी है और मूर्ख आदमी केवल

आप ही दुखी नहीं होता है परन्तु अपनी मूर्खता से अपने माता पिता और और जनो को दुख देता है जैसा कि नीति में लिखा है ॥

श्लोकः॥ आजतं मृत मूर्खेभ्यो मृता जातौवरं सुतौ ॥ तौ किञ्चि च्छोक दौ पित्रोर्मुर्ख स्त्वत्यन्त शोकदः ॥ अर्थात् ॥ ऐसे पुत्रो में से जो पैदा नहीं हुआ जो मरगया या मूर्ख है मरा और पैदा हुआ पुत्र बल्कि अच्छे होते है क्योंकि वे पिता माता को कुछ ही दुख देते हैं और मूर्ख बरा बर दुख दाई होता है वह निज परका हानि कारक है उस की बा तका कोई प्रमाण नहीं करता है इसी हेतु उसका जीवना भी निरर्थक है ॥ इस लिये अब ऐ हमारे ज्ञान वान परोपकारी और सज्जन भाईयों यदि आप अपनी संतान के हितैषी हो उनका इस मूर्खता के दुख छुडाना चाहते हो और उनका यह लोक और पर लोक सुधारने की इच्छा करते हो तो उठो सावधान हो और मुझको जो अति सुन्दर तसवीर सूझी है सो करो ॥ भाईयों वह तसवीर क्या है सो जैन कालिज है जिस के बिना कुछ भी नहीं हो सक्ता है क्योंकि आप लोग यह बात खूब जानते हैं कि जब किसी वृक्ष की जड सुदृढ होती है तो उस से सब कुछ आशा की जासक्ती है और जब जड ही दृढ नहीं है तो कुछ भी आशा नहीं की जासक्ती है क्योंकि उस वृक्षका कुछ विश्वास नहींहै कि कब गिरजावे और नाश को प्राप्त हो जावे ॥ इसी प्रकार ऐ भाईयों जब तक विद्या रूपी वृक्ष की सुदृढ जड नहीं होगी ॥ अर्थात् जैन कालिज नहीं होगा तब इस विद्या रूपी वृक्ष से कुछ फल खाने की आशा नहीं की जासक्ती है क्योंकि जब तक जड दृढ नहीं है तब तक फल भी अच्छा नहीं है इस लिये ऐ परोपकारी भाईयों अब आप ही के सिर पर यह भार है यदि आप इस समय इस विद्या रूपी वृक्ष की जड बांध देवेंगे तो आगे को आशा है कि यह वृक्ष बहुत फलै फूलैगा और अपने ही बीजों रूपी विद्यार्थियों से और बहुत से वृक्ष रूपी कालिज बना लेगा ॥ भाई साहबो आप सब को यह मालूम होगा कि हमारी जाति विषे चार प्रकार के दान कहे हैं और उस में विद्या दान को मुख्य कहा

है क्योंकि आप जानते हैं कि बिना विद्या के मनुष्य पशू की समान है इस के बिना अनेक कष्ट सहता है और विद्या से आदमी धन उपार्जन करता है सुयश पाता है अनेक प्रकारका सुख भोगता है और कहां तांई कहिये विद्या ही से यह मनुष्य सर्वोत्तम और अनुपम वस्तु जो मोक्ष है ताकूं प्राप्त होता है ॥ इस लिये परोपकारी भाईयों ऐसे बडे पुन्य के काम को कि जिस की समान इस काल में और कोई पुन्यका काम नहीं है विद्या के दान करने में कमाओ अर्थात् अपने हाथका मैल जो रुपया ताकूं व्यय करके एक जैन कालिज बनाओ और अपनी संतान के हितैषी बनो क्योंकि ऐसा न करने से यह लोकोक्ति प्रचलित होती है कि माता शत्रु पिता वैरी येन बालोन पाठितः सभा मध्येन शोभन्ते हंस मध्ये बको यथा ॥ अर्थात् जो माता पिता अपने बालकों को नहीं पढाते हैं वह उन के शत्रु और वैरी है क्योंकि वे लडके हंसो की सभा में कौवो की समान शोभा को प्राप्त नहीं होते हैं इस लिये ऐ भाईयों इस लोकोक्ति को प्रचलित न होने दो और पुष्कलता करके तन मन धन से शीघ्र इस शुभ कार्य में उद्यम करो और द्रव्य के व्यय से मत रुको यह लक्ष्मी चंचल है किसी के पास रही नहीं है अनेक राजा हो चुके हैं जिन की सब लक्ष्मी यहां ही रह गई कोई अपने साथ नहीं लेगया है केवल जीव के शुभ अशुभ कर्म साथ जाते हैं फिर वृथा इस लक्ष्मी के मोह में पडे हुवे हो यह नियम है कि जिसका संयोग है उसका वियोग अवश्य है इस लिये पूर्व इसके कि लक्ष्मी हमें छोड देवे हम को चाहिये कि हम ही उस का त्याग देवें और उस से कोई अच्छा कार्य निकालें सो भाईयों जैन कालिज से और अच्छा अब कोई काम नहीं हो सक्ता है मैं पहले भी कई दफे प्रार्थना कर चुका हूं ॥ अब मैं आशा करता हूं कि हमारे परोपकारी भाई अवश्य मेरे इतने ही तुच्छ लिखने पर ध्यान देंगे और विद्या प्रचार करने अर्थात् कालिज बनानेका उपाय करेंगे और पुन्य को उपार्जन करेंगे और तीन लोक में अपने यश को फैलावेंगे और सब से धन्यवाद के योग्य होंगे ॥

प्रार्थना

श्रीमान बाबू सूर्यभान साहिब जैसे कि लघु एक पुरुष व वडे काम करने की प्रार्थना करै तो यह कैसे होसक्ता है पन्रतु जैसे कि पान के संगत से तुच्छ पत्ता वादशाह तक पहुंच जाता है इसी प्रकार मैं हकीम उग्रसेन की आज्ञानुसार और आप लोगों की साहायता से आप से प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे इस उपरोक्त विषय को यदि आप अच्छा समझें तो सुधार कर अपने अमूल्य पत्र में स्थान देवें ॥ यद्यपि यह लेख योग्यता नहीं रखता है परन्तु यदि आप स्थान देंगे तो मेरा मन भी प्रफुल्लित हो जावेगा और मैं आप को कोटिशः धन्यवाद दूंगा ॥

आप कृपा पूर्वक प्रार्थना की पहले लिखें पश्चात कुल लेख लिखें ॥ यदि एक पत्र में न आवेगा तो दो में छापदेवें ॥

आपका आज्ञाकारी

जुगलकिशोर वि० दफे २

श्री मन्महाशय महामन्यवर श्रीयुत बाबू साहब सूर्य्य भानु जी को यथा तथ्य विदित हो

कृपा निकेत अपने सत्य शाली अमूल्य पत्र में मेरेइस क्षुद्राशय को स्थान प्रदान देकर कृतार्थ कीजियेगा। आज आपके जैन गजट को देखकर अतिही हर्ष हुआ मैं आपको सहस्रशः धन्य वाद देता हूं आप की अलौकिक सज्जनता विदित होती है यद्यपि आप संसारिक महाशयों की अपेक्षा एक सामान्य पुरुष हैं तथापि सद्धर्म्मोपदेश से सूर्यवत् प्रकाशित होरहे हैं अस्तु अलमिति विचक्षण वरेषु बालविवाह के विषयमें, यथार्थ बालावस्था में विवाह करनेसे बड़ीही हानि होतीहै अथच भगवान सुश्रुत श्लोक ऊनषोडष वर्षाया मप्राप्तः पंच विंशति यद्या धत्ते पुमान गर्भं कुक्षस्थः स विपद्यते ॥ १ ॥ यातोवान् चिरंजीवेत् जीवेद्वा दुर्बले न्द्रियः तस्माद् त्यंत बालायां गर्भा धानं न कारयेत ॥ २ ॥ इदानीं बाल्यावस्थया विवाह प्रवृत्ति रस्ति तस्माद्विद्या बल वीर्यतेजो बुद्धिर्नाशोजातः मन्ति संसारिणो जना जानंत्ये व स यस्यापत्यस्य बाल्ये विवाहे भवत् सामर्थ्यं हानि र्भवति परंच विचारे कृते सतितेषाम महद भाग्य मास्य कुतः यद्वा बाल्या वस्था यां

विपर्यो भविष्यति तद्वीर्य्य नाशाद्रोगोत्पत्तिर्भवति ततोऽनेकानि दुःखानि भवन्तिततः किमपि सुखं न भवति विद्यालोपा द्धर्मार्थ काम मोक्षाणा मपिनाशो भवति तस्मात्र न कादि प्रासिर्भवति शेषमग्रे लिखिष्यामी भवदितेप्सू ॥ लाला गुणचन्द्रम सराफ जैनी बहरायच हस्ताक्षर रुधूमप्रसाद जैनी

ता० २-३-९६ ई०

—०—

फिजूलखर्ची

हे परम पवित्र जैन धर्म धारक पाठक गण महाशयो तुक जैन धर्म संरक्षणी जैन महासभा की ओर भी ध्यान दीजिये कि इस कलिकाल समय में जैनी भ्रातृगणों के उद्धारार्थ यह कैसा उत्तम अंकुर बोयागया है ॥

सच पूछियेतो यहभी अजब काम होगया
मर्दोंका आत्मा के तन नाम होगया ॥

आज हमारे आनन्द की सीमा नहीं है— आज हमारा हृदय कमल यत प्रफुल्लित हो रहा है— आज हम फूले अंगो में नहीं समाते हैं कि हमारे कुछ परोपकारी शुभचिन्तक भ्रातृगणोंनें भी जातो नतिका भार अपने सिरपर उठाया हैं और तन मन धन से कटिबद्ध हो कर धर्म और जातोन्नति में तत्पर हो रहे हैं ॥

हम को कोटिशः धन्यवाद आनरेबिल श्रीमान् श्रेष्ठ लक्ष्मणदासजी सितारे हिन्द सभापति उक्त महा सभाका करना चाहिये जो अपने उदार चित्त से हम लोगों के सहायक हैं ॥

तत्पश्चात बाबू सूर्यभानजी वकील सम्पादक जैन गजट को अनेकानेक धन्यवादहै कि जो प्रति सप्ताहक अपने सूर्य रूपी गजट में हम जैनियों के अंधकार रूपी अज्ञान को भगा रहे हैं ॥

ये इसी गजटका प्रभाव है कि नाना स्थानो पर सभा पाठशाला इत्यादि अनेक शुभ कार्य जारी होते जाते है और अनेक कुरीतियां जो मूढता के कारण हमारी जात में प्रचलित थी दूर भागी जाती हैं ॥

हम की परोपकारी गजट के मत उपदेश से और शुभ चिन्तक मुंशी मूलचन्दजी वकील लाला रतनलालजी साहब मंत्री महासभा की कोशिश और मदद हमारे मथुरा निवासी जैनी भाइयों ने भी उक्त समुद्र रूपी महा सभा की सहायता अर्थ नदी कपी १ छोटी सभा प्रतिमास के चतुर्दशी को स्थापित करके

साहस कीया और शुभ मिती बैशाख बदी १ चन्द्रवार को सब भाईयों ने पंचायती मंदिरजी की धर्म शाला में इक्ठे हो कर प्रति अधिबेशन में पधारनेका प्रण किया और स्वहस्ताक्षर भी करदिये

इस ही शुभ दिन मुन्शी मूलचन्दजी साहब मंत्री महासभाने व्यर्थव्यय अर्थात् फजूलखर्ची के विषय में जिस के बढने से हमारे भाई धन हीन कौडी के तीन तीन हो कर अभी हीन दीन दशा में होगये हैं और होते जाते हैं उत्तम व्याख्यान दीया ॥

उक्त मंत्री महाशय के व्याख्यान को सुन कर हमारे भाई तुरंत फजूलखर्ची के दूर करने में कटिबद्ध होगये और सर्व सम्मती से ये हुक्म व मंजूरी श्रीमान श्रेष्ठ लक्ष्मणदासजी सभापति के जारी कीया कि विवाह आदि उत्सवों में कोई भाई फुलवाडी न निकालने पावे और अन्यान्य नगरों से भी जो बरात मथुराजी में आवैगी उस में भी फुलवाडी नहीं होगी और न मथुरा वाले अन्य नग्र में लेजासकेंगे इसी अवसर में हमारे ऑनरेबिल श्रीमान लक्ष्मणदासजी सितारे हिन्द के पुत्र लाला द्वारकादासजीका विवाहथा इस लिये यह हुए अपजस कारणी कुरीति इसी शुभ विवाह में एक कलम मौकूफ कर दी गई सच पूछिये तो ये विवाह ऐसे समय में जैनियों के लीये परम उपकारी हुवा कि जिस में वो कुरीति जो कि हम को महानहानि कारक है और जिसके प्रचलित रहनेसे हमारी और हमारे बांधवों की अति हानि हो रही है इस स्थान से जो कि उन्नति कारक महा सभाका सदर मुकाम गिना जाता है दूर हो गई ॥

अब हम पूर्ण रूप से आशा करते हैं कि हमारे अन्य धनाढ्य शुभचिन्तक महाशय भी उक्त श्रीमान सेठ साहब की कार्रवाई और इसी कारणी व्यर्थव्यय की बुराई पर ध्यान देकर बहुत शीघ्र इस के दूर करनेका यत्न करेंगे ॥

आपका शुभचिन्तक धासीराम
उपमंत्री जैनसभा मथुरा

आवश्यकप्रार्थना

भाई साहब नीचे लिखे हुए लेख को जैन गजट में स्थान दान दीजियेगा ॥

इस सत्य धर्म की उन्नति करने वाले अपने हितोपदेशों से

जैन धर्म के विरोधियोंका मुंह ब न्द करने वाले पंडित की कमी है लेकिन तब भी इतने अवश्य हैं कि जो अपने उत्तम व्याख्यान जैसे सभाओं में दिये जाते हैं जैन गजट में छपने के वास्ते भेज दिया करैं तो मनुष्य अपनी स्वप्न अवस्था को छोड़ कर अन्धकार रूपी नींद से जाग उठे और सोचैं मनुष्यता किस को कहते हैं और उस में क्या २ गुण होने चाहिये और इस उत्तम जन्म के पानेका क्या मनोर्थ है यह सब बातें पंडितों के अमृत रूपी व्याख्यानों से अपने अपवित्र और चंचल मन को भरें और मन को पवित्र करें ए जैनी पंडितों यह जैन धर्म आप ही के आधीन है इस की रक्षा कीजिये सोति फैलाइये सोतों को जगाइये और तन मन धन से परोपकार और शुद्धाचार के लाने की कोशिश कीजिये कि जिस से आपका यह लोक और पर लोक दोनों सुधरैं पंडितों के आचरण कहे हैं ॥ श्लोक ॥ मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत् आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सपंडितः॥ अर्थ पर स्त्री को माता के समान पराये द्रव्य को लोहे के समान अपने समान सर्व प्राणियों को देखता है सो पंडित है इस लिये जैसे आप पंडित हैं वैसे ही ज्ञान अज्ञान विचार शास्त्री के धरता है और जैन धर्म में दृढ सम्यक्त रखने वाले हैं ऐसे ही दूसरों को भी कीजिये आपका यही धर्म है फल दार वृक्ष आम्र से भी ज्यादा हम लोग आपको समझते हैं मेरी बार बार आप लोगों से यही प्रार्थना है कि हर एक जैन गजट के अंक में एक उत्तम व्याख्यान आप लोगोंका अवश्य छपना चाहिये ॥

शीतल प्रसाद कलकत्ता

चिट्ठी

भाई साहब जय जिनेंद्र;

जैन गजट के दो अंक पहुंचे आगे भी कृपा करके भेजते रहिये मूल्य शीघ्र ही भेजा जावेगा इस गजट में धर्म सम्बन्धी बातों के उपरान्त साधारण अखबारों के भी मुख्य २ समाचार छप जाया करैं तो क्या हानि है ॥

कृपाकांक्षी

जियाराम, एम. ए. प्रोफेसर,

गवर्नमेण्ट कालिज

लाहौर

संसारकी क्षणभंगुरता

ऐसयंकर काल विकराल दुष्ट तेरे दु र्निवार अपनी शक्ति से इन्द्र खगेन्द्र चक्रवर्ती आदि धर्मात्माजीवों का तो नष्ट कियाही परन्तु इस पंचम काल में धर्म प्रिय विद्या रोचक सज्जनो पर तो दयाकर ऐ धर्म स्नेही सज्जन महाशयो तुम सावधान होकर धर्म के कार्य नित्य प्रति करो इस दुष्ट काल के किंचित भी दया नहीं-देखा इस की निर्दयता कि सुख सौभग्य रूप योवन सपन्न धर्म प्रिय विद्या रोचक परोपकारक (इन्द्रप्रस्थ) दहली निवासी लाला कन्हैयालाल रत्नपरीक्षक (यानी जौहरी) को क्षणमात्र में काल ग्रास कर गया जो कि ऐसे धर्म रोचक थे काल दुष्ट के दबाव पर भी ४०००, रुपया जैन पाठशालादि धर्म कार्यों में निभाग कर गये उन महाशयों को जिन साहबों से इनका परिचय था उनको सज्जनता भली भांति विदित है अन्यत्र जगह भी इनकी सज्जनता प्रसिद्ध है क्योंकि यह रत्नपरिक्षकथे

इन महाशय के मरण समाचार गत साप्ताहिक जैन गजट में पढकर प्रथम तो वज्रपातसा पड़ा फिर सचेत हो कर अश्रुपातों से भींगी हुई अपनी लेखनी से इस पंचमकाल की महिमा लिखी फिरभी लिखनेमें लेखनी कम्पित हो रही क्या यह सत्यहै॥

अब हे प्यारे भाईयों जो कुछ करना है सो करो आयुकर्म की अनी पर लटकती है ओस की बिन्दु के समान शरीर का भरोसा नहीं ॥

पंडित रामदयाल
हांसी जिला हिसार

(वार्षिक उत्सव) आगरा

भाई साहिब सूर्यभानजी सम्पादक जैन गजट कृपा करके निम्न लिखित लेख को अपने पत्र में जगह देकर कृतार्थ कीजियेगा ॥

यहां आगरे में मिती चैत्र सुदी १० मंगल वार ता० २५ मार्च को श्रीजी रथ में विराजमान हो कर बीच बाजार में हो कर नृत्य भजन सहित आनन्द के साथ रथ शौरे की कोठी में गया अबके इसके उत्सव में बड़ी शोभा हुई कारण यहथा कि जैनी भाई जैपुर के जैन मेले से लौटकर यहां पधारे थे जिन में लाला जग्गमल जनदसी वकील निवासी भी थे जो कि बड़े सज्जन और धर्मात्मा हैं उन्होंने धर्म के विषय में व्याख्यान दिया और भगवान के पंच कल्याण की रचनाका व्याख्यान विस्तार पूर्वक कहा और फिर आत्मध्यान के विषय में यह तीनों व्याख्यान तीन दिन में दिये थे शाम के सात बजे से १०॥ बजे तक व्याख्यान होता था इस सभा में अनुमान स्त्री पुरुषों के १००० की संख्या थी परन्तु शोर गुल बिलकुल नहीं होताथा व्याख्यान अति मधुर वाणी से होताथा ता० २८ मार्च को श्रीजी रथमें विराजमान हो कर बीच बाजार में होते

हुए शोरेकी कोठी मे तार की गली के मंदिरजी में विराजमान हुए और फिर शामको ७ बजे से १० बजे तक मोती कटले के मंदिरजी में उक्त लाला साहब ने विद्याभ्यास के विषय में व्याख्यान दिया फिर ता० २८ मार्च को धूलिया गंज के मंदिरजी में कुदेवादिक पूजने के विषय में व्याख्यान दिया तत्पश्चात लाला चिरंजी लाल ने धन्यवाद देकर विद्या की प्रशंसा की और धर्मात्मिक अविनाशी सुख और संसारी लाभों पर एक उम्दा व्याख्यान दिया जिस की ताईद लाला कन्हैयालाल जी मुरी वालों ने की और भी दो चार व्याख्यान लाला लखमी चन्दजी ने दिये धन्य है लाला साहब को कहां तक प्रशंसा लिखी जावे ॥

बाबूराम [illegible] मंत्री

जैन सभा [illegible] बाजार

आगरा

दोहा

गुनियन पारख [illegible], [illegible] की बात
करी हां गोगीकि औषधी, बिनामूल्य सबतात

यह बात प्रत्यक्ष है कि ताप तिल्ली भी एक ऐसी व्याधि है कि जिसका उपाय शीघ्र न किया जावे तो बढ़ते २ संसारिक समग्र सुखोंका नाश करवा के यमालय के दर्शन करादेती है इसलिये इस भयंकर रोग की ऐसी औषधि होनी चाहिये जो शीघ्र लाभ दायक हो और जिसका उपयोग गरीब और अमीर सब कोई अनायास कर सकें यही सोच कर मेरे पूज्यपाद पंडित श्रीविष्णु शास्त्रीजी महाराज ने लोकोपकारार्थ गुटिका निर्माण कर यह आज्ञा दी कि सब किसी को बिना मूल्य दी जावे तदनुसार मैं सभों से निवेदन करता हूं कि जिसे यह चाहिये वह शीघ्र एक आना डाकव्यय भेज कर मुझ से वा उक्त महाशय से मंगाकर अनुभव करें परमात्मा चाहेंगे अवश्य लाभ होगा किमधिकम्

आपलोगोंकाशुभेच्छु

क० [illegible] मदनराज श्रीमाली

रतलाम

सेठ साल्गरामजी साहिब हाथरस

सकल पंच जैनी साहिबान मुरारजी इलाका गवालियर मारफत पं० सेती लालजी साहब

सकल पंच जैनी साहिबान छपरा मा० पं० सेती लालजी साहब

पं० सेती लालजी साहिब मुगावली

लाला सुंदरलालजी साहिबदीम

१०, सेठ सूरजमलजी साहिब लश्कर
१०, लाला किशनलालजी साहिब साकिन लश्कर
१०, सकल पंच जैनी साहिबान भरतपुर
१०, सकल पंच जैनी साहिबान धनौली जिला आगरा मा० ला० रेवतीप्रशादजी साहिब
१०, सकल पंच जैनी साहिबान कपाना जिला भरत पुर मा० लाला मोहनलालजी कुंज लालजी
१०, लाला मथुरा दासजी साहिब साकिन स्यालीं का नगरा जिला एटा
५१, जैनी साहिबान भाई पद्मा वती पुरवार मारफत लाला दिलसुखरायजी बेतरामजी साहिबान
१०, लाला हीरालालजी गुलजारी लालजी साकिन कालपी
१०, लाला हजारी लालजी सुंदर लालजी साकिन आगरा
१०, सकल पंच जैनी साहिबान कामां मारफत भिकनलालजी
१०, लाला हीरालालजी चिम्मन लालजी चौधरी आगरा
१०, पंडित छेदालालजी साहिब की बहू अलीगढ़
१०, सकल पंचजैनी साहिबान पेरसु जिला मथुरा मा० प्रेमसुखजी किशोरीलालजीसाहिब
४१, सकल पंचजैनी साहिबान जैसवाल मारफत लाला रामलालजी प्यारेलालजी अलीगढ़
११, सकल पंचजैनी साहिबान कुम्हेर मा० ला० श्यामलाल स्सा
११, सकल पंचजैनी साहिबान भरतपुर

८२४)

महासभाने जाति सुधार और धर्म प्रकाशने का बीड़ा उठाया है और अनेकानेक प्रकार से इसका उपाय करना प्रारम्भ कर दिया है परन्तु जैन जाति आज कल अत्यंत न्यूनदशा को पहुंच गई है इस कारण उन्नति करने के वास्ते बहुत कुछ कोशिश करने की जरूरत है और कोई काम बगैर खर्च के होना नहीं है यहां सभाका बहुत बड़ा काम है इस के कार्यों की सिद्धि तब ही हो सक्ती है जब कि सर्व जैनी भाई इस की तन मन धन से सहायता करें ॥ परन्तु सब से पहले परोपकारों और सच्चे धर्मात्माओं को सहायता देकर नमूना दिखाना चाहिये जिस से अन्य भाईयों को भी प्रेरणा हो ॥

[यह पत्र बम्बई मित्र प्रेम मथुरा में छपा]

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेज़ी महीनेकी १-८-१६-२४ता०

का

बाबू सूरजभानवकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द ज़िला सहारनपुर

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष(ता०....१....मई....जून १८९६)अङ्क२४

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैन महा विद्यालय की सहायता ॥

श्रीमान जैन हितार्थी बाबू सूर्यभान जी साहब योग्य निहटौर के सकल जैनी पंचों का जय जिनेन्द्र आप के जैन गजट ने वर्तमान समय में अति उपकार किया है जो मजमून अपने जैन महाविद्यालय के विषय में जैन गजट में दिया था उसको पढ़ने से अति हर्ष प्राप्ति हुवा और सर्व भाइयो ने प्रतिज्ञा की है कि हम दस लाक्षणी में कम से कम एक पैसा प्रत्येक भाई अवश्यही जैन महाविद्यालय के वास्ते गोलक में डाला करेंगे ॥ हम आशा करते हैं कि हमारे सर्व जैनी भाई भी इसी भांत गोलक का प्रबन्ध करेंगे ॥ और जैन महाविद्यालय के वास्ते द्रव्य संचय करने की कोशिश करेंगे और इस बात से श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब को सूचित करेंगे ॥

जैनी भाइयों का शुभचिन्तक
गणेशी लाल नहटौर—जिला बिजनौर

स्योपुर

श्रीयुत भाई साहब सूर्यभान जी वकील सम्पादक जैन गजट जैजिनेन्द्र निम्न लिखित वार्ता को जैन गजट में स्थान दान दे-कर कृतार्थ कीजिये ॥

आप के जैन गजट व जैन हित उपदेशक पत्रों को पढ़कर परम आनंद प्राप्त होता है हम आप सरीखे सज्जन पुरुषो को नित्य प्रति धन्यवाद देते हैं और बम्बई के सभासदों को भी धन्यवाद देते हैं जो तन,मन,धन से जैन जाति के सुधारने और धर्म की उन्नति में उद्यम करते है धन्य है ऐसे सज्जन पुरुष सदैव चिरजीव रहैं और ऐसेही पुरुषों का जीवन सुफल गिना जाता है जो धर्म के कामों में तन मन धन से कटिबद्ध रहते हैं अपरंच यहां सभा मिती वैसाख सुदी १४ को संध्या के सात बजे से नौ बजे तक हुई जिस में अनुमान ४० सभासद थे उस वक्त भाई भूरामलजी गोधा तथा लाला जवाहरलाल जी सेठी तथा लाला गनेशीलाल जी कासलीवाल इन सर्व भाइयों ने धर्म की उन्नति करने का प्रबन्ध किया और कहा कि अन्य बिरादरियों में ग्यारवां तथा तेरवां अर्थात् मरने के पश्चात् जो जीमण होता है उस में नहीं जाना यदि जो कोई भूलकर भी चला जावै तो पंच १०) रुपया उससे दन्ड का लेवें और अपनी बिरादरी में रात्रि के समय मुर्दे को न जलावें इस प्रकार प्रबन्ध किया गया है और भी कुरीतियां दूर हो जावैंगी लेकिन बगैरह उपदेशक साहब के पधारे यहां पर कुरीति दूर होने का प्रबन्धनहीं होसक्ता इसलिये यहां पर उपदेशक साहब को अवश्य भेजना चाहिये ॥

समस्त पंचान स्योपुर

स्त्रीशिक्षा

यहांका हाल बहुत बिगड़ा हुआ है और महासभा भी यहां की तरफ से ऐसी बेखबर है कि अब तक कोई उपदेशक साहब भी यहां नहीं पधारे आशा है कि अब महासभा जल्द उपदेशक महाशयों के द्वारा यहांका बन्दोबस्त करेगी यहां जब तक बार२ यानी कई दफै उपदेशकोंका उपदेश न होगा किसी बातका इन्तजाम होना बहुत मुश्किल है अनेकानेक धन्यवाद महासभा के अधिकारियों को दिया जाता है कि जिन्होंने धर्म की उन्नति करने में निहायत कोशिश की है ॥

यहां खास भरतपुर में मंदिरजी दिगम्बर आमनाय के २ हैं और जैनी भाइयों के अनुमान १४० घर हैं मंदिरों में पूजन प्रक्षालन रोज मामूल से होता है परन्तु पूजन मंदिर की द्रव्य से होता है कुछ उघाई भी पूजन के वास्ते हुई है परन्तु अभी ठीक बन्दोबस्त नहीं है शास्त्रजी दोनों मंदिरों में दोनों समय बचते हैं ॥

पत्र जैनगजट, जैन हितैषी जैन प्रभा कर पंचायती मंदिर में आते हैं वोह रात्रि के समय शास्त्रजी की सभा में सब भाईयों को सुनाये जाते हैं यहां पर कोई सभा नियत नहीं है पाठशाला यहां एक नाम मात्र पहले से है एक ब्राह्मण अध्यापक हैं परन्तु इस में जैनियों के लड़के बहुत कम पढ़ते हैं पाढ़ईका क्रम भी ठीक नहीं है जब लड़के ही नहीं पढ़ते तो लड़कियोंका क्या जिक्र है बल्कि लड़ कियों के पढ़ाने में दोष निकालाजाता है

यहां पर एक स्त्री पढी हुई है वोह मंदिरजी में शास्त्रजी बांचती है दश बीस स्त्री सुनती हैं पूजन और शास्त्रजी के समय भी स्त्रियें रहती हैं ॥

यहां के जैनियों में भांग और हुक्का की प्रवृति ज्यादा है इस से धर्म में हानि है कुदेवोंका पूजन यहां जैनियों में विशेष प्रचलित है कहां तक लिखूं ॥

यहांका बन्दोबस्त होना अति आवश्यक है बहुत सी बातें पंचायत से जवाब भेजने की हैं उनका जवाब एक या दो भाई कैसे दे सक्ते हैं इस लिये यहां पर सभाका होना अति आवश्यक है और सभा बिना उपदेशक महाशय के पधारे हो नहीं सक्ती है इस लिये यहां पर उपदेशक सा-

इसका आना अति आवश्यक है पाठशाला धर्मके चिरस्थायी रह. नेका मुख्य कारण है यहां पर पाठशालाका भी प्रबन्ध होना जरूरी है— स्त्रियों को शिक्षा होना बहुत जरूरी है क्योंकि अव्वल तो घरों में किया रसाई पानी व गैरः की स्त्रियो के आधीन दूसरे कुदेवोंका पूजन जो अब जैनियों में अधिक प्रचलित है खास कर स्त्रियों ही की अज्ञानताका फल है— तीसरे फिजूल खर्ची जिसने हम लोगों को धन धर्म रहित कर दिया है स्त्रियों की अविद्या से ही अधिक होगई है ॥

चौथे— बालकों को शुद्धाचरण सिखाना भी स्त्रियों के ही आधीन है— मेरी हीन बुद्धि में तो जितनी खराबियां इस जाति में होगईहैं सब स्त्रियोंही की अज्ञानताका कारण है यदि इन कोशिक्षा दीजावे तो अबभी इस जाति की बिगड़ी हुई दशा दुरुस्त हो सक्ती है सज्जन परोपकारी धर्मात्मा महासभा के अधिकारी इस को विचारें और आशा है कि सब से पहले इसका बन्दोबस्त करें इस से बहुत हानि है बड़े खेद की बात है कि आप सारिखे सज्जन पुरुष धर्मात्मा अन्य भाईयों के उपकारार्थ तन मन धन से कटिबद्ध हो कर इतनी कोशिश करते हुए भी और बड़े जोर से आवाज लगाते हुए भी हम आप की आवाजों को न सुनें या सुनते हुए भी अन सुनी करें और अज्ञान प्रमाद निद्रा से सचेत न हों तो फिर धर्म की उन्नति की क्या सूरत है— परन्तु कहां तक अचेत करेंगे आशा है कि महासभा प्रमाद निद्रा में सोते हुए भाईयों को उपदेशक महाशयों के वज्र रूपी हाथों के द्वारा खूब झंझोड़ कर निद्रा से सचेत करेंगे और अब धर्म की उन्नति अवश्य होगी ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
चिरंजीलाल श्रावक
भरतपुर

प्रश्न

मेरे मित्रका आठ अक्षरका नाम है जिसका ॥

६-२= मिलाने से संस्कृत में श्रेष्ठ के मायने होते हैं

५-२=से मनुष्यके मायने निकलते हैं

१-१-२= से हाथी के मायने हैं ॥

३-१= धान्य विशेष ॥

३-८= पानीका पर्यायशब्द ॥

४-२= वजन के मायने हैं ॥

४-८= कीड़ाटका अर्थ है ॥

तो बताओ कि मेरे मित्रका नाम क्या है जो कोई विद्यार्थी इसका उत्तर देगा उसे एक पुस्तक उपकार पचीसी डाकव्यय पर ही बिना मूल्य दीयाजावेगी ॥

आप बालकोंका कृपाकांक्षी
मदनराज श्रीमाली
रतलाम

उपकारी पुरुष ॥

(जै० ग० अंक. १२ पृष्ठ १८ से. आगे)

और मैने वहां गजट भी सुनाया और नक्शा मर्दमशुमारी वहां का तथा ग्राम सिरसभीका लिखा और १० भाइयों को स्वाध्याय की प्रतिज्ञा दिलायी वहांके भाइयों को पाठशाला के विषय में कहा सब भाई पाठशालामें राजी हैं पाठक की तलाश है मेरा इरादा है मैं गश्त करके उपदेश करूंगा और मुझे राह खरच भी लेना मंजूर नहीं है

और पाठशाला नई एक हुई है मौजह मुहम्मदाबाद ज़िला आगरा महीना चैत में शुरू है दो महीने हुए हैं सो छाप देना ताकि पं० प्यारे लाल को खबर पौंचे ॥

और चिट्ठी मेलों की जो आप छापते हैं सो कुछ समय आगे छापी जावें क्योंकि गजट के आने तक मेलों का समय निकल जाता है इस से कुछ पेश्तर खबर होनी चाहिये ॥

विशेषु किमधिकम्

जेठ बदी ४ सं० १९९२

तेरा पता—रघुनाथदास जैन सरनौ डाकखाना एटा जि० एटा

मंत्री सभा सरनौ

धन्य है भाई साहब की हिम्मत को ऐसेही पुरुषों के उपकार से जैन जाति का उद्धार होगा यदि हमारे अन्य भाई भी अवसर पाने पर अन्य नगर ग्राम में जाकर उपदेश दिया करें तो सहजही में जैन जाति की उन्नति हो जावे ॥

"दया धर्म नहिं तन में मुखड़ा क्या देखे दर्पण में"

महाशय गणों !

यह पद आपने कई दफा पढ़ा और सुना होगा. परन्तु यह ठीक दृष्टान्त के द्वारा आज आपकी सेवा में निवेदन करता हूं ॥

किसी महात्माने एक दिन किसी दया रहित नव युवक पुरुष को जो (अपने सामने दर्पण रख कर उत्तमोत्तम शृंगार से शरीर संबन्धी बाहरी छटा को सजा रहा था) देखा. वह अत्यन्त प्रसन्न होकर यह समझता था कि आज का शृंगार अवश्य प्रशंसा योग्य और स्त्री पुरुषों को मोहित करने वाला है. यदि और भी कसी हो तो अवश्य सुधारना करनी चाहिये, यही सोच कर वह प्रतिक्षण दर्पण के द्वारा प्रत्येक अंग की सुधारणा करता था, इतने में परम दयालु महात्मा जी का उधर से आना होगया, उन्होंने ऐसी दशा में इसे देखकर उसके उद्धार

के वास्ते प्रेम से यह अमूल्य उपदेश दिया कि "दया धरम नाहिं तन में मुखड़ा क्या देखे दर्पण में" अय मनुष्य ! जो २ बातें इस संसार में समझने और देखने की है उन्हें परित्याग करके इस नाशवान शरीर को श्रृंगार कर दर्पण के द्वारा बारंबार क्या देखता है । क्या यही श्रृंगार और दर्पण उस वक्त तेरी सहायता कर के परमपद (मोक्ष) पहुंचा सकेंगे जब कि तू इस संसार सराय से बिदा होगा ! कभी नहीं ! यह सब नशवान पदार्थ और प्रतिक्षण अभिमान को बढ़ाते हुवे दुर्गति लाभ कराने के लिये कांटे बन्द हुवे हैं । अतएव इन से नाहे प्रेम न करके सन्त वृत्ति को धारण करो और सोचो और चेतो कि यह मनुष्य शरीर बारंबार नहीं प्राप्त हो सकता है वास्ते इसे सार्थ करने के लिये किन २ बातों की आवश्यकता है जिन के द्वारा असीम सुख के भागी होकर ईश्वर के चरण की शरण में नित प्रति निवास कर सको. यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार करोगे तो तुम्हें प्रत्यक्ष मालूम हो सकेगा कि जिस मनुष्य के हृदय में " दया ,, रूपी धर्म नहीं है वह क्या मुक्ति साधन करने का उत्साह और साहस कर सकता है ? कदापि नहीं ! तब क्या लाभ है कि लोगों को रिझाने और दिखाने के लिये दर्पण के द्वारा बा... [illegible] ... इस नाशवान दर्पण को परित्याग कर और वास्तविक दर्पण जो तेरा हृदय है उस में देख कि कौन २ सी बातें और सद्गुण तेरे में हैं जिससे यह जीव निरन्तर सुखास्वाद लेता हुवा शरीर धारणादि व्याधियों से मुक्त हो ॥

इतना कहना था कि उस सुजन के पूर्वजन्म के अच्छे संस्कार, के कारण एक तो महात्मा का दर्शन और फिर ऐसा अमूल्य उपदेश जिससे पाषाणभी पिघल सकता है, सुनते ही चट होश आया और महात्मा का अन्तःकरण से धन्यवाद करके सांसारिक अभिमान को बढ़ाने वाले पदार्थों से मुंह मोड़कर अपने दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करता हुवा ईश्वर भजन में तल्लीन होगया । फिर क्या था थोड़ेही काल में संसार से सब २ छूटकर ... स्वर्ग में सिधा हुवा ॥

धन्य है ऐसे परोपकारी महात्मा जिन्होंने ऐसा अनर्घ्य उपदेशांकुर उस के पाषाणवत् कठोर हृदय में प्रगट करके वचनामृत से हराभरा कर दिया। क्यों न हो महात्मा और अच्छे लोगों का जन्म केवल इसी वास्ते है कि भवसागर से पार हों और कई पापियों को भी पार करें। नहीं तो यह संसार चक्र किसी का छोड़ने वाला नहीं और न काम, क्रोध मद, लोभ, माया, मात्सर्य, झूठ, ... आदि असंख्य दुर्गुण अपना सबक ... [illegible]

सकते ऐसी दशा में केवल महात्माओं का दर्शन और उपदेशही हमारे लिये एक मात्र अवलंब है ॥

आप लोगों का कृपा कांक्षी
क० हे० मदन राज श्रीमाली
वि० सं० रतलाम

फजूल खर्ची ॥

जैन सभा करहल ॥

भो प्रियवर भ्रातृगण इस अल्प लेख को ध्यान देकर सुनिये—और यदि उसमें कुछ उचित ज्ञात होतो उस के ऊपर चलकर अपनी जातीय उन्नति कीजिये. परन्तु यदि आपके निकट कोई बात इस में अनुचित भासती हो तो अवश्य आप यह समझ लेना कि किसी मूर्खने आपका समय कुछ नष्ट किया ॥

ए भाइयो—इस समय इसबात को वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं कि हमारी जाति में सबसे बड़ा हानिकारक कारण फिजूल खर्ची से बहुत बड़ी २ खराबी और बुराइयां इस जातिमें फैल गई है अधर्मी, पापी दुराचारी, भी हमारी जाति को इसही फिजूल खर्ची ने कियाहै सारे जन्म घोर कष्ट और सोच फिकर में आयु व्यतीत करना इसही के कारण से है—यदि यह फिजूल खर्ची हमारी कोम से दूर हो जावे तो सर्व प्रकार की भलाई फिर पैदा हो सकी है—और आजकल फिजूल खर्ची के दुखिया बहुत मालूम होते हैं— सब छोटे बड़े यह चाहते हैं कि किसी प्रकार से यह फिजूल खर्ची दूर हो जावे परन्तु बड़े कष्ट और शोक की बात है कि हमारे भाई इस फिजूल खर्ची को बन्द नहीं करते ॥ भाईयो इस फिजूल खर्ची ने बहुत से धनाढ्यों को निर्धन कर दिया—वे विचारे अब महान पश्चात्ताप करते और विचारते हैं कि हाय हमने पूर्व अवस्था में अर्थात जब हम धनाढ्य थे तब धन के मद कार अंध हो रहे थे और एक पैसे की जगह एक रुपया खर्च कर दिया तिसका फल अब हम भोग रहे हैं अर्थात व्यर्थ व्यय का फल नहीं भोगते मानों धनाढ्य मुखिया पुरुषों को बारबार प्रकट दिखाते हैं कि जब हम ऐसे धनवान पूर्व थे अब ऐसे निर्धन हो रहे सो यह सर्व फिजूल खर्ची महारानी ने कृपा की है भाइयो इस फिजूल खर्ची ने बड़े २ अमीरों को फकीर बना दिया—कि साहब पूर्व में जब धनवान थे और टिम टिम रथघोड़ा आदि सवारी में बैठकर जाते थे और चार छः आदमी अगाड़ी पिछाड़ी चलते थे और जब बाजार में निकलते थे तब सैकड़ों आदमी तमाशा देखनु

थे खड़े होकर जुहारु करते थे सो भाई यो तब तो धनकर अंधे थे सो पुत्रादिकों के विवाह में अभिमान के मारे वेश्यादिकों के नृत्य आतिशबाजी वगेरह में हजारों रुपया लगाकर निर्धन होगए हैं अब औरों की नोकरी करने का इरादा करते हैं बाजार में जाकर किसी रिस्तेदार दुकानदार से जुहारु करते हैं तो वे साहब अपना मुह फेर कर बराब जाते कि मायत हम से कुछ उधार लेने न आये होवें— दो रुपये की सोदा लेकर पीठ पर गठरी रखकर घर २ डोलते हैं सो भाईयों सर्व फिजूल खर्ची राज्य राज्ये श्वरी ही का महात्म्य है भाईयो इस फिजूल खर्ची ने बड़े २ ज्ञानवानों को मूर्ख बना दिया कि पूर्व में जब धनाढ्य थे तब सर्व मान्य गिने जाते थे अगर उस वख्त में किसी शुभचिंतक मित्र ने कहा कि भो मित्र तुम इतना खर्च क्यों करते हो तो आप उसके उत्तर में क्या कहते हैं भाई हम क्या करें कि औरतें तो मानती ही नहीं वह कहती भांड सो होवेंही रंडी बही आवें अंगरेजी बाजे तो जरूरही चाहियें और जब तक धन में आग नहीं लगाई जावे अर्थात आतिशबाजी नहो तो समधी साहब के दरवाजे पर जाने की सोभाही क्या है फुलवाड़ी तो हो-

वे ही इत्यादिक धन लुटने बिन न रहै तिसका फल अब निर्धन हुए अच्छी तरह भोग रहेहैं कि पेस्तर तो कि जबकि धनवान थे तब तो सर्व मान्य थे अब यह हालतें हैं कि कोई बात नहीं पूछता भाई साहब देखिये यह दसा इसी फिजूल खर्ची के अनुग्रह से है ए भाइयो इह फिजूल खर्ची ऐसी दुष्टनी है कि इसको जिसने हाथ लगाया उस को सोच फिकर क्लेश निर्धनपना आदि महादुख तो सहजही में दिये हाय हाय बड़े पश्चाताप और शोक की वार्ता है कि इस की दुष्टता सर्व जान ते हैं और सर्व इस को दूर करना चाहिते हैं फिर हमें नहीं मालूम कि यह ऐसी जबरदस्त है कि फिर भी नहीं छूटनी इसे दूर करने का उपाय सोचना चाहिये कि यह किस तरह छूट सक्ती है मेरी समझ में तो इसका उपाय यह है पूर्व में देश काल विचारज्ञ विद्वान बुद्धिवान मुखिया महाशयों ने जो रीतें उस समय के योग्य सोची तो उनका प्रचार आज दिन तक हो रहा है परन्तु अब वह समय नहीं रहा तो अब वर्त्तमान के मुखिया धनाढ्य बुद्धिवान देशकाल के ज्ञाता जिन रीतों पर आरूढ होवें उनका चलना कुछकठिन नहीं क्योंकि जिस कामको धनाढ्य मुखिया करते हैं उनका अन्य

भाई करने से स्वतः कटिबद्ध होते हैं इससे यह मुख्यकार्य धनाढ्य मुखियाओं हीका है और मुखिया धनाढ्य लोग इस कार्य में अग्रणी नहो गे तो हमयहीं जानेंगे कि हमारी जातीय अवनति का कारण धनाढ्य मुखिया हैं इससे भी धनाढ्य मुखियाओं इसका प्रबन्ध आप करो अब मैं इस लेख को पूर्ण करता हू और आशा करता हूं कि हमारे भाई आज की सभा में कुछ न कुछ थोड़ा बहुत प्रबन्ध जरूर करेंगे और धन्यवाद के योग्य होंगे शुभं शुभंशुभम्

भरतपुर

(१) यहां जैनी भाईयों में कुदेवोंका पूजना विशेष प्रचलि-है— यानी हनूमान— दुर्गा- बाम ·इ भवानी— भैंयद कुआवाला इत्यादि कुदेवोंका पूजन करते हैं बाजे जैनी सत्य नारायण की कथा बन्द बाते हैं और यह अभि प्राय रखते हैं कि हमारे पुत्र पुत्री और रोजगार इत्यादिकका लाभ इनही के पूजने से होता है और इस ही की रोज ब रोज उन्नति है सिर्फ दो चार भाई ऐसे होंगे जिनको इनकामों से अरुचिहो परन्तु वोह भी स्त्रियों की अज्ञानता और हठ से लाचार हैं ऐसी अवस्था अपने जैनी भाईयों की देख कर हम को बड़ा शोक पैदा होता है कि हमारे जैनी भाई ऐसे धर्म अपूर्व निधि को छोड़कर मिथ्यात्व में डूबते हैं ऐसी दशा मे धर्म की उन्नतिका क्या जिक्र है इसका कारण अविद्या और स्त्रियों की अज्ञानता है ॥

[२] यहां जैनी भाईयों में हुक्का पीने की रिवाज बहुत बढ़ गई है बहुत भाई पीने लगे हैं इस में जो हानि है वो सबको प्रगट है लिखने की आवश्यक्ता है नहीं ॥

[३] भांग— यह इस देश के मनुष्यों की जीवन बूटी है जैनी भाई बहुत पीते हैं बल्कि मियांजीका मंदिर खास भांगका अखाड़ा नियत कर रक्खा है यानी वहां पर हर रोज दश बीस आदमी खूब मजे से भांग पीते हैं और हुक्का भी पीते हैं ऐसी बात के लिखने से बड़ी शरम आती है परन्तु मजबूर लिखे बिना रहा नहीं जाता हाय २ बड़े खेद की बात है कि श्री मंदिरजी धर्मायतन में धर्म की जगह और काम किये जावें भांग पीने से जो २ नुकसान होते हैं वोह कहां तक लिखे जा॰ मैं इसका नशा जब होता है तब इंद्रियोंका विषय पोषन चाहता है प्रमाद होता है फिर क्याक्या

जिये ऐसी सूरत में धर्म साधन-
का क्या जिक्र है ॥

[४] यहां के जैनी भाईयों के आचरण ऐसें हैं कि कुछ तों मंदिरजी में दर्शन करने ही नहीं आते— बहुत से आते भी हैं वोह सिर्फ दर्शन किये और चल दीये धर्मका स्वरूप बिलकुल नहीं जानते शास्त्रजी सुनना जो जरूरी काम है बहुत कम भाई सुनते हैं और अनुमान चालीस भाई दोनों मंदिरों में स्वाध्याय करते हैं अभक्ष भक्षनका तो कुछ कहना ही नहीं कहां तक लिखें यानी कन्द मूल हींग शहद कुप्पेका घृत इत्यादि मोटी २ चीजें जो श्रावक नाम को बिलकुल वर्जित हैं यहां बहुत भाई खाते हैं ॥

[५] यहां स्त्रियें गाली गाती हुई बाजार में चली जाती है घरोंका तो कहना ही क्या है— ख्याल कीजिये यह कैसी बात है ॥

[६] फिजूल खर्ची का यहां पर कुछ इन्तजाम नहीं है लेकिन आतेशबाजी तो विवाह शादी में पहले ही से बन्द है और तोरन वगैरः ५ मशाल से होती है वेश्या देखका नृत्य बन्द नहीं है यह फेजूल खर्ची इस समय यहां बहुत बढ़ी हुई है कि कुछ लिख नहीं सकते— बहुत से घर इस की कृपा से बरबाद होगये हैं बाजै धर्मात्माओंका चित्त कुछ कमी करनेका है— जैसा कि भाई सुन्दरलालजी पाटौदी के भतीजे चिरंजीव बन्सती लालकी सगाई वैशाख बदी तीज को हुई थी उन्हों ने वेश्याका नृत्य वगैरः कुछ नहीं कराया सादा तौर पर सगाई लेली— इन महाशयो को धन्यवाद दिया जाता है ऐसे ही पुरुष आप नमूना बन कर इस फिजूल खर्ची को जड़ से उखाड़ेंगे ॥

[७] यहां और भी बहुत सी कुरीति प्रचलित हैं— सभा पाठशाला कुछ नहीं है यहां के जैनी भाईयों की तरफ महासभा को अवश्य ध्यान देकर यहांके जैनी भाईयोंको मिथ्यात्व औरप्रमाद रूपी निद्रा से उपदेशक महाशयके उपदेश रूपी हलक द्वारा सचेत करना चाहिये क्योंकि महासभा ने सर्वभाईयों के उपकारार्थ कमर बान्धी है ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
एक जैनी

फजूलखर्ची

महाशय

प्रिय संपादक जैन गजट—जैजिनेंद्र कृपा करके नीचे लिखे लेख को स्थान दान दीजियेगा ॥

व्यर्थव्ययकासत्यानाश

तारीख १७ अपरैल सन् ९६ को कुँवर द्वारका दास सेठ साहब सभापति साहब महासभा के पुत्रका विवाहथा— सभापति साहबने विवाह से पहले मारवान बिरादरी को एकत्र करके कहा कि सब लोगोंका यही ख्याल है कि बडे आदमी खर्च की कमी नहीं करते यदि मैं बडा आदमी नहीं परन्तु भाईयों ने मुझको बडा मान रक्खा है इस वास्ते मेरा निवेदन यह है कि जो २ व्यर्थ व्यय आप रोकना चाहते हैं वोह प्रथम मेरे घर से रोक दीजियेगा— इस पर भाइयों ने बागबाडी पर जोर दिया उस में सेठ साहब के हजारो रुपये खर्च होते थे— और भी कैई रस्में छोटी२थी कि जो स्थानीय बिरादरी से तालुक रखती हैं सु वास्ते सेठ साहब ने भाईयों की आज्ञाकी पूरी २ तामील करी बागबाडी एक पैसे की नहीं बनाई गई और बरात भी बहुत थोडे से आदमीयों की कन्या वाले के मकान पर गई जिस्की तादद दोसो आदमियों से किसी प्रकार भी जियादह नहीं थी— भोजन— दोनों तर्फ से अति उत्तम और ठंढा पानी स्वच्छता के साथ में परोसा जाताथा— जिस से खाने वाले अति प्रसन्न हो जाते थे— यह विवाह खास मथुराजी में हुआथा— आतिशबाजीका भी कहीं पता नहींथा ॥

सेठ साहब ने १२७१, रु० मथुरा और आगरे के जैन मंदिर में भेट करे और ११ रु० उपदेशक भंडार की सहायतार्थ मुझको दिये ॥

सेठ साहब के यहांका प्रबन्ध सब लाला चिरंजीलालजी आनोररी मजिस्ट्रेट जो उक्त सेठ साहब के भानजे हैं करते थे—कि जिनका—प्रबन्ध प्रशंसनीय था—बाहर से आने वाले भाईयों की खातिर दारी बडी योग्यता से होती थी— इस विवाह से सेठ साहब ने अपनी बिरादरी के वास्ते एक नमूना व्यर्थव्यय के रोकने का बनादिया— जिस से जाति के हजारों रुपये व्यर्थव्यय से बचेंगे

मुझे भी इस विवाह के देखने का फखर हासिल हुआथा— इस वास्ते यह सब हाल मेरी आंख का देखा हुआ है औ मुफस्सिल हाल की रिपोर्ट रतनलालजी लिखेंगे ॥

उपदेशक फन्ड में जो सेठ साहब ने रुपया दिया उस में धन्यवाद देता हूं ॥

चम्पतरायजैनी

रिपोर्ट

उपदेशक भगवान दास जैन महासभा मथुरा ॥

मैं ललितपुर आया और यहां पर भाई टेंढया मथुरा दासजी के मकान पर ठहरा फिर ता० १—६—९१ को श्रीबडे मंदिरजी में सभा हुई पहले पंडित चुन्नीलालजी ने बहुत ही उत्तम रीति से शास्त्रजी की वचनका करी पश्चात मैंने विद्या धर्म की आवश्यका के विषय में व्याख्यान दिया और उपदेशकों की नियमावली के अनुसार संपूर्ण महा सभाका मन्तव्य निवेदन किया उस समय जैनी महाशय २०० के अनुमान उपस्थित थे मैं इन संपूर्ण महाशयों को धन्यावाद देता हूं और बड़े ही हर्ष के साथ प्रकाशित करता हूं कि उक्त महाशयों ने मेरे किंचित उपदेश के कारण से ही सभा व पाठशाला करणा स्वीकार कर लिया यह सभा प्रति मास पूर्णमासी को हुवा करेगी और पाठशाला विचार की अपेक्षा तो स्थापित हो चुकी परन्तु कार्य की अपेक्षा पंडितजी के आने पर स्थापित होगी यहां के अर्थ पंडितजी की आवश्यका है और मासिक १०, रु० से १५, रु० तक पंडितजी को अर्पण किया जावैगा इस के अनन्तर चौधरी जवाहरलाल के पुत्र हजारीलाल ने कि जिन्हों की अवस्था १२ वर्ष की होगी उन्हो ने बहुत ही मनोग्य धन्यवाद पढा ८ से ११ बजे तक सभा उपस्थित रही पश्चात जयकार शब्द के साथ विसर्जन हुई और यहां पर २ मंदिरजी बहुत मनोग्य हैं और एक १. मंदिरजी प्रति बहुत स्थान सभो मर नजी विराजमान है और एक चैत्यालयजी भी यहां है और यहां पर संपूर्ण जैनी भाईयों की संख्या १०२१ है घरों की संख्या २९४ है यहां पर गणना होने में ३ रोज की देरी हुई और यह प्रश्न भी हुआ कि इस सम्पूर्ण जैनी भाईयों को गणना से क्या लाभहोगा अन्त में पंडित चुन्नीलालजी की सहायता से कार्य सिद्ध हुवा मैं उक्त पंडितजी को बहुतसा धन्यावाद देता हूं कि इसकार्यमें इन्होंने अच्छी सहायता की और यहां पर मुख्य दुकान भाई टेंढेया मथुरा दासजी की है जो भाई

पत्रया लेने देनेका व्यवहार चलाया ना है उक्त महाशय की दुकान से चलावै ता० १७–९–९१ इनी उपदेशक भगवान दास केपुः ॥

रंडी का नाच

जैन सभा करहल

भाइयो- इसी फिजूल खर्ची से आज कल धर्म में रुचि नहीं रही किन्तु वेश्या के नृत्य आदिक में वहुतेरा रुपया खरच कर देते हैं मेरे ख्याल में तो वेश्या का नाच ही एक सब से बड़ा कारण है जिससे धर्म नष्ट होता आचर बिगड़ता है शील भंग होता है- दुराचार करने को जी चाहता है शरम और लज्जा जाती रहती है और तृष्णा पैदा हो जाती है हाय हाय कैसे बड़े शोक की बात है कि हमारे जैन कुल में विवाह जैसे शुभ कार्य में कि संसारिक पुरुष के वास्ते इससे बड़ा और कोई खुशी का शुभ कार्य नहीं इस में वेश्या को नचाते हैं और बहुत से रुपये खरच करते हैं और सभा लगाकर सब छोटे बड़ों को इकट्ठा करिकैं उस वेश्या को सभाके बीच खड़ी करिके उससे व्यभिचार का उपदेश कराते हैं हाय हाय यह रीति देखकर हमारा हृदय छिदा जाता है और आंखों से आंसुओं की धारा वहती है कि यह जैन कोम जो अपने को सब जातियों से उत्तम समझता है और अपने को सबसे ज्यादा धर्मात्मा बताती है फिर ऐसा निंद्य कार्य करें कि अपनी सभा में जहां छोटे बड़े सब बैठे हों जहां बाप बेटा दादा पोता चाचा भतीजा सब मौजूद हों तहां एक वेश्या आर्थात् व्यभिचारिणी कुलटा बदमाश स्त्री का प्रवेश हो- और प्रवेशही नहीं हो किंतु उसका नृत्य हो नृत्यही नहीं किंतु उसका गाना भी हो गाना क्या है एक व्यभिचार का उपदेश है और उपदेश सर्व वृद्ध जवान बालक अच्छी तरह सुनते हैं और खुशी होकर मस्तक हलाते हैं ॥ हाय हाय बड़े शोक की बात है कि हमारे भाई अपनी प्यारी संतान को क्या अच्छा उपदेश सुनवाने के प्रेरक होते हैं यदि कोई एक पुरुष इस कार्य को करै तो खैर परन्तु अब तो यह कार्य बिरादरी की रसम में शामिल है कोई विवाह बिन

श्या के होता देखा नहीं जाता ऐसे कार्य करते हुए और दुराचार के ऐसे कारण अपने आप मिलते हुए यदि हम यह आशा करें कि हमारी जातीय उन्नति हो बिलकुल असंभव है ॥ अब हम बड़े हर्ष के साथ इस बात को प्रगट करते हैं कि नकुड़ जिला सहारनपुर के भाइयों ने इस निंद्य महा पाप को बिलकुल छोड़ दिया और यह नियम कर लिया विवाह में वेश्या का नाच न करावेंगे इसही प्रकार हमारे करहल निवासी भाई इस उत्तम प्रबन्ध करलें तो बहुतही अच्छा है ॥ अपने आप हमारे कुल के बच्चों के आचरण दुरुस्त होजावें और फिजूल खर्चों का बड़ा भारी स्तम्भ उखड़जायइ और धर्म का प्रचार होजाइ ॥

जैन सभा करहल जिला मैनपुरी व्याख्यान ॥

धन्यहै आजका पर्व पावन पवित्र अष्टानिका संबंधी चतुर्दशी का दिवस कि जिस पर्व के आठों दिवसनि के विषै इंद्रादिक देव अपने २ स्थान तें हर्षित भये संतेदेव की भक्ति के भारकरि द्रवीभूत भया है चित्त तिनिका सो अष्टम द्वीप जो श्री नंदीश्वर द्वीप तहां जाइकरि प्रभू की अष्टप्रकारी उत्कृष्ट द्रव्यनिकरि पूजा करते और गीत नृत्य तथा स्तोत्र पाठ करि अनेक जन्म में उपार्जन किये कर्मरूप पाप तिनिका नाश करते हैं और इही परम पवित्र सर्व पर्वनि में पवित्र अष्टानिका पर्व शास्त्रनि में वर्णन किया है अब विचार करने का अवसर है कि वह देवोपुनीत सामिग्री और अष्टम द्वीप की यात्रा का दर्शन की शक्ति इस मनुष्य पर्याय में नहीं तातैं निज शक्त्यानुकूल यहां ही स्थापन विधान करि कोटि ग्रह कार्य छोड़ि इस अमोलिक समय करि पुन्योपार्जन निज निज शुद्ध भावनि के अनुकूल सर्व जैनी भाइयों को अवश्य २ करना चाहिये क्योंकि ऐसा भारी लाभ जिसके सदृश संसार संबन्धी कोई भी वस्तु नहीं हो सक्ती तो धर्मात्मा ग्रह में आप प्राप्त भया जो अमोलिक रत्न ताहि के सेन आदर करि ग्रहण करें करें ही यों और जिन देव की यही आज्ञा है कि मनुष्य पर्याय पायकरि धर्मोपार्जन में सदा काल सावधान रहना उचित है अर्थात् आज पर्व पावन दिवस की रात्री को सर्व भाई मोत्कंठित होकर जिन गुन गानकरी तथा श्रवण करि काल व्यतीत करो जिस से विशेष पुन्य के भागी होउ ॥

अब भो मेरे प्यारे सज्जनों जरा इस तरफ को ध्यान आंदो और कुमाते कुज्ञान जनित अंधकार छोड़ो वृथा इस रूपी पावन करि पग न फोड़ो और

कुत्सिता चरण से ती मुख मोड़ो तो आपका सर्व कार्यनिसंबन्धी परिश्रम वा का प्रयास सफलता को प्राप्त होगा अब देखो भाई साहब सत्पुरुष जिस कार्य को करने को अपने मुख से प्रतिज्ञा करते है और बचन निकालते हैं तो उसका अच्छी तरह निर्वाह भी करते हैं काहे से बचन प्रमाणकारि पुरुषकी प्रमाणता गिनी जाती है यदि कहे हुए अपने वाक्यों को लोभ के कारण तथा और कारण सेती भूल जाय तो लोग उसको कह उठते हैं कि इनकी बात का कुछ ठीक नहीं, कहना तो सहल है परन्तु कहि कर उसका निर्वाह कर देना कठिन है जैसा धानतिराइजी ने कहा है "कथनी और करनी करेंगे बिरले संसार" अब हमारा इस सभा में इस व्याख्यान से यह प्रयोजन है कि आप श्री तथा सर्व सभासद अपने पूर्व प्रमाण किये हुये वाक्यों को याद करो कि हमको सभा के दिन सभाके योग्य वस्त्र पहनि करि वेबुलाया लिये सुबह सभा के विषे दो घंटा के वास्ते ग्रह कार्य छोड़ि उद्यम बंद भये सेते पधारना चाहिये और अपने करने योग्य बंदोबस्त पर ध्यान देना चाहिये भाई साहब अब विचार करना चाहिये कि जिस काम को हम खुद अपने मुख से कहें और हमी उसका निर्वाह न करें यानी उसको पूरा न कर तो हम और तिनसे क्या बन्दोबस्त करा सके हैं ॥ कुछ नहीं आप भाइयो गत सभा अर्थात् पौष शुक्ल १४ की सभा में फिजूल खरची का प्रबन्ध होना स्वीकार किया था चैत्र के मेला पर प्रबन्ध होगा लेकिन उसकाकुछ खयाल नहींकिया अब दिन तो करीब आय गये जब कोई साहब पूछेगा तथा देखेगा कि कुछ काम ठीक नहीं है तो फिर दृष्टांत वोही होगा कि सौगज फाड़ें और गज भर भी न फँटे सभा यह भी कुछ लेख मुकर्रर कर दिया है कि सभा मे बैठि कर जो चाहो सो कहलाने फिरि करना कुछ नहीं तथा जो जिस काम का अधिकारी हो और उसके निमित्त हामरल भर साथ फिरि उसकाम को करे नहीं तो उस काम के निसबत प्रभाव देही तथा नदामत उसको सभा से जरूर होना चाहिये यदि आप सर्व सभासद मिलकर होकर बंदोबस्त नहीं करोगे तो आगली बातका भय जाता रहेगा अब इसी अवसर में पूर्व सभा में प्रगट की हुई बातों यानी फिजूल खर्ची बंद होने के निसबत सर्व सभासदों के सामने व्याख्यान किया गया था और उसके गुण दोष भी दिखाये गये थे अब मेरी समझ से ऐसे उत्तम काम करने में ढील नहीं होना चाहिये भाई साहब यह बात फिजूल खर्ची बंद होने की अन्य मत वालों में जाहिर भी होगई है कि यहां के जैनियों ने अपने मेले के समय पर फिजूलखर्ची बंद

फल्ना स्वीकार किया है सो भाइयो यह वार्ता सर्व जाति हितैषीयों को समझिकर इस में अच्छी तरह कोशिश करना अवश्य चाहिये जो इस काम को तन मन लगाकर अच्छी तरहसे करोगे तो मैं जानता हूं कि तुम को इस काम के किये हुये का फल जल्दी दिखाई पड़ेगा और मेले की सभा में जन्म से मरण पर्यन्त के खर्च के प्रबन्ध की किताब बना कर पेश करूं-गा कि यह तो छोड़ना और यह ग्रहण करना उसको सर्व सभासद पसंद करके मंजूर करेंगे हमको आशा है कि करेंहीगे अब मैं इस लेख को पूर्ण करता हूं कि हमारे भ्रातृगण जाती अवनति का कारण जो फिजूल खर्ची है ताहि समूल नाश करेंगे और अन्य भाइयों के उपमा के योग्य होकर कोटिश धन्यवाद के योग्य होंगे ॥ शुभं ॥

झालरापाटन ॥

लाला सुन्दर लाल बैनाड़ा की चि-ट्ठी से मालूम हुवा है कि झालरा-पाटन में जैनी भाइयों में विरोध हो गया है ॥ परोपकार धर्मोन्नति जातो-न्नति आदि कार्य तो अब यहां के जैन भाइयों से हो चुके अब जैनी भाई आपुस में विरोध करने पर उद्यमी हुवे हैं क्यूंकि अब यहां के जैनीयें की अवनती और डूबने के दिन निकट आ गये हैं और यह बात प्रसिद्धही है कि आपत्त काले विपरीत बुद्धी ॥

लाला सुन्दरलाल जी यह भी लिखते हैं कि यहां मिथ्यात का अ-धिक प्रचार है यहां तक कि जिस दिन स्त्रीयें उपवास करती हैं उस दिन मन्दरजी में कौड़ी लेकर जुवा खेलने को जाया करती हैं और चैत्र बदी ९ को यहां मन्दिरजी में फाग खेलने को भी आया करती है यह प्र-वृत्ति इसही शहर में है ॥ हाय हाय हमारे जैनियों की अति निंदनी दशा होगई है ॥ यह सब अविद्या का महात्म है ॥ ऐ धनाढ्य पुरुषों ऐ जैन जाति के मुखिया पुरुषो कुछ दिन के वास्ते अपनी मान बड़ाई का ख्-याल छोड़कर यदि आप जिस तरह रुपये को चांदी सोने के घोड़े हाथी बनाने में और मेला कराने में लगाते हो इसी तरह विद्या प्रचार में लगावो तो यह जैन धर्म कुछ दिन और का-यम रह सक्ता है नहीं तो यह धर्म अब लोप हुवा चाहता है और उसही के साथ आप की मान बड़ाई भी न रहेगी ॥

रिपोर्ट

उपदेशक भगवान दास स०

गढा कोटा की खुरई जिला सागर से ॥

खुरई यह सामान्य ग्राम है यहां पर जैनी दिगम्बरी तेरा पंथीन के १९६ घर हैं और भाईयों की संख्या कुल्य ६६१ है और यहां पर श्री श्रीमन्त सेठजी साहिब मथुरा दास मोहनलालजी तो रत्नही है अर्थात् विद्या धर्म लक्ष्मी और लौकिक प्रतिष्ठा से अति उत्तम हैं और ये महाशय महत सभा मथुरा के उप सभापति भी हैं इन्हो ने मेरे उपदेश के कार्यों में बहुत सहायता की है मैं उक्त महाशय को कोटिशः धन्यवाद देता हूं इस निकृष्ट कालमें ऐसे महत पुरुष विरले ही दिखाई देते हैं और यहां पर दो मंदिरजी बहुत शोभा युक्त हैं कि जिन में सुवर्ण जड़ित चित्राम हुवा है और एक २ मंदिरजी में छै २ सिखरे हैं और प्रत्येक सिखर समो सरण विराजमान है मैंने यहां पर वैशाख सुदी पूरण मासी को सभा कराई तो सभा में हैजा की बीमारी के सबब पचास महासय के अंदाज पधारे अर्थात् थोड़े महाशय एकत्र हुए फिर मैंने विद्या धर्म की आवश्यका और ऐकाता व्यर्थव्यय बाल विवाह के विषय में व्याख्यान दिया और और उपदेश की नियमावली अनुसार संपूर्ण महाशयों से प्रार्थना की तो संपूर्ण महाशयों ने यह उत्तर दिया कि सभा पाठशाला तो यहां नियत है और और व्यर्थव्ययका भी विवाह में वर्षी कुछ इन्त जाम हुवा है बाकी कार्योंका भविष्यत कालमे विचार किया जावैगा आज संपूर्ण भाई एकत्र नहीं है ॥

और इस ग्राम में उक्त महाशय मथुरा दास मोननलालजी की ही दुकान सराफी में प्रसिद्ध है इन्ही की दुकान से अन्य न देशी भाईयों की कारवाई चलती है ॥

ता० ३०-४-२६

मु० ललतपुर—द० खुद

धन्यवाद

श्रीयुत भाई सूर्यभानजी सहज जयजिनेंद्र इस अल्प लेखको आपने जैन गजट में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

श्रीयुत करुणा सागर सेठ लक्ष्मनदासजी सी० आई० ई० सभापति व महा मंत्री मुन्शी चम्पतरायजी सहाब व सम्पादक जैन गजट बाबू सूर्यभानजी साहब

आदि को धन्यवाद देकर निवेद
न है कि आपका जैन गजट मि
थ्यात्व रूपी अन्धकार को दूर क
रने के लिये सूर्यवत् प्रकाश वा-
न है प्रत्येक जगह के समाचारों
को पढ़ कर चित्त बहुत आनन्दि
त होता है ॥

यहां पर १ मंदिर पंचायती और
२ चैत्यालय हैं और जैनी भाई
यों के २० घर है पूजन प्रक्षाल
आदि धर्म कार्य उत्तम रीति से
होते हैं किसी तरह का विघ्न नहीं
है पाठशाला यहां पर नहीं है प-
रन्तु सरकार की ओरसे १ मद-
रसा है उसी में हमारे जैनी आदि
कों के लड़के पढ़ने को आते हैं ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
भैरों प्रसाद दर्याबाद
जि० बारहबन्की

सहायता श्रीजैन मंदिर

श्रीमान भाई सूर्यभानजी साहब जै-
नयजिनेंद्र:

मैं अत्यन्त हर्ष के साथ आपको ध-
न्यवाद देता हूं कि आप की सहायता
से हम लोगों की यानी इस जैन जाति
के उद्धार की सूरत दृष्टि गोचर होती
और जैन गजट को पढ़ कर हमारे
जैनी भाईयों के कठोर हृदय नर्म होते
जाते हैं आपने अपने जैन गजट अंक १८
एक मजमून मौहब्बतपुर डाकखाना
हसायन जिला अलीगढ के मंदिर की
सहायता के बारे में दियाथा उस को
पढ़ कर हमारे यहां के जैनी भाईयों ने
उस की सहायतार्थ १०, रु० का चन्दा
जमा किया है अभी हमारे दिल को
पूरे तौर पर से तसल्ली नहीं हुई है
कि यहां की दरख्वास्त आपके पास
आई थी वा नहीं क्योंकि मजमून के
आखिर में नाम लाला गनेशीलाल सा
हब निहटौर जिला बिजनोर निवासी
का नामथा यदि उक्त ग्राम के [कि
जिस में मंदिर बन रहा है] पंचोंका
नाम होता तो हम वहां को रुपया भेज
देते इस लिये आप से प्रार्थना की जा
ती है कि आप हाल दर्याफ्त करके
हम को खबर देवें तो हम रुपया वास्ते
मंदिरजी के भेज देवें ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
चमनलाल सुलतानपुर
डाकखाना चिलकाना
जिला सारनपुर

झालरापाटन ॥

प्रियवर महाशय सूर्य भानु
जी साहब कृपाकर इस तुच्छ
लेख को यदि उचित, समझें तो
अपने अमोल्य पत्र में स्थानदान
देकर चिरबादित कीजिये ॥

यद्यपि जैन प्रभाकर पत्र तथा
जैन गजट, जैन हितैषी पत्र उप-

देशक की तरह लोगों को स- चेत कराते हैं परन्तु ऐसे पत्र के- वल वैसेही पुरुषों को सचेत होने में अधिक सहायता देवेंगे जो देवनागरी अक्षर पढ़ सकते हैं कुछ कार्य कारी नहीं है जब तक कि दूसरा पढ़ा हुवा पुरुष पढ़कर उनको न सुनावे ॥

यहां पत्र जैन प्रभाकर, जैन हितैषी, तथा जैन गजट हर म- हीने यथा प्रति सभा को आते है परन्तु हाय! यहां के भाइयों को इतना प्रेम इन पत्रों से नहीं है कि आप खुद उनको पढ़ें तथा और किसी पढ़े हुए पुरुष से पढ़वाकर आप श्रवण करें ब- ल्कि और कोई पढ़ा हुवा पुरुष पढ़कर श्रवण करना है तो ब- हुत से भाई कहते हैं कि आज कल इन पत्रिकाओं का प्रचार ब- हुत होगया है इससे जैन ग्रंथ छ- पणे लगजावेंगे और कुछ चिनयन रहेगा सब नई २ रीतियें निक- लती जाती है तथा बहुत से बि- ना पढ़े पुरुष बैठे होवें तो कहते हैं कि हम को तो काम है अभी फुरसत नहीं है इस का मुख्य का- रण अविद्या ही है यदि इन भा- इयों से इस प्रकार का प्रश्न किया जावे कि धर्म को छोड़ ऐसा कौनसा बड़ा काम आप के पीछे लगा है जिससे आपको फुरसत नहीं है तो चुप के से उत्तर देते हैं साहब संसार मे बैठे हैं गृहस्थ के कई खटके लगे रहते हैं लाचार होकर कुछ जवाब सवाल नहीं कर सकते हैं क्योंकि यहां ऐसे पुरुष बहुत है जो नाम मात्र के श्रावक हैं और ऐसे पुरुष विरले हैं जो धर्म स्नेही तथा धर्म के धारी हों कुछ दिन हुए कि यहां पर से- ठजी साहब दोलत रामजी मुंत जिमरकान यहां बसबब मेला बैशाख शुक्ला पूनम पर पधारे रा- त्रि को शास्त्र श्रवण करणे को पधारते थे तो उन्होंने उपदेश देते समय कहा कि बड़े अफसोस की बात है कि इस शहर झालरा- पाटन का कैसा उदय होना है प- हिले जो सभा होती थी बन्द होगई इसका क्या कारण है ऐसा नहीं चाहिये कि सभा न होवे सभा का इन्तजाम जरूर होना चाहिये इस पर महाशय कुन्दन लालजी भूरामलजी हीरालाल जी इत्यादि भाइयों ने कहा कि

अब से प्रति चतुर्दशी को सभा हुवा करेगी और अब इसका इंतजाम न बिगड़ेगा परन्तु न मालूम क्या हुवा चतुर्दशी भी गुजर गई और सभाका कुछ बन्दोबस्त इन भाइयों ने अभी कुछ भी नहीं किया - करें क्या ! यहां की फूटका तो अजब असर यहां के भाइयों पर हो रहा है ॥

फूट- खेत में निपजै सब कोई खाय घर में होय तो घर खइ जाय- सत्य है यह आपस की फूटका ही कारण है कि यहां सभा मुकर्रर नहीं हो सक्ती है पाटन के धर्मानुरागी भाइयों जागो और इस आवश्यक्ता को और निद्राको छोड़ो और शहरों के भाइयों की तरह आप भी कुछ उन्नति की बातें जैन गजट में छपाओ यदि उन्नति की खबरें न छपाओगे तो किस तरह लोग आपका धन्यवाद करेंगे क्या आपस की फूट से- कदापि नहीं मेल करो विरोध मेटो मेल से असाध्य कार्य भी सहज में सिद्ध होजाते हैं यथा ॥

[श्लोक] अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्य साधिका तृणैर्गुणत्वमापन्नै बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥

मेल ऐसी वस्तु है जिस के होने से तृणों के रस्से से मदोन्मत्त हस्ती बांध लिया जाता है आशा है इस लेख को पढ़ कर पाटन के जैनी भाई विरोध मेट कर मेल करेंगे और सभा स्थापन कर धर्म प्रभावना बढ़ावेंगे ॥

आपका शुभचिन्तक
सुन्दरलाल बैनाडा
झालरापाटन

—o—

जैन पाठशाला अम्बहटा

जनाब बाबू सूर्यभानजी साहब जैजमेंट आज मिती जेठ वदी दूशमी को यहां पर जैन पाठशाला नियत की गई और अभी संस्कृत और हिंदीका प्रबन्ध हुवा है जिस में बारः १२ लड़कियां और ७५ लड़के इस समय पढ़ते हैं परन्तु आशा है कि धीरे २ भी जैन पाठशाला की उन्नति होती रहेगी क्योंकि हमारे सब निवासी भाइयों की रुचि धर्म में ज्यादा है ॥

श्रावक पंचान अम्बहटा
जिला सहारनपुर

॥ श्री ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

हर अंगरेज़ी महीनेकी १-८-१६-२४ ता०

को

बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिला सहारनपुर से

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० ८ जून.......सन् १८९६ } अङ्क २५

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैनमहासभा

गत अंक में हमने अपने ला इक और परोपकारी भाईयों से इस बात की प्रार्थना की थी कि जैन महासभा के दिन निकट आ गये हैं इस कारण उसके प्रबन्ध का अभी से विचार होना चाहिये कि महासभा में किस २ विषय पर बहस की जावे महासभाका अधिवेशन किस प्रकार हो सर्व जैनियों की संमति किस तरह ली जावे इत्यादिक महासभा की सब बातों पर विचार होना चाहिये परन्तु अभी तक हमारे लाइक भाईयों ने इस ओर बहुत कम ध्यान दिया है इस कारण हम फिर दोबारा दरख्वास्त करते हैं कि अपनी २ संमति से शीघ्र सूचित करें और इस थोड़े से लेख को बहुत समझें ॥

जैनमहाविद्यालयकी सहायता

हम बड़े हर्षके साथ प्रकाशित करते हैं लाला उग्रसैनजी हकीम सिरसावे निवासी ने जो कि जैन महासभा की ओरसे मर्दुम शुमारी के कार्य्याध्यक्ष हैं। अपनी पुत्री के विवाह उत्सव में ५०, रुपये जैन महाविद्यालय के वास्ते और ५, रुपये उपदेशक फन्ड में दिये हैं हम आशा करते हैं कि इसी तरह हमारे अन्य जैनी भाई भी महाविद्यालय की सहायता करेंगे और सच्चे दान का लाभ उठावेंगे ॥

उपदेशकफन्डकी सहायता

हम लाला रामचन्द्र बल्द कोडामल मुजफ्फर नगर निवासी इन महाशय को भी धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने इम्तिहान में पास होने की खुशी में १।) रुपया उपदेशक फन्ड की सहायतार्थ दिया सच्चा दान इसी का नाम है ॥

धन्यवाद

हम नानौते के भाइयों को अत्यंत धन्यवाद देतेहैं जिन्हों को धर्म की इतनी रुचि है कि विवाह के समय भी दूसरे नगर में जाकर सभा करी और अपने सदुपदेशोंसे वहां के भाइयों को सभा नियत करने पर उद्यमी किया यदि इसही प्रकार अन्य परोपकारी भाई भी इस बात का ध्यान रक्खें कि जब उनको किसी अन्य नगर में किसीही कारज में जाना पड़े तो अवश्य वहां के भाईयों को अपने उपदेश से धर्म की तरफ लगाया करैं तो बहुतही जल्द यह जाति उन्नति को प्राप्त हो जावे ॥

श्रीमहाराजा सवाई

जैपुर की सेवा में ॥

दोहा ॥

नीतिवान गुणवान शुभ, बचन सुधा सम भाष। प्रजा पाल भूपाल तुम, दश दिश में तुम शाष ॥ १ ॥

शुभ नृप मग में चलत निति, रक्षक धर्म सदीव। धर्म प्रभा वन के विषें, तुम रुचि है बहु पीव ॥ २ ॥

बसुधा सो बहु श्रेष्ट है, जहां ऐसे नृपराय। निर्भय सेवन धर्म कौ, क्षेत्र वही सुखदाय ॥ ३ ॥

इसी क्षेत्र माहि पक्ष में, सम्वत पण युग साल। अईरथ जात्रा जैन मति जै पुर नग्रविशाल ॥ ४ ॥

तामें आपनरेन्द्रजी, आए बहु हर्षाय। बहु विधि किए उपकार तुम, अहो धन्य तुम राय ॥ ५ ॥

सो नगरी बहु धन्य है, स्वर्गपुरी सम सार। नाम शोभ कुछ बर्णवे, तुम गुण निजि उर धार ॥ ६ ॥

छन्द पादड़ी आदक्षरी ॥

श्रीमय नगरी अद्भुति महांन,
सबदेशन में शिर मौरथान।
वापुर की महिमां है अपार,
ईकसार बनें चहुं दिश बजार ॥ १ ॥
मारग सुध बुधिजन हिय समांन,
घोकानलहैं मग में अजांन।
सिंगार नगर बहु वृक्षताल,
हरें सोभातिम जनमन अकाल ॥ २ ॥
वर कोट किला है दिप्यमांन,
हा लीनन को कवि करें बखांन।
दुर्जननिहि लखभयभीत होय,
रहैं ता नगर बहु सुजन लोय ॥ ३ ॥
मनुषलिय सब तहां बहु स्वरूप,
हावें भाव तिन शोभ्यरूप।
राज दिवस सब निर्भय सदीव,
जारोग कोउ नांहि दुखित जीव ॥ ४ ॥
ऊत्तम शामग्री जगत नीय,
पुर में बिधनां संचय करीय
रविकुल पनिता के आप राय
कोसमरथ तुम गुण कहे बनाय ॥ ५ ॥
सब नीति रीति ज्ञायक जु आप,
दम किये सर्व रिपु बल सताप।
जे जे तुमरी दसदिश मझार,
निज प्रजा पर बहु प्रेम धार ॥ ६ ॥
धीर वीर तुम हो दयाल,
कांतें गरिप जिम शोभ हाल।
धन धन्य देव बहु दीन पोप,
न्यन्यकन बचन हितमिति जु तोप ॥ ७ ॥
बाहि जमीनर तुम हो पवित्र,
दरशन तुम इम सब चहत नित्त।
हो तत्पार नृप रिक्षा मंझार,
उत्सव जैन सधि हर्ष धार ॥ ८ ॥

दोहा ॥

धन्यवाद दें जैन मिलि, छंद मा

जैनमहासभा

गत अंक में हमने अपने ला-इक और परोपकारी भाईयों से इस बात की प्रार्थना की थी कि जैन महासभा के दिन निकट आ गये हैं इस कारण उसके प्रबन्ध-का अभी से विचार होना चाहिये कि महासभा में किस २ विषय पर बहस की जावै महासभाका अधिवेशन किस प्रकार हो सर्व जैनियों की संमति किस तरह ली जावै इत्यादिक महासभा की सब बातों पर विचार होना चाहिये परन्तु अभी तक हमारे लाइक भाईयों ने इस ओर बहुत कम ध्यान दिया है इस कारण हम फिर दोबारा दरख्वास्त करते हैं कि अपनी २ संमति मे शीघ्र सूचित करैं और इस थोडे मे लेख को बहुत समझें ॥

जैनमहाविद्यालयकी सहायता

हम बडे हर्षके साथ प्रकाशित करते हैं लाला उग्रसेनजी हकीम सिरसावे निवासी ने जो कि जैन महासभा की ओरसे मर्दुम शुमारी के कार्य्य व्यक्त है अपनी पुत्री के विवाह उत्सव में २०, रुपये जैन महाविद्यालय के वास्ते और ५, रुपये उपदेशक फन्ड में दिये हैं हम आशा करते हैं कि इसी तरह हमारे अन्य जैनी भाई भी महाविद्यालय की सहायता करेंगे और सचे दान-का लाभ उठावेंगे ॥

उपदेशकफन्डकी सहायता

हम लाला रामचन्द्र वल्द कोडामल मुजफ्फर नगर निवासी इन महाशय को भी धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने इम्तिहान में पास होने की खुशी में १।) रुपया उपदेशक फन्ड की सहायतार्थ दिया सच्चा दान इसी का नाम है ॥

धन्यवाद

हम नानौते के भाइयों को अत्यंत धन्यवाद देते हैं जिन्हों को धर्म की इतनी रुचि है कि विवाह के समय भी दूसरे नगर में जाकर सभा करी और अपने सदुपदेशोंसे वहां के भाइयों को सभा नियत करने पर उद्यमी किया यदि इसही प्रकार अन्य परोपकारी भाई भी इस बात का ध्यान रक्खें कि जब उनको किसी अन्य नगर में किसीही कारज में जाना पड़े तो अवश्य वहां के भाईयों को अपने उपदेश से धर्म की तरफ लगाया करैं तो बहुतही जल्द यह जाति उन्नति को प्राप्त हो जावे ॥

श्रीमहाराजा सवाई

जैपुर की सेवा में ॥

दोहा ॥

नीतिवान गुणवान शुभ, बचन सुधा सम भाष । प्रजा पाल भूपाल तुम, दश दिश में तुम शाष ॥ १ ॥

शुभ नृप मग में चलत निति, रक्षक धर्म सदीव । धर्म प्रभा बन के विषे, तुम रुचि है बहु पीव ॥ २ ॥

बसुधा सो वह श्रेष्ट है, जहां ऐसे नृपराय । निर्भय सेवन धर्म को, क्षेत्र वही सुखदाय ॥ ३ ॥

इसी चैत्र माति पक्ष में, सम्वत पण युग साल । भईरथ जात्रा जैन मति जै पुर नग्ररिशाल ॥ ४ ॥

तामें आपनरेन्द्रजी, आए बहु हर्षाय । बहु विधि किए उपकार तुम, अहो धन्य तुम राय ॥ ५ ॥

सो नगरी बहु धन्य है, स्वर्गपुरी समसार । तास शोभ कुछ बर्णवै, तुम गुण निजि उर धार ॥ ६ ॥

छन्द पादड़ी आदक्षरी ॥

श्रीसम नगरी अद्भुति महांन,
सबदेशन में शिर मौरवान ।
वापुर की महिमां है अपार,
ईकसार बनें चहुं दिश बजार ॥ १ ॥
मारग सुभ बुधिजन हिय समांन,
धोकानलहैं मग में अजांन ।
सिंगार नगर बहु कुसताल,
हरें सोभातिस जनमन त्रकाल ॥ २ ॥
चर कोट किला है दिप्यमांन,
हा लौतिन को कवि करै बखांन ।
दुर्जनतिहिं लषभयभीत होय,
रहैं ता नगर बहु सुजन लोय ॥ ३ ॥
मनुषंतिय सब तहां बहु स्वरूप,
हावं भावं तिन शोभ्यरूप ।
रात्र दिवस सब निर्भय सदीव,
जाठौर कोऊ नांहि दुखित जीव ॥४॥
जैमुख शामग्री जगत नीय,
पुर में बिधनां संचय करीय ।
रविकुल पतिता के आप राय,
कोसमरथ तुम गुण कहै बनाय ॥५॥
सब नीति रीति ज्ञायक जु आप,
यस किये सर्व रिपु बल प्रताप ।
जै जै तुमरी दसदिश मझार,
निजि प्रजा पर बहु प्रेम धार ॥ ६ ॥
यों धीर वीर तुम हो दयाल,
कीर्ति गरिय जिम शोभ हाल ।
धन धन्य देव बहु दीन पोष,
न्प पकन बचन हितियुनि जु तोष॥७॥
वाहि जभीतर तुम हो पवित्त,
दरशन तुम हम सब चहत नित्त ।
हो नृपार नृप रिसा मंझार,
उत्सव जैन मधि हर्ष धार ॥ ८ ॥

दोहा ॥

धन्यवाद दें जैनि मिलि, छंद मा

हि हर्षाय । मति कलिपन को मथम पद इकठे करि राय ॥

छंद त्रोटक प्रतिकूली अंक१२

मात्र १६

नगरी माधि हैं जिन मंदिर जो तुम न्याय मताप जु है थिर सो निरभै नि ति सब ध्यावत हैं निजि धर्म छबी जु रचावत हैं १ किम बर्ण सके तुमरी प्रभुता मति मंद सबै बिधि हैं लघुता पर भक्ति हितं गुण गावत है प्रभु मे इम अर्ज रचावत है २ फल फूल जु जपुर राय मदा बल तेज रहो सुम होइ मुदा रवि सोमति थी तब लो जु जियो अजर गुल हो बहु बुद्धि हियो ३

चौपाई मात्र १५

अंगरेजी है राज प्रमुक्ख न्याय ध- की प्रजा बहु सुक्ख, गुड़गा वा, नाम है ग्राम नाम ग्रावनी सदर मुकाम ४ जिल्लम और तहसील जु तहां, न्याय वान हाकिम है जहां, तहां सकल जैनी मिल राय, इम यश कहयो बहुत हर्षाय५

दोहा ॥

बाल ख्याल सम कहत कवि यह पूरण मति हीन जिमा भूल चूक लख करें पाठक जन प्रवीन ६ इक निधि रस निधि आनिए संम्वत बिक्रम राय चैत शुक्ल आदि पञ्चमी पूरण गुण वर्णाय ॥७॥

सवैया३१ ॥

जिले गुड़ गांवा में है तहसील फिरोजपुर तामें इक ग्राम जु नगीना शुभ जानिए तहां को निवासी किंकिर है यहां अब पूर्ण चन्द माति लहू नाम जू पिछानिए अहाते श्रावक में नीचे जिन मंदिर के बाबूजी रतन लाल गुणी जो महानिए और है कन्हैयालाल का नूणो जु इह ठौर तिन आज्ञा अनुस्वार कियो गुन गानए ८ शुभं शुभं शुभं

हस्ताक्षर पूरनचन्द

(जैन कालिज के वास्ते चन्दा)

भाई सूर्यभान जी वकील सम्पादक जैन गजट जोग्य नजी बाबाद से उमराव सिंह की स- विनय मथजिनेन्द्र बंधना ॥

आगे यहां पर मिती जेष्ठ बदी २ गुरुवार को बराम जोब कोट से लाला परशादी लाल मथुरा दास के यहां से लाला अ योध्या प्रसाद के यहां आई थी जिसमें बेटे वाले ने ५१) महा विद्यालय के वास्ते अपनी तरफ से दिये और १२॥) रुपये मालिक प्राचीन रस्म के जो नजीबाबाद में प्रचलित थी दिये वोह रस्म यह है (बेटी वाला बेटे वाले

को जितने रुपये बाग में देवे उस पर १) रुपये सकड़ा बेटे वाला जैन महा विद्यालय के वास्ते देवे इस विवाह में २५०) रुपये बाग में दिये गये जिस पर १२॥) रुपये जैन महाविद्यालय के वास्ते दिये कुल १३॥) रुपये इस विवाह में जमा हुआ और कुछ रुपया पहले का जमा है सब इकट्ठा करके श्रीमान सेठ जी साहब के पास. मथुरा भेज दिया जावेगा ॥

और मैंने फिजूलखर्ची के इंतजाम का चिट्ठा तयार किया लेकिन मैं देर से पहुंचा इस कारण कुछ इन्तजाम फिजूलखर्ची का न होसका परन्तु आशा है कि हमारे जिले बिजनौर के जैनी भाई जल्दी फिजूलखर्ची का इन्तजाम करेंगे—और हमारे जैनी भाइयों मे हरसाल सैकड़ों शादियां होती हैं और हजारहों रुपया फिजूलखर्ची किया जाता है कोई महाशय इस जैन विद्यालय की तरफ किंचित मात्र भी ध्यान नहीं देते अन्य मतावलम्बी अपने धर्म की कैसी २ उन्नति करते हैं देखिये अभी हाल का जिकर है कि एक बरात निहठौर से चौधरी अनूपसिंह के यहां से नजीबाबाद में लाला जवाहर लाला हीरालाल के यहां आई थी उस बरात में रंडी भडवे का नाम नहीं था उक्त लाला साहब ने १६००) रुपये आर्या कालिज लाहौर के वास्ते अपने बेटे की शादी की खुशी में दिये—हे प्यारे भाइयों किंचित मात्र ध्यान देकर विचारो कि ऐसे मजहब वालों के कि जिनका मजहब थोड़े दिनों से प्रचलित हुआ है । कैसे २ ख्याल हैं और यह जैन मत जो अनादि काल से है हमारे भाइयों के जरा भी ख्याल नहीं अब सर्व भाइयों से प्रार्थना है कि जैन कालिज के बनने की कोशिश करें और हर तरह से सहायता देवें ॥

सम्पादक ॥

लाला उमराव सिंह सम्पादक साहब एक बड़े रईस और परोपकारी हैं और धर्म में बहुत रुची रखते हैं जब हमारी जाति के ऐसे २ मुखिया पुरुषों का ख्याल आवेगा हमारी जाति की उन्नति क्यों न होगी और क्यूं कालिज न बनेगा॥ हमने पहले यह बात प्रकाशित की है कि जिले बिजनौर

से आठ वर्ष हुए पण्डित चुन्नी लाल और मुन्शी मुकन्दलाल ने जैन महा विद्यालय के वास्ते लिखवाये थे उस पांचहजार में से आधा रुपया लाला उमराव सिंघ साहब और इनके भाई सलेखचन्द साहब का ही है उक्त पांचहजार रुपये में से २१० कस्बे स्योहारा का चन्दा एक महीना हुवा पंडित चुन्नीलालजी की कोशिश से वसूल होगया है इसही प्रकार लाला उमराव सिंह साहब की कोशिश से बहुत जल्द कुल जिले का चन्दा वसूल होकर श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास सी. आई. ई. रईस मथुरा के पास जमा हो जावेगा ॥

जैसा कि लाला उमराव सिंह साहब ने विवाह शादी के मौके पर जैन कालिज के वास्ते चन्दा देने का प्रचार नजीबाबाद में किया है यदि इसही प्रकार अन्य नगरों में भी होजावे तो बहुत ही अच्छा हो और सुगमता से जैन कालिज की स्थापना होजावे॥

लाला परशादी लाल शेरकोट वालों को भी कोटशः धन्यवाद दिया जाता है जिन्होंने नजीबाबाद की रीति से ज्यादा ५० जैन कालिज के वास्ते प्रदान किया परोपकारी और उदार इसही को कहते हैं हम और अपने अन्य धनाढ्य पुरुषों से प्रार्थना करते हैं कि जागो और अपने धन से कुछ लाभ उठावो और लाला प्रशादी लाल के अनुसार धर्म प्रचार में यत्न करो ॥

पंचायत ॥

आज कल जैन जाति में झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि का भी अधिक प्रचार हो रहा है विरोध भी फैलता जाता है कुरीतियें भी बढ़ती जाती है और मिथ्यात्व की भी उन्नति है यद्यपि अन्य जाति वालों की अपेक्षा अबभी जैनी लोग सत्य शील आदि में बढ़े हुए हैं परन्तु जैनियों के वास्ते किंचित बुराई भी अधिक समझी जाती है नहीं तो जैनियों और अन्यमतावलम्बियों में कुछ भेद नहीं हम यह बात देखते हैं कि बहुधा करके मनुष्य पापों से पाप समझकर नहीं बचता वरण लोक व्यवहार में निन्दा के भयसे विशेष कर अपनी जाति मनुष्यों से होता है इस कारण पहिले ज़माने में हमारे बुद्धिवान पुरुषाओं ने पंचायत का प्रचार किया था और यही कारण था जिससे उस समय में मनुष्य

बुरे कार्यों से डरते थे जैन जाति में जब से पंचायत का प्रचार बन्द हुआ है तब से ही शुद्ध कुशील आदिक का प्रचार फैला है क्योंकि पंचायत नहोने के कारण स्वछन्द होकर जिस प्रकार चाहें बे खटके प्रवर्तते हैं जैसे बे लगाम घोड़ा या बे नकेल बैल हम यह बात बड़े जोर से कहते हैं कि यदि पिछले समयानुसार पंचायत का प्रचार नहीं होगा तो कोईसा उपाय कार्यकारी न होगा इस कारण हमारी जाति के सच्चे परोपकारियों को चाहिये कि प्रथम इसका उपाय करैं अर्थात सर्व नग्र ग्रामों में पंचायत नियत करावें और उसका नाम पंचायत या सभा या समाज या कमेटी जो चाहैं सो रक्खें ॥

एक शुभचिन्तक लेख ॥

हे गुण परीक्षक मेरे प्यारे जैनी भाइयों जब हम अपनी प्राचीन दशा की ओर ध्यान देते हैं और जब अपने इतहासों के अवलोकन से मालूम करते हैं कि हमारे पूर्वज पुरखे कैसे २ नाना प्रकार की विद्या आदि गुणों से पूर्ण भूषित थे और अपने सत्य सनातन धर्म पर आरूढ़ थे तो हमारी रग२ में बहादुरी का खून बिजली के मानिंद दौड़ने लगता है परन्तु ज्योंही आज कल की दशा पर टुक ध्यान [illegible] हैं तो खुशी का उत्साह लज्जा में मिल जाता है. हमको अपनी दशा पर रंज आता है कि हाय हमारे भाई किस कर्मसूत की बेड़ियों में फंस गये हैं- हे भाइयों क्या आपने लज्जा को तिलांजली देदी है ? क्या तुमने भंग तो पान नहीं कर लिया है ? क्या तुमको सन्निपात रोग तो नहीं हुआ है ? क्या आलस्य के सागर में तो नहीं डूब गये ? क्या अन्य जाति वालों ने मोहनी मंत्र तो नहीं करदिया ? क्या तुमने चित्त को पत्थर या वज्र के सदृश तो नहीं करलिया ? क्या तुम कृपा के कृपण दया के अदाता होगये हो कि तुम्हारे इस परम पवित्र जैन धर्म और जाति की यह अवनत दशा हो रही है और तुम ऐसी घोर निद्रा में सोये हुए हो कि अपने प्यारे बांधवों की जोकि आज कल अनेक प्रकार की आपत्तियों में ग्रसित हैं चिल्लाहट सुनकर भी जाग्रत नहीं होते हो—ऐ भाइयो क्या रंडी बाजों में रुपया व्यय करना और विवाहादिमें मुद्राखर्च करना भांडों डोमों को धन देना. पांव में अंगरेजी बूट पहन कर खट २ करते हुए चलना और मुंह से गिट पिट या क्या क्यूं करना मानो अहंकार मूल भूतनी अंगरेजी फारसी दिमाग में चढ़ गई रोम रोम में समागई और धर्म विद्या संस्कृत की तो सुध बुध ही भूलगई

कि जिसमें हमारे सत्य सनातन धर्म के गुण और महात्म्य वर्णन किये गये हैं और नेत्रों में अंजन लगाना औरतों की तरह पटिया पाडना कानों में इतर की रुई खुरसना और धर्म सेवन को तिलांजलि देना इत्यादिक कर्म तो सब करना परन्तु क्याही शोक है कि इस पवित्र धर्म और जाति की रक्षा के लिये तुम्हारी बुद्धि पर और सवाये पत्थर पड़गये—क्या तुमने अपने पानी पीने के कूओं में भांग गेर रक्खी है कि ऐसी हीन दीन दशा में भी जाग्रत नहीं होते हो॥

भैयाओ हमारी ऐसी हीन दीन दशा क्यों होगई इसके अनेक कारण हैं परन्तु अब मुर्दों को रोने से क्या लाभ हो सका है जो हुआ सो हुआ अब यह विचार करना उचित है कि उस उन्नति की दशा को कैसे हम उपावे—क्योंकि—

बीती ताहि बिसारदे, आगे सुधलेहु।
जोवन आवे सहज से ताही में चित देहु॥

अनादि से यह क्रम है कि जो वस्तु बढती है वह घटती भी है—घटाव से बढाव और बढाव से घटाव सदा से होना आया है, यह काल चक्र सदा ऊंचे का नीचा और नीचे का ऊंचा करना रहता है सदा सबकी एक दशा नहीं रहती, यदि हम नीचे हो गये हैं तो फिर दैव संयोग से वह समय भी समीप आता जाता है जब हम भी अपने प्राचीन पवित्र आर्य पुरुषों के लिये लज्जास्पद न रहैंगे॥

क्योंकि इस समय में जैन महा सभा का होना और इसके कार्य कर्ताओं की कृपा से और हमारे शुभचिंतक बाबू सूर्यभान जी वकील की पूर्ण कोशिश से प्रति सप्ताहिक जैन गजट का जारी होना कि जिसके जरिये से हम अपने दुःख सुख संपूर्ण भारतवर्ष के जैनियों पर सुगमता से प्रगट कर सके हैं और इसके अतिरिक्त ऑनरेबिल श्रीमान सेठ लछमण दासजी सी.आई.ई. से परोपकारी सभापति का मिलना क्या इस बात को साबित नहीं करतेहैं कि अब जैनियों की उन्नतिका सितारा फिर चमकने को है परन्तु हे धर्म स्नेहीयो सो कुछ ज्ञात शुभचिंतकों की कृपा से महा सभा नियत होगई है। सो जैन गजट भी प्रति साप्ताहिक बाबू सूर्यभान जी की दयालुता से हमारे कर्णों में मधुर २ उपदेश सुनाता है सो हमारे ऑनरेबिल सभापति साहब तन, मन, धन से हमारी सहायता करने को कटिबद्ध है परन्तु पूर्णरूप से विचार करने से यही जान पड़ता है कि जब तक संपूर्ण जैनी मात्र एक मन हो धर्म और जाति की उन्नति करने

म दृत्तचित्त न होंगे और महा सभा के कार्य कर्ताओं की उन्नतिशाली कार्यवाही को न सराहेंगे और उस पर अनुग्रह करके अमलन करेंगे तब तक किसी प्रकार की उन्नति होना नियतान्त असम्भव है इस लिये सर्वभाइयों को मिलजुलकर किसी तरह से उन्नति कीजिये २ और यह उन्नति मेरी अल्प बुध्यानुकूल तीन प्रकार से हो सक्ती है ॥

(१) एकता (२) विद्या का यथावत प्रचार ॥

(३) धर्म पर आरूढ और प्रचार ॥

इनका स्वरूप प्रथक २ लिखने से लेख बढ़ा जाता है इस लिये अगले अंक में आपकी सेवा में प्रकाश किया जायगा ॥

जैनी भाइयों का शुभचिंतक
स्वामी राम
उपमन्त्री जैनसभा
मथुरा

प्रार्थना ॥

श्रीयुत सम्पादकजी साहब निम्न लिखित प्रार्थना को जैन गज़ट में जगह देकर कृतार्थ कीजिये ॥

ग्राम बटेसर जिला आगरा में एक मंदिर बहुत प्राचीन है जिसकी बनवाई में तीन लाख छप्पन हजार रुपया लगा है लेकिन अब उक्त मन्दिर जो गिरने लगा है सो सर्व भाइयों से प्रार्थना है कि अपनी २ सामर्थ्यानुसार धर्म कार्य में सहायता करें तो मन्दिर फिर से दुरुस्त हो जावे और आमदनी उक्त मन्दिरकी १००) रुपये साल की है जिसमें पूजन और खर्च किया जाता है सो सब भाई थोड़ी २ सहायता देदेवेंगे कार्य सिद्ध हो जावेगा ॥

जैनी भाइयों का दास
पं० रामपाल श्रावक
बटेसर जिला आगरा

जैन महाविद्यालय भंडार

श्रीमान् प्रियवर महाशय जैन गजट सम्पादक— जैजिनेंद्र कृपाकरि इस अल्प लेख को अपने अखबार में स्थानदान देकर अनुग्रहित कीजियेगा ॥

मेरे ख्याल के माफिक अरसे या १२ वर्ष से जैन जातिको इस बातका सोच विचार उत्पन्न हुआ है कि जैन धर्म और जैन जाति की अवनति हो रही है या उन्नति— और जो अवनति हो रही है तो उस को उन्नति पर किस तरह पहुंचाना चाहिये— प्रथम नये नगर में जब मेला बिम्ब प्रतिष्ठाका हुआथा तहां पर जैन जातिय महान विद्वान दे-

इकालज दीर्घ सोची महाशय एकत्र हुए— उक्त महाशयों ने संमत्त पूर्वक शोच विचार कर यही बात नियत कीनी थी कि अवश्य जैन धर्म और जैन जाति की अवनति हो रही है और तिस की उन्नतिका मुख्य हेतु विद्या है और विद्या की सिद्धि के अर्थ महाविद्यालय एक मध्य स्थान पर अवश्य नियत होना चाहिये— पुनरपि तत्रैव पंडित छेदालाल अलीगढ़ निवासी ने इस कार्य में विशेष उद्यम किया— हा— शोक भी से परोपकारी महान पुरुष इस स्थान से परलोक कर गए— नाजर हम को आशा थी कि इस कार्य के पूर्ण होने में इतना परिश्रम कदापि न करने पड़ता शीघ्र पूर्ण हो जाता— उक्त पंडितमादेहब ने उस मेले में एक फेहरिस्त चिन्दा की बनाई थी और मेला फीरोजाबाद में भी तथा मेला हस्तुराई तथा हस्तिनापुर में भी महाविद्यालय के अर्थ विशेष उद्यम किया गया पश्चात जगह २ मेला प्रतिष्ठा आदि में धनाढ्य मुखिया महाशयों ने तथा जैन जात्योपकारी लालाउग्रसेन रईस सहारनपुर तथा पंडित पन्नालाल आदि साहबों ने उक्त विषय में बहुत बड़े श्रवणानन्दकृत घंटों के व्याख्यान दिये और परिश्रम किया मैंने अपनी आंखसे देखा है कि गत वर्ष मेला कानपुर में उक्त लाला साहब तथा बाबू रतनचन्द वकील हाईकोर्ट नें अत्यंत परिश्रम और खेद के साथ विद्योन्नति के विषय में कम से कम ५ घंटे व्याख्यान दिया और पूर्ण रीति से इस बात को दृढ़ किया कि जैन धर्म और जैन जाति की उन्नतिका मुख्य कारण जैन महा विद्यालय की आवश्यक्ता है— भ्रातृगण मेरा प्रयोजन इस लेख में यह है कि सर्वत्र जैन बिरादरी ने इस बातों को स्वीकार कर लिया कि जैन धर्मोन्नति और जात्योन्नतिका मुख्य कारण महा विद्यालय है और यह संमति— जैन गजट और जैन हितोपदेशक के प्रकाशित होने में प्रथम होचुकी है— शायद कोई २ महाशय ऐसे भी होंगे कि जिन्हों ने विद्योन्नति को हानिकारक समझा होगा परन्तु उन महाशयों ने आज तक किसी अखबार में तथा सभा में कोई लेख न छपवाया और व्याख्यान नहीं दिया यदि कोई महाशय ऐसा समझाते तो अपनी संमति कहीं कहीं

अवश्य ही प्रकाशित करते इससे भी अब हमने दृढ़ श्रद्धान कर लिया है कि १४००००० जैनियों की यह संमति है कि जब तक जैन विद्यालय नियत न होगा और विद्योन्नति नहीं आवेगी तब तक जैन धर्म और जैन जाति की उन्नति कदापि नहीं होगी इस से भी स्वजात्यो द्धारक- दुर्दशा निवारक प्रिय पाठक यदि कुछ जातीय स्नेह रखते हों और अन्य जातियोंका परिचय देते हों और अपने को स्वजाति हितैषी समझ ते और हमारी अवनति पर ध्यान रखते हो जातीय अभिमान धारते हो और धनाढ्य मुखिया तथा पंडित पनेका मुरी सिर पर बांध रक्खा हो तो केवल समाचार पत्रों में सुविस्तीर्ण ललित श्रवणा नन्द प्रद लेखों से तथा सभाओं में लच्छे दार परांठे के व्याख्यान देने वा सुनने से कुछ नहीं होसक्ता जबतक कुछ किया न जाय इस से भो भ्रातृगण इस कार्य में उद्यम आवश्य कीजियेगा ॥

जैन हितोपदेशक में महीने जून सन ९९ ईसवी एक लेख जैन महा विद्यालय के अर्थ बाबू सूरजभान सम्पादक जैन गजट ने लिखाथा और मैंनेभी छोटीमोटी सम्मति मही ने अक्टूबर सन् ९९ ई० के पत्र में लिखी थी—हर्ष का स्थान है कि बाबू सूरजभान ने उस मेरे अल्प लेख पर प्रसन्न होकर उस पर अपनी सम्मति लिखी थी— और दो एक महाशयों ने उक्त लेख के पौष्टिक लेख लिखे थे— परमहर्ष का स्थान है कि महासभा मथुरा ने उक्त अल्प लेख पर ध्यान देकर बतौर कान्फ्रेन्स के अपने कार्य का प्रारम्भ कर दिया और प्रत्येक कार्य के लिये पृथक २ मंत्री नियत कर दिये- और एक लेख मैंने अपना नाम अव्यक्त करि जैन विद्यालय भंडार के विषय में- सम्पादक जैन प्रभाकर को भेजा था परन्तु पूर्ण लेख मुद्रित नहीं किया गया मेरे आशय को बदल करि मन माना घडंत करि लिख दिया- यदि मेरे पूर्ण लेख को मुद्रित करि के अपनी सम्मति प्रकट करते तो शोक नहीं था- मेरे उस लेख का तात्पर्य्य यही था कि विद्यालय भन्डार साधारण लोगों की सम्मति से स्थापित होना चाहियें रुपया सरकारी कागजात या मोतबिर बैंक में

जमा होना चाहिये एक आदमी के कबजे में न रहना चाहिये उस की रजिष्टरी होना चाहिये— रुपेरे उस लेखका सबूत अबके जैन प्रभाकर से पूर्ण रीतिसे व्यक्त होता है कि वह रुपया पंचायती नहीं है किंतु अजमेर वालोंका है क्योंकि उस रुपये से अपनी पाठशालाही में दो वजीफे अर्थात् छात्रवृती सात २ रुपये के नियत करना चाहते हैं जिस के वास्तें १ महीनेंका नोटिस आपनें दिया है यह नोटिस भी एक नई बात है क्योंकि कल को नोटिस देकर रुपया भी अपनें काबू में कर सक्ते हैं— जब कि जैपुरमें बहुत बडी पाठशाला मोजूद है और वहां के भाई इस बातका इकरार करते हैं कि हम विदेशी भाईयों को ठहरने के स्थान से अतिरिक्त खान पानका भी प्रबन्ध करेंगे तो क्यों नहीं यह रुपया सूदका उस पाठशालाको दिया जाता है जहां सर्व प्रकार का सुबीता है अजमेर में कौनसा विद्यार्थी वहां से अच्छी शिक्षा ग्रहण करसक्ता है यदि यह रुपया महा सभा के सभापति साहब के यहां अभी जमा किया जावे तो क्या हरज है वहां के जमा होने से सबका इतमीनान है और निश्चय है कि सभापति साहब अपनी जिम्मे दारी से इस रुपये को कहीं लगा कर सूद भी ॥) से कडे से कम नहीं देवेगें और जैन प्रभाकर नें जो सूद तजवीज किया है वह ।—, सेंकडे से ज्यादा नहीं है— और कार्तिक की महा सभाने भी महा विद्यालय की बाबत संमति की थी और पंडित प्यारेलाल साहब अलीगढ निवासी इस कार्य के अधिकारी नियत किये गये हैं आशा है कि पंडितजी साहब अपना तन मन धन अर्पण करि इस कार्य को पूर्ण उन्नति पर पहुंचा वेंगे क्यों कि उक्त पंडितजी साहबका समय परोपकारता में विशेष व्यतीत होता है— अब भाई साहिबो काम करने से होता है न कि व्यर्थबक २ और व्याख्यानों से— देखिये मिश्री २ कहने से मुंह मीठा कदापि नहीं हो सक्ता जबतक कि भक्षण न कीजावे—अब समय आपहुंचा विद्यालय भंडार की कारवाई शुरू की जावे और उस के वास्ते सब से मुख्य प्रथम धन की आवश्यक्ता है— आपस की हिरस— द्वेष और अदेखसक्या प्रणामो से छोडो और इस बात

को दिल से भुलादो कि जैन वि-द्यालय भंडार में रुपया देने से ह-मारी नामवरी नहीं होगी और ब्याह आदि में द्रव्य लुटाने से होगी— इस बात में प्रगट मूर्खता दृष्टि आती है क्योंकि ब्याह आ-दि आदि काम से तो कसबोंमें त था जिले तक और १ वर्ष तक नाम रहता है और अनन्त दि कम प्राप्त करता है— और महा विद्यालय में दिया द्रव्यका यश सर्व भारत वर्ष में फैल कर चि-रस्थाई रहेगा और विद्या दानका फल केवल ज्ञान है सो स्वर्गादि लक्ष्मी पाकर मुक्तिका पात्र होगा कोई भाई इस बात पर ध्यान न देवें कि जो एक दो भाई इसका र्य में विशेष कोशिश करते है उ-नका ही यश होगा सो भाईयो नाम तो एक दोका नहीं है नाम और यश तो जैनजाति का है ऐसा कौनसा जैनी है जो जैन जाति की उन्नति नहीं चाहता होगा और अदेसका भावकरि इस में विघ्न करता होगा— मेरी दानिस्त में तो कोई नहीं यदि है तो वह जैनी न हीं इससे मेरी प्रार्थना यहहै कि उक्त कषायपरिणामोंको त्यागि धर्मो न्नति और आत्मोन्नतिका मुख्य हे तु महा विद्यालय है जिस में तन मन धन अर्पण करि पूर्ण कोशि श और पुरुशार्थ करो ॥

अबवह नियम अपनी अल्प बु[द्धि] से लिखता हूं कि इस जो कार्य के पूर्ण करनेमें सबसे प्रथम करना आवश्यक [है]

(१) भंडार पृथक् २ न होना चाहिये कारण यह कि एक्यता की मुख्यता सब से पहले है इसमें जो रु पया जगह वजगह जमा है सो एक स्थान पर जमाहोना चाहिये

(२) जिन महाशयों ने मेला नय नगर फिरोजाबाद— हस्तिनापुर—खु[र्जे] आदि में जो जो द्रव्य देना स्वीका[र] किया है वह सर्व रुपया जमा कर [दे]व क्योंकि अपने आप देना स्वीकार करि फिर न देना कितनी बुराई की बात है और इसी हिस से अन्य महा शय जो देना चाहते हैं परन्तु नहीं देते इस से उन महाशयों को उचित है कि स्वकथित वाक्यों को पूर्ण करें।

(३) जो महाशय धर्मात्मा और धनाढ्य हैं उनको अपनी शक्त्यानुकूल हर्ष के साथ अपने द्रव्य से मदद कर-ना चाहिये इस में एकही दफे देना प[ड़े]गा इस में कम से कम एक महीने की आमदनी अवश्य देवें ॥

(४) पांचवरष तक प्रत्येक रीति [से] हरी बिरादरी पर कुछ न कुछ महा विद्यालय भंडार के लिये दिया जाया करे तो मारफत पंचो की वसूल हो

...र जमा किया जाया करे ॥
कालज (५) प्रत्येक मेला और मन्दिरों
। हुए-। गोलक रक्खी जावे जिस में वरव-
पूर्वका मेला और उत्सव में प्रति जीव एक
त मिोसा प्रदान किया करें ॥
व धर्म (६) प्रत्येकशहर वा कसबों में
ाति श्री घर १, रु० के हिसाब से जमा कर
ातिकइस भंडार में भेज देवें ॥
धा वं (७) जो महाशय मेला प्रतिष्ठा
लप आदि उत्सव कराते हैं तिस रुपये का
ाय त्रितुर्थांश जैन विद्यालय भंडार के लिये
ये तदेवें अब मैं कहां तक लिखूं—इस का-
गह र में जैनी मात्र को चाहिये कि तन
शेषन धन से उद्यम करें क्योंकि काम
प करने ही से होता है मैं भी अपनी श-
ान क्त्यानुकूल ५००) रु० निम्न लिखित
ह शर्तों पर वाइदा करताहूं कि जिस व-
क सर्तें पूरी हो जावे फौरन रुपया
अदा करूंगा अथवा प्रबन्ध कर्ता जिमी
न लेना पसन्द करेंगेतो में बजाइ इस
रुपये के जिमीन भी (०) रु०शाल के
मुनाफे की देसकाहूं कि जिसकी कीमत
॥) सेकड़े के हिसाव से १०००) रु०
होवें हैं और इस तरफ और भी महा-
शय रुपया देने को उद्यमी हैं परन्तु
जब तक यह काम ठीक नहीं चलता
चुप हैं ॥

(१) फंड का रुपया कम से कम
५००००) तक हो जावे ॥

(२) प्रबन्ध करता कमसे कम पांच
गोटि के पांच मंत्री नियत होने चाहिये

(३) रुपया सेठ साहब मथुरा वा
अन्यस्थान पर जाब्ता सिरकारी से
रहे ॥

(४) इस भंडार के रुपये का मूल
खर्च न किया जाय किंतु ब्याज खर्च
किया जाय ॥

(५) इस महा विद्यालय में धर्म
विद्या तथा राज विद्या के सिवाय
अन्य में रुपया खर्च न किया जाय ॥

(६) इस भंडार की रजिष्टरी
जाब्ता सरकारी से होनी चाहिये ॥

यह मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार मैं
ने लिखा है यदि इस में अनुचित लेख
होवे तो सर्व महाशय क्षमा करेंगे ॥

फुलमारी लाल रईस
करहलजिले— मैनपुरी

रिपोर्ट दौरा वनवारीलाल उपदेशक

मिती वैसाख सुदी १२ को मुकाम
मेमरा जिला आगरा में पहुंचा यहां
पर जैनी भाइयों के १० घर हैं मिती
वैसाख सुदी १५ को मैंने उपदेश
देकर सभा नियत कराई सभा प्रति
मास में एक बार हुआ करेगी जिसके
सभापति लाला परमसुख लाल व ला-
ला लल्लूमल जैसवाल, मंत्री लाला
भगराम नियत हुए और १९ महाशय
सभासद हुए ॥

फिर यहां से चलकर सेपऊ जिला

मथुरा में आया मिमी जेष्ठ बदी १ को रात्रि समय सभा हुई जिस में लाला पन्नालालजी (कोषाध्यक्ष सभा निधौली जिला एटा) ने कुदेव आदिक के पूजने के निषेध में उपदेश दिया फिर मैंने विद्याभ्यास और दर्शन करने मे फल प्राप्ति होने के विषय में उपदेश दिया सो बहुत से स्त्री पुरुषों ने दर्शन नेम करने की तथा कुदेव आदिक के न पूजने की प्रतिज्ञा ली और बहुत से भाइयोंने स्वाऽध्याय करने तथा शास्त्र जी सुनने की आखड़ी ली और सभा विसर्जन कराई यहां के भाई बड़े सज्जन और धर्मात्मा हैं ॥

मिती ज्येष्ठ बदी दोज को नाहरपुर में सभा कराई मिती ज्येष्ठ बदी ४ को अजमेर आया यहां पर बहुत भाई बरातों में गये हुए थे इस कारण सभा का प्रबन्ध ठीक २ न होसका श्री मन्दिरजी २ हैं यहां के भाईयों की रुचि धर्म की तरफ अच्छी है ॥

विज्ञापनपत्र

फर्रुख नगर जिला गुरगांव में प्रथम केवल एक ही जैन मंदिरथा अब ज्योतिष रत्नपंडित जीयालालजी ने स्वद्रव्य लगाकर एक नवीन जिनालय बनाया है जिसमें बैशाख शुक्ला १९ चन्द्रवार सम्वत १९९२ को श्रीपार्श्वनाथजी की प्रतिमा विराजमान हो[illegible] और उक्त मंदिरजी के लिये एक मनुष्य की आवश्यक्ता है जो नि[illegible] पम से पूजन कर लेवे और बा[illegible] को देव नागरी पूजन मंगल तथा [illegible] मात्र पढ़ाता रहै, वेतन प्रथम तो [illegible] रुपये महीना और रहने को मकान [illegible] या जावेगा परन्तु योग्यता देख [illegible] बढ़ाया भी जावेगा और वेतन स्व[illegible] द्रव्य से दिया जायगा कोई भाई मं[illegible] का द्रव्य न समझे ॥ इस लिये वि[illegible] न द्वारा सूचित किया जाता है कि [illegible] स जैनी भाई को यह नोकरी स्वी[illegible] हो नीचे लिखे पते पर पत्र पठावें [illegible] सर्व जैनी भ्रातृगण को उचित है [illegible] जब कभी कोई पत्र वे पं० जीया[illegible] के पास भेजना चाहें तो नीचे [illegible] पते पर भेजा करें पंचायत फर्रुखन[illegible] में भेजा हुआ अपत्र उन को बहुधा [illegible] य पर नहीं मिलता है ॥

पत्र भेजनेका पता ज्योतिष [illegible] पंडित जीयालाल चौधरी फर्रुखन[illegible]
जिला गुरगांव

तृष्णा और संतोष

प्रत्येक जीव की यह इच्छा है [illegible] मुझको सुख की प्राप्ती हो और दुःख [illegible] हो परन्तु जो मनुष्य तृष्णा में फसा है [illegible] कदाचित सुख नहीं पा सक्ता है चाहे [illegible] की कितनी सामिग्री उस के पास [illegible]

तृष्णावान पुरुष वृथा दुख भोगता है तड़पता है किसी कवीने कहा है (चौ-) वृथा पड़ा तृष्णा के फन्द। भया काम ता पी मन्द॥ धन संचय मैं आयु न । मोती कांकर तुल्य न होय॥ पड़ा इ बंधन मैं जोय। जीवन वृथा दिया खोय॥ यद्यपि अंसंख्यात धन । सब जग की सम्पति तव दास॥ त धूल तल दो तव अंग। दीन पुरुष दुख के संग॥ धन कारण निज कोन य। शोक भार खग वन न उठाय॥ धन हेत मुड़ श्रमपाय। क्षण भंगुर त नशाजाय॥ धरी रूप्यपर ऐसी । भयो मलउम जगत के मांह॥ दिया मैं ऐसा चित॥ रहै मूढ़ शोकातुर ॥ भया चित्त का तू आखेट॥ आगामी मोचन हेट॥ वामउ काम न सुख नही ॥ जगत हेत परलोक सो दहै॥ जो पुरुष प धारण करता है यद्यपि उसके पास और अन्य सुख प्राप्ती की वस्तु कम परन्तु तौ भी वह सुखी रहैगा जैसा कवी ने कहा है॥ चौपाई॥

मन संतोष धरेतू जोय॥ सुख सुदेश रामा होय॥ सो तू निर्धन शोक न ॥ पंडित निकट न धन दुखभार॥ धन पण्डित शासन करै॥ धन बिन साधु दा धरै॥धनी द्रव्य मैं बहु सुख लहै॥ निर्धनमा तामैं रहै॥ धनी न हो तो व न लाभ॥ ऊसड़ से करचहे न राय॥ है संतोष सदा सुख दाय॥ गहै वही जिस भाग्य सहाय॥ करया से निज आत्म प्रकाश॥ जो तू धरै भाग सुखरास॥

बरात॥

श्रीमान बाबू सूर्य्यभानजी साहब जै जिनेंद्र कृपाकर निम्न लिखित लेख को जैन गजट मैं स्थान दान दीजिये॥

हमारे नगर नानौता जिला सहारनपुर मे लाला सुमेरचन्द लाला मज्जन कुंवर साहब के ज्येष्ठ पौत्र की बरात जभेड़ जिला सहारनपुर मे गई थी वहां पर हमारे मंत्री साहब की प्रेरना से जनाब उपसभापति लाला विमल प्रसाद साहब ने विद्या के दिन वहांपर श्री मन्दरजी मे सभा की और प्रथम मूल दास ने जैनियों की वर्तमान दुर्दशा के विषय मैं व्याख्यान करा उसके पश्चात हमारे लायक मंत्री साहब ने विद्या के विषय मैं अति मनोहर और उचित उपदेश दिया अर्थात जैनियों के वास्ते प्रथम धर्म विद्या और राज्य विद्या कि परम आवश्यक्ता दिखाई और जैनियों की पारमार्थिक और लौकिक दुर्दशा का कारण एक अविद्याही को स्थापित किया और जैन महासभा को धन्यवाद देकर उसके प्रबन्ध और अधिकार्यों का बरनन किया और बड़े हर्ष के साथ यह प्रगट किया कि यद्यपि दस बारहबर्षसे जैन महाविद्यालय का शोर मिच रहा है परन्तु अब महासभा के प्रताप से महाविद्या

लय के नियत हो जाने का निश्चय होता है क्योंकि श्रीमान श्री १०८ लक्षमण दास जी सितारे हिंद इस सभा के सभापति हुए हैं और उनहों ने जैन महाविद्यालय का काम अपने हाथ में लिया है॥ इसके पीछे उक्त मंत्री साहब ने महाविद्यालय के सहायतार्थ एक रुपया फी घर देने के प्रबन्ध की अति प्रशंसा करी और इस के प्रचार पर बहुत जोर दिया और झबेरे में भी सप्ताहिक सभा नियत हो जाने की प्रेरणा करी परन्तु उस दिन उस नगर में पेंठ थी इस कारण सब भाई सभा में उपस्थित न थे परन्तु जो भाई मौजूद थे उनहोंने स्वीकार किया कि हम अवश्य सभा नियत करेंगे और महाविद्यालय के वास्ते भी सहायता देवेंगे हम को आशा है कि झबेरे के भाई जो हमको अति धर्म उपयोगी ज्ञात हुए हैं अपनी प्रतिज्ञानुसार जरूर जैन सभा नियत करैंगे और यह विद्यालय भंडार को भी सहायता देवेंगे ॥

उग्रसैन उपमंत्री
जैनसभा नानौता

विद्या के जाननें से लाभ और न जाननें से हानी

जिस देश में विद्याका अधिक प्रचार होता है वह देश सभ्य देश के नाम से सम्बोधन किया जाता है उस के निवासी जगत में महान् आदर पाते हैं उस देश की कीर्ति, धन बल और सभ्यता दिन प्रति दिन उन्नति करती है जो मनुष्य विद्यावान होता है वह सभ्य तथा मान्य पुरुषों में आदर पाता है राज्य कार्यों में उसका सन्मान होता है लक्ष्मी उस के समीप वास करती है और धन पास न होने पर भी परदेश में जाकर उसे किसी वस्तु की चिंतना नहीं करनी पडती विद्या ऐसा धन है कि जिस को भाई बन्धु इत्यादि बँटा नहीं सक्के चोर चुरा नहीं सक्का राजा दंड में हर नहीं सक्का विद्या सबका परम धन है मनुष्यका नाम और प्रतिष्ठाका यही कारण है अत एव प्रत्येक मनुष्यका यह मुख्य कर्तव्य है कि विद्योपार्जन में सदैव तत्पर रहे और अपने को विद्या प्राप्तिकी चिंतना विषय में वृद्ध होनेपर भी युवा समझता रहै मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम्। लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥ अर्थात् विद्या माता के तुल्य रक्षा और पिता के तुल्य हित करने वाली है खेद को दूर करने वाली उत्तम संपति देने वाली दृव्य

। परि पूरित करने वाली और समस्त भूमंडलमें मनुष्य की कीर्ति को प्रकाशित करने वाली है विद्या कल्पवृक्ष के समान है कोई पदार्थ संसार में ऐसा नहींहै जिस को विद्या न देसकै— जो मनुष्य विद्या हीन होता है उस के बांधवों में उसका आदर नहीं होता, दरिद्र सदैव ही उसके पीछे २ घूमता रहता है विद्या विहीन पुरुष उत्साह हीन रहता है वह कदापि कभी भी अपने उद्योग में सफलता प्राप्त नहीं करसक्ता है ॥ सभ्यता के गुण उस में निवास नहीं करते ॥ देश में उस की कीर्ति नहीं होती और वह पशु के समान समझा जाता है ॥ यथा ॥

विद्या नाम नरस्यरूपमधिकं प्रच्छन्न गुप्तंधनं ॥ विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्यागुरूणां गुरुः॥ विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं ॥

विद्याराजसु पूज्यते नहीं धन विद्या विहीन पशुः॥ अर्थात् विद्या मनुष्यकी अधिक सुन्दरता है विद्या गुप्त धनहै विद्या ही मनुष्य को भोग कराने वाली है यश और सुखदेने वाली है तथा विद्या ही गुरुओं की गुरु है विदेश में विद्या भाई के समान सहायता देने वाली है राज समाज में विद्वान ही का आदर होता है धनीका नहीं होता विद्या हीन पुरुष पशु के समान है॥ आपका देश विद्याका मंदिर समझा जाताथा परन्तु अब समय के हेर फेर से उस की विद्या लोप होगई और होती जाती है इन सब विषयों को भले प्रकार विचारिये उत्साह हीन कदापि न हूजिये अपनी मातृ भाषाका अभ्यास अपने बालकों को कराइये और उनकी शिक्षा में किसी प्रकार की त्रुटि न होने दीजिये जो माता पिता अपने बालकों को आलस्य तथा अधिक प्रेम भाव में रख कर शिक्षा नहीं देते हैं वे मानो अपने बालकोंका अनहित करते हैं ॥ यथा ॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन पाठितः॥ न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा ॥

अर्थात वहमाता और पिता शत्रु और वैरी के तुल्य हैं जो अपने बालकों को शिक्षा नहीं देते वह सभा के बीच में शोभा नहीं पाते जैसे हंसों में बगुला शोभा नहीं पाता है आप लोगों ने विद्या का आदर सत्कार छोड़ दिया है इस ही कारण मूढ़ता का तुम में प्रचार भया है

तुम्हारा सुख जाता रहा है और तुम्हारी प्रतिष्ठा नाश को प्राप्त होगई है ॥

(जिन वाणी का जीर्णोद्धार)

जैन बोधक से

दिगम्बर जैनी सर्व भाई जानते हैं कि समयसार, प्रवचनसार, अष्टसहस्री, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, गोमटसार, त्रैलोक्यसार, इत्यादि जिन वाणी के जितने ग्रन्थ हाल समयमें देखने में आते हैं उन सब ग्रन्थों के पहिले धवल, जय धवल और महा धवल ए ग्रंथ रचे गये हैं और इनके अधार से सब ग्रन्थों की रचना हुई है इन तीनों ग्रन्थो को सिद्धांत पुस्तक कहते हैं ये तीनों ग्रन्थ दक्षिण कानड़ा जिले के बद्री ग्राम में अभी मौजूद हैं इन ग्रन्थों की प्रति सर्व हिन्दुस्तान में और कहीं नहीं हैं ये तीनों ग्रन्थ भूताल पत्र ऊपर प्राचीन कनड़ी लिपि में लिखे हुए हैं – ये ग्रन्थ बहुत प्राचीन काल के लिखे हुए हैं सो बहुत जीर्ण होगये हैं कहां २ पत्र फट गये हैं और कहीं २ अक्षर भी उड़ गये हैं इसकी लिपी प्राचीन कनड़ी होने के सबब से हर कोई इसको बांच नहीं सक्ता है सिर्फ एक ब्रह्मसूरि शास्त्री बांच सके हैं और उसका अर्थ भी समझ सकते हैं इन ग्रन्थो की प्रति जल्दी से हो जाना बहुत आवश्यक है, क्या सबब कि ग्रन्थों के पत्र सड़ने चले हैं और अक्षर भी उड़ने लगे हैं और इनके बांचने वाले ब्रह्मसूरि शास्त्री की उमरभी पंचावन वर्ष की होगई है, इस कामको अब ढीलहोने से जिन वाणी का बड़ा नुकसान होगा, इन ग्रन्थों की प्रति कराने के वास्ते आज दस बारह वर्ष से कोशिश हो रही है तीनों ग्रन्थों की प्रति होने में दो तीन वर्ष लगेंगे ब्रह्मसूरि शास्त्री वहां जाय के इन ग्रंथों को बांचते जावें और दोय लेखक उनके कहने के मुताबिक लिखते जायें इस काम को अनुमान दस हजार रुपये खर्चा लगेगा सो दस हजार रुपये खर्च करने के वास्ते राय बहादुर सेठ मूलचन्द जी सोनी तयार हुए थे और दूसरे भी कई धर्मात्मा पुरुष तयार हैं परन्तु इनका इरादा ऐसा है कि एक प्रति वहां से लिखाय कर वहां ही रक्खें और एक प्रति बाल बोधी में लिखाय के अपने यहां ल्यावें इस बात को मूलबद्री के ब्रह्मचारी और पञ्च लोग मंजूर नहीं करते हैं वे कहते हैं कि, इन ग्रंथों के दर्शन करने के लिये हजारों कोस से जैनी भाई यहां आते हैं और हजारों रुपये इस भंडार में देते हैं सो इन ग्रन्थों की प्रति दूसरी जगह गई तो फिर यहां कोई नहीं आवेगा और भंडार की आमदनी भी घट जायगी इस वास्ते जो इसकी प्रति कराना चाहो प्रति लिखा के यहां ही रक्खो एक प्रति दूसरी जगह ले जाने को नहीं देंगे वोह लोग ऐसा कहते हैं इसलिये जो एक आदमी दस हजार रुपये इस काम के वास्ते लगावेगा सो एक प्रति अपने मुल्क में लाने की इच्छा रक्खेगाही इस बातको वो लोग कबूल नहीं करते हैं जिससे अभीतक म

ति लिखना शुरू नहीं हुआ है—अब सोचने की बात है कि एकप्रति लिखा कर वहां रखना और एकप्रति लिखाय कर इस मुल्कमें लाना क्या इस में कुछ उनका नुकसान है बल्कि इस में बहुत फायदा है ऐसे अपूर्व ग्रन्थ की एकही प्रति एक जगह में रखने से कोई वक्त में राजभय से अथवा अग्नि के भय से अथवा और किसी आफत से जोह एक प्रति नष्ट होगई तो सब गठरी ही डूब गई ऐसा समझना. और इसही समझ से कैई बड़े २ ग्रंथ गन्धहस्ति महाभाष्य आदि आज ही मिलते नहीं हैं सो इसही कारण के लिये है। इनकी दूसरी प्रति दूसरे गाँव में भी होयतो एक प्रति नष्ट होगई तो दूसरी मौजूद रहेगी, परन्तु वहां के लोग इस बात को नहीं समझते हैं तो भी उनके इच्छा के माफिक एक प्रति कनडी में और एक प्रति बाल बोध में लिखवा के वहांही रखवा देना अच्छा है जिससे ग्रन्थ तो मौजूद रहेंगे और इतना भी नहीं होगा तो थोड़े वर्षों में ग्रन्थ गल जावेंगे बांचने वाले मनुष्यों भी अस्त हो जावेंगे, और जिन वाणी का मूल आधारभूत मामला सब डूब जायगा फिर करोड़ रुपये खर्च करोगे और चाहे सो प्रयत्न करोगे तो भी इन ग्रन्थों का दर्शन नहीं होयगा इस वास्ते अब इस कार्यमें ढील न होनी चाहिये वे लोग कहते हैं उस माफिक प्रति लिखवाना शुरू कर देना चाहिये इस काम के खर्च के वास्ते दस हजार रुपये चाहिये जि-

सका प्रबन्ध इस माफिक होना चाहिये जिससे किसी को भारी न पड़े इसकाम के वास्ते सौ आदमियों को सौ सौ रुपया देना कबूल करना चाहिये जिसमें से दस दस रुपया सबब देना चाहिये जिससे एक हजार रुपया इकट्ठे होने से चार पांच महीने तक लिखने का काम जारी रहेगा और एक ग्रन्थ के दस पन्द्रह हजार श्लोक लिखे जायंगे फिर पचीस २ रुपये इकट्ठे करके ढाई हजार रुपये इकट्ठे कर लेना जिसमें से फिर तीस चालीस हजार श्लोक लिखे जायंगे ऐसेही थोड़े २ रुपये इकट्ठे करके दो तीन वर्ष में तीनोंही ग्रन्थ की प्रति होजायगी इस रीति से सौ रुपया देने को बहुत भाई तयार होंगे इस में किसी को बहुत देना नहीं है और जो जो भाई रुपया देवेंगे उन के नाम प्रतियों के ऊपर लिखे जायगे कि इन भाइयों ने इन ग्रन्थों का जीर्णोद्धार करने में सहायता दी एकप्रति कनडी में और एक प्रति बाल बोधी में हो जाने से हरकोई विद्वान बांच लेगा तो बहुत आनन्द होगा यह बड़ा पुन्य बन्धहोगा तो इस काम के वास्ते कैई भाइयों ने अपने नाम दाखिल करने को सम्मति दी है और जिन भाइयों को अपना नाम दाखिल कराना होवै सो इनमेंसे कोई सेठ माणिकचंद पानाचंद या हीराचन्द नेमचंद, या गुरुमुखराय सुखानंद, या गोपालदासजी बरैया, या पन्नालालजी काशलीवाल—

इनको पत्र द्वारा सूचित करें

चिट्ठी

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी सा हब जयजिनेन्द्र—

महाशय निम्नलिखित लेख को जैन गजट में स्थान देकर कृतार्थ कीजिये—

महाशय श्री श्री सिद्ध क्षेत्र द्रोनागिरजी में चैत्र सुदी ८ से प्रभावना अंग बढ़ाने के निमित्त मेला होता है और १० दिन रहता है यह मेला विशेषकर श्रीयुत धर्म पालक सेठ बृजलालजी बनगांवे निवासी के प्रबन्ध से होता है और द्रोना गिरिजी पर २२ मन्दिर हैं उन में बहुत मंदिर प्राचीन जीर्ण होगये हैं जिनकी मरम्मत होना अति आवश्यक है इस साल दुर्भिक्ष काल होने के कारण मेले में कम आदमी आये थे परन्तु उक्त श्री सेठ बृजलालजी साहिब के पधारने से मेला की शोभा होगई मिती चैत्र सुदी १२ को जैनी भाइयों की सभाहुई जिस में उक्त सेठ साहब सभापति थे अनुमान ४०० जैनी भाईयों के सभा में सुशोभितथे मथममुझ मथराप्रसादने एक निवेदन नीचे लिखे अनुसार पढ़ा पहले मंगलाचरण पढ़कर फिर कहाकि हे महाशयो! धन्य आजका दिन और आज की घड़ी कि हम इस सिद्ध क्षेत्र श्री द्रोनागिरजी पर जो अपने देश बुन्देलखंड के सर्व क्षेत्रों में मुख्य इकट्ठे हुए अब यह पंचमकाल कराल अपना प्रभाव दिखा रहा मनुष्यों में आपस में वैर विरोध बढ़ता जाता है धर्म घटता जा[ता] है शक्ति न्यून होगई है दुरा[चार] की वृद्धि होती जाती है [इ]समें दुर्भिक्षकाल हेरा जमाये [हु]ए है ऐसे समयमें हम सिद्ध की [वन्द]ना प्राप्त हुई और आप साहि[ब] के दर्शन हुए अहा द्रोनागिर[जी] की वन्दना करने में जो आन[न्द] होता है वह यात्रीका दिलही [जा]नताहै कहनेमें नहीं आता पर[न्तु] काई कोई बातें ऐसी हैं जिन[को] देखने से पश्चात्ताप होता है अ[र्थात] द्रोनागिरजी के बहुत मंदिर [सर्व]था बेमरम्मत है और पूजा [आ]दिक खर्चेमें अत्यन्त कमी है जै[नी] भाईयों की दृष्टि इस ओर [नहीं] है जो ऐसाही हाल रहातो पूज[न] आदि के प्रबन्ध में विघ्न पड़ज[ा]ता और श्रीजिन मंदिरों पर [...] म जय जायगी धन्य है उन [महा]शयों को कि जिन्हों ने ऐसे [महा]हान क्षेत्रपर जहां एक टोकरी

एक घडा पानी पहुंचना क-
न है वहां पर बेप्रमान द्रव्य
र्च करके बडे २ जिन मंदिर ब-
नवादिये और प्रतिष्ठा करके अ
ना जन्म सुफलकिया और कु-
पवित्र और उजागर किया प-
न्तु वे पुरुष अब नहीं रहे संसा
में काल सबसे बलवान है अब
न नामी पुरुषों के न रहनेका
ाच नहीं है उनके नाती पंती आ
उनके वन्श में विद्यमान हैं
नमें बहुतों की सामर्थ भी पुन्य
प्रभाव से उतनीही है जैसी उ-
नामी पुरुषों की थी प्रथम मेरा
वेदन उन्हींसे है कि आप लो
अपने कुलकी प्रतिष्ठा से अचे-
नहों आप सेठ वा संघई की प
वीपर हैं आप तन मन धन से
क मंदिरों की मरम्मत करवाइ-
जब कोई जिनालय बनवाता है
ब उसके यही भाव रहतेहैं कि
और मेरे कुटम्बी जन मंदिर
में पूजन करेंगे और मंदिरजी
बुहारी में दूंगा और पूजन के
न में आजूंगा मंदिर की मरम्म
करांता रहूंगा हे महाशयो! आ
के सत्पुरुषों के ऐसे भावथे तो
ाप लोगों को सुस्ती न चाहि.
धन्यहै उन श्रावकों को जिनका
न श्रीदिव्यक्षेत्र द्रोनागिरजी के
दिरों की मरम्मत में खर्चहो जैसे
ठ बृजलालजी व चन्द्रभानजी,
कोई श्रावक भाई यह सोचें कि
जिनके माथे मंदिर हैं उनको इस
बातकी चिन्ता होनी चाहिये यह
सोचना मिथ्या है यह सम्यक ज्ञा
नके कारण सबही जैनी भाईयों
के लिये हैं विशेष कर सिद्धक्षेत्र
के जिनालय जिन लोगोंने यहां
स्थापित किये हैं उनमें बहुत से
साहिब सामर्थ्यहीन होगये श्र.
द्धाहीन होगये भाव न रहे वा.
जे महाशय देशही छोडगये अब
उनका भरोसा करना वृथाहै और
अब हम सब जैनी भाई इस का-
मको अपने २ माथे लेवें और
अपने अपने चित्तके अनुसार जु-
दे २ वा चन्दा से द्रव्य संचय क
रके मंदिरों की मरम्मत वा द्रोना
गिरजी के आवश्यक खर्चका ब-
न्दोबस्त करैं इस सिद्धक्षेत्र की
शोभा बढाकर धर्म की लूट करैं
औरन कौं लुटवावें धर्म की लूट
में मग्न होकर जन्म सुफल करैं
हैभगवान हमारे जैनी भाईयोंकी
ऐसी बुद्धि होजावे जिससे वे इस
भारी काम में प्रवर्त्त जावैं और
हिम्मत न हारैं ॥

इसके उपरान्त श्री सेठ मु-
न्नालालजी ने अनुमोदना की कि
हे महाशयो जिस की प्रार्थना भा
ई मथुराप्रसादजी ने की है सो

आप सब साहिब जानतेहैं कि यह काम अत्यन्त आवश्यक है इसमें विलम्ब न होना चाहिये ॥

फिर श्री सेठ ब्रजलालजी ने कहा कि दो जीर्ण प्राचीन मंदिरों की मरम्मत मेरे जिम्मे की जावै मैं इस साल करवा दूंगा और भी कैई साहिबों ने मदद देनेका वादा किया ॥

फिर तज वीज हुई कि पुजारी आदिके खर्च के लिये चन्दा किया जावै सो १०४, रुपये उसी वक्त जमा होगये जिस में २५, रुपये सभासद ने दिये ॥

फिर तीन विद्यार्थी सैंदयाजी के निवासियों की परीक्षा लीगई और उनको टोपी रूमाल कुछ नकद सभासद की ओर से इनाम देकर सभा विसर्जन हुई ॥

महाशयो कोई जैनी भाई द्रोनागिरजी के जिनालयों की मरम्मत के लिये वा भंडार के लिये द्रव्य भेजना चाहैं तो नीचे लिखे पते से भेजें ॥

मौजा बमराना डाकखाना नरहट जिला झांसी सेठ ब्रजलालजी व चंद्रभान जैन धर्म्मामृत वर्द्धनी सभा ॥ जैनी भाईयोंका दास

मथुराप्रसाद बड़ाबारा ॥

निवासी जिला झांसी

/ मंदिर प्रतिष्ठा सिकन्दराबाद

श्रीमान बाबूसूर्यभानजी साहब एडीटर जैन गजट जैजिनेन्द्र ॥ निम्न लिखित सिकन्दराबाद की पूजा के समाचार अपने अमोल्य पत्र में प्रकाशित करके कृतार्थ कीजिये ॥

मिती जेठ बदी ६ इतवार को ८ बजे दिन के श्री जी रथ में विराजमान होकर बड़े बाजार में होते हुये नृत्य भजन सहित अनेक प्रकार शोभा और बड़े हर्ष से श्री मडफजी पधारे और वहां पर तीन दिन तक अति आनन्द के साथ पूजन पाठ हुआ और पंडित धानसिंहजी साहब हर रोज मंदिरजी में दर्शनो के समय धर्मका व्याख्यान देते थे। और श्रीमान पंडित पन्नालालजी साहब अलीगढ़ निवासी और पं० महरचन्ददासजी सुनपत निवासी भी इस पूजा में पधारे थे सोमवार को आर्यों यानी दयानन्द मतानुयायीयों ने मूर्ति पूजन के विषय में विवाद किया जिसका अति प्रशंसनीय उत्तर श्रीमान महाशय पं० पन्नालालजी ने अपनी चातुर्यता और अनेक युक्तियों से दिया फिर किसी अन्य मतावलम्बी ने इस मेले मैं किसी विषय में विवाद नहीं किया मंगलवार को श्रीमान पं० महरचन्ददासजी ने विद्योन्नती और जात्यनन्नती और द्यूत क्रीड़ा [जूवा खेलने] के विषय में अति मनोहर और ललित व्याख्यान दिये सर्व महाशयों ने [जो विद्यमान थे] पंडितजी को बहुत धन्यवाद

दिया और सर्व जैनी भाइयों ने जूवा खेलने का त्याग किया— उस व्याख्यान का यहांतक असर हुआ कि एक सिक्खसाहब पंजाबी जमादार पुलिसनेभी जूएका त्याग किया और कहा कि मैं और अपनी जाति के भाइयों को इस दुष्ट जूए से बचाने की कोशिश करूंगा और व्याख्यान की तारीफ करके भगवान के सामने दंडवत् किया और मिती जेष्ठ वदी ९ को पिछला उत्सव हुआ जिस में लाला कृपाकृष्न साहब कायस्थ आनरेरी मजिस्ट्रेट रईस सिकन्दराबाद ने १०) रुपये श्रीजी की भेट किये और और २) रुपये एक मेम साहब ने चढ़ाए इन्हीं मेमसाहब ने मंडप और मेले के वास्ते अपना बाग और जमीन भी दीथी हम मेम साहब को कोटिशः धन्यवाद देते हैं, और कितनेक प्रतिष्ठित वैष्णवभाइयों ने भी रथ यात्रा में रुपया चढ़ाया इस से प्रगट होता हैं कि वह लोग इस मेले के होने से अत्यन्त हर्षायमान और प्रसन्न हुए हैं किन्तु अन्यमती महाशय मेले में सब सहर्ष शामिल होते थे हम उन महाशयों को धन्यवाद देते हैं ॥

जैनी भाइयों का शुभचिंतक

खुशीराम बिलासपुर

जिला बुलन्दशहर

सामाजिक सम्मति

हे देशोपकारक, विद्याप्रचारक, सद्गुणविस्तारक, श्रीमज्जिनधर्मधारक, सामाजिक सभ्य जनो— यह कहावत जगत प्रसिद्ध है कि (अतिपरिचयादवज्ञा) कोई कार्य हो अत्यन्त परिचय करने से उसपर अरुचि होजाती है सत्यतः यह कहावत हमको मिथ्याप्रतीत होती है। क्योंकि जब हम अपने आत्मा को देखते हैं तो यह भी अनेक भवों में पंचेन्द्रियों के अनेक भोगों को भोग रहाहै पर अबतक इन भोगों से इसको अरुचि न हुई। अथवा—जीव मात्र को दुःखदाई ज्यों हिंसा झूठ चोरी काम सेवन परिग्रहादि हैं इन में यह आत्मा रात दिन लवलीन हो रहा है तबभी इसको इन पर अरुचि न आई— अतएव ज्ञात होताहै कि यह कहावत मिथ्या है सत्य नहीं पर साथ ही जब इस जीवात्मा को शुभ कार्यों की तरफ देखते हैं तो जान पड़ता है कि शुभ कार्यों में इसकी तत्काल अरुचि प्रगट हो जाती है। देखिये जब कितनेही धर्मात्मा धर्मानुरागी पुरुष अनेक शास्त्रों के रहस्यों को एकत्र कर रत्नत्रयधर्म अहिंसाधर्म दश लाक्षिक धर्म द्वादशानुप्रेक्षा षोडश कारण भावनादि के अतिरमणीय व्याख्यानों को श्रवण कराने के नोटिश जारी करते हैं उस नोटिश को पढ़, यह आत्मा तत्काल कह देता है कि यह वही व्याख्यान होंगे जिनको मंदिरों में शास्त्र जी के समक्ष पढ़ा करते हैं यदि कोई

नवीन विषय पर व्याख्यान होता तो अवश्य चलते इत्यादि कहके अरुचि प्रगट कर बैठता है— जो यथार्थ दे खिये तो यह कुटिलात्मा उक्त धर्मों के नाम मात्र को भी पूरा नहीं जानता है पर यथा कथंचित मंदिरजी में जाने से शास्त्रजी की जयध्वनि सुननेसे जो इसको उक्त शुभ कार्यों में परिचय हो गया था अरुचि प्रगट कर बैठता है। अथवा जब कोई सहधर्मी जैनी भाई जो देश और जाति के सुधारने के लिये या विद्यादि गुण वृद्धि के लिये अनेक युक्तियों से सामाजिक शक्तियें बढाते हैं उनको देखतेही यह आत्मा अवश्य कह बैठता है कि यह भाई जो इन फिजूल कामों में फसे हैं ठाले और बेकाम हैं जो अपने अमौल्य समय को व्यर्थ व्यतीत कर रहे हैं— यद्यपि यह आत्मा अपने अमोल्य समय को केवल उदर भरणे के लिये अनेक कूट कलाओं में फंस, खोरहा है पर इनमें रुची प्रगट कर सज्जनों के उत्तम कार्यों पर अरुचि प्रगट कर बैठता है इत्यादि दृष्टांतों से शुभ कार्यों पर निजात्मा के सदृश कैई जीवों को देखते हैं तो यह कहावत अपनी सत्यता प्रगट कर रही है— ऐसे स्थलों पर इस कहावत को मिथ्या कहने में हमको वर्तमान समय में एकही दृष्टांत मिलता है वो यह है कि जैन गजट का उत्पन्न होना है सामा-

जिक रसिक सज्जनों! जब से यह जै[न] गजट उत्पन्न हुवा है तब से ही सब जै[न] भाई अपने अपने मंदिरों में प्रति सप्ता[ह] सभायें कर अनेक कुरीतियों के निर्मू[ल] करने के लिये अनेक शुभ कार्यों क[ो] दृढ करने के लिये प्रति दिन अपनी [रु]चि बढा रहे हैं— देखिये—एक वो दि[न] था कि अखबार का नाम सुनतेही [ब]चने वालों को मिथ्यात्वी आम्नाय [के] रुद्ध कह बैठते थे। आज वो दिन [है] कि शास्त्रजी के अनन्तरही इस [प]त्र को आदर मिलता है। इस में जो अ[ने]क देशों की अनेक वार्तायें प्रकाशि[त] होती रहती हैं प्रति सप्ताह सुन स[ब] भाई अनेक देशों में अपनी प्रीति फैल[ा]ने को उत्कंठित हो रहे हैं—और अ[ने]क प्रबन्धों को प्रकाशित कर (व्यर्थ व्ययादि) फिजूल खर्ची आदि [को] जैनकुल में स्थानदान नहीं देते—इत्या[]दि अनेक शुभ कार्यों में प्रति दिन [रु]चि बढाने वाला यह जैन गजट इस [आ]त्मा को और इसके सदृश कैई जी[वों] को जो शुभ कार्यों मे अरुचि प्रग[ट] कर रहे थे रुचि बढाई— इस लिये [हम] अवश्य कह सकते हैं कि उक्त कहा[वत] को मिथ्या कहने के लिये हमें यह जै[न] गजटही प्रमाण भूत हुवा। अब [] इस के नियंता श्रीयुत बाबू साहब [] श्री सूर्यभानजी साहब को अब को[टि]शः धन्यवाद दे के "सामाजिक र[सिक]

काग्रगण्य,, भी अवश्य कह सकते हैं क्योंकि जिनका निर्माण किया हुवा जैन गजट हमारे मनोर्थ सिद्ध करने के सिवाय सब सहधर्मी भ्रातृ गणों को अनेक शुभ कार्यों में उत्कंठित कर रहा है पर जैसे हम पत्र निर्माता श्रीयुत बाबू साहब को धन्यवाद दे के चुप लगाना चाहते हैं वैसेही सामाजिक रसिकों को को चुप लगा बैठना ठीक न होगा– किन्तु सामाजिक रसिकों का काम तो यह है कि जैसे जैन गजट के नियंता साहब ने अपना उत्साह अग्रेसर होने में कर दिखाया वैसेही आपभी उत्तम कार्यों में अग्रेसर बने देखिये, जिस संस्कृत जबान में अपना सनातन धर्म सूर्य मंडलवत् प्रकाशित हो रहा है और इस जबान के रक्षक हजार में पांच निकलैंगे—जो इस जबान में सबका उत्साह प्रगट करावें– वे पुरुष क्या सब के अग्रेसर नहीं कहलावें–अवश्य अग्रेसर कहलावें ॥

(प्रश्न) विद्वानों को सब से पहले क्या करना चाहिये (उत्तर) संसार सागर का त्याग (प्र०) मुक्तिरूपवृक्ष का बीज क्या है (उ०) क्रिया सहित सम्यग् ज्ञान ॥

(प्र०) मदिरा की नाईं मोह उत्पन्न करने वाला कोन है (उ०) स्नेह (प्र०) आत्मा को ठिगने वाले कोन है (उ०) इंद्रियों के विषय (प्र०) संसार की वेल क्या है (उ०) तृश्ना (प्र०) वैरी कोन है (उ०) आलस्य (प्र०) संसारमें भय किस्से होताहै (उ०) मृत्यु से (प्र०) अन्धे से अधिक कोन है (उ०) रागी पुरुष (प्र०) शूरवीर कोन है (उ०) स्त्रियों के नेत्र रूप बाणों से विद्ध न हो– (शेषआगे)

ज्योतिर्विच्चतुर्थमलशर्म्मा ध्यापक
जैन पाठशाला राज सवाई
जयपुर

चिट्ठी

श्रीपत्री प्रियवर श्री वकील साहब बाबू सूर्यभानजी सविनय पूर्वक जैजिनेंद्र वंचनाजी आगे निवेदन यह है कि निम्न लिखित समाचार सप्ताहिक पत्र जैनगजट में कृपा करके इस पत्रको स्थान दान दीजिये आगे समाचार यह है आज दिन बुधवार तारीख–६–मई सन् १८९६ को सुकलालजी ठेकेदार साकिन खतौली और जीविकाके निमित्त मे झालरापुर में निवास करते हैं सो यहां अपने निजभ्राताओं से मिलने के वास्ते खतौली आये थे सो धर्म स्नेह पूर्वक उन्होंने दश धर्म निरूपण जैन पाठशाला में आके विद्यार्थियों की परीक्षा भी और स्वहस्त कमल से उन्होंने पारितोषिक भी दिया इससे विद्यार्थियों को स्वविद्याभ्यास में बडा उत्साह हुआ कुल विद्यार्थी चतु स्त्रिंशति अर्थात चौंतीस थे

पाढईका क्रम दिगम्बर जैन पाठशाला मुंबई के अनुसार है सो भाई मुकलालजी ठेकेदार ईम्तहान लेकर परम आनन्द को प्राप्त हुए सोवे धर्मात्मा सज्जन पुरुष हैं धर्म में विशेष रुचि है यह धर्मात्मा सज्जनों का स्वभाही है कि ज्ञानकी वृद्धि में चन्द्रमा के उदय में समुद्रका तोय वृद्धि को प्राप्त होय है तैसे उनको आनन्द वढता है और तदनन्तर भाईयों से उन्होंने प्रार्थना सभा होनेकी की सो मंजूर करके विरादरी में सभाका बुलाया मारफत मालियोंको दीयागया ८ बजेका वक्त सभा नियत होने का कीया सो श्रीमंदिरजी पंचायती सराफा पाडे में सर्व भाई जमा होगए तब मंगलाचरण पूर्वक लाला मुकललाजीने सभा में व्याख्यान फिजूल खर्ची कुरीतियो के त्याग के विषय में कहा और श्री जिन पूजन स्वाध्याय शास्त्रजी करने के विषय में सभामें सविनय पूर्वक कहा सो सबने मंजूर किया उक्त व्याख्यान वहुत श्रेष्टथा परन्तु नेम किसी भाईने न लिया और पाठशाला में विद्यार्थी पढने के विषय में स्वाध्याय करने के विषय में पंडितजी मुनेरामलजी खतौली निवासी ने व्याख्यान दिया सो दोनो भाईयोंका व्याख्यान सुनके सभा धन्य धन्य कहती भई तत्पश्चात विसर्जन सभा जैकार कहि उठी और यहां पर पांच मंदिरजी हैं सो पूजा अपने आप श्रावक भाई करते हैं और निर्मल भाव रखते हैं सो सत्पुरुषोंका स्वाभावही है कि परमेश्वर की आचार्य और गुण स्थानोंकी चर्चा ऐसीही रात दिन सब भाई भावना भाते हैं और यहां मृतककी तेरई पंचायती मौकूफ है और जौनार में कंद विदल नहीं होता और महासभा श्रीजंबूस्वामी मथुराजी में स्थापित होगई है सो महान धर्मकी वृद्धि होगी और महासभा ने कार्याध्यक्ष मुकर्रिर किये हैं सो वे धर्मात्मा सज्जन पुरुष हैं धर्म कार्य में कटिवद्ध हैं और महासभा महाजैन विद्यायलकी आशा करनी है सो जम्बूस्वामीजी महाराज आशा पूरी करेंगे और प्रबन्धकर्ताओंने प्रबन्ध किया है सो परम श्रेष्ठहै और पंडित प्यारेलालजी साहब अलीगढ निवासी कोमहासभाने पाठशालाओंका अधिकार अर्पित किया है सो उन्हों को यह मुनासिब है कि हर एक जिले वा तहसील वा परगने में सर्व स्थानोंपर पाठशाला नियत करने के विषय में उन भाईयों को जोकि जिले तहसिल व परगने के निवासी जैनी भाईयों को निवेदन पत्र प्रेरण पूर्वक भेजे और पंडितजी साहब को चाहिये कि पाठशालाओंका प्रबन्ध आप देखें और उन भाइयों से कोशिश के साथ प्रबन्ध करावे और जबतक महा विद्यालय जारी होय तबतक जैपुर की जैनपाठशाला को महाविद्यालय समझना चाहिये और आज दिन जो पाठशाला जहां पर नियत

हो रही है उनको मुनासिब है कि धर्मानुसार विद्या का प्रचार रक्खें और जो विद्यार्थी अपनी पाठशाला में से विद्या पूर्ण कर चुकाहो वो जैपुर की जैनपाठशाला में जाकर विद्याभ्यास करै जिससे विद्योन्नति को प्राप्त हो और मनो कामना पूरण हो और हम आशा करते हैं कि श्री जैन महा विद्यालय शीघ्र जारी होगा और विद्या धर्म की महान वृद्धि होगी और मैं आशा करता हूं कि सेठ साहूकार एक महीने की प्राप्ति जैन महाविद्यालय को अर्पण करेंगे क्योंकि धर्मात्माओं की धर्म विद्या में महान रुची होती है और चारों दानो में विद्यादान परम श्रेष्ठ है इस कारण करके धनाढ्य पुरुष धर्म विद्या में विशेष धन खर्च करते हैं यह स्वभाव ही है और सर्व जैनी भाई इस जैन महाविद्यालय के भंडार में कटिबद्ध होंयगे ॥

शुभमभूयात्

मु० खतौली जिला मुजफ्फर नगर

पं० संगमलाल

वागविलासिनी सभा

जयपुर

श्रीयुत कृपा निधान बाबू सूर्यभान साहब से वागविलासिनीसभा मन्दिरजी ठोलियान सवाई जैपुर की धर्म पूर्वक जुहार वंचना समयत्रायिशं— अप्रंच जो २ काम आप का जैन गजट व जैनहितोपदेशक कर रहा है वो आम लोगों को बखूबी रोशन है— आगे जो दो रिजोल्युशन ता० ११ फरवरी सन् हाल को जारी हुऐ थे जिन का हाल जैन गजट में छप चुका है उन में जिन जिन महाशयों ने उन दोनों बातों को याने (१) बिनयक में सिर्फ १ भैली या रथ पें बीन्द वा बीन्दणी को बैठाकर श्री देवाधिदेव के मंदिर के दर्शन कराके वापिस ले आना और रंडी भड़वों वा फजूल लवाजमा मसलन हाथी घोड़ा इत्यादि को नहीं मंगवाना (२) बिन्दोरी तथा शादी वगैरह में अतिशबाजी जो महान हिंसा का काम है नहीं छुड़वाना—बुरा समझ कर छोडना स्वीकार कर लिया था उन में से एक मांगीलालजी संगही मुत्तसिल चौक चाकसू शहर जैपुर ने अपने लड़के की शादी में और बिरधी चन्दजी काला मुत्तसिल सड़क नाहारगढ जैपुर ने अपने पुत्र मूलचन्दजी काला बी० ए० के दस्तखतानुसार निज पुत्र गुलाबचन्द की शादी में इन दोनों महाशयों ने तमाम काम अपनी प्रतिज्ञा के बमूजिब करके अन्य लोगों को नमूने बने जिनको देखकर अन्य ३ सज्जनों ने (जो दस्तखत करने में शामिल न थे भी अपने २ लड़के लड़कीयों की शादी में इस हिंसा और फजूल खर्च के कामों को छोड़कर धर्मोपार्जन और लाभ हासिल किया अब इन पांचों महाशयो को देखकर अन्य २ भाईयों ने भी इसके अनुसार चलना स्वीकार करलीया है इस उन पांचो

महाशय वरों का कोटिशः धन्यवाद देतेहैं कि जो ऐसे स्व और परोपकार के कामों में अग्रणीय बने हैं ॥

कृपाकर इस लेखको और निम्नलिखित लेखको भी अवश्य जैनगजट में जल्दी जगह दीजियेगा और जैन हितोपदेक में भी छपवा दीजियेगा इस बाग विलाशिनी सभामें भाई घासीलालजी ठोल्यांनें चैत्र सुदी १८ को नशा के विषय में अति मनोहर व्याख्यान दीया उसका संक्षेप हाल इस मूजिब है– उन्होंने व्याख्यान में दो बातोंका कहना अत्यावश्यक समझा प्रथम नशेका लक्षण दोयम, नशे से मनुष्यों को क्या २ नुकसान होते हैं (१) जिन मादक पदार्थों के खाने या पीने से बुद्धि बिगड जाती है उनको नशा कहते हैं और वो मादक पदार्थ भांग, मदिरा, माजूम, आकूती, अफयुन, जरदा, तमाखु, नशेका गुलकन्द आदि हैं– हे देशोपकारी जनो आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि इन मादक चीजों के खाने पीने वाले मनुष्य अव्वलतो धर्म के स्वरूपही को नहीं जानते हैं और धर्म जैसा पदार्थ है वो आप लोगों से छुपा हुवा नहीं है इसकी इस मनुष्य को कितनी आवश्यक्ता है और इस के बिना यह मनुष्य कैसा है उस बातको एक अरबी के कवीने बहुत अच्छी तरह दिखलाया है खुलासा उसका ये है एक दिन किसी जंगल में बहुत से जानवर और कुछ मनुष्य जमा होकर कहने लगे कि हम बडे हैं जानवरों ने कहा हम बडे द[illegible] जे वाले हैं और मनुष्यों ने कहा हम है[illegible] जानवरों ने सवाल किया कि तुम अपना बडप्पन दलील से साबित करो मनुष्य बो[illegible] ले कि, मनुष्य बलवान होते हैं जानवरों ने कहा बल में मनुष्यों को सिंहकी उपमा दीजाती है, हमारे में सिंह मोजूद है मनुष्यों ने कहा हम रूपवान बहुत होते हैं जानवरों ने कहा, मनुष्यों को नेत्रों को उपमा मृगसे और कटिको उपमा केहरीसे गति (चलने)की उपमा हस्ती और हंस से दिया करते हैं इत्यादि यह सबतो हमारे ही परिवार है फिर मनुष्यों ने कहा हम वस्त्राभरण बहुत उत्तम पहनते हैं तब जानवरों ने जवाब दिया कि जिन वस्त्रा भरणों को आप पहनते हैं वो हमसेही पैदा हुये हैं अर्थात वस्त्रों में सबसे अधिक कीमत वाला रेशम है वो तो हमारेही भाईयों की उगली हुई वस्तु है और आभूषणों में मोती से अधिक कीमत वाला और कोई पदार्थ नही है अर्थात मोती को अमूल्य कहते हैं वोभी हमारेही उदर में पैदा होते हैं अर्थात सीप में रहने वालाभी जानवरही है जिससे ये पैदा होते हैं फिर मनुष्यों ने कहा कि हम खुराक बहुत अच्छी और जियादाखाते हैं फिर जानवरों ने हाथी सामने किया और कहा कि इस से तो जियादा आप खाही नहीं सकते हैं और उत्तम के लिये कहते हैं सो अमृत मधु याने सहत तो हमारी भृष्टा है फि[illegible]

यह कहोगे कि हम उत्तम प्रकारसे खाते हैं तो देखिये हंसको जैसा खानेका विवेक है वैसा तो आपको होही नहीं सकता है अर्थात दूध और जल को मिलाकर रख दीजिये दूध पीजावेगा और पानी छोड देवेगा चींटी को देखिये मिट्टी से मिले हुयेभी बूरेको खाजावेगी और मिट्टीको कभी नहीं खावेगी उक्त विवेक मनुष्य मात्र में नहीं होसक्ता है तबतो मनुष्य कहने लगे कि हम ऐश आराम सन्तानोत्पत्ति बहुत करते हैं तो जानवरों ने जवाब दिया कि जैसा ऐश आराम हम करतेहैं वैसा तो आपको प्राप्त होनाही कठिन है यानी हम स्वतंत्र होके आराम करते हैं उत्तम फलफूल हमारे खाये बगैर आपको मिलही नहीं सकते और औलाद जितनी सूरडी और कूकरी के होती है उतनी तो आपके होही नहीं सकती यहांतक तो मनुष्यों को पशुओंसे कमतीही रहनापड़ा फिर मनुष्यों ने कहा कि मनुष्यों में धर्म अधिक होता है तब तो सब पशु एकदम चुपचाप हो रहे देखिये जिस धर्मके सबब से मनुष्य सबमें उत्तम समझे गये उस धर्मके बिना क्या उनको पशुभी कहसक्ते हैं कभी नहीं फिर तो उनको पत्थरकी बनी हुई पुतली कहना चाहिये इसलिये ज्ञानी पुरुषों को धन प्राण, जीवन को अनित्य अस्थिर जान इस असार संसार में सारभूत एक धर्मही को जान इसहीका आश्रय ग्रहण करना चाहिये यही धर्म दुःख रूपी ईंधनको भस्म करने है। लिये अग्नि के समान है और भव समुद्र में डूबते हुये मनुष्यों को आराम से पार उतारने के लिये जहाज के समान है तथा पापरूपी अन्धकार को नष्ट करने के लिये सूरज है परन्तु हे महाशयो ! ये सूरज जैसे घूघू जानवर को नहीं सुहाता है वैसे ही नशा करने वाले मनुष्य को धर्म नहीं सुहाता है और ज्ञानी पुरुषोंका उपदेश तो ऐसा बुरा लगता है जैसे बुखार वाले आदमी को मिश्री कड़वी मालूम होती है हे विद्या रसिकजनों इस नशेको तो बिलकुलही त्याग करदेना चाहिये क्योंकि इस के करने से बुद्धि बिगडती है और बुद्धि के बिगडजाने से जितना नुकसान इस जीवात्मा को होता है वो सब आप सज्जनो से छिपाहुवा नहीं है देखिये यह बुद्धि इस जीव आत्मा का मंत्री यानी मुसाहब है और मन इस जीवात्मा के काम करने वाला मुख्य नोकर है जब इस जीवात्मा को किसी कामकी जरूरत होती है तो अव्वल मन को प्रेरणा करता है और मन उस बिषय को जिस इन्द्रीका हो उस इन्द्री को प्रेरणा करता है और जितनी इन्द्रीयां हैं वो सब मन की नोकर हैं जैसा मन कहता है वैसाही इन्द्रियां करती हैं मगर जब मन गलती करता है और जीवात्मा को धोखा देने लगता है तब जीवात्मा बुद्धि से सलाह लेता है और बुद्धि जैसी राय देती है जीवात्मा को वैसा ही

करना पडता है ऐसी प्रबल बुद्धि को ये नशा बिगाड देता है देखिये जब बुद्धि खराब हो जाती है तो योग्य अयोग्य कामों में भेद न समझ कर मनुष्य कई तरह के पाप पैदा करता है आखिरकार नर्क के दुःख सहने पडते हैं इस से ये साबित हुवा कि नशा नरकादि कुगति और अनेक दुःखोंका कारण हैं नशेबाज किसी को देखताभी नहीं है जैसे जन्म से अंधा आदमी किसी को भी नहीं देखता है वा जैसे कामान्ध और खुद मतलबी किसी को नहीं देखते वैसे ही नशेमे मस्त हुवा भी किसी को नहीं देखता नीतिमें भी ऐसाही लिखा है कि जन्म अंध देखे नहीं काम अंध तसजान ॥ तैसे ही मद अंधहै अर्थी दोष न मान ॥ १ ॥ इससे साफ जाहिर है कि नशा करनेवाले धर्म, अधर्म, मुनासिब, नामुनासिब, मा बाप, दुशमन, दोस्त, वगैरहमें भेद नहीं जानतेहैं यानी नशे की हालत में बेखबर हुवा वो अपने बाप को जिसने जन्म देकर हजारों तकलीफों को बरदाश्त कर के बडी महुब्बत से पाला है उससे भी दुशमन कासा बरताव कर बैठता है और सिर्फ अपनी इन्द्रियों को पोषना अच्छा समझकर औरों को भी दुःख देता है जिस को न इज्जत का खयाल है न आबरू का लिहाज है- बडे अफसोस की बात है--हे हितैषीजनों! बडे २ उत्तम कुल रूपी सघन वन बाग भी इस नशेरूपी तेज आग से नष्ट होगये हैं जिन महाशयों के खानदान से बडे २ ओहदे वाले और जिन के औलाद हमेशा गुणवान विद्यावान निपजते थे आज उस खानदान को इस नशेने ऐसा करदिखाया है कि उन के कुल में न विद्या रही न धन, न ओहदे--और जब उन की नशेबाज सन्तानों को देखते हैं तो बड़ाही रंज होता है कि हाय! जिन के बाप दादे हाथी घोडे पालकी रथ वगैरह में सवार होकर कई नौकर चाकरों के साथ बड़ी इज्जत से चलते थे अब नशे ने उन को ऐसा कर दिखाया है कि जिन के पैरों में जूते भी वक्त पर नहीं होते नंगे पांव फटे टूटे कपड़े पहने लोग जुवारियों के साथ या बाजार में फाटका लगाते नजर आते हैं—अपनी ऐसी हालत देखकर भी नशे को नहीं छोड़ते--जिस को देखतेही तो उन नशाबाजों को ऐसा आनन्द होता है कि जैसे किसी को बिना कमाई धरोहर मिलगई-जिन को ये स्मरण तो बिल्कुलही नहीं होता है कि मैं किसकुल का हूं और ये मिट्टी की बनी हुई चिलम जो इसके मुख से लगीहुई है मैं अपने मुख पर इस को कैसे धरूंगा, देखने वाले मुझे अच्छा कहेंगे या बुरा ऐसे कुछ भी विचार नहीं करते हैं--बस ये साहबो ऐसे मनुष्यों से कौन [illegible] की आशा कर सकते हैं [illegible] भजन करने [illegible] उनका खाने

पीने में विश्वास करसकते हैं ? क्या उस हालत में बडी इज्जत वाले कहला सकते हैं? उनही के भाई जरदा खानेवालों को देखिये, जिन के मुंह दुर्गंध का खजाना हैं छूणे बे-छणे चुने का तो कुछ ध्यान नहीं करते हर किसी के पास उनको जरदा लेने में शरम तो आतीही नहीं किसी कविने दोहा सच कहा है " संत चले बैकुंठ में बैठ पालकी मांहि ॥ ऊपर से नीचे गिरे जरदा चूना नाहि ॥ १ ॥ देखिये ऐसे अधीर तो बिना जरदा चूना के बैकुंठ को भी अच्छा नहीं जानते हैं-पर कितनेही तो देखादेख भी खराब होजाते हैं--आज कल बड़े कुलवाले बीडी के श्योकीन भी देशान्तरों से आये हुये और शूद्रों के हाथ से बने हुए जरदे को और जरदे की गोलियों को इयोक से बीडी में धरते हैं सिर्फ खुशबू और नशे के लोभ से मगर वो ये नहीं जानते कि ये गोलीयां कहां बनती हैं और इन में जल कैसा लगता है--सुनने में आया है कि ये गोलीयां मुसलमान लोग अपने जल से बनाते हैं-पर वो खानेवाले इनका पता क्यों लगावैं उनको इनका छोडनाही मंजूर नहीं है धर्म रहो या जाओ काहिये उन खाने वालों को मुसलमानों से कितना कम कह सकते हैं । अब जरा पोस्त और अमल खानेवालों की तरफ निगाह कीजिये इन दोनों के श्यो-कीन तो जीते और मरे बराबर हैं अर्थात जबतक पोस्त वा अफीम उस नशे बाज को नहीं मिलता है तबतक तो वो किसी काम काही नहीं, रहता है-और जब नशा कर-लिया तो उसका असर होतेही बुद्धि पर पड़दा गिरजाता है—इस हालत में भी किसी काम का नहीं और जब नशा उतरेगा तो मानो बदन से जान निकलगई—कहिये कौ-नसी हालत में वो अपना या पराये का काम करसकता है—हे धार्मिक जनों इसी तरह तमाम नशों को जानिये—मद्य के पीनेवालों के मुख पर कुत्ते मूत्रही (पेशाब) करते हैं-जिनको मा बहन स्त्रीका भेदही नहीं रह-ता है जो मारे गरमी के कादे में लोटा क-रते हैं इस प्रकार सब नशे बुरे हैं सबको छोडना चाहिये और निश्चय जानलेना चा-हिये कि जिसने नशा किया उसने अपनी जिन्दगानीका तमाम हिस्सा खराब करदि-या अफसोस है कि जिन अष्टान्हिका के अति पवित्र दिनों में जिन में इन्द्रादि देव अति आनन्द करके श्री मज्जिनेन्द्र चन्द्र की पूजा करके जन्म सफल मानते हैं उस फाल्गुनके मास में अवश्य नशा करने का त्योहार रखते हैं अपना और परायेका मुं-हकाला कर भंड बचन बोलते हैं होलीका पूजन कर हरांदिंगी छोले सेक कर दांतों-की दृढता के लिये खाते है रोडी या भट्टी की रेत को उछालते हैं खेली आदि के ग-लीज पानी को शरीरों पर डालते हैं इत्या-दि कुकर्म करते हुयेभी किंचितमात्र नहीं शरमाते हैं ये सब नशेहीका कारण है क्योंकि उन दिनों में बालक से लेकर बुढे तक नशा करते हैं एक अंग्रेजी अखबार

वाले ने लिखाथा कि साल भरमें एक दिन तो सारे हिन्दुस्थान के मनुष्य दीवाने हो-जाते हैं हमारे भाई इस बातको सुनकर ब डी खुसी करते हैं ऐसी २ बुरी हालतें ह-मारी नशेसे हो रही हैं तब इस के छोड-ने के लिये नहीं उद्योग करैं तो हमारे ब राबर अज्ञान और कोन हो सक्ते हैं यहां तक देखने में आया है कि जब कभी श्री जीकी रथयात्रा होती है तो बहुत से ध र्मात्मा स्त्री पुरुष इकठ्ठे होते हैं मगर नशे क शोकीन तो वहांभी नहीं जातेहैं और जातेभी हैं तो लोटी सिझा टटोला करते हैं उनका अनुराग प्रभूकी सभा में बैठनेका नहीं रहता है बलिक बगीचे में हाथ मुंह धोने में रहता हैं यदि सभा में रहभी गये तो बुरी नजर से स्त्रियों को देखैंगे कहिये ऐसे मनुष्य क्या कुल को कलंकित करने वाले नहीं है क्या ऐसे मनुष्यों से कुल भू षित होसक्ता हैं कदापि नहीं कुलके भूष ण तो वोही कहावैंगे जिन को नशे आदि कुकर्मोंका सर्वथा त्याग है ऐसेही मनुष्य सराहने के योग्य हैं इस लिये सज्जन पुरु षों को सर्वथा नशाका त्याग करना उचि त है इस प्रकार भाई नाथीलालजी ठोल्या ने व्याख्यान खतम किया बाद में मेघराज जी मालपुरावाले मुन्शी बसन्तीलालजी चौ धरी बी० ए० इन्दरलालजी सेठी, छोगा लालजी बिलाला मूलचन्दजी काला बी० ए० चांदूलालजी बिलाला, वगैराने अनेक युक्तियों और दलीलों से नशेको बुरा बत-लाया इस व्याख्यानका इतना असर हुवा कि करीब २ तमाम सभासदों के नशे के त्याग थे मगर जिन के नहीं थे उन्हों ने भी त्याग किया और आइन्दा से होली व छारन्डी के खेल में शामिल होनेका भी परहेज किया अनन्तर सभाध्यक्षजी साहि ब ने व्याख्याता व तमाम सभासदों को ध न्यवाद देकर, व्याख्याता के लेखको पुष्ट करके मंगलाचरण पढकर सभाको विसर्ज न कराई ॥ मैंने ये छोटासा व्याख्यान ब गरज बहुतरीये जैन कौम व उन्नतीये की जियेगा बाकी अमूर काबिलेगौर महासभा के जो हमारे खयालात में आये हैं उनको पीछे से भेजते है पहुंचने पर उनको भी छाप दीजियेगा ॥

द: जमनालाल गोदीका मंत्री जयपु

ऐक्यता

अय भाईयों दो मिनट खर्च करके इस को भी जरा पढना तो भाई— उसके मुता फिक करना या न करना यह तो आप की खुसी की बात है मगर इतना तो ज रूर कहना कि ये जो लिखता है वो सही लिखता है या गलत जब आप यह कहो गे कि यह शख्स लिखता तो सही ही है बस जब आप अपनी जबान से इतना नि काल दोगे तो मुझको आशा है कि आप उसको मंजूर भी फरमावोगे भाई साहब जहांतक देखा गया है और सुनागया है तो यही बात साबित होती है कि दी

वो दुनियां दोनों के कामों को विगाड़ने वाला सिर्फ एक आपसकी फूट है इसी लिये मैं दो चार बातें इस विषय पर लिखता हूं मैं जानता हूं लफज एकता को किसने नहीं सुना होगा और कोन इसके फवायद से वाकिफ न होगा मैं तो जानताहूं शायदही कोई ऐसा निकले जो इत्तिफाक के गुणों को न जानता होगा जहां तक इतिहासों और पुराणों को देखा और पढागयातो यही मालूम हुवा कि इस ऐक्यताने कई तरह के रंग दिखलाये तमाम जमायती राज सम्बधी और लेजिस लेटिव कामों में बहुत कुछ तवदीलियां करदी और इसका वरखिलाफ जो नाइतिफाकी है उसने कैसे २ दुःख दीये जिसने इस नाइतिफाकी रूपी दुशमनको जरासा भी प्यार किया उसको सारे संसार में नीचा दिखाया और उसका पाताल तक भी लगन लगा जिन्होंने उसको अपना शत्रु समझ कर अपने मुंह नहीं लगाया वो तमाम विद्या में निपुण हुए और उनके गुणोंकी ध्वजा तीन लोक में फरहराई एकत्रता दो प्रकारकी होती है एक निश्चय एकत्रता दूसरी व्यवहार एकत्रता निश्चय एकत्रता का बयान फिर कीया जायगा यहां पर सिर्फ व्यहार एकत्रताका हाल थोडासा लिखाजाता है एकत्रता एक ऐसी शयहै कि जो उसको अपना दोस्त बनाता है उस पर भरोसा रखताहै उस शख्सका हमेशा सुखकी प्राप्ति और दुःखकी निवृत्ति रहती है जो इस पदार्थके गुणों को नहीं जानते उससे मुख मोडते हैं वे हमेशा शोक और दुःख के समुद्र में डूबे रहते हैं और मरने को जीना समझते हैं इतिफाकका अगर पूरा २ अर्थ लीयाजावे तो संसार और सारे पदार्थ इसही पर बन रहे हैं यह बात तमाम मानते हैं कि यह संसार ऐसे २ छोटे प्रमाणुवों (at0ms) से बना है कि अगर किसी तरह इनमेंसे इतिफाक गुण निकलजावे तो यह संसारिक स्वरूप [जो इस समय दीखलाई देता है] कुछ भी दीखलाई न देगा इससे साफ मालूम होता है कि ये संसारिक पदार्थ इतिफाक ही के कारण बन रहे हैं ॥

आजकल ऐक्यता से ये मायने समझे जाते हैं कि कई आदमी आपस में मिलजुल कर ऐसे तौरपर कामकरें कि उनमें से हरएक के सुखको अपना सुख और दुःख को अपना दुःख समझें याने आपस के सब आदमीयों में सुख पैदा करने और दुःख दूर करने की कोशिश का नाम ऐक्यता है स्वार्थता इत्तिफाक के मिटानेवाली और फूट के बीज बोनेवाली हैं अगर कोई कहै कि स्वार्थही नहीं करैं तो फिर खुदका तो नुकसान होता है—जवाब इसका ये है कि अय भाईयों स्वार्थता कहांतक दुरुस्त है कि जहां तक अन्य भाईयों को तकलीफ न हो-देखिये जिन भाईयों वा पडोसियों में एकेकी मोजूदगी है वो ऐसे सरसब्ज और सुखी होते हैं जैसे तालाब में कमल का फूल-वा जो लोग

एक दूसरे से इत्तफाक रखते हैं वो खुश-हाल और ताकतवर रहते हैं जैसे तागा कि-तनाही लंबा और पतला क्यों नहो मगर जब बहुत से तागे मिलाकर एक रस्सा बना लिया जावे तो वो ऐसा मजबूत होजाता है कि जिस से मस्त हाथी भी आसानी से बांध दीयाजाता है और देखिये जिस घर में एका नहीं है तो उन मनुष्यों की जिन्दगी बेलडी समान है जो सहारा नहीं मिलने से मुरझा जाती है और सूखजाती है--एकत्रता बगैर मनुष्य की जिन्दगी बसर करना ऐसा है जैसे एक पाहिये की गाडी का चलना-अकेले मनुष्य का रहना ऐसा है जैसा जंगल में एक दरख्त का होना याने जैसे इकल्ला दरख्त जरासे हवा के झोके के लगने से गिरपडता है उसी तरह एकल्ले मनुष्य की हालत जाननी चाहिये अय भाइयो इस नाइत्तफाकीही ने हर एक देश में और विशेष कर इस देश में कैसे कैसे दुःख पैदा किये हैं-इतिहास को देखिये पृथ्वीराज से चक्रवर्ती राजा का इसी कमबख्त ने नाश किया है इसही कमबख्त ने जयचंद राजा कनौज को एक पलभर भी चैन न लेनेदीया। इस इत्तफाक की शक्ति को देखो कि फूंस का तिनका कैसा कमजोर होता है मगर जब उनको जोडकर छप्पर की सूरत में बांधदें तो वे अनगिनत बोझ और पानी को सम्हाललेते हैं-इसीतरह मनुष्यों में भी इत्त-फाक की शक्ति समझना चाहिये--मगर अफसोस की जगह है कि हमारे जैनीभाई इस इत्तफाक की ताकत की तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देते और न इस से काम निकाल ने की शिक्षा ग्रहण करते हैं--अगर कुछ काम करते भी हैं तो उन के चित्त में स्वा-र्थता और अभिमान इस दरजे का बढाहुआ है कि दूसरों की निश्चय की हुई जातोन्नती और विद्योन्नति के उपायों को ग्रहण नहीं कर सकते किन्तु उन निश्चित उपायों के तरक्की करने और मदत पहुंचाने की बजाय उनके मटियामेट करने में अपनी तमाम शक्ति को लगा देने में अपना बडप्पन स-मझते हैं ॥

जैनीभाइयों का शुभचिंतक
छोगालाल बिलाला बी-ए
वकील बागबिलाशिनी सभा
खुर्रा हांसूकान
जैपुर

भोपाल

श्रीयुत महाशय धर्मोत्साही बाबू सूर्यभानजी साहब (यथानाम स्तथा गु-णः) निधान जोग्य लिखी भूपालताल से गणेशीलाल खंडेलवालका धर्म स्ने ह पूर्वक जयजिनेंद्र बंचना-- आगे आ पके जैनगजट के आने से सभा स्था-पित हुई और हर चतुर्दशी को हुआ करैगी मिती वैशाख सुदी चतुर्दशी की सभा में मैंने व्याख्यान मिथ्यात्वके दू र करने में और धर्म के प्रचार हो

ने के विषय में दिया जिस को सर्व भाई सुनकर अति हर्ष को प्राप्त हुए इस सभा में अनुमान ४० के स्त्री पुरुष थे और उसी दिन से सभास्थापित की गई आगामी सभा के वास्ते पाठक प्यारेलालजी ने अपने विद्यार्थीयों से २०० नोटिस लिखवाय और सर्व भाइयों को बांटे गये और मिती ज्येष्ठ वदी चतुर्दशी को शास्त्रजी हो कर सभा प्रारम्भ की गई जिस में भाई सरूपचन्दजी ने अपनी कोमल और मधुर वाणी से देवगुरु शास्त्र तथा सम्यक्त के विषय में व्याख्यान दिया जिस को सुनकर सर्व सभासद हर्ष को प्राप्तहुए—उस समय अनुमान स्त्री पुरुष २०० के लगभग थे फिर भाई कस्तूरचन्दजी ने महासभा के प्रबन्धकर्त्ताओं की तारीफ में एक व्याख्यान अति प्रियवाणी से कहा फिर पाठक प्यारेलालजी ने यह प्रार्थना की कि सब भाई बैर विरोध को छोड़कर इस पाठशाला तथा सभा को सुशोभित करो आजकल संसार में अपने कल्याण की करनेवाली यही दो बातें हैं सो सर्व भाइयों ने स्वीकार किया और फिजूल खर्ची और कुरीति दूर करने को भी सब भाइयों ने स्वीकार कर लिया है और सभा में गोलक रक्खी गई उस में ॥।—) आन जमाहुए और यह गोलक हर सभा में—रक्खी जाया करैंगी इसके लिखने का तात्पर्य यह है कि हमारे जैनीभाई सर्व जगह सभा में तथा मन्दिरों में गोलक रक्खा करैं क्योंकि इसी तरह बहुत रुपया जमा होजावेगा।

और जो कुछ रुपया जमाहो वो सब श्रीमान सेठजी साहब के पास मथुरा भेजदेवें ताकि जैनविद्यालय के खाते में जमा होजावे।

रेणी जिला सागर ॥

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब कृपा कर इस तुच्छ लेख को जैनगजट में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

आपका सप्ताहिक जैनगजट आता है उस को पढ़कर सर्व भाईयों को अतिहर्ष प्राप्ति होता है और सब की रुचि धर्म की तरफ बढ़ती है यहां से एक कोसपर एक ग्राम दीनापुर है वहांपर मिती बैसाखसुदी ८ को लाला बख्तावरलाल सोनपालजी ने श्री सोनागिर की सिखरजी की यात्रा का पारणा किया था जिस में श्री २४ महाराज का पूजन—विधान वा कलशाविशेष कराया बड़ा आनन्द प्राप्ति हुआ और रात्रि को सभा होकर महा धर्मोपदेश हुआ जिस में धर्म पदार्थ को महा दुर्लभ पणे से प्राप्ति होने के बाद फिर नहीं सम्भालते हैं उन को बिलकुल मूर्खपने से खोदेते हैं इसका उपदेश दिया और भी धर्म के विषय में उपदेश दिये अन्य जातीय भी बहुत से आदमी इस सभा में आये थे उन्होंने जिन धर्म की महिमा सुनकर अनेकानेक

धन्यवाद दिया ।

फिर मिती वैसाखसुदी १३-१४ को यहां पर खास इस कस्बे में लाला कानजीमल लालचन्दजी जो कि हमारे कस्बे के मुखिया और परोपकारी सज्जन पुरुष हैं पूजन विधान जलजात्रा और कलशा आदि बड़े आनन्द के साथ अविशेष कराये-बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ ।

बाराबन्शा

चिट्ठी ॥

भाई साहब जयजिनेन्द्र—पोस्टकार्ड आया बांचकर परम आनन्द हुआ मुझे अवकाश बहुतकम मिलता है इस वास्ते मजमून न भजसका अब दुरुस्ती रस्म जैनयों की बाबत लिखरहाहूं उसको आप की सेवा में छपने के लिये भेजूंगा और मैं आप से श्री जम्बूस्वामी के मेले में मिलूंगा सभा में नियमावली का और चन्दा इकट्ठा होने का प्रबन्ध मुख्य तौरपर होना चाहिये—धर्म विद्या के साथ कर्मविद्या भी जैन पाठशाला में पढ़ाई जानी चाहिये जिस से आगामी भोजन पान की प्राप्ति की भी आशा रहै ।

इस पञ्चम काल में केवल भोजनपान ही की आवश्यकता का कारण दृष्टि पड़ता है। धर्म की हानि सहधर्मियों की संगति और शास्त्राभ्यास से होती है उसको आजकल कोई करता नहीं बिना अभ्यास के उपदेश भी कहीं निरर्थक होता है ॥

जैनी भाइयों का शुभचिंतक
सुखासीलाल मेंहू
जिला अलीगढ़

जैन महासभा मथुरा ॥

हम बड़े पत्रों में प्रकाश करचुके हैं कि महासभा मथुरा के दिन निकट आगये हैं इस कारण इसके प्रबन्ध की कोशिश अभी से होनी चाहिये ॥ हम यह भी जाहिर कर चुके हैं कि महासभा तबही महासभा होसकी है और तबही इसके मनोर्थ सिद्ध होसक्ते हैं जब कि प्रत्येक नगर ग्राम से प्रतिष्ठित भाई अपने नगर के भाईयों की ओर से प्रतिनिधि बनकर आवें और अपने नगर वासियों की ओरसे महासभा में सम्मिलित हों इस कारण इस बातकी परम आवश्यकता है और यह काम सब से पहलेहो जाना चाहिये कि प्रत्येक नगर वासी अपने अपने नगर में पञ्चायत करके अपनी ओर से सम्मति देने के वास्ते प्रतिनिधि नियत करदेवैं और पहले से महामंत्री साहब को सूचित करदेवैं कि हमने उक्त महाशय को अपनी ओरसे महासभा के वास्ते प्रतिनिधि नियत कर दिया है ॥ यद्यपि यह बात कईबार जैनगजट में प्रकाश हो चुकी है परन्तु ऐसा मालूम होता है कि अभी तक हमारे भाईयों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है और कुछ उद्यम इस विषय में नहीं किया है ॥ भाई साहब दिन व्यतीत हुवे जाते हैं और इस वर्ष की

महासभा से बहुत कुछ कारज की सिद्धी की संभावना है और जैनजाति की उन्नतिकी उम्मैद है इस कारण हम अवसरको हाथसे नहींजानेदेना चाहिये और अपनी शक्ति अनुसार जैन धर्म और जैन जातिकी उन्नति में कोशिश करनी चाहिये इस से किसी खास पुरुषकी उन्नति नहीं है बरण आपकी ही उन्नती है ॥ आशा है कि हमारे भाई बहुत जल्द इस पर ध्यान देवेंगे और पञ्चायत करके प्रति निध नियत करके महा मंत्री को सूचित करदेवेंगे हमने यहभी सब भाईयों से प्रार्थना की थी कि वह अपनी २ संमति इस विषय में प्रगट करें कि इस वर्ष की महासभा में क्या क्या विषय पेश होने चाहियें और किस प्रकार प्रबन्ध होना चाहिये इसका उत्तरभी किसी ही भाईने हम को दिया है यह प्रार्थना भी हमारी सब के स्वीकार करने योग है इस कारण हम दुसरकी अभिलाषा करते हैं ॥

चिट्ठी

श्रीयुत धर्मा नुरागी परोप कारी भाई सूर्यभान वकील जैनगजट सम्पाद को अरजुन लाल सेठी का जैजिनेन्द्र पहुंचे आगे, हाल यह है कि यहां पर मंदिरजी टोलियान की पाठशाला के विद्यार्थियों ने एक विद्या प्रचारिणी नामक सभा नियत की है और गरज इस सभा के नियत करने की ये है कि विद्यार्थियों को धर्म विषय में बहस करने की और सभादिक में बोलने की हिम्मत हो ॥

मुख्य कार्याध्यक्ष इस सभा के निम्न लिखित पुरुष हैं ॥

गणेशलालजी साठी—सभापति
माणकलाल बिलाला— मंत्री
पूरणचन्दजी गोधा— लेखाध्यक्ष
केसरीलालजी लुहाड्या— कोषाध्यक्ष
अरजुनलाल सेठी— वकील

अब के मरतबा मिती जेठ वदी८को सभा हुई जिस में भाई माणकलाल ने ऐक्यता विषय में निहायत उमदा श्लोकों सहित व्याख्यान श्रवण कराया उपरोक्त महाशयों ने मुझे आज्ञादी कि बाबू सूर्यभानजी को इस सभा के नियत करने की इत्तला लिख भेजो ताकि वे अपने अमूल्य पत्र जैनगजट में छापदें क्योंकि इस से अन्य पाठशालाओं के विद्यार्थियों को भी सभाके नियत करनेका शौक होगा, आपसे प्रार्थना है कि इस लेख को जैन गजट में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

सर्व जैनी भाईयोंका दास
अरजुनलाल सेठी विद्यार्थी
पाठशाला मंदिरजी टोलियान
जैपुर

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपयाहै

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेजी महीनेकी १–८–१६–२४ ता०
को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध
से
देवबन्द जिला सहारनपुर में
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० २४ जून.......सन् १८९६ } अङ्क २७

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

(मूल्य प्राप्ति स्वीकार)

३) लाला पुत्तरलाल बनारसीलाल मेंढू जिला अलीगढ़
३) श्रीजैन मंदिर देवरी जिला सागर
३) लाला मंगतराय कानूंगो देहरादून
३) श्रीजैन मंदिर मारफत दीवानजी मानसिंह छिवाई जिला बुलन्दशहर
३) लाला भैरोंप्रसाद दरियाबाद जिला बारहबंकी
३) लाला मुन्नीलाल हिम्मतपुर जिला आगरा
३) लाला मोहनलाल अमरचन्द नलवेड़ा जिला आगरा
३) ला० गनेशीलाल ओवरसियर गंजाम जिला हैदराबाद
३) लाला उमेदराम चमनराम सरंगपुर जिला इन्दौर
३) लाला कौड़ीमल बसन्तीलाल नगीना जिला गुड़गांव
३) श्रीजैन मंदिर भुपावर राज जैपुर
३) लाला दरबारीलाल तोपखाना अम्बाला छावनी
३) श्रीजैन मंदिर सढ़ौरा जिला अम्बाला
३) श्रीजैन मंदिर भरतपुर
३) लाला सियाराम प्रोफेसर महाराजा कालिज लाहौर
३) श्रीजैन मंदिर मारफत हरद्वारीमल गोहनक
३) श्रीजैन मंदिर पंचायती दरियाबाद जिला बारहबंकी
३) सैक्रेटरी जैनऔषधालय अजमेर
३) ला० दरियावप्रसाद लखमीचन्द भेलसा जिला भूपाल
३) ला० रघुनाथसहाय पंनालाल बिन्द्राबन झांसी
३) ला० मोतीलाल फौजदारीवाले मन्त्री आनन्दवर्धनी सभा जैपुर
३) लाला इन्दरजी सेठी जैपुर
३) लाला पारसलालजी इंजिनियरिंग डिपार्टमेंट जैपुर
३) लाला गिरधीचंद नाइबफौजदार जैपुर
३) लाला जमुनालालजी मन्त्री बागविलासनी सभा जैपुर
३) सेठ चांदमल मुन्तजिम सायरात जैपुर
३) लाला जमुनालाल भरतपुर
३) सेठ रायचन्द बाबूराम पिपलौन [illegible] आगरा
३) लाला किशनलालजी बगरावाला जैपुर
३) लाला चुन्नीलाल चांदमल हींगनघाट जिला वर्धा
३) लाला मिसरचंद कलकत्ता
३) श्रीजैन मंदिर मारफत छीतरमल आत्माराम कन्नौज जिला फतहगढ़
३) ला० पन्नालाल जैनऔषधालय केकड़ी
३) ला० मोतीलाल शिवलाल बड़ा नागपुर
३) ला० पारसलालजी मेरठ छावनी
३) ला० गुरप्रसादसिंह नाइब कानूंगो [illegible] जिला मथुरा
३) ला० मोहरीमल क्लर्क होटल दहली

(शेष आगे)

पढनेयोग्य

प्रियवर महोदय !

इस तुच्छ लेख को निज अमूल्य जैन गजट के किसी कोण में स्थान प्रदान दे कृतार्थ कीजिये ॥

॥ श्लोक ॥ क्षुद्राःसंति सहस्रशः स्वभरण व्यापार मात्रोद्यताः, स्वार्थो यस्य परार्थ एवसपुमानेकः शतामग्रणी ॥ दुष्पूरोदर पूरणाय पिबति श्रोतःपतिं वाडवो, जीमूतस्तु निदाघ संभृत जगत्संताप विच्छित्तये ॥ १ ॥

सुहृद्वर, इस कठिन कराल कलि पंचम काल की विपरीत विचित्र गतिका अगम दुर्निवार प्रताप है कि जिसका प्रबल प्रताप पुरुषों के चित्त को दूर से धर्म ध्यान ज्ञान सब विपरीति तनका अज्ञान करा रहा है यही क्षेत्र है कि जिस में कुछ कालान्तर के पूर्व अथवा प्राचीन समय से कैसे कैसे श्रेष्ठ पुरुषोत्तम तीर्थंकर चक्रवर्ति केशव प्रति केशव बलि कामदेव महर्षि आदि असंख्यात सर्वदा प्रणीत सद्धर्म प्रतिपालक स्याद्वाद बादानकल एकान्तवादि मिथ्या ध्वांत विदारक अनेक संबंधी त्रिकालवर्ति यावत पदार्थों के अनेक गुणपर्याय ज्ञायक सतसम्मतन सर्वज्ञ जिन मोक्ष मार्ग प्रकाशक होगये जिन के चारित्र पौराण शास्त्रों के देखने से यथार्थ ज्ञात होते हैं, यही क्षेत्र है कि जिस में ऐसे २ श्रेष्ट पुरुषों ने इस संसार असार को क्षणिक जान क्षणमात्र में अटूट सम्पदा को तृणवत् मान परित्याग कर दिगम्बर भेष धारण कर गतिशय लिप परोपकार निमित्त स्वतः स्वभाव से ब कांक्षित अनेक क्षेत्रों में परियटन कर अनन्त प्राणियों को (स्वार्थी जनों के बहकाने से) धर्म च्युत हो संसारार्णव में डूबते जान करुणा भावकर भ्रमान्धकार उनके हृदय से नष्ट किये और सांचा दर्शन ज्ञान चारित्र रूपमार्तण्ड प्रकाश कर द्रव्य के धर्मका लक्षण बताय मोक्ष मार्ग प्रत्यक्ष प्रगट कर दिये और अनेक शास्त्र पौराण सिद्धान्तादि परोपकार निमित्त निर्माण किये जिस के अभ्यास से परोक्ष पदार्थ स्वरूप प्रत्यक्ष हस्तामलकवत भास होजाय है सो यह सत्पुरुषोंका स्वभाव ही गुण ही है कि (संतः स्वयम् परहितेषु कृताभियोगाः) बिना प्रयोजन ही परोपकार करें और अपना २ प्रयोजन तो पशु और कीट पतंग कीड़ी आदि भी करे हैं तो मनुष्य में विशेषता ही क्या है केवल लोक और परोपकार ही मनुष्य शब्द को सार्थक करता है इस गुण के बिना बिन पूछ सिंगका पशु ही है बस नरदेह पानेका यही फल है कि ज्ञान धर्म की वृद्धि और परोपकार तन मन धन से करे कहा है (धनानि जीवतं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् सन्निमित्ते वरंत्यागो विनाशे नियतेसि-ति) अर्थात सत्पुरुषोंका विभूति और जीवन शरीर परोपकार निमित्त ही है और सत्कार्य में यदि नाश होजाय तो परम श्रेष्ठ है नहीं तो व्यर्थ विनाश तो हो होगा

[सवैया] बुद्धिभये कहाभयो जो पै शुद्धि जानी नाहि बुद्धि को तो सार यही तत्व को विचारिये, लक्ष्पाय कौन सिद्धि रहै है न थिर रिद्धि लक्षको तो लाहु जो सुपात्र हेत डारिये, देहपाये कौन काज रहै नाहि थिर साज देहको तो सार जप तप वृत धारिये, वचनकी चातुरी बनाय बोले कहा होय वचनतो वही सत्य शब्द को उच्चारिये ॥

कहिये सुधीशान— वर्तमान समय में कोई १ भी पुरुष ऐसा है जो परोपकार करै और जिनमत में भी दुष्ट दुर्जनों ने स्वार्थ वशात विपरीति कर्म को धर्म बतलाय कुदेव कुगुरू कुधर्म कुशास्त्र के श्रद्धानकी प्रवृत्ति कराय भोले पुरुषों को बहकाय नि तंद्य मार्ग चलाय धर्म में लाछन लगाने के प्रचंड हेतु होगये हैं परन्तु धर्म तो धर्म ही है सुवर्ण को काठ नहीं लगता यह परीक्ष क के नेत्र और विवेक शक्तिका भ्रम है जौहरी तो रत्नकी परीक्षा कर ही लेता है और रत्नका काच कदापि नहीं हो सक्ता तथापि हठग्राही अज्ञानी मूर्ख जीव ऐसे धर्म वंचकोंके भ्रमपाश में फंसकर अधर्म को धर्म मान रहे हैं ऐसे जीव विशेष हैं जिन को संबोध कर विरुद्ध मिथ्या वादि योंका मान शिखर चूर्ण कर सधर्मकी उन्न' ति करने को कटिबद्ध हो कोई नहीं है ॥

मैंने जहां तक दृष्टि पसार कर देखा है तो यही निश्चय होता है कि कोई नहीं है, हां तो १ पुरुष परोपकार नि- मित्त द्रव्य लगाने में उदार चित्त श्रीमन्त श्रेष्ठि मोहनलाल सा० रहीस खुरई जिला सागर हैं जिन की सहायता और उदार- ता से बहुत जीवों को विद्या रत्नका लाभ होता है और होगा। परन्तु जब तक उस विद्यालय से उपदेशक नहीं निकलेंगे तब तक देशका उपकार नहीं होसक्ता सो कारणपाय कालान्तर में उपदेशक भी वि द्वान होकर निकलेंहीगे यह सम्भावना है और भी इनकी सहायता कई प्रकार के प रोपकार में हैं मैं अपने सत्य हृदय से ऐसे पुरुषों को कोटशः धन्यवाद देता हूं ॥

यद्यपि मेरे से उक्त महोदय से कि- सी प्रकारका परिचय अथवा भेंट नहीं है तथापि उत्तम गुण और यश परोक्ष नहीं रहसक्ता और यही पुरुषका भूषन है (स्व- महीमा यद्यास्ति किमणर्ने) यदि इसी प्रकार अन्य धनाढ्य पुरुष भी उदारता धारण करें तो शीघ्र इष्ट सिद्ध होजायगा ॥

परंतु विशेष धनिक जनों का तो यह वृत्तान्त है कि धन के मद में अन्ध हो वि- द्याशून्य अभिमानयुक्त विषयाशक्त कषाया- रक्त हो घोर निद्रा में पड़े अपने हित को भूल ऐसे कार्यों पर दृष्टिही नहीं देते हां विविध लौकिक विवाह अवसर आदि में ख- र्च करने को अग्रेश्वर शिरोमणि हैं और परमार्थिक कार्य में अन्यजनों की सहायता

के अभिलाषी बनते हैं रहे कोई कोई विद्वान उन में से कईतो द्रव्य की सहायताहीन हैं जिस कारण असमर्थ होजाते हैं और कोई कोई जो पूर्ण विद्वान आप को जानते हैं और कोई धनाढ्य सहायक भी होते हैं तो स्वार्थसाधक हो तीव्र कषाय के पात्र बन केवल अपनी मान लोभ कषाय को साधने में दक्ष हैं तदनुकूल माया और क्रोध प्रगट होही जाता है जब कोई प्रसंग उपदेश का अथवा समागम का आपड़े तो शिथिलता ग्रहणकर प्रमादी हो अशक्ताधीन होजाते हैं अब कहिये किस प्रकार यह कार्य सिद्ध हो यद्यपि सम्पूर्ण पत्र चिरकाल से चिल्ला रहे हैं परन्तु ऐसी हाय हाय कौन सुनता है नकार खाने में तूती की आवाज ऐसे चिल्लायाही करते हैं और नाना प्रकार प्रयत्न भी हमारे मित्रगण पत्रोंद्वारा प्रकाश करते हैं और खेद कररहे हैं परन्तु सर्व श्रम निष्फल होजाता है इस का मुख्य हेतु मेरी अल्पबुद्धि में तो यही है कि प्रथम तो धनाढ्य जो केवल स्वार्थी हैं और मंदिर प्रतिष्ठा आदि में लक्षावधी मुद्रा व्यय करदेते हैं परंतु धर्म के मूल कारण में द्रव्य खर्चने को असमर्थ होजाते हैं और उत्तम प्रकार प्रयत्न नहीं करते इन्हीं का प्रमाद है हे गुणज्ञों ! जिन पुरुषों ने केवल मंदिरजी बनवा कर प्रतिष्ठा आदि कराय किसी पद की प्राप्ति कर आप को श्रेष्ट जान इसही को धर्म का मूल माना है क्या यही मुख्य धर्म का अंग है या सहस्रों मनुष्यों को १ दिवस भोजन करा देनाही धर्म का मूल अंग है वा आतिशबाजी रोशनी परम कल्याण का हेतु है वा गौरांग महाशयों को नाना प्रकार भोजन देना मोक्षमार्ग है या गज रथ का चलानाही मुख्य मोक्ष का बीज है वा ठौर ठौर मंदिर पर मंदिर बनवाते जाना चाहे पूजन प्रक्षाल न हो या नहो धर्म का मूल है, पूजन लिखित चिन्ता नहीं दो चार रुपये महीने का नौकर रखदिया जावेगा जबतक लक्ष्मी है काम चलता रहेगा पीछे चले या न चले [illegible] चाहे अकार भी न जानता हो वह [illegible] परंतु पूजन तो करही लेवगा

[illegible], मैं प्रण पूर्वक कहताहूं कि जो प्रवृत्ति वर्त्तमान समय में प्रबल रूप होरही है वह कालान्तर में दुखदाई होजायगी जबतक कि धर्म रूपी कल्पतरु का मूल वीर्य पुष्ट नहीं होगा वृक्ष और शाखा नष्ट हो जायगी जैसे मनुष्य के शरीर में वीर्य प्रबल नहीं है तो शरीर शिघ्रही नष्ट होजाय तैसेही यह भी है कि जब विद्यारूपी वीर्य ही नहीं रहेगा तो धर्म रूपी वृक्ष कब ठहर सक्ता है तो कालान्तर में वह जिन मुद्रांकित बिंब जैनियों केही बालक खिलौना करने लगजावेंगे तो अन्य मतावलम्बियों की क्या कथा है तब उस घोर पाप के भागी किस को कहना विचार लीजिये नहीं तो न्याय ग्रंथ पूर्वक निश्चय करिये आप जनों ने देखाही है कि प्रतिवर्ष आर्यावर्त

कितने नवीन मंदिरों की प्रतिष्ठा होता है और कौन २ पुरुष को कषाय किस प्रकार की रहती है और किस प्रकार से द्रव्य उठता है और विनय क्रिया ज्ञानगुदड़ी प-दार्थ तत्व परीक्षा सन्मार्गोपदेश किस प्रकार होती है कहिये किसी ने दानालय विद्या-लय शास्त्रालय औषधालय अनाथालय आ-दि भी बनवाये हैं कहीं कोई महाभंडार में भी द्रव्य ऐसा दियागया है कि जिस से दुखित भूखित ऐसा दुखिया अनाथ स्त्री पुरुषों का निर्वाह होता मेरे लक्ष में तो नहीं दिया होगा इसका हेतु केवल लोक में प्रतिष्ठा अर्थात मान कषाय की पुष्टता है धर्म बुद्धि नहीं यदि धर्म बुद्धि होती तो जिस कारण से धर्म की पुष्टता और उन्नति हो जीवन का परमहित कल्याण ज्ञान की वृद्धि हो ऐसे कार्यों में भी द्रव्य खर्च करते परंतु [illegible] बातों क[illegible] नहीं [illegible] कोई [illegible] देश द्रा[illegible] तो [illegible] बनजाते हैं कहिये धर्म है या मान,

यदि पद प्राप्ति का हेतु है तो मैं प्र-तिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि जो पद इस का [illegible] में मिलता है उस से भी श्रेष्ठ पद श्री [illegible]तादिक का हमारे परम मित्र जैन कुल [illegible]त्र देसक्ते हैं परन्तु धर्म की जड़ पुष्ट कर [illegible] वृक्ष की रक्षा करने को ऐसी ही उ-[illegible]रता धारणकर जैन कुल की जैन धर्म की उन्नति करें उपदेशक शीघ्र देशान्तरों में [illegible] और मनुष्य जन्म को सार्थक करें क्या यह कार्य कठिन है नहीं नहीं परमप्रिय असाध्य कार्य भी साध्य होसक्ता है परंतु यत्न पूर्वक होना चाहिये मुख्य इसमें पूर्व तो द्रव्यही की सहायता चाहिए और जिन भाईयों का द्रव्य ऐसे कार्य म लगता है उन ही को अन्यों ने सत्पुरुष सज्जनता का पद दिया है और यह शंका भी न करें कि द्रव्य क्षय होजायगा नहीं नहीं कदापि नहीं (लक्ष्मी पुण्यानुसारणी) यदि पूर्व पुण्य तीव्र है तो क्षेपने से भी नहीं जायगी और धर्म के निमित्त से दिन प्रतिदिन वृद्धिरूप चर-णों में पड़ी रहेगी हां अवसर विवाह आदि अन्य कार्यों में व्यय करने से अधोगति नर्क या निगोद को अवश्य लेजायगी बस यदि मनुष्य जन्म का लाभ लेना है तो प्रयत्न शिघ्र कीजिए विचारांश में आयुक्षय होजा-यगा तो पश्चातापही शेष रहजायगा शुभ-स्य शीघ्रम्, काहानिः समयच्युतिः—वि-लम्ब मतकरो किसी की आशा मतकरो पुरुषार्थ प्रगट करो अंत में लक्ष्मी स्थिर न रहेगी (यास्व सद्म निपद्मापि स-न्ध्या बधिविजृंभते—इंदिरामंदिरे न्येषां क-थंस्थास्यति निश्चला) देखो बंबई में १ म-हाशय ने तेतालीस लक्ष मुद्रा मसजिद और निज जाति की उन्नति और दीनों का प्रतिपालन होने के अभिप्राय से संकल्प करदिया यह आप साहबों ने पूर्व सुनाही होगा बस ऐसेही उदारता गुण प्रशंसनीय हैं अब हमारे जैनभ्रात भी धर्म रक्षा कुल

केवल अपने शरीर पर स्वेत वस्त्र व ९ ट-का भर गेहूं और मूंगकी दाल भोजन के लिये रक्खी जेष्ट वदी १० के दिन पंच सुमतिका ग्रहण किया जेष्ट वदी ११ के दिन शास्त्रानुसार वचन उच्चारण का आरम्भ उपदेशका त्याग किया अरहंत सिद्धका ध्यान करते रहे जेष्ट वदी १२ के दिन यह धर्मात्मा धर्म धोरी सायंकाल समस्त वस्त्रोंका त्याग कर खंड वस्त्रका ग्रहण और कोपीन कणगती रक्खी पृथ्वी पर कुशासन पर विराजे पश्चात कायोत सर्ग पूर्वक शास्त्रों की साक्षी से कमंडल पी छी को ग्रहण कर उडंड प्रतिमा के धारक च्यार आहार के त्याग यावत जीव करके मौन ग्रहण करते हुए जो श्रावक दर्शन करने को आये दर्शन करके बैठ गये आ-पका संभाषण किसी से नहीं था उस समय में जो उनके धर्म की दृढता थी वह मैं व-र्णन करने और लिख ने को समर्थ नहीं उस समय अत्यन्त सावधानी के साथ न-मोकार मंत्रका ध्यान आप करते थे और सहधर्मी धन्नीलालजी पाटनी और मैं व ना थुलालजी कटारया व गुलाबचन्दजी सोनी धर्मात्मा सज्जन उन के कानों में नमोकार मंत्र पढ़ते थे नमोकार मंत्रका ध्यान स्मर्ण करते २ अत्यन्त धीरता के साथ क्षेपक पु न्या धिकारी दर्शन मूर्ति ११ बजे रात्री को देहांत हुए उसी समयमें सहधर्मीयों ने कायोतसर्ग नमस्कारका जाप शास्त्र अनुसार प्रतिज्ञा कीनी पश्चात शास्त्रा नु-सार उनकी दग्ध क्रिया की गई प्रासुक का ष्ठ चन्दन आदि से दग्ध किया हुई मरने के चार दिन पहिले अपने परि वार को बुलाकर कह दियाथा कि तुम अन्यमता दिक व लौलिक क्रिया व रुदनादिक मत करना क्योंकि मैंने तुम संपूर्णका त्याग मन बचन काय से कर दिया है किमधिकः ॥

इस प्रकार श्रीयुत धर्मात्मा क्षुल्लक-जी श्री १०५ श्रीकन्हैयालालजी महाराज के समाधि मरण की विधी शास्त्रानुसार हुई इस प्रभावना के देखने से निश्चय हो ता है कि अब भी पृथ्वी धर्मात्मा पुरुषों से खाली नहीं है मैं क्षेपक महाराज को बारम्बार नमस्कार करता हूं इस संपूर्ण क्रि या समाधि मरण की और उन के निर्विघ्न ध्यान की विधी की वा उन के कर्णों में नमोकार मंत्र आदि क्रिया संपूर्ण अत्यन्त धीरता के साथ निरालस्य हो कर भाई ध न्नीलालजी पाटनी ने कराई मैं उन को को टिश धन्यवाद देता हूं कि जो अमूल्य स मय अपना— ग्रह कार्यों से संकीर्ण कर इस परमार्थ में व्यय किया ॥

आपका धर्मा भिलाषी

फूलचंद गंगवाल पटवारी

कसबा केकड़ी जिला अजमेर

मि० जेष्ट प्र० सुदी ९ सं० १९९९

यहां की जैन सभा ने इस पत्र की संपूर्ण पंक्ति को देख कर नियमा नुसार निश्चय किया और मुद्रित कराने को उनहीं के ना म से भेजा गया ॥

जैनी भाईयो किंचित् मात्र प्रीतिलगाकर इसेभी पढियेगा

आज कल हम चारों और दृष्टि पसार देखते हैं तो सिवाय एक जैन जाति के और सब जातियें उन्नति कर रही हैं यदि हम ये विचार करें कि हमारी अवनति किन २ कारणों से हुई तो केवल ये पांच मूल कारण हमारी दृष्टि में आते हैं प्रथम— तो जैनियों में से विद्याका नाश होना जिस से अग्यानका अन्धकार हम लोगों पर छागया ॥ द्वतीय— फिजूल खर्ची और कुरीति आदिक यहां विपरीत कामोंका प्रचालित होना जिस से हम लोग दरिद्री हो कर जाति और धर्म उन्नति नहीं कर सके ॥ तृतीय— हम लोगों में एकयता और मेल मिलाप न होना -चतुर्थ- उन्नति करने और चाहने वाले तथा धनाढ्य महाशयोंका यथा शक्ति तन मन धन से जाति और धर्मोन्नति में कोशिश न करना इत्यादिक और बहुत से कारण हैं कि जिस से भले प्रकार हम लोग जाति और धर्मोन्नति नहीं कर सके, क्या आप पारसी और ईसाई और कायस्थ आदि जातियों को नहीं देखते ये लोग अपनी जात्योन्नति में तन मन धन से कोशिश कर रहे हैं परन्तु कैसे पश्चाताप और शोक की बात है कि हमारे धनाढ्य महाशय अपनी जाति और धर्मोन्नति पर टुक भी ध्यान नहीं देते और अपने धर्म की हीन अवस्था और न्यून दशा भले प्रकार जानते हैं तो भी इस की उन्नति की कोशिश नहीं करते यदि हमारे धनाढ्य और मुखिया भाई अपनी जाति के दुखपर किंचित मात्र भी ध्यान देते तो हमारी ऐसी न्यूनदशा कदापि न होती हे प्यारे जैनी भाईयों सज्जन पुरुषों और धर्मात्मा और परोपकारी महाशयो तनक आंखें खोलकर देखो और विचारो क्या अब हमारी ऐसी ही न्यूनदशा बनी रहै अवश्य इस ओर ध्यान देना चाहिये अब मैं अपने उक्त महाशयो से बारम्बार प्रार्थना करता हूं और आशा है कि अवश्य यही इस जाति को औषध दान देकर निरोग करैंगे ॥

हम अपने सच्चे दिल से श्रीयुत मुन्शी चम्पतरायजी साहब व बाबू सूर्यभानजी साहब को धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने ऐसे दुखित समय में इस जाति की सुध लिनी और इसकी उन्नति करने के वास्ते बीडा उठाया है दिनों दिन नित्य नये अनेक उपाय अपनी जात्योन्नति के अर्थ सोच रहे हैं आशा है कि और भाई भी अपनी उदारता प्रगट करके धर्म प्रचार करैंगे ॥

जैनी भाईयोंका शुभ चिन्तक
बनवारीलाल नमकगढ
जिला देहली

॥ श्रीः ॥

धर्मोपदेशनी जैनसभा धूलियागंज आगरा

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब जयजिनेंद्र. कृपाकर के इस थोड़े से लेख को अपने पत्र में जगह देकर कृतार्थ कीजिये मैं अत्यन्त हर्ष के साथ प्रकाश करताहूं कि मिती ज्येष्टबदी १९ को रात्रि के समय यहां अंन्तरंग सभा हुई जिस में भाई पूरनमलजी ने अपनी मधुर ध्वनि करिके देव का स्वरूप बहुत उत्तम रीति के साथ वर्णन किया पहिले देव का लक्षण कहकर देवपना केवल एक अर्हत मेंही सिद्ध किया दूसरे एक उत्तमता इस व्याख्यान में यह थी कि साथ के साथ अर्हंत देवकी उत्तमता और मिथ्या देवों की हीनता दिखाते चले गये और भव्यजन जो सुख के इच्छुक हैं उन को एक सर्वोत्कृष्ट अर्हतही की आराधना करना चाहिये ऐसी प्रेरणा करी बाद इस के यह दिखाया कि जैन जाति की जो न्यूनदशा इस अवसर में होरही है उसका कारण एक मिथ्यात्व है उक्त भाई साहब ने सम्पूर्ण सभा को अपने बचनरूपी अमृत करके तृप्ति किया तत्पश्चात् मैंन भाईसाहब को धन्यवाद देके विद्या के विषय में व्याख्यान दिया तो शिघ्रही सम्पूर्ण भाईयों ने पाठशाला का प्रबन्ध किया परंतु खर्च का प्रबन्ध थोड़ाहोने के कारण से अभी पाठशाला में एक अध्यापक जैनी नियत करदिया है इस पाठशाला में अभी बालबोध परीक्षातक पढ़ाई होगी दूसरे पंण्डित के नियत होने पर व्याकरण काव्यादिक के पढ़ाने का प्रबन्ध किया जायगा, इस समय इस पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या ४१ के हैं, इस समय यहां के भाईयों की धर्म में रुचि विशेष है और आशा है कि सदैव ऐसीही बनी रहेगी, मैं यहां के सम्पूर्ण सहधर्मियों को धन्यवाद देताहूं और प्रार्थना करताहूं कि जैसा पुरुषार्थ इस धर्म के चलाने में सम्पूर्ण भाई अब कररहे हैं वैसाही सदैव करते रहेंगे ॥

आप का कृपाकांक्षी
चिरंजीलाल सभापति

जैनमहाविद्यालय की सहायता

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब कृ[illegible] करके निम्न लिखित लेख को अपने अमू[illegible] पत्र में स्थानदान देकर कृतार्थ कीजिये

आप का जैनगजट आता है सो [illegible]ध्यापक गणेशीलालजी बहुत सरलता [illegible] मधुर वाणी से सर्व भाईयों को श्रवण क[illegible] है—महाशय धन्य है आप के साहस [illegible] जो जैन गजट रूपी भानु के प्रभाव से [illegible] संसार सम्बन्धी जैन जाति के अज्ञान [illegible] अन्धकार कूप में गिरते हुए जीवों [illegible] चालिया—एक परम हर्ष के समाचार [illegible]ती ज्येष्टशुक्ला ९ सं० १९५३ को [illegible]मान् पं० चुन्नीलालजी मुरादाबाद [illegible]

पहां पधारे—दूसरे दिन २ बजे श्री-मंदिरजी में सब को एकत्र कर श्रीशास्त्र रूपामृत कर भव्य जीवों को पान कराया पश्चात् जैन महाविद्यालय के विषय में व्याख्यान कहा तो उस वक्त सर्व सभा ने आल्हाद पूर्वक अपने करकमलों से चिट्ठा लिखना शुरू करादिया कुल २३०॥) वसूल हुए फिर मंगल पूर्वक सभा विसर्जन कराई—उस समय लाला थानसिंहजी ने जो बड़े रईस, परोपकारी, धर्मज्ञ वात्सल्य अंग धारक हैं विनय पूर्वक पंडितजी साहब से प्रार्थना कीकि अगर रात्रि को सर्व स्त्रियों को बुलाकर उपदेश दीजिये तो जैन का[illegible] के वास्ते कुछ और भी वृद्धि होना [illegible]गी पंडितजी साहब ने मंजूर किया रा[illegible] के ७ बजे सर्व स्त्रियों को बुलावा दिया [illegible]ा मगर सर्व स्त्रियां इकट्ठी नहीं हुईं—[illegible]न्तु जो स्त्रियां आई थीं उन को पंडित[illegible] ने अपने वचनामृत से पंचपाप के नि-[illegible] में और मनुष्य पर्याय की दुर्लभता [illegible] विद्या की उत्तमता के विषय में उ-[illegible]त दिया जो स्त्रियें उस समय मौजूद [illegible]थीं का हृदय विद्या के विषय पर मु[illegible]आ उसी वक्त निम्न लिखित स्त्रियों ने [illegible] इस भांति दिया ॥

बाबू द्वारिकाप्रसाद के घर से
ला० महावीरप्रसाद की नानीजी ने
बीबी बहालो ने
ला० धूमसिंह के घर से
१) ला० द्वारकादास के घर से
१) ला० नन्दकिशोर के घर से
१) ला० अजुध्याप्रसाद के घर से
१) ला० मथुराप्रसाद के घर से
=) बीबी हरदेया

७२=) इस प्रकार रुपये स्त्रियों के वसूल हुए ॥

कुल जोड़ ४०२॥=) आने जमा किये गये हैं ॥

जैनी भाईयों का दास माड़ेमल
निहटौर जिला बिजनौर

जल्दी संभालो

इस बात के सुने से बड़ा हर्ष प्राप्त हुवा था कि कैठल में श्री जैनमंदिर तय्यार होगया है ॥ कैठल के पास नगर कान्धला है कैठल में ढूंढकमत का बहुत जोर था इस कारण कान्धले में आजकल ३० वा ४० ढूंढकसाधु स्त्री पुरुष इस कारण एकत्र हुवे हैं कि श्री जैनमंदिर बन्द करादेवें ॥ कान्धला और कैठल और आस पास के भाई बहुत व्याकुल होरहे हैं और यह खयाल होता है कि यदि कोई विद्वान उपदेशक जल्द वहां न पहुंचा तो बहुत उपद्रव होजावेगा और जैनियों को अत्यंत पश्चाताप करना पड़ैगा ॥ कहां हैं जैनमत के विद्वान पण्डित जो पूजा उत्सव के समय बड़े बड़े धड़ल्ले से व्याख्यान देते हैं और अन्य भाईयों को व्याख्यान देने से रोकते हैं

और विद्या के मद में उनमत्त होरहे हैं अगर आप के हृदय में कुछ जैनधर्म का जोश है और अपनी विद्या से कुछ फल प्राप्ती की इच्छा है तो जैनधर्म की रक्षा में उद्यम करो और कान्धले जिला मुज-फ्फर नगर आकर उपद्रव को दूरकरो ॥ मैं बड़ी विनय के साथ महा सभा से भी प्रार्थना करताहूं कि वह भी इस ओर ध्यान देवें यह बहुत बड़ा उपकार होगा ॥

एक जैनी

विज्ञापन ॥

जो के हमने दो विद्यार्थियों को जैन-पाठशालाओं में पढ़ाने के वास्ते—तयार किया है—प्रथम का नाम लाला श्रीपत है उस्की अवस्था २२ वर्ष की है यह वि-द्यार्थी सारस्वत पूर्वार्ध तक और अमरकोष १ कान्ड तक अलावह सब प्रकार की सं-सकृत भाषा पूजाओं के पढ़ासक्ता है हि-साब भी त्रैराशिक पंचराशिक तक जानता है वेतन ११) मासिक लेवेगा—और दूसरा विद्यार्थी जसवंतराय है वेतन १०) लेगा यह प्रथम विद्यार्थी से सारस्वत किसी कद्र कम याने षट्लिंग तक पढ़ा है और सब चीजें प्रथम के बराबर जानता है अवस्था इस्की १९ वर्ष की है दोनों विद्यार्थी कर-हल जिलाअ मैनपुरी के रहनेवाले हैं—

ये जैनी भाईयों के पुत्र—सरलस्व-भाव और सीधे हैं जिन भाईयों को जरू-रतहो वोह मुझे लिखें-करहल से जिस स्थान पर बुलाये जावेंगे वहांतक का सफरखर्च प्रथम भेजदेना होगा—और उन्के ठिकने के वास्ते स्थान का प्रबंध भी करादेना होगा

चम्पतराय डिपटीमाजिस्टरेटनहर

स्थान इटावह—

ॐ श्रीजिनायनमः

श्रीमान् बाबू सूर्यभानजी जैनिनेंद्र । आप का जैनगजट नामक पत्र आया जिस के दर्शनमात्र सेही मन को अत्यंत हर्ष प्राप्तभया ॥

भाई साहिब आपने जो अपने पत्र में प्रश्न छापना प्रारम्भ किया है सो बहुत अच्छा किया यह रीति अत्यंत सुन्दर है यदि आप आज्ञा करें तो मैं ज्ञानचर्चारूप प्रश्न आप की सेवा में भेजाकरूं क्योंकि इस प्रकार प्रश्नोत्तर से शीघ्र ज्ञान की वृ-द्धि होसक्ती है ॥ हमारे मित्र भाई मदन राजने जो प्रश्न गजट के २४ अङ्क छपवाया है सो उसका उत्तर में निज बुद्ध्यानुसार लिखताहूं और तदनुसार ए प्रश्नभी करताहूं सो आप कृपा करके अप अमूल्य पत्र जैनगजट में स्थानदान दे कृतार्थ कीजियेगा ॥

उत्तर ।

भाई साहिब उन के मित्र का

सू र ज भा न व की ल है । इस रीति

१–२ } वर=श्रेष्ठ के हैं
व–र }

१—२ } नर=मनुष्य के हैं
न—र }

१—३—२ } नजर=दृष्टी के हैं
न—ज—र }

३—६ } जव=धान्य विशेष
ज—व }

३—८ } जल=पानी के हैं
ज—ल }

४—२ } भार=वमन के हैं
भा—र }

४—८ } भाल=ललाट
भा—ल }

प्रश्न

मेरे अत्यंत परोपकारी भाई का नाम नौ अक्षर का है जिस का

—२=मिलाने से दश प्राणों में से एक का नाम होता है ।

—१—२=से आराम के मायने निकलते हैं

—१=से प्रकाश का विपर्यय होता है

—२=से दुग्ध का अर्थ है ।

—२=से संग्रहन का अर्थ है

—५=से काल का त्रैय होता है

—९=निकर का अर्थ है

तो बताओ मेरे परोपकारी का नाम है ? जो कोई विद्यार्थी इस का उत्तर से पहले देगा उस को एक पुस्तक तमकाश और दूसरे नम्बर वाले को पुस्तक वेश्या चरित्र विनामूल्य और डाक व्यय के दीजावेगी ॥

आपका आज्ञाकारी

जुगलकिशोर विद्यार्थी
सिरसावा

सम्पादक

जिस प्रकार भाई मदनराजजी के प्रश्न का उत्तर लाला जुगलकिशोर ने दिया है इसही प्रकार निम्नलिखित भाईयों ने भी उत्तर लिखकर हमारे पास भेजा है परन्तु चूंकि इन भाईयों में लाला जुगलकिशोरही विद्यार्थी हैं इस कारण पारितोषिक केवल लाला जुगलकिशोरही को मिलना चाहिये बहुत से भाईयों ने इस प्रश्न का उत्तर भाई मदनराजजी के पास भी भेजा है परन्तु उन का नाम हम को मालूम नहीं हुवा यद्यपि यह प्रश्न कठिन नहीं था परन्तु इस प्रश्न का आशय वास्तव में यह था कि हमारे जैनी भाई जैनगजट को ध्यान देकर पढ़ते भी हैं या नहीं ॥

उत्तर देनेवालों के नाम ।

लाला चरंजीलाल सभापति फूलिया-गंज आगरा,

लाला बारूमल मुहर्रिर खज़ाना दि-ल्ली भीन

लाला बुद्धीलाल मोहल्ला भैरोगंज मि-वनी छपरा

लाला ठाकुरदास महीतामिम बम्बई प्रकाश आगरा

विज्ञापन महासभा

आज कल जैन शास्त्र छपने के विषय

में बहुत कोलाहल मचरहा है कोई कहता है छपने से उन्नति होगी कोई कहता है अवनतिहोगी सो विचार कर देखये तो अवनती हीका कारण मालूम होता है बहोधा होना कम कदरीका कारण है देखो मलियागिर पर्वत पर चन्दनकी बहुतायत होने से वहां के निवासी ईंधन में जला ते हैं इसीतरह अन्यमत के बडे बडे महान ग्रंथ छपने से बहुधा और कम कीमत हो ने के कारण म्लेक्षादिक मुसलमानों के हस्तगत हो कर गली कुंचों में मारे मारे फिरते हैं और रद्दीयोंमें फट फट कर पुड़िया बांधने के कारण शूद्रादिक अस्पर्शों से उनका स्पर्श होता है ऐसी ऐसी अवनती प्रत्यक्ष देखते देखते भी हमारे जैनी भाई कोई २ महाशय जैन शास्त्रोंका भी छपाना स्वीकार करते हैं सो ये विचार उन महाशयोंका बिलकुल निकृष्ट है क्योंकि हमारे जैन शास्त्रों की महिमा अगम अगाध है जिन की महिमा कहनेको इन्द्रादिक देव भी शत सहस्र जिव्हा से असमर्थ हैं तो ऐसे महान अपूर्व ग्रंथों की छपा कर अवनती करनी क्या इस पवित्र धर्मका ध्यान नहीं है अवश्यही है देखो आज कल इस पंचम काल में देव गुरु तो विद्यमान नहीं जिन के मुखारविंद से धर्म रूपी अमृतका पान करैं अब तो हे भव्यजन तुमरो जो कुछ सहारा और अवलंबन ...मै करनेका है सो इसी महान उपकारी ...की सहायता है इसीही की सहायता से धातु पाषाण की प्रति बिंब में ईश्वरताका भाव स्थापित कर देव गुरुका स्वरूप जान अपना उद्धार करते हैं और देव गुरु शास्त्र इन तीनोनकी भक्ती और विनय एकसी करते हैं तो छपे हुये ग्रंथोंका विनय कैसे हो सक्ता है इसी वास्ते संवत १९५० की साल में श्रीजैन धर्म संरक्षणी महासभा मथुरा में यह नेम होचुका है कि जैन ग्रंथ न छपाये जावें न छपे हुये खरीदे जावें न संचय किये जावें न पाठशालाओं में ...ये जावें सो इस बातका ध्यान दे... नेमको अवश्य पालना चाहिये क्योंकि इस वक्त यह बात प्रचलित हो ... तो आगे जाकर अवनती और बहुत हानी पोहचेगी और हमारे यहां लिखे हुए ग्रंथों की कमी नहीं छोटे छोटे ग्राम में जहां एक मंदिरजी और कुछ घर जैन बिरादरी के हैं वहां भी ८-१० ग्रंथ छोटे बडे कम से कम जरूर मिलेंगे और बडे बडे शहरों में तो सैकडों हजारों ग्रंथों के भंडार भरे हैं उनको कोई खोल ... भी नहीं देखता तो छपे हुये ग्रंथों को कौन पढेगा इस वास्ते भारत वर्षीय सकल जैनी भ्रातृगणों से ये प्रार्थना है कि शास्त्र छपानेका कदापि विचार न करैं ये विचार लज्जा और हानी दिखलाने वाला है इस निकृष्ट विचारको अंतःकर्णसे निकाल कर दूर कर देवो इसका नाम भी मत लेवो और महासभा भी आप लोगों की उन्नती और धर्म की रक्षा के वास्ते कटि-

बद्ध हो कर कोशिश कर रही है और जैन ग्रंथ लिखानेका भी प्रबन्ध करावेगी तथा जैपुर वगैरह स्थानो में प्रबन्ध होर्था रहा है इस वास्ते महासभा के नियमोंका पालन करना अवश्य है किमधिकम् ॥

सभापती साहबकी आज्ञानुसार
डिपटी चम्पतराय
महामंत्री

विवाह और उपदेश

सिद्धिश्री सर्वोपमान श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब जयजिनेंद्र ! कृपा करके निम्न लिखित लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान प्रदान करके मुझ दास को कृतार्थ कीजिये ॥

विदित हो कि मिती वैशाख सुदी १५ को मैं यहां से अपने देश (अटेर जिला ग्वालियर) को गयाथा कारण यहथा कि मेरा विवाहथा— यहां पर एक प्राचीन मंदिर है जिस में प्रति बिम्ब अति छवि धारक हैं— दर्शन करने से मुझे अति आनन्द प्राप्त हुआ— यहां पर एक जैन पाठशालाभी है— मैंने पाठशाला में जाकर विद्यार्थियों की परीक्षाली तो मालूम हुआ। कि पढाईका क्रम ठीक नहीं है और नियमभी ठीक नहीं है मैंने उसी वक्त नियम पढाई का बतलाया और रजिस्टर व नकशा आदि बनाने को कहा सो पं० जी साहब ने स्वीकार किया किसी आवश्यक्ता के कारण पंडितजी महाशय अपने घर को चले गये उन के आजाने पर पढाईका क्रम व नकशा आदि सब ठीक हो जावैगा— मैंने विद्यार्थियों के दिल बढाने के वास्ते कुछ पारितोषक भी दिया— फिर रात्रि को जब शास्त्रजी हुआ और सर्व भाई एकत्र हुए उस वक्त मैंने पाठशाला के प्रबन्ध के वास्ते सर्व भाईयों से प्रार्थना की तो मालूम हुआ कि यहां पर जैनियों में निर्धनता ज्यादा है और जब तक १०, रुपये महीनेका बन्दोबस्त न होगा तब तक कार्य चल नहीं सक्ता और दस रुपयेका बन्दोबस्त ऐसे शहर से होना बहुत मुश्किल है इस के लिये वहां के भाईयों ने मुझ से प्रार्थना की है कि जैन महासभा के मंत्री साहब तथा अपने मित्रों को आप लिखें कि इसकी तरफ ध्यान देवें— फिर मैंने सभा के होने के गुण दिखलाये सब भाईयों ने मेरी बात को अंगीकार किया और कहा जब आप बरात से लौटें तब सभाका बन्दोबस्त करैं मैंने कहा बहुत उत्तम बात है— बरात करहल जिला मैंनपुरी को गई थी वहां पर विवाह जैन मतानुसार हुआ हमारे देश में हमेशा से खडेवे पांडे जैन मतानुसार किया करते हैं ॥

उक्त ग्राम में एक जैन पाठशाला है मैं पाठशाला देखने को गया जिस में अनुमान ५१ विद्यार्थियों के विद्याध्ययन करते हैं जिस में माधौ सहाय मिश्र पाठक हैं

जो बडे सज्जन और लाइक हैं परन्तु प्रब- न्ध पाठशालाका ठीक नहीं है— फिर मैं- ने उक्त पाठक तथा धर्म साहय उपदेशक से कहा जो वहां पर उस समय उपस्थित थे कि जहां पर ऐसे २ विद्वान होवैं और जैन पाठशालाका प्रबन्ध ठीक न होवै तो फिर और २ जगह कैसे ठीक हो सक्ता है तब उन्होंने कहा कि अब हो जावैगा फिर दूसरे दिन सभा हुई उस सभा में मैं भी गया वहां पर अनुमान ५० भाईयों के एकत्र थे कुछ भाईयों ने मुझे आज्ञादी कि तुम कुछ उपदेश दो तब मैंने विद्या के विषय में व्याख्यान दिया— फिर मान के ऊपर घटाया मान यहां पर जैनियों में ऐ- सा बढा हुआ है कि अन्य किसी नग्र में ऐसा न होगा और इसी के कारण यहां के भाईयों के परिणाम क्लेशित रहते हैं और आपस में अनैक्यता रहती है और धर्म में रुचि नहीं है जब मैंने मान के वि षय में कहा तो सबने मंजूर किया और कहा कि इस को अबकी सभा में निर्णय करेंगे— करहल ग्राम में बडा बखेडा पडा हुआ है ऐसा किसी स्थान में नहीं है के- वल नाम मात्र के लिये पाठशाला भी है सभा भी है पंडित भी हैं लेकिन सब मानी हैं ॥ बडे आश्चर्य की बात है कि यहां पर ऐसे २ पंडित विद्वान मौजूद हैं जैसे कि पंडित प्यारेलालजी हैं फिर उस स्था- न पर मान और झगडा है मैं आशा कर ता हूं कि अवश्यही करहल निवासी मान और झगडे को अपने ग्राम से दूर करके ज गत में नामको हासिल करैंगे फिर वहां से रुखसत होकर अपने ग्राम में आया यहां पर सभाका बन्दोबस्त किया ता० १६ मई को रात्रि के समय सभा हुई जिस में अनुमान ५० भाईयों के एकत्र हुए मैंने प्रथम मंगला चरण पढ कर सभा के गुण दिखलाये फिर विद्याका लाभ दिखलाया गया फिर धर्मका स्वरूप वर्णन किया सर्व भाई अति प्रफुल्लित हुए और सभा नियत की गई जिसका नाम मिथ्यात्व विनाशि- नी सभा अटेर रक्खागया और हर चतुर्द शी को सभा हुआ करैगी ॥ नीचे लिखे महाशयों को सभाका पद दियागया ॥

सभापति— ला० मंगल प्रसाद

मन्त्री ला० अजुध्या प्रसाद संघई

उपमंत्री— ला० मनीराम हीरालाल खरौआ

कोषाध्यक्ष— ला० बिहारीलाल संघई

और बाकी ३० मेम्बर सभा के नि- यत किये गये और मैंने प्रबन्ध करनेका वादा चिट्ठीयों के द्वारा किया और अनु- मान १० भाईयों ने स्वाध्याय करने की आखडीली और कुछ भाईयों ने दर्शनों की प्रतिज्ञाली— फिर मैंने होलीका निषेध किया उसी समय चन्द भाईयों ने होली खेलनेका त्याग किया और कहा हम हर गिज न खेलेंगें और मंदिरजी में विधान आदि करैंगे ॥

फिर मैंने जैनगजट आदि पत्रों के लाभ दिखाकर पत्र लेनेका उत्साह बढाया

पत्रों के लेने तथा सभा के खर्च के वास्ते यह प्रबन्ध किया कि फी आदमी आध आना महावारी देवें इस तरह पर ११, रुपये महीनेका बन्दोबस्त होगया जिस में से अखबार और चिठ्ठी पत्री आदिका खर्च चलता रहैगा बाद को सभा विसर्जनहुई

तारीख १८ मई को मैं अटेर से रवाना होगया क्योंकि मेरी छुट्टी खतम होचुकी थी ता० १९ को मैं कानपुर पहुंचा वहां की जैन पाठशाला को देखकर चित्त अति प्रफुल्लित भया इस पाठशाला के प्रबन्ध कर्ता भली भांति ध्यान देते हैं और विद्यार्थी भी अति प्रवीण हैं संस्कृत अच्छी तरह बोलते हैं मैंने १, रुपये की मिठाई लड़कों को बांटी— इस पाठशाला के विद्यार्थीयों के नामका रजिस्टर नहीं है सो अवश्य होना चाहिये फिर मैं इलाहाबाद पहुंचा ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
सालिगराम उपमंत्री दिगम्बर
जैन पाठशाला प्रयाग

मोहब्बतपुरके मंदिरजीकीसाहयता

श्रीमान परोपकारी बाबू सूर्यभानजी साहब जौम्य निहटौर जिला बिजनौर के सकल जैनी पंचनका सविनय जैजिनेंद्र वंचना आगे यह समाचार जैनगजट में छपा दीजियेगा ॥

यहां के भाईयों ने श्रीजैन मंदिर मोहब्बतपुर डाकखाना इसायन जिलाअलीगढ़ की सहायतार्थ जो नीचे लिखा हुआ रुपया प्रदान किया है लाला कुंजबिहारी लाल १, लाला लछमीमल दीपचन्द २, ला० धानसिंह २, मुन्शी दीवानसिंह २, ला० कुंदेमल २, लाला नन्दकिशोर १, लाला उमरावसिंह १, पं० गनेशीलाल अध्यापक जैन पाठशाला १, लाला केवलराम— १, लाला मांडामल १, मुसम्मात बीबो लाला महावीर प्रसाद की नानी— इस भांति कुल १६, रुपया हुए यह रुपये हम ने अपने नाम के वास्ते जैन गजट में प्रकाशित नहीं कराये हैं बल्कि इस मजमून को पढ़ कर अन्य भाईयोंका उत्साह उक्त मंदिरजी की सहायता देने में बढ़ और यदि अन्य भाई भी सहायता देंगे तो वह मंदिर चिरस्थायी होजावैगा और वहां के भव्यजन धर्म साधन करैंगे रुपया देने वाले भाईयोंका महान पुन्य बन्ध होगा और जब तक धर्म यतन रहैगा तब तक पुन्य बन्ध होताही रहैगा ॥

उत्सव इन्दौर

मैं किसी कार्य वशात मारवाड़ को गयाथा लौटते समय इन्दौर में विमानजी के उत्सवका प्रारम्भ हुआ और उसी दिन में व्याख्यान हुए विद्योन्नति आत्मोन्नति बाल विवाह आदि के फायदे और नुकसान भली भांति दिखलाये गये अनुमान १५०० भाईयों के एकत्र थे इसका पूर्ण रूप लिखदेना इन्दौर निवासी सज्जन भाईयोंका कार्य है ॥

बालमुकन्द कामपटी— जिलानागपुर

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेजी महीनेकी १–८–१६–२४ता०

को

बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिला सहारनपुर से

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष | ता० १ जोलाई ....सन १८९६ | अङ्क २८

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

मूल्य प्राप्ति स्वीकार

(२७ अंक से आगे)

१) ला० मंगलमल पोथाना जिला गुड़गांवां
१) श्रावक पंचायती श्रीजैन मंदिर आगौन
१) श्रावक पंचायती श्रीजैन मंदिर छप-रौली जिला मेरठ
१) लाला सेढ़मल सिखरचन्द मारवाड़ी कलकत्ता
१) पंचायती श्रीजैन मन्दिर कामपटी जि. नागपुर
१) ला० रामचन्द किशोरीलाल आरवी जिला वर्धा
१) ला० विमलप्रसाद गुमाश्ता कमसरियट जतौघ जिला शिमला
१) श्रीजैन मंदिर ईश्वरदास करौली जिला मैनपुरी
१) श्रीजैन मन्दिर पालम जिला देहली
१) लाला तेजराम मक्खनमल निमारा जिला जैपुर
१) श्रावक पंचायती श्रीजैन मंदिर डीग
१) श्रीजैन मंदिर सांगानेर जिला जैपुर
१) सेठ शम्भूनाथ मंदसोर जिला नीमच
१) श्रीजैन मंदिर चन्देरी जिला ग्वालियर
१) सेठ हंसराज हमीरमल पिरावा जिला इन्दौर
१) श्रीजैन मंदिर पिरावा जिला इन्दौर
१) सैक्रेटरी जैनसभा पिरावा जिला इन्दौर
१) श्रीजैन मंदिर अलावडा राज अलवर
१) लाला पन्नालाल कन्छेदीलाल गढ़ाकोटा
१) श्रीजैन मंदिर लावड़ जिला मथुरा
१) श्रीजैन मंदिर अटेर जिला ग्वालियर
१) श्रीजैन मंदिर दिलवाड़ा जिला उदैपुर
१) लाला काशीराम जौहरीलाल विमसरी जिला आगर
१) लाला लछमनप्रसादजी रूपचन्दजी न-खलेड़ा जिला आगर
१) सेठ जुगलजी जड़ावचन्दजी नलखेड़ा जिला आगर
१) लाला रूपालीराम सुन्दरलाल कुर्रा जि. आगरा
१) श्रीजैन मंदिर करनावल जिला मेरठ
१) श्रीजैन मंदिर बियावर जिला अजमेर
१) लाला गंगाधर चिरंजीलाल भरतपुर
१) लाला धनीराम बिहारीलाल विसाया जिला मथुरा
१) बाबू हुब्बलाल कासगंज जिला एटा
१) लाला मौनीलाल महाराजपुर जिला सागर
१) लाला भगवानलाल गिरदावर छपारू झालावाड़
१) लाला उग्रसेन रईस सहारनपुर
१) लाला जगन्नाथ जौहरी देहलीवाला
१) श्रीजैन मंदिर मारफत छज्जुमल बनार-सीदास मंसूरपुर जिला मुजफ्फरनगर
१) लाला सौदागरमल सैक्रैटरी जैन सभा नसीराबाद
१) लालचन्द सैक्रैटरी छिन्दवाड़ा
१) श्रीजैन मंदिर तिर्वा जिला फतहगढ़
१) लाला नानकचन्द खजानची मल्लापुर
१) लाला मनीराम कौड़ियागंज जिला अलीगढ़

१) लाला मोहरीमल पटवारी वसीखांजादा

१) लाला छोटेलाल स्टाम्प फरोस कोसी जिला मथुरा

१) लाला फूलचन्द पटवारी जैथाना अजमेर

१) लाला जादौराय शिवचरनदास रईस इलाहाबाद

१) आबाजी गान्धी नागपुर

१) लाला जीवतलाल पटवारी कीरतपुर जिला बुलन्दशहर

१) श्रीजैन मंदिर मारफत रामजीवन रामगढ़

१) लाला रामचन्दर परिवार रीवाँह जिला सतना

१) लाला गोविन्दराम श्रावक सीकर

१) लाला हीरालाल मुन्नीलाल श्रावक छिबरामऊ जिला फतहगढ़

१) दिगम्बर जैन सभा बम्बई

१) लाला माणिकचन्द पानाचन्द बम्बई

१) लाला गोपालदास बरैया बम्बई

१) लाला धन्नालाल ऋषभदासजी बम्बई

१) लाला भूरामल पदमचन्द बम्बई

१) लाला हजारीमल रूपचन्द बम्बई

१) लाला भूरेलाल देवडिया करापुर जिला सागर

१) श्रावक पंचान पुनहाना जिला गुडगांवां

१) बाबू मुन्नामल कलकत्ता

१) बाबू रामजीवन कलकत्ता

१) बाबू अमोलकचन्द कलकत्ता

१) श्रीजैन मंदिर फतहपुर जिला जैपुर

॥ शुभोदय का प्रारंभ ॥

हे देशोपकारक, श्रीजिनधर्मधारक, सद्गुणविस्तारक, जात्योन्नतिकारक सकल सामाजिकसभ्याः—

अब वो समय उपस्थितहुवा है जिसमें जैनकुलोन्नति के सकल मनोर्थ सिद्ध होंगे क्योंकि चारों तरफ से अब अनेक शुभ खबरें सुनाई देरही हैं कहीं फिजूल खर्चीका परित्याग है कहीं विद्या प्रचार में महानुराग है कहीं बाल विवाहका रोकहै कहीं एकत्रता बढानेका शौक है कहीं अपार परोपकारकी धार जिनाम्नायी औषधागार खुल रहे हैं कहीं व्याख्यानों को श्रवण कर धन्यवाद बोल रहे हैं इत्यादि अनेक शुभ कार्यों में हमारे भ्रातृगण जैनियों को अत्यन्त उत्साहित देख अब पूर्ण विश्वास होता है कि इस जैन कुलमें अज्ञानांधकार नष्ट करने को ज्ञानरूप प्रभाकरनें अपनी प्रभाका प्रभाव प्रगट करना प्रारम्भ कर दिया है इत्यादि अनेक शुभ खबरों को प्रति साप्ताहिक प्रकाश करने वाला जैन गजट नामक अति रमणीय पत्र जो देवबन्द जिला सहारनपुर से प्रकाशित होता है शुभ मिती द्वितीय जेष्ठ कृष्णा २ गुरुवार विक्रमाब्द १९५३ को सवाई जयपुर नगर में अति महती श्रीमान् बडे मंदिरजी की सभा में जो प्रति गुरुवार को यहा के चार पञ्चायती मंदिरों में प्रकाशित हुवा करती है सुनायागया उक्त पत्र २३ वें अंक के ५ वें पृष्ट में जो श्रीमान सी० आई

ई० सितारेहिंद जैन महासभाध्यक्ष श्रीयुत सेठ सहाब लक्ष्मणदासजी मथुरा वालों के कुंवर द्वारकादासजी के विवाहोत्सवका वर्णन जो मुद्रित हुवा है जिस में उक्त सेठ सहाब नें पुत्र के विवाहोत्सव में फुलवाडी वगैरः जिनका उन शहरों में अत्यन्त रिवाज हो रहा है अत्यन्त व्यर्थव्यय के उत्पति स्थान जान कतई बन्द कर दिया यह परम पुनीत अति हर्ष के समाचार सुन चारों तरफ से संपूर्ण सभा सदों के मुख से एक साथ अनेकानेक धन्यवादों की ध्वनी मुखारविन्द से प्रगट हुई और संपूर्ण सभ्य पुरुषों ने अनेक प्रकार युक्तियों से सिद्धांत कर लिया कि ऐसे श्रावक वंशावतंस जैन कुल भूषण श्रेष्ट पुरुप जब ऐसी कुरीतिका निवारण करेंगे तब इस जैनकुल में कुरीतियोंका नाम लेश मात्र भी नरहैगा— क्योंकि श्रेष्ट पुरुषोंका किया हुवा नियमही सबको मन्तव्य होता है सोही नीतिभाग में वर्णन किया है कि ॥ श्लोक ॥ यद्यदाचरति श्रेष्ट स्ततदेवे तरोजनः॥ सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते अर्थात जब जो आचरण श्रेष्ट पुरुष करते हैं तब उसही को इतर जन भी करते हैं श्रेष्ट पुरुष जो प्रमाण करते हैं इतर पुरुष भी वैसाही वर्ताव करते हैं- कथनका प्रयोजन यह है— हमारे जैन कुल में जो वर्तमान कालमें मुख्य माने गये हैं उन सब में उक्त सेठ सहाब अग्रगण्य हैं इसही लिये जैन महासभा के सभापति मानेगये हैं जब ऐसे पूज्य पुरुषों ने फुलवाडी वगैरह कुरीतियोंका परित्याग कर दिया तो उक्त कुरीतियोंका परित्याग मानो— सारे जैनकुल में होगया अब अवश्य हर एक शहर और जिल्लों के जैन समाजों के श्रेष्ट पुरुषभी ऐसी कुरीतियों को दूर कर अपना २ उत्साह प्रगट करेंगे जब हमारे सारे सामाजिक पुरुषभी क्रम से एतादृश कुरीतियों को बन्द करने के लिये अग्रेसर बनैगें और खुद नमूना बनकर योग्य कार्यों की खूबी और खुशी दिखलावैंगे तो दृढ़ाशा है कि जैनकुल की उन्नति होने में किसी प्रकारका संशयही न रहैगा— अत एव यहां जयपुर शहर की जैन सभा में भी आतिशबाजी वगैरह बन्द करनेका पूरा २ विचार कर लिया है— इन सब कुरीतियों के बन्द करने में जो धर्म लाभ होगा उस के प्रथम भाग को ग्रहण करने वाले श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सी० आई० ई० को समझना चाहिये ॥ क्योंकि प्रतिष्टित पुरुषों में सब से पहिले उक्त कुरीतीका निराकरण सेठ सहाब ने ही किया है इस लिये यहां की महती सभा से उक्त सेठ साहब को कोटिशः धन्यवाद देके श्रीजिनेन्द्रचन्द आनन्दकंद अर्हंत परमात्मा को पुनः पुनः प्रणाम कर प्रार्थना कीईजाती है कि ऐसे आत्योन्नति धर्मोन्नति कुलोन्नति देशोन्नति विद्योन्नति करने वालोंका मन उक्त शुभ कार्यों में सदा दृढ रक्खे शुभम् ॥

ह० पञ्चान जैनसभा जयपुर
बकलम जमनालाल गोदीका
जयपुर

रंडी का नाच (वेश्यानृत्य)

बहुधा लेख रंडीकी बुराई में छपे और हर एक जगह उपदेश और व्याख्यान इस विषय में होते हैं परंतु लोगों पर इस का कुछ भी असर नहीं होता है और ऐसे बेहया व वेशर्मेव न रहे हैं कि वर्णन नहीं होसक्ता यद्यपि रंडी के नाचकी बुराइयोंको मानलेने में किसी को किंचित मात्र भी इनकार नहीं होसक्ता है किन्तु जो कुछ बुराइये और अत्यन्त हानियें रंडी के नाच कराने या उस में शामिल होने के रिवाज मे सिद्ध किये गये हैं उनमें से किसी बात का भी कोई उत्तर नहीं देसक्ता है और अब लोग प्रत्यक्ष जानगये हैं कि इस रिवाज के कारण हमारी कौम की इज्जत और हमारी जातिकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई है और जब तक हमारी जाति से वेश्या का नृत्य दूर न होगा तब तक भले मानुष कहलाना और धर्म उन्नति चाहने वालों और जाति के सत्य हितैशियों के सामने मुंह दिखलाना और लंबी नाक लेकर बैठना कदापि शोभाय मान नहीं है परन्तु नहीं मालूम यह लोग कैसे इस कुरीति के जाल में फसे हुए हैं और कैसे वेश्याके प्रेमी होरहे हैं कि बहुधा नगरोंमें व्यर्थ व्ययकी बुराईयों के चित्त में बिठलाने और उपदेशकों के उपदेशादि से व्यर्थ व्ययके प्रबन्ध भी किये गये हैं तौ उन में भी (जहां तक कि मैंने देखा है) सिवाय कस्बे नकुड़ के एक रंडी का नृत्य कराना रखही लिया है क्या यह कुछ बुद्धिवानी है उनको यह मालूम नहीं कि आग की एक चिनगारी भी समस्त जगतको भस्म करसक्ती है यदि उनको यह मालूम होता तो एक रंडी का नृत्य कराना भी कदापि न रखते हमको ऐसे बुद्धिवान लोगों की बुद्धिपर बडा आश्चर्य प्राप्तिहोता है कि जिन्होने रंडी का नाच जिस के बराबर संसारमें कोई परमार्थिक और लौकिक बुराइयोंकोपैदा करनेवाला नहीं होसक्ता है जारी रक्खा है ऐसी दशा देखकर हम निरास हुए जाते हैं कि जाति का क्योंकर सुधार होगा और क्योंकर हमारी जाति उन्नतिकी उच्च श्रेणी पर पांव रक्खेगी ओहो नहिं२ साहब उन्हों ने इस हेतु से रक्खा होगा कि धीरे२ इसको भी उड़ादेवेंगे परंतु यह उसी दशामें होसक्ता है कि जब हमारी जाति के मुखिया और प्रतिष्ठित लोग तो इसको अत्यन्त बुरा और पापकी खान समझें।।साहब दिलमें तो बो-ह समझते हैं परन्तु क्या करैं बिरादरी को रस्म में शामिल होना पड़ता है वाह२ यही तो अनर्थ है किसी के चित्तकी कोसी को क्योंकर खबरहो सक्ती है जब तक उसके बाह्य आचारण पर कोई चिन्ह न पायाजावै पस हमारी जाति के मुखिया और प्रतिष्ठित महाशयों को अत्यन्त उचित है कि

जहां तक हो वो अपने बाह्य आचरण से इस कार्य को अत्यन्त बुरा और निकृष्ट प्रत्यक्ष जता देवें और लोगों को इस खराब रस्म से बचाने के कारण हों—हायर हम महाशोक सागर में डूबे जाते हैं और हमको लाचार यह कहना पड़ता है कि हमारी जाति के मुखिया और प्रतिष्टित पुरुष अत्यन्त उपयोगी होकर बैश्याके नृत्यको घूर२ कर देखतेहैं और उसके साथ हास्य कुतूहल आदि करने में किंचित् मात्र लज्जाय मान नहीं होते और आगामी सन्तान को पूरी बदमाशी और व्यभिचार सिखाने के कारण होतेहै नहीं उनको उचित है कि कदापि इस कार्य्यमें सम्मिलित नहों और लोग वाग यदि उनको उल्टा शर्मिंदा करैं कि अमुक महाशय किसी की नृत्य सभा में सम्मिलित नहीं होते परन्तु उनको इस बात पर कुछ ध्यान न देना चाहिये और वेश्या नृत्य के देखनेका त्याग करदेना चाहिये क्योंकि कोई भी बुद्धिवान पुरुष इस बात पर दबाव नहीं देसक्ता और मूर्खों के कहने पर ध्यान देना मूर्खताहै ॥

सो हमारी जाति में बहुधा महाशयों ने बैश्या नृत्य के देखने का त्याग कर दिया है और दूसरो के लिये प्रेरक बने हैं जैसा कि श्रीमान् बाबू सूर्यभानजी वकील एडीटर जैन गजट ने रंडी के नाच का त्याग कर रक्खा है और मुझ पापीको भी अपने सद उपदेश से दो तीन वर्ष से वेश्या नृत्य रूपी चांडाल से बचालियाहै और मैंने अपने यहां प्रेरणा कर के पंडित बलवन्त सिंह महलका निवासी तथा लाला कुन्दनलालजी साहब (जो कि इस दास के पिता हैं) व लाला हीरालालजी साहब भगत नानौता निवासियों से वेश्या नृत्यका त्याग करादिया है और लाला सुमतप्रसादजी मेनेजर जैन हित उपदेशक जो कि बाबू सूर्यभानजी साहब के परम मित्र हैं और लाला गुदडमलजी साहब बल्लभगढ जिला दहली ने वेश्या नृत्यका त्याग कर दिया है और लाला दीपचन्दजी साहब उपमंत्री जैन सभा शमला जो कि बडेउपकारी और सज्जन पुरुष हैं [जिन्हों ने जैनकालिजकी बाबत जब देखा कि इस वर्ष से नाना प्रकारकी कोशिशें होंने पर भी हमारे जैनी धनाढ्य महाशयों ने इस ओर किंचित् मात्र ध्यान नहीं दिया और अगुवानी होना हमारे गरीब भाइयों केही ऊपर छोड़ दिया हैं तो उनकी जातिहितेच्छुकता और हमारे लिये जैन महा विद्यालय की आवश्यता उनको इस बात की प्रेरक हुई कि वो शमले में द्वारे द्वारे की भिक्षा मांगकर जैन महा विद्यालय के लिये चन्दा जमा करैं] उन्हों ने वेश्या नृत्यका त्यागकर रक्खाहै उनके विवाह में उनकी सुसराल से वेश्या नृत्यकी अत्यन्त प्रेरणा की गई तौ भी उन्हों ने वेश्या नृत्य नहीं कराया धन्य है ऐसे पुरुषोंको कि जो जात्योन्नति के लिये अपने ऊपर नाना प्रकार की आपत्तियां उठातेहैं

अब हम को आशा है कि हमारे स्वपरोपकारी भाई वेश्या नृत्यका अवश्यही त्याग करेंगें और औरोंको त्याग करने की प्रेरणा करेंगें— और जो २ भाई वेश्या नृत्यका त्याग करें वो इस दास को सूचित करते रहैं मैंने वेश्या नृत्य के त्यागी भाईयों का एक रजिस्टर बनाया है उस में उन भाईयों के नाम दर्ज करलिये जाया करेंगें और जैन गजट में छपवाने को भेज दिये जाया करेंगें ॥

जैनी भाईयोंका शुभ चिन्तक
मंगतराय मंत्री जैन सभा
नानौता जिला साहरनपुर

सम्पादक महाशय जैन गजट

निम्न लिखित चिट्ठी हमारे पास नकुड़ से आई है कृपा करके स्थानदान दीजिये जयजिनेंद्र के पश्चात निवेदन यह है कि ७ अमल को पं० धर्मसहायजी उपदेशक तथा हकीम उग्रसेनजी मंत्री जैन महासभा यहां पर पधारे और लाला दयाचन्दजी मुखिया उपदेशक फन्ड के मकान पर टिके और तत्काल सभाका बन्दोबस्त किया गया दो बजे श्रीमंदिरजी में सभा हुई अनुमान ४५ भाईयों के एकत्र हुए उक्त पं० महाशय ने पर उपकारता और ऐक्यता पर अति सुन्दर मधुर वाणी से व्याख्यान दिया (यहां पर भाईयों में मत भेद ज्यादा है) और सभा नियत करने को कहा और यह भी प्रार्थना की कि सर्व भाई मिल कर एक हो जावो— सब भाईयों ने संमति करके अगले दिन सभाका होना नियत किया— और नियत समय पर सभा हुई जिस में अनुमान ५० भाईयों के एकत्र हुए शास्त्रजी बचने के पश्चात उक्त पंडितजी ने मोक्ष मार्ग के स्वरूप पर व्याख्यान कहा और मैंने प्रकाश जीव के अपार सुख प्राप्त करनेका यत्न बतलाया तत्पश्चात हकीमजी ने व्यर्थ व्ययके नुकसान और सभा के फायदों पर व्याख्यान कहा और मत भेद दूर करने पर बड़ा जोर दिया चुनाचे सभा स्थापित होगई माम में दो बार हुआ करेगी सभा के प्रबन्ध कर्ता इस प्रकार नियत हुए ॥

सभापति— लाला दयाचन्दजी
उपसभापति— लाला नागरमलजी
मंत्री— समकतलालजी
उपमंत्री— मित्तर सैनजी
कोषाध्यक्ष— ज्ञानचन्दजी

और बाकी सब भाईयों ने सभासद होना स्वीकार किया आपसका मत भेद अगली सभा में दूर होजावैगा वास्तव में उपदेशक फन्ड के नियत होने से बड़ा भारी लाभ पहुंचाहै और सच तो यहहै कि इस ने जादूकासा असर जाति पर किया है

द० लाला दयाचन्द सभापति
द० समकतलाल मंत्री

सर्व नकु[illegible]
प्रार्थना है कि [illegible]
करते हैं वैसे [illegible]

करके हम को सूचित करेंगे— हे भाईयों यह वही नकुड़ है जहां से जैन जातिका सूर्य प्रकाशवान हुआ है और यहीं के भाईयों ने सबसे पहिले व्यर्थ व्ययका नाश किया और इसी जगह से उपदेशक फन्डकी नीव जमी और जैन कालिज के वास्ते २७००, रुपया जमा हुआ है— हम यहां के भाईयो को जिस कदर धन्यवाद देवें थोड़ा है ॥

चम्पतराय मंत्री
उपदेशक फन्ड

तीतरोन जिला सहारनपुर

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब जयजिनेंद्र, आप के कई महीने से यहां समाचार पत्र आते हैं और आप उन के जवाब भी मांगते हैं लेकिन अफसोस यहां के भाईयों पराकि अब तक आप के किसी पत्रका जवाब नहीं दिया मैं इस नग्र के जैनी भाईयोंका साफ २ वृतान्त लिखते डरता हूं क्योंकि हमारे भाई हम पर नाराज न हो जावें परन्तु बगैर लिखे हुए कार्य की सिद्धि नहीं होती इस लिये कुछ थोडासा हाल अवश्य ही लिखना पड़ा यहां पर बहुत भाई धर्म से वाकिफ हैं वोह मंदिरजी में दर्शन करने को नहीं आते और अपने बालकों को हिन्दी नहीं सिखाते हैं जिस से वोह अपने शास्त्रों की स्वाध्याय नहीं कर सके और बिना स्वध्याय किये धर्म में रुचि क्यों कर होसक्ती है— अनुमान डेढ़साल के व्यतीत हुआ कि इतवार के रोज पूजन प्रक्षालन नहीं होताथा यहां परके ई भाई आर्य्य होगये हैं— जैन भाईयों के १० घर हैं कुल स्त्री पुरुष लडके गिनती में ५० के अनुमान हैं इन सब बातों का कारण सिर्फ एक आपस की फूट है जब तक यह फूट इस नग्र से न हटैगी तब तक किसी बातका प्रबन्ध न होगा— सो मैं अपने नग्र निवासी भाईयों से प्रार्थना करता हूं कि अवश्य ही इस फूट को जुदा करें और धर्म कार्यों में प्रवर्तें जिस में यह लोक और पर लोक दोनों सुधरें ॥ और आज कल हमारी जाति में हुका बहुत ज्यादा प्रचलित हो रहा है जिस के सबब से हमारा धर्म नष्ट हुआ जाता है हुके में बुराईयां तो बहुत हैं लेकिन यहां पर कुछ थोड़ी सी प्रगट करता हूं— जो भाई हुका पीते हैं (१) वोह सब की झूठन खाते हैं (२) सुबहका वक्त पूजन पाठका होता है तो इस को छोड कर सुबह अग्नि की फिकर होती है (३) इस के पानी में इस कदर बदबू हो जाती है कि पास बैठने वाले उस से घृणा करते हैं और वोह पानी जिस जगह डाला जाता है वहां सब जीव मरजाते हैं और भी बहुत से पाप हैं इस लिये इस हुके को छोडना चाहिये ॥ (दोहा) स्वाद नहीं स्वारथ नहीं परमारथ नाहिं कोय । क्यों रपटे जगमूढ़को बड़ा अचंभा मोय ॥

जैनी भाईयोंका दास
उमरावसिंह तीतरोन
जिला सहारनपुर

अविद्याका प्रकाश और अज्ञान

तिमिरकी आधिक्यता

वाह वाह क्या प्रकाश है कि जिस से अन्धकार दिनदूना रात सवाया बढ़ता जाता है जहां प्रकाश होताहै वहां अन्धकार दूर हो जाता है परन्तु यह प्रकाश अन्धकार की आधिक्यताका सहकारी है उसी तरह जिस तरह आज कल के जैनियों को मिथ्यात्व नर्क निगोद में लेजाने का सहकारी होता है जो अविद्या के वश में हैं उन पर तो क्या आश्चर्य है लेकिन जो जो लोग विद्वान हैं और शास्त्र श्रवण करते हैं उन के अनुचित कार्य करने से अत्यन्त शोक होता है श्री गुरु के वचनानुसार आचार्यों ने भव्य जीवनके निमित्त अनेक दृष्टान्तों से और अनेक शास्त्रों के व्याख्यानों से जिन का कि भाषाअर्थ दोहा चौपाईयों में रचकर समझाया है यहां तक कि हित अहित को प्रत्यक्ष दिखला दिया तिसपर भी हमारे जैनी भाईयों की समझ कहीं२ बहुतही गलती कर जाती है— जैनी भाईयों में एक रसम मूंठकी विवाहके समय होती है जिस में लड़के और लड़की वाला अपनी२ श्रद्धानुसार श्री मन्दिरजी के लिये कुछ द्रव्य देते हैं वह द्रव्य निकटवर्ती मन्दिरजी के भंडार में जमा किया जाताहै और फिर पंच भाईयों की सम्मति से मन्दिरजी के उपकरण आदि शुभकार्यों में खर्च किया जाता है मैं बड़े शोक के साथ प्रकाशित करता हूं कि मेरे देखते२ इस मूंठ सम्बन्धी द्रव्य का प्रचार बदल गया यानी इस मन्दिरजी के रुपये को बहुधा आतृजन अपने पासही रखलेते हैं उनको शायद श्री गुरु के उस वचन की प्रतीति में शंका है कि यह धन कदाचित् ग्रहण नहीं करना चाहिये हेभाईयो जागो किस अज्ञान रूपी नीदमें अचेत पड़े सोरहेहो इस मूंठ (मन्दिरजी) के रुपये को शास्त्र जी लिखवानेमें शोधने शुधवाने में मन्दिर जी के उपकरण आदि बनवाने में— विद्या पढ़ने पढ़ाने में खर्च करना चाहिये जिससे विद्याका प्रकाश हो और धर्मकी उन्नति हो धर्मकी परिपाटी इस पंचमकाल में केवल शास्त्र द्वारा ही चलसक्ती है—देखिये जैन महासभा ने जाति उन्नति और धर्मोन्नति के लिये कितनी कोशिशकी है औरकररही है [illegible] न समझिये कि हमारे एक के करने से क्या होगा नहीं२ पहिले एक ही करता है फिर बहुत से आदमी अपने आप उसमें शामिल होजाते हैं इस पंचमकाल में धर्म रूपी शुभकार्य करने की बड़ी असमर्थता है और जो कोई किया भी चाहै तो उसमें औगुण गृहण कर के उचाट करदेने वाले अनेक जन पैदा हो जाते हैं अगर शुभ कार्य करने में असमर्थ हो तो अशुभ के करने से तो बचो—मेरी समझ में आज कल अशुभ कार्य से बचना ही एक उपदेश शुभ है [illegible] फंट म [illegible] नहीं२

वोह साबित है उसे तो मत गिरनेदो—भला आपने यह क्या अनाचार निकाला है कि मन्दिरजी का रुपया पास ही रखले ना शुरू किया—धर्म के मामले में सहायता देना तो दूर किनारे और उल्टा मन्दिरजी का रुपया लेकर अपने काम में लाना क्या महा अनर्थ नहीं है—मेरी समझ में तो इस से भारी और कौनसा पाप होगा जो इस के बराबर समझा जावे मान बड़ाई के वशी भूत होकर पहले ही इतना रुपया मूंठ का मन्दिरजी में देने का क्यों वायदाकरलेते हैं जिसका पीछे पास से जाना बुरा मालूम होता है पहिले ही क्यों नहीं समझ बूझ लेते (मानिन्द इस दोहे के)॥

दोहा, बिना विचारे जोकरे सो पाछे पछताय।काम बिगाड़े आपनो जगमें होत हसाय॥

जिस से पीछे पछताना पड़े और सन्सार में बुराई पैदाहो—जब सैकड़ों रुपया विवाह आदि में खर्च हो जाता है तो क्या इस मूंठ के रुपये से घाटा भर जाता है—यह केवल न देने के विचार से रुपया रह जाता है यदि देनाचाहें तो बहुत जल्दी बन्दोबस्त कर सक्ते हैं—जैसे आप किसी घर के कार्य को करना चाहेंगे उसे हजार तरह से करेंगे और जब तक उसे न कर लेंगे तब तक चैन नहीं आवैगा इसी तरह से भाईयों एक की जगह पौन खाओ परंतु जिन२ साहिबों के पास मन्दिरजीकी मूंठका रुपया जमा है उसे जिस कदर जल्द हो सके मन्दिरजी के भंडार में जहां उनका जी चाहै वहां जमाकरा दो ताकि इस भाव सम्बन्धी लोक लाज व जगहंसाई से बचें और शास्त्रानुसार परभव सम्बन्धी नर्क निगोद के दुःखों से बचें और उनका व्यवहार और परमार्थ दोनों साधें॥

जैनी भाईयों का शुभ चिन्तक

एकजैनी

सत्य धर्म

श्री मान् बाबू सूर्यभानजी साहिब जय जिनेन्द्र कृपाकर के निम्न लिखित लेखको अपने अमूल्य पत्रमें स्थान दान देकर कृतार्थ की जियेगा आपका जैन गज़ट बांचकर हृदयको जिस कदर आनन्द प्राप्त होता है वोह लिखने में नहीं आता॥

इस सन्सार में आज कल बहुत से मनुष्य इस सत्य धर्म (जैन मत) से परान्मुख हो रहे हैं क्योंकि अविद्या के प्रभाव से सत्य धर्म को नहीं जानते हैं सो हमारी जाति में अविद्या रूपी अन्धकार बहुत फैला हुआ है अविद्या के अन्धेरे में फंसकर अपने सत्य धर्म को खोबैठे हैं हेभाइयो विद्या के प्रकाश से अविद्या के अन्धेरे को दूर कर अपने सत्य धर्म को ढूंढो और ज्ञानकी वृद्धि करो क्योंकि यह ज्ञानही इस जगत में असत्य धर्म को हटाकर के सत्य की तरफ लगाने वाला है किसी कविने कहा है॥ दोहा॥ मन मदान्ध हाथी बन्यौ ज्ञान महावत कीन॥ ज्यौंर चले कुपन्थ में त्यों त्यों अंकुश दीन॥

ज्ञान की उत्पत्ति विद्या करके होती है विद्या ऐसी श्रेष्ठ वस्तु है जो मरण तक साथ रह कर आनन्द कराती है विद्या अपार है इसका किसी ने पार नहीं पाया है इसी कारण इसका पूर्ण प्राप्त होना अति दुर्लभ है परन्तु जिस किसी में इनका जितना अधिक अंश होता है वह उतनाही ज्ञानवान होता है— खाने पीने सोने आदि में तो मनुष्य पशू के बराबर ही है केवल विद्या द्वारा बुद्धि की प्राप्ति करके श्रेष्ठता है ॥

(श्लोक) नरस्यभूषणंरूपः रूपस्यभूषणंगुणाः ॥ गुणस्यभूषणंविद्या विद्याभूषणंक्षमा ॥ विद्या से नम्रता आती है नम्रता से योग्यता योग्यता से धन तथा सत्य धर्म बढता है सत्य धर्म से बड़ा आनन्द मिलता है और यह लोक और परलोक दोनों ही सुधरते हैं इस लिये जिस किसी को कीर्ति और भलाई की इच्छा हो वह सर्व कार्य तज करके अवश्य ज्ञान की वृद्धि के वास्ते विद्या पढ़ो इस देश में जब से विद्याका निरादर हुआ है उसी के साथ विद्या की बहन लक्ष्मी रूठगई और फिर लोग सत्य धर्मसे च्युत हो कर अयोग्य कार्यादि में प्रवर्ती करने लगे और अविद्या के प्रभाव से उत्साह बल आदि सर्व नष्ट होगये— सुख और शांति की जगह दुख उपद्रव होने लगे और फूट जोकि संसार में दुखका कारण है उस ने अपना हमारे देशमें बसेरा कर लिया इस लिये अविद्या को दूर करके विद्या को अवश्य मेव गृहणकरो जिस से सत्य धर्म अर्थात आत्मीक धर्म जो कि अपनी आत्माको उद्धार करने वाला है अपने आत्मीक स्वरूपका जानना कि आत्मा अर्थात जीव क्या चीज है और शरीर अर्थात देह क्या चीज है इनका विचार करके अपने आत्मीक स्वरूप को जानना कि शरीर तो पुद्गल प्रमाणु जो कि स्परस रस गन्ध वर्णादि सहित हैं उनकर बना है और वो आत्मा जिसका शरीर में प्रकाश हो रहा है उसका लक्षण ज्ञान है सो ऐसे आत्मीक स्वरूपका श्रद्धान ज्ञान आचरण करना सो ही सत्य धर्म है और यह सत्य धर्म चिरस्थायी सुख की प्राप्ति करने वाला है परन्तु एक वो धर्म कि जिस से इस सत्य धर्म की प्राप्ति होती है उसे व्यवहार धर्म कहते हैं अर्थात सत्य देव यानी सर्वज्ञ वीत राग हितोपदेशक इन तीन विशेषण कर तो देव और प्रत्यक्ष प्रमाण करके और अनुमान करके बाधा न आवे ऐसा शास्त्र. बाह्य आभ्यन्तर परिगृह कर रहित गुरु इन तीनोंहीका श्रद्धान ज्ञान आचरण करना सो व्यवहार धर्म है जो इस क[illegible]रके रहित है वोह कदापि काल भी सत्य धर्म को नहीं प्राप्त होगा ऐसा जानकर हे भाईयो जिन्हें चिरस्थाई सुख की चाहना है वह अवश्य मेव विद्या को पढ़ क[illegible]के शास्त्र ज्ञान करें और फिर व्यवहार धर्म की प्राप्ति करके सत्य धर्म जो कि आ[illegible]त्माका निज भाव है उस की प्राप्ति क[illegible]

सर्व जैनी भाईयोंका दास
वैद्य ज्ञानचन्द अलीगढ

जैनविवाह

आप के जैन गजट ने ऐसा उत्तम कार्य किया है जिस की प्रशंसा नहीं हो सकती— जो कि विवाह हमारी तरफ मिथ्यात्व रीति से होते थे उन से छुटा दिया— मिती ज्येष्ठ बदी १ को लाला अजुध्याप्रसादकी लडकीका विवाहथा बरात लाला परसादीलाल मथुरादासजी शेरकोट वालों के यहां से आई थी जिस में पंडित लालजी मलजी सहारनपुर निवासी भी पधारे थे उन्होने अति आनन्द के साथ जैन विवाह पद्धिती के अनुसार विवाह कराया— फेरों के समय जितने स्त्री पुरुष मौजूद थे बहुत [illegible]र्ष को प्राप्त हुए— उस समय मैं भी वहां पर मौजूद था— फेरों के पीछे १ स्तुति [illegible]ीगुरुदेवकी मैंने सारंगी आदि वादित्रों [illegible]हित गीता छन्द में गाई उस समयका [illegible]ानन्द लिखने में नहीं आता— आप को [illegible]नेकानेक धन्यवाद दिया जाता है कि [illegible] मिथ्यात्व के फेरों से बचे यह प्रताप [illegible]ाप के जैनगजट हीका है ॥

[illegible] फिर श्रीमंदिरजी में गाजे बाजे सहित [illegible]ला परशादीलालजी आदि सब महाशय पधारे और ५१, रुपये महा विद्यालय [illegible]वास्ते दिये वोह रुपये लाला कल्लनमल [illegible]वानदासजी की दूकान पर जमा करा गये हैं ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
मंगलसेन उपमंत्री जैन सभा
नजीबाबाद

खैराती अंजन

लाला जगन्नाथ जैनी जसपुर जिला नेनीताल से लिखते हैं कि हमने एक अंजन आंखों के धुन्धलापन दूर करने के वास्ते तयार किया है जिन भाईयों को आवश्यक्ता होवै वोह सिर्फ आध आनेका टिकट भेज कर मगालेवें और यह टिकट वास्ते डांक महसूल के मंगाया जाता है ॥

एक औषधालय भी सर्व भाईयों को सहायता के साथ खोला गया है और औषध बहुत शुद्धता के साथ बनाई जाती है और हर किस्मकी तयार हैं गरीब और मुहताज भाईयों को मुफ्त दीजाती हैं जिन साहबोंको आवश्यक्ता हो अपना पुरापता तथा रोग की तफसील लिख कर भेजें औषधी बहुत अच्छी तौर से भेजी जावैगी ॥

प्रार्थना

इस सत्य धर्म्मकी उन्नति करने के लिये और इस दुष्ट मिथ्यात्व कि दूर करने के वास्ते यह आपका सप्ताहिक हलकारा जैन गजट उपदेशदाताही है महाशय धन्य है आपको जो इस जैन जातिकी डूबती हुई नावको हस्ता वलंबन देकर बचा लिया जैसा आपका दैदीप्यमान नाम है तैसाही गुणभी प्रकाश मान हो रहा है जिधर देखता हूं उधर से यही शब्द सुनाई देताहै

कहीं पाठशाला जारी होती हैं कहीं सभा स्थापन होती हैं कहीं इस दुष्ट फिजूल खर्ची दूर करने का प्रबंध हो रहा है कहीं महाविद्यालय के वास्ते रुपया संचय हो रहा है इत्यादि शुभ कार्य होते चले जाते हैं जैसे कि कस्बा नहटौर जिला बिजनौर में महा विद्यालय भंडार के वास्ते ५०२॥=, रुपये सब भाईयों ने मिलकर पंडित चुन्नीलालजी मंत्री महा सभाकी सपुर्द करदिये हैं पंडितजी साहब के अमृत रूपी उपदेश को पानकर स्त्री भी इस चंदे में शामिलथीं धन्य है नहटौरकी स्त्रीयोंको जिन्हों ने महाविद्यालयकी सहायताकी और नहटौर में एक पाठशाला भी है उसमें पंडित गनेशीलाल जैनी अध्यापक हैं पंडितजी लड़कों के पढानेमें बहुत कोशिश करते हैं आपकी धर्म में रुची ज्यादा है और आपने नहटौर के सर्व भाईयोंकी धर्म में रुची बढ़ारक्खी है और यह भी कोशिशकर रहे हैं कि फी घर १, रुपया के हिसाब से चंदा और हो जावे सो आशा है कि शीघ्र हो जावेगा ॥ सो यह सर्व आपही के जैन गजटकी महिमा है ईश्वर आपसरीखे सतपुरषोंको चिरंजीव रक्खे ॥

मनेशीलाल नजीबाबाद
जिला बिजनौर

जैन धर्मानुसार विवाह

अत्यंत हर्षकी बात है कि आपके जैन गजट नामक मार्तंडके प्रकाश से इस नगर में भी कुछ शिक्षा होनी प्रारंभ हुई है इस मास में श्रीयुत हकीम उग्रसैनजी मंत्री श्री जैनमहासभा की पुत्री का विवाह था बगात जगाधरी जिला सहारनपुर से आई थी। उपरोक्त महाशय ने निज उदारता और गंभीर हृदय से अन्य पुरुषों के कहने पर भी विवाह में कंदमूलादिक का बनाना स्वीकार न किया। और विवाह विषै हमारी जातिके नाशक रंडी भडुवादिक का नाच जिसको नाश कहैं. तो अयुक्त न होगा नहीं भया और अंग्रेजी बाजित्रों का भी शोर नहीं भया । मैं उक्त महाशय को अनेकानेक धन्यवाद देता हूं कि जिन्हेंने अन्य पुरुषों को ऐसा करने के लिये आप नमूना बनकर दिखायाहै। इस विवाह में एक अति सुंदर कार्य जिस पर के सबको सह घर होना उचित है यह भया है कि रात्रि जाग्रण के दिन सीठने और दुर्वचन गाली इत्यादिक के स्थान में स्त्रियों ने श्रीशीलकथा दर्शनकथा और भजनादि गान किया जिसको सुन कर सबका चित्त प्रफुल्लित होगया और बड़ा आनंद भया आशा है कि अन्य पुरुष भी इस आनंद रसको हाथ से न जानेदेंगे फेरों के समयका आनंद तो मुख से वर्णन नहीं हो सकाहै उस समय अनुमान सौ पुरुषों के उपस्थित थे कोई कोलाहल न था प्रथम देव पूजा अत्यंत मधुर वाक्यों में भई फिर सिद्ध पूजा भई जिनको श्रवण करके सकल मनुष्य रोमांचित हो गये और भग

वान के गुणोंको कर्ण गोचर कर के अपना जन्म सुफल मानते भये। तदनंतर जैन विवाह पद्धतिके अनुसार पूजना दिक क्रिया भई शांति पाठ भया तत्पश्चात् होम भया होमाग्नि से धूम का निकसना ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो अग्नि मंत्र सहित धूप पाकर आपसे बाहिर हो गई है ॥

श्रीयुत हकीम उग्रसेनजी के कथनानुसार बेटेवाले ने पचास रुपये विद्या दान और पांच रुपये उपदेशक फंड में दिये सो दोनों महाशयों को धन्यहै कि जिन्हों ने परोपकारता के अर्थ ऐसा प्रशंसनीय कार्य किया है ॥ मैं आशा करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि अन्य पुरुष भी औरों को प्रेरणा करके विवाहा दिक कार्यों में से परोपकारता के निमित्त रुपया एकत्र करेंगे

आपका आज्ञाकारी दास

जुगलकिशोर विद्यार्थी

सिरसावा जिला सहारनपुर

रिपोर्ट दौरा बनवारी लाल आनरेरी उपदेशक

मिती वैसाखवदी १०को मैं जसराने जिला मैनपुरी में गया और भाईयों से सभा के लिये प्रार्थनाकी रात्रि के सात बजे पर सर्व स्त्री पुरुष मन्दिरजी में एकत्र हो गये—मैं ने विद्या के विषय में व्याख्यान दिया जिसको सुनकर सर्व स्त्री पुरुष प्रसन्न हुए और पाठशाला के वास्ते उसी वक्त विद्या कर दिया ८, रुपये मासिक के पंडित की आवश्यता है और भी मुझे कई पंडितों की आवश्यकता है जो महाशय पाठशालाओं की नौकरी करनाचाहैं वोह मुझे लिखें और सभाभी नियत हो गई है सभापति लाला चोखेलालजी रईस और दिलसुखराय जी रईस नियत हुए मंत्री लाला दुर्गाप्रसाद लीलाधर और सभासद लाला ख्यालीराम व बरमीजीत जैदयाल भूरामल नियत हुए महीने में दो बार सभा हुआ करैगी—जैन गजटकी खरीदारी मंजूर हुई मैं यहां के भाईयों को अनेका नेक धन्यवाद देता हूं फिर यहां से चलकर सेवढा।जिला मैनपुरी में गया और सभा कराई परन्तु बड़े खेदकी बात है यहां के भाई नाम मात्र के जैनी हैं श्रद्धा और धर्मका ज्ञान बिल्कुल नहीं है

द० बनवारी लाल हकीम

रिपोर्टदौरा हकीम बनवारीलाल उपदेशक

मिती ज्येठ वदी ८ को मुकाम उझेम में पहुंचा और ९ को मंदिरजी में गया—पंडितप्यारेलालजी की सहायतासे दोपहर के २ बजे सभा हुई लेकिन सेठ चम्पतराय व ठाकुरदासजी साहब की चौकी गाड़ी कटगई थी इस लिये उक्त महाशय सभा में नहीं पधारे इस लिये सभा में रौनक कम रही यहां पर जैनगजटका लेना सभाने स्वीकार कर लिया है सो भेजा जावै ॥

फिर मिती ज्येष्ठ बदी १० को एटा जिला मैंनपुरी गया यहां पर दो मंदिर हैं दो पहर के दो बजे सभा हुई जिस में अनुमान ६० भाईयों के एकत्र हुए और कुछ अन्य मती भी थे— कुदेव आदि के पूजने के निषेध में व्याख्यान दिया— फिर लाला भीमसेन रईस एटा ने जोकि बडे सज्जन पुरुष हैं विद्या के विषय में व्याख्यान दिया जिस को सुनकर सभा परम हर्ष को प्राप्त हुई मैं इन्हीं साहब के मकान पर ठहराथा इन महाशय ने मेरी बडी खातिर दारी की— स्वाध्याय करनेका प्रमाण है प्रति दिवस स्वाध्याय किया करते हैं दो चार दफै सभा होने के बाद सभापति आदि नियत किये जावेंगे ॥

जैनपाठशाला खेखडा

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी वकील जोग्य लिखी खेखडेसेती लाला दिवान सिंह आदि सकल जैनी भाईयों की जैजिनेंद्र बंचनाजी आप के जैनगजट के आने से जैनी भाईयों को बहुत लाभ होता है मिती जेठ बदी ७ सम्वत १९५१ को पाठशाला मुकर्रर होगई है लडके २९ के करीब होगये हैं और कोई उपदेशक पंडित भगवानदास या आप बाबू साहब देहली को दौरा करने आवै तो स्टेशन स्यादरा देहली से जो तीन मील पर है वहां पर जिन मंदिर सिखरबंद है और हमारी दुकान भाई भीकामलके नाम से है सो वहां पर ठहरें और खेखडा वहां से १७ मील है सो सवारीका बदोबस्त हो जावैगा जो आप कृपा करके हमारे यहां पधारे तो पाठशाला और धर्मका प्रबन्ध अच्छी तरह से हो जावैगा पाहिले श्रीयुत पंडित चुन्नीलालजी दो बार पधारे थे उन के आनेसे पाठशाला और सभा मुकर्रर होगई थी सो वह काम बाद में बंद होगया सो आपकी कृपा से यह काम यहां जारी होगया है ॥

रिपोर्ट दौरा झांसी

पं० भगवानदास उपदेशक

मैं तारीख २४ मई को झांसी में आया यहां पर तीन चैत्याले हैं मंदिर सिखिर बन्द कोई नहीं है दूसरे दिन सर्व भाईयों से सभा होनेकी प्रार्थना कीगई तो सबने स्वीकार किया और सभा हुई परन्तु संपूर्ण महाशय एकत्र न हुए मैंने सभा स्थापित करने के लाभ दिखाये तो उन महाशयों ने मुझ से कहा कि सर्व भाई एकत्र नहीं हुए हैं इस लिये सभा कल होनी चाहिये— फिर मैंने वहां के विद्यार्थीयों की परीक्षाली तो अति उत्तम ज्ञात हुए फिर ता० २६ को सभा हुई जिस में संपूर्ण महाशय एकत्र हुए मैंने विद्योन्नति के विषय में व्याख्यान दिया और सभा स्थापित करने की प्रार्थना की परन्तु कोई महाशय सभा के प्रबन्ध करने पर उद्यमी नहीं हुआ— वहां पर ४५ घर जिस में १६९ मनुष्य जैनीहैं

फिर यहां से चल कर मुकाम बरवा जिला सागर में आया यहां जैनी भाईयों के घर १८ हैं मनुष्य गणना ७९ है यहां

दूसरे दिन सभा हुई जिसमें ऐकयता और विद्योन्नति के विषय में व्याख्यान दिया परन्तु अफसोस भाईयों के दिलपर कुछ भी असर नहीं हुआ यहां पर आपस में वैर विरोध बहुत बढा हुआ है मैंने इस के दूर करने की अत्यन्त कोशिश की परन्तु मेरी कोशिश बे फायदा हुई और उन कठोर हृदय वालोंके चित्तमें कुछ भी असर न हुआ॥

जैनसभा भरतपुर

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब जय-जिनेंद्र कृपा करके निम्न लिखित वार्ता को अपने जैनगजट में स्थान दान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

यहां पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासी तारीख २९ मई को पधारे उन्होंने प्रेरणा करके सभा कराई सर्व भाई एकत्र हुए अनुमान १२० भाईयों के उस वक्त मौजूद थे जिस में लाला गंगाधरजी ने परोपकारता के विषय में व्याख्यान दिया उस को सुन कर सर्व भाई परम हर्ष को प्राप्त हुये उक्त लाला साहब ने व्याख्यान ऐसी मनोहर और गद गद वाणी से कहा कि जिस के सुनने से सर्व भाईयोंका चित्त सभा स्थापित करने पर राजी होगया और उसी दिन से सभा स्थापित होगई फिर भाई सुन्दरलालजी ने सर्व भाईयों से प्रार्थना की कि सभा हर चतुर्दशी को हुआ करैगी सर्व भाई इसी तरह सभा में पधार कर सुशोभित किया करैं फिर मंगलाचरण पढ कर सभा विसर्जन कराई अभी तक सभा में मंत्री वा सभापति आदिका प्रबन्ध नहीं हुआ है इस लिये आप से प्रार्थना की जाति है कि किसी उपदेशक महाशय को यहां भेज देवैं ताकि उन के उपदेश से सर्व कार्य सिद्ध होवैं फिर चिरस्थायी हो कर सभा होने लगे॥

किशोरीलाल खंडेलवाल

भरतपुर

जैन औषधालय मेरठ

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहिब जोग्य लिखी पंडित मोहनलाल की जयजिनेंद्र बंचना ॥

आपका जैनगजट सुनाते २ यहां पर इतना असर हुआ कि १ जैन औषधालय खोला गया है इशितहार भी इस के छाप कर भेजे जावैंगे मिती जेठ सुदी ३ से औषधालय लाला ईशरीप्रसाद खजानची सदर मेरठ के मकान में खोल दिया गया है जिन साहबों को दवा मंगानी मंजूर हो वोह ऊपर लिखे पते से मंगा लेवें ॥

उपदेशक की आवश्यक्ता

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी जोग्य बल्लभगढ से गहरमल की जयजिनेंद्र बंचना ॥

आप बडे सज्जन और परोपकारी पुरुष हैं आप की प्रशंसा कहांतक कीजावै यहां पर कोई जैन पाठशाला नहीं है और यहां के भाई मिथ्यात्व को बहुत ज्यादा मानते हैं इस लिये किसी उपदेशक महाशय को अवश्य भेजना चाहिये बिना उप-

देशक महाशय के पधारे कोई कार्य दुरु-स्त नहीं हो सका ॥

अलीगंज जिला ऐटा

श्रीयुत महाशय बाबू सूरजभानजी वकील जे जिनेंद्र, निम्न लिखित लेखको जैन गजट में कृपा करके छापदें आपके समाहिक पत्र आने के प्रभाव से हर जगह तो असर हो गया वल्कि सभा और पाठशाला भी नियत होगई परंतु हमारे यहां जैन गजट आते हुए अर्सा बहुत होगया असर थोड़ा भी नहीं हुआ वह कारण यहहै कि जैन गजट चिट्ठी रसां देगया और श्रीमंदिरजी के ताक में रखदिया गया देखा किसी नेभी नहीं अगर दो एक साहब ने देख भी लिया तो उससे क्या होता है बडे आश्चर्य की बात है कि पंडित तेजराय व पं० मोतीलाल व पं० चुन्नीलालजी जराभी ध्यान नहीं देते हैं अगर पंडित तेजराय व पं० मोतीलाल व पं० चुन्नीलाल व लाला अटरमल रईस व लाला रूपलाल जिमींदार व लाला श्याम लाल मयम्बर कमेटी यह महाशय कोशिशकरें और जैन गजटको हर इतवार के दिन माली से बुलावा दिलवाकर सब बिरादरी को इकठा करके सुनादिया करें और धर्मवार्ता करें तो आशाहै कि सब महाशयों के दिल पर जरूर असर हो और जब असर पैदा हो तो सभा का नियत होना और आठवें रोज जैन गजटको पढ़ कर सुना देना कुछ मुशकिल काम नहीं है अब अलीगंज के सर्व महाशयों सेवाल्कि सब जैनी भाइयों से मेरी कर जोड़कर प्रार्थना है कि सभा नियत करें जिस से धर्मकी उन्नति हो धन्य है बाबू सूर्यभान वकील को जिन्हों ने जैन गजट समाहिक प्रकाशित किया है— कि जिसके पढ़ने से धर्म का महान उद्योग होगया है और होवेगा

जैनियों का शुभचिंतक एक जैनीभाई
अलीगंज जिला एटा

धर्म्मोपदेशिनी जैन सभा धूलियागंज आगरा

श्रीमान् बाबू सूर्यभानजी साहब जयजिनेन्द्र अनुग्रह करके इस थोडे से लेखको अपने पत्र में स्थान दीजियेगा ॥

मैं अत्यन्त हर्ष के साथ प्रकाश करता हूं कि इस सभाका चतुर्थ समागम मिती प्रथम जेष्ट शुक्ला १९ मंगलवार के दिवस सायङ्कालके ७॥ बजे हुआ जिसमें श्रीमान् पण्डित बल्देवदासजीने अतीत सभाकी माहिमा पूर्वक आप्त के स्वरूप के विषयही में मधुर ध्वनि कर के वर्णन किया प्रथम मंगलाचरण पढ़के उसी श्लोक से यह प्रगट कि याकि परवचनके विकल्प से अर्थात् मिथ्या दृष्टीन के वचन के विकल्प वे ही भये कूआ के मेंडक उनकी जो अतिशय करके हंसा करता है ऐसा जो जैन सम्पूर्ण तत्वों का एक बीज भूत सो जगत के विषय सा-र्थं कर्त्ता कर के वर्तो भावार्थ मिथ्या दृष्टी जो वस्तुको सर्वथा एकान्तस्वरूप मानते हैं उनका ये जैन खण्डन करता है ऐसे

मङ्गला चरण करके आप्तके स्वरूप का प्रारम्भ किया आप्तके ३ विशेषण जो अतीत सभा में पण्डितजी साहब ने दिखाये थे उनका इस सभा में विस्तार सहित वर्णन किया जो वस्तुके स्वरूपका यथार्थ उपदेष्टा है सोई आप्त है यथार्थ उपदेष्टापना उसी में संभवता है जिस में सर्वज्ञपना वीतरागपना और हितोपदेशकपना येतीन विशेषण पाये जांय क्योंकि सर्वज्ञपने विना वस्तुका यथार्थ स्वरूप नहीं कह सकता और इसी कारण से सर्वज्ञके कहे हुए वचनों में कोई प्रकार की बाधा नहीं आती क्योंकि मिथ्या दृष्टी जो वस्तु के स्वरूपको सर्वथा नित्य अथवा अनित्य एक अनेक मानते हैं उनमें बाधा आती है इस कथन को पण्डितजी साहब ने बहुत उत्तमरीति के साथ वर्णन किया और ये कहा कि सर्वथा एकान्त वादीयों के वस्तु का स्वरूप सिद्ध नहीं होता इस कथनको प्रमाणादिक करके सिद्ध किया तत् पश्चात् ये कहा कि क्या कारण है कि हम सर्व भाइयों की इस जैनधर्म्म से जो सत्य पदार्थ को निरूपण करता है श्रद्धा शिथल होती चली जाती है इस का कारण यह है कि हम शास्त्राध्ययन नहीं करते विना शास्त्राध्ययन के सत्य असत्य की परीक्षा नहीं हो सकती और शास्त्राध्ययन विना विद्या पढ़े असम्भव है इस से मूल दुःख का कारण अविद्या है इस अविद्या ही के प्रभाव करके हमारी सम्पूर्ण जैन जाति की न्यूनता हो रही है और यही कारण है कि इस सर्वो त्कृष्ट धर्म्म से हम सब लोगों की रुची घटती जाती है फिर अन्त में पण्डितजी साहब ने प्रेरणा रूप वचनकहे कि जो भाई सुखको चाहते हैं उनको विद्या पढ़ना चाहिये विना विद्याके धर्म्मका मूल कारण जो भगवान आप्त है उसको नहीं जान सकते सो समय बहुत व्यतीत होने के कारण से कथनको संकोच करके ये कहा कि पुनः अगली सभा में भी आप्त के ही स्वरूप के विषय में वर्णन किया जायगा पण्डितजी साहब ने वचन रूपी अमृत करके संपूर्ण सभाको तृप्ति किया इस व्याख्यान को सुनकरके जो कुछ आनन्द सम्पूर्ण को हुआ वोवचन के अगोचरहै तत्पश्चात् सम्पूर्ण भाइयों की आज्ञानुकूल मैंने उक्त पण्डितजी साहब को धन्यवाददेके विद्या ही के विषय में व्याख्यान दिया उस में यह बात दिखाई कि इस मनुष्य देह की शोभाकेवल विद्याही है बाद इसके सम्पूर्ण सभा को धन्यवाद देके सभा विसर्जन करी आपका कृपा कांक्षी चिरंजीलाल सभापति

महासभा की सहायता

हम लाला रामसरूप फुल्लोमलजी कस्बः खुर्जा जिला बुलन्दशहर निवासी को जो कि बड़ेसज्जन और धर्मात्मा हैं अनेकानेक धन्य वाद देते है जिन्हों ने अपने पुत्र के विवाह उत्सव में ३, रुपये जैनमहासभा मथुराकी सहायतार्थ प्रदान किये सच्चादान इसी का नामहै विवाह आदि में सैकड़ों रुपया योंही व्यर्थ बरबाद होता है जिस का जरा देरकी नामवरी होती है और इस दानकी नामवरी तब तक रहैगी जब तक जैनमहासभा स्थापित रहैगी ॥

खुद मदद
Self help

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब सम्पादक जैनगजट जैजिनेंद्र; कृपा करके निम्न लिखित लेखको अपने अमूल्य पत्र में जगह देकर कृतार्थ कीजिये ॥

सर्व भाईयों को मालूम है कि आज कल इस जैन जाति में चारों ओर से यही ध्वनि सुनाई देती है कि उन्नति करो उन्नति करो लेकिन क्या कारण है कि अभीतक कुछ भी नतीजा नहीं निकला हे भाईयो कारण इसका यह है कि जैनियों में खुद मददयानी (Self help) नहीं है और जब तक खुद मदद न होगी तब तक इस जाति की उन्नति नहीं हो सक्ती– खुद मदद वो चीज है कि जिस से मनुष्य कठिन कार्य को भी आसानी मे कर सक्ता है यह खुद मदद ही है कि जिसमे आज दिन इंगरेज लोग हिन्दुस्तान का राज्य कर रहे हैं यहां तक कि जिन जातियों ने उन्नति की है वो सब खुद मदद ही के सबब से कर सकी हैं अन्यथा नहीं; लेकिन हमारे जैनी भाईयों में खुद मददका लेश मात्र नाम भी नहीं– देखिये जैन अखबारों के एडीटर लोग और अन्य पुरुष जो कि इस जातिकी उन्नति के अभिलाषी हैं चिल्ला चिल्ला के अपने समाचार पत्रों में जैनी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि ऐ भाईयो जैन कालिज के वास्ते द्रव्य दो यह एक पुरुष के फायदे को नहीं है सबही को फायदेमन्द होगा लेकिन कारण क्या है कि अभी तक द्रव्य जमा नहीं हुआ क्या जैनियों में धनाढ्य पुरुष नहीं है, आप लोग बखूबी इस बात को जानते हैं कि जैनियों में अभी तक बड़े २ धनाढ्य पुरुष भी मौजूद हैं– तो फिर ऐसी कौनसी बात है कि जिस से जैनियों में उन्नति नहीं होती हे भाईयो यह वोही दुष्टनी है जो जैन कालिज के होने के वास्ते एक आड़सी पड़ी हुई है– आप लोग बखूबी इस दुष्टनी को समझ गये होगे यह वही है यानी खुद मददका न होना है पस अब यह बात मालूम हो गई कि इस के बिना यानी खुद मदद बगैर हमारी जाति में उन्नति नहीं हो सक्ती तो अवश्य आप को उपाय करना चाहिये इसका उपाय यह है कि जो महाशय इस धर्म कार्य में कटिबद्ध हो रहे हैं वो अपनी शक्ति अनुसार जैन कालिज के वास्ते चन्दा देवें और अन्य भाईयों को प्रेरणा करें तो आशा है कि खुद मददका जोश भाईयों के दिल में अवश्य ही उत्पन्न होगा और खुदमददयानी (Self help) के होने से ही इस जाति की उन्नति हो सक्ती है।

सर्व जैनी भाईयोंका दास

अर्जुनलाल सेठी विद्यार्थी

जैन पाठशाला मंदिरजी ढोलियान

जैपुर

व्यर्थ व्ययका प्रबन्ध
ज़िला बिजनौर

धामपूर के उत्सव में ज़िला बिजनौर सर्व जैनी भाईयों ने यह ठहराया था कि फ़िजूल खर्ची यानी व्यर्थ व्यय का प्रबन्ध करना चाहिये इस प्रबन्धका चिट्ठा भी थो ड़ासा लिखा गया था लेकिन भाईयों के हस्ताक्षर नहीं हुए थे वह चिट्ठा लाला उमराव सिंह रईस नजीबाबाद निवासी के पासहै जो कि बड़े परोपकारी और सज्जन और धर्मात्मा हैं और धर्म कार्य में तन मन धन से कोशिश करनेवाले हैं हम लाला साहब से प्रार्थना करते हैं कि उस चिट्ठे पर दस्तखत अर्थात हस्ताक्षर कराने की कोशिश करें जिस से यह फ़िजूल खर्ची जिसके सबब से हमारे बहुत से भाई बिल्कुल बरबाद होगये हैं और होते चले जाते हैं हमारे ज़िले से दूरहोजावै-और यह बात सर्व माननीय है कि जो काम पहिले बड़े आदमी करते हैं सो अवश्य संसार में प्रचालित होजाता है- धन्य वाद दिया जाताहै श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० सभापति साहब को जो कि हमारी जाति में श्रेष्ट और शिरोमणि गिने जाते हैं उन्हों ने अपने पुत्र के विवाह में यह दुष्ट फ़िजूल खर्ची दूर करदी है सो क्या अब हमारे अन्य भाई इस ओर दृष्टि नदेंगे हम आशा करते हैं अवश्यही देंगे-इस लिये मैं अब सविनय प्रार्थना करता हूं कि ज़िले बिजनौर के बड़े२ आदमी- अर्थात् लाला उमराव सिंहजी रईस नजीबाबाद वाले व लाला सलेखचन्दजी रईस नजीबाबाद वाले व लाला तुलसीरामजी साहब धामपुर वाले व लाला कुंजबिहारी लालजी और लाला दीवान सिंहजी निहटौर वाले व लाला खैराती राम स्योहार वाले व लाला बद्रीप्रसादजी बिजनौर वाले व लाला प्रमादीलालजी शेरकोट वाले आदि महाशय अवश्य मेरी पुकार को सुनेंगे और इस दुष्ट फिजूल खर्ची केदूर करने के चिट्ठेको पूरा करने की कोशिश करैंगे ॥

जैनी भाईयों का शुभ चिंतक
एकजैनी

गोलक जैनकालिज

श्रीमान् बाबू सूर्यभानजी साहब जोग्य लिखी चिल्काने से सकल जैनी पंचनका जय जिनेन्द्र बंचना।

यहां पर मिती ज्येष्ट द्वतीय कृष्णा ९ को श्रीमन्दिरजी में गोलक वास्ते जैनकालिजके चन्दाएकत्र होने को रक्खी गई है उस में द्रव्य भी पड़ने लगाहै आशाहै दिनों दिन उन्नति होगी हम आशा करते हैं इसी तरह अन्य भाई भी अपने२ स्थानों में गोलक रक्खेंगे और जैन महा विद्यालय भंडार के वास्ते रुपया एकत्र कर के श्रीमान् सेठ लक्ष्मण दासजी सी० आई० ई० सभापति मथुरा के पास भेजेंगे ॥

अजित प्रसाद
चिल्काना ज़िला सहारनपुर

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेज़ी महीनेकी —८—१६—२४ता०

को

बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिला सहारनपुर से

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० ८ जोलाई सन् १८९६ } अङ्क २१

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैन धर्म की उन्नति कैसे हो

—•—

हे भ्रातृगणहो यह आप भले प्रकार जानते हैं कि आज कल किसी बात की उन्नति करनेका कारण समाचार पत्रों से अधिक और कोई नहीं हो सक्ता है क्यूंकि इस के द्वारा उत्तम शिक्षा विना किसी कठनाई के सब मनुष्यों को देश देशान्तर में दीजा सक्ती है और इसही के द्वारा विविध समाचार जानने में आते हैं जिन से आप भी किसी प्रकार की उन्नति करनेका उत्साह पैदा होता है आज कल जिस जाति ने उन्नति करी है केवल समाचार पत्रों के ही द्वारा की है और आज कल सर्व जाति और धर्म के कई २ पत्र जारी है ॥ जैन जाति में केवल तीन चार पत्रही जारी हैं परन्तु हम बडे शोक के साथ इस बात को प्रगट करते हैं कि हमारे भाई जिन के हित के वास्ते यह पत्र जारी होते हैं बहुत कम सहायता देते हैं फिर यह पत्र कैसे जारी रहसक्ते हैं और कैसे जैन धर्म की उन्नति हो सक्ती है ॥ हम को यह बात जान कर बहुत शोक और दुःख प्राप्त हुवा है कि जैन हितैषी पत्र जो पहले मुरादाबाद से और अब बम्बई मे भाई पन्नालालजी के प्रबन्ध से जारी होता था बन्द होगया है और यह बात मालूम करके और भी रंज हुवा है कि ग्राहक गणों के पत्रका मूल्य न देने के कारण यह उपकारी पत्र बन्द हुवा है इस पत्र से जो लाभ इस जाति को हुवा है और आगामी कितने लाभ की संभावना थी यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है ॥ ऐ भाईयो केवल जैन हितैषी पत्रही मूल्य प्राप्त न होने के कारण बन्द नहीं हुवा है वर्ण अन्य जैन पत्रोंका भी सदा यहही भय रहता है ॥ जैन प्रभाकर पत्र ने पिछले दिनों अपना बहुत कुछ नुकसान और मूल्य की प्राप्ति प्रकाश की ही थी और हमारे साथ भी ऐसाही होता है है ॥ जैनगजट के उन ग्राहकों के पास जिन्होंने हमारे पास स्वीकार पत्र भेज दिया था हम तीन महीने तक बराबर पत्र भेजते रहे और तीन महीने के पश्चात हम ने पोस्ट कारड द्वारा उन से प्रार्थना की कि वह यातो कीमत भेज देवें नहीं तो वैल्यू पेवल द्वारा मूल्य वसूल किया जावेगा उत्तर आने पर हमने वैल्यू पेबल भेजा परन्तु हम को यह बात प्रगट करते बडी लज्जा आती है कि बहुत से भाईयों ने वैल्यू पेवल वापिस कर दिया ॥ भाईयो जैसे तुम हजारों रुपये संसारी कार्यों में खर्च करते हो क्या दो चार रुपये धर्म कार्य में नहीं खर्च होसक्ते यदि धर्म की और से ऐसा ही प्रमाद रहा तो जैन धर्म की कैसे उन्नति होगी ॥

झालरापाटण

जैनगजटका यहांके सभासदों पर इतना असर हुवा है कि सभासदोंने अपनी नींद से चौंक कर व सचेत होकर सभा करणेका प्रबन्ध फिर शुरू किया है दो २ वर्ष हुए यहां सभा हुवा करती थी और बहुत अच्छा प्रबन्धथा परन्तु प्रमाद वशतः सभाका हो ना बन्द होगयाथा यद्यपि भाईयोंका अनु राग धर्म की ओर तो था परन्तु ऐसा होता है कि जो कार्य होता हुवा बन्द हो जाता है फिर उस में रुचि कठिनता से होती है— अब सेठ दौलतरामजी साहब मुन्तजिम जकात राज झालावाड के उपदेश से तथा भाई कुन्दनलालजी सभासद महासभा की पूर्ण कोशिश से तथा यह के धर्मात्मा धर्म धोरी भाई भूरामलजी हीरालालजी प्यारचन्दजी चौधरी इत्यादि के अगुआ बन कर सभा करनेका प्रणोलेने से मिती जेष्ठ कृष्णा १४ को प्रथम सभा हुई उस में यह करार पाया कि अब यह सभा प्रति चतुर्दशी को हुवा करेगी और बहुत से भाईयोने इस बात पर अपने २ हस्ताक्षर भी कर दिये और उसही दिन यह प्रबन्ध हुवा कि यहां तेरह द्वीप मण्डल विधानका उत्सव करना चाहिये इस पर सर्व सभासद जो अनुमान २९ के उपस्थित थे उन में एक पावडी हुई जिस में ९९) रु० हुए और उत्सव करनेका इन्तजाम दूसरी सभा पर ठहराया ॥

परन्तु आश्चर्यकारक इस तुच्छ बुद्धियों की दृष्टि से अगोचर है इस कालके विकराल काल जानने को केवलभगवान ही समर्थ भये हैं और होवेंगे ॥

शोक महाशोक शतशोक

इस बातका है कि इस शुद्धाम्नाय के धारक भाई मगनलालजी जो बड़े चतुर प्रवीण धर्म के दृढ श्रद्धानी इस सभा के ... पी नवका के खेवटिया शास्त्राध्यक्ष व प्रति दिन शास्त्र सभा के उपदेशदाता बलवन्त सज्जन महाशय ने इस संसार असारका जल गदला जानकर मिती प्रथम जेठ शुक्ला १४ को स्वर्गारोहण होगये भाई साहब को सुभेही से १ प्रहर दिन चढे पश्चात मंदिरजी से आनेका प्रण तथा =)आ० रोज अपने घर में धर्म निमित्त डालते थे केवल ३० वर्ष की अवस्था में ही इस मनुष्य जन्मका फल लेगये— इन की मृत्युका वृत्तान्त अवश्य द्रष्टव्य है कि केवल चार दिन रोग ग्रस्त रहे परन्तु अचेतनपना अन्त समय तक न ... इन के सुसर भाई जोतिषिचन्दजी व भाई प्यारचन्दजी चौधरी वा भाई कुन्दनलालजी सभासद महासभा ने उन के अन्त समय पर सचेत रखनेमें तथा धर्ममें लवलीन होने में अत्यन्त सहायता दी और भाई मगनलालजी भी स्वयमेव सचेत थे यहां तक हुवा कि भाई मगनलालजीने (९) जो अपनी शक्ति से बाहर थे दान में

...ाने और २०) अपनी मांता तथा १०)
जेठानी बहिन को आज्ञा निमित्त दिये बा-
की बचे में अपनी स्त्रीका बन्दोबस्त कर-
के सब घरका भार अपने भाई को सौंप
देया और सब रिस्तेदारों को कह दिया
जानके अब तुम से मेरा कुछ स्नेह नहीं है
उत्तम मेरा काल निकट है तुम सब दूर हो
अविनाशी— भाई जोतिषी चन्दजी ने वज्रका
कि हृदय कर संसार को असार समझ कर न्याय
सी व दामाद की मति सुधारने के निमित खू-
न्तर धर्मोप देश देकर उक्त महाशय को ध-
द्धारा में दृढ रक्खा मृत्युंजय स्तोत्र तथा समा
धिन के मरण उन को श्रवण कराया और उन
व्रते कराये अपनी चैतन्य दशा में ही सर्व परिग्र
कल ही त्याग कर १ चटाई तथा कुछ वस्त्र-
समाधि प्रमाण कर लिया और अन्त समय
आप अर्हंत बोल कर प्राण त्यागन किया य-
पत्र जा के ५० पचास वर्ष के वृद्ध पुरुष कह
चार पाईं कि ऐसी चेतना सहित धर्म मृत्यु ह
क दो ३ अपनी आंख से न देखी थी— इन
कि हर्ष साहब की मृत्यु के शोक से चतुर्द-
ह पत्र की सभा बन्द रही— अब इन भाई
देते हैं इनका कार्य अर्थात शास्त्राध्यक्षत्व तो
है और शाह हीरालालजी सुपुत्र महाशय गौ-
की है लालजी लुहाड्या के सुपुर्द किया गया
हुत शो और शास्त्र सभा में उपदेश देनेका का
न हितैषी महाशय प्यारचन्दजी बजहरदा नि-
और अब जो यहां श्रीमन्त सेठ गणेश दास-
प्रबन्ध सेमाणी की दुकान पर मुनीम हैं उन ने
और यह

सानन्द स्वीकार किया है उक्त महाशय
बडे ज्ञाता हैं जैन मत के दृढ श्रद्धानी हैं
और सैकड़ों वादियों को जो मिथ्यात्वी थे
उन को जीत कर जैन मत की प्रभावना-
का सार दिखाया इनहीं महाशय ने श्री
संमेद सिखरजी के परवत को बेचे जाने से
बचाया है उक्त महाशय आपकी मुलाका
त लायक हैं प्रति दिन रात्रि के ७॥ सा
ढे सात बजे से ९ बजे पर्यंत अपनी अमृ-
त भरनी वानी से मधुर स्वरों से अनेक द-
ष्टान्त दृष्टान्तो से पुष्ट कर श्रीसम्यक्तकलो
ला विलासजी का स्वाध्याय करते हैं ॥

खैर भाई मगनलालजी की मृत्यु
तो यों भूल जावेंगे परन्तु एक वार्ता और
नवीन हुई है वहयों है कि महाशय कुन्द
नलालजी सभापति जो यहां तहसील में
महोरिर थे उनकी बदली राज कार्य वशात;
तहसील छीपा बड़ौद में होगई है इस से
उन को वहां जाना होगा इन दो कारणों
से यहां धर्म में पूरी पूरी हानि हुई अबकी
चतुर्दशी को सभा होगी उस में जैसी का
रवाई होगी वैसी लिखूंगा ॥

यहां झालरापाटन छावनी के तेरे पं-
थियों के मंदिरजी में नवीन समोसरण बे
दिका पाषाण की बनाई गई थी इस पर
भगवानका प्रतिबिंब विराजमान करनेका
उत्सव शुभ मिती प्रथम जेठ कृष्णा १३
का था समोसरण मंडल विधान बड़े आन-
न्द पूर्वक हुआ पूजनजी झांझों पर होकर

श्रीश्री १००८ श्रीजी महाराज का कलशाभिषेक होकर नवीन वेदिका समोसर में पधरायेगये उत्सव में अनुमान ९०० स्त्री पुरुष मोजूद थे अनुमान २००)रु० मेलूणी होकर भंडार उक्त मन्दिरजी में जमाहुए—

सुन्दरलाल श्रा० बैनाड़ा

॥ अवश्य पढ़िये ॥

सब भाईयों पर विदित है कि गतवर्ष में श्री जैनधर्म संरक्षणी सभा मथुरा ने कैसे कैसे श्रेष्ठ सुंदर और प्रशंसनीय कार्य जिनकी कि अत्यंत आवश्यकता थी और जिन विना अन्य कोई उपाय इस समय इस जैन जाति की उन्नति और सुधारार्थ नहीं हो सक्ताथा किये हैं ॥

इसको श्रीमान सेठ लक्षमणदासजी सी. आई. ई. और अन्य परोपकारी भाईयों को अनेकानेक धन्यवाद देना योग्य है कि जिनकी सहायता से वे कार्यहुये हैं और श्रीजी से प्रार्थना करनी उचित है कि इन महाशयों का मनोर्थ शीघ्र पूर्णहो अर्थात् इनका कार्य नित्यप्रति उन्नति को प्राप्त होतारहै ॥

आप सर्व भाई इस बात को भलीभांति जानते हैं कि जब तांई कोई पुरुष किसी पदार्थ का हाल सम्यक नहीं जानता है तब तक उसको किसी प्रकार नहीं सुधार सक्ता है। इसी कारण श्री जैनधर्म संरक्षणी सभा ने निज दूरदर्शता से जैन जातोन्नति का विचार कर के उसका सर्व वृत्तांत जानने के अर्थ मुझ हकीम उग्रसैन को भ्रातृगणन के निमित्त नियत किया है। सो अब हे परोपकारी भाईयो आप सभों को विचारना योग्य है कि उपरोक्त कार्य किसी एक पुरुष से होना असंभव है जब तक कि आपलोग उस में सहायता न करेंगे और आपलोगोंही के विश्वास पर यह कार्य कियागया है और क्योंकि यह कार्य सभों के हित के लिये है इस कारण आप सब पुरुषों को इस में सहायता देना उचित है ॥ मैंने अनुमान तीन सहस्र (हजार) फार्म भ्रातृगणन के जैनगजट, जैनहितोपदेशक, जैनहितैषी, और जैनप्रभाकर द्वारा और ६०० के लगभग अपने तौरपर विभाग किये हैं सो अनुमान तीनसौ के मेरेपास भरकर आचुके हैं। मैं उन भाईयों को धन्यवाद देताहूं कि जिन्हों ने परोपकारार्थ अपना समय व्यय करके और इस काम को अपनाही कार्य समझकर फार्म भरकर भेजे हैं परंतु अत्यंत खेद की बात है कि इतने फार्म बटने और इतना समय व्यतीत होने पर भी आलस्यवशात् हमारे भाईयों ने आद्यावधी पर्यंत (अबतक) कुल स्थानों के फार्म भरकर नहीं भेजे हैं ॥

ऐ भाईयो क्या आप अपना थोड़ा सा समय भी इस परोपकारार्थ के कार्य जिस में कि परोपकारी बुद्धिमान और सत्पुरुष भाई अपना सर्व अमूल्य समय बिता रहे हैं व्यय करना अच्छा नहीं समझतेहैं भाईयो यह कोई निज कार्य नहीं है यह तो आपही लोगों का कार्य है आपही २

यों के हित के अर्थ परोपकारी भाईयो ने यह कार्य नियत किया है आप को उनका बड़ा उपकार मानना योग्य है ॥

आप को उचित था कि कुछ समय अपने आलस्य से बचाकर फार्मो को बहुत शीघ्र भरकर भेजदेते ॥

अब में आशा करताहूं कि हमारे परोपकारी भाई शीघ्रही हमारे फार्मों को भरकर भेजेंगे क्यों कि वार्षिक सभा का समय निकट आगया है और प्रार्थना करताहूं के जिस भाई के पास फार्म न हो सो लिखें मैं तुरंत भेजदूंगा ॥ भाई साहिब कृपा करके उपरोक्त लेख को अपने जैनपत्र में स्थान दीजियेगा ॥

आप का शुभचिंतक
हकीम उग्रसेन मंत्री महासभा
सिरसावा निवासी

जैनसभा अटेर

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब जैनि-, यहां पर भाई सालिगरामजी इलाहाबाद निवासी के उपदेश से सभा स्थापित गई है पहली सभा मिती ज्येष्ट सुदी ४ हुई जिस में अनुमान ८० भाईयों के एकत्र हुये और दूसरी सभा मिति ज्येष्ट सुदी १२ को हुई इसी तरह सदैव सभा हुआ करेगी ॥

अजुध्याप्रसाद मंत्री
मिथ्यात्वविनाशनी सभा
अटेर जिला ग्वालियर

धर्म

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब कृपा करके निम्न लिखित लेखको जैनगजट में स्थानदान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

धर्म क्या है और उस से क्या लाभ है और मनुष्य जन्म पाकर क्या करना उचित है सो उसी व्याख्यान को दृढ़ किया जाता है और यह दिखलाया जाता है कि मनुष्य जन्म यह है—

हे भाईयो यह भवसागर जिस में हम आये हैं एक स्वप्न अवस्थावत विद्यमान है प्रमाद वशहो यह हमारा है यह तुम्हारा है झगड़ा मचारहे हैं यदि ध्यान देकर देखाजाय तो इसकी दशा मानिन्द उस मनुष्य के है जो सोताहो और अपनी स्वप्नवस्था में ऐसा देखताहो कि मैं एक नग्र में गयाहूं और वहां पर अति रमणीय मकान बने हैं सरोवर में निरमल जल भरा है कमल फूलरहे हैं भौरागुंजार कररहा है और वहां के प्रधान की परम सुन्दरी कन्या का स्वयंवर रचागया है और सम्पूर्ण सुख में लीन है ऐसी हालत में पुत्रभी पैदा होगया और वहां के राजा का मंत्रीभी हो गया है जब रात व्यतीत हुई और आंख खुली तो क्या देखता है न पुत्र है न राज्य है खाली खटिया और बिछाना है—सो हे भाईयो इसी तरह संसार की दशा है जब तक नेत्र खुले हैं तबतक सब दिखलाई देते हैं अर्थात जबतक पुद्गल में चेतन विद्य-

मान है जब तक सब सुन्दर मालूम होते हैं और जहां नेत्र बन्दहुये कुछभी दृष्टि नहीं आता जिस तरह स्वप्न अवस्था पीछे कुछ नहीं दिखलाई देता उसी भांति शरीर के भंग होने पर कुछ नहीं रहता—और आयु दिन २ घटती जाती है और जरा अवस्था जो कि मृत्यु की मित्र है समीप आती जाती है यहा तक अपने चुङ्गल में कर लेती है फिर कुछभी नहीं रहता अब इस वक्त न माता काम आती है न सुत काम आता है न स्त्री न भाई कोई काम नहीं आता वह तो विचारा जिस से नर तन पाया था अन्यथा विषय भोग क्रोध, मान, माया, लोभ, अहंकार के वशीभूत हो उड़ाचले अर्थात खर्चचले—और यह जो सब कुटम्बी हैं अपने स्वार्थ को भंग देखकर हाय २ मचानेलगे और यह विचारनेलगे कि शीघ्र इसको घर से निकालो द्रव्य जिस को कपट और छलकर झूंठ बोलकर उपार्जन करी वह सब धरतीही में गड़ी रहजाती है वही स्त्री जिसकी अर्धाङ्गनी कहते हैं अर्थात मनुष्य का आधा अंग है यह भी साथ नहीं जाती द्वारपरही रहजाती है कुटुम्बी जन मसान भूमितक के साथी हैं और यह शरीर जिस को मनुष्य अपना मानरहा है चिताही पर जलजाता है केवल शुभ या अशुभ कमाया हुआ कर्म वही जीव के साथ जाता है इस से हे प्यारे भाईयो ! अपने आत्मा का कल्याण चाहतेहो और आवेनाशिक सुख जो मोक्ष ताहि चाहतेहो तो शुभ कर्म का उपार्जन करो और नरतनु पाकर नर्क के महान दुःखों से बचो यह नरतनु हरेक किसी को प्राप्त नहीं होता नर्क निगोदादि से जीव निकलकर अपने कर्मानुसार चौरासी लक्ष योनी में भ्रमता तब उस को नरतनु प्राप्त होता है देव लोग भी इसी फिक्र में रहते हैं कि आयु पूर्णहो कब मनुष्य योनी मिले तपकरें और कब मोक्ष पावें सो भाई जीव नरतनु पाकर प्रमाद वश होकर भूलजाता है इस से हे भाईयो नरतनु पाके शुभकार्य का उपार्जन करो धर्म ध्यान से अच्छी संगत करो धर्मात्माओं से प्रीत करो वही तुम्हारे संग आवगा और कोई काम न आवेगा—

अब मैं अपने लेख को पूर्ण करता और क्षमा मांगताहूं कि अगर कोई शब्द मेरे व्याख्यान में ऐसे आयेहों जो आप को बुरे लगेहों तो क्षमा करें ॥

जैनजाति का शुभचिंतक
शालिग्राम उपमंत्री
दिगम्बर जैन पाठशाला
प्रयाग

चिट्ठी

सिद्ध श्रीसर्वोपमान विराजमान सकल गुण निधान सकल जैनी पंचान १३ पंथी आम्नाय योग्य लिखी मेडू से बनारसीलाल व सुधारसीलाल जैसवालका बहुत धर्म स्नेह पूर्वक जैजिनेंद्र बंचना ॥ आ

कमारे पिता बाबू छोटेलालजीने सूत्रजी छंद
जुं देव पूजा नित्य नेम की भाषा व पद
ादि तयार किये थे अब २० अप्रैल स-
१८९२ ई० मिती बैशाख बदी ८ सं-
९४९ को उनका देव लोक हुआ तब
आज्ञादी कि गुटका भाषा पूजन व पद
ादि व सूत्रजी छंद बंद के लिखवा कर
त्येक २ मंदिरजी में भेजना जिस से भ-
व्यजीव भाषा में पढ़ कर समझें और पूजन
भगवान के अति आनन्द उठावें ॥ उ
की आज्ञानुसार गुटका लिखवाएगए और
त्येक २ मंदिरजी में निम्न लिखित तफ-
सील से भेंट भेजी गई ॥ १— शेर को
जिला बिजनोर मारफत लाला गनेशी
लाल जैसवाल पाठक जैन पाठशाला नहटौ
जिला बिजनौर २— अलीगढ मंदिरजी
राय जिज्ञो में मारफत मुधारसीलाल ॥
— फरुखाबाद मारफत बाबू बनारसीला
। ४— मैनपुरी मारफत तथा ५-न
टौर जिला बिजनौर मारफत लाला गने
लाल पाठक जैन पाठशाला नहटौर ॥
— खतौली जिला मुजफर नगर ७- स-
ारनपुर ८— दिल्ली ९— जैपुर १०— अ
मर ११— इटावा १२— मथुरा पुस्त
नम्बर १ से १२ तक श्रीजंबूस्वामीजी
मेले में यात्री भाईयों के हाथों भेजी गई
१— लखनऊ मारफत लाला केदारनाथ
ो लखनऊ निवासी ॥

आशा है कि ऊपर लिखे स्थानों में अवश्य पहुंच गई होंगी और भ्रातृजन भा
षा पूजन करके अति हरखित होते होंगे
और धर्म की उन्नति करते होंगे ॥ मैंने
कोई स्थानों में पोस्ट कार्ड भेजे मगर पुस्त
कों की पहुंचका जवाब कहीं से न आया
अब सविनय प्रार्थना है कि भ्रातृजन कृपा
करके धर्म स्नेह से मुझे पोस्टकार्ड द्वारा
या जिस तरह वह मुनासिब समझें पुस्तकों
की पहुंच से सूचित करेंगे मैं उन को अति
धन्यवाद दूंगा ॥ और जहां पुस्तक न प-
हुंची हों तो मारफत वाले भाईजी की से-
वा में निवेदन है कि वह इस समय तक
पुस्तक की प्रति कर चुके होंगे अथवा अ
न्य प्रति करके पुस्तक जहां के मंदिरजी के
लिये दीगई हैं वहां भेजदें अथवा भिजवादें
मैं उन के इस अहसान को कभी न भूलूंगा।

सहधर्मी भाईयोंका दास
मुधारसीलाल जैसवाल
मेरू निवासी

धर्मोपदेशनी सभा जैनमंदिर धूलियागंज आगरा

मैं अत्यन्त हर्ष के साथ प्रगट करता हूं कि इस सभाका तीसरा समागम मिती बैशाख शुक्ला १५ सोमवार के दिवस रा-त्रि के समय हुआ जिस में श्रीमान पंडित बलदेवदासजी ने अपनी मधुरध्वनि करके आत्म के स्वरूप के विषय में बहुत उत्तम रीति के साथ वर्णन किया जिस में पहले

मंगलाचर्ण के श्लोक के अर्थ में उक्त पंडितजी साहब ने दो घंटे व्याख्यान दिया जिस में मिथ्या दृष्टिन करके कल्पित जो वस्तुका स्वरूप उस को असत्य दिखाया इस को प्रमाण करके सिद्ध किया जो २ प्रयोग प्रमाण के पंडितजी साहब ने कहे वे यद्यपि क्लिष्ट थे तथ पि इस उत्तम रीति के साथ वर्णन किया कि संपूर्ण सभा इस व्याख्यान को सुन कर चकित होगई संपूर्ण सभ्यजनों के मुख में से सिवाय धन्य धन्य शब्द के कुछ नहीं निकलता था बाद इस के पंडितजी साहब ने आप्त के स्वरूप के कहनेका प्रारम्भ किया जिस में आदि में एक श्लोक पढा उस श्लोक से आप्तका स्वरूप वर्णन किया जिस में यह बात दिखाई कि देखो जैनियोंके कैसा निःपक्षपना है यहां पर किसी पुरुष का नाम नहीं लिया जो कोई तीन विशेषण करिके संयुक्त हो वही हमारा आप्त है हमारे किसी से द्वेष भाव नहीं हैं फिर तीन विशेषण किस में पाये जाते हैं इस में पहिले मिथ्या देवादिक में ये विशेषण नहीं पाये जाते हैं ऐसा सिद्ध किया उन के वचनो में पूर्वा पर विरोध तथा सदोषपना सिद्ध करिके केवल अरहंत में ही इन तीनों विशेषणों को सिद्ध किया सो समय बहुत व्यतीत होने के कारण और सर्व भाईयों को आकुलता होने के भय से कथन को संकोच करके यह कहा कि अगली सभा में आप्त के ही स्वरूप विषय में वर्णन किया जायगा परन्तु वर्णन उक्त पंडितजी साहब ने कहा को लिखने को मैं अशक्य हूं क्योंकि ज्ञानों के वचन मूर्ख नहीं लिख सक्ता। समय के आनन्द को कौन कहने को समर्थ है यदि ऐसे विद्वान और धर्मात्मा सभा की और दृष्टि करेंगे तो क्या मिथ्यात्व रूपी अन्धकार ठहर सक्ता कदापि नहीं हम सर्व भाईयोंका बड़ा पुन्यो दय है जो ऐसे धर्मात्मा इस समय में प्राप्त हो कर हम को इस अन्धकार से दूर करते हैं सो सत्य ही है सज्जन पुरुषोंका जीवन पराये उप कार के ही अर्थ होता है फिर अन्त में सर्व भाईयों की आज्ञानुकूल मैंने उक्त पंडितजी साहब को धन्यवाद देके अपनी मंद बुद्धि अनुकूल उन के कथन को पुष्ट करके सम्पूर्ण सभा को धन्यवाद देके सभा विसर्जन करी ॥

आपका कृपा कांक्षी

चिरंजीलाल सभापति

प्रार्थना

हमारे पास स्यौपुर के भाईयों का मजमून इस विषय का आया था कि जल में मुर्दे को न जलाना चाहिये सो मजमून हमने जैनगजट अंक २४ में छापदिया

पत्र लाला चिरंजीलालजी बारहपुर नि-
वासी ने लिखा है कि हमने शास्त्रों से
अन्य पुरुषों से यह सुना है कि मृतक
शरीर में एक महूर्त पीछे जीव उत्पन्न
होजाते हैं जब एक महूर्त पीछे जीव उ-
त्पन्न हुये तो सन्ध्या के मृतक शरीर में
तो रात्रिभर में अनेकानेक जीव उत्पन्न
होजावेंगे—इस लिये जैन पंडितों से अथवा
बुद्धिमान पुरुषों से प्रार्थना है कि इस बात
का ठीक उत्तर देवें (कि रात्रि में मुर्दा ज-
लाना चाहिये वा नहीं) सो जैनगजट में
छपकर उक्त लाला साहब तथा अन्य भा-
इयों का सन्देह निवारण किया जावे ॥

एक स्त्री की प्रार्थना ॥

धर्म शास्त्रों और नीति पुस्तकों में यह
लिखा है कि दीन अनाथपर दया करनी
चाहिये परन्तु हम स्त्रियोंपर जो पुरुषों केही
आधीन हैं दया तो कौन करता है वर्णन
से बाहर हमपर अत्याचार होते हैं और
हम को अत्यन्त कष्ट दिया जाता है इस में
कुछ सन्देह नहीं है कि इस अत्याचार के
कारण केवल हम स्त्रियों कोही दुःख नहीं
होता है वर्ण पुरुष भी बहुत नुकसान उ-
ठाते हैं क्योंकि स्त्री और पुरुष का दृढ
सम्बन्ध है परन्तु पुरुष हमारी ओर से ऐसे
बेपरवाह होरहे हैं कि हमपर अत्याचार क-
रने के वास्ते अपने नुकसान का भी कुछ
विचार नहीं करते हैं यह बात सब लोग
स्वीकार करते हैं और बहुधा उपदेशों और
कथाव्याख्यानों में भी कही जाती है कि चौ-
रासी लाख योनियों में केवल एक मनुष्य
पर्याय में धर्म सेवन होसक्ता है, मनुष्य देह
और उत्तम कुल बड़ी दुर्लभता से मिलता है
सो यह मनुष्यदेह बड़ी मुश्किल से प्राप्त
होनेपर भी पुरुषों की बेपरवाही के कारण
केवल निष्फलही नहीं होजाता है वरण
पाप उपार्जन का हेतु होजाता है—हेतु इस
का यह है कि हम को पुरुष विद्या नहीं
पढाते हैं जिस के सबब हम सत्य जैनधर्म
से बिलकुल अज्ञान रहती हैं और धर्मसेवन
की जगह मिथ्यात्व सेवन करती हैं और
पुरुषों की देखा देखी जिनबिम्ब के दर्शन
करना उपवास आदि करना तीर्थ स्थानों में
जाना भी जोकुछ हम स्त्रियें करती हैं वह
भी विपरीति श्रद्धान और विपरीति प्रकार
ही से करती हैं कि इन कामों में भी हमारी
अज्ञानता के कारण पुण्य की जगह पापही
उपार्जन होता है और अन्त को हम नर्क
की पात्र होती हैं क्या इस से अधिक कोई
कष्ट हमारे वास्ते होसक्ता है—हाय शोक
महा शोक यह मनुष्य जन्म जो कल्याण का
हेतु है परंतु हमारे वास्ते पाप उपार्जन का
कारण हो—हम अपने दुःख की सीमा को
कहां तक वर्णन करें—हम घर के अन्दर
रहती हैं इस वास्ते विद्या पढने के विना
और कोई कारण हम को ऐसा नहीं मिल
सक्ता है जिस से हम को कुछभी बुद्धि प्रा-
प्त हो—पुरुष घर से बाहर रहते हैं जिन

प्रकार के मनुष्यों को देखते हैं नाना प्रकार की बातें सुनते हैं इस कारण पुरुष तो विना पढ़े भी बुद्धिमान होसक्ते हैं परन्तु हमारे वास्ते विना पढ़े बुद्धि प्राप्तहोना असम्भव है—संसारी जीव अनादि काल से मिथ्यात्व और मोहजाल में फसाहुआ है इस कारण मिथ्यात्व तो विना सीखे सिखाये इस के साथ लगाहुआ है आवश्यकता तो सम्यक्त सीखने की होती है सो विना शास्त्रज्ञान के कैसे प्राप्त हो शास्त्रज्ञान हम स्त्रियों को कराया नहीं जाता है इस कारण हम श्रावककुल में जन्म लेकर भी पूर्ण मिथ्यात्वी होती हैं—आज कल यह बात जगत प्रसिद्ध होरही है कि स्त्रियें मूर्ख उलटी समझ वाली होती हैं सो यह कहावत निस्सन्देह इस समय के अनुसार विल्कुल सत्य है क्योंकि हमारी तो दशाही अद्भुत होरही है मिथ्यात्व सेवन करने और कुगुरु कुदेव के पूजने में भी हम किसी एक पन्थ की शरण नहीं लेती हैं वरण निर्बुद्धि होने के कारण जो कुछ कोई कहता है या जो कुछ किसी को करता देखती हैं उसही पर श्रद्धान करने लगती हैं अर्थात जिस प्रकार बहरूपिया नाना प्रकार के स्वांग भरता है ऐसीही हमारी दशा है हम कभी तो ब्राह्मणों के देवी देवताओं को मनाती हैं, कभी मुसल्मानों के देवता ख्वाजा खिजर के नाम का चराग रखती हैं और मुसल्मानों के पीरों की कबरों पर जाजाकर मिन्नतें मनाती हैं मुसल्मानों से गंडा तावीज कराकर बच्चों के गले में पहनाती हैं और कभी श्री जैन मंदिरों में जाकर श्री भगवान की प्रतिमाजी के आगे सीस नवाती हैं और बेला तेला व्रत रखती हैं परन्तु मतो [illegible] यह जानती हैं कि ब्राह्मणों के देवता कौन हैं और उन में क्या शक्ती है और न यह मालूम है कि ख्वाजा खिजर के नाम [illegible] चिराग क्यों रक्खाजाता है और ऐसाही [illegible] को यहभी खबर नहीं है कि जैन मंदिरों में [illegible] जाना चाहिये और व्रत रखने से क्या ल[illegible] है हम तो सब को एकसा जानती हैं [illegible] अन्य को इस प्रकार करते देखकर हम [illegible] करने लगती है हम नहीं जानती कि [illegible] धर्म किस को कहते हैं क्या यह हमारी द[illegible] पशू से भी बुरी नहीं है क्या हम सेभी अ[illegible] कोई मूढ़ होसक्ता है क्या हमारे पाप [illegible] कुछ सीमा है हमारे वास्ते नर्क का [illegible] हमारे पाप का पूरा दण्ड नहीं है इस [illegible] रण हमारे को तो अत्यंत अज्ञान दशा [illegible] र्थात निगोद मिलना चाहिये ॥ हाय [illegible] हम अभागन स्त्रियों के कारण यह [illegible] कुल भ्रष्ट होगया और जैनधर्म को [illegible] हानि आगई कि अब केवल नाम मात्र [illegible] धर्म रहगया है और यदि अबभी स्त्रीं [illegible] का कोई प्रबन्ध न हुआ तो थोड़ेही [illegible] में नाम मात्र भी नहीं रहेगा—हाय [illegible] है हम को हमारे कारण पुरुषों को मि[illegible] थ्यात्व और मूर्खता के काम करने प[illegible] और नर्क का पात्र बनना पड़ता है [illegible] हाय हम महापापिनी अपनी मूर्खता [illegible]

न अपने बालकों के वास्ते हत्यारी बनती अर्थात जब उन को कोई बीमारी होती तो हम (विपरीत बुद्धि) वैद्य हकीम से छुकर बीमारी की औषध नहीं होने देती वरण किसी हिन्दू मुसल्मान से झाड़ा-फोही कराकर उन को मृत्यू को प्राप्त रदेती हैं ॥ इसी प्रकार हमारी मूर्खता कारण हम अनेकानेक कष्ट उठाती है र अन्य को कष्ट देती है । यद्यपि इन व बातों की अपराधी हमही होती हैं न्तु यदि वास्तव में देखाजावे—तो इस में पराध हमारा नहीं है पुरुषों काही है ों कि स्त्रियें अपने वास्ते विद्या पढ़ाने दि का कोई प्रबन्ध नहीं करसक्ती हैं बात पुरुषों के आधीन है वें चाहैं स्त्रियों विद्या पढाकर गुणवान करैं चाहैं मूर्ख —अब हम स्त्रियां हाथ जोड़कर पुरुषों यह प्रार्थना करतीं हैं कि वह अवश्य रे पढाने का प्रबन्ध करैं ॥

हमने यह सुना है कि मथुरा में जैनी यों ने इकंठ होकर धर्मोन्नति और वि-न्नति के वास्ते एक सभा स्थापन की है कारण उस सभा के मंत्री साहब से री विशेष प्रार्थना है कि वह हमारी दशा का हालभी सभा में पेशकरैं और री इस दुर्दशा के दूर करने काभी उ-करैं अन्त में हम यह बात कहती हैं जबतक हमारी दशा का सुधार न होगा क सभा का कोई मनोर्थ सिद्ध न होगा क्योंकि गृह सम्बन्धी सर्व कार्य हमारेही द्वारा होते हैं

दासी एक स्त्री श्रावका

भरथपुर

यहां दिनों दिन धर्म कार्य में अवनति और मिथ्यात्व और कुरीतियों में उन्नति होती जाती है इस लिये कुछ कहा नहीं जाता परन्तु कहे बिन रहा नहीं जाता इस कारण लाचार कुछ कहना पडा काल के प्रभाव से इस क्षेत्र में धर्म के काम में बहुत शिथिलता आगई है—बहुतसी कुरीतियें जो आपकी प्रेरणा से अन्य २ जगहों में बन्द होती जाती हैं यहां उन के विरुद्ध जो रीति खोटी आतिशबाजी वगैर विवाह आदि में लेजाना पहिले से बन्द थी वोह अब प्रचलित होती है ॥ यद्यपि आप सारिखे सज्जन परोपकारी पुरुष ऐसे पुकार २ कर मिथ्यात्व निद्रा में सोते हु-ए जैनियों को जगा रहे हो परन्तु हम लोग ऐसे बेखबर अचेत सो रहे हैं कि आप की उपदेश रूपी मधुरध्वनि को बि-लकुल नहीं सुनते लेकिन यह भी बात है कि महासभा की ओर से जैनियों के सचेत कराने में उपदेशकों की भी कमी है अब तक यहां पर कोई उपदेशक महाशय नहीं पधरे— यद्यपि महासभा इस बात का प्रबन्ध कर रही है कि जगह२ उपदेश-क भेज कर धर्म की उन्नति करावै परन्तु जब तक हर जगह और खास कर ऐसी

जगह जहां धर्म कार्य में बहुत शिथिलता है बिना उपदेशक भेजे धर्म कार्य की उन्नति नहीं होगी तब तक कोई कार्य नहीं चल सकैगा ॥

अब यहांका यह हाल है— कि जैन गजट सप्ताहिक पत्र आता है— उस को सब भाई नहीं सुनते दश बीस भाई देखते हैं उन के करने से कुछ हो नहीं सक्ता जो बिरादरी में अग्रणीय और माननीय है वो इस तरफ से बिलकुल बे खबर हैं यहां कभी सभा नहीं होती जो कुछ प्रबन्ध हो सकै ॥

बहुत से भाईयों को इस गजट के जारी होनेका और महासभा के प्रबन्धोंका बिलकुल हालही मालूम नहीं है नकशे संख्या जैन और पाठशालादिके यहां आये हैं वोह सब रक्खे हुए हैं उन के भेजने की कोई कारवाई नहीं है ॥

और आपने जो जैन महा विद्यालय के वास्ते ग्रह पीछे एक रुपया देना गजट में लिखा है बहुत ही प्रशंसनीय और कुछ कठिन नहीं हैं परन्तु यहां पर अभी उस के वास्ते कुछ प्रबन्ध नहीं है अब हाल में जो नकशा सभा का वा विज्ञापन वा कारड महा मंत्री महासभा से प्राप्ति निधी नियत करने की बाबत आये हैं सब रक्खे हुए हैं किसीका प्रबन्ध नहीं है इन सब बातोंका प्रबन्ध न होना केवल सभा न होनेका कारण है मेरा यह लेख बहुत अयोग्य है कि महासभा जो धर्मोन्नति में कटिबद्ध होकर प्रयत्न कररही है उसके लिये मैं ऐसे शब्द लिखूं मैं एक अल्प बुद्धिका मनुष्य हूं परंतु जब नहीं रहागया और जैन गजटने मुझको प्रेरणा की तो जो कुछ समझ में आया लिख दिया मेरे इस लेख का दोष क्षमा कीजिये अब मेरी महासभा से सविनय प्रार्थना है कि इस जिले में बहुत जल्दी उपदेशक महाशय के उपदेश द्वारा धर्म की उन्नति होनी चाहिये ॥

यहां के जिले में बहुत सी जगह जिनालय हैं और जैनी भाई वास करते हैं परंतु धर्म कार्य में बहुत ही शिथिलता है कहां तक लिखूं— आशा है कि मेरे इस तुच्छ लेख पर महासभा अवश्य ध्यान देकर उपदेशक महाशय को यहां अवश्य भेजेगी॥

चिरंजीलाल भरतपुर

नोटिस

लाला चिरंजीलालजी भरतपुर लिखतेहैं कि प्यारेलाल व्यास कठूमर जिला अलवर निवासी जो निर्माल्य द्रव्यका ग्रहण नहीं करते हैं और जिन्होंने अद्भुत अनुपम श्री जिन धर्म अंगीकार कर लिया है अपनी आजीविका लेखवृत्ति से करते हैं परन्तु इस देश में लिखाई कम मिलने के कारण इन को आजीविका की कमी रहती है यह बडे धर्मात्मा और सज्जन हैं इनका लेख अति उत्तम है शुद्ध भी लिखते हैं लिखने समय शास्त्रजी की बडी विनय क

बसते हैं क्योंकि जिन धर्मी हैं इन पर ग्रन्थ लिखाने में कैई फायदे है- दूसरे धर्मात्मा की आजीविका की स्थिरता करना कराना मुख्य धर्म है इस वास्ते जिस किसी महाशय को जैन ग्रन्थ लिखाने हों इन से लिखावें नियम लिखाई आदिका पत्र द्वारा इस पते से उन से पूछ लेवें; मुकाम कठूमर डाकखाना खेरली श्रीजैन मंदिरमें प्यारेलाल व्यास केपास पहुंचें ॥

जैनकालिज की सहायता

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी सहाव जैजिनेंड; आप के गजट के पढनें से बहुत खुशी हासिल होती है और अन्य नगरों के समाचार पढ कर अत्यन्त हर्ष प्राप्त होता है जैनकालिज के वास्ते बहुत से भाईयों ने एक २ मासकी आमदनी देना स्वीकार किया है इस मजमून को पढ कर मेरे भी चित्त में उत्साह पैदा हुआ है सो में भी अपनी एक माहकी आमदनीका रुपया वास्ते जैन कालिज के दूंगा जिस वक्त १०० भाईयों की राय आप के पास आजावैं उस वक्त मुझको सूचित कियाजावै में एक मासकी आमदनीका रुपया रवाना कर दूंगा- और एक पैसा फी आदमी देने की राय भगटकी गईहै सो जिन२ साहबों ने गजट को पढा है मंजूर करते हैं लेकिन इस की पंचायत से मंजूरी करा कर भेजूंगा ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
बन्शीधर झुमनलाल
कामां रियासत भरतपुर

संसार की अद्भुत दशा
दो शरीर संयुक्त लड़कियां,
श्री वेण्कटेश्वर समाचार पत्र से

बंगदेश के उड़ीसा प्रांत के निकट नवापाड़ा नाम एक ग्राम है उस ग्राम में पांण जाति का एक महा कंगाल खेत्रोजी नायक नाम एक ब्राह्मण रहता था उस की स्त्री का नाम अपोच्यहारा है, इस अपोच्यहारा के उदर से दो कन्यायें एकसाथ उत्पन्न हुईथी जिनका समग्र शरीर तो पृथक २ था अर्थात शिर, हाथ, पैर, टांग सब अलग २ हैं परन्तु जिस प्रकार दो बालक एक दूसरे के आमने सामने खड़े होकर अपने पेट को मिलावें इस प्रकार उन का पेट जुड़ाहुआ है-यह अद्भुत रचना देख लोगों ने अनेक प्रकार की बातें खेत्रोजी नायक से कहनी प्रारम्भ करदी कोई तो कहता था कि तुम्हारे घर में पिशाचका जन्म हुआ है, कोई कहता था कि यह राक्षस हैं इस प्रकार अनेक प्रकार से लोग उस गरीब ब्राह्मण को लज्जित किया करते थे—उस ग्राम के तहसीलदार साहिब बाबू नारायणचन्द्र नायक को उन्हों ने सम्मति दी कि तुम किसी मूर्ख का कहना कदापि न सुनो मैं सब प्रकार तुम्हारी सहायता पर

उद्यत हूं ॥ उन की इस शुभ संमति से इन अज्ञान बालकों की जान बचाई और सृष्टि को यह अद्भुत चमत्कार दिखाया लोगों ने धूर्तता कर बिचारे इस गरीब ब्राह्मण को जाति से भी अलग कर दिया था इस के घर में आना जाना बन्द कर दिया गया था— कुछ काल के लिये एक मुसल्मान ने कुछ धन देकर इस अपूर्व जोडेका ठेका लिया और कई स्थानों में उन्हें दिखा कर बहुतसा धन भी पैदा कर लिया था— अब एक अंग्रेज ने बहुतसा धन दे कर उन के माता पिता से पांच वर्ष केवास्ते यह अद्भुत जोडा ले लिया है और देश विदेश दिखाता फिरता है ॥

जितना भाग इन के उदरका जुडा है वह चार या पांच इंच लम्बा और दो इंच चौडा है ॥ यह जान पडता है कि एक दूसरी को आलिंगन कर रही है इन को चलने में अत्यन्त ही कष्ट होता है दोनों की प्रकृति एकसी है एक साथ दोनों को क्षुधा लगती है और एक ही साथ भोजन करती हैं— एक बार यह अपूर्व जोडा बीमार हुआ था, एक को औषधि दी गई जब दूसरी को देने लगे तो उसने फेकदी और कहा कि मुझे आवश्यक्ता नहीं है यदि एक को कोई पदार्थ दिया जाय तो दूसरी भी मांगती है यदि न दीजिये तो आपस में लडती हैं— एकही समय पर यह दोनों सोती हैं और एकही समय पर जागती हैं ॥

सम्पादक

संसार में कैसी २ अद्भुत बातें देखने में आती हैं इन जुडे हुए दो बालकों को कितना कष्ट है इसका कुछ बयान नहीं हो सक्ता है क्या यह दोनों बालक एकही समय में मरेंगें या अलग २ समय पर यह हम नहीं जान सके परन्तु यदि एक पहले मरेगा तो दूसरा उस के मृतक शरीर को साथ २ खैंचे २ फिरैगा हाय २ कैसा कष्ट है ॥

अफसोस— संसार को ऐसा भयानक और दुख दाई जान कर भी हम इस से प्रीति करते हैं यह वृतान्त जैन गजट में इसही कारण लिखा गया है कि इस को पढ कर हमारे पाठकों को संसार की दशा का कुछ ध्यान होवै ॥

जैन पद्धति के अनुसार विवाह

यहां कस्बे करहल जिला मैनपुरी में लाला बल्देव दास के यहां पं० धर्म साहय की पुत्रीका विवाह मिती ज्येष्ठ वदी ६ का था बरात मौजा नंदगवां जिला आगरे से लाला रामलालजी साहब पोत्दार के यहां से आई थी— बागवाडी— वेश्या—भांड— पैग— अंग्रेजी बाजा वगैर: बिलकुल नहीं थे गोकि पोत्दार साहब को इन सब सामान के करनेका होसिला था और इस से पहिले करते थे परन्तु सभा की आज्ञानुसार और उपदेशक साहबकी मर्जी पाकर बन्द रक्खे गये— प्रथम ही बरात अ

ने पर बारोठी के समय स्त्री गाती हुई कू-आ पूजने को जाया करती थी वह रिवाज बन्द कर दीगई और इसकी जगह सर्व स्त्रियां जिन मंगल पढ़ती हुई गाजे बाजे सहित मंदिर में गई वहां पर श्रीजी के दर्शन करके अपने २ घर पर लौट आई इसी प्रकार सर्व कार्य जैन मतानुसार बड़े आनन्द से हुआ— विवाह के पश्चात उसी रोज दरवाजे पर बरात के आने से पेश्तर लाला साहब ने आपनी कोठी को फर्श चान्दनी आदि बिछोने से सजा कर और एक मेज जरी के रूमाल बिछा कर सजा रक्खी थी दो बजे बरात दरवाजे पर आई उसी वक्त विनय पूर्वक सब भाईयों को उक्त कोठी में बिठलाया ॥

प्रथम चिरंजीव जसवन्तराय और श्री रतिदास दो विद्यार्थियों से मेज के पास खड़े हो कर समधी साहब की स्तुति रूप श्लोक मय अर्थ अन्वय के पढ़वाये कि जिन के सुन्दर शब्दों को सुन कर सर्व ही बराती हुलासित चित्त हुए तत्पश्चात मंदिरजी को गये वहां पूजन कर एकसौ एक १०१) रुपये पोत्दारजी ने मंदिरजी को भेट किये तीसरे रोज नौतनी हुई ॥

दूसरा विवाह मिती ज्येष्ठ वदी ९ को पंडित मार्दोलालजी साहब के यहां था बरात शिकोहाबाद जिला मैनपुरी से आई थी बागवाड़ी वेश्या आदि नहीं थे विवाहका सब ही कार्य जैन पद्धिति के अनुसार हुआ ५१) रुपये मंदिरजी की भेट किये— अब सहस्र धन्यवाद इन महाशयों को दिया जाता है कि जिन्हों ने कुरीतियों को मेट सुरीतियों का प्रचार किया दूसरों के लिये उपमा योग्य हुए— क्यों न हो पंडित मार्दोलाल जी साहब हमारे लवेंचू गोत्र में विद्वान और शुभ आचरण के प्रकाश करने को अद्वतीय दिवाकर हैं और यहां सभा के उपदेश दाता और अग्रणी है दूसरे लाला धर्म सहाय जो कि उपदेशक महासभा मथुरा हैं और जगह २ कुरीतियों के मिटाने को हर वक्त कटिबद्ध रहते हैं फिर ये साहब क्यों अपने यहां मिथ्या मार्गों का प्रचार होने देवें ॥

जैनी भाईयोंका शुभ चिन्तक
गुर सहाय उपमंत्री
जैनसभा करहल

धवलादिक सिद्धान्तों के जीर्णोद्धार की सहायता

इस विषयका एक विज्ञापन पहले छप चुका है लेकिन आज एक चिठ्ठी लाला गोपालदासजी की बम्बई से आई है उन्हों ने प्रकाशित किया है कि शोलापुर और बम्बई के भाईयों ने अनुमान ४०००) रुपयेका चिठ्ठा श्रीधवलादिक सिद्धान्तों के जीर्णोद्धार की सहायता के अर्थ तयार किया है और भी कोशिश हो रही है इन रुपये देने वाले महाशयों के नाम किसी

आगामी अङ्क में प्रकाशित करेंगे हम ऐसे कार्य में सहायता देनेवाले भाईयों को कोटिशः धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि उन की रुचि धर्म की तरफ सदैव ऐसीही बनी रहेगी ॥

समाचारों का गुच्छा

देवरी जिला सागर—यहां पर जैनी भाईयों के ८२ घर है और ४ जिन मंदिरजी हैं अब एक और नवीन जिनमंदिर भाई खूबचन्दजी बनवारहे हैं जल्द तय्यार होजायगा—यहां पर सभा होती है परन्तु भाईयो में ऐक्यता न होने के कारण सभा का प्रबन्ध ठीक नहीं है ॥ भाई वंशीधरजी शास्त्रजी का व्याख्यान करते हैं ॥ अफसोस जैनियों में अनैक्यता का बहुतही प्रचार है॥

वहरायच—यहांपर पहले एक चैत्याला था परन्तु अब लाला जवाहरमल रीवांह निवासी के उपदेश से जो वहां कार्य वशात गयेथे भाईयों के चित्त में एक मंदिर बनाने का उत्साह हुवा हैं चिनाई जारी होगई है ॥ परमेश्वर यहां के भाईयों का उत्साह धर्म में दिनोंदिन बढाता रहै ॥

जैपुर—यहांपर फजूल खर्चों के दूरकरने को बहुत कुछ कोशिश होरही है सभा बराबर होती है ॥

जैनहितैषी पत्र—इस पत्र के बन्द होजाने से भाई मदनलाल श्रीमाली रतलाम ने अत्यंत शोक प्रगट किया है ॥

रंडी का नाच—भाई छोगालालजी गोधा मेलसा रि० गवालियर ने अपनी जाति में रंडी के नाच का प्रचार विवाह समय होने का और रंडी को मंगलमुखी कहने का अत्यंत शोक प्रगट किया है और एक कवित्त में भले प्रकार सिद्ध किया है कि रंडी मंगलामुखी नहीं है वरण कलमुखी है ॥

स्त्रीशिक्षा—भाई सुमेरचंद सहारनपुर निवासी ने एक लम्बे चोड़े लेख में स्त्री शिक्षा की अति आवश्यक्ता प्रगट की है और स्त्रियों को विद्या पढाने का प्रबन्ध करने की बाबत बहुत जोर दिया है ॥

मिथ्यात्व—भाई बनवारीलाल बरनावा जिला मेरठ से जैनियों में मिथ्यात्व का प्रचार पीर पैगम्बर देवीमाता आदि के पूजने के प्रचार पर और जैनियों का घर होलो के स्वांग और विवाह आदि में रंडी के नाच आतिशबाजी फुलवाड़ी में खर्च होने पर अति शोक प्रगट करते हैं और भाईयों को यह विघ्न दूरकरने की प्रेरणा करते हैं ॥

स्त्रियोंकी मूर्खता—लाला हरदेव सहाय पटवारी अत्यंत शोक प्रगट करते हैं कि स्त्रियों की मूर्खता के कारण बच्चे महा दुःख पाते हैं और बहुधा मृत्यु को प्राप्त होजाते हैं क्योंकि रोग आनेपर उनका इलाज नहीं कराया जाता है और इलाज के स्थान पर झाड़ा फूंकी और मूर्ख व लंपी पुरुषों के पास से जड़ी बूटी दीजाती हैं ॥ स्त्रियें भेरूबाबा में अत्यंत करती हैं

को अवश्य समझाना चाहिये ॥

कानपुर—यहांपर पाठशाला नियत भई है लड़के १० के अनुमान पढ़ते हैं परन्तु अभी पढ़ाई का क्रम ठीक नहीं हुआ ॥

आगरा धूलियागंज धर्मोपदेशनी सभा—यह सभा धर्मउन्नति में और कुरीति निवारण में अत्यन्त कोशिश कर रही है भगवान इस सभा के सभापति आदि कार्य कर्त्ताओं को चिरंजीव रक्खें ॥

अलवर—यहां के भाईयों ने फी घर एक रुपया वास्ते जैन कालिज के देना स्वीकार किया है और गोलक भी रक्खी गई है यहां के भाईयों का उत्साह धर्म को तरफ अच्छा ज्ञात होता है ॥

मेंडू जिला अलीगढ—मे लाला पारसीलालजी ने धर्म के स्वरूप को एक बड़ेभारी मजमून में लिखा है सच है धर्मात्मा पुरुषों को धर्म कोही सूझती है ॥

चिट्ठी

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी कृपाकर के निम्न लिखित लेख को अपने अमूल्य पत्र में प्रकाशित कीजिये ॥

मौजा करहल में उत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ—भाई तीन हजार के अनुमान इकट्ठे हुये थे सैली (बाजेवालों की चौकियां) थी और रथ-हाथी-पालकी-विमान, आदि भांति २ की सवारियां थी नृत्य-गान-शास्त्रजी आदि अनेक प्रकार का आनन्द था-एक भाई करहल निवासी ने एक बेर हवेली एक दुकान श्री मंदिरजी में दीने—आजकल कांधले में ढूंढिये लोग इकट्ठे होरहे हैं उपदेश कररहे हैं हम चाहते है कि पं० चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासी और पं० जियालालजी जोतिषरत्न यहां आजावें तो इन ढूंढियों के उपदेश से हम लोग बचजावेंगे।

हमने जो पहले लिखे जैपुर के जैनी भाईयों से आतिशबाजी मौकूफ करने का दान मागा था उस का परिणाम आप को मालूम हुआ होगा—गाजियाबाद और दादरी के बीच में आतिशबाजी से रेल में आग लगी और पचास लाख रुपये का नुकसान हुआ और १९ आदमी मरगये देखो भाईयो आतिशबाजी का विवाह आदि में लेजाना कैसा बुरा हिंसा का काम है और सुनागया है कि कैई पकड़ेभी गये हैं जोकि आतिशबाजी रेल में बरात के साथ लिये जाते थे—और नौसो यानी दुल्हा को भी नुकसान पहुंचा है—भाईयो सोचनीय दशा है कि इस आतिशबाजी मे कैसा भारी नुकसान हुआ फिर भी हमारे भाई इस का त्याग नहीं करते यदि विवाह आदि में आतिशबाजी न लेजावें तो क्या कुछ विवाह की शोभा मारी जाती है अथवा कुछ विवाह कार्यो में नुकसान आजावे—हम उन भाईयों से भिक्षुक की भांति भीख मांगते हैं कि इस आतिशबाजी का हम को दान देवें और इस हिंसायुक्त निन्दनीय कार्य को अपनी जाति से जुदा करें ॥

जैन महा विद्यालय के वास्ते गोलक

श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी साहब जोग्य लिखी सरायअघत से सकल जैनी पंचन की जैजिनेन्द्र बंचना—आगे गजट आप का आया सो सब भाईयों को पढ़कर सुनाया गया सर्व भाई सुनकर अत्यन्त हर्ष को प्राप्त हुए और उसी समय जैन महाविद्यालय भंडार के वास्ते फी आदमी एक पैसा के हिसाब से चन्दा जमा कर के श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सी. आई. ई. के पास मथुरा भेज दिया और मैं बाबू जी साहब को कोटिशः धन्यवाद देताहूं कि जिन्हों ने समस्त भारतवर्ष की कुल जैन जाति को डूबने से उद्धार किया और जैन जाति की जड़ को स्थापित कर दिया मैं आप के गुणानुवाद को कहां तक वर्णन करसकूं—मैं आशा करताहूं कि अन्य जैनी भाई भी इस जाति के उद्धार तथा सुधार की कोशिश करेंगे:—

जैनी भाईयों का दास
बनवारीलाल सराय अघत
जिला एटा

जैन कालिज की सुगम सहयता

प्रत्येक जैनी भाई को अपने २ घर में एक २ गोलक रखनी चाहिये उस में एक पैसा एक रुपये के फायदे पर वास्ते जैन कालिज के डाला करैं जैसे ५०) रु० का फायदा होवे तो पचास पैसे जैन कालिज की गोलक में डाले जावैं यह एक बहुत सहज उपाय है—और अपने व्यौपार में या लेन देन में हरएक जैनी भाई को ऐसा करना चाहिये कि सौ रुपये पर एक आना वास्ते जैन कालिज के उस गोलक में डाला करैं कहिये साहब यह कैसा सहज उपाय है और निकालते समय किसी को बुरा न मालूम होवे और जैन कालिज की सहायता होजावै बाद तीन मास के जितना रुपया इकट्ठा होवे वो सब श्रीमान सेठजी साहब लक्ष्मणदासजी सी. आई. ई. सभापति म· सभा निवासी के पास भेजदिया जावे हम आशा करते हैं कि हमारे जैनी भाई अवश्य इस प्रकार दृष्टिकर के जैन कालिज की सहायता के वास्ते द्रव्य एकत्र करेंगे—और सच्चे दान का फल उठावेंगे ॥

जैनी भाईयों का शुभचिंतक
शीतलप्रसाद जौहरी
कलकत्ता

॥ श्रीः ॥

जैन जाति की अवनती के कारण

भो भ्रातृगण किंचित इस अल्प लेख पर ध्यान दीजिये—यह बात प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर है कि पहिले की वार्त्ता सुनने से बल्कि दश बीस वर्ष के जमाने की बात देखने से हम जैन जातीय भाईयों की न्यून दशाही नजर आती है मनुष्यों की संख्या धर्म प्रवृत्ति—विद्या का अभ्यास—और लो

काचार का जानना—धन का कमाना—आयुष्य का पाना—उत्तम आचरण का करना और अनुवृतादिक का पालना—और प्रतिज्ञा का निर्वाह करना—शुद्ध खान पान का होना—शील संतोषादिक का रखना—बल्कि दान २ हीन दशा होती जाती है—श्रीजिनागम में काल के अंत तक धर्म रहना—मुनि श्रावक का होना लिखा है सो काल के अंत का बहुत समय बाकी है तो आज कल की दशा तो अंत की दशा से बहुत ही उत्तम दशा होनी चाहिये—परन्तु अब की दशा तो अंत की दशा से भी निकृष्ट मालूम होरही है अवनती और न्यून दशा होने में क्या शक है—तो अब हम को उद्यम और पुरुषार्थ पर आरूढ होना चाहिये—और न्यूनता अर्थात अवनति के कारणों को तलाश करि उन को दूर करना चाहिये:—

१—(प्रथम) धनाढ्य पुरुष हैं सो अपने पुत्र पुत्री का विवाह बाल्यावस्था में करदेते हैं—और कुमारावस्था विद्या पढने का समय है न कि विषय भोग सेवन का सो वह बालक विद्याहीन होकर विषय सेवन में लग जाते ह विद्या रहित हुए धन रहित हुए निरबल होकर आयु पाकर छोटी अवस्था में मरण करजाते हैं—न तो उन की संतान चलती है— और न कुछ ज्ञानाभ्यासादि पुरुषार्थ करसक्ते हैं और इसी तरह मध्य दशा वाले पुरुष जो न तो धनाढ्य और न निर्धन कहाते सो अज्ञान और मोह के बल से अपनी अवस्था को तो देखतेही नहीं और अभिमान के वश होकर धनाढ्य पुरुषों को देख २ उसी रीतिपर चलते हैं सो वहभी निर्धन और दरिद्री होकर पश्चताप और शोक समुद्र में डूबजाते हैं ॥

और अपनी संतान को बिगाडते हैं और कनिष्ट दशा वाले दरिद्री कि जिनका पेट भरनाही कठिन है उन के विवाहादि नहीं होते और न विद्या पढ सक्ते हैं कष्ट से आयु पूर्ण करते हैं उन के संतान और ज्ञानाभ्यास कहां से होवे— और इसी तरह जो बाल कन्या है उनका संबंध या तो धनाढ्य के बालक के साथ होता है सो बहुधा बाल विधवा होजाती है— या उन के संतान नहीं होती या बहुधा वृद्ध के साथ संबन्ध होजाता है तो वह भी वृद्धा- ना के योग से थोडे काल में मर जाता है इस सूरत में वह भी बाल विधवा होजाती है पस मुख्य कारण जातीय अवनतिका यही मालूम होता है बाल विवाह वृद्ध विवाह जिस में अग्रणीय धनाढ्य पुलिया हैं इस से हमारी जातीय अवनति होने के कारण धनाढ्य ही है क्यो कि इसका प्रबन्ध जब तक धनाढ्य मुखिया नहीं करेंगे तो कदापि अन्य निर्वाह नहीं हो सक्ता इस हेतु से हम तो इन्हीं महाशयोंका कर्त्तव्य कहेंगे ॥ (शेषआगे)

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेजी महीनेकी १–८–१६–२४ता०

को

बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिला सहारनपुर से

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० १६ जोलाई.... सन् १८९६ } अङ्क ३

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैनसभा हिम्मतपुर

आगे यहां पर सभा स्थापित होगई— मिती द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १४ को यहां पर आलमपुर, मोहमदी वा शिकावदपुर वा द लखास हिम्मतपुर इन पांचो ग्रामों के सर्व जैनी भाई एकत्र हुए और श्रीजैन मंदिर हिम्मतपुर में सभा हुई— लाला मुन्नाला लजी साहब सभा पतिने धर्म के विषय में बहुत उत्तम व्याख्यान दिया सो सर्व भाई सुन कर अति आनन्दित हुए और धर्मकी तरफ रुचि हुई फिर लाला बनारसीदास रईस जलेसर निवासी ने मिथ्यात्व और फिजूल खर्ची के विषय में व्याख्यान दिया उनके व्याख्यानका असर भाईयों के दिल पर ऐसा हुआ कि बहुत भाईयों ने कुदेव आदिक के पूजनेका त्याग किया और लाला छेदालालजीने नशोंकी बुराईमें व्याख्यान दिया बहुतसे भाईयों ने हर एक प्रकारके नशोंका त्याग किया और लाला बचनलाल मंत्रीने फिजूल खर्ची के विषयमें व्याख्यान दिया जिसको सुनकर सब भाईयोंने स्वीकार किया सो अबकी सभामें नियमावली बनाकर आपके पास भेजी जावैगी और लाला सुन्दरलाल उपमंत्री ने श्रीभगवानकी पूजाके बारेमें व्याख्यान दिया सो सर्व भाईयों को परम हर्ष प्राप्त हुआ और पूजा करनेमें रुचि हुई और लाला शिवशंकरलाल कायस्थ मुदर्रिस (स्कूल हिम्मतपुर) ने विद्या और एकत्रता के विषयमें अति प्रियमनोहर वाणीसे काव्य दोहा छंद छप्पे सहित व्याख्यान दिया उस वक्त सर्व सभासदोंके मुखसे धन्य २ शब्द निकला उस वक्त सभामें अनुमान १०० मरद औरत थे यहां पर समाके नियमों से अभी कोई अच्छी तरह वाकिफ नहीं है इसलिये यहां पर किसी पंडित महाशयको अवश्य पधारना चाहिये जिससे सभाके नियम ठीक २ हो जावें ॥ मुन्नीलाल पद्मावती

पुर हिम्मतपुर जिला आगरा

—•—

विद्यार्थियोंका उत्तर

लाला जुगलकिशोर सिरसावे निवासी के प्रश्नका उत्तर [मुन्शी चम्पतराय] निम्न लिखित महाशयोंने भी दिया है ॥

[१] ला० उमरावसिंह विद्यार्थी जैनपाठशाला इटावा [२] ला० गंगाराम विद्यार्थी जैनपाठशाला बम्बई [३] ला० राधावल्लभ विद्यार्थी विजैगढ जिला अलीगढ ॥ [४] शिवचन्द विद्यार्थी सन्ट्रेलकालिज रतलाम [५] दयाचन्द विद्यार्थी रहली जिला सागर [६] हरिप्रसाद विद्यार्थी रहली जि० सागर [७] अर्जुनलाल सेठी विद्यार्थी जैन पाठशाला जैपुर [८] संगई फतहचन्द सिमलाला जिला सागर [९] बुद्धीलाल विद्यार्थी जैन स्कूल सिवनी छपरा [१०] अम्बाप्रसाद विद्यार्थी अलीगंज जिला एटा ॥ [११] बाबूलाल विद्यार्थी हिम्मतपुर जिला अलीगढ ॥

जैन धर्म नष्ट होता है

हे प्रियवर भ्रातृगणों कुछ मेरी भी विनय सुनिये और दुख सागर में गोता खाते हुए को बचाइये और इसका जल्द उपाय कीजिये और यदि इसका उपाय न किया जायगा तो १४००००० लाख जैनियों में चार लाख भी नहीं दिखलाई देंगे

मैं अल्प बुद्धी अपने धर्मोन्नति कारक भाईयों से यह पूछता हूं कि मुझ को आज कल इस बातका पता नहीं लगा किस पुराण वा शास्त्र में आया वह अन्य मती हो या जैन मती हो यह लिखा है कि बाल अवस्था में लडका लडकी की शादी करना चाहिये यदि कोई महाशय कृपा करके यह बतला देवेगा कि अमुक शास्त्र में इसका वर्णन है तो मैं उस को बहुत २ धन्यवाद दूंगा और बडा ही उपकार मानूंगा ॥

भाईयों बाल अवस्था में शादी करने में बडे २ नुकसान हैं और समस्त भारत वर्ष के भाई जानते हैं और फिर भी जान बूझ कर भेडा चाल चलकर अन्ध कूप में पडते हैं मैं नहीं समझता कि यह कुरीत जिस के कारण हमारी जाति की यह दशा हो गई है किस मूर्ख ने चलाई है हाय २ उनकी बुद्धी पर पत्थर भी नहीं पडे थे जब यह रीत प्रचलित की थी क्या उन को अपनी संतानका भला बुरा भलेका विचार नथा— मैं अब आंख उठा कर अपनी प्यारी धर्म कन्यायों की तर्फ देखता हूं तो आंखो से आंसू निकलने लगते हैं और इस के बराबर संसार में कोई दुख नहीं दिखलाई देता सब दुख दूर होजाता है परन्तु बाल विवाह के कारण दुख जो हमारी कन्याओं को होता है वह नहीं दूर होता और उस को देख २ कर हृदय फटता है ॥

हे हमारे धर्म बान्धवहो मैं अब आप लोगों के सामने उन बुराइयों को वर्णन करता हूं जो बाल विवाह के कारण होती हैं

अव्वल तंदुरुस्ती में फरक आय जाता है और तंदुरुस्ती ही एक ऐसी चीज है कि जिस के द्वारा मनुष्य अपनी उमर को सुख से काट सकता है और इसी तंदुरुस्ती के लिये आदमी अपने शरीर का पालन पोषन करता है गो कि शरीर में महा घिणावनी चीज भरी है तिस पर भी उन सब बातों को छोड कर दिन रात इसी के फिकर में रहता है कि ऐसा न हो तंदुरुस्ती में फरक आजावे तो दुनियां में किसी प्रयोजनका न रहे और कहा भी है "एक तंदुरुस्ती हजार नियामत" सो भाईयों जिस से तमाम जिन्दगी दुख भोगने पडें और तंदुरुस्ती बिगड जाय क्या वह काम करना चाहिये, मेरी समझ में कदापि न करना चाहिये ॥

दूसरी बुराई यह होती है कि विद्या जो सब रत्नों में मुख्य गिनी जाती है वह बिलकुल नष्ट हो जाती है और इसी वि-

द्या के कारण हम लोगो में मनुष्यत्व पना पाया जाता है नहीं हम में और पशुओं में क्या भेद है मैं समझता हूं कुछ भी न होगा हां शायद सींगों और पूंछका भेद हो क्योंकि पशुओंके सींगपूंछहैं हम लोगों के सींग और पूंछ नहीं और अक्सर देखा गया है कि जहां विवाह हुआ तो पढ़ने में चित्त हरगिज नहीं लगता और रात दिन उस को विषय भोग की बात सुहावनी लगती है और जब विषय हुए तो उस को संसार के जितने उपदेश दीजिये कदापि असर न करेंगे अब बतलाइये कि विद्याका अभाव हुआ या नहीं जरूर २ हुआ तो फिर क्यों ऐसा काम करना चाहिये जिस से मनुष्य से पशु कहलावें ॥

तीसरी बुराई यह है कि संतान बिलकुल दुबली हो जाती है और उससंतान को जन्मभर दुख रहता है फिर उस को चाहे जितनी पुष्टादिक दवाइयां सेवन कराई जांय कभी फायदा नहीं बकस सक्ती और इसी से संतान थोड़ी सी उमर में मर भी जाती है और यहां तक कहा जाय जिस सुख के हेतु शादी की थी वह सुख अर्थात जिस से धर्म रक्षा पूरा भी नहीं होने पाता— छोटी सी ही उमर में अपने को संसार से त्याग देते हैं और उन विचारी अबलाओं को जो अभी बिल्कुल बालिका हैं इस घोर दुखरूपी सागर में छोड़ कर चल देते हैं और उन को ज्ञान इस बातका नहीं होता कि हमारा विवाह हुआ है या नहीं और उन अभागनियों को अपनी जिन्दगी दुख काट २ कर व्यतीत करनी पड़ती है बाजी सुधर्मा ऐसी होती हैं कि अपने धर्म में प्रवर्तती हैं अर्थात धर्म सेवन करके जिन्दगी बिताती है नहीं अमूमन यही देखा गया है कि कुसंगती से और अपनी यौवन अवस्था पर आने से कुव्यसन सेवन करने लगती हैं और अपने माता पिताओं बाप दादोंका नाम डुबोती हैं भाईयो जरा सोचने की बात है कि उन अबलाओंको दूषण लगाया कि फलाने की पुत्री फलाने की बहू बड़ी कुचालनी है और अपने को जो शुरू से ही ऐसा वीर्य बोया कि जिस से फल हीन हो तो भितका और दैवको दोष देना कैसी मूर्खता है इस के विषय में कहां तक लिखूं यहां तक देखा गया है कि लड़कों को (माता) देवी चेचक नहीं निकलने पाती दूध के दांत तक नहीं गिरने पाते कि शादी कर दी गोया उन को उसी वक्त से अंधकूपमें डाल दिया और जब शादी होगई तो फिर पढ़ाने की फिकिर की और कहते हैं कि बच्चा पढ़ो वे जबाब देते हैं हम नहीं पढ़ेंगे और बहुत ज्यादा हमारे पीछे पड़ोगे तो हम निकल जायगे माता पिता मारे भय के कि कहीं ऐसा न हो कि दोनों कुल को नाश कर देय न बोलो भीख मांगेगा हमारा क्या बिगड़ना है अब यह लड़का निर्भय हो कर कुसंगत से १० तथा १२ के

की उमर से कुव्यसन से बनेलगाअब क्या है अब तो संसार में जित नेकुव्यसन हैं सबही सीख लिये और थोडी सी जिन्दगी में बदी और नेकी लेकर चल दिये और माता पिता जो ऐसा कहा करते थे कि लडकाही में व्याह होने से माता पिता को सुख होता है और नन्हीं २ बहू आती है सो अब वह माता पिता छाती पीट २ कर रोते हैं कि हाय २ मेरी छोटीसी बहू को कौन पार लगावेगा लडकी के माता पिता न्यारे हाय २ मचाते हैं कि मेरी कन्याको कौन पारलगावेगा और २ कुटुम्बी जन जो हैं वह समझाते हैं कि जो होनेका था सो हुआ कन्या को समझो- वह कन्या अन जान कुछ जानती ही नहीं कि क्यों रोते हैं तो हे भाइयों ऐसी अवस्था को देख कर कौन ऐसा होगा जिसका हृदय न फटेगा मैं समझता हूं पत्थर के भी टुकडे २ हो जायगें इस से हे माता पिताओं इस बुरी भेडा चाल को छोडो और अपनी संतान को जो सच्चा सुख है उस को दिखलाओ और अगाडी के वास्ते ऐसा वीर्य बोओ जो सदा फलदेवे अगर ऐसा न करोगे तो हमारी जाति में कुछ दिन उपरान्त आधे भी मनुष्य नहीं दिखलाई देंगे तो अब बतलाइये जाति का उन्नति होगी या अवनती और जब तक यह रिवाज दूर न होगी तब तक कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सक्ता न तो जाति की उन्नति हो सक्ती न धर्म की न फिजूल खर्ची उठ सक्ती न रंडीका नाच बन्द हो सक्ता— भाईयों यह सब दूर जबही होगा जब जवानी में शादी की जायगी नहीं चाहे जितना चिल्लाओ कभी न होगा— और जवानी में शादी करने से यह सब आप बन्द हो जायगी क्योंकि ऐसा कहा है ॥

(श्लोक) प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितंधनं ॥ तृतीये नार्जितं धर्म, चतुर्थे किं करिष्यति ॥ अर्थात जिसने पहले बाल अवस्था में विद्या नहीं बटोरी दूसरे में धन तीसरे में धर्म तो वह चोथे पन में क्या कर सक्ता है यानी कुछ भी नहीं कर सक्ता इसका सारांश यह है कि सब से पहले विद्या पढाओ सो सब के ऊपर मुख्य है दूसरे धन की फिकिर करो और जब धन प्राप्त करने की योग्यता हो जाय तो वंश चलने के हेतु विवाह करो और फिर देखो जाति की उन्नति होती है या नहीं रंडीका नाच इसी श्लोकका ठीक २ बर्ताव करने से बन्द हो सक्ता है अर्थात जब हम विद्या के गुण जान जायेंगे तो आप विषय भोग छूट जायगें ॥

फिजूल खर्ची भी इसी से छूट सक्ती है क्योंकि धन के प्राप्त करने में जो तकलीफें होती हैं वह सब मालूम हो जायगी तो फिर कभी फिजूल खर्ची न होगी और फिजूल खर्ची जहां तक देखी गयी है वह

अपने हाथ से कमाये हुए में से नहीं देखी गई बाप दादों के संचय किये हुए धन में से देखी गई है मैं समझता हूं कोई भी ऐसा भाई न होगा जो अपने हाथ से पैदा किये हुए धन में से किसीने फिजूल खर्च किया हो जो कुछ हो ज़ादा इस विषय में नहीं लिखना चाहता ॥

अखीर में अपने भरत वासी भाईयों से यही निवेदन करता हूं कि अपने पुत्र पौत्र की शादी १८ वर्ष से पेश्तर कदापि न करो और पुत्री की शादी १२ वर्ष से पहले न करो और यही नियम हमारे बंगाली भाईयों में है अंगरेजो में हैं और इसी से उन में कैसी २ योग्यता पाई जाती है यह सबब व जवानी में शादी करने काही है और यह समय इसी बात से मुकर्रर किया है कि इतनी उमर में लड़का अपने को योग्य बना सक्ता है ॥

शालिग्राम उपमंत्री दि०जै०पा० प्रयाग
मुख्य प्रबन्धकर्ता मिथ्यात्व
विनाशनी सभा अटेर (ग्वालीयर)

जैनजातिकी अवनति के कारण

(अंक २९ पृष्ठ २० से आगे)

(दूसरे) इस समय में धनाढ्य पुरुष तो बहुत विरले हैं और कम रोज गारी निर्धन बहुत हैं सो धनाढ्य तो अपनी उच्चता के अभीमानि से मर्याद उल्लंघन कर शादी विवाह में धन लगा देते हैं और पीछे उन के देखा देखी थोड़ी पूंजी वाले भी अपने मकदूर के सिवाय धन खर्च कर देते हैं और करजदार हो जीवका जमीन जाय दाद जेवर वेच कर दरिद्री होजाते हैं पीछे उन को अपना निर्वाह भी करना मुशकिल पड़ जाता है और आप विद्या और इल्म कुछ पढे नहीं जो अपनी अवस्थाका विचार करते और आमद से खर्च कम करते और चतुर्थांश संचय करते अपने अभीमान पुष्ट करने को वृथा अपने वित्त से अधिक धन खर्च करते हैं यह ही मुख्य कारण धन की न्यूनताका कारण है ॥ (तीसरे) धनाढ्य पुरुष तो धन के मद करके अपने बालक को विद्या नहीं पढाते और निर्धनों के लड़के पेट भरने की फिकर में डांवां डोल फिरते हैं अपनी उत्तम अवस्था को नहीं सोचते पैसे टके रोजाना के रोज गारके वास्ते अपने अमोल्य समय को व्यतीत कर देते हैं तब कैसे न्याय व्याकरण सिद्धान्तका ज्ञान होय और क्योंकर चार अनुयोग के रहस्य को जाने और मनुष्य भव की दुर्लभता को पहिचाने और इस लोक पर लोक के कार्योंको सिद्ध करें जब विद्या ही न रहे तो धर्म हीन अवश्य होंगे और धर्म हीन भये तो धन हीन अवश्य होंगे और धन न हुआ तो क्यों कर दोनो लोकों में उन को सुख मिल सकेंगे सो विद्या धन वा धर्म की हीनताका यही कारण है कि प्रथम अवस्था में अपने संतान को स्वमतावलंबनी विद्याका न पढाना हमारे नगर निवासी बहुधा जैनी लोग ऐसे देखने

में आते हैं कि वेश्या के नृत्य में देने और जोनार के जिमाने में बडे पुरुषार्थी और धनाढ्य और दातार बनजाते हैं और विद्या पढाने में और पाठशाला में देने को कम ताकत और दरिद्री वन जाते हैं फिर क्यों कर विद्या धन धर्म और जाति की उन्नति होवे ॥

मेरे ख्याल में इन सब की वृद्धि और सुगातिका कारण स्वमतावलंबिनी विद्याका अध्ययन करना है और पूर्वोक्त वार्ताओंका मुख्य कारण ऐक्यता है और ऐक्यता तबही होगी जब एक दूसरे की विनय करेगा अर्थात आप बडा नहीं मानेगा और आप को बडा मानने वाला तो सर्वथा तुच्छ गिना जाता है इस से जब तक मान नहीं घटेगा तबतक पूर्वोक्त वार्ताओंका होना असंभव है बस मैं अब इस अल्प लेख को पूर्ण करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे भ्रातृगण मानका परिहार करि पूर्व कथित वार्ताओं पर व्याख्यान देकर अवश्यही आत्योन्नति करेंगे ॥

एक जैनी

समाचारोंका गुच्छा

लाला गजाधर तामियां सागर निवासी लिखते हैं कि मैं पं० मोतीलालजी जैपुर निवासी तथा पं० बल्देदासजी आगर निवासी से निवेदन करता हूं कि मेरे प्रश्न एक समय से आप के पास वास्ते समाधान के गये हैं कृपा कर उत्तर देकर कृतार्थ कीजिये और यदि आपको धर्मोन्नतिके कार्यों से सावकाश नहीं तो मजबूरी से शोकातुर हो प्रश्नही वापिस मांगता हूं ॥

पंडित रामनरायनजी काला बागसे लिखते हैं कि लाला हीरालालजी ने अपने विवाहोत्सव में १०१) रुपये श्रीमंदिरजी के वास्ते दिये और भी विवाह की रीति अच्छी तरह से की, धन्य है ऐसे महाशयों को कि जिनका द्रव्य धर्म कार्य में लगे ॥

जैन सभा भरतपुर— लाला चिरंजीलालजी लिखते हैं कि हम ने पहिले गजट में प्रकाशित किया था कि यहां के भाई प्रमाद के वश सभा नहीं करते हैं सो अब वह प्रमाद दूर होगया है और सभा महीने में दो वार हुआ करैगी और जैन सभा विद्यालय की सहायतार्थ गोलक रख दी गई है भाई नन्हेमल फरुख नगर निवासी जो आजीवका के निमित्त यहां रहते हैं बडे परोपकारी और सज्जन हैं सभा नियत कराने की बडी कोशिश की भाई गंगाधरजी व भाई सुन्दरलालजी ऐसी मृदुवाणी मे व्याख्यान देते हैं जिन के अमृत रूपी वचन सुन कर सर्व सभा को अति आनन्द प्राप्त होता है ॥

सम्पादक— हम भरतपुर के जैनी भाईयों को कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि जिन्होने आपस की फूट को दूर करके सभा को पुनर्जन्म दिया ॥

सिकन्दरपुर कलां जिला मुजफ्फर नगर से लाला कन्हैयालालजी लिखते हैं कि पं० कल्यानदासजी अलीगढ निवासी

यहां पर पधारे और उन के उपदेश से यहां पर सभा नियत हो गई है और महीने में दो वार यानी हर चतुर्दशी को सभा हुआ करैगी— धन्य है यहां के भाईयों को॥ सढेडीसे सकल जैनी पंच लिखते हैं आज दिन पं० कल्यानदासजी अलीगढ निवासी यहां पर पधारे— उन के उपदेश से सब भाईयों ने प्रति दिवस शास्त्रजी में आने की प्रतिज्ञाली— और मासकी प्रत्येक चतुर्दशी को सभाका होना भी सब भाईयों ने स्वीकार कर लिया है और पाठशालाका भी बन्दोबस्त हो गया है आशा है कि उन्नति हो जावैगी॥

पिताका प्यार

यह बात जगत प्रसिद्ध है कि माता पिता को जैसा स्नेह अपनी सन्तान के साथ होता है ऐसा स्नेह मनुष्य को किसी वस्तु से नहीं होता है मनुष्य अपनी संतान के सुख प्राप्ति के वास्ते अनेकानेक कष्ट उठाता है परन्तु विचारनीय यह बात है कि किस रीति से सन्तान को सुख की प्राप्ति हो सक्ती है क्या बाल्यावस्थामें उनका विवाह कर देना और कर्ज ले कर धन लगादेना उन के सुखका कारण हो सक्ता है नहीं २ कदापि नहीं बाल्यावस्था में विवाह कर देने से बालकों को अनेकानेक दुख उठाने पडते हैं जिन के ब्योरे वार बयान करने की आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि सब जानते हैं विवाह में अधिक धन खर्च कर देने से भी जो २ हानियें होती हैं वो भी सब को ज्ञात है आज कल जहां तक देखा जाता है इस जाति के सर्व मनुष्यों ने अपनी सन्तान के वास्ते यही कर्तव्य समझ रक्खा है कि बाल्यावस्था में विवाह कर दिया जाय और अधिक धन व्ययकर दिया जावै; जब इनकामों से स्पष्ट रूप हानियें उठानी पडती हैं तो फिर क्यों ऐसे दुख दाई कार्य को अपनी सन्तान के वास्ते योग्य समझते हैं जिन के सुख के वास्ते अपनी जान भी अर्पण करने को तयार हैं यह सब माहात्म्य अविद्याका है जो बुद्धि को विपरीति कर दिया करती है— मनुष्यका बडप्पन विद्या से है और धर्म सेवन भी इसी पर्याय में हो सक्ता है इस कारण मनुष्य का कर्तव्य और सुखका हेतु उसका विद्यावान और धर्म वान होना है सो मनुष्य को चाहिये यदि उस को उस की सन्तान प्यारी है तो उन को विद्या और धर्म के गुणों से भूषित करैं परन्तु हम देखते हैं कि हमारी जाति के मनुष्य ऐसे कठोर हृदय हो रहे हैं कि उन को अपनी संतान के सुखका कुछ भी ध्यान नहीं है वरन अपनी नामवरी के वास्ते वोह ऐसे कार्य भी करते हैं जिस से उन की सन्तान को अत्यन्त दुख की प्राप्ति हो॥

उद्यम

हे उद्यम! जगत के सम्पूर्ण कार्य तेरेही प्रभाव से सिद्ध होते हैं यहांतक कि मुक्ति भी तेरेही सहारे से प्राप्तहोती है क्योंकि यदि मुनीश्वर इस बात का उद्यम न करते कि गृहस्थ को छोडकर दिगम्बर मुद्राधार बन में आत्मध्यान में मग्न नहो तो उनको कल्याण की प्राप्ति कैसे होती इस संसार में भी छोटे बडे सब कार्यों का मुख्य कारण उद्यमही है उद्यम का आश्रय लेने से छोटे २ मनुष्यभी अति उन्नति को प्राप्त होगये और जिन्हों ने उद्यम का निरादर किया वे उच्चपद से नीच दशा को गिर गये—हे उद्यम तू बडा बलवान है तेरेबराबर जगत में कोई शक्तिमान नहीं है तू सब को जीतसक्ता है परन्तु तझपर कोई पराजय नहीं पासक्ता विशेषकर जगत में यह बात प्रसिद्ध है कि कर्म बडा बलवान है यही कर्म जीव को संसार में चौरासी लाख रूप धारण करा अनेक विधि नाच नचाता है परन्तु यदि गूढ दृष्टि से देखाजाय तो कर्मभी किसी न किसी प्रकार के उद्यम सेही उत्पन्न होते हैं और पैदा हुए कर्मों को नाश करने वा शक्ति हीन करने वा पलटदेने की शक्ति भी हेउद्यम तुझ में विद्यमान है तेरी प्रशंसा कहांतक कीजावै तू अनन्त बल का धारी है मूर्ख हैं वे पुरुष जो अपने मनोर्थ के सिद्ध करने में अपनी आशा के पूर्ण करने में तुझे शक्तिहीन समझ तेरी शरण नहीं लेते हैं और प्रमाद के फन्दे में फंस निरास हो दुःख सागर में डूबते हैं हाय २ निर्भागी हैं वो पुरुष जिस को तेरी अतुल्य शक्ति का परिचय नहीं हैं हे उद्यम जीवों का उपकार करने वाले परमैश्वर्य के धारी धन्य हैं वो पुरुष धन्य हैं- वो जाति जिसपर तेरी कृपादृष्टि होगई है प्रमाद जो तेरा प्रति पक्षी जो सर्व दुःखों की खान सर्व भले कार्यों का बिगाड़नेवाला और शोकसागर में डुबाने वाला है तेरा नाम लेतही भागजाता है जहां २ तेरा राज्य है वहां २ प्रमाद का और कार्य की अशुद्धि का क्या काम—हे उद्यम वो कार्य जो पहले असम्भव दृष्टि पड़ते हैं तेरी सहायता से एक क्षण में सिद्ध होजाते हैं तू बड़ा ही साधक है किसी काल में तेरा वास जैन जाति में था उस समय यह जाति परमोन्नति पर थी परन्तु नहीं मालूम अब तू क्यों इस जाति से अलग होगया है हे उद्यम जिस समय से तेरी कृपादृष्टि इस जाति से हटी है तब से इस की दशा अकथनीय होगई है धार्मिक और संसारिक इस के समस्त कार्य उलटपुलट होगये हरएक बात में निराशता आगई प्रमाद का राज्य होगया फिर विघ्न और दुःखों की क्या कमी है जब कोई परोपकारी इस जाति के मनुष्यों का प्रमाद निद्रा से जगाकर इन की दशा को दिखाता है और इस के सुधार की प्रेरणा करता है तो अपनी हीन

अवस्था को भी स्वीकार कर और सुधार की आवश्यकता को भी मानकर इस जाति के मनुष्य यह जवाब देदेते हैं कि यह सारी बातें सत्य हैं परन्तु होना मुश्किल है हे उद्यम यदि जैनी भाई तेराशरण लेवें तो जैन महाविद्यालय का बनजाना फिजूल खर्ची रंडी का नाच और अन्य कुरीतियों और दुराचारों का दूर होजाना क्या मुश्किल है जब हम यह विचार करते हैं कि कायस्थ जाति में जिन को जन्मघुट्टी में शराब पड़ती थी और जो त्योंहार आदि में भी शराब का पीना मंगलीक समझते थे तेरी बदौलत शराब का ऐसा गूढ़ प्रचार बन्द होगया है तो क्या जैनियों में रंडी का नाच आदि दूर होना कठिन साध्य हैं नहीं कुछभी मुश्किल नहीं है ऐ जैनी भाईयो तुमने उद्यम का निरादर करके और प्रमाद का शरण लेकर कैसे २ घोर दुःख उठाये अबभी चेतो प्रमाद को अपना बैरी जान कर देश से निकालो और उद्यमवान बनो यह बात हृदय से निकालदो कि अमुक कार्य हमारे से नहीं बनसकेगा क्योंकि उद्यम की अथाह शक्ति है उस के सामने कोई कार्य असाध्य नहीं है साधारण कार्यों में देखलो जो जिस कार्य का उद्यम करता है वोह कार्य को पूर्ण करलेता है और जो पहलेही से निरास होजाता है उस का कार्य कैसे सिद्ध होसक्ता है—देखो आर्यसमाजियों ने जो बहुत थोड़े मनुष्य हैं और जिन में धनाढ्यभी जैनियों के समान नहीं हैं उन्हों ने लाहौर में उद्यम केही सहारे से थोड़ेही दिनों में अपना महाविद्यालय बनालिया है जिस में उनके बालक राज विद्या और अपने मत की विद्या पढकर प्रतिष्ठित और पंडित बनते हैं देखो जैनियोंही में जिस २ नग्रवासियों ने उद्यम किया जैन पाठशाला स्थापितकर जैनधर्म अपने बालकों को सिखाना प्रारम्भ करदिया है—और जिस नग्रवालों ने आलस्य को ग्रहण किया वोह कुछ भी नहीं करसके हैं बहुधा हमारे भाई व्यर्थ व्यय और वेश्या नृत्य के दूरहोने को अति कठिन समझते हैं परन्तु क्या उन को यह मालूम नहीं है कि नकुड़ जिला सहारनपुर के जैनीभाईयों ने व्यर्थ व्यय और वेश्यानृत्य आदि दुराचारों और निन्द्य कार्यों को एकवार निकालदिया है और वो अब कैसे सुख में हैं क्या नकुड़ के जैनी भाई ऐसेही मनुष्य नहीं हैं जैसे कि अन्य नग्रवासी हैं भाईयो उन में कोई विलक्षणता नहीं है सिवाय इस के कि उन्हों ने उद्यम का आश्रय लिया है तो हे भाईयो तुमभी उद्यम क्यों नहीं करते जिस से सर्व कार्य सिद्धहोते हैं ॥

अवश्य ध्यान देना चाहिये

तीर्थ यात्रा करनेवाले जैनी भाई इस बात से शायदही वाकिफ़ होंगे कि जो रुपया भंडार में देआते हैं उसपर कौन २ से जैनी भाईयों की निगरानी रहती है और वो रुपया किस कार्य में खर्च किया

जाता है क्या उन भंडारों का रुपया ऐसे कामों में खर्च किया जाता है कि जिस से जैनधर्म की अप्रभावना हो, नहीं नहीं मुझको निश्चय है वो जैनधर्म की प्रभावना ही में लगाया जाता होगा लेकिन मैं और मेरे जैनी भाई जो कि उन कामों से वाकिफकार नहीं है वाकिफ होना चाहते हैं कि वोह जैनधर्म की प्रभावना के किस उपयोगी काम में कौन २ जैनी भाई निगरानी से खर्च करते हैं-आशा है कि हमारे जानकर जैनी भाई अवश्य इस पत्र द्वारा उस का खुलासा छपवाकर नावाकिफ भाईयों को वाकिफकार बनावेंगे और भी सजातीय अखबार इस लेख को अपने अखबारों में छापकर इस का उत्तर छापेंगे;—

जैनी भाईयों का दास
सूरजमल अजमेरा
अजमेर

प्रार्थना

सर्व जैनी भाईयों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि मैंने जैनगजट वा जैन हित उपदेशक द्वारा व अन्य जैनपत्रों द्वारा ३००० नक्शे जन संख्या अर्थात मर्दुमशुमारी जैन कौम की भरने के वास्ते बांटे थे जिन में से कुल २०० नक्शे भरकर हमारे पास आये हैं-और शेष नक्शों का पताही नहीं है—अफसोस इस पंचम काल के जैनी भाईयों पर—अव्वल तो किसी भाई का परोपकार व धर्म सम्बन्धी कार्य करने पर उत्साहही नहीं होता और यद्यपि कोई भाई किसी कार्य के करने के वास्ते हिम्मत भी करें तो इस तरह उस का उत्साह मन्द होजाता है—अब सर्व जैनी भाईयों से प्रार्थना की जाती है कि जिन २ भाईयों के पास नक्शे मौजूद हैं वो भरकर भेजदेवें और जिन भाईयों के यहां नहीं हैं वो कृपा कर पत्र द्वारा सूचित करें उन के पास नक्शे भेजदिये जावेंगे आशा है कि धर्म का कार्य समझकर हमारे जैनीभाई अवश्य इस ओर ध्यान देवेंगे और नक्शे भरकर भेजने में विलम्ब न करेंगे क्योंकि महासभा के दिवस निकट आगये हैं ॥

जैनी भाईयों का शुभचिन्तक
हकीम उग्रसेन
सिरसावा जिला सहारनपुर

मोहब्बतपुर के मंदिरजी की मरम्मत

यह ग्राम जिला अलीगढ में है इस ग्राम के मन्दिरजी में छः ग्राम के भाईयों का धर्म सेवन होता है और इस मंदिर के बगैर बने हुये छः ग्राम के भाईयों का धर्म नष्ट होता है उक्त मंदिरजी की मरम्मत होरही है कुछ तो बनगया है और कुछ बाकी है सो अब रुपये की कमी है इस लिये अधूरा पड़ा है हम कोटानकोट धन्यवाद निहटौर जिला बिजनोर के भाईयों को देते हैं कि जिन्हों ने २६) रुपये इस मं-

दिर की मरम्मत के वास्ते दिये हैं—और चिल्काने के भाईयों ने भी ५०) रुपये उक्त मन्दिरजी की सहायतार्थ देना स्वीकार किया है सो अब चिल्काने के भाईयों से प्रार्थना है कि उन रुपयों को अब शीघ्र भेजदेवें कि मन्दिर पर मदद लगाई जावै-और भी अपने सर्व जैनी भाईयों से प्रार्थना है कि इस मन्दिरजी की मरम्मत में सहायता देवें—और जो कोई भाई रुपया भेजे या कुछ दरियाफ्त करना चाहैं वोह इन दोनों भाईयों से पत्र व्यवहार करें—लाला ख्यालीराम मौहब्बतपुर डाकखाना हसायन जिला अलीगढ़ वा लाला झम्मनलाल जो उक्तग्राम के निवासी हैं और यहां के मुखिया हैं॥

सकल जैनी पंच

कलकत्ता

यहां अब हमारे भारतवर्ष की राजधानी कलकत्ते के भी भाग खुलते दिखाई देते हैं क्यों कि यहां भी २ वा ३ सभाऐं होचुकी हैं जिस में आखिरी सभा मिती दूजे ज्येष्ट सुदी १४ को बड़े मंदिरजी में हुई यहां पर सभा नियत होने के विषय में पं० गुलजारीलालजी ने और लाला मुन्नालालजी ने जो कि दोनों महाशय बड़े परोपकारी और धर्मात्मा पुरुष हैं अत्यन्त कोशिश की थी उक्त पंडितजी साहब ने अति उत्तम प्रिय वाणी से एक लम्बा चौड़ा व्याख्यान जीव की कृत्य कृत्य और दया और दान पर दिया था—लेकिन अभी यहां पर सभा का प्रबन्ध ठीक २ नहीं हुआ है क्यों कि अभी हमारे मारवाड़ी धनाढ्य महाशयों का ध्यान इस पर नहीं हुआ है जिस वक्त इन महाशयों की रुचि इस तरफ को होजावै तो सभा का प्रबन्ध होना कुछ कठिन नहीं है परन्तु अभी इतना प्रबन्ध होगया है कि सभा हर चतुर्दशी को बड़े मंदिरजी में और हर अष्टमी को अमरतल्ला के मंदिरजी में हुआ करैगी मैं यहां के सर्व भाईयों से प्रार्थना करताहूं कि सभा के नियत होने का शीघ्र प्रबन्ध करें और अविद्यारूपी अन्धकार को दूर कर के विद्यारूपी प्रकाश को फैलावैं:—

जैनियों का दास शीतलप्रसाद
कलकत्ता

सम्पादक

हम अपने मारवाड़ी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि वे इस सभा की ओर तथा विद्या की ओर अवश्य ध्यान देवें क्यों कि उन महाशयों के किंचितमात्र ध्यान देने से इस नग्र के दोनों कार्य सिद्ध होसके हैं इस लिये उन महाशयों को अवश्य ध्यान देना चाहिये और आशा है कि हमारी इस प्रार्थना को वे महाशय अवश्य ही स्वीकार करेंगे और बहुत शीघ्र इस खुशी की खबर को सुनावेंगे॥

धर्म प्रभावना

मैं अपना इलाज कराने के वास्ते जिला एटा हकीम बनवारीलालजी जो आनरेरी उपदेशक भी हैं उन के पास गया— सो वहांका आनन्द और सर्व धर्म स्नेही भाई-यों की वातसल्यता देख परम आनन्द भया सेठजी श्रीपालजी सर्राफ जोकि सर्व भाईयों में मुख्य हैं उन्होंने एक बगीचा जो बहुत कुछ सुन्दर २ मकानात व फुलवाडी आदि से शोभित है वास्ते ठहरने के दिया और आम लोग आते हैं वह सब उसी बगीचे में ठहर कर इलाज कराते हैं और सब की टहल के वास्ते आदमी कई नौकर कर रक्खे हैं सो रंच मात्र भी किसी को तकलीफ नहीं होती यह सेठजी बडे दयालु हैं इन की तारीफ नहीं हो सक्ती हकीमजी भी कुछ मासिक इन की तरफ से पाते हैं सैकडों आदमियों को दवा मुफ्त दीजाती है जैनी भाई आम लोग वहां इलाज कराने जाते हैं इन से दवा की कीमत भी नहीं लीजाती और बडी कोशिश से इलाज करते हैं मरा करीब १॥ महीने से पेशाब बन्दथा सो दो दिन में पैशाब होने लगा जैसी तारीफ सुनी थी वैसी ही नेत्रों से देखने में आई जब मुझे फाइदा हुआ तब मैं तीसरे दिन मंदिरजी में गया सो आनन्द वचन अगोचर है कि दस बारह भाई पूजन में मन लगा कर ऐसी सुन्दर आवाज से पूजा करते हैं और पढते हैं जो अन्यमती भी सुन कर लुभाते हैं और जगह २ भाई स्वाध्याय करते हैं कई भाई सामायक करते हैं कई भाई शास्त्र श्रवण करते हैं पाठशाला में पंडित जौहरीमल विद्या पढाते हैं ऐसा देख कर परम प्रमोद हुआ फिर शास्त्रजी रघुवरदयालजी ने अपनी ललित वाणी से पढा उस को सुन कर बहुतही प्रमोद जी में आया तब मैंने दरयाफ्त किया यहां सभा होती है या नहीं तब मालूम हुआ कि सभा हर चतुर्दशी को होती है फिर मैंने जैन कालिज के भंडारार्थ कहा तो सर्व भाई बडे हर्ष से उद्यमी हुये और कहा अब की सभा में इसका बंदोबस्त जरूर करेंगे और आस पास के ग्रामों मे भी भंडार जमा कराने की कोशिश करेंगे सेठजी रघुनाथदासजी सरनऊ निवासी बहुत कोशिश कर रहे हैं ॥

कुंदनलाल

हिसार निवासी

प्रश्नका उत्तर

जुगल किशोर विद्यार्थी के प्रश्नका उत्तर भाई घासीराम विद्यार्थी मथुरा निवासी ने दिया है कि उन के परोपकारी महाशयका नाम (डिप्टी चम्पतराय है) और इसी प्रकार उक्त विद्यार्थी ने भी एक प्रश्न किया है जो विद्यार्थी इसका उत्तर पहले देगा उस को जम्बूस्वामी महाराज की पूजा की १ पुस्तक दीजायगी

और दूसरे नम्बर वाले को सिखरजी म-हात्म्य दिया जायगा वोह प्रश्न यह (१३ अक्षरका) है

३४+६+= चिन्ह के माने होते हैं

५+९+२= एक तरह के रंग के माने निकलते हैं॥

१+२= मिलाने से एक तरह के हथि-यार के माने हैं

८+६= हमेशा के माने होते हैं

१०+१२+१३= सनाथ के माने नि-कलते हैं

११+३= से मस्तक के मानी निकलते हैं

घासीराम विद्यार्थी मथुरा

लाला जुगल किशोर विद्यार्थी सरसा-वा जिला सहारनपुर निवासी के प्रश्नका उत्तर (डिप्टी रूपतराय) निम्न लिखित म-हाशयों ने दिया है॥

१ लाला जमुनालाल गोदेका मंत्री वा-ग विलाशनी सभा ठोलियोंका मंदिर जैपुर

२ रायचन्द पाटणी अजमेर

३ प्रभूलाल विद्यार्थी नाईकी मंडी आगरा

४ लाला रूपचन्द विद्यार्थी मारफत लाला हुब्बलाल प्रभूलाल बजाज इटावा

शुद्धाचरण

श्रीयुत सम्पादकजी महाशय कृपा कर निम्न लिखित लेख को अपने जैन गजट में स्थान देकर कृतार्थ कीजिये॥

हम अपनी विरादरी में चन्द बातोंका रिवाज बहुत बुरा देखते हैं जो कि विरुद्ध कुल धर्म के विरुद्ध है उन में से दो एक रिवाज जो कि आज कल हमारे यहां ज्यादा प्रचलित हो रहे हैं यहां पर लि-खते हैं १ मुरदके साथ जो लोग जातेहैं वोह आने पर स्नानतो करलेते हैं परन्तु लौटकर कपड़े नहीं बदलेते हैं उन्ही कपडोंसे दुनियां के कारोबार करने लगते हैं॥

दोयम— रजस्वला स्त्रीका भी कुछ सूतक वगैरह नहीं गिना जाता और न कुछ क्रिया माफिक धर्म के होती है वोह उसी तरह अपना कारोबार ग्रह सम्बन्धी करती रहती है— कहिये साहब क्या यह धर्म के विरुद्ध नहीं है— हाय २ हमारे भाई ऐसे अज्ञानी हो रहे हैं कि जिन को यह भी विचार नहीं है कि ऐसी २ अयो-ग्य बातों से भी घृणा नहीं करते हैं कार-ण इसका यह है कि अविद्याका अन्धकार छारहा है इस अन्धेरे में धर्म अधर्म कुछ नहीं सूझता है और ऐसे इस अविद्या रू पी अन्धेरे में भटक रहे हैं कि उस से बा हर निलकने की भी कोशिश नहीं करते यदि उन पर विद्याका प्रकाश होता तो क्या ऐसी २ खराब बातें जिन के सुनने से घृणा उत्पन्न होती है करते हुए घृणा नहीं आती हायरे पंचम काल कि जिस में धर्म का लोपही हुआ चहाता है— अब मेरी उन भाईयों से यह प्रार्थना है कि इन दो-नों रिवाजों को अपनी विरादरी से दूर करके अपने आचरण शुद्ध करें और धर्म की रक्षा करें॥

जैनी भाईयोंका दास
हरदेव सहाय पटवारी
नजफगढ जिला देहली

महासभा के विचार योग्य

" जैनगजट के साथ एक विज्ञापन महा मंत्री साहब का तरफ से बँटा था जिस में यह चाहा गया था कि सब भाईयों को उचित है कि इस बात से उक्त मंत्री साहब को सूचित करें कि आगामी महासभा में क्या २ प्रस्ताव पेश होने चाहिये जिस से धर्म तथा जाति की उन्नति हो ॥

मेरी तुच्छ बुद्धि के अनकूल सब के पहले ऐक्यता फैलाने की कोशिश करनी चाहिये जैसा कि पहले दिखलाया गया है— इस के उपरांत पाटशाला और सभा स्थापन कराने और व्यर्थव्यय के रोकने के अति रिक्त निम्न लिखित उपाय शायद उन्नति करने के लिये उपयोगी हों ॥

(१) खान पान की शुद्धता— यद्यपि इस बातका प्रबन्ध बा० मूलचन्द साहब वकील मंत्री महा सभा के सुपुर्द किया गयाथा तथापि मुझे जहां तक मालूम हुआ है इसका इस वर्ष अभी तक कुछ प्रबन्ध नहीं किया गया ॥ जैनगजट द्वारा यह अलबत्ता मालूम हुआ है कि किसी किसी जगह उपदेशकों के निमित्त से यह बंदोबस्त किया गया है कि बिरादरी की ज्योनार में " विदल " तथा कंदमूल नहीं परोसा जाय इत्यादि ॥ अगर महासभाका खान पान की शुद्धता से "केवल" यही प्रयोजन है तो महासभा गलती पर है क्योंकि हमारे नव शिक्षित भाई बहुधा होटलों इत्यादि में खाना शुरू कर देते हैं— शराब तथा मांस इत्यादि अभक्ष्य और त्याज्य वस्तुओं से परहेज नहीं करते— ऐसे महाशयों के निमित्त से सैकडों जगह बिरादरी में झगडा टंटा मच जाता है जिस से वहां के सब काम बिगड जाते हैं और वहां के लोगों पर एक अजब तरह की आपत्ति आजाती है— अक्सर यह देखा गया है कि जहां किसी धनाढ्य पुरुषका आचरण भ्रष्ट हुआ और लोगों की यह राय ? कि इस को कुछ सजा देनी चाहिये बस झट कुछ लोग उस के अमीर होने की वजह से उस के साथ होजाते हैं और इस तरह से वहां बहुत जल्द दो थोक होजाते हैं ॥ चूंकि महासभा तमाम भारत वर्ष के जैनियों की सभा (पंचायत) है इस वास्ते वह इसका बंदोबस्त पूरे तौर पर कर सक्ती है ॥

(२) संस्कृतका पढना—प्रायः यह देखा गया है कि जैनी लोग अपने लडकों को संस्कृत पढाते ही नहीं संस्कृत ही केवल नहीं बल्कि हिन्दी भी नहीं पढाते और इस तरह से उन को अपने शास्त्रों से बिलकुल अनभिज्ञ रख कर अंगरेजी और फारसी पढाने के लिये स्कूलों में भेजदेते हैं जिस से उनका श्रद्धान खान पान

पहनाव बर्ताव इत्यादि सब बदल जाता है और ऐसे कामों को अच्छा समझने लगते हैं जैसे शास्त्रोंका छपाना इत्यादि इस लिये महासभा को कुल जैनी भाईयों पर इस बातका जोर देना चाहिये कि वह अपने लडकों को अंगरेजी इत्यादि पढाने के पहले अवश्य हिन्दी पढा कर कुछ अपने शास्त्र दिखलालेवे ॥

(३) स्त्री शिक्षा— इस कीभी बहुत आवश्यक्ता है— क्योंकि स्त्रियोंही की अज्ञानता से प्रायः मर्द भी कुदेवोंका पूजन इत्यादि करने लगते हैं तथा लडके आवारा खिलाडी और ढीठ वगैरह हो जाते हैं— लेकिन यह सवाल अलबत्ता यहां पर पैदा होता है कि स्त्रियों को शिक्षा तो अवश्य होनी चाहिये परन्तु किस भाषामें और कहां तक ? उसका उत्तर शायद यह मुनासिब है कि उन को केवल हिन्दी और संस्कृत विद्या की शिक्षा मिलनी चाहिये और वहां तक मिलनी चाहिये जहां तक इन को अपने मत के शास्त्रों के पढने के लिये आवश्यक्ता हो स्त्रियों के पिता तथा पति के घर के लोगोंका ध्यान इस तरफ जरूर रहना चाहिये कि उन को किसी तरह से इश्किया किताबों के देखनेका मौका न मिले ॥

(४) जैन कालिज— इस के स्थापन करने के विपक्ष में शायद किसी की राय नहीं है— परन्तु जहां तक मुझे मालूम है बहुत से लोगोंका यह ख्याल है कि इस में अंगरेजी पढाई जायगी इस वास्ते बहुत से लोग इस में शामिल होने से हाथ खींचते हैं और बहुतोंका यह श्रद्धान है कि इस में केवल धर्म विद्याही पढाई जायेगी इस लिये महासभा को उचित है कि इस साल यह बाततै करले कि वह कालिज दिगाम्बराम्नाय की तरफ से कहां खुलना चाहिये और उस में क्या २ चीजें पढाई जायगी ॥ (शेषमग्रे)

एक जैनी

महासभा

महासभा में कुल भारत वर्ष के जैनियों को शामिल करने के लिये नीचे लिखी हुई कारखाई शायद मुनासिब हो ॥

[१] महासभा होने के कम से कम दो मास पहले महा मंत्री साहब को कुल जैन पत्रों द्वारा यह प्रगट करदेना चाहिये कि आगामी महासभा में अमुक २ प्रस्तावों पर विचार किया जायगा ॥

[२] इस नोटिस के पातेही प्रत्येक नग्र के पंचों को उचित है कि अपने यहां उन प्रस्तावों पर विचार करने के लिये पंचायत करें ॥

[३] उक्त पंचायत में छोटे बडे सब रायदे सकें ॥

[४] हर एक प्रस्तावका एक अलग चिठ्ठा बने जिस पर उस ग्राम के कुल जैनियों के दसखत हों चाहें कोई खास म-

नुष्य उस प्रस्ताव के पक्ष में हो या विपक्ष में हो जो पक्ष में हो वोह एक तरफ द-स्तखत करें जो विपक्ष में हो दूसरी तरफ अगर सम्भव हो तो चिट्ठे में किसी खास मनुष्य के उस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में होने की दलीलें भी लिखली जायें ॥

(९) इन चिट्ठों को महासभा में सु-नाने के लिये दो या एक प्रतिनिधि चुने जांय जो वहां जाकर दोनों किस्म के लोगों की राय में यह दलीलों को महासभा में प्रगट करें इस प्रकार की काररवाई से जहां तक मैं समझताहूं शायद भारत के कुल जैनियों की पृथक २ राय लीजासक्ती है और तब इस तरह से महासभा उस बात को तै करेगी जिस बात को ज्यादा लोग पसन्द करें ॥

अब ऐसी छोटी २ बातें जैसी कि किसी उपदेशक का नियत करना तथा किसी को किसी काम का अध्यक्ष मुकर्रर करना इत्यादि सब बातें उन्हीं चुनेहुए प्रतिनिधियों की राय के मुवाफिक ते की जावें। आशा है कि विद्वज्जन इस पर विचार करेंगे ॥

"एक जैनी"

नोटिस

लाला गजाधर तामियां जैनी सागर से लिखते हैं कि पंडित पंजाबराय मु० अमृत पुर तहसील अलीगढ जिला फरुखाबाद निवासी बहुत उत्तम पुरुष हैं संस्कृत व्या-करण बहुत अच्छी तरह से पढासक्ते हैं यदि किसी भाई को अपने यहां की पाठशाला में अध्यापक की आवश्यकता होवै तो उक्त पंडितजी साहब से उक्त पते पर पत्र व्यवहार करके दरयाफ्त करलेवें ॥

हस्त लिखित जैन पुस्तकालय

मिती वैशाख वदी २ सम्वत १९९३ से हस्त की लिखी हुई पुस्तकें तयार कराई जाती हैं जिस महाशय को शास्त्र लिखाना हो वो पत्र देवें जल्द तय्यारकर भेजदिया जावेगा और हाल में छोटी २ पुस्तक तयार भी हैं उन के नाम लिखते हैं सूत्र टिप्प-णी २।) रु. सूत्र टीका सदासुखजी ६॥) रु० रत्नकरंड श्रावकाचार छोटा टीका २) रु० जैन शतक भूदरदास कृत टीका सहित १।॥) छहढाला दौलतरामजी कृत टीका सहित १॥) रु० जैनविवाह पद्धती टीका सहित २) चौबीस महाराज की पूजा वृंदावन कृत ४) रु० भक्तामर मूल ≡)॥ आ० भक्ता-मर मंत्र यंत्र सहित २) रु० सूत्रजी मूल ॥) आ० पञ्चस्तोत्र १) रु० पद संग्रह श्लोक २००० है ६) रु० क्रियाकोष चोपईबंद ६॥) रु. द्रव्यसंग्रह टीका चौपईबंद सहित २) रु० चौबीसठाणा ॥) आ० पूजनों की पुस्तक वगैरह बहुत तय्यार हैं मांडने तेरह द्वीप व ढाई द्वीप व चौबीसी व समोसरन के नकशा कपड़े पर तयार हैं जितना लंबा चौड़ा चाहिये मगालेवें और सुनहरी रुपहरी हिन्से भी शास्त्र लिखेजाते हैं और जिस किसी लेखक के पास शास्त्र लिखे हुए हों

यो पत्र देवें हम निछरावल भेजकर मगालेवेंगे और जिस किसी को लिखाई करना मंजूर हो वह अपना खत लिखें हम लिखने का काम देवेगें यहां श्लोकों का भाव २) व २॥) व ३) रुपये हजार के भाव से लिखे जाते हैं फक्तः—

ठिकाना
पंडित ब्रजकिशोरजी लेखरामजी
फीरोजाबाद मुहल्ला कटरा जिला आगरा

ऐक्यता

मेरी तुच्छ बुद्धि में बहुत कालतक विचार करने के बाद यह सूझा है कि सब के पहले महासभा को ऐक्यता प्राप्ति करने की काररवाई करनी चाहिये क्योंकि जो काररवाई महासभा सर्व साधारण और विशेष के उपकार के लिये करना चाहती है उस में जबतक सब लोग शामिल न होंगे तबतक महासभा सफलता नहीं प्राप्ति करसक्ती—और उस समय तक कदापि सब लोग महासभा में शामिल नहीं होसके जबतक आपस का विरोध न मिटै—इस ऐक्यता से यह गरज है कि जगह २ बिरादरी में (जैसे मेरठ इलाहाबाद इत्यादि) दो तीन या चार चार थोक होरहे हैं सो यह सब थोक आपस में एक करदिये जावें क्योंकि जहां २ इस किस्म की थोकें होगई हैं वहां न तो सभा स्थापित होसक्ती है और न पाठशाला; और न व्यर्थ व्यय का कुछ बन्दोबस्त होसक्ता है—अबतक महासभा के कुल कामों में यह उक्त तीन काम मुख्य समझेगये हैं लेकिन इन तीनों में से एकभी बगैर ऐक्यता को प्राप्ति किये और विरोध को दूरकिये नहीं होसक्ता—इस वास्ते मेरी राय में अगर महासभा अपनी काररवाई पूरे तौर से करना चाहती है और दर हकीकत महासभा में सर्व जैनियों को शामिल करना चाहती है तो उस को उचित है कि सब के पहले ऐक्यता प्राप्ति करने की कोशिश करै—मेरी यह प्रार्थना है कि इस साल की महासभा में यह बात विचारार्थ पेश की जाय कि ऐक्यता के प्रचार करने के लिये क्या २ प्रबन्ध होना चाहिये ॥

मेरी राय में शायद यह प्रबन्ध मुनासिब हो:—

(१) एक विज्ञापन इस विषय का छपवाकर जैन पत्रों के साथ बांटाजाय कि जिस स्थान पर विरोध हो वहां के जैनी भाई विरोध होने के कारणों से महा मंत्री साहब को सूचित करैं ॥

(२) उक्त उपदेशक को उचित है कि बिना इस बात को विचार कि उस नग्र का जहां विरोध है कोई भाई सभा में तथा उपदेशक फंड में रुपया देकर शामिल हुआ है या नहीं यदि नहीं हुआ है तो वहां पर एक ऐसे उपदेशक के भेजने का प्रबन्ध करैं जिस को वह वहां के योग्य समझें ॥

(३) उक्त उपदेशक को उचित है

कि वहां जाकर विरोध मिटाने से पहले न तो किसी भाई के मकान पर ठहरे और न किसी भाई से किसी किस्म की विशेषता जतावे—प्रातःकाल मंदिरजी में जाकर अगर वहां शास्त्रजी बचता होतो शास्त्र की सभा में अपने आने के कारण इत्यादि से सब भाईयों को सूचित करदेवे और वहां विद्यमान लोगों की राय और इच्छा के अनुसार मालिक के साथ और जहां शास्त्र की सभा न होती हो वहां अकेलाही सब भाईयों के घर घर जाकर उन को अपने आने के कारण से सूचित करके विरोध दूरकरने की प्रार्थना करैं—(ऐसे स्थानों में विरोध दूरहोने के पहले आम पंचायत कभी न करैं क्योंकि ऐसी पंचायतों में झगड़ा होने का ज्यादः भय रहता है)—जहां तक हो सके सब लोगों को इस बातपर जोर देकर राजी करैं कि जो कुछ दो या चार या आठ चुनेहुये भाई एक बात को तै करैं उस को वहां के सब लोग मानलैं—ऐसे चुनेहुये भाई दोनों तरफ बराबर बराबर हों—अगर कदाचित उपदेशक यह बात देखे कि यह चुनेहुये भाई भी आपस में किसी बात को तै नहीं करते तो आप भी चुनेहुये भाईयों में शामिल होने की प्रार्थना करैं और आप दोनों तरफ के लोगों को कुछ दबावे और इस तरह से ऐक्यता करने की कोशिश करैं—कदाचित इस में भी सफलता होती न देखै तो फौरन तार देकर महामंत्री साहब को इस बात से सूचित करैं ॥

(४) इस अवस्था में महामंत्री साहब को उचित है कि एक डिप्युटेशन जिस में कम से कम दो मनुष्य एक उपदेशक और धनाढ्य हो वहां रवाना करैं—और अगर किसी विशेष कारण से इस का बंदोबस्त नहीं ही होसका हो तो आप जावें या किसी और १ या दो पुरुष को जिस को वह योग्य समझैं रवाना करैं ॥

(५) उक्त महाशयों को उचित है कि वहां जाकर जिस तरह मुनासिब समझैं ऐक्यता स्थापित करने की यथा शक्ति कोशिश करैं आशा है कि इस प्रकार का प्रबंध करने से विरोध दूरकरने में बहुत जल्द महासभा कामयाबी हासिल करैगी ॥

एक जैनी

नोटिस

जो कि कवायद (नियमावली) श्री जिन धर्म संरक्षणी महासभा की देवनागरी हर्फों में छपकर तयार होगई है पस जो भाई उन का मुलाहिजा करना चाहैं और इस सभा का सभासद होना चाहैं वोह केवल एक कार्ड मुकाम मथुरा पास लाला रतनलालजी मुनीम सेठ साहब के भेजकर मंगालेवें सभा धन्यवाद सहित भेजदेगी ॥

अद्भुतलीला

यह बात देखने में आती है कि मनुष्य धन उपार्जन करने की रात्रि दिवस चेष्टा करता है परन्तु वृथा जो धन की इस

कारण इच्छा करता है कि उस से सुख की प्राप्ति हो नहीं कदापि नहीं क्योंकि मनुष्य धन उपार्जन के हेतु अपने सुखको त्याग कर अनेकानेक कष्ट उठाना पसन्द करता है यदि कोई मनुष्य इस कदर धन उपार्जन करता हो या उस के पास इतना धन हो कि सुख से आयु व्यतीत कर सकै तो ऐसी अवस्था में भी यदि उस से यह कहा जावै कि यदि तुम सुख को त्याग कर कुछ कष्ट उठाओ तो इस से दुगुना वा अधिक धन प्राप्ति कर सक्ते हो तो वो ऐसी संमति देने वाले को धन्यवाद देकर तुरन्त उस कष्ट के काम के स्वीकार कर लेवेगा तो क्या धन सन्तान को सुख के हेतु संचय किया जाता है नहीं ये भी नहीं क्योंकि हम यह बात देखते हैं कि धनाढ्य पुरुषभी एक २ पैसे के वास्ते बच्चों को तरसाते हैं और तीन दिन की वहावाके लिये उन के विवाह आदिक में इतना धन खर्च कर देते हैं कि जिससे आगामी काल में अपने आप को और सन्तान को बहुत दुख उठाना पड़ता है तो क्या धन इस कारण इकट्ठा किया जाता है कि इस को खर्च करके नामवरी प्राप्ति की जावै— नहीं ये भी नहीं क्योंकि धन उपार्जन के वास्ते ऐसे २ निन्द्य और लज्जा युक्त काम किये जाते हैं जिन से पहिली नामवरीका भी मटिया मेट हो जावै तो फिर अधिक धन संचय करनेका क्या यही हेतु है कि इस से धर्म लाभ होना नहीं यह तो बिलकुल भी नहीं है क्योंकि धर्म हेतु एक कौडी भी कोई खर्च करना नहीं चाहता है अगर ऐसा होता तो अब तक नग्र २ जैन पाठशाला एं और एक महा विद्यालय न बन जाता जो धन अब धर्म क नाम से खर्च होता भी है उसका भी प्रयोजन धर्म नहीं होता वर्ण नामवरी आदिक होता है और धर्मका प्रचार न होना धर्म विरुद्ध अनेकानेक पाप कार्य करना धर्म से विमुख होना धन संचय करने के हेतु ही होता है तो फिर किस हेतु धन संचय किया जाता है यह बात समझ में नहीं आती और अत्यन्त अद्भुत गोरख धन्धा है— गूढ दृष्टि से विचार करने से यह मालूम होता है कि मनुष्यका प्रयोजन यही होता है कि अपने आपको भी सुख की प्राप्ति हो और सन्तान को भी सुख की प्राप्ति हो जगत में नामवरी अर्थात कीर्ति भी हो और धर्म लाभ भी हो और इन सब बातोंका हेतु वो धन को समझता है इसी कारण धन उपार्जन में कटिबद्ध होता है परन्तु अविद्या और मूर्खताका ऐसा प्रताप है कि मनुष्यका एक भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है न अपने आप को सुख मिलता है न सन्तान को न नामवरी हासिल होती है और न धनही संचय होता है अर्थात कुछ भी नहीं होता सिवाय कष्ट उठाने के, बुद्धिवानों को अवश्य इस पर विचार करना चाहिये और ऐसी विधि से कार्य करना चाहिये जिस में उनका मनोर्थ सिद्ध हो नाकि उस के विपरीत हो ॥

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपयाहै

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१६—२४ता०

को

बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध

से

देवबन्द जिला सहारनपुर से

प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० २४ जोलाई... सन् १८९६ } अङ्क १

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

प्रार्थना

—•—

हम अपने भाईयों से पहले भी जैन गजट के द्वारा प्रार्थना कर चुके हैं कि जो कोई भाई हमारे पास चिट्ठी वा मजमून भेजा करें वोह अपना नाम ठीक २ पते के लिखा करैं वरन ऐसे मजमूनों व ऐसी चिट्ठीयोंका जवाब नहीं दिया जावैगा तिस पर भी हमारे पास दो चिट्ठीयां बारह बंकी से आई हैं उस में नाम व पता नदारद उन में से एक चिट्ठी जो हाल्हीं में आई है उसका मजमून इस तरह पर है— आगे चिट्ठी में दो भेज चुका हूं जिन को अर्सा १ महीनेका हुआ जिनका कुछ अभिप्राय नहीं मालूम हुआ क्योंकि ऐसी उत्तम जगह पर भी चिट्ठी गुम हो जाती हैं तो और जगह की क्या बात और चिट्ठीयोंका अभिप्राय जल्द मालूम होने पर चिट्ठीपत्रा वगैरह से यहां के हालतों से आप को आगाह करूंगा और यहां पर सभा होती है उस में सिर्फ आपका गजट सुनाया जाता है तो उस में ही सब लोग हल्ला गुल्ला करने लगते हैं इस से कुछ कारवाई ठीक नहीं हो सक्ती और पंडित धर्म सहाय काहन निवासी हफ्तों में आये थे तो शास्त्र सुनाया कि यहां भी तशरीफ लावेंगे मगर नहीं आये

ऐसी चिट्ठीयों के आने से हम को कुछ ज्ञात होता है कि हमारे भाई जैन गजट को अच्छी तरह नहीं पढते हैं हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे भाई जैनगजट को अव्वल से आखिर तक पढा करैं और इसके मजमूनो पर अमल किया करें और चिट्ठी पर पता ठीक लिखा करैं ॥

—•—

† मौहब्बतपुर के मंदिर को सहायता

—•—

आज हमारे पास सुल्तानपुर के पंचों की चिट्ठी आई है कि हमने १०) रुपये मौहब्बतपुर डाक खाना हमायून जिला अलीगढ के मंदिर की मरम्मत के वास्ते भेज दिये हैं सो आप अपने जैन गजट में प्रकाश कर देना हमारा प्रयोजन जैन गजट में प्रकाश कराने का यह है कि अन्य भाई भी इसी तरह उक्त मंदिर जी को सहायता करेंगे तो मन्दिरजी सम्पूर्ण बन जावैगा जिस से वहां के भाई धर्म साधन कर सकैंगे ॥

सम्पादक— क्योंन हो धर्मात्मा पुरुषों से ही धर्म कार्य सधता है धन्य है सुलतानपुर के भाईयों को ॥

दृष्टव्य

हमारे पास छपीहुई चिट्ठी उदयपुर राज के सकल जैनी पंचों के पास से आई है जिस को हम सर्व साधारण के निवेदन के अर्थ प्रकाश करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप परस्पर विचारकर देखें कि जैन महाविद्यालय न होने के कारण जैनियों की कितनी अप्रभावना होरही है ॥

श्री जैन पाठशाला राजधानी उदयपुर मेवाड़

जैन कालिज बनाने का अभिप्राय सज्जन पुरुषों का है, और उसके खर्च की तदबीर में भाद्रपद मास में फी जीवका एक एक पैसा निकालना तजवीज किया है यह खबर हम को बम्बई के पत्र द्वारा मिली इस लिये हमारी यह प्रार्थना है, कि इस भारतवर्ष में कई एक ऐसे बड़े २ धनाढ्य करोड़पति व लक्षपति हैं, जिन्होंने बड़े २ नवीन मंदिर और जिनबिंब प्रतिष्ठा और जीर्णोद्धार और सिद्ध क्षेत्र, यात्रा, रथयात्रादि महान उत्सव मेला करके हजारों लक्षों रुपये खर्च किये हैं, उन महाशयों की एक एक पैसे के निकाल में बड़ी भारी न्यूनता है, और ऐसा बड़ा भारी काम इस तरह के विचार पर प्रचलित होना महाशयों का कारण है, जैन दिगम्बर संप्रदाय के कई उत्तम पुरुष जिन्होंने पूर्व इस समय में ऊपर लिखे कार्यों में लक्षों ही रुपये खर्च किये, उन महत्पुरुषों का नाम प्रगट विख्यात होगा, यदि वे किंचित अपनी २ श्रद्धा मुवाफिक चार, २ पांच, २ सात २ हजार रुपये प्रत्येक एकठ्ठे करें तो सहजही में लक्ष दो लक्ष रुपया जमा होसक्ता है, और इस कार्य की जड़ स्थापित होजायेगी यह काम विद्या वृद्धि का उत्तम है. विद्या दान सब कार्यों में प्रधान कार्य है तन मन धन से विद्या वृद्धि के लिये जैन कालिज बनाया जावे, तो ऊपर लिखे हुए कार्यों से भी अधिक पुन्य होगा, और ऐसे उच्च पुरुषों के नजदीक द्रव्य लगाना सहज है, सो विचार कर अंगीकार करें, जिसकाही पुन्य है. बाकी दूसरे विचार से ऐसा कालिज बनना मुश्किल है. इस लिये यह निवेदन पत्र सब जगह प्रकाश होजावे, और इस कालिज में ऐसी भी तजवीज रक्खी जावे कि जिस से और जगह के विद्यालयों की सहायता होतीरहे, कि जिससे सब जगह विद्या की वृद्धि होती रहे, बाद को जो तजवीजें पत्र द्वारा प्रगट हुई हैं होतीरहैं तो हमेशाह के लिये उन्नति होती रहेगी:—

(१) इस समय जैन दिगम्बर आम्नाय में श्री मथुराजी वाले सेठजी कम्पनीमान्य और समस्त राजधानियों में विख्यात हैं.

(२) सेठ मूलचन्दजी अजमेर वाले, जिन्होंने गवर्मेन्ट अंग्रेजी से रायबहादुर की पदवी पाई है, और मंदिर नसियाजी

समोसरण अयोध्या के कार्य में आज के समय में लाखों रुपया लगाया है.

(३) सहारनपुर के लाला उग्रसेनजी देश विदेश में मशहूर हैं.

(४) खुरजावाले सेठ हरमुखरायजी अमोलकचन्दजी ने नवीन मंदिर बनाया प्रतिष्ठा मेला में बड़ा उत्सव किया.

(५) इन्दौर में फतहचन्द कुशालजी ऐसे नामी हुए जिन्होंने इन्दौर, बबड़ाणी मांगीतुंगी, देवालपुर आदि में सात मंदिर की प्रतिष्ठा कराई.

(६) शोलापुरवाले सेठ रामभाऊ राय बहादुर ने श्री कुन्थागिरी, तारंगाजी, सतरुन्जाजी आदि बड़े ठिकाने में नवीन मंदिर प्रतिष्ठा मेला संग चलाने में लाखोंही रुपये खर्च किये.

(७) अमरावती मध्ये दुलीचन्दजी परवारने बड़े २ मंदिर प्रतिष्ठा गजरथ चलाया.

(८) जिला नागपुर सेवनेवाला सिंघी शिवलालजी ने शिखरजी का संग चलाया शिखरबंध मंदिर की प्रतिष्ठा, गजरथ चलाया.

(९) अमरावती में सिंघी मुन्नीलाल जी परवार ने ४ प्रतिष्ठा, और गजरथ चलाया.

(१०) हाथरस में शालिग्रामजी अग्रवालने ऐसा जिन धर्म का उद्योग किया, कि विलायत तक मशहूर हुआ. मंदिर प्रतिष्ठा मेला कराया.

(११) सोनकछवाला सेठ कालूराम जी बड़वाणी में नवीन मंदिर प्रतिष्ठा मेला कराया.

(१२) इन्दौर में सेठ माणिकचन्द जी मग्नीरामजी हाबल्या काबल्या वाला श्री बड़वाणीजी में महा प्रतिष्ठा कराई.

(१३) मन्दसौर में जोधराजजी ने मंदिर प्रतिष्ठा बड़ा मेला भराया

(१४) कामठी की छावणी में परवार भाई श्री रामटेक ने बड़े २ मंदिर प्रतिष्ठा मेला और गजरथ चलाया

(१५) परवार सिंघी मुन्नालालजी ने नागपुर कामटी में छः मंदिर बनवाये

(१६) कुरडकीवाडीका स्टेशन के नजदीक बारसोवाला तुलाराम मोहनलालजी ने श्री मांगीतुंगीजीमें महान प्रतिष्ठा कराई

(१७) इंडिवाला माणिकचन्द हूमड ने बीजापुर के नजदीक भाव बनगर में महा प्रतिष्ठा कराई

(१८) आरावाला बाबू जगमंदिरदास प्रभुलाल आदि साहूकारों ने बड़े २ शिखरबन्ध मंदिर कराये और प्रतिष्ठा कराई

(१९) दौलतगंज छपरावाला मुनीश्वर दासजी जिनवरदासजी ने अपने गांव में तथा श्रीचम्पापुरजी में महान प्रतिष्ठा कराई

(२०) देश निमाड इन्दौर जिला मण्डलेश्वरीवाला महाकाल चौधरी मण्डलेश्व-

रने बडवाणीजी में महान प्रतिष्ठा मेला भरवाया

(२१) धर्मपुरी में— रामलालजी पन्नालालजी ने अपने गांवमें श्री बडवाणीजी में शिखरबन्द मंदिर प्रतिष्ठा मेला श्रीशिखरजीका संग चलाया

(२२) धारवाला भाई दुलीचंदजीने बनेड्या गांवमें महान प्रतिष्ठा कराई

(२३) झालरापाटणका बालचन्द विनोदीरामजी ने शिखरजी संग तथा नागौर में बडा नाम किया

(२४) नागपुर वाला गुलाबदास जात बघेरवाल ने भातकुली रामटेक मुक्तागिरिमें महान प्रतिष्ठा कराई

(२५) श्री सिद्धवर कूटमध्ये शोलापुर वाला हूमडने महान प्रतिष्ठा मेला करवाया

इत्यादिक आज के समय में बडे २ साहूकार और भी दक्षिण में मशहूर हैं जिन के नाम प्रगट करने में बहुत विस्तार बढता हैं ॥

यह विचार ऊपर के कार्य को देख कर भलीभांति, और निर्पक्ष करना योग्य है

श्लोक

जिनविम्ब जिनागरं । जिनयात्रा प्रतिष्ठितं ॥ दानपूजा च सिद्धांत । लेखनं सप्त क्षेत्रकं ॥ १ ॥

धनाढ्य पुरुषों को विशेष क्या लिखना, अपनी योग्यता नुमार धर्म सम्बन्धी पाठशाला में धनका लगाना सहजही है—

ज्येष्ट कृष्णा ९ सं० १९६३

द: समस्त श्रावग पंचांका

राज उदयपुर

समाचारों का गुच्छा

सलावा—लाला मादूमल लिखते हैं कि यहा पर पंडित कल्यानराय अलीगढ निवासी पधारे और उन्हों ने सभा स्थापित करने का व्याख्यान दिया परन्तु सभा स्थापित नहीं हुई—बहुत से भाईयों ने शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञा लेली है—आशा है यहां के भाई सभा भी स्थापित अवश्य करेंगे ॥

अलावडा—लाला चुन्नीलालजी लिखते हैं कि यहां पर जैन महाविद्यालय की सहायतार्थ गोलक रखदी गई है यहां पर फिजूल खर्ची का ज्यादा रिवाज है उपदेशक भेजना चाहिये ॥

बिनौली जिला मेरठ—सकल जैनी लिखते हैं कि यहां पर बिरादरी में मरने के पश्चात गिंदौडा बांटाजाता था सो बन्द करदिया गया—बहुत से भाईयों ने हुक्का पीना छोडदिया और बहुत से अन्य मतियों ने भी रात्रि भोजन तथा हुका पीना छोड दिया है और कन्द वगैरह का भी त्याग किया है—धन्य है यहां के भाईयों को

स्यांपुर जिला गवालियर—सकल जैनी पंच लिखते हैं कि यहांपर धवलादि ग्रन्थों की सहायता के अर्थ ५०) रुपये सेठ महाचंदजी गंगवाल और ५०) रुपये सेठ लालजीराम बागमलजी ने देना स्वीकार

किया हैं—ऐसेही महाशयों का रुपया सफल होता ह ॥

धर्मोपदेशिनी जैनसभा आगरा

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब ज-याजिनेंद्र, अनुग्रह करके इस थोडे से लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान देकर कृतार्थ कीजिये ॥

मैं अत्यन्त हर्ष के साथ प्रकाश करता हूं कि इस सभाका पांचवां समागम मिती द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १९ बृहस्पतीवार को सायंकाल के समय हुआ जिस में श्रीमान पंडित बलदेवदासजी ने पूर्व सभा की प्रतिज्ञा पूर्वक आप्त के ही स्वरूप के विषय में अपनी मधुरध्वनि करके व्याख्यान दिया प्रथमही मंगला चरण पाढ़ के यह कहा कि जिसका तत्व प्रमाणादिक करके बाधा को नहीं प्राप्त हो वह ही सत्यार्थ आप्त है सो केवल अर्हतहीका तत्व प्रमाण युक्ति से खंडन को नहीं प्राप्त होता है इस कारण से आप्तपना केवल अर्हतही में सिद्धि होता है इस कथन को पंडितजी साहब ने अति उत्तम रीति के साथ सिद्धि करके यह कहा कि अन्य मतावलंबियों के कहे हुए तत्व में अनेक प्रकार की बाधा आती हैं सो प्रथमही पंडितजी साहब ने चार्वाक मतका स्वरूप वर्णन किया चार्वाक मतावलंबी जीव को नहीं मानते और पुण्य पाप स्वर्ग नर्क कुछ नहीं हैं ऐसा कहते हैं पृथ्वी अप तेजवायु भूत चतुष्टय है इसही करके जीवकी उत्पति है और कोई जीवात्मा नहीं हैं ऐसा चार्वाकका मन्तव्य है सो उक्त पंडितजी साहाब ने प्रथमही जीवकी सिद्ध की और चार्वाक जो जीव को नहीं मानते हैं उनका खंडन प्रमाणादि युक्ति करके भलीभांति कीया प्रत्यक्ष तथा अनुमान प्रमाण करके जीव को सिद्ध किया यद्यपि यह कथन पंडितजी साहब ने न्याय की चाल से कहा और जो २ प्रयोग प्रमाणादिक कहे वे यद्यपि क्लिष्ट थे तथापि इस उत्तम रीति से वर्णन किया कि सम्पूर्ण सभा इस व्याख्यान को सुन कर चकित होगई और चारों ओर से धन्य धन्य वाक्यों की ध्वनि चली आती थी उक्त पंडितजी साहाब ने सम्पूर्ण भव्य जनों को अपने बचन रूपी अमृत करके तृप्ति किया इस प्रकार चार्वाक मतावलंबीयोंके कहे हुए तत्व प्रमाणादिक करके बाधित हैं इस कारण से उन के आप्त पना सिद्ध नहीं होता है ऐसा वर्णन करके अन्त में प्रेरणा रूप वाक्य कहे जो सहधर्मी इस सर्वोत कृष्ट जैन धर्म को छोड़ कर मिथ्या धर्म की तरफ रुचि करते हैं उनकी मूर्खता है क्योंकि जिस धर्मका वक्ता यथार्थ नहीं उस धर्म से कदापि सुख की प्राप्ति नहीं हो सकी इस कारण से सम्पूर्ण सहधर्मीयों को उचित है कि सुख की इच्छा है तो इस सर्वोत्तम जैन धर्मका सेवन करो इस प्रकार प्रेरणा करके काल बहुत व्यतीत हो जाने

के कारण कथन को संकोचके यह कहा कि अगली सभा में फिर चार्वाक मतकाही विशेष वर्णन होगा तत्पश्चात यहां के भाईयों की रुचि पाठशाला की तरफ कम होगई थी सो उक्त पंडितजी साहब ने विद्या विषय में कुछ वर्णन करके यहां के सम्पूर्ण भाईयों से पाठशाला के प्रबन्ध करने की प्रेरणा करी सोई यहां के सर्व सहधर्मीयों ने पंडितजी साहब के वचनों को बड़े आदर से अंगीकार करके पाठशाला चलाने के उत्साही होगये मैं पंडितजी साहब को कोटिशः धन्यवाद देता हूं कि जो अपना जीवन परार्थ उपकार में सफल कर रहे हैं धन्य है ऐसे धर्मात्माओं को और मैं यहां के सम्पूर्ण भाईयों को भी धन्यवाद देता हूं कि जिन्हों ने पंडितजी साहब के वचनों को आदर से अंगीकार कर लिए, अब आशा है कि सर्व भाई इस पाठशाला के चलाने में सदैव पुरुषार्थ करते रहेंगे फिर अन्त में मैंने पंडितजी साहब को धन्यवाद देके सभा विसर्जन करी ॥

आपका कृपाकांक्षी

चिरंजीलाल सभापति

भाग्योदय

भाग्योदय से इस जैन कुल में हमारा जन्म हुआ है इस कारण हम अपने भाग की जितनी प्रशंसा करें थोडी है क्योंकि कल्यान कारी मुक्ति दाता सर्व प्रकार के सुख को प्राप्त कराने वाला और अनेक संकटों को निवारण करने वाला सत्य धर्म हम को जन्मही से मिला है देखिये यह हमारे शुभ उदयका ही फल है कि बाल्यावस्था के सर्व संस्कार भी धर्मानुसारही किये गये हैं बाल्यावस्था में यदि हमारा जन्म इस जाति मे न होता तो बाल्यावस्था में हम कोई उपाय इस विषय में नहीं कर सके थे कि हमारा पालन पोषन और बाल्यावस्था के अन्य आचरण धर्मानुसार हों यह बात जगत प्रसिद्ध है कि बाल्यावस्था में जिस प्रकार की शिक्षादी जाती है बालक की बुद्धि तद्रूप हो जाती है ॥

हाय यदि हमारा जन्म निर्भाग्यता से किसी अन्यमती के घर में होता तो स्वयम ब हमारी बुद्धि भ्रष्ट होती क्या यह हमारे भाग्यका उदय ही नहीं है कि जैन जाति में जन्म होने के कारण हम को सत्य धर्म की ही शिक्षा प्राप्ति हुई मनुष्य को संगतिका बडा असर होता है हमारे माता पिता और अन्य सब बान्धव जैनी हैं इस कारण मिथ्यात्व कर्म कोई हमारे दृष्टिगोचर ही नहीं हुआ क्या हमारे से अधिक कोई भाग्यवान हो सका है इस बात को कहते हुए हृदय कांपता है कि यदि हम को मिथ्यात्व की शिक्षा मिलती वा मिथ्यातीयों की संगति होती और इन कारणों से हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती तो हम मे कैसे २ घोर पाप होते और उन पापों के फल क्या २ दुःख हम को उठा

ने पहते हमने अवश्य पिछले जन्म में धर्म सेवन किया है जिस के हेतु हम को यह अकथनीय धर्म लाभ हुआ है क्या किसी संसारी जीव के वास्ते इस से अधिक कोई आनन्द की बात हो सक्ती है कि उसको सत्य धर्म की शिक्षा मिले चक्र वर्ती राजा वा इन्द्र की विभूति धर्म लाभ के सामने तृण के सामन भी नहीं है हम अपने भाग्य की कहां तक प्रशन्सा करें हमारे माता पिता ने हम को उत्तम विद्या से भूषित करना अपना आवश्यक कर्तव्य समझा यदि उन की यह कृपा हमारे पर न होती तो हम पशु समान मूर्ख होते और कैसे धर्म को जान सके और पाल सके अर्थात न पाल सके और न जान सके जैन जाति में जन्म लेना हम को इतना उप कारी हुआ है कि कोटि जिव्हा से भी इस की प्रशन्सा वर्णन नहीं हो सक्ती देखिये इस जाति में मिथ्यात्व और दुरा चारों का प्रचार न होने के कारण यदि किसी समय हमारे चित्त में किसी के बहकाने से विपरीति कर्म करने की चेष्टा भी होती है तो अपने जाति भाईयां से लज्जित होनेका भय तुरन्त सन्मुख हो जाता है जिस से हम उस अयोग्य कर्म से हट जाते हैं देखिये इस जाति में जन्म लेना कैसा लाभ दायक हुआ हम को अपने जाति के मनुष्यों को सत्य धर्म में लौलीन देख धर्म सेवन की कितनी बड़ी प्रेरणा होती है क्या इस प्रकार की सफलता हम को पहिले भी किसी जन्म में प्राप्ति हुई हम तो यही कहते हैं कि नहीं हुई होगी ॥

हे भ्रातृगणों क्या उपरोक्त प्रकार प्रत्येक जैनी को हर्षित नहीं होना चाहिये क्या कोई जैनी ऐसा भी है जिस को जैन कुल में जन्म होने पर भी इस प्रकार लाभ न हो यदि वास्तव में विचार किया जावे तो कोई जैनी ऐसा नहीं हो सक्ता जिस को उपरोक्त प्रकार सत्य धर्म और सत्य विद्या की प्राप्ति न हो क्या वो पुरुष मूर्ख नहीं है और क्या वो जैनका तिरस्कार नहीं करता और क्या वो झूठा नहीं है जो यह कहता है कि बहुधा कर के जैनियों के बालकों को उन के माता पिता मिथ्यात्व की शिक्षा देते हैं और जैनियों के बालकों को अपने और अपने अन्य जैनी बान्धवोंके घरमें मिथ्यात्व और दुराचार होता देखते हैं कुरीति और मिथ्यात्वका इस जाति में अधिक प्रचार होने के कारण जो कोई ऐसा करता है वह जैन जातिका द्रोही है क्योंकि क्या जैन कुल में जन्म लेकर भी भाग्यका उदय नहीं होगा ॥

परन्तु हे भाईयो जब हम अपनी जाति की ओर दृष्टि देते हैं तो यह सब बातें स्वप्न वत मालूम होती हैं और जैन कुल और किसी अन्यमती के घर जन्म लेना समान देखते हैं क्योंकि जो शिक्षा मिथ्यात्व आदि की अन्य मती के घर

में मिलती हैं वह ही जैन कुल में भी मि-
लती हैं शोक महाशोक ॥

जरूरही पढियेगा

ऐ भारतवर्ष के जैनी भाईयो आप को अवश्य मालूम रहना चाहिये कि जैनगजट से जो २ फाइदे होते हैं वह वर्णन करने में नहीं आते, जैन सप्ताहिक गजटने उन्नति के आसार जो दिखाये हैं वह सर्वत्र विदित है, वर्णन करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप खूब जानते हैं कि यह ऐसा उपदेशक है कि हफ्तेवार हमारे पास आकर भारत खण्ड की उन्नतिरूप वार्तालाप करता है और हम सोतेहुओं को जगाता है, परन्तु जो जागनेवाले हैं और उन्नति करने का अथवा अंधेरे से उजाले में आने का जिन का विचार है इस की बात को खूब दिललगाकर सुनते हैं—बहुत से भाईयों ने गजट मंगवाया और उपदेशों को पढ़ परन्तु अविद्यारूपी अन्धकार के कारण अब इस के उपदेश से चित्त खानिलगे कोई महाशय ने केवल हैडिंग (सरनामा) ही पढकर छोडदिया या शायद पांच मिनटही में सारे पत्र को देखडाला, भला इस तरह पढने से क्या मालूम होसक्ता है कि इस में क्या लिखा है फिर वही अविद्यारूपी अन्धकार में पडेहुए महाशययों कहते हैं कि कुछ नहीं होता यह पत्र एक ढंग है जो रुपये के जमा करने के लिये रचा है—यह पत्र रंडी भडुवों का नाच धूम धाम की ज्योंनार आतिशबाजी का खेल कुदेव पूजन इत्यादि को अवश्य बुरा कहता है और बहुधा जैनीभाई इन कामों को अच्छा और उन्नतिरूप समझते हैं—शादी में रंडी का नाच तथा आतिशबाजी न होतो सर्वत्र न सूबजाय—तो भला वे महाशय जैनगजट के उपदेश को क्योंकर दिललगाकर सुने—बहुधा भाई कहते हैं कि महासभा और जैन गजट से क्या होना है हां व्याख्यानों के घर्राटे उडाने कागजों पर स्याही के घोडे दौड़ाने खूब आजावेगा—इन महाशयों को यह नहीं मालूम कि विचार के बाद कार्य की सिद्धि होती है—यदि किसी काम करने का विचारही नहीं है तो उन का होना बिलकुल असंभव है देखिये जैन गजट के जारी होने के पहले इतनी सभायें कहां होती थी भला इस के प्रचार से सभाओं का होना प्रारंभ तो हुआ दश बीस मनुष्य एक स्थान पर एकत्र होकर अवश्य कुछ न कुछ विचार बिरादरी के सुधार का करेंगे—बहुधा सुनने में आया है कि अमुक स्थान पर फलां कुरीति बंद हुई अमुक स्थान पर पाठशाला स्थापित हुई इत्यादि अनेकानेक बिरादरी के सुधारने के प्रबन्ध होने लगे—यह कुल प्रताप जैनगजटही का है—अरे जैन गजट तू शुभ दिन को निकला है तेरा उपदेश सच्चा और ठीक है परन्तु अविद्यारूपी अन्धकार जो पंचमकाल का मददगार है तेरे उपदेश के असर को जैनी भाईयों के दिलोंपर क

जमने देता है इस का कारण यह है कि तू कहता तो बहुत है परंतु तेरे यार व मददगार जिन्हों ने तुम को उपदेशक बनाकर भेजा है और जिन के खूंटेपर तू नाचता है वे कुछ करके नहीं दिखाते और लोगबाग काम और आखिरी नतीजे को तो सोचते नहीं परन्तु हथेली में सरसू उगाना चाहते हैं इस लिये जबतक तू उन महाशयों से जिन की तरफ से तू वकील बनाहुआ है कुछ कार्य की सिद्धि नहीं कर देगा तबतक तेरे उपदेश का असर कम पड़ेगा—अब तू आगामी महा सभा का वादा करता है देख महा सभा भी आती है उस वक्त तेरे मददगार क्या करते हैं यदि कुछ चमत्कार दिखाया तो सब कोई तेरी बात को मानेंगे और प्रतिष्ठा करेंगे वरना खूब सोचले कि तुम से बात कभी न करेंगे—देख जैन हितैषी का क्या हाल हुआ-अब का जैनहितैषी पढकर बड़ा भारी शोकहुआ अर्थात उस में लिखा है कि "अब से जैनहितैषी बंद हुआ" ऐ जैनगजट तू खूब सोच समझकर काम कीजियो और अपनी बात को जैनी भाईयों से इस प्रकार कहियो कि यह लोग दिल लगाकर सुनें और उन्नति के प्रचार में कदम रक्खें यादि कुछ विचारकर काम न किया तो तेरा उपदेश निष्फल जावेगा इस साल तो तुम से बात भी करते हैं आइन्दा बहुधा भाई चिन खाने लगेंगे कारण कि अव्वल तो तू उन से ३) रु० साल लेता है दूसरे बहुतसा उन का अमूल्य समय व्यतीत कराता है तीसरे बहुधा भाईयों के विचारांश के विरुद्ध वार्तालाप करता है इत्यादि वार्ता उन को बहुत बुरी मालूम होती है इस लिये ऐ जैन हितोपकारक गजट जरा सोच समझ कर काम कीजियो पैर मत उखाड़ियो जमाना बहुत बुरा आनेवाला है तुमही से जरा आशा हुई है ईश्वर तेरी आयु दीर्घ करै और तू सदा चिरंजीव रहै और तेरा उपदेश जैनी भाईयों के दिलों पर पूरा असर करै आशा है कि जैन गजट की सहायता करनेवाले महाशय इस के वायदों और वचनों को पूर्ण करने में सदैव तत्पर रहैं और जरूर कुछ न कुछ आगामी महासभा में चिमत्कार दिखावैं ताकि सम्पूर्ण भाईयों के ख्यालात उन्नति की तरफ हों ॥

जैन गजट का सच्चा शुभचिंतक
पांचूलाल काला हैडमास्टर
मिडिल स्कूल दौसा
राज्य जैपुर
ता० २६ जून सन १८९६ ई०

वनज व्योपार

बनिये अर्थात व्योपार करनेवाले इस बात में मशहूर हैं कि वह हिसाब अर्थात लेखा करना ठीक जानते हैं बनिया जिस चीज का व्योपार करता है उस के नफे नुकसान को बिचार लेता है और सब हिसाब अपनी बही में लिखलेता है नुकसान

का व्योपार कदाचित नहीं करताहै बनिया बड़ा चतुर और अपना नफा करने वाला बहादूर है ॥

आज कल सर्व जैनी बहुधा करके बनिये ही हैं इस कारण इनका सर्व कर्तव्य ऐसाही होना चाहिये जिस में अधिक लाभ हो ऐ जैनी भाईयो क्या आप को यह निश्चय नहीं है कि इस जन्म में जो कुछ तुम को धन प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ती है वह पिछले जन्म के पुन्य कर्मोंका फल है और क्या तुम यह नहीं मानते हो कि मिथ्यात्व आदि पाप कर्म अत्यन्त दुख दाई होते हैं अर्थात पुन्य नफे के समान है और पाप नुकसान है यदि यह सब बातें मानते हो तो क्या तुमने विचार लिया है और हिसाब करके जांच लिया है कि इस जन्म के तुम्हारे व्योहार में तुम को लाभ होगा या नहीं यदि कुछ भी विचार करते और जैसा वनज व्यापारका लेखा किया जाता है इस प्रकार हिसाब करते तो तुरन्त यह मालूम हो जाता कि इस जन्म में हमारी पिछली पूंजी तो जातीही रहेगी बल्कि चलते वक्त अधिक करजका भार भी हमारे सिर पर लदेगा क्योंकि हम बिलकुल इस बात की चेष्टा नहीं करते हैं कि हम को नफा हो जिस को हम अगले जन्म में अपने साथ लेजावें फिर हम कैसे बनिये हैं ऐ भाईयो इस बात पर ध्यान दो और जैसा कि रुपये पैसेका नित्य हिसाब करते हो इस ही प्रकार अपने शुभाशुभ कर्मोंका भी हिसाब किया करो तब तुम को मालूम होगा कि नफेका काम किया जाता है या नुकसानका ॥

संभलो नहीं पछताओगे

एक सुन्दर वार्ता

सुन्दरलाल— कहो भाई साहब आज उदास क्यूं बैठे हो ॥

मौंदूमल— अजी क्या कहूं इसका सत्यानास हो हम को तो भैरोप्रसाद बाबू ने खो दिया ॥

सुन्दरलाल— अरे भाई क्या हुआ उसने ऐसा क्या बिगाड किया तुम तो आज कुछ बहुतही भरे बैठे हो ॥

मौंदूमल— भाई हमें तो उसने दीन का रक्खा न दुनियाका बड़ा लड़का विमलप्रसाद बिगड़गया हर रोज भैरोंप्रसाद के पास जाया करेथा उनही की कुछ किताबें पढ़ता रहा करताथा मैं क्या जानूंथा कि भैरोंप्रसाद ऐसा वैरी निकलैगा कि लोंडे को अपने ही रंग में कर लेगा ॥

सुंदरलाल— भैरोंप्रसाद बाबू तो आर्य समाजी है क्या विमलप्रसाद को भी उस ने आर्या समाजी कर लिया अजी तुम क्या कहो हो विमलप्रसाद उस के बहकाये में आने वाला नहीं है ॥

मौंदूमल— भाई क्या कहूं पहले तो मेरा भी यह ही खयाल था कि लड़का समझ दार है मगर मैं क्या जानूं था कि यह ही हम को दुनया में बद नाम करैगा इस

ही के कारण हम मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे ॥

सुंदरलाल— क्या उस ने खान पान भी बिगाड़ लिया है क्या ॥

भौंदूमल— नहीं खान पान तो नहीं बिगाड़ा मगर उस को तो अकल में कुछ ऐसा फतूर आया है जो चाहे वाहीतवा ही बकता है ॥

सुंदरलाल— नहीं इतनी सोच नहीं किया करते लड़का है उस को हम समझा देवेंगे ॥

(इतनेमें विमलप्रसाद भी आगया और सुन्दरलाल ने उस से कहा कि भई भौंदूमल को क्यों खफा करादिया माता पिता की सेवा तुम लिखे पढे बुद्धिमान नहीं करोगे तो और कौन करैगा॥)

विमलप्रसाद— मैं इन की सेवा के वास्ते हर वक्त तय्यार हूं मगर यह मुझसे नहीं हो सक्ता कि अगर यह मुझको कोई अयोग्य काम करने को कहें तो उस को भी स्वीकार करूं ॥

सुंदरलाल— इन की कौनसी बात तुम को अयोग्य मालूम हुई ॥

विमलप्रसाद— मुझे तो इन की कोई बात भी बुद्धि मानी की नहीं मालूम होती और एक यह ही क्या है बहुत से लोग मूर्ख बुद्धि हीन हो रहे हैं ॥

सुंदरलाल— भला भाई कोई मूर्खताई की बात बतलाओ तो सही ॥

विमलप्रसाद— अच्छा आपही बतलाईये पत्थर पूजा कुछ बुद्धि मानी है ॥

सुंदरलाल— अरे लड़के होश कर ऐसी बात कहते हुवे क्या मुझे कुछ डर नहीं मालूम होता ॥

विमलप्रसाद— सच बात के कहने में कुछ डर नहीं हुआ करता है मगर डर तुम लोगों को करना चाहिये जो अपने आप तो जितने चाहें विवाह करालेवें मगर यदि स्त्री बाल्यावस्था में भी विधवा होजावे तो वह सारी उमर दूसरा विवाह न कराने पावे डरो इस जुल्मसे ॥

भौंदूमल— भाई सुंदरलाल क्यों इसे छेड़ते हो मैं तो यूं कहूं धर्मप्रसादका सत्यानाश हो जिसने मेरे लड़के को बहकाया है ॥

विमलप्रसाद— तुम खाम खाह बाबू साहब को गाली देते हो वह मुझ को क्या बहका सक्ते हैं आज कल विद्वानों ने जगत के उपकार के वास्ते अनेक ज्ञान की पुस्तकें छापदी हैं जिन को पढ कर मनुष्य सत्य असत्य का निर्णय करता है और झूठ को जानता है अब कोई तुम्हारे फन्दे में नहीं आसक्ता है ॥

सुंदरलाल— भाई भौंदूमल तेरी किसमत फूट गई लड़का काबूका नहीं रहा ॥

विमलप्रसाद— ऐसी किसमत सब की फूटेगी कोई बचा नहीं रहैगा क्योंकि आज कल जगत के उपकार करने वाले बहुत पैदा होगये हैं जो उत्तमोत्तम वेदानुकूल सत्य धर्म के प्रचार करने वाले ग्रंथ

रखते हैं और छाप कर हर जगह फैलाते हैं अब ऐसा कोई लड़का नहीं है जिस को दो अक्षर आते हों और वह ऐसी किताबों को न पढ़े और उन पर श्रद्धान न लावे देखो तुम्हारे ही लड़के मथुरादास ने कमसे कम बीस किताबें आर्या समाज की मोल लीहोंगी उस से पूछो उस के क्या ख्याल हैं ॥

सुंदरलाल– हाय अफसोस इस पंचम-काल में और क्या होना है यह ही उपद्रव होंगे ॥

बुद्धिमान–क्यूं साहब यह लड़का कुछ जैन धर्म को जानता भी है ॥

सुन्दरलाल अगर जैन धर्म को कुछभी जानता तो ऐसी बातें ही क्यों करता जिस ने जैन धर्म को किंचित मात्र भी जान लिया है क्या वह फिर किसी के बहकाये में आसक्ता है ॥

बुद्धिमान– भाई साहब तुम चाहे बुरा मानो चाहे भला मगर इस में तो कसूर इस लड़केका नहीं है बल्कि आपका है अगर तुम सब से पहले लड़के को जैन धर्म के सिद्धान्त पढ़ा देते तो क्यों आज बैठ कर रोते ॥

भोंदूमल– मैं तो बोहतेरा समझाऊंहूं कि भाई जैन शास्त्र पढ़ा कर पंडित बालक शामने अपने आप कई दफै कहा कि मेरे पास आया कर मैं पढ़ाया करूंगा मगर इस को तो जैन के नाम से चिड़ मालूम होती है अभी सारी बात किसमत की है

बुद्धिमान– जो लोग समय पर अपना काम नहीं करते हैं वह तुम्हारी तरह किसमतही को रोया करते हैं भाई साहब अब हजार सिर पटको अब कुछ नहीं हो सक्ता है बालक नरम लकड़ी के समान होता है जिस विधि चाहे उस को मोड़लो परन्तु जैसे सूख जाने के पीछे लकड़ी नहीं मुड़सक्ती इसही तरह बालक पन में जो बात हृदय में जमजाती है उसका निकलना बहुत मुशकिल है ॥

अगर तुम लड़कपन में इस को जैन शास्त्र पढ़ाते और फिर अंग्रेजी फारसी पढ़ाते तो कुछ हरज नहीं था देखो लाला [illegible]चन्द ने अपने लड़के को पहले अच्छी तरह से जैन धर्म के शास्त्र पढ़ाये जब होशयार होगया तो अंग्रेजी मदरसे में दाखिल कराया अब वह अंग्रेजी में ऐसा होशयार है कि उस के बराबर क्या कोई होगा मगर अपने धर्मपर ऐसा कायम है कि कोई पंडित भी नहीं होगा—पक्का जैनी

सुन्दरलाल–साहब आप का कहना तो ठीक है प्रत्येक ग्राम में एक एक जैन पाठशाला होनी चाहिये और पंचायत में यह नियम होजाना चाहिये कि पहले इतनी पढ़ाई पाठशाला में पढ़ले फिर और का[illegible] करे और जो न पढ़े उस का विवाह नहो

बुद्धिमान—भाई साहब अब तो ऐ[illegible] कहोगेही मगर याद करो पहली बातों[illegible]

जो कोई पाठशाला का नाम लेताथा तो लड़ने को दौड़ते थे और कहते थे कि हम को शास्त्रजी पढ़ाकर क्या अपने लड़कों को मंदिरजी की नौकरी करानी है—हाय हाय उस वक्त मैं विचारता था कि यह लोग जो ऐसा अनर्थ बोल बोलरहे हैं तो जरूर इन पर कुछ आफत आनेवाली है क्यूंकि तुम्हारा पाप तुम से ऐसी बातें धर्म के प्रचार में विघ्न डालने वाला कहलाता था ॥

भौंदूमल—तुम सच कहते हो हमारे पाप कर्मों काही यह नतीजा है मगर अब भी कोई ऐसा उपाय है जो यह लड़का जैन धर्म को सीखजावे मैं हाथ जोड़कर बड़ी आधीनताई से यह कहताहूं कि चाहे कितनाही खर्चहो मैं सब दूंगा मगर यह लड़का समझजावे ॥

बुद्धिमान—अब पछताये क्या होता है जब चिड़िया चुगगई खेत ॥

भौंदूमल—यह बात सुनकर धाड़मार कर रोनेलगा और कहा के हाय मेरा बेड़ा डूबगया मैं किसी जोग न रहा बिरादरी में क्या मुंह दिखाऊंगा यह कलंक मुझ से नहीं सहा जाता है ॥

बुद्धिमान—भाई घबराने से कुछ नहीं होता है धीरज बांधो देखो हम सब समझा देवेंगे ॥

भौंदूमल—आप की बड़ी कृपा होगी ॥

बुद्धिमान—धर्म प्रचार के कामों में फिर तो विघ्न नहीं डालोगे॥

(शेषमग्रे)

जैन महासभा

जैन महासभा की नियमावली तय्यार होगई है चाहिये कि सर्व जैनी भाई उस को आद्योपान्त देखें और ध्यानदें और उस में जो कुछ न्यूनाधिक करने की आवश्यक्ताहो उस से डिप्टी चम्पतराय महा मंत्री महासभा को सूचित करें। नियमावली श्रीमान सेठजी लक्ष्मणदासजी साहब सभापति जैन महासभा मथुरा के पास से बिना मूल्य मिलसक्ती है जो चाहें मंगालेवें इस स्थानपर हम सर्व साधारण के जानने के वास्ते उस नियमावलीमें से महासभा के प्रयोजन कर्त्तव्य और महासभा का सभासद होने के नियम प्रकाश करते हैं इन को देखकर हमारे परोपकारी भाई अवश्य सभासद होना स्वीकार करेंगे ॥

१—महासभा एक ऐसी पुस्तक बनावेगी जिस से यह जानाजाय कि किस २ नग्र ग्राम में कितने और किस २ कुलगोत्र न्यात के जैनी भाई रहते हैं उनका चलन व्यौहार धर्म रुचि कैसी है जैन मंदिर कहां कहां है जैन सभा और जैन पाठशाला कहां २ है और उस के प्रबन्ध क्या हैं इत्यादि ॥

२—महासभा जहां २ जैनी भाईयों का निवास है वहां २ महासभा की शाखा स्थानिक सभा स्थापित कराकर उन को अपने रजिस्टर में शाखा सभा के नाम से लिखकर उस से महासभा के नियमों का

पालन पोषण करने की प्रेरणा करैगी ॥

३—महासभा प्रचलित संसारिक विद्या के साथ साथही धर्म विद्या की प्रेरणा और यत्न करती रहेगी—जिस से जैनियों के बालकों में सभ्यता उत्पन्नहो क्योंकि सभ्यता का प्राप्ती बिना बहुधा बालक स्वतंत्र हो गोत्र कुल आम्नाय की मर्यादा के प्रति कूल चलने लगते हैं जो सर्व नाश का मूल कारण है इस लिये सब से प्रथम धर्म विद्याही का पढना उचित है और यह तो सर्वही लघु दीर्घपर प्रगट हैं कि जैनीयों के बराबर अपने राजा की सच्ची शुभचिंतकता दूसरी जातियों में बहुधा कम हैं और यह इसी धर्म की महत्वता है कि कभी किसी ने कम सुनाहोगा कि जैनियों का कोई गिरोह बदमाश धाड़ी चोर आदि की पंक्तियों में लिखागयाहो ॥

४—महासभा पुरुषोंही में नहीं किन्तु स्त्रियों में भी देवनागरी अक्षरों द्वारा धर्म विद्या के प्रचार कराने का प्रयत्न करेगी

५—महासभा जहां २ जैनीलोगों में कालदोषकर परस्पर अप्रियभाव और भिन्नता कहिये फूट उत्पन्न होकर दो अथवा कई थोक होगये हों उन में मैत्रीभाव करा मिलादेने का प्रयत्न करैगी और एसे उपाय करेगी जिस से जैनियों का संसार में पूर्ववत गौरव विस्तृत होय ॥

६—महासभा स्थानीय नियमावली द्वारा जैनियों में सुरीतियों का प्रचार और शुद्धाचरणों की वृद्धि व खान पान की शुद्धता कराने और व्यर्थ व्यय अर्थात फजूलखर्ची व खोटे आचरणों के दूर करने का प्रयत्न करैगी ॥

७—महासभा जैन जाति के अनाथ दीन अपाहज जिन के रक्षक न रहेहों और कोई सहायक नहो विधवा आदि के प्रति पालन के उपाय और जो बालक उच्च श्रेणी की विद्या पढने का अभिलाषी द्रव्य के अभाव से लाचारहो उस को यथा योग्य सहायता दे विद्या लाभ करावेगी ॥

८—महासभा का मुख्य प्रयोजन जैन धर्म में उच्च श्रेणी की संस्कृत विद्या के प्रचार कराने का है और विना एक महा विद्यालय स्थापित किये ऐसा होना सम्भव नहीं इस लिये जैन महा विद्यालय नियत करने के लिये भी महासभा समय समय पर युक्तियां सोचती रहैगी ॥

९—महासभा योग्य स्थानों में जैन पवित्र औषधालय और अनाथालय स्थापित कराने का प्रयत्न करती रहैगी ॥

१०—महासभा जैन सरस्वती भंडार के प्रमाणिक और प्राचीन ग्रन्थों को जो कालदोषकर अलभ्य प्राय होगये हैं खोजकर सग्रह करने में सदाकाल उद्यमी रहैगी ॥

११—महासभा अपने नियमों के पूरा कराने के वास्ते सवैतनिक और अवैतनिक दोनों प्रकार के योग्य उपदेशक भी नियत करैगी जो देशाटन कर उपदेश करेंगे ॥

१२—महासभा किसी खास अखबार में अपनी सब कार्रवाई प्रकाश कराने का प्रयत्न करेगी जिस से सम्पूर्ण स्थानिक सभा पाठशाला और बिरादरी के किये कार्य्यों का हाल सर्व भ्रातृगणों पर प्रगट हो और हुलास पैदा होवे (महासभा की सम्पूर्ण कार्रवाई नागरी जैन गजट द्वारा प्रगट होती है जिस को बाबू सूर्यभानजी वकील देवबन्द से सप्ताहिक निकालते हैं मूल्य केवल तीन रुपये डाक व्यय सहित सालाना है)

१३—महासभा का वर्ष कार्तिक वदी दोज से प्रारम्भ होकर अगले वर्ष की कार्तिक कृष्ण १ को पूरी होगी ॥

१४—महासभा उपरोक्त नियमों के अतिरिक्त अन्यान्य और उन लौकिक परमार्थिक कार्य्यों का भी प्रबन्ध करती रहेगी जो उस के पूर्वोक्त नियमों की सफलता के लिये सहकारी और उचित हों ॥

(३)—महासभा राजनैतिक विषय पर वादानुवाद वा किसी प्रकार की आलोचना तक नहीं करेगी और न किसी सभासद को ऐसे निवेदन वा प्रार्थना के अतिरिक्त (जो प्रजागण नम्रता सहित निज राजा से करसक्ती है) इस विषय का कोई प्रस्ताव सभा में उपस्थित करने का अधिकार होगा ॥

(४)—महासभा और उस के किसी सभासद को अधिकार न होगा—कि मत मतान्तर शाखा प्रतिशाखा या किसी व्यक्ति विशेष की निन्दा का कोई प्रस्ताव सभा में उपस्थित करैं किन्तु अपने नियमों का पालन ही इस सभा का मुख्य धर्म है ॥

महासभा के सभासद्गण

(५) १—प्रत्येक न्यात कुल गोत्र के जैनी दिगम्बर आम्नाय के धारक और जैन धर्म के सच्चे शुभचिन्तक गण इस सभा के सभासद होसक्ते हैं और उन की निम्न लिखित कक्षा है—जो महाशय एक बार २५०) रुपये या अधिक रुपया दे सभा की सहायता करेंगे वे अपने जीवन समय पर्यंत अर्थात सदैव काल के लिये प्रबन्ध कारणी सभा के सभासद समझे जावेंगे ॥

२—जो महाशय २०) रु० या उस से अधिक धन से प्रति वर्ष सहायता करेंगे वे भी प्रबन्ध कारणी सभा के सभासद जिस वर्ष की बाबत उन्हों ने सहायता की है सभासद होंगे ॥

३—जो साहब केवल १०) रु० साल से सहायता करेंगे वे उसी वर्ष के लिये साधारण सभासद जिस वर्ष की बाबत सहायता की है रहैंगे ॥

४—उपकारी—जो महाशय अपनी विद्या द्वारा सभा की सेवा करें और सदैव काल सभा के शुभचिंतक रहैं वे उपकारी सभासद कहलावेंगे और इन में जैन पत्रों के वे सम्पादक गण जो महा सभा के कार्य्यों से सहानुभूत रख उस के मन्तव्यों की सिद्धि में सहायता समयानुकूल महासभा

सम्बन्धी लेखादि प्रकाश करने में सयत्न होंगे और सम्पूर्ण अवैतनिक उपदेशक गण भी शामिल हैं इन से (सिवाय इस के कि अपनी खुशी से देवें) कुछ चन्दा न मांगा जावेगा यदि महासभा किसी को योग्य जाने तो प्रबन्ध कारणी सभा का सभासद बनासक्ती है सभासदों के अतिरिक्त जो अन्य महाशय कुछ द्रव्य से महासभा के भंडार की सहायता करेंगे उन का धन्यवाद सभा से दिया जावेगा और खुशी से कबूल करलिया जावेगा ॥

स्त्रीशिक्षा

ऐ प्यारे भाईयों जरा ज्ञान रूपी नेत्रों को खोल कर देखो कि आज कल जो यह कुरीतियां और फिजूल खर्चो हमारी जाति में फैल रही हैं कि जिन्होंने हम को शोक मई सागर में डुबो रक्खा है जिस से हमारी जिन्दगीका नाश होरहा है और रात्रि दिवस हम को काठ की कठ पुतली की तरह नाच नचा रही है सो क्या कारण है— ऐ प्यारे भाईयों सब तरह विचार करने से और दृष्टि फैलाने से मेरी मन्द बुद्धि में तो यह सब स्त्री शिक्षा के न होनेका ही चमत्कार है परन्तु मुझ को अपनी जाति के मुखिया और धनाढ्य महाशयों पर अत्यन्त खेद उत्पन्न होता है और नेत्रों से अश्रुपात की धारा गिरने लगती हैं जब मुझ को स्मरण होता है कि वे महाशय और ही तरफ लगे हुए हैं स्त्री शिक्षा पर न तो कुछ विचार करते हैं और न ध्यान देते हैं— ऐ ज्ञानवान सज्जन पुरुषो ऐ जैन जाति के दुखों पर रोने वालो अथवा रहम खाने वालो परोपकारियो यदि तुम अपने धर्म और जाति की उन्नति चाहते हो तो स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान दो और उस के प्रचार करने में तन मन धन से कोशिश करो जब तक स्त्री शिक्षाका प्रबन्ध न होगा तब तक हमारी जातिका उद्धार कदापि नहीं होसक्ता क्योंकि धर्म की रक्षा तथा ग्रहस्थाचार की शुद्धता और सन्तान को विद्या आदि सद्गुणों के लाभका मुख्य कारण स्त्री शिक्षा ही है जिस ग्रहस्थी की स्त्री पढ़ी हुई होती है उसे जो सुख होता है वही जानता है— परन्तु हमारे बहुधा भाई इस बात से प्रश्न करते हैं कि क्या हमें औरतों को पढ़ा कर नौकर बनाना है और यदि औरतें पढ़ जावेंगी तो हमारे कहने में न चलेंगी सो उनका कहना बहुत ठीक है परन्तु भाईयों मैं यह नहीं कहता हूं कि औरतों को बी० ए० एम० ए० तक पढ़ा कर विकालत पास करादो या दफ्तर में उमेदवार करादो— भाईयों मेरी गरज तो औरतों को देव नागरी और संस्कृत विद्या पढ़ाने की है कि जिस की सहायता से शास्त्र की स्वाध्याय करके अपने धर्म कर्म का ज्ञान लेवें ॥

और जो भाई यह कहते हैं कि पढ़ कर औरतें हमारे कहने में नहीं चलेंगी सो उन भाईयों से मेरी यह प्रार्थना है कि

अबतो औरतें आप के कहने ही में हैं यदि आप के कहने में होती तो क्या यह मिथ्यात्वका पूजना हमारी जाति में रहता कदापि नहीं रहता— मैं आशा करता हूं कि जब स्त्रियां पढ जावेंगी और अपने धर्म को चीन्हने लगेंगी तो अवश्यही आप के कहने में चलेंगी और मिथ्यात्वका पूजना जो अविद्या के कारण करती हैं अवश्य छोड देंगी अब मैं अपने लेख को समाप्त करके अपनी जाति के मुखिया और धनाढ्य महाशयों से प्रार्थना करता हूं कि वे इस पक्ष को छोड कर मेरी इस छोटी सी प्रार्थना की और ध्यान देवेंगे और पाठशालाओं के साथ में कन्या पाठशालाओंका प्रबन्ध करके अपनी जाति के इस धब्बे को शीघ्रही धोवेंगे ॥

मैं बडे हर्ष के साथ प्रकाशित करता हूं और मारे खुशी के अंग में फूला नहीं समाता हूं कि हमारे यहां नजफगढमें एक स्त्री मनोहरी बाई पढी हुई है और बडी बुद्धिवान है और रत्न करंड श्रावकाचार और पद्मपुराणजी की चरचा को भले प्रकार जानती है और देव गुरु धर्मका श्रद्धान तथा आचरण बहुत दृढ है जैन गजट और शास्त्रजी अपने गृह पर बहुत सी औरतों को सुनाती हैं और दो तथा चार लडकियों को मंगल तथा भक्तम्बरजी पढाती हैं इन की प्रशन्सा कहां तक की जावे ॥

जैनियोंका दास बनवारीलाल
नजफगढ जिला देहली

सच्चा श्रद्धान

हे जीव ! तुझ को इस जैनमत के प्रभाव से किसी वस्तु का पाना दुर्लभ नहीं है सो तू भटकता हुआ कुगुरु कुदेव कुधर्म को किसी पदार्थ के हेतु में अज्ञानी हुआ सदा काल उन्हीं में भूला रहता है और उन्हीं को पूजता रहता है सो तू अनन्त सागर पर्यंत के दुःख भोगने की मर्यादा बांधता है हे जीव! तू विचारकर देख तो थोडेही परिश्रम करने से और सच्चा श्रद्धान बांधने से उत्तम से उत्तम वस्तु की प्राप्ति तुझे होसक्ती है इस लिये तू किसी वस्तु के पाने से नाउम्मेद मतहो और जिनमत का सच्चा श्रद्धान कर ॥

संसारिक जितने पदार्थ हैं वोह सब तेरे उदय अनुसार प्राप्तिहोते हैं लेकिन सब से उत्तम वस्तु पाने का उद्यम कर वोह उत्तम वस्तु इसी जिनमत के द्वारा प्राप्ति होसक्ती है और किसी कुगुरु, कुदेव, कुधर्म के सेवन करने से नहीं हो सक्ती इस लिये कुदेव आदिकका सेवन करना तेरा वृथा है बल्कि अनेक पर्यायों के लिये दुःख भोगना है सब से उत्तम वस्तु क्या है वोह मोक्ष है सो जिनमत के सच्चे श्रद्धान बिना नहीं हो सक्ती— यह संसार मिथ्यात्व रूपी इस जीवका दुख दाई लुटेरा है और हे जीव तू इस लुटेरे को तीक्ष्ण बर्छी

को अर्णी के नीचे पड़ा हुआ निकल- ता है परन्तु उस से निकलने की कोशि- श क्यों नहीं करता और क्यों नहीं ऐसा उपाय करता जो फिर भी इस लुटेरे की तीक्ष्ण बर्छी की धार के नीचे नहीं आवे सो हे और यदि तू जिनमतका सच्चा श्र द्धानी हो जावे तो अवश्य इस धार के नी चे से निकल सक्ता है और ऐसा भी इसी के द्वारा हो सक्ता है जो फिर कभीन आ वै परन्तु तू इस को भूल कर अन्य २ म तों में भटकता फिरता है सो क्या कभी तेरा उद्धार होगा कदापि नहीं होगा क्या तू संसार में भ्रमण करने के सुख को मो- क्ष के सुख से उत्तम समझता है जान प- ड़ता है इस ही कारण तू उस सुख की प्राप्ति करनेका उद्यम नहीं करता और सं- सारिक सुख की भी प्राप्ति करनेका उपाय सोचता है परन्तु तेरे इस मिथ्यात्व के स- बने से तो संसारिक सुख की भी प्राप्ति होना दुर्लभ है इस लिये तू जिनमत के स- च्चे श्रद्धान को ग्रहण कर और उस की उन्नति के उपाय सोच कि किन २ का रणों से उन्नति होगी ऐसा जब तू मन में बिचारेगा तो अवश्य निस्तारा होगा अन्य प्रकार कदापि दीर्घ काल पर्यंत न होगा

किशोरीलाल श्रावक

फीरोजाबाद

जैन धर्म सभा भूपाल

यहां पर सभा व पाठशाला की कार- रवाई जारी है—सम्पूर्ण महाशयों ने मिती ज्येष्ठ दूजे बदी १४ को सभा का जलसा होना नियत किया उसी वक्त पंडित छीगा- लालजी गोधा भेलसा निवासी को बुलाने के वास्ते पत्र भेजागया पंडितजी साहब सभा के दिवस उपस्थित हुए उक्त दिवस सायंकाल की सभा प्रारम्भ की गई—जिस में लाला नत्थूचंदजी भेलसा निवासी ने विद्योन्नति और व्यर्थ व्यय, कुरीति दूर क- रने के विषय में अत्यन्त मनोहर ललित शैली से व्याख्यान दिया जिस को सुनकर सब ही सभासद अति हर्ष को प्राप्त हुए पश्चात् पं० छीगालालजी ने अपनी मृदु वाणी से उसी व्याख्यान को पुष्ट किया और विद्या अभ्यास करने की हमारी जाति में अत्यन्त आवश्यकता है जिस के न होने से हमारी जाति में अनेक प्रकार की हानि होरही है कई जगह की स्त्रियों को प्रकार हमने जैन गजट में देखा है कि हम तो विद्या पढ़ानी चाहिये हम को धर्म का प्रकार दिखाना चाहिये यदि यह प्र- कार सब को सत्य है तो क्यों नहीं स्त्रि- शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता और यही कारण है कि स्त्रियों की मूर्खता से कुरीति व्यर्थ व्यय और कुदेव आदि का पूजना हमारी जाति से बन्द नहीं होता इस वास्ते स्त्रियों को विद्या पढ़ाना अति आवश्यक है जो माता पिता अपनी सन्तान को विद्या नहीं देते तो उन के लिये शत्रु से भी अधिक दुखदाई होते हैं नीति का वाक्य है माता शत्रु पिता बैरी, येन बालौ न पाठित:॥

नशोभते सभा मध्ये, हंस मध्ये बको यथा ॥ पंडित छोगालालजी ने इस का मतलब बहुत अच्छी तरह से दर्शाया और भी कई व्याख्यान बड़ी योग्यता के साथ दिये और कहा विद्या के बिना नर पशू के समान हैं एक सवैया इस विषय पर पढकर यह दिखलाया के इस भांति बिना विद्या के नर पशू के समान हैं—तत्पश्चात एक महाशय ने प्रश्न किया कि हम भली भांति दृष्टि से देखते हैं कि बिना पढे मनुष्य द्रव्यवान हैं रूपवान हैं और पढे हुए पुरुष द्रव्य रहित दिखलाई देते हैं इस विचार से हमारी समझ में तो द्रव्य के देनेवाली अविद्या है इस प्रश्न को सुनकर उक्त पंडितजी साहब ने अत्यन्त ललित वचनोंकर उत्तर दिया और कहा श्लोक ॥ विद्वत्वंच नृपत्वंच नैव तुल्ये कदाचिनः स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते ॥ यानी राजा तो अपनेही राज्य में मानाजाता है और परन्तु विद्वान की सर्व जगह प्रतिष्ठा होती है और जो बिना विद्या के रूपवान और धनवान देखने में आते हैं और शोभा को प्राप्तहोते हैं सो यह बात असत्य है यदि पूर्व पुन्य कर भाग्योदयात द्रव्य प्राप्त होगया रूप अच्छा होगया तो विद्या बिना उस द्रव्य का आराम पाना व संचयकर भोगना वा धर्म कार्य में लगाकर आगे को पुन्य पकाने का बाधना बिल्कुल असम्भव है उस समय सभा में स्त्री पुरुष २५० के अनुमान थे भाई कस्तूरचंदजी ने मंगलाचरण कहकर सभा बिसरजन कराई—विद्यार्थियों की परीक्षा लीगई जिस में भाई केसरीमल बड़जातिया ने बड़े हर्ष के साथ टोपी वगैरः इनाम में विद्यार्थियों को बांटी ऐसे महाशयों को धन्य है ॥

जैनी भाईयों का शुभचिंतक
प्यारेलाल अध्यापक
जैन पाठशाला भूपाल.

सदुपदेश

विद्या, विभव, बल, रूप, और उत्तम कुल में जन्म पाकर गर्विष्ठ मत होओ

शान्ति रक्खो शांति के समान कोई तप नहीं है ॥

सन्तोष रक्खो सन्तोष के समान कोई सुख नहीं है ॥

दया रक्खो दया से बढकर कोई धर्म नहीं है

तृष्णा मत बढाओ क्योंकि तृष्णा के समान कोई व्याधि नहीं है ॥

संसार में विद्या रूपी धन अपूर्व है जिस के प्रभाव से सब कुछ वस्तु प्राप्त होसक्ती है इस लिये इस के बढाने के हेतु अहर्निश तन मन धन से परिश्रम करो जो कुछ काम करनाहो सत्यता के साथ करो क्योंकि सांच को आंच कहीं नहीं लगती है किन्तु अन्त में सत्यही की जय होती है

हे महाशयों ! हम पुकार २ कर कहते हैं कि सच्च की बराबर संसार में कोई उत्तम वस्तु नहीं है ॥ (दोहा) सच बराबर तप नहीं, झूंठ बराबर पाप ॥ जाके हिरदे सांच है, ताके हृदय आप ॥

॥ श्रीः ॥

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपयाहै

साप्ताहिक पत्र

हरअंगरेज़ी महीनेकी १-८-१६-२४ता०
को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध
से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष | ता० ३ अगस्त... सन् १८९६ | अङ्क ३२

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

समाचारोंका गुच्छा

ग्वालियर— लाला मानिकचन्दजी लिखते हैं कि बड़ी कोशिश से मुरारके श्री जैन मंदिर में जैन महाविद्यालय की सहायतार्थ गोलक रक्खी गई है और वहां के भाईयों ने सभा नियत करनेका भी वादा कर लिया है ॥

रीवां— लाला रामचन्दजी लिखते हैं कि यहां पर मिती द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १९ को सभा हुई जिस में उस समय कुल २१ भाई थे— लाला फूलचन्दजी ने मिथ्यात्व व सम्यक्त व स्वाध्याय के विषय में अति मनोहर व्याख्यान दिये कई भाईयों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा की और भाईयों ने मिथ्यात्व के रोकने की प्रतिज्ञा ली इत्यादि सर्व भाईयों ने अपनी अपनी समार्थ्यानुसार नियम किया ॥

लामेट जिला मुरादा— से लाला हुकमचन्दजी लिखते हैं कि यहां के भाईयोंने फिजूल खर्चीका सर्वथा त्याग किया है और यहां पर जैनियों के १८ घर हैं जिस में ७० भाईयों के अनुमान है— यहां पर पाठशाला होनेका विचार हो रहा है जिस वक्त स्थापित हो जावैगी तब आप को सूचित किया जावैगा— धन्य है यहां के भाईयों को कि जिन्होंने फिजूल खर्ची का त्याग किया है ॥

मेरठ—जैन स० के सम्पादकजी लिखते हैं कि यहां १ एक महीने से पं० मंगलसेनजी पधारे तब से हर अष्टमी और चतुर्दशी को सभा होने लगी है और उस में स्वमत और परमत वाले अनुमान ४० तथा ५० भाईयोंके एकत्र होते हैं उपदेश भी अच्छे होते हैं और मिती ज्येष्ठ सुदी १९ को मंदिरजी में गोलक भी रक्खी गई है जो कि मिती भादो सुदी १४ को खोली जावैगी जो कुछ द्रव्य संचय होगा वोह सेठजी सहाब की सेवा में मथुरा भेजा जवैगा ॥

सिरसावा— हकीम उग्रसेनजी ने अपने शिष्य जुगलकिशोर विद्यार्थी के द्वितिय क्लास इंगलिश मिडिल में पास होजाने की खुशी में २) रुपये उपदेशक फन्ड की सहायतार्थ दिये— सच्चा दान इसी का नाम है ॥

बिसवा जिला सीतापुर— लाला मुकन्दलालजी लिखते हैं कि यहां पर सीतापुर, बाराबंकी— नवाबगंज के जैनी भाईयों में एकयता नहीं है आपस में बैर विरोध ज्यादा है— बड़े खेद की बात है कि जैनी भाईयों में विरोध होना कदापि न चाहिये ॥

हम प्रार्थना करते हैं कि उक्त ग्रामों के भाई अवश्य बैर विरोध को छोड़ कर आपस में एकयता पैदा करेंगे और धर्मोन्नति में कटिबद्ध होंगे ॥

उपकारी नाटक

विद्या और अविद्याकी बातचीत

विद्या— ऐ दुष्टनी सत्य धर्म नाशिनी मिथ्यात्व प्रचारिणी महा दुख कारिणी तू जहां जाती है वहां ही मेरे राज्य को नष्ट कर देती है मुख्य कर जैनियों में तो तूने आज कल बहुतही अधिकार पाया है (रोकर) हाय २ एक दिन वोथा कि सब जैनी मेरे ही अधिकार में थे— आज वोह दिन होगया कि सब जैनी मेरी खबर भी नहीं लेते ॥

अविद्या— बस चुप रहो, मैं तेरे इस रोने से क्या कुछ रंजीदा होउंगी तू यह मत समझना कि मैं अकेली हूं मेरे संग १ बड़ी भारी फौज है ॥

विद्या— हे राक्षसी तेरी फौज के सरदारों का क्या नाम है ॥

अविद्या— [illegible] से बोल— मैं अपनी फौज के चन्द सर्दारोंका नाम तेरे आगे लूंगी जिस से तू डर जावेगी और फिर कभी तू मुझ से ऐसा शब्द न कहैगी ॥

विद्या— हे दुष्टनी शीघ्र बश में तो तुझ से वैसेही डरती हूं और जो डरती न होती तो क्या तू मेरी राज धानी में पांव धरने पाती यह तेरा और मेरा दोष नहीं है यह मेरी परजाका दोष है ॥

अविद्या— ओ हो क्या तेरी परजा मेरी फौज के सरदारों के वश में हो गई हां ठीक है तभी मेरी फौजका एक सर्दार जिसका नाम कुशील है आज मेरे पास आया था कि मैं एक खुशी की लाने को आया हूं लेकिन मैंने उस बात को सुनी अन सुनी कर दिया तेरे पास चली आई ॥

विद्या— हे अविद्या तेरा बुरा हो क्या कुशील के वश में मेरी रियाया हो गई— (मनही मन में) हाय अब रियाया बिगड़ी ॥

अविद्या— आज मुझे मालूम हुआ कि तू अपनी रियाया से बिलकुल बेखबर है मैं अभी जाकर अपनी फौज के सरदारों को हुकम देती हूं कि तुम [illegible] [illegible] राज धानी पर अपना दखल कर [illegible] (मनही मन में) यह बे [illegible] [illegible] होगी ॥

विद्या— भला तेरे सरदारों का क्या नाम है ॥

अविद्या— मेरे सर्दारों के नाम तो [illegible] हैं [illegible] तेरे लिये तो चन्द सर्दार [illegible] काफी हैं जिनका नाम तेरे आगे लेती

विद्या— क्या तूने मुझ को बिलकुल ही [illegible] समझ लिया जो ऐसा शब्द बोलती है कि तेरे लिये मेरी फौज के चन्द सरदारी काफी होंगे ॥

अविद्या— हां मैं तो तुझ को बिलकुलही निर्बल समझती हूं क्योंकि जब तेरी परजा ही तेरे बस मे नहीं है तो तू [illegible] की परजा पर क्या दखल कर सकती है ॥

विद्या— क्या मेरी परजा मेरे बस में नहीं रही तो मैं कम जो होरगई (मनही मन में) हाय इस रियाया ने मुझे कम जोर बना दिया वरन इस अविद्या की क्या ताकत थी जो मुझ से यह ऐसा शब्द कहती ॥

अविद्या— क्या तू अबभी कम जोर नहीं है जब कि तुझ से तेरी रियाया ही विरुद्ध ह देखले मुझ को अपनी रियाया पर तो दखल है ही अब तेरी रियाया पर भी मेरा दखल हो चुका है क्योंकि तेरी रियाया कुशील के बस में तो आही चुकी है और मेरे बाकी सर्दार भी दखल करने की कोशिश कर रहे होंगे ॥

विद्या— भला तू अपने सर्दारोंका नाम ले कौन २ से सर्दार हैं ॥

अविद्या— मेरे सर्दारों के नाम असत्य, चोरी, हिंसा, कुशील (तेरे लिये इतने ही काफी हैं) आदि बहुत से सर्दार हैं जो सब मिलकर अपना २ काम करते हैं ॥

विद्या— भला उन के सुपुर्द क्या २ काम है ॥

अविद्या— जेसुन जो हम सब मिलकर काम करते है नर्कादिक की सैर कराना पहिला कार हमारा है सम विषन से प्रीति करावें यह भी कार हमारा है महा दुख में गेर जीव को और निगोद दिखाना है मोह क्रोध को मित्र बनावें मार्में नर्कका द्वारा है और भी बहुत से हमारे काम हैं जिन को हम सर्व मिल कर करते है ॥

कुशील— हाथ जोड कर अविद्या से महारानीजी हमारी फौज के सब सर्दारों ने जैनपुरी पर दखल कर लिया है जो विद्या की खास राज्य धानी है ॥

विद्या— घबरा कर यह दुष्ट क्या समाचार लाया है ॥

अविद्या— हे वीर कुशील क्या जैन पुरी पर दखल हो गया— यह समाचार तैने बड़ी खुशी के सुनाये भला बताती सही किस तरह से जैनपुरी पर दखल हुआ

कुशील— प्रथम तो व्यर्थव्यय सर्दार बाल्य विवाह के घोडे पर सवार हो कर जैनियों की जैनपुरी में गया जिस ने जाते ही जैनियों की सारी सम्पति छीनली और उन को महा दुख में डाल दिया ॥

अविद्या— (विद्यासे) देख मेरे सर्दारका कार्य किस तरह से जैनियों को दुख में डाला और उन को मालूम न होने दिया कि हम बर्बाद हो रहे हैं ॥

विद्या— हां बहन सत्य है ऐसा ही हुआ होगा (मनही मन में) हाय इन जैनियों को बिलकुल खबर नहीं हुई ॥

कुशील— इस के पीछे उन के मंगलीक कार्यों में वेश्या ने प्रवेश किया जिसको उन्होंने बहुतही खुशी के साथ पेशवाई की जब कि वेश्या ने देखा कि जैनी मुझ से प्रसन्न होगये हैं तो उसने झट

अपने मित्र कुशील यानी मुझ को बुला लिया और मैंने जातेही रहा सहा धन सब हर लिया और उन को ऐसे भुलावे में डाल दिया कि मेरे प्रवेश होते ही उन्हों ने मुझे मुखिया बना लिया— जब मैंने देखा कि मैं मुखिया होगया तो झट से मैं ने नर्क पुरी के द्वार पाल को लिख भेजा कि यहां पर तो काम हो चुका है अब तुझ से प्रार्थना है कि तू इन जैनियों को अपने नर्क में स्थान दे ॥

अविद्या— (विद्यासे) देखले मेरे मददगारों की करतूत (कुशील से) मालूम होता है तैने इस जैनपुरी पर दखल करने में बड़ी कोशिश की है ॥

विद्या——बस २ अब तुम ज्यादा मत बको मुझ को तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर रोना आता है अब मैंभी जैनियों को जाकर समझातीहूं कि अविद्या को अपना मुखिया मत बनाओ—मुझे निश्चय है कि वो मेरी इस बात को अवश्यही स्वीकार करेंगे क्योंकि मेरे साथ में एक जैन गजट हलकारा अग्रसर चलता है जोकि महासभा मथुरा की ओर से निकाला जाता है देख अब मैं भी क्या २ खेल करतीहूं (मनही मन में) न होना चाहिये ॥

अविद्या—जा तुझे कसम है कि तू अपनी राजधानी जैनपुरी पर फिर से दखल ही न करले दोनों जाते हैं ॥

जैन पुरी

जैनी भाई बैठेहुए हैं और जैन गजट रूपी विद्या का हलकारा आता है ॥

जैन गजट—सुनो महाशयो एक मेरी भी प्रार्थना सुनिये मैं अपनी स्वामिनी विद्या का सेवक हूं जहां जाताहूं वहां उसकी तारीफ करताहूं इस वक्त मेरी स्वामिनी ने मुझे हुक्म दिया है कि जैनियों में जाकर मेरे आने की खबर करदे जिस से वो सावधान होजावैं ॥

विद्या- ऐ मेरे प्रियवरों जरा सोचो कि तुम कैसे २ कार्य कररहेहो कि जिस से तुम नर्क के घोर दुःखों की सैर करोगे— जब मैं अविद्या से बातचीत कर रहीथी उसने तमाम हाल कहदिया कि जैनियों ने मुझे अपना मुखिया बनालिया और मेरा कार्य सिद्ध होगया अब अवश्य इन पर्दा की उन्नति होगी जरा विचारो तो सही कि तुम्हारा बुरा चाहे उसे तो तुम मुखिया बनाओ और मुझ जो हमेशा आप लोगों की भलाई चाहती रहतीहूं उस मुझ से बात भी नहीं करते अब इसलिये तुम को चाहिये कि तुम मुझे अपनी सरदार बनाकर मेरे वास्ते एक जैन कालिज बनाओ जिस में हमेशा के लिये रहूं और तुम्हारे वास्ते मुक्ति का दरवाजा तयार करूं.

(रोती) ऐ भ्रातृगणों जरा सोचो कि क्या २ नुकसान इस अविद्या ने किये हैं और कररही है अगर आप की ऐसीही

हालत रही तो क्या आप इस संसार रूपी सागर की लहरों में डूबे नहीं रहोगे पस अगर आप को इस सागर से तिरने की इच्छा है तो जैन कालिज बना के विद्या को मुखिया बनाईयेगा:—

जैनियों का दास
अर्जुनलाल सेठी वकील
विद्या प्रचारणी सभा
जैपुर

चिट्ठी

संपादक महाशय कृपाकर अपने अमूल्य पत्र में स्थानदान देकर अनुग्राहित कीजियेगा:—

सब भाईयों को विदित कियाजाता है कि मैंने—२०० के लगभग कार्ड छपे हुए और १००० से ऊपर विज्ञापन महासभा की तरफ से—भाईयों की सेवा में भेजे कि महासभा के दिन निकट आतेजाते हैं अब की सभा में क्या २ प्रस्ताव पेशहोकर उन का विचार होना चाहिये—दूसरी प्रार्थना प्रतिनिधियों के विषय में कीगई थी परंतु दस पांच भाईयों के व्यतिरिक्त किसी महाशय ने भी अपनी सम्मति प्रगट नहीं करी—सो भाईयों को अवश्य कुछना कुछ उत्तर देना वाजिब है—क्योंकि महासभा तो संपूर्ण जैन जाति की है—किसी एक दो की नहीं है—हम जिन महाशयों के उत्तर आये हैं—उनमें से श्रीमान सेठ चिरंजीलालजी साकिन मोजअ बमरान—जिलाअ झांसी का नाम प्रगट करते हैं कि इन महाशय ने—कसबा नारहट—मोजअ पटना डोंगरा—बमराना—और सौरई आदि के भाईयों ने अपना प्रतिनिधि नियत किया है और उक्त सेठ साहब बड़े धर्म्म के धुरंधर और परम उपकारी हैं—श्री द्रोनागिरजी का मेला आपही की कोशिश से होता है और आपने दो मंदिरों का जीर्णोद्धार कराना अब के वर्ष अपने निज धन से स्वीकार किया है—महासभा के—उपदेशक फन्ड में भी आपने १५) रुपये से मदद करी है—यदि इसी प्रकार सब भाई थोड़ी २ सहायता भी उपदेशक फन्ड की करते रहें तो यह कार्य चिरस्थाई होजाय—इस फन्ड के नियत होने से जैसा कुछ काम हुआ है वह भाईयों से छुपाहुआ नहीं है परंतु सहायता करने से भाई बेखबर से होगये हैं यहांतक कि बाज़ २ भाईयों ने इकरार भी किया और फिर भी भूलगये हैं—सो आशा है कि भाई साहिबान इस तरफ अवश्य ध्यान देवेंगे:—

हम भाई हकीम उग्रसेनजी मंत्री महासभा को भी धन्यवाद देते हैं कि उन्हों ने चिरंजीव जुगलकिशोर विद्यार्थी के मिडिलपास करने की खुशी में २) रुपये से महासभा के उपदेशक फन्ड की सहायता करी है—यह महाशय पहले भी ६) रु० दे चुके हैं:—

क्योंकि इस विद्यार्थी के लेख अति उत्तम जैन गजट में छपते हैं इस वास्ते मुझे

भी इस के पास होने की खुशी है और मैंभी २) रु० महा विद्यालय भंडार में इस खुशी के बदले देताहूं ॥

चम्पतराय
महा मंत्री

वेश्या प्रसंग

हे महाशयवरा ! देखो वेश्या प्रसंग से धर्म नष्ट होता है आचरण विगड़ते हैं शील भंग होता है शरम और लज्जाजाती रहती है धन और यौवन नष्टता को प्राप्त होते हैं और सब प्रकार की दुष्टता पैदा होजाती है लोक में निन्दा होती है पाप रोगों से आयु कम होती है यह लोक और परलोक दोनों नष्ट होते हैं मरने पर नर्क और निगोद के दुःख भोगने पड़ते हैं जैसा कि कहा है (श्लोक) धर्महंती यशो हंती धनं हंती सुदेहताम् यल्लोकं परलोकं च वैश्यायां कोरतो भेत ॥ और भी कहा है कवित्त—काया से काम जात, गांठहू से दाम जात, स्वजन से नेह जात, रूप जात रंग से ॥ उत्तम सब कर्म जात, कुल के सब धर्म जात, गुरुजन की शर्म जात, मदन की उमंग से, ॥ गुण रंग रीति जात, वेद की प्रतीति जात, रामनी से प्रीत जात, अपनी मत भंग से ॥ जप तप की आस जात, मुनिन को निवास जात, सुर पुर को बास जात, वेश्याप्रसंग से ॥

देखो भाईयो वेश्या धन केही कारण प्रीति करती है नहीं तो प्रीति को ऐसा तोड़ डालती है जैसे त्रण को तोड़ते हैं फिर नहीं मालूम कि अंधे पापी मद्य मांस भक्ष अभक्ष खाने वाली वेश्या के संग क्यों आसक्त होते हैं कवित्त—धन कारण पापिन प्रीति करैं, नहिं तोरत नेह यथा तिन को ॥ लव चाखत नीचन के मुंह की, शुचिता सब जाय छुये जिन को ॥ मद्य मांस बजारनि खाय सदा, अंधले व्यसनी न करें घिन कौं ॥ गणिका संग जे सठलीन भये, धिक है धिक है धिक है तिन को ॥

जो प्रस्ताव कि मैं अभी वेश्या प्रसंग के दोषों का देचुकाहूं उसी की शाखा यह प्रस्ताव है कि आर्य लोगों के धर्म बिगाड़ने में बड़ा क्या है होटल का खाना है, इन के लिए रस्से का खेलने वाला है, वार का खून पीने की जोंक है, लाज लेने को आप खुद वेश्या है, सूरत देखने में इन्द्रायन का फल और चलने में सूर का ... है, कंगालों के लिये मात पूष का जाड़ा है घर से मोह छुड़ाने को सन्यासी है, धन लूटने को डाकू है, निर्दयपनि में ... है बीमारी पैदा करने को बदपरहेजी है नर्क पहुंचाने को नसैनी है रोजगार से बंद करने को उधार है सूंघने में कुंद का फूल है आने मंग करने वाले को गाजे का ... है मोहने को देवमाया है बदनामी पहुंचाने को तार वर्की है इस जगत की लीला अपरंपार है कि पापियों को भोग कराने के लिये सात नर्क की एकही जगह यह

वेश्याही आप है जवानी की ताकत खींचने के लिये आला है जोश जवानी के भरने का प्याला है ऐसी शैतान की तलवार कि जिस का मारा पानी न पिये, बला की नागिन कि जिस का काटा न जीये, वह झाडू कि जिसने घर के घर साफ कर दिये, वह खुद गरज कि जो पराये माल से अपना खजाना भरे, वह कुव्वत हाजमा कि जो तोड़े के तोड़े हजम करजाय और पेट न भरे, वह राहजन जो मुजरिम सर्कार नहीं, वह जालिम जो हाकिम वक्त का गुनहगार नहीं, वह फिसाद की पुडिया जो राह चलते के नेत्रों के ढेले मारदे, वह सौदा जिस का सौदागर नकद आबरु लेय:— (शेषमग्रे)

जैनियों का शुभचिंतक
प्यारेलाल मंत्री जैन सभा
इटावा

सम्वाददाता रतलाम

मुझे महा खेद के साथ लिखना पड़ता है कि यहां पर जैनियों के २०० घर हैं और उन सब भाईयों में श्रेष्ट और मुखिया लाला गंगारामजी थे आज अनुमान १ मास के व्यतीत हुआ कि उक्त महाशय का स्वर्गवास होगया और हम सर्व भाईयों के दिल पर उन की जुदाई का दाग लगगया उक्त लाला साहब के पुत्र गुलाबचन्दजी ने उन के मरण के उत्सव में २००) रुपये भंगियों को लुटाये और ३० हजार रुपये लगाकर नग्र की सर्व जातियों को उत्तम उत्तम प्रकार का भोजन खिलाया जिस से उन की सर्व नग्र में नामवरी होरही है ॥ उक्त लाला साहब के समय में जैन पाठशाला जैनसभा भी थी परन्तु अब नाम मात्र रहगई हैं यहां के जैनी भाई अपने बालकों को रांगड़ी भाषा पढाते हैं और बेचारी हिन्दी भाषा का नाम भी नहीं लेते यदि यहां के भाईयों के ऐसेही ख्यालात रहे तो निस्सन्देह यह शहर धर्म शून्य होजावेगा ॥

सम्पादक

लाला गुलाबचन्दजी को क्या अपने पिताजी के परलोक सिधारने में रंज नहीं हुआ जो इतना रुपया बेफायदा और फिजूल खर्च किया यदि इस का छठा हिस्सा भी जैन महाविद्यालय की सहायतार्थ देते तो क्या इस में अधिक नामवरी इस लोक में नहीं पाते और परलोक नहीं सुधरता अवश्यही दोनों जगह बड़ाई के पात्र बनते हम रतलाम के भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने २ बालकों को हिन्दी अवश्य पढावें क्योंकि जबतक हिन्दी नहीं पढेंगे तबतक शास्त्र ज्ञान नहीं होसक्ता और इस पंचम काल में शास्त्रोंही से धर्म का सहारा है ॥

धर्मराग

संसारिक पुरुष अर्थात ग्रहस्थों से राग नहीं छूट सक्ता है क्योंकि वीत रागी श्री

दिगम्बर मुन हीं होते हैं राग दो प्रकार एक पाप राग दूसरा धर्म राग पाप राग से पाप और धर्म राग से पुन्य की प्राप्ति होती है इस कारण ग्रहस्थी को धर्म में जितना राग होगा उतनी ही पुन्य की प्राप्ति होगी हे सज्जन पुरुषों आप को इस बातका पक्का श्रद्धान है कि स्वर्गादिक की विभूत इन्द्र धरनेंद्र पद पुन्य कर्म का ही फल है इस कारण धर्म राग से अधिक और कोई उपकारी कार्य ग्रहस्थी के वास्ते नहीं हो सक्ता जिन को धर्म राग है वोह धर्म को अति प्रिय समझते हैं धर्म में किसी प्रकार की हानि आजाने से उनका चित्त दुखित होता है और धर्म की उन्नति को देख कर वोह अति प्रफुल्लित होते हैं धर्म की उन्नति क्या है धर्मात्माओंका अधिक होना और जिन कारणों से धर्म की स्थित और प्रचार होता है उन कारणोंका बढना ॥

धर्मानुरागी पुरुष को इस बातका कभी पक्ष नहीं होता है कि धर्म की वृद्धि के कारण उसी के नग्र में किये जावें और न उस को इस बातका द्वेष होता है कि धर्म की उन्नति केवल उसी के नाम से हो क्योंकि उस को अपने नग्र वा अपने नाम से राग नहीं है बल्कि धर्म से राग है इसी हेतु से जो लोग इस बातका पक्ष या द्वेश करते हैं कि वोह कारण जिन से धर्म की उन्नति होती है हमारे ही नग्र में वा हमारे ही नाम से हों उन को बिलकुल धर्म राग नहीं है और उन को हरगिज पुन्य की प्राप्ति नहीं हो सक्ती नहीं २ उन को पाप की प्राप्ति होगी क्योंकि उन को अपने नग्र से वा अपने नाम से राग है और इसही राग की सिद्धि के अर्थ वो अन्य किसी स्थान में विघ्न अन्य किसी पुरुष के नाम से धर्म वृद्धि होने में विघ्न डालते हैं जिस पुरुष को धर्म राग होता है वोह गूढ दृष्टि से विचार करता है और ऐसे ही कामों को अधिक प्रचार देना चाहता है जिन में धर्म की वृद्धि हो इस में उस की नामवरी हो वा न हो बल्कि धर्मोन्नति के लिये अपनी बदनामी को भी स्वीकार कर लेता है उस को अपनी नामवरी का किंचित ख्याल नहीं होता है इस के विरुद्ध वो लोग जो केवल नामवरी के हेतु धर्म कार्य करते हैं वो केवल ऐसे ही कार्यों को करना पसन्द करते हैं जिस में उन की नामवरी हो धर्म की उन्नति चाहे उस में कुछ भी नहीं बल्कि चाहे धर्म की न्यूनता ही होती हो ॥ हर कोई अपने मनोर्थ की सिद्धि की कोशिश किया करता है इस कारण वह वैसही उपाय करता है और वैसीही सामग्री मिलाता है और फल भी वैसाही प्राप्ति हो जाता है संसार में धर्म कार्यों के करने में नामवरी भी मानी गई है बल्कि बहुधा करके नामवरी हासिल

करने का एक यहही कारण समझा गया है इस वास्ते नामवरी चाहने वालों को धर्म कार्य अवश्य करने पडते हैं और बडे उत्साह से वो अपना तन मन धन उस के हेतु अर्पण करते हैं परन्तु क्या वो मायाचारी नहीं है क्या वह अपनी नामवरी के वास्ते धर्मात्मा बन कर जगत को धोका नहीं देते हैं अवश्य वो ठगना चाहते हैं भोले लोग उन को अपना तन मन धन धर्म के हेतु अर्पण करता हुआ देख कर उन के धोके में आजाते हैं और उन को धर्मात्मा समझने लगते हैं परन्तु वास्तव में वोह धर्म के वैरी होते हैं और उन के कारण धर्म को बडी हानि पहुंचती है आज कल लाखों करोडों रुपया जैनियोंका धर्म कार्य में खर्च होता है और जैनी लोग बडी बडी कोशिशें धर्म कार्यों में करते हैं परन्तु आश्चर्य की बात है कि धर्म की कुछ उन्नति नहीं होती इसका कारण यही है कि धर्म राग से न कोई खर्च करता है न किसी प्रकार की कोशिश करता है बल्कि मशंसा आदि के हेतु यह सब कुछ किया जाता है यदि धर्म राग से इस से दसवां हिस्सा भी धन खर्च किया जाता और कोशिश की जाती तो जैन धर्म में अत्यन्त ही उन्नति होती— हे जैनी भाईयों मायाचार को छोडो और यदि पुन्य की प्राप्ति चाहते हो तो धर्म से अनुराग करो आगे आप कोई छिपा रहे ॥

हमारीदशा

इस में कुछ संदेह नहीं है कि इस कौमका सितारा अब फिर चमकने को है क्योंकि परोप कारियोंका ध्यान इस ओर हुआ है कि इस जाति को अविद्या रूपी निद्रा से जगा कर ज्ञान मारग पर डाला जावै ॥ देखिये यह इस ही उपकारका चमत कार है कि बहुधा जगह सभा पाठशाला नियत होगई है बहुधा स्थानों में कुरीति मिथ्या प्रचार और व्यर्थव्यय को देश निकाला हो गया है जब कि श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी सारिके महान पुरुष ने कटिबद्ध हो कर इस जाति के सुधारका बोझा उठाया है तो फिर क्यों उन्नति न होगी ॥

यह बात विदित है कि यह जाति अत्यन्त अवनति को प्राप्त होगई है जिस का विचार करने से रोना आता है और लज्जा प्राप्त होती है यद्यपि जैन जाति की दशा धर्म और व्यवहार दोनो विषयो में अत्यन्त न्यून होगई है और हम लोग अपने आप जान बूझ कर ऐसे काम करते हैं जिन से दुख की प्राप्ति हो परन्तु इन सब कामों में व्यर्थव्यय (फिजूल खर्ची) ने इस जाति को बहुत दुख दिया है और धर्म से अरुचि भी इसही के हेतु हुई है ॥

यह बात सब जानते हैं कि धन इस हेतु संचय किया जाता है कि उस से आवश्यक कार्य सिद्ध हों और सुख प्राप्ति हो ॥

परन्तु इस जाति के मनुष्य जितना चाहै धन उपार्जन करलें न उनके आवश्यक कार्य सिद्ध होते हैं और न सुखही होता है ॥

विवाह आदि कार्यों में रीति रस्मका खर्च इस कदर हमारे जिम्मे लग गया है कि सारे जन्म की आमदनी भी उस के वास्ते पूर्ण नहीं हो सक्ती है फिर खाने पीने आदि के वास्ते धन कहां से मिले यहही कारण है कि जो लोग चार २ पांच २ हजार रुपया विवाह शादी में खर्च करते हैं उन की साधारण नित्य की अवस्था उन लोगों से अत्यन्त बुरी होती है जो मजदूरी करके उदर पूर्ण करते हैं वा जो कमीने कहलाते हैं ॥ क्या इस से अधिक कोई मूर्खता की बात होसक्ती है विवाह शादी में जो इतना रुपया खर्च होता है वह किसी आवश्यक कार्य में नहीं लगता वरन ऐसे मूर्खता के कामों में लगता है जो और कारणों से भी दुख दाई हैं ॥ यद्यपि अनुमान सबही रीति दुख दाई हैं परन्तु इन में रंडी भडवोंका नाच ऐसा बरबाद करने वाला है कि इस के काटेका मंत्र ही नहीं है इस कारण मैं कुछ इसही विषय में लिखना चाहता हूं और आशा करता हूं कि हमारे भाई अवश्य इस पर ध्यान देवैंगे और अपनी दुर्दशा के सुधार की चेष्टा करैंगे ॥

रंडी भडवोंका नाच

हाय हाय रंडी भडवोंका नाच ऐसा निन्दनीक कार्य है जिसका नाम लेने सेही घृणा आती है और यह नाच ऐसा दुख दाई है जिस के ध्यान करने से कंप कंपी उठती है ॥ हाय हाय इस जैन कुल में इस उत्तम जाति में भी विवाह आदि शुभ समय में इसका प्रचार है ॥

हे पाठको यह रंडीका नाच क्या होता है सैंकडों रुपये खर्च कर और बडी कोशिश से अपनी जाति के युवा और बालकों को व्यभिचार और वेश्या भोग सिखाने के वास्ते एक पाठशाला नियत की जाती है यही नहीं वरन व्यभिचारका उपदेश कराने के वास्ते एक सभा स्थापित की जाती है और ऐसे उपदेशक को जिस में व्यभिचारका उपदेश देनेका अधिक गुण हो और जो व्यभिचार और रंडी बाजी के प्रचार में अधिक प्रवीण हो बहुत तलाश से और बहुत २ दूरसे लाते हैं और जैसे कि महा विद्वान पंडित धर्मात्मा के किसी नगर में पधारने पर उन के सदुपदेश से कृतार्थ होने के वास्ते उस नग्र के सर्व मनुष्यों को प्रेरणा की जाती है इसही प्रकार उस व्यभिचार की उपदेश दाता पंडिता अर्थात रंडी के आने पर वह परोपकारी पुरुष जिस ने अधिक धन खर्च कर उस रंडी को बुलाई है सर्व मनुष्यों को हाथ जोड प्रेरना करता है कि अव-

द्रव्य व्यभिचारका उपदेश सुनने के वास्ते सभा में पधारना चाहिये और सभा को सुशोभित करना चाहिये ॥ ऐसी सभा करा ने वाले को इस बातका इतना उत्साह होता है कि वह आप और उस के बंधुगन सब के मकान पर आ आ कर और सोते हुवे पुरुषों को जगा २ कर इस पाप सभा में लाते हैं और बालक युवा वृद्ध किसी को नहीं छोडते हैं ॥ इस सभा में वह उपदेशिका अर्थात रंडी सज धज कर व्यभिचार की वर्दी पहन कर खडी होती है और उच्च स्वरमे पाप के मंत्रों को उच्चारण करती है और हाव भाव दिखा कर अपने उपदेशका श्रद्धान सब के हृदय में बिठाती है ॥ और इन मंत्रों की शक्ती एक तो उसी समय प्रगट हो जाती है अर्थात पिता पुत्र भाई भतीजा जो उस सभा में होते हैं सब को उस पंडिता का प्रेम हो जाता है और सब को उस से भोग करने की इच्छा प्राप्त हो जाती है ॥ इसही प्रेम में मदान्ध हो कर वह सब पिता पुत्र भाई भतीजा आदि उस वेश्या से एक ही समय हंसी ठट्ठा छेड छाड जो व्यभिचार की प्रथम सीढी है प्रारम्भ कर देते हैं और जैसा कि ब्राह्मणो की कथा पर कथा श्रवण करने वाले कुछ द्रव्य चढाते हैं इसही प्रकार इस पाप की पंडिता को भी सब लोग अपनी २ श्रद्धा पूर्वक द्रव्य चढाते हैं और अपने जन्म को सफल करते हैं और पापका जितना अच्छा उपदेश इस पंडिता ने दिया हो और जितना ज्यादा सभा वालों को मोहित किया हो उतना ही अधिक इनाम नाच कराने वाला परोपकारी उस रंडी को देता है ॥

हाय हाय कैसी निर्लज्जता की बात है हाय हाय वह लोग जो भले मानुष कहलाते हैं जो अपने आप को उच्च जाति के मनुष्यों में गिनते हैं हाय हाय वह पुरुष जो सत्य धर्म के धारी अपने आप को बत लाते हैं वह विवाह आदि के हर्षोत सव में रंडी भडवे नचा कर जगतका उप कार करते हैं ॥ हमारी जाति में जिस कदर व्यभिचार बेशरमी और कुकर्म फैला हुवा है क्या इन बातोंका कारण यह नाच ही नहीं है ॥ हम नहीं समझते जो अपने आप को बुद्धिमान समझते हैं जो अपने आप को धर्मात्मा बत लाते हैं कैसे अपनी जाति में ऐसे महा घोर पाप के कार्य को प्रचलित देख सक्ते हैं ॥ हे भाईयो तुम कहां सोते हो यह जैन जाति डूबी जाती है इसे बचाओ और ऐसे बुरे काम इस जाति से बिलकुल दूर करो ॥

अगले अंक में हम कुछ विस्तार के साथ वह बुराईयें दिखावेंगे जो वेश्या के नृत्य से पैदा होती हैं ॥

हम धन्यवाद देते हैं निम्न लिखित महाशयों को कि जिन्होंने वेश्या के नृत्य देखनेका बिलकुल त्याग कर दिया है और अपनी जाति में बडाई के पात्र हुए हैं और दूसरों के लिये सच्चे प्रेरक हुए हैं

ऐसेही महाशयों का जीवन सफल है ॥

१—बाबू सूर्यभानजी साहब वकील सम्पादक जैन गजट देवबन्द ॥

२—लाला मुसद्दीप्रसादजी साहब मोहत मिम जैन हितोपदेशक ॥

३—लाला जैनीलालजी साहब सैक्रैटरी जैन सभा ॥

४—पं० बख्तावरसिंहजी साहब साकिन महलका जिला मेरठ ॥

५—लाला दीपचन्दजी साहब जगाधरी जिला अम्बाला ॥

६—लाला गुरुमलजी साहब बल्लभगढ जिला देहली ॥

७—पं० कल्याणरायजी साहब अलीगढ

८—लाला बद्रीप्रसादजी साहब रईस अग्रवाल सासनी जिला अलीगढ (वैष्णव)

९—ला० हीरालालजी भगत नानौता

११—लाला० मंगतरायजी साहब मंत्री जैन सभा नानौता, इन महाशय के पास वेश्यानृत्य के त्यागी महाशयों का एक रजिस्टर है जो २ महाशय वेश्या के नृत्य देखने का त्याग करैं कृपा कर इन को सूचित करैं कि उन का नाम जैन गजट में छपता रहै जिस से अन्य अन्य भाईयों के चित्त से इस दुष्टिनी के नृत्य का ध्यान छूटता रहै ॥

कुछ करके दिखाओ

यदि किसी मनुष्य का पिता राजा हो और पिता के मरने के पश्चात अपनी मूर्खता के कारण वह मनुष्य राज पाट को खोकर कंगाल होजावै और घास खोदकर उदर पालन करै तो ऐसी दुर्दशा में उस मनुष्य का यह मान कि मैं बडे प्रतापी राजा का पुत्रहूं क्या मूर्खता नहीं है और क्या उस का राज पुत्र होना कुछ कार्यकारी होसक्ता है नहीं हमारी सम्मति में तो उस का ऐसी दशा में अपने आप को राज पुत्र प्रगट करना अपने पिता का तिरस्कार और बदनामी कराना और अपने आप को अधिक निर्लज्ज दिखाना है यही दशा आज कल सर्व भारत वासियों और विशेषकर जैनियों की होरही है, इस में कुछ सन्देह नहीं है कि एक समय में यह भारत भूमी सर्व भूमंडल मे सर्व शिरोमणि होचुकी है चक्रवर्ती राजा छः खंड पर जिन का राज हुआ इसी भारत में हुए हैं विद्वान पदार्थविद्या के पारगामी यहां पर ऐसे २ होगुजरे हैं जिन की विद्या के बचे हुए कुछ अंश के सामने आजकल की अन्य देशी महा विद्या तृण के समान है भारतवर्ष की सच्चाई इमान्दारी जगतभर में प्रसिद्ध होचुकी है ये कहावत यहीं के वास्ते मशहूर है कि—प्राण जाय पर वचन न जाई ॥ बडे २ महात्मा तपस्वी मुनी साधू इसी क्षेत्र में हुए हैं परमानन्द पद अर्थात मोक्ष इसी स्थान से प्राप्त हुई है जगत के जीवों का उद्धार करने वाले सम्यक ज्ञान प्रकाशनहारे चौबीस तीर्थ कर भी इसी पवित्र भूमी में हुए हैं विशेष कहांतक कहा

जावे इस देश में सब कुछ होचुका है परन्तु हम उन प्रतिष्ठित पुरुषों की सन्तान सब कला चतुराई खोकर धर्म नष्टकर विद्वानी की जगह अन्यदेश वासियों से नीमवहशी अर्थात अर्द्ध पशू अपने आप को कहलवाते हैं हमने इस हिन्दुस्तान को जो सत्य भाषण में प्रसिद्ध था झूठ और बेईमानी का शिक्षालय मशहूर करदिया है सम्यक ज्ञान चारित्र के स्थान पर हमने मिथ्यात्व कुरीतियों मूर्खता और दुराचारों को प्रचलित किया है अर्थात हमने सारा कारखानाही उलट दिया है और प्रकाश की जगह अन्धकार फैला दिया है हमारी अवस्था ठीक उस राज पुत्र के समान होगई है जो सर्व सम्पदा खोकर घास खोदकर उदर पूरणा करता है आजकल हमने अपनी मान बड़ाई का हेतु यह समझ रक्खा है कि अपने पुरुषाओं का बड़प्पन बखान करैं हम यह बात देखते हैं कि जहां कहीं जैनियों की बड़ाई का जिक्र आता है तो केवल यही वर्णन होता है कि जैनियों में अमुक २ ऐसे महान् विद्वान पंडित दानी परोपकारी सत्यवादी धर्म प्रचारक होचुके हैं जिन की कोई बराबरी नहीं करसक्ता परंतु यह कहीं सुनने में न आया कि आजकल अमुक २ महा विद्वान वा दातार व सत्यवादी हैं भ्रातृगणों जैसा कि उपरोक्त दृष्टान्त में घास खोदने वाले का अपने आप को राज पुत्र बताना अपने को और अपने पिता को लज्जित करना है ऐसाही क्या हमारा ऐसी नीच दशा में अपने पुरुषाओं का बखान करना निन्दा का कारण नहीं है हम को अति लज्जित होना चाहिये कि हम कैसे प्रतिष्ठित पुरुषों की सन्तान हैं कैसी पवित्र भूमि में हमारा जन्म हुआ है और कैसे कल्याण कारी धर्म को हमने ग्रहण किया है यदि ऐसी दशा में हमारा कर्त्तव्य निन्दनीक होतो क्या हम अपने बड़ों को इस भूमि को इस धर्म को बदनाम नहीं करते भाईयो सम्भलो सोचो और कुछ करके दिखलाओ पुराने गीत गाने से कुछ नहीं होता ॥

शिक्षा

एडिटर जैन गजट; आप कृपा करके नीचे लिखेहुए लेख को अपने जैन गजट में छापकर कृतार्थ कीजिये ॥

शिक्षा सभी को लाभ दाई है शिक्षा के प्रभाव से पशु पक्षी भी सुशिक्षित होकर अद्भुत २ प्रकार के कार्य्य करने लगते हैं सुआ मैना भी शिक्षा पाकर अनेकानेक सुन्दर मनोहर शब्दोचारण से श्रोताओं का मन हरलेते हैं जिन मित्रों ने प्रख्यात प्रोफेसर विष्णुपंथ छत्रे के अश्वों (घोड़ों) का नाटक देखा होगा वे इन बातों को भली भांति जानते होंगे कि उक्त प्रोफेसरजी की शिक्षा नाटक में घोड़े, हाथी, बंदर, और बाघ, कैसे २ प्रशंसनीय काम करते हैं जब शिक्षा का प्रभाव पशु पक्षियों परभी लागू होता है तो मनुष्यों पर लागू क्यों न होगा

इस में कोई प्रकार का सन्देह नहीं है, मुख्य तो मनुष्यों केही लिये शिक्षा रची गई है जो मनुष्य शिक्षा हीन होते हैं वे मनुष्य देह का लाभ नहीं उठासके और सुशिक्षित मनुष्यवृन्द में वे मूढ़ कहलाते हैं, वे अशिक्षित सुशिक्षितों में आदर तो कहां परन्तु अनादर को अवश्यही प्राप्ति होते हैं अतएव माता पिता को उचित है कि अपनी संतानों को शिक्षा देकर सुशिक्षित करें कि जिस से वे सर्वत्र सुशिक्षित सज्जनों की सभा में सत्कार को प्राप्ति हों और अपने माता पिता का स्मरण अपना शरीर रहने तक न भूलें बालकों को प्रथम माता की शिक्षा होनी चाहिये क्योंकि बालावस्था में प्रायः बालक माता के समीपही रहा करतें हैं, जब बालक कुछ २ बोलने लगे तब माता उस से शुद्ध सुंदर सुशब्दों का सर्वदा उच्चारण कराया करे और जब वह कुछ समझने लगे तब ऐसी शिक्षा देवे कि हे बालक तू माता पिता और आचार्य्य की शिक्षा (कहना) सदा मानाकर उक्त तीनों की आज्ञा का पालन करना यही तेरा मुख्य धर्म्म है, इन की आज्ञा भंग करने से महा पाप लगता है, कि जिस के कारण इस लोक में अकीर्ति और परलोक में बुरी गति प्राप्ति होती है, शिक्षा किस प्रकार देना चाहिये ॥

मार्ग में व्यर्थ न भागना चाहिये, यदि भागेगा तो गिरपड़ेगा और तेरे हाथ पांव में चोट लग जावेगी ॥

धूल (मट्टी) में कदापि न खेलना क्योंकि धूल कीड़न से सब शरीर का विवर्ण होकर वस्त्र भी शीघ्र मलीन होजाते हैं, और मैले कुचैले बालकों को कोई पास नहीं बैठाते किसी को गाली प्रदान किसी बालक के साथ युद्ध (मार पीट) किसी की दीहुई वस्तु को माता पिता की आज्ञा के बिना ग्रहण, और किसी प्रकार की कुचेष्टा इत्यादि कदापि न करना चाहिये, विद्या के लिये सर्वदा प्रयत्न कर क्योंकि विद्या से सब कुछ होसक्ता है इस प्रकार माता बालक को शिक्षा देती रहै और यदि माता पठिता हो तो बालक को स्वर व्यंजन मात्रा का ज्ञान भी करादेवें कहने का मतलब यह हैं कि जिस तिस प्रकार बालक को बालक पण से शिक्षा देनी चाहिये ॥

जैनी भाईयों का दास
गंगाराम सीताराम श्रावक
जैन सभा वर्धा
मध्य प्रदेश

रिपोर्ट दौरा कल्याणराय हकीम उपदेशक महा सभा

मैं तारीख २० जून को रात की गाड़ी में सवार होकर खतौली आया और पंडित मंगलसैनजी और संगमलालजी से मिला और सभा की बाबत वार्तालाप की तो उन्होंने कहा कि सभा तो अब भी होसक्ती है परंतु यहां के प्रधान पुरुष बनारसीदास कुंदनलाल नहीं है क्योंकि उन के होने से

सभामें यहभी बंदोबस्त होजायगा कि जिस का पंडित धर्मसहाय तथा पंडित मंगतराय प्रबंध करगये थे अर्थात घरपीछे एक २ रुपया के वास्ते सो उन के होनेपर सभा में सब तरह का प्रबंन्ध होजायगा इस वास्ते आप खतौली के आस पास के ग्रामों में होइ आइये तब यहां भी सभा का प्रबंध होजावैगा ततपश्चात खतौली से तारीख २२ जून को गमन करके सठेडी पहुंचा और वहां के साहबों से मिला और सभा जुड़ी सभा में २० आदमी थे और धर्मोन्नती का व्याख्यान किया सो सब साहिबों ने अंगीकार किया और शास्त्र के सुनने की प्रतिज्ञा तीन २ मास की ली और प्रति चतुर्दशी को अर्थात पाक्षिक सभा करनी अंगीकार की और पाठशाला भी कायम की अर्थात जो पंडित वहांपर नौकर था उसी को पढ़ाने के वास्ते स्थापित किया सो धन्य है सठेडी के भाईयों को कि मेरे एक दफै के व्याख्यान सुनकर धर्मोन्नती के कारणों को अंगीकार किया और फिर वहां से चलकर २३ तारीख को सलावा आया सलावा जिले मेरठ में है सलावे में मुझे पं० थानसिंह मिले और वहांपर सभा करी और सभा में उपदेश किया और वहां के भाईयों ने शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा लीनी परंतु सभा आदि का प्रबंध नहीं किया सलावे से चलकर २४ तारीख को सिकन्दरपुर आया लाला कन्हैलाल रामजीमल के मकान पर ठहरा और चौबीस २४ तारीख की शाम को सभा हुई सभा में ३० आदमी थे और धर्मोन्नती का व्याख्यान हुआ और उन्हों ने प्रति चतुर्दशी को सभा करना अंगीकार किया और पाठशाला पहिलेही से थी और शास्त्र रोज बचता है और यह नियम किया कि घर प्रति एक आदमी शास्त्रजी में आवे और न आवे तो यह दण्ड कायम किया कि एक रात्री को मंदिर की रक्षा करै यह सब ने अंगीकार की और पाठशाला की परीक्षा ली और पारितोषक लड़कों को बांटदिया और बारिश के कारण से २५ तारीख को भी वहीं ठहरा और शास्त्र की सभा जोडी तो उस सभा में अन्यमती भी थे अर्थात ५० मनुष्यों की सभा थी जिस में २० अथवा २२ अन्यमती भी थे उन्हों ने उपदेश सुनकर छानकर पानी पीना अंगीकार किया मंदिरजी को बने अनुमान ८ महीने के हुए वहां के भाईयों की धर्म्म में बहुत रुची है सिकन्दरपुर से चलकर २६ ता० को भैंसी आया फकीरचन्द मानीमल के मकानपर ठहरा और मालूम हुआ कि भैंसी में पूजन का इन्तजाम ठीक नहीं है और छब्बीस २६ और २७ तारीख को व्याख्यान किया और सब भाईयों ने पूजन का इन्तजाम बहुत अछीतरह से करालिया और शास्त्रजी की सभा का प्रबंध करलिया सो मैं उन सब भाईयों को धन्यवाद देताहूं कि जिन्हों ने अपनी सज्जनता से मेरी तुच्छही प्रेरणा पर धर्म्मोन्नती के कारणों को ग्रहण करलिया ॥

द० ह० कल्याणराय
ता० २८ जून

हमारीदशा

आज कल हमारी जैन जाति की दशा अत्यन्त शोचनीय हो रही है कि यदि किंचित मात्र विचार कर देखा जावे तो सर्व था पोलही दृष्टि पडती है— यानी जो सर्वोन्नति की जड है और सर्व भलाईयों की नीव है उसका तो यह हाल है कि धर्म विद्या तो कोई पढना पसन्दही नहीं करता क्योंकि गरीब आदमीयों को तो अपनी आजीविका की चिन्ता है उसके वास्ते यदि वोह नौकरी पेशा हैं तो उर्दू तथा अंग्रेजी पढलेना बहुत है धर्म विद्या पढ कर क्या मंदिरजी की नौकरी करनी है अब यदि केवल उर्दू ही पढा तो मदरसे के विद्यार्थीयों और बुरे लडकों की संगति में बैठ कर गजलें पढनी और किस्से कहानी आदि सीखली परन्तु यदि अंग्रेजी विद्या ध्ययन करी तो मिशन स्कूलों अर्थात ईसाईयों के मदरसों में भर्ती हो कर और इंजीलका उपदेश सुन कर (अपने धर्म से तो बिलकुल अंजान थे ही) बिलकुल ईसाई हो जाते हैं और जब कोई अपने धर्म संबन्धी बातें सुनते हैं तो बिना सोचे समझे उस बातकी निन्दा करने लगते हैं और अपने भाईयों को मूर्ख काला आदमी समझते हैं— कहिये साहब उनसे क्या वात्सल्यता वा धर्म प्रभावना हो सक्ती है और अमीर लोगों को तो पढ कर क्याही करना है क्योंके वो समझते हैं कि हम को उर्दू अंग्रेजी पढ कर नौकरी नहीं करनी है और धर्म विद्या पढ कर पंडित नहीं बनना है उन को तो लुंगाडों और खुशामदीयों के साथ शतरंज और गंजफा खेलने से ही अवकाश नहीं मिलता है ॥

बडे खेद की बार्ता है कि सामान्य और अमीर दोनों हीका यह हाल है तो धर्मोन्नति क्यों कर हो सक्ती है— हाय हमारे धनाढ्य भाई यह नहीं समझते कि राजनीति में क्या कहा है ॥

(श्लोक) रूपयौवन सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवा ॥ विद्याहीनाः नशोभन्ते निर्गन्धा इवकिंशुकाः ॥

और उन को यह ही मालूम नहीं कि बिना धर्म विद्या के कोई आदमी नेकचलन नहीं हो सक्ता और नेकचलनी बिन मनुष्य पशू के समान है और नेकचलनी अर्थात शुभाचरण मनुष्य जन्म का उत्तम फल है और इस लोक और परलोक में धन धान्य पुत्र कलित्र आदि सर्व सुख का दाता है और इस जीव की सब से बडी विभव और हितू और सहायक है और मनुष्य को सर्वस्थान में प्रतिष्ठित और उच्च पदवी देती है और सदैव धनादिक से विशेष फल दायक है और ऐक्यता, परोपकारता, वात्सल्यता और परस्पर व्यवहारादि की यह दशा है कि इस जातिका प्रत्येक मनुष्य दूसरे की भलाई में अपनी बुराई और दूसरे की हानि में अपना लाभ और दूसरे की प्रशन्सा में अपनी अप्रशन्सा समझता है और किसी भाई की किसी प्रकार की उन्नति वा वृद्धि देख कर बहुत बुरा मानता है और यथा शक्ति उस के प्रतिकूल यत्न करता है किसी ने सच कहा है ॥

गी हो दीन दुनिया में मुं-ह अपना काला । नहो एक भाईका पर बोल बाला ॥

अगर किसी भाई के यहां विवाह आदिक कार्य प्रारम्भ होता है तो मानों उस पर एक आपत्ति आन पड़ती है प्रथम तो कुरीतियें और व्यर्थव्यय इतने बढ़े भी हुए हैं कि जो बेचारे गरीब आदमी का घर बेच कर भी पूरा नहीं पड़ता है और तिस पर विशेषतायह है कि बिरादरी वाले बात बात पर उस को दिक करते हैं और कभी २ के बैर विरोध निकालने के लिये एक अच्छा मौका समझ कर अपने जीके खोटे विचार पूरे करने में किसी प्रकार कसर नहीं छोड़ते और यदि कोई कैसे ही यत्न से उस विवाहादिक कार्यका प्रारम्भ क्यौंन करें परन्तु उस में कुछ न कुछ बुराई अवश्य निकालते हैं इसी पर विवाह बछो की कहावत प्रचलित है अर्थात यह असम्भव है कि विवाह कार्य करके बदनाम न हो और किसी बुड्ढे के मरने पर तो मानो उनका सर्वस्व बिरादरी के अर्पण होता है कहीं २ कुल शहर की और कहीं २ बिरादरी की जीवन हार करनी पड़ती है और खांड के मड्डे करने तो परमावश्यक समझे जाते हैं और जवान मौत में भी तेरहवां आदिक में उस के वारिसों को (चाहे वे विधवा और अनाथ बालक हो हों) आन वालोंका सर्वत्र व्यय उठाना पड़ता है जिस की बाबत (घर लुटना सिर पिटना) की कहावत मशहूर है— शेषआगे ॥

मंगतराय सम्पादक
जैनसभा पानीपत

जैनकालिज के वास्ते एक मासकी तनखाह देना

बाबू बिहारीलालजी स्कूल मास्टर बुलन्दशहर को आज हम कोटान कोट धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया है उक्त बाबूसाहब ने प्रण कियाथा कि हम अपनी कमाई में से एक मासका वेतन वास्ते जैनकालिज के देवेंगे सो तारीख २ जुलाई सन १८९६ईस्वी को १५)रुपये (जोकि एक मासका वेतन है) श्रीमान सेठलक्ष्मणदासजी साहब सभापति मथुराके पास भेजदिये हैं धन्य है ऐसे सज्जन पुरुषोंको जिनका धन विद्यादान में खर्च होवै अब हम उन महाशयोंसे भी प्रार्थना करते हैं जिन्होंने अपनी आमदनीका १ मासका रुपया वास्ते जैनकालिजकेदेना स्वीकार कियाहै बहुतजल्द श्रीमान सेठलक्ष्मणदासजी साहब जोकि हमारी जाति शिरोमणि हैं मथुरा भेजकर हमको पत्रद्वारा सूचित करते रहेंगे (जिससे उनकानाम गजटमें प्रकाशित होतारहै) क्योंकि अब रुपया वास्ते जैनकालिजके इकठ्ठा होनाशुरू होगया है और यहभी जातहै कि जब एक वस्तुके देनेका प्रणकिया जावे तो वोह वस्तु जितनी जल्दी देदीजावै उतनाही अच्छाहै क्योंकि जोतों दीही जावेगी प्रणकी हुई वस्तु कुछ अपनेपास तो रखही नहीं सका है ॥

एक स्त्रीका रुदन

श्रीयुत मान्यवर धर्मानुरागी परोपकारी करुणा सागर महा मंत्री मुन्शी चम्पतराय वर्मा साहब जयजिनेंद्र; ॥

अत्यन्त शोक की बात है कि जैन हितैषी अंक २१ को बांच कर मैं शोक सागर में डूबी जाती हूं और अश्रुपात की धारा बहने लगी है सो महाशय ऐसे पत्रोंका बन्द हो जाना जैन जाति की बड़ी अवनतिका कारण है क्योंकि देखिये इस की आदि में यह दोहा लिखा है—विद्या धन मैत्री बिना दुर्लाया जैन सर्वत्र ॥ तिन हित नित ही चहत यह जैन हितैपी पत्र २ ब मेरी प्रार्थना सर्व जैनी भाइयों मे यही है कि विद्याका प्रचार फैलावैं विद्या से हिता हितका ज्ञान होता है और ज्ञान आत्माका स्वभाव है इस ज्ञान से आत्मीक सुख की प्राप्ति होती है ॥

छिपा हुआ विद्या रूपी धन प्रगट करने से जगत में यश और कीर्ति को फैलाता है विद्या के समान संसार में कोई वस्तु नहीं है विद्या अपूर्व पदार्थ है विद्या ही कर के केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है और संसार सम्बन्ध में भी आनन्द की देने वाली विद्याही है बिना विद्या के नर पशू के समान है छप्पै ॥ विद्या नर को रूप अनूप आदर सरसावै ॥ विद्या धन अति गुप्त आप को आप रखावै ॥ विद्या गुरू महान भोग सुख करत परमहित ॥ विद्या देश विदेश बीच में होत मातु पित ॥ विद्या इष्ट समान है सदा देह रक्षा करत ॥ विद्या रत्न विहीन नर धरती में पशु सम चरत ॥१॥ अर्थात विद्यावान मनुष्य सब जगह आदर को पाता है मैं जैन महासभा मथुरा के सभापति सेठ लक्षमणदासजी साहब सी. आई. ई. को धन्यवाद देती हूं कि जिन्हों ने विद्या की उन्नति के वास्ते तन मन धन से कोशिश की है और जैनगजट रूपी सूर्य की किरणें द्वारा हम अबलाओं का अज्ञानरूपी अन्धकार दूर करने के लिये पढीहुई भगनियों को जैन गजट मुफत देना स्वीकार किया ऐसे महापुरुषों को भगवान चिरंजीव रक्खे इस पंचम काल में ऐसे सज्जनो सेही धर्म का चमत्कार होरहा है मैं चाहतीहूं कि आप मेरे नाम से जैन गजट भिजवा दीजिये में यहां की स्त्रियों को सुनाया करूंगी ॥

पार्वती बाई जैसवाल
जैन पाठशाला निहटौर
जिला बिजनौर

आगै समाचार

श्री युत श्रीमान डिप्टी चम्पतरायजी साहब जैजिनेंद्र अत्र कुशलं तत्रास्तु बांछामीतद्राप्तमे ॥

मुझे बाबू सूर्यभानजी साहब ने कहा था कि तुम उपदेशक का काम करो और जिले मुजफ्फरनगर के ग्रामों में जाओ सो मैंने उन की आज्ञा को अंगीकार करलीनी

थी परन्तु कारण वशात देरी हुई अब सब कामों से निबट कर और शरीर निरोग होनेपर अब बाबू साहब की आज्ञानुसार मवर्ती की अर्थात द्वतीय जेष्टसुदी १० शनिवार को गमन किया और प्रथम ही खतौली आया और रेलपर से आते मार्ग में पंडित मंगलसेनजी साहिब मिले पंडित मंगलसैनजी बहुत विद्वान और धर्मज्ञ पुरुष हैं उन्हों ने मुझ से कहा कि मैं बीमरोम में मेरठ से आयाहूं क्योंकि मुझे तकलीफ है सो उस तकलीफ के इलाज के वास्ते मेरठ ठहरा था और मेरठ छावनी में सभा कराई और सभा एक मास में चार दिन होती है दो अष्टमी दो चतुर्दशी बडा आनन्द होता है धर्म समाजी और आर्य समाजी भी आते हैं बडाही आनन्द रहता है और गोलक भी रखवायदीनी है यह सब वारतालाप करते २ संगमलालजी की दुकानपर आये सो धन्य है पंडित मंगलसेनजी साहिब को कि अपनी तो शरीर सम्बन्धी व्याधी तुच्छ का इलाज कराने गये थे परंतु आप वहां के भाईयों की अज्ञान रूपी महा व्याधी का इलाज कर आये संगमलालजी भी सज्जन और धर्मज्ञ पुरुष हैं उन से सभा मध्ये वार्तालाप हुई तो उन्हों ने कहा कि अभी लाला कुन्दनलालजी नहीं है चार पांच रोज में आजायेंगे तब सभा का कारण जुड़वादिया जायगा और बडी धूम की सभा कराई जायगी अभी सभा होने से कुछ कार्य सिद्ध न होगा अभी आप खतौली के आस पास के ग्रामों में हो आईये सोई ग्रामों के नाम ॥ सठेडी १ सिकन्दरपुर २ सलावा ३ पुरबना ४ भैंसी ५ सराय ६ मन्सूरपुर ७ पुरबालियान ८ कवाल ९ जानसट १० बिहारी ११ इन ग्रामों में ५० घर किसी में २० घर किसी में १०० ऐसे अंदाज से हैं घर मंदिरजी सब ग्रामों में है सो इनमें होआओ तब यहां परभी अच्छी तरह से सभा होजायगी सो मैं उन के कहने को मानकर कल दिन इन ग्रामों जाऊंगा और फिर जैसा कुछ होयगा वैसा आप को लिखा जायगा और मैं कल्लूमल संपादिक जैन पाठशाला के मकान पर ठहरा था और मुजफ्फरनगर के जिले में जैनियों के बहुत ग्राम है ॥

हकीम कल्याणदास

उपकारी नाटक

विद्या और अविद्याकी बातचीत

विद्या— ऐ दुष्टनी सत्य धर्म नाशिनी मिथ्यात्व प्रचारिणी महा दुख कारिणी तू जहां जाती है वहां ही मेरे राज्य को नष्ट कर देती है मुख्य कर जैनियों में तो तूने आज कल बहुतही अधिकार पाया है (रोकर) हाय २ एक दिन वोथा कि सब जैनी मेरे ही अधिकार में थे— आज वोह दिन होगया कि सब जैनी मेरी खबर भी नहीं लेते ॥

अविद्या— बस २ चुप रहो, मैं तेरे

॥ श्री ॥

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम का नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१५—२२ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर में
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष, ता० ८ अगस्त... सन् १८९६, अङ्क ३[illegible]

बम्बई मित्र प्रेस आगरा में छपा

विज्ञापन

भाई मदन रामाजी श्री माली रतलाम से लिखते हैं जैन गजट के पढ़ने से क्या २ लाभ होता है इस पर जो कोई सुन्दर लेख लिखकर सम्पादक जी के पास भेजगा और जिस को वो पहला ठहराकर हमको खबर देवेंगे उस विद्यार्थी को एक पुस्तक उत्तम हिन्दी व्याकरण की आधा आना महसूल पर बिना मूल्य देवेंगे ॥ दूसरी खबर ॥ बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे यहां की दिगम्बर पाठशाला के पूर्व अध्यापक पं० श्रीराम जी जगन्नाथ जी वैद्यविशूचिका और शूल रोग की औषधि प्रत्येक जैनी भाई को विना मूल्य देते हैं—और भी कई रोगों की औषधें शुद्ध और श्रावकों क लेने के योग्य हैं और बहुत सस्ती देते हैं जिस किसी का किसी प्रकार की व्याधि हो वा उपरोक्त दवा लेनाचाहै वे वे सराबे की कूई के पते से महाराज को पत्र और महसूल भेज के दवा मंगालेवें तथा और दर्याफ्त करलें ॥

सिकन्दरा

इस ग्राम के मंदिर जी से ५ वा ७ ग्राम लगते हैं जिन में कुल चालीस घर जैनीभाईयों के हैं इस जगह के भाईयों में बड़ी फूट है इस लिये मंदिरजीकाकुछ बन्दोबस्त नहीं है और यहां के बाकी इन पांचसात ग्रामों के भाईयों के पास २००) तथा २५०) रु० भी मंदिरका जमा है सोनहीं देते हैं अथवा इस रुपये से मंदिर जी का प्रबन्ध नहीं करते हैं औरकहते हैं कि तुम्हारा और मंदिर जी का कुछ देना नहीं है ॥ श्रावक सकल पंच सिकन्दरा

सम्पादक—क्या उक्त ग्रामों के भाई मंदिर जीका रुपया नहीं देवेंगे हजम करजावेंगे ॥ दोहा ॥ एक शोक भूले नहीं हंसेन आंसु रोक, हाय दैव ने दूसरा दिया शोक पर शो ॥ हाय २ क्या पंचमकाल में ऐसे भी जैनी भाई पैदा हो गये जो मंदिर जी का रुपया खाने लगे अभातक हम को इसी बात का शोक था कि जैनियों में विद्या नहीं है वात्सल्यता नहीं है परन्तु अब यह एक और नया शोक पैदा हो गया कि जैनियों में अधर्म भी फैला जाता है—अबसर्व जैनी भाइयों से प्रार्थना की जाती है कि इस अधर्म को अपनी जाति में प्रवेश नहोने दीजिये और जिन २ भाइयों के पास जैन मंदिर का अथवा धर्म कार्य के वास्ते रुपया जमा हैं वे अवश्य ही जैन मंदिरों की मरम्मत में अथवा अन्य धर्म कार्यों में लगा वेंगे—और लोक निन्दा और परलोक की दुर्गति से बचेंगे—

—:—

प्रार्थनापत्र

जैन गजट के पढने से मालूम होता है कि अभी तक जैनी भाईयों पर असर बहुत कम हुआ है क्योंकि अपनी २ देहात के हालात भाई लोग पत्र द्वारा आप को सूचित नहीं करते हैं नहीं तो अवश्य आप जैन गजट में छापते यदि भाई लोग कृपा कर अपनी ही बहतरी और स्वजातीय धर्मोन्नति के लिये जराभी विचार करैं तो मुश्किल नहीं है— इस ज़वार के भाई लोग अपने धर्म के तत्पर हैं लेकिन फिजूल खर्ची के बन्द करने में आज तक कोई अग्रणी नहीं बना हैं अगर कोई महाशय मुझ को दोष देवें कि तुम ही अग्रणीय फिजूल खर्ची दूर करने में क्यों नहीं बनते हो जो औरों से कहते फिरते हो तो सुनो भाईयो अव्वल तो मैं सबका दास और एक तुच्छमीत हूं और दूसरे कोई विवाह कार्य इन दिनों में मेरे यहां नहीं है और न हुए हैं वरण इसकी कोशिश अवश्य की जाती— जब तक सज्जन धनाढ्य पुरुषों आप लोग इस कार्य के सिद्ध करने में अग्रणी नहीं बनेगें तब तक इस कार्यका यानी इस फिजूल खर्चीका मौकूफ होना मुश्किल है जैसे २८ वें अंक में पंचान जैन सभा जयपुर ने प्रकाश किया है इस से सर्व भाई कृपा करके उस लेख को विचारेंगे तो अवश्य ही मुझ दास को क्षमा करैंगे ॥

मिती प्रथम ज्येष्ठ वदी १३ को खास बहरायच में लाला मानिकचन्द साहब की बेटीका विवाह था बरात नबावगंज से लाला भिखरी प्रसाद साहब के यहां से आई थी दैव योग से मेरा भी बरात में शामिल होना हुआ इस विवाह में दोनों तरफ से लाला लखपतरायजी साहब जो बडे परोपकारी और धर्मात्मा सज्जन पुरुष हैं मुखिया थे गेरी व लाला धर्मचन्द व लाला मानिकचन्द व लाला लखपतरायजी आदि महाशयों की कोशिश से यथ शक्ति १) रुपया लडकी व २) रुपये लडके की तरफ से जैन महा विद्यालय के वास्ते दिये गये और (५)रुपये लडकी और (१०)रुपये लडके की तरफ से मंदिरजी के वास्ते दान किये गये— मंदिरजी के वास्ते दान करने की तो कदीम से रस्म है मगर जैन महा विद्यालय के वास्ते रुपया इकट्ठा करना जैसा कि और नम्रों में तरीका बान्धा है नया है यह तरीका बहुत आसान है इस लिये सर्व जैनी भाई कृपा कर इस तरीके को पसन्द करके यथा शक्ति वर्तते रहैंगे तो जैन महा विद्यालय की सहायता करना बहुत आसान है और सहजमें कमीन कभी वनहीं जावैगा इस कार्य को जब तक भारत के सम्पूर्ण जैनी भाई नहीं करैंगे तब तक न हो सकैगा कुछ एक दो भाई के करनेका काम नहीं है ॥

जैन महासभाकी कोशिश

धन्य है महा सभा के अधिकारियों को कि जो इस अनादि धर्म की ऐसी हीन दशा देख कर उन्नति करने में कटिबद्ध हो रहे हैं आपका जैन गजट रूपी उपदेशक जो काम कर रहा है वोह लिख नहीं सक्ता कहीं सभास्थापित हो रही हैं कहीं पाठशाला जारी होती हैं कहीं व्यर्थव्ययका प्रबन्ध हो रहा है इत्यादिक धर्मोउन्नति के कार्यों को प्रचालित होते सुन कर चित्त को जो कुछ हर्ष होता है सो लिखने से बाहर है— और बार २ मुख से यही निकलता है कि अब धर्म की उन्नति अवश्य होगी और जिस महासभा के ऐसे प्रतिष्ठित महाशय (जो कुल भारत वर्ष में मान्य पुरुष हैं और जिन के नाम से इस जैन जाति की इज्जत हैं) सभापति हैं और महा मंत्री मुन्शी चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट [जिनका यश चहु दिन छारहा है] हुए हैं और मंत्री आप महाशय हैं जिस महा सभा के ऐसे २ सज्जन पुरुष रक्षक हैं और तन मन धन से कोशिश कर रहे हैं वोह सभा अपना वांछित कार्य क्योंन सिद्ध करैगी

मैं सम्पूर्ण महाशयों से सविनय प्रार्थना करता हूं कि जैसी कोशिश धर्मोन्नति करने में बाबू सूर्यभानजी कर रहे हैं वैसीही आप सब महाशय कोशिश करके धर्मका झंडा खडा करैंगे— मुझ सारिखे अल्प बुद्धिका निवेदन करना आप सारिखे धर्मात्मा सज्जन पुरुषों को बिलकुल वेजा है क्योंकि आपने तो इस जैन जाति की शोचनीय व्यवस्था देख कर परोपकारता में कटिबद्ध हो कर ऐसा श्रम उठा रक्खा है जिसका वरणन करना सामर्थ से बाहर है परन्तु आपने ही मुझ को अपने गजट रूपी हलकारे के द्वारा वाचाल किया जिस से जो कुछ मेरी हीन बुद्धि में आया लिख दिया अब मैं आशा करता हूं कि धर्मोन्नति व विद्योन्नति हमारी जाति में अवश्य होगी ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
चिरंजीलाल भरतपुर

रिपोर्टदौरा कल्यानराय उपदेशक

आगे मैं खातौली से मंसूर पुर आया यहां पर सभा स्थापित होगई है और कैई भाईयों ने पूजन प्रक्षालन की प्रतिज्ञा ली सभा महीने में २ दफै हुआ करैगी सभापति वगैरह के नाम पीछे लिखे जावैंगे यहां पर पाठशाला के वास्ते १ पंडित की आवश्यक्ता है तन खाह ७-८ रुपये मासिक मिलेगी और सिर्फ भाषा पढा हुआ होवै संस्कृत की आवश्यक्ता नहीं है यदि कोई जैनी भाई पंडित होना स्वीकार करै तो मंसूरपुर जिला मुजफ्फर नगर के पंचों के पास दरखास्त भेजे— और यहां पर दो मंदिर सिखिर बन्द हैं ॥

आगे मंसूरपुर से चलकर बिहारी

आया यहां पर सभा नियत हुई प्रति चतुर्दशी को हुआ करेगी—और पाठशाला के वास्ते ४) रुपये मासिक के हिसाब से चन्दा जमा किया गया और हिन्दी पढ़ाने के लिये एक ब्राह्मण अध्यापक नियत किया गया ॥

फिर तीसा में आया और सभा स्थापित करने का उपदेश दिया यहां पर सभा नियत होगई हर चतुर्दशी को हुआ करेगी और बहुत से भाईयों ने शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञा ली और पाठशाला का भी प्रबन्ध होरहा है ९) रु० मासिक के हिसाब से चन्दा जमा किया गया है ॥

फिर तीसे से चलकर करौली आया तो यहां की शोभा को देखकर अति प्रसन्न हुआ परन्तु यहां पर मंदिरजी की पूजन वगैरः का पूरा २ बन्दोबस्त नहीं था सो कई भाईयों से पूजन करने की प्रतिज्ञा कराई और सभा महीने में चार दफै यानी हर इतवार को हुआ करैगी सभा पति आदि के नाम पीछे से लिखे जावेंगे ॥

जैन शास्त्रों का जीर्णोद्धार

महाशय बाबू सूर्यभानजी साहब जैनि नेन्द्र—आपने अपने जैन गजट में १ मजमून (जिन बाणी का जीर्णोद्धार) दिया उस को बांच अब यही चित्त में आता है कि जहां तक होसकै इस कार्य्य में जल्दी होनी चाहिये ऐसे कार्य में और ऐसे अवसर पर ढील न होनी चाहिये यदि जल्दी से इन शास्त्रों की प्रति कराने का प्रबन्ध नहीं किया गया तो कुछ दिनों में इन शास्त्रों का पाठी कोई भी नहीं रहैगा और यह निधी हमारे हाथ से हमेशा को जाती रहैगी इस लिये बम्बई में जो चार हजार रुपया इकट्ठा होगया है इस से उन की लिखाई का काम बहुत जल्द शुरू करदेना चाहिये और जब कार्य शुरु होगया तो क्या हमारे भाई ऐसे पोच हैं कि काम को अधूरा छोड़देंगे कदापि नहीं देखिये हमारे जैनी भाई जैन धर्म की उन्नति के खयाल मे हजारों रुपये मंदिर बनवाने और रथ यात्रा कराने खर्च करदेते हैं तो क्या इस नेक कार्य में जो हमेशा के लिये अमर होगा सहायता न देंगे मैं ख्याल करताहूं अवश्य देंगे—मन्दिरजी और रथ यात्रा में तो फिर भी खर्च करसक्ते हैं मगर इस कार्य में क्या वार २ खर्च होगा हर्गिज नहीं और यदि जैन बद्री और मूल बद्री वाले मिथ्याचार और बिना समझ के हमें उन ग्रन्थों की प्रति देने से इन्कार करैं तो कुछ हर्ज नहीं है और हम को भी अनजान न बनना चाहिये अगर आप इन की प्रति कराकर इनहीं के पास रक्खेंगे तो मुमकिन है कि किसीन किसी जमाने में वहां के भाईयों को इतनी समझ आजावेगी कि वोह बडी खुशी से हमें इस की प्रति देना स्वीकार करेंगे और यदि हम उन की बेसमझी पर नाराज होकर इन शास्त्रों की प्रति न करावेंगे तो फिर इन की प्रति होने की क्या उम्मेद होसक्ती है इस लिये बम्बई वाले महाशयों से प्रार्थना है

कि इस रुपये से जो कि इस वक्त उन के पास जमा है इस धर्म के कार्य को शुरू करदेवें और अन्य भाईयों से निवेदन है कि सर्व महाशय अपनी अपनी श्रद्धानुसार इस कार्य में सहायता देवें ढील न करैं ढील का समय नहीं है ॥

जैनी भाईयों का सेवक
ज्ञानचन्द
लाहौर

पूजा नंदगंवा जिला आगरा

श्रीमान प्रियवर महाशय जैन गजट सम्पादकजी जैजिनैन्द्र ॥

मौजा नंदगवा जिला आगरा में लाला हीरालाल कन्हीलाल लमेचू भाई ने मिती जेष्ट सुदी १४ को श्री जैन मंदिरजी में पूजा कराने का प्रारम्भ किया पांच दिन तक पूजन भजन नृत्यादि बड़ा उत्सव रहा असाढ सुदी १ को सभा हुई उस में दश लाक्षिणी धर्म और विद्योन्नती पर व्याख्यान दियागया उसी दिन यहां के भाईयों ने ८) रु० मासिक का चन्दा देना स्वीकार कर पाठशाला नियत की असाढ़ बदी ३ को कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ उक्त लाला साहब ने १२१) रु० श्री जिन मंदिरजी को १०) रुपये पाठशाला नंदगवां को ५) रु० पाठशाला करहल को ५) रु० पाठशाला अटेर को ५) रु० महा सभा मथुरा को (यह रुपया श्रीमान सेठजी साहब की सेवा में मथुरा भेजा गया) ५) रुपया जैन महा विद्यालय को (यह रुपया श्रीमान पं० छोगालालजी की सेवा में अजमेर भेजागया है) इस भांति कुल १५१) रु० दिये इस गांव में जैनी भाईयों के २० घर हैं उन में भी दो धड़े थे और आपस में विरोध भाव की आधिक्यता थी उस को त्याग सब भाईयों ने एकअता स्वीकार की ॥

धन्यवाद

हम कस्बा अटेर राज गवालियर के जैनी भाईयों को अत्यन्त धन्यवाद देते हैं कि जिन्हों ने उपरोक्त कार्य में तन मन वचन से कोशिश की और उपदेश कर धर्मोन्नती का अंकुर पैदा किया है ॥

आप का दास
बंशीधर हैड मास्टर
टौन स्कूल बाह जिला आगरा

सम्पादक

हम उक्त ग्राम के भाईयों को कोटिशः धन्यावाद देते हैं कि जिन्हों ने बैर विरोध को दूर करके आपस में ऐक्यता पैदा की क्यों नहो जिन भाईयों के दिलों में धर्म का वास होगा उन के विरोध का अवश्य नाश होगा ॥

प्रश्नोत्तर

(जैन प्रभाकर नंबर ६ का)

प्रश्न—दस हजार जैनियों को एक दिन जिमाना और पांच विद्यार्थियों को एक

गजट का यहां पर बहुत असर हुआ मिती असाढ बदी अष्टमी को प्रातःकाल पूजन के बाद ८ बजे पर पंडित तेजराय ने जो कि हमारे यहां के शिरोमणि हैं और निहायत धर्मात्मा हैं अपनी मधुर वाणी से अव्वल शास्त्रजी को नित्य नेम के अनुसार श्रवण कराया तत्पश्चात गद्दीही पर जैन गजट को आदि से अंत तक वांच कर सुनाया इस वक्त पर कुल स्त्री पुरुष ३० के अनुमान एकत्र हो गये थे सब वाह २ का शब्द अपने मुख मे उच्चारने लगे—और खुद कहने लगे कि सभा अवश्य नियत होनी चाहिये बल्कि इसी तरह पर और इसी वक्त पर जैन गजट सुनाने का प्रबंध किया जाय तो अच्छा है लेकिन इस वक्त दो साहब यानी लाला रूपलाल अटरमल मौजूद नथे इस कारण सभा नियत होने की कोई सम्मति नहीं ठहरी—बाद को मेरे मित्रवर मित्रोत्तम लाला भागदास व लाला उल्फतराय ने जैन गजट सुनाने के विषय में बहुत जोर दिया तब मेरे परोपकारी लाला स्यामलाल मेम्बर और पंडित मोतीलाल ने ८ बजे रात्री को जैन गजट सुनाने का प्रबंध किया और इस प्रबंध को सब साहिबान बिरादरी ने स्वीकार करलिया अब आशा है कि जिस तरह पर पं० मोतीलाल पं० तेजराय पंडित चुन्नीलाल व लाला स्यामलाल मेम्बर तथा सब भाईयों ने अष्टमी के रोज कोशिश की है और इसी तरह पर करते रहेंगे तो सभा अवश्य नियत होजायगी और जब सभा नियत होगई—तो और भी कुरीतियों तथा फिजूल खर्ची विद्योन्नती परभी ध्यान दिया जावेगा मैं यकीन करताहूं कि मेरी इस प्रार्थना को सब साहिबान अवश्य स्वीकार करेंगे बल्कि अन्य देश के भाईयों सेभी मेरी कर जोड़ कर प्रार्थना है कि अपने २ यहां सभा नियत करके जैन कालिज के वास्ते कोशिश करें कि जिस से विद्योन्नति और जातोन्नति हो:—

(शेष आगे)

जैनी भाईयों का शुभचिंतक
शिखरचन्द
अलीगंज

बात बड़ी मुंह छोटा

वणिक प्रिया

प्राचीन कवि शुकदेव विरचित

यह वही वणिक प्रिया है कि जिस के अनुसार उद्यम करने वा कराने से लोग लक्षपति होजाते थे, अथवा एक कमाता और दस खाते थे। यह नई रोशनी नहीं पर प्राचीन विद्या है। इस को प्राप्त करने के लिये लोग बहुत दिनों से खोज में थे, सो वही ग्रन्थ बहुत परिश्रम से हमारे हाथ लगा है और आप रसिकों के लिये मुद्रित होरहा है। विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है हाथ कंगन को आरसी क्या ? पर तौभी

यह बात हम कहसक्ते हैं कि वणिकों के सिवाय सर्व वाणिज्य कर्त्ताओं को भी एक एक प्रति अवश्य रखनी चाहिये. मूल्य ॥) आने हैं पर यदि छपने के पूर्व अर्थात रक्षाबंधन तक जो कोई ग्राहक होकर अग्रिम मूल्य भेजेगा उसे केवल ।) आने मेंही दी जावगी ॥

जो कोई अपने यहां से १० ग्राहक जुटाकर अग्रिम मूल्य भेजेगा उसे १ प्रति विना मूल्य, और जो २५ ग्राहक जुटाकर मनीआर्डर द्वारा अग्रिम मूल्य भेजेगा उस का नाम ग्रन्थ के पृष्ठ पर रहेगा.

यह बात भी छिपी न रहे कि जो कुछ इस से लाभ होगा उस का चतुर्थांश जैन कालिज के लिये अर्पण करना स्थिर किया गया है ॥

पी० एल० दरयावसिंह
हिन्दी हैडमास्टर सेन्ट्रल कालिज
रतलाम
१–७–९६

रुपया महा विद्यालय का इस प्रकार

५६) रु० बमद मुतफार्रिक सकल पंचान जैनी कानपुर

१५।=) रु० बमद गोलक रथ यात्रा करहल में लाला फुलजरीलालजी साहब

६२॥) रुपये बमद गोलक रथ यात्रा अवा जि. एटा हस्ते ला. रतनलालजी साहब

१॥=) बमद गोलक रथ यात्रा घनोली मारफत लाला फुलजरीलालजी साहब रईस करहल

१०००) रु० मुसम्मात कुंडी जौजअ तोताराम साकिन सुलतानपुर जिलाअ सहारनपुर

२८) रु० बमद प्रति घर १) रुपया सकल पंचान जैनी चिलकाना जिला सहारनपुर

१) रु० बमद मुतफार्रिक लाला जौहरीमलजी पटवारी हलकाबसेई तहसील फीरोजपुर जिला गुड़गावां

१) रु० बमद मुतफार्रिक सकल पंचान जैनी अगहत जिला एटा

५) रु० बमद गोलक नदगवां जिला आगरा में रथ यात्रा हुई जिस के मारफत लाला मुथरापरशादजी चूनीलालजी सर्राफ

१५) रु० बमद तनखा एक माह लाला बिहारीलालजी मास्टर हाई इस्कूल बुलन्दशहर

२) बमद रथयात्रा नगरया ग्राम में लाला सोहनलालजी मुन्नालालजी ने कराई जिस की खुशी में दिये

६६) रु० बहिसाब प्रति घर १) रु. सकल पंचान जैनी लखनऊ

३॥।=)॥ बहिसाब प्रति जीव एक पैसा सकल पंचान बादशाहपुर जिला गुड़गावां हस्ते पंडित जीयालालजी साहब

२७) रु० बमदप्रतिघर सकल पंचान जैनी निहटोर जिला बिजनौर

वर्ष तक भोजन देना इन दोनों में लाभ किस में अधिक है हिसाब लगाकर जैनी भाई उत्तर दो ॥

उत्तर—१—व्यवहार में भाईयों को जिमाना समदत्त है, न पात्रदत्त है न करुणा दत्त है तो समदत्त का अर्थ यह है कि आज मैंने जिमाया कल वह जिमावेगा या नामवरी होगी कि फलां भाई ने एसी जीमनवारदी कि जिस में दस हजार भाई जीमें इस के सिवाय और कोई लाभ नहीं हुआ अगर हुआ तो कोई भाई साबित करें—

२—पांच विद्यार्थियों के भोजन देने में महान पुन्य का लाभ होता है सो क्यों विद्यार्थियों को शास्त्र में ब्रह्मचर्य संज्ञा दी है तो उन के भोजन देने में अव्वल तो अहार दान शाक्षात है ही दूसरे क्षुधारोग को शांत करने से औषध दान भी हुआ और तीसरे आरंभादिक की भय दूर करने से अभैदान भी हुआ चौथे जब उन की स्थिरता हुई तो बेफिक्र विद्या संग्रह की यही शास्त्र दान हुआ—तो साबित हुआ कि विद्यार्थियों के जिमाने में चारों दान की संभावना है तो एक सालतक जिसने पांच विद्यार्थी जिमाये वो गोया उस ने ५ पात्रों को एक साल तक चारों दान अखंडित दिये ॥

३—अब देखिये जब अनमोदना से भोग भूमि प्राप्ति होती है तो जिस भाई ने साक्षात ५ ब्रह्मचारियों को एक वर्षतक उपकार किया तो भोग भूमि और देवगति क्यों न पावें—पावेंही पावें अरु जब १ वर्ष तक दान दिया तो १८२५ पात्रों को दान दिया तो इस के पुन्य का महातम बचन अगोचर है अरु शास्त्र में इकेन्द्री से लगाइ श्रेनी पंचेंद्री परनंत रक्षा में असंख्यात गुणा पुन्य कहा है तिस से अव्रती सम्यक दृष्टी तिस से देश वृति तिस से ६ गुणस्थान से लगाय १३ पर्य्यंत असंख्यात गुणा पुन्य है तो १८२५ को असंख्यात गुणा करने से असंख्याते जैनी होते हैं इससे मेरी राय नाकिसमें ५ विद्यार्थियों को जिमाने में असंख्याते जैनियों को जिमाने का फल है:—

जैनी भाईयों का कुशलकांक्षी
उलफतराय जैनी
अलीगंज जिला एटा

एक विद्यार्थी की प्रार्थना

कृपाकर के मेरी इस प्रार्थना को अपने अखबार में जगह देकर मुझ को कृतार्थ कीजियेगा ॥

आज कल अखबारों के देखने से मालूम होता है कि हमारे जैनी भाई भी विद्या की उन्नति का परिश्रम कररहे हैं इस वास्ते मुझे भी साहस प्रार्थना करने का हुआ है कि यथार्थ में यह बात ठीक २ है तो कोई न कोई उदार परोपकारी भाई मेरी आशा अवश्य पूर्ण करेंगे !!!

मैं मुकाम करहल जिला मैनपुरी का निवासी जैन लमेचू का बालकहूं मेरी अव-

स्था इस समय १७ वर्ष की है मैंने आगरा मिशन सेन्टजान्स कालिज में शिक्षा पाकर इस साल एफ. ए. दूसरे दर्जे में पास किया है दूसरी भाषा मेरी संस्कृत है यहां तक तो शिक्षा मैंने कुछ अपने परिश्रम से कुछ कुटुम्ब की सहायता से हासिल की परंतु अब आगे को मेरी शिक्षा खर्च के अभाव से जारी नहीं रहसकी इस लिये मुझे अपनी शिक्षा बन्द होजाने का बड़ा शोक होगा हाल में मेरा विवाह भी नहीं हुआ है इस से मुझे ४ वर्ष तक पढने का बखूबी अवकाश है कि इतने में एम. ए. पास करलूंगा। यदि कोई दयालु भाई एक वा दो १०) रुपये महीना के बजीफे से मेरी सहायता करें तो मेरी शिक्षा जारी रहसक्ती है और शिक्षा के पश्चात जब मेरी आमदनी ५०) रु० मासिक तक होजावेगी तब मैं जितना रुपया बजीफे में पाऊंगा किसी दूसरे विद्यार्थी को या अन्य धर्म कार्य में उन महाशय की अनुमति के अनुसार उतनाही या सवाया ड्योढा जैसा हुक्म होगा देने को तैय्यारहूं और मेरा हाल चालचलन के भाईयों से पत्र द्वारा तसदीक होसक्ता है अथवा नवलकिशोर श्रीमान डिस्ट्री जगन्नाथ इटावा के पुत्र से जो हम एकही बोर्डिंग में रहते हैं बता सकते हैं मेरा इरादा पूर्ण विद्या हासिल कर धर्म प्रचार करने का है !!!

मेरा पता

नंदकिशोर स्टूडेन्ट सेन्ट जोन्स कालेज आगरा वा हिन्दू बोर्डिंग बंगला नंबर ४४ ठंडी सड़क आगरा

आगरे के बुद्धसेन लमेचू बेलनगंज रूई दलाल भी मुझे जानते हैं ॥

हालमें यह विनय पत्र मैं मुड़वारे से देताहूं कुछ दिन अपने मामा भिखारीलाल सुखलाल हलवाई भिंड के मकान पर रहूंगा फिर कालेज खुलने पर आगरे जाऊंगा ॥

बालमित्र

यह एक नये ढंग की पुस्तक हालमें लाला पन्नालाल एडीटर जैन हितैषी ने बनाई है जो भाई हिन्दी नहीं पढे हैं और पढना चाहते हैं तो उन के वास्ते यह छोटीसी पुस्तक पत्थदर्शक है विशेष प्रशंसा क्या की जावे मंगाकर देखलीजिये मूल्य फी पुस्तक ≡) आने रक्खीगई है जिस किसी भाई को आवश्यकताहो वे निम्न लिखित पते से मंगालेवें ॥

लाला पन्नालाल एडीटर
जैन हितैषी पत्र गिरगांव
बंबई

चिट्ठी

श्रीयुत परोपकारी प्रियवर महाशय बाबू सूर्यभान वकील जैमित्तेन्द्र ॥

आप के सप्ताहिक हलकारे ने घोर निन्द्रा से जैनियों को जगा दिया प्रमाद को भगादिया मिथ्या से बचादिया सीधे मार्ग पर चलादिया मैं आप की परोपकारता कहांतक का वर्णन करूं—अंक २८ के

२) रु० नगद मुतफर्रीक डिपटी चम्पतरायजी साहब महा मंत्री जुगलकिशोर विद्यार्थी साकिन सिरसावा वाला मिडिल पास हुवा जिस की खुशी में दिये ॥

१८॥।≈)। नगद गोलक मेरठ के मेले में आये ॥

१३२९।≈)।॥

महाशय श्रीजिनेंद्र—यद्यपि जैन जाति के अवनति के ऊपर सहस्त्रशः व्याख्यान प्रकाशित होचुके हैं और लक्षशः प्रकाशित होंगे मैं अल्प बुद्धी इस के ऊपर लिखने को असमर्थही था परंतु मनमें अत्यंत हर्ष प्राप्त होता हुवा मुझ को प्रेरित कररहा है कि तूंभी स्वशक्त्यानुसार अपने अभिप्राय को प्रगटकर अत्र में उन अभिप्रायों को प्रगट करताहूं जैन जात्यावनति के बहुत से कारण हैं परंतु मुख्य कारण सब में श्रेष्ठ एकही है उसी के न होने से इस जाति की यह दशा होरही है अगर वह एकही कारण सर्व जैनी भाई कटिबद्ध होकर प्रारंभ करें तो मैं अपने अनुभव से कहताहूं कि जैनोन्नति अल्पही काल में सूर्य की तरह प्रकाशित हो अज्ञान तिमिर को नाश करैगी उस कारण को दिखाताहूं दान का देना दान किस को कहते हैं स्व परिणामों के अनुसार जो वस्तु का त्याग उस का नाम दान है वह चतुर्थ प्रकार का है आहार १ औषधि २ विद्या ३ अभय ४ परंतु इन सब में दृष्टि प्रसारितकर देखो तो विद्या सब में मुख्य है एक इसी दान में चारों दान गर्भित हैं जब किसी को कोई विद्या दान देगा तो उस के उदर पूर्णता के वास्ते अहार देवेहीगा तो १ अहार दान का कारण यह विद्या दान हुवा अगर उस के शरीर में रोग होगा तो उस को औषधि देवेहीगा अगर उस को भयहोगा तो उस की रक्षा करैहीगा इस प्रकार इस ज्ञान दान में चारों दान गर्भित हैं परंतु उस दान देने के वास्ते द्रव्य की आवश्यकता है तो जिन के चित्त में यह बात व्यापैगी कि यह संसार असार है और द्रव्य जो है सो लाभांतराय के क्षयोपसम से होती है सोभी हमेशा स्थिरीभूत नहीं जहां अशुभ कर्म का उदय आया तत्काल नष्टता को प्राप्त होती है तो क्या वे द्रव्य को देने में निस्पृहनाकर न देवेंगे अवश्यमेव देंगे और देने से उन की द्रव्य कदापि नष्टता को नहीं प्राप्त होगी जैसे कुए का जल हमेशा वर्तन में आता है वह क्या अजल होसक्ता है कदापि नहीं और जिन महाशयों के दिल में यह बात प्रवेश करगई है कि लक्ष्मी बड़े कष्ट से पैदा की है इस की रक्षा ही करना हमारा धर्म है यह हम को वृद्धावस्था में रक्षक होगी यह निदान बिलकुल बिना जड़ का वृक्ष है यातो उन की द्रव्य चोरों के हाथ लगगी या राज दण्ड मे जायगी या मरने पर दूसरा उस का भोगनेवाला होगा अर्थात उस का सुख उस

को प्राप्त नहीं होसक्ता सो इस में आश्चर्य नहीं क्योंकि पापी पुरुष की संपदा पाप के कारणों को होती है इस से वह धर्म प्राप्त कदापि नहीं करसक्ता जैसे कि जैन धर्म मे परान्मुख हो और परिणाम सुख को चाहे तो कैसे मिलसक्ता है कभी नहीं उपरोक्त लिखने से यह आप को अच्छी तरह ज्ञात होगया होगा कि दान को करना चाहिये ममता को त्यागना चाहिये सो जैनियों में ममता तो नाम मात्र को नहीं क्योंकि एक एक मेले में लक्षशः रुपया खर्च करदेते हैं परंतु विचार की शून्यता है क्या इसी एक मेले प्रतिष्ठा में रुपया लगाने से मोक्ष होसक्ती है अगर ऐसाही है तो जैनियों को मोक्ष का मार्ग दुर्लभ नहीं होगया कदापि नहीं मोक्ष तो अपने भावों की विशुद्धता से होती है और उस विशुद्धता का कारण यह दान है जैसे कि जब इस द्रव्य को विद्या दान में देंगे तो विद्या का यानी ज्ञान का प्रकाश होगा और जब विद्या की प्राप्ति होगी तो उस को तत्वज्ञान प्रकाशित होगा जब तत्वज्ञान का निर्णय होगा तो परिणाम विशुद्ध होंगे विशुद्ध परिणाम मोक्ष का कारण है तो दान मोक्ष कारण हुआ और जो पुरुष इस विद्यारूपी वृक्ष को दानरूपी जल से सींचेगा वह इस के फल को हमेशा चक्खेगा मेला कराना मंदिर बनवाना यह पुन्य का कारण है परन्तु जब मन विशुद्धिहो मान बड़ाई के कारण करना कुछ फलदाई नहीं इसलिये चौथे काल के पदार्थ आजदिन सिवाय एक सरस्वती के कुछभी दृष्टि नहीं आते ॥ इस से यह बात साबित होगई कि विद्या हमेशा स्थिर रहती है और शेष पदार्थ नष्ट होजाते हैं सो जैनमत से भी यह बात साबित है कि जीव अनन्त पुद्गल पर्याय धारण करता है और सब पर्याय नष्ट होजाती है मगर जो जीव का निज गुण ज्ञान नष्ट नहीं होता है भाईयो ! कदापि आप यह कहैं कि हम को परोपकार से क्या तो देखिये तीर्थंकर भी जिन्हों ने ४ घातिया कर्म नाशकर केवल ज्ञान उपार्जन करलेते हैं फिर उन को किस बात की वान्छा रहती है कि वो ९६००० हजार देशों में विहार करते हैं इस का उत्तर दीजिये दूसरे मुनी महाराज जिन्हों ने २४ प्रकार के परिग्रह का त्याग करदिया फिर क्या उन को किसी से मोह है जो वह उपदेश देते हैं इस का भी जवाब दीजिये— इस लेख का अभिप्राय केवल यह है कि जब ऐसे २ महत्व पुरुषों से परोपकार हुआ है तो आप तो एक सामान्य मनुष्य पर्याय के धारी हैं किस अभिमान से उन महत्पुरुषों की चर्या से विरुद्ध करने का इरादा रखतेहो और उन के विरुद्ध करते हुए भी अपने को बड़े मुखिया समझतेहो हे भाईयो ! यह लक्ष्मी किसी के साथ नहीं गई है और न जावेगी इस से निस्पृहता कर विद्या

भंडार को दो और मनुष्य जन्म का लाभ लो अपने जैनीपने को सार्थक करो अगर सर्व भाई इस कार्य में कटिबद्ध होजावेंगे तो जैनमत का सहसा प्रकाश होगा ॥

(शेषमग्रे)

नमोकार मन्त्र का दृढ श्रद्धान

मेरा हाल इस प्रकार है—मैं मंडावर जिला झांसी का निवासी वैष्णवहूं—मेरे पिताजी का नाम गुरकीराम है उन को जैनी भाईयों की संगत से नमोकार मन्त्र की प्राप्ति हुई थी उन को इस मन्त्र से कैई कार्यों की सिद्धी हुई इस कारण वोह इस मंत्र का दृढ श्रद्धान करते रहे और उन को इस से अद्वैत फल की प्राप्ति हुई परन्तु जैनमत का दृढ श्रद्धान नहीं हुआ था—एक दिन की बात है कि वे घोड़े पर कपड़ा रक्खे हुए बेचने को किसी दूसरे ग्राम को जाते थे मार्ग में एक जंगल पड़ता था उस जंगल के मध्य में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि दस कदम के फासले पर १ सिंह और १ सिंहनी साम्हने को आरहे हैं उन को देखतेही मेरे पिता के होशहवाश तमाम उड़गये—परन्तु उन को उस समय वो नमोकार मन्त्र याद आया और उस का स्मरण करतेही वो दोनों सिंह सिंहनी तो तित्तर बित्तर होकर जंगल में चलेगये और मेरे पिता उन से बचकर कुशल पूर्वक घर आये अब कहिये मरने में कुछ संदेह था पर यह उस नमोकार मन्त्रही का प्रभाव था—फिर मेरे पिता काल को प्राप्तहोने लगे तब मुझ को यह अमूल्य मन्त्र सुनाकर कहा मैं तुम को एक ऐसी धरोहर देताहूं अगर तुम इस की यत्न पूर्वक रक्षा करोगे तो जितने संसार के सुख हैं वह तुम को आप से आप प्राप्तिहोंगे यह कहकर फिर मुझ को नमोकार मंत्र याद कराया यद्यपि मेरे पिता का अभिप्राय इस मंत्र के सेवन करने और मुझ को धारण कराने का केवल इस संसारी सुखों के प्रयोजन के अर्थ था परन्तु मैंने उन के काल प्राप्तिहोने पश्चात इस बात का निश्चय किया कि मेरे पिता को यह मन्त्र किस जगह से प्राप्त हुआ—निश्चय करने से मुझे साफ विदित होगया कि यह मंत्र जैनमत का है और मेरे पिता को किसी जैनी ने मन्त्र बताया होगा बस उसी रोज से मैंने यह विचार किया कि जिस मत में इस एक मंत्र केही इतने गुण हैं तो इस के मत सम्बन्धी बातें क्योंकर झूठी होसक्ती हैं—मेरे पिता ने तो मुझ को यह मंत्रही संसार सुख के वास्ते बताया है और मैं अब इस सच्चे अनादि मतही को धारण करूंगा यह विचार कर मैंने हररोज मंदिर में जाना शुरू किया—यह हालत देखकर मेरे चचा जो एक धनाढ्य पुरुष हैं—और मेरी माता ने मंदिर में जाने से रोका परंतु मैंने तो इसही को अपना सहाई समझकर

उन से नैनी होने की प्रार्थना की उन्हों ने नहीं मानी और मुझ को मंदिर में जाने से रोकने लगे तब मैंने अपनी स्त्री को अपनी माता के पास छोड़ा और ९) मासिक का नौकर था उस नौकरी को भी छोड़कर भाई गोपालदासजी वरैया (जोकि बड़े परोपकारी और सज्जन धर्मात्मा हैं) उन के पास गया और विद्याध्ययन करना शुरू किया खर्च के वास्ते दिगम्बर जैन सभा बम्बई से सब तरह से पर्वरिश हुई—अब अर्सा ६ माह से जैपुर में वाग्विलासिनी सभा ठोलियों के मंदिरजी के सम्पादकों की सहायता से पं० वीरेश्वरजी शास्त्री (जोकि बड़े विद्वान और बड़े लायक हैं) के पास संस्कृत पढ़ताहूं अब मैं बम्बई की दिगम्बर जैन सभा के सम्पादकों को और जैपुर की वाग्विलासिनी सभा ठोलियों के मंदिरजी के सम्पादकों को कोटिशः धन्यवाद देता हूं और आशा करताहूं कि इन के अनुग्रह से मुझ को यह अमूल्य विद्यारूपी रत्न अवश्य प्राप्त होगा क्योंकि इन संपादकों की मुझ पर पूर्ण दया है फिर क्यों कर जैन विद्या को लाभ न होगा अवश्यही होगा ॥

जैनी [illegible] राम
[illegible] शास्त्री
विद्यार्थी [illegible]
[illegible] [illegible]
जैपुर

मूल्य प्राप्ति स्वीकार

१) लालचन्द बाकलीवाल हरीगंज जिला हरदा
१) श्रीजैन मंदिर मारफत लाला तोताराम रामपुर जिला मैनपुरी
१) लाला मंदिरदास रणजीत सिंह स्यौहरा
१) हरखचन्दजती देवास जिला इन्दौर
१) लाला छुन्नलाल पुन्नूलाल बजाज इटावा
१) लाला संतलाल अग्रवाल इटावा
१) श्रीजैन मन्दिर लाऊन जिला भिन्ड
१) श्रीजैन मंदिर नौगांव जिला गुड़गांव
१) लाला बिहारीलाल डिप्टी इन्सपेक्टर रायपुर
१) लाला मनारीलाल पीसांगन जिला अजमेर
१) लाला लेखराज करहेया जिला नरवर
१) श्रीजैन मंदिर बिनौली जिला मेरठ
१) श्रीजैन मंदिर बाजार खास बिनौली जिला मेरठ
१) श्रीजैन मंदिर ललितपुर
१) लाला जौहरीमल सिखरचन्द टूंडला जिला आगरा
१) बाबू नेमचन्द धरमचन्द जौहरी चौक लखनौ
१) बाबूराम काशीराम टूंडला जिला आगरा
१) पं० महीचन्द कुचावन जिला सांभर
१) सेठ ओंकारलाल दुलाचन्द खांम गांव जिला अकोला
१) बाबू दामोदरदास यहैयागंज लखनौ

१) श्रीजैन मंदिर इन्दौर छावनी

१) श्रीजैन मंदिर पंचायती मारफत नन्हू मल छोटेलाल सर्धना जिला मेरठ

१) लाला फूलचन्द पटवारी केकड़ी जिला नसीराबाद

१) लाला नेमीचन्द अजमेरा नजदीक संघई शोभाराम जैपुर

१) संघई जुगराज सेक्रेटरी जैनपाठशाला सिवनी छपरा

१) श्रीजैन मंदिर पंचायती मारफत लाला हुकमचन्द कलियाटेड़ा जिला भूपाल

१) श्रीजैन मंदिर बरनावा जिला मेरठ

१) शाहजी शंकरदास तापीदासगांधी अमोद जिला भरोंच

१) सेठ चांदमल मारफत मोतीलाल बल्देवदास तिलंगढ़ा

१) सवाईराम विनैराम बाहड़ा हैदराबाद दखन जिला वर्धा

१) श्रीजैन मंदिर पाढम जिला मैनपुरी

१) लाला शिब्बामल बल्द महताबमलजी जिला फीरोजपुर

१) बाबू अनन्तूमल सीतल प्रसाद कलकत्ता

१) लाला हीराचन्द सघानी बेलजी आमोद जिला भरोंच

१) लाला भोलेलालजी पिरावा जिला इन्दौर

१) लाला डालचन्द ऐण्डको आदर गवर्नमेन्ट कौन्ट्रक्टर फीरोजपुर

१) ला० हीरालाल छदामीलाल पिलख्तर जिला मैनपुरी

१) लाला नन्नूमल मोतीलाल उमरावती

१) लाला जवारलाल पटवारी विछोर जि० गुड़गांवा

१) लाला खूबचंद कानूगो गाजियाबाद जिला मेरठ

१) बाबू जैनालालजी लोकोसुपरिन्टेन्डेन्ट आफिस अजमेर

१) कालूराम छोगमल बैरा जिला पबना

१) भाई पन्नालाल हरदा जि० होसंगाबाद

१) विट्ठल रंगनाथ लतर जिला हैदराबाद दखन

१) लाला गिरधारीलाल पन्सारी मैनपुरी

१) श्री जैन मंदिर पंचायती मोहब्बतपुर जिला अलीगढ़

१) लाला घमंडीलालजी बान्डीपुर रियासत काश्मीर

१) तत्या सखाराम पाटिल मुकाम देवली जिला शोलापुर

१) ललाजी नेमाजी शीतवाल वासिम

१) लाला पीलालाल परवार दुरग जिला रायपुर

१) श्री जैन मंदिर दिगम्बरी कलकत्ता

१) लाला विर्धीचन्द प्रेमसुख सेटी सीकर जिला जैपुर

१) लाला मूलचन्द मोतीलाल थाना भूप जिला भिंड

३) लाला बालगोविन्द रईस श्रीनगर जि-
ला गढ़वाल

३) दादा हनुमन्त पाटिल किनी जिलाअ
बेलगांव

३) बाबू जोहरीमल बी. ए. क्लास बोर्डिंग-
हौस लाहौर

३) लाला छेदीलाल अग्रवाल सर्राफ इटावा

३) लाला लखमीचन्द ट्राफिक आफिस
अजमेर

(सलूनों का त्योहार)

सलूनों यानी रक्षा बन्धन का त्योहार आने वाला है जैनी भाई भीखबधन लुटावेंगे ब्राह्मणों को दान देवेंगे जिस के बदले में ब्राह्मण भी जैनवद्धवली राजा इत्यादिक शब्द बुडबुडाकर हर एक के हाथ में तागा बांधेंगे जैसे जब कोई मनुष्य प्रशन्सनीय कार्य करता है तभी पारितोषिक पाने के योग्य होता है और इस वास्ते जोकि ब्राह्मनों को इनाम दिया जाता है इस से स्पष्ट ज्ञात होता है ब्राह्मणों उक्त दिवस अवश्य कोई प्रशन्सनीय कार्य करते हैं जिस से उन को इनाम दिया जाता है— सलूनों के त्योहार की बनावट और ब्राह्मणों की ओर से क्या काम होता है— और जैनियों को उस रोज क्या करनाचाहिये यह सब नीचे लिखी हुई एक कथा में सिद्ध किया जाता है जिस को हम अपने भाईयों को चेताने के लिये जैन गजट में लिखते हैं ॥

सलूनों की कथा

उज्जैन नगरी में श्री बरमा राजा राज्य करता था और जैन धर्म को पालता था, श्रीमती उस की रानी थी वोह भी बड़ी धर्मात्मा थी—उस राजा के चार मंत्री थे वोह मिथ्यात्वी और दुष्ट—चान्डाल थे— एक का नाम बली—दूसरे का नाम पहलाद तीसरे का बृहस्पती और चौथे का नाम नमन था एक दफै श्री अकंपन आचार्य सातसौ मुनी के संग के साथ इस नग्र में आये और सम्यक् ज्ञान के उपदेश दिये— मुनी महाराज ने यह सुना कि राजा के ऐसे दुष्ट मंत्री हैं तो उन को अफसोस हुआ और उन्हों ने अपने संग के कुल मुनियों को बुला कर समझाया कि राजा आदि अगर कोई तुम्हारे पास आवै तो तुम कुछ बातचीत मत कीजियो यदि तुम में से कोई बोलेगा तो सत्यानाश हो जावैगा यह सुन कर सब मुनियों ने मौन धारण कर लिया और उत्तम ध्यान में लग गये इस अवसर में शहर के कुल स्त्री पुरुष मुनियों की बन्दना करने के वास्ते अपने २ घरों से जंगल की ओर जाने लगे राजा ने उन को देख कर पूछा कि आज कोई त्योहार नहीं है यह लोग कहां जाते हैं तब मंत्रियों ने जवाब दिया कि महाराजा आप के बाग में चन्द नंगे फकीर आकर ठहरे हैं यह लोग मूर्ख सब के सब उन को पूजने को जा रहे हैं यह सुनकर राजा ने मंत्रि-

यों से कहा कि जाओ वहां जाकर देखो वोह फ़कीर कैसे हैं—मंत्रियों ने जवाबदिया महाराज वो तो बिल्कुलनंगे हैं मारे २ फिरते हैं उन के दर्शन करने योग्य नहीं हैं तब राजा ने कहा कि अच्छा तुम नहीं जाते तो हम खुद जाते हैं वोह दिगम्बरी साधू हैं हमारे कहां भाग्य जो ऐसे महा मुनियों के दर्शन हों यह कह कर राजा उधर को रवाना हुआ और राजा के खौफ़ से मंत्री भी उस के साथ हुए वहां पर सब साधू उत्तम ध्यान में मग्न मौन बैठे थे राजा ने एक २ करके सब की वन्दनाकी लेकिन कोई न बोला राजा ने भी ख्याल कर लिया कि सब ध्यानारूढ़ हो रहे हैं इस वास्ते नहीं बोलते इस वास्ते घर को लौट गया—मंत्रियों ने घर पर आकर और समय पाकर राजा से मुनियों की बुराई करनी शुरु की कि इतने फकीरों में से एक भी न बोला या तो यह सब गूंगे हैं या नादान या विद्या हीन हैं—नादान आदमी चुप होकर अपना औगुण छिपा लेता है—यह लोग बैल के समान बेवकूफ़ मालूम होते हैं या कदाचित यह लोग आप के खौफ से नहीं बोल सक्ते हैं—राजा ने जवाब दिया कि यह लोग बड़े ग्यानवान हैं ध्यान लगा रहे थे इस वास्ते नहीं बोले इन को इन्द्र और धरनेन्द्र सब पूजते हैं यह बात चीत ही हो रही थी कि एक मुनि जिन का नाम श्रुत सागर था आहार के लिये शहर में आये इन चारों राजा के मंत्रियों ने जोकि ब्राह्मण थे मुनि महाराज से वाद किया मुनि महाराजने उन चारों को हरा दिया और उन के मत को अच्छी तरह खंडन कर जैन धर्म को सच्चा सिद्ध कर दिया मुनि महाराज ने वापिस जाकर गुरु जी को यह कुल हाल सुनाया गुरु जी ने सुनकर बहुत अफसोस किया कि तुम ने दुष्टों के साथ विवाद करकेऔर उन को छेड़ कर कुल संघ का नाश किया—फिर गुरू जी ने यह हुक्म दिया कि अगर तुम उस जगह जाकर जहां विवाद किया गया था रात्रिभर रहो और हर तरह की तकलीफ जो उठानी पड़े सहो तो यह संघ बच सक्ता है ॥

श्रुति सागर मुनी यह वचन सुनकर तत्काल उस जगह चले गये और उत्तम ध्यान करके अचल पहाड़ की तरह खड़े हो गये—उन चारों मंत्रियों को वाद में हारने से बहुत लज्जा हुई थी इस वास्ते वोह गुस्सा में आकर और चारों मिलकर रात्रि के समय मुनियों के मारने के वास्ते चले मार्ग में श्रुतिसागर मुनि को ध्यान लगाये खड़ा देखा तब चारों ने सम्मति की कि जिस ने हमारी पराजय की है वोह तो यहीं मौजूद है इस वास्ते उस को यहांही मारडालना चाहिये कुल मुनियों को मारने में हमारा क्या प्रयोजन है—यह सम्मति करके चारों ने मुनिमहाराज पर खड्ग चलाने जो कि मुनिराज ध्यान में खड़े थे इस लिये ऐसे कठिन उपसर्ग की वजह से दे-

वोंका आसन कंपा और उन्हों ने तत्काल आकर उनचारों ब्राह्मणों को कील दिया कि उन के हाथ पैर और कुल शरीर ज्यों का त्यों रहगया और कुछ हिला जुला न सके प्रातः काल लोगों ने उन का यहहाल देखा और राजा तक भी खबर पहुंच गई राजा तत्काल उस जगह पर आया और अव्वल मुनिराज को नमस्कार कर मंत्रियों से कहने लगा कि तुमने अपने किये का फल पाया जो मनुष्य किसी जीव को मारता हैं वोह नरक कुंड में पड़ता है तुमने तीन लोक के पूज्य महामुनि को मारने का इरादा किया और उन पर खड्ग चलाया तुम्हारी बराबर पापी और अपराधी कोई नहीं हो सक्ता है राजा ने हुकम दियाकि इन का माथा छेदकर इन को सूली परचढ़ाया जावे यह सुनकर मुनिमहाराज ने कहा कि भो राजा यह अपने किये को आप भोगेंगे तुम को भी जीवदया पालनीचाहिये यदि राजा नीति के मुवाफिक इन को सजा देने की आवश्यक्ता है तो और कुछ सजा देदीजिये—राजा ने मुनिराज के हुकम को माना और इन चारों को पकड़कर घर लेगया वहां पर उन के सरमुडवाये मुंह काला कराया और गधेपर चढ़ाकर कुल शहर में फिरवाया पीछे २ ढोल बजता जाता था और यह कहते जाते थे कि जो कोई अपराध करता है उस का ऐसा हाल होता है इस तरहपर राजाने उन को देश निकाला देदिया ॥

कुरुजङ्गलदेश हस्तनागपुर शहर में पदम राजा राज्य करता था फिर चारों ब्राह्मण उस राजा के यहां जाकर मन्त्री होगये पदमराजा के पिता का नाम महापदम और छोटा भाई विष्णुकुमार श्रुतिसागर मुनि के पास दीक्षा लेगये विष्णुकुमार को ज्यादा तपकरने से रिद्धी भी प्राप्ति होगई थी एक दफै कुम्भापुर नग्र के राजा से राजा पदम का बैर होगया और राजा पदम ने इस का बहुत फिक्र किया—उक्त चारों मन्त्रियों ने ऐसे समय पर राजा को बहुत दिलासा दिया और सच्चा प्रण किया कि हम उस राजा को पकड़कर लादेवेंगे राजाने भी प्रण किया कि यदि तुम गिरफ्तार करलाओगे तो जोकुछ तुम मांगोगें वही दूंगा—राजा से ऐसा वर लेकर वोह कुम्भापुर गये और वहां के राजा को गिरफ्तार करलाए और अपने प्रण को पूराकर के वर के पात्रहोगये—इस के कुछ दिन पश्चात सातसौ मुनियों का संग विहार करते हुए हस्तनागपुर में आपहुंचा और नग्र के लोग उन की बन्दना को जाने लगे जब चारों मंत्रियों को यह खबर हुई तो उन्हों ने बहुत फिक्र किया और डरने लगे आखिर कार सम्मति करके राजा के पास गये और अपना वर इस तरह मांगनेलगे कि हे राजा ७ रोज का राज्य हम को देदिया जावे सात रोजतक हम जो चाहें सो करें—राजा ने अपने वर को पूरा किया और सात रोज का उन को राज्य देकर आप रनवास में

रहने लगा उन चारों ने बली को राजगद्दी पर बिठाया और मुनियों के मारने की सम्मति करने लगे आखिरकार इन की यह सम्मति ठहरी कि नरमेद यज्ञ किया जावै और उस यज्ञ में इन सब को फूंकदिया जावै इस वास्ते उन्हों ने उन के चौतरफा एक बड़ा बाड़ा घिरादिया और बहुत ज्यादा लकड़ियां और फूं। इकठा करवागकर बहुत बड़ी आग जलवाई और धुआं कराया और बहुत से जानवरों को यज्ञ में फूंकने के वास्ते इकट्ठा किया सारे शहर में इस उपसर्ग से हाहाकार मचगया और सब ने इस बात की प्रतिज्ञा की कि जबतक यह उपसर्ग दूर न हो और मुनि अहार न करें तबतक हम भी अहार न करेंगे मुनियों ने ऐसा उपसर्ग देखकर सन्यास धारण किया और रागद्वेष छूकर कायोत्सर्ग ध्यान धर कर पहाड़ की तरह अचल होगये ॥

(शेषमग्रे)

जैन औषधालय केकड़ी

प्रगटहो कि केकड़ी जिला अजमेर में श्री दिगम्बर जैन महाशयों की ओर से अमृत संजीवनी पवित्र जैन औषधालय नामक विख्यात है यह औषधालय हजारों रोगियों का रोग नाशकर अपना नाम सार्थक करता जाता है सर्व देश विदेश की आरोग्य और अपवित्र औषधि का निरादर कर सम्पूर्णों को पवित्र करना इस का मुख्य कार्य है—धन्य है उन महाशयों को जिन का धन इस धर्म कार्य में लगता है और इस की सहायता चार प्रकार के द्रव्य से होती है—(१) मासिक संग्रह (२) हर जिनस पर धर्मादा १००) रुपये पर —) आना (३) विवाह आदि ग्रह कार्यों के आनन्द में स्वदेशी वा विदेशी स्व इच्छानुसार धर्मार्थ देना इन चारों उपायों से अनुमान ६००) रुपये के १ वर्ष प्राप्त होता है और व्यय भी १ वर्ष में इतनाही होजाता है बल्कि व्यय अधिक होता है इस लिये इस का प्रबन्ध व्याज की प्राप्ति से होजाय तो अति श्रेष्ठ है—इस में दस हजार रुपये की आवश्यकता है सो इस रुपये के प्रबन्ध के वास्ते (टिकट) नियत किये गये हैं इन टिकटों के लेने के लिये २१ नियम रक्खे गये हैं परन्तु पत्र में अधिक गुंजाइश न होने के सबब से यहां पर मुख्य २ नियम लिखे जाते हैं ॥ (१२) इन टिकटों को १४ वर्ष के ऊपर बालक, स्त्री सम्पूर्ण लेसक्ते हैं ॥ (१४) दो या ज्यादा आदमी एकत्र होकर टिकट लेसक्ते हैं ॥

(१८) इन रुपयों को मन्दिर या और किसी परमार्थ में व्यय नहीं किया जावेगा केवल औषधालयार्थ। इस का फल है इन टिकटों के लेने में अत्यन्त शीघ्रता करनी धर्मात्माओं का मुख्य कार्य है ॥

प्रार्थना धर्मात्मा बुद्धिमानों से

अमृत संजीवनी पवित्र जैन औषधालय के लिये टिकट बनाये हैं इस में किसी

का खास स्वार्थ नहीं है ये सब रुपये जो एकत्र होंगे उन का व्याज प्रतिष्ठित सेठ पुन्याधिकारी सुगनचंदजी सोनी व सेठ हरसुखरायजी अमोलकचंदजी की राय से यहां की जैन सभा उपजावैगी किसी को शंकाहो वह महाशय उक्त सेठों से निश्चय करलेवें ॥

धनालाल पाटनी मैनेजर परमार्थ
अमृत संजीवनी पवित्र जैन
औषधालय केकड़ी
जिला अजमेर

मंसूरपुर

आप के जैन गजट के आने से पत्थर रूपी चित्त कुछ तो कोमल होरहे थे अब हकीम कल्याणरायजी के उपदेश से सर्वथा कोमल होकर सम्पूर्ण बिरादरी में ऐक्यता होगई—यहांपर दो मंदिर हैं सो दोनों में नित्यप्रति शास्त्र पूजा होनेलगी है—सभा यहांपर मिती असाढ कृष्ण चतुर्दशी को प्रथमबार हुई और दूसरी आसाढ शुक्ला चतुर्दशी को हुई इसी तरह मास में दोबार सभा हुआ करेगी और सभा में फजूल खर्चा आदि का प्रबन्ध होगया है और कुरीति आदि का भी प्रबन्ध किया जावैगा ह० कल्याणरायजी को कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है जिन्हों ने अपनी कोमल वाणी के द्वारा उपदेश कर इस फजूल खर्चा का नाश किया है ॥

पं० ठाकुरदास मंसूरपुर

प्रश्न का उत्तर

लाला घासीरामजी विद्यार्थी मथुरा निवासी के प्रश्न का उत्तर निम्न लिखित महाशयों ने (सेठ लक्ष्मणदासजी सभापति) दिया है ॥

लाला प्रद्युम्नकुमार विद्यार्थी जैन पाठशाला सिवहारा जिला बिजनौर ॥
लाला राधावल्लभ विद्यार्थी विजैगढ़ जिला अलीगढ़
लाला नाथुराम मथराप्रसाद विजैगढ़ जिला अलीगढ़
लाला अर्जुनलाल सेठी ऐन्ट्रेन्सक्लास महाराजा कालिज जैपुर
लाला ताराचन्द नाई की मंडी आगरा
लाला चिरंजीलाल साहब भरतपुर
छतपुरिया कन्छेदीलाल विद्यार्थी गढ़ाकोटा जिला सागर
लाला अनन्तप्रसाद मारफत शीतलप्रसाद देहली सदर
लाला रतनसिखर विद्यार्थी जैन पाठशाला इटावा
लाला शीतलप्रसाद वैद्य सदरबाजार देहली
बुद्धिलाल विद्यार्थी सिवनी छपरा
बुधमल पाटनी विद्यार्थी जैन पाठशाला छिन्दवाड़ा
नथमलदास विद्यार्थी आगर मुल्क मालवा

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य पेशगी मय डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेज़ी महीनेकी १—८—१६—२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० १६ अगस्त ....सन् १८९६ } अङ्क २४

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

फूट (तेरा सत्यानाश हो)

ऐहे तूही है वह कि जिसने हमारे भारत वर्ष को गारत कर दिया— हाय हाय तूही राक्षसी ने हमारे पुराने महा प्रताप शाली धर्मवान न्यायवान पूरी उन्नति पर विराजमान राजाओं का राज्य एक ही दिन में छिनवा दिया हाय हाय तूही दुष्टनी ने हम को मुसलमानों के आधीन रक्खा हाय हाय तेरे ही प्रताप से यह राज्य उन के हाथ से भी छीन लिया गया और तूही ने अब हम लोगों को मुहताज कंगाल बना दिया और सारा भारत वर्षका धन अन्य विलायतों में भिजवा दिया ॥ क्या वही है तू कि जिस ने हमारे परम पवित्र जैन धर्म की ऐसी अवनति कर रक्खी है क्या वही है तू कि जिस ने विद्वानों और पंडितों के भी हृदय को न छोड़ा क्या वही है तू कि जिसने अविद्या और अज्ञान हम लोगों के हृदय में बसा दिये ॥ तू वही वह दुष्टनी है जिसने इस उत्तम जैन कुल और जाति में पैदा होने वालों के मन को भी अपनी तरफ खींच लिया मेरे भाईयों बचो २ नहीं तो हम सब को यह राक्षसी अन्ध कूप में डाल देगी और धर्म के नाम को भुला देगी इस लिये ऐसा यत्न करो कि इसका पिंड छुटे और हमारी पिया मित्रता ऐक्यता (मेल) हमारे मन में वास करे ॥ क्योंकि जब कभी यह आना चाहती है तो यह दुष्टनी राक्षसी फूट झट से एक ऐसी भयावनी सूरत दिखला देती है कि हमारी प्यारी ऐक्यता सूरत देखते ही भाग जाती है और भाईयों दिल कड़ा करो धर्म की तलवार हाथ में पकड़ो और जब वह राक्षसी आना चाहे फौरन उस को मारो तब कहीं हमारे दिल की प्यारी ऐक्यता हमारे मन में बेखट के वास करेगी और सारी कुरीतियां फिजूल खर्ची अविद्या का आरोहन इत्यादि नाश करेगी अब देरीका समय नहीं है चेतिये, और सर्व १४ लाख जैनी मिल कर इस दुष्टनी को होली के समान भस्म कर दीजिये और प्यारी ऐक्यता को अपने मन में बहुत खातिर दारी और इज्जत से रखिये तब सब मिल कर अच्छे प्रकार धर्मोन्नति और जातोन्नति कर सके हैं ॥ क्योंकि संहतिः श्रेयसी पुंसां स्वकुलै रल्पकैरपि ॥ तुषेणापि परित्यक्ता न प्ररोहन्ति तण्डुलाः॥ यानी मनुष्यों को अपनी सर्व जात वालों से चाहे वे छोटे से छोटे क्यों न हो मेल रखना चाहिये क्योंकि चावलसे तुष निकल जाने पर फिर नहीं उगते हैं ॥ इस से सर्व जैनियों को एकता करके धर्मोन्नति व जातोन्नति में प्रवृति करनी चाहिये ॥

सीतल प्रसाद
कलकत्ता

रात्रि भोजन का निषेध

आज मिती असाढ़ सुदी १० को एकवजे दो वहर को सभा हुई जिस में ५० पुरुष और ४० स्त्रियों के अनुमान एकत्र हुए प्रथम श्री शास्त्र जी बंचे तत्पश्चात् भाई मंसवराय ने क्रोध के दूर करने का उपदेश दिया फिर भाई मथुरादास जी ने पानीछान कर पीने का उपदेश दिया तत्पश्चात् मैंने रात्रि भोजन के निषेध में व्याख्यान कहा जिन भाईयों के रात्रि भोजन का त्यागनहीं था उन्हों ने त्याग किया—भाई साहब यह रात्रि भोजन हिंसा का मूल है क्योंकि रात्रि भोजन को शास्त्र जी में मांस खाने के समान कहा है और निसाचर के अर्थ भी राक्षस के हैं सो रात्रि भोजन में कितने ही जीव खाये जाते हैं जिन से रोग उत्पन्न हो जाता है जैसे मकड़ी से कुष्ट व्याधि और जूं से जलन्धर रोग और मक्खी से स्वरदरोग हो जाता है, और बाल से स्वर भंग हो जाता है और भी वहुत से जीव हैं जिन के खाने से रोग पैदा होता है इस लिये रात्रि भोजन महानिन्दनीय है और जो भाई रात्रि को दूध या पेड़ा वगैरःखाते हैं सो भी त्यागना ही योग्य है क्योंकि आज कल जो हम देखते हैं तो हलवाईयों की दुकानों पर असंख्या ते जीव इन की कढ़ाईयों में गिरजाते हैं—इस लिये हम को आशा है कि हमारे जैनी भाई जिन के रात्रि के भोजन करने का त्याग नहीं है हमारे इस लेख को पढ़कर अवश्य त्याग करेंगे और जो सर्वथा त्याग न करेंगे तो चतुरमासा की रात्रियों में खाने का तो अवश्यही त्याग करेंगे और जल को छान कर पीना और रात्रि में भोजन न करना यह चिन्ह हमारे जैन मत के हैं—

भागीरथसिंह

अम्बहटा

धर्मोपदेशनी जैन सभा भापाड़म

आप का जैन गजट यहां आता है सो भाई सदासुखलालजी व भाई श्यामलालजी इन महाशयों के मुख से सुनकर सभा को परम आनन्द होता है और आप को धन्यवाद दियाजाता है कि जैन जाति को प्रकाशित आप के जैन गजटरूपी हलकारे नेही किया और हम सर्व जैनी अपने धर्म में शिथिल होरहे थे सो आपनेही हम को फिर सचेत किया और यहां के भाईयों की धर्म में रुचि बढ़ी और यहांतक कि आप के जैन गजट हलकारे ने होली खेलने का नियम करादिया और हुक्का भी जो कोई २ भाई पीते थे छोड़ दिया हम जैन महासभा मथुरा को धन्यवाद देते हैं जोकि धर्म के उद्योग करने के वास्ते नियत हुई है आशा है कि अब हमारी जैन जाति की अवश्य ही उन्नति होगी—एक पंडित की यहांपर पाठशाला के वास्ते आवश्यकता है वेतन ८) रु० मासिक दियाजावेगा और भाई साहब जिन २ भाईयों ने जैन गजट का

वार्षिक मूल्य नहीं दिया है और केवल ८ या १० परचे लेकर जैन गजट वापिसकर दिया है उन भाईयों के नाम तथा ग्रामों के नाम अवश्य जैन गजट में दर्ज किये जावें—हाय २ जिस जैन गजट द्वारा सर्व भारतवर्ष के जैनी भाईयों का हाल जाना जाता है सो इस को हमारे जैनी भाई केवल ३) रुपये साल देने के भय से वापिस करदेवें उन के अभग्या की सीमा कहांतक वर्णन की जावे ॥

सैक्रेटरी जैन सभा

पूजन विधान

यहांपर श्री जैन मंदिरजी ३ हैं तिन में आजकल २ मंदिरजी में श्री अष्टांनकाजी का उत्सव बहुत आनंद के साथ होरहा है मिति असाढ़ सुद्ध ८ से लगाय आसाढ़ सुदी १५ पर्यंततक होगा और १ मंदिरजी पंचायती में श्री तेराद्वीप का विधान बहुतही बहुत आनंद के साथ होरहा है मिती आषाढ शुक्ला १० से लगाय होरहा है यहांपर जैनी भाईयों के घर करीब ३०० के हैं सब लोगों की धर्म में रुचि अच्छी है आगे यहांपर भदावांजी के महीने में श्री दशलाक्षणीजी का बहुत ही बहुत उत्सव होता है श्री शास्त्रजी की सभा में पंडितजी साहब चुन्नीलालजी बहुत अच्छा व्याख्यान करते हैं बहुतही अच्छे बुद्धिवान सहधर्मी वात्सल्यता के धारक हैं ॥

परम हर्ष के समाचार

यहां से ८ कोस पर एक गांव चंदेरी है तिस में श्री मंदिरजी २ हैं तिस में एक मंदिर में २४ भगवान के २४ ही मंदिर जुदे २ हैं तिन के दर्शन करने से अत्यंत हर्ष प्राप्त होता है और इसी गांव से २ मील पर एक गांव थूबोंनजी है वहांपर श्री मंदिरजी बहुत हैं और बहुतही पुराचीन हैं तिस में प्रतिबिंबजी खड्गासन तथा पद्मासन विराजमान हैं यह क्षेत्र अतिही मनोग्य है बड़ा तीर्थ है इस यात्रा को अवश्यही करनी करना चाहिये ॥

गुलाबचन्द टड़ैया
मुं० ललतपुर
जिला झांसी

कोटा

यहां दिनोंदिन धर्म कार्य में अवनति और मिथ्यात्व की उन्नति होतीजाती है इसलिये कुछ कहा नहीं जाता और कहे बिना रहा नहीं जाता इस कारण लाचार से कुछ कहना पड़ा काल के प्रभाव से इस क्षेत्र में धर्म कार्य में बहुत शिथिलता आगई है बहुतसी कुरीतियें आप की प्रेरना से अन्य २ स्थानों में बन्द होतीजाती है यहां उस के विरुद्ध है यानी विवाह आदि में आतिशबाजी व रंडी आदि पहले से लेजाते थे वह अब भी बराबर लेजाते हैं बल्कि कुरीति एक तथा दो और ज्यादा

नारी होगई हैं— यद्यपि आप सरीखे सज्जन पुरुष ऐसे पुकार २ कर मिथ्यात्व की निद्रा में सोते हुओं को जगारहे हैं परन्तु हमलोग ऐसे बेखबर अचेत सोरहे हैं कि आप की उपदेशरूपी मृदुध्वनी को बिल्कुल नहीं सुनते लेकिन यह भी बात है कि महा सभा की ओर से उपदेशकों की भी कमी है—अबतक यहांपर कोई उपदेशक पंडित नहीं पधारे यहांपर विना उपदेशक महाशय के पधारे धर्मोन्नति कदापि नहीं होगी दूसरे यहां के जैनी भाईयों का यह हाल है कि आप का जो जैन गजट आता है उस को कोई भाई नहीं सुनते सिर्फ हमही दोनोंजने पढलेते हैं—जो भाई बिरादरी में अग्रनीय और माननीय और धनाढ्य हैं वोह इस ओर बिल्कुल दृष्टि नहीं देते—और न यहांपर कभी सभा होती है जो किसी प्रकार का प्रबन्ध भी किया जावै और बहुत से भाईयों को तो गजट के जारीहोने का और महा सभा के प्रबन्धों का हाल मालूम नहीं है इस लिये यहांपर उपदेशक अवश्य भेजना चाहिये

चम्पालाल कन्हैयालाल

कोटा

सम्पादक

उक्त ग्राम के समाचार बांचकर हम को बड़ा भारी सन्देह उत्पन्न हुआ है कि जहांपर ऐसे २ धनाढ्य और परोपकारी धर्मनुरागी लाला चुन्नीलाल व लाला किशनलालजी महाशय वास करते हैं जिस नग्र में सभा व पाठशाला नहो और जैन गजट न पढाजावै इस से ज्यादा और क्या सन्देह की वार्ता होसक्ती है इस लिये अब यहां के मुखिया और धनाढ्य भाईयों को चाहिये कि सभा व पाठशाला आदि का अवश्य प्रबन्ध करैं ॥ उपदेशक भंडार की सहायता भाईयों ने बहुत कम करी है इस कारण उपदेशक अधिक कैसे नियत होसक्ते हैं ॥

महा सभा

मेरी तुच्छ बुद्धि में अब की बार महा सभा मथुरा को इन २, ३ बातों का भी प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये—

(१) जो जैन पाठशालाओं में पुस्तक छोटे २ बालकों को पढाई जावै वे कैसी होनी चाहिये, छोटे २ लड़कों और लड़कियों के पढाने के लिये भाई पन्नालाल जैन मनेजर देशहितैषी पुस्तकालय पोष्ट. (गिरगावां) बम्बई वाले साहब ने "बालमित्र" नाम कर के १ ला २ रा, ३, रा भाग लिखा है कि जिस में जैन धर्मरूपी शब्द और वाक्य हैं ॥

(२) स्त्री शिक्षा—विना इस के तो जैन जाति व धर्म की उन्नति होना एक बहुत कठिन बात है क्योंकि हमारा सारा ग्रहस्थ धर्म का कार्य उन्हीं पर निर्भर है बालक बालिका भी अपना लड़कपन स्त्रियों

के साथ व्यतीत करते हैं और इस लिये लड़कपन मं जो (मवानी) शिक्षा और आदत होजाती है वह बहुत पक्की रहती है और मुश्किल से छूटती है ॥ स्त्रियां मूर्ख और अविचारी (बेपढ़ी लिखी) हुई (क्योंकि अविद्या के शत्रु ने अपने कठिन वाणों से इन के मन को ऐसा छेदन करदिया है कि इन्हीं स्त्रियों कीही महिमा से सारी कुरीतियां, फिजूल खर्ची, कुदेवादिक माता शीतला, मियां पीर वगैरह का पूजना इत्यादि जारी होगई) तो उन की सन्तान भी वैसीही मूर्ख अज्ञानी रहेगी ॥ इस लिये सर्व जैनी मात्र धर्म स्नेही गुरवीरों को चाहिये कि जहां उन्हों ने बालकों के लिये पाठशाला व शिक्षालय नियत करलिया है वहां वे लड़कियों को पढ़ाने के लिये भी एक श्राविका पंडिता (अगर मिलसके) व कोई बुड्ढा विद्वान पंडित रखलिया जाय जो लड़कियों को परम्भ से जैन शास्त्रों तक पढावे और छः वर्ष से लगाय बारह वर्ष तांई की लड़कियों को पढाना चाहिये छठे वर्ष लड़की को जरूर २ पढने के लिये भेजना चाहिये ॥ जैपुर, बम्बई, मथुरा वाले इस का प्रबन्ध बहुत उत्तम करसके हैं ॥

(३) बाल्य विवाह का त्याग करना

(४) ब्याह शादी के ऐसे नियम बांधने चाहिये जिस से थोड़े में सब काम होसके आरायश, आतशबाजी इत्यादि न इस्तैमालहो ॥

शीतलप्रसाद कलकत्ता

चिट्ठी

तीतरोन जिला सहारनपुर के जैनी (आर्य्य) भाईयों की सेवा में निवेदन है कि आप साहिबों ने आर्य्य धर्म में जैनधर्म के मुकाबले में क्या अधिकयता देखी जो पुराचीन सत्य धर्म से विमुख होकर नवीन दयानंदी असत्य धर्म को अंगाकार किया ॥ अगर आप को जैन धर्म से वाकफियत नहीं है तो पहले जैन धर्म को समझिये कि क्या है और फिर उस नवीन धर्म से मुकाबला करिए कि सत्य कौनसा है क्या दयानंद केवली भगवान से भी अधिक ज्ञानवान था अगर आप हलुआ खाना चाहते हैं और आप को कढाई की जरूरत है तो पहले अपने घर में खूब तलाश करलो और घर में जो बड़े बूढेहों उन से पूंछलीजिए कि कड़ाई घर में है कि नहीं ॥ जब नहो तब दूसरे के घर मांगने जाईये तो शोक नहीं ॥ बिना ढूंडे पहलेही मांगने को भागे गए तो यह बहुतही अयोग्य है ॥ पहले जैन शास्त्र पढिये और जो बात आप के समझ में न आवै उसे जैन गजट द्वारा प्रकाश कराईये उसका उत्तर आप को देशान्तरों से पंडित जन देंगे और आप का संशय निवृत्त करेंगे ॥ पश्चात फिर भी आप को संशयरहै तो फिर निवृत्त कीजिये ऐसा करते २ जब आप को निश्चय होजाय कि जैन धर्म से

आर्य्य धर्म श्रेष्ठ है तब आप जो चाहें सो करें ॥ देखा देखी कार्य्य करने से बड़ी हानि होती है ॥ प्राणी दुबारे में फँस जाते हैं और फिर वह कोई कार्य्य नहीं करसके ॥ धर्म वही है जिस में स्व व पर का हित हो ॥ उस के धारण करने के अनेक नय हैं॥पहले सच्चे देव धर्म गुरुकी परीक्षाकर के प्रतीत करना और फिर उन के बचनानुसार प्रवर्तन करना मूल धर्म का लक्षण है ॥ और बात तो पीछे रही पहले आप दयानन्द और अपने केवली भगवान के स्वर्ग वीतराग हित उपदेशक पनेही का मुकाबला करलें ॥ कृपा करके मुझे सूचित कीजिये कि आप ने आर्य्य धर्म में जैन धर्म से क्या अधिकयता देखी अवश्य उत्तर दीजिये ॥

सुधारसीलाल ओसवाल
मेंडू निवासी

लखनौ में पंडित धर्मसहाय उपदेशक

पं० धर्मसहायजी उपदेशक मिती ज्येष्ट द्वितीय सुदी २ को यहां पधारे और मिती ज्येष्ट सुदी ९ को ८ बजे सभा हुई उसी दिवस लाला गुलजारीलालजी कानपुर निवासी भी यहां पधारे प्रथम सभा में मैंने मंगलाचरण पढा और सभा प्रारम्भ की फिर उक्त उपदेशकजी साहब ने संसार व्यवस्था और नरकों के दुःख का वर्णन किया और रात्रि भोजन का निषेध भले प्रकार से किया यहांपर जैनी भाईयों में जीमन तो दिन में होताही था लेकिन बसबब अन्य मतियों का सम्बन्ध अथवा मेलमिलाप ज्यादा होने के कारण उन लोगों का जीमन रात्रि को किया जाता है—उस में चन्द जैनी भाई भी जिन को रात्रि भोजन का त्याग नहीं था जीमते थे अब यह प्रबन्ध होगया कि कोई जैनी भाई कहीं आम ज्यौनार में रात्रि को नहीं जीमेगा और विवाह आदि में आतिशबाजी नहीं चलाई जावेगी—(और ज्यौनार में कन्द मूल परोसना होली खेलना यह कुरीतियां यहांपर पहले से बन्द हैं) फिर पंडितजी साहब ने विद्योन्नति के विषय में इस उत्तमता से व्याख्यान दिया कि सम्पूर्ण सभासदों के हृदय कमलवत उन के मुखरूपी सूर्य की किरणों से प्रफुल्लित होगये—और सम्पूर्ण सभासदों के मुख से धन्यवाद का शब्द निकलता था—और पाठशाला के वास्ते २११) रु० आने का चिट्ठा बन्धगया है और मिती ज्येष्ट सुदी १० को पाठशाला का प्रारम्भ बड़ी धूमधाम के साथ हुआ उस समय सभा में अनुमान ७० पुरुष स्त्री उपस्थित थे तत्पश्चात धन्यवाद कहकर सभा विसर्जन हुई हम पंडित धर्मसहायजी को अनेकानेक धन्यवाद देते हैं कि जिन के सदोपदेश से शुभागमन से पाठशाला स्थापित होगई और मिती असाढ

वदी ११को ६६) रुपये हुंडी द्वारा परर्षांछे १) रुपया उपाकर वास्ते जैन महाविद्यालय के श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी सी. आई. के पास भेजदिये गए—और चन्द भाईयों से बाकी है आशा है कि जल्दी वसूल होजाने पर उक्त सेठजी साहब के पास रवानः किये जावेंगे ॥

दामोदरदास मन्त्री
जैन सभा लखनऊ

रिपोर्ट उपदेशक हकीम कल्याणराय

श्रीमान डिप्टी चंपतरायजी जैजिनेंद्र समाचार विहारी से चलकर असाड वदी १० रविवार अंगरेजी तारीख. ९ को स्थान तिस्समें आया व्याख्यान हुआ तो सब साहिबों ने शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा लीनी मनुष्यों को गणना ३५ वा ४० के करीब थे मंदिर बहुत अच्छा बनाहुआ है और पूजन का इन्तजाम पहिलेही से अच्छा था और फिर शाम को उपदेश हुआ तो सब भाईयों ने सभा करना अंगीकार किया और सभा का दिन चतुर्दशी कायम किया अर्थात एक मास में दो दफै हमेशा हुआ करैगी सभा के सभापति मंगतराय मोहनलाल मंत्री नारायनदास माझूमल कोशाध्यक्ष जहारूमल है बड़ी खुशी से सभा करना अंगीकार किया और प्रातहकाल उपदेश हुआ तो पाठशाला का इन्तजाम हुआ अर्थात चंदा वगैरहः जो कि पहिले उन भाईयों ने लिखरक्खा था वो मंजूर किया और सब भाईयों ने और सभापती उपसभापती मंत्री आदि ने मिलकर लाला यादराम को पाठशाला का अधिकार दिया यादरामजी बहुत सज्जन और धर्मज्ञ पुरुष हैं तिस्से के भाईयांने मेरी बहुत ही खातिर करी तिस्से चल कर मुकाम ककरौली आया तो मंदिरका अच्छा हाल नहीं देखा क्योंकि जगह अच्छी नथी परन्तु मैंने शास्त्र में उपदेश किया तो सब भाईयों ने चार चार महिना की शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा ग्रहण कीनी और फिर शाम को सभा किनी तो सब साहिबो ने सभा करना मंजूर किया और एक महिना में चार दफै अर्थात रविवार को हुआ करैगी और वहा पर संकरलाल सिकंदरपुर वाले मौजूद थे बडे धर्मज्ञ पुरुष हैं और फिर ककरौली से चल कर बुद्धवार तारीख ८ को जानमठ आया तो दुपैहर के वक्त शास्त्र में गया तो मंदिर तो बडा बना है परन्तु मरंमत कम थी यानी शोक होता था मंदिरजी के देखने से कि लोगों की धर्म में रुची कम है फिर शास्त्र में उपदेश दिया परन्तु मनुष्य कम थे इस कारण कोई कारज न हुआ फिर शामको सभा हुई तो कुछ मनुष्य थे पहिले तो मैंने उपदेश दिया विद्योन्नति के विषय में फिर लाला लैरातीमल ने उपदेश दिया बहुत ही अच्छी तरह ललित वाक्यों से और अपन

भाईयों की दशा वर्णन की खैरातीलाल द क्षणमें रायपुर नग्र में रहते हैं और फोटूका कार्य करते हैं फिर उन के उपदेश के बाद लाला सकटूमल धर्म्मीमल खैरातीलाल फोटू ग्राफरादि ७१ या २० भाईयों ने शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा लीनी फिर प्रातः काल सभा जानसट ही में हुई तो खैरातीलाल फोटू ग्राफरने ऐक्यता के विषय में व्याख्यान किया और मैने भी किया और सभा के बावत उन भाईयो को कहागया तो उस समय मुलतवी रहा और कहा कि २ रोज में आप आना फिर सभा हो जायगी फिर जानसट से चल अशाड वदी १४ ब्रहस्पत वार अंगरेजी तारीख ९ को मुकाम कवाल आया और लाला बक्तावर मलकी दुकानपर ठहरा बडी खातिर कीनी फिर दुपैहर के वक्त शास्त्र में गया तो मंदिर को देखा तो मंदिर देखने से यह बात मालुम होती थी कि कवाल के मनुष्य बड़े धर्मज्ञ है और धर्म में रुची भी है शास्त्र में व्याख्यान कियागया तो सर्व भाईयोंने शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा ग्रहण कीनी कितनो ने छः महिने की कितनों ने तीन महिने की कितनो ने दो महिने की और उसी समय सर्व भाईयोने बडी खुसी के साथ सभा करना अंगीकार करलिया और उसी समय सभा का प्रबंध किया सभा के सभापती उपसभा पती लाला रंगीलाल उंग्रसैन बक्कामल मुत्सद्दीलाल और मंत्री हर जसराय मामराज कोशाध्यक्ष मक्खीमल ज्ञानचन्द्रजी यह सब सभा के अधकारी है और धर्मज्ञ भी मालुम देते हैं और शाम को मेघ के कारण से सभा नहीं हुई फिर दूसरे दिन बड़े आनन्द से बाहर शामयाना तानकर सभा कीनी ऐक्यता के विषय में व्याख्यान करा सब भाई सुनकर आनंदित हुए और फिर शास्त्र बचा- तो पहिले पंडित जानकीदास ने मीठी वानी से शास्त्र बाचा और फिर दूसरा शास्त्र पंडित वनारसीदास मन्सूरपुर वाले ने वांचा और फिर तीसरा मैंने बांचा और दृष्टांतो मे यही जताया कि पहिले अपने धर्म के सरूप को जाने फिर भजन अर्थात पद कह कर सभा विसर्जन हुई बडा ही आनंद रहा और अभी कवाल हूं कलदिन मुकमराय जाऊंगा ॥

सलूनों की कथा

(अंक २२ पृष्टा १८से आगे)

श्रुति सागर मुनि मिथलापुर के वन में उस समय पकरते थे उन को ज्ञान की प्राप्ति हुई और अवधज्ञान मालूम हुआ कि मुनियोंको इस तरहका उपसर्ग होरहा है उनके शिष्य वहां मौजूदथे उन्होंने पूछा मुनि महाराज सातसौ मुनिका उपसर्ग कैसे दूर हो सक्ता है तब मुनि राज ने कहा कि भूधन गिरि पहाड पर विष्णु कुमार मुनि तप कर रहे हैं उन को विक्रिया ...

हो गई है वोह उस उपसर्ग को दूर क रसके हैं यह सुन कर छुल्लक ने वहां जा ने की गुरुजी से आज्ञाली और विद्या के जोर से तत्काल विष्णु कुमार मुनि के पास पहुंच गये और नमस्कार करके कुल हाल उन से बयान किया विष्णु कुमार को पैदा हो जानेका हाल मालूम नहीं था उन होंने अपना हाथ फैलाया वोह हाथ बहुत बढगया विष्णु कुमार मुनि उसही समय हस्तनागपुर आये और पदम राजा से मिल कर उस को बहुत लाजित किया कि तूने क्यों मुनियोंका उपसर्ग किया है पदम राजाने कहा महाराज मैने कोई अपराध नहीं किया है मैंने अपना वर पूरा करने के कारण सात दिनका राज्य चार ब्राह्मण वजीरों को दे चुका हूं सात रोज तक मैं कुछ नहीं करसक्ता वोह चाहें सो करें आप महा मुनि हैं आप बेशक यह उपसर्ग दूर करसक्ते हैं विष्णु कुमार मुनिने उस समय बौने ब्राह्मणका रूप धारन किया और वेद के मंत्रों को बडी मधुरता और उच्चस्वर से उच्चारण करते हुए बली राजाके दरबार में पहुंचे— बली राजा ने उनका बहुत आदर सत्कार किया और उन की पूजा की फिर बली राजा ने उन से निवेदन किया कि जिस चीज की आप को आवश्यकता हो वोह मौजूद है— तब विष्णु कुमार ने कहा कि हमको किसी वस्तुका आवश्यकता नहीं है— हां अगर तुम अपनी खुशी हम को कुछ देने ही में समझ ते हो तो तीन कदम जमीन हम को संकल्प करके देदो ताकि हम अपनी मढी बनालेवें राजा बली ने इस को मंजूर किया और तीन कदम जमीन का संकल्प कर दिया उस के पीछे विष्णु कुमार ने तीन कदम जमीन नापना शुरू किया और अपने शरीर को बढाकर उस के सारे राज्य को दो कदम में नाप लिया और एक कदम जमीन लेनी बाकी रहगई जिस पर बली राजा लाचार होगया और गिरफ्तार किया गया सातसौ मुनि अग्नी से बाहर निकाले गये और सब लोगों ने जैजैकार करके उनकी बन्दना की मुनियोंने राजा को पकड़ा हुआ देखकर यह कहा कि जब तक यह कैद रहैगा हम आहार न करेंगे इस कारण वोह तत्काल छोड़ दिया गया और कुल मुनियोंने जाकर आहार किया बली इत्यादि चारों ब्राह्मण मन्त्रियोंपर जैनधरमके परताप का असरपड़ा और दया धर्म का उनके दिल पर बहुत ही असर हुआ और वोह चारों ब्राह्मण उसी वक्त जैनी होगये ॥

राजा पदम का फिर राज्य होगया और जिन लोगोंने मुनी संग के मार डालने के लिये बली राजा को सम्मति दी थी सजा दीगई बल्कि सब को सजा देने की आज्ञादी गई और वोह मनुष्य जो निरपराधी सिद्ध हुए बल्कि जिन को ऐसे

उपसर्गका रंजघा उन के एक चिन्ह बान्ध दियागया कि सभा से इन की रक्षा हो इस वास्ते इस त्योहारका नाम भी रक्षा बन्धन है ॥

इस कथा के पढने से साफ मालूम होता है कि सलूनों के दिन ब्राह्मणों से तागा बन्धवाना और उन को द्रव्य देना ठीक नहीं है ॥ सलूनों के दिन अवश्य धर्मोन्नति और परोपकार का काम करना चाहिये अर्थात सलूनों की कथा पढने से हम को एक बहुत बडी नसीहत मिलती है-- राग और द्वेषका इसमें विलकुल त्याग होना है यहां तक कि मां बाप भाई बन्धु और स्त्री इत्यादि से भी बिलकुल सम्बन्ध तोड दिया जाता है-- अपने शरीर की मोहब्बत भी नहीं रहती यहां तक कि यदि कोई शरीर को काटने भी लगे तो भागकर भी अपने शरीर को बचाने की इच्छा नहीं की जावेगी लेकिन सलूनों की कथा में मालूम होता है कि विष्णुकुमार ने बहुत बडा छल किया बौना कद बनाया ब्राह्मणका रूप धारण किया और वेद मंत्रों को उच्चारण कर बलीराजा को अपना पूरा ब्राह्मण होनेका यकीन दिलाया और पृथ्वीका दान मांगा यहां तक कि ऐसे २ काम किये कि जो मुनि से तो क्या ग्रहस्थी से भी नहीं बनसके-- मगर इन्होंने बुरा काम किया या भला किया-- वेशक इन्होंने भला काम किया क्योंकि इस तरह से सातसौ मुनि के संग को बचाया अगर वोह ऐसा न करते तो जैन मत की बहुत हानि होती जैन मत की हानि न सह करके इन्होंने मुनि धर्म को त्यागना पसन्द किया अर्थात अपने कल्याण से भी ज्यादा धर्मका बचाना है॥

ऐ जैनी भाईयों क्या आप के मत पर थोडा उपसर्ग हो रहा है क्या आप के धर्म की कम हानि हो रही है अफसोस है कि जिन धर्म को बचाने के वास्ते मान अपनी पदवी तक त्यागना पसन्द करें उसी धर्म की रक्षा के वास्ते हम किंचित मात्र भी कोशिश न कर सकें ऐ जैनी भाईयों जागो यह तुम्हारा धर्म बिलकुल डूबा जाता है इस को बचाओ और पुन्य उपार्जन करो ॥ धर्मोन्नति और परोपकारों से अधिक कोई पुन्य की बात नहीं है ॥

संसार दशा।

हे महाशयों-- विचार करने से मालूम होता है कि यह संसार कि जिस के पार तक हम तुम सब को पहुंचना है- महा विकट, भयानक, और घोर बन के समान है ध्यान कीजिये कहीं भी आराम से पग धरने को ठौर नहीं मिलता (इन बन के दुःखों से तात्पर्य वर्त्तमान संसारी क्लेशों से है) देखिये कहीं बड़े २ गहरे गढ़े हैं कहीं दल दल हैं कहीं कीच है कहीं पहाड़ कहीं घाटी कहीं पथरीली विषम भूमि है-- कहीं ऐसी तेजी से ब-

हने वाली पहाड़ी नन्दियां हैं कि जिन में गिरे हुए मनुष्य को खारे समुद्र में ही ठिकाना मिलता है कहीं ऐसा रेगिस्तान (मरुस्थल) हैं कि जहां मुसाफिरों को जल नहीं मिलता मारे प्यास जहां के जी मतालुबे से जालगती है और लुओं से तपाये हुए मुसाफिर तड़फ २ कर गिरते हैं कहीं कांटे कहीं कांटेदार झाड़ियां और कहीं विष की तासीर रखने वाले कांटों स लदे हुए पेड़ हैं कहीं इतना गाढ़ अन्धकार छारहा है कि जहां मुसाफिरों की छोटी २ लालटैनें (ज्ञान, समझ वा विद्या) कुछ भी काम नहीं देती बल्कि बुझ जाती है ऐसे विकट मार्ग में कहीं सिंहों की गर्जना कहीं हाथियों का चिंगाड़ना और भी दम खुश्क किये देता है कहीं उल्लुओं का घू, घू, शब्द और गीदड़ों का दिन में रोना मन को ऐसा उदास करदेता है कि जिस्मे यह सब बन श्मशान के समान भांयं, भांयं होने लगता है कहीं भेड़िया गुर्राते हुए पीछे भागते हैं कहीं धनुष बाण लिये मृत्यु कासा रूप धारण किये भील प्राणों का ग्राहक बना घात लगाये बैठा है कहीं सांप, बिच्छू ततैया और बन मक्खिका आदि जहरीले जानवरों के मारे बदन सूजकर कुप्पासा होजाता है कहीं एक साथ बर्फ से ढंपी हुई पहाड़ की चोटी पर चढ़ना होता है और कहीं एक दम अन्धकूप में गिरना होता है इत्यादि हजारों प्रकार के दुःखों से भरा हुआ यह संसार रूप बन दिखाई देता है ॥

यदि कोई सन्देह करे कि क्या आज तक इस संसार में कोई ऐसा विचार शील, पराक्रमी परोपकारी पुरुष नहीं हुआ कि जो ऐसे दुःखदायी विकट महाबन में से सीधा रास्ता निकाल जाता कि जिस पर चलने से मुसाफिरों को उक्त क्लेश न भोगने पड़ते तो उत्तर यह है कि इस दुर्गम बन के इस सिरे से परले पार तक सुगमता (आसानी) से पहुंचने के लिये हमारे आचार्यों ने जो कि बड़े भारी दीर्घ दर्शी विचार शील, तजर्बाकार महात्मा थे ऐसी सीधी सकों और ऊंची जिस के दोनों ओर छाया दार वृक्ष लगे हुए हैं सड़क निकाल दी है कि जिस पर चलने से यात्रियों को बनका कोई दुख नहीं भोगना पड़ता है बल्कि यह घोर बन इस सीधे मार्ग पर चलने से ले मुसाफिरों को उप बन वा पुष्प वाटिका के तुल्य आनन्द दायक प्रतीत होने लगता है— सो हाय हाय हमारे जैन भाई अपने आचार्यों के कहे शास्त्रों का श्रवण नहीं करते हैं इस लिये वे संसार के सर्व दुखों को भोगते हैं यदि किन्चित मात्र भी उक्त शास्त्रों का श्रवण करें तो क्यों उनको इस संसार के इतने दुःख भोगने पड़ें— और अफसोस की वार्ता है कि इ-

सने दुःख भोगने पर भी इस संसार से ममत्व तजने की कोशिश नहीं करते ॥

—०—

जैन सभा स्योहारा

यहांपर प्रतिमास की पूर्णमाशी को सभा नियत है गतद्वि० ज्येष्ठ सुदी १५ को रात्रि के ८ बजे से ११ बजेतक सभा हुई जैन गजट—जैन प्रभाकर जैन हित उपदेशक जैन हितैषी आदि समाचार पत्र पढकर सुनाये गये और २० तथा २९ जैनी भाई एकत्र हुवे थे जैन गजट के २९ वे अङ्क में (जिन बाणी का जीर्णोद्धार) बाबत लेख छपा था के श्री धवल महा धवलादि तीन सिद्धांत ग्रंथ जो मूलबद्री क्षेत्र में हैं और जीर्ण होगये हैं उन का उद्धार होना चाहिये सो इस लेख को सर्व भाईयों ने सुनकर कहा के यह कार्य अवश्य और अति शीघ्र होना चाहिये और सर्व ग्राम व नगरों के जैनी भाईयों को किसी न किसी प्रकार के रुपैये से उक्त कार्य में अवश्य सहायता देना चाहिये क्योंकि यह कार्य किसी की सम्मति में भी वृथा न होगा करने योग्यही है ॥

आप जैन धर्म्मोन्नति कारक
भाइयों का दास खैरातीलाल
धनकुमार जैन सिवहारा
जिला बिजनौर

चिठ्ठी

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी साहब योग्य लिखी आगरे से चिरंजीलाल की साविनय जुहार बंचनाजी यहां कुशल है आप की कुशल सदैव चाहियेजी अपरंच आपके जैन गजट में जो मृतक के जलाने के बाबत शंका की है सो भाई चिरंजीलाल भरतपुर वालों का लिखना अयोग्य है अटेर वाले भाईयों का लिखना सत्य है जैनी के लिये कोई आरंभ रात्रि में करना योग्य नहीं है मृतक को दिवस मेंही जलानाही योग्य है और जो भाई चिरंजीलाल नें यह शंका की है कि उस में जीव पड़जाता है सो ठीक है परन्तु यह जीव और प्रकार के हैं और रात्रि में जलाने में असख्याते पंचेन्द्री जीवों की बाधा होती है सो आप कृपा करके भाई चिरंजीलाल भरतपुर वालों को प्रार्थना करदें कि अटेर वाले भाईयों का बन्दोबस्त ठीक है ॥

आप का कृपाकांक्षी
चिरंजीलाल सभापति
धर्मोपदेशनी जैन सभा
आगरा

मनुष्य जन्म दुर्लभ है

इस पंचम काल में जीव की दशा कैसी नष्ट होरही है कि अपने मनुष्य

योनी पाने का कुछ भी विचार नहीं करता है कि किसी काल के पुन्य के जोर से परावर्तन पूरी करते २ निगोद रास से निकल कर श्रावक कुलकूं पायकर के धर्म श्रवण करने में कुछ भी ध्यान नहीं देते सो हमारी दशा कैसे सुधर सकी है और कैसे जन्म मरण से छूट सके हैं हाय २ हम को धर्म का कुछ भी ध्यान नहीं है—न शास्त्र सुनते हैं और न दर्शन आदि का श्रद्धान है और मेरा २ करत जन्म बीता-जाता है मेरी माता, मेरे पिता, मेरी स्त्री, इत्यादि इन्हीं के मोह तिमिर में फंसा हुआ है अपने बुरे भले का कुछ भी ख्याल नहीं है और मिथ्यात्व और कुरीति का भी बहुत ज्यादा रिवाज होरहा है परंतु जब से यह जैन गजट जारी हुआ है तब से कुछ २ हमारे भाई चेतने लगे हैं यह पत्र मिथ्यात्वरूपी अन्धकार को दूर करके सच्चा श्रद्धान करानेवाला है कुरीति और फजूलखर्ची की नींद में सोते हुए पुरुषों को जगाने वाला है और सुरीति और धर्म मार्ग में लेजाने वाला हल्कारा है और पुकार २ के कहता है उठो श्रीजी का ध्यान करो वक्त जाता है फिर यह औसर नहीं मिलैगा ॥

जैनी भाईयों का दास
सूरजमल श्रावक
सेहोर छावनी

स्योपुर जिला ग्वालियर

यहां के जैनी भाईयों को सर्व प्रकार के नशों का त्याग है—यहां धर्म की उन्नति में भाईयों का सच्चा प्रेम है पूजन प्रक्षालन व शास्त्रजी आदि का अच्छा प्रबन्ध है सर्व भाई दर्शन करने को रोज आते हैं और स्वाध्याय भी करते हैं और शास्त्रजी में अनुमान २० वा २१ भाई आते हैं और शास्त्रजी होने के पश्चात आप का जैन गजट पढाजाता है और मंदिर की आमदनी १०००) रुपये साल की है सोई श्री मन्दिरजी का काम बखूबी चलाजाता है परन्तु यहां की फिजूलखर्ची का अभीतक कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ है विवाह आदि में दो २ हजार चार चार हजार रुपया खर्च करदेते हैं और फुलवार आतिशबाजी वगैरः की भी रोक नहीं है और रंडी का नाच भी कराते हैं—यहां पर पाठशाला भी है तिस में १० तथा १२ लड़के संस्कृत भाषा पढते हैं और कुरीतें यहांपर जारी हैं तिन का अभी कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ है ॥

कस्तूरचन्द गंगवाल

सम्पादक

धन्य है यहां के भाईयों की धर्म की तरफ ऐसी रुचि है और हरएक प्रकार का प्रबन्ध कर रक्खा है परंतु

बड़ आश्चय की बात है कि ऐसे धर्मात्मा भाईयों ने फिजूलखर्ची, और कुरीति को अपने नग्र में निवास होने दिया है और आतिशबाजी का जलाना हाय २ जिस में असंख्यात जीवों का नाश हो क्या ऐसे निकृष्ट कार्य के करने से वोह भाई धर्मात्मा कहे जासक्ते हैं और रंडी जो सर्व प्रकार पाप की खान है विवाहादिक कार्यों में उस का नृत्य कराने से क्या कुछ बुद्धिवान महाशय पसन्द करसक्ते हैं कदापि नहीं अब हम स्योपुर के भाईयों से निवेदन करते हैं जिस प्रकार नशा आदि का त्याग किया है इसी प्रकार फिजूलखर्ची, रंडी का नाच, और आतिशबाजी का फूंकना और कुरीति इत्यादि का त्याग कर के हम को इस खुशी की खबर सुनाकर कमोदनी की तरह खिलावेंगे और अपनी जाति में प्रतिष्ठित गिने जावेंगे ॥

समाचारों का गुच्छा

मौजाखबड़ जिला देहली—लाला खूबीराम साहब साहूकार ने अपने मुकदमे के जीतने की खुशी में २॥) उपदेशक फंड में दिया ॥

धामपुर जिला बिजनौर–से लाला उमरावसिंहजी लिखते हैं कि यहांपर पंडित गनेशीलालजी निहटौर वाले आये थे सो उन के उपदेश से यहां के भाईयों ने पाठशाला स्थापित करना चाहा है सो यहांपर पंडित की आवश्यकता है वेतन १००) रुपये साल यानी ८॥) रुपये मासिक मिलैगा जो कोई भाई पाठशाला की नौकरी करना चाहैं वोह उक्त महाशय यानी लाला उमराव सिंह धामपुर निवासी के पास दरख्वास्त भेजें ॥

मनुष्य का जीवन

मनुष्य को चाहिये कि अपना जीवन धर्म कार्यों तथा भलाई के साथ व्यतीत करें तो प्रथम सोचना चाहिये कि इन दोनों के वास्ते किन २ बातों की आवश्यकता है और वोह बातें किसतरह से हांसिल होसक्ती हैं संसार में जितने जीव हैं वोह सब अपने को भला होना चाहते हैं परन्तु संसारिक पुरुषों में नेक और पंडित वही होसक्ता है जिस में यह चार गुण होंगे ॥ श्लोक ॥

मातृवत्परदारेषु, परद्रव्येषुलोष्टवत् ।
आत्मवत् सर्व भूतेषु, यः पश्यति स पंडितः॥

(अर्थ) पराई स्त्रीयों में माता के समान, पराये द्रव्य में मिट्टी के ढेले के सदृश, और सब प्राणियों में सुख दुःख अपनेही तुल्य जोदेखता है वही पंडित है मनुष्य में कितनेही गुण क्यों नहोवें परन्तु एक अवगुण के होने से उस के गुण ढकजाते हैं जैसे कि किसी स्थान में एक पंडित रहता था जोकि बड़ा

विद्वान था और जहां २ वह जाता था तहां २ वह अपने गुणों करके बड़ाई का पात्र बन जाता था और मनुष्य उस की प्रशंसा करने लगते थे परन्तु क्या जब उस का अवगुण मगट होजाता तो उस की बहुत निन्दा होती और यहांतक कि फिर वह उस स्थान के काबिल नहीं रहता था और शीघ्रही वहां से उस को हटना पड़ता था—सो हे भाईयों अवगुण यदि एक भी तुम्हारे में होगा और हजार गुण तुम्हारे में होंगे तो एक अवगुण तुम्हारे सारे गुणों को ढकलेगा—सो आज कल संसार में ऐसे पुरुष बहुत हैं जो अवगुण को ग्रहण करते हैं और गुण को ग्रहण नहीं करते हैं जैसे शास्त्र श्रवण में वा स्वाध्याय करने में अथवा धर्म सम्बन्धी वातों में मन जी नहीं लगता और किस्से कहानियों की किताबों में जिन से राग उत्पन्न हो और मोह की उन्नति होवे उन के देखने में ज्यादा मन लगाते हैं—मोह संसार में अति प्रबल वस्तु है—धर्मात्मा, अधर्मी, विद्वान, मूर्ख, सज्जन, कपटी, डाकू, दिलेर, डरपोक, सत्यप्रिय, मिथ्यावादी, शान्ति स्वभाव उपद्रवी, इत्यादि होना यह सारी प्रकृतियें मनुष्य में अपने २ कर्मानुसार होती है लेकिन तौभी मनुष्य जिस बात में कोशिश करना चाहैं उस के माफिक होसक्ता है जैसे यदि उस के चित्त में नेक बनने की अभिलाषा है तो उस को वैसेही उपाय करना चाहिये और वैसेही संगति बैठनी चाहिये मानिन्द इस श्लोक के ॥

कोहि भारः समर्थानां किंदूरं व्यव सायिनाम् । को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥

(अर्थ) साहसी सामर्थ्यवान को कौनसा कार्य भारी है व्यवसायी धर्य्यवान के लिये कौनसा अधिकार दूर है विद्यावान गुणवान के लिये परदेश और स्वदेश क्या है मिष्ट मधुर मित भाषी का कौन पराया है—सो हे भाईयों इस प्रकार नेकनामी के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिये ॥

एक जैनी

परकी भलाई में अपनी भलाई है ॥

यह बात सर्वत्र विदित है कि संसारि जीव सुख को चाहते हैं और दुख से डरते हैं कोई चाहता है मुझको बड़ी पदवी मिले कोई धन चाहता है कोई सन्तान चाहता है कोई चतुर वा पंडित होना चाहता है कोई धर्मोन्नति चाहता है इस तरह सब अपनी २ इच्छानुसार सब चाहते हैं परन्तु इसके प्राप्त करने का

उपाय को विरले ही करते हैं बहुत से जन केवल इसको चाहते २ ही चलंबते हैं केवल अरमान ही लेजाते हैं उनकी चाह पूरी नहीं होती इस चाह के पूर्ण न होने का कारण यह है कि या तो वे उस चाह के पूर्ण करने में असमर्थ थे या वे उसके लिये शक्ति पूर्वक परिश्रम नहीं करते थे या जमाने ने उनका साथ नहीं दिया पस इसही कारण से बहुत से मनुष्य अपनी इच्छा पूर्वक अभिलाषा पूर्ण नहीं करसक्ते परन्तु पश्चाताप किया जाता है उन महाशयों पर जो सामर्थवान हो कर भी केवल परिश्रम के घाटे पर उन्नति वा फल नहीं चखते बहुधा मनुष्य आजकल अपनी ही उन्नति का होना उन्नति समझते हैं दूसरे की उन्नति से उनको क्या प्रयोजन है— चाहैं खासकर उनके ही भाई अवनति सागर में क्यों न डूबे हों क्या उनको यह नहीं मालूम कि जब तक कुलोन्नति जात्योन्नति न होगी तब तक अकेले की उन्नति क्या काम देसक्ती है— इस संसार में हरएक मनुष्य को एक दूसरे की सहायता लेने की आवश्यकता है बिना एक दूसरे की सहायता के यह संसारिक काम भी नहीं चल सक्ता (दृष्टान्त) देखिये इस शरीर के अंगों का कि कैसा मेल झोल है हर एक दूसरे को कैसी सहायता देता है यदि यह अंग आपस में मेल झोल नरक्खें और एक दूसरे को सहायता न देवें तो शरीर के कुल कारखाने नष्ट हो जावें इस पर एक व्याख्यान बाबू सूर्यभानजी वकील ने जैपुर की आगुवेलायुमनी सभा में कहा था— एक दफै शरीर के अंगों में झगड़ा होगया और एक दूसरे को सहायता देने से रुक गये हाथों ने कहा कि हम परिश्रम करैं, यह सब मुफ्त में माल उड़ावें ऐसा विचार कर उदर में रोटी पहुंचाना बन्द करदिया यहां तक कि सर्व अंगों ने अपना २ कार्य करना बन्द करदिया— इसका फल यह हुआ कि वे सब शरीर के अंग दुबले हो गये और उन हाथों से भी कुछ कार्य नहो सका इस कारण ऐ जैनी भाईयों परस्पर की सहायता बिदून किसी कार्य की सिद्धि नहीं होसक्ती— इसलिये आपस में एक दूसरे की उन्नति के लिये अपनी शक्ति पूर्वक परिश्रम व सहायता करनी चाहिये— हरएक जैनी भाई को अपने शरीर के अंग के तुल्य समझना चाहिये देखिये ऐसी समझ से दयानन्द मता वलम्बियों ने कैसी २ देश की उन्नति की है और किस कदर उन्नति कर रहे हैं— महा विद्यालय जारी करते हैं उन में हरएक प्रकार की विद्या वा हुनर सिखाते हैं हर जगह अनाथालय औषधालय और भांति २ के कारखाने और फन्ड जारी कर रक्खे हैं जिससे

सर्व प्रकार की उन्नति होरही है इस उन्नति का कारण आपस में एक दूसरे की सहायता करने ही का है यह सर्व महाशय आपस में मेल रखते हैं और एक दूसरे को सहायता देते हैं तो भला फिर यह उन्नति की शिखिर पर क्यों न चढ़े— और जैनियों का तो हाल आप जानते ही हैं लिखने की आवश्यकता नहीं— आपस की फूट और भेड़ा चाल पुरानी रस्मों का बर्ताव करने इत्यादि कारणों से उन्नति की शिखर से उतर कर अवन्नति के महा घोर सागर में गोता खारहे हैं— और अन्य जातियें अपनी २ उन्नति की कोशिश कर रहीं हैं परन्तु यह जैन जाति अवन्नति ही की कोशिश कर रही हैं और अवन्नति के सागर में डूबने के लिये खूब धन लुटा रही है— रंडी भडवों का नाच कराते हैं लड्डू बरफी उड़ाकर निर्धन व ऋणी बनते हैं और अपनी स्वजाति में खूब लड़ाई कराने में चतुर बनते हैं— अपनी सन्तान का बाल्य विवाह करके उनको मूर्ख रखते हैं बस ऐसे २ निन्दनीक कामों को करके अवन्नति रूपी सागर में डूबा चाहते हैं भंवर तक तो पहुंच ही गये हो यदि अब भी न सम्हलोगे तो आशा है कि अवश्य ही डूब जाओगे अब इस सागर में डूबने की इच्छा रखने वाले भाईयो आप से सविनय प्रार्थना है कि हम थक गये हैं, आप (सामर्थ्यवान स्वार्थी धनाढ्य) के साथ नहीं चला जाता आप के साथ तट तक ही पहुंचने में हम निर्धन हो गये हैं— आप तो आगे को भी चल सकते हैं परन्तु आप को यह योग्य नहीं होगा कि हम जैसे निर्धन हुओं को इस भयानक तट पर छोड़ जावैं और आप बीच सागर में गोता लगावैं— हम को नतो आगे बढ़ने की शक्ति है न पीछे लौटने की शक्ति है इस कारण अपनी दशा और हमारी दशा देखकर तरस खाईये और उन्नति की शिखिर पर पहुंचने की कोशिश कीजिये इस सागर में कुछ आनन्द नहीं है वरन बड़े २ दुख है— हम सारि के थके हुओं को तट से अलग कर दीजिये वरन हमारा कहीं पता न लगेगा— और जो आप गोते खाते २ डूब गये तो फिर नाम निशान ही मिट जावेगा और यह बात जगत प्रसिद्ध है कि मनुष्य गोते खाने वाला कभी न कभी डूबैहीगा— इसलिये तुम अभी से इसमें से निकलने की कोशिश करो और एक दम से उन्नति की शिखिर पर चढ चलो— अब जाति के मुखिया और धनाढ्य पुरुषों को चाहिये कि वे अपनी इस जैन जाति पर तर्स खावैं ॥

जैनी भाईयों का शुभ चिन्तक

पांचूलाल काला

हैड माष्टर स्कूल दौसा

राज्य जैपुर

रिपोर्ट जैन उपदेशक हकीम कल्याणराय

श्रीमान डिप्टी चंपतरायजी जैजिनेंद्र आशाड वदी पंचमी मंगलबार तारीख ३० माह जून को मन्सूरपुर आया और रात्री के समय सभा जुडी और श्रावकों की आवश्यक क्रियाओंका व्याख्यान हुआ और सब साहिबों ने दरशन करने की और शास्त्र सुनने की प्रातिज्ञा लीनी और सभा चतुर्दशी की चतुर्दशी को करनी अंगीकार कीनी अर्थात पाक्षिक सभा करना अंगीकार किया और फिर दूसरी दफे दुपहैर के वक्त शास्त्र जी बांचा कोटला के मंदिरजी में क्योंकि मन्सूरपुर में दो मंदिर एक मोहल्ला कोटिला और एक बजारमें हैं कोटिला के मंदिर में दुपहैर के वक्त शास्त्रजी में सब आदमी आये और सब व्याख्यान हुआ व्याख्यान सुन कर पूजनका इंतजाम किया अर्थात दोनों मंदिरजी में सब भाईयों ने वारे बांधे एक एक वार दो २ आदमी लगाये सब तरह से सबका पूरा २ बन्दोबस्त हुआ परन्तु यहां पर आपस में विरोध था अर्थात दो थोक हो रहे थे सो मैने विरोध मेटने और ऐक्यता होनेका व्याख्यान दिया बुराई भलाई भी दिखलाई और बहुतही समझाया और विरोध को मिटाया अर्थात उन सब भाईयों ने विरोध को दूर कर दिया और सब वरताव बिरादराना करने लगे यानी जो कि भाजी वगैरह का लेना देना बंद था सो सब वरताव करने लगे अर्थात ब्याह सादी गमी वगैरह में जाना आना मंजूर किया और कषाय को दूर करके जैजिनेंद्रादि सब वरताव अच्छी तरह से होने लगे सबने सलूक कर लिया और ब्याह के खर्च वगैरह पर झगडा था वो श्रीमान डिप्टी चंपतराय के लिखे हुये के माफिक वरतना स्वीकार किया सुलह नामा पर भी यही समाचार पर ४ या५मुखियाओं के दस्तखत कराय लिये सो धन्य है मन्सूरपुर के सर्व भाईयों को कि महासभा के कहने को अंगीकार किया और सब ने महासभा का साहित्य समझ कर सभा के कहे को माना और मेरा बाडाही सत्कार किया मन्सूरपुर में दो मंदिर शिखरबद्ध हैं सबै भाई राजी हैं और अब अपने धर्म में सबै भाई तन मन धन से कटिबद्ध हैं और मन्सूरपुर से चल कर विहारी ग्राम में आया और शास्त्र आदिका व्याख्यान दिया तो सब भाईयों ने पूजनका प्रबंध किया और वार बांध लिये और शास्त्र में आने की प्रातिज्ञा ४॥ महिने की ली बडे आनन्द से अपनी इच्छा से विना जोर दिये और साम को सभा की गई तो सभा का करना सब भाईयों ने अंगीकार किया चौदस के चौदस अर्थात एक महिने में दो दफै और सामका वक्त कायम किया और फिर दूसरे दिन दुपहैर के व्याख्यान

में पाठशाला का प्रबन्ध हुआ अर्थात ४) रुपया महिने का चन्दा इकट्ठा करादिया और एक ब्राह्मन पंडित का रखना मंजूर- कर लिया कि आठ या सात दिन में पं- डित बुला कर पाठशाला बिठादि जावैगी और सभा के सभापति उपसभापति भग- वानदास विधीचन्द मंत्री पंडित बख्तावर सिंह कोशाध्यक्ष भी बख्तावर सिंह नियत हुवे धन्य है बिहारी के पुरुषों को कि धर्म के उपदेश को सुन कर उन धर्म के उत्पन्न करने के कारणों को अंगीकार कि या और मंदिर एक है सिकरबंद और यहां के भाई वैसे तो सज्जन है और मेरी भी बहुत बड़ी खातिर कीनी ॥

शास्त्र स्वाध्याय

ज्यों ज्यों सृष्टि में दृष्टि फैलाओगे त्यों त्यों यह स्पष्ट देखते जाओगे कि जि न कामों को हम अति तुच्छ और हलके समझते हैं उन में भी किसी न कि- सी प्रकार के तरीके की आवश्यकता है यहां तक कि मल मूत्रादि के त्याग ने के लिये भी कोई तरीका अमल में लाना प- ड़ता है जब यह बात सिद्ध है कि बड़े से बड़े और छोटे से छोटे काम के लिये क्रम की आवश्यकता है तो इस बात पर ध्यान देना अति आवश्यक है कि धर्म की वृद्धि किन किन कारणों से हो सक्ती है धर्म की वृद्धि होने के बहुत से कारण हैं परन्तु मुख्य कारण शास्त्रजी की स्वा- ध्याय करना ही है सो इस बात पर ह- मारे भाईयों का ध्यान बहुत कम है और इस पंचम काल में सिर्फ शास्त्रों ही के द्वारा धर्म का बोध हो सक्ता है अन्यथा किसी प्रकार नहीं हो सक्ता धर्म ही इस भव और पर भवका सुख दाई है बहुत मनुष्य आज कल इसी बात में अपना ध र्म समझते हैं कि मंदिरजी में दर्शन किये और चल दिये शास्त्र स्वाध्याय वगैरह से कुछ प्रयोजन नहीं तो क्या वे अपने धर्म को अच्छी तरह जान सक्ते हैं कदा- पि नहीं बहुत सी बातें आज कल ऐसी प्रचलित हैं कि जिन बातों में वे लोग ध- र्म समझते हैं उन ही में उन को पाप अ धिक होता है जैसे हमने बहुत से आदमि यों को यह कहते हुए सुना है कि हमारे रात्रि भोजन का त्याग है और जब जाड़े के दिनों की बड़ी बड़ी रात्रि होती हैं उ न में वो लोग सिंगाडे के चून की पूड़िया कर कर के खाते हैं तो कहिये साहब क्या उन को रात्रि भोजन त्यागनेका कु- छ पुन्य बन्ध हो सक्ता है कदापि नहीं बल्कि अधिक पापका बन्ध होगा तो यह मूढता सिर्फ शास्त्र स्वाध्याय न करने ही के कारण से होती है सो हेभाईयों शास्त्र स्वाध्याय ही इस पंचम काल में मुख्य है सो हेभाईयों संसारिक कार्यों से बच कर १ घंटा शास्त्र स्वाध्याय में अवश्य व्यती- त करना चाहिये ॥

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपयाहै

सामाहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१६—२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता०२४ अगस्त ....सन् १८९६ } अङ्क३५

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैन सूप कम्पनीका

पवित्र और सुगंधित साबुन

मेरठ शहर में मंडी के सरगंज के निकट जैनी भाईयों ने एक शिल्प शाला जैन सूप कम्पनी के नाम से श्रीमान पंडित गंगारामजी बैकुंठ वासी की कोठी में उपस्थित किया है ॥ इस शिल्पशाला में उक्त जैनी लोग खालिस नारियल के तेलका साबन अपने हाथ से बनाते हैं और इतनी शुद्धता है कि नौकर भी जैनी के सिवाय और कोई नहीं है पानी छान कर काम में लाते हैं और साबन की टिकिया किसी नीच जाति के मनुष्य को स्पर्श नहीं कराते जब लों वह मोल न लेवे ॥ प्रत्येक प्रकार का साबुन अति उत्तम बनाते हैं ॥ इस शिल्पशाला के उपस्थित करनेवाले उन की यह अभिलाषा है कि जैनी और क्रियावान वैश्य ब्राह्मण इत्यादि इच्छा और आवश्यकता साबुन बरतने की रखते हैं परन्तु धर्म में विघ्न होने के संशय से नहीं बरतते वह इस विचार को टालकर अपनी इच्छा पूर्ण करें ॥ यह कम्पनी निश्चय कराती है और उत्तर दायक होती है कि निस्संदेह हमारे साबुन को बरतिये उस से धर्म में कुछ हानि व विघ्न नहीं पड़ सक्ता परन्तु काम में लाने से पहिले मोहर देखनी चाहिये जिस की रचना यह है ॥

जैन सूप कम्पनी मेरठ

यदि किसी साहिब को कम्पनी के नाम पत्र भेजना हो तो ठिकाना निम्न लिखित शब्दों में लिखना चाहिये ॥

धर्म दास मैनेजर

जैन सूप कम्पनी

मेरठ शहर

नोटिस

सम्पूर्ण सज्जन, परोपकारी महाशयों को विदित हो कि हमने अपने भाईयों को धर्म मे ज्ञात होने के लिये अब के भादव मास के दश लाक्षणी के दिनों में दूसरे दिन जैन गजट निकालने का प्रबन्ध किया है क्योंकि उस समय में सर्व जैनी भाई मंदिर में एकत्र होते हैं इस लिये हम मुखिया और परोपकारी महाशयों से प्रार्थना करते हैं कि उक्त पत्रों को आद्योपान्त अर्थात अव्वल से आखिर तक पढ़ कर सुना देवें उन परचों के मजमूनों की तो क्या प्रशंसा की जावै जिस वक्त आप की सेवा में पहुंचेंगे आप स्वयमेव पढ़ लेवेंगे ॥

पं० धर्मसहायजी उपदेशक का दौरा

पंडित धर्मसहायजी ता० २८ जून को यहां आये सो सर्व भाईयों को इन के आने से तथा दर्शन के करने से बडा आनंद हुआ पंडित धर्मसहायजी ने यहांपर आनकर बडी कोशिश की मैं समझताहूं कि ऐसा परिश्रम किसी भाई से न बनेगा जैसा कि उक्त पंडितजी साहब ने बिरादरी के घर २ जाकर किया और सब तरह समझाया पंडित जी साहब बडे योग्य और धर्मज्ञ हैं (यथा नाम स्तथा गुणः) अर्थात् क्यों नहो जैसा नाम है तैसा गुण है मैं पंडितजी साहब को अंतःकरण से कोटिशः धन्यवाद देताहूं और आशा करताहूं कि इसी तरह की कोशिश हर शहर में करते होंगे और करेंगे पं० धर्मसहायजी ने बिरादरी के झगड़े मेटने को बहुत कुछ चाहा परन्तु अभाग्य हम लोगों का कि उन का सम्पूर्ण परिश्रम निष्फल हुआ फिर उक्त पं० साहब ने मिती आषाढ कृष्ण ७ बृहस्पतवार को मुजिब ता० २ जोलाई सं १८९६ रात्रि के आठ बजे पर बड़ी धूमधाम से ललित वाणी से करीब २ घंटे व्याख्यान दिया उस वक्त सभा सब आनन्ददायकथी और चारोंतरफ से पंडितजी के वास्ते जय २ के धन्यवाद के शब्द सुनाई देते थे पंडितजी ने कोई विषय बाकी नहीं रक्खा था अर्थात सब विषयों को दर्शाया था परन्तु खेद की बात है कि कुछ भी असर हमारे भाईयों के दिलपर न हुआ पं० धर्मसहाय जी की जितनी प्रशंसा कीजाय थोड़ी है धन्य है धन्य है ऐसे पुरुषों को जिन्हों ने ऐसी अवस्था में ऐसा शुभकार्य का भार अपने सिर लिया आगे यहां पर एक पाठशाला भी है सो उसकी रिपोर्ट पंडितजी साहब नीचे लिखे अनुसार लिखते हैं ॥

आज मिती आषाढ कृष्ण ५ को मैं श्रीमज्जैन पाठशाला प्रयाग की में आया और २९ विद्यार्थी उपस्थित थे उस में ६ विद्यार्थी सर्व पूजन रत्नकाण्ड श्रावकाचार—कातंत्ररूप सन्धी पढ़ते और उक्त विद्यार्थी प्रथम कक्षा के हैं तथा कक्षा द्वतीय में पांच विद्यार्थी सर्व पूजन प्रथम सन्धि रत्नकाण्ड श्रावकाचार कक्षा त्रितीय में ९ विद्यार्थी दर्शन पाठ आदि पढते हैं और कक्षा ४ में ९ विद्यार्थी वर्णमातृका पढ़ते हैं मैने परिक्षा ली तो सर्व पाठ उपस्थित है परंतु व्याकरण शिथिल है मैंनें जहांतक बिचार किया तो यही ज्ञात हुआ कि पंडित मुन्नीलालजी साहब अध्यापक बड़ा श्रम करते हैं पंडितजी साहबही की मिहनत का फल

है कि विद्यार्थी जैन मत का कुछ रहस जानगये और पूजन पाठ आदि कर्म करते हैं पाठशाला को देखकर हृदय अत्यंत आनंदित हुआ हर्ष वचन अगोचर है और पढाई का क्रम बम्बई अनुसार है और प्रबन्धकर्त्ता बाबू सालिगरामजी उपमंत्री विशेष उद्यम करते हैं यह पाठशाला उक्त उपमंत्री साहब के प्रसाद से स्थित है कारण कि इस शहर में विरोध होने से चंदा भी आधे भाई देते हैं यह बात देखकर हम को महान खेद हुआ कि बिरादरी के विरोध से धर्म कार्य में विघ्न कर रक्खा है अब हम भाई सालिगरामजी उपमंत्री वा पंडित मुन्नालालजी जैनी को अन्तःकरण से कोटिशः धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि उक्त महाशयों के प्रताप से प्रति दिन उन्नति होगी ॥ अलमितिविस्तरेण ॥

आषाढ कृष्ण ९ भौमवार सं १९५३

नोट—हमने इलाहाबाद के भाईयों के ऐक्य करने के विषय में बहुत कोशिस की परन्तु नतीजा यही निकला के बड़े आदमियों का धन तो वैरविरोध के झगड़ों मेंही खर्च होने के वास्ते है धर्म कार्य के वास्ते नहीं है और बहाना भी इस से खूब मिलता है यह कहदेते हैं कि भाई हमारे यहां तो ऐक्यता नहीं है इस वास्ते हम कुछ कर नहीं सक्के ऐसे भाईयों का जरूर २ खयाल होगा कि महासभा के मंत्रियों के पास रुपैया बनाने की कल होगी जिस के द्वारा बना २ कर काम करते होंगे ॥

डिप्टी चम्पतराय

उद्यापन अटेर

लाला सालिगरामजी साहब इलाहाबाद से लिखते हैं कि एक पत्र अटेर की मिथ्यात्वविनाशनी सभा की ओर से मेरे पास आया है उस में यह लिखा है कि यहां से अर्थात अटेर से दो कोस आगरे के जिले में नदिगवां एक प्राचीन वस्ती है लवेंचू भाई श्रावकों के अनुमान ५० घर हैं मंदिर एक शिखरबन्द अति उत्तम है सो वहांपर लाला हीरालाल रपरिया ने उद्यापन ज्येष्ठ सुदी १२ को कराया था और रथादि सवारी निकालने का विचार था सो पानी बरसने के तथा हुकम सरकारी न मिलने के कारणों से रथ तो नहीं निकला परन्तु पाठ पूजन आदि बड़े उत्सव से हुआ अटेर के सम्पूर्ण जैनी भाई पधारे थे बड़ा आनन्द रहा उक्त महाशय ने १११) रु० श्री मंदिरजी को दिये और ५) रुपये पाठशाला को दिये—अटेर की सभा ने एक बडा उपकार किया कि नन्दगवां में दो थोक थे सो उन भाईयों में मेल कराकर एक थोक करादिया यहांपर पाठशाला नहीं थी सो कराई गई और सभा भी नहीं थी सोभी नियत होगई और मैंने एक लेख जिनवाणी के ऊपर भेजा था सो सब भाईयों को सुनाया गया सो बड़ा आनन्द रहा ॥

रायपुर

प्रगट हो कि यह नगर रायपुर नवीन बसा हुआ है और सर्कार अंग्रेजी ही के समय में यह अधिक उन्नति पर होता जाता है इसी कारण यहां पर कोई प्राचीन जैन मंदिरजी भी नहीं है— यहां जैनी भाईयों के अनुमान १५ या १६ घर होंगे अब तक यहां दो चैत्याले ही थे परन्तु वर्तमान समय में भाई मुन्शीलालजी अगरवाल क प्रयत्न से जो एक धर्मात्मा पुरुष हैं एक सिखिर बन्द मंदिर तैयार होगया है केवल थोडी चूने की छाप बाकी रह गई है— उस में व्यतीत चौदस के दिवस श्रीजी भी पधरा दिये गये— परन्तु बडे खेद की बात यह है कि यहां के भाईयों का ध्यान धर्म की ओर कम पाया जाता है यहां तक कि एक भाई अगर वाल जिन का नाम अभी में प्रगट करना उचित नहीं समझता अन्य मत की ओर अधिक ध्यान देने लगे हैं और शास्त्रजी के बांचने का तो यहां कोई प्रबन्ध ही नहीं है ये सब दोष काल के प्रभाव और अविद्या के कारण से हो रहे हैं इस लिये यहा एक उपदेशक महाशय के आने की अति आवश्यकता जान पडती है— पंडित भगवानदासजी उपदेशक गढा कोटा (जो इसी प्रदेश में है) निवासी अवकाश पाकर यहां भी कृपा करैं तो यहां के जैनी भाईयों का भी बडा उप कार हो ॥

बिहारीलाल डिप्टी इंसपेक्टर
रायपुर

चिट्ठी

बहरायच में ९ घर श्रावक तेरा पंथी के हैं आपस में मेल नहीं है इर्षा भाव ज्यादा है पूजा प्रक्षालनका नित्य प्रति अच्छा बन्दोबस्त है एक छोटा पंचायती कदीम का मंदिर शिकस्त था मगर सर्व भाईयों ने आपस में सम्मति करके उसी में नये सीरे से वेदी पक्की तयार कराने का काम जारी होगया था करीब १००) रुपैके भंडारमें जमा होगा इसके प्रबंध कर्ता लाला शंभूलाल साहिब सज्जन पुरुष धर्मज्ञ हुये हैं उम्मेद है की काम अंजाम को बहुत खूबी के साथ पूरा हो जावेगा कोई पाठशाला व सभा नहीं है ॥

भक्ष अभक्ष का विचार बहुत कम रहगया है और बाजे तमाकू भी पीने लगे हैं मगर महिफिल में अभी तक धर्मवान महाशयों की वजेह से लिहाज रखते हैं उस को ग्रहण नहीं करते हैं प्रिय भ्रातृगणों कृपा कर विचार करिये कि हर एक को खुद मुख्तारी जरूर है पंच व मजहबी डंडका किसी को अब खौफ नहीं रहा है गुमराही वा कुमार्गी के वास्ते विना धर्म के कोई सहायक नहीं हैं ॥

॥ श्लोक ॥ धर्म एवहतो हन्ती धर्मो रक्षति रक्षितः ।तस्मा द्धर्मोनहन्तव्यो मान

धर्म हतो वधीत ॥

धर्म समान नहीं जग में या जीव को कोई सहायक भारी, धर्म सहाय करै नरकी नहिं पुत्र न मित्र न बन्धु न नारी॥ संसार में धर्म उद्धार करै अरु धर्म ही दे पर लोक सम्हारी। ए प्रिय कान धरो सिख येह कबहूं सुख होय न धर्म बिसारी ॥ १ ॥

श्लोक ॥ चला लक्ष्मीश्चला प्राणाश्च केले जीवति मंदिरे ॥ चलाचलेच संसारे धर्म एकोहि निश्चलः ॥

दोहा ॥ चल लक्ष्मी औ प्राण हूं और जीविका धाम। यहु चलाचल जगत में अचल धर्म अभिराम ॥ २ ॥

श्लोक ॥ एक एव सुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेण समन्नाशं सर्व मन्यद्धि गच्छति ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः। नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्म संग्रहः ॥

सोरठा ॥ है अनित्य यह देह बिभव सदा नाहीं सुथिर निकट ॥ मृत्यु नित येह चाहिय कीन्ह संग्रह धरम ॥ ४ ॥

श्लोक ॥ सत्य माता पिता ज्ञान धर्मो भ्राता दया सखा। शांतिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडे ते मम बांधवाः ॥

दोहा ॥ सत्य मातु पितु ज्ञान सखा दया भ्राता धरम ॥ तिया शांति सुतमान क्षमा यही षट् बन्धुमम ॥ ५ ॥

हे प्रिय सज्जन पुरुषो अपने सनातन धर्म को बिचार कर कुमार्गी व गुमराही को जरूर ही परित्याग करैंगे इस जैन मजहब में नई उन्नति के मनुष्यों में विद्याका अभाव बहुत हो गया है और ज्याती फजूल खर्ची दुनियावी कामो के और भी होता जाता है यहां तक कि लड़कों को बहुत कम पढाते हैं यदि किसी से सनातन धर्मका व्यख्यान पूछा जावैं तो बहुत कम जानतेहैं सिर्फ जैन धर्म की लीकपीटते चले जाते हैं इस लिये जैनी भाईयों को चाहिये कि अपने बालकों को धर्म विद्या की रुचि दिलावैं ॥

जैनियोंका शुभ चिन्तक
नानकराम कोषाध्यक्ष
रियासत मल्लापुर
जिला सीतापुर

धन

जिन लोगों को अपनी बुद्धि से काम लेने का अभ्यास है उनके सामने इस बात को अधिक प्रमाणों से पुष्ट करनेकी आवश्यकता नहीं कि प्रत्येक काम को यथावत पूरा करने के लिये किन २ क्रम वा नियमों की परम आवश्यकता है क्यों कि यह नित्य की कार्यवाही से बिलकुल प्रत्यक्ष है कि बैठने, उठने, खाने, पीने, न्हाने, सोने, पढ़ने, पढाने, बोलने और सुनने आदि को क्रम पूर्वक किया जावै

तो मनुष्य बुद्धिवान गिना जाता है और जो इन्हीं चेष्टाओं को नियम विरुद्ध किया जाय तो तत्काल गंवारों में गिनती होने लगती है— इसी तरह धन व्यय करने को भी बुद्धि की आवश्यकता है आजकल संसार में धनही बड़ा गिना जाता है मनुष्य कैसा ही बुद्धिवान क्यों नहोवे तौ भी संसारिक पुरुष उसकी निन्दा ही करते हैं परन्तु जो विद्वान हैं वोह प्रशन्सा करते हैं— धन सन्सार में एक उत्तम पदार्थ गिना जाता है— सो हमारे जैनी भाई धन को वृथा ही खो देते हैं किंचित मात्र भी प्रतिष्ठा नहीं करते— सुना जाता है कि आज अमुक स्थान के भाई ने इतना रुपया विवाह में लगाया आज अमुक भाई ने इतना रुपया तेरमोंमें लगाया कहिये साहब क्या भलाई का कार्य होसक्ता है अथवा कोई परोपकारता हो सक्ती है— (चार दिना की चान्दनी फेर अन्धेरी रात) अर्थात् लौकिक प्रशन्सा चार दिन हीं रहसकती है फिर क्या और यदि इतने रुपये को बुद्धिमानी के साथ खर्च किया जावे तो लौकिक प्रशन्सा और परमार्थ यानी परोपकारता दोनों का पात्र होवे और परलोक भी सुधरे परन्तु बुद्धिवान ही बुद्धिवानी से धन को व्यय कर सकता है मूर्ख क्या करेगा— हाय २ इस तरह धन को व्यय होते देखकर हमारा कलेजा फटा जाता है हृदय विदीर्ण हुआ जाता है परन्तु क्या करैं हमारे जैनी भाई ऐसे अचेत हो रहे हैं कि बुद्धिवानी और अज्ञानता को बिल्कुल नहीं विचारते और लाखों रुपया वृथा लुटा देते हैं यदि किञ्चित मात्र भी बुद्धिवानी को अपने हृदय में जगह देते तो क्या एक जैन कालिज जिसके वास्ते १० लक्ष रुपये की आवश्यकता है अब तक नहीं बन गया होता अवश्यही बना होता— खैर जो कुछ हुआ सो हुआ— मानिन्द इस (दोहे के) बीती ताहि बिसारदे आगे की सुधिलेय। जो बन आवै सहज में ताही में चितदेय ॥ हे भाईयो जो बात बीत गई उसका पछितावा न कीजिये अब आगे के लिये उपाय करना चाहिये और अब भी आप लोगों के सोचने से सब कुछ होसक्ता है देखिये हमारी जाति में ऐसे २ धनाढ्य पड़े हैं यदि वे चाहें तो आज ही जैन कालिज बन सक्ता है और एकही धनाढ्य पुरुष बनवा सक्ता है सो हे भाईयो अज्ञान तिमिर को दूर करके बुद्धि को काम में लाओ और जैन कालिज बनाने की कोशिश करो— और ऐसे वृथा कामों को जिन में वृथा धन व्यय होता है बिल्कुल चित से त्यागदो ॥ जैसें; किसी बुद्धिवान ने श्लोक कहा है ॥

कौर्म सङ्कोच मास्थाय। प्रहार मपि मर्षयेत्। प्राप्त कालेषु नीतिज्ञ उत्तिष्ठेत्

क्रूर सर्प्प वत् ॥

(अर्थ) जिस दुष्ट शत्रु ने अपना देश, अधिकार प्रतिष्ठा बल धन हर लिया हो, नीतिज्ञ को चाहिये उसके संग कछुवे के समान सिकुडा हुआ सरल रीति से व्यवहार करे, प्रहार वा ताडना निन्दा भी सहता जावे परन्तु छेद भेद में लगा हुआ समय पाकर विषैले सर्प के समान ऐसा डंक मारे कि जिसमें वैरी निर्मूल ही होजाय इसी को राज नीति कहते हैं ॥ सो हे भाईयो इस अज्ञानता ने हमारे सर्व धर्म के काय रोक रक्खे हैं इसको दूर कर बुद्धिवानी को काम में लाओ देखो खेती करना, व्यौपार करना कपडा सीना, कपडा, बिनना लकडी और लोहे से काम लेना इत्यादि हजारों काम हैं जो नियमं पूर्वक किये जाने पर लाभकारी होते हैं और बिना नियम के वेही सब काम उल्टे हानि और दुख के मूल होकर शूल की न्याई हृदय को बींधने वाले होजाते हैं इसी तरह धन का भी यही लेखा है जैसे किसी विद्वान ने श्लोक कहा है ॥

यस्यार्थं स्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बान्धवाः। यस्यार्थः सपुमाँल्लोके यस्यार्थः सच पण्डितः ॥

(अर्थ) लोक में जिसके पास धन है उसी के मित्र भी हैं उसी के सब भाई सहायक हैं वही पराक्रमी गिना जाता है वही चतुर कहाता है ।, सारंश यह है कि लौकिक के सब सुखों का आदि कारण धन ही है इसको रांड, भांड, नाच, रंग आतिशबाजी, तमाशबीनी जूआ व्यभिचार आदि दुष्कर्मों में नहीं खोना चाहिये जिसने धन को वृथा गंवाया उसने अपयश पाप कमाया धन पास है तो नर है नहीं तो बिन पूछ खर है ।

एक जनी

जूवा का त्याग

आगे भाई साहब हाल में मेरे पास एक पत्र अटेर की मिथ्यात्वविनाशनी सभा की तर्फ से आया है कि छठवीं सभा आषाढ वदी १४ की रात्रि को हुई उस वक्त अनुमान ८० पुरुष व स्त्री मोजूद थे अब की सभा के वास्ते मैंने जूवा के वास्ते और मिथ्यात्व सेवन के वास्ते उपदेश भेजा था सो सब साहबों ने सुनकर बडा आनन्द माना और तत्काल नीचे लिखित भाईयों ने जूआ की प्रतिज्ञा जनम परजन्त के वास्ते ली सो मालूम करना ॥

लाला मिट्ठूलाल चंदेरिआ गोंडावाले
ला० प्यारेलाल रपरीआ बटेसुरवाले
ला० उदेराज वकेवरीआ
ला० मनीराम चंदेरिआ
ला० चतुरभुज " "
ला० बद्रीप्रसाद " "
ला० चोखेलाल " "

ला० जानकीप्रसाद पंचोलिआ
ला० मनीराम रपरिआ
ला० उदेराज
ला० उदेराज संघई

धन्य है अटेर की सभा को जो मुझ तुच्छ बुद्धि के उपदेश पर इतना श्रमकार्य किया कि सप्त बिसनों का सर्दार जो जूआ ताहि को जीतलिया

शालिगराम जैन
मुख्य प्रबन्धकर्त्ता
मिथ्यात्व विनाशनी सभा
अटेर

धर्मोपदेशनी जैन सभा धूलियागंज आगरा

में अत्यंत हर्ष के साथ प्रगट करता हूं कि इस सभा का अन्तरङ्ग समागम मिती आषाढ वदी १५ शुक्रवार को रात्रि के समय हुआ जिस में श्रीयुत भाई मुन्नीलालजी नें ऐक्यता के विषय में बहुत उत्तम व्याख्यान दिया प्रथम तो अनैक्यता से जो २ जैन जाति की अवनति होरही है वर्णन करी और अनैक्यतासे ही लौकिक और परमार्थिक सर्व कार्य नष्ट होरहे हैं इस को दृष्टांत से सिद्ध करि २ कें पश्चात वात्सल्य धर्म के गुण वर्णन किये सम्पूर्ण धर्म के अङ्गों में यह वात्सल्य धर्म प्रधान है इस को बहुत उत्तम रीति से सिद्ध किया फिर अन्त में यह प्रेरणा करी कि हे सहधर्मियों अब इस अनैक्यता को हृदय से निकालकर वात्सल्य धर्म को अंगीकार करो यहही जैन जाति की उन्नति का मार्ग है तिस कारण से हे सहधर्मियों जबतक इस वात्सल्य धर्म का धारण नहीं होगा तबतक जैन जाति की उन्नति कदापि नहीं होसक्ती ऐसा वर्णन भाई मुन्नीलाल ने किया पश्चात भाई पूरनमलजी नें हीन आचरण के विषय में थोड़ासा व्याख्यान दिया तत् पश्चात मैंने उक्त दोनों भाई साहबों को धन्यवाद देकें वात्सल्य धर्मही का विशेष वर्णन करिकें सभा विसर्जन करी

चिरंजीलाल सभापती

निवेदन

फर्रुख नगर जिला गुड़गांव में जो नवीन छोटासा जैन मंदिर पंडित जियालाल ने बनवायाहै उसका कुल व्यय उक्त महाशय अपने ही पास से उठाते हैं और मंदिर के पासही एक पाठशाला भी स्थापित की है उस में शास्त्री हिन्दी दोनों विद्या पढाने वाला पंडित नियत किया गया है और जो कोई प्राणी ज्योतिष विद्या पढना चाहे उस को उक्त पंडितजी स्वतः पढाने को राजी हैं कुछ फीस नहीं लगती है और पाठशाला में निम्न लिखित दवाई बिना दाम बांटी जाती हैं जिनको आवश्यकता हो मंगाले— आखोंका अंजन, ज्वर

की गोली- तापतिल्ली की दवा—खांसी की गोली, दर्द का चूरन, हैजे की दवाई ॥

रंडी भड़वोंका नाच

पिछले अंक में हमने मजमून वेश्या नृत्य की बुराई में लिखा था परन्तु यह कार्य ऐसा खोटा और दुख दाई है कि इस के ऊपर जितना लिखा जावे थोड़ा है ॥ भाईयों आपने सुना होगा कि जिला अंबाला मुल्क पंजाब में मिस्टर ग्लेडस्टोन डिप्टी कमिश्नर की कोशिश से रंडी भडवोंका नाच विवाह आदि में बन्द हो गया उसका फल यह हुवा है कि बहुत सी रंडियों ने निकाह करा लिया और वेश्या कर्म को छोड़ दिया है और बहुत सी उस जिले से भाग गई हैं ॥ यदि जिला अंबाला में रंडी के नाच बन्द करने के स्थान में यह आज्ञा सर्कार की होती कि प्रत्येक मनुष्य अवश्य २५ रंडी विवाह में नचाया करे तो इसका फल यह होता कि दूर २ देश से रंडीयें आकर जिला अंबाला में इकट्ठी हो जाती और बहुत सी स्त्री रंडी होना स्वीकार करती ॥ यह बात सब जगह देख ने में आती है कि जिस काम में प्राप्ती अधिक होती है उस काम को सब लोग करनें लगा करते हैं ॥ इस ही हेतु से विवाह आदि शुभ कार्यों में रंडी की ऐसी आवश्यका होने के कारण जैसी फैरों की रंडीयों को बहुत प्राप्ती होने लगी है और अब यह पैसा बहुत सुख और लाभ का हो गया है इस ही सबब से रंडीयों की गिणती भारत वर्ष में बहुत बढ गई है और बढती जाती है ॥ रंडियों की उन्नति से जगत को जो नुकसान हुवा है जो जो पाप फैला है उस को सब जानते हैं ॥ परन्तु विचार ने की यह बात है कि इस पाप का अपराधी कौन है ॥ इसका उत्तर यह ही मिलैगा कि अपराधी वह पुरुष हैं जो रंडियों को नचा कर और धन देकर उन के उत्साह को बढाते हैं ॥ भाईयों विवाह दिक में केवल नाच कराने वाला ही अपराधी नहीं है बल्कि वह बराती भी अपराधी हैं जो नाच के समय रंडी को भेट चढाते हैं ॥ बडी लज्जा की बात है कि सारी आयु भर बड़ा भारी कष्ट उठा कर किसी २ की आधीनताई करके और लाखों बेई मानी दगाबाजी आदि से रुपया उपार्जन किया जावे और वह द्रव्य जिस की रखवाली में अपने प्राण भी देने स्वीकार होते हैं उसको न खाने में लगाते हैं न पहरने में और न आराम में न धर्म में परन्तु बडे हर्ष के साथ संसार और पर्मार्थ की दुश्मन अपनी संतान और बन्धु जनों को पाप में डुबाने वाली वेश्या

ओं को देते हैं ॥ क्या रुपये के फेंक देने के वास्ते कोई कूवा या गढा या नदी नाला नहीं मिलता क्योंकि इस प्रकार रुपये के फेंकदेने से पाप तो जगत में न फैले ॥ हाय हमारी समझ में तो जो लोग वेश्या के नाच में अपना धन लगाना चाहते हैं उन का धन चोर लेजावें तो अच्छा है ॥ हे भाईयो इस महा पाप से हमारा हृदय कांपता है और हम को बडा भारी शोक होता है कि घरों में हमारी प्यारी स्त्रियें तो फटा पुराना पहनकर और रूखा सूखा खाकर और बर्तन मांज २ कर चौका चूल्हा करती हुई और चर्खा कातती और चकी पीसती हुई दिन व्यतीत करैं और यह रंडीयें हमारी इज्जत और प्रतिष्ठा की दुश्मन हमारे धन और विभव को नाश करने वाली जवान पुरुषों को बिगाड़ने वाली निर्भागनी कुलटा हमारेही द्रव्य से ऐसी २ ऐश उडावैं कि अच्छे २ अमीरों को ऐसा सुख नसीब नहीं होता ॥ मैंने निर्भागनी का शब्द इन के वास्ते असत्य कहा क्यौंकि निर्भाग्य तो हम हैं कि बड़े २ कष्ट से धन उपार्जन करते हैं परन्तु खाने को टुकड़ा और पहने को कपड़ा नसीब नहीं होता है कंगालों की तरह हम आयु पूर्ण करते हैं और यह वेश्या तो सब से ज्यादा भाग्यवान है जिन के वास्ते हम कमाते हैं और विवाह आदि के समय इन को देदेते हैं ॥ हाय हाय यह दुष्ट वेश्या आज हम से नाच में रुपयों का पछा भरवाकर लेजाती हैं और कल को उसही रुपये से गाय बकरी को वध कराकर मांस खाती हैं और शराब पीती हैं और चाल बताकर हमारे जवान भाईयों को अपने फन्दे में फसाती हैं और उन की स्त्रियों तक का जेवर निकलवाकर मंगालेती हैं खयाल की बात है कि दो चार रात नाच कराकर जो इतना धन हमारे भाई ऐसी कुलटा स्त्री के हवाले करते हैं और पाप मोल लेते हैं वह क्या लाभ उठाते हैं ॥ कोई २ अल्प बुद्धि यह कहते हैं कि विवाह में रंडी के बिना कमीनों की तरह बैठना बुद्धिमानी नहीं है ॥ धन्य है ऐसी बुद्धि को क्योंकि किंचित विचारिये कि छोटे बडे बाप बेटा सब भाईयों का सभा लगाकर बैठना और उस सभा में कुलटा स्त्री को बुलाकर नाच कराना और सब का उसपर कुदृष्टि करना और हंसी ठट्ठा करना क्या भले आदमियों का काम है या कमीनों का काम है ॥ मेरी समझ में तो कमीने आदमी भी इस कार्य को बुरा समझते होंगें ॥ हे भाईयों जबतक आप की सभा में कुलटा स्त्री का प्रवेश

होता है तबतक आप उज्जल जाति के मनुष्य नहीं होसके हो॥ सच पूछिये तो यदि आप को रौनक और शोभा काही अधिक शौक है तो नाच की शोभा तो शराब का दौर चलने से होती है इस कारण उस का भी प्रचार देना चाहिये क्योंकि आप को तो शोभा चाहिये उचित अन उचित का तो आप को कुछ विचार है ही नहीं ॥ नहीं २ आपने सुना होगा अंगरेजों के नाच में बहुतही ज्यादा रौनक होती है क्यों कि उन की बहू बेटियां उन के साथ मिलकर नाचती हैं इस कारण जिन लोगों को जोग अजोग का विचार नहीं है जो केवल शोभा केही अर्थी हैं वह तो मेरी समझ में अंगरेजी रीति को भी पसन्द करेंगे और इस को भी कर दिखावेंगे ॥ कोई २ भाई यह पूछते हैं कि बरात में समय व्यतीत करने का भी तो कुछ कारण अवश्य चाहिये ॥ इस का उत्तर यह है कि बरात में नाच तीन समय होता है ॥ प्रथम बाग में जो दोपहर के पीछे २ बजे से ४ बजे तक होता है इस समय सब बराती सफर से हारे थके होते हैं और अपने ठहरने की तलाश में होते हैं इस कारण लाचारी से नाच में बैठते हैं ॥ फिर दूसरे दिन १२ बजे दोपहर से ४ बजे तक नाच होता है ॥ देखिये खाना खाने के पश्चात दो पहर का समय सोने का और आराम करने का होता है परन्तु यह नाच कुछ नहीं करने देता है इस के सिवाय जिस जगह बरात जाती है वहां के मित्र रिश्तेदार आदि से मिलने का भी यहही समय होता है परन्तु सब काम छोड़कर मजबूरी नाच में जाना पड़ता है ॥ फिर रात को आधीरात से नाच प्रारम्भ होकर सुबह तक होता है भाईयों यह काल सोने और आराम करने का होता है या दिल बहलाने का ॥ रात के समय सोते हुवे बरातियों को जगा कर जिस कष्ट से नाच में लाया जाता है वह सब जानते हैं फिर विचारिये नाच खाली समय व्यतीत करने का कारण होता है या कष्ट का हेतु ॥ इस के सिवाय जिस २ नगर में नाच बन्द होगया है वहां के भाई विवाह में सभा करते हैं और धर्म चर्चा कर आनन्द करते हैं ॥ इस कारण हे भाईयो इस दुष्ट रंडी के नाच को अपनी उत्तम जाति से अवश्य निकालो ॥

जैन महा विद्यालय भंडारऔर मेरी और एक कायस्थ ओहदेदार की बात चीत

ओहदेदार— क्यों भाई साहब आज कल तो आप सभाओं के कार्य में रात्रि

दिवस लगे रहते हैं मित्रों से मिलना झु-लना तक छोड़दिया है यहां तक कि शाम की हवाखोरी भी बन्द करदी है क्या आप किसी सभा के मन्त्री हैं ?

मैं— हां भाई आज मैं जैन महा सभा मथुरा का मन्त्री हूं और अपने कार्य का शेष समय इसी कार्य में व्यतीत करता हूं इस वास्ते मुझे सावकाश कम मिलता है ॥

ओहदे०— क्या आपको इस कार्य करने के वास्ते महा सभा से कोई मोहर्रीर नहीं मिला ? और आप तो अग्रवाल हैं क्या अग्रवाल भी जैनी होते हैं ? और जैनी और सरावगी एकही बात है या पृथक २ और यदि पृथक २ होते हैं तो उनमें क्या २ भेद हैं ॥

मैं— बिलाशक मैं अग्रवाल हूं परन्तु धर्म मेरा जैन है और भी हजारों अग्रवाल जैनी हैं श्रावक या सरावगी या जैनी इन शब्दों के एकही अर्थ हैं और जैन एक धर्म है हरएक जाति का मनुष्य इस धर्म में होसक्ता है हां यह बात जरूर रिवाज पागई है कि खंडेलवाल आदि भाई तो श्रावक कहलाते हैं और अग्रवाल जैनी कहलाते हैं परन्तु भेद कुछ भी नहीं है— और हमारी सभा में धन नहीं इस वास्ते मुझ को कोई मोहर्रिर नहीं मिला है वैसेही सब कार्य चला जाता है ॥

ओहदेदार— भाई साहब मैंने ऐसा सुना था कि जैनी लोग अपने शास्त्र अन्य लोगों को नहीं दिखलाते हैं । फिर दूसरी जाति वाले जैनी किस प्रकार हो सक्ते हैं बल्कि बहुत से जैनी भी अपने धर्म के असूलों से वाकिफ नहीं होते जब उनसे पूछा जाता है तो यही जवाब देते हैं कि हम तो वाकिफ नहीं हैं ॥

मैं— नहीं यह बात गलत है कि हम शास्त्र अन्य लोगों को नहीं दिखलाते । हमारे मन्दिरों में सरस्वती भंडार रहते हैं और वहां नियम पूर्वक दोनों वक्त शास्त्रजी की सभा लगती है किसी को सुनने तथा शास्त्र पढने की मनाही नहीं है— हां अलबत्ता हम अपने शास्त्रों की बहुत बडी विनय करते हैं— हमारे यहां कायस्थ जैनियों के भी ग्रन्थ बनाये हुए मौजूद हैं यहां और अलीगढ फिरोजाबाद में अनेक छीपी— इलाके सिन्ध में जाट गूजर और मारवाड़ में राजपूत और दक्षिण में सैकडों ब्राह्मण जैन मत के धारी अब भी मौजूद हैं ॥

ओहदे०— आपने मेरा बडा भारी भ्रम दूर किया मैं आप को धन्यवाद देता हूं— मालूम होता है कि जैनियों के विषय में जिन लोगों ने तरह २ के दूषण लगाकर उनको बदनाम कर रक्खा है वह सब मूर्खों और पक्ष पातियों के काम हैं मेरे खयाल में तो जिन असूलों पर

जैनी लोग सनातन से चले आते हैं वोही असूल अब नई रोशनी के आर्य समाजी और हमारे भाई कायस्थ शुरू करते जाते हैं— मैं पक्षपाती नहीं हूं मैं ने एक दो वार आप के मन्दिरों में भी जाकर देखा है तो वहां पर बडी सफाई के साथ में पूजा होती थी और मन्दिरों की तो जैसा शोभा होती है वैसी किसी मतवालों के मन्दिरों में मैंने नहीं देखी और भगवान की मूर्तियों के दर्शन करने से वैराग्यता दिल में उत्पन्न होती है हां मैंने अखबारों में देखा है कि जैनी लोगों ने कई लाख रुपया जैन कालिज बनाने के वास्ते इकठा करलिया है— और मथुरा के मशहूर सेठ साहब भी उसमें शामिल हैं— आप तो उसके मन्त्री ही हैं आप को तो उसका हाल खूब ही मालूम होगा क्या यह बात सत्य है ॥

मैं— बडे खेद की बात है कि महाविद्यालय के वास्ते जैनियों में बहुत दिनों से बडे २ आदमी कोशिश कर रहे हैं परन्तु अभी तक दस हजार भी जमा नहीं हुआ है— हां जिन २ लोगोंने चन्दा देने के वास्ते इकरार किया है उस सब की तादाद शायद पच्चीस हजार तक सुनी जाती है परन्तु मुझे ठीक हाल मालूम नहीं है ॥

ओहदे०— मैं खयाल करता हूं कि दस हजार की बात शायद ठीक नहीं है क्योंकि हमारी जाति जैनियों के बराबर धनाढ्य नहीं है तो भी हजारों रुपये तो हरसाल कान्फ्रेन्स में खर्च करती है और सैकडों सभाएं स्थापित हैं उन सब में भी रुपया जमा रहता है विवाह आदि शुभ कार्यों में सभाओं के हक नियत हैं कई प्रकार के भंडार खुले हुए हैं बेवा औरतों और यतीम बालकों की रक्षा व पर्वरिश की जाती है सैंकडों विद्यार्थियों की छात्र वृत से मदद की जाती है और कायस्थ कुल भूषण मुन्शी काली प्रसाद ने छः लाख रुपया कायस्थ पाठशाला के वास्ते देदिया है जिससे इलाहाबाद में एक स्कूल कायस्थ पाठशाला के नाम से खुल गया है और उसमें ऐफ. ए. तक अलावह संस्कृत के अंग्रेजी शिक्षा भी जारी होगई है— आर्या समाजी भी मेरी राय में जैनियों के बराबर धनाढ्य नहीं हैं और न जैनियों के बराबर उनकी संख्या है उन्होंने भी लाहौर में कालिज बना लिया है और भी बडे २ कार्य कियेहैं अनाथालय और कन्या पाठशाला आदि परोपकारता के काम जारी कर रक्खे हैं और बहुत द्रव्य उन में प्रति वर्ष एकत्र होता रहता है सो दस हजार एक छोटासा जैनी दे सक्ता है मेरे ख्याल में तो आप या अन्य जैनी लोग रुपया एकत्र करने की कोई फिक्र नहीं करते होंगे क्योंकि मैंने हाल ही में सुना है कि एक

अजमेर के सेठ साहब ने जैपुर में कई लाख रुपया लगाकर मेला कराया था क्या ऐसे महाशय महा विद्यालय का स्थापित होना आवश्यक नहीं जानते हैं ॥

मैं—आप जो कहते हैं सो सब सत्य है परन्तु हमारी जाति में प्रथम तो जैसे आप साहबान और आर्यसमाजियों में जाति हितैषी और परोपकारी पुरुष हैं वैसे नहीं हैं दूसरे ऐक्यता नहीं है और सब से बड़ा कारण तो यह है कि हमारे भाईयों में अभीतक महा विद्यालय के स्थापित होने का आप साहबों कैसा उत्साह भी उत्पन्न नहीं हुआ है और न धनाढ्य महाशयों ने इस की आवश्यक्ता को जाना है अभी तो विवाह और मृतक संसकार आदि के खर्च से हमारी जाति को सावकाश नहीं मिलता है—आर्यसमाजी और आप साहब विवाह आदि कार्यों में से बचाकर विद्या दान में खर्च करते हैं—जैसे कि हाल में एक महाशय ने ६०००) रुपये और एक ने १६००) रुपये अपने पुत्रों की शादियों में दयानन्द कालिज को दान दिया है और उन की कीर्ति अखबारों में फैलरही है—मैंने अपने भाईयों के उत्साह के माफिक तीन चार रीतें प्रथम सीधी २ प्रचलित की हैं कि जिस से थोड़ा २ सा धन एकत्र होचले और लोगों को मालूम भी नहीं पड़े परन्तु अफसोस है कि उस में भी कामयाबी होनी मुशकिल मालूम होती है ॥

ओहदे०—वह कौन २ रीति आप ने निकाली हैं मुझे भी तो बतला दीजियेगा ॥

मैं—प्रथम एक २ मास की आमदनी जैनी भाई देवैं—दूसरे फरपीछे एक २ रुपया हर एक जैनी भाई देवैं तीसरे सालभर में कम से कम प्रति जीव जैनी भाई मन्दिरों में गोलक रखकर एक पैसा उस में डाला करैं और जिसका जी चाहै ज्यादा डालें परन्तु पैसे से कम नहीं डालैं अब आप बताईये इन से आसान रीति और कौनसी होसकी है और यह भी रिवाज जारी है कि यथा शक्ति अपने २ यहां से चिट्ठाकर के भी रुपया देसके हैं ॥

ओहदे०—आप की सभा ने रीतें तो बहुतही सोचकर जारी की हैं क्यों कि लाखों घर जैनियों के होंगे एक २ रुपयेही से लाखों रुपया एकत्र होसक्ता है—आप की सभा यदि कोशिश करती रही तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी यह कायदे की बात है कि सहज २ सर्व कार्य हुआ करते हैं अभी आप की जाति भ्रमजाल में पड़ीहुई है—जमाने की चाल से बहुत पीछे है जब तुम्हारे धनाढ्य महाशय इस तरफ

ध्यान करेंगे तो बहुत जल्द कामयाबी होगी ॥

मैं-भगवान करे आप की जबान फलीभूत होवे ॥ (सिलसिला बात चीत का पूरा होगया) ॥

ऐ मेरे प्यारे भाईयों मैंने यह बात चीत यथार्थही की है इस वास्ते छपवाई जाती है कि अन्य जाति के लोगों के ख्यालात हमारी निसबत कैसे हैं और हम कुछ भी नहीं करते हैं—यदि आप अपनी जाति को विद्यारूपी भूषण से सजाना चाहतेहों तो महा विद्यालय के वास्ते धन एकत्र करने की कोशिश करो भादव मास आपहुंचा है ऐसे समय में मन्दिरों में गोलक रक्खो और इसी समय में घर पीछे १) रुपया जहां तक होसके उन भाईयों से जो खुशी से देवें लेतेजाओ और सब रुपया इकट्ठा कर के सेठजी साहब के पास मथुरा भेजदो क्योंकि अब रुपया एकत्र होना प्रारम्भ होगया है—हे भाईयो जो कार्य आज करना है उस को कल पर मत डालो ॥

जैनी भाईयों का शुभचिंतक
डिप्टी चम्पतराय

नोटिस

शोलापुर के मन्दिरजी में एक सरस्वती भंडार खोला गया है—और उस में अभी दो हजार रुपया एकत्र होगया है—परन्तु पुस्तकें हम को नहीं मिलती हैं इस वास्ते सर्व भाईयों को विदित किया जाता है कि जिस किसी भाई के पास भाषा तथा संस्कृत की पुस्तकें विक्रियार्थ होवें वे अपने यहां से फहरिस्त भेजदेवें ॥

हीराचन्द नेमचन्द
एडीटर जैन बोधक
शोलापुर

नोटिस

(द्रव्य संग्रह अर्थ सहित)

उक्त पुस्तक हमारे दफ्तर में मोजूद हैं—इस में प्रत्येक गाथा के नीचे गाथा का अर्थ संस्कृत में लिखा है इस का मूल्य डाक व्यय सहित केवल १) रुपया है, पुस्तक हस्त लिखित हैं ॥

दफ्तर जैन गजट देवबन्द
जिला सहारनपुर

जैन महा विद्यालय की सहायता

जो भाई पत्र भेजें साफ सरल हिन्दी भाषा में भेजें अन्य भाषा में नहीं भेजें—और दो रुपये २) सेठ मोहनलालजी रिखबचन्दजी नलखेड़ा जिला आगर मालवा ने कीमत अंजन में मेरे पास भेजे थे वह मैंने महा विद्यालय भंडार के वास्ते सेठ लक्ष्मणदासजी सी. आई. ई. के पास मथुरा भेजदिये हैं ॥

जगन्नाथ जैनी कस्बा जसपुर जि० नैनीताल

सूचना

जो महाशय महासभा की नियमावली मं-गावैं उन से प्रार्थना है कि अपना नाम पता व डाकखाना व जिला साफ साफ लिखाकरें ॥

किरोडीमल दफ्तर
महासभा मथुरा

विद्या

जहां तक मुझ अल्प बुद्धी ने विचार किया है धर्म के चलने का कारण एक विद्या ही मालूम होता है इस समय जो कुछ धर्म की न्यून्यता होरही है वह अ-विद्या रूपी वैरीका ही प्रताप है हमारी जाति में मिथ्यात्व रूपी अंधकार छा गया है यह अन्धकार विद्या रूपी दी-पक के ही प्रकाश से दूर हो सक्ता है मनुष्य के सुख का हेतु विद्या ही है परन्तु कैसे शोक की वार्ता है कि हमारी जाति में विद्या का अभाव होगया है तब ही से सत्य धर्म का प्रचार भी उठ गया है और उठता जाता है धर्म के पहचान ने का मार्ग विद्या ही है बिना विद्या के मनुष्य अन्धा और पशु समान है सिर्फ इतना ही फर्क है कि पशु के सींग और पूंछ हैं मनुष्य के डाढी और मूछ हैं और ऐसा कहा भी है ॥

दोहा ॥

विद्या से सब होत हैं धनी और गुण वान । बिन विद्या जे नर रहैं वेनर पशू समान ॥

संसार में विद्वान ही प्रशंसित होता है विद्वान ही सर्व स्थान में आदर पाता है विद्या ही से सब मिलता है विद्या ही सब स्थान में पूजित होती है जैसा कि कहा है ॥

॥ श्लोक ॥ विद्वान् प्रशंस्यते लोके विद्वान्सर्वत्र गौरवम् । विद्यया लभते सर्वं विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥

फिर विद्या कैसीहै (छन्द अडिल्ल) मा सम रक्षा करै पिता सम हित करै ॥ त्रिय सम चित्त रमाय शोक दुख कों ह-रै ॥ मित्र भ्रात सदा सहायक काम में ॥ अतुल कीर्ति धन गुरुता देय समाज में ॥

इसलिये हम सब विद्यार्थियों को चाहिये कि मन लगाकर विद्या पढें तिस विद्या रूपी सूर्य से अज्ञान जनित तिमिर का नाश हो और मूर्खता रूप अंधियारे के दुख से बचें ॥

लखमीचन्द विद्यार्थी
श्री जैन पाठशाला इटावा

भादव मास

भादों का महीना निकट आगया ॥ इस महीने में हमारे सब जैन भाई श्री जैन मंदिर में जावैंगे ॥ साल के ग्यारह

महीनों में किसी मंदिर में शास्त्रजी पढ़े जाते हैं और किसी में नहीं जहां शास्त्र जी पढ़े भी जाते हैं वहां भी दो चार दस भाई हैं शास्त्र सभा में जाते हैं परन्तु भादों के महाने में सब मंदिरों में शास्त्र जी पढ़े जावेंगे और सब जगह सभा भर पूर रहेगी क्यूंकि जिसने जैन कुल में जन्म लिया है जो अपने आप को जैनी बतलाता है वह चाहे ग्यारह महीने तक मंदिर जी में दर्शन के हेतु न आया हो परन्तु इस महीने में उसका बहुतसा समय मंदिर जी ही में व्यतीत होगा ॥ हमारे परोपकारी भाई जो जैन धर्म और जैन जाति की उन्नति चाहते हैं वह भी बहुत दिनों से आस लगाये बैठे होंगे कि कब भादों का महीना आवे और कब हमारे मनोर्थ पूरे हों ॥ कब वह दिन आवे कि सब भाई श्री मंदिर जी में पधारें और हम उनसे अर्दास करें उनसे जैन जाति की हीनावस्था का बयान करें और इस अवस्था के सुधार की प्रेरणा करें ॥ कब वह समय हो कि हमारे भाई जैन धर्म से प्रीति करें और अविद्या मिथ्यात्व कुरीति व्यर्थ व्यय आदिक को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करें और जगत में प्रतिष्ठा पावें धर्म प्रभावना बढ़ावें ॥ भादवे का महीना निकट आया जान हमारे शुभचिन्तक भाई अंग में फूले नहीं समाते होंगे क्यूंकि वह विचारते होंगे कि अब हम सर्व प्रकार की कोशिश कर सकैंगे और हमारी कोशिशों का फल भी प्राप्ति होगा ॥ पंचायत का प्रचार हमारी जाति से उठ के कारण सभा नियत न होने के सबब सब भाईयों का इकट्ठा होना अत्यन्त कठिन हो रहा है परन्तु भाद्र पद मासमें स्वमेव सब भाई इकट्ठे होंगे इस वास्ते सहज से कार्य की सिद्धि होजावेगी ॥ परन्तु परोपकारी भाइयों को चाहिये कि अभी से अपने उपकार को प्रारंभ कर देवें ॥ हमने भी श्री दश लाक्षणी पर्व के दिनों को अत्यन्त फलदायक समझ यह उत्साह किया है कि इन दिनों में नाना प्रकार के उपयोगी लेख भाईयों को पढ़ावें जिससे उनको धर्म में लगने की अधिक प्रेरणा हो और इस इच्छा को पूरा करने के वास्ते हम जैन गजट पत्र दस दिन में छै बार जारी करेंगे हरएक गजट में नवीन और उपकारी लेख होंगे ॥ उपकारी भाईयों से हमारी यह प्रार्थना है कि दश लाक्षणी के दिनों में जैन गजट को उस ही दिन जिस दिन उनके पास पहुंचे श्री मन्दिर जी में आदि से अन्त तक पढ़ कर सुना देवें क्यूंकि एक दिन के पश्चात दूसरा पत्र नवीन व्याख्यानों से भरा हुवा आपहुंचेगा ॥

समाचारों का गुच्छा

मिवहारा— लाला खैराती लाल धर्म कुमारजी लिखते हैं कि मिती असाढ़ शुक्ला १४ को सभा हुई— जैन गजट; जैन समाचार पत्र पढ़कर सुनाये गये और नकशा मर्दुमशुमारी भरकर हकीम उग्रसेनजी के पास भेजि दिया गया— इसी तरह सर्व नग्र के भाईयों को उचित है कि अपने २ ग्राम की मर्दुमशुमारी करके उक्त महाशय के पास सिर सामे भेज देवें ॥

सिरसावा— लाला जुगलकिशोर विद्यार्थी ने अपने प्रश्न के उत्तर में दो महाशय को पारितोषक दिया (१) लाला अर्जुन लाल सेठ जैपुर (२) लाला रूपचन्द विद्यार्थी इटावा क्योंकि इन दोनों महाशयों के उत्तर प्रथम आये थे ॥

पाढम—लालारामजी लिखते हैं मिती आसाढ बदी १४ को सभा हुई यहां के भाइयों ने विवाह आदि कार्यों में वेश्या का नचाना बिल्कुल बन्द कर दिया और आतिशबाजी सिर्फ २ रुपये से ज्यादा नहीं लेजाना ॥

सम्पादक— धन्य है उक्त ग्राम के भाईयों को कि जिन्होंने वेश्या का नचाना जिसके देखने से परिणाम खोटे होते हैं और वृथा रुपया बर्बाद होता है और पाप का बन्धन होता है बिल्कुल त्याग दिया है परन्तु आतिशबाजी २, रु० की रक्खी है क्या इसके बगैर लेजाये विवाह आदि कार्यों की शोभा मारी जाती है ! कदापि नहीं हम आशा करते हैं कि इतनी आतिशबाजी का भी लेजाना बन्द करदें ॥

सहारनपुर— लाला अजुध्या प्रसाद जी लिखते हैं कि आप के जैन गजट के प्रभाव से यहां पर इतवार को सभा होने लगी जिसमें साठ, सत्तर मनुष्य एकत्र हो जाते हैं— और लाला रूपचन्दजी साहब रईस ने पाठशाला नियत कराने का इरादा किया भगवान इनके इरादे को जल्द पूरा करें ॥

मौहब्बतपुर— सकल पंचान लिखते हैं कि मौजा महाराज पुर जिला सागर के भाईयों ने ८, रुपये मन्दिर की मरम्मत के वास्ते भेजे हैं धन्य हैं यहां के भाईयों को धर्मात्मा भाईयों का ही रुपया धर्म कार्य में लगता है ॥

जैपुर— गणेश लाल साठी सभापति लिखते हैं कि यहां पर हम सब बालकों ने मिलकर एक धर्म गोलक सभा में रक्खी है जिसमें २॥, रुपया एकत्र तीन सभाओं में होगया है और आशा है कि प्रत्येक सभा में उन्नति होती रहेगी— जब बालक धर्म कार्य में ऐसी कोशिश करते हैं तो क्या बड़े आदमी नहीं करेंगे ? अवश्य ही करेंगे ॥

संसार अवस्था

यह संसार दुख कष्टों से सर्वत्र परिपूर्ण है इस संसार में ऐसे चोर फिरते हैं कि जो मुख से नहीं बोलते और रात्रि दिवस चोरी में लगे रहते हैं यह चोर रात्रि और दिन हैं जो शीघ्रता से घूमकर नित्यप्रति हमारे आयु को घटाते हैं इस संसार असार की स्थिरता नहीं हैं मृत्यु इस को घेरे हुए है इस कारण संसार अवस्था में सुख मानकर कदाचित निश्चित होना नहीं चाहिये पल पल जो व्यतीत होताजाता है उतनीही आयु घटती जाती है इस कारण एक पल भी व्यर्थ न खोना चाहिये वरन जो काम कल करना है वह आजही करलेना चाहिये जैसा कि कहावी है ॥ दोहा ॥ कल करे सो आज कर आज करे सो अब। पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब ॥ क्योंकि मृत्यु का भय हर समय हमारे सिरपर है कौन जानता है कि आज की रात्रि को कौन २ यमदूत का ग्रास बनेगा और वह प्रातःकाल के प्रकाश को नहीं देखसकेगा यदि मनुष्य बाल्यावस्था सेही श्रेष्ठ कार्य करने में प्रवृत्तिकरै तो वह अवश्य कुछ कार्य करसकेगा नहीं तो बहुत से मनुष्यों के हृदय पश्चात्ताप यही रहजाता है कि हम अमुक कार्य न करसके दुष्ट कार्य करने के वास्ते चौरासीलाख योनी हैं परन्तु शुभ कार्य के वास्ते केवल एक मनुष्यही योनी है इस कारण यदि कोई दुष्टकार्य की इच्छा रखता हुआ मरजावे और अपनी इच्छा परिपूर्ण न करसकें तो उस को अधिक पश्चात्ताप नहीं होगा क्योंकि जन्मांतर में दुष्टताई करसका है परन्तु श्रेष्ठ कार्य की इच्छा रखता हुआ मनुष्य यदि अपनी इच्छा पूर्ण किये बिना पहलेही मरजावे तो उस के पश्चात्ताप की कोई सीमा नहीं है क्योंकि उस को मनुष्य जन्म फिर कब मिलेगा इस कारण सज्जन पुरुषों को अपने शुभ कार्य करने में बहुत शीघ्रता करनी चाहिये जिस से इस लोक और परलोक दोनों में यश और सुख की प्राप्ती हो ॥

तलफीचन्द सभासद
जैनपुरुषार्थ सभा इटावा

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १–८–१६–२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष {ता० १ सितम्बर ....सन् १८९६} अङ्क ३६

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

आगामी महा सभा

यह बात विदित है कि जैन महासभा सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैनियों की रक्षार्थ और सर्व जैन जाति और जैन धर्म की उन्नति के हेतु नियत हुई है इसी कारण इस सभा का नाम भारतवर्षीय श्री जिन धर्म संरक्षणी महासभा है इस लिये सर्व भाईयों से प्रार्थना की जाती है कि तन मन धन से इस की सहायता करनी चाहिये यद्यपि महा सभा का कार्य सभा में आये सब भाईयों की सम्मति अनुसार कियाजाता है परन्तु भारतवर्ष में चौदहलाख जैनियों की पृथक २ सम्मति लेना अति कठिन है वरन असम्भव है इसलिये इस का भी कोई सहज उपाय होना चाहिये सो अबतक इस से उत्तम और कोई उपाय नहीं सूझा है कि प्रत्येक नग्र व ग्राम के भाई अपने २ नग्र से मुखिया प्रतिष्ठित महाशयों को अपनी ओर से महासभा के वास्ते प्रतिनिधि नियत करदेवें जो अपने २ नग्र की ओर से महासभा में सम्मति देवें—इस का प्रबन्ध अभी भादवमास में होजाना चाहिये क्योंकि दशलाक्षणी के दिनों में सर्व जैनी भाई मंदिरों में एकत्र होते हैं इस लिये सर्व भाईयों को विशेष परिश्रम भी नहीं करना पड़ैगा—और प्रतिनिधि नियत करके यदि हमको भी सूचित करदेवेंगे तो बड़ी कृपा होगी ॥

प्रश्न

मुझे एक नाम अति प्रिय है जिस के द्वारा मैं अपने इष्ट कर्ता की नित्य प्रार्थना किया करता हूं वह तीन अक्षरसे वना है अर्थात आदि उस नाम का प्राणका मूल है— अर्थ वा अनर्थ का अन्त उसका हृदय है— वन्दना का और उस अन्त सृष्टि के आदि से एकही था और अन्तलों भी एक ही रहैगा ॥

जो कोई विद्यार्थी इस का उत्तर पहिले देवेगा उस को आठ सप्ताह यानी २ महीने तक जैन गजट मुफ्त भेजा जावेगा ॥

प्रश्नकर्ता लाला बाबूमल
मौहर्रिर खजाना लखनौ

फजूलखर्ची

भारत वर्ष की सर्व जातियें और विशेष कर वैश्य जाति अर्थात बनिये की कौम जैनमती फजूल खर्ची के फंदे में फंस कर कट पुतली की तरह नाचती है इस ही के कारण जगत भर के सारे दूषण इस जाति में आगये हैं यहां तक कि इस जाति के मनुष्य श्रेष्ट मनुष्यों में गिने जाने के योग्य नहीं रहे हैं ॥ इस जाति का कोई मनुष्य पास बिठाने के लायक नहीं रहा— बेईमानी चोरी दगाबाजी फरेब धोका छल कपट जालसाजी अन्याय जुल्म सितम निर्लज्जता झूठ निदान सर्व प्रकार की बुराई इस फजूल खर्ची की बरकत से इस जाति में पैदा हो गई हैं यही नहीं बल्कि यह जाति इन बुरे कामों की शिक्षक समझी जाती है ॥ जैसा कि चोर हजारों लाखों रुपये का माल चोरी का लाता है मगर उस को लंगोटी करने को कपड़े की एक कत्तर और खाने को एक टुकड़ा नहीं मिलता इस ही प्रकार इस जाति में मनुष्य हजारों लाखों रुपये कमाते हैं परन्तु अपने खाने पीने आदि में नहीं लगा सके हैं उन के दिन ऐसी दरिद्रता से व्यतीत होते हैं कि ऐसे किसी कंगाल के भी न होते होंगे ॥ अपनी जाति पर ऐसा महान कष्ट देख कर परोपकारीयों के दिल तड़पते हैं ॥ वे अपनी जाति को इस आपत्ति से बचाने के वास्ते अनेक प्रकार के उपाय करते हैं रोते हैं चिल्लाते हैं परन्तु फजूल खर्ची का भूत इस जाति के सिर पर ऐसा चढा है किसी ने इन पर ऐसा मंत्र किया है ऐसा उन्मत्त किया है कि फजूल खर्ची की रीति के विरुद्ध एक शब्द सुनना भी बुरा मालूम होता है और अपने डूबने और बर्बाद होने में मजा आता है ॥ अपनी जाति की यह दुर्दशा देख कर मेरा हृदय कांपता है इस कारण मैंने भी इरादा किया है कि हाथ पैर मार कर डूबती हुई कौम को बचाऊं यदि फजूल खर्ची का भूत सिर से उत्तर जावे तो इस कौम की सर्व आपत्तियां दूर हो सक्ती हैं इस कारण हमने फजूल खर्ची विदारण एक महान मंत्र लिखा है जो पुरुष इस मंत्र को पाठ कर लेवेगा ॥ वा जिस पर यह मंत्र पढ दिया जावेगा उस के सिर से फजूल खर्ची का भूत तत्काल उत्तर जावेगा और उस को होश आजावेगा ॥ हम अपने परोपकारी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने भाईयों के हित के वास्ते इस मंत्र को अवश्य सब के ऊपर पढ देवें ॥

फजूल खर्ची विदारण मंत्र

हे जैन भ्रातृगणों यह आप को मालूम है कि तुम्हारी जाति की अत्यन्त दु-

दशा हो रही है इसका धर्म अत्यन्त न्यूनता को पहुंच गया है ॥ इस जाति का जहाज भारत वर्ष के समुद्र में गोते खारहा है इस समुद्र में एक काल से अविद्या का तोफान उठ रहा है ॥ यद्यपि अन्य जाति की किश्ती और जहाजों को भी जो भारत वर्ष रूपी समुद्र में पड़ी हुई हैं इस अविद्या के तोफान ने हिलाया और मूर्खताई के चक्कर में घुमाया परन्तु अन्य जाति के मुखिया पुरुषों ने जो खेवटिये कहे जासक्के हैं उपदेशों का शोर मचा कर अपनी २ कौम को अविद्या रूपी निद्रा से जगाया और सभा पंचायत कर तोफान से बचने के वास्ते इकट्ठा जोर लगाने की प्रेरणा की जिस का फल यह हुवा कि उन्हों ने अपनी जाति को बचा लिया और उन्नति के मारग में डाल दिया परन्तु शोक महा शोक का स्थान है कि इस जाति के मुखिया पुरुष खुद इस जाति को डुवा ने की कोशिश करते हैं ॥ हाय हाय यह जाति ऐसी घोर निद्रा में सोई है कि यदि कोई कुछ उपाय करने की चेष्टा भी करता है तो जैसा कि बहुत से नकटोंने अपनी एक अच्छे नाक वाले कू वना दिया था ऐसी ही उस परोपकारी की भी हंसी उडादी जाती है॥ हाय हाय इस जाति की ऐसी दुर्दशा देख कर कौन वज्र हृदय है जिसका दिल न कापने लगे छाती न भर आवे कौन निर्दई है जिस को दया न आवे कौन ऐसा जालिम है जो टप २ आंसू न बहाने लगे परन्तु अफसोस की बात है कि ऐसे हमारी जाति के ही मुखिया और अगवानी हैं जो पंच और चौधरी कहलाते है और जिन को कुछ दया नहीं आती है हे धनाढ्य और प्रति ष्ठित पुरुषों तुम पर ही इस जाति की टेक है यदि तुम में कुछ परोपकारता नहीं है यदि तुम अपने भाईयों को बचाने का कुछ उपाय नहीं करते हो तो तुम कसे मुखिया हो ॥ तुम यह मत समझना कि फजूल खर्ची तुम्हारे छोटे भाईयों को ही वर्बाद करैगी और तुम बचे रहोगे नहीं यद्यपि धन के मद में तुम को कुछ सूझता नहीं है परन्तु तुम को भी फजूल खर्ची ऐसा ही विगाड रही है जैसा अन्य निर्धन भाईयों को और तुम भी थोडे ही दिनों में निर्धन होने वाले हो ॥ हे भाईयों चेतो देखो विचारो फजूल खर्ची तुम्हारा कैसा सत्यानाश कर रही है और सब मिल कर फजूल खर्ची को देश निकाला देदो ॥ यदि धनाढ्य पुरुष इस विचार में तुम्हारे साथ शामिल नहीं होते हैं तो तुम अपने बचाउका तो उपाय करलो थोडे ही दिनो में धनाढ्य भी तुम्हारे ही जैसे होने वाले हैं फिर वह खुद ही तुम में शामिल हो जावेंगे ॥ अब मैं विस्तार के साथ फजूल खर्ची की कथा को सुनाता हूं कृपा करके ध्यानदे कर सुनें

प्रथम अध्याय

इस जाति में प्रत्येक पुरुष के चार पांच लड के लडकियां होती हैं परन्तु हिसाब लगाने के वास्ते दो लड के और दो लड़की स्थापित करते हैं और एक साधारण मनुष्य की आमदनी और खर्च का अनुमान लगाते है ॥ जिस पुरुष की आमदनी २५ वा ३० रुपये महीने की होती है वह साधारण समझा जाता है ॥ यद्यपि इस जाति में बहुत कंगाल और बहुत धनवान पुरुष भी हैं परन्तु साधारण अवस्था के पुरुष ज्यादा होते हैं और हमको भी प्रयोजन साधारण ही पुरुषों से हैं इस कारण ऐसी ही अवस्था पर हिसाब लगाया जाता हैं जिस की आमदनी अधिक होती हैं इस जाति के मनुष्य होता हैं उसका खर्च भी अधिक अनुमान भी इस ही हिसाब पर लग सक्ता है ॥ इस जाति के मनुष्य अपने पुत्र का दसूठन छटी कान छिदाई सगाई विवाह गोना आदि करते हैं इन सर्व कारजों में साधारण पुरुष यदि बहुत कंजूसी और कमी के साथ खर्च करे तो भी दो हजार रुपये से कम खर्च नहीं कर सकता हैं अर्थात् दो लडकों का खर्च गौने तक का चार हजार रुपये से कम नहीं होता हैं इस ही प्रकार पुत्री की सगाई विवाह गौना तीसरा करना पडता है इन सर्व कारजों में भी दो हजार से कम खर्च नहीं होता हैं परन्तु प्रत्येक लडकी की संतान के हेतु भी साथ खिचडी छोचक भात आदि के नाम से एक हजार रुपये से कम खर्च नहीं होता है इस कारण एक लडकी के हेतु खर्च तीन हजार से अधिक होजाता है इसलिये दो लडकियों के वास्ते छै हजार रुपया अर्थात् दो लडकियों और दो लडकों के वास्ते विवाह आदि का खर्च दस हजार रुपये से अधिक होजाता हैं ॥ यदि कोई पुरुष बीस वर्ष की आयु से पचास बर्ष की अवस्था तक बराबर २५) पच्चीस रुपये महीना कमाता रहै (यद्यपि नफा नुकसान साथ लगा हुआ है तो भी वह ३०×१२×२५ कुल नौ हजार रुपये कमा सकता है विवाहादि कामों के वास्ते खर्च होते हैं दस हजार रुपया अर्थात् एक हजार रुपये की कमी रहती है खाना पीना कपडा लत्ता लडकों को लिखाना पढाना और अन्य खर्च मरने जीने के रहे अलग ॥ ऐसे स्थान पर हृदय फटा जाता है कलेजा मुंह को आता है कलम थर २ कांपता है जिस कौम की ऐसी हालत हो उसके तबाह और बरबाद होनेमें क्या कोई संदेह होसक्ता है क्या ऐसी कौम कायम रह सकती है ॥

जिस जाति की ऐसी अवस्था हो कि खाने पीने कपडे लत्ते मकान और अन्य आवश्यक कार्यों के सिवाय जो प्राणों की रक्षा के वास्ते जरूरी है केवल रीति

रस्म के पूरा करने में तमाम आमदनी खर्च होजाती हो वर्ण एक हजार रुपया और चाहते हों तो क्या वह कौम किसी तरह जी सक्ती है क्या इससे अधिक दुर्दशा और भयानक अवस्था कोई होसक्ती है हाय हाय ऐसी अवस्था में क्या कोई बुद्धिवान मरजाने को जीने से अच्छा न समझेगा क्यूंकि यदि मर कर नर्क में भी जाना पडे तो ऐसा अद्भुत कष्ट तो वहां भी नहीं होसक्ता है कि जो कुछ दिन रात भर मर कर महनत करके हड्डियें तोडकर उदर पूर्णा के वास्ते कमावे वह तो बिरादरी की रीति रस्म में लग जावे बल्कि और भी मांग रहे और पेट में कूंचा जला कर देने को भी न मिले और यह ही दुःख मर्णं पर्यन्त भोगना पडे ॥ हाय हाय यह ऐसी बात है कि यदि किसी बुद्धिमान को दण्ड दिया जावे और उसको आज्ञा दीजावे कि सारी आयु तुमको इस रीति व्यतीत करनी पडेगी तो अवश्य उसको मूर्छा आजायगी बदन कांपने लगेगा उसको ऐसी चिन्ता होजावेगी कि दिन रात उसको नींद न आवेगी वह ऐसा व्याकुल होजावेगा कि कभी कलही न पडेगी हाय हाय अवश्य उसकी चारपाई डर के मारे पड़े २ उछलने लगेगी वह इस दुःख में ऐसा लोटेगा जैसे रेते में मछली ॥ परन्तु हम देखते हैं और हम को अत्यन्त आश्चर्य है कि जिस जाति की ऐसी अवस्था है जो इस असाध्य बीमारी में फंसी हुई है उसको इस दुःख का कुछ हाल मालूम नहीं है ॥ कैसे शोक का स्थान है कि यह जाति ऐसी अविद्या अन्धकार में फंसी हुई है और ऐसी मूर्ख होरही है कि परोप कारियोंको जो इस जाति की ऐसी अवस्था पर आंसू बहाते हैं और अचेत सोते हुवों को जगाकर कुछ उपाय करने की प्रेरणा करते हैं धन्यवाद देने के स्थान में उन शुभचिन्तकों को अपना बैरी समझती है और उनका उपदेश सुना भी व्यर्थ समझती है और परोपकारियों के चिड़ाने के वास्ते अधिक २ फजूल खर्ची कर अपने को बर्बाद करती है और परोपकारियों को अनेक प्रकार से दूषित करती हैं ॥ परन्तु जो सच्चे परोपकारी हैं जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई समझते हैं जिन्होंने परोपकार को मनुष्य का धर्म समझा है ॥ अपने भाई को कष्ट में देखकर वही दुःखी होते हैं जो अपने भाईयों को अपना अङ्ग समझते हैं दया जिन के हृदय में है वह जानते हैं कि अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है जब तक कोई पर उपकार न करै तब तक कोई मनुष्य नहीं हो सकता है आकार चाहे मनुष्य का होजावे ॥ अपनी जाति की यह भयानक मुसीबत वह असह्य कष्ट उनके सामने भयानक मूर्ती के समान खड़ा रहता है वह अपने जाति भाईयों

के बुरा कहने पर कुछ ध्यान नहीं देते हैं ॥ उनके हृदय में यह बात जमी हुई है कि मूर्ख आज्ञानी रोगी ऐसे वैद्य को जो जल्द रोग दूर करने वाली और कडवी औषधी देवे अपना वैरी समझा करता है और कभी कडवी दवा खानी स्वीकार नहीं करता है ऐसी ही दशा इस जाति की होरही है ॥ परन्तु जैसा कि सच्चा बुद्धिमान और दयावान वैद्य रोगी के दुर्वचनों से क्रोधित नहीं होता है बल्कि समझा कर बहकाकर फुसलाकर रोगी को मनाता है और शर्बत चटनी आदि के द्वारा दवा को जिस तिस प्रकार खिलाही देता है इसही प्रकार पर उपकारियों शुभ चिन्तकों बुद्धिमानों को अपने भाईयों की मूर्खताई की क्रिया से कुछ न घबराना चाहिये और उपदेश के बदले में गाली सुनकर बुरा न मानना चाहिये बल्कि अधिक शोक प्राप्त होना चाहिये कि यह जाति अविद्या में ऐसी अंधी होगई है कि उपदेश देने वाला भी इस को वैरी दिखलाई देनें लगा है ॥ ऐसी अवस्था में सज्जन धर्मात्मा पुरुषों की ओर से इस जाति के सुधार की अधिक कोशिश होनी चाहिये और नवीन २ उपाय ऐसे निकालने चाहिये जिस के द्वारा उपदेश के वचन इनके कान तक पहुंच जावें ॥ सो धर्मात्मा लोग जो इस दुनिया से पुन्य का भंडार भर कर ले जावेंगे और नेकनामी सदा के वास्ते छोड़ जावेंगे इस प्रकार की बराबर कोशिश कर रहे हैं और अपना तन मन धन इस में लगा रहे हैं ॥ हे तीन लोक के नाथ इस जाति के मनुष्यों को हित अहित नफे नुकसान का विचार दे नहीं तो अब इस जातिका नाम निशान उठता है ॥

दूसरा अध्याय

हे भाईयो ! आप को मालूम होगा कि सरकारी कानून के अनुसार जिस मनुष्य के पास प्रत्यक्ष कोई आजीवका का कारण नहीं होता है तो उस से हाकिम मुचलका नेक चलनी का ले सक्ता है इस का कारण यहही है कि आजीवका के बिना कोई मनुष्य जी नहीं सक्ता है इस हेतु जिस की कोई आमदनी नहीं मालूम होती है वह अवश्य कोई अनुचित कार्य करके उदर पूर्ण करता होगा ॥ भाईयों जरा विचारकर देखो जिस का खर्च आमदनी से ज्यादाहो क्या वह अन्याय मार्ग में नहीं चलता होगा अवश्य वह ऐसेही कार्य कर कमी पूरी करता होगा भाईयों जिस मनुष्य की आमदनी रीति रस्म में खर्च होजावे और खाने पीने के वास्ते एक कौड़ी भी न बचे बल्कि रीति रस्म का भी पूरा न पड़े वह भी वास्तव में कोई आजीवका नहीं रखता है ॥ आजकल देश विदेश में इस जाति वाले यह हाहाकार म-

चाते हैं कि सर्कार अंग्रेजी हमपर टैक्स बहुत लगाती है और किसी प्रकार का उजर नहीं सुनती है परन्तु हमारी समझ में यह बड़े भाग्य के उदय की बात है क्योंकि विवाह आदि के खर्च को देखकर सर्कार का यह ख्याल होरहा है कि इन की आमदनी भी ज्यादाही होगी जिस से यह इतना रुपया लुटादेते हैं और यदि सर्कार को यह मालूम होजावे कि इन की आमदनी इतनी नहीं है तो बहुतही मुशकिल पड़जावे और पीछा छुडाना भारीहो ॥ हे भाईयो जरा पक्षपात को छोड़कर न्याय दृष्टी से देखिये जिस की सारी आमदनी विवाह आदि कार्यों में खर्च होजावे और खाने पीने आदि के लिये जिस के पास एक पैसा भी न रहै क्या वह पुरुष ईमानदार रहसक्ता है हे भाईयो जरूरत बहुत बुरी बलाय है जरूरत में अच्छे २ प्रतिष्ठित पुरुषों और धर्मात्माओं का दिल चलजाता है और फिर जरूरत भी कैसी खाने पीने की कि जिस के बिना एक पल भी कोई नहीं जीसक्ता है ॥ ऐसा पुरुष तो बेईमानी धोका फरेब क्या पेटभरने के वास्ते एक पैसा भी प्राप्त करने को मनुष्य बध को भी स्वीकार करैगा ॥ आठ पहर चौसठ घड़ी उधेड़ बुन रहैगी और यही चिन्ता रहैगी कि सारी कमाई तो रीति रस्मों के वास्ते पूरी नहीं है अपने प्राणों की रक्षा के वास्ते अवश्य कुछ ऊपर का माल मारना चाहिये और किसी को लूटना चाहिये सो वह पुरुष हर एक प्रकार के धोके फरेब जालसाजी मक्कारी दगाबाजी चोरी आदि के उपाय सोचेगा और नये नये ढंग निकालेगा ॥ हाय मरता क्या न करता ॥ एक के दो वसूल करना लेकर मुकरजाना तो उस के वास्ते एक साधारण बात होगी ॥ उस का इष्टदेव रुपया होगा और इष्ट धर्म द्रव्य उपार्जन करना होगा ॥ वह रुपये की अपेक्षा प्रतिष्ठा आदि को कुछ न समझैगा ॥ बल्कि रुपये के साम्हने वह परमेश्वर को भी कुछ न समझैगा और समझे कैसे क्योंकि पेट बहुत बुरी बला है और अपने प्राण जीव को ऐसे प्यारे हैं कि अत्यंत कष्ट की अवस्था में भी कोई मृत्यु को पसंद नहीं करता है सो जिस की सारी उमर की आमदनी उस के काम न आवे वह परमेश्वर का डर करके क्या ऐसी तैसी खावेगा वह समझलेगा कि बेईमानी करने से बहुत होगा नर्क में जाना पड़ेगा परन्तु भूखा नहीं मराजाता है अब तो कहीं न कहीं से छीन झपटकर लूट खसोटकर अपना और अपने बालबच्चों का पेट भरना

चाहिये नहीं तो आप तो क्या कुनबा भी गारत हो जाता है ॥ ऐसे पुरुष को कितना ही उपदेश दिया जावे कैसी ही शास्त्र और ज्ञान की बातें सुनाई जावें परन्तु वह बेईमानी कदाचित नहीं छोड सक्ता है ॥ हे भाईयों क्या यह अवस्था हमारी जाति के मनुष्यों की नहीं है क्या यह बात मशहूर नहीं है कि बनिया पैसे का मीत और बहुत लालची होता है क्या हम लोग बेईमानी से इस ही कारण द्रव्य कमाने की कोशिश नहीं करते हैं कि हम को सैंकडो खर्च लगे हुवे हैं ॥ क्या यह बात हो सक्ती है कि हम फजूल खर्ची भी करते रहैं और ईमान दार भी रहैं नहीं यह नहीं हो सक्ता॥ हाय हाय यह हमारी जाति की दशा बहुत ही बुरी है इसलिये हम को बयान करते लज्जा आती है बनिये के वास्ते यह कहावत मशहूर है कि "जान मारे बनिया और पहचान मारे चोर" इस के क्या अर्थ हैं ॥ इस के अर्थ यह हैं कि मारने का काम तो चोर और बनिया दोनो करते हैं परन्तु बनिया जान कार को लूटता है और चोर धनवान आदिक को पहचान कर लूटता है ॥ यह बात प्रसिद्ध है कि चोर जिस को एक बार अपना मित्र कहलवेगा उस को नुकसान नहीं पहुंचा वेगा ॥ इस ही कारण किसी २ जगह बडी २ बरातो और मेलों में चोरों और ठगों को रख वाला नियत कर दिया करते हैं और वह मालिक से भी ज्यादा रख वाली करते हैं परन्तु बनिया विश्वास की ही जगह में मित्र बना कर ही दाव मारता है भावार्थ वह चोर से भी ज्यादा बेईमान है ॥ इस दृष्टान्त से यह भी सिद्ध होता है कि बानिये से मित्र ताई और मेल मिलाप पैदा नहीं करना चाहियें अर्थात उस के पडौस से भी दूर भागना चाहिये ॥ हाय हाय धिक्कार है ऐसी कौम पर जो ऐसी अवस्था में भी अपने को प्रतिष्ठित समझे ॥ फिट कार है ऐसी जाति वालों पर जो ऐसे कर्म करते हुवे मनुष्यों में अपने को गिनै ॥ अफसोस है ऐसे पुरुषों पर जो ऐसी दुर्गती को पहुंच कर भी अपनी उन्नति का रास्ता न निकालें ॥ आश्चर्य है ऐसे लोगों पर जो इस कदर गिर कर अपने सुधारने वालों को बुरा समझैं ॥ रोना आता है ऐसे मनुष्यों पर जो ऐसे विगड कर भी अपने समझाने वालों की बात न सुनैं ॥ हे भाईयों जब दिल मे जोश आता है अपनी जाति की ऐसी बुरी और घिनावनी दशा देख कर जब जी उबलता है और अपसोस आता है तब ऐसे बचन मुख से स्वयमेव निकलते हैं ॥ मैं अपने दिल को काबू में करके और मन को थांब कर फिर असली वार्ता को कहना शुरू करता हूं परन्तु इस वार्ता में तो अपनी जाति की दशा दिखलानी है और वह दशा ऐसी है कि किसी की न हो जिस की ओर ध्यान देने से बेधड-

क धाड़ मार कर रोने को जी चाहता है हे भाईयों अपने बछड़ों के दांत सब को मालूम हैं जाति वालों से जाति की बात और जाति की दशा कब छिप सक्ती है क्या कोई पेशा कोई ब्यौहार कोई कार्य इस जाति का ऐसा है जिस में बेईमानी न की जाती हो जिस में दूसरे को धोखा देकर फरेब देकर झूठ बोल कर कमाई का हेतु न समझा हो जिस में लूटने का उपाय न किया जाता हो ॥ यह मुख कहां तक निर्लज्ज बने कहां तक अपनी बुराई करने में ढीठ हो सच तो यह है कि बेईमानी की अपेक्षा जिस कदर दूषण किसी मनुष्य पर लगाया जासक्ता है उस की तमाम कौम अपराधी है ॥ परन्तु हे भाईयों शायद आप भूल गये हों फिर सोचो कि हमारी यह दशा क्यों हुई क्यूं हमने यह कुकर्म ग्रहण किये क्यों हम धर्म से विमुख हो गये क्यों हम को सरकारी कानून से डर नहीं रहा परन्तु आप को यह ही जवाब मिलैगा कि फजूल खर्ची के सिवाय अन्य कोई ऐसा शक्तीमान राक्षस नहीं कि जो हम को कटपुतली की तरह नचा कर धर्म और संसार से बर्बाद करै क्योंकि मैने पहले यह सिद्ध कर दिया है कि फजूल खर्ची हमारी जाति में इतनी बढगई कि सारी आयु की कमाई भी रीति रस्म के पूरा करने के वास्ते पूरी नहीं और पेट में कूंचा जला कर डूंने को भी नहीं बचता तो फिर यह दोष हम में क्यों उत्पन्न न हों ॥ मैं यह बात बड़े जोर से कहता हूं कि जब तक इस जाति से फजूल खर्ची दूर नहीं होगी तब तक शास्त्रों का लेख पंडितों का वाक्य धर्मात्माओं का उपदेश साधुओं की शिक्षा इस जाति के मनुष्यों को धर्म में लगाने के वास्ते कुछ कार्य कारी नहीं हो सक्ती क्योंकि यह तो आश्चर्य रूप संक्लेश में फंसे हुवे हैं इस का धर्म कर्म तो रुपया लूटना है ॥ कमाई तो रीति रस्मों ने छीनली अब कहीं से उदर पूर्णा भी करैं यह चिंता छूटे तो कोई धर्म उपदेश हृदय में जमें ॥ इस ही प्रकार विद्याका प्रचार देने मूर्खता दूर करने परस्पर मैत्री बढाने आचर्ण सुधारने उन्नति करने नामवरी और प्रतिष्ठा पाने और उच्च उज्जल जाति कहलाने के जितने उपाय जाति हितेच्छुक करते हैं यह सर्व उपाय जब तक फजूल खर्चीका राज्य है वृथा है इस कारण इस जैन जाति के भलाई चाहने वालों शुभचिंतककों का सब से मुख्य और प्रथम काम यह होना चाहिये कि फजूल खर्ची के दूर करनेका उपाय करैं इस के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सक्ता है ऐसे स्थान पर बड़ा क्रोध आता है इस फजूल खर्ची पर जिस ने हमारा बिलकुल सत्या नाश कर दिया है ॥ हाय ऐ फजूल खर्ची तूने उच्च जाति को सब से नीच बना दिया ॥ हाय ऐ फजूल

खर्ची तूने उच्च जाति को सब से नीच बना दिया ॥ हाय ऐ फजूल खर्ची क्या तेरे फंदे में आकर हम इस योग्य हो जावें कि सर्कार हम से मुचल्का नेकचलनी का तलब करसके हाय फजूल खर्ची तेरी बदोलत हम चोरों से भी अधिक बेईमान हो गये हाय ऐ फजूल खर्ची तेरा समागम करने से सारे पाप हम में आगये हाय ऐ फजूल खर्ची तेरी परछाई के पड़ते ही सारे गुण हम में से दूर हो गये हाय ऐ फजूल खर्ची तेरे साथ प्रीत करने से यह जाति अत्यन्त निकृष्ट हो गई ऐ फजूल खर्ची तेरी जान को कहां तक रोवें तूने इस जाति को अत्यन्त सताया है अब तू अपना काला मुंह कर और निकल ॥

अध्याय तीसरा

ऐ भ्रातृगणों अब मैं आप को इस से भी अधिक आश्चर्यकारी बात सुनाता हूं और इस जाति की इस से भी अधिक बुरी और घिनावनी दशा दिखलाता हूं ॥ प्रथम अध्याय में यह सिद्ध किया गयाथा कि विवाह आदिक रीति रस्म का खर्च कुल उमर की आमदनी से भी ज्यादा है और खाने पीने आदि जरूरी कारजों के वास्ते एक कौडी भी नहीं बचती है ॥ दूसरे अध्याय में यह दिखलाया गया है कि इस कमी को पूरा करने के वास्ते बेईमानी झूठ फरेब किया जाता है परन्तु अब मैं इस से भी अधिक कहना चाहता हूं और वह यह बात है कि जैसा हमने प्रथम अध्याय में हिसाब लगाया था कि जिस की आयु पर्यंत की आमदनी नौहजार रुपया है उसका विवाह आदि का खर्च दस हजार रुपये का है सो यह नौहजार की आमदनी इमान दारी और बेईमानी की सब मिल कर है क्योंकि किसी की बाबत कोई इस बात का अनुमान नहीं कर सक्ता है कि ईमान दारी की आमदनी कितनी है और बेईमानी की कितनी ॥ परन्तु ऐसी अवस्था में बेईमानी और झूट फरेब से भी अलग कोई गुप्त उपाय होगा। जिस से कमी पूरी हो मैं उस गुप्त उपाय को प्रगट करना चाहता हूं और इस बात की सविनय प्रार्थना करता हूं कि मेरा अभिप्राय निन्दा करने का नहीं बल्कि मेरा यह अभिप्राय है कि हमारे भाईयों को अपनी दुर्दशा देखकर लज्जा प्राप्त हो और उसका कुछ उपाय करें इस जाति में आज कल यह रीति पूरी २ प्रचलित हो रही है कि अपनी कन्या के वास्ते कोई श्रेष्ट वर को नहीं खोजता हैं बल्कि धनवान को खोजता है ॥ इस ही कारण हमारी जाति में बहुत से सुन्दर रूप शुभ आचर्णी जवान और गुण वान मौजूद है जिन के पास धन बहुतसा नहीं है और कंगाल भी नहीं है परन्तु आज तक उन के कान में यह शब्द नहीं पड़ा

है कि कोई अपनी लडकी को तुम्हारे सा थ व्याहना चाहता है ॥ भावार्थ अधिक धन के न होने के कारण वह इस योग्य ही नहीं रहे हैं कि किसी कन्या के वर बन सकें अर्थात कुरूप मूर्ख किसी कंगाल की कन्या भी उन को नहीं मिल सक्ती इस ही के साथ हम यह भी देखते हैं कि धनवानों के पांच २ सात २ वर्ष के बालकों को जो कैसे ही मूर्ख कुरूप घि- नावनी सूरत वाले और खोटे आचरण वा ले हों सैकडों मनुष्य अपनी दस २ वर्ष की सुन्दर रूप और गुण वाली कन्याओं को उन के साथ व्याहने के वास्ते फिर ते हैं और नाना प्रकार के उपाय करते हैं कि किसी तरह मेरी कन्या को स्वीका र कर लेवैं इस ही के साथ में यह भी देखने में आता है कि यदि धनाढ्य पुरुष कि जिस की अवस्था तीस या चालीस व र्ष की हो और जिस के दो दो तीन २ बालक हों स्त्री मरजावे तो इस बात के समाचार पाते ही वह ही सैंकडों बडे २ घराने के प्रतिष्ठित पुरुष जो पहले इस बात की कोशिश कर रहे थे कि हमारी कन्या अमुक धनाढ्य के पुत्र सात वर्ष की अवस्था वाले के साथ व्याही जावे दौड पडते हैं कि किसी तरह हमारी कन्या का विवाह इस तीस चालीस की अवस्था वाले और दो तीन बाल कों वाले के साथ हो जावे तो अच्छा है ॥ यदि कोई पुरुष कन्या के पिता को यह समझावें कि तुम अपनी लडकी को क्यों तीस चालीस वर्ष की अवस्था वाले से व्याहते हो देखो तु- म्हारी कन्या दश वर्ष की है और अमुक मनुष्य का लडका पंद्रह वर्ष का है खूब सूरत है गुण वान हैं वर जोग है तुम अ पनी कन्या को इस के साथ क्यों नहीं व्याह देते हो तो कन्या का पिता तुरन्त पूंछता है कि वह धनवान भी है कि नहीं और यदि वह धनवान नहीं होता है तो कन्या का पिता शिक्षा देने वाले को ब- हुत लज्जित करता है कि क्या तुमने मुझ को ऐसा कंगाल समझ लिया हैं कि मैं अ पनी पुत्री को ऐसे घर व्याह दूं क्या को ई वर नहीं मिलता है मेरी पुत्री जवान हो गई है सो मैंने जवान वर तलाश कर लिया है ॥ तब वह शिक्षा देने वाला क हता है कि आज तो तुम्हारी पुत्री ऐसी जवान हो गई कि तीस चालीस वर्ष की अवस्था का वर उस के योग्य है और कल जब तुम इस ही कन्या को अमुक धनाढ्य के छै सात वर्ष की अवस्था वाले बालक से व्याहते थे तो यह नन्ही बच्ची थी ॥ इस बात को सुन कर गालियें देने लगता है ॥ हे भ्रातृगणों जो वार्ता मैंने ऊपर वरन की है क्या यह बात झूठ है क्या हमारी जाति में ऐसा ही प्रचार नहीं है ॥ अवश्य यह ही व्यवहार हो रहा है ॥ अब विचारने की यह बात है कि हम लोग ऐसा क्यों करते हैं खोम

ने से मालूम होगा कि इस में जरूर कुछ नफा है ॥ भाईयों आप यह बात जानते हैं हमारी जाति में प्रत्येक कारज में लड़कियों के वास्ते बहुत कुछ धन खर्च करना पड़ता है परन्तु जैसा लड़ की वाला धन और अनेक प्रकार की वस्तु लड़ की की सुसराल में भेजता है ऐसा ही उस के जवाब में लड़की की सुसराल से भी लड़की के पिता के यहां आता रहता है प्रत्येक स्थान की रीति प्रथक २ होती है इस कारण यहां पर विस्तार के साथ वह हेतु लिखना जिस प्रकार लड़की की सुसराल से माल आता है ठीक नहीं है ॥ केवल इतना ही कह देना बहुत है कि प्रत्येक कारज में दोनों पक्ष वाले खर्च करते हैं और एक दूसरे के पास भेजते हैं और यदि कुछ कम दिया जाता है तो स्त्रीयें बहुत तकरार करती हैं बेटी के यहां का पानी तक पीना हमारे भाई अनुचित समझते हैं परन्तु नहीं मालूम प्रत्येक कारज में क्यों बदले में वस्तु बेटी के यहां से ली जाती है ॥ खैर इस बात को छोड़िये इसवक्तमैं केवल फजूल खर्ची के ऊपर व्याख्यान कह रहा हूं इस कारण उसका ही जिकर होना चाहिये ॥ भाईयों आप जानते हैं कि हर कोई मनुष्य अपनी बित्त के अनुसार खर्च करता है और देता है यदि वह धनाढ्य होता है तो प्रत्येक कारज में अधिक खर्च करता है और यदि निर्धन न होता है तो कम खर्च करता है इस कारण बेटी वाला अपनी लड़की को अवश्य प्रत्येक कारज में एक समान देगा चाहे वह लड़की को धनाढ्य व्याहे या निर्धन घर परन्तु उस के बदले में प्रत्येक कारज में यदि लड़ की धनाढ्य घर व्याही गई है तो बहु मूल्य की वस्तु मिलती हैं और यदि निर्धन घर व्याही गईहै तो बहुत ही कमती दाम की चीज बदले मे मिलती हैं इस कारण निर्धन घर लड़ की को व्याहने में बहुत नुकसान हैं और धनवान घर व्याहने में बहुत लाभ है यही कारण है कि हमारी जाति में कन्या के वास्ते अच्छे बर की खोज नहीं होती है अच्छे घर की तलाश होती है ॥ यह ही कारण है कि हमारी जाति में बहुत से निर्धन पुरुषों के विवाह नहीं होतेहैं इसही कारण से हमारे भाई अपनी दस बर्ष की कन्या के वास्ते १२ या १४ वर्ष के गुणवान निर्धन बर को छोड़कर धनवान का ६ या७ वर्ष का गुण हीन बालक या तीस चालीस की अवस्था वाला जवान कई बालका वाला पुरुष बर जोग समझते हैं अमली बात तो यह है चाहे सीधा सामनें से नाक पकड़ो चाहे पीछे को हाथ लेजाकर परन्तु बात एकही है लेकिन अधिक शोक की बात यह है कि यदि कोई गरीब भाई कोई अनुचित कार्य करै तो उस की कमबख्ती आजाती है सब उस पर

दोष लगाते हैं परन्तु धनवानों का वह जो चाहें सो करें कोई कुछ नहीं कहता है ॥ अफसोस थोड़े से लालच के कारण सब अपनी प्यारी कन्याओं के बैरी हो जाते हैं ॥ सब से अधिक शोक इस बात का है कि केवल कन्या का पिता ही अपनी कन्या के साथ बैर नहीं करता है बल्कि पुत्र का पिता भी थोड़े से लालच के कारण अपने पुत्र के साथ बैर करता है क्यूंकि पुत्र वालों को भी यह ही इच्छा रहती है कि हमारे पुत्र का विवाह किसी धनवान के यहां हो जो प्रत्येक कारज में बहुत २ मोल की वस्तु देवै लड़की चाहे कैसी ही बुरे रूप वाली और कैसी ही गुणहीन हो ॥ इस ही कारण हमारी जाति में सगाई के छोड़ देने का अधिक प्रचार होगया है क्यूंकि जब कभी किसी की तरफ से किसी कारज में कमी होती है तब ही सगाई छोड़ दी जाती है ॥

भाईयो मैंने पहले यह बात सिद्ध की है कि जिस की कुल आमदनी सर्व प्रकार की नौ हजार रुपया होती है तो विवाह आदि रीति रस्मों का खर्च दस हजार रुपया होता है यह एक हजार रुपये की कमी तो अवश्य कहीं न कहीं से पूरी होनी चाहिये ॥ यह कमी इस ही रीति से पूरी की जाती है कि अपनी सन्तान के वास्ते बर कैसा ही हो परन्तु धनवान तलाश किया जाता है और इस प्रकार जो कुछ रीति रस्मों में खर्च किया जाता है उस के बदले में कुछ माल आही जाता है ॥ भाईयो नौ हजार रुपये की आमदनी और खाने पीने आदि से अलग केवल विवाह आदि का दस हजार रुपये का खर्च फिर कैसे बुद्धि स्थिर रहसक्ती है कैसे उचित अनुचित का विचार होसक्ता है यह इस फजूलखर्ची काही कारण है कि प्यारी संतान के वास्ते संतान को दुःख देना भी अच्छा समझा जाता है ऐ फजूलखर्ची कैसे २ अनहोने कुकर्म तूने हम से कराये कहां तक तूने हमारी बुद्धि बिसारी किस २ प्रकार तूने हम से जोग अजोग के विचार छुड़ाये किस २ तरह हमारी जाति के प्रतिष्टित पुरुषों को अपनी संतान का बैरी बनाया बहुत होचुकी अब तू इस कौम का पीछा छोड़ और किसी दूसरी जगह अपना सत्यानासी डेरा डाल ॥

भाईयो हमारी जाति में ऐसे बहुत कंगाल हैं या कंगाल होगये हैं कि जिन की उदर पूर्णा भी मुशकिल से होती है और उन के दो चार कन्या भी हैं ॥ कन्या तो बिना ब्याही रह नहीं सक्ती हैं इस कारण ब्याह उस का अवश्य किया जाता है परन्तु कन्या

का पिता कैसाही गरीब कंगालहो प-रन्तु आजतक हमने यह नहीं देखा है और न सुना है किसी लड़की का वि-वाह इस रीति से हुआ है कि केवल दो चार आदमी आकर ब्याह लेगये हों और दो चारही रुपये में कारज हो-गयाहो ऐसा कदाचित नहीं होता है विवाह तो बिरादरी की रीति रस्म केही अनुसार होगा बिरादरी का यह हुक्म है कि बरात का लशकर गाजे बाजे के साथ जरूर आना चाहिये प-रन्तु कन्या के पिता के पास एक पैसा भी नहीं है और निर्धनता के कारण कोई करज देता नहीं है इस वास्ते वह लाचार है कि कन्या के वास्ते कोई धनवान बर तलाश किया जावें और उस से यह कहा जावे कि हम का तो एक कौड़ी भी बेटी के घर की छूनी हराम है जो कुछ बरात वालों के खाने पीने में खर्चहो वह आपही करलीजिये करो और खावो परन्तु बरात हलकी नहीं आनी चाहिये इस में हमारी बद-नामी है ॥ परन्तु एसा पुरुष तो वह ही होसक्ता है जो धनवान भी हो और जिस का विवाह भी आसानी से न होसक्ता हो क्योंकि अमीर होने बिना तो दोनों तरफ का खर्च नहीं उठास-क्ता है और ऐसी जगह विवाह करना वहही धनवान स्वीकार करेगा जिस का विवाह कहीं अन्यथा न होसक्ता हो और धनवान का विवाह अन्यथा जब ही नहीं होता है जब उस में कोई बहुतही बडा दोष हो अर्थात ऐसी क-न्या के वास्ते ऐसाही बर मिलसका है जिस की पचास वर्ष से भी ज्यादा उमर हो क्योंकि ३० या ४० वर्ष की अवस्था वाले के साथ तो प्रतिष्ठित और धनवान पुरुष अपनी कन्या का विवाह करना बडी खुशी के साथ चा-हते हैं ॥ हाय यद्यपि कन्या का पिता एक पैसा भी अपने वास्ते नहीं लेता है बल्कि अपने घर से लगादेता है प-रन्तु केवल इस कारण कि बरात ठस्से से आवे घर के द्वार के आगे अंग्रेजी बाजा बजे बार द्वारीपर रंडी (वेश्या) मीठे और स्त्रियें सुनें ऐसा बर तलाश करना पड़ता है कि जो दोनों तरफ का खर्च उठावें और इस इच्छा को पूर्ण करने के वास्ते कन्या को भाड़ में झोकना पड़ता है और जैसा कि अब अपने मकान पर बहुत से बाराती बुलाये हैं और अंगरेजी बाजा बज वाया है और हर्ष प्राप्त होरहा है इस ही प्रकार थोडे ही दिनों में बरातियों की जगह रोने वालों को बुलाता है अंगरेजी बाजों की जगह दोहत्थड बजता है और खुशी की जगह कलेश होता है अफसोस है ऐसी बुद्धि पर न संसार का लाभ न परमार्थ का ॥ हाय हाय हे फजू

खर्ची तेरे चरित्र सबस लेज निकल गये ॥ हे भ्रातृगणों यह व्याहार उन लोगों का नहीं है जो पहले से कंगाल हैं जिन की छोटी सी नाक है बल्कि ऐसा काम वह करते हैं जो बडी नाक रखने के कारण और बिरादरी में प्रतिष्ठित होने के हेतु विवाह आदि कारजों में बहुत बहुत रुपया खर्च करने से निर्धन हो गये हैं और इस बात से लाचार हैं कि कहीं से कर्ज भी नहीं मिलता है ॥ खैर यद्यपि धन हाथ में नहीं रहा परन्तु अभी तक नाक तो उतनीही है बिरादरी में तो अभी बात बनी हुई है इस कारण यह बात कब हो सक्ती है कि उन के यहां बारातका बहुत बडा लशकर न आवे धूम न मचे ॥ यदि धूम धाम न हुई तो बिरादरी में क्या मुंह दिखावेंगे इस कारण कन्या का बर ऐसा मिलना चाहिये जो दोनों तरफ का खर्च चला देवें हे भ्रातृगणों ऐसे कार्य अपनी बिरादरी में होते हुवे देख कर तो यह ही शब्द मुख से निकलता है कि इस जाति का तो न होना ही अच्छा है क्योंकि फिर ऐसे अनर्थ तो न हुवा करैं परन्तु यह सब फजूल खर्ची का प्रताप है यद्यपि किसी २ कन्या की एक २ आंख एक २ हजार रुपये को बिकती है और नीलाम बोला जाता है परन्तु उसका संबंध कुछ फजूल खर्ची से नहीं है और इस समय केवल फजूल खर्ची का ही व्याख्यान हो रहा है इस कारण उसका कुछ जिकर नहीं किया जाता है अब तो ऐसी बातों का बयान है जिस को हमारी जाति के सर्व प्रतिष्ठित और धर्मात्मा पुरुष उचित समझते हैं जैसा कि कन्या का पिता पट्टे के नाम से अपने नोकरों चाकरों और नाई धोबी हलवाई आदिका सब खर्च लेलेता है ॥ हाय यदि इस कौम से फजूल खर्ची के पैर मेट हो जावें तो फिर इस कौम में नेकी होने को है और फिर यह कौम वैसी ही उच्च और प्रतिष्ठित है जैसी कि पहले थी नहीं तो सब योग और उचित है ॥ हे परमेश्वर या तो तू इस फजूल खर्ची का मटिया मेट करदे या इस कौम का ही सत्यानाश करदे ॥

चौथा अध्याय

हे महाशयों यह बात सब जानते हैं कि इस जाति का प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक कारज में बादशाही ठाठ रचता है और द्रव्य खर्च करने में ऐसा दिल खोलता है मानो चक्रवर्ती की निधि इस को मिलगई है ॥ प्रत्येक कारज में बादशाही जल्लूस बनाता है धनवान बना बताता है रुपये खर्च करना सिखाता है और अच्छों के मुंह फेर देता है ॥ परन्तु विचारना यह चाहिये कि इस को दो तीन दिन के वास्ते जनूनका दौरा उठता है और बावला बन कर रुपया लुटाना प्रारम्भ करता है या वास्तव में ही वह धनवान होता

है और सदा ठाठसे ही रहता है इस बा त की जांच के वास्ते देखना चाहिये कि नित्य किस रीति से दिन पूरे किये जाते हैं ॥ भाईयों सच्ची बात कहना आधी ल-ड़ाई मोल लेना है ॥ हमारी जाति के म-नुष्यों की आयु जैसे व्यतीत होती है वै-सी शायद किसी निर्भाग्य की व्यतीत हो ती होगी और अच्छी तरह व्यतीत कैसे हो सारी आमदनी ईमान दारी और बेई मानी से कमाई हुई धोका फरेब लूट ख-सोट से संचय की हुई झूट सच बोल कर हाथ आई तो रीति रस्मों में खर्च हो जा ती है आयु व्यतीत करैं तो किस रीति से करै ॥ जो लोग दो २ तीन २ हजार रुपया विवाह आदि में लगाते हैं जो बरा त के जिमाने के वास्ते आधसेर पक्की मि-ठाई की पत्तल बनाते हैं जो बहुत बडी२ जोनारें करते हैं उन का नित्य नियम का खाना पीना उन मे अच्छा नहीं होता जो कंगाल हैं और दिन भर मजदूरी करके दो आने पैदा करके उदर पूर्ण करते हैं॥ इस ही कारण बानिये पतली दाल के खा ने वाले मशहूर हैं ॥

लाला लोग घी तो खाया ही नहीं करते हैं कीडियें खैंचले जावैं,घी खाया करतेहैं नाई आदिक कमीन क्यूंकि जबनाई सगाई करनेके वास्ते किसी के यहां आता है तो वह घी और चीनी (मिठाई) का तगार बना देता हैं ॥ लाला लोग मिठाई भी नहीं खाया करते हैं क्यूंकि यदि किसी रिश्तेदार के यहां से मिठाई आती है तो उसको भी नहीं छूते हैं और इस हेतु उठाकर रख देते हैं कि जब किसी रिश्ते-दारी में मिठाई देने की जरूरत होगी तो यह ही मिठाई भेजदी जावेगी ॥ हम ने यह बात देखी है कि इस प्रकार वह ही मिठाई बहुत दिनों तक घूमती रहती है और सड जाती है परन्तु तो भी वह मिठाई बराबर भेजी जाती है क्यूंकि को ई भाई अपने रिश्तेदार के खाने के वास्ते मिठाई नहीं भेजता है बल्कि रीति पूरी करने के वास्ते मिठाई भेजता है वह जान ता है कि बनिये मिठाई नहीं खाया कर ते हैं बल्कि कमीने मिठाई खाया करते हैं इस ही कारण बारात में भी भाई को एक पत्तल और कमीनेको दो पत्तल दीज ती हैं ॥ भाई को भी एक पत्तल खाने वास्ते नही परसी जातीहै क्यूंकि आध सेर मिठाई कोई नहीं खासक्ता है उसका भी प्रयो-जन यह ही होता है कि झूठन के नाम से यह भी कमीने के पास पहुंच जावे-गी ॥ आध सेर मिठाई की पत्तल भाईयों के खाने के वास्ते नहीं बनाई जाती यह बात इस से भी सिद्ध होती है कि दा-माद (जमाई) की जितनी खातिरदारी सुसराल में होती है ऐसी किसी की खा-तिर कहीं नहीं होती है यह बात प्रसि द्ध है परन्तु जब कभी जमाई सुसराल में

स्था को मिलाकर देखा जावे निस्संदेह बनिये की स्त्री अधिक निर्भागनी और दुःख भरी अवस्था वाली होगी. जिस बहू को बिवाह के समय कई हजार का जेवर मिलता है जो दुलहन सिर से पैर तक सोने में लाददी जाती है उसका काम आयु पर्यन्त बरतन मांजना चौका लगाना रोटी पकाना आदि होता है ॥ जिस बहू के विवाह में उसका ससुर कुल ब्राह्मणों को एक २ रुपया जनेऊ देता है वह बहू बीमारी में भी रोटी पकाने और बरतन मांजने का काम करतीहै और इतना नहीं होसक्ता है कि दो चार दिन के वास्ते बीमारी के समय में किसी रोटी पकाने वाले को रख लिया जावे ॥ यह अवस्था केवल स्त्रीयों की ही नहीं हैं वर्ण पुरुषों की भी यह ही अवस्था है ॥ पुरुषों को भी कैद खाने के कैदी के समान महनत करनी पड़ती हैं नहीं २ मैंने कैदी का दृष्टान्त गलत दिया है ॥ कैद खाने में तो प्रति दिन डाकटर लोग कैदियों को देखते हैं और यदि कैदी बीमार होता है तो उससे बिल्कुल काम नहीं लिया जाता है परन्तु बनिया बीमारी में भी काम करता है ॥ अफसोस अपनी जाति की कष्ट भरी अवस्था का बखान कहां तक किया जावे लज्जा आती है और यह भी ख्याल होता है कि अन्य देश के मनुष्य जिनहोंने केवल हमारी जाति वालों के विवाह शादी जल्लूस और ठाठ को देखा है वह मेरी बात पर कभी विश्वास नहीं करैंगे और मुझ को झूठा कहैंगे ॥ हाय हाय हमारी जाति वालों की अवस्था आश्चर्य रूप है ॥ जिस पुत्र के पैदा होने में सैंकड़ों रुपया बांट दिया जाता है वह बालक एक २ पैसे को तरसता है जिस दुलहा के विवाह में हजारों रुपया लुटा दिया जाता है उसके विद्या भ्यास कराने और सिखाने में एक कौडी खर्च करनी मुशकिल होती है ॥ जिस बूडे बाप के मरने पर दुशाले लाश पर डाले जाते हैं सैंकडों रुपये फैंक दिये जाते हैं मठ बनाने, और बिरादरी का जीमन करने में हजारों रुपये खर्च किये जाते हैं वह बुड्ढा जीते जी ऐसा कष्ट उठाता है और आयु पूरण करता है कि किसी कंगाल भिक्षुक के भी दिन ऐसे मुसीबत में न व्यतीत होते होंगे ॥ इस ही प्रकार जिस बात पर ध्यान किया जावेगा वह बात ऐसी ही अद्भुत और दुख दाई मालूम होगी परन्तु बिचारना यह चाहिये कि ऐसी दुर्दशा और घोर दुख की अवस्था क्यूं इस जाति के मनुष्यों की है भाईयो इसका कारण सिवाय फजूल खर्ची के और कुछ मिलैगा ॥ जितनी आयु पर्यन्त की आमदनी होती है वह तो रीति रस्मों में खर्च होजाती है बल्कि उस में भी कमीनी रहती है तो फिर खाने पीने आदि में कहां

से खर्च किया जावे पलभर चैन कैसे मिले ॥ यह फजूल खर्ची इस जाति की ऐसी दुशमन हुई है कि जितने दूषण जिस कदर कष्ट जगत में हो सके हैं वह सब इस जाति में आगये हैं ॥ ऐ फजूल खर्ची तू कब से इस कौम की बैरन थी इस जाति ने तेरा क्या विगाड़ा है क्यूं तू जोक की तरह पिलचकर इस कौम को चूस रही है तेरा जुल्म अत्यन्त होचुका है॥

पंचम अध्याय

हे महाशयो इस दुख भरी कथा को सुन कर जो मैं आप को सुना रहा हूं अवश्य आप के हृदय में चोट लगी होगी और अपनी जाति की दुर्दशा पर बड़ा तरस आता होगा ॥ मुझे आशा है कि इस हृदय विदारक किस्से कोजान कर जरूर नर्म दिल आदमी रोने लगे होंगे॥ इस कौम पर ऐसी सख्त मुसीबत आई हुई समझ कर जरूर बहुत से भाईयों की छाती धड़कनी होगी अपने आप को ऐसे महा कष्ट में फंसा हुवा देख कर जरूर तड़पते होंगे ॥ परन्तु हे सज्जन पुरुषो इस जाति की अवस्था के विषय में अभी तक आप ने क्या सुना है इस का दुखड़ा क्या अभी पूरा होगा या इस की राम कहानी क्या अभी समाप्त हो गई भाईयों इस जाति की वर्तमान दशा ऐसी निकृष्ट है कि वज्र हृदय भी सिर पीट २ कर रोने लगें और अपनी जान खोने लगें ॥ हाय २ यह दुष्ट फजूल खर्ची हम से क्या क्या अधम होने काम क्या २ जुल्म नहीं कराती है ॥ कसाई तो दूसरे ही जीव को बध करता है और अपने बाल बच्चों की पालता है परन्तु यह फजूल खर्ची हम से अपने बाल बच्चों तक को बध कराती है माबाप के ही हाथ से अपनी प्यारी संतान के गले पर छुरी फिरवाती है ॥ ऐ भाईयों मैं प्रारम्भ से अपने आप को थांब कर दिल को काबू में कर आप से इस जाति की अवस्था का बयान कर रहा हूं नहीं तो जी चाहता है कि खूब फूट २ कर रुदन करूं और दीवार से सिर देमारूं हाय हमारी यह दशा और हम कुछ भी ध्यान न देवें ॥ कैद खाने में पड़े हुवे खुशियां मनावें ॥ निर्लज्जता स्वीकार कर भी लोगों को मुख दिखावें ॥ अत्यन्त बेईमानी जुल्म सितम करते हुवे भी घमंड कर इतरावें ॥ कमीनापन से आयु व्यतीत करते हुवे भी मर्दों के सामने आवें ॥ रूखी सूखी फटे पुराने को तरसते हुवे भी अपने आप को धनवान बतावें ॥ कसाई से भी अधिक हत्यारे बन कर भले मनुष्यों से बात बनावें॥ भाईयों आप को आश्चर्य होगा कि जितनी बुरी दशा इस जाति की बयान हो चुकी है इस से अधिक नीच और कौनसा काम हो सक्ता है जो बयान नहीं हुवा है ॥

(शेषमग्रे)

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ़ कर सुना दीजिये

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१६-२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० ८ सितम्बर ....सन् १८९६ } अङ्क २७
बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

प्रार्थना

श्रीदशलक्षणी पर्व में दस दिन में जैनगजट के ६ अंक जारी होंगे इन अंकों के लेख अति उत्तम इस पर्व में अवश्य सब भाईयों के पढने के योग्य होंगे इस कारण प्रार्थना है कि दशलाक्षणी पर्व में जिस दिन जैनगजट पहुंचे उस-ही दिन आद्योपान्त श्रीमन्दिरजी में सब भाईयों को सुना दिया जावै क्योंकि दूसरे दिन दूसरा अंक पहुंच जावेगा जिस में नवीन उपकारी लेख होंगे ॥

फिजूलखर्ची

(अंक ३६ पृष्ठ २० से आगे)

भाईयों वह केवल दूषण और कुकर्मही नहीं है जिस से अगले जन्म में पाप के उदय काही भयहो वह संसारी अपराध भी है जिस का दण्ड बहुत कुछ मिलसक्ता है इस कारण उस के बयान करने में मुझ को यह खौफ भी मालूम होता है कि कहीं और कोई बला न आन पड़े परन्तु उस के न बयान करने में उस अपराध के ज्यादे प्रचार होजाने का खौफ है इस कारण लाचार उस कोभी प्रगट करताहूं ॥

महाशयो यह बात सब को मालूम है कि हमारी जाति में जब किसी के यहां पुत्री पैदा होती है तो खुशी के स्थान में सोग फैलजाता है ॥ धन्यवाद और मुबारिकबादी की ठौर अफसोस शब्द सुनाई देने लगते हैं ॥ कोई ललकार कर कहता है आगया चार हजार रुपे का करजदार दूसरा पूछता है कहो भाई कितने रुपये की डिगरी हुई ग़रज़ सब तरफ से ऐसेही दुःख और क्लेश के बचन कान में पड़ते हैं ॥ मा बाप भी बेटी के पैदा होने को अपने ऊपर एक भारी आपत्ति का आना और पापकर्म का उदय है समझते हैं ॥ इस का फल यह होता है कि जननी अर्थात जिस के बेटी पैदा हुई है वह स्त्री भी महादुर्भागनी कम्बख्त गिनीजाती है और उस के खाने पीने आदि की कुछ संभाल नहीं कीजाती है सच है खोटी वस्तु की संगति में अच्छी वस्तु भी खोटी होजाती है ॥ अब जच्चा भूखी रहै बीमारहो दुःख उठावै या जो कुछहो परन्तु किसी को कुछ परवाह नहीं है ॥ कोई आकर पूछता भी नहीं कि क्या होरहा है । पूछै कौन है बेटी नाम सुनतेही सारे कुनबे की उमंगें धूल में मिलगई जी मुरझा गया इसही समय से घर के सब आदमी परमेश्वर से यह प्रार्थना करने लगते हैं कि हे जगदीश्वर क्षमाकर और इस हमारी जान के दुश्मन बच्चे को लौटा लेजा ॥ हाय मांगी थी नीचै को मिलगई ऊपर को हाय यह तो सारी उमर के वास्ते एक जोंक चिपटगई खून पीते २ जिस का कभी पेट नहीं भरेगा जिस के कारण जीना दुखदाई होजावेगा जिस के खर्च में राति दिन का सोना पलभर चैन से बैठना आज से बन्द होगया ॥ अब जननी (जच्चा) को भोजन भी ऐसा नहीं मिलता जिस से दूध पैदाहो अर्थात माता के स्तनों में दूध बहुत कम है परन्तु तौभी माता बच्चे को दूध नहीं पिलाती ॥ बच्चा बिलबिलारहा है हाथ पैर मारता है सिर धुनरहा है

परन्तु उस की माता उस से पीठ फेरे पड़ी है क्योंकि माता भी विचारती है कि इसही दुष्टनी के पैदाहोने से मेरा निरादर हुवा है ॥ हे भाईयो हे दयावान पुरुषो हे जैन धर्मियो जरा विचारो तो सही तुम लोग तो एकेन्द्री जीव की भी रक्षा करतेहो दया केही कारण कन्दमूल और बनस्पती खानी त्यागतेहो क्या यह हत्या नहीं है ॥ भाईयो आप इस बात को स्वीकार करैंगे कि तड़फा २ कर मारना भटका भटका कर जान छुड़ना बिलबिला २ कर प्राणान्त करना तरसा २ कर आयु पूर्ण करना एकदम मारडालने से ज्यादा कठोरता और निर्दयता है परन्तु सज्जन पुरुषो ऐसी निर्दयी ऐसी कठोरचित्त यह जातिही है यहही जाति अपनी लड़कियों अर्थात प्राणप्यारी संतान जिगर के टुकड़े को इस प्रकार त्रास देती हैं परन्तु यदि विचाराजावे तो इस में इस जाति के मनुष्यों का कुछ कसूर नहीं है यह सारे कुकर्म और अन्याय इस जाति से फजूलखर्चीही कराती है इस फजूलखर्ची से ज्यादा दुष्ट और जबरदस्त और कौन होसक्ता है जिस के भय से एक जाति नंगी नाचरही है यदि लड़कियों के वास्ते खर्च ज्यादा न करने पड़ाकरते यदि यह जन्म पर्यन्त न सताया करती तो फिर निसंदेह पुत्री भी प्राणप्यारी होती है ॥ भाईयो जिन के दो चार कन्या हैं जो विवाह अपनी लड़कियों का करचुके हैं जिन को भात आदि देने पड़े हैं उन से इस आपत्ति का हाल पूछो ॥ वह बतलायेंगे किस तरह यह कारज पूरे हुवे और उन को क्या २ नाच नाचने पड़े फिर यदि ऐसी दशा में कन्या को डायन समझकर दुःख दिया जावे तो क्या आश्चर्य है ॥

भाईयो यह दुष्ट फजूलखर्ची हम से और भी बहुत से कुकर्म कराती है ॥ सब यह बात जानते हैं कि मनुष्य को अपने माता पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिये परन्तु आचरण इस के विरुद्ध होता है मा बाप को ऐसा तरसाया जाता है जिस को देखकर दांत तले उंगली दीजाती है उन की ऐसी अप्रतिष्ठा और अपमान होता है कि किसी पाजी और गुलाम का भी न होताहो ॥ घर का हरएक आदमी बूढे को दूर २ करता हैं बुड्ढे को अपनी आयु पूरी करनी दूभर होती है वह सदा अपना मरना मनाता है और बहुत संक्लेश प्रताप से मरता है ॥ परन्तु इस तमाम अन्याय का हेतु भी फजूलखर्चीही है बिरादरी की रीति के अनुसार इस जाति के प्रत्येक मनुष्य को बुड्ढे माता पिता के मरनेपर दुशाले डालने बखेर करने गिंदोड़े बांटने जीमन

करने आदि में बहुत कुछ खर्च करना पड़ता है इस कारण माता पिता दुःखदाई मालूम होते हैं यही कारण है कि निर्दयता से उन के साथ वर्त्ताव किया जाता है और उन को कुत्ते की तरह टुकड़ा दिया जाता है किसी कवीने कहा है ॥ शेर ॥ जीते जी कभी पानी तक मुंह में न डाला ॥ जब मरगये तब लाशपर पड़ता दुशाला ॥

छठाअध्याय

भ्रातृगणों मैंने नमूने के तौर पर थोड़ी सी दशा इस जाति की दिखाई है नहीं तो फजूल खर्ची ने यह दुर्दशा की है जिस के वरनन करनेके वास्ते शब्द भी नहीं मिलते हैं ॥ इस विथा को सुन कर कौन है जिसका कलेजा बांसों न उछलता होगा जिस को चारों ओर दुख की घटा घिरी हुई न दृष्टि पड़ती होगी ॥ जिस को निराशताने अपनी डरावनी सूरत न दिखाई होगी ॥ हे भाईयो इस व्याख्यान को सुन कर आप की छाती उबलती होगी और जी भर २ आता होगा ॥ हाय क्या इस से अधिक कोई शोक का स्थान हो सक्ता है ॥ वह जाति जो सर्व जातियों से श्रेष्ट गिनी जाती थी अब सब से अधिक बेईमान और नीच गिनी जावे ॥ वह जाति जो दया को अपना धर्म समझती थी और एक कीड़ी को भी पीड़ा देना महा पाप समझती थी अपनी संतान तक की हत्या करैं वह जाति जो हजारों लाखों रुपये कमाती है अपने खाने पीने और सुख में एककौड़ी भी खर्च न करसके और एकटुकड़े को तरस कै कंगालों और भिक्षुकों से भी बुरी दशा म आयु व्यतीत करैं ॥

परन्तु हे भाईयों रोने से क्या होता है कुछ हिम्मत करो और इस फजूल खर्ची को जो तुम्हारी इज्जत प्रतिष्ठा बड़ाई को खाक में मिलाने वाली और तुम्हारे खून की प्यासी है अपनी जाति से काला मुंह करके निकालो ॥ क्या रीति रस्म तुम्हारे सुधारे नहीं सुधर सक्ती हैं ॥ बिरादरी जो चाहे सो कर सक्ती है ॥ फजूल खर्ची तो एक छोटी सी बात है उद्यम से सब कुछ हो सक्ता है ॥ मनुष्य को बहुत बड़ा बल है ॥ हिम्मत करने से बड़े २ पहाड़ तोड़ डाले गये हैं ॥ हिम्मत से समुद्र के पुल बांध दिये हैं ॥ हिम्मत से हवा भी काबू में आजाती है भावार्थ यह है कि हिम्मत और उद्यम के आगे कोई कार्य कठिन नहीं है इस कारण हे भाईयों तुम भी हिम्मतका सहारालो और फिर थोड़े ही दिनों में देखो कि कि यह फजूल खर्ची की बला तुम से कैसी दूर भागती है और उन्नति का झंडा खड़ा होता है ॥ फिर यह जाति प्रतिष्ठित और उज्जल हो जावेगी ॥ सब को सुख संपति मिलैगी और चिन्ता आकुलता क्लेशका नाश होगा ॥ गई पूंजी फिर हाथ आवेगी तुम्हारे इरादे और हौसिले फिर बढ़ जावेंगे

गय हुवे दिन फिर आवेंगे और अपना प हलासा रंग रूप जमावेंगे ॥ इस समय बहुत से भाई यह पूछेंगे कि आज कल अविद्या और मूर्खता का राज्य है वैर विरोध फैला हुवा है हिम्मत से किस प्रकार काम लिया जावे ॥ भाईयों हिम्मत करने के बहुत से मारग हैं ॥ यथा

(१) जो कार्य आप करना पड़े उस में फजूल खर्ची न करना समय पूर्वक प्रवर्तना और अन्य भाईयों को नमूना बन कर दिखाना ॥

(२) प्रत्येक भाई से जब मिलाना हो फजूल खर्ची के विषय में वार्तालाप करना और इस के दोष उन के हृदय में जमा देना ॥

(३) जो कोई भाई फजूल खर्ची के विरुद्ध कोई कार्य करै उसका उत्साह बढ़ाना और प्रशंसा करना ॥

(४) जो कोई भाई फजूल खर्ची करता हो वा करना चाहता हो उस को समझाना और यदि न माने तो उस की निन्दा करना उस के कार्य में शामिल न होना और अन्य किसी को भी शामिल न होने देना इस प्रकार उसका उत्साह घटाना ॥

(५) ऐसी कोशिश करना जिस से किसी नगर के सब भाई इकठे हो कर ऐसा प्रबन्ध करलें कि फजूल खर्ची दूर हो जावे ॥

(६) प्रबन्ध होजाने के पश्चात इस बात की पूरी संभाल रखना कि इस के विरुद्ध कोई कार्य न होवै और इस बात के कारण यदि जरूरत हो तो भाईयों को मदद देना ॥

(७) फजूल खर्ची दूर करने के वास्ते परोपकारी भाई जो २ उपाय करते हैं उस में सहायता करना ॥

प्रार्थना

हम आशा करते हैं कि जो भाई हमारे इस लेख को आदि से अंत तक पढ़ेंगे वह अवश्य फजूलखर्ची के वैरी होजावेंगे और इस के प्रचार को दूरकरने की अवश्य कोशिश करेंगे ॥ हम अपने भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि जिस भाई के पास यह फजूलखर्ची विदारण मंत्रहो वह अवश्य अपने अन्य भाईयों को आदि से अंततक अवश्य सुनादेवें इस में सुनाने वाले को बहुत पुन्य का फल होगा ॥

रिपोर्ट दौरा हकीम कल्यानराय उपदेशक

श्रीमान डिप्टी चंपतरायजी जैजिनेंद्र आगे समाचार स्थान सराय रसूलपुर से चलकर पुरबालियान आया और लाला कुमरसैन के मकान पर ठहरा और दुपहर के वक्त शास्त्रजी बांचा सर्व भाई आये और साढेतीन महीने की शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञा लीनी पेस्तर शास्त्र नहीं बचै था मनुष्य ६२ हैंग

घर १८ हैंगे मनुष्यों की आदत अच्छी है और फिर सायंकाल को सभा हुई और अहिंसा धर्म का व्याख्यान किया गया तो अहिंसा धर्म विना सभा के नहीं पलसक्ता यही सारांश निकाला सर्व भाई सुनकर आनंदित हुये और सभा करना अंगीकार किया और सभा के सभापति लाला कुमरसैनजी लाला रामजीदास लाला केवलराम लाला कल्लूमल लाला सजनलाल लाला रतनलाल और मंत्री लाला बनारसीदास कोषाध्यक्ष ला० कुमरसैन हैंगे और इन सर्व साधारण भाईयो ने वडी खुशी के साथ सभा करना अंगीकार किया और फिर इस रीत सभा दूसरे दिन हुई आप के पास चिट्ठी भेजने से पत्तर सभा में विद्या के विषय में व्याख्यान हुआ तो सर्व भाईयो ने जबाब दिया कि एक मास में पाठशाला करेंगे सभा में दोनों दिन ब्राह्मण वैष्णव जाट मुसल्मान वगैरः भी थे क्योंकि सभा मंदिरजी में नहीं थी कुमरसैन के मकानपर थी उन्होंने भी सभा में आना मंजूर किया धन्य है यहां के जैनी भाईयों को कि बडी खुशी से सभा करना अंगीकार किया और पाठशाला को आगामी करना स्वीकार किया मेरी भी बडी खातिर की पुरबालिया जिला मुजफ्फरनगर में है पुरबालिया से चलकर मुकाम मुबारिकपुर आया और शास्त्रजी बांचा और सर्व भाई आये और ३॥ महीने की शास्त्रजी श्रवण की प्रतिज्ञा लीनी परंतु यहां के भाईयों में विरोध बहुत है और विरोधही के कारण से अपना धर्म भी नष्ट कररक्खा है मैंने सायंकाल को सभा की तो वोही विरोध की बातें थी मेरी तबियत अच्छी नहीं थी इस सबब ज्यादा न रहसका और विरोध भी न मेटसका और आगामी कालपर छोड़कर मुकाम साहपुर आया और लाला मंगमलाल जानकीप्रसाद की दूकानपर ठहरा मेरी बड़ी खातिर की प्रातःकाल मिती श्रावणवदी ६ बृहस्पतवार को सभा हुई सर्व भाई मौजूद थे बडे आनंद से उपदेश सुना उपदेश विद्या उन्नति के विषय में था उस समय आदमी कम थे क्योंकि सवेरे का वक्त था तो सर्व भाईयों ने कहा कि दुपहर को शास्त्रजी के वक्त पाठशाला और सभा दोनों का इंतजाम होजायगा फिर दुपैहर के वक्त शास्त्रजी बांचा और धर्म का व्याख्यान हुआ मनुष्य अनुमान ५० थे सर्व भाईयों ने बडे आनंद से पाठशाला और सभा करना अंगीकार किया उसी समय पाठशाला का चंदा लिखा गया तो लाला जानकीदास ने बडे उत्साह से २) रुपया

मासिक लिख दिया जानकीदास लाला संगमलाल के पुत्र हैं धन्य है ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि को कि बिना कहे और अपने चित्तोत्सव से लिख दिया क्यों नहो ऐसेही श्रेष्ठ पुरुषों से धर्म चलता है संगमलाल जानकीदास को आदि देकर सर्व भाईयों ने अपने चित्त माफिक बडे आनन्द से चंदा लिखदिया सो सर्व साहपुर के भाईयों को धन्य है और यहांपर पंडित ईश्वरीपरसाद हैं उन्हों ने भी बडी कोशिश की है और धर्म रुची भी है और पाठशाला का चंदा सर्व तरह श्रेष्ठतापूर्वक होगया और फिर पाठशाला के निर्वाह के वास्ते सभा स्थापित की और सभा के सभापति लाला संगमलाल लाला संतलाल ला० जानकीदास लाला रनजीतलाल ला० महबूबसिंह उपसभापती लाला नथ्थूमल लाला हरदियालमल लाला दीवानसिंह लाला सिब्बामल मंत्री उपमंत्री पंडित ईश्वरीपरसाद लाला प्यारे लाल है यह सब भाई बडी कोशिश और तन मन धन से इन दोनों का निर्वाह करेंगे सो धन्य है साहपुर के भाईयों को कि बडे खुशी के साथ दो दफै के उपदेश मेंही दोनों कार्यों को अंगीकार करलिया ॥ मिती श्रावण बदी ६ बृहस्पतवार समत १९५३

द० हकीम कल्याणराय उपदेशक
जैन महासभा मथुरा

सूम का धन व्यर्थ

सूम उसे कहते हैं जो धन पास होने पर भी यथोचित खर्च (खाना पहिनना दुखियों को दान देना आदि धर्म कर्म में) नहीं करता है केवल कमाई २ में दिनरात व्यतीत कर जोड़ २ धरता है ऐसा मनुष्य कभी भी प्रसन्न चित्त नहीं रहता सदा मलीनता चित्तपर छाई रहती है उस से कोई उचित खर्च को भी कहे तो वह उसे जहरसा लगता है सूम केवल धन को जोड़ जोड़ मरता है उस धन से भोगविलास दान धर्म नहीं करता किंतु उस के मरने पर यातो कुटंब के लोग या उस का जमाई नातेदार उस के धन को लेता है और कोई सगा नातेदार न हो तो वह सर्व धन उस देश के राज्य भंडार में जाता है जैसे सहत की मक्खियां लालचकर शहद को जोड़ती हैं और मधु तोड़ने वाले उस तोड़ लेजाते हैं अथवा दांत भोजन को चाव २ के बारीक करते हैं और जीभ मजे से खींचकर गटक जाती है तैसेही सूम का धन दूसरे लोग खाते हैं अथवा जैसे घास का पुतला खेत को रखाता है तैसेही सूम धन का रखवालारहता है इस से भाईयो तुम ऐसे सूम मनुष्य के पास कदापि न बैठो नहीं तो तुम को भी वही प्रकृति पड़जावेगी पैसा व्यर्थ न खर्च करना यह तो बुद्धिमानी है परंतु यथोचित खर्च भी न करना और कष्ट सहकर जोड़ २ मरजाना

यह बड़ी अज्ञानता है जैसा कि कहाभी है

दोहा ॥ कोड़ी २ माया जोड़ी जोड़ जमीं में धरता है ॥ जिस की लहनी सोई खाता सूम भटककर मरता है ॥ इस लिये हे भाईयो धन पायकर धन को धर्म कार्य अर्थात पूजा दानादि धर्म प्रभावना में लगानाही उचित है काहे से कि यही धन अर्थात लक्ष्मी दो प्रकार की होय है एक लक्ष्मी तो पुरुषन के भोगन में लगने से पाप के योग से सम्यक्त आदि गुण रूप ऋद्धि का नाशकरे है बहुरि एक लक्ष्मी दान पूजादि में लगने से पुण्य के योग से सम्यक्तादि गुणन को हुलसायमान करे है॥

गुलजारीलाल सभासद
जैन पुरुषार्थ सभा इटावा

पाठशालाका वार्षिकोत्सव

आज मिती श्रावण कृष्णा ८ रविवार ता० २ अगस्त सन १८९६ ई० को श्री मज्जैन पाठशाला प्रयाग का आठवां वार्षिकोत्सव लाला थारोरायजी रईस की धर्म शाला में सबेरे के ७ बजे पर बड़े आनद मंगल सहित हुआ सभा में अनुमान ५१ भाई बड़े और ३२ विद्यार्थी उपस्थित थे सभापतिका पद लाला शिवचरणलालजी बी० ए० वकील हाई कोर्ट को दिया गया था प्रथम लाला मुन्नालाल अध्यापक ने मंगलाचरण पढ कर सभा को स्थापित किया फिर मुझ तुच्छ बुद्धि ने अरिहन्त देव को नमस्कार करके और समस्त सभासदों को धन्यवाद देकर समय साहस और विद्या के विषय में करीब १ घंटे के व्याख्यान दिया और बड़े २ उदाहरणों से तीनों विषयों को दृढ किया ॥

उस को संक्षेप मात्र लिखता हूं यदि विस्तार पूर्वक लिखूं तो समस्त पत्र इसी मजमून से भर जावगा ॥

प्रथम मैंने समस्त भाईयों को जो सभा में आये थे उन से प्रार्थना की कि भाईयों समय बड़ा अमूल्य है इस को वृथा न खो कर आप के समय को शुभ कार्य में लगाना है ॥

भाईयों जो घड़ी बीत जाती है वह फिर प्राप्त नहीं होती और वह चाहे अच्छे काम में व्यतीत करो चाहे बुरे काम में वह कदापि नहीं मिलती इस लिये हम सब को उचित है कि शुभ कार्य का चिन्तवन सदैव करना चाहिये जिस से परमार्थ सुधरे इस लिये आज हम सब भाईयों को बड़ी खुशी करनी चाहिये कि आज परमात्मा ने वह घड़ी दिखलाई जिस से शुभ कार्य का बंध होता है और पापका नाश होता है इत्यादि बहुत तरह से समय की दृढता करी ॥

दूसरे मैंने साहस के ऊपर कहा कि मनुष्य को उचित है कि अपने साहस (हिम्मत) से कभी नहीं हटना चाहिये जो साहस करते हैं वह कभी नाकामयाब नहीं होते अर्थात उनका कार्य सदैव सि-

द्ध होता है जैसा नीत में कहा है ॥
उद्यमं साहसं धैर्यं बलं बुद्धिः पराक्रमः ॥ षडेते यस्य विद्यंते तस्माद्देवोपि शंकते ॥ अर्थात उद्यम दृढता,स्थिरता,बल,बुद्धि,और वीरत्व ये छह पदार्थ जिस प्राणी में विद्यमान होते हैं उस से देवता भी भय करते हैं भाईयों इस के कहने से मेरा यह प्रयोजन है कि साहस बड़ी चीज है जिस काम को करो इस बात का विचार न करो कि यह हमारा कार्य सिद्ध होगा या नहीं जैसा कि हमारे पुराने जमाने के जैनी भाई कहते हैं अर्थात काम प्रारम्भ किया नहीं कि उस का सिर पैर देखने लगे कि होगा या नहीं ऐसा करने से कार्य कभी भी सिद्ध नहीं होता और इसी की अपेक्षा अंगरेजों में कैसा साहस है कि आकाश और जमीन को एक कर दिया अर्थात अपने साहस से ही इस भारत वर्ष में आगये नहीं सैकड़ों जहाज और मनुष्य गारत होगये तिस पर भी अपने साहस को नहीं छोड़ा और हिन्दुस्थान में आही कूदे॥

दूसरा साहस देखिये कि जब अंगरेजोंने रेल चलाई तब उन को यह ख्याल पैदा भया कि हिन्दु लोग बड़े पाक होते हैं और छूआ छोत का विचार करते हैं हमारी रेल में मेहतर झाडूदय मेहतर और उत्तम जाते सब बैठेंगे किसी को मनाई न रहेगी तो हिंदू कैसे बैठेंगे लेकिन इन सब बातों का ख्याल न करके रेल चाला ही दी जिस के द्वारा सेकड़ों लक्ष रुपया पैदा कर लिये और करते जाते हैं यह सब साहसकाही फल है और भी साहस का उदाहरण है कि हमारे हिन्दू भाईयों ने नेशनेल कांग्रेस खड़ी की है और यह विचार लिया है कि हमारा कार्य अवश्यही होगा सो इसी साहस से उनका कार्य सिद्ध होता जाता है अब हिन्दुस्थानी मजिस्ट्रेट तक होने लगे जज होने लगे यह सब हमारे साहस की ही कर्तूत है यदि हम साहस करके ऐसी सभा न खड़ी करते तो क्या हम को ऐसे ओहदे या पद मिलनकी सम्भावना थी कदापि नहीं थी॥ ऐसे २ बहुत उदाहरण है जिस से दृढ होता है कि साहस भी कोई चीज है ॥
और भी सुनिये कि अब हमारे जैनी भाईयों ने एक साहस किया है कि जैन कालेज स्थापित करेंगे सो मैं जहां तक ख्याल करता हूं तो अवश्य हम लोगोंका कार्य सिद्ध होगा क्या मानी कि न हो जरूर हो— कहा है "हिम्मत मरदा मदद खुदा" भाईयों हमारा कार्य तो जरूर सिद्ध होगा हम लोगों में विद्या नहीं है सो इस का कारण यही है कि हम लोग विद्या के लाभ नहीं जानते इस लिये अब संक्षेप मात्र इस को भी वरनन करता हूं कि जिस देश में विद्या होती है वह देश सभ्यदेश के नाम से पुकारा जाता है उस के निवासी सदा आदर पाते हैं लक्ष्मी सदा हाथ जोड़े खड़ी रहती है जिस के पास विद्या है सर्वोपर धन है अगर धन न हो और

विद्या होयतो कभी दुखी न रहेगा विद्यापर देश में भी सहायता देने वाली है क्यों कि नीति में कहा है " विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं ग्रहेषु च ॥ व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्यच"॥
अर्थात परदेश में विद्या मित्र है घर में भार्या मित्र है रोगी को औषधि मित्र है मरे पर धर्म मित्र है— मनुष्य का मान और प्रतिष्टा का यही एक विद्या है जिस से होता है इस लिये सर्व भाईयों से प्रार्थना है कि विद्या को पढ़ो और पढ़ाओ ॥

और तन मन धन से सहायता करो मेरे कहन का मतलब यही है कि अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है अब भी जागो और घोर निद्रा को तजो और विद्या रूपी दान देउ और अपने पुत्र पौत्र आदि को पढ़ाओ नहीं यह तुम्हारा विद्या रूपी रत्न हाथ से चला जायगा तो किसी योग्य न रहोगे जैन धर्म में कैसे २ विद्वान पंडित संस्कृत के पाठी होगये और अपनी विभूती हम लोगों को शास्त्र द्वारा छोड़ गये हैं अब ऐसा समय आगया है कि संस्कृत के पाठी तो दूर रहे भाषा के भी पाठी नहीं दृष्टि पड़ते इस का यही कारण है कि हम लोग आलसी प्रमादी विद्या के तर्फ से हो रहे हैं अपने को जैन धर्म रूपी विद्या नहीं पढ़ाते शुरू से ही म्लेच्छ विद्या अर्थात बिस्मिल्ला शुरू करा देते है इसी से वह अपने मत में दृढ़ नहीं रहता फिर चाहे जितना उपदेश दीजिये असर नहीं करता बड़े ही खेद की बात है कि जैनमतमें जन्म लिया और यह नहीं जानते कि जैन शब्द का क्या अर्थ है और हम लोग क्यों पालते हैं हमारे यहां किस बात की मुख्यता है हमारे देवता का स्वरूप क्या है हमारा गुरु कोन है हमारा शास्त्र कोन है इत्यादि बातें जो जैन धर्म में होना चाहिये नहीं जानते इस का यही कारण है जो ऊपर वरनन किया हम को खूब याद है कि माड़वार देश में तथा राजपूताने में पहले २ लड़के को विद्या पढ़ाने को किसी लाला के या गुरु के बिठलाते हैं तो वह प्रथम उस को यह अक्षर शुरू कराता है कि ओ, ना, मा, सी अर्थात इस का शुद्ध २ शास्त्र से जाना जाता है तो यह अर्थ निकलता है ॥

ओ कहे ओ३म यह बीजाक्षर है इस में पंच परमेष्टी को नमस्कार हो जाता है

नम कहें नमः अर्थात नमस्कार हो॥

सीध कहें सिद्ध अर्थात सिद्धन को नमस्कार होउ इस के कहने से मेरा मतलब यह है कि जैन विद्या अनादि से चली आती है— यह हाल का नहीं है थोड़े दिनों से अब से हम लोग घोर निद्रा में हो गयेहैं लोप होगई है और होती जातीहै

इस लिये हे हमारे बांधवहो उठो जागो अपने समय को अमूल्य जान साहस को कामेंला विद्या के शरण आओ

और अपने मत के श्रद्धानी होउ अब में अपने लेख को पूरा करता हूं और सर्व भाईयों से क्षमा मांगता हूं कि मेरी बक २ में कोई अनुचित शब्द आये हों तो क्षमा करना

इस तरह मैंने व्याख्यान दिया फिर इसी को लाला मुन्नालाल ने दृढ किया फिर लाला लक्ष्मीचंद मिर्जापुर निवासी ने एकता के ऊपर कहा इस तरह दो घंटे बड़े आनन्द से बीते फिर बाद को पाठशाला की वार्षिक व्यवस्था सुनाई कि इस पाठशाला को स्थापित हुए मिती जेठ सुदी १२ सं० १९१२ को ८ वर्ष आनन्द मंगल मे पूर्ण हो गये अब भगवान से यही प्रार्थना है देश विदेश के जैनी भाईयों की सदा उन्नती हो जिन की सहायता से यह परिश्रम रूपी वृक्ष सदैव हरा बना रहे भाईयों इस पाठशाला में दोनो तरह की विद्या पढ़ाई जाती है अर्थात लोकात्तर विद्या और लौकिक विद्या दोनों की अति आवश्यकता है— लोकोत्तर विद्या अर्थात धर्म विद्या तो दिन भर पढ़ाई जाती है और इस का प्रबन्ध ठीक है और पाठशाला भी इसी विद्या के वास्ते खोली गया है परन्तु लौकिक अर्थात राज्य विद्या बगैर आज कल बड़ी कठिनता पड़ती है इस लिये यह सिर्फ २ घंटे पढ़ाई जाती है और इतनी इस पाठशाला में गुंजाइस नहीं कि दिन भर को मास्टर रक्खा जाय और इसी कारण से विद्यार्थियों की संख्या बढने नहीं पाती कई साल से १० ही विद्यार्थी चले आते हैं बड़े उठ जाते हैं छोटे २ भरती होते जाते हैं इस लिये आम सभा को उचित है कि इस की तर्फ ध्यान दे ॥

इस साल और कई सालों की अपेक्षा विद्यार्थियों ने धर्म शास्त्र आदि में अच्छी तर क्की की अर्थात १८ विद्यार्थियों ने धर्म शास्त्र में परिश्रम और सब पास हुए हिसाब में १४ विद्यार्थियों ने परीक्षा दी सिर्फ २ नाकाम याब हुए और सब पास हुए संस्कृत में ४ विद्यार्थियो ने परिक्षा दी और सब पास हुए अंगरेजी में ६ विद्यार्थियो ने परिक्षा और ५ पास हुए ॥

इस लिये हम सर्व भाईयों का लाला मुन्नालाल आदि अध्यपकों को धन्यवाद देना चाहिये फिर हम सर्व भाईयो को श्रीमान लाला गुलजारीलाल साहब को धन्यवाद देना चाहिये जो मंत्री और खजानची गीरी दोनो का भार लिये हैं ॥

इस के बाद यह सभा लाला उग्रसेन साहब रईस सहारनपुर को कोटिशः धन्यवाद देती है और जो इस की सहायता में ३६) साल देते हैं और पुन्य का भंडार भरते हैं हे भगवान ऐसे वालों को सदा चिरंजीव रक्खे और सभा लाला गुलजारीमलजी कानपुर निवासी और लाला निरोतमदास जी बनारस निवासी को धन्यवाद देती है जो १२) १२)६० साल इस पाठशाला की सहायता में देते हैं फि

हम सब सभासदान को लाला यादोराई आदि रईसों को धन्यवाद देना चाहिये जो सदैव इस पाठशाला की सहायता में अग्र-णीय बनते हैं—

इस साल पढाई का क्रम मुम्बई परीक्षालय के अनुसार रहा ३ विद्यार्थियों ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में और संस्कृत में परीक्षा भी दी है संस्कृत की पढाई भी बहुत कम होती है सो इस का भी कारण यही है कि आमदनी बहुत कम रहगई है अर्थात ७) रु० मासिक घटगई है बसबब एकत्रित न होने के सो बडे खेद की बात है कि धर्म सम्बन्धी कार्य में ऐसा किया. इस तरह एक घंटा इस तरह वार्षिक व्य वस्था सुनाने में बीता और एक बात और सुनाई गई कि विद्यार्थियों ने इस साल में इतनी चीजें पढा.

उच्चवर्ग वालों ने पंच परमेष्टी का पाठ संस्कृत सूत्रजी १० अध्याय रत्नकरण्ड श्रावकाचार सान्वार्थ समस्त पूजन संस्कृत वा भाषा समस्त.

संस्कृत में कातन्त्ररूपमाला पंच सन्धी धातु रूपावली समाप्त छोटवर्ग वालों ने दर्शन नाम २ चौबीसी इष्ट छत्तीसी पंचमंगल छहढाला भाषा पूजा आदि ज्ञानोदय प्रथम वा द्वतीय भाग. फिर पाठशाला का हिसाब सुनाया—

मिती आषाढ वदी १ सं० १९९२ से मिती दूजे जेठसुदी १९ सं० १९९३ तकका

जमा

२४४ —) गई साल की रोकड़बाकी

१७६।) आमदनी चंदे की १३ मास की

२९) रु० भंडार खाते जमा जो बाहर के भाई देगये तथा विवाह में आया

२७।।।≤)।। ब्याज जो वसूल हुआ

४७७।)।।

खर्च

२११) रु० अध्यापकों की तनखा

७) रु० पंखाकुली की तनखा

१०≡) खरीज खर्च

२३८≡)

२३९ —)।। रोकड़ बाकी रही

२१२ ≡)। ब्याज में लगायागया

२६।।≥)। रोकड़ नगद

४७७।)।।

द० गुलजारीलाल खजानची
श्रीमज्जैन पाठशाला
प्रयाग

भाईयो इस साल कुल चंदा आया होता तो ३३७।) होते मगर १७६।) रु० प्राप्त हुआ और ८८≥) चंद भाईयों ने बंद करदिया और ७२।।।=) बाकी भाईयों पर रहा और २३८=) खर्च हुआ अर्थात खर्च से चंदा ९१।।। ≡) कम प्राप्त हुआ यदि उस साल परदेशी भाईयों से तथा सूद में ९६।।। ≡)।। न आता तो आमदनी से ज्यादा होजाता इस साल कुल आम-

दनों मिलाने से ४॥ ≡)॥ का घाटा हुआ ॥

इस तरह सब हाल सुनाया फिर सभापति साहब ने प्रबंध कर्त्ताओं को धन्यवाद दिया और अपने हाथ से सब विद्यार्थियों को पारितोषिक दिया ॥

अद्भुत नाटक

सभा में श्रोता और विद्वान और भगवान के भजन गानेवाले इत्यादि सर्व प्रकार के भाई विराजे हैं और अनेक प्रकार की धर्मवार्ता कररहे हैं जिस से सर्व जनों के कमल रूपी हृदय धर्मरूपी सूर्य्य की किरन लगने से ऐसे प्रफुलित होरहे हैं जैसे चांदनी के निकलने से कमोदनी के गण खिलजाते हैं इसी भांति वार्ता होरही थी कि थोड़ी देर बाद भजन गानेवाले भाईयों ने यह कहा ॥

भजनगाने वाले— अगर सब साहिबों की मर्जी हो तो अब गम्पति प्रारंभ करें क्योंकि योग चौदस तो होही चुकी है और भादों भी नजदीक है इस मे अभी से कभी २ इस उत्सव का नंबर लगाना चाहिये ॥

बुद्धिजन— बड़े हर्ष की बात है यहांपर तो लाला सुरेंचनदास आपही की दम से मंदिरजी में आनंद वर्तता है नहीं तो कौन करता है ॥

सुरेंचनदास— अच्छा तो लहमखोर आजद तबलची को जो ढोलक भी अच्छी बजाता है और मनसुखा बेड़िया को जो सारंगिया है यह दोनों शख्स हरामिन रंडी के यहां साज बजाते हैं इन को बुलाकर कहिदेना चाहिये कि कल से मंदिरजी में आजायाकरें और पूजन पाठ भी साजपर हुआकरै तिस पीछे भजन हुआकरें ॥

श्रोताजन— यह तो बड़े अनर्थ की बात है लेकिन विद्वानों को इस का कुछ भी ख्याल नहीं है कि भडुवे और बेड़िये जो अन्य स्पर्श शूद्र हैं उन को मंदिरजी में बुलाना और साज बजवाना ॥

सुरेंचनदास—विद्वानों को किस बात का ख्याल नहीं—

बुद्धिजन—यही तबला सारंगी मृदंगादिक चर्म के वाजित्र अपवित्र मंदिरजी में बजाना और अन्य स्पर्श शूद्रों का मंदिरजी के अन्दर आजाना बडी विपरीति और अनर्थ है—

सुरंचनद इत्यादि गाने वाले—यहां कितने बाजे हैं देखो शास्त्रजी के द्वारा साक्षात यह मालूम होता है कि गंधर्वादि बडे २ देवता भगवान के सामने नाना प्रकार के साड़े बारह किरोड़ के बाजे बाजाते थे और नृत्य गान करते थे और आपने अन्य स्पर्स शूद्रों की निसबत कहा सो यह तो पहिले से बजाते चले आते हैं और मंदिरजी में

जाकर कुछ छूते भी नहीं हैं बल्कि अपना साजला अलहिदा बजाकर चलेजाते हैं इस में क्या हरज और अनर्थ है ॥

श्रोताजन—इस में क्या शक है यह रीति तो हमारे बजुर्गों से चली आती है लेकिन हे भाई इस का विचार हम कोभी करना चाहिये और शास्त्रजी में बाजे बजाना तो लिखा है लेकिन चर्म के मढ़े बाजे बजाना कौन से शास्त्र में लिखा है और इन्द्रादिक उत्तम देवता बाजे बजाकर नृत्य गान करते थे तो फिरआप क्यों मुसल्मानों से जिन के छूजाने से नहाना योग्य है मंदिर में लेजाकर साज बजवाते हो अब मुझ को बड़ा भय मालूम होता है कि हम और हमारी संतान ऐसेही अशुभ विचार कर २ के इन्द्र की जगह भगतुओं और देवांगना की जगह कहीं बेश्या नृत्य करा उठें क्योंकि मंदिर का समान बिना छुए यह भी अपना करतब कर चले जांयगे आप के नजदीक उस में कुछ नहीं तो इस में भी क्या है ॥

तानसेन गानेवाले—अच्छा साहब अब हम अपने हाथोंही से साज बजा २ कर भजन गाया करेंगे और अपना सब समान अलहिदा बनवाकर मढ़वा लेंगे—

दयालचन्द श्रोता—तो फिर इस में फायदा क्या हुआ जिस वक्त आप अपना साज मढ़वाने जांयगे गोया एक पंचेन्द्री जीव का घात कराने जांयगे इसी तरह से जब साज मढ़ने वाले के यहां खाल न रहैगी तो वह पंचेन्द्री का घात करके और तैय्यार करलेगा यानी तुम्हारेही साज के कारण तैय्यार करेगा तो तुमपर दोनों हालत में एक पंचेन्द्री जीव के घात का पाप पड़ा और देखो ऊन जो खाल से उत्पन्न होती है उस का वस्त्र पहनकर मंदिर में जाना मने है तो फिर खाल जो हाड और मांस से लगीहुई अशुचि बस्तु है सो कैसे मंदिर में जाना योग्य है और अन्य स्पर्श शूद्रों की निस्बत जो २ बातें जैनी भाई करने लगे हैं वह क्या आपने नहीं सुनी ॥

गानेवाले—हिचकिचाकर नहीं तो साहब वह कौनसी बातें है—

दयालचंद श्रोता—इन तबलचियों ही के लेजाने से यह बातें उत्पन्न हुई सुनिये जिन भाईयों के पाठ या और कोई मंदिर सम्बन्धी रचना होती है तो उन में से एक भाई मियां साहब के पास जाकर कहता है कि चलिये साहब रचना देखलीजिये वह जवाब देते हैं अच्छा आवेंगे तब यह भाई थोड़ी देर बाद फिर जाते हैं और कहते हैं—कि अब तो चलिये साहब सब

वह कहते हैं अच्छा भाई चलो चलते हैं और बाज़ भाई वेश्या को मंदिर में लेजाकर कहते हैं यह चौकी है यह बेदी है यहां शास्त्रजी हैं इत्यादि सर्व बातें बताते फिरते हैं जब उन से कोई कहता है कि आपने यह क्या अनर्थ किया तुम को तो हम ऐसा नहीं जानते थे तो उत्तर देते हैं कि मुसलमान बजाने वाले नहीं चले जाते हैं इस में क्या हुआ ॥

गानेवाले—ओफ्फो (जैसे कोई सोते से जागता है) ऐसी २ विपरीतें होने लगीं धिक्कार होउ हम इन पापों में भी शामिल रहे छी छी अब आज से हम अन्य स्पर्श शूद्रों को मंदिर में कभी न लेजांयगे ॥

मूर्ख—लेकिन यह तो बतलाईये कि बिना साज के नृत्य गान कैसे होगा शुद्धालाप भी तो नहीं निकलेगा और किसी का मन भी प्रफुल्लित न होगा इस से न कोई नृत्य गान करैगा और न कोई देखने को आवेगा बल्कि इस रीति से तो प्रत्येक जगह का नृत्य गान बंद होजायगा ॥

सीतलदास श्रोता—हमारा अभिप्राय बंद करने का नहीं है बल्कि हमारी राय तो यही है कि धर्म्म कार्य्य में दूना चौगुना उत्सव हुआ करै लेकिन शुद्धताई और विनय के साथ (इतनी कहने पाये थे कि)

मूरखमल—(क्रोध सहित बोले)अच्छा तो विनय कैसे होय पंडितों का तो यह कायदा है कि आदमी से मारडाले चींटी की रक्षा करै कहो ढोलक मढ़वाने में हमारे ऊपर क्या पाप रहा कुछ हम जीव हत्या करेंगे हम तो दाम देते हैं देखें अब कहां २ तबला की थाप बंद होजायगी—

गिड़बिड़दत्त—(गुस्से में आकर जिधर चाहा विधर झुकपड़े)—सुनतोलेउ पहले दूसरे कहने न पाये अपनी धूम दी समजी न बूझी तोलो बोल उठे खरी कहने से सब को बुरी मालूम होती है ऐसा कोई नहीं दीखता जो उस काम को करे चलते काम में सब नुक्स निकालते हैं बताओ शुद्ध बाजे कैसे मढेजाते हैं जरा टुक ध्यान देकर देखो कि हाड के बटन सीप के बटन कुरते अचकनों में लगाकर श्री मंदिरजी कौन नहीं आता और निकट भगवान के जाते तो चाम से हाड शुद्ध मालूम होता है

मूरखमल—तो क्या सीप भी हाड है हम ने तो जैनी भाईयों को ताकत की दवा में खाते सुना है इस को फूंककर खाते तो अब मंदिर में लाना कहां रहा ॥

सीतलदास—इसी से तो हम कहते हैं कि जबतक सभा नहीं थी तबतक ये

बातें कैसे मालूम होती ॥

बुद्धिजन—भाई साहब रास्ती से वार्त्ताकरना चाहिये सीप तो प्रत्यक्ष हाड है अब में इन अनाचारों को विशेष कहांतक कहूं ॥

गिड्बिड्दत्त—हमने क्या किसी के लट्ठ मारा हम तो कहते हैं कि फिर बाजे कैसे बजे ॥

सीतलदास श्रोता-देखो हमेशा से कैसे मनोग्य और पवित्र बाजे चले आते हैं जिन में सोने रूपे-पीतल-अथवा रेशम के तार लगते हैं और कपड़े से मढे जाते हैं रेशम और सून की डोरी से कसे होते हैं उन के देखने से आश्चर्ज होता है ॥

मूरखमल—ऐसे बाजे तुमने ख्वाब में देखे होंगे हमने तो सुने भी नहीं—

बुधजन—अरे तुम्हारे न सुनने से क्या बाजों का अभाव होजायगा—परसाल लश्कर के श्री जैन मंदिरजी में जो मथुराजी के मेले में आये थे कैसे शुद्ध बाजे थे जो कपड़ा और रेशम से मढे हुए थे ॥

मूरखमल-अजी साहब कहीं कपड़ा भी चाम की आवाज देगा ॥

सीतलदास-हाथ कंगन को आरसी क्या बनवाकर देखिये ॥

मूरखमल-किसी की सामर्थ न हो तो कैसे ऐसे बाजे बनवावे ॥

सीतलदास—जो भूखलगे और भोजन तैय्यार न हो तो क्या अशुचि वस्तु भखे कदापि नहीं और तुम्हारी सामर्थ इस बात में है कि शुद्ध मारग को दूषित करोगे जिस्से आगामी परंपराय बिगाड़ोगे ॥

मूरखमल—लो साहब परंपरा बिगड़े सो मतकरो चलो भाई यह नहीं बजाने देते और न गाने देते हमारे रंग में भंग करते हैं इस का पाप इन के जिम्मे रहेगा ॥

इस के बाद सब श्रोताजनों ने सभापति से कहा इस बात की सफाई होनी चाहिये फिर सभा में यह बात पेश हुई सब सभासद मंत्री उपमंत्री आदि सबने अपनी २ राय से यही बात साबित की कि अशुचि बाजे और अन्य स्पर्श शूद्रों का मंदिरजी में जाना बंद रहे और जबतक कपड़े की ढोलक या मृदंग न तैयार हो तबतक और बाजा ढोलक की जगह बजाना चाहिये और बजाने वाले जबतक जैनी भाई मिलें तबतक और कोई न बुलाना चाहिये इन के बिना गंधर्व जिन को भोजकी या जाचकी कहते हैं बुलाना चाहिये और अपने पुत्र पौत्रादिकों को भी वादित्रों का महावरा कराना चाहिये और ढोलकआदि वादित्रों के वास्ते नोटिस जैन गजट में छपादो कि जहां

पर तैय्यार होसके कोई भाई जल्द तैय्यार कराकर रवानह करें धर्म स्नेह पूर्वक—जो लागत ढोलक के मढने में लगे यहां से भेजी जायगी इसी व्याख्यान को सुनकर सब सभा प्रफुल्लित होगई और सभा को धन्यवाद दिया और गाने वाले भाईयों के परिणाम अभी तो कषाय रूप हैं लेकिन जब कपडे का मढा साज देखकर ममता जलकर शीतल होजायंगे ॥

भाईयों का शुभचिंतक
उलफतराय विद्यार्थी
मिथ्यात्व विदारनी जैन सभा
अलीगंज जिला एटा

मार्ग में शुभकार्य

मैं जैपुर से बम्बई की परीक्षा दे कर अपने परम धर्म स्नेही भाई हरीसिंहजी से मिलने के लिये मंडावरा में आया था वहां के सर्व जैनी भाईयों से सभा होने की प्रार्थना की तो सर्व भाईयों ने स्वीकार किया और श्रावण शुल्का दोज को सभा हुई जिस में अनुमान ८७ आदमियों के एकत्र हुए— सर्व भाईयों की आज्ञानुसार मैंने धर्म के विषय में व्याख्यान दिया और दूसरा ऐक्यता के विषय में दिया और व्याख्यान होने के पश्चात मैंने गजट मंगाने को सर्व भाईयों से प्रार्थना की सो सबने स्वीकार किया और १ जैन गजट श्री मंदिरजी के नाम से मंगाया गया है और दूसरी सभा श्रावण शुक्ला १९ को हुई परन्तु एक बडे खेद की बात है कि यहां पर दुष्टनी फूटने अपना बल दिखाया है इस के निवारणार्थ १ उपदेशक महाशय को यहां अवश्य भेजना चाहिये—कुरीति और फिजूल खर्ची के रोकने को भी कहा गया तो निम्न लिखित महाशयों ने यह प्रतिज्ञा की कि हम न तो रंडी का नाच देखेंगे और न अपने यहां विवाह आदि कार्यों में बुलावेंगे—सवाई सिंगई टूडे—सवाई सिंगई सुखलाल—सवाई सिंगई ब्रजलाल—सौरिया दौलतराम साह—सौरिया बहोरेलाल साह, सिंगई कालूराम सिंगई रबुदे, इन सम्पूर्ण महाशयों को मैं कोटिशः धन्यवाद देताहूं कि जिन्हों ने वेश्यानृत्य का त्याग किया है ॥

गणेशीलाल साठी

समालोचना

आज हम अपने पाठकों को खुशी के समाचार अति आनंदित होकर सुनाते हैं कि हमारी जैन जाति का हित चाहने वाले जैनहितैषी पत्र का पुनर्जन्म हुआ अब की बार का कागज और टाइप दोनोंही अति सुन्दर अपने साथ लेकर जैन जाति के सुधारक उपदेश देने को भ्रमण करता हुआ आज हम को प्राप्त हुआ है—जैन हितैषी बिना जैन जाति का हित कौन करसक्ता है जिस के लेख अति उत्तम भाषा सरल मनोहर व्याख्यानों का प्रकाश करना इस

का प्रकाश करना इसका मुख्य धर्म है मूल्य बहुत थोड़ा साल भर का (1) रुपया है इस पत्र की जहां तक प्रशंसा की जावे थोड़ी है पहले यह पत्र ग्राहकों से सहायता न मिलने के कारण बन्द हो गया था अब की बार आशा है कि हमारे भाई अवश्य इस उपकार कर्ता की सहायता करते रहैंगे ॥

जैन तीर्थोंका प्रबन्ध

आप का जैन गजट क्या है प्रमाद रूपी निद्रा में सूते हुये प्राणीन को जाग्रत करने में दुंदुभी समान घोर ध्वनी करता है आप के १६ जौलाई अंक ३० में जो लेख तीर्थ यात्रा के विषय में था उस को बांच कर जैनी मात्र का हृदय हुलसायमान होता है कि तीर्थों का क्या प्रबन्ध है यह समाचार जैनी मात्र सुनने के अभिलाषी हैं तथा जो तीर्थों के प्रबन्ध से भेदू है सो अवश्य उत्तर लिखेंगे जो जैनी जान कार होकर भी उत्तर नहीं देवेंगे वह प्रानी नाम मात्र के जैनी हैं सच्चे धर्मात्मा नहीं इस कलकत्ता नग्र के पास २ तीर्थ हैं श्रीसम्मेद सिखरजी १ दूजा श्री चम्पापुरजी आज हम सामान्य तीर्थों को छोड़ कर तीर्थ राज के विषय में कहते हैं जिस तीर्थ का नाम लेने से अनेक जन्म के पाप कटते हैं जिस तीर्थ का एक बार दर्शन करने से नर्क तिर्यंच गतिका बन्ध नहीं होता है उसही पवित्र तीर्थ का उल्लेख करते हैं श्रीसम्मेद सिखरजी में तीन मंदिर हैं तिन में एक का प्रबन्ध स्वेताम्बर भाई करते हैं और एक नालीका मंदिर है सो आरे वाले भाईयों के जिम्मे है प्रबन्ध प्रशंसनीय है तीसरे मंदिर का प्रबन्ध कलकत्ते के एक जैनी भाई करते हैं एक वह समय था कि जिस की आमदनी से आठ मंदिरों का खर्च चलता था कलेकत्ता तथा फीरोजाबाद जिला आरा की रथयात्रा का खर्च भी इस में से ही होता था आज यह समय है कि उस मंदिर की भी मरम्मति तक नहीं होती तमाम धर्मशाला टूटी पड़ी है वह भी नहीं चमसकी पैदा वारी अब जगह रेलके कारन जादाह है जहा से कोई यात्री नहीं आता था अब वहां से हजारों जैनी आते हैं रोज मेला भरा रहता है भाई लोग जानते होंगे कि मरम्मत में नहीं लगता तो कुछ कोश बढ़ता जाता होगा सो कोश का हाल सुनिये जिस वक्त बाडम साहब चाह वगीचे वाले ने एक कारखाना चरबीका खोलाथा जिस के वास्ते हजारों शूकर पाले थे एक कल से जिंदा शूकर को मार मार चरबी निकालने का बंदोबस्त किया था यह महा हिंसा का नाम सुन कर जैनी मात्रका हृदय कांपताथा कि हा दैव हमारा ऐसा धर्म और हमारे ही तीर्थ में यह अन गिनत जीवों का घात होगा जैनी के सन्मुख एक प्राणीका कष्ट नहीं देखा जाता है अब ऐसी राक्षसी लीला देखनी पड़ी जिस के

लिखने में लेखनी के भी आंसू काले निकलते हैं उस घृणित कार्य के बन्द करने में श्वेताम्बर लोगोंने बड़ा साहस किया था हजारों रुपया खर्च करके उस भयंकर काम को रोकना चाहाथा कोर्ट में अपना दुख हाकिमों को सुनायाथा उस वक्त दिगम्बरों की तरफ से कुछ नहीं हो सका जब कलकत्ते के पंचोंने प्रबन्ध करता से कहा सुना तब यही जवाब मिला कि रुपया नहीं है लाचार हो कर पंचोंने चिट्ठा भी भरा तब तक तीर्थ के अतिशय से उस काम के चलाने वाले स्वय मेव नष्ट होगये अब किसी वक्त कोई काम पड़े जावे तो बिना रुपया कुछ नहीं होगा ऐसे महान तीर्थों में ऐसा कोश जमा होना चाहिये कि जब कहीं और सामान्य तीर्थों में भी काम पड़े उसी वख्त वहां से सहायता मिले जैसा कि हमारे श्वेताम्बर भाई करते हैं जैनियों का ऐसा उत्तम तीर्थ कोई नहीं अनादि काल से तीर्थंकर बराबर इसी क्षेत्र से मोक्ष को गये हैं और आगामी यहां से ही जावगे धन्य पंचम काल की महिमा जो इस तीर्थ की यह दशा है जिसके सुनने से जैनी मात्र का आंसू निकलता है हम लोगों की महा सभा से यही प्रार्थना है कि तीर्थों का प्रबंध महा सभा की तरफ से होवे जब महा सभा ऐसे अनर्थ कार्यों का विचार नहीं करैगी तब और कौनसा कार्य्य करैगी जैनी मात्र से निवेदन है कि श्री सम्मेद शिखरजी की तरफ ध्यान देवे इस लेख को आप अपने जैन गजट में प्रकाश कीजिये जिससे जैनी मात्र श्री सम्मेद शिखरजी के इंतजाम से वाकिफ होवे आयन्दा वहां की उन्नति तन मन धन से करना चाहिये इति ॥

जैन सभा अमरतल्ला कलकत्ता।
नम्बर १००

—•—

धर्म गोलक

हम अपने यहां के जैनी भाईयों को कोटिशः धन्यवाद देकर आशा करते हैं कि अब धर्म की उन्नति होगी क्योंकि आज मिती श्रावण वदी १४ सम्वत १९५३ को सातवीं सभा हुई और उस में गोलक सहायतार्थ महा विद्यालय रक्खी गई और उस में अनुमान ।≈)॥ आने के आये और आशा है कि इसी तरह प्रत्येक सभा में प्रगट होगा ॥

लखपतराय मथुरदास
नवाबगंज बारहबंकी

श्रीः

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमन्दिरजी
में सब भाइयों को ज़रूर पढ़कर सुना दीजिये

इस पत्रको सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैनगज़ट

मूल्य एकवर्षका डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गज़ट जगमें करे, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तमको नाश ॥

हर अंगरेज़ी महीनेकी १-८-१६-२४ ता० को
बाबू सूरजभान वकीलके प्रबन्ध से
देवबन्द ज़िला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष | ता० १६ सितम्बर......सन् १८९६ | अङ्क ४१

गुर्जर प्रेस—मथुरामें प्रकाशित हुआ

जैन गजट की सहायता

जैन गज़ट से ज़ाति और धर्मकी उन्नतिकी पूरी २ सम्भावना है इसही के द्वारा हमारे सब कारज और मनोर्थ सिद्ध होंगे॥ जैन गज़टकी सहायता करना जैनियोंका परम धर्म है॥

जैन गज़ट की सहायता किस प्रकार होसक्ती है?

(१) जैनगज़टको आप मँगाना
(२) अन्य भाइयोंको जैनगजट मँगानेकी प्रेरणा करना॥
(३) जैन गजट सब भाइयों को पढ़कर सुनाना॥
(४) जैन गजटमें छपनेके वास्ते उत्तमोत्तम मजमून और अपने नगर और देश के समाचार जैन जाति सम्बन्धी लिखकर भेजना॥
(५) अपने मित्रों को जो अन्य नगर और देशमें हों जैन गजटकी सहायताके वास्ते लिखना॥
(६) जैन गजटका मूल्य अपन… और अन्य भाइयोंसे ले… भेजना॥
(७) अन्य जिसप्रकार जैनगज… की सहायता होती हो तन म… धन से करना जैनगजट स… जैनीभाइयोंको अवश्य मँगा… और यह गजट पढ़ना बाल… पुरुष स्त्री सबके वास्ते उपयो…

मूल्य केवल ३)रु० एकबर्ष

जैन गजट की सहायता … समय भादव मास श्री दश ल… क्षणी पर्वसे अच्छा और को… नहीं मिल सक्ता है इस कार… जहां तक हो सके इस सम… कोशिश करनी चाहिये॥

जैनगजटका प्रथमवर्ष समाप्त होने वालाहै दूसरे बर्ष के वास्ते जैनगजटका मूल्य भेजनेका यह मौका बहुत अच्छाहै क्योंकि पर्व के दिन हैं सबका अनुराग धर्म में पूरा २ लग रहाहै फिर पीछे मुश्किल पड़ैगी॥

के योग्य होजाताहै जो कार्य नीच जाति के पुरुष भी नहीं करते हैं वह काम हमारी उज्जल और प्रतिष्ठित जातिमें होने लगे हैं ॥ हाय हम लोग जानते हैं कि अमुक पुरुष का आचरण खोटाहै परन्तु हम कुछ नहीं कर सक्ते हैं क्योंकि हमारी जाति में पंचायत नहीं रही है ॥ नाना प्रकार की दुखदाई रीति मिथ्यात्व फज़ूलखर्ची आदिक का प्रचार हमारी जाति में पंचायत के हीन होने के कारण हुआ है ॥ परोपकारी और बुद्धिमान् भाई बहुत सी बातों का प्रबन्ध बिरादरी में करना चाहते हैं परन्तु पंचायत तो है ही नहीं प्रबन्ध किस प्रकार करें ॥

भाइयो यदि यहहीदशा रही और पंचायतका फिर प्रचार न हुआतो यह उत्तम जाति अत्यन्त नीच जातिहो जावेगी इस कारण मनमें पहले पंचायतका प्रचार करो ॥ पंचायत का प्रचार जो पहले समयमें था वह क्यों बन्दहुआ इस बात पर पहले विचार करना चाहिये ॥ इसका कारण जहां तक हमने बिचार कियाहै यह आतहै कि धनाढ्य पुरुषों ने अपने धन के घमण्ड में आकर और हानि लाभ को न विचार कर के मन माना कार्य करना प्रारंभ किया बिरादरीके बहुतसे भाइयोंने जिनको धनाढ्य पुरुषों से कुछ लाभ होताथा लोभ बस होकर उन का साथ दिया और यदि किसी भाईने कुछ झगड़ा उठाया भी तो उन के साथ विरुद्धता की ॥ ऐसी दशा देखकर उन भाइयों को भी जो धनाढ्य नहीं थे हौंसला हुआ और वे भी इच्छानुसार कार्य करने लगे और पंचायतकी तरफसे भय दिखाया जाने पर यह कह दिया कि अमुक धनाढ्य पुरुष ने पंचायत के नियम विरुद्ध कार्य कियाथा पहले उसको दंड देलो पीछे हमको दंडदेना फल इसका यह हुआ कि पंचायतका तरीका ही जाता रहा और सब निर्भय स्वच्छन्द होगये किसी का डर न रहा जो चाहें सो करें और जो चाहें न करें भाइयो इस से स्पष्ट ज्ञात होताहै कि पंचायतका सिलसिला तोड़ने के हेतु हमारे धनाढ्य शिरोमणि भाई और उनके सेवक हुएहैं हाय हाय बड़े आदमियों से प्रतिपालना और रक्षाकी आशा होतीहै परन्तु इस समय इस के विरुद्ध होता है ॥ भाइयो पंचायत के न होने से धनवान् और निर्धन सबकोही नुकसानहै इस कारण प्राचीन मार्गको फिर खोलना चाहिये फिर पंचायत का प्रचार होना चाहिये पंचों को भी यह चाहिये कि वह किसी का पक्ष न करें ॥ भाइयो अब आप सब भाई इस नगर के एकत्र हो इस कारण जिस प्रकार होसके अब आपको पंचा-

यत का प्रबन्ध करलेना चाहिये और पंच नियत करलेने चाहिये जिनकी संमति से बिरादरी के सब कार्य हुआ करें ॥

उपदेशक भंडार

हे सज्जन धर्मात्मा भाइयो यह बात आप को भलेप्रकार मालूम होगई है कि आजकल धर्मका प्रचार जैनियों में बहुत कम होगया हमलोग अज्ञान निद्रामें सोगये हैं इस कारण हमारे जगानेका अवश्य कोई उपाय होना चाहिये ॥ परोपकारी भाइयों आपको यहबात भी मालूम होगई है कि इस समय इससे अच्छा और कोई उपाय धर्मोन्नतिका नहींहै कि विद्वान् उपदेशक देशविदेश घूमकर अपने सदुउपदेशों से जैनियोंको धर्मकी तरफ लगावैं ॥ बडे हर्षकी बातहै कि उपदेशकभंडार अनुमान एकवर्षसे नियत होगया है और उपदेशक परोपकारार्थ देशाटन करने लगे हैं ॥ उपदेशक के पधार नेसे जोजो शिक्षा प्राप्त होतीहैं जोर धर्मलाभ होता है कितना उत्साह बढ़ता है कैसी २ उमंग धर्मोन्नति की पैदाहोती हैं किस प्रकार अंधकार का नाश होता है जैनधर्मका प्रचार होता है इन सब बातों को वहही जानते हैं जिनके नगर मैं उपदेशक साहबों का पधारना हुआहै ॥ हे भाइयो घोर निद्रासे जगाने वाला और सच्चे धर्मका स्मरण कराने वाला मिथ्यात्व को देशनिकाला देने वाला विद्याका प्रचार करने वाला मूर्खताका प्रहार करने वाला कुरीतियें फजूलखर्ची रंडी भडुओं का नाच आदि दुष्ट व्यवहारों का खण्डन करने वाला जैनमतकी प्रभावना बढ़ानेवाला कारण एक उपदेशक का उपदेशही है ॥ हमको इस विषय मैं अधिक कहनेकी जरूरत नहींहै क्यों कि हमारे भाइयोंको उपदेशक का अकथनीय लाभ बिदित होगया है हमारे भाइयों ने जानलियाहै कि उपदेशक केही द्वारा हमारे सब मनोर्थ धर्मोन्नति और जातोन्नति के पूरे होसके हैं क्योंकि आजकल हरएक स्थानके भाई इसका बहुत बड़ा तकाजा करते हैं कि उपदेशक साहबको जरूर हमारे नगरमैंभी पधारना चाहिये क्योंकि हमारे यहां धर्मके बिरुद्ध बहुत कार्य होरहे हैं वह सर्व उपदेशक महाशयके पधारनेसे ठीक होजावेंगे किसी जगह से भाई लिखते हैं कि हमारे यहां धर्मकी न्यूनता होरही है उपदेशक का आना आवश्यक है इस प्रकार अनुमान सर्व नग्र ग्रामके भाइयों ने उपदेशक के पधारने की इच्छा है और क्यों इच्छा न कीजावे जबकि यह बात साफ दीखरही है कि अब जहां २ उपदेशक महाशय का दौरा होगया है वहांकि सब विघ्न नष्ट होगये हैं बैर बिरोध दूर होगयाहै भाइयोंको धर्मकी लग्न होगई है और जैन धर्म का चमत्कार होगया है जिसके उजियाले मैं सब भाइयो को अपनी दशा दृष्ट आगई है और अपने सुधारके उपाय मैं लगगये हैं ॥ भाइयों यद्यपि उपदेशक नियत होगये हैं और देशाटन भी करने लगेहैं परन्तु बहुतही कम स्थानों मैं इस एक बर्ष के भीतर पहुंच सके

हैं इस कारण यहही है कि उपदेशक बहुत कम नियत हैं ॥ भारतवर्ष बहुत बड़ा भारी देशहै पंजाब हिन्दुस्तान बंगाल राजपूताना बम्बई मन्दराज आदि देश जिसके टुकड़े हैं और जैनीभाई सबही मोतमैं रहते हैं और सबही देशोंमें जैन उपदेशक भंडार की सहायता होतीहै परन्तु आप सोच सक्के हैं कि दोचार उपदेशक इतने बड़े देशके वास्ते क्या कारज कारी होसक्के हैं यद्यपि उन्होंने बहुत कुछ उद्यम किया और अपने वित्तके अनुसार बहुत कुछ कर दिखाया भाइयों आप इसबातको स्वीकार करैंगे कि यदि प्रत्यक जिलेमैं एक २ उपदेशक होजावें तो कितनी बड़ी भारी उन्नति हो वह जिलेके उपदेशक थोड़े २ दिनों पीछे एक जिलेसे दूसरे जिलेमें बदले जाया करैं इसकारण कि नवीन२ उपदेशकों के उपदेश सुनेमैं आया करैं ॥ अहा हाय यदि ऐसा हो जावेतो जैनमतके भागहीन उदय आजावैं फिर तो वह उन्नति हो वह जैनमतका डंका बजे कि जिसकी उपमा नहीं दी जासक्की है फिर तो सारी मनोकामना सहज ही मैं पूरण हो जावें ॥ अन्य कलूषित मतों का झंडा जो आजकल लहरा रहा है गिर पड़े और उसके स्थानपर जैनमत का झंडा खड़ा होवे सैंकड़ों अन्य मती भी जैनमत पर श्रद्धान ले आवें और जैनी लोग जो आजकल नामके जैनी हो रहे हैं सच्चे जैनी हो जावें ॥ हे भाइयो यह बात निश्चय जानलो जितने अधिक उपदेशक होंगे उतनाही जैनधर्म का प्रचार होगा परन्तु हे हमारे उदारचित्त जैनियों क्या यह बात तुम्हारे वास्ते असम्भव है कि इतने उपदेशक नियत होजावैं कि एक२ जिले मैं एक२ बांट दिया जावे भाइयो आपके वास्ते यह बात कुछ मुशकिल नही है एक जरासा ध्यान इस ओर चाहिये आप हजारों रुपया विवाह आदि मैं व्यर्थ खोदते हैं जिससे किसी कारन की सिद्धि नही होती है आप धर्म मैं धन खर्च करने मैं भी बहुत मशहूर हैं आप अपना और पराया उपकार करना मनुष्य का धर्म समझते हैं आप सच्चे दानके अर्थ को समझे हुवे हैं आपके वास्ते कुछ मुशकिल नही है ॥ आप जानते हैं उपदेशकों को बेतन और सफर खर्चके देने की जरूरत है और इस के वास्ते बहुत कुछ द्रव्य चाहिये इस कारण उपदेशक भंडार की सहायता द्रव्यसे बहुत ज्यादा करनी चाहिये आपको मालूम होगा कि प्रथम हमारे परम परोपकारी **डिप्टी चम्पतराय साहब** की कोशिशसे यह उपदेक भंडार नियत हुवाथा और बहुत से शुभचिंतक उपकारी भाइयो ने धनसें इस भंडार की सहायता कीथी परन्तु उन भाइयोंसे केवल एकही वर्ष के वास्ते यह साहायता कीगई थी और यह आशा कीगई थी कि उपदेशकों के देशाटन का लाभ देखकर हमारे धर्मात्मा भाई अपने आपही इस भंडार को चिरस्थाई रखने की कोशिश करैंगे ॥ भाइयो आपको यह भी मालुम होगा कि पिछली जैन महासभा मैं यह विद्याकय भंडार महासभाके सुपर्द करदिया गयाहै और महासभाको

के द्वाराही इसका प्रबन्ध होता है ॥ प्रथमवर्ष हमारे परम परोपकारी भाइयोंकी सहायता से जो थोड़ासा धन संचय हुवाथा उससे तो दो चार उपदेशक नियत होसक्तेथे सो एसाही किया गया और जिसतरह बना सालभर तक का काम चलायागया इस कारण अब फिर सहायता की जरूरत हुई है परन्तु अबकी बार सहायता ऐसी होनी चाहिये कि जिससे इतने उपदेशक मुकर्रिर होसकैं जो सर्व नगर ग्रामों मैं कमसे कम एक२ बारतो अवश्य दौरा करलेवें ॥ भाइयो जरा बिचारो जितना तुम्हारा धन परोपकारता मैं धर्मके प्रचार मैं खर्च होता है वह वास्तव मैं खर्च नही होता है बल्कि जैसा कि खेत मैं बीज बोया जाता है इस प्रकार बोया जाताहै जिससे बहुत बड़े फलकी प्राप्ती होगी ॥ भाइयो धर्मके प्रचार में धन लगाना बडे लाभका काम है इससाल की दशलाक्षणी आप के बहुत कुछ पुन्यके भंडार भरने वाली होगी क्योंकि ऐसे२ शुभ कामोंकी प्रेरना होती है ॥ हमको बड़ा धन्यवाद देना चाहिये उन भाइयों को जिन्होंने सचे दान और धर्म प्रचारमैं धन लगाने के कारण बनादिये हैं जिनके हेतु हमारा धनपुन्य कारजमैं लगजावेगा यदि सचपूछियेतो उपदेशक भंडार ऐसा उपगारी कार्यहै कि यदि इसकी सहायताके वास्ते सर्वस्व भी अर्पण करदिया जावैतो थोड़ाहै ॥ हम पापियों को ऐसा अवसर भाग्योदयसे ही मिलताहै कि हमारा धन धर्म प्रचारमें लगजावै ॥ भाइयो इस समय आप सब भाई धर्म सेवन के हेतु इकट्ठे होरहेहो इस दशलाक्षणी पर्व के पीछे फिर आप अपने २ कार्य में लगजाओगे इस कारण उपदेशक भंडारकी सहायताके वास्ते अबही बंदोवस्त करलो और मथुरा श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी सी. आई. ई. सभापति जैन महासभाके पास भेजदो और कृपाकरके मुझकोभी सूचित करदीजिये कि कितनी २ सहायता किस २ भाईने दीहै हम तुरत अन्य भाइयोंके अवलोकनार्थ जैनगजटमें प्रकाशकर देवेंगे ॥ आगे अधिक आपसे क्या प्रेरणा कीजावै आपको उपदेशक भंडारकी सहायता का अपने आपही पहले से खयाल होगा ॥

जैनसभा

भाइयो यह आप भलेप्रकार जानते होंगे कि सभा कायम करने से क्या क्या नफाहै। देखिये अन्य जातिमें सभाके ही द्वारा कैसी२ उन्नति कररही हैं ॥ सभामें जब दसभाई इकट्ठे होते हैं तो एक दूसरेकी वार्त्ता सुनते हैं हानि लाभका बिचार होताहै ॥ उत्तमोत्तम उपदेश दिये जाते हैं अनेक प्रकारकी शिक्षा प्राप्त होती हैं अनेक विषयोंपर बादानुबाद कियाजाता है सभामैं जाकर अपने दिलकी कहते हैं और दूसरे की सुनते है ॥ अपनी जाति मैं अपनी बिरादरीमैं यदि कोई प्रचार निंदनीक दुःख दाई होता है सभामैं उसके दोष प्रघटकर उससे घृणा कराई जातीहै ॥ यदि किसी भाईको किसी बातके प्रचार देनेमैं बहुत लाभ दिखाई देताहै तो उसके गुण वर्णनकर उस

कामकी तरफ रुची बढ़ाई जाती है ॥ भाइयों आपही अपने दिलमें विचार करदेखिये बहुतसी बार आपके चित्तमें यहबात आई होगी कि अमुक कार्य यदि हमारी बिरादरी से दूर होजावे या अमुक शुभकार्य जारी होजावे वा किसी कार्यका प्रबन्ध होजावे तो बहुत अच्छा हो परन्तु यदि आपके नगर में सभा नहीं हैं तो आप लाचार हैं अपने मनके विचार को किसीसे नहीं कहसके हैं परन्तु यदि सभा होतीतो सहजही में आप अपने दिलकी बातको सब भाइयों को सुना देते और आशाहै कि बहुत भाई आपके सहमति होजाते और दोचार दसबार सभामें उस बात पर जोर देनेसे सबको स्वीकार होजाती और आपका मनोर्थ सिद्ध होजाता ॥ हमारी जाति में आजकल ऐक्यताकी बिल्कुल कमीहै बिरोध बहुत फैलाहुआ है परन्तु जहांतक बिचार कियागया है ऐक्यता फैलानेके वास्ते सभासे अच्छा और कोई कारण नहीं होसक्ताहै ॥ प्रभावना फैलाने वाली और धर्ममें अनुराग बढ़ाने वाली मिथ्यात्व और कुरीतियों का नाश करने वाली एक सभाही है ॥ जहां सभा नहींहै यदिवहा पर सर्व प्रकार की उन्नति भी तो कुछनहीं है क्योंकि बिना सभाके कोई कार्य स्थिर नहीं रहसक्ता और जहां सभा कायम होगई है वहांपर यदि पहलेसे हीनदशा भी होरही है तो बहुत जल्द उन्नति होजावेगी ॥ शास्त्रों और इतिहासों के पढ़नेसे मालूम होताहै कि पहले समयमें जैन जाति में सभा हुआ करती थी इसही हेतु जैन धर्मकी उन्नतिथी परन्तु थोड़ेही समयसे यह प्रचार बन्द होगया इसही कारण अत्यन्त हीनावस्था होगई ॥ हमको बड़ा हर्ष प्राप्त होताहै कि अब हमारी जातिमें सभा स्थापन होने लगी हैं बहुधा नगर ग्रामोंमें सभा नियत होगईहैं और भले प्रकार अपना काम करती हैं भाइयो सभाके जो कामहैं वह बचन अगोचर हैं ॥ जैनधर्म की उन्नति का कोईकार्य नहीं होसक्ता है जबतक प्रत्येक नगर ग्राममें सभा नहोजावे ॥ भाइयो बिचारने की बात है कि आजकल दशलाक्षिणी के पर्व के दिनों में आप सब भाई कैसे हर्षित होरहे हैं कैसी २ खुशी मना रहेहैं और कैसे आप सब धर्म सेवन में लग रहेहैं ॥ श्रीमंदिरजी में एक अपार शोभा आरही है भाइयो इन सब बातोंका कारण केवल एक यहही है कि आप सब एकही कारज की सिद्धिके वास्ते एकत्र हुवेहैं ॥ भाइयो आप जिस समय इस प्रकार इकट्ठे होंगे तबही ऐसी शोभा और प्रभावना होजावेगी ॥ बिना सभाके आपको यह शोभा बर्ष भरमें केवल दसदिन के वास्ते मिलती है परन्तु यदि आप के यहां सभा होवेतो यहही प्रभावना सातवें दिन होसक्ती है ॥ जैसा कि दसदिन तक धर्म सेवनकी उमंगरहतीहै परन्तुइसकेपीछेसबउमंगें जातीरहतीहैं और यह सारीबातें स्वप्नवत् होजाती हैं इस का हेतु यहहीहै कि इन दिनोंकेपीछे फिर इन उमंगों और धर्मानुराग के संभालने का कारण नहीं होताहै परन्तु यदि सभा होवी

होवे तो ऐसीही उमंगें सातवें दिन पैदा होती रहैं और बार २ प्रेरणा होती रहै और फिर थोड़ेही दिनोंमें ऐसी सच्ची और पक्की धर्म से प्रीति होजावे कि विना प्रेरणा भी सदाही बनी रहै ॥ भाइयो सभामें अनेक गुणहै कहांतक वर्णन कियाजावे ॥ जिस २ नगरमें बुद्धिमान् जैनधर्मके जानने वाले परोपकारी धर्मात्मा पुरुष रहते हैं वहांपर सभा सबसे पहिले नियत होगई हैं साधारण मनुष्य पण्डितों और बुद्धिमानोंके अनुसार कार्य करनेकी कोशिश किया करतेहैं इस कारण अन्य भाइयों कोभी अवश्य सभा नियत करलेनी चाहिये ॥ आपने सुनाहोगा कि मथुरामें भारतवर्षीय श्रीजिनधर्म संरक्षणी जैनमहासभा नियत हुई है जिसका मुख्य प्रयोजन यहहै कि कुल भारतवर्षमें जैनधर्म और जैन जाति उन्नति धर्म और संसारिक दोनों प्रकारके कार्योंमें करै ॥ उस सभामें सर्व प्रतिष्ठित और शिरोमणि भाई शामिलहैं ॥ सर्व प्रतिष्ठित भाइयों और पण्डितों ने यह बात निश्चय करली है कि जब तक सब नगर ग्रामों में जैनसभा नियत नहीं होगी तब तक जैनधर्म और जैन जातिकी उन्नति होना मुश्किल है इस कारण वह सभा इस विषयमें बहुत कोशिश कररही है और जैनगजट और उपदेशकों के द्वारा बहुधा स्थानोंमें सभा होनेभी लगी है ॥ सभाने इसी कार्यके एक प्रथक् मंत्रीभी अपना नियत करलियाहै ॥ पण्डित चुन्नीलाल मुरादाबाद निवासीका नाम आप सब भाइयोंने सुना होगा क्योंकि पण्डितजी साहब बड़े धर्मात्मा और तन मन धनसे जैनधर्मकी उन्नति करने में कटिबद्धहैं ॥ उक्त पण्डितजी साहब प्रत्येक नगरमें सभाका प्रचार देनेके वास्ते महासभा के मंत्री नियत हुएहैं ॥ भाइयो यदि आपके नगरमें सभा नहीं है तो अवश्य बहुत जल्द जारी कीजिये ॥ दशलाक्षणी पर्वके शुभदिनों से अच्छा और कोई समय आपको ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें आप आसानीसे सभाका प्रबन्ध करलेवें इस कारण इन दिनोंमें जरूर इसका बंदोबस्त करलीजिये और फिर देखिये थोड़ेही दिनोंमें क्या २ उन्नति होती हैं सभा स्थापन करनेके सुखसमाचारसे कृपा करके हमको भी सूचित कीजिये हम इस समाचारको जैनगजट मे प्रकाश करेंगे ॥

उत्तम शिक्षा

एक मनुष्यके एकही लड़का था वो उस बालकके साथ अधिक लाड़ प्यार किया करता था इसी प्रीतिके बश उस लड़केके विवाहमें भी उसने बहुत धन खर्च किया परन्तु वह लड़का बड़ा शरीर निडर और गुस्ताख उठा और न कोई विद्या हासिलकी न कोई ऐसा हुनर सीखा जिससे अपनी उदर पूर्णाके हेतु कुछ धन कमा सके वह अपने पिताका कहना बिलकुल नहीं मानता था उसका पिता जब किसी कार्यके करने को कहता तो साफ जवाब देदेता था यहांतक कि सर्व प्रकारके अवगुण उस बालकमें होगये ॥ एक दिन पिताने लाचार होकर अपने बेटेको बुलाया और इस

प्रकार शिक्षादेनी प्रारम्भकी कि हेपुत्र हेप्राण प्यारे तू जानताहै कि हमने तेरे कारण क्या२ कष्ट उठाये हैं और तेरे वास्ते क्या२ उपकार किये हैं क्या तू हमारे किसी उपकारका बदला देसक्ताहै या नहीं देसक्ता परन्तु तू बदला देनेकी और हमारी सेवा करने की तो क्या कोशिश करेगा तू हमारा कहना भी नहीं मानताहै ॥ देख नौ मासतक तेरी माता ने तुझको उदरमें रक्खा ॥ जबतक तू उसके उदरमें रहा उसने अपने खाने पीनेमें बहुत कुछ बिचार रक्खा जिससे तुझको कोई व्याधी पैदा नहो ॥ क्या तू जानताहै कि बचेको उदरमें रखनेका माताको कितना कष्ट होताहै॥ फिर तू पैदाहुआ उसमें तेरी माताने जो २ त्रास भोगे वह बचन अगोचरहैं ॥ उस समय तेरे पैदा होनेकी खुशीमें हमने बहुत द्रव्य लुटाया ॥ फिर हमने तुझको पाला रात्रिभर तेरी माता और मैं जागते थे तू हम पर मल मूत्र करदेता था परन्तु हम तुझको सूखे में पड़ाते थे और आप तेरे मूत्रके भीगे वस्त्र पर पड़ते थे ॥ तुझे किसी प्रकारकी बाधा नहो इस कारण तेरी माता खाने पीनेमें बहुत परहेज करती थी ॥ तुझे किसी प्रकारका रोग होजाने में हमारी जो दशा होती थी सो हमही जानते हैं ॥ खैर श्रीमहाराजकी कृपासे तू कुछ बड़ा हुआ खेलने कूदने लगा ॥ यदि हम तुझे किसी बातसे रोकते थे तो तू रोपड़ता था इस कारण हमने तुझको धमकाना बन्द कर किया चाहे तू कितनाही नुकसान करदे ॥ जो चीज़ तू मांगता था जिस प्रकार होसके था हम तेरे वास्ते लाते थे ॥ हमने तेरी सगाई बहुत तलाश करके एक धनवान्‌की पुत्री से की और सगाई में हमने बहुत धन लुटाया ॥ उसी दिनसे हमको तेरे बिवाहकी चिन्ता होगई और यह बिचार किया कि तेरा बिबाह बड़ी धूमधामसे कियाजावे इस कारण हमने उसही दिनसे बिबाहके वास्ते धन इकट्ठा करना प्रारंभ करदिया और अपने खाने पीने आदिमें कमी करदी ॥ हमने जिस कष्टसे तेरे बिबाहके वास्ते रुपया संचय किया वह हमही जानते हैं ॥ फिर जब तू बड़ा होगया हमने तेरा बिबाह बड़ी धूमधामसे किया और बहुत कुछ द्रव्य लुटाया जिसमें हम ऋणीभी होगये जिसका दुःख अबतक उठारहे हैं ॥ हे प्राणप्यारे जब हम तुझको किसी कामके वास्ते कहते थे या पाठशालामें जानेके वास्ते कहते थे या किसी अनुचित् कार्यसे तुझको रोकते थे तो तू अपना चित्त मलीन करता था इस कारण हम तुझको किसी बातके वास्ते नहीं कहते थे ॥ इत्यादिक हमने तेरे वास्ते सबकुछ किया कहांतक बयान करें हमने तेरे साथ जो जो उपकार किये हैं वह अनन्तहैं हमने तेरी सर्व प्रकारकी अन्यथा अनुचित् अयोग्य बातोंको सहा परन्तु कैसी आश्चर्यकी बातहै कि तू हमारे एकभी उपकार को नहीं मानता और हमारी बातको भी नहीं सुनताहै ॥

बेटे ने उत्तर दिया कि हे पिता आप मेरे पिता हैं इस कारण आप जो कुछ कहें मैं

स्वीकार करलूं परन्तु यदि सचपूछिये तो आपने मेरे साथ एकभी उपकार नहीं किया बल्कि आपने मेरे साथ बहुत शत्रुता कीहै ॥ देखिये आप नौमासतक माताके उदरमें रखनेकी बात को कहते हैं सो उसका अहसान मेरे ऊपर क्याहै आपको क्या मालूम था कि पुत्रही उत्पन्न होगा इस कारण नौ मासतक गर्भ में रखना और पैदा होनेकी त्रास के सहने का अहसान् मुझपर कुछ नही है ॥ इसके पश्चात मेरे पालन पोषणमें भी कष्ट आपने मेरे कारण नहीं उठाया बल्कि माता पिताका यह कुदरती स्वभावहै कि संतानका पालनकरै देखो बच्चेके पैदा होतेही स्वमेव स्तनोंमें दूध पैदा होजाता है ॥ पशु पक्षीभी अपने बच्चोंका पालन करतेहैं इस कारण यह स्वभाविक कार्यहै और इसका मुझपर कुछ अहसान नही है ॥ आपने मेरे पैदा होने में सगाई में और बिवाहमें बहुत धन लुटाया सो इसमें मेरा आपने क्या उपकार किया आपने यह धन मेरे हेतु नही लुटाया बल्कि अपनी नामवरी और बड़ाई के हेतु लुटाया और निर्धन और कर्जदार होगये जिस का कष्ट मुझको बहुत कुछ उठाना पड़ेगा ॥ आपने धनवान् घर मेरी सगाईकी यहभी मेरे हेतु नही किया बल्कि अपनी प्रतिष्ठाके हेतु क्रिया यादि आपको मेरे उपकारकी इच्छाहोती तो सुन्दर स्वरूप और गुणवान् कन्याके साथ मेरा विवाह करते धनवान् और निर्धन का आपको कुछ विचार न होता ॥ इसके सिवाय आपने मेरे साथ जो शत्रुता कीहै वह बचन अगोचरहै ॥ हे पिता आप जानते हैं कि मनुष्य बाल्यावस्थामें ही शिक्षा पासक्ताहै इस कारण यह माता पिताका ही काम होताहै कि बालक को उत्तम शिक्षा देवै परन्तु आपने मुझको अपना पुत्र नही समझा बल्कि अपना दिल बहलाने के वास्ते एक खिलौना समझा जबमैं हंसता था तो आपका चित्त खुश होता था और जब में रोता था तो जैसा कि खिलौने मैं बिकार आजाने से चित्त मलीन होताहै इसी प्रकार आपका चित्त मलीन होता था ॥ आपने अपने मनमें यह विचार रक्खा था कि बालक को शिक्षा प्राप्तिहो चाहे नहो चाहे इसमें कितनेही अवगुण होजावें चाहे यह कितनाही मूर्ख और विद्याहीन रहे परन्तु हमारा चित्त प्रसन्न रहना चाहिये और आपका चित्त प्रसन्न होता था मेरे हंसने मे मेरे खेलने में कूदनेमें इस कारण आप मुझको कभी किसी अनुचित कामसे नही रोकते थे आप मुझको पाठशाला में जानेके वास्ते नही धमकाते थे ॥ आपकी बलाइसे में विगड़ूं या सुधरूं आपने तो मुझको खिलौनाही समझा था इसका फल यह हुआ कि में अत्यन्त मूर्ख रहा मुझको किसी प्रकार की शिक्षा न प्राप्त हुई मेरी आदत मेरा स्वभाव बिगड़गया में बिलकुल विद्याहीन रहा अब बड़ा होकर मुझको संसारिक कार्जों में बड़ी कठिनाई पड़ती है परन्तु क्याकरूं बाल्यावस्थामें जैसी आदत पड़जाती है वह छूटनी मुश्किल होती है शिक्षा ग्रहण करनेका अब वह समय नही रहा इस कारण लाचारहूं ॥

हाय यदि मेरे माता पिता मेरे वैरी न होते तो मेरी यह दशा क्यों होती ॥

पिताको यह बात सुनकर बहुत लज्जा प्राप्ति हुई और चुपका होरहा ॥

हे जैनी भाइयो इस कहानी पर ध्यान देना चाहिये और विचारकरना चाहिये कि आप अपने बालकों का उपकार करते हैं या उनका नुकसान करते हैं ॥ धार्मिक और संसारिक विद्या बालकों को देना माता पिताका कामहै ॥ लिखाहै कि "माताशत्रुपितावैरीयेन बालोनपाठितः" ॥ अर्थ—जो माता पिता अपने बालकों को नहीं पढ़ाते हैं वह वैरी हैं ॥

धर्मप्रभावना

जगत में यह एक साधारण रीति है कि जिस कार्य को कोई मनुष्य अच्छा समझता है अन्य को भी वह उस बात के ग्रहण करनेकी प्रेरणा किया करता है ॥ इसकारण वह उस बातकी प्रशंसा करताहै उत्साह बढ़ाताहै उसके विरुद्ध कार्य की निंदा करता है ऐसे २ कार्य दिखलाता है जिस से देखने वाले उस बातको पसन्द करलेवें ॥ हे भाइयो आप जानतेहैं कि जगतमें धर्मसे अधिक कोई वस्तु किसी को प्रिय नहीं होसक्ती है ॥ संसारमें पुत्र की प्रीति अधिक प्रसिद्ध है परन्तु यदि बेटेको फांसी आती हो तो कोई पिता स्वीकार नहीं करे कि पुत्रके बदले उसको फांसी दे दीजावे हाय यह बात बहुधा हुई है कि ऐसी अवस्थामें कि धर्म छोड़नेपर प्राणबचते हों तो प्राण त्यागने और मरना पसन्द किया है परन्तु धर्म नहीं छोड़ा अर्थात् धर्म मनुष्यको प्राणोंसेभी जियादा प्यारा है और है भो ठीक यह धर्मही है जिस के प्रताप से संसारिक सर्व प्रकार का सुख और धन धान्यादि विभव जीवको मिलता है ॥ धर्म ही एक ऐसी वस्तु है जो संसार दुःखसागरसे जीवको निकाल कर परम आनन्द पद प्राप्त कराता है सच्चा और असली सुख दिलाता है इस कारण धर्मसे अधिक और कौन उपकारी वस्तु होसक्ती है ॥ जितना जिस किसी मनुष्य को धर्मसे अनुराग होगा उतना ही वह धर्मके फैलानेकी अधिक कोशिश करेगा धर्म के गुण सब से प्रगट करेगा धर्म की प्रशंसा करेगा ऐसे २ कार्य करेगा जिससे अन्य पुरुषों को भी धर्मसे प्रीति करनेकी उमंगहो इसही का नाम धर्मप्रभावना है ॥ जिसको धर्मका जोश ज्यादा होता है जिसको धर्म की प्रीति अधिक है वह धर्मप्रभावना भी अधिक करता है और जिस को धर्म से प्रीति कम होती है वह प्रभावना कम करता है जो काम ऐसे होतेहैं जिन से धर्म से अप्रीतिहो अनुराग घटे वह अप्रभावना के काम कहलाते हैं ॥ धर्म प्रभावना करने से स्वमतियों को धर्म में अनुराग दृढ़ होताहै और अन्यमति वाले मिथ्या धर्म को छोड़कर जिनधर्म स्वीकार करते हैं ॥ अप्रभावना होने से अन्य मति तो जिनधर्मको ग्रहण करेंगे जैनी लोग भी अपने धर्मको छोड़ने लगजाते हैं ॥ जैन धर्म में प्रभावनाको मनुष्यका

मुख्य धर्म वर्णन कियाहै और सम्यक्त्वके अष्ट अंगों में से एक अंग प्रभावना को रक्खा है अर्थात् बिना प्रभावनाके कोई जिनधर्म का श्रद्धानी हो नहीं होसक्ता है ॥ यह बात सचभीहै जो पुरुष प्रभावना अर्थात् इस बातकी कोशिश नहीं करताहै कि अन्य पुरुष भी जिनधर्म पर श्रद्धा न लावैं वह खुदभी श्रद्धानी नहीं होसक्ता है ॥ प्रभावना शब्द जैनियों में ऐसा प्रसिद्ध होरहा है कि बालक भी जानताहै कि प्रति वर्ष अनुमान पचास लाख रुपया जैनियों में धर्म के नाम से खर्च होताहै ॥ पचास लाख रुपया बहुत होता है जैनी आजकल जगत में बहुत थोड़ेहैं ॥ यदि वास्तवमें हरसाल पचास लाख रुपया जैनी लोग धर्म प्रभावना में खर्च करते हैं तो समझना चाहिये कि जैनियों को धर्म से अत्यन्त प्रीतिहै और जैनी सबसे ज्यादा धर्म प्रभावना करतेहैं ॥ यदि जैनीभाई धर्म प्रभावना में इतनी कोशिश करते हैं तो अवश्य जैन धर्मकी बहुत उन्नति होनी चाहिये और सर्व मनुष्यों के हृदय में वह किसी मतके हों जैनधर्मकी प्रतिष्ठा जमजानी चाहिये ॥ परन्तु अत्यन्त आश्चर्यकी बात है कि जैन धर्म आजकल अत्यन्त न्यून दशापर होता जाताहै और कोई अन्य मति इस धर्म की प्रशंसा नहीं करता बल्कि निंदा और घृणा ही करता है ॥ इसका क्या कारण है ॥ भाइयो लाखों करोड़ों रुपया जो प्रतिवर्ष जैनियों का धर्म प्रभावना के उपायमें खर्च होताहै वह पूजा प्रतिष्ठा आदि के द्वारा खर्च होताहै परन्तु पूजा प्रतिष्ठा मेला आदिक के समय प्रभावना बढ़ाने अर्थात् इस बातके उपाय बहुत कम कियेजातेहैं कि स्वमति और अन्यमतियोंके दिलमें जैन धर्मकी प्रतिष्ठा जमजावे बल्कि अविद्या के वश होकर बहुत से ऐसे कारज किये जाते हैं जिस से जैनियोंकी निंदाहो ॥ भाइयो मैं बुराई करने के वास्ते नहीं करता हूं क्योंकि अपनी बुराई करनी कौन पसन्द करसक्ता है मेरा अभिप्राय केवल यह है कि हम और हमारे भाई अपनी बुराई और भलाईको जानलेवें और बुराईको छोड़कर भलाई को बढ़ावें और ऐसे २ उपाय करैं जिस से जैन धर्म की प्रभावना बढ़े ॥ देखिये पूजा प्रतिष्ठा के समय जब श्रीजी को रथ में बिराजमान करके सवारीको बाजार में फिरातेहैं तो जैनीभाई अपने २ नगर की अलग २ गायन मंडली बनाकर भजन गाते हैं इस समय बहुधा स्थानों में यह देखागयाहै कि गानेवाले अपनी मंडली को श्रीजी के रथ के आगे करने के वास्ते दूसरी मंडलीसे लड़ते हैं और कभी २ यह लड़ाई बहुत बढ़जाती है जिस को देखकर अन्यमति हंसते हैं ॥ भाइयो विचारने की बात है कि क्या यह जैन धर्मकी प्रभावना नहीं है इस का कारण केवल यहही है कि हमारे भाइयों ने धर्मके स्वरूपको जाना नहीं है इसही कारण वह जैनधर्मकी न्यूनता करते हैं ॥ धर्मात्मा और परोपकारी

भाइयों को इस बातका खयाल रखना चाहिये और ऐसा निंद कार्य कभी नहीं होने देना चाहिये ॥ हाय जैनीभाई धर्म प्रभावना के समय आपस में लड़ें ॥ रथ यात्रा के समय भजन गाने वाले बहुधा वह भाई होते हैं जो जैन शास्त्र और जैन धर्मसे बिल्कुल अज्ञान होतेहैं और उनको धर्म से कुछ अनुराग होता है इस कारण वह प्राचीन विद्वान् कवियों के अध्यात्मक या उपदेशी या भक्ती रूप भजन नहीं गाते हैं बल्कि अपना शौक पूरा करने के वास्ते अपने आपही कुछ राग रूप पद बनालेते हैं और उनमें कोई एक गाध शब्द नाम जैनधर्म सम्बंधी डालकार उनको जैन धर्म के पद कहकर गाते हैं जैसा कि बारा मासे जिन में स्त्री की ओर से पति के विरह का रुदन होता है उन में स्त्री के स्थान में राजुल का नाम डालकर और पति के स्थान में श्री नेमिनाथ का नाम रख कर जैनमतका बारामासा कहने लगते हैं और श्राजी की सवारी के आगे इस बारामासे को बड़ी खुशी से गाते हैं ॥ अर्थात् अन्य ऐसे पद गातेहैं जो अनाड़ी आदमियों के बनाये हुए होते हैं और जिनकी कविता भी बिल्कुल बेढंगी होती हैं अन्यमती ऐसे भजनों को सुन कर आश्चर्य करतेहैं और समझलेते हैं कि जैनियोंमें न कोई कवि है और न कोई विद्वान है और इनका धर्म भी मिथ्या ही है क्योंकि यह लोग बारहमासे आदिक गानेको भक्ती समझतेहैं ॥ भाइयो विचारनेकीबातहै कि ऐसेकार्यों से कैसी अप्रभावना और निंदा जैनधर्मकी होती है ॥ जैनधर्म में बड़े२ विद्वान् कवियों के ऐसे२ सिद्धान्त के भजन लिखे हुए मौजूद हैं जिनको सुन कर अन्य मति चकित होजावें ॥ ऐसेही भजन गानेसे प्रभावना होसक्ती है इस कारण जैनियों को इस का बन्दोबस्त अवश्य करना चाहिये ॥ आजकल धर्मानुराग कम हो जाने के कारण हमारे सब जैनी भाई श्रीजी की सवारी के साथ भी नही रहते हैं बल्कि मारग में बैठते उठते आते हैं जिसमें अन्य मतवालों को स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि जैनियों को धर्म से प्रीति कमती है लोका लाज के कारण जलूसे के साथ हैं ॥ जब श्रीजी की सवारी मंदिर में पहुंचती है और प्रक्षाल होनी प्रारंभ होती है तो सब भाई शिखर में वेदी के पास घुसजाते हैं और भीड़ बहुत होने के कारण एक दूसरे के ऊपर गिर पड़ते हैं और जैसा कि विवाह में बाग बहारी लूटा करते हैं इसही तरह गंधोदक तय्यार होजाने पर गंधोदक को लूटने के वास्ते झपट्टा मारते हैं फल जिसका यह होता है कि गंधोदक धरती पर गिर पड़ता है और पैरों के तले आकर बहुत अविनय होती है क्या अन्यमती हमारी ऐसी अवस्था देखकर हमको मूर्ख नहीं कहेंगे ॥ श्री जैनमंदिरों में प्रतिदिन प्रक्षाल होती है नित्य गंधोदक तय्यार होता है परन्तु बहुत से भाई श्रीमंदिरजी में जाते भी नहीं हैं गंधोदक तो वह क्या लगावेंगे

उत्सव के दिन गंधोदक के वास्ते जल्दी करना धर्मानुराग के कारण नही होताहै बल्कि एक खेल समझ कर ऐसा किया जाताहै जिससे बहुत अप्रभावना होतीहै ॥ उत्सवमें बाजार लगाया जाता है दूर२ से दुकानदार आते हैं उस बाजार मैं जैनियों की स्त्रियां सुंदर शृंगार करके मुंह उघाडे निर्लज्जता के साथ सौदा खरीदती हुई फिरतीहैं जिनको देख कर अन्यमती विचार करते हैं कि जैनियों मैं लज्जा नही है और यह लोग उत्सव धर्म के वास्ते नही करते है बल्कि मेलेके वास्ते करतेहैं ॥ भाइयो क्या यह अप्रभावना नहीं है ॥ जैनियोंको अवश्य इन बातोंका प्रबन्ध करना चाहिये ॥ पूजा प्रतिष्ठा आदिमैं प्रातःकालसे तीसरे पहरतक श्रीमंदिर जीमें पूजन होता है परन्तु इस समय हमारे जैनीभाई बाजार इत्यादिक की सैर मैं होतेहैं केवल दोचार दस भाई जो पूजन करने हैं वहही मंदिरजी मैं मौजूद होते हैं ॥ ऐसी अवस्था से अन्यमती यह समझतेहैं कि जैनियों को पूजा वा भक्तीकी तरफ कुछ रुचि नहीहै क्योंकि यदि कुछ भी रुचि होती तो जब यह लोग दूर२ देश से बहुत श्रम करके और द्रव्य खर्च करके आयेहैं तो क्यों पूजन मैं शामिल नहोते और क्यों पूजनके समय श्रीमंदिर जीमैं मौजूद नहोते इसही से यह ज्ञातहोताहै कि उत्सव मैं जैनी लोग दूर२ देश से धर्म अनुराग से और भक्ती वस नहीं आतेहैं बल्कि केवल मेला देखने आतेहैं ॥ यह भी बहुत बड़ी अप्रभाना की बातहै इस कारण इसपर विचार करना चाहिये ॥ तीसरे पहरको जब सब भाई इकट्टे होते हैं तो गाना प्रारंभ होता है परन्तु वही अटक पच्चूराग और वहही अनाड़ी गाने वाले ॥ प्राचिन बुद्धिवान आचियो केपद बगूं नहीगाये जाते इसका कारण कुछसमझमैंनही आता । अन्यमति वालेइससे यहही समझ लेतेहैं किजैनियोंमैं विद्याही नहीहै और कुछ धर्म है पंडितों को इसका बन्दोबस्त अवश्य करदेना चाहिये और पंडितोंको चाहिये कि वह खुद गायाकरैं अनाड़ियों को न गाने दिया करैं क्योंकि यह महफिलका गाना नहीहै ॥ बल्कि भक्ती है रात्रिके समय शास्त्रजीकी सभा होती है सब स्त्री पुरुष इकट्ठे होते हैं स्त्रियें बातें करना प्रारंभ करतीहै जिसका शोर गुल इतना होजाता है कि स्त्रियें तो क्या शास्त्रजी सुनैंगी पुरुष भी नही सुनसक्ते हैं ॥ हाय हाय कितनी लज्जाकी बातहै क्या प्रभावना होरहीहै अन्य मतवाले अपने मनमें क्या कहते होंगे ॥ भाइयो ऐसी ऐसी बहुतसी बातें हम जैनीलोग करतेहैं जिससे प्रभावनाके स्थानमें अप्रभावना होजातीहै परन्तु इन बातोंपर कोई विचार नहीं करता और नकोई प्रबन्ध करताहै ॥ मैं अपने मनमें इस बातका बहुत भय कररहाहूं कि कहीं हमारे भाई मुझपर क्रोधित नहोजावैं कि यह हमारे दूषण प्रगट

करता है परन्तु हे भाइयो बुद्धिमानोंका वचनहै कि जो कोई तेरे दूषण प्रगट करताहै वह तेरा मित्रहै और जो कोई तेरे दूषणोंकी भी तेरेसे प्रशंसा करताहै वह तेरा वैरीहै ॥ इसी शिक्षाके अनुसार मैंने यह दोष प्रकट किये हैं इस अभिप्रायसे कि हमारे भाई इन दूषणोंको दूर करके सच्ची प्रभावना करैंगे जिससे उनका लाखों करोड़ों रुपया प्रति वर्ष खर्चा हुआ निष्फल नहो ॥ अंतमें हाथजोड़ कर जैनी भाइयोंसे यहभी प्रार्थनाहै कि धर्म प्रभावना निःशंदेह पूजा प्रतिष्ठा के समयमें ले उत्सव करने से होती है परन्तु प्रभावना करने के अन्यभी बहुत उपायहैं उनको भी चित्तमें नहीं विसारना चाहिये ॥ भाइयो जरा जैनशास्त्रोंको अवलोकन कीजिये जैनमतका गौरव, जैनधर्म की प्रतिष्ठा अन्य मतके हृदयमें बिठा देनेका नाम प्रभावनाहै परन्तु इसके वास्ते क्या बाहरका सामान अकेला कुछ कारजकारी होसक्ताहै नहीं हर्गिज नहीं बल्कि धर्म प्रभावनाके वास्ते जैनियोंको चाहिये कि अपनी धर्म, विद्य, शास्त्र, ज्ञान, अपना सम्यक दृढ़ श्रद्धान अपना शुभ आचरण अपना सत्य अपना संजम अपना शील अपना धर्मानुराग अपनी भक्ति अपना धर्म सेवन आदि अन्य मतियोंको दिखलावें ॥ यदि उपरोक्त बातोंके गुण जैनियों में होंतो बेशक जैनजातिकी प्रतिष्ठा हो और सब इसके बड़प्पनको स्वीकार करैं और सच्ची प्रभावनाहो ॥ परन्तु शोक महाशोककी बातहै कि इन बातों में से जिनसे प्रभावना होती है हमारेमें एक बातभी नहीं रहीहै इसी कारण अब हम चाहे जितना धन खर्चें चाहे जितनी कोशिश करैं हमारी प्रभावना नहीं होतीहै बल्कि अन्य मत निंदा ही करते हैं और हंसते हैं ॥ हमको आशाहै कि हमारे भाई आजकल दशलाक्षणी के पर्वमें अवश्य तमामबातोंका बंदोबस्त करैंगे और मूर्खता अविद्याको जिसके बस होकर यह सब अप्रभावनाके कारज कियेजाते हैं दूर कर ज्ञान दीपकको प्रकाश करैंगे जिसके उजियालेमें अन्यमत वालेभी सुचेत होजावैं ॥ अविद्याने हमारी और हमारे धर्मकी बहुत हानि कीहै इस कारण इसके दूर करनेका बहुत जल्द उपाय होना चाहिये। भाइयो चेतो समय व्यतीत हुआजाता है धर्म अमोल्य वस्तुहै यह फिर हाथ नहीं आवैगी तुम्हारा धर्म बहुत न्यूनता को प्राप्त होगयाहै ॥ किसी को अपने दोष अपनी बुराई आपनहीं मालूम हुआ करता है इस कारण आपको अपने धर्मकी हीन दशा नहीं सूझती है वास्तवमें यह जैनधर्म नाम मात्र रहगयाहै इसको संभालो धर्म चलाने से चलताहै इसकी उन्नति आपके हाथमें है जो चाहो सो करो ॥

इस समय धर्मप्रभावनाके उपाय

प्रभावना के उपाय

(१) प्रत्येक श्रीजैन मंदिरमें प्रतिदिन कमसे कम एक घंटा नित्य शास्त्रजी पढ़े जाने चाहियें ॥

(२) सर्व जैनी भाइयों को चाहिये कि वह शास्त्रजी सुनने के वास्ते अवश्य प्रतिदिन मन्दिरजी में आवें और ध्यान देकर सुनें ॥ जोबात समझमें नआवे उसको पूछनेमें अपनी अप्रतिष्ठा न समझें ॥ शास्त्रजी की सभामें आनेका सबको नियम आप करना चाहिये और अन्य भाइयों को नियम कराना चाहिये बिना नियम के प्रमाद आजाता है ॥

(३) इस बातकी बहुत कोशिश करनी चाहिये कि शास्त्रजी के पढ़ने वाला विद्वान् हो ॥ यदि किसी नगर में कोई भाई विद्वान् नहोतो तनख्वाह देकर बाहरसे पण्डित बुलाना चाहिये ॥ ऐसे स्थानपर भाइयों को कंजूसी नहीं करनी चाहिये बल्कि जहांतक होसके विद्वानकी तलाश करना चाहिये चाहे ज्यादा ही द्रव्य खर्च करना पड़जावे ॥ और किसी काममें खर्चकी कमी करदेनी चाहिये परन्तु इसमें नही करनी चाहिये ॥ विद्वान पण्डित से बहुत बड़ी प्रभावना होतीहै ॥

(४) प्रत्येक श्री जैन मन्दिर में नित्य पूजन होना चाहिये और भाइयों को अपने आप पूजा करनी चाहिये नौकर रखकर पूजा हरगिज़ नहीं करानी चाहिये नौकरसे पूजा कराने में बड़ी अप्रभावना है ॥

(५) जोभाई नागरी के अक्षर जानते हैं उनको चाहिये कि नित्य शास्त्रजी की स्वाध्याय कियाकरैं ॥ स्वाध्याय के वास्ते भी नियम करनेकी जरूरत है ॥

(६) जो भाई नागरी अक्षर नही जानते हैं वह चाहे जवानहो चाहे बूढ़ेहो नागरी अवश्य सीखनी चाहिये और फिर स्वाध्याय करनी चाहिये ॥ नागरी अक्षर बहुत सुगम हैं बहुत आसानीसे सीखे जासक्ते हैं ।

(७) प्रत्येक नगर ग्राममें जैनपाठशाला अवश्य होनी चाहिये और बिरादरी में इस बातका प्रबन्ध होना चाहिये कि जैनियों के सब बालक अवश्य कुछ समयतक पाठशाला में पढ़कर धर्म स्वरूपको जानें ॥

(८) जैनियों के बालक जो अंगरेजी फारसी मदरसों में पढ़ते हैं उनको चाहिये प्रतिदिन किसीसमय जैनशास्त्रकी स्वाध्याय करलियाकरैं ॥

(९) कुल भारत वर्षके जैनी भाइयों को चाहिये कि ऐसाकोई उपाय अवश्य करैं जिससे विद्वान पण्डित बनाकरैं ऐसे उपायके बिदून धर्म प्रभावना और जैनधर्म का कायम रहना असम्भव है ॥

(१०) ऐसाभी कोई उपाय अवश्य होना चाहिये जिससे सबको जैनधर्म का उपदेश मिले प्रमाद निद्रामें सोतेहुवे जागजावें अर्थात् ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये कि विद्वान पण्डित उपदेशक होकर देशविदेश घूमें और भाइयोंको उन्नति की तरफ लगावें ॥

(११) जहांतक होसके प्रत्येक भाईको तनमन धनसे इसबात की कोशिश होनी चाहिये कि सब भाई जैनधर्म के स्वरूप को जान जावे और सच्चे श्रद्धानी होजावें ॥ भाइयोंको धर्मके जाननेकी प्रेरणा करना बहुत बड़ी प्रभावना है ॥

(१२) जैन जातिमे मिथ्यात्वका बिलकुल नाश करदेना चाहिये और मिथ्यात्व कर्मसे घृणाकरनी चाहिये ॥ मिथ्यात्व सेवन करन वालेकी निंदा करनी चाहिये और उस को जैनी नही समझना चाहिये ॥ जबतक जैनजाति से मिथ्यात्व नही दूर होगा चाहे करोड़ों रुपये खर्च करदिये जावैं प्रभावना नही होसक्ती है ॥

(१३) जैनीयों में विरोध बिल्कुल नही होना चाहिये विरोध मे प्रभावना का नाश होता है और ऐक्यता से प्रभावना बढ़ती है

(१४) जैनियों को अप ने आचरण सुधारना चाहिये जितना उत्तम आचरण होगा उतनी ही प्रभावना होगी ॥ जैनियोंका सत्य शील और संजम प्रसिद्ध होना चाहिये ॥ जैनधर्म प्रभावना के यह चौदह उपाय हैं इनमें से जो २ उपाय किये जावैंगे उतनीही प्रभावना होगी ॥ केवल शोभा और नामवरी के वास्ते धन खर्च करदेने से प्रभावना नही बढ़सक्ती है हमको आशा है कि हमारे भाई इस पर पूरी तरह से ध्यान देवैंगे और धर्म प्रभावना का प्रबन्ध करेंगे जिस से यश और पुन्य दोनों की प्राप्ती है ॥

गीताछन्द मिथ्यात्वके विषय में

लाला मंगतराय कृत निवासी नानोंता जिला—सहारनपुर

श्रावकबने और जैनकुल धारणकिया तो क्या हुआ ॥
जैनीडिगाम्बर नाम अपना रखलिया तो क्या हुआ ॥ १ ॥
जब कुगुरु और कुदेवका श्रद्धा न मनमें बसरहा ॥
मिथ्यामती पापीहै वह जो नामका जैनीबना ॥ २ ॥
पर पुरुष जो सेवनकरै है इसतरी कुलटा वही ॥
दृष्टीनदे पर पुरुषपे सो इसतरी जगमें सती ॥ ३ ॥
एक जैनकुलमें जन्म लेनाही नहीं जैनी कदा ॥
श्रद्धान और आचरण करनेसे हो जैनी सर्वदा ॥ ४ ॥
कुलसे नहीं मतभेदहै श्रद्धा न और आचरणसे ॥
श्रद्धा न और आचरणकर वह छूटे जन्म न मरणसे ॥ ५ ॥

कुलसेही होता धर्म तो हिन्दू न बनते मुसलमान् ॥
और वैष्णवभी सैकड़ों होजाते किम जैनी महान् ॥ ६ ॥
लाखोंने तज मिथ्यात पहले जैनमत धारण किया ॥
अब जैनी मिथ्यामत गहैं यह देखकर फाटत हिया ॥ ७ ॥
मिथ्यातका परचार फैला जैनकुलमें आजकल ॥
आश्चर्य यह देखो बड़ाहै आग पानीका एक थल ॥ ८ ॥
जैनीहो और मिथ्यात सेवें बात यह क्योंकर बनी ॥
एकही समयमें होसके क्योंकर कोई रङ्क और धनी ॥ ९ ॥
मिथ्यातमें सेवन सम जगतमें कोई नाहीं पापहै ॥
इस भवमें और परभवमें याको फल महासंतापहै ॥ १० ॥
मिथ्यात्व सेवनकरें जेसठ सुख उपार्जनके लिये ॥
वे बिष हलाहल खातेहैं चिरकाल जीवनके लिये ॥ ११ ॥
जिन धर्मको जानानहीं और नाम जैनी रखलिया ॥
लज्जित किया जिनधर्मको कांपत नहीं तिनका हिया । १२ ।
इस भव मेंते दुख सैकड़ों भुगतें महा संकट सहैं ॥
धन धान्य पुत्र कलित्र सुखनहिं कदापी तेलहैं ॥ १३ ॥
तिनके नहीं संतान होवे होयतो रोगी रहे ॥
प्रत्यक्ष इस मिथ्यात्वका फल जगतमें देखो यहहै ॥ १४ ॥
बीमारी जो होवै कोई करते नहीं कुछ औषधी ॥
उलटा बढ़ावै दुःख करके भक्त कुगुरु देवकी ॥ १५ ॥
मंगतकहै ए भाइयो तुम तजो मिथ्या जालको ॥
जिनधर्मका सेवनकरो छेदनकरो भवजालको ॥ १६ ॥

इति

जैन महासभा

जैनमहासभाके दिन निकट आगये॥ महासभामें क्या क्या विचार होना चाहिये क्या२ प्रबन्ध होना चाहिये यह सब इस समय निश्चय करलीजिये क्योंकि आजकल पर्व के दिनों में सब भाई श्री मन्दिर जी में एकत्र होते हैं और धर्म ध्यान में लगे रहते हैं॥ इस समय आप यह भी नियत कर लीजिये कि महासभामें आप के नगरके भाइयों की तरफ से कौन प्रति निधि अर्थात् मुखिया होगा॥ महासभाके वास्ते जो२ आप विचार करें और जिसको प्रतिनिधि नियत करें यह सब समाचार कृपा करके डिप्टी चम्पतराय के पास इटावा लिख भेजें॥

जैनभ्रातृगणना

हकीम उग्रसैन सरसावा जिला सहारनपुर निवासीने भ्रातृगणनाके नकशे आपके पास भेजेहोंगे सो अपने२ नगरका सर्ववृत्तांत उसमें लिखकर भेजदिया होगा यदि नहीं भेजाहो तो कृपाकरके अब शीघ्र भेजदेवें और यदि नकशे आपके पास न आयेहों तो नकशे मंगालेवें॥

जैनसभा

आपके नगरमें जैनसभा पहलेसे होगी इसकारण उसका प्रबन्ध भलेप्रकार कर लेना चाहिये और यदि अभीतक जैन सभा नियत नहीं होतो सभानियत करने के वास्ते इससे अच्छा कौनसा समय होगा ज़रूर जिस तरह होसके कोशिस करके सभा कायम करलेनी चाहिये सभाके बिदून किसी प्रकार उन्नति नहीं होसक्ती है सभा से बडे २ फायदे हैं।

जैन पाठशाला

आपके नगर में जैन पाठशाला भी है यानहीं॥ यदि पाठशाला पहिले से है तो उस के खर्च और पढाई और जैनियों के बालकों के पढने का प्रबन्ध भले प्रकार कर लीजिये और यदि पाठशाला नहीं है है तो जारी कीजिये इस समय सब भाई मौजूद हैं इस कारण पाठशाला का बंदोबस्त बडी आसानी से होसक्ता है यदि यह दिन व्यतीत होगयेतो फिर कोई इन्तजाम होना मुशकिल है॥ धर्मका उपकार पाठशाला के बिदून नहीं होसक्ता है।

फिजूल खर्ची

निकालो इस दुष्टनीको, इसके कारण आपका धर्म कर्म सब नष्ट होताहै। इसने आपकासुख आपका आराम सब बरबाद कर रक्खाहै ॥ इसने आपको पापी बनारक्खाहै। इसही के सबब आपको आठ पहर चिन्ता रहती है फिजूल खर्चीको अपनी जातसे काला मुंह करके बिलकुल निकालदो। फिजूल खर्चीके दूर होनेसे बहुत धर्म उन्नतिहोगी इसकारण आजकल धर्म सेवनके समयमेंही इसका बन्दोबस्तकरो॥

जैन महाविद्यालय

महाशयो आप सब भाइयों की ही सहायतासे जैन महाविद्यालय जारी होसक्ताहै ॥ आप जानतेहैं एक२ बूंद पानीसे समुद्र भरजाताहै ॥ ऐसाही आप सब भाइयोंकी थोड़ी२ सहायता से भी सब कुछ होसक्ताहै आपका बहुतसा रुपया धर्महेतु लगताहै थोड़ासा इसमें भी लगादीजिये आपका बड़ाभारी पुन्य और जसहोगा और जैन धर्म और जैनजातिका उद्धारहोजावेगा जैन महाविद्यालयकी सहायताका रुपया श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास साहब सभापति जैन महासभामथुराके भेजनाचाहिये

उपदेशकभंडार

उपदेशकोंके देश विदेश घूमने से जो लाभहोताहै उसको आप भले प्रकार जानतेहैं अविद्या अंधकारदूरकरना धर्मोन्नतिके सर्व कारनोंका प्रचार देना घोरनिद्रा में सोतेहुओंको जगाना उपदेशकों काही कामहै ॥ आजकल उपदेशकोंकेही द्वारा परोपकारी भाइयोंके मनोर्थ सिद्धहोंगे और जैनधर्मका प्रचार होगा सर्व जैनी भाइयोंको उचितहै कि जहां तक होसके उपदेशक भंडारकी सहायता करें ॥ जो पैसा जैनी भाईका इसमें लगेगा वहही सफलहोगा॥ उपदेशक भंडारकी सहायताका रुपया मुन्शी चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट इटावाके पास या श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास सी० आई० ई० सभापति जैन महासभा के पास भेजना चाहिये ॥

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय साहित केवल तीन रुपयाहै

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १–८–१६–२४ता॰ को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता॰ १० सितम्बर.... सन् १८९६ } अङ्क २८

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैनगजट की सहायता

जैनगजट से जाति और धर्म की उन्नतिकी पूरी २ सम्भावना है इसही के द्वारा हमारे सब कारज और मनोर्थ सिद्ध होंगे ॥ जैनगजट की सहायता करना जैनियोंका परम धर्म है ॥

जैनगजट की सहायता किस प्रकार हो सक्तीहै?

(१) जैनगजट को आप मंगाना॥
(२) अन्य भाईयों को जैनगजट मंगाने की प्रेरणा करना॥
(३) जैनगजट भाईयों को पढ कर सुनाना ॥
(४) जैनगजट में छपने के वास्ते उत्तमोत्तम मजमून और अपने नगर और देश के समाचार जैन जाति सम्बन्धी लिखकर भेजना
(५) अपने मित्रों को जो अन्य नगर और देश में हों जैनगजट की सहायता के वास्ते लिखना
(६) जैनगजटका मूल्य अपना और अन्य भाईयों से लेकर भेजना
(७) अन्य जिस प्रकार जैनगजट की सहायता होती हो तन मन धन से करना

जैनगजट सब जैनी भाईयों को अवश्य मंगाना और पढना चाहिये यह गजट बालक पुरुष स्त्री सब कै वास्ते उपयोगी है ॥

मूल्य केवल २ रुपया एक वर्षका

जैन गजट की सहायता का समय भादव मास श्री दश लाक्षणी पर्व से अच्छा और कोई नहीं मिल सक्ता है इस कारण जहां तक हो सके इस समय कोशिश करनी चाहिये ॥

जैन गजट का प्रथम वर्ष समाप्त होने वाला है दूसरे वर्ष के वास्ते जैन गजट का मूल्य भेजनेका यह बहुत अच्छा मौका है क्योंकि पर्व के दिन हैं सबका अनुराग धर्म मैं पूरा२लग रहा है फिर पीछे मुशकिल पडैगी॥

जैनियों की दशा

हे भाईयों आप को अपनी दशा पर अवश्य ध्यान करना चाहिये जब तक कोई अपनी बुराईयों को नहीं जानता है तब तक वह अपनी बुराईयों के दूर करनेका कैसे उपाय करसक्ता है हे भाईयों जब आप ध्यान करैंगे तो आपको मालूम होगा कि जैन धर्म अब केवल नाम मात्रही रहगया है यदि आप अपनी दशा पर किंचित विचार करैंगें तो आप अवश्य शोक सागर में निमग्न हो जावेंगे और आंसुवों की धारा बहने लगेगी ॥

इतिहासों के पढने से यह मालूम होता है कि पिछले समय में सर्व जगत में यह जैन मत फैला हुवाथा सर्व मनुष्य इसही के श्रद्धानी थे सब जगह इसहीका डंका बजता था ॥ चक्रवर्ती राजा जिन के राज के समान इस समय में किसी बादशाका राज नहीं है इसही जैन मत के धारक हुवे हैं ॥ महाराजा रामचन्द्रजी महाराज राजा दसरथ के पुत्र जो हिंदुवों के परम पूज्य हैं इसही धर्म के श्रद्धानी थे परन्तु अब वह सब बातें किस्सा कहानी मात्र रहगई हैं इस काल में जैन धर्म जिस अवनति पर है शायदही कोई अन्य धर्म ऐसी न्यूनता पर होगा इस समय बत्तीसकरोड़सत्तरलाख३२७०००००० ईसाई और १५५०००००० पंद्रह करोड पचास लाख मुसालमान और ५०००००००० पचासकरोड बौद्धमती और१६०००००००सोलह करोड बेदमत के मानने वाले हिन्दू हैं परन्तु अफसोस जैनी केवल चौदहही लाख हैं अर्थात किसी गणना में गिने जाने के लायक नहीं हैं ॥ क्या इस से अधिक कोई न्यूनता की बात होगी कि वह धर्म जो कुल जगत में फैला हुवा था वह केवल चौदह लाख ही रहजावे अर्थात हजारवां हिस्सा भी न रहै॥ अन्य प्रत्येक धर्म के राजा महाराजा इस काल में हैं परंतु जैन धर्मका कोई छोटासा भी राजा नहीं है ॥ हे जैनी भाईयों जरा विचारो तो सही किस प्रकार जैनमत की इतनी न्यूनता हो गई क्या जैनियों के संतान होनी बन्द होगई और अन्यमत वालों के अधिक संतान होगई नहीं २ संतान तो सर्व मनुष्यों के समान ही होती हैं चाहे वह किसही मतका धारी हो तो फिर और क्या कारण हुवा इसका हेतु सिवाय इस के और कुछ मालूम नहीं होता है कि जैन धर्म के धारी जैन धर्म को छोड कर अन्यमत धारण करने लगे और अन्यमत वालोंका जैन धर्म धारण करना बन्द होगया ॥ देखो आज कल ईसाई मत के पादरी अपना मत फैलाने के वास्ते कितनी कोशिश करते हैं

इसही कारण लाखों हिंदू प्रत्येक वर्ष ईसाई होते हैं और कोई ईसाई हिंदू नहीं होता है क्योंकि हिंदू लोग अपने धर्म के फैलाने की कुछ कोशिश नहीं करते हैं और न इस बातकी कोशिश करते हैं कि जितने हिंदू हैं वह तो अपने धर्म पर कायम रहैं इसही प्रकार जैनियों ने भी इस बात की कोशिश को छोड़ दिया कि अन्यमत वाले जैनमत धारण करैं और जो लोग जैनी हैं वह तो अपने धर्म पर कायम हैं यह ही कारण है इस बातका कि आज कुल १४ लाख जैनी रहगये हैं ॥ ऐ भाईयों जब आप इस विषय में अधिक विचार करैंगे तो आप को और भी अधिक शोक होगा क्योंकि आगे २ चौदह लाख भी जैनी नहीं रहैंगे इस कारण कि जैसे पहले करोड़ों जैनी अन्यमती होगये हैं इसही प्रकार अब भी हो रहे हैं बहुत से जैनी अर्या होगये हैं और होते जाते हैं परन्तु जैनियों को अपनी सिंभालका कुछ फिकर नहीं हुवा है ॥ ऐ जैनी भाईयों जागो और अपनी जाति को बचावो नहीं तो यह जैन मत अब संसार से कूंच करता है यह जैन धर्म तुम्हारे आधीन आपड़ा है तुम चाहे धर्म प्रभावना करके इस को उन्नति देदो चाहै इसको मटिया-मेट करदो ॥ ऐ भाईयों आज कल भादवे के महीने में श्रीदशलाक्षणी के पर्व में प्रत्येक जैनी को धर्मका जोश होता है इन दिनों में सब भाई श्रीजैन मंदिर में धर्म सेवन के वास्ते आते हैं और अपना समय धर्म कार्य में व्यतीत होने को सफल समझते हैं इस कारण हम भी इसही अवसर पर आपका ध्यान धर्मोंउन्नति की तरफ लगाने की प्रेरणा करते हैं और वर्तमान न्यूनदशा को दिखा कर इस के सिंभाल की प्रार्थना करते हैं ॥ हम को पूरण आशा है कि आप अवश्य हमारी प्रार्थना को चित्त लगा कर सुनैगें और अवश्य अन्य भाईयों को भी सुनाने की कोशिश करैंगे ॥ बेशक आप को जैन धर्म की ऐसी न्यूनदशा देख कर बहुत शोक प्राप्त हुवा होगा परन्तु ऐ भाईयों हे धर्मात्मा पुरुषों आप निराश मत हूजिये यदि आप हमारी सर्व वार्ता को जो विस्तार के साथ हम आप को सुनाया चाहते हैं ध्यान देकर सुनैंगे तो हम आप को बहुत से ऐसे उपाय भी बतलावेंगे जिस से आसानी से जैन धर्म की उन्नति हो सक्ती हो और जैन जाति की डूबती हुई किश्ती भी बचसके परन्तु भाईयों आप जानते हैं कि जब तक रोग और रोग उत्पन्न होनेका कारण न मालूम हो तब तक कुछ इलाज नहीं हो सक्ता है इस

ही तरह सब से पहले यह मालूम होना जरूरी है कि हमारी वर्तमान दशा कैसी है और ऐसी दशा क्यूं हुई है इस के पश्चात् यह जानना चाहिये कि क्या उपाय योग्य है। आज कल दश लाक्षणी के दिनों में आप को गृहस्थ के कामों का तो कुछ फिकर ही नहीं है बरण आठ पहर चौंसठ घड़ी आप की धर्म में ही व्यतीत होती हैं इस कारण ऐसी जरूरी धर्म वार्ता को विस्तार के साथ पढ़ने में आप को आलस्य न आवेगा इस पत्र को आप अव्वल से आखिर तक आज ही पढ़ लेवें और सब भाइयों को सुना देवें क्योंकि परसों को दूसरा अखबार आप की सेवा में आवेगा और नवीन धर्म की वार्ता सुनावेगा इस ही प्रकार श्री चौंदश तक दूसरे दिन बराबर अखबार आता रहैगा और नई नई धर्म चर्चा सुनाया करेगा जिस से आप के यह दिन बिलकुल धर्म ध्यान में ही व्यतीत हों ॥

धर्म संम्बन्धी दशा

हे सज्जन पुरुषों आप को यह जान कर बड़ा भारी दुःख हुवा होगा कि अन्य जाति के मनुष्य करोड़ों हैं और जैनी केवल १४ लाख ही हैं परन्तु ऐ धर्मात्मा पुरुषो यह १४ लाख भी जैनी नहीं हैं क्यूंकि इन में स्वेताम्बर दिगाम्बरी और ढूंढये भी शामिल हैं आप लोग स्वेताम्बरी और ढूंढयों को जैनी नहीं कहते हो इसकारण जैनी अर्थात् डिगाम्बरी केवल ६ या ७ लाख ही हैं हाय हाय जैनी कुछ भी न रहे पिछले समय में परोपकारियों ने बहुत से वैष्णवों को जैनी कर लिया परन्तु अब जैनियों ने अन्य मत धारण कर लिया और कुल ६ लाख जैनी बचे रह गये हैं और इन में से भी कम होते जाते हैं॥ ऐ जैन धर्म के श्रद्धानी पुरुषों तुम कहां सोये पड़े हो क्या तुम्हारा यह धर्म नहीं है कि तुम अपने सच्चे धर्म के कल्याणकारी मत को बचावो बड़ा अचम्भा इस बात का है कि तुम को ऐसी दशा में रात को नींद कैसे आती है ॥ क्या तुम्हारा व्रत उपवास पूजा जापआदि निष्फल नहीं है जब तुम अपने धर्म की उन्नति की ओर ध्यान नहीं देते हो और ऐसी न्यून दशा देख कर भी आंसू नहीं बहाते हो, ऐ जैनी भाइयो ६ लाख जैनियों में क्या बहुत से ऐसे नहीं हैं जो यह भी नहीं जानते हैं कि जैन धर्म किस जानवर का नाम है जिन को तत्वज्ञान तो क्या होगा यह भी मालूम नहीं है कि तीर्थंकर कितने हुवे हैं और उन का नाम क्या है जो नवोकार मंत्र भी नहीं जानते हैं जो सारी उमर कभी जैन मंदिर में नहीं जाते हैं हाय हाय क्या यह लोग जैन मत वालों की गणना में गिने जाने लायक हैं

कदाचि नहीं शेष जो जैनी बाकी रहगये क्या उन में भी बहुत से ऐसे नहीं हैं जो न तो जैन धर्म को जानते हैं और न कभी मंदिर जी में जाते हैं परन्तु हां बेशक भादव मास में श्री चौदश के दिन मंदिर जी की हाजिरी देजाते हैं इस भय से कि जैनियों की पंक्ती से खारिज न हो जावैं ६ लाख जैनियों में से इस प्रकार इन लोगों की गिनती घटाने से बहुत ही थोड़े जैनी रह जाते हैं परन्तु यह लोग भी जो अपने आप को पूरा जैनी और धर्मात्मा कहते हैं और समझते हैं और सदा मंदिर जी में दर्शन के हेतु जाते हैं इन की बाबत भी बड़े अफसोस के साथ और आंसू बहा कर हम को यह निवेदन करना पड़ता है कि यह लोग भी बहुत करके वह ही हैं जो जैन धर्म को बिलकुल नहीं जानते हैं यह प्रति दिन प्रातः कालचारदाने चावल के मंदिरजी में फेंक कर घंटाबजा आना और किसी पर्व के दिन भूखे रहना ही धर्म समझते हैं और भगवान की मूर्त्ति के आगे हाथ जोड़ कर और मुख से कुछ संस्कृत या भाषा के शब्द जो कंठ कर रक्खे हों बुड़ बुड़ा देना ही जैन धर्म का पालन समझते हैं यह लोग न यह जानते हैं कि जैन धर्म के क्या सिद्धांत हैं भगवान की प्रतिमा के क्यूं दर्शन करने चाहिये इस से क्या लाभ है और चावल वा अष्ट द्रव्य क्यों चढ़ाये जाते हैं और संस्कृत वा भाषा के शुद्धअशुद्ध शब्द जो मुख से बुड़ बुड़ाये जाते हैं उन का क्या अर्थ है॥ यह लोग न किसी बात के समझने की कोशिश करते हैं और न किसी बात का समझना जरूरी समझते बरण समझने को फजूलमानते हैंक्या यह लोग मिथ्याती नहीं हैं ऐ भाइयो जिस प्रकार यह लोग जैन मंदिर में आकर उपरोक्त क्रिया करते हैं उस ही प्रकार यह अन्य मत के देव को पूजते हैं और अन्य सर्व प्रकारका मिथ्यात करते हैं और किंचित नहीं लजाते हैं और न इस बात का भय करते हैं कि हम को मिथ्यात्व कर्म करने से पाप होगा और दुःख की प्राप्ती पाप कर्म से ही हुआ करती है॥ यह लोग मिथ्याती होने के कारण बहुत से मिथ्यात्व के काम जैन के नाम से करते हैं और जैन मत के देव गुरु शास्त्र को भी ऐसा ही मानते हैं जैसा कि अन्य मत के देव गुरु को मानते हैं॥ हाय हाय हम को बड़ी लज्जा प्राप्त होती है इस बात के प्रगट करने में कि कि बहुत से हमारे भाई अपने बालकों के जीवन के अर्थ जिस प्रकार देवी माता आदि की जात देते हैं इस ही प्रकार श्री हस्त नागपुर क्षेत्र के नाम से बालकों के बाल रखते हैं और बिचारी हुई आयु पूरण होने पर श्री हस्तनागपुर क्षेत्र पर जाकर वह बाल मुंडवाने जाते हैं ब्राह्मण को जोड़ा पहनाया जाता है और श्री भगवान के नामकी चिता चिनवाई जाती है और अन्य बहुत से ऐसे ही कार्य किये

जाते हैं ॥ इस ही प्रकार यह लोग अपना अन्य दुःख निवारणार्थभी श्रीमंदिर जी व किसी तीर्थंकर के नाम की कबूलियत कबूलते हैं और कष्ट दूर होने के पश्चात् वह कबूलियत चढ़ा देते हैं ॥ यदि सच्ची दृष्टि से देखा जावे तो यह लोग न तो जैनी हैं और न किसी अन्य मत के धारी हैं बरण यह लोग संसार मत धारीहैं इस ही कारण अपनी संसारीक इच्छा पूरण होने की चाह में कभी तो जैनी बनकर जैन मत के देवतावों को पूजते हैं और अपनी इच्छा पूरण होने की अर्दास करते हैं और कभी वैश्नव बनकर वैश्नव मत के देवी देवतावों को मानने लगते हैं और कभी मुसलमान बनकर मुसलमान पीरों पर सिर निवाते हैं और ख्वाजा खिजर पर चराग जलाते हैं और कभी भंगी बनकर भंगियों की देवी सीतला माता को मानते हैं यह लोग न किसी धर्म को मानते हैं और न किसी धर्म का श्रद्धान रखते हैं परन्तु जैन जाति में पैदा होकर जैनी अवश्य कहलाते हैं ॥ इस स्थान पर मैं यह बात हाथ जोड़कर और बड़ी आधीनताई के साथ प्रगट करना चाहता हूं कि ऐसी बातों के प्रगट करने से मेरी यह आशा नहीं है कि मैं अपने भाईयों की निन्दा करूं और अपने आप को बड़ा ज्ञानवान और धर्मात्मा दिखलाऊं नहीं भाइयों मेरी दशा इस से भी जियादा निषिद्ध है जैसी मैंने बरणन की है मैं क्या कुछ जैन जाति से अलग हूं यह दशा मैं अपनी ही वरणन कररहा हूं कि आप सरिखे सज्जन पुरुष इस दशा के दुरुस्त करने की अवश्य कोशिश करेंगे ॥ ऐ जैनी भाइयो जैन धर्म की रक्षा करनेवालो ज़रा आंख खोल करदेखोकि अन्य जाति के पुरुष अपने धर्म और जाति की उन्नति के वास्ते कितनी कोशिश कर रहे हैं ॥ उन्हों ने यह समझ लिया है कि मनुष्य का जन्म तब ही सफल है जब वह अपने धर्म की उन्नति करै ॥ जैन शास्त्रों में धर्म प्रचार को इतना आवश्यक बरणन किया है कि धर्म के प्रचार के वास्ते श्री वीतरागी निर्ग्रन्थ साधुवों ने जब जैन धर्म का नाश होता हुवा देखा है तो अपना मुनी धर्म भी त्याग दिया है और सर्व प्रकार के उपाय करके धर्म के प्रचार को सिंभाला है (देखो रक्षा बन्धन की कथा आदि को) ऐ भाईयों किंचित विचार करो और सोचो कि आप धर्म के प्रचार में क्या कोशिश करते हैं ॥ देखिये अन्य मतवाले तन मन धन अपने धर्म की उन्नति में अर्पण किये हुवे हैं और कटिबद्ध हो उद्यम के घोड़े पर सवार होकर एक दूसरे से आगे निकल ना चाहते हैं और हम प्रमाद के वश होकर एक ही जगह खड़े हैं और उन्नति करने वालों

की कोशशों का तमाशा देखते हैं हाय हम जिधर देखते हैं हमको चमत्कारही चमत्कार दिखाई देता है परन्तु जब हम अपनी ओर निगाह डालते हैं तो चुपचाप सन्नाटा नजर आता है मानो रात कासमय है और मकान का दरवाजा बन्दकर कर सो रहे हैं और बाहर की कुछ खबर नहीं है कि क्या हो रहा है ॥

ऐ जैनी भाइयों तुम नवीन प्रकार की उन्नतियों को छोड़कर किंचित अपने श्री जैन मंदिरों की ओर तो ध्यान दो क्या बहुत से ऐसे मंदिर नहीं हैं जहां पूजा तो क्या प्रक्षालन भी नित्य नहीं होता है और जिस मंदिरों मैं पूजा प्रक्षालन होता है तो क्या उन मैं अधिक मंदिर ऐसे नहीं हैं जहां पूजा प्रक्षालन करने के वास्ते नौकर रक्खा हुआ है ॥ ऐ भाइयों यदि यह ही दशा रही और आप ने इस जाति के सुधार की कुछ खबर न ली तो थोड़े ही दिनों मैं दर्शन करने और व्रत उपवास रखने के वास्ते भी नौकरही रख लिये जाया करैंगे ॥ हे सज्जन पुरुषों जहां तक आप विचार करैंगे आप को इस जाति की दशा ज्यादा २ न्यून सिद्ध होवेगी और ज्यादा २ हृदय मैं चोट लगेगी क्या यह बात सत्य नहीं है कि जैनियों के बहुधा मंदिर और नग्र ग्राम ऐसे हैं जहां श्री शास्त्र जी नहीं बांचे जाते हैं और यदि किसी जगह बांचे भी जाते हैं तो उस स्थान के जैनी भाईयों मैं सौपीछे एक मनुष्य शास्त्र सुनने के वास्ते जाता है अर्थात ऐसे ऐसे नग्रों में जहां बहुत जैनी रहते हैं शास्त्र जी की सभा मैं केवल ४ वा ५ मनुष्य आते हैं क्या बहुत ग्राम और नग्र ऐसे नहीं हैं जहां एक भी मनुष्य शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं है और हे धर्मात्मा पुरुषो क्या बहुत से नग्र ग्राम ऐसे नहीं हैं जहां के जैनी शास्त्र जी बांचने के वास्ते पंडित नौकर रखना चाहते हैं और पंडित तो क्या मिलैगा अक्षरा भ्यासी भी नहीं मिलता है ॥ हे भ्रातृगण इस जाति की दशा धर्म सम्बन्धी ऐसी खराब है कि जिस का बर्णन नहीं हो सक्ता है और इस कारण कि इस मैं अपनी और अपने भाईयों की ही बुराई है इस कारण लज्जावान होकर मुझ से असली दशा वर्णन नहीं हो सक्ती है नहीं तो हम सिवाय बहुत थोड़े मनुष्यों के बाकी सब ६ लाख जैनी वास्तव मैं जैनी नहीं है पक्के और कट्टर मिथ्याती हैं और जैनी कहलाकर जैन धर्म का नाम डुबाते हैं ॥ अफसोस यदि कोई अन्यमती आर्या वा मुसलमान किसी जैनी से कोई जैन मत की बात पूछता है तो हम ने अपने कान से बहुत सें. को यह जबाब देते सुना है कि भाई साहब हम तो कुछ जानते नहीं हैं परन्तु हमारे यहां उक्त साहब इन बातों को जानते हैं उन ही से पूछो उस आप के न-

बाब पर जैनियों को तो क्यूं लज्जा आनी है परन्तु आर्य्या आदि अन्य मती पूछ ने वाले को अवश्य इस बात का शोक पैदा होता है कि भारत वासी ऐसे अज्ञानी और मूर्ख हो गये हैं कि जिस धर्म के धारी अपने आप को वह बयान करते हैं उस को किंचित भी नहीं जानते हैं ॥

हे जैनी भाईयो यह बात आप को अवश्य स्वीकार होगी कि झूठ बोलने धोका देने फरेब छल कपट बेईमानी जुल्म सितम आदि मैं जैनी लोग किसी से कुछकम नहीं हैं यद्यपि सत्य शील आदि जैनियों की प्रभावना थी ॥ खैर यह बात तो दूर ही रही ऐ जैनी भाईयों मुझ को यह बात कहते हुवे बड़ी शर्म आती है और रोना आता है कि हम जैनियों में ऐसे २ अधर्म के काम भी होने लगे हैं जिन के कारण किसी समय मैं जाति से पतितकर दिया जाया करता था परन्तु अब कोई घिन भी नहीं करता है ॥ हे भाईयो मैं कहां तक निर्लज्ज बनूं और कहां तक अपनी बुराईयों को दिखलाऊं आप बुद्धिमान है इस कारण खुद विचार कर सक्ते हैं परन्तु यह बात मैं फिर कहता हूं कि विचार अवश्य करना चाहिये क्यूंकि बिना विचार किये इस की दुरुस्ती का उपाय नहीं हो सकेगा और फिर इससेभी ज्यादा खराब हालत हो जावेगी ॥ भाईयों इस दशा के विचार करने के पश्चात आप के हृदय मैं बहुत चोट लगी होगी और इस के उपाय के जानने की जल्दी पैदा हुई होगी परन्तु हे परोपकारियों आप ने अभी इस जाति की धर्म सम्बन्धी अवस्था पर ठीक ध्यान किया है जरा विवहार अर्थात् संसार सम्बन्धी दशा को भी सुन लीजिये ताकि आप को पूरण हालत मालूम हो जावे और दोनों ही हालतों केसुधार का आप को फिकर पैदा हो ॥

जैनियोंकी संसारसंबन्धी दशा

यह दशा तो स्पष्ट रूपसब को विदित है कहने की कोई आवश्यक्ता नहीं है प्रथम तो ऐक्यता ही पर विचार की जिये इसका तो नामही जैनियों में से उठगया है जैनियों में वात्सल्य अर्थात गौ बच्छे की प्रीति मशहूर थी जैसा कि अन्यमती अब भी कहते हैं कि जैनियों मैं ऐक्यता बहुत है परन्तु हे बुद्धिमानो यहां ऐक्यताका तो निशान नहीं रहा है ॥ हाय हाय जैनियों मैं आज कल भाई २ का दुश्मन है हर कोई मनुष्य अपनी बड़ाई और दूसरे की बदनामी की हर वक्त फिकर करता रहता है एक दूसरे की प्रतिष्ठा और उन्नति को देख कर दुखित होते हैं और एक दूसरे के नुकसान के उपाय करते हैं ॥ भलाई किसी की भी कभी मुख से वरणन नहीं होगी परन्तु बुराई जितनी चाहे बखान करालो ॥ हाय

हाय यह विरोध केवल संसारीक कामों हीमें नहीं होताहै बल्कि यह विरोध धार्मिक कामों में भी विघ्न डालता है ॥ यदि कोई धर्म की उन्नतिका कोई कार्य करता है तो दूसरा उसका विरोधी यह समझ कर कि इस में इस की नेक नामी होगी विघ्न डालता है और बहुधा स्थानों में श्रीमंदिरजी आदि के इन्तजाम पर आपस में झगडा होगया है और धर्म में बडी हानि आई है ॥ हे सज्जन पुरुषो आप जानते हैं आपुस के विरोध से कितने २ नुकसान होते हैं ॥ यह नुकसान आप को नित्य उठाने पडते हैं ॥ इस जाति में पंचायत का दस्तूर बिलकुल दूर होगया है ॥ हम अपने पुरुषाओं से सुनते हैं कि पिछले समय में यदि कोई मनुष्य कोई कार्य धर्म वा जाति के विपरीत करता था तो पंचायत उस को दंड देती थी इसही कारण अयोग्य कार्यों से सब डरते थे परन्तु अब किसी को किसी का डर नहीं हैं जो जिस के जी में आता है करता है इस ही कारण इस श्रेष्ठ कुल में अनेक निंदनीक कार्य होने लगे हैं जिस से जैन जाति लज्जित होती है ॥ पहले सर्व प्रकार के प्रबन्ध धर्म सम्बन्धी वा संसारिक पंचायत के द्वारा होजाते थे परन्तु अब किसी प्रकार के प्रबन्धका होना इसही कारण कठिन हो रहा है कि हमारी जाति में पंचायत नहीं रही है ॥ फिजूल खर्ची अर्थात व्यर्थव्यय ने तो इस जाति को इतना सता रक्खा है कि जिसका बयान नहीं हो सक्ता है ॥ इस फिजूल खर्ची ही के कारण हमारी जाति के पुरुष धन के ऐसे लंपटी हो गये हैं कि योग्य अयोग्य उचित अनुचित कार्य जिस से धन प्राप्ती की सम्भावना हो सब करना स्वीकार करते हैं ॥ इस ही फजूल खर्ची के कारण अनेक प्रकार के पाप कर्म कर धन उपार्जन करते हैं और बेईमानी धोका फरेब जुलम सितम को मुख्य कर्तव्य समझते हैं ॥ हाय हाय इस ही फजूल खर्ची से इस जाति के मनुष्य रातदिन सोच फिकर में रहते हैं एक पल चैन नहीं पाते हैं ॥ इस फजूल खर्ची ने रुपया उपार्जन करना हमारा इष्ट धर्म और रुपये को हमारा इष्ट देव बना दिया है और सब धर्म कर्म भुला दिया है ॥ हे भाईयों यद्यपि हम धन उपार्जन में इतना यत्न करते हैं परंतु तो भी यह फजूल खर्ची हम को इतना सताती है कि हम कंगालोंसे भी ज्यादा निर्धन और दुखी रहते हैं हम न खाते हैं न पीते हैं बलकि भूखों नंगों और कमीनों की तरह आयु व्यतीत करते हैं ॥ हाय हाय हम एक पैसे के वास्ते अपनी इज्जत प्रतिष्ठा नेक नामी सब खो देते नहीं बलकि पैसे के कार-

न अपना धर्म अपने प्राण भी अर्पण करना पसन्द करते हैं ॥ हे परोपकारियो जरा विचारो तो सही हमारी जाति में कैसी २ दुखदाई रीति प्रचलित हो रही हैं ॥ हम लोग अपने बालकों को विद्या पढाना कुछ आवश्यक नहीं समझते हैं इस ही कारण हमारी जाति में धर्म विद्या के पंडित वा राज विद्या के विद्वान बहुत ही कम हैं जिस के हेतु न हमारी राज्य में कुछ प्रतिष्ठा है और न लोक में बलकि अब तो यह बात मशहूर हो गई है कि जैनियों में विद्वान हुवा ही नहीं करते हैं ॥ जैन लोग बाल्यावस्था में अपने बालकों का विवाह करदेना और विवाह में वेश्या आदि के नाच में धन लुटाना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं बाल्यावस्था में विवाह होने के कारण यह जाति बड़ी दुर्बल शक्ती हीन हो गई है और बल बुद्धि वीर्य सब नष्ट हो गया है और प्रमाद का शरण लेना पड़ा है ॥ वेश्या का नाच कैसा निंदनीक कार्य है कैसे २ व्यभिचार और वेश्या सेवन की यह नाच शिक्षा देता है इस के कारण कैसा २ व्यभिचार और दुराचार हमारी जाति में फैला है इस को सब कोई जानता है परन्तु इस नृत्य के हेतु हम लोग ही होते हैं ॥ इत्यादिक अनेकानेक रीति हैं जिन के कारण हम अधर्मी पापी निर्लज्ज बुद्धी हीन शक्ती हीन दुराचारी हो गये हैं और हम ने अपनी सर्व प्रकार की प्रतिष्ठा को खोकर धर्म को भी लज्जित किया है ॥ हे बुद्धिमानों आप खुद बिचार सक्ते हैं कि इस जाति की कैसी दुर्दशा हो गई है और विचार करने से आप को इस से भी न्यून दशा दिखाई देगी हम ने विस्तार भयसे संक्षेप मात्रही वर्णन किया है परन्तु क्या ऐसी दशा अवलोकन करके भी आप को इस दशा के सुधार का कुछ खयाल नहीं आता है ॥ हे शूर वीरो क्या अब भी तुम को जोश पैदा नहीं हुवा क्या तुम्हारा दिल भड़क नहीं उठा है क्या तुम ने ऐसी दशा में जीना निष्फल नहीं समझा है हे परोपकारियों यदि तुम में कुछ भी मनुष्यत्व है तो अवश्य तुम ने समझ लिया होगा कि जब तक इस अपनी दशा को न सुधार लिया जावे खाना पीना भी त्यागने योग्य है बेशक तुम को अत्यंत जोश आया होगा और अपना तन मन धन इस हेतु अर्पण करना स्वीकार किया होगा ॥ हे धर्मात्मा पुरुषों तुम को धर्म अनुराग है इस कारण तुम धर्म की न्यूनता देख कर चुप नहीं बैठ सक्ते हो ॥ तुम अवश्य व्याकुल हो गये होगे और तुम ने इस के उपाय के वास्ते कसकर कमर बांध ली होगा परन्तु यह बिचार अवश्य हुआ होगा कि क्या उपाय इस के

सुधार में करना चाहिये ॥ यह उपाय हम अपनी बुद्धि अनुसार आगे आप को बत लावेंगे जो पहले आप खुद विचार क रैं और सोचे कि उन्नति का क्या उपाय हो सक्ता है इस विचार मैं आप का समय भी धर्म ध्यान मैं व्यतीत होगा और आप चाहते भी यह हैं कि इस महीने के दिन धर्म ध्यान मैं व्यतीत हों फिर आप को यह भी जांच हो जावेगी कि जो उपाय आप ने कार्य कारी समझे हैं हम ने भी वह ही बत- लाये हैं या कुछ और ॥

—o—

धर्मशिक्षा

हे बुद्धिमानो हे सज्जन पुरुषो आ- ज कल आपका समय बहुत करके धर्म ध्यान में व्यतीत होता है आप सब जैनी भाई आज कल शास्त्र श्रवण क- रते हो जिस से आपको मालूम होग- या है कि जीवका कल्यान करता सु- खका दाता एक धर्म ही है सिवाय ध र्म के जीव को और कोई शरण नहीं है इस कारण आप को हृदय में अव, श्य यह जोश उत्पन्न हुवा होगा कि अवश्य धर्म सेवन में ही आयु व्यतीत करनी चाहिये ॥ यह जोश ज्यादा आ प को इस कारण आया होगा कि आ पने शास्त्र से यह भी जाना होगा कि चौरासी लाख जोन में एक मनुष्य प- र्याय ही ऐसी है जिस में पूरण रीति से धर्म सेवन हो सक्ता है ॥ हे भाईयो क्या यह बात झूठ है कि यह सब जो श आप के दश लाक्षणी के दस दिन तक ही हैं श्री चोदश के पीछे आप यह सब बातें भूल जावेंगे इसका क्या कारण है ॥ आप जानते हैं कि जिस चीजका सच्चा श्रद्धान होता है जिस वस्तु के नफे नुकसान मालूम होजाते हैं उस को कभी कोई नहीं छोड स- क्ता है और जो काम देखा देखी कि या जाता है वह थोडे ही समय के लिये रहा करता है ॥ जो भाई जैन ध र्म के तत्वों को भले प्रकार जानते हैं जिन को जैन धर्मका सच्चा श्रद्धान हो रहा है वह धर्म को कभी नहीं विसा रते हैं और जो लोग विना श्रद्धान और ज्ञानके झूठ मूठ गर्दन हिलाते हैं और वाह वाह करते हैं श्रीमंदिरजी से बाहर निकलते ही सब कुछ भूल जाते हैं इस के सिवाय आपने यह भी श्री शास्त्रजी में सुना होगा कि धर्म ऐसी वस्तु नहीं है जो विना श्रद्धान और ज्ञान के होस के यद्यपि संसारिक का- र्य भी बहुत से विना सोचे समझे कर ने से विगड जाते हैं परन्तु धर्म कार्य तो विना श्रद्धान ज्ञान के उलटे पाप उत्पत्ति के हेतु हो जाते हैं ॥ देखिये

एक पुरुष देशान्तर में जाकर और व्यौपार करके बहुत कुछ धन उपार्जन करसका है परन्तु यदि कोई दूसरा पुरुष जो व्यौपार की रीति को बिलकुल नहीं जानता है यह बात देख कर कि उक्त पुरुष ने देशान्तर में जाकर अधिक धन उपार्जन कियाहै आप भी धन के हेतु देशान्तर में जावे तो क्या वह मनुष्य बिना व्यौपार किये धन पासक्ता है नहीं कदापि नहीं वरन वह तो अपने गांठ के दाम भी खोआवे इसही प्रकार हे भाईयों यह बात समझ लो कि जो मनुष्य धर्म के सिद्धान्त को न जान कर दूसरे के देखा देखी धर्म के कार्य करता है वह कुछ लाभ नहीं उठासक्ता है वरण वह काया कष्ट ही करता है इस कारण धर्मका जानना अति आवश्यक है ॥ आज कल धर्म के जाननेका उपाय सिवाय शास्त्र स्वाध्याय के और कुछ मालूम नहीं होताहै स्वाध्याय को जैन सिद्धान्त में तप भी कहा है जिस से नवीन करमोंका आना बन्द होता है और पिछले कर्म दूर होते हैं ॥ स्वाध्याय से एक यह भी उपकार होता है कि वह नित्य स्वाध्याय करने वाले को धर्म की ओर लगाता है और धर्म से खिगते हुवे को थमकाता है हमारी समझ में तो शास्त्र स्वाध्यायसे ज्यादा कोई उपकारी नहीं होसकाहै सम्यक्त सिखाने वाली मिथ्यात्व दूर कराने वाली धर्म में लगाने वाली और अधर्म कूप में गिरते हुए को बचाने वाली और पुन्य उपार्जन कराने वाली एक स्वाध्याय ही है इस कारण हे बुद्धिमानों यदि तुम यह चाहते हो कि तुम कुछ धर्मका कार्य करो यदि तुम यह चाहते हो कि तुम्हारा जैन कुल में जन्म लेना सफल हो यदि तुम यह चाहते हो कि इस जन्म में कुछ पुन्य संचय हो और सुख की प्राप्ती हो तो अवश्य श्रीजैन शास्त्र की स्वाध्यायका नियम करो ॥ यदि तुम शास्त्र स्वाध्याय नहीं करते हो तो तुम अमोलक रत्न को कांच खंड समझ कर फेंकते हो ॥ आज कल तुम बहुतसी बातोंका नियम करते हो परन्तु हम हाथ जोड कर प्रार्थना करते हैं कि स्वाध्यायका नियम तुम हमारे कहने से करलो और फिर थोडे ही दिनो में देखो तुम्हारे हृदय में कैसे ज्ञान दीपकका उजयाला होता है और कैसा तुम को धर्म राग होता है और कितनी पुन्य की प्राप्ती होती है ॥ यदि हमारे जैनी भाई सब स्वाध्याय करने लगें तो सर्व प्रकार की न्यूनता जो आज कल धर्म में हो रही है सब दूर हो जावे और बहुत बडी धर्म की प्रभावना हो ॥ इस समय हम श्री शास्त्रजी के व्याख्यान दाता और

अन्य परोप कारी भाईयों से अर्दास करते हैं कि वह जिस तरह हो सके अवश्य सब भाईयों से स्वाध्याय करने का नियम करा देवें यह उनका बहुत बडा उपकार होगा और बहुत पुन्य की प्राप्ती उन को होगी आप लोग स्वाध्याय करनेका नियम क्या करावें गें जो इसका नियम करैंगे उन को एक अपूर्व निधि की प्राप्ती होगी और यद्यपि इस वक्त आप की प्रेरना उन को अति कठोर मालूम होती हैं परन्तु जब वह स्वाध्याय करके लाभ उठावेंगे तो अवश्य आपका जस गावेंगे और आप को अपना परम मित्र और उपकारी समझैंगे ॥ स्वाध्यायका नियम करते समय धर्म से अनुराग न होने के कारण बहुत से भाई यह कहैंगे कि हम को संसारिक कारजों से इतना सुबीता नहीं मिलता है कि हम कुछ वक्त इस कार्य में लगा सकैं ॥ यह कहना उनका सर्व था असत्य है और धर्म से अरुची होने के कारण उन्होंने यह बहाना बनाया है क्योंकि बहुतसा समय एसे लोगोंका वृथा बकवाद में और किसी के झूठे सच्चे किस्से बयान करने में और बहुधा दूषन प्रगट करने मैं व्यतीत होता है बहुतसा काल आलस्य और प्रमाद मैं गुजरता है यदि ऐसे मनुष्यों को जो समय न मिलने का बहना बनाते हैं यह कहाजावें कि तुम को इस से अधिक काम मिलै जितना तुम अब करते हो जिस मैं समय भी इस से दुगना लगता हो और धन का लाभ भी इस से दुगना होता क्या तुम ऐसे कार्य को स्वीकार करन लोगे तो इसका उत्तर वह यह देवैंगे कि हम बहुत अच्छी तरह से उस काम को कर देवैंगे आप हम को वह धन के लाभका काम अवश्य दिल वादी जिये हम आप के बहुत अहसान मन्द होवेंगे ॥ देखिये धन के लाभका काम करने के वास्ते तो समय बहुतेरा है ॥ ऐसे काम के वास्ते कोई यह नहीं कहता है कि मुझ को समय नहीं मिलता इस वास्ते मैं इस काम को स्वीकार नहीं करता हूं परन्तु समय तो केवल धर्म के ही काम के वास्ते नहीं है ॥ ऐसे पुरुषों को समझाना चाहिये कि भाईयों तुमने धर्म को जाना नहीं है इस कारण तुम धर्म कार्य को वेगार और व्यर्थ समझते हो धर्म के बराबर उपकारी कोई वस्तु नहीं है धन कुछ नहीं कर सक्ता है और धर्म आप के सब मनोर्थ सिद्ध करसक्ता है ॥ धर्म से पुन्य की प्राप्ती होती है ॥ यदि पुन्य कर्मका उदय न हो चाहै कितना ही धन पास मौजूद हो परन्तु धन कुछ भी कारज नहीं कर सकेगा और

यदि पुन्य का उदय है तो सब इच्छा पूर्ण हो सक्ती है और धन भी प्राप्त हो सका है भाईयों तुम ने अभी तक धर्म की महिमा को नहीं जाना है इस ही वास्ते धर्म कार्य से टलना चाहते हो बहुत से भाई यह कह दिया करते हैं कि साहब हम को स्वाध्याय करने की इच्छा तो बहुत है परन्तु क्या करें हमारे तो शास्त्र जी समझ मैं नहीं आते हमारी बुद्धि ही ऐसी है इस कारण लाचार हैं ॥ हाय हाय इन लोगों को धर्म से ऐसी घिन है कि इस से बचने के वास्ते इन्हों ने बुद्धि हीन होनाभी स्वीकार किया है ॥ ऐ भाइयों आप पर किसी की जबरदस्ती नहीं है यदि आप धर्म सेवन करेंगे तो आप को ही लाभ होगा इस कारण यदि आप को अपना भला करना मंजूर है तो आप स्वीकार करें और न चाहें तो न करें परन्तु बुद्धि हीन आप क्यूं बनते हैं और एक प्रकार यह उन का कहना सत्य भी है क्यूंकि यदि बुद्धि हीन और मूर्ख न होते तो धर्म से क्यूं घिन करते ॥ यदि इन ही बुद्धि हीन पुरुषों से यह कहा जावे कि अमुक काम अगर तुम कर देते तो तुम को इतना रुपया दिया जाता परन्तु तुम उस काम को कर नहीं सकोगे क्यूंकि तुम उस काम को जानते नहीं हो तो तुरन्त यह उत्तर मिलता है कि हम कौनसा काम नहीं कर सक्ते हैं यदि हम नहींजानते हैं तो सीख लेवैंगे सीखने से सब काम आ सक्ते हैं परन्तु शोक की बात कि शास्त्र स्वाध्याय ही एक ऐसीबात है जो सीखने से नहीं आ सक्ती है ॥ हे भाईयों क्रोध मत करो यह सब कुछ आप के ही फायदे के वास्ते कहा जाता है इस कारण शांत प्रभाव करके विचारो कि अभ्यास करने से सबकुछ आ सक्ता है यद्यपि तुम ने स्वाध्याय करने में कोशिश की है परन्तु उतरे दिल से इस कारण आप को रहस्य नहीं आया है यदि दिल लगा कर कोशिश करो तो क्या आप मनुष्य नहीं हैं जो शास्त्र आप की समझ में न आवे जरा जल्दी न कीजिये औरमजबूत दिलकरके नियम पूर्वक नित्यस्वाध्याय करो यदि अब तुम्हारे समझ में कुछ नहीं आता है तो थोड़े ही दिनों में सब कुछ समझ मेंआने लगेगा और फिर आप स्वाध्याय के लाभ को भी जान जावेंगे ॥ बालक जब वर्णमाला पढ़ता है तो उस को बहुत ही बुरा मालूम होता है क्यूंकि वर्ण माला में रहस्य की कोईबात नहीं होती है परन्तु जब वह अक्षरोंको मिला कर शब्द और वार्ता पढ़ने लगता है तो उस को कुछ कुछ रहस्य आने लगता है और जब बड़ी २ पुस्तक पढ़ता है उस समय तो पूरण ही

रहस्य आता है ॥ हे भाईयो अभी तुम ने जैन मत के सिद्धान्तों को नहीं जाना है इस कारण तुम्हारा शास्त्र का स्वाध्याय करना वर्ण माला के तुल्य है जब थोडे दिनों मैं तुम कुछ २ सिद्धान्त से वाकिफ हो जावोगे तब ही तुम को रहस्य आने लगेगा फिर आहिस्ता २ तुम बड़े २ महान ग्रंथ देखा करोगे और परम आनन्द लियाकरो उस वक्त आप कहोगे कि बेशक कोई सच्च कहता था और गजट में सच्च लिखा था ॥

कोई २ भाई यह कहा करते हैं कि हम नागरी के अक्षर नहीं जानते हैं इस कारण स्वाध्याय करने मे लाचार हैं नहीं जी तो बहुत चाहता है उन से कहना चाहिये कि हे भाईयो यह किस का कसूर है क्या तुम्हारे माता पिता का यह कसूर नहीं है कि उन्हों ने तुम को बाल्यावस्था में विद्या न पढाई ॥ कहिये आप के पिता आप के उपकारी थे वा बैरी थे ॥ खैर तुम्हारे माता पिता ने तुम को नहीं पढाया इस कारण तुम एक महानिधी अर्थात धर्म की प्राप्ति के वास्ते तरसते हो परन्तु यह तो बतलाईये कि आप भी अपने बालकों के साथ उपकार करके उन को नागरी और धर्म विद्या सिखातेहो या नहीं ॥ तुम्हारे पिता ने तो तुम्हारे साथ बैर किया परन्तु तुम तो अपनी संतान का हितही करो ॥ खैर यह बात तो अलगरही मगर भाई साहब क्या यह बात आपने नहीं सुनी है कि नागरी अक्षर बहुतही सुगम हैं और सहजही में सीखे जासक्ते हैं ॥ ज्यादे से ज्यादा दस दिन में आप को नागरी का अभ्यास होसक्ता है फिर दस दिन की तकलीफ के वास्ते आप क्यूं धर्मरूपी अमूल्य निधि से अलग रहेजाते हैं ॥ बहुत से भाई यह कहदेते हैं कि अब बुड्ढे होकर क्या पढेंगे और क्या स्वाध्याय करेंगे सैकड़ों चिन्ता लगी रहती हैं और यदि किसी जवान से कहाजावे तो वह यह कहता है कि यह काम बूढों के हुवा करते हैं जिन को संसार का कुछ काम नहीं होता है और बालक तो यह कहही देते हैं कि हम स्वाध्याय करना क्या जाने ॥ हम को बड़ी सोच इस बात की है कि कौनसी अवस्था शास्त्र स्वाध्याय करने और धर्म के जानने की है ॥ बहुत से भाई यहही कहदेते हैं कि स्वाध्याय से फायदाही क्या है हम प्रति दिन दर्शन करते हैं माला जपते हैं कंदमूल नहीं खाते हैं और उपवास करते हैं हम को शास्त्र स्वध्याय करके और अधिक जानने की क्या जरूरत है ऐ भाईयो देखो श्री दिगम्बर मुनि यद्यपि वह सर्व क्रिया को जानते हैं परन्तु तौभी वह बराबर स्वाध्याय करते हैं और यद्यपि उन्हों ने सर्व परिग्रह को त्याग दिया है परन्तु शास्त्र वह अवश्य अपने साथ रखते हैं ॥ यदि आप शास्त्र स्वाध्याय को मुख्य और आवश्यक नहीं स-

मझते हैं तो आपने बिलकुल धर्म के स्वरूप को जानाही नहीं है और आप का सर्व परिश्रम वृथा है ॥ श्री मंदिरजी में आने से और बीतराग मुद्रा के दर्शन करने से बहुत कुछ धर्म का लाभ होता है परन्तु उनको ही जो उस से लाभ उठाने के उपाय को जानते हैं मंदिरजी में चिड़िया मक्खी आदि जानवर उड़ते हुवे आजाते हैं श्री भगवान के वह दर्शन भी करते हैं अर्थात देखते हैं परन्तु वह नहीं जानते हैं कि यह क्या वस्तु है इस कारण वह उस से क्या लाभ उठासक्ते हैं ऐसेही वह मनुष्य जो धर्म के स्वरूप को नहीं जानते जो इस बात से अज्ञात है कि जिस मूर्ति के वह दर्शन करते हैं वह किस भगवान की मूर्ति हैं और न उन की कथा को जानते हैं और न इस बात से वाकिफ हैं कि श्री भगवान की मूर्ति के क्यों दर्शन किया करते हैं उस से किस प्रकार लाभ होता है वह वैसेही हैं जैसे कि उपरोक्त दृष्टान्त में चिड़िया या मक्खी ॥ क्या बिना समझे संस्कृत या प्राकृत को कुछ मुख से उच्चारण कर माला के दानों को फिराने से कुछ लाभ होसक्ता है कदाचित नहीं क्या भूखे मरने से और उस का नाम वृत या उपवास रखने से कुछ फायदा होसक्ता है यदि ऐसा होता तो कंगाल दारिद्री लोग जिन को खाने को नहीं मिलता है अधिक धर्मात्मा होते हे सज्जन पुरुषों जैन मत का जानो और उस के सिद्धान्तों को समझो फिर बेशक इन कामों में धर्म लाभ होगा ॥ मुझे इस बात का भय है कि आप मुझ को इस कारण पापी बतलावैंगे कि यह धर्म के कार्य करने से रोकता है और उन को वृथा बतलाता है और मुझपर आप को क्रोध भी आवेगा परन्तु हे भाईयो मैं हाथ जोड़कर बड़ी अधीनताई से यह कहताहूं कि मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि तुम यह धर्म के कार्य छोड़दो नहीं हरगिज मत छोड़ो धन्य है आप को शाबास है आप को जो आप इस प्रकार धर्म सेवन करते हैं परन्तु मेरी यह प्रार्थना है कि आप आंख बंद करके बिना जाने बूझेही धर्म पालन करने को धर्म न समझें बल्कि धर्म के सिद्धान्त के जानने को भी मुख्य कार्य समझें इस के सिवाय मेरा और कुछ अभिप्राय नहीं है शास्त्र स्वाध्याय करना मनुष्य का परम धर्म है शास्त्र स्वाध्याय एक मनुष्य पर्यायमें ही नसीब होता है मनुष्य जन्म बड़े पुन्य के प्रताप से प्राप्त होता है इस कारण इस को बृथा नहीं खोना चाहिये यह जन्म शास्त्र स्वाध्याय सेही सफल होता है ॥ शास्त्र स्वाध्याय के कारण यह मनुष्य पर्याय फिर भी जल्द मिलसक्ती है नहीं तो कठिन है ॥ इस को धर्म कार्यों से मुख्य और जरूरी समझो यदि आपने शास्त्र स्वाध्याय करना स्वीकार करलिया है तो सर्व प्रकार के धर्म कार्य आपने ग्रहण करलिये हैं और यदि

शास्त्र स्वाध्याय नहीं है तो कुछ भी नहीं है ॥ हे भाईयो यद्यपि पहले २ आप को स्वाध्याय करना बहुतही कठिन मालूम होगा परन्तु फिर थोड़ेही दिन में सुगम हो जावेगा क्योंकि प्रारंभ में सब कामों में मुशकिल पड़ा करती है ॥ इस साल की दश लाक्षणी आप का उद्धार करनेवाली होगी यदि आप शास्त्र स्वाध्याय को ग्रहण करलेवेंगे ॥ हम परोपकारी भाईयों से प्रार्थना करते हैं वह कोशिश करके सब से नियम करादेवें क्यूंकि बिना नियम के बहुत से आदमी भूल जावैंगे और छोड़देवेंगे और कृपा करके इतनी तकलीफ और उठावें तो बहुत उपकार हो कि जो जो भाई शास्त्र स्वाध्याय का नियम करें उन के नाम और नियम का काल लिख कर हमारे पास भेजदेवै हम उन सब धर्मात्मा भाईयों का नाम जैन गजट में छाप देवेंगे जिस से दूसरे भाई को भी प्रेरना हो ॥

वैर विरोध

नहीं मालूम वैर विरोध अधिक करके जैन जाति के ही क्यूं पीछे पडा है जैन जाति से क्यूं इस ने मित्रताई की है ॥ किसी समय में जैनियों की वात्सल्यता अर्थात् गौ बच्छे की प्रीति मशहूर थी इन का मलूक और एक्यता प्रसिद्ध थी परन्तु हाय अफसोस अब उस की जगह विरोध ने अधिक जोर पकड़ा है ॥ हमारे पास अनेक स्थानों से यह समाचार आते हैं कि आज अमुकस्थान मैं जैनियों मैं विरोध हो गया आज उस जगह झगड़ा फैला आपुस मैं लड़ाई हो गई हम ऐसे समाचारों को असभावना के कारण समझ कर जैन गजट मैं नहीं प्रकाश करते हैं आप सब जानते हैं कि आपुस का विरोध इस जाति मैं किस कदर बढ़ गया है क्या कोई नगर ग्राम ऐसा है जिस मैं जैन बिरादरी के बहुत से थोक न हों और एक दूसरे की बुराई न चाहते हों ॥ हाय हाय यह वैर विरोध हमारी जाति में यहां तक फैला है कि धर्म कारजों मैं भी इस का प्रवेश होने लगा ॥ यदि एक भाई किसी धर्म कार्य के होने की प्रेरणा करता है तो उस के विरोधी इस विचार से कि हमारे प्रतिपक्षी ने इस काम को उठाया है उस काम को नहीं चलने देते हैं और जहां तक बन पड़ता है उस मैं विघ्न डालते हैं ॥ इस ही प्रकार जब यह किसीकामको चाहते हैं तो दूसरा उस को तोड़ देता है नतीजा आखिरकार यह होता है कि इन दोनों विरोधियों का कुछनहीं बिगड़ता है परन्तु धर्म कारज मैं अवश्य विघ्न पडजाता है ॥ हायहाय हमारे जैनी भाई कैसे मूर्ख हैं अपने ही दुशमन हो रहे हैं अपनी हानि अपनानुकसान आप करते हैं ॥ [शेषमग्रे]

जैनमहासभा

जैनमहासभा के दिन निकट आगये ॥ महासभा में क्या क्या विचार होना चाहिये क्या २ प्रबन्ध होना चाहिये यह सब इस समय निश्चय कर लीजिये क्योंकि आज कल पर्व के दिनो में सब भाई श्रीमंदिरजी में एकत्र होतेहैं और धर्म ध्यान में लगे रहते हैं॥ इस समय आप यहभी नियत करलीजिये कि महासभा में आपके नगर के भाईयों की तरफ से कौन प्रति निधि अर्थात मुखिया होगा ॥ महासभा के वास्ते जो २ आप विचार करें और जिस को आप प्रातिनिधि नियत करें यह सब समाचार कृपा करके डिप्टी चम्पतरायके पास इटावा लिख भेजें॥

जैनभ्रातृगणना

हकीम उग्रसैन सरसावा जिला सहारनपुर निवासी ने भ्रातृगणना के नकशे आपके पास भेजे होंगे सो अपने २ नगरका सर्व वृत्तांत उस में लिखकर भेज दिया होगा यदि नहीं भेजा होतो कृपा करके अब शीघ्र भेजदेवें और यदि नकशे आपके पास न आये होतो नकशे मंगालेवें ॥

जैनसभा

आप के नगर में जैनसभा पहले से होगी इस कारण उसका प्रबन्ध भलेप्रकार करलेना चाहिये और यदि अभीतक जैनसभा नियत नहीं होतो सभा नियत करने के वास्ते इस से अच्छा और कौनसा समय होगा जरूर जिस तरह हो सके कोशिश करके सभा कायम करलेनी चाहिये सभा के बिदुन किसी प्रकार उन्नति नहीं हो सक्ती है सभा से बडे २ फायदे हैं ॥

जैनपाठशाला

आप के नगर में जैन पाठशाला भी है या नहीं ॥ यदि पाठशाला पहले से है तो उस के खर्च और पढाई और जैनियों के बालकों के पढनेका प्रबन्ध भले प्रकार कर लीजिये और यदि पाठशाला नहीं है तो जारी कीजिये इस समय सब भाई मौजूद हैं इस कारण पाठशालाका बंदोबस्त बडी आसानी से हो सक्ता है यदि यह दिन व्यतीत होगये तो फिर

कोई इन्तजाम होना मुशकिल है ॥ धर्मका उपकार पाठशाला के विदून नहीं हो सक्ता है ॥

फिजूलखर्ची

निकालो इस दुश्मनी को ॥ इस के कारण आपका धर्म कर्म सब नष्ट होता है ॥ इस ने आपका सुख आपका आराम सब बरबाद कर रक्खा है इसने आपको पापी बाना रक्खा है॥ इसही के सबब आपको आठ पहर चिन्ता रहती है॥ फिजूल खर्ची को अपनी जातिसे कालामुंह करके विलकुल निकालदो ॥ फिजूल खर्ची के दूर होनेसे बहुत धर्म उन्नति होगी इस कारण आज कल धर्म सेवन केसमयमेंही इसका बंदोवस्तकरो

जैन महाविद्यालय

महाशयो आप सब भाईयों की ही सहायतासे जैन महाविद्यालय जारी होसक्ता है॥ आप जानते हैं एक २ बूंद पानीसे समुद्रभर जाता है ॥ ऐसाही आप सब भाईयों की थोडी २ सहायता से भी सब कुछ होसक्ता है आपका बहुतसा रुपया धर्म हेतु लगताहै थोडासा इसमें भी लगादीजिये आपका बडाभारी पुन्य औरजसहोगा औरजैनधर्म और जैनजातिका उद्धार होजावेगा जैनमहाविद्यालयकी सहायताकारुपया श्रीमान्सेठलक्ष्मणदाससाहब सभापतिजैन महासभामथुराकेपासभेजनाचाहिये

उपदेशक भंडार

उपदेशकों के देश विदेश घूमने से जो लाभ होना है उसको आप भले प्रकार जानते हैं अविद्या अंधकार दूरकरना धर्मोन्नति के सर्व कारनोंका प्रचार देना घोरनिद्रामैं सोते हुवों को जगाना उपदेशकोंका ही काम है ॥ आज कल उपदेशकों के ही द्वारा परोपकारी भाईयों के मनोर्थ सिद्ध होंगे और जैनधर्मका प्रचार होगा सर्व जैनीभाईयों को उचित है कि जहांतक होसके उपदेशक भंडार की सहायता करैं ॥ जो पैसा जैनी भाईका इसमैं लगेगा वहही सफल होगा ॥ उपदेशक भंडार की सहायताका रुपया मुन्शीचम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट इटावा के पास या श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास सी० आई० ई० सभापति जैन महासभाके पास भेजना चाहिये॥

॥ श्री ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी
में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एक वर्ष का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हर अंगरेज़ी महीनेकी १–८–१६–२४ ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर में
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० 12 सित ~~१६ अगस्त~~ ... सन् १८९६ } अङ्क

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

जैनगजट की सहायता

जैनगजट से जाति और धर्म की उन्नतिकी पूरी २ सम्भावना है इसही के द्वारा हमारे सब कारज और मनोर्थ सिद्ध होंगे ॥ जैनगजट की सहायता करना जैनियोंका परम धर्म है ॥

जैनगजट की सहायता किस प्रकार हो सक्तीहै?

(१) जैनगजट को आप मंगाना॥

(२) अन्य भाईयों को जैनगजट मंगाने की प्रेरणा करना॥

(३) जैनगजट भाईयों को पढ़ कर सुनाना ॥

(४) जैनगजट में छपने के वास्ते उत्तमोत्तम मजमून और अपने नगर और देश के समाचार जैन जाति सम्बन्धी लिखकर भेजना

(५) अपने मित्रों को जो अन्य नगर और देश में हों जैनगजट की सहायता के वास्ते लिखना

(६) जैनगजटका मूल्य अपना और अन्य भाईयों से लेकर भेजना

(७) अन्य जिस प्रकार जैनगजट की सहायता होती हो तन मन धन से करना

जैनगजट सब जैनी भाईयों को अवश्य मंगाना और पढ़ना चाहिये यह गजट बालक पुरुष स्त्री सब के वास्ते उपयोगी है ॥

मूल्य केवल ३ रुपया एक वर्षका

जैन गजट की सहायता का समय भादव मास श्री दश लाक्षणी पर्व से अच्छा और कोई नहीं मिल सक्ता है इस कारण जहां तक हो सके इस समय कोशिश करनी चाहिये ॥

जैन गजट का प्रथम वर्ष समाप्त होने वाला है दूसरे वर्ष के वास्ते जैन गजट का मूल्य भेजनेका यह बहुत अच्छा मौका है क्योंकि पर्व के दिन हैं सबका अनुराग धर्म में पूरा२लग रहा है फिर पीछे मुशकिल पड़ैगी॥

वैर विरोध

अंक ३८ पृष्ठ १८ से आगे

पुरुषके साथ वैर होने के हेतु धर्म कार्य में विघ्न डालने से विघ्न उस पुरुष का हुआ जिस ने वह काम उठाया था या धर्म का हुआ ॥ हाय २ जैनियों की बुद्धि कहां गई जो माटी २ बातों को भी नहीं विचार सक्ते हैं दो मूर्खों की एक कहावत मशहूर है कि दो मूर्ख किसी एक फकीर के चेले थे और अपने गुरु की सेवा किया करते थे एक तो गुरु की दाहनी तरफ की टांग दबाता था और दूसरा बांई तरफ की टांग दबाता था ॥ इन दोनो में आपस में झगडा हुवा करताथा और एक कहता था मैं बडा हूं क्योंकि गुरु की दाहनी टांग दबाता हूं दूसरा किसी युक्ती से बांई टांग की बडाई सिद्ध करने की कोशिश किया करता था परन्तु भले प्रकार सिद्ध नहीं होसका करती थी इस बात पर उन में नित्य लडाई रहती थी ॥ एक दिन बांई टांग दबाने वाले ने यह विचार किया कि दाहनी टांग दबाने के कारण वह मुझ को नित्य लज्जित कर देता है इस कारण अवसर पाकर दाहनी टांग को ही किसी दिन काट डालना चाहिये जिस से वह फिर कभी मुझ को लज्जित न कर सके बल्कि ऐसी अवस्था में मैं उसको लज्जित किया करूंगा ॥ क्योंकि उस के पास दबाने के वास्ते गुरु की कोई भी टांग न रहैगी ॥ निदान उस ने ऐसाही किया और गुरु की दाहनी टांग काट कर गुरु को लंगडा कर दिया यह बात देख कर दूसरे को भी क्रोध आया और लज्जा भी प्राप्ति हुई इस कारण उस ने गुरु की बांई टांग को काट दिया और गुरु को टुंड मुंड बना दिया भाईयों विचारो उन्होंने बुद्धिमानीका काम किया या मूर्खताई का ॥ आप उन को अवश्य अत्यन्त मूर्ख ठहरावैंगे क्योंकि उन अकल के अन्धों का टांग काटने समय यह विचार न आया कि टांग तो हमारे ही गुरु की कटती है ॥ भाईयो यह ही हाल हमारे जैनी भाईयोंका हो रहा हैं वह सब एक ही जैन धर्म को सेवन करते हैं परन्तु आपस में लडते झगडते हैं और जैन धर्म की हानि करते हैं इस से अधिक और क्या मूर्खता होगी हे भाईयो आप को धर्मानुराग न होने के कारण धर्म में विघ्न आनेका तो कुछ भय न होगा बल्कि इस बातका हर्ष प्राप्त होता होगा कि हमारे विरोधी ने अमुक काम चलाना चाहा था मगर हमने हरगिज न चलने दिया परन्तु इस समय आप को यह भी तो

विचार होना चाहिये कि जब हम कि सी कारज को चलाना चाहेंगे तो वह भी नहीं चलने देवेगा और उस समय आ प को लज्जा और दूसरे को हर्ष प्रा स होगा धर्म के साथ तुम्हारी प्रीति नहीं है इस कारण धर्मका जिक्र छोड दो और संसारिक कारजों की तरफ ध्यान दो क्या संसारिक तुम्हारे बहु त से कारजों में इस ही कारण हान नहीं आती है कि तुम्हारे में आपस में विरोध है यदि तुम्हारे में आपस में स लूक हो तो क्या तुम को बहुत ही लाभ न हो ॥ भाईयो जिस समय को ई किसी के साथ विरोध करता है औ र उस के कारजों में विघ्न डालता है उसकी अप्रतिष्टा करने की चेष्टा कर ता है उस समय उस को यह बात भी अवश्य विचार लेनी चाहिये और इस बात को निश्चय समझ लेनी चाहिये कि अवश्य मेरे साथ भी विरोध हो गा और मेरे कामों में भी विघ्न डाला जावेगा और मेरी भी अप्रतिष्ठा हो गी ॥ नहीं इस से भी अधिक बात होगी ॥ आप सब यह बात देखते हैं कि यदि कोई किसी को एक गाली देता है तो दूसरा उस के उत्तर में उस को दस गाली सुनाता है इस ही प्रकार यदि कोई किसी के एक काम में विघ्न डालता है तो दूसरा उसके दस कामों में विघ्न डालने की कोशि श करता है ॥ हाय हाय यह कैसी मू र्खता की बात है कि जब कोई किसी के साथ वैर करता है तो वह यह वि चारता है कि मैं तो इसका बहुत नु कसान कर सकूंगा और यह मेरा कु छ भी नुकसान नहीं कर सकेगा ऐसा विचार कदाचित न करना चाहिये ब ल्कि विरोध करते समय डरना चाहि ये कि हमारे कारजों में विघ्न डालने वाला एक वैरी पैदा हो गया है ॥ किसा किसी भाई को यह विचार हो जाता है कि हम धनवान और श क्ती वान पुरुष हैं हमारा कोई क्या करसक्ता है यह विचार उनका सर्व था मूर्खताई का है क्योंकि निधन कं गाल को कोई क्या नुकसान पहुंचा सक्ता है वह तो पहले ही कंगाल औ र शक्तिहीन है नुकसान तो कारज वाले ही को पहुंचा करता है ॥ हे जै नी भाईयो यदि आप में ऐक्यता हो और वैर विरोध न हो तो आप के स ब कारज सहज में सिद्ध होने लगैंगे और अन्य जाति मनुष्यों पर भी आ प की अधिक शक्ती प्रगट होगी और जैनियों की पहलीहीसी प्रभावना हो गी ॥ जैनियों की कषाय ऐसी तीव्र न होनी चाहिये कि उस के वस मैं हो कर ऐसे अन्धे होजावैं कि अपने हि त अनहित का भी विचार न रहै ॥

एक छोटी सी कहावत मशहूर है कि एक बनिया और एक ब्राह्मण और एक नाई तीनों इकट्ठे हो सफर को चले गांव से बाहर निकल कर उन्हों ने एक खेत में से कुछ गन्ने तोड़ लिये खेत वाले को मालूम हुआ परन्तु खेत वाला अकेला था इस कारण वह तीन आदमियों को देख कर डरा उसने सोचा कि जब तक इन में ऐक्यता है तब तक तो मैं इन को कुछ कह न सकूंगा इस कारण इन की ऐक्यता तोड़ना चाहिये सो उसने बनिये से कहा कि लाला जी आप तो हमारे शाह हैं और ब्राह्मण से कहा कि आप हमारे पूजनीय हैं इस कारण यदि आप ने गन्ना तोड़ लिया तो आप का हक्क था परन्तु नाई जो कमीन है क्या इस को इतना साहस हो जावे कि बिना हमारी आज्ञा के हमारे खेत में से गन्ना तोड़ ले इतनी बात सुन कर बनिया और ब्राह्मण तो खुश हो गये कि खेत वाले ने हमारी प्रतिष्ठा की है और चुप होगये उनको प्रसन्न हुआ देख खेतवाले ने नाई को खूब मारा उस के पीछे खेतवाले ने बनिये से कहा कि लाला साहब ब्राह्मण को तो हम देवता मानते हैं इस कारण यह हमारा कितना ही नुकसान कर देवें परन्तु हम इन के आगे हाथ ही जोड़ेंगे इस कारण हमारे अहो भाग्य हैं जो इन्हों ने गन्ना तोड़ा मगर क्या आप कभी बिना सूद भी रुपया देते हैं जो बिना पूछे गन्ना तोड़ लिया यह कह कर उस ने बनिये को भी बहुत मारा और ब्राह्मण देवता बनकर चुपका खड़ा रहा बनिये को पिटता देख कर नाई भी हर्षित हुआ क्यूंकि उस की सहायता उन्हों ने नहीं की थी जब बनिया भी पिट चुका तो खेत वाले ने ब्राह्मण को भी अकेला देख कर मारा और उस को पिटता देख कर नाई और बनिया दोनों बहुत खुश हुये गरज एक किसान ने तीनों को पीट दिया ॥ यदि वह तीनों किसान की झूठी बड़ाई से खुश हो कर ऐक्यता को न छोड़ते तो किसान किसी की तरफ आंख उठा कर भी न देख सका ॥ यह ही हाल हमारे जैनियों का हो रहा है कि वह अंतिम फल पर दृष्टि नहीं देते हैं और ऐक्यता को छोड़ कर अनेकानेक दुःख उठाते हैं ॥ हम यह बात देखते हैं कि बहुधा बिरादरी और पंचायत में इस कारण विरोध हो जाता है कि जो बात मैंने कही थी उस प्रकार क्यूं काम न हुवा नतीजा आखिर इसका यह होता है कि न इन के कहने के अनुसार और न दूसरे के कहने के अनुसार ॥ भाईयो ऐक्यता बहुत बड़ी चीज है उस को एक जरासी बात के खातिर क्यूं बिगाड़ देते हो इंसाफ को कभी हाथ से मत जाने दो और यदि तुम मैं से कोई बे इंसाफी करे तो तुम क्रोधित मत हो उस को समझावो नहीं माने तो तुम ही उस की बात को मान लो

वह आने आपही लज्जितहो जावेगा सदा आधीनताई की बात कहो और वास्तव में भी अपने आप को आधीन समझो यद्यपि आज तुम्हारा काबू है और तुम दूसरे को नुकसान पहुचा सके हो परन्तु सदा दिन एक से नहीं रहैंगे जब दूसरे का काबू होगा तो वह भी डंकमारे बिदून न रहेगा हे सज्जन धर्मात्मा पुरुषों हाथ जोड़ कर विनय सहित एक प्रार्थना मेरी आपसे है कृपा कर आप उस को स्वीकार करैं ॥ जैन धर्म में रक्षा और शांति सुभावका बहुत बड़ापुन्य लिखा है और जबतक परिणाम शांत नहीं होते तबतक कोई धर्म कारज नहीं हो सक्ता है ॥श्री दशलाक्षणी पर्व में आप अवश्यव्रत उपवास करते होगे और पूजा ध्यान सामायकलवुपामायक आदि भी अवश्य की जाती होगी क्यूंकि पर्व के दस दिन आप धर्म ध्यान में ही व्यतीत करना चाहते हो परन्तु हे भव्यजीवो इन सब कारजों में प्रथम परिनाम शांति करना वैरभाव दूर करना और सब से क्षमा मागना आवश्यक है नहीं तो यह सब कारज धर्म कारज नहीं हैं लोक दिखावा है ॥ हे भाईयोंआप को यहबात कब मंजूर होगी कि आपका दस दिनका परिश्रम व्यर्थ जावे इस कारण आपके लिये आवश्यक हुआ कि आप पिछले बैर विरोध को दूर कर देवैं और चाहे दूसरे ने आप को कितना ही नुकसान पहुंचाया हो परन्तु तौ भी आपक्षमा करैं और दूसरों से क्षमा मांग लेवैं ॥ हे सज्जन पुरुषों आप सब भाई मंदिर जी में बैठे हुवे हो आर एक जैन धर्म के प्रेमी हो इस कारण क्या आप को यह इच्छा नहीं है कि आप में सब में प्रीति हो अवश्य आप को यह इच्छा होगी फिर आप को क्या विलम्ब है ॥ जो भाई बैर विरोध मिटाकर अपने भाईयों में ऐक्यता करने की कोशिश करते हैं धन्य हैं और वह पुरुष उन को बहुत पुन्य का फल होगा ॥ बड़ों की बड़ाई और प्रतिष्ठा क्षमा है मनुष्य अहसान से मरता है नुकसान से नहीं इस कारण क्षमा करो और सब एक हो जाओं ॥ विरोध को जो तुम्हारा वैरी है अपनी आत्मा में से निकाल दो ॥ तुम सब से कह दो कि पिछले बैर विरोध को दूर किया और जो किसी का कसूर था वह क्षमा किया अन्य सब भाई भी मेरा कसूर क्षमा करैं ॥ इस प्रकार क्षमा करने में तुम्हारी बड़ी प्रतिष्टा और धर्म होगा क्यूंकि तुमने किसी से डर कर या दबकर क्षमा नहीं मांगी है बलकि श्री दस लाक्षणी पर्व के प्रताप में धर्मानुरागी होकर पुन्य उपार्जन के हेतु ऐसा किया है॥सब भाईयों को चाहिये कि इस प्रकार क्षमा मांगकर आपुस में प्रीति कर लेवैं ॥

जैन महासभा

हे जैनी भाईयो अब आप का भाग्य उदय होगया है अब तुम्हारी सब स-

होगी इस लिये उस को वह काम अ-
कमार करना पड़ता है और धन भी
ज्यादा ही खर्च किया जाता है वह
उस काम को कितना ही नापसन्द
करता हो ॥ यह ही कारण है कि
हमारे बुद्धिमान लिखे पढ़े भाई भी
जो फिजूल खर्ची के दूर होने के वा-
स्ते अनेकानेक कोशिशें करते हैं और
इस की बुराई में बडे २ व्याख्यान दे
ते हैं जब उनको खुद कोई कारज
कारना पडता है तो पहली ही रीति
अनुसार करते हैं और फिजूल खर्ची
के दास बनते हैं ॥ भाईयो अगर अ-
च्छी तरह से विचार किया जावे तो
ख्याल उनका ठीक नहीं है ब-
ल्कि दिल होनेका हेतु हैं ॥ क्यों
कि फिजूल खर्ची से नेक नामी
हुआ करती तो इस को बुराही कौन
कहता ॥ फिजूल खर्ची से नेक नामी
हरगिज नहीं हो सक्ती है बल्कि
इस से बडी भारी बदनामगी होती है
क्या आप दो दिन की वाह वाह को
नेक नामी समझते हैं और मेरी समझ
में तो दो दिन की भी वाह वाह कि-
सी की नहीं होती है ॥ नेक नामी
और बदनामी के वास्ते पीठ पीछे दे-
खो आप को लोग बाग क्या कहते हैं
सामने तो कोई बदनामी से बदनाम
को भी बुरा नहीं कहता है अगर कोई
पुरुष करज लेकर धन खर्चता है तो
चाहे वह कैसा ही छिपकर करज लेवे
परन्तु यह बात सब पर प्रगट हो जा
ती है फिर देखिये कितनी उस की
अप्रतिष्ठा होती है और जो कोई कर-
ज नहीं लेता है और घरसे ही रुपया
लगाता है उस के व्योपार में कमी
आजाती है क्योंकि व्योपार तो रुपये
से ही चलता है वह लगगया फिजूल
खर्ची में बस कोरे रहगये ॥ व्योपार
के कम हो जाने से जितनी बदनामी
होती है यह सब जानते ही हैं ॥ इन
सब बातों के सिवाय हमारी जैन जा
ति के सर्व मनुष्य बानिये हैं और ब-
निये कंजूस मार्ग्या चुस महहूर हैं कि
वह न खाने हैं न पीते हैं एक २ कौं
डी के वास्ते जान देते हैं क्या यह ब-
दनामी नहीं है और क्या इसका का-
रण फिजूल खर्ची ही नहीं है मैं यह
बात कहसक्ता हूं कि अगर हमारी
जाति मे फिजूल खर्ची दूर हो जावे तो
यह बदनामी भी दूर हो जावे जिस
के कारण उन की हंसी भी होती है ॥
इस प्रकार अनेक हेतुओं से यह बात
सिद्ध होती है कि फिजूल खर्ची करने
से नेक नामी कभी नहीं हो सक्ती है
बल्कि बदनामी ही होती है इस वा-
स्ते बुद्धिमानों को बिलकुल घबराना
नहीं चाहिये और कभी फिजूल खर्ची
के फंदे में नहीं फंसना चाहिये ॥ खैर
मगर इस प्रकार बुद्धिमान पुरुष ही

इस डायन फिजूल खर्ची से बचसके हैं सर्व साधारण तो नहीं बचसके और बिरादरी में सब को एक रीतिसे काम करता हुवा देख कर बुद्धिमानका दिल भी कमजोर हो जाता है इस कारण इस दुष्ट फिजूल खर्ची को बिरादरी में से ही निकाल देना चाहिये ॥ हे बुद्धिमानो यह बात आप जानते हैं कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जो अपने सुख की इच्छा न करता हो परन्तु यह भी आप देखते हैं कि बहुत से मनुष्य इस रीति से कार्य करते हैं जिस में उन को नुकसान हो और इस ही कारण नुकसान उन को होता है परन्तु क्या उन्होंने जान बूझ कर अपना नुकसान किया नहीं बल्कि इच्छा तो उन की यह ही थी कि फायदा हो मगर अपनी बेवखुफी के सबबसे उन्होंने उपाय उलटा किया इस ही रीति से बहुत से निर्बुद्ध जिन को अपने हिताहितका कुछ विचार नहीं है फिजूल खर्ची के दूर होने में कुछ उत्साह नहीं रखते हैं और वह दुष्ट पुरुष जिन को बेटा बेटी के बिवाह आदिका कोई कारज नहीं करना होता है वह अन्य अपने भाईयों को फिजूल खर्ची कर कंगाल बना हुवा देखने की इच्छा रखते हैं इस कारण ऐसे पुरुष जब फिजूल खर्ची के दूर करनेकी कोई चर्चा बिरादरी में आती है तो जिस तिस प्रकार विघ्न डाला करते हैं ॥ और परोप कारियों पर जो फिजूल खर्ची के दूर होने की कोशिश करते हों दूषण लगाया करते हैं बहुधा करके यह कहा जाया करता है कि अमुक पुरुष इस कारण फिजूल खर्ची दूर होने की कोशिश करता है कि इस के बहुत बेटा बेटी हैं यदि फिजूल खर्ची बन्द नहीं होगी तो इसका कैसे पूरा पडेगा और भी दूषण इस ही प्रकार के लगाये जाते हैं ॥ ऐसे दूषणों को सुन कर बहुधा कोशिश करने वाले हट जाते हैं परन्तु जो ऐसी बातों को सुनकर हट जाते हैं वह बुद्धिमान् नहीं है क्योंकि अपने फायदे और बचाव के वास्ते कोशिश करना क्या कुछ बुरी बात है कदापि नहीं बुद्धिमानों परोप कारियों को सावधान रहना चाहिये और दूषण लगाने वालो और विघ्न डालने वालों से कुछ डरना नहीं चाहिये क्योंकि फिजूल खर्ची दूर होने के पीछे जब उन को आराम मिलेगा और फायदा होगा तो जरूर आपके उपकार को याद करैंगे॥

फजूल खर्ची के दूर करने के प्रबन्ध में एक इस बात का भी आप को खयाल रखना चाहिये कि धनाढ्य पुरुष भी कई कारणों से इस प्रबन्ध में बिघ्न डालते हैं प्रथम तो यह बात है कि उन के हृदय में कुछ दुष्टताई होती है वह यह समझे

राबियें दूर हो जावैंगी अवश्य जैन जाति की उन्नति होगी क्यूंकि श्रीजैन धर्म संरक्षनी महासभा मथुरा मैं स्थापित हो गई है और जाति शिरोमणि श्रीमान सेठ लक्ष्मनदास साहब सी०आई०ई०इस सभाके सभापति हैं ॥ इस सभा की नियमावली के ने से जो हाल ही मैं प्रकाश हुई आप को मालूम हुआ होगा कि कैसी मजबूती और बुद्धिमानी से इस सभा ने कुल भारत के जैनियों का धर्म और संसार सम्बन्धी उन्नति करने का बीड़ा उठाया है ॥ आप को बहुत बार इस बात का विचार हुआ होगा कि जैन जाति के उद्धार के वास्ते किसी महान पुरुष की प्रेरना और कोशिश की जरूरत है सो अब वह आप का मनोर्थ सिद्ध हो गया है महा सभा मैं इस जाति के सर्व मुखिया और शिरोमणि शामिल हैं इस ही हेतु से इस बात की पूर्ण आशा होती है कि अवश्य उन्नति होगी और पूर्ण उन्नति होगी ॥ परन्तु हेभाईयों किसी जाति के सुधार का काम ऐसा नहीं होता है जिस को एक आदमी कर सके यह काम सब ही भाइयों की सम्मति से होना चाहिये ॥ महा सभा का जलसा कार्तिक के महीने मैं होगा उस मैं अब के साल सब नग्र ग्राम के भाई इकट्ठे होंगे इस कारण आप को भी

अवश्य ऐसी महान सभा मैं शा होना चाहिये और देखना चाहिये आप के उपकार के वास्ते महा स मैं क्या २ कोशिशें होती हैं ॥ हे भाईयों जो काम सब की सम्मति होता है वह निर्विघ्न हुआ करता इस कारण इस महान कार्य मैं को भी अपनी सम्मति देनी चा आजकल पर्व के दिन हैं इस का सब भाई श्री मंदिर जी मैं इकट्ठे हैं ऐसा अवसर फिर मिलना बहुत शकिल है और महा सभा के दिन बहुत निकट आगये हैं इस कारण मव साहब अपनी २ सम्मति के सार इस बात को बिचार कीजिये जैन जाति मैं किस २ बात की है और जैन धर्म की उन्नति और न्य मत वालों से बचाने के वास्ते क्या उपाय जरूरी हैं और वह उ किस प्रकार किये जा सक्ते हैं जो छ आप सब साहिबों के विचार मैं वे उस को आप एक कागज़ पर लेवैं और फिर इस बात का वि करें कि आप इन उपायों की सि मैं किस प्रकार की सहायता दे हैं ॥ देखो एक बलवान मनुष्य छ नहीं उठा सक्ता है परन्तु बहुत से नुष्य इकट्ठे होकर चाहे वह नि ही हों सहज से छप्पर को उठा इस ही प्रकार आप कभी इस बा

ार न करैं कि हमारी थोड़ी सी
यता क्या कारज कारी हो सकी
हीं ऐसी ही थोड़ी २ सहायताओं
मेलने से कारज की सिद्धी होगी
आप दोनों बातों का विचार
लेवें अर्थात् इस बात का क्या २
य जरूरी हैं और आप क्या स·
ता दे सके हैं तो इस के पश्चात्
। अपनेमें से उन भाईयों को नि-
कर देवें जो आप के नगरके सब
यों की ओर से महासभा में आप
स विचार को पेश कर सकैं और
े नगर बासियों की ओर से कि·
ात का उत्तर देसकैं जो महास-
उन से पूछै ॥ इस से यह प्रयो·
नहीं है कि केवल इस प्रकार नि-
हुवे भाई ही महा सभा मैं जावें
अन्य कोई भाई न जावे नहीं २
भाईयों को भी जाना चाहिये
; उन का महा सभा मैं जाना
आवश्यक है और अन्य का अ-
इच्छा के अनुसार है इस कारण
से नियत कर देना जरूरी है
क अगर पहले से इस प्रकार नि-
हीं किये जावेंगे तो ऐसा होस-
ै कि कोई भी महा सभा मैं शा-
न हो आप के नगर की बदना-
ामी और ऐसा संदेह पैदा होगा कि
नगर मैं जैनी रहते हैं या नहीं ॥
ईयों दशलाक्षणी के दिनों से अ

च्छा कोई मोका आप को नहीं मिलेगा ॥

फजूल खर्ची

(व्यर्थव्यय)

हे विद्वानों आप के सामने इस बात के दिखलाने की कोई आवश्यकता नहीं हैं कि फजूल खर्ची से क्या क्या खराबियें पैदा होती हैं क्यूंकि आप जानते हैं और जो कष्ट इस के कारण होते हैं वह सब आप लोगों कोही उठाने पड़ते हैं ॥ बेशक सब इस बात को चाहते हैं कि फजूल खर्ची दूरहोजावे और इस बला से बच जावें परंतु हमारी जाति मैं फजूल खर्ची कोई अपने खाने पीने आदि के कामों मैंनहीं करता हैं जिन के बन्द करने मैं वह खुद मुखत्यार हो बलकि फजूल खर्ची बिरादरी की रीति रस्म मैं की जाती हैं इस ही कारण इस का दूर होना मुशकिल हो रहा है ॥ संसारी पुरुषों को नेकनामी और बदनामी का बहुत बड़ा खयाल होता है और बहुधा काम ग्रहस्त लोग नेकनामी के वास्ते ही किया करते हैं ॥ जब कि बिरादरी के सब लोग किसी काम मैं बहुतधन खर्च करते हैं तो एक अकेला आदमी उस काम को बिलकुल न करने मैं या थोड़ा धन खर्च करने मैं इसबात से डरता है कि इस मैं मेरी बदनामी

हुवे हैं कि जब तक हमारे भाई कंगाल नहीं बने रहेंगे तब तक हमारी प्रतिष्ठा नहीं होगी ॥ वह यह बात समझे हुये हैं कि अधिक धनवान होने के कारण फजूल खर्ची करने से हमारा तो कुछ नुकसान होता नहीं है परन्तु अन्य हमारे भाई अवश्य हमारे आधीन रहैंगे ॥ यह उन का खयाल बिलकुल झूठा है क्यूंकि फजूल खर्ची अमीर गरीब सब को समान दुःख देती है परन्तु वह धन के नशे मैं अन्धे हो रहे हैं इस कारण उन को सूझता नहीं है ॥ कोई २ भाई प्रबन्ध होते समय अपने धन के मद मैं यह कह दिया करते हैं कि मेरे बेटा बेटी का विवाह हो लेने दो पीछे कोई प्रबन्ध करना ॥ ऐ भाईयों क्या बिरादरी मैं कोई छोटा बड़ा होता है नहीं बिरादरी मैं सब बराबर होते हैं इस वास्ते जो कोई ऐसे गरूरकी बात कहेउस कोअवश्यदण्ड मिलना चाहिये ॥ भाईयों आज कल आप को बहुत अच्छा अवसर फजूल खर्ची के प्रबन्ध करने का है क्यूंकि ज्योतिष विद्या के अनुसार बहुत दिनों तक विवाह आदि शुभ कारज नहीं होवेंगे इस कारण किसी को आज कल कोई कारज करना नहीं है जिस के वास्ते कोई प्रबन्ध मैं हानि डाले ऐसा अवसर फिर मिलना बहुत मुशकिल है ॥ दश लाक्षणी के कारण सब भाई अपने आप इकट्ठे भी होते हैं इस वास्ते अब पूरा २ बंदोबस्त कर लीजिये ॥ इस अवसर पर आप को शायत यह संदेह हो कि दश लाक्षणी के दिन ग्रहस्त कारज के प्रबन्ध मैं क्यूं लगावें यह दिन तो धर्म ध्यान करने के हैं ॥ परन्तु हे बुद्धिमान पुरुषों आप के वास्ते मेरी समझ मैं फजूल खर्ची दूर होने से अच्छा और क्या धर्म कारज होगा ॥ आप जानते हैं कि कारज से कारण की सिद्धी होती है ॥ ग्रहस्थी की जब तक संसार अवस्था ठीक नहीं होगी वह धर्म कारज नहीं कर सका है ॥ आप ही अपने मन मैं विचार करके देख लीजिये कि जब आप शास्त्र जी की सभा मैं बैठते हैं या पूजा या जाप करते हैं उस समय आप जितना चाहें यत्न करैं परन्तु आप का ध्यान धर्म मैं नहीं लगता है इस का कारण यह ही है कि आप के संसार कार्यों का भले प्रकार प्रबन्ध न होने के कारण आप का चित्त अति व्याकुल रहता है और फजूल खर्ची के कारण रुपयेकी आपको बहुत चाहना रहती है इस वास्ते आप सदैव रुपया उपार्जन करने की ही चिन्ता मैं रहते हैं ॥ और रुपये के अधिक लालची हो गये हैं ॥ फजूल खर्ची के कारण आप रुपये पर ऐसे मोहित हो गये हैं कि रुपये को ही अपना इष्ट देव और रुपया उपार्जन करने कोही इष्ट धर्म मानना पड़ा है ॥ फजूल खर्ची के कायम रहते हुवे आप बिलकुल धर्म नहीं कर सके हैं ॥ आप अपने चित्त मैं विचार कर देखैं आजकल

जो कुछ धर्म का काम आप करते भी हैं वह केवल लोक दिखावा ही है और इस के सिवाय आप फजूल खर्ची के ही कारण धोका फरेब बेईमानी दगाबाजी छल कपट जुल्म सितम कर धन पैदा करना बुरा नहीं समझते हो। यदि आप अपनी जाति से फजूल खर्ची दूर कर देवैं तोआप को फिर ऐसे निंदनीक कामों के करनेकी जरूरत नहीं रहैगी ॥ देखो नकूड़ जिला सहारनपुर के जैनी भाईयों ने फजूल खर्ची को बिलकुल दूर कर दिया है अब वह बड़े आराम में हैं और भले प्रकार धर्म सेवन करते हैं और अपने धन को धर्मोन्नति में लगाते हैं ॥ इस ही प्रकार आप भी कोशिश करके अपने बैरी फजूल खर्ची को जो आप के संसार और धर्म दोनों को बिगाड़ता है देश निकाला देदो यह बड़ा महान उपकार होगा और इस से बहुत बड़ा धर्म लाभ होगा ऐसा उत्तम कार्य इनहीं धर्म ध्यान के दिनों मे होना चाहिये ॥ यदि आप फजूल खर्ची के दूर करने मे दशलाक्षणी पर्व के कुल दश दिन भी व्यतीत कर देवैंगे तो समझना चाहिये कि आप ने बहुत ही धर्म साधन किया और यह धर्म साधन उस से अधिक पुन्य फल दायक होगा जितना अन्य प्रकार धर्म साधन होता ॥ ग्रहस्ती का मुख्यधर्म साधन यह ही है कि वह अपने संसार कारज संजम रूप करै जिस से अधिक व्याकुलता उत्पन्न न हो ॥ हे बुद्धिमानों इस बात को बिचारों कि यद्यपि तुम नित्य शास्त्र श्रवण करते हो जिस मैं श्रीपरम आचार्यों ने अनेक प्रकार जीवको पाप से बचने के लिये समझाया है पंडित और उपदेशक भी बहुत प्रकार आप को समझाते हैं परन्तु कितने आश्चार्य और शोक की बात है कि पचासों वर्ष शास्त्र सुनते हो गये परन्तु पाप कर्म करना बेईमानी धोका फरेब से धन उपार्जन करना नहीं छूटता है आर न सम्यक का श्रद्धान होता है इस का कारण केवल एक फजूल खर्ची ही है फजूल खर्ची को बिलकुल दूर करके देखो फिर कैसी धर्म से आप को प्रीति होती है फजूल खर्ची के दूरहोने पश्चात् खद बखुद धर्मोन्नति मैं कोशिश करने को आप का जी चाहेगा और बेईमानी से धन पैदा करने मैं लज्जा प्राप्ति होने लगेगी और ग्लिन आने लगेगी ॥ यद्यपि शास्त्र सुन कर ऐसा बिचार अब भी आप को आता होगा परन्तु फजूल खर्ची आप की सब बुद्धि भृष्ट कर देती है और नाक मैं नकेल डाल कर जिस प्रकार चाहे नचाती है इस कारण यदि आप को कुछ धर्म अनुराग है यदि आप धर्म सेवन करना चाहते हैं यदि धर्म उन्नति की इच्छा है तो इन ही पर्व के दिनों मैं इस का का प्रबन्ध कर दो ॥ प्रत्येक देश और प्रत्येक नग्र ग्राम की रीति रस्म प्रथक २ होती हैं इस कारण हम यह बात इस समय प्रगट नहीं कर सक्ते हैं कि किस प-

कार इस का प्रबन्ध करना चाहिये आप बुद्धिमान हैं अपने २ नग्र ग्राम की अवस्थानुसार आप खुद ही प्रबंध कर लेवेंगे परंतु कुछ २ मोटी २ बातें जिन के कारण ज्यादा फजूल खर्ची की जाती हैं इस स्थान पर वर्णन करता हूं इन बातों का प्रबंध अवश्य ही करना चाहिये ॥

(१) पुत्र के विवाह मैं बहुत से बारातियों को साथ लेकर ब्याहने क वास्ते जाना ॥ भाई साहब यह बात आप जानते हैं कि बाराती जो साथ जाते हैं वह कोई कारज सिद्ध नहीं करते हैं बलकि आप अत्यन्त दुःख उठाते हैं एक कहावत मशहूर है कि (भूमोवै भूखे रहै फांके बालू रेत ॥ वहै मनोहर जंगली जम से बुरी जनेत) और बेटे वाले और बेटी वाले दोनों को अत्यन्त दुःख मैं डालते हैं ॥ बहुत कुछ फजूल खर्ची अधिक बारातियों ही के आने से होती है और हाय हाय मची रहती है और आनन्द मैं विघ्न पड़ता है यदि बराती थोड़े जाया करें तो विवाह कार्यमैं किसी प्रकार का हर्ज न हो बारातियों की खातिर तवाजा भी बहुत अच्छी तरह से हो और धन भी व्यर्थ न जावे और आनन्द ही आनन्द रहै देखिये कायस्थ खत्री आदि जातियों, में जनेती बहुत कम होते हैं इस ही कारण इन लोगों के विवाह मैं बड़ा आनन्द रहता है इस वास्ते इस बात का जरूर बंदोबस्त करना चाहिये और यह नियत कर देना चाहिये कि इतने से अधिक बाराती किसी बारात मैं न हों यदि इस बात का बन्दोबस्त हो जावेगा तो मानों बहुत सी फजूल खर्ची दूर हो गई ॥ आप को इस वक्त जरूर यह विचार होगा कि थोड़ी बारात के ले जाने म कुछ शोभा नहीं रहेगी परन्तु हे भाईयों शोभा कोई वस्तु नहीं है वह सिर्फ तुम्हारा खयाल है ॥ क्यावह जातिवाले जोथोडी बारात लेजाते है अपने विवाहमैं शोभा नहीं देखते हैं नहीं उन को उस ही मैं शोभा मालूम होती है इस ही तरह थोड़े दिनों मैं आप को भी जब पिछली आदत छूट जावेगी तो थोड़ी ही बारात मैं शोभा मालूम होने लगेगी आप एक दफे देखें तो सही कैसा आनन्द प्राप्त होता है ॥ उस समय आप को मालूम हो जावेगा कि बारात का लाव लशकर बढ़ाने मैं बड़ा भारी क्लेश रहता है ॥ नकुड़ जिला सहारनपुर के भाई पहले बारात मैं सौ सौ गाडियों से अधिक लेजाते थे परन्तु अब उन्हों ने नियत कर दिया है कि ज्यादा से ज्यादा २५ गाड़ी बारात मैं जावैं और जो बारात बाहर से आवे उस मैं भी इस से अधिक न आवें ॥ जो आनन्द अब नकुड़ की बारातों म रहता

है और जैसी शोभा होती है उस को वह ही जानते हैं जो उन की बारातों में शामिल हुवे हैं ॥ अब अन्य नग्र ग्राम के भाई नकुड़ के भाईयों के साथ सम्बन्ध अर्थात् रिस्ता करना बहुत पसन्द करते हैं क्यूंकि नकुड़ के भाईयों के साथ संबन्ध करने म सब प्रकार का लाभ रहता है और कुछ कष्ट उठाना नहीं पड़ता ॥

(२) भोजन खाने के वास्ते होता है न कि खराब करने के वास्ते जो कोई भोजन खराब करने के वास्ते बनाता है क्या वह मूर्ख नहीं है अवश्य वह मूरख भी है और पाप भी करता है ॥ आज कल हमारी जाति में यह उलटी रीतिहो रही है कि बारातियों के वास्ते बेटी वाला मिठाई (शीरनी) इतनी बनाता है और इतनी मिठाई भोजन समय प्रत्येक मनुष्य को परोसता हैं जो उस से खाई नहीं जाती हैं इस कारण बहुतसी मिठाई जो बहुतसा रुपया लगाकर बनाई जाती है व्यर्थ जाती है इस रीति को बिलकुल बन्द करना चाहिये इसमें धनका और भोजन का निरादर होता है ॥ भोजन के साथ यदि मिठाई भी बनाना होतो अधिक मिठाई नहो अधिक मिठाई सलूने भोजन के साथ परोसना खाने वाले को पशु बनाना है ॥

(३) वेश्या नृत्य ॥ हाय पाय यह कैसा कार्य है ॥ जैन कुल में ऐसा काम होना बड़े अचम्भे की बात है ॥ हाय हाय रंडी का नाच भले मानुषों की सभा को नीच पुरुषों की सभा बना देता है ॥ इस दुष्ट कार्य ने जैन जाति को कलंकित कर दिया है ॥ वेश्या नचाना भले पुरुषों का काम नहीं है इस्से अवश्य लज्जित होना चाहिये ॥ इसके सिवाय वेश्या के नाच से जो जो खराबियें पैदा होती हैं जो जो उपद्रव होते हैं उनको सब कोई जानता है ॥ हाय हाय इसही नाच के कारण जैन जाति में श्रेष्ठ कुल में व्यभिचार और वेश्या सेवन आदि दुराचारों का प्रचार होगया नहीं तो जैनियों में व्यभिचार आदि का क्या काम ॥ जैनी और व्यभिचारी यह दो प्रतिपक्षी बातें हैं ॥ विवाह आदि शुभ कार्य में ऐसे अशुभ कार्य का होना सर्वथा अयोग्य और विवाह में इस नाचही के कारण बहुतसा धन व्यर्थ खर्च करना; पड़ता है ॥ नकूड़ जिला सहारनपुर के जैनी भाईयों ने रंडी के नाच को बिलकुल छोड़दिया है इस कारण अब वह बड़े सुखी हैं उनके विवाह के दिन बड़े आनन्द से व्यतीत होते हैं और उनका धन भी व्य-

र्थ बरबाद नहीं होता है ॥ रंडीका नाच बन्द करने में विषई पुरुषों को बड़ी आकुलता होगी और वह बहुत प्रकार विघ्न डालेंगे परन्तु आप को ऐसे मनुष्यों से सावधान रहना चाहिये जो अपनी किंचित विषय पोषण के अर्थ एक जाति के डुबानेका उपाय करते हैं ॥ उन को सहज में समझाना चाहिये वेश्या नृत्य के उन दोषों को और उस कष्ट को जो नृत्य के कारण विवाह के समय होता है ॥ किस प्रकार बरातियों को आधी रात्रि के समय सो तों को नाच में आने के वास्ते जगाया जाता है यह सब बातें भले प्रकार उन को याद दिलानी चाहिये इस प्रकार समझाने से वह अवश्य समझ जावैंगे और वेश्या नृत्य देखने से घिन करने लगैंगे ॥ इस महान दुष्ट कार्य को अवश्य सब से पहले दूर करना चाहिये ॥

(४) बाग बहारी लुटाना इस के तो नाम ही से जान लेना चाहिये कि यह कैसा अशुभ कार्य है ॥ विवाह जैसे शुभ कार्य में ऐसा अशुभ कार्य जिस में लाभ कुछ नहीं है बिल्कुल नहीं करना चाहिये यह काम बहुत से स्थानोंमें बंद होगया है

(५) आतिशबाजी— हाय हाय जैनी लोग जो "अहिंसा परमो धर्मः" के श्रद्धानी हैं क्या यही जीव रक्षा करते हैं यह कार्य जैनियों को बिलकुल शोभा नहीं देता है बहुत से स्थानों में बंद होगया है॥

(६) बखेर— हाय हाय हम लोग कैसा धनका निरादर करते हैं कि विवाह आदि समय तथा वृद्ध पुरुष के मरने पर बहुत सा रुपया फेंक देते हैं जिस को भंगी लोग लूटते हैं ॥ क्या यह दान है बिलकुल नहीं बल्कि कुदान जिस से पाप की प्राप्ती होती है इस निन्द कार्य के कारण जैनी लोग जो अपने को उत्तम समझते हैं भंगियों और चमारों से भिड़ते हैं बिलकुल बन्द करना चाहिये ॥ बहुत स्थानों में बन्द होगया है इत्यादिक और बहुत से काम हैं जो अधिक दुख दाई हैं और जिन के करने में धन भी अधिक लगता है इन सब कामों को बिलकुल बन्द कर देना चाहिये और अपनी जाति को बचाना चाहिये ॥ फजूल खर्ची के कारण यह जात डूबी जाती है और निर्धन हो गई है केवल बाहर की मूंछें ही मूंछें रह गई हैं यदि जल्द प्रबन्ध न हुवा तो मूंछें भी मुंड जावैंगी ॥ फजूल खर्ची के दूर करने में बिरादरी के चौधरियों को बेशक सोच पैदा होगी कि यदि फजूल खर्ची बंद हो गई और सब कार्यों का प्रबन्ध हो गया तो हमको कौन पूछैगा परन्तु उन को यह विचारना चाहिये कि आप चौधरी हैं इस कारण आपको अपने भाईयों की प्रति पालना करनी चाहिये ॥ यदि आप फजूल खर्ची को बन्द करा देवेंगे तो इस उपकार के कारण आपको बहुत कुछ पुन्य की प्राप्ती होगी और सब भाई आपका जस गावेंगे उस वक्त आप की इ

से भी ज्यादा प्रतिष्ठा और नामवरी होगी इस वास्ते हे इस जैन जाति के चौधारियों! आप जरूर कोशिश करके इंतजाम फजूल खर्ची का करादेवैंगे उस वक्त आप और अपने भाईयों को डूबते हुवों को बचालेवैंगे ॥ क्योंकि अगर फजूल खर्ची से आप के भाई कंगाल और दरिद्री होगये तो फिर आप किस के चौधरी बनेंगे और अगर आप के भाई धन वान रहेंगे तो अनेक प्रकार आप का चौधरी पना बना ही रहैगा ॥ यदि आप इस इंतजाम में किसी प्रकार का विघ्न डाल कर फजूल खर्ची को दूर नहीं होने देवेंगे तो इस बात को जान लो कि आप को बड़ा भारी पाप होगा ॥

दान

ऐ जैनी भाइयों यह आप जानते हैं कि गृहस्ती के वास्ते पुन्य उपार्जन का उपाय दान देने से अच्छा और कोई नहीं है जो कोई मनुष्य अपने धन को दान में लगाता है वह धन पाने को सफल करता है और जो पुरुष अपने धन को दान में नहीं लगाता है उसका धन पाना न पाना बराबर है जैसा कि खेत में एक दाने के बोने से हजार दाने होजाते हैं इसही प्रकार दान दिया हुवा भी बहुत फलता है ॥ हे धर्मात्मा पुरुषो यह आपने जैन शास्त्रों से जाना होगा कि चार प्रकार के दान में विद्या दान सब में श्रेष्ठ है और विद्या दान के देने से फल भी बहुतही उत्तम मिलता है अर्थात ज्ञान की वृद्धि होती है ॥ ज्ञाना वरणी कर्म का पटल उसही के पड़ता है जो विद्या की वृद्धि में किसी प्रकार का विघ्न डालता है और जो ज्ञान दान देता है उस के ज्ञान की प्राप्ति होती है ॥ हाय २ अज्ञानी होने को कितना दुःख देखो वृक्षों को क्या ज्ञान है ज्ञान बिना जीव अनेकानेक दुःख पाता है जीव की निधि ज्ञानही तो है ॥ ज्ञान बिना सर्व वस्तु निष्फल हैं हाय हाय संसारिक दुःख तो बहुत से इस जीव को भोगने पड़तेही हैं परन्तु धर्म तो बिना ज्ञान के होही नहीं सक्ता है देखो यह जीव अनादि काल से जो संसार में भटकता है और महा घोर दुःख उठाता है इस का कारण ज्ञान का न होनाही है ॥ ज्ञान बिना जीव धर्म को नहीं जानसक्ता है न पाल सक्ता है इस कारण जो कोई किसी को ज्ञान दान देता है वह उस का जन्मान्तर का उपकार करता है और संसार सागर से बचने का उपाय करता है ॥ विद्या दान की महिमा हम से कुछ बरणन नहीं होसक्ती है श्री जैन शास्त्रों में इस की बहुत कुछ महिमा वर्णन की है ॥ देखो औषध दान वा अहार दान वा

वस्त्र दान से केवल तत्काल का दुःख वा ज्यादा से ज्यादा एक जन्म का दुःख दूर किया जासका है परन्तु ज्ञान दान से अनेक जन्म के दुःख दूर होसके हैं ॥ इस कारण ज्ञान दान ऐसा है जो दान देने वाले को भी महान पुण्य उपार्जन कराता है और जिस के निमित्त दान दिया जाता है उस का भी बड़ा भारी उपकार करता है ॥ इस कारण मनुष्य के वास्ते यह बात अति आवश्यक है कि वह ज्ञान दान देवें ॥ दया कर के किसी वस्तु के देने को दान कहते हैं ॥ आज कल बहुत मनुष्य विद्या हीन होरहे हैं इस कारण उनपर अवश्य करुणा आनी चाहिये और उन को अवश्य ज्ञान दान देना चाहिये ॥ विद्या दान बहुत प्रकार से दिया जासका है जैसा कि श्री जैन शास्त्रों को पढकर सुनाना धर्मोपदेश देना धर्म के तत्वों को समझाना ॥ पाठशाला नियत करना कराना पाठशाला का इन्तजाम करना पाठशाला में किसी प्रकार की सहायता करना विद्यार्थियों को विद्या पढाने की प्रेरणा करना उन को पारितोषिक देकर उन का उत्साह बढाना पुस्तकें बांटना निर्धन विद्यार्थियों का पालन पोषन करना ॥ शास्त्रों का संचय करना शास्त्रजी सुनने के वास्ते भाईयों को प्रेरणा करना स्वाध्याय करने का प्रचार देना इत्यादिक ऐसे काम करना जिस से सच्चे ज्ञान की प्राप्तिहो यह सब ज्ञान की वृद्धि के उपकार में शामिल हैं और यहही काम ज्ञान दान कहलाते हैं ॥ ज्ञान दान के वास्ते हमारी समझ में सब से उत्तम उपकार पाठशालाओं की सहायता करना है इस कारण प्रत्येक जैनी को पाठशाला की सहायता में अवश्य अपना तन मन और धन लगाना चाहिये ॥ हे सज्जन पुरुषों आपने भले प्रकार यह जान लिया है कि बिना ज्ञान दान देने के ज्ञान की प्राप्ति नहीं होसकी है इस कारण यदि आप को इस बात की इच्छा है कि अगले जन्म में भी पर्याय आप को ज्ञान की प्राप्तिहो और एकेन्द्री आदिक की पर्याय न मिले जिस में नाम मात्रही ज्ञान होता है तो इस बात को बिचारो कि हमनें जनम भर कितना धन ज्ञान दान में लगाया है कितनी कोशिश अपने भाईयों की ज्ञान वृद्धि मै की है और इसही के साथ यह भी सच्चे दिल से बिचार करो कि अपनी किसी कषाय के पुष्ट करने के हेतु प्रमाद वश विद्या की वृद्धि में विघ्न कितनी बार डाला है यह बिचार आप अपने हृदयही में करलैं किसी अन्य के सामने प्रगट करने की जरूरत नहीं है क्योंकि इस में लज्जा प्राप्त होती

है ॥ इस प्रकार बिना पक्षपात के विचार करने से और हिसाब लगाने से आप को यहही मालूम होगा कि हमारी मान लोभ आदि की कषायों ने हमारे ज्ञान के प्रचार में विघ्न तो अधिक कराया है और उपकार बहुतही कम होने दिया है ॥

यदि हमने कोई विघ्न भी नहीं किया है तो भी हमारा तन मन धन विद्या दान में इतना नहीं लगा है जिस से इतनी पुन्य की प्राप्ती हो कि अगले जन्म में हम को अच्छा ज्ञान मिले ॥ ऐसी बात के विचार करने से अवश्य आप के हृदय में बहुत अफसोस पैदा हुवा होगा परन्तु अफसोस कुछ नहीं करना चाहिये क्योंकि अब भी आप सब कुछ कर सक्ते हैं ॥ हेभाईयों मैंने ऊपर यह वरन किया है कि विद्या दान के वास्ते सब से श्रेष्ठ और सुगम उपाय पाठशाला की सहायता करना है परन्तु साधारण एक अकेला पुरुष पाठशाला नियत नहीं कर सक्ता है इस कारण हरेक नग्र के सब भाईयों को इस कारज में शामिल होना चाहिये ॥ किसी एक कारज के वास्ते इकठ्ठा होने के लिये मेरी समझ में इन दिनों से अच्छा और कोई समय नहीं हो सक्ता है और कारज भी कैसा धर्म कारज ॥ आज आप का चित्त धर्म कार्यों में पूरण लगा हुवा है इस कारण जैसा श्रेष्ठ प्रबन्ध आज कल हो सक्ता है और समय में नहीं हो सक्ता है इस वास्ते शीघ्र पाठशाला नियत करने का प्रबन्ध कर लीजिये और जी खोल कर इस में सहायता देने के वास्ते अगवानी हूजिये जिस से आप को सब से अधिक पुन्य की प्राप्ती हो और ज्ञान की वृद्धि हो ॥ यदि आप इस समय पाठशाला नियत न करैंगे और यह दिन यूं ही व्यतीत हो जावेंगे तो फिर न हो सकेगी और पछतावा ही रह जावेगा यह लोग जो अज्ञानी और मुर्ख हैं पाप कर्म के उदय से जिन की विपरीत बुद्धि हो रही है वह बहुत बहुत विघ्न डालेंगे और जिस तिस प्रकार आप को बहका कर यह पर्व के दस दिन टलाना चाहेंगे परन्तु आप सावधान रहैं और उन के बहकाने में न आवें नहीं तो ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा आप सौ काम छोड कर जिस प्रकार बनै इस काम को सिद्ध कर लीजिये और यदि पाठशाला पहले से नियत है तो उस की उन्नति के और चिरस्थाई रहने के उपाय सोचिये और उस में पूरी २ सहायता दीजिये ॥ यदि पाठशालाका इंतजाम भी भले प्रकार पहले से ही होरहा है तो आप को चाहिये कि अन्य किसी नग्र ग्रामों में नवीन पाठशाला नियत कर के या पहली नियत की हुई पाठशाला को सहायता दीजिये ॥ प्रयोजन यह है कि जिस तरह होसके अपने धन को थोड़ा बहुत विद्या दान में अवश्य लगाइये ॥ और दूसरों को इसही प्रकार लगाने की प्रेरणा कीजिये ॥

जैनमहासभा

जैनमहासभा के दिन निकट आगये ॥ महासभा मैं क्या क्या विचार होना चाहिये क्या २ प्रबन्ध होना चाहिये यह सब इस समय निश्चय कर लीजिये क्योंकि आज कल पर्व के दिनो मैं सब भाई श्रीमंदिरजी मैं एकत्र होतेहैं और धर्म ध्यान में लगे रहते हैं॥ इस समय आप यहभी नियत करलीजिये कि महासभा मैं आपके नगर के भाईयों की तरफ से कौन प्रति निधि अर्थात मुखिया होगा ॥ महासभा के वास्ते जो २ आप विचार करैं और जिस को आप प्रातिनिधि नियत करैं यह सब समाचार कृपा करके डिप्टी चम्पतराय के पास इटावा लिख भेजें॥

जैनभ्रातृगणना

हकीम उग्रसैन सरसावा जिला सहारनपुर निवासी ने भ्रातृगणना के नकशे आपके पास भेजे होंगे सो अपने२ नगरका सर्व वृत्तांत उस में लिखकर भेज दिया होगा यदि नहीं भेजा होतो कृपा करके अब शीघ्र भेजदेवें और यदि नकशे आपके पास न आये हो- तो नकशे मंगालेवें ॥

जैनसभा

आप के नगर में जैनसभा पहले से होगी इस कारण उसका प्रबन्ध भलेप्रकार करलेना चाहिये और यदि अभीतक जैनसभा नियत नहीं होतो सभा नियत करने के वास्ते इस से अच्छा और कौनसा समय होगा जरूर जिस तरह हो सके कोशिश करके सभा कायम करलेनी चाहिये सभा के बिदून किसी प्रकार उन्नति नहीं हो सक्ती [illegible] सभा से बडे २ फायदे हैं ॥

जैनपाठशाला

आप के नगर मैं जैन पाठशाला भी है या नहीं ॥ यदि पाठशाला पहले से है तो उस के खर्च और पढाई और जैनियों के बालकों के पढनेका प्रबन्ध भले प्रकार कर लीजिये और यदि पाठशाला नहीं है तो जारी कीजिये इस समय सब भाई मौजूद हैं इस कारण पाठशालाका बंदोबस्त बडी आसानी से हो सक्ता है यदि यह दिन व्यतीत होगये तो फिर

कोई इन्तजाम होना मुशकिल है ॥ धर्मका उपकार पाठशाला के त्रिदून नहीं हो सक्ता है ॥

फिजूलखर्ची

निकालो इस दुष्टनी को ॥ इस के कारण आपका धर्म कर्म सब नष्ट होता है ॥ इस ने आपका सुख आपका आराम सब बरबाद कर रक्खा है इसने आपको पापी बाना रक्खा है॥ इसही के सबब आपको आठ पहर चिन्ता रहती है॥ फिजूल खर्ची को अपनी जाति से कालामुंह करके बिलकुल निकालदो ॥ फिजूल खर्ची के दूर होनेसे बहुत धर्म उन्नति होगी इस कारण आज कल धर्म सेवन केसमयमैंही इसका बंदोबस्तकरो

जैन महाविद्यालय

महाशयों आप सब भाईयों की ही सहायतासे जैन महाविद्यालय जारी होसक्ता है॥ आप जानते हैं एक २ बूंद पानीसे समुद्रभर जाता है ॥ ऐसाही आप सब भाई-यों की थोडी २ सहायता से भी सब कुछ होसक्ता है आपका बहुतसा रुपया धर्म हेतु लगताहै थोडासा इसमैं भी लगादीजिये आपका बडाभारी पुन्य और जसहोगा और जैनधर्म और जैनजातिका उद्धार होजावेगा जैनमहाविद्यालयकी सहायताकारुपया श्रीमान्सेठलक्ष्मणदाससाहब सभापतिजैन महासभामथुराकेपासभेजनाचाहिये

उपदेशक भंडार

उपदेशकों के देश विदेश घूमने से जो लाभ होना है उसको आप भले प्रकार जानते हैं अविद्या अंधकार दूरकरना धर्मोन्नति के सर्व कारनोंका प्रचार देना घोरनिद्रामैं सोते हुवो को जगाना उपदेशकोंका ही काम है ॥ आज कल उपदेशकों के ही द्वारा परोपकारी भाईयों के मनोर्थ सिद्ध होंगे और जैनधर्मका प्रचार होगा सर्व जैनीभाईयों को उचित है कि जहांतक होसके उपदेशक भंडार की सहायता करैं ॥ जो पैसा जैनीभाईका इसमैं लगेगा वहही सफल होगा ॥ उपदेशक भंडार की सहायताका रुपया मुन्शीचम्पत-राय डिप्टी मजिस्ट्रेट इटावा के पास या श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास सी० आई० ई० सभापति जैन महासभाके पास भेजना चाहिये॥

श्रीः

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमन्दिरजी में सब भाइयों को जरूर पढ़कर सुना दीजिये

इस पत्रको सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैनगज़ट

मूल्य पेशगी डाकमहसूल सहित केवल तीन रुपया

साप्ताहिक पत्र

जैन गज़ट जगमें करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तमको नाश ॥

हर अंगरेज़ी महीनेकी १-८-१६-२४ ता० को
बाबू सूरजभान वकीलके प्रबन्ध से
देवबन्द ज़िला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष | ता० १४ सितम्बर......सन १८९६ | अङ्क ४०

गुर्जर प्रेस—मथुरामें प्रकाशित हुआ

जैन गजट की सहायता

जैन गज़ट से ज़ाति और धर्मकी उन्नतिकी पूरी २ सम्भावना है इसही के द्वारा हमारे सब कारज और मनोर्थ सिद्ध होंगे॥ जैन गज़टकी सहायता करना जैनियोंका परम धर्म है ॥

जैन गज़ट की सहायता किस प्रकार होसक्ती है?

(१) जैनगज़टको आप मँगाना
(२) अन्य भाइयोंको जैनगजट मँगानेकी प्रेरणा करना ॥
(३) जैन गजट सब भाइयों को पढ़कर सुनाना ॥
(४) जैन गजटमें छपनेके वास्ते उत्तमोत्तम मजमून और अपने नगर और देश के समाचार जैन जाति सम्बन्धी लिखकर भेजना ॥
(५) अपने मित्रों को जो अन्य नगर और देशमें हों जैन गजटकी सहायताके वास्ते लिखना ॥
(६) जैन गजटका मूल्य अपना और अन्य भाइयोंसे लेकर भेजना ॥
(७) अन्य जिसप्रकार जैनगजट की सहायता होती हो तन मन धन से करना जैनगजट सब जैनीभाइयोंको अवश्य मँगाना और यह गज़ट पढ़ना बालक पुरुष स्त्री सबके वास्ते उपयोगीहै

मूल्य केवल ३)रु० एक बर्षका

जैन गजट की सहायता का समय भादव मास श्री दश लाक्षणी पर्वसे अच्छा और कोई नहीं मिल सक्ता है इस कारण जहां तक हो सके इस समय कोशिश करनी चाहिये ॥

जैनगजटका प्रथमबर्ष समाप्त होने वालाहै दूसरे बर्ष के वास्ते जैनगजटका मूल्य भेजनेका यह मौका बहुत अच्छाहै क्योंकि पर्व के दिन हैं सबका अनुराग धर्म में पूरा २ लग रहाहै फिर पीछे मुश्किल पड़ैगी ॥

मिथ्यात्व

हे भाइयो बहुत कहने से क्या फायदा है आप जरा इस बातको विचार करैं कि आप जैनी कहलाते हैं आपने जैन धर्म धारण किया है तो क्या इस ही लिये कि आप कुदेव आदिकका सेवन करैं और अनेक प्रकार मिथ्यात्व करैं ॥ कुलटा व्यभिचारणी स्त्री उसही को कहते हैं जो पर पुरुष से रति होती है इस ही प्रकार मिथ्यामती उस ही को कहतेहैं जो कुगुरु कुदेव को पूजता है इस के विपरीत शीलवंन्ती स्त्री वह कहलाती है जो अपने भरतार से ही प्रेम रखती है और पर पुरुष का ध्यान भी नहीं करती है इस ही प्रकार जैनी वहही कहलाता है जो सुगुरु सुदेव और सुशास्त्र की पूजा करता है और अन्य कुदेव आदिक की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखता है ॥ धर्म किसी कुल जाति में उत्पन्न होने का नाम नहींहै क्योंकि यदि ऐसा होता तो कोई हिन्दू मुसल्मान नहोसक्ता परन्तु हम यह देखते हैं कि बहुत से हिन्दू मुसल्मान होगये हैं वह किस प्रकार होगये हैं इस प्रकार कि उन्हों ने मुसल्मान देव गुरूकी पूजा उपासना करनी स्वीकार करली है ॥ क्या कोई हिन्दूजैनी नहीं होसक्ता है क्यों नहीं हो सक्ता है आचार्यों ने बहुत से अन्य मतियों को जैनी किया है ॥ हे बुद्धिमान् पुरुषो इस बात पर जरा ध्यान देकर बिचारो कि जब तुम अन्यमत के देव गुरु शास्त्र को पूजते हो तो क्या तुम अन्य मती नहीं हो क्या तुम ऐसी अवस्था में जैनी होसक्ते हो ॥ इस समय पर आप को किसी प्रकार का क्रोध नहीं आना चाहिये क्योंकि हम तुम्हारे दूषण प्रगट नहीं करते हैं बल्कि तुम को धर्म की तरफ लगाने का ही हमारा अभिप्राय है ॥ हे भाइयो जैसे आप हैं ऐसा ही दूषित मैंभी हूं इस कारण केवल आपको ही नहीं कहा जाताहै वरना यह शिक्षा अपने आपको भी दी जाती है ॥ मैंतो आप सेभी हजार दर्जे बुरा हूं मैं आप में क्या दूषण लगा सक्ताहूं परन्तु जब कि हमारी तुम्हारी दशा खराब है तो तुम को चाहिये कि हमैं समझाओ और हम को चाहिये कि हम तुमको समझावैं तुमको हमसे लज्जा आवैगी और हमको तुम से इस प्रकार सब दूषण हम मेंसे निकल जावेंगे ॥ भाइयो इसमें कुछ संदेह नहीं है कि तुम जैनी कहलाते हो परन्तु आपको केवल इतनी ही बात से खुश नहीं होजाना चाहिये क्योंकि यह कायदे की बात है कि जो कोई दूसरेकी तारीफ करताहै वह दूसरा उसकी तारीफ किया करताहै ॥ तुम अन्य अपने भाइयोंको जो स्पष्ट रूप से मिथ्यात्व सेवन करते हैं जैनी कहते हो फिर वह तुमको जैनी क्यों न कहैं तुम अन्य अपने भाइयों के दूषणों को छिपाते हो इस कारण वे भी तुम्हारे दूषणों को छिपाते हैं परन्तु हे बुद्धिमानो दूषणो को छिपाने वाला मित्र नहीं होता है वह शत्रु होता है और

जो दूषणों को प्रगट करताहै वह परम मित्र परम उपकारी होताहै क्योंकि दूषणोंके छिपने से दूषण दूर नहीं होसक्ते हैं दूषण तो प्रगट होने से ही दूर होसक्ते हैं ॥ हे भव्यजीवो यद्यपि आप जैनी कहलाते हैं परन्तु आपको कुछ फल की प्राप्ती नहीं होती है ॥ पाप कर्म का आश्रव किसी जाति कुलसे भय नहीं खाताहै और पुण्य कर्म किसी जाति कुलके साथ प्रीति नहीं करताहै जैसा कोई काम करताहै वैसा ही पाप पुन्य का बन्ध उस को होता है ॥ वह चाहे किसी जाति कुलकाहो इस कारण हे जैनी भाइयो आपने क्या समझ रक्खाहै क्या आप मिथ्यात्व सेवनको पापनहीं समझतेहैं क्या ऐसे कर्म करते हुए आपको दुःख भुगतना नहीं पड़ैगा ॥ क्याआप यह जानतेहैं कि मिथ्यात्व सेवनसे दुखदूर होताहै और सुखकी प्राप्ती होती है यदि आप ऐसा समझते हैं तो जैनमत को ही आप झूंठा बनाते हैं क्योंकि जैनमत में स्पष्टरूप यह वर्णन कियाहै कि मिथ्यात्व सेवन से कष्टप्राप्त होताहै ॥ भाईसाहब यदिआप बुरा न मानैंतो हमारी समझमें इसका यह कारणहै कि आप जैन धर्मको बिलकुल नहीं जानते हैं और मूढ़ दृष्टी होरहे हो अर्थात् जिस प्रकार किसीको कोई काम करताहुआ देखते हो उस ही प्रकार तुमभी करने लगते हो ॥ हे बुद्धिमानों जो कोई अन्धा होताहै वह दूसरेके सहारे चलाकरताहै आंखों वालेको किसी को दूसरेके सहारे चलताहुआ नहींदेखाहै इसही प्रकार जो मूर्ख होते हैं वह दूसरेकी रीस किया करते हैं परन्तु बुद्धिमान् उसही को [illegible] कहते हैं जो सोच विचारकर और नफा नुकसान समझके काम करताहै ॥ देखा देखी काम करना पशू का कामहै मनुष्यका यह काम नहीं है और जो मनुष्य भी देखा देखीही काम करताहै वहभी पशूही समानहै ॥ भाइयो यहतो आपको निश्चय है कि कुदेव आदिके पूजने या मिथ्यात्व सेवन से पुन्यकी प्राप्ती नहीं होती है बल्कि अधर्म ही होताहै परन्तु आपको कभी २ इस बातका भय होजाताहै कि यदि मिथ्यात्व नहीं किया जावैगा तो शायद कुछ कष्ट उठाना पड़े ॥ भाइयो आप जरा इस बातको विचारें कि जो लोग आपके समान मिथ्यात्व सेवन नहीं करते हैं क्या उनको किसी प्रकारका कष्ट होता है नहीं बल्कि वह आपसे अधिक सुख पाते हैं क्योंकि वह बुद्धिमानीसे अपने कष्टके दूर करने की कोशिश करते रहतेहैं और आप वृथा उपायों में ही फंसे रहते हो इस कारण वह कष्टको निवारण करलेते हैं और आप कष्टमें जानबूझ कर फंसते हैं ॥ हाय हाय हमलोगोंको किञ्चित् लज्जा नहीं आती कि हम मिथ्यात्व सेवनकरैं और अपनेंको जैनी बतलावें ॥ भाइयो आप दशलाक्षणीके पर्वमें हररोज मंदिरजी में आते हो और शास्त्र श्रवण करते हो परन्तु क्या दस दिनके पीछे आप वैसेके वैसेही बनेरहोगे जैसे कि पहले थे या मंदिरजी में आने और धर्म श्रवण करने से कुछ लाभ भी उठाना चाहते हो आजकल श्री मन्दिरजी में धर्म की पैंठ लगी हुई है और धर्मरूपी सौदा बिकता है जितना

चाहे कोई धर्म खरीद लेवै ॥ जो लोग चातुर हैं वह अतिसुन्दर और लाभदायक वस्तु इस पेंठ में से लेजावेंगे और जो मूर्ख हैं वह गांठ के दाम भी खोजावेंगे॥ हे भाइयो दश दिन तक मन्दिर जी में आने का फल यह ही है कि आप मिथ्यात्व रूपी कलङ्क को दूर करके जैन धर्म को ग्रहण करें और कुदेवादिक के पूजने का सर्व स्त्याग कर देवें ॥ इस में कुछ सन्देह नहीं है कि जैन धर्म के न जानने का यह सारा महात्महै इस कारण आप जैनधर्मके जाननेकी कुंजी शास्त्रस्वाध्यायको भी अवश्य अंगीकारकरें शास्त्रस्वाध्यायसे आपके हृदयके शल्य दूर होजावेंगे॥ परन्तु अब तुमने श्रीअर्हंत देवका शरण लियाहै और बराबर दसदिन तक श्रीमंदिरजीमे आतेहो अब तुम मिथ्यात्व अंधकारमें मतरहो॥ इस पर्वमें तुमको किसी बातके नियम करनेकी प्रेरनाहोगी॥ कोई कंदमूल कोई हरी कोई वेदल आदिकका त्यागकरैगा परन्तु तुमएक मिथ्यात्वकाही त्यागकरदो यद्यपि पुन्य कंदमूल छोड़ने वालों कोभी होगा परन्तु जितना पुन्यतुमकोहोगा उसकाकुछ वर्णन नहीं होसक्ताहै तुमव्रतउपवासकरतेहो पूजनपाठकरतेहो नित्यदर्शनकरतेहो कंदमूलनहींखातेहो बहुतकुछशुद्धक्रियाकरतेहो नित्यजापकरतेहो भगवान् कानामलेतेहो परन्तुयदितुम्हारे मिथ्यात्वकात्यागनहींहै तो यहसब तुम्हारा परिश्रम वृथा और निष्फलहै इसबातको अच्छीतरहसे चित्तमें धारण करलो, आपचोरसे और साहूकारसे दोनोंसे मिलना चाहतेहो आपकी यहइच्छाहै और यहही आपके हृदयमें बात बैठीहुई है कि जैनके देव गुरूको भी खुशरक्खो और अन्यमतके कुगुरु कुदेवको भी राजी रक्खो॥ आप अंधकार और उजियालेको एक स्थानमें कायम् करना चाहते हो परन्तु यह असम्भवहै आपतो इधरके रहे न उधरके रहे ॥ भाइयो इस ख्यालको छोड़ो यह मूर्खताईका खयालहै हंसीका हेतुहै बालकोंका सा विचारहै ॥ भाइयो यदि आप कुछभी जैनी बनना चाहते हो तो पहले मिथ्यात्वका त्याग करो ॥ मिथ्यात्वके त्याग करने में आपको अपनी स्त्रियोंका अवश्य भयहोगा क्योंकि स्त्रियें अत्यन्त मूर्ख विपरीत बुद्धिहोनेके कारण मिथ्यात्वकी पक्की श्रद्धानी होतीहैं और वह जैनधर्म के कामोंको भी मिथ्यात्व रूपही करती हैं ॥ जिस २ प्रकार स्त्रियें जैनधर्मको लज्जित करती हैं यदि मैं उसका वर्णनकरूं तो बहुत विस्तार फैलताहै इस कारणमें उस वार्त्ताको छोड़ताहूं ॥ हे भाइयो आप विचारें कि पुरुष स्त्रीके आधीन होताहै या स्त्री पुरुषके आधीन होतीहै जो पुरुष स्त्रियोंके आधीनहै वह पुरुषनहीं है और उसको अवश्य लज्जाकरनी चाहिये ॥ यदि आप चाहें और अपनी बातपर दृढ रहें तो जिसप्रकार चाहें स्त्रियोंको चलासक्ते हैं परन्तु आपतो पहलेही डरेजाते हैं हमने देखाहै कि स्त्रियें समझानेसे समझ जाया करती हैं यदि आप उनको यह समझादेवेंगे कि मिथ्यात्व सेवनमें बहुत नुकसानहै और संसारिक कष्टभी दूर नहीं होता है तो वह तुरन्त मानजावेंगी हाय हाय वह विद्या हीनहैं नहीं तो वह ऐसेकाम कदाचित् नकरतीं

हमने देखाहै कि जो स्त्री कुछभी पढ़ना लिखना जानती हैं जिसने एक या दोभी जैन शास्त्रोंकी स्वाध्याय करली हैं उसने तुरन्त मिथ्यात्व को छोड़दियाहै ॥ मुश्किल यह है कि स्त्रियों को कोई समझाता नहीं है और समझावे कौन जब कि पुरुषही मूर्ख होरहे हैं ॥ यह हमारा व्याख्यान स्त्रियोंको भी अवश्य सुनाना चाहिये और हमको निश्चयहै इस बातकी कि यदि अच्छी तरहसे उनको समझायागया और उन से प्रेरणा कीगई तो मर्दों से पहले मिथ्यात्वके छोड़ने में तयार होजावेंगी ॥ हम बहुधा पुरुषों को यह कहताहुआ सुनाकरते हैं कि स्त्रियें अति मूर्ख होती हैं इनको सदा उलटी सूझती है ॥ हे बुद्धिमान् पुरुषो यदि तुम्हारा यह कहना सत्यहै तो तुम क्यों स्त्रियोंके कहने पर चलते हो और क्यों मिथ्यात्वकर्म करतेहो स्त्रियें मिथ्यात्व छोड़ें या न छोड़ें परन्तु तुमतो छोड़दो तुमको तो उलटी नहीं सूझाकरती है हम देखते हैं इस समय स्त्रियें बुद्धिमान् बनती हैं या पुरुष ॥ हे स्त्रियो तुमको भी ऐसा अवसर मिलना मुश्किल है ॥ स्त्री पर्याय बड़े पापोंसे पैदा होती है ॥ तुमने पिछले जन्म में अवश्य बहुत २ पापकर्म किये होंगे जिससे स्त्रीपर्याय में तुमने जन्मलिया ॥ हाय हाय स्त्रियोंको कैसे २ कष्ट उठाने पड़तेहैं ॥ वह स्त्री येही जानतीहैं यहसब पाप कर्मका फलहै परन्तु चाहिये तो यहथा कि धर्म सेवन करके तुम ऐसा उपाय करतीं जिस्से आगेको यहदुःखकी भरी स्त्रीपर्याय न मिलती तुमने उलटा पाप संचय करना प्रारंभ करदिया क्या तुमको नहीं मालूमहै इस का क्या फल होगा डरो सोचो यहबात प्रसिद्धहै कि स्त्रियों को डर ज्यादा लगाकरता है क्योंकि इनका दिल थोड़ा होताहै परन्तु बड़े आश्चर्य की बात है मिथ्यात्व जैसे पाप कर्म करते हुए तुम्हारा हृदय क्यों नहीं कांपता है भय करो और बचो मिथ्यात्व से नहीं तो इस जन्म मैंतो दुःख भोगती हो हो आगेको अनेकानेक जन्म तक इससे भी कई गुणज्यादा दुःख और कष्ट उठाओगी, मर्द तुमको मूर्ख बनाते हैं हंसते हैं क्या तुमको लज्जा प्राप्त नहीं होती है ॥ पुरुष तुम्हारे मित्र नहीं हैं वैरी हैं क्योंकि तुम्हारे वास्ते विद्याभ्यास का कोई उपाय नहीं करते हैं इस कारण तुमको खुद अपनी भलाई का इन्तजाम करना चाहिये यदि तुम यहकहो कि मर्द करें बेशक करेंगे तो मर्द ही परन्तु जैसा कि तुम प्रतिदिन प्रेरना करके जिद और हट करके जिस प्रकार जेवर (आभूषण) बनवालेतीहो इसही तरह कोशिस करके और अपने पुरुषों को दिक करके स्त्रियों के वास्ते विद्या अभ्यास का कोई प्रबन्ध अवश्य करालो क्योंकि जब तुम शास्त्र स्वाध्याय के लायक होजाओगी और शास्त्र स्वाध्याय करने लगोगी तो स्वःमेव तुम्हारी आंखें खुल जावेगी और तुम को ज्ञान का उजियाला मालूम होने लगेगा उस समय तुमको मालूम होगा कि मिथ्यात्व से कैसा घोरपाप होता है और संसार मैं भी कष्ट मिलता है ॥ मेरी स्त्री पुरुष दोनों से यह अर्दास है कि आप अवश्य

मिथ्यात्व को त्याग देवैं औरजैनधर्मको ग्रहण कर लेवैं ॥ धर्मकार्य में यह विचारनहीं हुआ करता है कि सबही करैंगे तो किया जावैगा इस कारण हे स्त्री पुरुषो आपको यह विचार नहीं करना चाहिये कि हमारे घरके अन्य स्त्री पुरुष मिथ्यात्व छोड़ेंगे तो हम छोडें नहीं २ तुमको उनसे इस विषय में कुछ संबन्ध नहीं है ॥ इस स्थानपर मुझको इस बातके बताने की जरूरत नहीं है कि कौन २ से कार्य मिथ्यात्वके हैं क्योंकि जब आप शास्त्र स्वाध्याय करने लगैंगे तो स्वःमेव ही जान जावेंगे कि सत्य वस्तु क्या है और मिथ्यात्व क्या है ॥ क्यायह बात आश्चर्य की नहीं है कि जैनीभी मिथ्यात्वी होतेहैं मेरी समझ में तो यह बात बहुत ही आश्चर्यकी है ॥ मिथ्यात्व के छोड़ने में हमारी समझमें जवान स्त्री पुरुषों को कुछ भी विलम्ब नहीं होगा परंतु वृद्ध स्त्री पुरुषोंकी की तरफ का खयाल आता है कि वह अवश्य यह कहैंगे कि साहब यह तो प्राचीन बात है मिथ्यात्वका प्रचार नवीन नहीं है और सब ही करते आये हैं इस कारण अब कैसे छुट सक्ताहै और इसमें नुकसान ही क्याहै ग्रहस्ती को सबही कुछ करना पड़ताहै ॥ हे वृद्ध स्त्री पुरुषो तुम कुछ सोचो और डरो कि तुमने जन्म पर्यन्त अनेकानेक पापकार्य कियेहैं और बहुत कुछ संसार का पोषण कियाहै अब तुम्हारे चलने के दिन निकट आगये हैं इस कारण अब कुछ आगेका भी बंदोवस्त करो क्या तुम को पापकी गठरी बांधनी है इसमें कुछ संदेह नहीं है कि अनादि कालसे तुम मिथ्यात्व में फंसे हुए हो और इस मिथ्यात्व के ही कारण चौरासी लाख योनिमें भ्रमतेहो और नाना प्रकार के घोर कष्ट उठाते हो परंतु क्या तुम घोर कष्ट से बचना नहीं चाहते हो ॥ हे बुद्धिमानो अब तुम्हारे भाग्यका उदय हुआहै जो तुम ने जैन कुलमें जन्म लियाहै यदि राजा बन कर और राज्य विभूत पाकर भी तुम कंगाल बनोतो इस बुद्धिमानी का तो कहना ही क्या है संसार के मोहने तुम को अंधाकार रक्खा है इस कारण तुमको उलटी ही सूझतीहै । मिथ्यात्व पालन करके तुम अपने बाल बच्चों के वैरी बनते हो और उनको अनेकानेक कष्ट देते हो क्योंकि प्रत्यक्ष देखलो अंग्रेज आदि जो तुम्हारी तरह मूरखताई के काम नहीं करते हैं उनके बाल बच्चे अधिक सुखी रहते हैं और उनके सन्तान भी अधिक होतीहैं और जीती भीहैं जिन मिथ्यात्व कारजों को तुमने लाभ दायक समझ रक्खाहै वह कदापि लाभदायक नहींहै बल्कि वह स्पष्टरूप दुखदाई है ॥ अपने ही भाइयोमें देख लो जो जैनी भाई तुम्हारे अनुसार अपनी संतानके वास्ते मिथ्यात्व कर्म नहीं करते हैं उनके बच्चे बहुत अच्छे रहते हैं और तुम्हारे बच्चे सदा रोगी रहते हैं इस कारण अपने और अपनी संतान

के हितके हेतु मिथ्यात्व और मूर्खताई के कामों को सर्वथा त्याग कर देना चाहिये ।। नहीं मालूम किस पुन्यके उदय से अबकी बार यह जैन कुल तुम को प्राप्त होगया है और उत्तम शिक्षा सुने का अवसर मिला है यदि इस समय को व्यर्थ खोओगे तो नहीं मालूम फिर कभी ऐसा अवसर मिले या न मिले। हे जैनी भाइयो अोदशलाक्षणी पर्व में अब की बार तुम्हारा मन्दिरजी में आना सुफल होगा क्योंकि तुम अब की बार मिथ्यात्व को छोड़कर जैनी बन जाओगे ।। हम यह बात देखते हे कि स्त्रियें व्रत उपवास बहुत करती हैं सभी शरण व्रत आकाश पंचमी व्रत अखैदशमी व्रत सुगंध दशमी व्रत स्वर्ग व्रत धर्म चक्र व्रत इत्यादि बहुधा प्रकार के व्रत बारह महीने करती रहती हैं बेला तेला करती है कंदमूल आदिका स्त्रियों के सर्वत्र त्याग होता है अर्थात् स्त्री धर्म पालन पुरुषोंसे अधिक करती हैं इस से यह बात स्पष्ट ज्ञात होती है कि स्त्रियोंको पुरुषोंसे अधिक धर्म राग है यह बात भी प्रत्यक्ष है और इस को सब मानते हैं कि मिथ्यात्व कर्म से यह सब व्रत उपवास नष्ट होजाते हैं इस कारण हम स्त्रियों से आशा रखते हैं कि वह पुरुषों से भी पहले मिथ्यात्व के छोड़ने के वास्ते तय्यार होंगी ।। परोपकारी भाइयों से हमारी यह प्रार्थनाहै कि वह कोशिश करके और प्रेरणा कर के अपने भाइयोंसे दुष्ट मिथ्यात्वको छुड़ा देवें इस में उन को बहुत पुन्य की प्राप्ति होगी और मिथ्यात्व छोड़नेवाले भाइयों की एक फहरिस्त बनाकर कृपा करके हमारे पास भी भेज देवें हम इस को जैन गजट में प्रकाश कर देवेंगे ॥

जैनमहाविद्यालय

हे सज्जन धर्मात्मापुरुषो आपको यह समाचार सुनकर अत्यन्त हर्ष प्राप्त हुआहोगा कि एक जैनमहाविद्यालय स्थापन करनेका उपाय होरहा है क्योंकि आप जानते हैं कि जैनधर्मको हानि इसही कारण आई है कि जैन जातिमें पण्डितों की बहुत कमी होगई है यहांतक कि सच पूछो तो अभावही होगयाहै ।। बहुतसे नग्र ग्राम ऐसे हैं कि जिनमें एकभी पण्डित नहीं है बहुत से स्थानमें नागरी भाषाके दो अक्षर जानने वालेही पण्डित कहलातेहैं बहुतसी जगह पंडितों की मांगहै परन्तु पण्डित नहीं मिलते हैं ।। जैनी का तो प्रत्येक बालक पण्डित होनाचाहिये था परन्तु शोककी बातहै कि पण्डित बिलकुलही नहै ।। दो चार जो आजकल कम वेश पण्डित हैं वह कुल भारतवर्षका क्या उपकार करसक्ते हैं ।। आपने यह बात अवश्य विचारली होगी कि यदि जैनकालेज होगया तो नगर नगरमें पण्डित होजावेंगे और फिर जैनधर्मका वैसाही डंका बजैगा जैसाकि पहिले था ।। आप नित्य

इस बातको विचारते हैं कि कब जैनकालेज हो और कब जैन जातिका उपकार हो इसही बात के जाननेके हेतु आप जैन समाचारपत्रों को नित्य पढ़ते हैं परन्तु अभीतक जैनमहाविद्यालय स्थापित नहीं हुआहै इसका क्या कारणहै ॥ हे जैनीभाइयो इसका यही कारणहै भाइयो महाविद्यालय ऐसा छोटा काम नहीं है जो सहज में होसके या जिसको एक या दो मनुष्य मिल कर करसकें ॥ भाइयो जैन महाविद्यालय से कुल भारतके जैनियोंका उपकार होगा इस कारण यह महान्कार्य सबकी ही सहायतासे होसक्ताहै ॥ इस काममें कमसे कम दस बारह लाख रुपयेकी जरूरतहै जिसके सूदमें इसका सब खर्च चलताहै ॥ आठ आने सैकड़ा सूद के हिसाबसे बारहलाख रुपयेका सूद छैहजार रुपये महीना होताहै सो इससे विद्यालय के पाठकोंको तनख्वाह दीजावेगी विद्यार्थियों को पारितोषिक [इनाम] और गरीब विद्यार्थियों को खाने पीनेका खर्च दियाजावेगा ॥ उपदेशक नियत कियेजावेंगे जो देश विदेश घूमकर सोयेहुए जैनियों को जगावेंगे और धर्म का उपदेश देकर धर्ममें लगावेंगे ॥ महान् विद्वान् पण्डित इन्सपेक्टर (Inspector) मुकर्रिर किये जावेंगे जो नग्र नग्र घूमकर प्रत्येक नग्र की जैनपाठशालाओं के विद्यार्थियोंकी परीक्षा (इम्तिहान) लेवेंगे और उनकी पढ़ाई आदि का प्रबन्धकरैंगे और विद्यार्थियों को पारितोषिक (इनाम) देकर उनका उत्साह बढ़ावेंगे इस प्रकार प्रबन्ध होनेपर आप स्वमेव विचार सक्ते हैं कि कितनी उन्नति जैनधर्मकी होगी ॥ हमारी जाति के मनुष्य धर्मके सिद्धान्तों से अज्ञानहैं मिथ्यात्व आदि पाप कर्मोंमें फंसेहुएहैं कुरीति और फजूलखर्ची के फंदे में पड़ेहुए निर्धन होरहे हैं और वैर विरोध अधिक फैल रहाहै इत्यादि और बहुतसी हानिहैं जिनका वर्णन नहीं होसक्ताहै परन्तु इन सब बातोंका कारण एक अविद्याहै यदि विद्याहोती तो कोई भी खराबी नहोती सो विद्याकी उन्नतिबिना एक महाविद्यालयके नहीं होसक्ती है हे बुद्धिमानो ऐसा महान्कार्य जबही चलसक्ताहै जब कि आप सब भाई उसमे सहायता देवें ॥ हमारे जैनी भाई लाखों करोड़ों रुपया जैन मंदिरों के बनाने में लगाते हैं ॥ बेशक श्री जैन मंदिर के बनाने में बड़ाभारी धर्मका उपकार होता है क्योंकि श्रीजैन मंदिर धर्मके स्थान हैं जिनमें जाकर धर्म सेवन करते हैं परन्तु हे भाइयो जरा इस बातको विचारिये कि धर्मके स्थान जबही कारजकारी होसक्तेहैं जब कि मनुष्य धर्मात्माहो और धर्मको जान्ते हो ॥ यदि कोई जैनीभाई अंगरेजोंकी विलायत में जहां एक भी जैनीनहीं है बड़ा महान् श्री जैनमंदिर बना देवे तो क्या वहां मंदिर का बनाना कुछ कारजकारी होसक्ताहै नहीं बिलकुल नहीं इसही प्रकार यदि जैनी लोग जैन धर्मसे अज्ञानी होजावें तोभी कोई जैन मंदिर में जाकर धर्म सेवन नकिया करें जैसाकि अब हमारे बहुतसे जैनीभाई जैनधर्मको न जानने के कारण कभी श्रीमंदिरजी मे नहीं आते हैं

और यदि यही दशा रही जैसी कि अबहै तो आहिस्तार आनेवाली सन्तान जैनधर्मसे बिल कुलही नावाकिफ रहेगी और श्रीमंदिरजी में आकर धर्म सेवन नहीं किया करैगी इस कारण धर्मके प्रचारके वास्ते मुख्य उपाय धर्म विद्याका प्रचार करनाहै जब तक धर्म विद्याका नहीं होगा धर्म सेवन बहुतही कम होताजावैगा॥ धर्म विद्याके अभाव होनेही के कारण बहुत से श्रीजैनमंदिरोंमें पूजा प्रक्षाल नहींहोतीहै या पूजा प्रक्षालके वास्ते नौकर रक्खेहुएहैं ॥ श्रीजैनमंदि रोंमें बहुतसा द्रव्यखर्चकर सरस्वतीभंडार बनाया जाताहै और बहुतसे जैनशास्त्र बहुत दूर २ से लिखवाकर मंगाये जाते हैं बेशक इस प्रकार शास्त्र संचयकरने वालोंका बड़ाभारी उपकारहो ताहै क्योंकि उन शास्त्रोंको पढ़कर अनेक भव्य जीव सम्यक्त ग्रहण करैंगे ॥ परन्तु हे भाइयो यदि विद्या ही नही होगी तो जैन शास्त्रों से जो अमोलक रत्न के तुल्य हैं क्या लाभ उठा सक्ते हैं आज कल जैनियों में विद्या नहीं है इसही कारण बहुत से नगर ग्रामों के श्री जैन मंदिरों में बहुत से ग्रन्थ विराजमान हैं परन्तु उनका कोई पढ़ने वाला नही हैं इस कारण उनका बसना भी कभी नहीं खुलता हैं विद्या के विना यह सब उपकार के काम ऐसे हैं जैसा कि नैन बिना सुन्दर रंगा रंगके पदार्थों का सन्मुख होना ॥ अन्धे पुरुष को बहुत बड़ा मनोग्य सुन्दर मकान वा अन्य सुन्दर बस्तुमनके हरने वाली दिखला- वो परन्तु उसके वास्ते वृथा है ॥ हे जैनी भाइयो यदि आप धर्म का उपकार करना चाहते हैं,तो सबसे पहले विद्या के प्रचार का उपाय करो नहीं तो जैन धर्म कायम नहीं रहैगा ॥ अब जैन जातिके भाग्यका उ- दय आगया है जो हमारे परोपकारियों का बिचार जैन महाविद्यालय नियत करने का और नगर२ जैन पाठशाला स्थापन करनेका और भले प्रकार उनके प्रबन्ध करनेका हुआ है ॥ जैनियों को अति प्रफुल्लित होना चाहिये और ऐसा बिचार करने वालों का धन्यबाद करना चाहिये ॥ और उनको पूर्ण सहायता देकर इस कामको चलाना चाहिये ॥ आप जानो हो कि एक एक बिन्दु पानी से समुद्र होजाता है और एक एक दाना अनाज से ढेर लग जाता है इसही तरह आपकी थोड़ी२ सहायता से सब कुछ होसक्ता है ॥ इस समय किसी २ धनके लोभी को खयाल होगा कि यदि किसी एक छोटेसे ग्राम से जैन महाविद्यालय की सहायता न हुई तो क्या जैन महाविद्यालय में कमी आजावेगी परन्तु यह उनका बिचार केवल लोभके होने और धर्म अनुराग न होनेके कारण है ॥ एक कहानी प्रसिद्ध है कि एक समय अकबर- बादशाह ने किसी नगर के सर्व मनुष्यों को यह आज्ञादी कि आज रात्री के समय सब मनुष्य एक एक घड़ा दूधका तालावमें डाल देवैं ॥ उस समय एक मनुष्यने यह बिचार किया कि तालाब में लाखों करोड़ों दूध के घड़े पड़ैंगे यदि मैं एक घड़ा पानी का

डालदूं तो क्या मालूम होगा ऐसा विचार कर उसने पानी का ही घड़ा तालाब में डाला परन्तु जैसा उसने विचार किया कि मेरे एक घड़े से क्या होगा इसही प्रकार अलग २ सब मनुष्यों ने विचार किया कि मेरे एक घड़े पानी से क्या हानि आवेगी इस कारण सबने पानी काही घड़ा डाला ॥ सुबह को जब बादशाह ने देखा तो सब तालाब पानी से भराहुआ था और उसमें दूध की एक बूंदभी नहीं पड़ीथी ॥ हे बुद्धिमानो न कभी अकबर बादशाह ने ऐसी आज्ञादी और न कभी तालाब में दूध या पानी डाला गया केवल किसी चातुर बुद्धिमान् पुरुष ने मूर्खों को यह शिक्षा देनें के वास्ते यह कहानी बनाई है कि वह कभी ऐसा विचार न करैं कि मेरे एकके करने या नकरने से क्या होताहै ॥ हे भाई आप बनिये हैं आप एक एक कौड़ी के नफे से हजारों और लाखों रुपये का नफा उठालेते हैं कि इस कारण आपका यह विचार करना योग्य नही है कि हमारी थोड़ीसी सहायता से क्या होगा भाई साहिबो एक एक ईंट जोड़ कर बहुत बड़ा महल बनाया जाता है यदि महल बनानें से पहले कोई यह विचार करने लगे कि छोटी छोटी ईंटोंसे किस प्रकार महल बनजावेगा तो क्या वह मूर्ख नहीं है देखो सर्कार अंगरेजी जिसका पृथ्वी के पांचवे हिस्से पर इस समय राज्य है तुमसे ही टैक्स द्वारा दस २ बीस २ रुपया लेकर लाखों करोड़ों रुपया इकट्ठा करलेती है ॥ हे जैनी भाईयो यदि आपकी थोड़ी २ सहायताभी होजाती तो क्या अबतक महा विद्यालय न बनजाती महाविद्यालय में सहायता देनेसे आपको पुन्यकीभी बहुत बड़ी प्राप्ती होगी ॥ प्रति वर्ष बहुतसा रुपया आपका धर्महेतु खर्च होताहै इसवर्ष कुछ रुपया इस महान् उपकार के काम में भी खर्च करदेवो जिससे अत्यन्त धर्म का प्रचार और उपगार होगा ॥ आपको किसी दूसरेकी बाबत कुछ विचार नही करना चाहिये बल्कि यदि आपमें धर्मानुराग है तो आप उद्यम के मैदान में सबसे आगे कदम रखिये और कुछ धर्मका उपकार करके दिखलाईये ॥ हे बुद्धिमानो आपको यहबात निश्चय रूप मालूम होगई है कि अन्य धर्म के कार्जोंकी बनिस्पत विद्याप्रचार में कोशिश करनेकी अधिक आवश्यक्ता है और इससे अधिक लाभहै परन्तु देखनेमें यह आताहै कि हमारे बहुधा भाई अन्यप्रकार धर्म कार्जों में पूजा प्रतिष्ठा आदिमें बहुत धन लगादेते हैं परन्तु विद्या प्रचारके वास्ते धन नहीं लगाते हैं इसका कारण यहहै वह लोग जो विद्या प्रचार में धन नहीं लगाते वह अन्य कार्जों में भी धर्मके हेतु धन नहीं खर्च करते हैं बल्कि अपनी नामवरी और प्रतिष्ठाके हेतु खर्च करते हैं किसीको संघईका पद मिलताहै और किसीको श्रीमंतका किसीकी कीर्तिजगतमें फैलती है इसकारण जैसा कि बेटा बेटी के विवाहमें बहुत धन नामवरी के वास्ते लुटादिया जाताहै ऐसे ही नामवरीके वास्ते यह

कारज कियेजातेहैं यदि धर्मानुरागसे और धर्मके हेतु धनखरच कियाजाता तो धर्म प्रचारके सब काम समान समझेजाते बल्कि वह काम जिनसे धर्मकी ज्यादा उन्नति होती है उनमें ज्यादा कोशिश कीजाया करती ॥ हमको एक बात का बहुत बड़ा आश्चर्य है कि यह बात किस कारण ऐसे लोगोंके हृदयमें समागई है कि जैन महाविद्यालयमें धन लगाने से नामवरी नहीं होगी हे भाइयो जैन महाविद्यालयमें धन देने से तो बहुत बड़ी नामवरी होती है ॥ जितनी नामवरी अन्यधर्मके काममें एक हजार रुपया लगाने से होती है उतनी ही नामवरी जैन महा विद्यालयके हेतु एकसौ रुपया लगाने में होजाती है ॥ देखो जिन लोगोंने दस२ बीस२ रुपया भी महाविद्यालय के हेतु या जैन उपदेशक भंडारमें दियाहै उनका नाम जैन समाचार पत्रों द्वारा प्रसिद्ध होगयाहै ॥ महाविद्यालयमें धन लगाना महान् पुन्य और महान् नामवरी का हेतुहै और जगतका भी इससे महान् उपकार होताहै अर्थात् इस समय इसकी बराबर और कोई उत्तम कार्य नहीं है ॥ हे सज्जन धर्मात्मा भाइयो इस दशलाक्षणी पर्वमें अपूर्व लाभ प्राप्त करो और महाविद्यालयके हेतु कुछ रुपया चित्त से त्यागो ॥ जैन जाति शिरोमणि श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास साहब सी. आई. ई सभापति जैन महासभा मथुरा ने जैन जाति के उपकार के खयालसे महाविद्यालयका रुपया अपने यहां जमा करना स्वीकार करलिया है इस कारण इस दशलाक्षणीमें अवश्य अपने नगरका रुपया महाविद्यालयके हेतु उक्त श्रीमान् सभापतिसाहब के पास मथुरा भेजदेना चाहिये ॥ अबके साल हमको आशापड़ती है कि इस पर्वमें ही महा विद्यालयके वास्ते कुल रुपया इकट्ठा होजावैगा और आनेवाली महासभा जो कार्तिक मासमें मथुरामें होगी इसका भलेप्रकार प्रबन्ध होजा-वैगा ॥ परोपकारियों से हमारी यह प्रार्थना है कि वह इस अवसरको व्यर्थ न खोदेवैं बल्कि जिस तिस प्रकार कोशिश करके जरूर चिट्ठा वसूल करलेवैं यह उनका बहुत बड़ा उपकार होगा ॥ महाविद्यालयमें रुपया देने के समय बहुतसे भाइयोंको यह विचार होगा कि महा विद्यालय नहीं मालूम कहां होगा अगर हमारे ग्राममें या हमारे जिलेमें होता तो बहुतही अच्छा होता ॥ शायद ऐसे विचारवाले भाइयों में से किसी को यहभी विचार आवै कि हमारी गली मुहल्लेमें या हमारे घरमें महाविद्यालय होतो बहुतही उत्तमहो ॥ हाय२ जैनियोंको अहंकार और खुदीने बहुत वसमें कर रक्खाहै और ऐसे ऐसे विचारों से ही जैनधर्म और जैनजाति में इतनी हानि आई है ॥ यह आप जानते हैं कि कुल भारतवर्षमें एकही महाविद्यालय नि-यत होसक्ताहै और अन्य नगर ग्रामोंमें उसकी शाखा पाठशालायें होसक्तीहैं परन्तु महाविद्या-लय तो एकही होगा जिसके वास्ते दस बारह लाख रुपयेकी जरूरत होरही है जैसा आपका विचारहै कि हमारेही नगरमें हो क्या अन्य नगर वासियोंका ऐसा विचार नहीं होसक्ता है फिर किस प्रकार कारजकी सिद्धिहो ॥ हे

सज्जन पुरुषो नगर ग्रामके ममत्वको धर्मकारज के कामोंमें छोड़दो और धर्मानुराग पैदाकरो॥ जिसको सच्चा धर्मानुराग होगा ॥ वह धर्म की उन्नति की इच्छाकरेगा उसके ऐसे दुष्ट परिणाम कदाचित् नही होंगे कि यदि धर्मकी उन्नति हो तो हमारे ही नामसे हो या हमारे ही ग्राममें हो हमको अन्य नगर ग्रामों से क्या मतलब ऐसा विचार बड़े महान् पापका और दुष्टताईका है ऐसी बात कभी हृदयमें नहीं लानी चाहिये दान कारज सब आदमियों के मिल कर करने मे हुआ करते हैं और महान् कारज एकही स्थान में हुआ करते हैं सब जगह नहीं हुआ करतेहैं ॥ जब सूरज निकलता है तो सारे जगत में उजियाला होजाताहै इसही प्रकार जैन महाविद्यालयसे सारे भारतवर्षको समान लाभहोगा और जैनमतका उद्योत होगा ॥ भाइयो द्वेष भावको छोड़ो बहुत होचुकी ऐसे २ ही विचार से बहुत कुछ दुर्दशा जैन जातिकी होचुकी अब अपनी कृपाकरो और कुछ धर्म कारजभी करलो तोड़ना बहुत आसान है और जोड़ना बहुत मुश्किल है ॥ जैनकी न्यून दशा तो आसानीसे करदी अब चतुराई तो इसमें है कि फिर उन्नति करके दिखलाओ धर्मके कामोंमें कषाय पोषण करनेसे धर्मके स्थानमें अधर्म होता है ॥ जैनी भाइयो जैनधर्म अब आपके आश्रय है चाहे इसकी उन्नति करो चाहे अवनति भाईयो अगर आपमें कुछ धर्म अनुराग है यदि आप धर्मकी उन्नति चाहते हैं यदि आपको धर्मका जोश है यदि आप जैनीहैं तो जैन महाविद्यालय की सहायतार्थ कुछ चिट्ठा करो ॥ पहले यह बात प्रसिद्धथी कि जैनी लोग धर्म कार्यों में बहुत धन खर्च करते हैं जैनियों की यह प्रभावना सब के हृदय में बैठी हुईथी परन्तु अब यहबात झूंठी ज्ञात होती जातीहै और प्रभावना घटती जातीहै क्योंकि अन्य सर्व जाति वालोंने अपने अपने कालिज अर्थात् महाविद्यालय जारी कर लिये हैं परन्तु दश वर्ष से ज्यादा शोर मचते हुए होगया अभीतक जैनियों काही कालिज नहींबना है क्यायह जैनियोंके वास्ते लज्जाकी बात नहींहै क्या इससे यहबात सिद्धनहीं होतीहै कि जैनी लोग धर्मकेवास्ते एक कौड़ीभी खर्चकरना नहीं चाहते हैं ॥ भाइयो इस दूषणको हटाओ और इस पथ में अपनीशक्ती और श्रद्धानुसार जैन कालेजकी सहायताकरो ॥ आनेवाली महासभा में जो कार्तिक मासमें मथुरा स्थानमें होनेवाली है जैन महाविद्यालयका प्रबन्ध किया जावेगा इस कारण वहांपर यह बात पेश कीजावेगी कि अबके दशलाक्षणी पर्वमें किस२ नगर ग्राम से महाविद्यालयमें सहायताहुई ॥ अबकी महा सभामें कुल भारतवर्ष से सब नगर से जैनी भाई इकट्ठे होंगे इस कारण वहांपर जब यह मालूम होगा कि अमुक नगरसे कुछ सहायता नहींहुई है तो क्या उस नगरके भाइयों की बदनामी नही होगी ॥ महाविद्यालयकी सहायता करते समय आप इस बातका कभी खयाल न करें कि अधिकही सहायता कीजावे नहीं जितना

बनपड़े वहही बहुतहै और यहभी विचार न करें कि सब बिरादरीके भाई अपनी २ हैसियतके अनुसार देवें क्योंकि यह बिरादरी का चिह्न नहीं हैं कि जिसमें हैसियत देखीजावे यह तो धर्म कार्य है इस में तो जिसको धर्म अनुराग अधिक होगा वह अधिक सहायता करेगा चाहे निर्धनही हो और जिसको धर्म अनुराग कमहोगा वह कम सहायता करेगा चाहे वह धनवान्ही हो ॥ यह बात निश्चय जानो कि महाविद्यालयके जारी होतेही सब नगर ग्रामोंमें जैनधर्मकी रोशनी फैल जावेगी और डंका बजजावैगा ॥ देखो हाथ पैर आंख कानही सर्व प्रकार का उद्यम करते हैं और भोजन उपार्जनकर पेटको सौंप देते हैं पेट उस भोजनको पचाकर और उसका रुधिर बनाकर हाथ पैर आदि सर्व अंगोंमें वह रुधिर पहुंचताहै जिसके कारण उनकी पुष्टी होती है इसी प्रकार आप सब देश देशान्तरके भाई जैन जातिके हाथ पैर आंख कान आदि अंगों के समानहो और द्रव्य उपार्जन करतेहो जैन महाविद्यालय भंडार पेटके समान जिसमें तुम सब भाई अपना उपार्जन कियाहुआ धनदोगे यह जैन महाविद्यालय आपके दियेहुए धनको पचाकर उससे विद्या रोशनीको उत्पन्न करेगा और उस रोशनीको देश देशान्तर में आप सबके पास भेजदेवेगा ॥ उपरोक्त दृष्टान्तमें यदि हाथ पैर आंख कान यह कहने लगें कि सर्व प्रकारका उद्यम हमकरते हैं और उदरको सौंप देतेहैं हमको क्या जरूरत है कि उदरको कुछ देवें हमारा उससे क्या फायदाहै तो क्या यह उनका विचार अति मूर्खताका नहीं है और यदि इस विचारके अनुसार पेटको भोजन हाथ पैर नदेवें तो नुक्सान किसको होगा यह नुकसान अवश्य हाथ पैरोंका ही होगा क्योंकि पेटमें खाना न पहुंचनेके कारण रुधिर न बनसकेगा और हाथ पैर अत्यन्त निर्बल होजावेंगे ॥ इस ही दृष्टान्तके अनुसार आपलोगों की तरफसे महाविद्यालयको सहायता न मिलनेके कारण नुकसान आपही को हुआहै कि ज्ञानकी रोशनी न होनेके कारण आप सब लोग अज्ञानी हो रहे हैं ॥ इस कारण हे भाइयो उद्यम करो आलस्य और प्रमादको छोड़ो ॥ जैनी लोग तो बड़े उदार दातार बुद्धिमान् धर्म कार्योंमें द्रव्य लगाने वाले मशहूर हैं इस काममें आपने क्यों बिलम्ब कर रक्खाहै हिम्मत करो और जैन धर्मकी उन्नति करके पुन्य उपार्जन करो ॥

हम परोपकारी भाइयों से यह प्रार्थना करते हैं कि आपके नगरके भाई इस दशलाक्षणी पर्वमें जो कुछ द्रव्य जैन महाविद्यालयकी सहायताके अर्थ इकट्ठा करके मथुरामें श्रीमान् सभापति साहबके पास भेजें इसकी एक फहरिस्त बना कर कृपाकरके बहुत जल्द हमारे पासभी भेज देवें हम उसको जैनगजटमें प्रकाश करदेवेंगे ॥

धर्म गोलक

हे परोपकारी भाइयो हे धर्मकी उन्नति चाहने वालो जैनमहाविद्यालय की आवश्यक्ता को आपने भली भांत जानलिया होगा और अवश्य उसकी सहायता करना आपने अपना परम धरम समझा होगा ॥

हे बुद्धिमनो जैनमहाविद्यालय के चिरस्थाई रहने के वास्ते यह प्रबन्ध किया गयाहै कि महाविद्यालयकी सहायता का मूल द्रव्य खर्च न किया जावे बल्कि महाविद्यालय उसके ब्याजमे चले ॥ इस ही कारण महा विद्यालय के वास्ते अधिकधनकी आवश्यक्ता हुई है सो आप भाइयों से आशाहै कि शीघ्र सायता करेंगे ॥ परन्तु हे भाईयो आज कल जैनियों मैं पण्डितों की वहुत कमी है बहुधा स्थानों मैं पाठशाला के वास्ते अध्यापकों की जरूरत है परन्तु नहीं मिलते हैं इसकारण लाचार ब्राह्मण लोगही जैन पठशालाओं मैं पाठकनियत किये गये हैं ॥ बहुधा स्थानों मैं श्री जैनमंदिरों मैं शास्त्रका उपदेश दैनेके वास्ते पण्डित चाहते हैं परन्तु यह कार्य अन्यमत के पण्डितों से नहीं होसक्ता इस कारण बहुधा स्थानों में जैनी पण्डित न मिलने के कारण शास्त्रजीका ही अभाव होरहा है ॥ इत्यादिक बहुत प्रकारकी हानि पण्डितों के नहोनेके कारण जैन धर्म मैं होरही है ॥ इस कारण परोपकारी भाइयों ने यह विचार कियाहै कि जैन महाविद्यालय कातो प्रवन्ध करते ही रहैं परन्तु एक विद्यालय अविही से नियत करदें जिसमैं जैनियों के बालक पढ़कर पाठक बनैं और जैनधर्मको फैलावैं ॥ ऐसा विद्यालय नियत करने के वास्ते एक बहुतही सुगम उपाय सोचागयाहै जिससे आसान और कोई उपाय नहीं होसक्ता है अर्थात् भाद्रव मास मैं श्री दशलाक्षणी पर्व के दिनों मैं सर्व जैनीभाई श्री मंदिरजी मैं आते हैं इस कारण उनदिनों मैं एक धर्म गोलक प्रत्येक श्रीमंदिरजी मैं रक्खी जावे और यह नियम कियाजावे कि प्रत्येक कमसेकम एक पैसा अवश्य उस गोलक मैं डालदेवें श्री चतुर्दशी के पश्चात् वह गोलक पंचायतमैं खोली जावे और जो कुछ धन उसमैं संचयहो वह उक्त विद्यालय की साहयताके वास्ते श्रीमान् सेठ लक्ष्मण दास सभापति जैन महासभा मथुरा के पास भेजदिया जावे ॥ जैनिभाई को एक पैसा धर्म उन्नति और विद्यादान मैं देना कुछ मुश्किल नहीं है इसी ही एक पैसे से एक विद्यालय बड़ी अच्छी तरह से चल सक्ता है ॥ प्रत्येक श्री मंदिरजी मैं गोलक रखने के विषय मैं हमने एक विज्ञापन पहले दियाथा इस कारण हमको निश्चयहै कि गोलक तो सर्व जैन मंदिरोंमें रक्खी गई होगी और यदि किसी मंदिरमें नहीं रक्खी गईहो तो अब रक्खी जावैगी और उसमें अवश्य सब भाई कमसेकम एक पैसा डालदेवैंगे ॥

जैन पाठशाला

भाइयो आप जानते हैं कि मनुष्य का भूषण विद्याहै जो मनुष्य विद्यावान्

नहींहैं उनको शास्त्रकारोंने पशु समान कहाहै विद्या एक निधिहै जिसके पास यह नहींहै वह कदाचित् प्रतिष्ठा नहीं पासक्ते हैं ॥ मनुष्यका गौरव विद्यासे हीहै जो लोग विद्याहीनहैं वह विद्यावान् पुरुषोंसे बात चीत करनेमें अति लज्जित होतेहैं ॥ विद्याके विदून संसारिक कारजोंमें बड़ी २ मुशकिल और हानि पड़ती है इस कारण बिन विद्या के हमारे बहुत से भाई अफसोस करते हैं कि हमारे माता पिताने क्यों हम को विद्या नहीं पढ़ाई ॥ बिना विद्या के धर्म के स्वरूपका कुछ ज्ञान नहीं होसक्ता है ॥ विद्याके न होने का ही कारणहै कि हमारे भाई अपने आपको जैनीभी कहतेहैं और मिथ्यात्व सेवनभी करतेहैं महापापवैरीहैं वह माता पिता जो अपनी संतानको विद्या नहीं पढ़ाते हैं ॥ संसारी पुरुष के वास्ते संसारिक और धार्मिक दोनों विद्याके सीखनेकी आवश्यक्ताहै ॥ आजकल यह प्रचार हो रहा है कि यदि किसी भाईके विचार में अपनी संतान को विद्या पढ़ाने की इच्छाभी होतीहै तो अंगरेजी वा फारसी संसारिक विद्या पढ़ाई जातीहै जिस का फल यह होताहै कि बालक अपने धर्म से अज्ञात होनेके कारण अंगरेजों या मुसल्मानों के मत की बातों भोंको सुन कर या पढ़कर उनही पर निश्चय कर लेतेहैं और अपने धर्म और कुल के प्रचारों को मूर्खताई के कार्य कहने लगजाते हैं ॥ इससे तो विद्या हीनही रहते तो अच्छा था ॥ भाइयो इस में संदेह नहींहै कि संसारी पुरुषको संसार कार्यों से अधिक प्रीति होती है और कोई मनुष्य प्रतिष्ठा नहीं पासक्ता जब तक कि राज विद्या न जानताहो और न जगत में वह उन्नति कर सक्ताहै इस कारण संसारिक विद्या अंगरेजी फारसी सीखना बहुत जरूरी है परन्तु जैसा ऊपर वर्णन किया गया है अंगरेजी फारसी सिखाने में बहुत हानि है ॥ फिर क्या किया जावे ॥ भाइयो यदि बालक को पहले धर्म विद्या पढ़ाई जावे और उसके पीछे अंगरेजी फारसी पढ़ाई जावे तो फिर कुछ हानि नहीं होसक्ती है क्योंकि बाल्यावस्थामें जो कुछ बालक सीख जाता है उस को फिर नहीं छोड़ताहै इसकारण जैनियोंको यह नियम करलेना चाहिये कि बालक को पहले धर्म विद्या सिखाई जावेगी पीछे और कोई विद्या सिखाई जावे या न सिखाई जावे ॥ जैसा कि मुसल्मान लोग अपने बालकों को पहले क़ुरान जो उन की धर्म पुस्तक है पढ़ा देते हैं ॥ यह ही कारण है कि मुसल्मान लोग अपने धर्म से नहीं डिगते हैं उन को अपने धर्म का अनुराग बराबर बना रहताहै

परन्तु हमारी जाति के मनुष्य अर्थात् जैनी भाई किस प्रकार अपने बालकों को धर्म विद्या पढ़ावें इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं होसक्ता है कि प्रत्येक नगर ग्राम में जैन पाठशाला स्थापितहों और जैनियोंके बालक उस में शिक्षा पावें ॥ भाइयो आपने सुना होगा कि कायस्थों ने यह हुकम अपनी जातिमें जारी कर दिया है कि जब तक कोई लड़का मिडल पास न करले तब तक उसका विवाह न हो॥ इस ही प्रकार क्या किसी नगरके जैनी भाई आपसमें मिलकर यह नियम नहीं बांध सक्ते है कि जब तक हमारी बिरादरी का बालक इतनी पुस्तकें धर्मकी नहीं पढ़ लेवेगा तब तक उसका विवाह नहीं होगा ॥ भाई साहब यह प्रबन्ध आपके लिये बहुत उपकारी है और आप सब मिलकर जो चाहें प्रबन्ध कर सक्ते हैं प्रत्येक नगर ग्राम में एक छोटी सी जैन पाठशालाका होना कुछ मुश्किल बात नहींहै क्योंकि यदि सब भाई थोड़ा थोड़ा सा भी खर्च देवें तो बहुत कुछ होसक्ता है ॥ पाठशाला के अर्थ द्रव्य लगाने में बहुत लाभ हैं अपने बालक धर्म विद्या सीखते हैं विद्या दान का पुन्य होताहै और धर्मका प्रचार उन्नति पाता है ॥ पाठशाला के वास्ते रुपया खर्च करनेमें बहुत पुन्यकी प्राप्तीहै ऐसा पुन्य और किसी कारज में नहीं है ॥

पाठशाला के जारी करनेमें बहुधा यह कठिनाई होती है कि धनाढ्य पुरुष जिनको धर्मसे कुछ अनुराग नहीं होता है वह इसमें धन खर्च करना नहीं चाहते हैं और इस कारण अन्य भाई भी निरुत्साही होजाते हैं और विचार करने लगते हैं कि जब धनाढ्य पुरुष इस काम में कम खर्च करते हैं तो हम को तो कुछभी खर्च नहीं करना चाहिये परन्तु उनका यह विचार ठीक नहींहै क्योंकि धर्म कार्यमें किसीकी रीस नहीं करना चाहिये ॥ धर्मात्मा पुरुषों को धर्मानुरागियोंको चाहिये कि वह किसी दूसरे पर कुछ खयाल न करें बल्कि अपने २ उत्साह के अनुसार इस उत्तम कार्य में सहाई हों और जिस तरह हो पाठशाला को जरूर जारीकरें ॥ पाठशाला जारी करनेके वास्ते इससे अच्छा और कोई समय नहीं होसक्ताहै क्योंकि आजकल दशलाक्षणी के दिनोंमें सबका उत्साह धर्मकी तरफ बढ़रहाहै ॥

पञ्चायत

शास्त्रों, इतिहासों और पुराणों के पढ़ने से मालूम होता है कि भारतवर्ष में पंचायत का बहुत प्रचार था ॥ सर्व प्रकारके मामले पंचायत से ही फैसल होते थे यहां तक कि पंचायत को इस

बातकाभी अधिकार होताथा कि अगर राजा अन्याई हो तो उससे राज्य छीन कर किसी दूसरे योग्य पुरुषको तख्त पर बिठलावें ॥ हमारी सर्कार अंगरेजी भी अपने सब काम पंचायतके ही द्वारा करतीहै किसी किसी देशमें इस समय राजाभी पंचायत की ही ओरसे नियत किया जाताहै जो कार्य पंचायत अर्थात् बहुमत से होता है वह ठीक होता है क्योंकि उसमें बहुतसे पुरुषोंकी सम्मति मिलकरगल्ती निकलजाती है॥हमारेदेश में प्रत्येक बिरादरीकी प्रथक् २ पंचायत हुआ करती थी और बिरादरी के सर्व कार्य पंचायत की ही आज्ञा से होतेथे पंचायत को यहभी अधिकार होताथा कि यदि किसीको कोई अनुचित् कार्य करते देखे तो उसको दण्ड देवे या बिरादरी से निकाल देवे । पंचायत का डर राज्य के डर से भी अधिक माना जाता था इसी कारण किसी मनुष्यको कोई अनुचित कार्य करनेका साहस नहीं होता था, पंचायतके कारण बिरादरीके सर्व मनुष्योंमें ऐक्यता और प्रीति बहुत होती थी प्रत्येक कार्यमें एक दूसरेकी सहायता करताथा और जो कोई किसी प्रकार बिरोधकी चेष्टा करताभीथा तो उसकी शिकायत बिरादरी में कीजाती थी वहां उसके कान ऐंठ जाते थे ॥ भाइयो आप जानते हैं कि संसारी जीव मोहके अंधकार में अचेत होरहाहै इंद्रियोंका विषय क्रोधमान् माया लोभ कषाय इसको नानाप्रकार के नाच नचातेहैं इस कारण जब तक संसारी मनुष्यको किसीका डर नहो तो वह बहुतसे अनुचित कार्य करनेपर उद्यत हो जावेगा ॥ भाइयो आपही अपने मन में विचार कर देखलेवें कि कैसे २ खोटे कार्य आपके मनमें आते रहते हैं परन्तु लोक निन्दाके भय से आप उन कारजों को करते नहीं हैं ॥ पंचायत का भय सब से अधिक होता है इसकारण जिस बिरादरीमें पंचायत होती है उस बिरादरी में खोटे आचरण बिल्कुल नहीं होतेहैं क्योंकि तुरन्त बिरादरीसे दण्ड मिलनेका खौफ लगा रहता है ॥ जिस समय में हमारी बिरादरी में पंचायत का प्रचार था उस समय में अनुचित् और अयोग्य कोई काम नहीं हुआ करते थे आपस में प्रीति थी परन्तु हाय हाय जबसे पंचायत का प्रचार हमारी जाति में नहीं रहा है हरएक आदमी खुद मुख्तार होगयाहै और जो चाहताहै सो करता है ॥ जिस का फल यह है कि बहुतसे निंद और खोटे आचरण हमारी जाति में फैल गये हैं जिनका वरणन करना लज्जाका कार्य है॥ हाय हाय जिन आचर्णों से मनुष्य जातिसे पतित ...

जैन महासभा

जैनमहासभाके दिन निकट आगये॥ महासभामें क्या क्या विचार होना चाहिये क्या२ प्रबन्ध होना चाहिये यह सब इस समय निश्चय करलीजिये क्योंकि आजकल पर्व के दिनों में सब भाई श्री मन्दिर जी में एकत्र होते हैं और धर्म ध्यान में लगे रहते हैं ॥ इस समय आप यह भी नियत कर लीजिये कि महासभामें आप के नगरके भाइयों की तरफ से कौन प्रति निधि अर्थात् मुखिया होगा ॥ महासभाके वास्ते जो२ आप विचार करें और जिसको प्रतिनिधि नियत करें यह सब समाचार कृपा करके डिप्टी चम्पतराय के पास इटावा लिख भेजें ॥

जैनभ्रातृगणना

हकीम उग्रसैन सरसावा जिला सहारनपुर निवासीने भ्रातृगणनाके नकशे आपके पास भेजेहोंगे सो अपने२ नगरका सर्ववृत्तांत उसमें लिखकर भेजदिया होगा यदि नहीं भेजाहो तो कृपाकरके अब शीघ्र भेजदेवें और यदि नकशे आपके पास न आयेहों तो नकशे मंगालेवें ॥

जैनसभा

आपके नगरमें जैनसभा पहलेसे होगी इसकारण उसका प्रबन्ध भलेप्रकार कर लेना चाहिये और यदि अभीतक जैन सभा नियत नहीं होतो सभानियत करने के वास्ते इससे अच्छा कौनसा समय होगा ज़रूर जिस तरह होसके कोशिस करके सभा कायम करलेनी चाहिये सभाके बिदून किसी प्रकार उन्नति नहीं होसक्ती है सभा से बड़े २ फायदे हैं।

जैन पाठशाला

आपके नगर में जैन पाठशाला भी है यानहीं ॥ यदि पाठशाला पहिले से है तो उस के खर्च और पढ़ाई और जैनियों के बालकों के पढने का प्रबन्ध भले प्रकार कर लीजिये और यदि पाठशाला नहीं है है तो जारी कीजिये इस समय सब भाई मौजूद हैं इस कारण पाठशाला का बंदोबस्त बड़ी आसानी से होसक्ता है यदि यह दिन व्यतीत होगयेतो फिर कोई इन्तजाम होना मुशकिल है ॥ धर्मका उपकार पाठशाला के बिदून नहीं होसक्ता है ।

फिजूल खर्ची

निकालो इस दुष्टनीको, इसके कारण आपका धर्म कर्म सब नष्ट होताहै । इसने आपकासुख आपका आराम सब बरबाद कर रक्खाहै ॥ इसने आपको पापी बनारक्खाहै । इसही के सबब आपको आठ पहर चिन्ता रहती है फिजूल खर्चीको अपनी जानसे काला मुंह करके बिलकुल निकालदो । फिजूल खर्चीके दूर होनेसे बहुत धर्म उन्नतिहोगी इसकारण आजकल धर्म सेवनके समयमेंही इसका बन्दोबस्तकरो॥

जैन महाविद्यालय

महाशयो आप सब भाइयों की ही सहायतासे जैन महाविद्यालय जारी होसक्ताहै ॥ आप जानतेहैं एक२ बूंद पानीसे समुद्र भरजानाहै ॥ ऐसाही आप सब भाइयोंकी थोड़ी२ सहायता से भी सब कुछ होसक्ताहै आप का बहुतसा रुपया धर्महेतु लगताहै थोड़ासा इसमें भी लगादीजिये आपका बड़ाभारी पुन्य और जसहोगा और जैन धर्म और जैनजातिका उद्धारहोजावेगा जैन महाविद्यालयकी सहायताका रुपया श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदास साहब सभापति जैन महासभामथुराकेभेजनाचाहिये

उपदेशक भंडार

उपदेशकोंके देश विदेश घूमने से जो लाभहोताहै उसको आप भले प्रकार जानतेहैं अविद्या अंधकारदूरकरना धर्मोन्नतिके सर्व कारनोंका प्रचार देना घोरनिद्रा में सोतेहुओंको जगाना उपदेशकों काही कामहै ॥ आजकल उपदेशकोंकेही द्वारा परोपकारी भाइयोंके मनोर्थ सिद्धहोंगे और जैनधर्मका प्रचार होगा सर्व जैनी भाइयोंको उचितहै कि जहां तक होसके उपदेशक भंडारकी सहायता करें ॥ जो पैसा जैनी भाईका इसमें लगेगा वहही सफलहोगा॥ उपदेशक भंडारकी सहायताका रुपया मुन्शी चम्पत राय डिप्टी मजिस्ट्रेट इटावाके पास या श्रीमान् सेठ लक्ष्मण दास सी० आई० ई० सभापति जैन महासभा के पास भेजना चाहिये ॥

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर प॰ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखलाइये ॥

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करे, धर्म सूर्य परकाश ॥
करे अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१६—२४ ता॰ को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध मे
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता॰ २॰ सितम्बर .... सन् १८९६ } अङ्क ४१

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

विज्ञापन

मथुरा शहर सिद्धि क्षेत्र है नि
र्वाण भूमि है यहां से अन्तिमके व
ली मुक्ति पधारे हैं यहां पर प्रति
वर्ष आठ दिन तक धर्म उत्सव हो-
ता है इस वर्ष मिती कार्तिक वदी २
से ९ तक उत्सव रहैगा सर्व देश दे-
शान्तर के भाई पधारेंगे महा सभा
भी इनही दिनों में होती है इस का
रण सर्व सहधर्मी और परोपका-
री भाईयों को अवश्य पधारना चा
हिये ॥ इस वर्ष महासभा का वहुत
महान जलसा होगा और धर्मोन्नति
जातिउन्नति के सर्व प्रकार के उपाय
निश्चय किये जावेंगे ॥

जैनियों की प्रथम उत्कृष्ट अवस्था और अब यह दुर्दशा

दोहा

सुनो श्राव कुल चित्तदे जो कुछ कहि वो मोर, क्या थे अब क्या होगये लखो आपनी ओर ॥

जरा देखो क्या कौम की गति हुई है, तबाही से क्या उसकी हालत हुई है ॥ मुसीबत में फंसकर वह क्या कर रही है, वह कम्बख्त जीती है या मर रही है ॥

विचार करने से ज्ञात होता है कि अतीत काल में श्रावक कुल कैसा उत्तम था यह जाति कैसी विद्यावान, धनवान, और राज्यमान प्रमाद रहित उत्साही उत्तमाचार की पालने वाली नीति मार्ग में गमन करने वाली, निरन्तर ज्ञानाभ्यास करने वाली, मेघ समान दान की अखंड धारा बरषाने वाली, तन मन धन से परोपकार वाली, देव गुरु की भक्ति परम वात्सल्य अंग की धरने वाली, यह श्रावक जात जगत में विख्यात थी सब जातों में उत्तम और श्रेष्ठ समझी जाती थी इस जाति के सबही मनुष्य पर धन पर स्त्री के त्यागी व्यापार में अति लाभ उठाकर संसारिक पूर्ण आनन्द भोगते थे सदा सुख से काल व्यतीत करते थे उस समय की जिन धर्म की उत्कृष्ट निर्मलता और महत्वता की प्रशंसा करना मानों इस समय स्वप्न की सी बातें करना है ॥

यह जैन कुल सदैव पवित्राचरण रूप रहा जिसकी विख्यातिता अन्य मतावलंबियों पर भी विदित रही— हे भाईयो ! इस उन्नति के क्या कारण थे ? इस उन्नति के कारण श्रावकों के निज स्वभाव और मुख्य गुण थे देखो जिस पदारथ के जो निज स्वभाव और गुण होते हैं उन के घटने से उस पदार्थ में न्यूनता होजाती है और उन गुणों के बढ़ने से उसकी उन्नति होती है जैसा अग्नि का स्वभाव उष्णता और गुण उसका जलाना है तब जिस कदर उष्णता और जलाना अग्नि से कम होगा उसी कदर अग्नि नष्ट होगी इसी प्रकार हरएक पदार्थ में समझ लेना चाहिये ॥

श्रावकों के वे निज गुण क्या थे जिनके सबब से यह श्रावक जाति अतीत काल में उत्तम अवस्था पर थी ? श्रावकों के निज गुण ये हैं (१) अमूढता अर्थात् बेवकूफी का नहीं होना (२) ज्ञान अर्थात् गुण और दोषों को और वे किन २ कारणों से पैदा होते हैं अच्छी तरह जानना और गुण और गुणों के कारणों को ग्रहण करना दोष और दोषों के कारणों को छोड़ देना और यह बात शास्त्राभ्यास विद्याध्ययन से प्राप्त होती है अर्थात् श्रावक हमेशा विद्वान होना चाहिये [३] वात्सल्य अर्थात् तुरन्त की ब्याई गाय जिस

तरह पर अपने बच्चे से प्रीत करती है उसी प्रकार श्रावक भी को सर्व प्राणियोंसे मित्रता करना (४) दान सहित अनुकंपा अर्थात् दुखी जीवों का दुख देखकर अपना हृदय कोमल करना और उनका दुख दूर करने को उन्हें दान देना [५] निष्कपटता अर्थात दगा फरेब नहीं करना जो बात मन में धारी है वही बचन से कहना और जो बचन से कहा है वैसा कर दिखाना. सो हे भाईयो ये पांचों गुण श्रावकों के नष्ट होगये हैं इसी लिये उनहीं जाति और कुल की उन्नति नहीं है अब आपही अपने मन में बिचार देखो कि ये पांचों गुण आप लोगों में कितने २ विद्यमान हैं यदि निष्कपट होकर आप बिचारें तो आप को निश्चय हो जायगा कि आप लोग बिलकुल उल्टे मार्ग में प्रवर्ति रहे हैं— बजाय अमूढता के आप लोगों ने मूढता राक्षसी के फन्दे में अपने को फंसा दिया है कि जान बूझ कर भी निकम्मे काम करने लगजाते हो समझाने से भी नहीं मानते और अपने हठ को नहीं छोड़ते— ज्ञान की यह कैफियत होरही कि बहुत से भाई वर्णमाला तक भी नहीं जानते— वात्सल्यता की यह दुर्दशा है कि भाई भाई से लडता है और गालियां देता है बेटा बाप का सामना करता है—— अनुकंपा का पता भी नहीं है बेटा अपने बूढे रोगी मा बाप की खबर ही नहीं लेता तो अन्य जनों की क्या कथा बहुत से गरीब भाई बीमारहैं बहुतसे गरीबों के बालक खराब खस्ता फिर रहे हैं परन्तु उनकी रक्षा और शिक्षा को एक पैसा भी दान नहीं करेंगे आतिशबाजी या रंडियों के नाच में और मिठाई की ज्यौनार में सामर्थ से बाहर; हजारों रुपये उठा देंगे परोपकारी कार्य कभी नहीं करेंगे— निष्कपटता का लवलेश भी नहीं रहा यहां तक कि धर्म कार्यों में भी कपट करने लगे मुंह पर चिकनी चुपडी बातें बनाते हैं पीछे बुराई कर काट करते हैं जब भाईयो यह नौबत है तो जाति तथा धर्म की उन्नति कैसे होय ॥

श्रावकों के निज गुण घटने का एक मुख्य कारण अविद्या है और उसकी विष भरी शाखा अनेक कुरीतें हीनाचार बैर, विरोध, छल कपट, मिथ्या भाषण, आदिक दोष और धर्म नाशक विपरीतें श्रावक कुल में फैल गई हैं. इसी अविद्या जनित आज कल निज कुरीतों के बश होकर हमारे वे सब पिछले उत्तम गुण नष्ट होगये और दिन २ नष्ट होते जाते हैं यह जाति दिन २ अज्ञान निर्बल, निर्धन निरुत्साही तेज हीन होने लगी है कुपंथ और मिथ्या मार्ग में गमन करती जाती है अपने श्रावकाचार के उत्तमाचार को छोड हीनाचार करने लगे और २ बहुत सी कुरीतों के बश होकर अब हम

लोग पहले पूर्ण सुख छोड कर खाक छानते फिरते अति दुखी हैं ॥

चौपाई

दुष्ट कुरीति चली जबही से । प्रति दिन विपति बढ़ी तबही से ॥ अति दुख दायक कुरीति अनेका । प्रबल प्रचंड एक तें एका ॥

प्यारेलाल मास्टर मंत्री
श्री जैन पुरुषार्थ सभा
इटावह

जैन महाविद्यालयकी आवश्यकता

मास्टरप्यारेलाल मंत्रीकी अपील

अनुमान दस बारह वर्ष से जैन महाविद्यालय के नियत करने की धूम मच रही है कुछ दिन हुए अजमेर में जैन विद्यालय भंडार भी स्थापित हो गया है कै एक जैन पत्रों ने जैन विद्यालय के वास्ते बहुत जोर शोर मचाया अन्य २ भाईयों के लेख जो इस विषय में छपे उन से भी यह ज्ञान हुआ कि महा विद्यालय के नियत होने का अनुराग बहुत से भाईयों के हैं मेला प्रतिष्ठादि में भी इस के वास्ते बडे २ लम्बे चौडे व्याख्यान हुए परन्तु बडे शोक का विषय है कि इतना होने पर भी महा विद्यालय का कुछ प्रबन्ध न हुआ पूरे तौर पर महा विद्यालय के नियत करने के वास्ते अनुमान दस लाख १००००००) रुपये की आवश्यकता है पर हाल में एक दो लक्ष रुपये से ही कि जिस का ब्याज आठ ।।) सैकडे के हिसाब से हजार पांचसौ रुपया मासिक होता है महा विद्यालय के कार्य का प्रारम्भ हो सकता है परन्तु बडी कोशिश और परिश्रम से अभी तक १३२८।=)।।।)भंडार में महा सभा के एकत्रत हुआ है यह द्रव्य दस लक्ष या एक दो लक्ष की अपेक्षा किसी गणना में नहीं है ॥

अभी इसी भारत वर्ष में कई एक बडे २ धनाढ्य करोडपति व लक्षपि हैं जिन्होंने मेला प्रतिष्ठादि धर्म कार्यों में लाखों रुपये खर्च किये हैं यदि उन हमारे महोत्साही महाशयों में सर्वाग्रगण्य श्रीमान श्रेष्ठि शिरोमणि श्रीसेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० सभापति महा सभा मथुराजी (जिन का हृदय जैन जाति की हीन अवस्था के अवलोकन से गुप्त अश्रुपात द्वारा आर्द्र होगया है जिन्होंने अपनी निर्मल यश रूपी किरणों से समस्त जैनी भाईयों के हित साधनार्थ जैनोन्नति का मार्ग दिखा कर विद्योन्नति के लिये कि जो धर्मोन्नति व जातिउन्नतिका एक मूल कारण है तन मन धन से महा सभाका भार लिया है) के सदृश किंचित अपनी २ श्रद्धानुसार चार २

पांच२सात २ हजार रुपये प्रत्येक इक
हे करें तो सहज ही में लक्ष दो लक्ष
रुपये एकत्र हो जाना कुछ कठिन न-
हीं है और फिर विद्योन्नति की सीमा
भी असीमही है ॥

ऐ महाशयो ! कार्य प्रारम्भ के प
श्चात के यत्न तो हमारे देशोपकारी
परमोत्साही महाशय लाला गुलजारी
लाल सभासद आदि महासभा ने घर
पीछे १ एक रुपये की उघाई व कम
से कम एक पैसा की जीव के हिसाब
से गोलक में डालने आदि के किये हैं
जो पत्रों द्वारा प्रगट हो चुके हैं और
जिन की कार्रवाई भी शुरू हो गई हैं
यदि बाद में भी सर्व साधारण भाई-
यों द्वारा पूर्ण होती रहें तो आशा है
कि हमेशा के लिये उन्नति होती रहे
गी– यादि हमारे और २ परमोत्सा-
ही सेठ साहूकार उक्त उपाय में कटि
बद्ध न हुए तो महा विद्यालय का हो
ना जिस की जैन जाति में अति आव
श्यकता है एक दो साहब के आसरे
पर असंभव मालूम होता है क्योंकि य
ह महान धर्म कार्य कई एक महान
धनाढ्य पुरुषों के ही आश्रित है कि
सी एक के करने का नहीं है और ह
र एक धर्म कार्य को धनाढ्य महाश-
यों की देखा देखी ही सर्व साधारण
भी करने लगते हैं यह लोक की री-
ति भी है यदि यह बात सब को स्वी
कार है कि जैन जाति के वास्ते एक
महा विद्यालय की अत्यन्त आवश्य-
कता है इस जाति में बहुत से पंडित
तों की जरूरत है क्योंकि जैन धर्म में
धर्म का जानना सब से मुख्यबात है
परन्तु बडे शोक और पश्चाताप की
वार्ता है कि हजार मनुष्य पीछे एक
पंडित भी इस जाति में न निकलेगा
यदि सच पूछिये तो पंडितों का बि-
लकुल अभाव ही है ॥

इस बात को लिखते हुए क्या ह-
म को लज्जा न आवेगी और हृदय
में क्लेश न उत्पन्न होगा कि जैन जा-
ति अधिक धनवान धर्मानुरागी और
परस्पर प्रीति रखने वाली जगत वि-
ख्यात है जब हम यह देखते हैं कि अ
न्य जाति के लोग अपनी बिहतरी
और तरक्की के लिये ऐसे २ उपाय
कर रहे हैं कि जिन से आश्चर्य पैदा
होता हैं सब जाति के मनुष्यों ने अप
ने अलहदा २ महा विद्यालय बना
लिये हैं जिन में लौकिक और उन के
मत की विद्या उन के बालक पढते हैं
और हमारी जाति के बालक भी उन-
ही महा विद्यालयों की शरण लेते हैं
क्या हमारी जातिके धनाढ्य महाशयों
ने जो कि अकेले ही महा विद्यालय
खोल सकते हैं इस की आवश्यकता

मके प्रकार नहीं जाती हैं ? यदि जा न हे तो इस के दूर करने का उपा य अवश्य करते ॥

समाचार पत्रों के पढने से ज्ञात होता हैं कि बम्बई मे अमुक मुसलमान महाशय ने १ लाख रुपया मुसलमानों का मदर्सा बनाने को दिया फलां कायस्थ साहब ने इतने लाख रुपया इलाहाबाद में कायस्थ पाठशाला के वास्ते दिया लाहौर में आर्य समाज वालों ने एक २ पैसा मांग कर और एक २ चुटकी आटा इकठा करके आर्य महा विद्यालय बना लिया है अलीगढ में मान्यवर सर सैयद अहमद खां साहब सितारा हिंद ने अपने उद्योग और साहस से मुसलमानों के हितार्थ बडा कालिज नियत कर दिया है टाट साहब बम्बई के एक प्रसिद्ध पारसी ने पांच लाख रुपया रोकडी अपने पाससे देकर एक ट्रस्टफंड यानी भंडार नियत किया है जिस के ब्याज के रुपया से उन की जाति के भाईयों को जो इंगलिस्तान और अमरीका देश में विद्या पढने जाते हैं सहायता दी हैं ऐसे ही और २ महाशयों ने भी लक्षों रुपये विद्यादान में दिये हैं परन्तु बडे शोक और लज्जा की बात हैं कि जैनी धनाढ्य महाशयोंकी अपेक्षा ऐसे समाचार अभी तक सुनने में नहीं आये ॥

हमारे जैनी महाशय यह के [illegible] भूल होकर ऐसे उत्तम और [illegible] दायक धर्म के कामों में अपना [illegible] लगाना व्यर्थ समझते हैं क्योंकि वे [illegible] नते हैं कि जैन महा विद्यालय वा [illegible] न जाति की उन्नति में धन खर्च करने से उन की क्या नामवरी होती है [illegible] काम तो बहुत पुरुषों से मिल कर [illegible] लता है और नामवरी अलहदा काम करने से होती है सो भाईयों उन का यह ख्याल बिलकुल मिथ्या है- धर्मा नुरागी पुरुष को इस बातका कभी [illegible] ल नहीं होता कि धर्म की वृद्धि के का रण उसी के नाम में किये जावे और न उस को इस बात का द्वेष होता है कि धर्म की उन्नति केवल उसी के नाम से हो क्योंकि उस को अपने [illegible] वा अपने नाम से राग नहीं है बल्कि धर्म से राग है इसी हेतु से जो लोग इस बात का पक्ष या द्वेष करते हैं कि वो कारण जिन से धर्म की उन्नति होती है हमारे ही नाम में या हमारे ही नाम से हों उन को बिलकुल धर्म राग नहीं है और उन को कदापि पुण्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है ॥

यह वावेला तो हमेशाह हुआ करती है कि जैन जाति की उन्नति का सबतो यह कहने वाले बन गये कर वाला कौन रहा सब धर्म संबन्धी [illegible]

हान कार्य सर्व सम्मति और बहुत पुरुषों से ही मिल कर चलते हैं इस लिये भाईयों जैन धर्म की रक्षा करने वालों ! किंचित ध्यान दो और विचारो कि इस समय अन्य मत वाले जैसी उन्नति कर रहे हैं उसी प्रकार तुम भी इस धर्म कार्य के करनेसे मुख न मोडो

आज कल हमारे धनाढ्य भाई विवाह शादी और मेला प्रतिष्ठादि में लाखों रुपया खर्च कर देते हैं परन्तु जैन कालिज के वास्ते जिस की कि इस समय अत्यन्त आवश्यकता है और जिस के बिना विद्योन्नति हो कर धर्मोन्नति जात्योन्नति कदापि नहीं हो सक्ती है अपनी शक्ती अनुसार खर्च नहीं करते हैं ॥

हे भाईयो ! धर्म के सब अंगों की एकसी बराबर संभाल करने से धर्म स्थिर रहसक्ता है इस लिये उन सब में बराबर धन लगाना चाहिये. विशेष करके जो अंग बिगडरहे हैं और सिथिल होगये हैं उन में ज्यादा धन समय और ध्यान लगाना चाहिये जिससे कि हमारा धर्म सर्वांग सुन्दर और पुष्ट बनारहे और सर्व कार्य यथावत ठीक होतेरहें—हे बिद्वज्जनहो ! हमारे एक शरीर और हाथ, पैर, आंख, नाक, मुंह, जीभ, सिर आदि उसी शरीर के अंग हैं यदि हम अपने शरीर को पुष्ट बलवान और सुन्दर रखना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि शरीरके सब अंगों को समान जान उन सब को बराबर एकसी संभाल रक्खें और किसी अंग को भी कमजोर बुरा नहीं होनेदें परन्तु यदि हम एक अंग की संभाल तो ज्यादा करें और दूसरों की कुछ परवाह नहीं करें तो दूसरे निर्बल होजांयगे तो उन के कारण शरीर के और अंग सिथिल होने लगजांयगे और इस का नतीजा यह होयगा कि कुछ काल तक वह शरीर कुरूप असुहावना और नष्ट होजायगा और अंगों की शोभा उस समय कुछ कार्यकारी नहीं होगी जैसे किसी सुन्दर युवा पुरुष की आंखें दुखतीहों और वह मूर्ख आखों का इलाज न करै किंतु अपने गोरे मुंह और हाथों को खूब उबटना लगा लगाकर धोवे तो प्रमाद के कारण उस का नेत्र रोग बढजायगा आखें फूटजावैंगी वह अंधा होजावेगा तब उस का हाथ मुंह का धोना किस काम आवेगा और आंख बिना हाथ मुंह की सुन्दरता का हेमे देखेगा यही हाल हमारे जैनी भाईयों का होरहा है कि वे सब धर्म के एक अंग की शोभा करने की दिन रात चेष्टा कर रहे हैं (नामवरी के हेतु केवल मेला प्रतिष्ठादि मेंही धन लगाते हैं) और उसी एक अंग की शोभा बढाने में अपना सब धन अपना समय व्यय करते हैं परन्तु दूसरे अंग जो (विद्यादि की उन्नति) इस समय सिथिल और रोग ग्रस्त जरजरे हो-

रहे हैं जिन के कारण यह धर्म नित प्रति दिन क्षीण और दुर्बल होता जाता है उन अंगों का इलाज कर उन्हें पुष्ट और बलवान करने का उपाय नहीं करते. देखो भाईयों यदि एक मेले में एक लाख रुपया मेला कराने वाला भाई लगाता है तो यकीन है कि अनुमान एक लाख रुपया जात्रियों के आने जाने में भी खर्च पड़ता होगा यदि यह दोनों लाख रुपये एकहीवार जैन महा विद्यालय के खोलने में खर्च किये जावें तो किस से जैनियों का ज्यादा लाभ होगा और कबतक नाम रहसक्ता है ? इस लेख से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि कोई सेठ साहूकार मेला प्रतिष्टा आदि न करावे मेरा मतलब तो धर्म के सर्व अंगों को संभाल का है जिस अंग के नष्ट होने से और दूसरे सब अंग नष्टहों पहले उसी की संभाल करना चाहिये ॥

देखिये चौथे काल के पदार्थ आज दिन सिवाय एक सरस्वती के कुछ भी दृष्टि नहीं आते इस से यह बात साबित होगई कि विद्या हमेशा स्थिर रहती है और शेष पदार्थ नष्ट होजाते हैं सो जैन मत से भी यह बात साबित है कि जीव अनन्त पुद्गाल पर्याय धारण करता हे और सब पर्याय नष्ट होजाती है परन्तु जीव का निज गुण ज्ञान नष्ट नहीं होता है ॥

जैसी धर्म की प्रभावना विद्या की उन्नति से होती है वैसी किसी से नहीं होती क्योंकि रत्नकरंड श्रावकाचार में कहा है कि "जिस तरह बने उसी तरह अज्ञान रूपी अन्धकार को विद्या रूपी सूर्य के प्रकाश से दूर करके जैन मत का माहात्म्य प्रगट कर देना सो प्रभावना है." और हमारे जैन मत में यह भी लिखा है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावानुसार जैसा योग्य हो वैसा काम करना चाहिये सो वर्त्तमान समय और क्षेत्र की मुख्यता करिकैं विचार किया जाय तो जितनी आवश्यकता आज कल हम को विद्योन्नति ह की उतनी किसी वस्तु की नहीं है सो विद्योन्नति पाठशालाओं के द्वारा होती है और पाठशाला महा विद्यालय के आश्रित है पस महा विद्यालय का खोलना अत्यन्त आवश्यक है ॥

इस लिये सर्व श्रीमान सेठ साहूकारों और विद्योत्साही महाशयों से सविनय प्रार्थना है कि वे महा विद्यालय के खोलने का शीघ्रही उद्योग करें और मनुष्य जन्म का लाभ लेकर अपने जैनीपने को सार्थक करें और प्रथम हर प्रकार से धन एकत्र करने का उपाय करें और यह भी खयाल रक्खे कि जैनियों के अहोभाग्य से ऐसे जाति शिरोमणि राज्यमान सभापति मिले हैं यदि इन के राज्य में भी हम कुछ न करेंगे तो याद रखना कि ऐसा अवसर फिर कभी न मिलेगा तुम्हारे से कुछ नहीं

होसका है तो गोलकें मंदिरों में रखकर पैसा २ ही डालो और घर पीछे एक १ रुपयाही एकत्र करो यदि कहो कि तुमने क्या किया सो भाई साहब हमने तो घर पीछे का रुपया भी एकत्र किया है और इटावह के चारों मंदिरों में चार गोलकें भी रखदी हैं आगे जो हुकम होगा वह भी करेंगे ॥

प्यारेलाल मास्टर
मंत्री जैन पुरुषार्थ सभा
इटावह

समाचारों का गुच्छा

बंगवासी से मालूम हुआ के जोधपुर के ओसवाल जैनी भाईयों ने पचास हजार रुपया एकत्र करके एक हाई स्कूल खोलने का प्रबन्ध किया है फिर वोही उक्त अखबार बड़ी भारी खुशी के समाचार सुनाता है कि श्री सम्मेद शिखर के ऊपर जो अत्याचारी अंगरेजों ने सूवरों को पाल कर और मार कर चर्बी निकालने का कारखाना खोला था और उस मुकद्मे को जैनी जीत गये परन्तु साहब लोगोंने उसकी निगरानी दोबारा कराई थी उसमें भी जैनियोंही की विजय हुई है इस मामले में कलकत्ते के जोहरी ओसवाल भाईयों का कार्य प्रशंसनीय है ॥

उर्दू का पैसा अखबार लाहोर २२ अगस्त को लिखता है के श्रीमान् साधू आत्मारामजी के परलोक हो जाने पर उनकी यादगारी अर्थात स्मरण चिन्ह के वास्ते ओसवाल भाई विद्या फैलाने के वास्ते बहुत श्रमकर रहे हैं भावनगर में महाराज के नाम से लायब्रेरी खुली है बड़ौदा में दस हजार रुपया जैन पाठशाला जारी करने के वास्ते एकत्र हुआ है मुम्बै में लाला पन्नालाल ने दो लाख रुपये से कालिज खोलने का प्रबन्ध किया है और इसी प्रकार बहुत से स्कूल तथा पाठशालाएं जारी होनेका प्रबन्ध होरहा है उक्त महाराज बड़े विद्वान पंडित थे आप के ४० शिष्य इस वक्त मौजूद है— आपने ढूंढकमत की बहुत कुछ तरमीम करके साफ और उमदा मत स्थापित करदिया है आप अमरीका की चिगाकू प्रदर्शनी के सभासद थे— आपने बहुत से ग्रन्थ बनाये हैं हाल में न्याय का एक ग्रन्थ आप का बनाया हुआ मुम्बै में छप रहा है ॥

नोट संपादक

हमको इन समाचारों के सुन्ने से बड़ी खुशी होती है परन्तु अपनी जात के भाईयों की हालत देखकर अफसोस होता है कि आठ सात वर्ष से कालिज २ पुकार रहे हैं और अभी तक एक स्कूल भी नहीं खोल सके—यहां तक कि पैसा २ भीख मांगने का तरीका निकाला तो भी तो पल्ले में भीख नहीं पड़ती यदि पैसा पैसा ही हरसाल एक २ भाई देवे तब भी तो दस लाख भाईयों के ११११९) हरसाल होते हैं ॥

देखें दिगम्बर जैनी भाईयों के कब शुभ दिन आते हैं ॥

महा विद्यालय का रुपया इस प्रकार और आया

२) बमद मुतफर्रिक ला० जगन्नाथ जी जैनी कस्बा जसपुर जिला नैनीताल

४=) शाहर जिला बुलन्दशहर से इस प्रकार आये।

१) ब हिसाब फी घर १) रुपया

≡) ब हिसाब फी जीव एक पैसा

१) ला० रामसरूपजी ने लड़का पैदा होने की खुशी में दिया

।) बमद मुतफर्रिक ला० बिहारीलालजी साकिन नजफगढ जिला देहली ने लड़के के गोना में महा विद्यालय की दांये

१०) बमद फी घर १) रुपया सकल पंच जैनी सरावगीयान

इटावा

१६।≡)

॥ विद्योन्नति का सहज उपाय ॥

श्री युत मंत्रिवर्य लाला रतनलालजी जैनेन्द्र— कृपा करके निम्न लिखित लेख को जरूर और शीघ्र ही जैन गजट में स्थान दान दिया कर कृतार्थ कीजिये ।

हे विद्योत्साही महाशय वरो— आज कल जो देखा जाता है तो बजरिये जैन गजटादि जैन पत्रों के मालूम होता है कि चारों तर्फों से यह ही आवेला मच रहा है कि विद्योन्नति के वास्ते जैन का लेज का खुलना निहायत जरूरी अम्र है और हरेक सम्वाद दाता भी विद्योन्नति होने का मुख्य वसीला केवल जैन कालिज का होनाही जाहिर करते हैं जगह ब जगह में इस ही के प्रबन्ध के वास्ते रुपैया के इकट्ठा करने की तदबीरें बड़े अर्से से सोच रहे हैं— कई महाशय तो हर मंदिरजी व सभा में गोलख रखने की अपनी राय जाहिर करते हैं— कई कहते हैं कि आमदनी पर कुछ टैक्स लगादीया जावे —कई जन्म मरण परणोत्सव में से लेने की तदबीर बताते हैं—कई महाशय भाद्र पद में प्रत्येक जैनी जीव से पैसा २ उघाना चहाते हैं· कई मोटे २ महाशयों पर जियादा कर लगाना चहाते हैं— कई मेला प्रतिष्ठादि को बन्द करने की सम्मति दे रहे हैं— कई मन्दिरों के भन्डारों को तोड़ना चहाते हैं ॥

गरज यह कि हर एक महाशय जैन कालेज के वास्ते अपनी तबीयत के अनुसार फिकर कर रहे हैं हां ठीक ही कर रहे हैं· यह तदबीरें तो जरूर करना ही चाहिये— मगर जरा इस बात को भी सोचिये तो सही कि इन तदबीरों को होते हुये कितना अर्सा होगया और अब कितने अर्से तक यह तदबीरें की जायंगी कि जैन कालिज खुलेगा इस बात को कोई भी नहीं सोचता न सुझाता सिर्फ जैन कालेज

र किये परीक्षकों के द्वारा बजरिये प्रश्न पत्रों के हुवा करैं— और नीचे की श्रेणीयों की परीक्षा का इन्तजाम हर पाठशाला के मुन्तजिम के अख्ती यार में रहे— जिन श्रेणीयों के विद्यार्थीयों की परीक्षा यूनीवरसीटी में हो उन की पढाई निम्न लिखित विषयों में से होनी चाहिये ॥

धर्म शास्त्र— व्याकरण— न्याय— काव्य— गणित— और यूनीवर सीटी में पांच निम्न लिखित दर्जे रक्खें जावें (१) प्रवेशिका— (२) उपाध्याय— (३) पंडित— (४) शास्त्री— (५) आचार्य— और अगर मुनासिब समझी जावें तो इस में यह भी कैद रखदी जावें कि प्रवेशिका की परीक्षा दीये बगैर उपाध्याय की परीक्षा नहीं देसके और उपाध्याय के बगैर पंडित परीक्षा न देसके इस ही प्रकार उपरोक्त परीक्षाओं का इन्तजाम होना चाहिये ॥

३ तीसरे विद्यार्थीयों का उत्साह पढानें के लिये एक यूनीवरसीटी फंड की जरूरत होगी और इसफंड के लिये वो रुपया जो जैन कालेज फंड के नाम से इकट्ठा है उस ही का नाम अब यूनीवरसीटी फंड रक्खा जावैं— और संपादकान महा सभा व मुन्तजिमान यूनीवरसीटी व मुन्तजिमान पाठशालान इस फंड की तरक्की करने पर पूरी २ तवज्जोह रक्खें और जो इन रुपयों का सूद हो उस में से पास शुदा विद्यार्थीयों को हस्ब लियाकत वजीफा दीया जावें— मुकर्रर किये हुये विषयों में से विद्यार्थी को हर एक विषय में परीक्षा देने का अख्तीयार रहै और उस विषय में पास होने पर सार्टीफीकेट भी देदीया जावे अगर वजीफेका मुश्तहक वह ही विद्यार्थी समझा जावे जो हर एक परीक्षा के मुकर्रर किये हुये तमाम विषयों में पास हो विलफल जो—३०००० तीस हजार रुपया कालिज फंड के यूनीवर सीटी फंड में गरदाने जांयगे— उन का साहूकारी सूद ॥, आठ आने सैंकडे के हिसाब से १५०, रुपया माहवारी होते हैं उन का हस्बजैल वजीफे वगैरह में खर्च किया जावें ॥

प्रवेशिका में पांच वजीफे रक्खें जावें— प्रथम को ७, दूसरे को ५, तीसरे को ४, चोथे को ३, पांचवें को २, इस प्रकार प्रवेशिका परीक्षा में पास शुदा प्रथम पांच विद्यार्थीयों को २१, रुपये वजीफा दीया जावे ॥

उपाध्याय में चार वजीफे रक्खे जावे प्रथम को ८, दूसरे को ६, तीसरे को ५, और चोथे को ४, इस प्रकार इस परीक्षा में प्रथम चार विद्यार्थी

यों को २१) रुपया वजीफा दिया जावे ॥

पंडित परीक्षा में भी चार वजीफे ही रक्खे जावें- प्रथम को १०) दूसरे को ८) तीसरे को ६, चौथे को ५, इस प्रकार चार विद्यार्थियों को २९) रुपया वजीफा दिया जावे ॥

शास्त्री परीक्षा में तीन वजीफे रक्खे जावें-- प्रथमको १२, दूसरे को १०, तीसरे को ७, इस प्रकार प्रथम तीन पास शुदा विद्यार्थियों को २९, रुपया दीया जावे आचार्य परीक्षा के भी तीन वजीफे ही रक्खे जावे प्रथम को १५, दूसरे को १२, तीसरे ८, इस प्रकार प्रथम तीन पास शुदा को ३५, रुपया दिया जावे इस प्रकार पांचों परीक्षाओं में १३७,) तो विद्यार्थियों को वजीफा दिया जावे बाकी बचे १३, रुपये मायर खर्च में सर्फ कीये जावें-- इस प्रकार होने से विद्यार्थियों को जैन विद्योन्नति करने में बहुत कुछ उत्साह बढावेगा ॥

४ चतुर्थ- पास शुदा विद्यार्थियों के नाम महा सभा एक नकशेमें दर्ज रक्खे चूंकि अब भी जैनियों में सैकडों ऐसे धनाढ्य महाशय हैं कि जिनको कई पढे लिखे होशियार आदमी की जरूरत रहती है-- इसलिये यह फर्ज उन महाशयों का रहेगा-- कि जिनको गुमाशता वगैरहके रखने की जरूरत होवेतो महा सभा के द्वारा इनही पास शुदा विद्यार्थियों को बुलाकर नौकर रक्खें और हाल में करीब ५० पाठशालाओं के मौजूद हैं और जा वजा होती जाती है-- उनके मुन्तजिमान का भी यह ही फर्ज हो कि वे भी वर वक्त जरूरत के पाठशाला वगैरह में महा सभा के द्वारा इनही पास शुदा विद्यार्थियों को बुलाकर नौकर रक्खें ॥

मेरी राय में अगर इस प्रकार बंदोवस्त कीया जावे तो- विद्योन्नति- जात्योन्नति कुलोन्नति- धर्मोन्नति- बहुत जल्द होगी- और इन ३००००) तीस हजार रुपयों का सूद जो किसी काम में नहीं लीया जाता है काम में आजावेगा और असल रुपया वदस्तूर बना रहेगा हे महाशय वरो मेरे इस लेख से यह मनशाह नहीं है कि जैन कालिज न खोला जाय बल्कि यह खयाल है कि जैन कालिज के खुलने में एक असी दराज वीचमें मालूम होता है और जैनी भाई बहुत जल्द उन्नति होने के मुस्ताहक हैं इस लिये अगर मुनासिब समझें तो जो रुपया कि जमा है और होता जाता है उस के सूद को उपरोक्त तरीके में सर्फ कीया जाय तो बहतर है— और जैन कालिज कायम करने में जैसी कोशिश तन मन ध-

न से हो रही है करते रहैं इस के उत्साह को कम न करें मेरी तो यहीराय है आगे होगा वह ही जो होनहार है—श्लोक—यद्भाविन तद्भावि भावि चेन्नतदन्यथा ॥ इति चिन्ता विषघ्नं अगद: कथन पीयते ॥

जैनी भाईयोंका शुभचिन्तक
चांदूलाल ढोलिया
संपादक वाग्विलाशिनी सभाव
हेडलकनर्क इमारत डीपार्ट मेन्ट
जयपुर

सम्माति

जो कुछ लाला चांदूलालाजी सम्पादक वाग्विलासनी सभा जैपुर निस्वत इन्तजाम मदद पाठशालाओं के जो इस वक्त मौजूद हैं या आइन्दह जारी हों तहरीर फरमाते हैं वह बहुत ठीक है लेकिन महा सभा को इस वक्त तक यह बात साफ तौर पर जाहर नहीं हुई कि वह तीस हजार रु० किस किस भाई के पास और कहां कहां जमा है और किस तरह पर वह रुपया महा सभा के हाथ में आसक्ता है और जब तक वो रुपया महा सभा के हाथ में न आवे तब तक महा सभा उक्त महाशय की राय के मुताविक क्योंकर काररवाई कर सक्ती है इस वास्ते मेरी यह राय है कि जिन २ महाशयों के पास रुपया इस फंडका जमा है वो महा सभा की सुपुरद् करेंतो उक्त महाशय की राय के मुताविक काररवाई करने की तजवीज की जावे ॥

जैनियों का दास
वकील मूलचन्द मंत्री
महा सभा मथुरा

समाचारों का गुच्छा

मंसूरपुर—सकल पंच लिखते हैं कि पंडित कल्यानरायजी के उपदेश से वहांपर सभा नियत होगई ॥

इटावा जि० सागर—लाला गोरेलालजी लिखते हैं कि यहां के भाईयों में फूट ज्यादा है इस कारण कोई धर्म कार्य नहीं होसक्ता है बल्कि धर्म की न्यूनता अधिक दीख पड़ती है ॥

सम्पादक—ऐसे समाचार सुनकर हमारा कलेजा फटता है कि हाय २ जैनियों में फूट होवे क्या यह हमारी जाति की बदनामी नहीं है ? अवश्य है क्योंकि हमारी जाति ऐक्यता के वास्ते प्रसिद्ध है—भाईयों फूट को छोडदो ॥

बिलहरा जि० बारहबांकी—लाला मथूदयालजी की चिठ्ठी से हम को मालूमहुआ है कि इस नग्र के बहुत से भाईयों पर मंदिरजी का रुपया बाकी है सो नहीं देते हैं यदि उन का लिखना सत्य है तो जिन २ भाईयों के पास मन्दिरजी का रुपया बाकी है वोह शीघ्र देदेवें क्योंकि मन्दिर का द्रव्य रखने वाले का यह लोक और परलोक दोनों विगड़ते हैं इस लोक मे निन्दा होती है और परलोक में नर्कादिक तिर्यंच

गति को प्राप्त होता है अभी हम नाम प्रकाशित करना नहीं चाहते हैं क्योंकि हमारे भाई इसी इशारे को समझकर मंदिर जी का रुपया शीघ्र देकर हम को सूचित करदेवेंगे और यदि इस इशारे को नहीं समझेंगे तो दूसरे अंक में उनका नाम प्रकाशित करदिया जावेगा जिस से सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैनियों में वे निन्दा के पात्र होवेंगे आशा है मन्दिरजी का रुपया शीघ्र देदेवेंगे ॥

नकूड़ जि० सहारनपुर—लाला समकतलाल सैक्रेटरी लिखते हैं कि मिती श्रावण सुदी ७ की सभा में जैन गजट पढकर सुनाया गया जिस में वेश्यानृत्य की बुराई में एक मजमून था उस को सुनकर नीचे लिखे मनुष्यों ने वेश्यानृत्य देखने का त्याग किया है और वेशा सेवन का भी त्याग किया १ ला० मित्तरसेन २ ला० निहाल चन्द ३ नागरमल ४ गणेशीलाल ५ सुदरसनलाल ६ केवलराम ७ दीवानसिंह ८ रतनलाल आढती ९ ज्ञानचन्द १० खूबचन्द ११ दयाचन्द १२ खुशीराम १३ समकतलाल मंत्री १४ प्रभूलाल इन सम्पूर्ण भाईयों ने जन्म पर्यन्त त्याग किया और मोहब्बतपुर के मंदिरजी के वास्ते अनुमान ६०) रुपये चन्दा लिखागया है वह वसूल करके बहुत शीघ्र भेजा जावेगा॥ सम्पादक— भाईयों यह वही नकूड़है जहां के भाईयों ने सब से पहले फिजूल खर्ची आदि का त्याग करके अन्य भाईयों के लिये अग्रणी बने अब इसी तरह वेश्यानृत्य के त्यागी होकर दूसरों के लिये नमूना बने हैं हम आशा करते हैं कि अन्य ग्रामों के भाई भी वेश्यानृत्य के त्यागी होकर हम को सूचित करेंगे ॥

कताल जिला मुजफ्फरनगर—यहां के पंचों की चिठी हमारे पास आई जिस के जिस के पढने से मालूम हुआ है कि यहां के किसी भाईपर कुछ रुपया मन्दिरजी का जमा है वह भाई देने से इनकार करते हैं और वह रुपया धर्म कार्य के वास्ते मांगा जाता है यदि यह बात सत्य है तो उन भाई साहब से हमारी प्रार्थना है कि मन्दिरजी का जो कुछ रुपया उन के पास जमा है वह सर्व देदेवें और हम को पत्र-द्वारा सूचित करें ताकि उन की प्रशंसा जैन गजट द्वारा प्रकाश की जावे मन्दिर जी का रुपया रखने वाले का इस लोक में अजस होता है और परलोक में नर्कादिक की जोनें भुगतनी पडती हैं हमारे इस लेखपर ध्यान कीजियेगा और मन्दिर जी का रुपया शीघ्र देदीजियेगा ॥

मोहब्बतपुर जि० अलीगढ—से सकल पंच लिखते हैं कि लाला गिरनारीलालजी टीहरी निवासी ने १०) रु० मरम्मत के वास्ते और ३ शास्त्रजी १ रत्नकरण्ड श्रावकाचार २ जम्बुस्वामी चरित्र ३ चौबीसों महाराज का पाठ यह पुस्तकें भेजी हैं और

लिखा है कि जिस वक्त मन्दिरजी तयार होजावेगा तब और शास्त्र मन्दिरजी के वास्ते भेजेंगे और पूजन के बर्तन वगैरः भेजदिये जावेंगे ॥

सम्पादक—धन्य है उक्त लालाजी साहब को कि धर्म कार्य में जिन का ऐसा अनुराग है ॥

कठूमर राज्य जैपुर—उमेदीलाल विद्यार्थी ने लिखा है कि यहां के सम्पूर्ण भाईयों ने फिजूल खर्ची का बन्दोबस्त किया यदि पूरे तौर से यहां के भाई ध्यान देवें तो सम्पूर्ण फिजूल खर्चियां दूर होजावेगी॥

छपरौली जिला मेरठ—से सकल पंच लिखते हैं कि हमारे यहां आप का जैन गजट आने से बडा भारी फायदा हुआ नित्यप्रति शास्त्रजी होने लगा है जिस में ७० भाईयों के अनुमान होते हैं जैन गजट के लेख अति उत्तम होते हैं ॥

तीतरोन—लाला उमरावसिंहजी लिखते हैं यहां के भाईयों के रूयाल जैन धर्म की और होते जाते हैं परन्तु हमारे यहां के जैनी भाई एक बात से उन आर्य भाईयों को चिड़ाते हैं कि तुम आर्य समाज में होगयेहो उन को ऐसा न कहना चाहिये—यहांपर कोई बुद्धिवान उपदेशक आना चाहिये ॥

मुसावर राज अलवर—ला० चन्द्र लालजी लिखते हैं कि यहां पर सभा व पाठशाला स्थापित हो गई हैं जिस में ५ ६, बालक भी पढते हैं—१ मंदिर प्राचीन है और ८ तथा ९ घर जैनी भाईयों के हैं और जैन गजट आप का आता है सो शास्त्र सभा में पढ कर सुनाया जाता है सर्व प्रकार धर्म की वृद्धि है ॥

अलावडा राज अलवर—से लाला नगचन्दजी लिखते हैं कि हम को अब इस जैन गजट द्वारा मालूम होता है कि बहुत सी जगह २ जगहों में जैनी भाईयों के पास श्री मंदिरजी का रुपया जमा है और वोह रुपया नहीं देते हैं सो ऐसा उन भाईयों को नहीं चाहिये कि मंदिरजी का रुपया अपने पास रख लेवें और मंदिरजी को न देवें अब उन को चाहिये कि रुपया मंदिरजी का देदेवें और जो नहीं देवें तो सम्पादकजी से हमारी प्रार्थना है कि अबके गजट में उन भाईयों का नाम भी प्रकाशित कर देवें जिससे हम को ज्ञात हो जावे कि कौन २ और कितने महाशय ऐसे हैं ॥

सम्पादक—हम उन भाईयों से प्रार्थना करते है जिनके पास मंदिरजी का रुपया है वह शीघ्र देदेवें और यदि वे महाशय हमारे लेखों पर ध्यान देवेंगे तो उनके नाम भी जैन गजट द्वारा प्रकाशित किये जावेंगे क्योंकि हमारे पास अनेक चिठ्ठियां आई हैं कि उन महाशयों का नाम प्रगट करिये जिन २ के पास मंदिरजी का रुपया है—इसलिये हम फिर भी प्रार्थना करते हैं कि उन भाईयों को चा-

दिये जिनके पास रुपया है शीघ्र देकर हम को सूचित करदेवें ॥

किलथार— लाला शंकरलालजी दूंगा लिखते हैं हमारे यहां सभा नियत होगई है महीने में चार दफै सभा हुआ करैगी और पाठशाला भी स्थापित होगई है कुरीति और मिथ्यात्व वगैरः का करना बन्द होगया है ॥

स्योहारा जि० बिजनौर— लाला सिताबरामजी धनकुमारजी लिखते हैं मिती श्रावण सुदी १५ को सभा हुई २० भाई उपस्थित थे जैन गजट जैन हितोपदेशक जैन प्रभाकर जैन समाचार पत्र पढ़कर सुनाये गये सुनकर सब भाई बहुत प्रसन्न हुये और महा सभा को धन्यवाद दिया गया जिसकी ओर से यह गजट निकलता है— धन्य है महा सभा को ॥

धामपुर—सकल जैनी पंच लिखते हैं यहां पर महीने में दो दफै सभा हुआ करती है मिती भादों बदी ३ को पं० गनेशीलालजी निहटौर वाले यहां पधारे उन्होंने उपदेश दिया उस समय १ पटवा जिस का नाम खमानी है उसके चित्त में जैन धर्म की ऐसी प्रीत पैदा हुई कि उस ने अपने यहां गोलक रखना स्वीकार किया और एक पैसा पैंठ के हिसाब से इस में डाला करूंगा महीने में ८ पैंठ होती हैं और बहुत से भाईयों ने गोलक में पैसे डालना स्वीकार किया है—

सम्पादक क्या अन्य जातिके मनुष्यों को जैन महा विद्यालय की सहायता के वास्ते रुपया एकत्र करने का ऐसा प्रेम होवे कि अपने घरों में गोलक रक्खें और जैनियों को ईर्षा होवे वे मंदिरों में भी नरक्खें ? अवश्य रक्खेंगे ॥

अटेर— से लाला भिखारीदासजी सभापति लिखते हैं कि यहां पर सभा नियत होगई है और पाठशाला भी है जिसमें २० व २५ लड़के पढ़ते हैं पढाई भाषा की है और यह सभा लाला सालिगराम जी उपमंत्री जैन पाठशाला प्रयाग निवासी की स्थापित कराई हुई है— अब यहां पर कोई उपदेशक आना चाहिये ॥

जबलपुर— से लाला सुखलालमलजी ठेकेदार लिखते हैं कि यहां के भाइयों में धर्म की रुचि बिलकुल नहीं है नतो यहां पर सभा है न पाठशाला है और बहुत से भाई यहां पर संघई आदिक की पदवी धारक हैं परन्तु कुछ बन्दोबस्त नहीं करते हैं- कोई उपदेशक यहां आना चाहिये ॥

रिपोर्ट हकीम कल्याणराय उपदेषक

ता० १७ अगस्त को देवबन्द से चलकर सराय रसूलपुर आया इतवार का दिन था सभा हुई धर्म के और

घन को मुकद्दम करने के विषय में व्याख्यान दिया—यहांपर गोलक रखना स्वीकार किया गया फिर मंसूरपुर गया शास्त्र सभा में व्याख्यान हुआ गोलक रखने के फायदे बताये गये—गोलक रखना यहां भी स्वीकार किया गया फिर मुजफ्फरनगर आया ता० १८ को देवबन्द पहुंचा और सराय की बाबत (जहां प्रतिमाजी चोरी गई हैं) बाबू सूर्यभानजी साहब से सलाह की तो बाबू साहब ने सलाहदी कि हकीम उग्रसेनजी को सिरसावे से लिवा आओ तब मैं सिरसावै गया परन्तु उक्त हकीमजी साहब का किसी आवश्यक एक बसात मेरे साथ आना नहीं हुआ फिर तारीख १९ अगस्त को सिसावे से बिहारी पहुंचा और रात्रि के समय सभा हुई— यहां भी गोलक रखना सर्व भाईयों ने स्वीकार किया फिर ता० २० अगस्त को सराय आया लाला नामरमल के मकान पर ठहरा— उक्त लाला साहब किसी मुकद्दमें में मुजफ्फरनगर गये थे—उन के बगैर किसी कार्य की सिद्धि न होती देख कर दस दिन के वास्ते पंचायत करना टाल दिया फिर मुकाम नावले आया यहाँ पर मंदिरजी नहीं है जैनी भाईयों के पांच तथा ६ घर हैं ता० २० को लाला बनवारी लाल व लाला बिहारी लालजी की सहाय से सभा हुई जिस में १८ मनुष्य जैनी थे और २० मनुष्य अन्यमती थे चार प्रकारके दानका बरनन किया— फिर जैन गजट की प्रशंसा की सभायें जैन गजट मंगाना मंजूर किया गया और सभा स्थापित हो गई— और १) रुपया कल्याण औषधालय देवबन्द को दिया धन्य है यहां के भाईयों को कि जिन्होंने उक्त औषधालय की सहायता की है आशा है कि अन्य जगहों के भाई भी औषधालय की सहायता करेंगे ता० २१ अगस्त को फिर सभा हुई और कुछ व्याख्यान कहा जिस में अज्ञान के दूषण दिखाये तो सर्व भाईयों के दिल में शास्त्रजी सुनने का उत्साह हुआ परन्तु यहां पर पंडित कोई नहीं है— ता० २२ अगस्त को नावले से चल कर सिकंदरपुर आया दो पहर को शास्त्रजी की सभा में उपदेश दिया गया यहां भी सर्व भाईयों ने गोलक रखना स्वीकार किया ॥

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य पेशगी का डाकव्यय सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश ॥
करै अविद्या व्यर्थ व्यय, आदिक तम को नाश ॥

हरअंगरेजी महीनेकी १—८—१६—२४ ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर मे
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० २४ सितम्बर .... सन् १८९६ } अङ्क ४४

बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

सच्चा उपकारी

"एक प्राणी का संसार रूपी समुद्र में डूबते वक्त का रोना और उसी वक्त जैन गजट का उसको बचाना,,

हाय हाय मैं डूबारे ! कोई आनारे ! बचाओ बचाओ नहीं तो मैं बेमौत मरा हायरे कोई देखो तो सही कि क्रोध मान माया लोभ चारों बैरियों ने मुझको इस अथाह समुद्र में डुबाने की कैसी कैसी कोशिशें की हैं सप्त बिशन रूपी विकटर मछलियां (जूआ खेलना, मांस खाना शराब व मदयुक्त चीज पीना, बेश्या प्रसंग, शिकार खेलना, चोरी करना, और पर स्त्री सेवना) किस बेग से मेरे हाथ पैरों को पानीके अन्दर खींचे लिये जाती है हिंसा रूपी मगर मच्छ तो मेरा भक्षण ही किये लेता है । हाय मैं क्या क्या करूं इस मगर मच्छ के कच्चे बच्चे असत्य [झूठ] अदत्ता दान (बिना दीहुई चीज लेना] मैथुन, और परिग्रह भी मेरा पीछा नहीं छोडते फिजूल खर्ची रूपी भयानक लहर मेरे डुबाने के लिये अपना पूरा २ बल दिखा रही है। हाय २ अब मेरा कौन सहाई होगा सच है यह सब कठोर २ शत्रु अज्ञान (अविद्या) राजा के भेज हुए हैं ताकि वे मुझ को लेजाकर नर्क पुरी का बस्ती बढावें और महा निन्दनीक२ घोरा नार दुःखके अन्दर डालदेवें॥

[illegible] इस समुद्र में क्या कोई भी नाव या [illegible] नहीं है जिसे मैं पकडूं और क्या कोई धर्म खेवटिया नहीं है हाय २ कोई [illegible] सुनता । फिर वह प्राणी इतने जोर से रोने लगा कि उसका शब्द किनारे तक पहुंच गया— उसी जगह पर राजा विद्या व ज्ञान का परम आज्ञाकारी जैन गजट नाम हल्कारा सैर कर रहा था उसके कान में उसके रोने की भनक पडी और वह फिर अच्छी तरह सुनने लगा तब फिर मालूम भया कि इस प्राणी को ज्ञान के परम शत्रु अज्ञान के सिपाही नर्क पुरी में लेजा रहे हैं और वह मनुष्य "बचाओ २" की आवाज दे रहा है । यह हाल उसका देखकर दयालु जैन गजट ने पुकार कर कहा कि धीरज धर मैं अन्दर तेरे लिये सर्वोत्तम निर्भय जैन धर्म रूपी नाव भेजता हूं उस पर तू जल्दी से पकड के चढ जाना तब यह तेरे दुश्मन फौरन अपना २ रास्ता लेंगे क्योंकि श्री गुरुदेव उसके खेवटिया हैं । बाद इसके तू उनसे प्रार्थना करना कि मुझको ज्ञान के पास लेचालिये वे तुझे ज्ञान के पास छोड देंगे फिर ज्ञान जैसा कहे वैसा करना ऐसा करने से तू इस संसार समुद्र से निकल सक्ता है और मोक्ष लक्ष्मी वर सक्ता है । यह सब जैन गजट के उपदेश ज्यों ही वह कान लगाकर सुन रहा था त्योंही जैन धर्म रूपी नाव पहुंची वह सवार हो गया और ज्ञान राजा के पास पहुंच गया । फिर वह प्राणी करोडों २ धन्यवाद इस सच्चे रक्षक जैन गजट को देने लगा जिसकी वजह से वह संसार समुद्र में डूबते २ बच गया और जिस जैन गजट ने उस को सीधा रास्ता बतला दिया ॥

धन्यहै तू जैन गजट धन्य है बडा उपकार किया, तू सदा चिरंजीव रह । अस्तु ।

सीतल प्रसाद कलकत्ता

मिथ्यात्व

मालूम होता है कि हमारे जैनीभाई जैन गजट को बहुत कम ध्यान देकर सुनते हैं और बहुत कम देखते हैं क्यों कि हमारे जैनी भाईयों के यहां ऐसी २ बातें होती हैं जो कि अपने शास्त्रादिक से वर्जित हैं यानी किसी चीज का ब-ल देना और हिंसा का करना तो क्या है यानी अपने को नर्क में डालना और बहुत २ दुःख सहना और बार २ आवागवन में आना यानी भवधारण करना है—जैसा हे भ्रातृगण जैनी भा-ईयों शास्त्र में कहा है कि एक सेठजी ने अपने बालक के रक्षा करने के वा-स्ते एक पुतला किसी चीज का बनाया और उस को बलदिया तब उस सेठ-जी के कर्म तक के लेजाने वाले बंधा-यमान भवधारणी बंधे और कई बार उस सेठजी को भवधरना उसी आ-कार का पड़ा तो भाई साहिबों बड़े शोक की बात है कि आप लोग ऐसे बुद्धिमान और शास्त्रज्ञाता होकर यह बातें और रसमें हिंसक रूपी कीजिये तो हम तुच्छ बुद्धियों की क्या बात लेकिन नहीं कदापि नहीं यह रसमें जो हिंसक रूपी त्योहार गुड़िया के नाम से मशहूर है और इसी के अनु-सार बहुत से त्योहार हिंसक रूपी हैं दूर होसके हैं—इस तौरपर कि सर्व जैनी भाई आपस में एकचित होकर और इस किस्म के त्योहार हिंसक रूपी को बुरा और अपना बैरी जान कर त्याग करें वा १ अथवा २ धनाढ्य पुरुष मिलकर दूरकरें तो होसका है मगर तुच्छ आदमी के त्याग किये से त्याग नहीं होसका है और अगर कोई भाई साहब यह ज्ञात करें कि यह रसमें अगली हैं तो भाईजी शास्त्र के देखने से ज्ञात होता है कि यह रसमें अगली नहीं हैं बीच में किसी मिथ्याती पुरुष की विदित की हुई हैं जैन मार्ग से अ-लग हैं तो भाई साहिबों जो बात को शास्त्र वर्जित करता है जैनी भाईयों को दूरकरना चाहिये क्योंकि आप लोग जैनी धर्मात्मा भाई हैं तो आप का यह मिथ्या रसमें न करना चाहिये और जब से जैनी भाईयों ने यह रसमें हिंसक रूपी मिथ्यात्वी स्वीकार की हैं अपने शास्त्र की आज्ञा को त्याग करदिया तब से जैनी भाईयों की न्यून दशा होगई और होरही है सो हे भा-ईयो अपने जाति की न्यूनदशा देखकर सोचो और कोशिश करो जिस में जैन धर्म और जैन जाति की उन्नतिहो और आशा है कि हमारे जैनी भाई जरूर इस को अधर्म रूपी कार्य समझकर त्याग करेंगे और धर्म रूपी कार्य को जानकर गृहण करेंगे सो भाई साहिबों

इसी वास्ते आप लोगों की सेवा में प्रार्थना की जाती है कि मुझ तुच्छ बुद्धी वा तुच्छ आदमी के लेख पर ध्यान दीजियेगा और आप अपना धर्म संपूर्ण जानकर इन बुरी रस्मों को दूर कीजियेगा ॥

लखपतराय
नवाबगंज

जैन विद्या का अभाव
जैनी आर्या होगये

हे महाशयो मैं अपना लेख प्रारम्भ करने से पहले इस जैन गजट जारी कराने वाली महासभा को कोटिशःधन्यवाद देताहूं कि जिस के निमित्त से हम दूसरों के अभिप्रायों को जानकर तथा अपने अभिप्राय दूसरों को प्रगट करके लौकिक परमार्थिक उन्नती में बहुत कुछ सहायता मिलने से लाभ उठाते हैं प्रिय पाठकगणों आपने जैन गजट के पढने से मालूम किया होगा कि इस अपूर्व जिन धर्मरूपी रत्न को अज्ञान और प्रमाद के वश न जानकर हमारे बहुत से भाई आर्यसमाजी होगये तथा होने को सन्मुख हैं मित्रवर यह दोष उन बालकों का नहीं है किन्तु उन के माता पिता का है कि जिन्हों ने बाल्यावस्था में उन को धर्म विद्या नहीं पढाई। हाय कोई दिनों इस जिनमत की वह अवस्था थी कि राजा और प्रजा सबही जैनी होते थे आज यह अवस्था होगई कि चौदहलाखही रहगये कोई दिनों इस धर्म का ऐसा प्रकाश था कि इस के उपदेश सुनने से हजारों अन्य मती जैनी होजाते थे और आज यह दशा होगई कि हमारे जैनी भाई भी अन्यमती होनेलगे कोई दिनों इस धर्म में विद्या का ऐसा प्रभाव था कि जिनधर्म के पंडितों के सामने अन्यमत के विद्वान भी कम्पायमान होते थे और आज यह हालात होगई कि यदि कोई अन्यमती विद्वान तो क्या ? छोटासा पंडित जो किसी गणना में न हो शास्त्रार्थ करने का नाम भी लेवै तो हम लोग छिपते फिरते हैं ऐसा कौनसा जैनी होगा जो इस जिन धर्म की ऐसी अवस्था देखकर शोक सागर में न डूबै वह कौनसा जैनी होगा जो ऐसी अवस्था को पढकर जिस का हृदय सहस्र खंड न होजाय—क्या हमारे लिये यह लज्जाकारी वार्ता नहीं है ? क्या हम दूसरों को मुंह दिखाने लायक रहैंगे ? क्या हम अपने मुख से यह शब्द उच्चारण करसकेंगे कि यह जिनधर्मही आत्म कल्याण करने वाला है ? हाय २ इस अवस्था को देखकर भी हमारे भोले भाई घोर निद्रा से नहीं जागते हे प्रिय भ्रातृगणों यह प्रतिष्ठा कराना और मन्दिर बनवाना सब नि-

ष्फल हैं जबतक अपनी सन्तान को इस धर्म विद्या से भूषित न करो हे मित्रो विना धर्म विद्या के यही आप की सन्तान इन प्रतिमाओं को खिलौना बतावैगी और बताती है नहीं तो कहो क्यों मूर्तिपूजन से अरुचि करके आर्य समाजी होते हैं भाईयो अब भी सम्भलो और अपनी सन्तान को सब से पहले धर्मविद्या पढाओ नहीं तो पछताओगे और यह वांच्छा हर्गिज पूरी नहीं होसक्ती जबतक कि एक जैन महा विद्यालय न खोलाजाय जिस में कि जैन धर्म सम्बन्धी विद्या की मुख्यता रक्खीजाय न कि एक कालिज बनवाकर जिस में अंग्रेजी विद्या की मुख्यता रक्खीजाय हे मित्रवरो अंग्रेजी तथा संस्कृत भी अन्य मत सम्बन्धी विद्या पढने से तो अंग्रेज और अन्य मतियों की उन्नति होगी तुम्हारी उन्नति तो तबही होगी जब जैन विद्या का प्रचार होगा इस कारण महा विद्यालय के चन्दा देनेवाले तथा उस के प्रबन्ध करताओं से सविनय प्रार्थना है कि जैन महा विद्यालय में जैन विद्या की ही मुख्यता रक्खें नहीं तो उस के नाम में जैन इस शब्द को भी कष्ट देकर लज्जित न करें क्योंकि अब तो आप प्रत्यक्ष देखचुके हैं कि यह आर्य समाजी होने वाले जैनी कौन हैं वे मूर्ख नहीं हैं किन्तु कोई २ विद्या पढेहुए हैं इस कारण हमारी इस अवस्था का कारण विद्या सामान्य का अभाव नहीं है किन्तु विशेष अर्थात जिनधर्म सम्बन्धी विद्या का अभाव है बस आगामी हमारी सन्तान के सुधारने का इस से अच्छा उपाय दूसरा नहीं दृष्टि पड़ता अब बडा खेद इस बात का है कि जो हमारे भाई आर्य समाजी होगये तथा होने को सन्मुख हैं और जिन के निमित्त से हम मुंह दिखाने के लायक नहीं रहैंगे उस का क्या उपाय किया जावै—जब विचार करके देखाजाय तो हमारे इस निम्नलिखित उपाय के सिवाय और अन्य कोई भी प्रयत्न दृष्टि में नहीं आता और उसही उपाय का यद्यपि मैं समर्थ नहींहूं तथापि साहस करताहूं और अपने जैनी भाईयों से प्रार्थना करताहूं कि इस कार्य में मुझे तन मन से सहायता देवेंगे "वह प्रयत्न यह है" मैं जैनी भाईयों से जो कि आर्यसमाजी होगये हैं तथा तथा होने को सन्मुख हैं प्रार्थना करताहूं कि हे मित्रवरो तुम जो इस जैनधर्म को छोड आर्यसमाजी होगये तथा होनेवालेहो सो केवल आत्म कल्याण के अर्थ है यह बात भी आप अच्छी तरह से जानते होंगे कि जो कोई दमड़ी की हांडी भी लेता है वह ठोक

बजाकर देखता है तो जिस में कि आत्मा का कल्याण अकल्याण होय उस की तो अवश्य परीक्षा करेगा इस लिये आप से तथा आपके सहाई उन आर्यसमाजी पंडितों से सविनय प्रार्थना है कि अगर आप को जैन तत्वों में किसी प्रकार की शंका है तो हम हर तरह से जैन गजटद्वारा लिखित शास्त्रार्थ करने को तयार हैं ॥

गोपालदास बरैया
दिगम्बर जैन सभा
बम्बई

अवश्य पढने योग्य

बड़े हर्ष की बात है कि भाई गोपालदास बरैया उपमंत्री दिगंबर जैन सभा ममई तारीख २९ जुलाई सन् १८९९ को यहां दिल्ली में पधारे यह भाई मार्ग में एक दिन के वास्ते अजमेर भी ठहरे थे जहां कि जीर्णोद्धार के वास्ते (१०००) रुपये अनुमान का चिठ्ठा होगया यहां दिल्ली में इन्होंने विविध विषयों पर व्याख्यान दीये इनकी प्रेरणा से बहुत से भाइयों को विद्या वृद्धि का उत्साह बढा यद्यपि यहां खंडेल वालों की महली में पाठशाला पहले से थी परन्तु कोई पंडित अच्छा वैयाकरणी तथा जैन शास्त्र का पढाने वाला नहीं था इस कारण इन्हीं से प्रार्थना की कि कोई पंडित बुलवा दीजिये इस पर इन्होंने कहा कि अच्छा पंडित २०) मासिक पर आवेगा इस के ऊपर भाई चिरंजीलाल लुहाड़्या पलवल वालों ने बडे उत्साह से १०) रु० मासिक देना स्वीकार किया तथा भाई जुगलकिशोर जी मूत वालों ने ५) मासिक और १.५) दूसरे भाइयों ने मिलकर तजवीज की इस तरह २०) मासिक की तजवीज होगई पंडित जी की तलाश भाई साहब ने करली है अब भादवा वदी २ को पंडितजी आजायंगे तथा इन के उपदेश से धवलादिक ग्रन्थों के जीर्णोद्धार वास्ते अगर वालों की सहली में से करीब (६००) का चिट्ठा होगया खंडेल वालों की सहली में अभी चिट्ठा हुआ नहीं है लेकिन आशा है कि जल्दी होजायगा तथा यहां की सहली में से भाई जुगलकिशोरजी मूत वालों ने इसमें भी १००, देना स्वीकार किया है इनके परिणाम धर्म की तरफ अच्छे मुके हुए हैं तथा भाई साहब के उपदेश से कितने ही भाइयों ने सप्त व्यसन का त्याग किया कितनेही भाइयोंने शफाखाने की दवा का त्याग किया तथा एक दिन भाई साहब ने आप का जैन गजट बांचकर सुनाया जिसमें रंडी के नाच की बडी धूल उड़ाई है इस गजट के सुने से भाइयों पर इतना असर हुआ कि निम्न लिखित भाइयों ने अपने पुत्र के विवाह में वेश्या का नाच कराना और वेश्या नृत्य देखने का यावज्जीवन त्याग किया उनके नाम इस प्रकार हैं ॥

१ गोपालदास जी बरैया २ बिहारी लालजी बैनाडा ३ भोलानाथजी गोधा ४ समारामजी मारवाडी ५ रामदयालजी बहादुर गढ वाले ६ गंगाधर जी बैनाडा ७ चुन्नीलालजी ८ जुगलकिशोर जी मूत वाले ९ मोहनलाल जी मारवाडी १० लाल जीमलजी ११ मुरलीधर जी रैवाडी वाले १२ खेतमी दासजी मारवाडी १३ जय नारायन जी मारवाडी १४ किशारनपजी १५ शंकरदास जी अगर वाले १६ गिधर लालजी लुहाडा १७ पूरनचंदजी लुहाडा १८ मोहनी मलजी बैनाडा

यद्यापि भाई साहब के उपदेश से यहां पर इतना काम हुआ परन्तु यहां के भाइयों में परस्पर एकता नहीं है आपस में बडा विरोध पड रहा है यहां तक कि आपस की खेंच खांच से कोई भाई धवलादिक जीर्णोद्धार का चिट्ठा कराने मे मना ही करते थे कोई भाई जिन भाइयों ने चिट्ठे में लिख दिये थे उनको देने से मना ही करते थे कोई भाई अगर शास्त्र बांच रहा है और उसने श्रोताओं से पर स्त्री सेवनादि वज्र पाप का त्याग कराया तो कितने ही भाई त्याग कराने वाले वक्ता को रोकते थे इस तरह से परस्पर विरोध होने से बडे २ नुकसान होरहे हैं बडे खेद का स्थान है कि एक दिन वह था कि जब हमारी इस जैन जाति में इन पर स्त्री सेवनादि वज्र पापों का नाम भी नहीं सुना जाता था और आज वह दिन आगया कि इन पापों को त्याग करानेवाले वक्ता को त्याग कराने से रोक दिया जाय क्या इसमे भी हमारी कुछ न्यून दशा होती है मैं पंचों से प्रार्थना करता हूं कि इस अन्याय कार्य को अवश्य रोकेंगे परन्तु यह सब बातें व्यर्थ हैं जब तक हमारी जाति में विद्या का प्रचार नहीं होगा तब तक कुछ भी नहीं होने का यहां पर विद्या की बडी न्यूनता है यद्यापि अगर वालों की सहली में भी पाठशाला है तथापि प्रबंध ठीक नहीं है इस कारण जैन सभा देहली से भी प्रार्थना है कि पाठशाला के प्रबन्ध को अपने हाथ में लेकर अवश्य विद्या की उन्नति कर के दिखावें ॥

जैन जाति का शुभचिंतक
एक जैनी

मिथ्या नामवरी

इस मिथ्या नामवरी ने हिन्दुस्तान की अधिक दुर्दशा की है लोग झूठी प्रशंसा कराने को विवाह शादी में ऋण निकाल कर शक्ति से बाहर खर्च करते हैं आतिशबाजी, फुलवाडी, नाच, तमाशे में भारी २ दान दहेज में अपनी सामर्थ से इतना अधिक खर्च करते हैं कि ऋण में डूबकर फिर छुटकारा नहीं पाते घर बार माल असबाब खोकर साहूकार से छिपे २ फिरते हैं देस विदेश में भीख मांगते नौकरी मजदूरी करते हैं ऐसे कष्ट सहने पर

भी मिथ्या नामवरी से मुंह नहीं फर ते कोई २ ऋण निकाल कर तीर्थ दान यज्ञ, पूजा, करते, बाग लगाते हैं, ता- लाव मन्दिर बनाते हैं कि लोगों में हम धनी धर्मात्मा ठहरें पीछे धनी का रुपया मारने को देवाला खोल देते हैं ऋण ह- त्या को पाप नहीं समझते हैं कहा भी है ॥ दोहा ॥ चोरी करें निहाइ की करें सुई का दान ॥ ऊपर मुंह कर देखते के- तक दूर बिमान ॥ नामवरी के कारने मे धन खर्चें मूढ ॥ मर कें हाथी होयंगे ध- रती लटके सूंड ॥ बहुतरे पोला मबके का गहना पहनते भडकीले कपडे पहन के चटक मटक से रहते हैं कि हम को लोग बडा आदमी समझें परन्तु यह नहीं सोचते कि सुकृत की कमाई खर्चे करेंगे पुण्य तभी होगा और किसी के ऋणी और सेवक आधीन न होंगे सुख प्रातिष्ठा नर्भा पांवेगे इससे हे भाईयो तुम मिथ्या नामवरी से मुंह फेरो और अपनी आम- दनी के भीतर उचित खर्च करो जिसमे तुम्हारे परिणामों की विशुद्धता दिन २ वृद्धमान रहै और निराकुल होय धर्म ध्यान में चित्त लगे ॥

उमराय सिंह उपमंत्री

जैन पुरुषार्थ सभा

इटावा

रिपोर्ट दौरा हकीम कल्यान राय उपदेशक

श्री मान् डिप्टी चम्पतराय जी साहब श्रीजिनेंद्र साहपुर से चलकर स्थान सराय आया और सराय से मनसूरपुर आया सो बसबब बरसात के १ दिन मनसूरपुर ठहरा फिर मन्सूरपुर से चलता० ४ अगस्त को मुकाम बसहेडा आया और शाम को सभा की तो अनुमान ३० या ३५ भाई मौजूद थे शास्त्र श्रवण के फल दिखलाये और पूजन के करने के फल दिखलाये तो सर्व भाइयो ने बडी खुशी के साथ शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा ली और पूजन के बारे बाधे फिर दूसरे दिन सुबह के वक्त सभा की और विद्या के विषेमें व्याख्यान किया और सभा होने के फायदे दिखाये सर्व भाईयो ने मंजूर किये परन्तु यहां पर दो थोक हैं और बहुत बडा विरोध है इस सबब से न सभा हुई न पाठशाला और कोई लायक मनुष्य भी नहीं है ता० ६ अगस्त को प्रातःकाल बसहेडे से चल कर मुजफ्फर नगर आया लाला मैदपाल मल रईस के मकान पर ठहरा और दुपहर को उनही के मन्दिर में शास्त्र में गया पंडित भूधरमल जी बहुत मीठी वा- नी से शास्त्रजी बांचते थे और फिर दू- सरा शास्त्र मैंने भी बांचा शास्त्रजी में बडा आनन्द रहा मुजफ्फर नगर में दो मन्दिर जी तो मौजूद हैं और तीसरा अब

बन रहा है दूसरे मन्दिरजी में शाम के वक्त सभा की गई तो अनुमान ४० या ५० के भाई मौजूद थे अहिंसा धर्म का व्याख्यान कर के पाठशाला सभा आदि का व्याख्यान किया तो सर्व भाईयों ने बड़ी खुशी के साथ सभा करना अंगीकार किया सभा करने का दिन चतुर्दशी है अर्थात् एक मास में दो दफे हुआ करेगी सभाके सभापती उपसभापति लाला बनारसी दास लाला खैरातीलाल हैं और मंत्री मुन्सी अमरसिंहजी साहिब हैं यह तीनों ही बड़े धर्मात्मा पुरुष हैं और पाठशाला के वास्ते यह कहा कि दो तीन बड़े पुरुष नहीं मौजूद हैं क्योंकि लाला उमराउ सिंह रईस की बहन मर गई थी उसी दिन इस कारण वो नहीं आये थे सो यह बात कही कि आप १० या १५ दिन में अब के आओगे तब पाठशाला भी हो जायगी ता० ७ अगस्त को मुजफ्फरनगर से चलकर शामली आया और लाला संगम लाल के मकान पर ठहरा ता० ८ अगस्त को प्रातःकाल सभा कराई अनुमान १५ या १८ आदमी थे घर भी यहां १० दस हैं तो पूजन का इन्तजाम करा था यहां पर नागरी पढा हुआ कोई नहीं है सो पाठशाला के वास्ते मैंने बहुत जोर दिया तो लाला कपूरचंद संगमलाल जय कुमारमल ने कहा कि एक पंडित जैनी आय जाय तो सब काम चलजाय तो मैं ने कहा पंडितके वास्ते लिखता हूं कि कोई पंडित जिसको नौकरी करनी हो वो लाला कपूरचंद शामली निवासी के पास दरख्वास्त भेजे तनख्वा ८ रुपैये महीना और लड़कों को पढाना पूजन पढना शास्त्र बांचना होगा मामूली पंडित भाषा पढा हुआ चाहिये ॥

ता० ९ अगस्त को शामली से चलकर मुकाम कैराना आया किराना बहुत बड़ा कसबा है और १०० या १२५ घर जैनीयों के हैं और मन्दिर जी भी दो हैं पूजन शास्त्र होता है और मैं पंडित नवलसिंहजी के मकान पर ठहरा था नवलसिंह बड़े धर्मात्मा पुरुष हैं और ८ अगस्त को दोपहर के वक्त शास्त्रजी बांचा फिर दूसरे दिन ९ तारीख को दो पहर के वक्त बाद शास्त्रजी के सभा की गयी तो सभा में भाई अनुमान ८० के थे धर्म वृद्धीके विषयमें व्याख्यान किया सुनकर बड़ी खुसी हुई और पाठशाला और सभा के करने के लिये उपदेश किया तो सर्व भाईयोंने कहा कि कलको करेंगे इसी तरह तीन दिन तक रोज सभा की गई तो फिर ४ दिन सर्व भाईयों ने सभा करना अंगीकार किया जो मौजूद थे सभा प्रति चतुर्दशी को हुआ करैगी सभा के सभापती उपसभापती ज्वालापरशाद गोकलचंद अमीरसिंह उत्तरसिंह नवलसिंह मंत्री उपमंत्री लालजीमल नवलसिंह और सभासद बहुत हैं और पाठशाला के वास्ते पंडित की जरूरत है दलीपसिंह नहीं आये

थे क्योंकि तहसील में गये थे किराने से चलकर फेर मुजफ्फर नगर आया और शास्त्र में गया तो मालूम हुआ कि चतुर्दशी को सभा हुई थी और अनुमान १०० भाई के सभा में आये थे बड़ा आनन्द रहा और मंत्री मुन्शी अमनसिंहजी ने व्याख्यान कहा और पंडित भूधरदास जीने भी कहा और एक पंडित रामलाल जीने भी कहा सो धन्य है मुजफ्फर नगर के भाईयों को कि इस तरह से धर्म का साधन करते हैं और बचन पक्ष को निवाहते हैं और यहां पर पूजन बड़े आनन्द से होती है स्वाध्याय भीयहां के भाई करतेहैं यकीन है कि पाठशाला भी होय जायगी ॥

सभा भरथपुर

मैं बड़े हर्ष के साथ प्रगट करता हूं और फूला नहीं समाता हूं कि यहां भाई साहब फौजीलालजी (जिनका हाल मैं पहले लिख चुका हूं) हाथरस निवासी की कोशिश से पाठशाला स्थापित होगई जिसका महूर्त सावन शुक्ला पंचमी ब्रहस्पतवार को प्रभात ही हुवा उस समय यहां के सर्व भाई पधारे और बड़ी खुशी की बात है कि लाला श्री किसन दासजी मुनीम कोठी श्रीमान सेठ लछमनदासजी साहब— व लाला राजूलालजी साहब मुनीम कोठी राय बहादुर सेठ मूलचंदजी नेमीचंदजी ने अपने शुभागमन से सभा को सुशोभित किया क्यों नहो जब जगत शिरोमण सेठ लक्षमन दासजी साहब वा सेठ मूलचंद श्री नेमीचन्दजी साहब की धर्म्म कार्य में ऐसी रुचि है और वे खास इस काम के प्रेरक अग्रगण्य और हर तरह से कार्यवक हैं तो उनकी तरफ से इस काम में सहायता क्यों नहीं होगी— होही रही है और होहीगी— और बाबू जमनालाल जी हेडकलर्क एजन्टी भरतपुर भी शामिल हुवे यह महाशय भी बड़े सज्जन और धर्म्मात्मा हैं यहां इनकी तरफ से हर तरह की सहायता रहती है— मैं उपरोक्त महाशयों को अनेक २ धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने पधार कर यहां के भाइयों के उत्साह को बहुत बढ़ाया— प्रथम ही मुहूर्त के समय ६॥ बजे विद्यार्थियों ने रत्न करंड श्रावकाचार (जिस की प्रतिज्ञा भाइयों ने करी है) अमर कोश सूत्रजी आदि यथा योग्य प्रारम्भ किया पश्चात् अध्यापक ब्राह्मण पं० कन्हैयालालजी को पंचायती की तरफ से भेट हुई पीछे भाई साहब सुन्दरलालजी पाटोदीने सभा का धन्यवाद खड़े होकर कहा और सर्व सभासद भाईयों से इसके निर्वाह करने और उन्नति करने की प्रार्थना करी तापीछे विद्यार्थियों को लड्डू बांटे गये— उस समय जो कुछ आनन्द हुवा वो जिन भाइयों के दृष्टिगोचर हुवा वोही जानते हैं लिखने की मेरी शक्ति नहीं

अब मैं यहां के सर्व सहधर्म्मी भाइयों को कोटिशः धन्यवाद देकर इस पाठशाला के निर्वाह करने वा हर तरह से उन्नति कर ने की सविनय प्रार्थना करता हूं और सर्व भारत निवासी भाइयों से भी मेरी हाथ जो इकर प्रार्थना है कि जहां २ पाठशाला हैं वो उन्नति करें और जहां नहीं है वो अवश्य शीघ्र स्थापन करें विद्या सर्व सुख का मूल है विशेष कहां तक लिखूं और सर्व अपने २ यहां का हाल जैन गजट में छपवावें जिससे दूसरे भाइयों को भी उत्कंठा हो ॥

सावन सुदी पंचमी को रात के आठ बजे से साढे नौ बजे तक सभा हुई जिसमें उक्त भाई साहब फौजीलालजी ने संसारानुप्रेक्षा का वर्णन किया स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा की गाथा कहकर चतुर्गति के दुःख को बहुत अच्छी तरह प्रगट करके दिखलाया जिसको सुनकर सर्व सभा सद महाशय (करीब २० के) बडे हर्ष को प्राप्त हुए पीछे भाई साहब ने इस चतुर्गति के दुःखों से बचने का मूल कारण स्वाध्याय को अच्छी तरह सिद्ध किया इस की उत्कृष्टता कहकर सर्व भाइयों से स्वाध्याय करने की प्रेरणा करी उस समय कई भाइयों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा करी मेरी सर्व भारत निवासी जैनी भाइयों से विनय पूर्वक प्रार्थना है कि इस क्षेत्र काल में स्वाध्याय के समान और तप नहीं होसक्ता क्योंकि ध्यानादि उत्कृष्ट तपों में परिणामों का लगना इस काल में बहुत कठिन है— स्वाध्याय से वस्तु का स्वरूप जाना जाता है स्वाध्याय में मन लगसक्ता है इसलिये प्रमाद छोडकर जैनी मात्र को स्वाध्याय करना आवश्यक है मेरा दोष क्षमा करें और विचार कर स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा करें विलम्ब नकरें जैन धर्म सब सामग्री पाने का फल कुछ तो लेना चाहिये ॥

चिरंजीलाल

भरतपुर

वेश्या नृत्य

महाशय. जैन गजट अंक ३२ में वेश्या प्रसंग शीर्षक एक लेख छपा है उसे पढ बडाही आनन्द हुवा, यथा वेश्या गमनी पुरुषों के लिये भी ठीक शिक्षा हुई. मैं भी एक छोटासा लेख भेजता हूं कृपाकर इसे अपने अमूल्य पत्र के किसी कोण में स्थान प्रदान कर कृतार्थ करें ॥

॥ सवैया ॥

शुभ काज को छोड कुकाज रचे,
धन जायत व्यर्थ सदा जिनको ॥ इक
रांड बुलाय नचावत हैं, नहिं आवत लाज
जरा तिनको ॥ मिरदंग भने धृक धृक
इन्हें, सुरताल पूछैं किनको किनको ॥ तब
उत्तर रांड बतावत है, धृक है "इनको इन
को इनको,, ॥

॥ २ ॥ लात अघात कुघात सहैं, न अघात निलज्ज सुनैं नित गारी ॥ अन्ध रहैं मति मन्द सदा, नहिं सूझि सुपन्थ परै सुखकारी ॥ लोग हँसैं अपमान करैं, जग निंदित नाम धरैं अपकारी ॥ पावैं कलंक लगावैं कुलै, सठ तौहू न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

क्रोध मृषा इरषा मद मोह, असत्य अनीति बढ़ै दुखकारी ॥ चिन्तित चित्त सदैव रहै, तन आलस रोग बढ़ै अतिभारी ॥ पाप की दृष्टि सदाही रहै, दिन रैन कुबैन कढ़ैं विषधारी ॥ बैल बने विचरैं बिनु आदर, तौहु न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

ज्ञान नसै अरु मान नसै, बल तेज की हानि सबै करिहारी ॥ सम्पति धीरज धर्म नसै, चित से कुल कानि की बानि बिसारी ॥ व्यर्थ समय अनमोल नसै, खल सोवत मोह निशा अँधियारी ॥ शील सो उत्तम रत्न नसै, नर तौहू न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

मांस भखैरु सुराहु चखै, न घृणासु लखै गणिका दइ मारी ॥ रांड कला पावै न मदा, रति लीन न धर्म अधर्म बिचारी ॥ व्याकुल रहै सुचिता तनकी, नानि रूप हरैरु करै अपकारी ॥ यार दुःखारी भिखारी करै, पर तौहु न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

बानि छैल बेबंक फिरै नहिं रंचहु शंक हिये सुनाई भति मारी ॥ कुल लाज गई मरियाद गई, परितीत गई नहिं नेक बिचारी ॥ धरनी धन धाम निलाम भई, गणिका सों करी जब यारी करारी ॥ बदमाश निलज्ज कहावैं नितै, शठ तौहु न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

बात कोई पतियात नहीं, जुतियात नितै गणिका दइमारी ॥ तर्क करै धन हीन भये पुनि, ढूंढत दूसर यार सुखारी ॥ मांगत भीख सफाक मरै शठ, खोइ दई घर सम्पति सारी ॥ लाख विलोकत नित्य यही, पर तौहु न चेतत हैं व्यभिचारी ॥

देख्यो सुन्यो बहु ग्रन्थन में, अरु वैद्यन सिद्ध किये यह नीके ॥ होत सदा सुत वा ढंगके, गुण गर्भ में रावत जो जननी के ॥ ग्राहक अर्थके हैं रज से, अरु धार्मिक पुत्र हैं सत्यवती के ॥ तामस सूनु कुपूत महा, गणिकान के पांय पलोटत नीके ॥

काम वशीन्हैं बैन युवा नर, डोलत ज्यों मदमत्त करी के ॥ मानत आन न मात पिता, कुल धर्महिं त्याग करैं परनी के ॥ चित्त उनार सुचित्र भये, उपदेश तिन्हैं अति लागत फीके ॥ व्यभिचार बस्यो निरलज्ज भयो, गणिकान के पांय पलोटत नीके ॥

प्रिय पाठक गण—

बड़े शोक का कारण है कि इतनी सब विडम्बना देख सुन कर भी लोग सन्तुष्ट नहीं होते फिर भी इस कुकर्म (बे श्या प्रसंग) में लवलीन होही तो

जाते हैं. देखिये इससे मनुष्य मात्र की कितनी हानि होती है बहुत कुछ तो ऊपरोक्त कविता से प्रगट है. व्यतिरिक्त इसके इस फन वाले ऐसे कई प्राणध्वंसक रोगोंसे पीडित रहते हैं यहां तक कि उन्हें कोई पास फटकने भी नहीं देता, कहीं कहीं बदमाश आभूषणादि तक उतार लेते हैं कहां तक कहा जाय जितनाही खोदा जायगा उतना अधिक कीचड़ ही निकलेगा. अतएव मैं पाठक गणों का अधिक समय न लेकर यदि कुछ उचितानुचित हुआ हो उसकी क्षमा मांग विदा लेता हूं, समयानुसार फिर कभी उपस्थित हो लेख द्वारा आप लोगों का दर्शन लाभ करूंगा ॥

फतेचन्द परवार
ठि. सेठ रामगोपालजी चम्पालाल
कामठी

समाचारों का गुच्छा

निहटौर— लाला माडेमलजी लिखते हैं कि आपके जैन गजट अंक ३३–३४ में सलूने की कथा को पढ़कर चित्त अति प्रफुल्लित हुआ और इस त्यौहार पर जो ब्राह्मणों को दान दिया जाता है उस के देने से अति घृणा पैदा हुई और मैंने इस त्यौहार पर इस दान का देना त्याग दिया और भी कई भाइयों ने त्याग किया लाला केवल रामजी जो कि बड़े धर्म्मात्मा हैं— भाइयों को धर्म की रुचि दिलाते हैं ॥

देहली— लाला उल्फत रायजी लिखते हैं कि आप के समाचार पत्रों की प्रेरना से यहां अनुमान २ मास से सभा स्थापित होगई है यहां पर जैनियों के १०० घर हैं सभा में ५० तथा ६० मनुष्य आते हैं यहां पर पाठशाला भी स्थापित हो गई है ४० विद्यार्थी पढते हैं फिजूल खर्चों का अभी बन्दोबस्त नहीं हुआ है अब की सभा में आप का जैन गजट पढ़ा गया जिसमें वेश्या नृत्य की बुराई थी उस पर ला० कन्हैयालाल, रडकलाल, अनन्तप्रसाद, चौधरी जसकरन दास ला० पन्नालाल, और अमीचन्द इन सम्पूर्ण महाशयों ने वेश्या नृत्यको देखने का त्याग किया— धन्य है इन सम्पूर्ण भाइयों को

रावलपिन्डी—लाला हीरालालजी लिखते हैं कि मुझे जैनसे गजट बड़ा लाभ हुआ है यानी अपने धर्म की तरफ मुझे रुचि बिलकुल नथी— सो इस पत्र के प्रताप से अपने धर्म में रुचि बढी— और मैं जैन महा विद्यालय व जैन महा सभा मथुरा के वास्ते २०) रुपये साल दिया करूंगा इस साल के २०) रु० बहुत जल्द मथुरा भेजूंगा— और मैंने फिजूल खर्चों तथा कुरीतियों का त्याग किया— रंडी के नाच कराने का अथवा देखने का बिलकुल त्याग और सिवाय पानी के और रात्रि को कोई चीज नहीं खाना ॥

सम्पादक— हम उक्त लाला साहब

को कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि जिनके यहां होली के दिनों सदैव में नाच हुआ करता था सो त्याग किया, क्या और अन्य भाई इसी तरह वेश्या नृत्य का त्याग करके हम को सूचित नहीं करेंगे ? अवश्य करेंगे ॥

बम्बई— पं० गोपालदासजी मंत्री दिगम्बर जैन सभा बम्बई से लिखते हैं कि हम को एक ऐसे जैनी पंडित की आवश्यकता है जोकि हमारे परीक्षालय की प्रथम परीक्षा के ग्रन्थों को अच्छी तरह पढ़ा सकै प्रथम परीक्षा की पढ़ाई कातंत्ररूपमाला के पृष्ट पर छपी हुई है वेतन २०) रु० मासिक मिलैगा— उक्त पते से पत्र व्यवहार करैं ॥

कलकत्ता— लाला मानिकचन्दजी लिखते हैं यहां पर सभा अष्टमी और चतुर्दशी को हुआ करती है— यहां के भाइयों ने घर पीछे ! रुपया वास्ते जैन महाविद्यालय के देना स्वीकार करलिया है सो बहुत मदद इकट्ठा करके श्रीमान् सेठजी साहब के पास मथुरा भेजा जावैगा—

मंडावरा जिला, ललितपुर— रामप्रसाद विद्यार्थी लिखते हैं कि जो कोई विद्यार्थी मेरे प्रश्न का उत्तर प्रथम देवेगा उस को १ पुस्तक इनाम की और दूसरे नम्बर वाले को १ पुस्तक पढने को भेजी जावैगी (प्रश्न) इस जिले के सर्व पराक्रम पुरुष का नाम ८ अक्षर का है जिसमें— ६+९ शर्म के मानी होते हैं, १+७= एक तरह का हथियार, ९×७= पानी का पर्याय शब्द, १+४×२= वृद्धी के मानी होते हैं ९+८+४= सांकल के मानी होते हैं, ४+३= सूर्य के मानी होते हैं— इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिये ॥

मासिक रिपोर्ट श्री जैन पुरुषार्थ सभा इटावह

आज मिती श्रावण शुक्ला चतुर्दशी वृहस्पतिवार की रात्रि के ८ बजे से श्री पंचायती जैन मन्दिर पंसारी टोला में १८ वीं सभा का समागम हुआ मुंशी चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर सभापति, लाला भवानी प्रसाद उप सभापति, ला० हजारी लाल, ला० पन्नालाल, ला० छत्रपाल, ला० प्यारेलाल, ला० बंशीधर ला० जगन्नाथ, ला० छेदीलाल, ला० हुब्बलाल, ला० लालमन, ला० उमरावसिंह आदि सभा सदस्य व अनुमान १०० सौ के सभासद भाई और विद्यार्थी सभा में सुशोभित थे अष्टान्हिका की चतुर्दशी के कारण बहुतसी स्त्रियां भी सभा की कार्रवाई देखने और धर्मोपदेश सुनने के लिये पर्दों और चिकों के भीतर तिष्ठी हुई थी बड़े हर्ष की बात है कि लाला फुलजारी लाल रईस व जमींदार करहल जिला मैनपुरी कि जिन का आगमन किसी कार्यवश यहां हुआ था और उक्त डिप्टी साहब सभापति जी के मकान पर ठहरे हुए थे इस सभा

में पधार कर सभा को सुशोभित किया बह साहब करहल के जैनी भाईयों में ब डे धर्मात्मा परोपकारी सज्जन पुरुष हैं मंगला चरन के पश्चात विद्यार्थी पाठशाला ने अपने २ सुन्दर मनोहर व्याख्यान मधुर वाणी से सभा को सुनाये जिन को सुन कर सभा अत्यन्त हर्षाय मान हुई और होन हार विद्यार्थीयों के उत्साह बढ़ाने के लिये धन्य २ कहने लगी इस के उपरांत कई एक भाईयों ने जैन गजट में से कई एक सुन्दर निर्मल हितकारी उपदेश रूप लेख धारा प्रवाह उच्चस्वर से सुनायें जिन को सुन कर सभा गद् गद हो गई तत्पश्चात मुझ मंत्री सभा ने पाठशाला व सभा की व्यवस्था सुना कर स्वाध्याय के लाभ और गुणों पर कुछ व्याख्यान देकर शास्त्राध्ययन करने वालों के उत्साह और काल की मर्यादा बढाने और रोजाना स्वाध्याय करने का नियम और दृढ़ प्रतिज्ञा रखने के लिये प्रार्थना की तदनंतर सभापति साहब ने पाठशाला व सभा की इंतजामी कार्रवाई बताई और सभा से इस बात की प्रार्थना की कि सभासद भाईयों को चाहिये कि तन मन धन से सुमति और सम्मति से इस सभा व पाठशाला के प्रबन्ध कर्ताओं की रुचि और उत्साह को बढाते रहें ताकि उन के दिल उचाट हो कर काम में फर्क न पडे– हर्ष की बात है यहां के भाईयों ने साल भर में कम से कम एक पैसा प्रत्येक जीव के हिसाब हर्ष पूर्वक गोलक में डालना स्वीकार कर लिया है गोलक रख दीगई है पैसा पडने की कार्रवाई शुरू हो गई है आशा है कि भाद्रपद के दश लाक्षिणी के दिनों में सब भाई इस प्रतिज्ञाका प्रतिपालन पूरी२ तौर पर कर अन्य २ नग्र और ग्रामके भाईयों के लिये उपमा और नमूना योग्य बनेंगे एक रुपया फी घर की उगाही हो कर रुपया एकत्र हो गया है सिर्फ दो चार भाईयों से रुपया और मिलने की उम्मेद पाई जाती है इसी लिये रुपया भेजने में विलंब किया गया है जिस समय उन से रुपया वसूल हो जावेगा तत्काल श्रीसेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० सभापति महासभा मथुरा की सेवा में मनीआर्डर द्वारा भेज दिया जावेगा या श्रीमान मुन्शी चम्पतरायजी साहब महा मंत्री के पास जमा करा दिया जावेगा हम बडे हर्ष के साथ प्रकाश करते हैं कि यहां अष्टान्हकन के उत्सव में तीस चौबीस विधान हुआ और पूर्णमा के दिन निर्विघ्न आनन्द पूर्वक बडे हर्ष के साथ श्रीमंदिरजी पसारीटोला व करनपुरा में बडी धूम धामसे कलशाभिषक हुआ साढे दस बजे के लग भग सभापति साहब ने सभासदों को धन्यवाद देकर आनन्द मंगल पूर्वक सभा विसर्जन की ॥

प्यारेलाल मंत्री जैनसभा

इटावह

मातृविद्या

एक दिन वह था कि इस भारत वर्ष में राजा से प्रजा तक सभी जैनी थे और सभी मातृ भाषा के प्रेमी थे कि जिन्होंने ऐसे ऐसे महान ग्रन्थ रचे हैं कि जिन का आज कल के महाशय नाम तक भी नहीं जानते पर ज्यों २ मातृ विद्या की न्यूनता होती गई उसी भांति जैनियों की भी हीनता होती चली आई यहां तक कि अब गिनी २ संख्या रह गई उस में भी उन गुणों की छाया तक नहीं दृष्टि आती जो प्राचीन काल के जैनियों में थी इसका मुख्य कारण मातृ विद्या (संस्कृत भाषा) ही है क्योंकि बिना इस विद्या के माया के जाल से छूट कर कर्म कांड पर कौन आरूढ़ करा सक्ता है जब कर्म नहीं तब धर्म कहां जब धर्म नहीं तब सब मिथ्या ऐ हमारे प्रिय जैनी भाईयों जागो २ और उठो देखो यह क्या समय आगया है और कहां तक प्रकाश छागया है जरा आंख उठा कर मोह माया की चादर से मुंह खोल कर देखिये तो सही यह क्या समय है इस समय सम्पूर्ण जाति के प्राणी सर्वत्र अपने २ कामों में लीन हैं और सभी अपनी २ जाति धर्म की उन्नति के निमित्त भांति २ के उद्यम कर रहे हैं पर आश्चर्य की बात है कि हम कहां तक आश्चर्य करें और अपने हृदय स्थल को थामें कि आप महाशय ऐसे ज्ञान वान कहलाय एक दम से निद्रा के वशी भूत हो सोना आरम्भ कर दिया और लेश मात्र भी अपनी निद्रावस्था विहाय तथा निद्रा ही में स्वप्न के समान करुणा कटाक्ष नहीं करते और अपनी जाति की ओर ध्यान नहीं देते जो दिन प्रति दिन उन्नति के स्थान में अवनति करती जाती है और नाना प्रकार के हीना चरण कषाय तथा क्रोध मान माया लोभ अहंकार और सप्त विषन आदि जो अविद्या के सखा हैं इसमें धसते चले आते हैं ऐ हमारे प्यारे हितैषी अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है क्योंकि कहा वत हैं " बीती ताहि बिसारिदे आगे की सुधिलेइ" यदि अब भी आप महाशय इस महा घोर निद्रा से जागिये और अपने पुन्य कर्मों के साथ में जाति धर्म के कामों की तरफ एक लेश मात्र भी ध्यान दीजिये तो सभी कुछ हो जाय हे प्यारे जागिये देखिये जैन धर्म संरक्षणी महासभा मथुरा आप लोगों के हितोन्नति के महल पर चढ़ने के लिये कैसी २ युक्तियों की नसैनी लगा रही है महाशय वर यह जाति भार और धर्म का सुधार कहीं सभा पति महामंत्री और मंत्रीगणों के उठाने से चल सक्ता है इस में तो आप सभी को तन मन धन से तीनों से उद्यम करना चाहिये और सर्वोपरि मातृ विद्या की उन्नति के हित उद्यम करना चाहिये क्योंकि मातृ भाषा ही सर्व भांति की उन्नति की

मूल है यह ऐसा पदार्थ है जो हम को सत असत कर्मों का ज्ञान कराता और निन्दित कर्मों से निवृत कर शुभ कर्मों में लगाकर उभय लोक अर्थात् इस भव और पर भव दोनों में सुखदायी होती है देखिये विद्वान इसही जगत् में बड़े २ पद पाते हैं और राज्य मान व प्रतिष्ठा उनको ही प्राप्त होती है और उस भव में मोक्ष पद प्राप्त हो जाता है विद्या हीन मनुष्य कहीं भी शोभा नहीं पाते जैसा कि इस श्लोक में प्रकट है ॥

श्लोक

रूप यौवन संपन्न विशाल कुल संभवाः
विद्या हीना न शोभन्ते निर्गन्धाइ किंशुका ॥ १ ॥

भगवानदास विद्यार्थी कक्षा ३
श्री जैन पाठशाला
इटावह

व्यर्थ व्यय (फिजूल खर्ची)

इस बात के वर्णन करने की किसी प्रकार की आवश्यक्ता नहीं है कि हमारी जाति में सब से बड़ा नुकसान फिजूल खर्ची से है इस से बहुत बड़ी २ खराबी और बुराईयां इस जाति में फैलगई हैं हम को अभी पापी दुराचारी भी इस ही फिजूल खर्ची ने बनाया है धर्म से अरुचि इसी फिजूल खर्ची के कारण हो रही है सारी उम्र घोर कष्ट और सोच फिक्र में इसही की बदौलत व्यतीत होती है यदि फिजूल खर्ची हमारी जाति से दूर हो जावे तो सब तरह की भलाई फिर हम में पैदा होजावे— जब तक हम इस दुष्टनी के बस में रहेंगे तब तक इस जाति का उन्नति के द्वार सब बन्द रहेंगे जब फिजूल खर्ची का और खराब रस्मों का टैक्स आमदनी से ज्यादा लगा हुआ है तो ऐसी दशा में न खानेमें खर्च किया जासकाहै न पीने में न विद्याध्ययन में न धर्म में और यही दशा इस जाति की बीत रही है कि सब कमाते और पैदा करते हैं परन्तु तो भी रूखी सूखी रोटी खाकर बड़ी मुश्किल से अपना पेट भरते हैं क्योंकि लाचार हैं— कि लड़की के विवाह में आध सेर पक्की मिठाई की पत्तल बनवाकर झूठन का बहुत बड़ा ढेर लगवाना है और भंगी का घर भरना है अगर अच्छा खाना खावें तो आध सेर की पत्तल कैसे बन सकेगी—इस जातिके लोगोंके तन पर अच्छा कपड़ा नहीं पड़ सक्ता क्योंकि बेटे के विवाह में भाड़— और कमीनों को दुशाले और जोड़े इनाम में देने हैं-- खुद कपड़ा अच्छा पहने तो इनाम कहां से देंगे एक पैसा या एक चुटकी आटा भूखे को नहीं दे सक्ते— क्योंकि ढोलों पर रुपया फेंक कर भंडों और मुसंडों को लुटाकर और भंगिओं से भिड़कर नाम करना है यदि दान में खर्च करके पुण्योपार्जन करते हैं तो रुपया फेंक कर नामवर प्रगट होने के

लिये धन कहां से लावेंगे– धर्म उपदेश में एक कौडी खच नहीं कर सके क्योंकि बेटे के विवाह में रंडी नचवाकर व्यभिचार का उपदेश दिलवाना है यदि धर्मोपदेश में खर्च किया तो नाच के वास्ते धन कहां से आवेगा। लडकों की पढाई में एक पैसा नहीं लगा सके क्योंकि विवाह में भांड भडुये नचाकर बच्चों को बेअदबी और गुस्ताखी की तालीम देनी है शरम और हया को खोना है– अगर लडकों की पढाई में कुछ खर्च किया गया तो गुस्ताखी की तालीम देने को कहां से बचेगा– धर्म विद्या पढाने को पंडितों आदि के खर्च के वास्ते कहां से लावें- क्योंकि बेटे के विवाह में रुपयों की मूठें फेंकना है– बुड्ढे मां बापों को क्यों न तरसावें उनके खाने पीने को कहां से लावें उनके मरने के पीछे लाश पर बहुत सी नकदी बखेरनी है और बिरादरी के लिये मिठाई की ज्यौनार करनी है अगर इनको खाने पीने को दें तो मरने पर खर्च कहां से आवेगा अब विशेष क्या लिखूं बुद्धिमानों के लिये इशारह ही काफी है जब तक यह फिजूल खर्ची दूर नहीं होगी कोई उपदेश या उपाय उन्नति का कार्यकारी नहीं हो सका है इस वास्ते मैं इस जाति के धनवानों विद्वानों और जाति हितैषुओं से सविनय प्रार्थना करता हूं कि ऐ इस कौम के मल्लाहो यह किश्ती जिसके तुम चलाने वाले हो भंवर में पडी हुई गहरे पानी में गोते खारही है अब इसके डूबने में कुछ कसर बाकी नहीं रही है अगर अब भी तुमने इसकी खबर नहीं ली तो फिर पता भी नहीं लगेगा ॥

प्यारेलाल

मंत्री श्री जैन पुरुषार्थ

इटावह

धनवानों से प्रार्थना

जरा गौर करके देखिये कि बनास्पति वृक्ष इत्यादिक जीव हमारा कितना बडा उपकार करते हैं कि बिना इनके उपकार के हमारी जिन्दगी ही नहीं रह सकी। हम लोग जो रोज भोजन करते हैं वे सब वृक्ष ही के दिये हुए हैं तरह तरह के फल फूल वृक्षों से ही हम लोगों को मिलते हैं और औषधियां भी वृक्ष की ही जड छाल इत्यादिक से बनती हैं जिससे हमारे सकल रोग नष्ट होते हैं शरीर पुष्ट होता है। वाह वाह! क्या कहना कितना बडा उपकार है जिसकी प्रसंशा बृहस्पति भी अपने मुख से नहीं कर सके फल तो वृक्ष पैदा करे लेकिन वह आप उनको नहीं भोगता किन्तु दूसरों को देता है वृक्ष में बहुत सी शाखें पत्तों से भरी हुई होती हैं जिनकी छाया में हम लोग विश्राम करते हैं वृक्षों से उगाली गई सुन्दर हवा को हम लोग ग्रहण करते हैं शरीर के हिस्से इसही हवा के स्प

यों से तरोताजे हो जाते हैं यहां तक कि यही वृक्ष अपना शरीर भी हम लोगों के रक्षणार्थ अर्पण कर देते हैं (छाल लकड़ी इत्यादि)

जितने वृक्ष हैं सब अपने २ गुण माफिक परोपकार करते हैं आम इत्यादिक मिष्ट २ फल देते हैं बर्गद पीपल इत्यादि से सुन्दर ठण्डी २ छाया मिलती है सैकड़ों जीवों को विश्राम मिलता है। नीम इत्यादिक अपनी पत्तियों और छालों से रोग नष्ट करते हैं यहां तक कि हर एक वृक्ष अपनी शक्ति समान सब को उपकार पहुंचाते हैं ॥

यदि फलदार वृक्ष अपने फलों को दूसरों को न देवें तो वे फल सड़ जावेंगे और दरख्त भी खराब जावेगा और फिर दूसरी फसल में उतने फल उसमें नहीं लगेंगे। लेकिन अगर फल तोड़ डाले जायें तो दरख्त भी बहुत खुश होता है फिर फूलता है और आगामी फसल में पहले से ज्यादः फल पैदा करता है ॥

बड़े ही अचम्भे और शर्म की बात है अगर हम लोग पंचेन्द्री हो करके संसारिक जीवों को अपनी शक्ति सम कुछ भी उपकार न करें ॥

धिक्कार है उन लोगों को जो उत्तम २ फल [धन, विद्या, पदवी] पा करके दूसरों (अपने जाति भाइयों तक) को भी न चखावें आप ही भक्षन कर जांय या (शायद) खजाने में पड़े २ सड़ने दें ॥ नहीं साहब कभी नहीं । वे लोग उत्तम २ फल (धन इत्यादिक) पाए हैं तो क्या वे उनको सड़ने देंगे ? कदापि नहीं, कदापि नहीं । बल्कि दूसरों को देवेंगे जिसमें पर जीवों का अर्थात् स्वजैन जाति का दुःख दूर होवे तब कहीं एक फल वह खावेंगे [उम्मेद तो ऐसी ही है]

ऐ मेरे प्यारे धनवान जैन महाशयो ! आप लोगों को वृक्ष से पंचगुणा उपकार करना चाहिये क्योंकि वृक्ष एकेन्द्री हैं आप पंचेन्द्री हैं ॥

ऐसा अगर आप विचार करके परोपकार करें तो जैन धर्म का प्रकाश बहुत जल्द होजायगा और एक जैन महा विद्यालय बहुतही सुगमता से बन जायगा। अगर परदुख हरण की इच्छा होतो एकही धनाढ्य पुरुष यह काम कर सका है, देखिये साहब जो ओसवाल स्वेताम्बर जैनियों में बम्बई के एक रईस जौहरी ने २०००००) दो लाख रु० अकेले एक विद्यालय बनाने के वास्ते अलग करलिया कितना बड़ा उपकारक काम किया, कितना दूर २ तक उनका नाम फैला, कितना पुण्य हुआ कुछ सीमा नहीं ॥

बस दिल खोलकर परोपकार के लिये कमर कस लीजिये। अपनी जाति के मूर्ख दीन बालक बालिकाओं पर दया

कीजिये । उनके रोने को सुनिये दया रूपी दान प्रदान कीजिये मनुष्य जन्म पाने और धनाढ्य होने का उत्तम फल भोगिये परलोक के लिये पूंजी (पुण्य) जमा कीजिये दान के समान और पैसा नहीं है जो हमारे साथ इस संसार रूपी सराय से कूच करने पर साथ जावेगा ॥ इस दास का अपराध भी क्षमा कीजिये"

सीतलप्रसाद

कलकत्ता

जैन गजट के पढने से क्या २ लाभ होता है

विदित होकि आज कल जिस जाति में संसारिक और धार्मिक कार्यों की उन्नति देखी जाती है सो एक मात्र उस जाति सम्बन्धी समाचार पत्रों [अखबारों] के द्वारा ही हुई है क्योंकि बिना समाचार पत्रों के समाज मात्र की भली बुरी व्यवस्था हर एक भाई के पास किसी प्रकार भी नहीं पहुंच सकती जिससे कि वे जाति धर्मोन्नति में अपना मन लगावें इसी अभिप्राय से यह अमूल्य अद्वैत सप्ताहिक जैन पत्र भारत वर्षीय श्री जैन धर्म संरक्षणी महा सभा मथुराजी की तरफ से श्री मान श्रेष्ट शिरोमणि श्री लक्ष्मणदास जी सी. आई. ई. [सभापति महा सभा मथुरा जो कि आज कल हमारी जैन जाति की उन्नति के लिये तन मन धन से कटिबद्ध हैं] की आज्ञानुसार श्री मान् देशोपदेशकारक श्री मज्जैन धर्म धारक विद्योन्नति कारक, सद्गुण विस्तारक महाशय बाबू सूर्यभानजी साहब वकील देव बन्द सम्पादक (एडीटर) के अति सुन्दर और प्रशंसनीय प्रबन्ध से छपता है— हमारे महोत्साही महाशय उक्त बाबू साहब जिनका हृदय जैनियों की हीन अवस्था के अवलोकन से निरन्तर क्लेशित रहता है और जैन जाति की उन्नति के लिये तन मन धन और वक्त से अहर्निश कटिबद्ध हैं जैन जाति के अज्ञान रूपी अन्धकार को सूर्य समान नाश करने को उद्यमी हुए हैं ॥

इस अमूल्य पत्र [जैन गजट] के पढने से अगणित अकथनीय लाभ है परन्तु उन मे से कुछ थोडे से जो प्रत्यक्ष हैं मैं अपने अनुभव और लघु बुद्धि के अनुसार लिखता हूं ॥

प्रथम— इस गजट में महा सभा की समस्त कार्रवाई और देश देश के जैनी जैन मंदिर, जैन सभा, जैन पाठशाला, जैन मेला आदि के उत्तमोत्तम समाचारों के सिवाय ऐसे २ धर्मोन्नति कारक उत्तमोत्तम लेख (मजमून) छपते हैं कि जिनके बांचने सुनने से पत्थर की समान कठोर हृदय वालेका भी चित्त अपनी जात्योन्नति के लिये एकायक उमड आता है और रग २ और रोम २ में जवांमर्दी का जोश आजाता है (शेष अग्रे)

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको अवश्य श्रीमंदिरजी
में सब भाईयों को जरूर पढ़ कर सुना दीजिये

इस पत्र को सब जैनी
भाईयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य एकवर्ष का डाकव्यय
सहित केवल तीन रुपया है

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करे, धर्म शुद्ध परकाश
करे अविद्या व्यर्थव्यय, आदिक सब का नाश

हर अंगरेजी महीनेकी १—८—१६—२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० १ अक्टूबर ... सन १८९५ ' अङ्क ४ ॥
बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

सागर

आप के अंक ३८ जैन गजट में शास्त्र स्वाध्याय पर १ लेख अति उत्तम था बांच कर निम्न लिखित भाईयोंने शास्त्र स्वाध्याय सुनने की तथा बांचने की प्रतिज्ञा ली है ॥

१ अजुध्या प्रसाद मंत्री जैन सभा २ हंसराज परिवार ३ भोंदूलाल बैसाखिया ४ सिगई बुधुलालजी ५ पन्नालालजी ६ नरायण दासजी चौधरी ७ पन्नालालजी मोदी ८ गिरधारी लालजी सिघई ९ डालचन्दजी सिगई १० करनजू बैसाखिया ११ उत्तमचन्द सिघई १२ हजारी लालजी सिघई १३ छोटेलालजी सामिया १४ भूरेलालजी बाजर १५ भैयालालजी चौधरी १६ दंगलीमल विद्यार्थी १६ नाथूराम सिगई विद्यार्थी १७ बब्बू कठरया विद्यार्थी १८ मोतीलाल दलाल १९ सिघई केवल रामजी २० सिघई कारेलालजी कठरिया २१ बिहारी लालजी चौधरी २२ सिघई मंजीलालजी २३ तेजराम जी वडकुर २४ मुन्नालालजी बैसाखिया २५ खुनके लालजी मोदी २६ मौजीलालजी २७ प्यारेलाल विद्यार्थी २८ गंगादीन गंधी २९ बिहारीलाल जी सिगई ३० कन्छेदी लालजी अध्यापक कन्या पाटशाला ३१ बलीरामजी सिगई ३२ मोहनलालजी सिगई ३३ रामलालजी दलाल ३४ रज्जूलाल मोदी ३५ बिहारी लालजी म... शुरवाले ३६ टीकारामजी मोदी ... हजारी लालजी सिगई ३८ गिरधलालजी चौधरी ३९ बद्दूलालजी ...द्यार्थी ४० परमानन्दजी मोदी ... रनचन्दजी ४२ मुन्नालालजी सिगई ... दौलतरामजी खजानची ४४ ननाई... लजी मोदी टोंडया ४५ लोकमन कम्पोन्डर अस्पताल ४६ हीरालाल जी चौधरी विद्यार्थी ४७ दमरूमल विद्यार्थी ४८ रज्जूमल विद्यार्थी ४९ मन्नूलालजी सामियां— इन सम्पूर्ण महाशयों ने किसी ने जन्म पर्यंत की किसी ने सालभर की किसी ने ६ महीने की किसी ने ३ महीने की किसी ने १ महीने की प्रतिज्ञा ली है—

सम्पादक— उक्त ग्राम के भाई अवश्य प्रशंसा योग्य हैं परन्तु सालभर से कम दिनों की प्रतिज्ञा लेने वाले भाईयों से प्रार्थना है कि वोह अपनी प्रतिज्ञा को १ साल तक की तो अवश्य कर देवे जब तक दूसरा भाद वा शुरू न होवे तब तक तो स्वाध्याय अवश्य ही किया करें ॥

चिट्ठी
विद्वान स्त्री

महाशय बाबू सूरजभानुजी ।

मै आज बारह दिन से शहर इन्दौर मे आयाहूं और अभीतक मैने शहर को भले प्रकार नहीं देखा केवल शक्करबाजार के तीन मंदिरों के दर्शन करने में आये हैं जिस में नये और बडे मंदिर को देखकर चित्त प्रफुल्लित होता है, जो आनन्द देखने में आया वह लिखने में नहीं आता, तेरापन्थाम्नाय का अच्छा प्रचार है, भ्रातृगण की धर्म में प्रीति भी खूब और यथा समय अच्छी है. परन्तु एक समाचार को सुनकर दिल थर थर कांपने लगा हाथ पांव फूलगये प्रथम तो यही समझा कि यह कहने वाले की गप्प है किन्तु निश्चय किया तो यथार्थ पाया कि यहां के जैनी लोग विवाह शादियों में सैंकड़ें रुपये की आतिशबाजी फूंकते हैं, यह कितने बडे अन्धेर की बात है. और खासकर उस नगर में यह अन्धेर होता है कि जहां पन्नालाल के पिता मरगद्दलाल रहते हैं, जो नई रोशनी वालों का नाम सुनसुनकर आलोचना किया करते हैं, और जैनी मात्र को सदैव हिंसा से बचाना भला समझते हैं मैं नहीं समझता कि जिस विवाह में आतिशबाजी बागबाड़ी न लुटाईजाय वेश्या न नचाईजाय तो क्या वह बिवाह नहीं कहलाता है या वह वर बधू का सम्बन्ध टूटजाता है जो धर्मात्मा जैनी भाईयों की कमाई हिंसक पापी विषयी प्राणियों को खिलाई जाती है, मेरा विचार है कि यदि दशलाक्षणी के दिनों में कोई समय अवकाश मिला तो इस विषय में अवश्य कुछ कहा जायगा, एक स्त्री जिस की अवस्था इस समय ६० वर्ष के अनुमान है, जैन धर्म की धारक दक्षिण की रहनेवाली नागर ब्राह्मणी है, शास्त्रों में उस को अच्छा बोध है कुछ कविता भी करती है, उसने एक सती चारित्र नाम पुस्तक लिखी है जिसमें एक स्त्री का जन्म से लेकर मर्ण समय तक हाल कहानी के रूप में लिखा है जिसके पढनेसे स्त्री कैसीही खोटे आचार की क्यों हो शीघ्र सुधर जाती है. उक्त बाई का विचार उसके छपाने का है परन्तु द्रव्य के अभाव से कुछ नहीं होता पुस्तक बडी है, मैंने तो उन से कहा कि थोड़ी २ मासिक पत्र के तौर से प्रकाशित होजाय तो अच्छा हो इस पर बहुत सम्मति होने पर जैसा समझमें आवेगा होगा और उक्त बाई कन्या पाठशाला पढ़ाना खुशी के साथ स्वीकार करती हैं, परन्तु कहती है, जैनी कन्या शाला हो और पाठशाला का स्वामी उन के लिये रसोई का सामन शुद्ध मंगा देवे का खुद जिम्मेवार होवे. वेतन भी अपने गुजार मुवाफिक १०, महीना चाहती है अधिक नहीं जिस भाई को कुछ पूछना हो मुझ से पूछ लेवें. लेकिन पत्र फर्रुखनगर के प-

से आना चाहिये । कि बहुना

भवदीय शुभचिंतक
ज्योतिष रत्न पंडित जीयालाल
चौधरी फर्रुखनगर निवासी

मिथ्यात्व

सम्यक्त अर्थात सच्चे श्रद्धान के विपरी
त श्रद्धान को मिथ्यात्व कहते हैं इस बात
के सिद्ध करने की और उदाहरण देने की
तो आवश्यक्ता नहीं है कि जैनियों में मि
थ्यात्वका प्रचार कुदेवादिक का पूजना ब-
हुत हो रहा है क्योंकि इस बात से कि-
सी को इनकार नहीं है और न्यूनाधि
क सब ऐसे ही प्रवर्तते हैं मिथ्यात्व प्रचा
कुदेवादिक का पूजना धर्म से विरुद्ध
पापका मूल है और अनेक भव में दुख
का देने वाला है ॥ क्योंकि सब जैनी अ
पने मुख से मिथ्यात्व और कुदेवादिक के
पूजने को बुरा कहते हैं परन्तु अब विचा-
रनीय यह बात है कि कुदेवादिक का से
वन क्यों है क्यों कुदेवादिक में श्रद्धान
हो रहा है या लोक मूढता के कारण दे-
खा देखी एक रीति पूरी करने के समान
किया जाता है क्योंकि श्रद्धान भ्रष्टका
पूछना आसान है हम यह बात देखते हैं
कि बहुधा करके संतानादिक की प्रीति वा
रक्षा के हेतु वा किसी दुख के दूर करने
के हेतु कुदेवादिक का पूजना होता है इस
कारण जब कभी कोई बुद्धिमान परोपका-
री पुरुष किसी को कुदेवादिक पूजने से
बर्जता है तो यह उत्तर मिलता है कि ग्र
हस्थी से यह बात नहीं हो सक्ती है कि
कुदेवादिक का सेवन न किया जावे क्यों-
कि यह नहीं हो सक्ता है कि अपनी औ
र अपनी सन्तान की रक्षा न की जावे जि
स मनुष्यके कोई कुटम्ब नहीं वह अवश्य
ऐसे काम का त्याग कर सक्ता है ॥ इस
उत्तर से स्पष्ट विदित होता है कि कुदे-
वादिक सेवन करने वालों का केवल आ-
चारही भ्रष्ट नहीं है वरन श्रद्धान भी
भ्रष्ट है क्योंकि उन को यह निश्चय है
कि कुदेवादिक संकट के दूर करने वाले
और सुख सम्पति के देने वाले हैं ॥

हाय हाय ! हमारी जाति के मनु-
ष्यों के बहुधा करके श्रद्धान भ्रष्ट हों औ
र फिर भी हमारे धर्म की न्यून दशा हो
गई हुई स्वीकार न करें ॥ और ऐ भाई-
यों जरा यह विचारो कि हमारा श्रद्धान
भ्रष्ट क्यों न हो क्योंकि धर्म विद्या हम प
ढते नहीं शास्त्र स्वाध्याय करना जानते
नहीं और शास्त्र श्रवण करते नहीं केवल
यह बात निश्चय किये बैठे हैं कि जो जैन
जाति में पैदा हुआ है वह जैनी है और
अवश्य स्वर्ग उसी के वास्ते बना है और
अन्य मतानुयाई नर्क में जावेंगे ॥ अ-
र्थात जैन कुल में पैदा होना ही स्वर्ग प्रा
प्ति के वास्ते काफी है ऐ भाईयों क्यों सो
ये पड़े हो जागो उठो धर्म विद्याका प्रचा
र करो जब तक धर्म विद्या को न जानोगे
तब तक जैन धर्म को नहीं पहचानोगे औ

र उस पर श्रद्धान नहीं करोगे केवल नाम मात्र के जैनी हो ॥ इस कारण ऐ जैनी भाईयो यदि तुम चाहते हो कि जैन धर्म कायमरहे यदितुम जैन को धर्म जानते हो यदि तुम धर्मानुरागी हो यदि तुम को अपने हित की इच्छा है तो सब से पहले अपने धर्म के जानने की कोशिश करो नहीं तो बिना धर्म के जाने तुम्हारे दर्शन पूजा करने व्रत उपवास रखने आदि के कार्य लोक दिखावे के हैं और संसार को ठगने के हैं इस से तुम्हारे परमार्थ का कुछ लाभ नहीं है किन्तु हानि है॥

प्यारेलाल सभासद
श्रीजैन पुरुषार्थ सभा
इटावह

जैनगज़ट पढनेसे क्या लाभ होताहै

अंक ४४ पृष्ट २० आगे

इस के पढने से यह श्रद्धान अवश्य हो जाता है कि अब जैन धर्मोन्नति के दिन आगये जैनियों की निद्रा का समय बीत गया ज्ञान का प्रभात आता होगया है और अब कोई भी प्रमादी और निरुद्यमी नहीं रहेगा ऐसा ज्ञान केवल इस जैन गजट के पढने से ही होता है ॥

दूसरे— यह उपदेशकों और पंडितों की तरह उपदेश देता है और हम सारिखे प्रमाद मे सोते हुए जैनी भाईयों को जगाकर धर्म में लगाता है जिससे हम अन्याय कार्यों से दूर रहते हैं और शुभ कर्मों में प्रवर्तते हैं इसी के पढने से जगह २ की सर्व प्रकार की खबरें मिलती हैं— जैन पाठशाला, जैन सभा, जैन धर्म, जैन जाति की उन्नति के नये २ उपाय मालूम होते रहते हैं. जिन मन्दिरों की संख्या कहां २ के कौन २ भाई क्या २ व्यापार करते हैं और क्या २ पढते पढाते हैं अर्थात् जहां के भाईयों की जैसी कुछ हालत होती है ज्यों की त्यों मालूम होजाती है प्रार्थना करने वाले भाईयों की प्रार्थना बिरादरी में परस्पर के झगडों का फैसला करके आपस में गौवत्स की सी प्रीति बढावना इत्यादिक सैकडों फायदे इस गजट के पढने से जाने जाते हैं ॥

तीसरे— इसी गजट के द्वारा हम को यह ज्ञात होता है कि अमुक स्थान के पंचायत या सभा करके आपस के बैर विरोध को मेटा फलां २ कुरीतें और फिजूल खर्ची दूर की सुरीति और शुद्धाचार प्रवर्ते और विद्या धन और धर्म बढाने की रीति का प्रकाश किस तरह पर किया ॥

(चौथा) कौन २ स्थान के कौन २ मुखिया, धर्मात्मा, धनाढ्य, परोपकारी, जाति हितैषी भाईयों ने विद्योन्नति, धर्मोन्नति, जात्योन्नति के हेतु तन मन धन से कौन २ से उपाय और तदबीरें की हैं और कर रहे हैं कहां पर कौन २ राह रीति प्रवर्ते हैं कहां के भाईयों के कैसी धर्म में रुचि है मन्दिरों में पूजन प्रक्षाल

की क्या कैफियत है आमदनी खर्च की सूरत है यदि हम जैन गजट न पढ़ते तो हम श्री सेठ लक्ष्मणदासजी मथुरा— सेठ मूलचन्दजी अजमेर— लाला उग्रसेनजी सहारनपुर—सेठ हरमुख रायजी अमोलिक चन्दजी सुराना— सेठ फतहचन्द कुशाला जी इन्दौर— सेठ रामभाऊ राय बहादुर शोलापुर— सिंघी चुन्नीलालजी अमरावती लाला शालिगरामजी· हाथरस— ला० गुलाबदासजी नागपुर ला० दुलीचन्दजी धारवाल इत्यादिक आज के समय में बडे २ साहूकार और भी दक्षिण में मशहूर हैं जिन धर्मात्मा परोपकारी महाशयों के नाम और उनके किये हुए महान धर्म कार्यों को कैसे जानते ॥

[पांचवां] इस गजट के उत्तमोत्तम लेख पढ़ने २ और अपने यहां की सभा में सुनाते २ हम विद्यार्थियों को किसी समय में सुन्दर मनोहर उपदेश रूप लेख लिखने और उत्तमोत्तम व्याख्यान देने की संभावना हो सकती है, उन्हीं के प्रभाव से कुसंगति मिथ्या मार्ग मिथ्या भाषण आदिक दोषों से बचकर सत संग में रहकर सत्य मार्ग में चलकर सत्यता से न्याय पूर्वक धनोपार्जन कर आनन्द से अपनी सम्पूर्ण आयु व्यतीत कर सके हैं मैं अल्प बुद्धि विद्यार्थी हूं और ज्यादा क्या लिखूं, फक्त.

भगवानदास विद्यार्थी

श्री जैन धर्म

पाठशाला

इटावह

(सच्चाधर्मानुराग)

बीबी धनवन्ती लाला अमरसिंह की छोटी बहन कि जिसकी आयु सिर्फ १८ वर्ष की थी और हिन्दी अर्थात देवनागरी भाषा पढी हुई थी और जैन धर्म में भी अधिक रुचिथी मरने से कछ समय पेश्तर कि उस वक्त उसको तकलीफ थी धर्म सुनने के वास्ते कहा— सो सुनाया— और उपरोक्त बालकाने धर्म सुनते वक्त यह भी कहा के अंकन ५०) रुपये श्रीजैन कालिज के वास्ते श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० को भेज देना— और अंकन २१) रुपये जैन मंदिर सिवहारे को देने के वास्ते कहा और एक पहुंची और एक तगड़ी चांदी की वास्ते श्रीजैन मंदिर अफजलगढ जिला बिजनौर के वास्ते चढाने को कहा और उक्त बालका अफजलगढ़ की ब्याही थी लाला लछमनदासके लडके लाला न्यादमल से व्याही थी सो इस असार संसार से सिर्फ सादे बरी १० बार बुद्ध को कूंच किया और यहां यह रिवाज था के मृतक के पीछे स्त्रीयें जाया करती थीं सो यह कुरीति बंद कीगई अब मैं सर्व जैनी भाइयों से प्रार्थना करता हूं कि इस कुरीती को अपने अपने नग्र में

बंद करने का प्रबन्ध करैंगे वर्षों के मृतक के पीछे जो कीर्ये जाती हैं तो बड़ी लज्जा है मृतक के शोक में रोती पीटती चिल्लाती अपने सरीर की कुछ खबर नहीं रहती अन्यमती देख देख कर जैनियों की हंसी करते हैं आपका शुभ चिन्तक गुलजारीमल उपमंत्री जैन सभा सिवहारा— जि० बिजनौर मिती भाद्रपद सुदी २ सं १९५३ वि०— शुभम ॥

हिम्मतपुर की जैनसभा

बाबू साहब मिती सावन सुदी १४ को यहां पर सभा हुई और सभा में करीब ७० के पुरुष स्त्री एकत्र हुये और लाला छुन्नीलाल ने प्रथम मंगलाचरण पढ़ कर फिर ऐक्यता के विषय में व्याख्यान दिया सो सुन कर सर्व भाई सरल स्वभाव अथवा परस्पर स्नेह धारते भये और भाई छेदालालजी ने फिजूल खर्ची के विषय में व्याख्यान दिया सो कुछ भाईयों ने सादी में वेश्याका नाच बिल्कुल बंद कर दिया और आतिसबाजी १।)रुपये की रक्खी और कुछ भाई बाकी हैं उन के भी दसखत अब की सभा में हो जायगे फिर लाला मित्र संकर लाल मुदर्रिस कायस्थ साहब ने धर्म के विषय में बहुत अच्छी तरह ललित बानी से काव्य छंद छप्पे चौपाई में व्याख्यान दिया सो सर्व सभासदों के मुख से धन्य २ शब्द निकला और धर्म की तरफ बहुत रुची हुई और लाला वंचनलाल ने विद्या के विषय में बहुत अच्छी तरह से व्याख्यान दिया सो सुन कर बहुत भाईयों ने स्वाध्याय की आखड़ी लई और विद्या की तरफ बहुत जोर दिया और लाला सुन्दरलालने लोभ और क्रोध के विषय में कहा सो सब सभासदों के उपर असर हुआ और सरल स्वभाव को धारते भये और क्रोध वा लोभ को बुरा जान धिक्कार देत भये

छुन्नीलाल हिम्मतपुर

जिला आगरा

सम्पादक - हम उक्त ग्रामके समाचार बांच कर बहुत प्रसन्न हुये परन्तु एक सन्देह की बात है— क्या आतिशबाजी बगैर लेजये शादी विवाह आदि कार्य नहीं हो सक्ता जो १।) रु० की आतिशबाजी नाम मात्र रक्खी गई है इस से तो हम को ऐसा ही ज्ञान होता है कि विवाह आदिक कार्य में आतिशबाजी की अवश्य जरूरत होती है भाईयों कदापि नहीं ऐसा करना चाहिये जो वस्तु कि खराब है उस का एक किणका भी नहीं रखना चाहिये इस लिये अब उक्त ग्राम के भाईयों से निवेदन है कि

इस (१) रुपया की आतिशबाजी को भी बन्द करदेवें ॥

भरतपुर

यहां भाई साहब पं० फौजीलालजी लुहाड्या हाथरस निवासी (जो अब बम्बई रहते हैं और उन की यहां सुसराल है) हम लोगों के भाग्योदय से सावन वदी ३ को यहां पधारे हैं आप जैसे धर्मात्मा— सज्जन— परोपकारी— गुणवान— हैं मैं वर्णन नहीं कर सक्ता जिन महाशयों का इन से परिचय होगा खूब जानते होंगे इन की जितनी प्रशंसा करूं थोडी है मेरी शक्ति नहीं जो इन के गुण वर्णन करूं— इन के पधारने से और ललित उपदेशों से जो धर्म का उद्योत यहां हुवा है वो प्रकाश करता हूं ॥

(१) आपने रत्न करंड श्रावकाचार के कंठ याद करने की आवश्यक्ता श्रावगोंको और उसके गुण अच्छी तरह प्रगट करके उस के याद करने की प्रेरणा रूप उपदेश ऐसी मिष्ट बचनों से कहा कि करीब २५ भाईयों ने याद करने की प्रतिज्ञा करी और बड़े हर्ष की बात है कि याद करना भाईयों ने प्रारम्भ कर दिया आशा है कि सर्व ही महाशय इस कार्य में जल्दी करेंगे— अब में उक्त भाई साहब की आज्ञा नुसार सर्व भाईयों से सविनय प्रार्थना करता हूं कि सर्व ही महाशय इसको प्रतिज्ञा पूर्वक कंठ याद करें और अपने पुत्रादिक सर्व को याद करावें पढावें— और यह जैसा उपकारी है और इस के याद करने से जो कुछ लाभ होगा वो सर्व पर प्रगट है जो भाई प्रतिज्ञा करें वो जैन गजट में छपा देवें जिस से मुझ को हर्ष प्राप्त हो और दूसरे भाईयों को उत्कंठा याद करने की हो॥

(२) आप के उपदेश से यहां स्त्रियोंने पूजाकरी आप की स्त्री (जो यहां के भाई गोपाल सिहजी बडजात्या की पुत्री है पढी हुई है पूजन अच्छी तरह करती है उन के साथ यहां की दो तीन स्त्रियोंने भगवान की पूजाकरी वदी ६ वा अष्टमी दो दिन दुपहर पीछे मंदिरजी में पूजन हुई उस समय का आनन्द वचन अगोचर है हम लोगों ने पूजन पढाकर जन्म सफल किया— यह सनातन रीति यहां अज्ञानता काल दोष से बहुत दिन से प्रचलित नहीं थी सो धन्य है इन भाई साहब को जिन्हों ने ऐसा आनन्द हम लोगों के दृष्टि गोचर किया सर्व भाईयों को मुनासिब है कि स्त्री शिक्षा का पूरा प्रबन्ध करें स्त्रियों की अज्ञानता से जो २ हीन चार कुरीति हमारी जाति में हो रही है

वो प्रगट है मैं कहां तक वर्णन करूं और स्त्री शिक्षा के होने से सब कुरीति दूर हो कर उस के अति रिक्त व्रत और शुद्धाचार होने की संभावना है महा सभा को इस तरफ ध्यान देकर इस का प्रबन्ध पूरा २ करना चाहिये— मैं यह भी प्रगट करता हूं कि यहां १ स्त्री पढी हुई है मंदिरजी में शास्त्रजी रोज बांचती हैं उन से दो तीन स्त्री और भी पढती है आशा है कि वो भी हो जावेंगी ॥

(३) सावन वदी १ को सभा हुई तब भाई साहब ने स्वामी कार्तिकेयानु प्रेक्षा की गाथा कह कर अनित्यानु प्रेक्षा का वरनन विस्तार सहित ऐसी मिष्ट वाणी मे कहा कि सर्व सभा चकित हो गई फिर सप्त व्यसन के दोष अच्छी तरह कह कर श्रावग को इन के त्याग की मुख्यता वर्णन करके सर्व सभासद भाईयों से इन के त्याग की प्रेरणा करी— और सर्व भाईयों ने यथा शक्ति प्रतिज्ञा करी— सप्त विसन इस लोक और परलोक में कैसे दुख दाई हैं वो सर्व पर प्रगट हैं मेरे लिखने की जरूरत नहीं इन का त्याग श्रावग को सब से पहले करना चाहिये आशा है कि सर्व भाई इस तरफ भी ध्यान देंगे ॥

(४) सावन वदी अष्टमी को सभा हुई जिस में उक्त भाई साहबने अशरणानु प्रेक्षा का वरनन गाथा कह कर बहुत अच्छी तरह किया उस समय मेह के कारण करीब २५ भाई सभा में आये सब हर्षित हुए पश्चात भाई साहब ने कुदेवादिक [जिन को इस समय में लोग शरणजान उनसे अपने पुत्रादिक की रक्षा मान पूजते हैं कि अधुवता और अशक्यता औ उक्त पूजने वालों के विचार को अच्छी तरह झूंठा सिद्ध किया उस समय का अनन्द लिखा नहीं जाता पीछे भाई साहबने सर्व सभासद महाशयों से कुदेव पूजन के त्याग का उपदेश दिया तो बहुत भाईयोंने यथा शक्ति प्रतिज्ञा करी— कुदेवादिक का पूजना [जिस को लोग सुख की अभिलाषा कर के करते हैं] भव २ में कैसा दुख दाई है जिसका विशेष हाल कहां तक लिखूं यह अविद्या का महातम है कि जैनी लोग बहुधा कुदेवों को पूजते हैं जिस कारण इस लोक में अन्यमती उन की निंदा करते हैं कि यह कैसे जैनी हैं जो अन्य देवों को पूजते हैं और बहुधा कुदेव पूजने के कारण बालक प्रक्षणों का इलाज नहीं होता जिस से वे मरण कर जाते हैं कुदेव पूजने वाले अपनी तो क्या धर्म की हास्य कराते हैं और पर भव में ऐसे कर्मों से जैसा दुख होना है उस को अंश मात्र भी लिखनो की मेरी सामर्थ नहीं है

बस मेरी सविनय प्रार्थना है कि सर्व भाई ऐसे दुख दाई कार्य को अवश्य छोड़ें विलम्बन करें और विचारलें अद्भुत अनुपम श्री जिन धर्म पाकर इस को वृथा खोदेना योग्य नहीं ॥

अभी हमारे शुभोदय से उक्त भाई साहब यहां ही उपस्थित हैं इन के विराजने से इतना धर्म का उद्योत हुवा और भी कोई बातों में आप की कोशिश है जो २ काम होंगे उन को पीछे लिखूंगा ॥

मैं इन भाई साहब को कहां तक धन्यवाद कहूं मेरे चित्तको जो लाभ और हर्ष इन के समागम से हुवा है मैं प्रगट नहीं करसक्ता— और यहां के भाईयों को मैं अनेक २ धन्यवाद देता हूं जिन्होंने भाई साहब के कहने से धर्मोन्नति पर कमर बांधी— और मेरी सर्व भारत निवासी जैनी भाईयों से सविनय प्रार्थना है कि धर्म कार्य में जहां तक हो सके पूरी २ कोशिश करें धर्म ही भव २ में सुख दाई है संसार असार है सर्व ठाठ विनाशी है विशेष कहां तक लिखूं जो शब्द मेरे से अनुचित निकल गया हो सर्व महाशय क्षमाकरें मिती सावन वदी १३ सं० १९५३ ॥

जैनी भाईयोंका दास
चिरंजीलाल श्रावग
भरतपुर

उद्यम

धन्य है उद्योगी महाशयों को उद्योगी पुरुष ही जीत की पताका कर सुशोभित होते हैं धन्य है हे उद्यम तुम को और तेरे सत्कार करने वाले महाशयों को हे उद्यम संपूर्ण कार्यों का सिद्ध करने वाला तुझी दृष्टि आता है तेरी महिमा वचन अगोचर है क्योंकि जिसने उद्यमी होना अंगीकार किया उसने सर्व कार्यों में उन्नती कर दिखाई यहां तक कि घातिया और अघातिया जो अष्ट कर्म तिनको क्षयकर सिद्ध पद को प्राप्त किया— हे उद्यम जो महाशय तन मन धन तीनों से मित्र बने उनका कार्य अब तू शीघ्रता से कर और सम्पूर्ण महाशयों से तू जल्द मित्रता बांध ले और तेरे पुराने मित्र जो जैनी भाई हैं उनको हर प्रकार की सहायता दे अभी तूने बहुत कम शहरों में प्रवेश कर बहुत कम भाइयों से मित्रता बांधी है परन्तु तेरी मित्रता श्री जिन धर्म संरक्षणी महा सभा के कार्याध्यक्षों के साथ हो जाने से पूरा २ उम्मेद है कि वे सम्पूर्ण जैनियों को अति शीघ्र उद्योगी बना देंगे क्योंकि उनके सुललित मनोहर व्याख्यान प्रति सप्ताह सर्व भाइयों के दृष्टिगोचर होने लगे हैं इन व्याख्यान रूपी मंत्रों से आलस्य रूपी सर्प का जहर कुछ २ दूर होता दृष्टि आता है और हे उद्यम बहुत से भाइयों ने तो तुम को अपना परम मित्र भी समझना शुरू किया है परन्तु बड़े खेद की

बात है कि यहां झालावाड में और खास कर शहर झालरापाटन में फकत एक महाशय श्रीमान् श्रेष्ठ दौलतरामजी के सिवाय और कोई भी जैनी भाई तेरे सच्चे मित्र नहीं हैं क्योंकि उनके ही उपदेश से छावनी झालरापाटन में अष्टमी चतुर्दशी की सभाएँ होती हैं उनही के उपदेश से शहर पाटन में प्रति चतुर्दशी की मुकर्रर हुई थी परन्तु उनकी कारवाई प्रमाद युक्त होने से ठीक २ सभा का होना तथा व्याख्यान को लिखकर सुनाना कोई भी नहीं करते हैं क्योंकि हे उद्यम यहां तो तेरा प्रति पक्षी आलस्य अनकर्गीब सम्पूर्ण जैनियों का कुमित्र बन दुशमन हो गया अर्थात् आलस्य वश होकर ऐसी २ कुरीतियों का प्रचार अपणे में करलिया कि जिनके विष से अब समस्त जैनी क्लेशित होरहे हैं और कुरीतियों को छोड सुमार्ग को नहीं पकडते हैं अब तुझ से प्रार्थना है कि जैसे तू अन्य २ नग्र वासियों का मित्र बना है और तेरे प्रतिपक्षी आलस्य से उनका पीछा छुडाया है तैसे ही यहां [झालरापाटन शहर] के भाइयों से मित्रता बांध इनके आलस्य रूपी आशी विष के हलाहल रूपी कुरीतियों को दूर कर— देख ! तेरे न होने से यहां के भाई कैसे होगये क्या तेरे यहां होते इन की ऐसी दशा होती कि सभा मुकर्रर हो जावे सभापति लेखाध्यक्ष कोषाध्यक्ष व्याख्यान दाता सब अपना २ चार्ज लेलेवें और सभा का कार्य कुछ न चले और उक्त पदस्थीय महाशय अपना २ कार्य न करें और प्रति चतुर्दशी ही को एक नाम मात्र की सभा कर आलस्य वश हो जावें ॥

देख उद्यम ! तेरे न होने से यहां के जैनियों में कैसी २ कुरीतियें फैलगई हैं क्या तेरे सामने ऐसे २ कार्य हो सकते हैं कि श्रावण शुक्ला ७ के दिन लडके लडकियां फाकाकसी का उपवास कर कौडियें लेकर श्री शान्तिनाथजी के मन्दिरजी में जूवा खेलने जावें— और लडके अपने माता पिता से कोई वस्तु चुराने के अभियोग में राजदंड पावें— क्या स्त्री जन मोह वश होकर मृतक के तीसरे तथा बारहवें दिन विलाप करतीं श्री शांतिनाथजी के मन्दिर में जावें— क्या ५० पचास आदमी ४० चालीस स्त्रीयां मृतक के घर बारह दिन तक खूब चावल खिचडी उडावें— क्या स्वमत के साथ परमत की ज्योनार कर कच्ची पक्की रसोई के जीमने का कुछ विचार न करें साक्षात साढे बारह न्यात की झूंठन खावें क्या रसोई में सर्व वस्तु रात्रि का बनाया हुवा जैनी खावें ॥

क्या चतुर्मास खास कर श्रावणभादों के महीने में शहर बाहर जाकर लाडु बाटी दाल की गोठ करावें— क्या एक महीने बाद मृतक के जूत की रसोई देवें— क्या दिवाली पर दिवाली के दीपक की

मृतक का पहला त्योहार मानकर भोजन करें— क्या भाद्रव मास की कृष्ण द्वादशी को स्त्री जन जुवार खाकर गाय पूजने जावें— क्या बारह मास में श्राद्ध करें— क्या चैत्र कृष्ण पंचमी के दिवस श्री शान्तिनाथजी के मन्दिर में स्त्रीयें गुलाल उड़ाने होली खेलने जावें— क्या पांच हजार लगाकर अपने दामाद कुमार के वास्ते चत डा चौथ के डंडे लड्डू भेजें और चांदी सोने की पट्टी दवात कलम बनावें और १ अध्यापक पढाने के हेतु मुकर्रर न करें— क्या एक दूसरे को मारना पसन्द करें— क्या अपना अपयश होना पसन्द कर दूसरे जैनी को राजदंड मिलने में खुशी मनावें— क्या रंडी का नाच हरएक छोटे से काम में भी शामिल कर लेवें— क्या स्त्री जन बाजार में भंड वचन बोलती गीत में गाली निकालती जावें— क्या ऐसे सदुप देश कोई महाशय ग्रहण न करें कि दिन में कुशील का त्याग करें स्त्री सेवन का त्याग करें— क्या बिना आतिशबाजी यहां के लड़के लड़कियां कुवांरे रहजाय— क्या आपस की फूट में एक दूसरे पर ईर्षा करते शर्म न करें—क्या तेरे राज्य में (हे उद्यम) अखबार सुननें का उत्साह उत्पन्न न होवें कहां तक लिखूं हे उद्यम जितनी कुरीतियां यहां हैं वैसी कहीं नहीं मानों आलस्य और अविद्या की जन्म भूमि ही हैं यहां के सम्पूर्ण वाशिन्दे क्या गरीब क्या लखपती साहूकार सर्व बे मुरव्वत और गप्पाष्टक मारने के सिवाय दूसरा काम नहीं दिन भर में २ तथा ४ बातें कहीं से ऐसी उठें कि जो निरी झूठ और बिला बुनियाद हों लोगों में फैलती हैं और सर्व का परदा खुलकर सब झूठ मालूम देनें लगती है ऐ उद्यम और जो ! महाराणी विद्या! आप की सेवा में अर्ज करता हूं कि यदि अब भी यहां के भाइयों का शुभ का उदय हो तो आप अवश्य शुभागमन कीजिये ॥

झालरापाटन का एक
शुभचिन्तक

शेरकोट

आप के जैन गजट रूपी उपदेशकनें यहांके भाईयोंके चित्तमें ऐसा उपदेश दिया है कि जिससे वे समझ गये हैं कि जब तक सभाओं द्वारा अयोग्य व्यय को हटाकर उसी व्यय से एक जैन विद्यालय (जिस के स्थापन करने की महा सभा उद्योगी है) स्थापित न किया जायगा तब तक जैन जाति का उद्धार होना सम्भव नहीं दश लाक्षिणी के दिनों में आपका उपदेशक नित्य नवीन २ उपदेशों को प्रदान कर यहांके भाईयोंका ऐसा प्रिय बन गया है कि जब तक उसको आद्योपान्त नहीं पढ लेते तब तक धैर्य नहीं एक दिन का जो आपने अवकाश दिया है वह एक सप्ताह सम व्यतीत होता है कहने में अनु

चित न होगा मैं इस बात के समझने में भी मूढ हूं कि इस का धन्यवाद यहां के भाईयों को दूं कि जो आकर इसका उप. देश श्रावण करते हैं या उपदेशक के भेजने वाले श्रीमान् बाबू सूर्य्यभानु वकील जी को दूं कि जो इस निकृष्ट काल में भी अपनी जाति के निमित्त इतना परिश्रम उठाकर अहर्निश तन मन धन से कार्य्य में तत्पर हैं वा इस जैन गजट द्वारा सबों की दशा सुधार ने के निमित्त आविर्भूत हुई श्री मती महा सभा को दूं अस्तु ॥

आपके उपदेशक ने यहां पर उपदेश देने का समय शास्त्रजी के उपरान्त नियत किया है उस समय सभी स्त्री पुरुष बालिका बालक उपस्थित होते हैं जिसके उपदेश से एक गोलक स्थापित हुई है पाठशाला भी सुयोग्य अध्यापक पण्डित यमुना दत्त शर्म्माजी को (जोकि पञ्जाब विश्व विद्यालय की विशारद परीक्षा में उत्तीर्ण हैं) पाकर दिनोंदिन उन्नति पर है अबकी साल ३ विद्यार्थी १ विद्यार्थिनी ने दिगम्बर जैन परीक्षालय मुम्बई की सान्वयार्थ भक्तमर विषय में परीक्षा दीथी अभी तक परीक्षालय द्वारा परीक्षा का हाल प्रकाशित नहीं हुआ है इस पाठशाला को २॥) रु० मासिक गवर्नमेन्ट ने सहायता देना स्थिर किया है ॥ अलम्

भूमसिंह जैन शेरकोट
जिला बिजनौर

प्रार्थना

जो महाशय मनिआडर दुवारा रुपया भेजते हैं उन में बाज बाज मनिआडरों में पता ठीक नहीं लीखा होता इस लीये निवेदन है के जिला बडाक खाने का पता पूरा पूरा लीखें और जिस मद का रुपया हो उस की भी कृपा कर सफसील कर देवें महा विद्यालय में नीचे लीखे अनुसार मद रक्खी गई है ॥

(१) फी घर १) रुपया
(२) फी जीव एक पैसा
(३) गोलक
(४) तनखा एक मास
(५) मुतफारिक

जैनी भाईयों का दास
किरोडी मल दफतर
महा सभा मथुरा

गया मुल्क बंगाल

आपका जैन गजट आता है सो सभा में बांच कर सुनाया जाता है सम्पूर्ण सभासदों को अति प्रसन्नता हासिल होती है मिती भादों सुदी १० को जैन गजट पढा गया जिस में कुगुरु, कुदेव, का निषेधथा उसी वक्त भाई ऋषभचन्दजी सेठी और अमीचन्दजी पाटनीने त्याग किया— फि लाला ऋषभचन्दजी सेठी और अमीरचन्दजी पाटनी और केशरीमलजी सेठी ने पाठशाला के वास्ते बहुत कोशिश की

जिस पर सर्व जैनी भाइयों की राय होकर पाठशाला स्थापित करना नियत हुआ और चन्दा इस भांति जमा किया गया

१०१) रुपया भाई स्यौबकसजी जैन सुखजी

१०१) रुपया भाई परमसुखजी जैन सुखजी

१०१) रुपया भाई ऋषभचन्दजी केशरीमलजी

३१) रुपया भाई डेहराजजी पोकरमलजी

३१) रुपया भाई भीमराजजी श्रीलालजी

इस भांति कुछ ३७५) रुपया इकट्टा होगया है और भी भाई चिट्ठे पर लिखने जाते हैं आशा है ७५) रुपये और हो जावेंगे यानी कुल आमदनी सालभर की ४५०) रुपये हो जाया करेंगी— कोई खंडेलवाल भाई पंडित पाठशाला की नौकरी करना चाहैं हमारे पास दरख्वास्त भेजें वेतन २०, रुपये मासिक दिया जावेगा और महा सभा से प्रार्थना है कि सालभर में एक दफै उपदेशक साहब को भी अवश्य भेजा करें ॥

नाथूलालजी सेठी

नजफगढ का प्रबन्ध

भाई साहब जय जिनेन्द्र— आपके जैन गजट हमेशाह श्री मंदिरजी में दश लाक्षणी के दिनों में सुनाये गये और गोलक भी भादों सुदी ९ को रक्खी गई थी कि जो चौदस को सब पञ्चन के सामने खोली गई जिसमें ७।, निकले सो मथुराजी भेजे गये और चौदस को आप का जैन गजट श्री मंदिरजी में सुनाया गया कि जिसके सुनने से सर्व भाईयों के दिलों में धर्म की रुचि पैदा हुई और आशा है कि प्रत्येक मास की चतुर्दशी को यानी महीने में दो दफै सभा हुआ करैगी मिती भादों सुदी चौदस को हमारे यहां के सम्पूर्ण जैनी भाईयों ने निम्न लिखित कुरीतियां व फजूल खर्ची का प्रबन्ध किया है[नं० १] सगाई और दसूठन व लगन व गोरा व बरौठी व बढार व गोना और शादी व गमी के वक्त जो यहां पर बखेर और बीडे की रीति प्रचलित है उसमें बहुत तकलीफ होती है और रुपया फजूल फैंकना है इस वास्ते बखेर व बीडे की रीति बिल्कुल बन्द और सिवाय इस के विवाह आदि कार्यों में कमीनों की पंचायत की भांति पंच लोग इकट्ठे पैसे प्रत्येक मनुष्य नियमानुसार हिसाब करके बांटते हैं अगर जहेज लडकी वाला ५१) रुपये तक लडके वाले को गोरे में दे तो प्रत्येक मनुष्य एक पैसा मंसूरी अगर इससे ज्यादा गोरे में देतो प्रत्येक मनुष्य दो पैसे मंसूरी के हिसाब से लिये जावें और रुखसत के समय बखेर करने का अख्तियार है ॥

[नं २] और बेटा बेटी के विवाह में

का बन्धन होता है) दूर नहीं करते ! जब से यह वेश्या नृत्य हमारी जाति में प्रचलित हुआ है तब से धर्म कर्म शर्म इत्यादिक बातें बिल्कुल उठ गई— और इसकी बुराई में जैन गजट में बहुत से लेख छप चुके हैं इसलिये यहां पर हमको विशेष लिखने की आवश्यक्ता नहीं है— हम नजफगढ के जैनी भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि जिस तरह उन्होंने अन्य कुरीतियों को बुरा समझ कर दूर किया है इसी तरह वे इस वेश्या नृत्य को भी दूर कर देवें और हम को इस खुशी की खबर से सूचित करें ताकि उनको धन्यवाद दिया जावे ॥

चिट्ठी

—०—

श्रीमान बाबू सूर्यभानजी को सिरसावें से हकीम उग्रसेन की जैजिनेंद्र, कुशल प्रश्नानंतर प्रार्थना है कि आप कृपा पूर्वक निम्न लिखित लेख को अपने अमूल्य पत्र जैन गजट में स्थान दें ॥

बडे हर्ष की बात है कि आज कल हमारी भगिनियों(स्त्रियों)के विषैभी कुछ धर्म चर्चा फैलनी प्रारम्भ हुई है जिस से कि अब हम को कुछ साहस बढता है और आशा होती है कि अवश्य ही हमारी जैन जाति उन्नति के शिखर पर पहुंचेगी ॥ मैं निज अंतःकरण से श्रीपरधा (भार्या डिपटी अयुध्या प्रसाद, माता महाराज प्रसाद व हरप्रसाद निवासी सुल्तानपुर जि० सहारनपुर) को जिस की कि रुचि धर्म की ओर अधिक है अनेकानेक धन्यवाद देता हूं कि जिस ने निज उदारता और परोपकारता से अन्य सुल्तानपुर और कुछ सिरसावे निवासी स्त्रियों को शिक्षा देकर एक सौदा १०२ रुपया धर्मार्थ एकत्र करके मुझ उग्रसेन से उस के भेजने के स्थलों की सम्मतिली ॥ और धन्य उन स्त्रियों को कि जिन के हृदय ऐसे कोमल और परोपकारता रूपी जल मे सींचें हुवे हैं कि जिन्हों ने तुरन्त ही तनिक कहने पर अपने उस अनेक कठिनताओं से प्राप्त भये धन को ममत्व भाव त्याग कर परोपकारार्थ अर्पण किये हैं ॥

सो मेरी सम्मत्या नुसार उपरोक्त रुपया इस भांति भेज दिये गये हैं कि ५०, रुपया पास श्रीमान सेठ लक्ष्मणदास विद्या भंडार की सहायतार्थ १२०॥।~, रुपया पास श्रीमान्ववर मुन्शी चम्पतराय महा मंत्री २ उपदेशक फंड की सहायतार्थ १५, रुपया श्रीयुत पन्नालाल, जैन हितैषी की सहायतार्थ १५, रुपया पास जैन

वस्तों को बाजार में बोला जाना बिल्कुल बन्द दोस्तों में देने का अख्तियार है

(नं३)गुलगुलों की भाजी के बदले में पाव सेर खांड का गिंदोडा की भाजी मुकर्रिर किया गया दोस्तों में अधिक देने का अख्तियार है ॥

(नं४) आतिशबाजी व फुलवाडी का ले जाना बिल्कुल बन्द अगर कोई लावे तो उसको छुटाया या लुटाया न जावे वापिस की जावे ॥

(नं५) विवाह के समय हीजड़े स्वांग नाच घोडों का लेजाना बिलकुल बन्द और एक रंडीके लेजानेका अख्तियार है

(नं६)बिरादरी की स्त्रियों का बाजार में गाना बिल्कुल बन्द ॥

(नं७) जहेज में दो सौ २००) रुपये से ज्यादा न दिये जावें जेवर व कपडे व सवारी देने का अख्तियार है बरातियों को नकदी व कठोरे देना बन्द ॥

(नं८) लडकी सुसराल जाते समय रोते हुए बाजार में न जावे अपने मकान पर मिल लेवे ॥

(नं९)लडकी के बिवाह में बिरादरी के आदमी जो जिमाने के कारण इकठे हो जाते हैं उनको वास्ते जिमाने के न रोका जावे सिर्फ बाटियार को दो पहर के समय बेटी वाला मुनासिब समझे जिमा देवें ॥

(नं १०) मृत्यु के समय भंगी के यहां से दोशाला खरीद कर मुरदे पर डाल देते हैं यह रीति बहुत निकम्मी है दोशाला बाजार से मोल लेकर डाला जावे ॥

(नं ११) सगाई के समय नाई को चौकी पर बैठा कर न जिमाया जाय

(नं १२) बेला व तेला अठाई आदिक के समय जो लड्डू व गिंदोडा बिरादरी व रिस्तेदारों में बांटा जाता है यह रीति बिल्कुल बन्द श्री मंदिरजी में इच्छानुसार चढाने का अख्तियार है ॥

हरदेव सहाय पटवारी

नजफगढ़

सम्पादक— उक्त ग्राम के भाइयों ने जो २ प्रबन्ध किये हैं वह सब प्रशन्सनीय हैं क्यों नहो धर्मात्मा जीवों की रुचि धर्म ही में लगती है अपने नग्र का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है देखो आतिशबाजी जिसमें लाखों जीवों का विध्वन्स होता है बिल्कुल बन्द की गई धन्य है यहां के भाइयों को— परन्तु हम को एक बात के से अत्यन्त खेद होता है एक रंडी विवाह आदि कार्यों में रक्खी गई है— क्या रंडी के बिना विवाह नहीं हो सक्ता ? इस लेख से हम को यही ज्ञात होता है कि रंडी के बिना विवाह नहीं हो सक्ता क्यों कि यदि ऐसा न होता तो उक्त ग्राम के धर्मात्मा परोपकारी भाईयों ने जैसे अन्य कुरीतियों को दूर किया है तो इस वेश्या को (जो सर्व प्रकार से अमंगल चाहने वाली है जिसको द्रव्य देने से महान पाप

हितैच्छुक भाई झवेरी माणिकचन्द पानाचन्द, जैन परीक्षालय बम्बई की सहायतार्थ ॥ अब मैं आशा करता हूं कि हमारी अन्य भगिनियें भी निज ग्रामों और शहरों में से धन परोकार्थ एकत्र करेंगी ॥ और इसी हेतु से कि देने वाली स्त्रियों का उत्साह बढे और अन्य स्त्रियों पर अच्छा असर पडे उन दाता स्त्रियों के नाम भी देने के अंकसमेत लिखे जाते हैं ॥

१९, परथा, भार्या डिपटी अयुध्या प्रसाद व माता महाराज प्रसाद॥

७, भार्या महाराज प्रसाद तहसीलदार

७, भार्या हर प्रसाद ७, मुंगी बेटी अयुध्या प्रसाद डिपटी ॥

९, पुतली पुत्री महाराज प्रसाद तहसील दार ॥

५, भार्या निहाल सिंह चौधरी

१, भार्या जवाहर लाल ॥

१, भार्या देवीचन्द ४, भार्या चौधरी गणपति राय ॥

२, भार्या मन्नूलाल चौधरी २, भार्या चौधरी जगत प्रसाद ॥

५, भार्या चौधरी मंगतराय २, भार्या चौधरी नरायनदास ॥

२, भार्या चौधरी गनेशी लाल २, भार्या अजत प्रसाद ॥

१, भार्या बनवारी लाल सहारनपुर वाला। २, भार्या किशोरी लाल ॥

२, भार्या चौधरी खुशीराम १२, मनोहरी बेटी खुशीराम ॥

२, भार्या चौधरी बानूमल १, भार्या चौधरी चमनलाल ॥

१, भार्या चौधरी राम प्रसाद ॥

१, भार्या जीनतराम १, भार्या शुकशनराय ॥

१, भार्या जातीराम १, भार्या गङ्गाराम ॥

१, चाची बहाल सिंह १, बेवा बहन चम्पत राय ॥

२, द्रोपती, पुत्री मीरीमल ।२, भार्या निक्कामल सिरसावा ॥

५, भार्या बारूमल सिरसावा २, असरी पुत्री बारूमल ॥

२. भार्या महावीर प्रसाद पुत्र नन्द लाल ॥

सर्व जैनी भाईयोंका हितैषी
हकीम उग्रसेन मंत्री
जैन महा सभा सिरसावा
जिला सहारनपुर निवासी
मिती आसो० व० २ वि० ५३

प्रश्नका उत्तर

लाला बारूमलजी साहब मौहर्रिर खजाना लखनौ के प्रश्नका उत्तर ॥

निम्न लिखित महाशयों ने [प्रार्थना] दिया है

लाला किशोरीलालजी फीरोजाबाद जिला आगरा ॥

लाला रामलाल विद्यार्थी महाव-
रा जिला झांसी ॥

लाला प्रयाग दास अली गंज
जिला ऐटा ॥

लाला किशनलाल दोसीवल्द रत
नलाल परताप गढ ॥

लाला सोनपाल बिजैगढ ॥

और निम्न लिखित महाशयोंने आ
स्यन दिया है ॥

महावीर प्रसाद विद्यार्थी जैन पा-
ठशाला पहाडी धीरज दहली ॥

लाला कन्हैया लाल वल्द लखप
राय नवाबगंज वारहबनकी ॥

और लाला बिन्द्रावन उप पाठक
गोरमाभर जिला सागर निवासीने उ
क्त प्रश्नका उत्तर (धरम) इस प्रका
र उत्तर हमारे पास आये हैं प्रकाशि-
त किये गये ॥

प्रश्न

लाला किशोरी लालजी फीरोजा
बाद जिला आगरा निवासीने प्रश्न
किया है इस का उत्तर सर्व विद्यार्थी
दीजिये वोह प्रश्न ३ अक्षर का है—
ऊंचे तरुके नाम में से मध्य का अक्षर
और जल तरण के नाम में से मध्यका
अक्षर और तमः दलै नित जोइ— ति-
स के नाम में से मध्य का अक्षर इन
तीनों अक्षरों का एक शब्द बना बता
ओ वह कौनसा शब्द बना ॥

धर्म्मवर्द्धनी जैन सभा

भरतपुर

भाद्रपद वदी चतुर्दशी रविवार को सायं
काल के ८ बजे मन्दिरजी में मामूली सभा
हुई— बड़े हर्ष की बात है कि भाई साहब
मूलचन्दजी वकील मथुरा निवासी मंत्री
महा सभा ने (जो यहां आये थे) अपने
शुभागमन से सभा को सुशोभित किया
उस समय करीब ५० भाई एकत्र हुए—
प्रथम ही मुझ दास ने भाइयों की आज्ञा
नुकूल धर्म करने के समय का वर्णन संक्षेप
मात्र अपनी मन्द शक्ति अनुकूल सर्व भा
इयों को सुनाया— पश्चात उक्त भाई मूल
चन्दजी साहब मंत्री महा सभा ने अपनी
मिष्ट बाणी में ऐसा व्याख्यान कहा जिस
की प्रशंसा करने को मैं अशक्य हूं— प्रथ
म जैन मत की प्राचीन दशा और इसी
मत की सत्यार्थता कह कर जैनियों की
वर्तमान दशा (शोचनीय) प्रगट दिख-
लाई— और इसकी उन्नति के कारण सभा
पाठशाला— कुरीति व्यय आदि का बन्द
करना— महा सभा के प्रचलित किये हुए
सविस्तार प्रथक २ हरएक का लाभ दि-
खलाकर वर्णन किये— और फिर फजूल
खर्ची पर बहुत जोर देकर व्याख्यान कहा
उसके कारण जो २ हानि इस जाति को
पहुंची हैं उनका सविस्तार वर्णन किया
और स्पष्ट कर दिखाया— फिर जो यहां

के भाइयों ने सभा— पाठशाला— पहले से नियत कर रक्खी हैं उसका धन्यवाद कह कर सर्व सभासद महाशयों से प्रेरणा रूप प्रार्थना करी कि जिस तरह आपने सभा पाठशाला नियत करी है इसी भांति इस दुष्टनी फजूल खर्ची (जिसका प्रबन्ध महा सभा से मेरे सुपुर्द है और जिसके कारण इस जाति की ऐसी अवस्था हो रही है और होती जाती है) का भी प्रबन्ध अवश्य करें—परन्तु सर्व भाई उस समय नहीं पधारे थे इस कारण कुछ कार्य नहीं हुवा— पीछे सभा के अधिकारी सभापति आदि (जो अब तक नियत नहीं हैं) के नियत करने की प्रार्थना करी— और उनके पृथक २ कार्य और उनके न होने से हानि और उनके होने से लाभ भलीभांति कहकर सर्व सभासद महाशयों को सुनाये और इस सभा— पाठशाला आदि धर्म्म कार्य की उन्नति की प्रेरणा करी— समय बहुत होगया बहुत से भाई नहीं पधारे इस कारण कोई प्रबन्ध नहीं हो सका भाई सुन्दरलालजी साहब ने धन्यवाद कह कर सभा विसर्जन कराई ॥

उक्त भाई मूलचन्दजी साहब आवश्यक कार्य वश अमावस को ही चले गये— फिर आनेका वादा कर गये हैं । अब मैं उपरोक्त भाई साहब का जितना धन्यवाद कहूं और जितनी उनकी प्रशंसा करूं थोडी है— ऐसे परोपकारी पुरुषों का ही जीतव्य सफल है— यदि इनकी ऐसी ही कोशिश इस काम में रही तो शीघ्र कुरीतियों का नाश होगा और मैं सविनय प्रार्थना करताहूं और आशा करता हूं कि शीघ्र ही यहां पधार कर अज्ञान तिमर का नाश ज्ञान भानु का प्रकाश करेंगे और हम लोगों को कृतार्थ करेंगे ॥

मैं यहां के सर्व साधर्मी भाइयों को अनेकानेक धन्यवाद कहता हूं कि जो धर्मोन्नति के कार्य में कटिबद्ध होकर कोशिश कर रहे हैं मेरी सविनय हाथ जोड कर प्रार्थना है कि इसी भांति धर्म कार्य में सदैव उन्नति करते रहेंगे धर्म ही भव २ में सुखदाई है विशेष कहां तक लिखूं ।

आपके पुरुषार्थ के गुण गाने की मेरी समर्थ बिलकुल नहीं है आप जैसे पुरुष दस बीस भी हों तो शीघ्र ये जाति उन्नति को पहुंच जावे ॥

चिरंजीलाल श्रावग

भरतपुर

रथयात्रा मेरठ छावनी

आपका जैन गजट बांचकर चित्त को अति प्रफुल्लता हासिल होती है हम जैन महा सभा को नित्य प्रति धन्वाद देते हैं यहां पर मिती भादों सुदी १९ को रथयात्रा हुई जिसमें अन्य ग्राम के भाई आ एकत्र हुए जिसमें सभा हुई और धर्म विषय में व्याख्यान दिये गये— पं० मंगल

सेनजी खतौली निवासी जोकि बड़े विद्वान और परोपकारी हैं जैन मत का अनादि काल से साबित कर दिया उक्त पंडितजी साहब के व्याख्यान को सुनकर सम्पूर्ण सभा प्रफुल्लित हुई— और आप के जैन गजट दशलाक्षणी सब को पढ़ा सुनाये गये जिसमें बहुत से भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की और बहुत से भाइयों ने शास्त्र सुनने की प्रतिज्ञा ली- और गोलक जोकि ज्येष्ट के महीने से श्री मन्दिरजी में रक्खी हुई थी जिसमें से कुल २४) रु० निकले सो श्रीमान सेठजी साहब के पास मथुरा भेज दिये गये और रुपया इस कदर मंदिरजी में भाइयों ने दिया ॥

२०)रु० ला० निहालचन्द बनवारीलाल
१०) लाला गनेशीलाल बनारसीदास
२१) ला० निहालचन्द की बेटी ने
२०) लाला सन्तलाल बनवारीलाल
२१) लाला गुपालसिंह
२१) ला० छीतरमल बुद्धीमल
२६) ला० कुन्दनलाल जियालाल
२५) लाला सिर्पतराय

५) ला० फूलचन्द ५) लाला गोरेमल ५) लाला बाबूलाल मन्नूलाल १०, लाला बन्शीलाल मुहारलाल ४, रु० लाला देवी साहब ५, रु० ला० रोशनलाल १, कुन्तीमल ५, मुकन्दीलाल २, रु० लाला रीनामल पंडित इस भांति कुल २७६, रुपये आये यह आप के गजट ही का प्रताप है और आगेको गोलक में रुपया आवेंगे ॥

छीतरमल सभापति
जैन सभा मेरठ

भुसावर

आप के जैन गजट सप्ताहिक पत्र आते हैं जिन को बांच कर भाईयों के चित्त कमलवत प्रफुल्लित होते हैं यहां पर एक मंदिर प्राचीन है और सात तथा ८ घर जैनी भाईयों के हैं धर्म में रुचि अच्छी है श्री मंदिरजी में गोलक रखने का और घर पीछे १, रुपया के हिसाब चन्दा इकट्ठा करने का भी बन्दोबस्त किया गया है ॥ यहां पर कभी उपदेशक साहब नहीं पधारे हैं यदि यहां पर कोई उपदेशक साहब पधारे तो और भी कुछ उपकार होता और बिना उपदेशक के यहां पर विवाह आदिक कार्यों में फिजूल खर्ची का बन्दोबस्त नहीं हो सका यहां पर एक रस्म बड़ी बुरी प्रचलित हो रही है कि सा बिन्द अन्यमतियों के यहां के जैनी भाई भी कनागत करते हैं और मरे हुए पुरुखाओं को पानी देते हैं ॥ और जैन गजट अंक १८ में शास्त्र स्वाध्याय का लेख पढ़ कर चित्त को अति आनन्द प्राप्त हुआ और निम्न लिखित भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञा ली है ॥ एक भाई चम्पालालजी २ भाई छोटे लालजी ३ भाई गंगाधरजी ४ भाई सुन्दर लालजी इन भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञा ली है ॥

चन्दूलाल

विवाह आदि उत्सव में निर्लज्जता के गीतोंका निषेध

—o—

हमारे जैनी भाईयों में क्या बल्कि तमाम हिन्दुस्तान में बहुधा यह रीति है कि विवाह आदि उत्सव में स्त्रियां परदे में बैठ कर और बे पर्दा हो कर भी निर्लज्जता के गीत गाया करती हैं यह चाल बहुत ही बुरी है और इस में बड़ी २ हानि की बातें हैं ॥ देखो जिन लोगो की स्त्रियां हमेशा परदे के अन्दर रहा करती हैं और वे दूसरों को सूरत का दिखलाना या उन की आवाज का सुनाना बुराई का सबब जानते हैं उन की स्त्रियां उन्हीं के देखत सैकड़ों आदमियों में बहुत बुरे २ शब्दों में बड़े जोर शोर के साथ गालियां गाया करती हैं ॥ जिस में उन को बड़ी भारी लज्जा प्राप्त होती है ॥ क्यों कि गाने वाला जब कभी जैसा गाना गाता है वैसा ही थोड़ा बहुत असर अवश्य उस के हृदय पर होता है ॥ इस लिये गालियां आदि व्यभिचारिक गीतों में स्त्रियों के कुचाली हो जाने का भी कुछ आश्चर्य नहीं है जब स्त्रियां ऐसे गीत गाती हैं तो उन के साथ उस समय छोटी अवस्था वाली लड़कियां भी होती हैं इसी कारण से वे बहुधा कुचाली भी हो जाती हैं इस लिये उचित है कि हमारे सब जैनी भाई इस अनुचित रीति को अपने घर बन्द करें और विवाह आदि उत्सव में स्त्रियों से ऐसे गीत गवावें जिन में भगवान का धन्यवाद इस आनन्द के समय दिखाने का पायाजाय या प्रत्येक अवसर के जुदे २ मंगल गवावे ॥ या ऐसे गीत गवावें जिन से विवाह में दोनों ओर के सम्बन्धियों में प्रीति बढ़ ॥

कुंडलिया

भाई भारत रीति यह, ब्याह आदि के माहि ॥
नारी गावत तीयगण, करें लाज कछु नाहिं ॥
करें लाज कछु नाहिं, गीत व्यभिचारिक गावें ॥
ससुर आदि सब बड़े, तिन्हें सुनि बहुत लजावें ॥
बुद्धसेन यो कहे रीति यह बहुत निकामी ॥ तजें बातें सब लोग होय जो घर के स्वामी ॥

जैनी भाईयों का शुभचिंतक
बुद्धसेन हेडमास्टर रामाका
रामपुर जन्मस्थान अलीगंज
जिला एटा
ता० १९ सितम्बर सन १८९१ई०

परउपकार

मैं अपने संसारिक कार्य वश गोविन्दगढ़ गया था वहां जाकर देखा तो १ मन्दिरजी बहुत मनोज्ञ है— जैनी भाइयों के घर करीब २० हैं परन्तु धर्म कार्य में सिथलता पाई गई— मैंने मन्दिरजी में जाकर भादों वदी पंचमी शुक्रवार कूं सर्व भाइयों को बुलाया— बड़े हर्ष की बात है कि सर्व महाशय पधारे उस समय मैंने सर्व सभासद सज्जन भाइयों से अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार धर्मोन्नति के कारण सभा नियत करने की प्रार्थना करी— मैं बड़े आनन्द से प्रगट करता हूं कि मुझ सारिखे अल्पमती की प्रार्थना पर सर्व भाइयों ने ध्यान देकर सभा नियत करली— और भाई साहब भोलानाथजी सभापति— नथ्थूलालजी हरबकशजी मंत्री नियत हुए— उक्त महाशय बड़े सज्जन और धर्मोत्साही हैं- सर्व भाइयों की तरफ से यह बात मंजूर हुई कि धर्मोन्नति वा कुरीति आदि के बन्द करने में जो तजवीज उक्त अधिकारी करेंगे वो सर्व को स्वीकार होगी इस पर सर्व भाइयों के हस्ताक्षर होगये- सभा प्रति अष्टमी चतुर्दशी महीने में चार बार हुवा करेगी ॥

बहुत भाई दर्शन नहीं करते थे उन्होंने दर्शन करने की प्रतिज्ञा करी- पंदरह भाईयों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा करी जो भाई स्वाध्याय नहीं कर सके उन्होंने सुनने की प्रतिज्ञा करी- शास्त्रजी सभा में ७ बजे से आठ बजे तक नित्य बचने का प्रबन्ध हुवा सर्व भाइयों ने शास्त्रजी के समय आना यथावसर मंजूर किया ॥

अब मैं बारम्बार अनेक २ धन्यवाद कहता हूं सर्व सहधर्मी भाई गोविन्दगढ़ को जिन्होंने मुझ सारिखे तुच्छ पुरुष की प्रार्थना पर धर्म्मोन्नति का मुख्य कारण सभा नियत करी—और कोटिशः धन्यवाद इस सभा के अधिकारी सभापति साहब वा मंत्री महाशयों को जिन्होंने धर्म कार्य में कटिबद्ध होकर सभा का काम अपने ऊपर लिया— मैं उपरोक्त सर्व साधर्मी भाइयों से बारम्बार सविनय प्रार्थना करता हूं और आशा करता हूं कि अप नी प्रतिज्ञा का पूर्ण रूप निर्वाह करेंगे और धर्म कार्य में सदैव उन्नति करते रहेंगे और सभा की कारवाई जैन गजट द्वारा सर्व भाइयों पर सुचित करते रहेंगे ॥

और मैं बाबू रामचरनलाल साहब हुँमर तहसीलदार गोविन्दगढ़ पौत्र मुंशी रामदयालजी साहब हाकिम अपील साबिक राज अलवर का बारम्बार धन्यवाद कहता हूं बल्कि इन साहब की प्रशंसा करने कूं मैं अशक्य हूं— इन्होंने इस काम में पूरे तौर पर मदद करी सर्व भाइयों से प्रेरणा करी— उपरोक्त कार्य इन की सहायता का ही फल है- ये साहब ऐसे लायक हैं मैं लिख नहीं सक्ता— और मैं पूर्ण

आशा करता हूं कि आगामी भी इनकी ऐसी ही दृष्टि इस तरफ रहैगी इन की थोडी नजर से भी सब काम ठीक चलता रहैगा ॥

छगनलाल श्रावग गोधा
अलवर

तिजारा राज अलवर

तिजारे के सकल पंच जैनियों की जुहार बंचना अपरंच आप का गजट यहां सभा में हररोज नियम से बांचा जाता है जिसके सुनने से सर्व भाइयों को परमानन्द प्राप्त होता है धन्य है आप को के जो जैन धर्म्म की उन्नति के लिये इस कदर कोशिश कर रहे हैं आज कल श्री दशलाक्षणीजी के दिनों में जो जैन गजट आते हैं वो सब भाइयों को पूर्ण सुनाये जाते हैं जैन गजट अंक ३७ में जो आपने शास्त्र स्वाध्याय का व्याख्यान दिया है उसके सुनने से सब भाइयों को परमानन्द प्राप्त हुआ जो भाई पहिले से शास्त्र स्वाध्याय करते हैं वो तो कर ही रहे हैं परन्तु अब जिन भाइयों ने शास्त्र सुनने की व शास्त्र स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा ली है उनके नाम ये हैं ॥

१ लाला मोतीराम २ लाला मक्खनलाल ३ लाला प्यारेलाल ४ लाला मन्नालाल ५ लाला छुट्टनलाल ६ लाला चुन्नीलाल ७ लाला मुन्शीलाल ८ लाला मिट्ठनलाल ९ लाला हीरालाल १० लाला शिवकरनदास ११ लाला आलमसिंह १२ लाला बिहारीलाल ॥

और जिन भाइयों ने शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञा ली उनके नाम १ लाला डालूराम २ लाला घूमीलाल ३ लाला मन्नालाल ४ लाला हरिप्रशाद वगैरह भाइयोंने शास्त्र जी सुनने की प्रतिज्ञाली ॥

फरिहा जिला मैनपुरी

—०—

आप के जैन गजट को सुनकर सर्व भाइयों को बड़ा आनन्द हुआ और सभा मुकर्रर होगई और आज की सभा में पाठशाला भी नियत करदी और सभा हर महीना की दोनों १४ को हुआ करेगी और गोलक भी मंदिरजी में रक्खी गई है उसमें आज के २॥)॥ निकले हैंगे और आज यानी भादों सुदी १४ की सभा में पाठशाला का यह बन्दोबस्त हुआ है कि जिसके दिल में आवे वह आज १ साल के वास्ते लिख जावे और ६ महीना का पेशतर दे जावे यह रुपया कोई मांगने को नहीं जावेगा और जो साहब लिख जावे और फिर नहीं लावे तो उन पर निर्माल्य का दोष होगा और यह चिट्ठा १ साल के वास्ते है बाद फिर लिखा जावेगा मिती भादों सुदी १५ संवत १९५३

जैनियों का दास शुभचिन्तक
मतराम

सभा चारोंका गुच्छा

सागर— लाला गजाधर तामियां लिखते हैं यहां पर ५२ भाईयों ने शास्त्रजी सुनने की तथा स्वाध्याय करने की किसी ने जन्म भर की किसीने महीने की किसी ने साल भर की इस प्रकार से प्रतिज्ञाली है ॥

श्रीजी बुधू ब्यामें शास्त्र भंडार मिती मगशिर सुदी सम्वत १९४९ से है जिस में कैई ग्रन्थ नवीन २ ३००) रुपया आगये हैं जिन महाशयों को इस में यथा अवसर द्रव्य देना हो इस पते से भेज देवें और विशेष हाल दर्याफ्त करना हो इसी पते से लिख कर पूंछ लेवें — गजाधर तामियां उप मंत्री जैन सभा सागर ॥

रतलाम से — दयाल सिंहजी मास्टर लिखते हैं पुस्तक वणिक क्रिया जिस का नोटिस पहले जैन गजट में प्रकाश हो चुका है) जैन गजट के प्राचीन ग्राहकों को ४ आने में और नवीन ग्राहकों को २ आने में और जो मनुष्य जैन गजट के ग्राहक नहीं हैं उन को ५ आने में दीजावेगी— यह पुस्तक छपने पर शीघ्र ही भेजी जावेगी जैन महा विद्यालय के वास्ते गोलक रक्खी गई है जिस का रुपया एकत्र करके श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी साहब के पास मथुरा भेज दिया जावेगा॥

निजाराराज अलवर— लाला मुन्शी लालजी लिखते हैं आप के जैन गजट रूपी उपदेशक के द्वारा १६ भाईयों ने शास्त्र सुनने की अथवा स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञाली हैं जैन महा विद्यालय के वास्ते गोलक भी रक्खी गई है जिस का रुपया सेठजीसाहब के पास मथुरा भेजा जावैगा और यहां पर पाठशाला है जिस में ४० विद्यार्थी पढते हैं पाठशाला का प्रबन्ध चन्दे से है पढाई का क्रम अच्छा है यहां के भाईयों की धर्म में रुचि अधिक है परन्तु ऐक्यता न होने के कारण नित्य खर्चा का प्रबन्ध नहीं है चिरंजी वन्सीधर, व मंतराय ने स्वइच्छा से जूवा खेलना और वेश्या नृत्य देखने का त्याग किया है— सम्पादक धन्य है उक्त नग्र के भाईयों को कि ऐसे धर्मात्मा और परोपकारी कहलाने परभी इस दुष्टनी फूटको जो सर्व प्रकार से नाश करने वाली है अपने नग्र से दूर न किया हम आशा करते हैं अब अवश्य ही करेंगे ॥

अलीगढ— से लाला बनारसी दास मंत्री जैन सभा लिखते हैं कि वैद्य कल्यान दास स्वर्ग निवासी के पुत्र लाला फतेह लालजी ने अपने पिताके काज में ५, रुपया जैन पाठशाला के वास्ते और २०, रुपया मंदिरजी के वास्ते दिये धन्य है इन महाशयों को

भगवान चिर आयु करैं— यहां पर श्रावक भाईयों के १०४ घर हैं फी घर १, रु० के हिसाबसे जैन महा विद्यालयके वास्ते १०४, रुपया चन्दा जमा किया गया है सो सेठजी साहब के पास मथुरा भेजा जावैगा ॥

मौजा दुमखेडा— के एक भाई ने ३, रुपया जैन महा विद्यालय की सहातार्थ दिये हैं ॥

भुसावर— मे लाला चन्दर लाल जी लिखते हैं आप के जैन गजट दशलाक्षणी के दिनों में सब को श्री मंदिरजी में पढ कर सुनाये गये जिन के असर से यहां पर श्री मंदिरजी में गोलक रक्खी गई और जैन महा विद्यालय की सहायतार्थ प्रत्येक घर १, रुपया के हिसाब से रुपया इकट्ठा कर के श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी के पास मथुरा भेजा जावेगा और बहुत से भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञाली है यहां पर उपदेशक जाना चाहिये ॥

सहारनपुर— मे लाला सुमेर चन्द जी लिखते हैं आप के जैन गजट के प्रताप से यहां पर दो मंदिरों में गोलक रक्खी गई है १ पंचायती मंदिरमें १ दिल्ली वालों के मंदिरजी में जैन गजट दशलाक्षणी में पढकर सुनाये गये उन का बडा असर हुआ है ॥

बेरनी जिला एटा— से पंडित मनीरामजी लिखते हैं कि हम एटा में आये और वहां पर व्याख्यान शास्त्र स्वाध्याय में कहा तो बहुत से भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञाली है ॥

नजीबाबाद— से लाला उमराव सिंहजी लिखते हैं कि यहां पर गोलक पहिले से रक्खी हुई है भादवे की चतुर्दशी के बाद खाली जावेगी जो कुछ द्रव्य उस में इकट्ठा होगा वोह श्रीमान सी० आई० ई० सेठ लक्ष्मणदासजीके पास मथुरा भेजा जावेगा और फिजूल खर्ची के रोकने का भी बन्दोबस्त किया गया है ॥

बिसवां जिला सीतापुर— से लाला सुखपालदासजी ने ऐक्यता के विषय में एक बडा लम्बा चौडा मजमून लिखा है सो भाईयों ऐक्यता की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये ॥

लखनौ— मे लाला दामोदरदासजी लिखते हैं कि यहां पर तीन मंदिर हैं और तीनों में गोलक रक्खी गई है बाद चौदस के तीनों गोलक खोली जावेंगी जो कुछ द्रव्य उन में एकत्र होगा वोह सेठजी साहब के पास मथुरा भेजा जावेगा ॥

अलीगंज जिला एटा

मिती भादों सुदी १५ को दूसरी सभा हुई उसमें पं० मोतीलालजी ने जैन गजट पढकर सुनाया जिसमें फिजूल खर्ची का वर्णन था उस वक्त लाला तेजरामजी व

लाला रूपलालजी जमीदार ने बड़ी खुशी के साथ फिजूल खर्ची का प्रबन्ध करना चाहा तो सर्व भाईयोंने बड़ी खुशी के साथ स्वीकार किया और उसी वक्त रजिस्टर पर दस्तखत कर दिये और निम्न लिखित बातों का प्रबन्ध किया गया ॥

(१) बरात में २५ गाडी से ज्यादा नहीं लेजाना (२) बरात में २०० आदमी से ज्यादा नहीं (३) रंडी का नाच बन्द (४) बखेर बन्द (५) आतिशबाजी और बागबहारी १०) रुपये से ज्यादा नहीं (६) मिठाई आध सेर से ज्यादा नहीं

और निम्न लिखित महाशयों ने रंडी के नाच का त्याग किया है ॥

(१)लाला म्होलाल सर्राफ(२)पं० तेजराम(३)लाला गुलजारीलालरईस(४)लाला गोविन्दप्रसाद(५)लाला कुंजीलाल (६)पं० मोतीलाल व लाला बुद्धसेन लंबर्दू एक साल के वास्ते रंडी का नाच देखना त्याग किया ॥

मिती श्रावण सुदी १२ को श्री मंदिरजी में गोलक रक्खी गई थी और मिती कुआर बदी २ को खोली गई तो उसमें २॥=) आने निकले वह सेठजी साहब के पास मथुरा भेज दिये गये ॥

मोतीलाल मंत्री जैन सभा

सम्पादक— हम को लाला मोतीलाल जी की चिट्ठी से मालूम हुआ है कि किसी २ भाई को इस फिजूल खर्ची के प्रबन्ध पर खेद हुआ है इस कारण वह भाई इस प्रबन्ध में सम्मिलित नहीं हुए न उन्होंने चिट्ठे पर दस्तखत किये परन्तु बड़े अफसोस की बात है कि जिन्हीं भाइयों ने इस फिजूल खर्ची का प्रबन्ध करना चाहा था और अब वेही भाई इसमें शामिल न होवे ? क्या विवाह आदिक कार्यों में वेश्या नृत्य कराना कुछ कार्यकारी होसक्ता है ? जोकि सर्व प्रकार से अमंगल चाहने वाली है क्या उन भाईयों ने वेश्या नचाने में कुछ प्रशंसा समझी है ? इसलिये वे इस प्रबन्ध में सम्मिलित नहीं हुए ? भाइयो हमारी राय में तो वेश्या नृत्य से निन्दनीक और कोई कार्य नहीं है जिससे लज्जा, धन, धर्म सर्वत्र नष्ट होती है— अब प्रार्थना है कि जो भाई इस प्रबन्ध में शामिल नहीं हुए हैं वह अवश्य इसमें शामिल होवेंगे और बल्कि यह १०) रु० की आतिशबाजी और बागबहारी रक्खी गई है इसको भी दूर करके हम को सूचित करें ताकि उनकी प्रशन्सा जैन गजट द्वारा प्रकाशित की जावे और वे बड़ाई के पात्र होवें ॥

सम्मति जैन कालीज

आप के लेखानुसार यहां पर सभा नियत होगई और गोलक भी रक्खी गई थी जिसका रुपया श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सभापति महा सभा के पास मथुरा भेज दिया गया जैन गजट में लिखा

था कि जैन महा विद्यालय के वास्ते बारह लाख रुपये की आवश्यकता है सो भाई साहब जब तक धनाढ्य लोग इसकी सहायता न करेंगे तब तक इतना रुपया एकत्र होना असम्भव है— और यह बात हम को जैन पत्रों द्वारा मालूम हुई है कि अब तक २५०००) हजार रुपये एकत्र हुए हैं— इसलिये हमारी राय में तो जब तक धन एकत्र होवे तब तक उन पच्चीस हजार रुपयों के सूद से एक पाठशाला खोलदी जावे जिसमें जैन शास्त्र पढ़ाये जावैं— फिर धीरे २ ज्यों २ धन एकत्र होता रहैगा त्यों २ पाठशाला को बढ़ाते२ एक कालिज बना दिया जावै— और जब पाठशाला स्थापित होने का प्रबन्ध हो जावैगा तब मैं भी अपने ग्राम के भाइयों से रुपया इकट्ठा करके भेजूंगा ॥

रूपलाल लंगरिया जमींदार
अलीगंज जिला एटा

अलीगंज में निम्न लिखित भाइयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञा ली है १ तेजराय २ चुन्नीलाल ३ मोतीलाल ४ प्रयागदास ५ लखपतराय ६ रूपलाल ७ उल्फतराय ८ उल्फतरायमानी ९ हजारीलाल १० धन्नामल ११ गोविन्दप्रसाद १२ सिखरचन्द १३ भवानीप्रसाद

लखनौ

जैन गजट आप के आते हैं सभा में सब भाइयों को पढ़कर सुना दिये जाते हैं और एक कृपा पत्र भी आपका पहुंचा आप के नाम रूपी सूर्य के अक्षर रूपी किरणों को देखकर हृदय रूपी कमल प्रफुल्लित होगया आपकी आज्ञानुसार मिती भादव सुदी ५ में गोलक तीनों मन्दिरजी में रखवाई गई हैं श्रीदशलाक्षणी पर्व के पीछे तीनों गोलक का रुपया श्री मान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सी.आई.ई. के पास मथुरा भेज दिया जावेगा जैन गजट अंक १८ में जो व्याख्यान धर्म शिक्षा पर था सभा पर उसका बहुत असर हुआ निम्न लिखित भाईयों ने शास्त्रजी के स्वाध्याय की आखड़ीली है ॥

भाई नेमचन्द आयु परयन्त
भाई शिखरदास एक साल
भाई मेघराज एक साल
भाई नरसिंहदास एक साल
भाई दुर्गाप्रसाद एक साल
भाई मुन्नीलाल ६ महीना
भाई रामरतनलाल एक साल

दास दुर्गादास मंत्री
जैन सभा लखनऊ

जूड़ी की औषधि

महाशय मैंने एक औषधि तिजारी व दूसरे दिन आने वाली जूड़ी की अपूर्व तय्यार की है जिसको कि उंगली पर लगावें तो शीघ्र दुःख को हर लेती है गरीब मनुष्यों को बिना मूल्य दीजाती है परन्तु आध आने का टिकट महसूल को भेजनी चाहिये कीमत देने वाले महाशय को विला डाक खर्च ।।।) तोले दी जावेगी ॥

पत्रादि भेजने का पता
राधावल्लभ अग्रवाल
विजयगढ़ प्रांत अलीगढ़

महा विद्यालयका रुपया इस प्रकार आया

१, बमद् मुतफर्रिक बिहारी लालजी जैनी गयाजी वाला का ॥

१।–, बमद् गोलक पंचान बहादर गढ जिला रोतक ॥

११≡, मारफत दीपचन्दजी जगाधरी वाला का आया ॥

१ ≡, सकल पंचान जगाधरी बमद गोलक

१०, दीपचन्दजी का बमद तनखा १ माह ॥

१, बमद् मुतफर्रिक लाला दीचन्द जीने दीने ॥

१०, बमद् गोलक सकलपंचान तस्सा जिला मुजफरनगर परगना भौकरेंगी अहातः इलाहाबाद ॥

७।, बमद् गोलक सकल पंचान नजफ गढ जिला देहली मारफत लाला बिहारीलालजी के आये ॥

१३, बमद् गोलक शिवहारा जिला बिजनार सकल पचों के आये ॥

४=, बमद् गोलक बुडीया जिला अंमबाला क सकल पचो के आये ॥

१८॥=, बमद् गोलक सकल पंचान छावनी अवाला ॥

४, बमद् गोलक सकल पचान बिजनोर ॥

१–, बमद् गोलक खापरा जिला मथुरा परगना छातई के सकल पचान क आये ॥

२।–, बमद् गोलक खास सकल पंचान पिमाया जिला मथुरा बपरगना छानई ॥

६॥, बमद् गोलक मारफत नीहाल चंदजी श्रीनगर जिला पोरी पजाब के सकल पंचान के आये ॥

१४, बमद् गोलक जैन सभासद मेरट मारफत छीतरमलजी ॥

२॥=, बमद् गोलक सकल पंचान मारफत भागदासजी अलीगंज जिला ऐटा ॥

४४, बमद गोलक सकल पंचान पानी पत ॥

१७।, बमद् गोलक सकल पंचान मारफत मुन्नालालजी नाहन जिला अंबाला ॥

५०।=, लाला लल चन्दजी साहब व लाला उमराव सिहजी साहब के मारफत इस प्रकार आया ॥

८।≡, बमद् गोलक खास लाला उमराव सिहजी साहब के ॥

५६, लाला मलेख चन्दजी साहब ॥

१६॥।≡, बमद गोलक सकल पंचान नजीबा बाद जिला बाली बिजनोर ॥

७॥, गोलक सकल पंचान पाहम जिला मैंन पुरी डाक खाना शकूरा बाद ॥

१३, गोलक सकल पंचान चिलकाना जिला सहारनपुर

५।=) सकल पंचान बीकानेर के इस प्रकार ॥

५, बमद फी घरएक रुपयाके हिसाब से ॥

।=, बमद फी जीव एक पैसेके हिसाब से ॥

२०, बमद गोलक सकल पंचान स्योहारा जिला बिजनौर डाकखाना निहटोर ॥

१२॥।, बमद गोलक सकल पंचान सफरोली जिला मुजफ्फर नगर डाकखाना तस्सा ॥

४, बमद गोलक सकल पंचान करनावल जिला मेरठ ॥

१०, बमद मुतफर्रिक श्रावकानमुल्तानपुर वा सिरसावा जिला सहारनपुर के मारफत लाला उग्रसेनजी मंत्री के आये ॥

४।, बमद गोलक सकल पंचान काशगंज जिला ऐटा ॥

७, बमद गोलक सकल पंचान फरहल जिला मैनपुरी मारफत लाला फुलजारी लालाजी साहब ॥

६॥–, बमद गोलक सकल पंचान तिजारा इलाका राज अलवर ॥

४, बमद गोलक सकल पंचान छपरोली जिला मेरठ ॥

२।=, बमद गोलक सकल पंचान सोनीपत जिला देहली मारफत मुन्शी अमन सिंहजी साहब ॥

५॥, बमद गोलक सकल पंचान राज रीवां ॥

१॥, बमद गोलक सकल पंचान मेंडू जिला अलीगढ मारफत लाला सुधारसी लालजी ॥

१६९।≡)

आगरा

जैन गजट पत्र अंक नंबर २८ आपका आया जिस में से प्रकरण धर्म शिक्षा का हमने श्रीचैत्यालेजी में सर्व भाईयों को पढ कर मिती भादों सुदी ७ के दिवस सुनाया पत्र को सुन कर सर्व भाइ जो उस समय सभा में मौजूद थे परम आनन्द को प्राप्त होते भये उस समय पत्र को सुन कर सर्व भाईयों के चित्त विखे शास्त्र स्वाध्याय करने की उमंग हुई तब सर्व भाईयों की सलाह सो इस प्रकार प्रतिज्ञा स्वाध्याय करने की तथा सुननेकी हुई

१ सगही हीरालालजी साहब उमर पर्यंत ॥

२ कन्हीया लालजी उमर पर्यंत ॥

३ बनारसी दासजी उमर पर्यंत ॥

४ काशीरामजी पद्मावती पुरवार बरस ४

५, चीरंजी लालजी बरस ३ ॥
६ संगही जीमनलालजी बरस १
७ सालीग रामजी बरस १
८ मोती लालजी बरस १
९ तेजपालजी बरस १
१० सिभुनाथजी बरस १
११ बच्चुलालजी बरस १
१२ हीरालालजी बरस १
१३ पन्नालालजी बरस १
१४ सामल दासजी बरस १
१५ बिहारी लालजी बरस १
१६ बछराजजी बरस १
१७ प्रभुलालजी बरस १
१८ फूलचन्दजी बरस १
१९ चीरंजी लालजी बरस १
२० परशादी लालजी बरस १
२१ लखमी चन्दजी बरस १
२२ सुन्दर लालजी बरस १
२३ बिंद्रावनजी बरस १
२४ रतनलालजी महीना ६
२५ बाबू लालजी महीना ६
२६ गोविन्द लालजी महीना ६

सालग राम बडजाता

चिट्ठी छपरौली जिला मेरठ

आप के जैन गजट के द्वारा हम सब भाईयों को बडा पुन्य का प्रबन्ध हुआ अंक ३८ में शास्त्र स्वाध्याय का लेख पढ कर निम्न लिखित भाईयों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञाली ॥

१ पं० जैदयाल मल २ लाला कुन्दनलाल ३ लाला नथमल दास ४ लाला भिक्खीमल ५ लाला घासीराम ६ मंगलसैन ७ पं० कश्मीरी लाल ८ लाला रतनलाल ९ लाला रामप्रसाद १० लाला न्यादरमल— पं० कश्मीरी लालजी और पंडित फतेहचन्द जी के उपदेश से मौजा किरठल में पाठशाला स्थापित हुई— और लाला पूरनमल छपरौली वाले ने ६, रुपया श्री मंदिरजी में दिये यह सर्व प्रकार पुन्य का करण आप के पत्र के ही द्वारा हुआ है सो आशा है कि महासभा की ऐसी ही कोशिश रही तो धर्म का उद्योत दिन २ बढता जावैगा ॥ दोहा ॥ जैन गजट परगट रहै सदा जगत के बीच ॥ ज्ञान भानु परगट करै मिटै अविद्यानीच ॥

पं० जैदयाल मल

शोपुर रियासत ग्वालीयर

आप का जैन गजट अंक ३८ को पढ कर परम हर्ष प्राप्त हुआ और यहां पर शास्त्रजी की स्वाध्याय करने का सोगद इन इन भाईयों ने लीया है
१ मोती लालजी गोया बरस ५
किस्तूरचन्द गंगवाल बरस ३
२ फूलचन्द सोगाणी मास १२ सोनपालजी अजमेर मास १२

३ बाजुलालजी अजमेरा १२ तनसुख जी छाबडा १२ दलसुखजी गोधा १२

२ गेंदीलालजी पापडी वाल खातोली वाला १२ भवरलालजी अजमेरा १२

३ घासीलाल बडजाता १२ सुगनचन्दजी गंगवाल १२ कजोडमलजी १२

३ राजूमलजी सेठी १२ हजारीलाल बडजात १२ भंवरलाल १२

३ मिश्रीलाल अगरवाल १२ कीस्तूरमल सेठी १२ छगनमलजी १२

३ आनन्दी लालजी गोधा १२ गोपीलाल गोधा १२ पन्नालाल गोधा १२

१ रामचन्दजी काला सीपरी वाला ६ छगनमल कान्हा ६

२३ और २० वा २१ भाईयोंने दो महीने का वा तीन वा चार महीने का लीया है और तीन चार भाई जो नहीं वाच जानते हैं सो उन्होंने शास्त्रजी सुनने की प्रतिज्ञाली है और जो नहीं वाचे वा नहीं सुने तो वा को देख कर रस छोडेगें और गणेसलालजी कासलीवार वा भूरामलजी गोधा जूरारलालजी सेठी इन के सबन के जन्म ताई का सोमंद है ए कारण नीत पर्यंत सुनेंगे और यहां १, रुपया घर लारकी भी चिट्ठी की कोशिश हो रही है ॥

और हम यहां से चिठी डाल जिस का उत्तर जलदी लिख दीया करो इस का बारा महीना का खर्च पडेगा सो हम भेज देवेंगे ॥

मिती भादों सुदी १२ बारस तारीख १८ सीतम्बर सन १८९९

द: कीस्तूरचन्द गंगवाल
सोपुर रीयासत ग्वालीयर

रेवाडी

तारीख ९ सितम्बर को पं॰ धर्मसहायजी उपदेशक यहां पधारे उसी वक्त मंदिरजी में गये और सब भाईयों से अपने आगमन का वृतान्त सुनाया बहुत से भाई सुन कर हर्षित हुए और शाम को २ बजे फिर श्री मंदिरजी में शास्त्रजी वांचे गये उस समय अनुमान १००सौ भाईयों के थे और इतनी ही औरतें थी शास्त्रजी समाप्त किया फिर जैन महा सभा की चिट्ठीयां पढ कर सुनाई गई और जैन गजट के ग्राहक बनने की प्रार्थना की गई और जैन महा विद्यालय के वास्ते चन्दा जमा करने की प्रार्थना की गई फिर रात्रि के आठ बजे उक्त पंडितजी साहब ने एकयता के विषय में व्याख्यान दिया और शुभ आचरन की निसबत

कुछ कहा और यह व्याख्यान २ घंटे तक हुआ और यहां पर सभा नियत की गई और लाला मुन्शीलालजी सभापति नियत हुए उस समय अनुमान तीनसौ स्त्री पुरुष श्री मंदिरजी में उपस्थित थे फिर धन्यवाद कह कर सभा विसर्जन हुई ॥

और तारीख २० सितम्बर को पंडितजी साहब नसियांजी में गये वहां पर धर्म के विषय में डेढ घंटे तक उपदेश दिया उस समय अनुमान ३०० स्त्री पुरुष थे—लाला गनपतरायजी सराफ सभापती नियत हुए– सभा स्थापित होगई धन्यवाद कहकर सभा विसर्जन कराई ॥

तारीख २१ सितम्बर को भक्त पंडितजी झांसी पधारे– बड़ी खुशी की बात है पंडितजी साहब के उपदेश से यहां पर सभा व पाठशाला का सम्बन्ध होगया है जिसमें मुन्शी रामगुपालजी साहब व लाला मक्खनलाल जी साहब ने पाठशाला स्थापित कराने का वादा कियाहै ॥

शेरसिंह सैकन्ड मास्टर
हाई स्कूल रेवाड़ी

सिवहारा जिला बिजनौर

श्री दशलाक्षणी के पर्व में (३) गोलक में से निकले थे सो मथुरा भेज दिये गये और यहां पर बहुत से भाईयों ने मिथ्यात्व का पूजना भी छोड़ा है और फिजूल खर्ची का भी प्रबन्ध हुवा है हस्ताक्षर बाकी हैं कार्य समाप्त होने पर विस्तार पूर्वक लिखा जावेगा ॥ गुलजारी मल उपमंत्री

नजीबाबाद जिला बिजनौर

गोलक में से १६।।।=) निकले और लाला मलेखचन्द ने अनन्त चौदस के व्रत का उद्यापन किया था सो उन्होंने पांच सौ रुपये नकद और २५) वास्ते लिखने श्री सर्वार्थ सिद्धी शास्त्र के और दो थाल दो चौकी दान श्री मंदिरजी में चढाये ॥ और २५) महा विद्यालय भन्डार में और २०) उपदेशक फंड में दिये लाला उमरावसिंह रईस ने एक गोलक धर्मार्थ अपने घर पर रक्खी हुई है उसमें वह एक आना रोज डालते हैं उसमें से २०।≡) निकले उसमें से ८।≡) महा विद्यालय को दिये गये और १२) उपदेशक फंड में दिये गये ॥ महा विद्यालय का रुपया मथुरा श्रीमान सेठ साहब के पास और उपदेशक फंड का रुपया डिप्टी चम्पतराय के पास भेजा गया ॥ फजूल खर्ची का भी अन्दोलन होरहा है ॥

अम्बाला छावनी

जैन गजट ने बहुत उपकार किया ॥ दोनो मन्दिरों में गोलक रक्खी गई २०) निकले सो मथुराजी भेजे गये और आगे को गोलक बराबर श्री मंदिरजी में रक्खी

रहा करैगी ॥ यहां पर पाठशाला है परन्तु इन्तजाम अच्छा नहीं है भाईयों की कोशिश कम है ॥ नहीं मालूम यहां कोई उपदेशक साहब क्यूं नहीं पधारते हैं बडी अवश्यकक्ता है सोहनलाल शिब्बामल ॥

नाहन रियासत

यहां पर जैनी भाई नहीं रहते हैं केवल कुछ भाई बाहर के रहने वाले मौजूद हैं ॥ अनन्त चौदस के दिन भाईयों को लाला चोखेराम की दूकान पर जमा किया और श्री शास्त्रजी और जैन गजट पढकर सुनाया ॥ मैंने बहुतसी गोलक बनवाई थीं सो सब भाईयों को एक एक दीगई और प्रार्थना की कि अपने २ घर रखनी चाहिये और इच्छा पूर्वक डालना चाहिये और वर्ष पीछै चौदस के दिन गोलक खोलकर मथुरा श्रीमान सेठ साहब के पास रुपया भेज देना चाहिये ॥ मैंने विद्या दान के वास्ते चन्दा देने की भी प्रार्थना की सो इस प्रकार वसूल हुवा ४) लाला चोखेराम २, लाला मोतीराम २, लाला भगवानामल २, लाला मुन्नालाल २, लाला गनपतराय १, बाबू देवीसहाय १, लाला कपूरामल ॥, लाला ठाकुरदास २, धर्म पत्नी लाला मोतीराम ॥, लाला भगवाना मलकी माता ॥, लाला मनसाराम सो कुल १७॥, मथुरा भेजे गये हैं ॥ मुन्नालाल

नजफगढ़ जिला देहली

श्री मन्दिर में गोलक रक्खी गई थी ७।=, निकले थे सो मथुरा भेजे गये हैं ॥ बनवारीलाल ॥

करौली

जैन गजट श्री मन्दिरजी में पढकर सुनाये गये उनका फल यह हुवा कि पहले यहां बिरादरी में शादी गमी कि जौनार के समय भाईयों के साथ एक एक दो दो नौकर चाकर आते थे और इसही प्रकार स्त्रीयों के साथ स्त्रीयें आती थीं इसमें बहुत फजूल खर्ची होती थी यदि बिरादरी के भाई पचास होते थे तो नौकर चाकर अस्सी नब्बे होजाते थे यह रिवाज बिल्कुल बन्द कर दिया अब जौनार में बिरादरी के भाईयों के सिवाय और कोई साथ में नहीं आवेगा तीसरे की जौनार यहां पहले सेही बन्द है ॥ अन्य फजूल खर्ची के दूर करने का भी बन्दोबस्त हो रहा है ॥ मुन्नालाल

जैपुर

भाई भोलेलालजी सेठी जैपुर से लिखते हैं कि तीन चार मन्दिरों में गोलकें रक्खी गई हैं आप ५० इश्तिहार गोलकों के और भेज दीजिये जो सब मन्दिरों में गोलकें रक्खी जावें यहां पर श्री मंदिरजी ६० से ऊपर हैं ॥

सेठ चांदमलजी मुन्तजिम सायरात जैपुर से लिखते हैं गोलक रक्खी गई है और आशा है कि सहज २ इसका फल अति उत्तम होगा ॥

जमाधरी

भाई रूपचन्दजी लिखते हैं गोलक मन्दिरजी में रक्खी गई थी भाइयों ने उस में द्रव्य कम डाला इसलिये केवल १≈,। निकले परन्तु मैंने १४, रुपये अपने निज धनसे और मिलाकर १५≈)। सेठ साहब के पास भेज दिये हैं धन्य है भाई दौलत रामजी को और जमाधरी की पंचायत से निवेदन है कि अवश्य इस तरफ ध्यान देवे ॥

शिमला

भाई दौलतरामजी मंत्री जैन सभा लिखते हैं कि गोलक रक्खदी गई है जो द्रव्य निकलेगा मथुरा भेजा जावेगा ॥

समाचार

पानीपत— से सकल पंच लिखते हैं कि जैन गजट की प्रेरणा से यहां पर गोलक रक्खी गई थी उसमें ४४) रुपये निकले सो श्रीमान् सेठजी साहब की सेवा में मथुरा भेज दिये गये हैं और यहां पर पाठशाला का भी प्रबन्ध होगया है सो आगामी अंक में प्रकाश की जावेगी ॥

गोहाना— लाला जोरावरसिंह जौहरी मलजी लिखते हैं कि आप के जैन गजट के परचे हमारे पास आये उसमें से कुछ परचे श्री मन्दिरजी में सुनाये गये परन्तु अभी तक कुछ फल हासिल नहीं हुआ है— आप की प्रेरणानुसार गोलक तो रक्खी गई थी उसमें ९) रुपये जमा हुए हैं आशा है कि कोशिश से और कुछ जमा होजावेगा— जो कुछ द्रव्य एकत्र होगा वो श्रीमान् सेठजी साहब की सेवा में मथुरा भेजा जावेगा ॥

बिजनौर— से लाला बद्रीप्रसादजी लिखते हैं कि आप की आज्ञानुसार श्री मंदिरजी में गोलक रक्खी गई उसमें ४≈)। आने निकले थे फीस मनीआर्डर काट कर ४) रु० श्रीमान् सेठजी साहब के पास मथुरा भेज दिये गये— और यहां पर बहुत से भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञाली है ॥

सहारनपुर--श्रावक पंचायती श्री मंदिर जी मौहल्ला चौधरियान में गोलक रक्खी गई उसमें से ४।=) आने निकले हैं और श्री मन्दिरजी पंचायती में गोलक रक्खी गई उसमें से २॥–, आने निकले यह रुपया बाबू सूर्यभानजी वकील के पास देवबन्द भेज दिया गया ॥

भीलवाडा— से लाला चिरंजीलालजी लिखते हैं कि आपके जैन गजट श्री मंदिरजी में पढकर सुनाये गये तो भाईयों पर ऐसा असर हुआ कि सम्पूर्ण भाइयों ने मिलकर सभा व पाठशाला स्थापित करना स्वीकार किया है चिठ्ठा पाठशाला के वास्ते बनालिया गया है आशा है कि पाठशाला बहुत जल्द खुल जावेगी और सभा तो स्थापित होगई है मास में दो वार हुआ करेगी ॥

सीतामऊ— से कस्तूरचन्दजी लिखते हैं कि यहांपर एकयता न होने के कारण म न्दिरजी में गोलक नहीं रक्खी गई और न किसी भाई का हौसिला है कि कुछ द्रव्य धर्मार्थ देसकैं आप जैन गजट मेरे नाम से भेजा कीजिये ॥

झालावाड— सेठ दोलतरामजी लिखते हैं यहां पर गोलक रक्खी गई थी— उसमें से १०, रुपये निकले वो श्रीमान् सेठ सा हबके पास मथुरा भेज दिये जायगे ॥

रतलाम— से लाला दर्यावसिंहजी लि खते हैं कि जै०ग० श्रीदशलाक्षणी के दिनों में श्री मन्दिरजी में पढकर सुनाये गये सुन कर सम्पूर्ण सभा को अति आल्हाद हुआ यहां पर तीन सभाऐं हुई जिनमें सार ग र्भित व्याख्यानों से सर्व भाईयों के दिलपर अच्छा असर हुआ यद्यपि जैन पाठशाला व जैन सभा, ऐक्यता तथा फजूल खर्ची आदि के प्रबन्ध की पूर्ण सफलता तो हाल में नहीं हुई परन्तु भविष्य में आशा की जाती है कि अवश्य ही सब प्रबन्ध हो जावैगा— यहां पर तीनों मन्दिर में गोलकें रक्खी गई थी उनकी आमदनी जैन कालिज के वास्ते भेजी जाती है सो जमा करना और सदैव तीनों गोलकें र क्खी रहेंगी रुपया इस भांति बाबू सूर्य भान वकील की सेवा में भेजा गया है ४, रुपया जैन कालिज के वास्ते ३, रुप या उपदेशक फंड में और १, कल्याण औषधालय देवबन्द ॥

खैर जिला अलीगढ

आप के गजट के पढने से बहुत खुशी हासिल होती है और अन्य नगरों के समाचार पढकर अत्यन्त हर्ष प्राप्त होता है और यह आप के गजट की ही महि मा है कि हम घोर निद्रा में सोते हुओं को जगाया भाई साहिब यहां पर आठ घर जैनी खंडेलवालों के हैं परन्तु खेद की बात है कि यहां पर कोई मंदिर या चै त्याला नहीं है बस यही कारण है कि यहां के भाई बिलकुल धर्म से विमुख हो रहें हैं और न यहां पर कोई इस लायक है कि मंदिर बनवा सकै और जो इस ला यक हैं वे ख्याल भी नहीं करते— यहां से डेढ मील के फासले पर लछमन गढी है वहां पर श्रीमान महाराज कुवार रईस के मकान में एक सुन्दर चैत्याला बना हुआ है वहां पर दर्शन करने को अष्टमी चतुर्दशी को जाया करते हैं इस पर भी यह हाल है कि कोई २ भाई इन पर्व के भी दिनों में नहीं जाते थे लेकिन आपके गजट के पढने से इतना असर हुआ कि अब की भादोंजी में हरेक स्त्री पुरुष प्रति दिन दर्शन करने को गये और मैंने भादों सुदी चौदस को सभा कराई और इसके अनन्तर सर्व भाई धर्म की तरफ झुके और नेम आखडी भी की और उसी समय जैन कालिज के वास्ते ५) पांच रुपये भी इ कट्ठे होगये जो कि श्रीमान् सेठ लक्ष्मन

दासमा साहिब सी. आई. ई. सभापति महा सभा मथुरा की सेवा में मनीआर्डर द्वारा भेजे जायंगे. यहां की पंचायत अली गढ की पंचायत में शामिल है ॥

प्रभूलाल जैनी बजाज खैर

रिपोर्ट हकीम कल्यान राय उपदेशक

श्रीमान् डिप्टी चम्पतरायजी साहब जैन-जिनेन्द्र ; मैं सिकन्दरपुर से चलकर ता० २३ को राडधना जिला मेरठ में आया राडधने में जैनियों के घर ५८ अट्ठावन हैं और एक मंदिर है तारीख २४ अगस्त को दुपहर के वक्त सभा की गई तो सर्व भाईयोंने बडी खुशीके साथसभा करना अंगीकार किया परन्तु सभा चतुर्दशी को हुआ करैगी ॥

जैन गजट मगाना भी अंगीकार किया व्याख्यान देव गुरु के सरूप के वर्णन में हुआ और फिर दूसरे दिन सभा की गई तो बडा आनन्द रहा परन्तु कुछ कारवाई न हुई फिर २५ अगस्त को मुकाम मुल्हेडा (जिला मेरठ में है) वहा पर आया और २६ तारीख को सभा कीनी विद्या की उन्नती पर उपदेश दिया गया और जैन गजट की तारीफ बयान की तो सर्व भाईयों ने बडी खुशी से जैन गजट मगाना अंगीकार किया ॥

पहिली सभा में अनुमान भाई जैन जाती और अन्य जाती के १०८ थे और फिर दूसरे दिन २७ अगस्त को दुपहर के वक्त सभा की गई तो सभा में आस पास के ग्रामों के जैनी भाई भी बुलाये थे सो सब भाई कृपा करके मुकाम मुल्हेडे की सभा आये उन ग्रामों की नाम टाली ग्राम के भाई आये थे टाली ग्राम में जैनियों के घर २० के अनुमान हैं और छुट ग्राम के भाई थे इस ग्राम में जैनियों के घर अनुमान२५के हैं और पांचली ग्राम के के भाई भी सभा में आये थे इस ग्राम में जैनियों के घर १८ हैं और गोटका ग्राम भाई भी थे सभा में गोटका ग्राम में जैनियों के घर २० के अनुमान हैं ये चारों मुल्हेडे के पासही है मील या २ दो मील के फासले पर है इन ग्रामों में जैन मंदिर नहीं है इसीलिये ये भाई भी मुल्हेडे की सभा में शामिल किये व्याख्यान सभा में एकयता के विषय में था और षट अवश्य क्रिया जोकि जैनियों को नित्यही करनी चाहिये और मित्र भाव रखना चाहिये सो सर्व ही जोकि जैन जाती और अन्य जाती के और और ग्राम के सर्व ने सभा करना अंगीकार किया बडी खुशी के साथ और सभा एक मास में चार दफे हुआ करैगी यानी इतिवार को हुआ करैगी और गोलक रखना भी अंगीकार किया सभा के अधिकारी मुल्हेडे ग्राम के भाई भी है और अन्यग्रामके भाई भी हैं जोकि

मील या दो मील पर है । फिर मुल्हेड़े से चलकर मुकाम करनावल जोकि जिला मेरठ में है तहां पर आया और लाला संगमलाल के मकान पर ठहरा और आस पास के ग्रामों में भी खबर कराय दीनी । कि सभा होगी सो आस पास के ग्राम के भाई सभा में आवे जमहड ग्राम जोकि करनावल से २ कोस पर हेटें और जैनियों के घर भी १८ हैं सो भी सभा में बुलाये और हाडा ग्राम के भी भाई बुलाये और और भी ग्राम के भाई बुलाये सो २८ तारीख अगस्त को दुपहर के वक्त सभा हुई सो सभा में जैन जाती और अन्य जाती और करनावल ग्राम के सर्व भाईयों का अनुमान १२० का नथा शास्त्र सुनने के फायदे और क्षमा को अंगीकार करना और मुर्ती पूजन के फल और कार्यद के विषय में व्याख्यान हुआ सर्व भाई बडे प्रसन्न हुए और फिर दूसरे दिन सभा कीनी तो उसी तरह से सर्व मनुष्यों की संख्या १५० के अनुमान थी व्याख्यान व्यर्थ व्यय के विषय में कह कै सभा के फायदे दिखलाये तो सर्वहीं ने बडे हर्ष के साथ सभा करना अंगीकार किया और सभा का दिन इतवार है सभापतियों के नाम फिर लिखे जायंगे और गोलक रखना भी अंगीकार किया सो धन्य है ऐसे जैनियों को कि थोडे कहने से धर्म के कारणों को अंगीकार करले ते हैं ऐसे ही मनुष्य प्रशंसनीय हैं ॥

और फिर तीसरे दिन ३० अगस्त को शास्त्र सभा हुई तो बडे आनन्द से कुदेवादिक का व्याख्यान दिया गया और उस में यह बात दिखलाई गई कि लडके और लडकियों को विद्या अभ्यास कराना चाहिये और रात्री के समय संगमलाल के मकान के ऊपर जहां पर ठहराथा बडा जैन जाती और अन्य जाती के भाई दो दिन तक मेरे पास धर्म चर्चा करने आये सो मैं धन्यवाद देता हूं कि इन लोगों को ऐसी धर्म रुची है और यकीन है कि ऐसी रुची सदैव बढाते रहेंगें ॥

स्थान करनावल से ३१ अगस्त को मुकाम मैंहसी जो कि करनावल से १६ सोलह कोस पर है वहां पर आया और सभा करी तो सर्व भाईयोंने २ दो मास की शास्त्र श्रवण प्रतिज्ञा और १ मास पूजन श्रवण प्रतिज्ञा और गोलक रखना अंगीकार किया और वैष्णवने जिसकानाम छुट्टीमलहै जल छान के पीने की प्रतिज्ञाकी की इसी तरहसे सर्व ग्राम और नग्र के भाईयों को यही योग्य है कि अपने धर्म और धर्म के कारणों को अंगीकार करें ॥

तिजारा राज अलवर

श्रीमान् बाबू सूर्यभानजी जैजैन्द्र आपका गजट सभा में हररोज पढ़ा जाता है बड़ा आनन्द प्राप्त होता है अब जो गजट अंक २७ जो भाद्रव सुदी ६ को यहां आया जिसमें शास्त्र स्वाध्याय का व्याख्यान अति उत्तम और मनोहर सुन कर करीब २० भाइयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञाली है जिनके नाम और प्रतिज्ञा का नकशा भरकर फिर भेजूंगा यहां के भाई बड़े धर्मात्मा हैं गजट को बड़े आनन्द से श्रवण करते हैं और जहां तक होसक्ता है धर्मोन्नति की कोशिश करते हैं जैन महा विद्यालयके अर्थ गोलकभी रख दी गई है जो मिती आसोज बदी २ को खोली जावेगी और उसका रुपया मथुरा को भेज दिया जावेगा ॥

पाठशाला यहां है जिसमें ४० विद्यार्थी पढ़ते हैं सर्व पूजन संस्कृत और भक्तामरजी भगमी आदि का पाठ तक पढ़े हैं अब के साल व्याकरण शुरू करा या जावेगा पाठशाला का इंतिजाम चन्दे से है— सभा यहां पर नहीं है सबब उस का यह है कि यहां पर बिरादरी के २ थोक हैं जो मन्दिरजी की पंचायत १ है परन्तु मन आपस रूप है जिससे सभा नहीं होती और इसही कारण फिजूल खर्ची का भी इंतिजाम नहीं होता है यहां के भाइयों की धर्म में रुचि बहुत अच्छी है ८ या १० भाई तो रोजीना पूजन कर तेहैं और आजकल २० या २१ भाईपूजनकरतेहैं पूजनभी यहांकई भाइयोंकी तरफसे पंचायती के सिवाय कई रोजमर्रह होती हैं धर्म में बड़े सावधान हैं धर्म के कामों में भाव अच्छे हैं यह नगर जैन जाति का नमूना होता अगर यहां फिजूल खर्ची और आपस में विरोध न होता सब भाई यह चाहते भी हैं किसी तरह एकता होजावे लेकिन कारण नहीं मिलता यहां सिर्फ १० घर जैनी अग्रवालों के हैं परन्तु सब भाइयों की धर्म में रुचि के कारण मन्दिरजी में बड़ी प्रभावना रहती है शास्त्रजी हमेशा दो वक्त बचते हैं और सर्व धर्म कार्य अच्छे होते हैं ॥

मुन्नालाल जैनी
तिजारा राज अलवर

निवेदन

यह कि आप के धर्म रूपी हलकारे जैन गजट ने धर्म की बहुत उन्नति की है जो अकथनीय है मिती भाद्रपद शुक्ला १४ को रात्रि के समय आरती से निश्चिन्त होकर जैन गजट अंक ४२ भाई बंशीलाल ने पढ़कर सर्व भाइयों को सुनाय दिया कि जो करीब ४० स्त्री पुरुष के मौजूद थे— इससे सर्व भाइयों के दिल पर धर्म की ऐसी रुचि बढ़ी कि जो निम्न लिखित भाई पहिले दर्शनों को भी मन्दिरजी में नहीं आते थे उन्होंने दर्शनों नियम किया और जो दर्शनों ॥

को आते थे परन्तु स्वाध्याय नहीं करते थे उन्हों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा की यह सब आप के जैन गजट का ही प्रभाव है और आशा है कि दिन प्रति दिन इसी तरह उन्नति करता रहैगा ॥

नाम उन भाईयों का जिन्होंने दर्शन करने की प्रतिज्ञा का बाकेलाल, रामस्वरूप, बनारसीदास, नाम उन भाईयोंका जिन्हों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा की

रामचन्द्र, श्यामलाल, सालगराम, ज्वालाप्रसाद, बर्फीलाल, चिरंजीलाल, कश्मीरीलाल, सुन्दरलाल, और श्रीदशलाक्षणी पर्व में जो गोलक श्रीमंदिरजी में जैन महा विद्यालय भंडार के [illegible] में कुल धन ॥।) आने आये सो भाई रतनलालजी मथुरा निवासी के पास भेजदेंगे ॥

जगन्नाथ जैनी जसपुर जिला नैनीताल

नोटिस अंजन

और हमने अंक २८ में १ नोटिस दिया था कि हमारे पास १ अंजन है जिस मे धुंध जाला वगैर आंखों का मल हटजाता है जिस पर हमारे पास अनुमान पचास के दरख्वास्तें आई थी उन सब के पास अंजन भेजागया सो सबको फायदा हुआ अब और जिस किसी भाईको आवश्यता होवे मंगालेवें सिर्फ आन आनेका टिकट वास्ते महसूल डाकके हमारे पास भेजदेवें चिट्ठी पत्री साफ २ हिन्दी में या उर्दू में आनी चाहियें ॥

जगन्नाथ जैनी पंसारी जसपुर जिला नैनीताल

अवागढ जिला एटा

श्री दशलाक्षणी में ६ पर्चे जैन गजट के आये सो सब श्री मंदिरजी में बांच कर सुनाये गये सुन कर सर्व भाईयों को बडा आनन्द प्राप्त हुआ धन्य है महा सभा को जिस की ओर से यह जैन गजट जारी हुआ है हम सहस्र जिव्हा से भी इस महा सभा के प्रबन्ध करताओं की प्रशन्सा नहीं कर सक्ते यहां जैन गजट के उपदेश से गोलक रक्खी गई उस में ४॥।, आने जमा हुए हैं और ज्यादा जमा होने की कोशिश कीजा रही है आशा है कि रुपया ज्यादा जमा हो जावेगा– यहां पर बहुत से भाईयों ने शास्त्र स्वाध्याय की प्रतिज्ञाली है और बहुत से भाईयों ने कुदेवादिक के न पूजने की प्रतिज्ञाली है यहां पर पाठशाला भी है जिस में ३० लडके पढते हैं जिस में ४ लडके संस्कृत भी पढते हैं अध्यापक पं० गुलजारी लालजी हैं सभाका भी प्रबन्ध किया गया है सभा नियत होने पर प्रकाश की जावैगी ॥

मिती भादों सुदी १२ को हम पाडिम गये थे वहां के भाईयों की रुची धर्म की ओर देख कर चित्त को अति आनन्द प्राप्त हुआ सभा मास में दो दफै होती है– यहां के भाईयों ने हुक्का पीने का त्याग किया है और जो कोई भाई पीवेगा वोह जाति से अलाहिदा किया जावेगा और विवाह आदि में रंडीका कजाना बिलकुल बन्द कर दिया गया॥श्रीपाल श्रावक

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी
में सब भाईयों को जरूर पढ़ कर सुना दीजिये

जैन गजट

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म को परकाश
करै अविद्या व्यर्थहरण, आरु भ्रम का नाश

हर अंगरेजी महीने की १—८—१६—२४ ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर में
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष ; ता० १६ अक्टूबर .... सन १८९६ अङ्क ४७
बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

पाढम जिला मैनपुरी

जैन गजट आप के यहां से श्री दशलाक्षणी पर्व में नित्य आते रहे सर्व भाईयों को मैंने खड़े हो कर सुनाये सर्व के मुख से धन्य २ शब्द निकले और श्री अनंत चौदस को सभा हुई और मैंने जैन गजट में से मिथ्यात्व के विषय को पढ़ा और शास्त्र स्वाध्याय के बारे में पढ़ा और गोलक महासभा की रक्खी गई सभा में करीब १५९ आदमी एकत्र थे उस वक्त ७॥, रुपया गोलक में आए आप के हुकम मूजिब श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी महा सभा मथुरा को मनी आडर आज कर दिया और सर्व भाईयों ने मिथ्यात्व का छोड़ा और स्वाध्याय की प्रतिज्ञा कर भी लीनी और भाई मुन्नालालजी व भाई श्यामलालजी व पंडित सवारामजी जो यहां के मुखिया हैं आप को धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने महासभा में जाना स्वीकार कर लिया है प्रार्थना करते हैं कि इस फैरस्त को अच्छा छपा किजिये ॥

मिथ्यात्व के त्यागीयों के नाम
लाला चांदेलाल जसराम
लाला तोतारामजी मौजे रामपुर
और यहां के सर्व भाईयोंने त्यागकिया
मोजीराम रामपुर ॥
चम्पाराम रामपुर इत्यादि ॥
कन्हीराम धीरका नगरा ॥
गिरवरलाल धीरका नगरा इत्यादि ॥
सुखवासीलाल मौजा कोरारा ॥
ब्रिजवासीलाल मौजा कोरारा ॥
ब्रिजवासीलाल मौजा मानधाती ॥
भगवानदास मौजा पढ़त ॥
तोताराम मौजा बड़ागांव ॥
छिगामल मौजा बड़ागांव ॥
बनारसी दास अैः ॥
बिधी चन्द अैः ॥

भाईजी जैन गजट मौजे रामपुर में आना है यहां के भाई भी आज सभा में आये और फजूल खर्ची कार्य बंदारम्भ कर लिया है लाला तोताराम मुखिया और धर्मात्मा हैं ॥

पाढम के सर्व भाई धन्यवाद देते है यहां पर पाठशाला के लिये चन्दा जमा है पंडित की जरूरत है वेतन-का ८वा१० रुपया मासिक दिये जावेंगे शीघ्र भेजिये विलम्बन किजिये ॥

एक फार्म सरसाबा भर कर भेजा है

आपका आज्ञाकारी
लालाराम पाढम

बादशाहपुर

अत्यन्त हर्ष की बात है कि वर्तमान समय में यहां के जिन आज्ञा प्रति पालक जैन आम्नायने अपनी जात की हीनावस्था अवलोकन कर जिन भाषित धर्म से चार प्रकार के दान में विद्या दान कि जो मुख्य है उन्नति करने के लिये पं० जीया लालजी ज्योतिष रत्न आनरेरी उपदेशक के उपदेश से कटिबद्ध हुए थे परम उत्तमा ह... जैनी भाईयों से कि (घर जिन के ० हैं) बडा प्रेम हुआ कि पाठालय हो शास्त्रजी का धर्म उपदेश होवे अब जिनवर की दया से हमारी वांछा पूर्ण भई चुनांचे यहां पर एक पं० ला० हाल चन्द जो तिजारे के हैं आये हुए हैं इन को अनुमान चार मास हुए और पाठशाला का प्रबन्ध होगया लेकिन चन्द साहब अपनी औलाद को अविद्या रूपी घोर अन्धकार से निकालने की कोशिश नहीं करते उक्त पं० साहब पांच छः घंटे शास्त्री व नागरी पढाते हैं और अपना धर्म समझ कर दिली कोशिश करते हैं और फुरसत के वक्त चन्द विद्यार्थियों को जो छावनी गुड़गांवामें पढतेहैं यहां अंग्रेजी फारसी भी पढाते हैं अब इनकी उमर अनुमान २० वर्ष की है मिडिल पास हैं इन्ट्रेंस में कामयाब न हुए मगर ऐसी उमर में इनके ख्यालात धर्म पर खूब लगे हैं शास्त्रजी वक्त पर बांचते है अंदाजन ३० या ४० स्त्री पुरुष जमा होजाते हैं दो घंटे उपदेश होता है बाद में जैन गजट पढकर सुनाया जाता है पूरा २ असर करता है श्री दशलाक्षणीजी के पर्व में दस दिवस तक सर्व कार्य को छोडकर दो वक्त शास्त्रजी की सभा में जमा होते थे जैन गजट दोनों वक्त पढा जाता था अपना कामिल हित जनाता था जैसे कोई सच्चा सेवक अपने स्वामी के पैगाम बेलाग जाहिर करें तैसे आप की परोपकारी व आवाज बलन्द विदित करता था रत्नत्रय सोलह काणडजी की पूजन व श्री चतुर्विंशत जिन राज के मंडल विधान की पूजा गाजे बाजे से होती थी एक भाई पल्लीवाल कि जिनका नाम भोलानाथ है समो शरण की रचना की थी चतुर्दशी को श्रीजी बाहर समोशरण में विराजमान किये गये तो नवासी वगैरः में २१) रु० की आमदनी श्री मंदिरजी में भई तीन रोज तक महा उछाह से पूजन विधान मंडप रच कर हुआ मन्द मन्द वाणी से वादि त्रादि यन्त्रों का शब्द होता था छोटे २ लडके मधुर २ वाणी से अलाप कर नृत्य करते थे यह आनन्द देखने में ही बन पडा आश्वन कृष्ण प्रतिपदा को कलशा भिषेक होकर श्रीजी मंदिरजी में विराजमान किये गये यह आनन्द ऐसा भया कि लेखनी को समर्थ्य नहीं कि बयान करें वक्त शास्त्रजी — निम्न लिखित भाइयों ने स्वाध्या

की आलड़ोली कल्लन रामसरन, नानगराम, झज्जूमल, धीसा, भूमीलाल, महकम जीसुख राय इत्यादि १५ भाईयों ने रात्रि भोजन जो सभा में मौजूद थे सब ने त्याग किया कुरीत का कुछ अभी बन्दोबस्त नहीं गोलक जैन विद्यालय की रक्खी हुई है जिस कदर रुपया जमा हुआ है मथुराजी भेज दिया जावेगा ॥

सकल पंच जैनी
बादशाहपुर
जि० गुड़गांवा

आगरा

विदित हो कि मिती भादों सुदी ११ सम्वत १९५३ बृहस्पति वार की रात्रि को तारकी गली के श्री जैन मंदिरजी में आगरे के समस्त खंडलवाल भाई एकत्र हुए सर्व भाईयों की सम्मत्यानुसार नीचे लिखी हुई फजूल खर्ची और कुरीतियों का प्रबन्ध किया आशा की जाती है कि और देश देशान्तरों के भाई भी इसका अनुकर्ण करेंगे तो धर्म धन आत्मा की रक्षा अति लाभ दायक होवेगी ॥ इस वास्ते मंतव्य प्रकाश हुआ कि इन की नकल हर श्री जैन मंदिरों में ज्ञातार्थ भेजी जावे ॥

यादगारतानिमय

(१) घेवर तथा फलों का नुकता जो कि साथका होता है बन्द ॥

(२) बरात में निकासी के समय फुलवाडी यानी [बाग बहारी] और आतिशबाजी बन्द ॥

(३) तोरन का नुकता दिन में होना चाहिये अगर आवश्यकता रात्रि की आन पड़े तो ५ मसालों से तोरन का नुकता किया जावे और परदेश में बरात जावे तो वहां भी आगरे की रीत्यानुसार पांच ही मसालों से तोरन का नुकता किया जावे ॥

(४) स्त्रियोंका बजार में गाना बन्द ॥

(५) तेल चाक जो नुकता होता है उस में कुम्हार के घर जाना और चाक पूजना बन्द ॥ श्री जैन मंदिरजी में जाया करें ॥

(६) जनवासे में स्त्रियों का दिन में और रात में जाना बन्द सवासना जाया करें ॥

(७) थालों का व मूंढे का जो नुकता होता है उस में सुपारी का बटना बन्द ॥

(८) छोटे छोटे कुल नुकतों के वास्ते ११, सवा मन सुपारी देनी चाहिये ज्यादा नहीं ॥

(९) बिरादरी में थाली या चवेनी बटती है उस का बांटना वा लेना बन्द ॥

(१०) सिर गुंथी के नुकते के वास्ते १।, सवा मन मिठाई देने चाहिये ज्यादा नहीं ॥

(११) जो कोई लडकी के ब्याह मध्ये नेगो से ज्यादा रुपया बेटे वाले से किसी तरह लेवेगा उस का भाजी व्योहार बन्द ॥

(१२) जिस मृतक के मा बाप जीते हों उस की तेरहवीं बन्द ॥

(१३) जो स्त्री १० बरस तक की मरे उसकी तेहरवीं बन्द ॥

(१४) जो सरवाउ भाजी बांटे मिठाई वगैरा वो घर में सोध के घीकी बनवावे और नाई ब्यास के हाथ से न बटावें किसी जोग्य आदमी के हाथ से बटावें ॥

(१५) अगर इन काइदों के खिलाफ कोई भाई अमल करेगा तो उस का देन लेन भाजी व्योहार बन्द होगा ॥

इस प्रकार सर्व भाईयों की आज्ञानुसार प्रबन्ध किया गया ॥

प्रबन्ध कर्ता

संगही हीरालाल चिम्मनलाल किनारी बाजार आगरा ॥

नजीबाबाद

यहां पर निम्न लिखित भाईयों ने स्वाध्याय करने का नियम लिया है नाम नन्नूमल, रामपरसाद, उमरावसिंह, अमीरीलाल, गनेशीलाल, मुकंदीलाल, निवादरमल के मुकंदीलाल वल्द अयुध्या प्रसाद, पुगमंधरदास चंडीप्रसाद. और मेरी व मेरे भाई कंवंडीमल की व पं० मंगलसैन की पहिले ही से जन्म पर्यंत स्वाध्याय करने की नियम है ॥ बेशक जबतक हमारे भाई स्वाध्याय का नियम न करेंगे तब तक उन की धर्म में रुची न होगी क्योंकि आज कल अपने धर्म के जान्ने की सिर्फ एक शास्त्र ही की कारण है और जब तक नियम न करा जावे तब तक आलकस के बस में हो कर कोई बात नहीं होती है मेरा मतलब गजट में छपवाने से यह नहीं है कि हमारे शहर के भाईयों की प्रशंसा हो बलके यह है कि और नगरों के भाई भी स्वाध्याय करने का नियम लें ॥ और यहां पर भाई रामप्रसाद जी ने अब के दशलाक्षणी पर्व में रंडी का नाच देखने का त्याग करा है और गोलक वगैरह के हाल सब आप को लाला उमराव सिंह की चिट्ठी से मालूम हुए होंगे ॥

मलेषचन्द नजीबा बाद

जिला बिजनौर

सहारनपूर

सम्पूर्ण महाशयों को प्रगट है कि महा सभा ने सकल भारतवर्ष के जैनियों को जैन गजट द्वारा सूचित करदिया है कि जैन धर्म की पहले क्या दशा थी और इस समय क्या अवस्था होरही है । मुझ को पूर्ण विश्वास है कि जिस महाशय ने जैनगजटके अंकोंको भांति अवलोकन किया होगा वह अवश्य ही तन मन धन से जैन धर्म की उन्नति करने को कटिबद्ध होगया होगा । क्योंकि जैसे कोई वैद्य किसी को यह निदान बतादे कि इसको अमुक भयंकर रोग है और यदि एक घंटे भर तक इसकी चिकित्सा नकी गई तो यह प्राणान्त हो जावेगा और इसको अमुक औषधि उपयोगी और हितकारी होगी सो ऐ दूर दर्शी भाईयो आप विचार सक्ते हैं कि कैसे उस रोगी के कुटंबी और दयावान पुरुष जिन्होंने उस वैद्य के वचन सुने हैं हाथ पर हाथ रखकर बैठ सकते हैं, कदापि नहीं वे अवश्य ही जिस तिस प्रकार होगा वह औषधि करके उसको बचावेंगे ॥

इस कारण सर्व जैनी भाईयोंको धर्मकेसुधारार्थ उपाय करने उचित हैं ॥ हे महाशय समाचार पत्रों के पढने से सर्वथा प्रकार विदित और ज्ञात होता है कि जैन धर्म की उन्नति व्यर्थ व्यय के अभाव और सर्व स्त्री पुरुषों में विद्या के प्रचार अर्थात् देश २ में जैन पाठशाला और महा विद्यालयों के खोलने से हो सक्ती है ॥

परन्तु यह दोनों ही काम होने कुछ कठिन मालूम पडते हैं । प्रथम ही ऐसी युक्ति सोचनी चाहिये कि जिन से यह कार्य पूर्णता को प्राप्त हो । सो ऐ भाईयों बडे हर्ष की बात है कि वह युक्ति श्री जैन जाति की रक्षक महा सभा ने सोचली है और प्रचलित करदी है । वह क्या है उपदेशक महाशयों का देश २ विषै पर्यटन करकै उपदेश का देना है जिसई से सर्व कार्यों की पूर्णता होने की सुगमता जान पडती है । परन्तु यह काम विशेष कर हमारे धनाढ्य महाशयों की कृपा दृष्टि और सहायता से चलसक्ता है । अद्यावधि पर्यंत हमारे धनाढ्य महाशयों की दृष्टि इधर पूरी २ नहीं हुई है यदि होती तो अब तक क्या था कभी का जैन कालिज भी खुलगया होता । अभी एक लेख इस विषय में श्रीयुत मंत्री हकीम उग्रसैन जी सिरसावे निवासी का छपा था जिसमें वहुत अच्छा उपाय उन्नति का लिखा था और जिसको अनुमान सबने पढा होगा, परन्तु ऐ भाईयो केवल पढने ही मात्र से कुछ सिद्धि नहीं किन्तु उसके अनुस्वार प्रवर्त्तने और कामकरनेसे होगी यदि ऐसेही सिद्धि हुआ करती तो मिठाई२कहने से कहने मे ही मुख मीठा हो जाया करता सो नहीं है ॥

धनाढ्य भाईयों के अतिरिक्त हमारे सामान्य भाईयों को इसकी अवश्य ही सहायता करनी उचित है क्योंकि यह आप जानते हैं कि "कन कन जोरे मन जुरे" अर्थात् थोड़ा २ करने से बहुत कुछ हो सकता है ॥ इस कारण हमारे सर्व भाईयों को जोकि मुखिया चौधरी धर्मात्मा परोपकारी हैं उचित है कि जिस तिस प्रकार होसके मांगकर भी इस फंड की सहायता करें और इस दोहे को अपने हृदय विषै धार कर किसी प्रकार लाज न करे ॥

दोहा। प्राण जांय मांगू नहीं अपने तन के काज। पर उपकार के कारणों नेक न आवै लाज ॥

ऐ महाशयों इस दोहे ने मेरे हृदय पर भी इतना असर किया कि मैंने भी निज मित्र गणों आदिक से मांग कर और प्रार्थना करके २६॥) रुपये श्रीमान बाबू सूर्यभानजी की सेवा में भेज दिये हैं। मैं उन महाशयों को अनेकानेक धन्यवाद देताहूं कि जिन्होंने मुझ तुच्छ पुरुष के तनिक कहने पर अपने उस दुष्प्राप्य धन को परोपकारार्थ दिया है और मेरे उत्साह को बढाया है। मैं आशा करता हूं कि अन्य देशों के भाई भी अवश्य अपने मित्र गण और परोपकारियों से प्रार्थना करके परोपकारार्थ धन एकत्र करेंगे और अपना जन्म सुफल करेंगे ॥

अब मैं इस कारण कि उन देने वाले भाईयों का उत्साह बढ़ै और अन्य पर अच्छा असर पड़े उन दातार भाईयों के नाम भी लिखता हूं ॥

२॥) प्यारेलाल सुमेरचन्द
२) स्योबखशमल चुन्नीलाल मारवाडी
१) रामचन्द्र मारवाडी
२) नन्दलाल मित्तरसैन टोली चौक
१) निहालचन्द सराफ
१) मित्तरसैन सराफ
१) रायबखल कीर्तिमल्ल दारोगा वाले
८) लाडोभार्या शिताबराय
१) गोमीभार्या सुमेरचन्द मुत्वन्ना कल्लूमल कबाडी
१) जीतूमल पुत्र कल्लूमल टोली फाटक
१) मानजीमल जार्देराय टोलीमली पुरियोंकी
२) रामजीदास प्यारेलाल टोली संगियों की
१) हरदवारीमल आसाराम टोली गलावों की

कुल २६॥,

सुमेरचन्द निवासी
सहारनपुर खास
निवासी भवानी जि० हिसार

जैन गजट की प्रशन्सा

जैन गजट ने अवश्य धर्म्म रूपी सूर्य वत प्रकाश होकर अधर्म्म रूपी तिमिर को नाश करदिया जन्म जन्मांतर के सोते

हुवों को जगा दिया गुमराहों को राह बतला दिया अब भी ज्ञान न होतो जैन गजट का क्या दोष है ॥ श्लोक ॥ पत्रं नैवयदाकरीर विटपे दोषो वसन्तस्यकिम् ॥ नोलू कोप्य व लोकते यादिदिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ॥ वर्षा नैवपतंति चातिक मुखै मेघस्य किं दूषणम् ॥ यत्पूर्वे विधना लिलाट लिखं तं तन्मार्जितुं कःक्षमाः ॥ अर्थ ॥ यदि करील के वृक्ष में पत्ते नहीं होते तो बसन्त का क्या अपराध है ॥ यदि उलूक दिन में नहीं देखता तो सूर्य का क्या दोष है ॥ वर्षा चातिक के मुख में नहीं पडती तो मेघ का क्या दोष ॥ पाहिले ही से जो कर्म में लिखा है उसे कौन मेट सक्ता है पस जैन गजट का कुछ दोष नहीं ॥ और अंक ३४ जैन गजट मे ज्ञात हुवा कि पंडित धर्म्म सहायजी उपदेशक ने लखनउ में कृपा करके सभा कराई और बहुत से भाईयों को शास्त्र श्रवन व निस भोजन त्याग आदि का नेम कराया जैन पाठशाला जोकि कुछ रोज बन्द रही थी फिर जारी होगयी परन्तु नवाबगंज व दरियाबाद आदि में पूरा पता न मालूम होने के कारण आना नहीं हुवा गोकि जैन मंदिर के पते से मुशकिल नथा लेकिन तकलीफ थी हां यह बात अवश्य जाननी चाहिये कि बहुत से कार्यों की सिद्दिता वगैर उपदेशक साहेब के नहीं होसक्ती एक दफा जरूर हर जगह कि जहां २ गजट जाता है खबर लेना चाहिये और जहां २ कि दुश्मनी [फूट] ने विरुद्ध कर रक्खा है इसको निकाल कर ऐक्यता का उपदेश देना चाहिये ॥ यहां पर श्रावण में समोसरन का मंडल बनाकर श्री मन्दिरजी में बडी धूम से पूजा हुई उसमें भाई सुर्गप्रशाद वल्द नंदकिशोर ने धर्म्मोपदेश के पश्चात गोलक रखने के बारे में कहा यकीन है कि भादों की पूजा में गोलक अवश्य रक्खी जावे ॥

बिना विद्या के शोभा नहीं होती

माता रिपुःपिता शत्रुर्वालोयेन नपाठ्यते ॥ सभा मध्ये नशोभंते हंस मध्ये बको यथा ॥ अर्थ ॥ वह माता शत्रु और पिता बैरी हैं जिसने अपने बालक को न पढाया क्योंकि सभा के बीच वे नहीं शोभंत जैसे हंस के बीच में बगुला ॥

रूप यौवन संपन्ना विशाल कुल सम्भवाः॥ विद्या हीना न शोभन्ते निर्गंधाइव किंशुकाः ॥

अर्थ

सुन्दर, तरुणता युत और बडे कुल में उत्पन्न भी विद्या हीन पुरुष नहीं शोभते जैसे बिना गन्धि पलाश का फूल ॥

भैरोंप्रशाद
दरियाबाद निवासी

महाविद्यालयकारुपयाइसप्रकाआया

२०, बमद फी घर १, रुपया सकल पंचान मारफत तिरखाराजी छा पनी गुडगांवां जिला खास ॥

११, सकल पंचान मारफ गिरनारी लाला मंगीलालजी टीढी जिला गढवाल ॥

१९।–, बमद गोलक सकल पंचान मारफत कनछेदीलालजी सागर जिला खास ॥

३, गोलक सकल पंचान भिवाना जिला हीसार ॥

२, बमद मुतफरीक सीतल परसादजी कलत्ता ॥

१९, बाबू विहारी लालजी हापड जिला मेरठ मारफत डिप्टी चम्पत रायजी ॥

१, फी घर १, रुपया सकल पंचान मारफत डीप्टी चम्पतरायजी के हापड ॥

२१॥।, बनसी धरजी टौन सकूल मास्टर वाह जिला आगरा ॥

२३–, गोलक पंचान मंदिर पंचायती साहरनपुर जिला खास ॥

४।=, गोलक पंचान महोला चौधर थान साहरनपुर ॥

२, मुतफरीक दीपचन्दजी जगाधरी जिला अम्बाला ॥

२, गोलक सकल पंचान मैनपुरी ॥

१०, श्रावका लज पंती साहरनपुर॥

२०, सकल पंचान मारफत लछमीरामजी झजर जिला रोहतक ॥

३, गोलक सकल पंचान रतलाम ॥

८, गोलक सकल निकूड जिला सहारनपुर ॥

५, गोलक सकल पंचान मारफत मखनलालजी जेवर जिला बुलंद शहर ॥

९, बमद मुतफरीक थान सिंहजी निहटोर जिला बिजनोर ॥

२५, बमद मुतफरीक लाला कुंदनमल अमर सिंहजी स्योहारा जिला बिजनोर ॥

८, बमद मुतफरीक छोगालालजी गंगवाल जबद जिला छावनी नीमच ॥

१०, मुतफरीक धामी रामजी अग्रवाल झालरा पाटन ॥

४॥–, मुतफरीक सकल पंचान मयाजी ॥

२०, मुतफरीक चंढीलालजी मारफत डिप्टी चम्पतरायजीन वादीपुर राज कशमीर ॥

४७, बमद फी घर १, रुपया सकल पंचान स्योपुर का रामगंज राज गवलीयर ॥

१०, बमद मुतफरीक हीरालालजी खजानची कालाबाग जिला हजारा अहाता पंजाब ॥

१७।=, सकल पंचान हरदा जिला खास ॥

११, बमद मुतफरीक लाला बुलाकीदासजी बुधसैनजी हरदा जिला खास ॥

९, बमद गोलक सकल पंचान नानोता जिला साहरनपुर ॥

१, बमद मुतफरीक बीठलजी रंगनाथजी डांकर गाम लातुर जिला मेंमीनाबाद कमश्नरी सोलापुर ॥

२०, सकल पंचान नवाबगंज बारावंकी बमद गोलक ॥

१२, सकल पंचान इटावा बमद गोलक ॥

३, सकल पंचान कस्बा छोटी लाउन जिला भिंड राज गवालीयर बमद गोलक ॥

१३, सकल पंचान पलवल जिला गुडगांवा ॥

२७१।||=)

नोटिस

भीलवाडा जिला मेवाड से लाला चिरंजी लाल सैकंड मास्टर लिखते हैं कि यहां पर पाठशाला के लिये एक पंडित की आवश्यक्ता है पंडित अपने जैन शास्त्र और मामूली संस्कृत भी पढा होवे तनखा १९, रुपया मासिक दिया जावेगा अगर कोई भाई नोकरी करना पसंद करें तो इस पते से दरखास्त भेजें चिरंजी लाल सैकंड मास्टर भीलावाडा जिला मेवाड ॥

राजमहल जिला एटा

मिती भादों सुदी १९ को यहां थजात्रा का उत्सव हुआ जिस में २० ग्राम के भाई एकत्र हुए और बडा आनन्द रहा रात्रि के समय शास्त्र सभा हुई शास्त्र वचने के पश्चात पंडित मनीरामजी बेरनी निवासी ने सर्व भाईयों से सभा स्थापित करने की प्रार्थना की सो सम्पूर्ण भाईयों ने स्वीकार किया तब उसी वक्त पंडित सेतीलालजी कांट की निवासी ने अविद्या और आलस्य के विषय में उपदेश दिया पंडित रेवती रामजी रेमजा निवासी ने मनुष्य जन्म पाना दुर्लभ है इस को पूर्ण तौर से सिद्ध किया ततपश्चात पंडित मनीरामजी बेरनी निवासी ने मिथ्यात्व का सेवन कुदेवा आदिक का पूजना इस के निषेध में व्याख्यान दिया जिस को सुन कर बहुत से भाईयां ने कुदेवादिक के न पूजने की प्रतिज्ञाली यहां पर सभा नियत हो गई ॥

गुलजारीलाल मंत्री

बरमाना

यहां पर श्री मन्दिरजी की नीव सम्वत् १९३१ में डाली गई थी मन्दिर का विस्तार १८ गज लम्बा चौड़ा है— दो साल तक लाग लगी रही बाद में रुपये की कमी होगई तब लाला सुन्दरलालजी बेसवा निवासी ने १००) रुपये और लाला नरसिंहदासजी ने २०)रुपये और ७९) रु० लाला सेढमल व भोलानाथजी मुहमदाबाद निवासीने दिए और कुछ विवाहों का रुपया था सब ९९०, रुपये एकत्र होगये काम मन्दिर का चलता रहा— फिर लाला बसन्तराय सालगरामजी हाथरस निवासी ने दिये इस भांति कुल रुपया २०००, हजार के अनुमान लग चुके हैं अब थोड़ासा काम बाकी है सो सर्व जैनी भाईयों से प्रार्थना है कि इस मन्दिर के बनवाने में सहायता देवें उनके महान पुन्य का बन्ध होगा ॥

सकल पंच जैनी बरमाना
डाकखाना हसायन
जिला अलीगढ

सम्पादक— उक्त ग्राम के पंचों की चिट्ठी से हमको मालूम हुआ है कि अमुक भाई ने कुछ रुपया इस मन्दिर के बनवाने के वास्ते देना स्वीकार किया था और पत्र द्वारा उनको सूचित भी किया गया परन्तु न तो कुछ जवाब दिया और न रुपया भेजा सो उन महाशय से हमारी प्रार्थना है कि यदि उन्होंने देना स्वीकार किया होतो अपनी प्रतिज्ञा का प्रतिपालन करें और यदि नहीं देना होतो उत्तर देदेवें ॥

धर्म उपकार

रेणी के श्री मन्दिरजी में गोलक रक्खी गई फिर मैं बीमार होगया था इस कारण अपना इलाज करानेके वास्ते कस्बा महुवा को गया तो रास्ते में मौजा रसीदपुर जोकि इस दास की जन्म भूमि है वहां १ रात्रि ठहरा और सर्व भाईयों को श्री मन्दिरजीमें एकत्र किया जिसमें लाला बच्चूलालजी ताल्लुकेदार जोकि बड़े सज्जन और परोपकारी हैं— यहां पर शास्त्र का बांचना व पूजन प्रक्षाल का कुछ प्रबन्ध नहीं था मैंनेसब भाईयों को उपदेश किया कि यहां पर शास्त्रजी तथा पूजन प्रक्षाल का प्रबन्ध अवश्य होना चाहिये और इन बातों के न होनेसे धर्म का बिलकुल लोप हो जायगा इस को पूर्ण तौर से सिद्धि किया उस वक्त सम्पूर्ण भाईयों के चित्त उत्कंठित हुए परन्तु उनमें बिना बुद्धिवान के संयोग के बा विद्या की न्यूनता के कारण किसी ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब उक्त ताल्लुकेदार साहब ने दोनों बातें यानी पूजन करना और शास्त्र का बांचना अंगीकार किया यहां के सर्व भाई सरल स्वभाव हैं— इनको कभी उपदेशादिक सुनने का कारण

नहीं मिला—फिर मैं महुवा चलागया यहां जैनी भाईयों के १३ घर हैं यहां के भाई बहुत धर्मानुरागी हैं पूजन व शास्त्रजी का अच्छा प्रबन्ध है और कैई भाई स्वाऽध्याय भी करते हैं मिती भादवा सुदी ११ को यहां सभा हुई जिसमें स्त्री पुरुष अनुमान ६० एकत्र हुए सो कैई बातों का प्रबन्ध किया गया और सभा मास में १ दफै हुआ करैगी— यहां पर गोलक रक्खी गई थी उसमें ४।।।—)।। आने एकत्र हुए और अन्य ग्रामों की भी उगाही करके कुल रुपया सेठजी साहब के पास मथुरा भेजा जावेगा यह सारा उपकार जैन गजट का है हम कोटिशः धन्यवाद महा सभा को देते हैं जिसकी ओरसे यहपत्र निकलता है

बालावकस महुवा

उत्तर प्रश्न किशोरीलाल

दोहा ॥ खजुर जहाज और सुरज का लेलो अक्षर मध्य ॥ प्रश्न किशोरीलाल का अर्थ जुहार प्रसिद्ध ॥ १ ॥

जुगल राग और द्वेष की हान करो बुधवन्त ॥ रुके कर्म शिव पाइये यह जुहार चिरतंन ॥ २ ॥

किरोडी मल

दफ्तर जैन सभा

मथुरा

समाचार

गुडगांवा— से लाला तिरखारामजी लिखते हैं कि यहां पर पंडित धर्म सहायजी उपदेशक पधारे उन्होंने चार बातों का उपदेश दिया— [१] जैन महा विद्यालय के वास्ते रुपया इकट्ठा करना फी घर १, रु० के हिसाब से [२] पाठशाला नियत करना [३] सभा स्थापित करना [४] फिजूल खर्ची का रोकना— इन चारों बातों में से १ घर पीछे एक १ रुपया इकट्ठा करके कुल २०, रुपये सेठजी साहब की सेवा में मथुरा भेजे गये लडकों के न होने से पाठशाला स्थापित नहीं होसक्की (३) सभा के नियत होने का प्रबन्ध होरहा है (४)फिजूल खर्ची का बन्दोबस्त कस्बा रिवाडी में हो रहा है जब वहां पर होजावेगा तब यहां पर भी होजावेगा और यहां पर बहुत से भाई स्वाध्याय भी करते हैं ॥

निहटौर— से थानसिंहजी लिखते हैं आप के जैन गजट के सब परचे श्री मन्दिरजी में सुनाये गये जिनके सुनने से सर्व भाइयों के दिलों पर बडा असर हुआ यहां पर श्री मंदिरजी में गोलक रक्खी गई थी उसमें से २०) रुपये निकाले और मेरे घर में दस वर्ष से दशलाक्षणी के व्रत करती थी अब के साल उसका उद्यापन किया गया कि जिसमें अनुमान २००, रुपये के खर्च हुए सो इसकी खुशी में ५, रुपये जैन महा विद्यालय के वास्ते भी दिये— यह रुपये और गोलक के रुपये

सेठजी साहबके पास मथुरा भेज दिये गये।

अम्बाला— लाला नाहरसिंहजी लिखते हैं कि यहां के भाइयों की रुचि धर्म में मामूली है और ८ तथा ७ भाई स्वाध्याय भी करते हैं लेकिन भाइयों में बैर विरोध ज्यादा फैल रहा है इस कारण यहां पर कोई सभा व पाठशाला नहीं है आप का जैन गजट जोकि अज्ञान तिमिर को नाश करने वाला है जिसके पढने वा सुनने से चन्द भाईयों के दिलों में सभा स्थापित करने की रुचि पैदा हुई परन्तु इस चान्डाल बैर विरोध के कारण उतीर्ण न होसके और सभा नियत होने के बदले में आपसमें भाईयों की गाली गलौज और नोटिस तक की नौबत पहुंची हाय बैर विरोध तूने हमारी यह दशा तो बनादी तौभी तूने हमारी जाति से दूर नहीं होता-यहां पर उपदेशक की आवश्यका है ॥

हिसार— से लाला नियत मतसिंहजी लिखते हैं कि यहां पर पंडित धर्मसहायजी उपदेशक पधारे जिनके उपदेश से जैन महा विद्यालय के वास्ते फी घर एक रुपये के हिसाब से चिट्ठा लिखा गया है इकट्ठा करके सेठजी साहब के पास मथुरा भेजा जावेगा पंडितजी साहब के उपदेश से धर्म की बहुत उन्नति होरही है ॥

बुलन्दशहर— बाबू बिहारीलालजी मास्टर लिखते हैं कि आपके परचे जैन गजट के आये सो सब श्री मन्दिरजी में सुना दिये गये जिनके असर से गोलक रक्खी गई जिस में ॥-,॥ आने जमा हुये और जैन महा विद्यालय के वास्ते रुपया एकत्र करने की कोशिश की जारही है

वहरायच

आप का पत्र जैन गजट आया अति हर्ष प्राप्त हुआ जिस के पढने से तथा श्री मंदिरजी में बैठ कर भाईयों को सुनने से तत्काल फलदायक हुआ अर्थात सब भाईयों ने मिल कर सभा की और महीने में दो बार यानी हर चौदश को सभा हुआ करैगी वाह वाह यह गजट तो निहायत उपकारक और मिष्ट फल दाता हुआ और अनेक गुण वृद्धि दायक है ॥ छप्पै ॥ बुद्धि वृद्धि अति होय धर्म अनुराग बढावै । प्रीति परस्पर बढै नीति की रीति चलावै ॥ देश २ व्यवहार चलन वृतांत बतावै । भ्रम निद्रा कर ग्रसित ताहि फिर वेग जगावै ॥ ऐसो अपार गुण लसित यह जैन गजट जारी किया । कोटि २ धन्यवाद है पुनि २ हर्षं मम हिया ॥ १ ॥ भाई साहब ऐसा अपूर्व उप कारक जैन गजट को कौन न वांचेगा नहीं सर्व ही जन बांचा करेंगे आप कृपा करके जैन गजट को जरूर भेजा करिये मूल्य भी आप को भेजा जायगा आप तो बडे उप कारक सज्जन भ्राता हो आप के गुण

को कहां तक लिखैं आप को भी को टिशः धन्यवाद है कि ऐसा जैन गज- ट का प्रकाश कर जिस की सहायता से जगह २ जैन सभा और पाठशाला आदि हुये हैं और होते जाते हैं महा हर्ष प्राप्त हुआ कि सेठजी साहब सेठ लक्ष्मणदासजी सभापति कायम और गजट के सहायक हुये और श्रीमथुरा जी में सभा होने को नियत किया प- रन्तु बडे आश्चर्य की बात है कि हमा रे भाई जैनी जहां तक देखा जाता है और सुना गया है एक २ भाई लक्षप ति और करोड पती हैं और अन्य इ- ति हासों में भी लिखा है कि और जा त के निस्वत जैनी लोग ज्यादा धना ढ्य हैं फिर क्या एक भाई पाठशाला आदि विद्या का प्रकाश नहीं करस के हैं देखो अन्य बहुत सी जाति वा- लों ने अपने २ पाठशाला एक ही ए क आदमियों ने अपने २ नाम से ज- गह २ जारी कर दिये हैं क्या कुछ वो हमारी जाति जैनियों से ज्यादा धनाढ्य है ॥ नहीं नहीं वोह कुछ ज्यादा धनाढ्य तो नहीं हैं परन्तु मालू म होता है कि वे लोग चित्त उदार और परस्वारथी हैं और हमारे भाई अत्यंत ही लोभ कर ग्रसित हैं ॥

सूर्य्य प्रसाद जैन

मुरादाबाद

आगे दशलाक्षणी के पर्व में जो आप के जैन गजट आये और रात्रि को रोजीना सुना दिये गये मंदिरजी में गोलक रक्खी गई है इस के १≈) आने मथुराजी को मनी आर्डर द्वारा भेज दिये और जैन गजट के सुनने से बहुत भाईयों ने स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञाली उन के नाम नीचे लिखते हैं

१ बाबू भगवान दासजी लखनौ वाले
२ स्वरूप चन्द्र सेठ ॥
३ सिपाहीलाल कुंदरखी निवासी ॥
४ शंकरलाल ॥
५ बद्दूलाल ॥
६ मुकन्दराम ॥
७ चोखे लाल ॥
८ सिपाही लाल ॥

आगे यहां मिती आसोज वदी १ के दिन जल यात्रा का उत्सव होता है जिस में और धौरे के ग्राम के भाई आते हैं और इस मंदिरजी से उस मं दिर को और उस मंदिरजी से इस मं दिरजी को बहुत गाजे बाजे के साथ आते जाते हैं उसी दिन रात्रि को स- भा हुई और उस में बहुत से भाईयों ने उपदेश दिये उन में उपदेशों को सुन कर बहुत से आदमियों ने अपने भाई या पुत्र को इतने काल तक सि- वाय पढाने के कोई काम न लेंगे ऐ- सी प्रतिज्ञाली उन के नाम नीचै लि- खे हैं ॥

१ बाबू कुंजबिहारी लालजी ने अपने छोटे भाई सिपाही लाल को ३ वर्ष तक ॥

२ लाला सन्तलालजी ने अपने छोटे भाई रामरतन को तीन वर्ष तक ॥

३ लाला छद्म्मी लाल ने अपने पुत्र चन्दरसेन को ५ वर्ष तक॥

४ लाला सन्तराय रामपुर वालों ने अपने भतीजे गेंदन लाल को २ वर्ष और मुरारी को ५ वर्ष तक

५ बद्दूलाल कोटवालों ने गेंदनलाल को ३ वर्ष तक ॥

६ लाला सुन्दरलाल ने अपनी भानजी जैदेवी को १ वर्ष तक ॥

७ लाला रामदयालजीने अपने पुत्र रामरतन को ब्रजरतन को और पोते भूषन को दो दो वर्ष तक ॥

८ मंगलसेन ने अपने पुत्र सिपाही लाल को २ वर्ष तक ॥

९ भगवान दास हरयाने वालोंने अपने पुत्र प्यारे लाल को २ वर्ष तक ॥

१० चुन्नी लाल नंगला जिला बदायुं वालों ने अपने छोटे भाई मानमुल को १ वर्ष तक पढाने की प्रतिज्ञा करी ॥

आगे आसोज बदी २ के दिन रयासत रामपुर की जैन पाठशाला के विद्यार्थीयों की (जो उत्सव में आये थे) परीक्षाली गई उन का परितोषिक (रूमाल एक एक प्रत्येक को) दिया गया ॥

पं० चुन्नी लाल

भिक्षामांगमा

मैं सम्पूर्ण भारत वर्ष के जैनी भाईयों से निम्न लिखित १० बातों का दान मांगता हूं से कृपा करके सम्पूर्ण भारत के जैनी भाई मुझे अवश्य दी जिये ॥

१ जैनियों का चौरासी लाख योनि के जीवों से प्रीति भाव रखना अथवा जैनियों में तो परस्प प्रीति गऊवच्छा सम होनी चाहिये ॥

२ फिजूल खर्ची का मुंह काला करके अपनी जाति से निकाल देना चाहिये ॥

३ वेश्या नृत्य यानी रंडी का नाच जिस को अपनी जाति का नास कहना चाहिये बिलकुल अपनी जाति से निकाल देना चाहिये ॥

४ अपने २ नग्र और शहरों में पाठशाला ऐं स्थापित करनी चाहिये ॥

५ और सभा ओं का स्थापित करना ॥

६ आतिशबाजी का जैनी मात्र को नाम भी नहीं लेना ॥

७ खरबूजे वारकारी किसी समय जैनी मात्र को नहीं देना चाहिये जो कि महान हिंसाका कारन है

८ शास्त्रजी की हमेशा स्वाध्याय करना तथा शास्त्रजी हमेशा सुनना ॥

९ हमेशा जाप करना ॥

१० महा सभा के विद्यालय भंडार को तन मन धन से मदद देना चाहिये ॥

सो सम्पूर्ण जैनी भाई अपनी २ शक्ति अनुसार मुझ भिक्षुक को दान दीजिये और यदि आप मेरी इस प्रार्थना को कबूल नहीं करेंगे तो मुझे बड़ा खेद होगा और यह भिक्षुक आपके दरवाजे से निरास फिरैगा तो आप भी लज्जा को प्राप्त होवेंगे इस लिये मुझे आशा है कि जैनी भाई मेरी इस प्रार्थना को अवश्य ही स्वीकार करैंगे और मुझे इन दस बातों का दान देकर कृतार्थ करैंगे ॥

इस दासने १००) रुपया जिन वाणी के जीर्णोद्धार में देना स्वीकार किये हैं और वेश्या नृत्य देखने का जन्म पर्यंत का त्याग है ॥

संगमलाल मुनीब

मुनपत जिला दहली

धर्म में धन खर्चना

यहां जबलपूर में भाई सुखलाल मल ठेकेदार ही एक जैनियों में धर्मात्मा नजर आते हैं सभा वो पाठशाला कायम हाने के वास्ते आपने बहुत कुछ कोशिश की मगर यहां के जैनी भाई जो बड़े धनाढ्य हैं धन के मद में ख्याल नहीं करते हैं दरजा लाचारी है आपने मिती आसोज बदी ९ को जो यहां एक अति शेक्षेत्र मढ़ियाजी करके मसहूर हैं वहां जैनियोंका मेलाथा आपने पहले रोज वहां जाकर माडला बना कर पाठ थाय पूजन खूब गा बजा कर कीनी और नीचे लिखे मुताबिक रुपया धर्म कारज में दिया॥

१४६, मढ़ियाजी में दिये ॥

१०, जैन कालिज के वास्ते दिये ॥

३, उपदेशक फंड के दिये ॥

२, विद्या वृद्धि भंडार को दिये ॥

२, जैन औषधालय बंबई को दिये

१, स्वरूनेस विद्यार्थी पाठशाला बंबई को दिया ॥

१६४)

इस के सिवाय इनाम बगैरा वो सामग्री बगैरा खर्च कीनी बिरादरी के दस बीस भाईयों की दावत कीनी य और पहले इसी साल में आपने असाड सुदी ८ को अष्टानका जीमें श्री लार्डगंज के मंदिरजी में तेरा दी-

प विधान कराकर अष्टानका जीकी पूरा उत्सव कर दिखाया और॥

२०, आपने निम्न लिखित धर्म कार्य में खर्च किया ॥

१२, फी मंदिरजी में एक रुपया के हिसाब से जबल पूरमें जो मंदिर हैं दिये ॥

१०, विधान कराई लाठगंज के मंदिर में भेठ में दिये ॥

७, बाजे वाले भोजक वो दान दिये

१०, रुपया सामग्री पूजन में ॥

जो रुपया जैन कालिज में दिया गया है दो चार रोजमें जहां २ भेजने की जरूरत हो भेजा जायेगा सो जानना हम तो इन महाशय की तारीफ नहीं करसक्ते बडे परोपकारी हैं इस का सबब यह मालूम होता है कि आप खास जबलपूरके वाशिंदे नहीं हैं और खानोली जिला मुजफ्फर नगर के रहने वाले हैं अगर जबलपुर के रहने वाले होते तो आप में भी हमारे तरह के जैनियों का असर जरूर पैदा हो जाता आप के यहां जिस कदर जैन गजट हैं सब आते हैं और हर तरह से आप की तबियत जैन वृद्धि वो जैन जाति के उच्च पने का ख्याल रखती है आप की तबियत जबलपुर के बाहर भी उपदेश के वास्ते सामग्री रहती है जहां २ आप जाते हैं सभा पाठशाला करना फजूल खर्ची दूर करनाही मुख्य उपदेशदेते हैं आपके यहां दो चार किसम की दवाई भी खैरात होती है आप कुछ दुखित भुखित को भी शक्ती अनुसार देते हैं ऐसे सज्जन जन सदा चिरायु रहैं

प्यारेलाल श्रावक जबलपुर

रिपोर्ट दौरा जोतिषरत्न मुन्शी जीयालाल आनेरेरी उपदेशक

महाशय मुन्शी चम्पतरायजी जैजिनेन्द्र मैं मिती भाद्रपद कृष्ना १० मंगलवार को अपने निज कार्य के वास्ते इन्दौर की तर्फ गया था वहां पर १ मास से अधिक ठहरना हुआ परन्तु कोई जलसआम नहीं हुआ रिपोर्ट व्योरेवार जैन गजट में छपने को भेजी गई है ॥

इन्दौर से तारीख २२ सितम्बरको चलकर उज्जैन मालवा देश में आया— और गनेशदास कृष्नाजी खजानची रियासत के मकान पर ठहरा— रात्री के समय सराफे के पीछे जो दिगाम्बर आम्नाय का मंदिर है वहां पर श्री शास्त्रजी के पीछे व्याख्यान हुआ जितने भाई मौजूद थे सब ने सहर्ष महा सभा से हमदर्दी जाहिरकरी और थोडे भाइयों ने प्रतिनिधी के तौर पर महा सभा में आने को कहा—और नकशा मनुष्य गणना का तयार करके भेजा गया

वहां अफयून की तिजारत अधिक होती है वहां से चलकर २१ तारीख को छाव नी नसीराबाद आया दो पहर तक लाला हजारीलालजी वैश्या के मकान पर रहा शाम को बाबू प्यारेलालजी जौहरी देहली वाले अपने मकान पर लेगये— और यह सलाह करार पाई के २६ तारीख की रात्री में कृष्णाजी के मंदिर के चौक में सभा की जावे ॥

और उसी तारीख को छपे हुए विज्ञापन सभा के वास्ते बांटे गये और बाजारों में जावजा लगा दिये गये— और फिर मैं डारहटू ग्राम में उक्त जौहरी सा हबके तांगे में जो नसीराबाद से ३ मील पूर्व की तरफ है गया- इस ग्राम में खंडेल वाल भाइयों के २८ घर हैं और दो श्री मंदिरजी हैं एक मंदिर में एक प्रतिबिम्ब अति मनोज्ञ सम्वत् १२३९ की प्रतिष्ठित है यहां के भाइयों का चाल चलन देहाती हैं रोजगार जमीदारी का करते हैं पूजन नित्य होते हैं परन्तु शास्त्रजी नहीं होते हैं मैंने जवानी भाइयों से वार्तालाप में विद्या के लाभ दिखाये— और पाठशाला नियत करने को कहा जिसको भाइयों ने स्वीकार किया— वहां से वापिस नसीरा बाद आया- और यात्र गणना का नकशा डा॰र हकीम उग्रसैन के पास भेजा गया फिर शाम के वक्त जैनी वैश्नव दोनों थोक के भाई उक्त स्थान पर बड़ी खुशी के साथ एकत्र होगये मैंने व्यर्थव्यय विवाह आदि में रोकने के विषय में व्याख्य कहा जिसको सब ने पसन्द किया कुछ भाइयों ने प्रतिनिध बनकर मथुरा महा सभा में आना स्वीकार किया— नसीराबाद में खंडेलवाल भाइयों के घर और अग्रवालों के १३ और ९ मन्दिर हैं यहां धर्म चर्चा अच्छा है और यहां के व्योहार साहूकारी है मुझको लाला [illegible] लालजी जौहारी ने बड़ी मदद दई कि उनको खास तौर पर धन्यवाद देता हूं यह महाशय बड़े धर्मात्मा हैं आप ने २४, रुपये से उपदेशक फन्ड की ओर १९, रुपये से महा सभा की सहायता करी है— और उन भाइयों को भी धन्य वाद देता हूं कि जिन्होंने अपना बहु-मूल्य समय मेरे व्याख्यान के सुनने में खर्च किया ॥

जोतिषरत्न मुन्शी जीयालाल

यथा सम्भव पाठशाला के स्थापन करने की आवश्यकता

विदित होके परमोत्सव वात्सल्याद्यनेक धर्मों का अंग मथुराजी का मेला आता है यहां पर महा सभा कईवर्ष से होती है और अब भी भविष्य प्रमाण मेले में होयगी सभा का मुख्य प्रयोजन विद्योन्नति धर्म्मोन्नति आत्योन्नति करने का है, जिसमें विद्योन्नति का होना अत्यावश्यक है जिसके होने से उत्तर दोनों स्वयं होवे

है (विद्या सर्वोदय कारणम्)ऐसा वाक्य है इसका अर्थ यह है कि उत्तम विद्या से सत्य असत्य का धर्म्म अधर्म्म का हित अहित का स्वपर विवेक धन धान्यादि विभूति का ज्ञान तथा लाभ होता है इत्यादि लेकिन इस सभा से अभी तक ऐसा कोई कार्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ है जिस से विद्योन्नति होवे सर्व महानुभाव देशी सभा में एकत्र होते हैं और सर्व ही प्रभावक महाशय इसी विषय का विचार करते हैं जिस समय मेला का उद्देश कर प्रमाण करते हैं उस समय विचार लेते हैं कि इस वर्ष के मेले में पाठशाला नियत होजायगी फिर मेला के हुए पीछे पूछने पर कहते हैं कि अब पाठशाला नियत होने में कोई देर नहीं नियमावली तयार होगई है इतना विचार होने पर फिर पाठशाला नियत नहीं होती है यह क्या कारण है देखिये एक पुरुष किसी एक कार्य का संकल्प करता है उस कार्य को करके उसके फल का भागी होता है बड़ा आश्चर्य है कि जिस कार्य में हमारीं धार्म्मिक विद्या भिलाषुक भातृ गणों का तन मन धन लग रहा है फिर वो कार्य फल दाता नहीं अब महाशय जैन धर्म्म प्रभावक वर्य सभापति श्रीयुत श्रेष्ठवर श्री लक्ष्मणदासजी सी० आई० ई० तथा सर्व सभ्य जनों से निवेदन है कि यह कार्य देर करने का नहीं है रुग्न पुरुष को औषधि विलम्ब से रोग वृद्धि होती है तथैव जैसा २ विद्याभिवर्द्धन में विलम्ब होता है तैसा २ ही अज्ञान रोग का प्रसार होता जाता है देखिये विचार करने पर हृदय अति दग्ध होता है कि परम पूज्य कल्याण का स्थान निज स्वरूप का दर्शक सुख का अद्वितीय कारण ऐसा यह पवित्र जैन धर्म्म उच्च होकर अवनति होरहा है इस अवनति का कारण केवल अविद्याही है इस समय जैन मतावलम्बियों में विद्या की न्यूनता होने से ऐसे विद्वान विरले ही दृष्टिगोचर होते हैं जो जैन मत के रहस्य को प्रकाश कर सकें इस कारण विद्योन्नति के करने में देरी करना उचित नहीं है ॥

श्रीमती जैन पाठशाला अलीगढ़ को कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि जिसके प्रभाव से यत्र तत्र जैनियों में संस्कृत पढ़ने पढ़ाने की चर्चा हुई (जिसके कार्य कर्त्ता अनार्हत कुरंग प्रचंड पञ्चानन विद्वद्गण गणनीय श्रीयुत पंडित छेदालालजी साहब अलीगढ़ निवासी थे) उस पाठशाला के नष्ट होने से हृदय को बड़ा सन्ताप होता है तदनन्तर श्रीमती जैनदिगम्बर सभा मुम्बई को सहर्ष अनेकानेक धन्यवाद देते हैं जिसके उद्यम से आज दिन ११० विद्यार्थी व्याकरणादि जैन ग्रन्थों की परीक्षा देकर उत्तीर्ण पद के भागी हुए यह समाचार परमाल्हाद का कारण है उक्त सभा से सविनय प्रार्थना है कि इस जैन विद्या

के बढाने में निरन्तर कटिबद्ध रहे प्राप्त फल होने से तादृश होना युक्तही है जैन दिगम्बर सभा मुम्बई से महा सभा मथुरा कई वर्ष पहिले नियत हुई है लेकिन इस का अभी तक कोई कार्य्य विद्योन्नति का प्रतीत नहीं हुआ इस कारण महा सभा से सविनय निवेदन है कि अपने को फली भूत करने में विलम्ब न करै ॥

इस विषय में मेरा ऐसा विचार है कि जैन कालेज के होने का शोर कई वर्ष से होरहा है परन्तु कुछ हुआ नहीं अब तक जोदिन व्यतीत सोतोहुए लेकिन अबआगामी (मिती कार्तिक वदी २ से ९ तक सम्वत् १९९३) कार्तिक के मेले में जो महा सभा की जायगी उस सभा में ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये कि जो रुपया पहिले चिट्ठे में दर्ज हुआ है उसको जहां तक होसके उगाना चाहिये अथवा पुनः और चन्दा होना चाहिये चन्दे का रुपया जितना लिखा जाय देने वाले महाशयों से तत्काल नगद लिया जाय उस रुपये में जितनाखर्च सम्पन्न होसके उसी खर्चके अनुसार पाठशाला मथुरा में नियत होवे वा सभा सम्मति स्थान में मेरी राय से मथुरा में होना उत्तम है पाठशाला में योग्य विद्वान रखकर तत्रीय आगन्तुक विद्यार्थियों को संस्कृत पढाने का प्रारम्भ होना चाहिये यही कार्य्य छोटे से बडा होजायगा इसलिये प्रथम वृक्ष उगता है तो पाहिले बहुत ही छोटा होता है फिर सींचते २ वही महा वृक्ष होजाता है लघु वृक्ष से ही महा वृक्ष का होना सम्भव है अन्यथा वचन मात्रही है इस कारण यथा सम्भव पाठशाला नियत होजावगी तब उसके गुण देखने पर उसके गुणों की वृद्धि के लिये सर्व्व जैनी भाइयों की इच्छा स्वयं द्रव्य देने की होवेगी जैसे दुर्व्वल कृशीभूत शरीर का अवलोकन कर वैद्य उसके पुष्ट होने के लिये औषधि देता है यदि मूल कृष शरीर न होतो विचारिये औषधि किसको दीजाय और किस प्रकार अपना उत्साह प्रसिद्ध करें इसलिये अन्य मतावलम्बियों की कई पाठशाला ऐसी देखने में आती हैं जिनके चन्दा में पूर्व न कुछ रुपया जमा हुआ था फिर उत्साही पुरुषों ने उसका कुछ फल दिखा के उन लोगों का उत्साह बढाया फिर वही मनुष्य स्वयं हजार हां रुपया पाठशाला में देने को तत्पर हुए सो वही पाठशाला अपने कार्यों को दिखाकर महा पाठशाला का पद धारण करती हुई इस कारण साम्प्रतिक शाक्य नुष्ठान से पाठशाला का होना अत्यावश्यक है यदि जैन कालेज बडा होना चाहिये यही विचार रहेगा तो आगामी दिवस भी पूर्वावस्था को धारण करेंगे जैन कालेज यह नामही शेष रहेगा ॥

(शेषभागे)

॥ श्रीः ॥

कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त श्रीमंदिरजी में सब भाईयों को जरूर पढ कर सुना दीजिये

॥ इस पत्र को सब जैनी भाइयों को दिखाइये ॥

जैन गजट

मूल्य पेशगी वार्षिक डाकमहसूल सहित केवल तीन रुपया

साप्ताहिक पत्र

जैन गजट जग में करै, धर्म सूर्य परकाश
करै अविद्या ध्वंसगय, आदिक तमको नाश

हरअंगरेजी महीनेकी १-८-१६-२४ता० को
बाबू सूरजभान वकील के प्रबन्ध से
देवबन्द जिला सहारनपुर से
प्रकाशित होता है

प्रथमवर्ष { ता० २४ अक्टूबर .... सन् १८९६ } अङ्क ४८
बम्बई मित्र प्रेस मथुरा में छपा

राज्य स्थान समाचार पत्र से नकल

प्रथम सभा भादव वदी ८ को श्री मंदिरजी के विषय में की जिस का प्रारम्भ पंडित मही चन्दजी ने मंगला चरण पढ़ कर किया मुन्शी गोविन्द रामजी ने अति मधुर ध्वनि से मनुष्यों के अज्ञानता के कारण को बताया तिस के बाद बाबूजी शंकरलालजी ने फूट के अवगुण और ऐक्यता के सद गुणों को अति ललित वाक्यों में कहा फिर मुन्शीजी ने अविद्या की कहानियां और स्त्री शिक्षा के लाभ और व्यर्थव्यय के दोषों को भले प्रकार दर्शाया और बडे परिश्रम से सब भाईयों से दस्तखत कराके आतिशबाजी जलाने के प्रचार को एक साथ जाति से उठा दिया ॥ तत्पश्चात सब भाईयों को इस शुभ कार्य करने का बाबूजी ने धन्यवाद दे कर सभा विसर्जन की फिर चतुर्दशी का दिवस नियत किया गया सभा में अनुमान १५० भाईयों के एकत्र हुए थे ॥

जैन हितोप देशक सभा कुचावन का तृतीय अधिवेशन भादव सुदी ८ को आनन्द पूर्वक हुआ उत्तमो त्तम व्याख्यान दिये गये और पाठशाला के इस प्रबन्ध करने का समस्त सभासदों ने संकल्प कर लिया है और बहुत से सभासदों ने शास्त्र पठन की प्रतिज्ञा भी धारण की ॥

फिर इस सभा का तृतीय अधिवेशन भाद्रपद सुदी १२ को आनन्द पूर्वक निर्विघ्नता के साथ हो गया सभापति के आसन पर पंडित महीचन्दजी सुशोभित थे भाई छगनलालजी वैद्य, मुन्शी गोविन्दरामजी व बाबू शंकरलालजी साहब ने अति उत्तमोत्तम व्याख्यानों से सभासदों के मनको प्रफुल्लित किया और समस्त सभासदों ने एकाग्र हो कर कहा कि हम जाति विषय में कल की मैदा व आटे को काम में नहीं लावेंगे इस के पश्चात बाबूजी साहब ने इस शुभ कार्य करनेको समस्त सभासदोंको धन्यवाद देकर अपना कार्य पूर्ण किया बाद में छगनलालजी वैद्य ने एक भजन गा कर सभा विसर्जन की इस प्रकार ४ घन्टे तक सभा का आनन्द निहायत ही अच्छा रहा ॥

माडीखेडा

भाई बाबू सूरजभान साहब जैनजिनेन्द्र बंचना बडे हर्ष के समाचार कस्बा माडी खेडे क चौगिरदा यह ग्राम बसते हैं भागल मलालपुर भादस झिमरावट तिमाव जिनमें दो २ चार २ घर खंडेलवाल भाईयों के हैं और यह सर्व पंचायत माडी खेडे में सामिल हैं यहां दसलाक्षणी के पर्व के दिनों में जैन गजट नग ६ अंक सर्व भाइयों को सुनाये गये हैं जैन गजट के सुने से जो आनन्द प्राप्त हुवा लिखने में नहीं आता जैसे कि भान के ऊगते ही कमल खिलजावै तैसेही सभा सुनने से प्रफुल्लित हुई और गोलक उसी वक्त रखदी गई जिसमें १।–) आया पैसा. १ के हिसाब से और १०) बिरादरी से चन्दा कर के जैन महा सभापति श्रीमान् सेठ लक्ष्मणदासजी साहब के पास भेज दिये जावेंगे ११।–) विद्यालय भंडार जैन कालिज के लिये और यहां व्यर्थ व्यय यानी फिजूल खर्ची का बन्दोवस्त बहुत अच्छा होगया है आप इसको जैन गजट द्वारा प्रकाश कीजिये ताकि सब जैनी भाई इसी तरह प्रबन्ध करलेवे यहां पर बेश्या नृत लौंडों का लेजाना आतिशबाजी का लेजाना वा मंगाना फुलवाडी का लुटवाना बिलकुल बन्द है यहां केई भाइयों को धन्यवाद दिया जाता है कि जिन्होंने इतना बन्दोवस्त किया बरात में आदमी १२५ गाडी नग १७ लेजानी मंगानी इससे ज्यादा न तो लेजावें न मंगावें यह बन्दोवस्त बहुत ठीक है ॥

यहां पर सर्व भाईयों में ऐक्यता है धर्म की तरफ भी रुची है और फिजूल खर्ची के बारे में और भी बन्दोवस्त हो गया है कि हमारी बिरादरी में खंडेलवाल भाईयों में व्याह में बनात सुपारी का बहुत खरच है यह खरच भी यहां मती निकाल दिया लेकिन यह बन्दोवस्त तबही होसक्ता है तब कि हमारी बिरादरी लसकर जैपुर आगरा भरथपुर इत्यादि शहरों सेती यह खरच दूर होजाय तो बहुत ही अच्छा है और छोटे २ ग्रामों में तो आप ही बन्द होजावेगा कुरीतियां दूर होजावेंगी और सर्व खंडेलवाल भाईयों से यह प्रार्थना है कि इस जाति में वालों मूढा का नेग हुवा करता है सो इस नेग के वक्त सर्व बिरादरी के स्त्री पुरुष एकत्र होते हैं और यह वक्त सभा के लिये ऐसा मौका है कि फिर ऐसा मौका न मिले लेकिन सभा की जगह बडा निन्दनीक रिवाज जारीहै कि बेटा वाला बताशे वहां की स्त्रीयों को बांटता है जिसमें स्त्रीयों की लज्जा बिलकुल उठ जाती है और वह बरातियों को मुह फाड २ कर बकती हैं और बराती उनसे वाही तवाही बकते हैं इसमें दो नुकसान हैं एक व्यर्थ व्यय का खरच

दूसरे पुरुष स्त्री को ऐसे वक्त में महा पाप के भाजन होते हैं इस सबब सेती सभा का मौका है इसी लिये खडेलवाल भाईयों से प्रार्थना है कि इसको दूर करें और सर्व भाई अपनी जाति से बतासा सुपारी का खरच निकालदें इसके बदले कुछ खरच जैन विद्यालय के वास्ते मुकर्रर करै तो बहुत ही अच्छा है और इस वक्त सभा करावें ॥

परसादीलाल नागलमध्ये
तहसील फिरोजपुर
जिला गुडगावां

यहां जिन्होने वेश्या नृत्य देखने की भी प्रतिज्ञा लीनीहै उनके नाम दर्ज कियेहैं गोवि न्दराम खडेलवाल सेठमल सेलवाल राम सहाय वैष्णव भाई और परसादीलाल लाल जीमल निवासी नगीना के माडीखेडे से कोस पौन पर के फासले पर है सो ई जानियेगा ॥

और यहां पाठशाला का बन्दोबस्त नगीनेमें होगयाहै क्योंकर किसबखरइकठे नहीं हैं इस सबब सेती ३, माहवारी नगीना में देना स्वीकार किया है और लडके वाले भी वहां पर पढने के वास्ते चले जाया करेंगे ॥

द० उमरावसिंह
नगीना मध्ये

टीहरी जिला गढवाल

हाल यह है कि यहां पर सिर्फ २ दो घर जैनीयों के हैं जिनमें कि कुछ १० मनुष्य रहते हैं कसबे व ग्राम में भी और कोई घर नहीं है यहां पर भादवा वदी १४ को भाई मंगूलालजी ने श्री शास्त्रजी की सभा का प्रारम्भ किया और सर्व भाईयों को शास्त्रजी सुने का नेम दिलवाया सो सर्व भाईयों ने हर्ष करके स्वीकार किया और भाई बारूमल ने दसलाक्षणी परवतक सिर्फ एक वक्त भोजन का नियम किया और भादव सुदी १४ को भाई मंगूलाल ने दुसारे मिथ्यात्व अभक्ष भक्षण व सी-लवृत के बारे में उपदेश दिया सो अपनी सक्ती अनुसार सर्व भाईयों ने रात्री भोजन व कन्दमूल आदि का त्याग किया और भाई बारूमलने उमर परयन्त तक सीलवृत ग्रहण किया और मंगूलाल गिरवारीलाल व भाई फतेचन्द ने मिथ्यात्व के पूजने का त्याग किया और मैंने भी अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार जैन कौलेज के बारे में उपदेश दिया सो नीचे लिखे भाईयों ने अपनी वित्तानुसार चन्दा दिया ॥

९) रु० भाई मंगूलाल फतेचन्द और मैं गिरवारीलाल यानी हम तीनों भाईयों ने दिये ॥
२) रु० भाई मजनकशोर
२) रु० भा. मुन्शीलाल
१) रु० भा. मित्रसैन
१)रु०भा, नरपतलाल व देवीसहाय
॥) भा. मनोहरलाल

(१६) रु०

मेंडू जिला अलिगढ

यहां मेंडू में सभा स्थापित हो गई है ॥ प्रत्येक चतुरदशी को हुआ करैगी हाल सभा पति आदि का नकशे से मालूम हागा ॥ भादव शुक्ला चतुरदशी सम्वत १९९३ को सभा हुई ॥ इस सभा में पहले ही प्रबन्ध विवाह आदि की बुरी रस्मों की दुरस्ती का व मिथ्यात्व के त्याग का हुआ ॥

और निम्न लिखत भाईयों ने कुदेव आदिक के पूजन का त्याग किया ॥

१ लाला परशादी लालजी
२ लाला रंगीलालजी
३ लाला लडेती लालजी
४लाला मिश्री लालजी
५ लाला नरायन प्रसादजी सभा विसरजन होने के बाद आएथे
६ बाबू सुधारसी लालजी
७ लाला चन्दी लालजी
८ लाला ख्याली रामजी
९ लाला मिठूलालजी
१० लाला बंशीधरजी यह भी सभा विसरजन होने के बाद आए
११ लाला चम्पारामजी

स्त्रियों ने भी मिथ्यात्व का त्याग कियो ॥ इस शर्त से कि सिवाय होली दिवाली करवा चौथ अहोई आठे त्यौहारों के मीयां बराई आदि सर्व कुदेवादिक के पूजन का इन स्त्रियोंने त्याग किया

१ लाला नरायनप्रसाद के घर से
२ लाला रंगीलाल के घर से
३ लाला लडैतीलाल के घर से
४ लाला मिश्रीलाल के घर से
५ लाला भिकारी दास के घर से
६ बाबू सुधारसीलाल के घर से
७ लाला चन्दीलाल के घर से

(२) और कुरितियों का प्रबन्ध इस भांति से हुआ ॥

प्रबन्ध दुरस्ती रस्म जैसवाला न बमुकाम मेंडू मिती भादव शुक्ला १४ सम्वत १९९३ ॥

(१) बरात में गाडी भाडा खुश्क किराये पर लेजाया करैं दाना चारह पर वृथा तकरार होती है इस वास्ते बन्द कर दिया जाय ॥

(२) बरात में लगुन के रुपया से चौगुने आदमियों से ज्यादह बराती कभी न होने चाहिये ॥ इस में बिरादरी के भाई रीतिरस्म वाले और शागिर्द पेशा वाले सब शामिल हैं ॥ क्योंकि ज्यादह आदमियों के होने से पूरी २ खातिर नहीं हो सक्ती ॥

(३) मिलनी में २५ की लगुन पर ।) आदिमी और ५० की लगुन पर ॥) आदिमी और १००)की लगुन पर १, आदमी देनाचाहिये

आगे देने वाले की सर्धा है ॥

(४) तीसरे दिन यानी पलंग वाले दिन का खाना लडके वाला जरूर दिया करें खाने के नमिलने से वरातियों को वडी भारी तकलीफ होती है ॥ और अगर लडकी वाला देतो उस को इखित्यार है और उस की इत्तला लडके वाले को करदें मगर हर सूरत खाने का इन्तजाम जरूर होना चाहिये ॥

(५) सगाई के वक्त यह देख लेना चाहिये कि लडका लडकी से ४ वर्ष वडा हो बराबर की उमर में सगाई कभी नहीं होनी चाहिये ताकि विवाह के समय जब लडकी ९ वर्ष की हो तब लडका १३ वर्ष का हो यही समय सगाई और विवाह का बहुत मुनासिब समझा गया है ॥

(६) बच्चौं को मजहबी तालीम भी हुआ करें ॥ बच्चौं में पुत्र और पुत्री दोनों शामिल हैं माता पिता को चाहिये कि जो अपने बच्चों का पर लोक सुधारना चाहैं वह अपने बच्चौं को मजहबी तालीम जरूर दें ॥ इस विषय में जैन गजट ने बहुत २ उपदेश दिये हैं ज्यादह क्या कहैं ॥

(७) बच्चों की सगाई अपनी आंखों से देख कर करनी चाहिये ताकि फिर सगाई के छोड ने की आवश्यक्ता न रहें ॥ और सगाई का छोडना दस भाईयों के साम्हने वजह खास के साथ होना चाहियें जिस में शिकायत बाकी न रहें अमीरी गरीबी के लिहाज से सगाई नहीं छोडनी चाहिये क्यों कि सगाई का छोडना बडी लोक निन्द्य बात है ॥

(८) नजर यानी भेट समधी साहब यानी लडके वाले की सिर्फ एक मर्तबै सगाई के बाद मौके मुनासिब पर होनी चाहिये फिर नहीं जिस से फिर मौका मुंह छिपाने का जीचुराने का बाकी न रहै ॥ जब मिलना हो बडी खुशी के साथ आपस में मिलें और राजी पूछें ॥ अपनी तकलीफ आरामका हाल आत्मोन्नति और धर्मोन्नति का हाल कहैं और सुनें ॥

(९) एक मूंठ श्री जैन महा विद्यालय के लिये और बढाई जाय उसका रुपया उसी वक्त पंचान के साम्हने मनी आडर करके आनरे बिल श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी साहब सी० आई० ई० मथुरा की सेवा में भेज दिया जाया करें यह रुपया महा सुफल कार्य में लगेगा

जिस्से इस भव सम्बन्धी कीर्ति ध-
र्मोन्नति और आत्मोन्नति होगी ॥
और पर लोक भी सुधरैगा ॥

भाई जैसवालों की सेवा में निवेदन है कि जिन के पास यह पत्र पहुंचे वह पढ़ कर खुद गौर करें दूसरों को सुनावें और अपनी सम्मति दें और उनकी लें और जो साहब इस में कुछ कमी बेशी करना चाहें वह अपनी राय में और पत्र द्वारा मेंडू के जैसवालों को कि जिन्हों ने यह प्रबन्ध रस्मों का निकाला है सूचित करें ॥ और पसंद खातिर हों तो इस के पाबंद हों ॥ और अपने पाबन्द होने की इतलाअ दें जिस से यह ज्ञात हों कि अमुक २ भाईने नई रस्मों को पसन्द किया हर हालत पसन्द व ना पसन्द का जवाब अवश्य दें ॥ चुप के न हो रहें ॥ आपने जैन गजट में पढ़ा होगा कि कितने भाईयों ने अपने यहां की रस्मों को दुरुस्त कर लिया है अब आप भी जागिये और दुरुस्ती कीजिये इस विषय में जैन गजट ने बहुत कुछ कहा है उमसे ज्यादह हम लोग क्या कहैं यहां सभा नियत हो गई है और हर चतुरदशीको हुआ करेगी ॥ आप भी अपने यहां सभा नियत करें और दुरुस्ती रस्म व कौम में तन मन धन से कटिबद्ध हों और दूसरे जैनी भाईयों व अन्य कोई बिरादरी जो इन रस्मों को पसन्द करें वह भी अपने यहां इनको जारी करें

द० चम्पाराम जैसवाल मेंडू ॥
द० रंगीलाल ॥
द० परशादी लाल ॥
द० सुधारसी लाल ॥
द० चन्दी लाल ॥
द० ख्याली राम ॥
द० लडैती लाल ॥
द० मिश्री लाल ॥

(३) और निम्न लिखत चन्दा महा वारी वास्ते खर्च पूजन श्रीजी के यहां के भाईयों ने देना मंजूर किया शुद्ध हुआ सम्वत १९५३ से ॥

१, बाबू सुधारसी लाल ।, लाला ख्याली राम ॥
।, लाला लडैती लाल ।, लाला रंगी लाल ॥
।, लाला चम्पाराम =, लाला बन्सीधर ॥
२=, मीजान

(४) गोलक महा विद्यालय की सहायतार्थ रक्खी गई उसका हाल पीछे में लिखेंगे यह गोलक हरमाल रक्खी जाया करेगी यह लेख जनाव डिप्टी चम्पतराय साहब जनरल सेक्रेटरी महा सभा के कौमी अपील के जवाब में है ॥

आपका धर्म स्नेही सुधारसीलाल
जैसवाल सभापति जैनसभा
ग्राम मेंडू जिला अलीगढ़

सवाई माधोपुर

आवश्यक प्रार्थना

यहां जैनियों के घर अनुमान १०० के ह, ७ शिखरबन्द मन्दिरजी व ४ चैत्यालय हैं, शास्त्रजी २ मन्दिरजी में बचते हैं, शास्त्रजी की सभा में आजकल भाद्रपद मास में अनुमान २०० स्त्री पुरुष एकत्र होजाते हैं शास्त्रजी बचने के पश्चात् आप का बहुमूल्य पत्र भी प्रति दिवस सुनाया जाता है उसके श्रवण करने से सब भाई बडे आनन्द को प्राप्त होते हैं जिस आनन्द का प्रगट करना एक जिव्हा के द्वारा असम्भव है– धन्य हैं आप सरीके महाशय कि हम अचेत सोते हुए मनुष्यों को बडे जोर २ से गले फाडकर जगा रहेहैं परन्तु बहुधा महाशय तो अब भी नहीं जगते और न जैन गजट रूपी हरकारे की बात को सुनते केवल तलब देकर ही टाल देते हैं– इस वास्ते मैं सविनय प्रार्थना करता हूं कि ए भाईयों सचेत हो अविद्या अन्धकार जो जैन जाति में परिपूर्ण छागया है दूर करो विद्या रूपी सूर्य को बुलाओ और उससे धर्म्म रूपी रत्न को ढूंढो यह मनुष्य शरीर बडी दुर्लभता से मिलता है इस देह के पाने का फल यहीहै कि प्रति दिवस शास्त्रश्रवणकरना स्वाध्याय करना प्रति दिन मन्दिरजी जाना, अपनी यथा शक्ति योग्य दरिद्रियों को गुप्त दान देना अनाथों की पर्वरिश करना, जहां तक होसके किसी से कटुक बचन न कहना, कुव्यसन न सेवना इत्यादि हैं– इस मनुष्य शरीर के प्राप्त होने की देवता भी वांछा करते रहते हैं कि कब हमको मनुष्य जन्म मिले और उस भव से तप सञ्जम आदि धर्म्म ध्यान अंगीकार करके मनोवांछित फल को प्राप्त हों– बडे आश्चर्य की बात है जिस शरीर की देवता वांछाकरें और हमको स्वयमेव मिले और कई प्रकार की योग्यता अर्थात् उत्तम कुल उत्तम सतसंग इत्यादि मिलने पर भी किञ्चित मात्र धर्म्म की ओर चित्त न लगावैं और सर्व आयु को सत्य असत्य कुव्यसनादिक सेवने जाल फरेब धोका दगाबाजी वगैरह के करने में व्यर्थ व्यतीत करैं ऐसे मनुष्यों की दशा को देखकर कौन मनुष्य दुःखी न होते होंगे मनुष्य और पशु में केवल धर्म्म ही की विशेषता है ॥

॥ श्लोक ॥ आहार निद्रा भय मैथुनंच सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणां । धर्म्मो हितेषा मधिको विशेषो धर्म्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

॥ अर्थ ॥ भोजन नींद भय मैथुन मनुष्य और पशु के समान हैं कोई विशेषता नहीं है केवल धर्म्म ही विशेष है जिसने धर्म्म नहीं किया वह पशुही के तुल्य है॥

भाईयो इस संसार में धर्म्म के तुल्य और पदार्थ नहीं है कारण कि इस भव और परभवमें यह अनन्त सुख का देने वा-

ता है और भार्या पुत्र मित्र आदि जिन को मोह के परदे से सुख मान रक्खा है और उनके निमित्त धर्म्म मार्ग को छोड कर कुकर्म्म अर्थात् न्याय अन्याय से रुपया कमाकर दुःख के भंडार को भरकर पाप की पोट को लिये हुए अन्त में नर्क गति को बिना रोक टोक पधारते हैं जैसे कि कहा है ॥ श्लोक

एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति-यः। शरीरेण समन्नाशं सर्व्वं मन्यद्धि गच्छति ॥

भावार्थ ॥ एक धर्म्म ही मित्र है क्यों कि वह मरे पीछे भी साथ जाता है और बाकी तो सब शरीर के साथही नष्ट होते हैं:— कदाचित कहो कि मरे पीछे तो अधर्म्म भी मित्र होना चाहिये तिसका समाधान यह है कि धर्म इष्ट फल देने के लिये जाता है और अधर्म्म अनिष्ट फल देने के लिये जाता है तो जो इष्ट फल देने के लिये जाय सोही मित्र कहलाता है और भार्य्या पुत्र आदि तो शरीर के साथ ही छूट जाते हैं इसलिये पुत्रादि में स्नेह करके धर्म्म को न बिगाडो; जब यह बात बखूबी निश्चय है कि धर्म्म ही सहाई है तो फिर क्यों नहीं अपने पुत्र पौत्रादिक को ऐसे मार्ग में लगावें कि बाल्यावस्था ही से जैन धर्म्म पर दृढ श्रद्धानी होवें इस वास्ते माता पिताओं को उचित है कि अपने२ बालकों को स्वमता नुयायी ग्रन्थों का अभ्यास करावें और इच्छानुकूल पढने के पश्चात् अंगरेजी फारसी आदि विद्या समयानुसार पढाने में कोई हानि नहीं है क्योंकि इसके लिखे पढे बिना भी आजकल हमारा निर्वाह नहीं होसक्ता इस प्रकार जो बालक विद्याओं का अभ्यास करेंगे उनके श्रद्धान अपने निज धर्म्म में सदैव बने रहेंगे इसके व्यतिरिक्त आजकल हमारी जैन जाति के बालकों का विवाह अल्प आयु में होजाता है जो धर्म्म से विमुख होने की जड है जिसकी हानियां व उपद्रव सर्वत्र विदित हैं कि बालक मूर्ख रह जाते हैं और न पढने लिखने के कारण दोदो रुपये की मजदूरी करते फिरते हैं हैं और इसके उपरान्त उनके जो बाल बच्चे उत्पन्न होते हैं वह निहायत कमजोर होते हैं कि अव्वल तो वह जिन्दा ही नहीं रहते यदि वह जिन्दा भी रहगये तो उमर भर बीमारी में फंसे रहते हैं धर्म्म ध्यान करना तो दरकिनार परन्तु डाक्टर साहिबान व वैद्यजी महाराज की सेवा में हर वक्त मौजूद रहते हैं भाईयो जैन जाति की हीन दशा व बद इंतजामी व फजूल हानि कारक रस्मादिक का वर्णन कहां तक किया जावे और एक प्रकार लिखना व इबारत को तूल देना भी ठीक नहीं है क्योंकि इन ही बातों का आज कल भारत खंड में सब जगह शोर मच रहा है परन्तु दिल की उमंग ने दास को

चुप न रक्खा— इस लेख के अन्त में केवल प्रार्थना ही करने को दिल चाहता है वह यह कि मैम्बरान महा सभा हमारी हानि कारक फिजूल रस्मादिक का अवश्य आगामी महा सभा में प्रबन्ध करें और हमारे जैन धर्म्म को अच्छी तरह से जानने के लिये जैन महा विद्यालय शीघ्र नियत फरमावैं, भारतखंड में जैपुर की जैन पाठ शाला नामी है, विद्यार्थियों की संख्या बहुत है, जैपुर जैनियों की राजधानी है इस पाठशाला को सहायता महाराजा की ओर से भी है यामनी भाषायें पढाने का रूज से उत्तम प्रबन्ध है विद्यार्थियों को वजीफा भी दिया जाता है शहर की आब हवा उत्तम है पस निवेदन है कि इस पाठशाला की तरक्की करदी जावे यदि इच्छानुसार रुपये का प्रबन्ध न होतो थोडे ही कारखाने से काम का प्रारम्भ करादेवै बाद में होते २ इच्छानुसार कालेज बन जावेगा— मैम्बरान महा सभा अवश्य इस पर स्टेप लेवें फकत ॥ सवाईमाधोपुर ता० ८ सितम्बर सन् १८९६ई०

मोतीलाल भौसा श्रावक

रिपोर्ट दौरा पंडित लालजीमल जी उपदेशक महासभा

मैं सहारनपुर से चलकर देहली आया पंडित धर्मसहायजी भी आगये मुफसिल हाल तो वहां का उक्त पंडितजी की रिपोर्ट से भाइयों को विदित हुआ होगा, देहली बहुत बडा शहर है यहां २१ श्री मन्दिरजी सिखर बन्द और १३ चैतालय हैं उनमान १२५० साढे बारह सौ घर भाइयों के हैं ग्यारहसौ अग्रवालों के और १५० डेढ सौ खंडेलवाल भाइयों के हैं और ५० पचास घर ओसवाल भाइयों के इनसे जुदे हैं और भामी १५००हैं ॥

जैन पाठशाला भी है जिसमें ९० विद्यार्थी पढते हैं पाठक पांच हैं परन्तु शोक है कि इन्तजाम पढाई का ठीक २ नहीं है सभा भी है लेकिन इस इन्द्रप्रस्थ जैसे शहर में जैसा कि चाहिये थी वैसी नहीं है सभापति साहब की तवज: धर्म्म की तरफ कम है आपसमें मेल मिलाप भी नहीं है इस्से सब काम बिगड रहे हैं मुझे आशा है कि सभापति साहब इस तरफ तवज: फरमावेंगे क्योंकि उनहीं के करने से सब कुछ होसक्ता है औरों की कुछ चलती नहीं हैं नकशा मात्र गणना का तयार होगया साफ होकर मंत्री महाशय के पास पहुंच जावेगा ॥

श्री मालीवाडे के मन्दिरजी में महा विद्यालय के वास्ते गोलक स्थापित होगई है और २ मन्दिरों में भी आशा है कि स्थापित होजावेगी और घर पीछे के रुपये के भी एकत्र होने का बन्दोवस्त होता है और यहां के भाई मथुरा के मेले में भी पधारेंगे पहाडी की सभा तथा पाठशाला

का प्रबन्ध खूब है गोलक भी लग रही है देहली से चलकर पानीपत आया— यहां का हाल बहुत अच्छा है यहां एक पाठशाला तो हिन्दी की है जिसमें लड़के पढ़ते हैं दूसरी श्री मन्दिरजी में है जिसमें २० लड़के और २१ छोटी २ लड़कियां पढ़ती हैं केवल एक ही महीने से यह पाठशाला बैठी है छोटी २ लड़कियां पढ़ती हुई बहुत भली मालूम होती हैं और बड़े श्रम से सब पढ़ते हैं इस पाठशाला को देखकर मेरे चित्त को बड़ाही आनन्द हुआ— पाठक भी योग्य है इस मन्दिरजी में बहुत से भाई स्वाध्याय भी करते हैं और शास्त्रजी नित्य बचते हैं और यहां पर एक बात बहुत ही अच्छी है जिसको मेरे नजदीक सब को ग्रहण करना उचित है कि यद्यपी भाइयों में दो थोक हैं परन्तु धर्म्म कार्य में पूरी २ ऐक्यता है केवल संसार सम्बन्धी विवाह सगाई आदि में भेद है जहां कहीं के भाई यह कह देते हैं के भाई साहब हमारे यहां तो ऐक्यता नहीं इस कारण हम धर्म कार्य में भी कुछ नहीं कर सके उनको पानीपत के भाइयों की सीख लेनी उचित हैं व्यर्थव्यय का भी यहां के भाइयों ने अच्छा प्रबन्ध किया है— पहले यहां चार बाडे थे १ सगाई में १ विवाह में १ बहू आने पर १ लड़का पैदा होने पर ये चारों बंद हैं आतिशबाजी बागबाड़ी कतै बन्द है बखेर भी बन्द है गाड़ियों की भी संख्या विवाह में नियत है उससे अधिक नहीं जासकी हैं केवल रंडी भड़वों के नाच रंग का अभी प्रबन्ध बाकी है सो उसके भी इन्तजाम करने की भाई फिकर में हैं सो आशा है कि अवश्य ही जावेगा— और भी एक बात यहां अति श्रेष्ठ है और जैसी कि पंचायतियों में होनी चाहिये वैसीही है यानी चिट्ठे दो प्रकार के जमा होते हैं॥

एक तो श्री मन्दिरजी का जो मंदिरजी की जायदाद का किराया— तथा चतुर्दशी को तथा शादी गमी में कोई चढ़ाव वह सब श्री मंदिरजी ही का है और दूसरा पंचायती वह अलहदा ही लिया जाता है एक तो विवाह में बेटे वाले से १०) रुपये सैकड़ा बटहरी मेंसे लिये जाते हैं मुर्दनी में जो कोई सेर भर का गिंदोड़ा करे उससे २५) रुपये और जो आधसेर का करे उससे १५) रुपये लिये जाते हैं यह पंचयाती चिट्ठा है इससे पाठशाला का खर्च चलता है और पंचायती द्रव्य के बढ़ाने की और भी तजवीज होरही है यहां के भाइयों के खयालात श्रेष्ट है यहां श्री मन्दिरजी २ हैं प्रक्षाल व पूजन नित्य होते हैं एक देहली वालों का बड़ा मन्दिर है उसमें १७१ प्रतिबिम्ब विराजमान हैं आठ भाई नित्य प्रक्षालन करतेहैं चतुर्दशी की रात को दो मन्दिरों में जागरण नित्य होता है और बड़े ठाठ समाज के साथ

भजन होते हैं एक मंदिर में मंहा विद्या लय का गोलक भी धरी है मति चतुर्दशी को शास्त्र की सभा में आने वाले भाई कुछ न कुछ उसमें डालते हैं और मंदिर का नोकर सब भाइयों को याद भी दिला देता है ताकि जो भाई भूल जावे वह भी याद करके डाल देवें कि आज चतुर्दशी है ॥

अब के भाद्रपद मास तक ४४) रुपये गोलक में एकत्र हुए थे— यहां पर मेरे दो व्याख्यान हुए प्रथम में ३०० भाइयों के लगभग थे— और ५० के लगभग स्त्रीयां थीं पूरा अढाई घंटे व्याख्यान हुआ— फिर भी स्रोता गणों की तृप्ति नहीं हुई— जब मैंने खतम करदिया तो चारों तरफ से यही ध्वनि आती थी कि ऐसी जल्दी क्यों पूरा कर दिया— मैंने कहा कि अढाई घंटे तो होगये और चतुर्दशी की रात्रि है भजन भी होना है तो कहा कि भजन तो सदैव होते हैं परन्तु ऐसे उपदेश का आनन्द कभी भी नहीं आया— फिर कहा खैर अब जो हुआ सो हुआ कल या परसों फिर होना चाहिये— मैंने खयाल किया कि ऐसे तो सब कहाही करते हैं परन्तु नहीं एक दिन छोडकर फिर भाइयों ने सभा जोडने का प्रबन्ध किया ॥

मैंने भी स्वीकार किया— इस दिन की सभा में ब्राह्मण और वैश्य भाई भी अधिकता से आये फिर मैंने प्रथम मंगलाचरण में ईश्वर का कृत कृत्यपना यानी अकर्तापना तथा जगत का स्वयं सिद्धपना तथा कर्म कर्ता संसारी जीव हैं इत्यादि विषय में जो कुछ कहा उसको सुनकर जैनी तो प्रसन्न हुए ही परन्तु ब्राह्मण वैश्नव तथा और भी जो थे जैसे प्रसन्न हुए वह लिखने से नहीं प्रगट होता— उसका नतीजा यह हुआ कि अनुमान १०० भाईयों ने शास्त्र सुनने की ओर खडी करी जो नित्य सुनगे और बहुत भाइयों ने चतुर्दशी की आंखडी करी— और दो तीन वैश्नव भाइयों ने नित्य सुनने की आंखडी करी यहां उपदेश से जैन धर्म तथा महा सभा की बडी प्रभावना हुई— तीन दिन रहा भाइयों का मन नहीं भरा— और यहां पर विवाह भी जैन पद्धति से होते हैं और यहां पर कबूलसिंहजी पंडित बडे श्रद्धानी तथा ज्ञानी भी हैं नित्य शास्त्रजी पढते हैं भले प्रकार समझाते हैं एक चैत्यालय जो है सो उन्हीं के साथे है स्वभाव के भी सौम्य हैं और इनके थोक के भी सभी सज्जन हैं और दूसरे थोक के भाई धर्म से वाकिफ कम हैं तथा आदमी भी कम हैं परन्तु इस थोक के मुखिया से मैंने मेल करके शास्त्र सुनने पर हामी कर दिया— और मेरे से यह भी कहा कि जब आप दूसरी बेर आवोगे तो मेरे थोक का घर पीछे का रुपया मेरे से लेलेना ॥

सो आशा है कि यहां पर घर पीछे

का रुपया भाई एकत्र करके भेज देवेंगे ॥

मैं यहां से चलकर करनाल आया— उसी दिन रात्रि को सभा में शास्त्र पढा— भादवे पीछे यहां शास्त्र बंद था— शास्त्र के पीछे सबसे कहा गया कि कल यहां सभा होगी— भाइयों ने कहा कि एक दो दिन तो शास्त्रही कहिये आप के पढ़ने में बड़ा आनन्द आता है मैंने कहा कि सभा होने की बड़ी जरूरत है मालूम हुआ कि भाइयों को इस कारण इनकार था कि यहां छड़ियों का मेला तीज के दिन से पहरभर रात्रि गये तक होता है और इस मेले में जैनी भाइयों की औरतें नहीं जाती हैं उनके व्यतरिक्त सब हिन्दू मात्र की औरतें बाजारों में होकर निकलती और छडियों का पूजन करती हैं हमारे वैश्नव भाइयों को भी जैनियों की तरह अपनी औरतों को छडी पूजने से रोकना उचित है परन्तु जब मैंने कहा कि मैं अधिक नहीं ठहर सक्ता— आखिर को २ घंटे रात्रि गये सभा हुई इस सभा में कई एक आर्य्या भाई भी पधारे थे— मैंने प्रथम मंगलाचर्ण में मन्दिर तथा प्रतिमा की प्रशंसा में दोनों का सार्थिकपना भी दिखाया था इसमें यह भी गर्ज थी कि यहां एक थोक ढूंढिये पंथियों का भी है उनके सबब से कुछ भाई मन्दिर तथा प्रतमा पूजन से विमुख भी हैं उपदेश में मन्दिर तथा प्रतिमा की महिमा ऐसी दिखाई जिसे में सारी सभा में किसी को भी भ्रम नहीं रहा— बहुत भाई केवल पक्षपात सेही बिना सरधान प्रतमा पूजते थे उनके तथा आर्य्या भाइयों के दिल में भी यह असर हुआ कि इस प्रकार तो प्रतमा का पूजन अवश्य ही चाहिये— और आर्य्याभाई मेरेसे प्रतिमा पूजन विषयमें कुछ सवाल पूछने के ईरादे से आयेथे परन्तु व्याख्यान सुनने के पीछे उनको कोई भी सवाल पूछने को नहीं रहा— और सब भाइयों ने उपदेश की जैसी प्रशंसा करी मैं अपनी लेखनी द्वारा नहीं लिख सक्ता ॥

और एक बात यह भी हुई कि यहां पर १ लेखराज ढूंढिया है और उसकी बाबत जैनियों ने कहा कि वह यह कहते हैं कि मैंने जैनियों के पास इतने सवाल भेजे हैं परन्तु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया— मैंने कहा कल मैं उनके पास जाऊंगा और उनके प्रश्नों के उत्तर दूंगा ॥

भाइयों ने मना भी करा— परन्तु मैं एक भाई को साथ में लेकर उनके पास गया- पीछे से और भी भाई आगये- वहां जो कुछ वार्तालाप हुआ उससे धर्म्म की प्रभावना खूब बढी विशेष हाल वहां के भाई लिख सके हैं ॥

यहां करनाल के श्री मन्दिरजी में गोलक भी लगी है और घर पीछे का भी चन्दा होरहा है— अब यहां से अम्बाले को जाऊंगा ॥

पं० लालजीमल
उपदेशक

मंत्री का नोट

हमारे पास उक्त पंडितजी के व्याख्या नों के प्रशंसापत्र दोनों ही स्थान से आगे हैं जिन्से विदित होता है कि पंडितजी ने अपनी लेखनी को रोककर ही लिखाहै आप के अति उत्तम व्याख्यान हुए हैं ॥

चम्पतराय मंत्री
उपदेशक फंड

नियमावली व्यर्थव्यय परिहार

कसबै लेकडे परगने बागपत जिले मेरठ जोकि सकल पंच जैनियों ने मिती भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी को मुताबिक बीस सितम्बर को नियम की गई है इस भांत जानौगे ॥

(दफे१) प्रथम ज्येष्ठपुत्र की उत्पति में नाई को १, रुपया और ब्राह्मण को १, रुपया और पाठशाला को ॥, कुमारी असनाई में रुपया २, लड्डू सेर ९ इन से अधिक खर्च नहीं होगा ऐसा निमय किया है अन्यथा दंड का भागी होगा ॥

(दफे२) पुत्र के कर्ण वेधन में बिरादरी का जीवनां मांफ है ॥

(३दफे) पुत्र की सगाई का खर्च लडके को ४, रुपया लड्डू दो सेर टीके के दिये जांयगे— संजोया इस भांत पांन फूल ९। सेर मेवा ॥= महदी ॥~ लछे साद नग ७ पुडिया रीसादी १ लड्डू १ सेर गोला १ चूडी जोडा २ बंधने सादे नग ३ थैली सुपेद २ डिबीया काष्ट की १ नाईका नेग २।) रुपया झुंड क लड्डू नाई को २॥ सेर लाड कोथली पर तीलया दावन नग २ जिस की लागति के उपया२०, कपडा कंद का नगद रुपया ४, रुपया विदा की नाई को ॥, आने और बापिस आने जांने के रुपया २, तेल नग १ सादी ॥

(४दफे)मिलाई बाबत पहली ११ रुपया और दूसरे लडका तथा समधी आवे तो रुपया ३, और लड्डू मिलाई के एक थाली और असबाब में एक थाली खिलोंने वा टोपी वा जोडा और चलते जाते की मिलाई न देनी न लेनी ॥

(दफे५) खर्च लडकी के विवाह का भारकस नग ४० रथ वेल गाडी कुल भारकम और घोडी बडी १ टट्टू छोटे नग ५ नांच १ जाचकी तासे अंग्रेजी बाजे में आदिमी नग १० गोरे में रुपया १००, टूमूंका अखतियार है वरतन १७ तीयल १७ मंदिरजी में रुपया ४, पाठशाला के ॥, रोटियों पै खर्च ४, फेरो मैं गोदान के रुपया २, और पहले दिन पत्तल नहीं मिलैगी जो आदमी विनां जीम्यां रहैगा उस की पत्तल मिलैगी या तौ लंगडा या खाता नहीं होय उस की पत्तल मिलै

गी और को न मिलैगी और बढार की रोटी दुपहर को देनी पडैगी या तौ लड्डू कचौरी या परोसा या हलवा पूरी देने वाले को अख तियार है खर्च दुहेरा नहीं लिया जायागा और पत्तल ।=सेर अधिक नहीं करि सकैगा और जो तीसरी रोटी नहीं देय तौ पह लै दिन बरात को दूनी पत्तल बाद जीमने के देदेनी चाहिये जीमने वाला नहीं आवै तो दुपहर का पत्तल परो सा नहीं मिलैगा कुल पत्तल इस भांति वेटे वाले को दई जांयगी मालिक को ७९ भातियों को २५ धीने की फी आदिमी ९ ज्यादै हों तो २० नाई को १० बामन को ६ आश्रित को ३ भंगी को ९ पंडित को २ मीजान १८२ जोड हैं चाहे इन में से वेटे वाला पहले दिन लो तथा दूसरे दिनलो बडहार के दिन खर्च रोटीयों पर रुपया ४, खेकडे की विरादरी का खजला वा जलेबी तथा जमीकंद बनाना कतई वन्द किया गया और जीमन हार्मेर भी मनें किया गया है नाई का खर्च लडकी के व्याह में लग्न से लेकै आनें जानें पर्यंत का रुपया २९, कपडा १ सादा और अंडू वी जो कोई भेजै लडकी की साथ में तौ नगद रुपया ७, और चदरि सुपेद सादी १ तीयल या दावन नग २ सादे कार जो इन को लावै तो मालिक को दिखाई जायगी और फेरौंकी समें भूर में एक टक्का १ और खर्च विदा बर मंदिरजी का १।, पाठशाला का १, बामन को १, भातीन के नाई बामन को १, बढई को ।, धोबी को ।, दरजी को ।)मनियार को =, भंगी को २, खेरीज के ३, कुल मीजान ९=, खांड कटोरे पर रुपया ५, गोरे की विदागी में समधीको १, टोकणां कडाही कढूले दुसाले बागबाडी आतसबाजी रोसनी ये सारी मांफ करी गई न मंगानी न लेजांनी वखेर कतई बन्द बारह रुपया सैकडा बरात को लेती समैं निकाल लिये जांयग और मंदिरजी में रुपया २१, असबाब का मालिक को अखतियार है और कचौरी बरात की तथा बिरादरी की एकसी होनी चाहिये और लडके के व्याह की चबीणी ॥= मांयण सेकमां न होनी चाहिये और बराती को ।= चबीणी के तांलसे मिलैगी और वेटे के व्याह में नाई को २, रुपया नांच जाय तो ९, और लडके की घुडचढी में मंदिरजी में १, पाठशाला के ॥) ऐसा जाननां ॥

(१दफ) खर्च चालका नगद २।, कुल टक्के आदि और सजोवा जैसा लैवर ३ सगाई का है वैसाही लेना देना और नाई लडकी के साथ में आ

बेगा जायगा ताको १, कपडा १ सा दा देना ॥

(७दफे) खर्च भातका लगन पर रुपया २, पांन फूल १, और तेल दावन दातकी आई हुई जांडे कपडे सादे और भाजी एकमण १ नाई का नेग में ३, भात बामन को २,(८दफे)छोछकमें नोई को रो० १, कपडा १ सादा ॥

(दफै९) लडके के व्याह में सुपारी बांटने में बरानी लिखे जायगे जो लिखे पीछे नहीं जायगा तौ बिरादरी मुनासिब समझे वैसा करैगी इति ॥

जो इस बन्दोवस्त को बिरादरी में कोई भाई तोडैगा तो उसका रुपया व असबाव मन्दिरजी में नहीं लिया जायगा और बेटी वाला अथवा बेटे वाला कै बाहर नहीं आवैगी और भाजी भी नहीं लिई जायगी आगै बिरादरी कूं मन्जूर है इस बावत में सर्व भाई पंचायती के दस्तखत नीचे मौजूद हैं तहातें जांनना शुभम् ॥

उपदेशक फंडका रुपया इस प्रकार आया

१, पंडित जियालालजी साहब ज्योतिशरत्न रहीस फरुख नगर जिला गुडगांवा से व खुसी प्रतिष्टा चित्यालय के ॥

१, लाला कुन्जकिसोर तालयेइलनसाकिन कस्वा सिरसावा ॥

५, हकीम उग्रसेनजी मंत्री महा सभा साकिन सिरसावा शादी दुखतरकी खुसी में ॥

२०, लाला चोखेलालजी साहब सुपरिंटन्डन्टटिकससा० अम्बाला के बजरये मनियाडर के आये ॥

२४, प्यारेलालजी साहब छावनी नसीराबाद वाला का बावत उपदेशक फंड की बजरये मनियाडर के आया ॥

१॥, बजरये मनियाडर के गजाधर तामिया के आये ॥

१९, सेठ हीरालालजी सा० साकिन बमराना जिला झांसी ॥

२, हकीम उग्रसेन साहब नें लडके के पास होने की खुसी मौ उपदेशक फंड को दीये ॥

२॥, लाला खूबचन्द साहूकार साकिन मौजा खुबडू जिला देहली परगना सोनीपत व खुसी कामयावी मुकद्द में मारफत मुन्शी अघन सिहजी देहली के ॥

२, सीतल परसादजी कलकत्ता वाला का ॥

२, लाला चोखेलालजी साहब सुपरन्डट होसटेक्स छावनी अम्बाला मारफत बाबू सूर्यभानजी ॥

१२ लाला पिरभू दयालालजी साहब नायब तहसीलदार सिरसा ॥

१२, सकल पंचान स्योपुर का राम गंजका बजरये मनियाडरके अया
६, बजरये मनियाडर के आये जुमले रुपये ३६, के लाला लखपतरायजी पिरभूदयालजी नवाब गज बाराबंकी वाला का ॥
७, लाला शिवलाल साहब पटवारी साकिन मौजा अभदासी तहसील झजर सिकन गोहान से ॥
१०॥।=, मारफत हकीम उग्रसेनजी मिरसावा ॥
२, लाला उमराव सिंगजी साहब कस्बःसोनीपत मारफत मुन्शी अमरसिंग वखु मीफनहयाती मुकदमा
२६, लाला मलेख चन्दजी साहब रईस नजीबाबाद मिजुम लेमन रुपया ३७, ॥
१२, लाला उमरावसिंगजी साहब रईस नजीबाबाद ॥
१२॥. बाबू बिहारीलालजी साहब हापड जिला मेरठ ॥

७७३॥)

एकयता

मैं सम्पूर्ण महाशयोंको धन्यवाद देताहूं कि जिन्होंने हमारी जैन जाति की उन्नति करने के हेतु देशोप कारक श्री जैन धर्म धारक सद्गुण विस्तारक जात्योन्नतिकारक श्रीयुत बाबू सूर्यभानजी को श्री जैन गजट प्रकाश करने और श्री सेठ लक्ष्मणदासजी सभापति व श्रीमान मंत्री उपदेशक फन्ड डिपटी चम्पतरायजी का उमकी सहायतार्थ तन मन धन से उत्साह बढ़ाया इस सप्ताहिक जैन गजट से जो अपूर्व लाभ हुए हैं उनका वर्णन करने में जिव्हा भी अपने को असमर्थ जान मुख के अन्दर ही छिपी जाती है बाहर निकलने तक का साहस तक नहीं करती और लेखनी की तो शक्तिही क्या है कि जड पदार्थ चैतन्य की अन्तरवर्तिनी दशा को वर्णन करसके परन्तु अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार वर्णनकरता हूं। इस जैन गजट के प्रचारसे कहीं जैनकालेज कहीं जैनपाठशालायें कहीं औषधालय स्थापित होगये कहीं जैन महाविद्यालय के लिये रुपया जमा करने कहीं प्रचलित कुरीतियों के दूर करने कहीं पाठशाला स्थापित करने कहीं श्री शास्त्रजी वगैरह लिखने इत्यादि शुभ कार्य जारी होरहे हैं कहीं फिजूल खर्ची का प्रबन्ध कियाजाताहै जिसके कारण हमारे भाई धन हीन होकर अति हीन दीन दशा में होगये जातेहैं और होतेहैं तो भी अभी तक सोते हैं जब ऐसे पत्रों से नहीं जागे तो न मालूम कैसे जागेंगे मुझ तो इसका यही कारण ज्ञात होता है कि अविद्या रूपी नशा ने ज्यादा जोर किया है इसी कारण अभी तक सोते हैं जब अविद्या का इस जैन कुल से नाश होगा तब ही सब भाई जगेंगे परन्तु आज कल के लोग अविद्या के नशे के फलों को भी देखकर उससे अलग नहीं होते न मालूम उन्हें क्या सूझना है। और इसी गजट से कहीं सभा

ओं का कहीं मेले प्रतिष्ठा रथयात्रा आदि के समाचार सुनने में आते हैं बहुतेरी ज- गह के भाई धर्म सम्बन्धी प्रतिज्ञा ले धर्म को साधते रहे हैं कहीं मेल कहीं नशा से मुक्तिहोने कहीं धर्म सम्बन्धी प्रतिज्ञा लेने आ- दि के विषय में अति मनोहर व्याख्यानों की चर्चा सुनने में आती हैं इसी से जैन उपदेशक भी नियत हुए हैं हमेशा हर सप्ताह जैनियों के समाचार और सुन्दर उपदेश मिलते हैं यथार्थ में यह पत्र जै- नियों की मूढताकूपी अन्धाकारका नाशकर ने को सूर्य के समान हैं इस पत्र का जैसा प्रचार है वैसेही इसकी शिक्षाओं की मान्यता की जाय तो आशाहै कि जैनियों में धर्म प्रचार होने में कुछ भी विलम्ब न होगा परन्तु ये सब बातें तब तक नहीं हो सक्ती जब तक सब भाइयों के बीच मेल न होजाय क्योंकि मेल बिना ऐसे सब का र्य होना असम्भव है कारण कि ये कार्य एक आदमी के करने के नहीं हैं जब तक कि सब भाई तन मन धन से न करें, और मेल से छोटे भी बडे २ काम करसके हैं जैसे कहा भी है ॥

दोहा ॥ सम्पति होतें सुबुध नर, चाहे सो करलेत । तन मन धन जुर के सबै, रवि अलोप करदेत ॥

बादलों के छोटे २ कण मिलकर प्रकाश को लोप करदेते हैं तो क्या भाई मिलकर अविद्या रूपी सूर्य के प्रकाश का लोप नहीं करसक्ते ? क्यों नहीं करसके बराबर करसक्ते हैं इस लिये सब भाइयों को उचित है कि अप- ने २ ग्रामों में मिनाई भाव का बर्ताव कर अपनी जाति की उन्नति करने में कटिबद्ध होवें मैं उक्त लिखित महाशयों को अने कानेका धन्यवाद देता हूं जो ऐसे कार्यों में सदा तन मन धन से लगे रहते हैं ऐसे महाशयों को भगवान सदा चिरआयु रक्खें और सदा ऐसे कामों के करने को उनका उत्साह बढाता रहे और इस सप्ताहिक पत्र को भी चिरस्थाई रक्खें ॥

बिन्द्राबन ३।४।१६ स्कूल
गोरसागर

अवश्य अवश्य पढिये

हे मेरे प्यारे जैन भ्रातृ गणों ! बहुत ही विनय पूर्वक यह सेवक आप से बिनती करता है कि जरा आप अपनी जगत्प्रर्श- सनीय कृपादृष्टि को इस अवनति प्राप्त हुई जाति की तरफ लगाइये और उसको सम्य क् दृष्टी ज्ञानवान बनाइये । मिथ्यात्व और अविद्या को जिन्होंने इस जाति पर अपना आक्रमण किया है अपनी जाति से काला मुंह करके निकाल दीजिये ॥

हम को बडा आश्चर्य आता है कि हम लोग अपने हाथ से अपनी जाति में कुल्हाडी मार रहे हैं और धर्म की अवन ति कर रहे हैं अब सोचना चाहिये कि क्या बात हम करते हैं कि जिससे ऐसी

हमारी मन्द बुद्धि होरही है। हाय, हाय बड़ा अनर्थ है कि हम लोग अपने प्यारे बालकों के शत्रु होरहे हैं यही जो हमारे बाद इस जैन जाति और धर्म के सम्हालने वाले कहे जासक्ते हैं। इसका क्या कारण है कि जो हम लोग अपने ही पुत्रों के शत्रु कहे जाते हैं। विचारने से यह ज्ञात होता है कि हम लोग अपने बालकों को उत्तम शिक्षा व धर्म शिक्षा नहीं देते हैं और बिना शिक्षा के कोई भी ऐसा नहीं मालूम होता है जो अपनी जाति में क्या कर्तव्य है और अपना धर्म क्या वस्तु है पहचान सके इस लिये माता पिता को (बड़ी खराबी जो बालकों के माता पिता भी तो अज्ञान हैं) अपने पुत्रों के लिये यह कर्तव्य है कि जब वे ३ व ४ वर्ष के हों और कुछ तुतलाने लगें तो उन के सामने उत्तम २ वाक्य बोलने चाहिये खोटे गाली गलोज के वाक्य जो प्रायः वे व उनके बिरादरी वाले लाड व प्यार के मारे उन को दूसरों को कहने के लिये सिखलाते हैं कभी भी नहीं बालकों के सामने कहने चाहिये जब तक पुत्र ६ वर्ष का न हो मा बापों को चाहिये कि उसको अच्छे लड़कों के साथ खेलने दें अदब कायदा सिखलाते रहें बाद उस के जैन पाठशाला में पढ़ना चाहिये और धर्म विद्या (देव नागरी) और हुन्डी बाली हिसाब किताब सिखलाना चाहिये ॥

हुन्डी बाली में लड़का २ वर्ष में हुशियार हो सक्ता है जब होशियार हो जावे तो उस को अच्छे २ जैन शास्त्र पढ़ाना चाहिये और राम विद्या भी ८ वर्ष की उम्र में शुरू कराना चाहिये मा बापों को जब लड़का ६ वर्ष का हो तब ही हर रोज मंदिर में अपने साथ लाना चाहिये ॥

इस तरह से १४ वर्ष १६ व और ज्यादः वर्षतक जितना कोई पढ़सके पढ़ाना चाहिये बाद उसके ब्याह शादी रोजगार देना चाहिये ॥ जो लड़के इस उपरोक्त कायदे से पढ़ाए जायगें मेरी समझ में वे बहुत ही धर्मानुरागी और धर्मोन्नति कारक होंयगें फिर प्रश्न उठता है कि जहां जैन पाठशाला ही नहीं हो तो क्या करें॥ बस ऐसे प्रश्नका जबाब मुझ से भी नहीं बनता है क्योंकि हम नहीं देखते हैं अतः हमारे सब नगर के भाई अपने २ यहां पाठशालाका प्रबन्ध करलें ॥ अन्त यह है यदि नहीं करेंगे तो जरूर वे अपने पुत्र द्रोही और जाति व धर्म के अवनति कारक होंगे ॥

दोहा— जैन उसी को जानिये । करै जो पर उपकार ॥ मिथ्या ज्ञानके नाश में तन मन धन दे वार ॥ ज्ञान बिना कैसे कोई आत्म परका बोधक हो सक्ता है इस लिये सब को (चाहें गरीब से गरीब ही क्यों हो) दूसरोंके आत्म परका बोधक बनाना चाहिये इसका उनको बड़ा उपकार होगा अनन्त सुख की प्राप्ति होगी ॥